ভারতবর্ষ

ननाय- वीक्नीसनाथ मूर्याभाशांत्र अन्य

স্থভীপত্ৰ

षष्ठेतिश्मं वर्य-विश्वयं थेखः , षायातृ-षश्चात्रव । ७४१

লেখ-সূচী—বৰ্ণান্তক্ৰমিক

বিলাৰ (কবিতা)জিলোরীজ্ঞনাপ ভটাচাৰ	•••	300	ভাওনা (কবিছা)—বিহাসিয়াশি বেবী	***	804
ध्मन्य (कविष्ठा ।—विदेशलासकृष गांश	•••	24	চাহিদা (গল)—বীক্যোতির্গন সেবঙ্গু	***	* 29.2
व (अवस)बैटनानानमान की बुडी		3.8	জনমত (গল)—শ্ৰীপৃখ্ীশচন্দ্ৰভীভাগ	•••	442
লি এই মারা,লালিশ কবিতা)— শীশাকভোৰ সাভাগ	•••	84.	बरायरवर इन (बारकांक्ना)—विश्वीकृत ब्हांक्र	•••	(A TH
नामाय क निर्देशिय होगणुक (व्यवप काहिनी)			वर्क वार्गार्ड म' (ध्यवक)—बैक्ट्रवाश्वतः अव्यानाशात्र	***	48*
विवनीक्षनाच रत्याांशायात्र	r), 8··,	8×8	জাতীর সমীত (সঙ্গীতালোচনা)—শ্রীদিলীপকুমার রায়	***	494
गंगात्र कॉवटा (कविछा)—वैत्कललाह्य व्यवागाया		848	ভাগতের পৰে (অবণ কাহিনী)—নরেন্দ্র বেন	* 40	34
चिका-वृद्धि (अवस । बैटकर्नवहता क्षर	•••	>	তীর্ব (কবিতা)—জীকুসুদরঞ্জন মলিক	***	479
বিষ্ঠাব (কবিতা)— শীঘতী বঞ্জিতা কুণ্ড	•••	O+6	তোমানে প্রণাম (কবিতা)—বিজয়লাল চটোপাধীয়	•••	
ভিহান (ক্ৰিতা) — শ্ৰীপান্তশীল দাপ	•••	242	দ্ৰভেৱ পরিণাম (কবিতা)—ঞ্জীকানিয়াস ভাষ	•••	430
তহান পাঠে (কবিতা)—অকালিদান রায়	***	8.7	ছুইট বটগাছের কৰা (নঙ্গা)—ব্যক্ত লিখিড	***	••
বি টলটা (জীবনী)—বিপ্রভাত হালদার	•••	474	ছবিয়ার অর্থনীতি (প্রবন্ধ)—বীভানত্ত্বর ক্রোণাধ্যার	4:	3 4, 8+2
কট কাহিনী (গল)—শীনভোবকুনার অধিকারী	•••	36	ष्ट्रपटिमा (क्षत्य)वित्रवीक्षमांच त्रात्र	•••	840
Fৰি ও কৰিতা (প্ৰবন্ধ)—বীগোগেলকৃষ্ণ দত্ত	•••	899	নেবী পূজা (কবিড়া)—জীলৈলেন্ত্ৰ কুক লাছা	***	481
वि कातकत्क जात-श्रुगोकरत्रत्र समादाय (क्षत्र)			(मन विरमम— चै रहरब <u>ल</u> धनाम (चार	***	1.0
बिर्गाणामञ्ज ब्रोब	•••	৩৬২	দারমতল (উপভাস)—		
লিকাতা ও সহরতলীতে বৈছ্যুতিক ট্রেণ (প্রবন্ধ)—			তারাশকর বন্দ্যোপাধ্যার ৫২, ১৪৫, ২৬৫, খ	ه ۱۰۹	144 677
वीनोनिया प्रकृतनात्र	•••		বিজেক্তনাল রাম (আলোচনা)		
निष क्यांत्री (गत्न)—श्रेट्रायस्य श्राप (पाव	323	***	শ্ৰীবিজয়রত্ব সন্মুখ্যার	•••	22
ালের বন্দিরা (উপভাস)—			व्यव श्रकाणिक भूषकावती ৮৮, ১१७, २७६, ७	e 2, 8	cb , c82
किनविष्यु यत्नाभाषाव ३, ३०४, ३४२, ५	Q., 00e	, 844	নিৰ্জ্ঞান মনের পৰিচর (এবৰ)—-বীশাভনীল বিবাস	• • •	11300
विजनवामी प्रमाप मिल (जीवनी जालाहमा)			শক্তিৰ বাংলার আবের চাব (এবন)		· .
স্থাপক স্বিধ্যেন্ত্ৰনাথ মিত্ৰ	•••	*	ৰ বৰ্ ল্যন্তৰ কলোপাধাৰ	•••	800
म्म म्म (कविषा)—विस्तरमञ्ज मान	•••	1999	পালবংশিও মদনপাল ও গোবিশ্বলাল (ঐতিহাসিক প্রবন্ধ)		
শিলা নগরী (ঐতিহাসিক প্রবন্ধ)—ভক্তর শ্রীনান্দচন	সরকার	8 • 8	ডক্টর শীধীনেশগুল্ল সরকার	100	84
[म्मन्द तांत्र (व्यवक्)—विविज्यत्र प्रकृषम् द	100	**	পুৰার চিঠি (কবিডা)—কুমারী নবনীতা দেব	. **	443
কলীর ব্যাক্ষের অভিঠা ও জাতীয়করণ (এবর্ক)—			পুরীতে বিশিষ্টাবৈত বত (আলোচনা)—		
वशांशक शैजनावरकु वर्ड	***	897	শীবসভকুমার চটোপাধ্যার		#34
क्तियां-क्षत्र (बारमाह्या)	***	-	পূर्वदाश्य चावत वाचि नम्छ। (०) (व्यवच)		
কাৰিয়াৰ বুৰ (এবৰ)—ভাতৰ প্ৰশ্ৰ	•••	33.	- শীলামহুন্দর বল্যোপাবার	****	•
(व्योगा-धूगाव्यक्ताय जात्र ৮८, ५५७, २८৯, ८	165, 48b	, est	পূর্ব আফ্রিকার অসপ (অসপ-কাহিনী)		4 -
শীৰ (কৰিতা)বিৰদাৰ চটোপাখ্যার	***	829	ব্ৰহারী বাক্ত্বক		201
विस्ताविक (बारमाञ्जा)—,बाक्रववन वक्			এউটো তারা (কবিতা)—বীনাবিত্রীগ্রসত চটোপাব্যার	pok	્રં ફળ
रोजांत्र महार्थ्यस्य ज्ञांवर्ण (क्षार्यक) विवीद्वासामाथ वटनाप्र	পাখার	*	আচ্চে শক্তি-সংখ্যত (এখন)ব্যসুদ ব্যস্ত	-	. 30
बाटित बीस्तत এक क्यांत (बीकी)वाना क्यी	••• 4	15-3	अक्रमद्भित गीरत (अवनेतृशास)—विदेशिक शर्मिः ,		201
The state of the s			The state of the s	*	

	diam'r.	the second second	
AND STATE PORT PROTECT OF THE PROPERTY OF	A Maria American	जिल्लामा विकास । विवहार कार	7 4.1
किरठीयानिक को	N and Miles	क्रिका - मिनीत्रक्षमात्रावन द्येत	Swa
বৰ্ণায় উন্মান (কৰিয়া)কীনাভাতবিদ্যাধনাৰ 🔑		्रक्रिक स्थापन प्रकार (बाटनांडना)	*
THE CHE (WHICH) - THE COST	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	के ही रीज अधिकार प्राचीनानाम	584
नामनाव द्रवार अस १ - विकास मार्थ वार्मिनाव	26,42,42	क्रिकेन प्रश्विक अन्य)- विद्री निया प्रकृतवांत	- W
त्रीपद (यस १— वैशकिन्स अध्यक्त		विकियानक्ष्माक मुद्दे (स्विका) विजननाम हाडी शाय	
बार्नार्ड में (कविश्वाम - बेटवन महिलान्स शाव 🌡			308, 228, 058
महारा जीवा (अविश)विविध गश्चिक	2	এলামীক ও ব্যালিশিসমীতমায়ক	****
निर्मेक निरम्ब कुरुना कन्या काम रहा के बार्क हैंग		े विद्यार श्रेष्ट व क्रिया राज्य राज्य व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	*** #51
	* *	नमाक महत्वन सहित्रहार् अवह	831
Cales I - Brought and white	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	Mine Court and the section of	•
विशेष (शव) वैत्रात्वक्षविशेषी वर्ष	*** 1/2 >>	गर्यायात्र (बाहिका)—- विगयदानहरू क्रा	100
विरुप्त विक्रिय स्थानिकी			841
" मशानक विशेष काराम क्रिके को देशी	e, 280, 208		•
विक्रभूटन विश्वक अध्यानम् व्यादनाहर्वे। रे			909, 800, 40;
मार्थिक म्याहिता स्		ুনান্ধিত্যিকের কর্মনাধনা ("প্রাবৃধ্ধ)—	• •
्रमुख्या नेतरव (क्षेत्रक) - निक्षेत्रक्रिकटमास्न नटनाशाशा	i 2'62	ইচিশ্বাহান্ত ভটাচাৰ্য	341
क्षित्र शाका (अवस्था निमानाम् मात्र वरना ना था।		্সাহিত্যে শ্লাক ও প্রতীগ (প্রবন্ধ)—	
क्रिकेश प्रतिव विकास के जिल्ला प्रतिवास पर एक प्रतिवास कर कर कि विकास कर कि विकास कर कि विकास कर कि विकास कर कि	••• ₹•€	্ৰধাপক আমৰ্ল্যধন বুৰোপাধাৰ	>99, 280, 99:
हार्केश्वराम महावीदंबक् तालुक (अरुक)—		সাহিত্যিক গণের হন্তলিপি—	821
🖟 🐙 🔭 🗖 পুৰণটাৰ ভামক্ৰা	'96.	নিংহলে কলিছ উপন্ধিৰেৰ (প্ৰবন্ধ)—	
ऐक्क्षित्र-वादविकात प्रमुख-क्षुम् (टारक्)		অজনরপ্তম শ্বাদ্ধ	*** 224
শীৰভোৰত্বনার চটোপাধ্যার	, , , ,	' সুইন্ধারল্যাও (অমণ কাহিনী)— 🖣 চিত্রিভা দেবী	•
अक्षूत्रकीत निवासकुत् भरवानाकु बान (धारक)		হৃদবের খ্যান নেত্র (কবিভা)	
विश्वविद्यारमस्य विद्यान	*** 525	निरमवन्त्रमञ्ज मृत्यानायाम	'01
कावकीय नाक्ष्मिक प्रतिवाहान (धारक)-	*	সোপেনহর (জীবনী)—-শ্রীভারকচন্দ্র রায়	७११
14 ; Andinea ereitania	842	সোপেনহরের ধর্শন (প্রবন্ধ)জীতারক্চন্দ্র রার	8>
सहाकृषि त्याद्भित कार्या मध्यस्य नार्यात्र केरव	,	नरमन्त्र नारम त्रवीत्मनाथ (ध्यवक्)	
विश्वासीनाम विश्वास	(অধ্যাপক শীকালিদাস নাপ	8¢
ब्रीवाबोक (अक्षींक)—हिन्ति कवा—क्रिमंत्री हेनिवा व		বয় (গর্ম)—- শীহরিরঞ্জন দাশশুপ্ত	85
वांश्वां अध्याम ॥ इत- विविधानं क्षा अध	••• 8)	বাৰীনতার রক্তক্ষণী সংগ্রাম (ঐতিহাসিক প্রবন্ধ)—	
पुर्विकार्वादयः व्यक्तिकार्यः । पुर्विकार्वाद्वादः व्यक्तिकार्यः । पुर्विकार्वादः । प्राप्तिकार्यः । प्राप्तिकार्यः ।		শ্রীগোকুলেশর ভটাচাব	২৯. ১৩
न्त्रामानाय याच्याबद्धाःच एक्क्याक्याः चित्राक्षितायायाय		Figure server (mas) amerial statem) ર
	* • * 94	1202 Ca MITERS (ETS MENTS) - MONESCOTO (US)	ą
ধ্যুগান্তর-(এবদ)—বীকেশবচন্দ্র প্লব্ধ	464	क्रिक स्टी गरेवर करिक	
· क्यूश्च-(को णक-्राव ेदीरतसमाथ रङ्			rate form officer
ल्लान्त्री (नरमन गांक र लाटमान्या)विवसमय हार्य	Фr:	, আবাৰ সভ্যসাবছৰণ বিজ্ঞাসুস্থজনার ভাজনাস, বি কেল্ডে ভাইরেক্ট জ্যাকস্থ	
प्रक्रिको (कविछा)— वैगाविकी सम्बंधियान हर्का गांधात	, 1	Some all austin	। व्यवस्थान अस
सार-श्राकत (करिठा) — के बेग्रेंक्क क्वांगर्	*** 800		£ £
রাশি কন (,জোভিব)—জ্যোভি বাচন্দতি	. 4.	প্রাবণ , , — নববধুর পতিপুতে বাজা,	
	296, 85th, 364	'বারে দেখতে নারী ভার	
ৰাষ্ট্ৰগঠনে শ্ৰিকৃক্ষের জীবনাদৰ্শ ও ভারতীর সংস্কৃতি (ব	विश्व)	এক রঙা চিত্র ১৬ খানি	
🕯 🙀 📆 ৰভী ক্ৰবিষল চৌধুৰী 🥫	··· (****	ভারতী , —হারস্ক্রন্ত সভাবন্ধন গ	
	>>c, >>n, qua		्यवर এक वृक्ष
(तसम है व्यवस)—विग्रहाक्यूमात तात को न् ती	*** 221	1 · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
्रवाक्षावृत्त्विक्षांश (शक्ष)— विकासकाम जात 🕌 🚻	··· 🚉		
ব্যাস-নাট (উপভাব)—নারারণ গরোগাখ্যার	* *	अवर अक झड़ा हिन्न उन	
•	₹ ₽ β, 8%), ε ₹¢		
भारता में (कविना)मिरशाविकान म्रामायात	, * #約	ধ ু এবং এক রঙা চিত্র ৩৭	
শীব্ৰাক্তম-ছভিশাৰ্গ (ক্ৰিডা)মিহারেশ বিশ্বাস	٠٠٠ الله		4.
reten Bine (affre) + diferen und feie	1 1-1 4-33	इ.स. व. का वार अप वडा	हम् ३० थानि
Control of the Contro		and the state of t	A LA MANAGEMENT
And A C	€.		, ,



শিল্পী---ইভাপদকুমার দত্ত

শকুন্তলার অভিশাপ

ভারতবর্গ প্রিন্টিং ওয়াকস্



শিক্ষাধিকতিক ভাইবেক্ট আনুক্সন গুৰুগ্যত দাঙ্গা লাগিয়া গিয়াছে। দাবীর কথা—"মারকে লেঙ্গা জান হাণ্ডার"—



প্রথম খণ্ড অষ্টত্রিংশ বর্ষ

প্রথম সংখ্যা

আন্তিক্য-বুদ্ধি শ্রীকেশকদ্র গুপ্ত

ানব-প্রকৃতির মূলে পরিলক্ষিত হয় দারুণ অতৃপ্তি। অতি ল বিচারেও বোঝা বার, এ অতৃপ্ত চিত্তের বৈধ ভাবের দনিবার্য্য পরিণাম। মাহুষ বিরুদ্ধ-ধর্মী। অথচ আঞ্চ টাব-জগতে মানবের সম্বম অপরূপ।

মাছবের কতকগুলি বৃত্তি পশুর সক্ষে সমান। কিন্তু সে বৃত্তির ভোগে বা সাফল্যে তার তৃথি নাই। অতি উপাদের চালন তার আহারের বৃত্তিকে তৃষ্ট করে, কিন্তু পূর্ণ নবকে খোরান্তি দের না। বরং তার ক্ষণিক তৃথি চালন-বৃত্তির দমনে। কারণ ভোগ ও বেদনার অহুতৃতি ভে। দেহের প্রভাব মনের উপর অজ্ঞা। অবচ নসিক ও আধ্যান্ত্রিক স্থাধের সন্ধান পাওয়া বার প্রবৃত্তি-ানের কৃতিখে। শাসনে বিজয়-স্থাধের অহুতৃতি। পশু-ভ চরিতার্থেও মাহ্র সুথ পার, কিন্তু ভাতে পরিতৃপ্ত। না। বাহিরের প্রবৃত্তির গোপন গহনে মাছ্যের প্রবৃত্তির আরু একটা ক্ষেত্র আছে। তার ভাবের প্রেরণা সে বোঝে, কিছ তার পূর্ণ পরিচর মানব পায় না। সেই পরিচর না-গাওয়া তার অত্প্রির মৃন হেতু। বিশাল বিশ্ব তার সংসার, এ অত্প্রির ধারণা শিশু হ'তে অতি জ্ঞানীর চেতনার পটভূমি। মৌমাছি ফুলের রঙে আকৃত্ত হর তার অভ্রের মধু-পানের আকাজ্ঞায়। মধুনীন পূত্পে সে ক্মনীয়ভা দেখে না। সকল ফুলের মাধুরী পতঙ্গকে আকর্ষণ করে না। কুলের আকর্ষণের ভূমি মাছ্যের চিত্ত। সে জানে না সেথায় কা অত্প্রি বিভ্যমান—বার নিরাক্তরণের জন্ম মানব-প্রকৃতি চার আপনাকে পরের মাঝে প্রসার করতে। কতক পদার্থ, বছভাব, নানা পরিস্থিতি তাকে কুল করে। বা প্রের মাছ্য ভার, নানা পরিস্থিতি তাকে কুল করে। বা প্রের মাছ্য ভার সন্ধানী, অপ্রিরের উপর সে বিভিন্ন। মাছ্যের

জাবন-বাজা ক্ষুক্ত হলেই, এই ইচ্ছা ও বেষের বন্দ তাকে মোহিড করে। প্রির বা অপ্রিরের ধারণা অবশ্র প্রত্যেকের বিভিন্ন।

আৰু বাবে নাহ্নব প্রির ভাবে, তাবে পেলেই কি সে ছুই হয় ? সে এক আকাজ্জার সীমানার পৌছে, আবার পরিধার বাহিরে মনোরম ভূমির সক্ষেত্ত চঞ্চল হয়। ভাবে যে আবার আহে তার প্রিয়তর। তথন আবার তার বাত্রা হয় স্কল। ভাবে বাভাগ উঠুক ভূফান ছুটুক ফিরবে নাকো আর। কিছ অলানা দেশে বাত্রার শেবে বথা পূর্বং তথা পরম্।

মান্থবের এক প্রকৃতি তাকে কুন্ত আমিবের মধ্যে বিরে রাখে, আর এক প্রকৃতি সে আমিবকে অভিক্রম করে। সে প্রকৃতি শাস্তি,চার, অথচ অশাস্ত। কারণ মানবের অ্থ আরে নয়, ভূমায়। তাই সে অহরহ—প্রসার চার, বাড়তে চার, নিজের মধ্যে পূর্ণতা চার।

মাছৰ চিরদিনের যাত্রী, অনাগরিক। সে পথের मार्थ वामा वार्थ। कुछ श्राद्यांकन मिक र्'ता व्यावात चार्याकन करत १५-व्यात । मानत्वत्र প্রবৃদ্ধিগুলা কণে কণে লক্ষ্য হারার। ভাষ্যমান পরিপ্রান্ত কণিক বিপ্রাম করে। কিছ ক্লান্তিকে ফিরিয়ে পাবার জন্তই যেন সে আবার ছোটে নভুন কুলের সন্ধানে। অদৃরে জেগে ওঠে কুল-শান্তির ছায়া-শীতন। বিপুল পরিপ্রমের প্রেরণা चारा-कृतस्य जाना, मरन भारतत्र चथ्र, श्रांत जानासत्त्रत्र লোভ। পথে নানা ভরত এদে নাচার, কোনোটি অহকুল, কেহবা প্রতিকূল। ঝঞা ওঠে, আবার হস্টু বায়ু বয়। আকাশ প্রাবিত হয় বিভিন্ন সনীতের স্থরে। কেহ বলে-क्ता क्ता। कर शांच-विश्व यांच, नीच शांत कित-শান্তি, চির-জ্যোৎমা-প্লাবিত দেশ যাত্রার শেষে বিরাজিত। क्डि क्ल लीएइ वार्य-भर्वत्र क्डे भ्रख्यम। द्वावात्र শান্তি? কোধার ভৃত্তির অমৃত-রস? ধৃধ্করছে বানু-বেলা। অট্টাত করছে প্রতি বালু-কণা। প্রান্ত পথিক षावात षष्ट्र पर्य मत्रीहिका। षावात महे भरव CETCO I

আমরা মনের গোপনে শান্তির আহ্বান শুনি, কিন্ত চারিদিকে দেখি চিরন্তন সংগ্রাম। আমাদের এক ধর্ম চার শান্তি, অন্ত শুকাব চায় বৈরিতা—বিশ্ব-বিক্সরের প্রেরণার। জীবনের বে পথে চলি, বেধিকে তাকাই, সচন জগতের বে প্রক্রিয়া পর্বালোচনা করি, তারই মাঝে দেখি প্রতিবোগিতা—একের উচ্ছেদে, অভের স্থান্ট, পুষ্টি ও স্থান্ট। সংহারের ভেরী বাঁধন ছেঁডে, আবার নজুন বাঁধনের হয় রচনা।

ক্ষিত্ব অবিরত আয়াসের মাঝে একটা সত্যের উপলবি
হয়্য—বিশ্বের কোনো অংশ, অক্স বিভাগ হতে বিচ্ছিন্ন নয়।
টাদ ওঠে, সাগরে জোরার আসে। বাতাস বয়—শুক্নো
পাতা ঝরে নতুন পল্লবকে স্থান দেবার জক্য। পাঝী গাছের
ডাল ভাকে নিজের গৃহ রচনার তাগিদে। তার পরিণামে
তক্ষ হয় শুক্ষ-শাখার আবর্জনামুক্ত। বৃক্ষ প্রসারের স্থবিধা
পায়। বিশ্ব একটা প্রকাশুক্ত। বৃক্ষ প্রসারের স্থবিধা
পায়। বিশ্ব একটা প্রকাশুক্ত। বৃক্ষ প্রসারের স্থবিধা
পায়। বিশ্ব একটা প্রকাশুক্ত। কৃত্য মাহ্রবড
ভাজনে এবং পিয়া-মিলন-আশার সঙ্গীতে। কৃত্য মাহ্রবড
নিজের মধ্যে আবদ্ধ। কিন্তু তার মাঝে এক বৃহৎ মাহ্রব
আছে, বার অত্থি সনাতন, বিশ্ব-বিজ্ঞারের ত্রাকাজা
ছবিসহ। এক অদম্য শক্তির সে অধিকারী। একে
গীতা বলেছেন—পৌক্ষং নৃষ্। সেই মহন্ত্রত এক অজানাকে
জানবার সাধনার ব্যন্ত। অথচ, সে কথা সে স্পষ্ট বোঝেনা।

এই পৌক্ষৰ বিধের মূল-স্ত্রের সন্ধানী। তার জন্ত জ্ঞানে ও অজ্ঞানে, অন্তরের এক শক্তির তাড়নার, মান্ত্র সদাই পরিশ্রম করছে। যে তুর্বল সে পদে পদে পথচলার শ্রান্তিতে, নিরাশার কুহেলিকায় আর্ভ হ'রে—পথ
হারার—বিশ্রাম চায়—সংগ্রামের পরিশ্রম এড়াতে চার।
কিন্তু উত্তমহান কর্মহীন থাকতে পারে না। বোঝে—আলতে
শান্তি নাই। নিরাহার ব্যক্তির ইক্রিয়-গ্রাহ্য-ত্যার নির্ভি
হ'লেও তার রমের প্রতি অন্তরাগ লোপ পায় না। গীতার
শিক্ষা, সে রমের নির্ভি হ'তে পারে পরমের সাক্ষাতে।
অলসও মনের মধ্যে পান শোনে—আরাম হ'তে ছিল
ক'রে, সেই গভীরে লওগো মোরে অশান্তির অন্তরে বেথা
শান্তি স্লমহান।

একই লোক কভূ হয় কুয়াশা-পরিবৃত, কভূ হয় কর্মরত, কভূ বোঝে দিব্যক্ষানের রশ্মি উভাসিত করছে তার অক্তরণ। আলোর সন্ধান, কর্মের প্রেরণা এবং মোহের আবরণ—এই ত্রিধারার সংসারের শ্রোতস্বতী পৃষ্ট।

ভাই আমাদের পথচারিভার বিশেষত্ব এই বে আমরা কোয়ার ভাটার বিপরীত শ্রোতে অব্যবহু-চিত্ত কর্ণধারের হাতের নৌকার মত। রাত্রে পথ-হারা পাছের মত প্রান্তরের একই ছলে ঘূরে কিরে পৌছাই। অর্থ-সংগ্রহ ক'রে দেখি, অর্থে শান্তি নাই। যশে শান্তি। পরে দেখি যশ আহরণের চরম পরিণাম নিরাশা। তবু চাই নৃতনধন, নিত্য নবীন বশ। বন্ধুছের মাঝে দেখি কুটিলতা, দারুণ খার্থের সংঘর্ষণ। এক বন্ধু শক্র হয়, আবার অক্তের মিত্রতা করি। এ রীতি চলে স্ব্দিন স্ব্ বিবরে।

কিছ শিশুকাল হতে চিরকাল মাহ্য একটা তব কুটিয়ে তোলে জীবনে। এ প্রকাণ্ড বিখে বিচ্ছিন্ন হয়ে একেলা থাকবার তার তিলার্দ্ধ হান নাই। দলের মধ্যে নিজেকে প্রসার না করার জ্বানিবার্য্য পরিণাম উচ্ছেদ। ইচ্ছা ও বেব উভরেরই মূলে আছে জানবার বাসনা, প্রসারের ইচ্ছা। শক্রর পূর্বতাকে বেব করি। কিছ তাকে জানবার বাসনা আদম্য। সেই বাসনার ফলে হয়, শক্র শক্তির আংশের প্রতি প্রেম, বাকীটুকুর প্রতি বেব ও হিংসা। বাঘকে সহজে মাহ্য ঘুণা করেছে নৃশংসতার জন্ম, কিছ তার বিক্রমের প্রেমে চিন্তকে প্রচ্ছা করেছে। আদর্শ নরকে বলেছে শার্দ্ লি-বিক্রম, নর-শার্দ্ল।

कड़वांनी बनाद धर्दै क्यायत क्यात्र मारूरवत शक्क हिन অত্যাবশ্রক নিজের আত্মরক্ষার তাগিলে। শাস্ত্র বলে, তার এ প্রদারণ-প্রবৃত্তি এলো যে মূল থেকে, তারই শক্তির প্রকাশ এই প্রেম। নিশিদিন মাত্র্যকে টান্ছে পূর্বতার প্রেরণা। তারই ফলে সে বুঝেছে যে তার সন্তার অভিত থাকবে না বিশ্বের অন্ত অংশের সঙ্গে মিতালী না করলে। পরের শক্তি তার শক্তির পুরক, যদিও এ সত্য ভূললে निष्मत्र मंकित विलाश व्यविध मञ्चव। शांधत कठिन কঠোর। কিছ সে গৃহরূপে মাতৃ-রেহে আশ্রয় দিরেছে व्यापिय वनहांत्री नवनांत्रीटक, वाच, छत्नूक, मर्ल ७ शृरक्षव অভিযান হতে। মাত্রয়কে মাত্রুয়ের সঙ্গে মিতালী করতে হয়েছে, আততায়ীর আক্রমণ প্রতিরোধ করবার মানসে। ব্যক্তি অভিকৃতি, কুল্র আমিছের ক্ষণিক তৃথির বেড়াকাল আদিম বুগ হতে নর-লাভির নিমূলের হেতু হ'ত। আদি কালের দীর্ঘ-দক্ত শাদ্বি, প্রকাণ্ড গণ্ডার বা অভিকায় শরীক্ষণের সাথে বোঝবার উপযোগী কোনো অল্পে ভূবিত करवननि विधाला जाहिम मानवटक। मटनव जानीवीटक मानव-अवि व्याचात्रकात त्रांग विश्ववनाम करत्राष्ट्र। पन

বাধার বাসনা ভার সংখার। বিধের মধ্যে নিজেকে প্রসার করবার ইচ্ছা ভার গহন চিত্তের সম্পদ।

একদিকে পূর্ণতা লাভের প্রেরণা, অন্তদিকে বা কণভকুর, যা নর সনাতন, বা গতকাল ছিল না আগামী দিনেও
থাকবে না ভার পিছনে দৌড়ানো—এই বৈধ-ভাব, এই
বিরোধ-ধর্ম জীবের সহজ সংস্থার। আজ মাহ্র্য উন্নত
হ'য়েছে। সে প্রকৃতির মাঝে নিজের হান পেরেছে এবং
প্রকৃতির বহু রহস্ত নিজম্ব করেছে, তবু আরো জানবার,
আরো পাবার, আরো প্রসারের আহ্বান ভার ক্রয়ের
উৎস মুধ হতে সদাই উলগত। সে আহ্বান যেমন শিশু
ও বনচারী পোনে, তেমনি মহাযোগী মহাজ্ঞানী পোনে।

সে আহ্বান নির্দেশ করে এক প্রচণ্ড অনাদি অনম্ভ শক্তিকে। কী সে শক্তি—আমার সাঁথে বার অবিচ্ছিন্ন সম্পর্ক বিজ্ঞমান ? আর কী সে সম্পর্ক ? আদিম বনচারী প্রকৃতির কন্ত মূর্ডিতে ভয় পায়, শান্ত মূর্তিতে শান্তি পায়। অবচ বোবে তারা একই বিরাট শক্তির বিভিন্ন বিভান বিকাশ। অতি বৃদ্ধিমানও বিশ্বে বিরাট শক্তির সন্ধান পায়, কিছ তাকে বলে অন্ধশক্তি। তার অরপ জানবার ওৎক্কা সাধারণ। স্বারই মনে প্রশ্ন ওঠে—"কে সে ? জানিনা কে। চিনি নাই তারে, গুধু এইটুকু জানি, তারি লাগি রাত্রি অন্ধকারে চলেছে মানব বাত্রী বুগ হতে ব্গান্তর পানে, বড় ঝঞ্চা বজ্রপাতে, জালারে ধরিয়া সাবধানে অন্তর প্রদাপথানি।"

আন্তর প্রাদীপ স্বারই জলে ওঠে। কে জালায়, কেন জলে—এই সমস্তার সমাধানে দেশে দেশে, যুগে যুগে, কালে কালে প্রচার করেছেন বাণী—সাধু সন্ত জন্তা ও অবতার।

এ দেশের কৃষ্টি বীরের মত এ সমস্তার সন্মুখীন হরেছে বহুকাল। ঋষিরা বিভিন্ন উপনিষদে, এই বিরুদ্ধ অভাবের বথেষ্ট কারণ নির্দেশ করেছেন। অগতের এই বৃদ্ধ ও মিলন, স্থাখের পর ছঃখ, ছঃখের পর স্থা, বিষয়-বিষের প্রকৃতি জেনেও সদা সেই হলাহল পানের ত্বা এবং বা ক্লিক তার চাকচিক্যে মুদ্ধ হরে পরক্ষণে নিরাশার ক্রাণাত সন্থ ক্রবার প্রবৃত্তিকে আর্যাশান্ত নাম দিয়েছেন—মারা। এ মারা প্রকৃতির উপাধি, কারণ প্রাকৃতি তি ওগদারী।

শ্রীমন্তাগবলগান্তা সকল উপনিবদের সার। উপনিবদ গান্তী, দোঝা গোপাল-নন্দন, পার্থ বৎস, স্থাী মহান গীতামূত ছুগ্নের ভোক্তা।

গীতার মাহুষের প্রকৃত বভাব, তার আচরণ, সংস্কার, স্পুহা এবং অন্তর বাহিরের নিত্য সংগ্রাম উপেক্ষিত বা শাস্থিত হয়নি। এ শাস্ত্রে জীবনের সাধারণ গতি ও সহঞ সমস্তার বর্ণনা আমাদের অন্তরের তাবে ঝহার দের। তাই গীতা পাঠে তৃপ্তি। সাধারণ পর্ব-প্রদর্শকের মতো শ্রীকৃষ্ণ মাত্র বীজমন্ত্র বা তপজার উপায় নির্দ্ধারণ ক'রে ক্ষতি হননি। বৈশ্বাগ্য-সাধন তাঁর শিক্ষা নম্ব। বিফলতা মাহুষকে বিকল করে, বিদ্রোহী করে। গীতা তেমন সমস্তার কারণ নির্বয় করেছেন। আত্ম-ক্সানই অব্যয় তত্ত্ব-জ্ঞান। আশাবাদ জীবের রহস্ত। ত্রন্ত নিরাশা ও ব্যর্থতার ঝঞ্চার অভিযান হ'তে কি প্রকারে আশা প্রদীপকে সদা প্রজ্জনিত রাখা বার, শ্রীক্তফের শ্রীমুখে তার রহস্ত অতি স্পষ্ট ভাষায় विषय-छार्व वर्निङ इरग्रह्म। कर्मरे छीरवत औवन। कर्म অনিবার্যা। কর্মের পটভূমিতে যে উদ্দেশ নিছিত, সৃষ্টি-তত্ত্বে তার সন্ধান। - হৃষ্টি-তত্ত্বে আলোচনায় অস্তার পরিচয়। দে পরিচয় বোধগম্য হ'লে বুঝতে পারা যায়—কেন আভিক্য বুদ্ধি সকল মাছাবের সহজ সংস্কার। সকল ভারের, সকল শ্রেণীর মাহুবের হাদয়ে খভাবত: আন্তিকা-বৃদ্ধি বিজ্ঞান। ভার অনিবার্যা পরিণতি ভাক্ত।

মাহ্মকে নান্তিক হতে ২য় এই সংজ্ঞাত মনোবৃত্তির সঙ্গে সংগ্রাম করে, তার ভক্তির উৎস-মুধ ২দ্ধ করতে হয়— তর্ক এবং তথাকথিত বিচার সিদ্ধান্তের বোঝা চাপিয়ে।

এই সংজ্ঞ আণ্ডিক্য-বৃদ্ধির সংক্ষেপে থেডু নির্দেশ করেছেন জ্রীক্ষণ। তিনি বলেছেন—অর্জুন, ঈশ্বর সর্বভৃতের ক্ষেশে বাস করেন। সর্বভূত মারার বশে যন্ত্রারচের মত পরিজ্ঞমণ করে। তিনি অক্তর বলেছেন-

"আমি সকলের হাদরে সমিবিষ্ট। স্থাতি বিস্থৃতি, জা ও অক্তান সবই আমা হ'তে। চারি বেদের অফুশীলনে ফলে আমিই জাতব্য, আমিই বেদ-কর্তা এবং বেদ-বেদ্ধা।"

শ্রীতৈতক্ত-ভাগবত বলেছেন—

পরব্রন্ধ নিত্য **শুদ্ধ অথও অ**ব্যর পরিপূর্ণ হই বৈদে সবার **ভাদর**।

স্তরাং প্রাণের বৈধ-ভাবের ছটি হেতৃই জীবের স্টি-রহছে বিভাষান। আমরা অনিভাের পিছনে ছটি মারার বশে অধচ অকরে স্বর শুনি নিজের মাঝে তাঁকে পুঁজে বাং করবার। আমাদের সম্প্রদারণের অদম্য স্পৃহার হেতৃ— হদদেশে ঈশ্বের অভিত্ব।

সম্প্রদারণের বাগন প্রেম। সে প্রেম নানারণে প্রকৃতিত হয়। সে প্রেম সহজেই শিশুনরের প্রাণে বিভামান। রেহের প্রতিমাদেধে সে জননীকে। তার সহধ্ মাতৃ-ভক্তি পরা-ভক্তির ছারা। বহির্জগতের মাধুরী, মহত্ব এবং কঠোরতা অজ্ঞ বনচারীর মাধা নত করে জ্ঞান পুরুদ্ধিত শক্তির পাদপীটে। এ ভক্তি সহজ্ঞ—সহজাধ জ্যান্তিক্য-বৃদ্ধির পরিণতি।

দৈবী মায়া ত্রতিক্রমা। জীকুক বলেছেন—বার আমাকে পান, তারা মায়া অতিক্রম করেন। এই মায় অতিক্রম করলে পুনর্জন তঃও হতে পরিক্রাণ।

আমাদের অন্তরে যে আন্তিকা-বৃদ্ধি বিশ্বমান, অথচ মোহে ঢাকা সেই আবরণ উন্মোচন করলে অস্টার বিরাট স্পষ্টির রহস্ত উন্মোচন হয়। প্রাণে গুঞ্জরিয়া উঠে—

ভোমার অসীমে প্রাণ-মন লবে বভদুরে আমি বাই কোথাও ছঃখ কোথাও মৃত্যু কোথা বিচ্ছেদ নাই।



বিশ্বের বিখ্যাত পত্রাবলী

অধ্যাপক ডাঃ শ্রীমাথনলাল রায় চৌধুরী শাস্ত্রী

নিৰ্কাসনের পূৰ্বে টুট্মীর পত্র

ণত্ত পরিচয় :---

লেনিন, টুট্কী, স্টালিন রাশিয়ার এরী; জারতম বিজয়ী। গুার রূপ বিপ্লবের ইতিহাসে লিখেছেন—"বিপ্লব আমার ক জননী, আমি বিপ্লবের সন্তান।"

১৯১৬ সাল—প্রথম বিষযুদ্ধ বিতীয় পর্যায়ে এসেছে। ইংলও, ফ্রান্স বং রালিয়া জার্মান সামাজ্য বংগের রক্ত সমবেত। বংলেশ, বজাতি, জ্যের নামে বিভিন্ন লার্থ ও ঐতিহ্য সম্বেও শত্রু জার্মানীর বিরুদ্ধে গরা বৃদ্ধক্ষেত্রে উপস্থিত।

প্রার অর্থনতানী ধরে রাশিরার লেনিন, নার্মানীর কার্লমতের ছাত্রতন করে বিশ্ববাণী এক সমাজতন্ত্র গঠনের দাবী জানিয়ে অপ্রসর ছিল। তার শিষ্ঠ টুট্কী ও ষ্টালিন সমত্ত পৃথিবীব্যাপী আন্দোলন রিচালিত করে চলেছেন। তাঁলের আঘাতের প্রথম লক্ষ্য ছিল রাশিরার গুরতর। বর্তমান পৃথিবীর প্রত্যেক সাত্রাজ্যের ভিত্তিই ধনিকের ধনতর। ারাই সাত্রাজ্যের নামে জাতীরতার নামে প্রমিক আন্দোলনের 'ঠরোধ করছিল। কারণ সমাজতত্তীদল বুদ্ধের বিরোধিতা করেছেন। ্ৰক দেশেই বছ সমাজতাত্ত্ৰিক নেতা দেশৱক্ষার অস্ত বুদ্ধে বোগ ছিলেন, কারণ, দেশ বিপন্ন। তাদের মধ্যে অক্সভম ছিলেন করাসী ক্লতত্ত্বী কলে ওরেদা। তিনি পূর্বে লেনিনদলের করাসী শাণার াধ্যাত লেখক ও নেতা টুট্কীর সহকর্মী ছিলেন। বুদ্ধের সময় জুলে াদা করাসী রাইমন্ত্রীর পদ গ্রহণ করেছিলেন। তিনি রাষ্ট্রের প্রয়োজনে ছের প্রয়োজনে তার প্রাক্তন সমাজতন্ত্রী বন্ধু ট্রটস্কীকে করাসীদেশ কে বিভাড়িত করেছেন। টুটুকী সম্পাদিত "নামে স্লোভা"—"আমাদের 'ববী" সংবাদপত্ৰ করাসী দেশ খেকে নির্ব্বাসিত করলেন। নির্ব্বাসনের র্মবৃহতে টুটকী লিখলেন এই অপক্ষপ পত্র।

াত্রাহ্বাদ :—

बाडेबडी क्रम श्राहमा,

আৰি হরাসীদেশ ত্যাগ করে বাজি, অবশু আমার সজে আপনার মরোজিত পুলিশবাহিনী ররেছে। তারা আপনার অধীনে দেশের ।ধীনতা রক্ষার দারিছ আপনার হতে ও আছে। আনার হরাসী দেশ ত্যাগের পূর্বের আপনার কোনার নোভাব লানিরে বাব। অবশু আমার কথাগুলি আপনার কোন রোজনে আসবে না, হয়ত বা ভবিহতে আপনার বিরুদ্ধে প্রয়োজিত তে পারে। আমাকে হরাসী দেশ থেকে নির্বাসিত করা হরেছে; ।পনার সহকর্মী বুভ্নত্রী আমাকে নির্বাসিত করেছেন। আমি

রাশিনান সংবাদগত্র "নাশে ব্লোভার" (আনাদের পৃথিবী) সম্পাদক ছিলান ; তিনি সেই পত্রিকার প্রচার করাসী দেশে বন্ধ করেছেন। অবপ্র ভার কক্ত কোন কারণ প্রদর্শন করা প্রয়োজন মনে করেন দি। এই পত্রিকাথানি বিগত ছুই বংসর বাবত বৃদ্ধানীর হত্তে কত অভ্যাচার সহ্চ করেছে, ভা' আপনার অক্ষাত নয়।

জবন্ধ আমার নির্কাসনের কারণ সহক্ষে কোন তথাই আমার জক্তাত নাই, সে কথা আর্মি গোপন করব না। একলন আম্বর্কাতিক সমানত্তীর বিক্লমে দমনাত্মক ব্যবহা করার প্ররোজন আপনার ছিল, কারণ আমি সাত্রাজ্যবাদী বৃদ্ধের পক্ষ সমর্থন ক্রিনি, অথবা আমি সেবুছে বেচছার কোন সহারতা করিনি।

কিন্ত মলার ব্যাপারটী হচ্ছে এই বে, নির্বাসন হয়েছে আমার, এবং আমাকে নিয়ে হয়েছে আলোচনা, অথচ নির্বাসনের কারণ আমাকে না জানিরে মসিরে বির্গ। রাষ্ট্রসভার সভ্য এবং সাংবাদিকদের নিক্ট তথাটী প্রকাশ করেছেন।

গত আগষ্ট মাসে মাসাহি-এর অদুরে একদল বিজ্ঞাহী রূপ সৈপ্ত তাদের কর্ণেলকে হত্যা করেছিল। অনুসন্ধানের কলে জানা গেল বে, এই হত্যাকাণ্ডে জড়িত সৈক্তদের কাছে আমার সম্পাদিত "নাশে স্লোভা" সংবাদপত্রটী আবিষ্কৃত হরেছে। মসিয়ে ব্রিয়া এই আবিভারের সংবাদ ক্ষেক্জন রাষ্ট্রসভার সভ্যের নিক্ট বলেছেন এবং গ্রারা এই স্ক্সংবাদটা রাশিয়ার ধনতান্ত্রিক সংবাদপত্রের নিক্ট সালংকারে প্রেরণ

একখা সভ্য বে, মসিরে ব্রির "নালে স্লোভা"কে এই হত্যাকাণ্ডের লক্ত দারী করতে সাহস করেন নি, কারণ "নালে প্রোভা" পজিকার প্রত্যেকটা সংবাদ তার অসুমতি নিরে প্রকাশিত হরেছে। তবে মসিঁরে ব্রিয়ার মনোভাব অনেকটা এইরূপ:—রানিয়ার সৈক্তবল করাসী বেশে অবস্থান কালে "নালে স্লোভা"র মতন সমাজতান্ত্রিক সংবাদপত্র জনসাধারণকে উত্তেজিত করে তুলবে; স্থতরাং ঐ পত্রের সম্পাদক্ষরভাগিক গণতান্ত্রিক করাসী দেশ থেকে বিতাড়িত করা প্ররোজন। বে সমাজতান্ত্রিক সংবাদপত্র সাম্রাজ্যবাদের সাহাব্যে কাল্লনিক এবং মিখ্যা সংবাদ প্রচার করতে অধীকার করে, সে হরত রালিয়ান সৈক্তবের মনকে বাধীন চিন্তা করতে শেপাতে পারে। সৈক্তবের পক্ষে সম্বাভ্রের করা রাষ্ট্রের পক্ষে সম্বভ্রের কর। বিরাধির করা রাষ্ট্রের পক্ষে সম্বভ্রের কর।

ভূডাপ্যের বিষয় এই বে, মসিরে বির্মার ব্যাখ্যার মধ্যে বিশরীতার্থক কথা রয়েছে; একবৎসর পূর্বেই করাসীমন্ত্রী হার্ডে রাশিরান আজন-আর্থাদের বিষয়ে প্রচার করেছিলেন বে, বদি তাদের নির্বাসিভ করা হয় তবে করানী জনসাধারণ সেই সিভাত বিসাক্ষিবাদে বীকার করে

4

বেৰে। স্তরাং কর্ণেন হত্যার সক্ষে কি এই নির্কাসনের বিশেষ সম্বদ্ধ আছে ? অধ্যাপক ুড়ুর্কহাউম বলেছিলেন বে "নাণে স্নোভা" ও তার সম্পাদকের নির্বাসন আসর।

রাশিয়ার কর্ণেলের হত্যা এবং অধ্যাপক ভূর্কহাইমের বিবৃতির রধ্যে একটা হাসলভি আছে। আমাদের সম্পাদকষণ্ডলী এই ঘটনার বিষয় অনুসন্ধান করে প্রমাণ পেরেছেন বে, রাশিয়ার সৈত্তপণকে শুপ্তচর এই কার্ব্যে প্রেরাচিত করেছিল। ফরাসী রাষ্ট্র সাধারণভাবে রাশিয়ান আপ্রমপ্রার্থী সৈম্পদের আভিপ্যে বক্তিত করে দেশ পেকে ভাড়িরে দিতে পারে না, স্তরাং তাদের বিতাড়িত করতে হলে একটা বিশেব কারণ দেখাতে হবে। বে সৈক্তমল ভাদের সেনাপত্তিকে হত্যা করতে পারে, তাদের উপস্থিতি যুদ্ধনিরত ধরাসীদের পক্ষে বিপক্ষনক। রাশিয়ান আপ্রমপ্রার্থী সৈত্তনক করাসীদেশে অবাঞ্চিত অভিবি। অবশ্র প্রার্থানক শুপ্তচরটী রাশিয়ার কারেরই নিবৃক্ত লোক।

জুলে গুঃরনা, আপুনি ফরাসী সাধারণতন্তের মন্ত্রী। জাপনি ইচ্ছা করলৈ এই বিবরের জভ একটা অনুসন্ধান সমিতি নিযুক্ত করতে পারেন। তবে জামার বিশাস এবং বোধহর জাপনারও বিশাস, অনুসন্ধানের ফলে কোন কাজ হবে না। কারণ রাশিরান জার ও ফরাসী রাষ্ট্রের মধ্যে সাম্বাজ্যবাদী দৈত্রী রয়েছে।

এই যুদ্ধের প্রথমভাগে অবভা আপনার বন্ধু "দেমবঙ" করাসীমন্ত্রী রূপে রাশিরান বিপ্লববাদীদের সঙ্গে রাশিরান জারের একটা বোঝাপড়ার চেষ্টা করেছিলেন এবং দেই উদ্দেশ্যে বিপ্লবীদের অনেক
প্রবোজনও দেখিয়েছিলেন।

বিগত ছাবিশে মান ধরে রাশিরা, ইংলও, ক্রান্স যুক্তর ক্রোগে একতা কাল করেছে। ইংলও, ক্রান্স ও রাশিরার শাদনতদ্রকে একটু উদারভাবাপল্ল করতে চেটা করেছিলেন কিন্তু ফল বিপরীত হয়েছে। কারণ রাশিয়ান লারতন্ত্রই ইংলও ও ক্রান্তের শাদনতন্ত্রকে জারভাবাপল্ল করে তুলেছে। এই ছুই দেশেই পুলিশ এবং দৈহাদেরই ক্রাণ্ডারাক্ষ ।

লয়েত কর্জ এবং মসিরে বিশা বর্জনান বৃদ্ধ পরিচালনা করছেন। মনে পড়ে কুলে গুরেলা, আপনি আপনার প্রথম জীবনে এই চুই জনের স্বাক্ষে কি অভিমত প্রকাশ করেছিলেন ? এই চুইটা প্রাণী বর্জমান বৃদ্ধ পরিচালনা করছেন। এই চুইজনই বৃদ্ধের ভালমন্দ নীতিরীতি, ব্যক্তি ও সমস্তির সংখাত নির্ধারণ করছেন। রুশ-জার্পানসন্তান ই,রমার রাশিয়ার প্রাচীনগন্ধীদের প্রতিভ্রমণে রাইনতা পরিচালনা করছেন। ইংলিশ লয়েত কর্জ্জ, করাসী মসিরে বির্গা এবং রাশিয়ান ই,রমারের অপ্র্কামিলন—তিনুর্বির সমবর। অবশু করাসী রস্ত্রী কুলে ওরেলা এই তিনজনের অনুপ্রেমণার অনুপ্রাণিত। আপনার কর্প্রের বিরোধিতা লা করে থাকতে পারে ? আপনি করানীবেশের সমাজ্বীবার বাপর ব্যক্তির ক্ষেত্রত ভালের ভ্রমির বিরোধিতা লা করে থাকতে পারে ? আপনি করানীবেশের সমাজ্বীবার বিরোধিতা লা করে থাকতে পারে ? আপনি করানীবেশের সমাজ্বীবার বিরোধিতা লা করে থাকতে পারে হ আপনি করানীবেশের সমাজ্বীবার বিরোধিতা লা করে থাকতে পারে হ আপনি করানীবেশের সমাজ্ব ভ্রমির ধনিক সমাজের জ্বরাঞ্যির গান গ্রের চলেছে। অথচ

জুলে গুয়েদা একদিন ধনতত্রীদের কি ভীবণ বিরুদ্ধাচরণ করেছিলেন। মনে পড়ে অভীত দিনের অনেক কথা।

এই বিগত হাই বংসরের যুদ্ধে মানুষকে কত ছ:খ, ছর্দ্দণা, অন্তার, অত্যাচার, কত রক্তপাত সহু করতে হয়েছে। রাষ্ট্র প্রকার সম্পত্তি নুঠন করেছে; প্রকার নিকট সহত্র অপরাধ করেছে, অবস্তু আমরা ভবিত্বংবাণী করেছিলাম যে এই যুদ্ধ এই রক্মই হবে। অনুলে গুয়েমা, আপনি ফরানী জনসাধারণকৈ অবস্তু একটা গর্কের কথা বলতে পারেন যে, ফরাসীআতি জার্মান উইলিয়াম কাইজার এবং অপ্তিরান ফ্রান্সিন জোসেফের মতন অপরাধী নয়; জার নিকোলাম এবং মসিরে গ্রুকার আপ্তর্জাতিক যুদ্ধ নীতিগুলি জার্মানী অস্ট্রিয়ার মতন নির্মান্তাবে প্রদানিত করেন নি

করাসীদেশে একটা নৃতন শ্রমিকদল গড়ে উঠেছে; বুংদ্ধর উন্নাদনার ভিতর দিয়ে তাদের জাগরণ এসেছে; এই 'বিশ্ববাপী বুংদ্ধর সম্মাদর্শী পরকার এবং বিশ্ববাপী বাংদ্ধর সম্মাদর্শী পরকার এবং বিশ্ববাপী বাংদ্ধর সমাদর্শী পরকার পারে না। আপনি জুলে শুরেদা, আপনি না একদিন এই দরিজ জনগণের নেতা ছিলেন! আর আর আপনি বির্মার পদততে নিজের মন্ত্রহুকে বিসর্জন দিয়েছেন। আপনি শ্রেণী-সংগ্রামের অন্তর্গানে যা' কিছু শিথেছিলেন, তা' আছু সাজ্রাজ্যের চরণে উৎস্যক্রেছেন।

করাসী সমাজতল্লগঠনের গৌরবময় ইতিহাস কি আপেনি বিশ্বং হয়েছেন ? পরিলালী বাহিনী বুদ্দের জক্ত নুহ রচনা করে গেছেন কত বীর এই আদর্শের জক্ত আজোৎসর্গ করে গেছেন, কিন্তু আছ তাদের কি অধঃপতন !

বে ফরাসীদেশ সেন্টসাইমন, ফুরিরে, ব্রাহ্ন, কমিউনে, জুরে বাবিযুক সমাজতপ্রীকে গড়ে তুলেছিলেন—তাঁদের মধ্যে জুলে গুরেদাং আছেন। তাদেরই একজন আলবাট টমাস রালিয়ার রোমানা সম্রাটদের সজে কন্সতান্তীনাপল অধিকার করার বড়যন্ত্র করছেন তাদেরই একজন সেমবাত ফরাসী সভ্যতার ধ্বংসজ্ঞপের উপটোর তরল ধনতান্ত্রিক সভ্যতার প্রমোদকানন রচনা করেছেন! করার্টদেশের সমাজতপ্রী সন্তান জুলে গুরেদা আজ মসিরে বিশ্বাধিরপা অনুসরণ করে চলেছেন।

শাসক সম্প্রদার এই নির্মান বুজের অবসরে ফরাসী অনগণের শেরজবিন্দু শোষণ করে নিরেছে। তারা কি আজ এই অত্যাচার বিব্
প্রতিবাদে অবনত মন্তকে এইণ করে নেবে? আপনি ভূল করছে

—প্রতিবাদ আরম্ভ হরে পেছে। সামরিক বিধান সম্বেও বুদ জাতীরতার উচ্চ্বাদ সংবেও, সকল ফরাসী সম্ভানের মধ্যেই বিজ্ঞাহে
বীল্ল অংকুরিত হরেছে।

করেন বে কোন বথার্থ সমাজতারীবাধী আপনার ও আপনার কর্দ্মের আপনি "নাপে রোজা" সংবাদপত্রের কঠরোধ করেছেন, কি: বিরোধিতা না করে থাকতে পারে ? আপনি করানীদেশের সমাজ- এই সংবাদপত্রথানি করানী সমাজতত্রের আবেট্টনীর মধ্যেই পরিবর্দ্ধি উত্তীদের বেরুছও জেলে বিরেছেন। তারা আজ ধনতারিকদের সজে হরেছে। 'নাপে রোডা' রাশিরাতে ক্ষমণাত করেছে সভ্য, কিন্তু ভা কুর মিলিরে ধনিক সমাজের জারবাঞার গান পেরে চলেছে। অবচ এ জারকুমি থেকে বিচ্ছির হরে করানীদেশে নৃত্স বাস্কৃমি রচনা করেছে াপনি তার কঠরোধ করলেও দে করাসী আন্তর্জাতিক সমাজত্ত্রীদের

র প্রকাশ করছে অবস্থা অত্যন্ত অসম্পূর্ণ ও প্রচ্ছেমভাবে। আমর।
নবাছিত প্রবাদী" স্থপে বিক্রছনাদীদের সঙ্গে আমাদের ভাগ্য একপ্রে

বিত করেছি। তবুও আমর। গর্কিত বে আমরাই করাসী রাষ্ট্রের
র্ক্সিশম আঘাত স্থাকরেছি—অবস্থা সে আঘাত জুলে গুরেনার হাত
ক্রিই এসেছে।

আমরা আর্থাপদের প্রতি সহামুক্তিসম্পন্ন বলে অভিবৃক্ত হরেছি।
পানিও একদিন এই অপরাধে অভিবৃক্ত হঙেছিলেন। আপনার
ক অভিবৃক্ত হরেছিলেন প্রেবহানত। আরু আপনার কি ছুর্জাগা!
পাপনার স্বাক্ষরিত, আপনার মুক্তাক্ষিত আদেশপত্র দেশরক্ষার অন্তরালে
রাজতরীদের আভ্নুক্ত কর্ছে, তাদের কারাগারে আবছ কর্ছে।
আমি ওনলাম, আর্থাণিতে আমার বিরুদ্ধে অভিযোগ করা হয়েছে
বং আমার রচিত "বৃদ্ধ ও আন্তর্জাতিকতা" নামক প্রবৃদ্ধের সক্ত আমাকে
তি দেওয়া হয়েছে। আর্থাণ রাষ্ট্র বল্ছে, টুট্মী আর্থাণ-ছোহী।

আপনারা এ বিষর নি:সন্দেহ থাক্তে পারেন যে আমরা সমাজতন্ত্রী
্রেববাদিগণ প্রতিক্রিয়াশীল জার্মাণজাতির পক্ষে ভীবণতম শক্তঃ
ত ভাবণ যে আপনাদের সমবেত সমস্ত শক্তি অপেকা আমরা
ক্রিণজাতির পক্ষে অধিকতর ভয়াবহ। আপনাদের মিত্রশক্তির
ক্রতার পশ্চাতে ররেছে প্রতিযোগীর প্রতিষ্কী মনোবৃত্তি; আপনারা
রত স্বার্থের প্রয়োজনে বজুহুদ্বে আবদ্ধ হতে পারেন। কিন্তু আমরা
ক্রিণে শাসকসম্প্রদারকে অন্তরের সঙ্গে হুণা করি। শাসকপ্রেণীর
রুক্তে আমানের—বিপ্লবন্ধীক্ষক হুণার কথনো নিবৃত্তি হবেনা।

আলকের শক্র আগামীকাল আবার সাম্রাজ্যবাদের প্রয়োজনে বজু রে যেতে পারে। যদি জার্মাণ সাম্রাজ্য ধ্বংসের নীতি গ্রহণ করে, বে হরত দশ বৎসর পরে ইংলগু, ফ্রান্স এবং রালিয়া বস্তুত্তরে কো বাবে। হয়ত একজন নৃতন পর কার জন্মাবেন যিনি কাইজার ইলিয়ামের সঙ্গে তারবার্জা প্রেরণ করে অভিনন্দন বিনিমর করবেন। রত আর একজন লয়েড জর্জ্ঞ ধর্ম্মবাজকের ভাষায় মল্লযোদ্ধার মতন রপেন আফালন করে রালিয়াকে অভিসম্পাত করবেন; হয়ত বা রাসী রাজনৃত আলবার্ট ট্নাদের মতন জার্মাণ রাজান্তঃপুরিকার হস্ত বক্রের মারকিচ্ছুক্রপে বেতপদ্বগুচ্ছ গ্রহণ করবেন। এই তো ক্রিনীতির সহক্ষ কর্ষা।

আর আমরা বেমন আছি ভেমন শাক্রো। জার্মাণ শাসকদের চ্প্রতিজ্ঞ শক্ত আমরা। কারণ আমরা রাশিরান জারতত্রকে বেমন পা করি, তেমনি হুণা করি ফরাদী ধণিকতত্রকে—তার চেরে বেশী পা করি প্রতিক্রিয়াশীল জার্মাণকে। আপনি এবং আপনার রেরিচিত সংবাদপত্রগুলি জার্মাণ সাজাজাবাদীদের শক্তর প্রতি প্রসর বিং ভাদের প্রশংসায় পঞ্চম্প। আমরাও জার্মাণ সাজাজাবাদীদের ক। স্বতরাং আমরাও ভাদের সমপ্রাক্রে শিভিরে আছি। আমাদের কে ভাদের বোসস্ত্র রয়েছে। সভবতঃ আপনারা ধারণা করেন ব, আমরা সংগ্যার অভাত্ত অল ; আপনার প্রিশের ধারণা ভাষাদের

সংখ্যা সক্ষে বথার্থ সর। পুলিশ তাদের ভ্ডেয়র দৃষ্টভান্ধ নিরে বিজ্ঞানের অন্তর্মান্তার উৎসের সন্ধান পার না। তারা বৃষ্ঠতে পারে না বে, তুঃপের আঞ্জন থেকে যে ক্লুলিক বেরিয়ে আসে তাই পরে বিজ্ঞাহ-বহ্লিরপে বিস্তার লাভ করে। করাসী দেশের প্রত্যেক প্রবিক্রের ক্টারে, প্রত্যেক কুষকের হারে, প্রতি বিপনীর প্রক্রেটে, বৃন্ধক্ষেরের প্রত্যেকটী পরিখা থেকে তুঃথের জনন ক্ষলে উঠছে।

কুলে গুলে।! আপনি করানী নারী সমাজভরীদের নারিকা
নুইজা ক্ষনোকে কারাক্সক করেছেন, কারণ তিনি বৃদ্ধের প্রতিবাদ
করেছেন। তার কলে করানী নারীদের মধ্যে হতাশা হ্রাস হরেছে
কি ! ফরাসী পুলিশ বৃদ্ধের নামে কত করাসী সম্ভানকে কারাক্সক
করেছে তার ইয়ন্তা আছে কি ! বৃদ্ধের পরে করাসী নারী তার বাষী
কিবে পাবে কি ! মাতা তার পুত্র ফিবে পাবে কি ! সম্ভান তার
স্বেহময় পিতার ক্রোড় ফিবে পাবে কি ! আল বারা ফরাসী
লাতিকে প্রতারিত করেছে, প্রতারিত ফ্রাসী লাতি তাদের কথনো
বিবাস করবে কি !

বকু খুলে গুরেদা—আপনি আপনার সামরিক চক্রবান পরিত্যাপ করন। ধনতাত্রিক রাষ্ট্র আপনাকে বে কারার অবরুজ করেছে তা' পরিত্যাপ করন। একবার আপনার চতুর্দিকে দৃষ্টিপাত করন। হরত ভাগ্য আপনার প্রতি প্রসন্ধ •হতে পারে। আপনার জীর্ণ কারাগৃহের বাহিরে গাঁড়িরে গুনুন—অনাগত যুগের ঘটনাবলির মৃক গর্জন। ঐ সেই ধ্বনির অফুট আর্জনান, আমরা তাকে সাদর সভাষণ আনাছি। আমরা তাদের অভিনন্দনের মন্ত প্রস্তুত্ব হছি। যদি প্রমিক অনগণ প্রতিশোধের মন্ত বজপরিকর হয়, আমাদের মতামুখায়ী প্রতিশোধ গ্রহণ করে, তবে করাদী ধনতক্রের অবস্থা কল্পনা করতে পারেন কি ? সেদিন ফরাদী দেশে জুলে গুরেদার ছান হবে না, আপনার কর্মক্রের সেদিন নিশ্চিন্দ হয়ে যাবে।

আপনার আদেশে আমি নির্বাসিত হরে ফরাসী দেশ ভাগে করে বাছিছ। আমার বিবাস আছে শেব পর্যন্ত আমরা জরী হব। আপনাকে আমি অতিক্রম করে ফরাসী দরিজ জনগণকে অভিনন্দন জানাছিছ। তারা যে আজ নিজেদের ভবিশ্বৎ সম্পক্ষে জাগরাক, আপনাকে উপেক্ষা করে, আপনার বিরোধিতা সংহও সমাজতমী করাসীদেশ দীর্বজীবী ছউক।' ইতি—

সিমেঁ৷ টুটকী,—

পত্র পরিণাম :--

পিওল টুট্ঝীর জন্ম ১৮৭৭ সালে, ২১ বৎসর বন্ধসে ১৮৯৮ সালে টুট্ঝী বিদ্নবাস্থক কার্ঘ্যের জন্ম সাইবেরিয়া প্রান্তরে নির্বাসিত হল। ১৯০০ সালে টুট্ঝী রাশিয়াতে প্রত্যাবর্ত্তন করেন এবং সেউপিটারস'-বার্গের সোভিন্নেট দলের সভাপতি নিবৃত্ত হন। তিনিই প্রথম "চিরন্তন বিদ্নব" (Permanent Revolution) পরিকল্পনা করেন কারণ তার যতে একটী সালে গেশে সমাজভন্ম প্রতিষ্ঠা হলেই সমাজভন্মের সক্ষরতা হবে না, বিশ্বয়াপী সমাজভন্ম হাপিত না হলে এই আদর্শের

কোন ব্ল্য নাই। ট্রাট্কী আবার কারাক্ত হলেন। আবার প্রারন্ত করনেন—এবার ভিন্নের। সেই সমর থেকে তিনি অবিপ্রান্ত ভাবে বিয়বাল্পক কর্মে নিজকে নিরোজিত করনেন—তিনি আবর্শ প্রচার করেছেন, পত্রিকা সম্পাদন করেছেন, ১৯১৭ সালের বিজ্ঞাহ পরিচারলা করেছেন, পত্রিকা সম্পাদন করেছেন, আবার নির্বাণিত হরেছেন, তার শ্রীবনের সলে রাশিরান বিজ্ঞাহ অভ্রেভতাবে ক্র্ডিড, তিনি ব্যক্তিরত অভিজ্ঞতা দিয়ে "রূপ বিজ্ঞাহের ইতিহাস" রচনা করনেন। বে ঘটনা তিনি হাই করেছেন—সেই ঘটনার ইতিহাস তিনি রচনা করেছেন। হতরাং ব্যক্তিগত স্পর্শে গেই ইতিহাস হরে উঠেছে শ্রীবন্ত, এই ইতিহাসের রখ্যে পাই—"মতীতের সঙ্গে ভবিন্ততের তীরে সংবাতের গত্যীর গর্ম্মন।"

১৯২৩ সালে লেনিনের স্বৃত্যুর পর ১৯২৭ সালে ট্রট্কীকে ট্রালিন মল থেকে বহিন্ধত করনেন। তার পর তাকে তুর্কীয়ানে নির্বাসিত করা হল। জনৃষ্টের পরিহাসে ১৯১৬ সালের করাসী বিবেশকা ১৯২৯ সালে পরিবর্তিত হরে ট্রট্কী পুনরার করাসীবেশে বাস করবার অধিকার পেলেন। তিনি প্যারিসের উপকঠে বাস করতে আরক করলেন। কিন্তু বৃদ্ধিমান শ্রালিন করাসী সরকারের নিকট অভিবোগ করলেন—ট্রট্রী কিরতের হত্যাকাওের লভ দারী। ট্রট্রী শ্রালিনের শব্দ, ট্রট্রী অভিবোগ করলেন, "শ্রালিন রাশিরার বিরোহের বিরুদ্ধে বিরোধিতা করেছেন, শ্রালিন বিধাসবাতক।" এই আঘাত প্রতিবাতর পর ট্রট্রী পুনরার চললেন বাবাবরের মতন। পৃথিবীর কোষাও তার আত্রর নেই, পরে ১৯৩৬ সালে তিনি সামরিকভাবে আত্রর পেলেন নরওরে দেশে। এক বৎসর পরে ১৯৩৭ সালে মেফিকোতে বিত্রাম-আবাস হাপন করলেন। তিন বৎসর পরে বেকস্ মারসভ, তাকে হত্যা করল। ট্রট্রীর বিধাস, এই হত্যার মূলে রয়েছে শ্রালিনের প্রভ্রের হন্ত । ট্রট্রীর সর্বাশেষ বাণী ছিল—"ক্রামানের বন্ধুনের বনুন, আমি চতুর্ব আন্তর্জাতিক লব্ধ সম্বন্ধে বিঃসন্দেহ। এগিরে চনুন।"

রহস্থময়ী

শ্রীসাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

বল দেখি দেখা হোল কত দিন পরে ? कछ मिन ? मत्न इष दिन यूशीखदत ছিলে ভূমি একান্ত নিকট মোর। কথন না জানি কেন কাটিয়া বন্ধন-ডোর চলে গেলে কোথায় না জানি; ছঃসহ দিনের তিক্ত জীবনের গানি বহিয়া এলাম একা। অনেকের সাথে মোর পথে হোল দেখা, মেথিম নিকটে মোর; অশান্ত চিত্তের অন্তরালে ভূমি বেন পা বাড়ালে অতি সম্বৰ্ণণে; ভাই বুঝি মনের দর্পণে পড়েছে তোমার ছারা বারবার সচকিয়া মোরে। ভাই 审 খপ্ন খোরে ডেকেছি ভোমারে বারেবার चुनिया त्रायिह बाब--

আশা ছিল যদি কোনও দিন শেভাপুত আরাম বিহীন আমার এ শৃষ্ঠ ঘরে ফিরে আগ নিভান্ত খেয়ালে, দাপ-নির্বাবের আগে ছায়া তব পজিবে দেয়ালে। সেদিকে চাহিয়া মোর পরিপ্রান্ত আঁথি ভোমা পানে উন্মীলিত থাকি আশা ভ'রে হবে কম্পদান, পল্লবে পল্ল হ'বে যেন শতবর্ষের সমান। ছায়া যদি কায়া হ'বে ফিরিয়া দাঁড়ার সে মৃহুর্ভে মন যদি আপনা হারার তব্ও ত আমার সন্মুৰে পরিচিত সে স্থলর মুখে দীপ শিশা দিবে ভার আলো कांग क'रत प्रत्य नव की माधुर्य जामारत जूनारना, ভুলালো সংসার মোর ভুলাইল আমার ভুবন नव्यत्न टाक्त एवं की त्म ब्रह्ण-टायवन !



নবম পরিচ্ছেছ

বাষপুরীতে

রপুরীর প্রাকার-বেষ্টনীর মধ্যে অনেকগুলি প্রাসাদ
ছে; কোনটি সভাগৃহ, কোনটি কোষাগার, কোনটি
পাভবন; একথা পূর্বে বলা হইয়াছে। রাজকভা বে
সাদে বাস করেন তাহা অবরোধ; তাহার পাশে রাজার
স্পৃথক ভবন। উভয় প্রাসাদের মধ্যে অলিন্দের
হবাগ; উভয় প্রাসাদ ত্রিভূকক।

রাজপ্রাসাদের নিমতলে এক পাশের করেকটি কক রা সন্নিধাতা হর্বের বাসস্থান। রাজ বৈভবের তুলনার র অপকৃষ্ট হইলেও সাধারণ মাহ্যবের পক্ষে ঐশর্বের রাজ। কঞ্কী লক্ষণ চিত্রককে এইখানে আনিরা বিভিত্ত করিল।

চিত্রক আতে আতে আসন পরিগ্রহ করিতে না রিতে কঞ্কীর ইন্দিতে করেকটা অস্তরাকৃতি সমাহক াসিয়া ভাহাকে ধরিয়া ফেলিল এবং ভাহাকে প্রায় উলক রিয়া সর্বাক্ষে সবেগে ভৈল মর্লন করিতে আরম্ভ করিয়া লি।

অভঃপর চিত্রক শীতল জলে সান করিয়া নবংস্ত্র পরিধান রিল; অব্দে চন্দন প্রলেপ দিরা আহারে বসিল। প্রচ্র াইক পৌলিক মোদক পরমারের আরোজন, ততুপরি ক্ষুকীর সবিনয় নির্বন্ধ। চিত্রক আক্ষ্ঠ ভরিয়া ভোজন বিল।

তারণর শরতের মেষণ্ডল শব্যার শরন। হুইজন হাশিত আসিরা অতি আরামদারক তাবে হন্তপদ টিপিরা ইতে লাগিল। এই আলক্ষত্থ বুদ্তিচক্ষে উপভোগ বিতে করিতে, পুরুষ ভাগ্যের বিচিত্র ভূকদ-পতির কথা ইতা করিতে করিতে চিত্রক যুবাইবা পড়িল।

ওবিকে সচিব চতুরানন ভট্ট মগধের লিপি পাঠ

করিরাছিলেন। তাঁহার আশহা মিধ্যা হর নাই, রাষ্ট্র-নৈতিক শিষ্টাচার সঙ্গন না করিয়া বতথানি রুচ্তা প্রকাশ করা বাইতে পারে ততথানি রুচ্তার সহিত শিপিতে বিটকরাজ্যের উপর নির্দেশ প্রেরিত হইরাছে—বিটকরাজ অচিরাৎ মগধের সার্বভৌমদ্ব শীকার করিয়া বক্রী রাজস্ব অর্পণ করুন; নচেৎ হুণ্ছরিণকেশরী সম্রাট ক্ষম্প্রপ্ত স্বরং

সলৈতে গান্ধার অভিমুখে বাইতেছেন, ইতলাদি।

পতা পাঠ করিয়া চতুর ভট্ট দীর্থকাল গভীর চিন্তায়
ময় রহিলেন; তারপর অন্ত সচিবদের তাকিরা ময়ণায়
বসিলেন। শ্রেনপক্ষীর সহিত চটকের প্রতিম্পর্ধিতা সম্ভব
নয়; চটকের পকে হিতকরও নয়। কিছু রাজনীতির
ক্রেত্রে বাহুবলই সর্বস্থ নয়, কূটনীতিও আছে। ফলগুও
ন্তন হুণ অভিযান প্রতিরোধ করিবার অন্ত গান্ধারে
আসিতেছেন; ঘোর বুদ্ধ বাধিবে; দীর্থকাল ধরিয়া বুদ্ধ
চলিবে; শেষ পর্যাস্ত ফলাফল কিরুপ দাড়াইবে কিছুই বলা
য়ায় না। স্পতরাং অবিলয়ে মগধের বন্সতা স্থীকার না
করিয়া ছলছুতা ছারা যদি কালহরণ করা য়ায়, হয়তো
অন্তে স্ফল ফলিতে পারে। একদিকে হুণ, অন্ত দিকে
কলগুও; এ অবছায় যথাসাধ্য নিরপেকতা অবলহনই
যুক্তি।

সচিবগণ একমত হইয়া মনস্থ করিলেন, পত্রের উত্তর
দানে বথাসন্তব বিলম্ব করা হোক; দ্তটাকে বলা বাক,
মহারাজ কপোতকুটে বতদিন না ফিরেন ততদিন পত্রের
উত্তর দান সম্ভব নয়। ইতিমধ্যে মহারাজ রোট্রকে সব
কথা জানাইয়া বার্তা প্রেরণ করা আবশ্রক। তিনি এখন
চন্দনতুর্গেই থাকুন, রাজধানীতে কিরিবার কোনও তাড়া
নাই। কিন্তু এত বড় শুক্রতর সংবাদ তাহার গোচর করা
স্বাথ্যে কর্তব্য।

এইরূপ মনোনীত হইলে পর ছরিভগতি ভুরুলপূঠে চন্দন ছুর্গে বার্তাবহু প্রেরিড হইল। মন্ত্রগৃহে বধন এই সকল রাজকার্য চলিতেছিল, কুমারী
রট্টা তথন নিজ ভবনে ছিলেন। আল নানা কারণে
ভাঁহার মন কিছু উদ্বান্ত হইয়াছিল। প্রথমেই স্থপ্র
ক্ষেত্রত পেরিসমাপ্তি। মগধের দৃত্ত মগধ বিশ্ববিশ্রত
পাটলিপুত্র নগর ক্ষেত্রত ক্ষেত্রতার বীর স্কল্পগুর ক্ষেত্রতার ক্ষি নাম বলিয়াছিল ? চিত্রকর্মা! চিত্রক ক্ষেত্রতার সহিত কোথাও যেন সাদৃশ্র আছে
ক্রেটার্থন দৃষ্টি বড় নির্ভাক ক

সর্বশেষে স্থগোপার মাতার উভার। স্থগোপার মাতা প্রাক্তন রাজপুত্রের ধাত্রী ছিল, কুমারী রটা তাহা জানিতেন। অভাগিনীর এই তুর্দশা হইয়াছিল ? সকলের অজ্ঞাতে পঁচিশ ব্বংসর বন্দিনী ছিল! কেমন করিয়া বাঁচিয়া ছিল; কে তাহাকে আহার দিত ? প্থার ছ্রমুষ্টের কথা ভাবিয়া রট্টার খন ঘন নিখাস পড়িল। উঃ, পঁচিশ বংসর পূর্বে হুলেরা কি বর্বরভাই না করিয়াছিল। রট্টা হুল-ছুহিতা, তবু—

স্থাপা মাতাকে উদ্ধার করিয়া কাঁদিতে কাঁদিতে গৃহে লইয়া গিয়াছিল। স্থাপাপা বড় কায়া কাঁদিয়াছিল, শ্বরণ করিয়া রটার চোথেও জল আসিল। তাঁহার ইচ্ছা হইল স্থাপার গৃহে গিয়া তাহাকে দেখিয়া আসেন। স্থাপার গৃহে তিনি বছবার গিয়াছেন, যখন ইচ্ছা করিয়াছেন। কিন্তু আজ বাইতে তাঁহার সজোচ বোধ হইল। প্রিরস্থি স্থাপাণা মৃতকল্লা মাতাকে পাইয়া ভূম্ল অভ্যাবেগের আবর্তে নিমজ্জিত হইয়াছে, এখন রটা তাহার কাছে বাইলে সে বিপ্রাপ্ত হইবেন

নধ্যাক অতীত হইবার পর রট্রা গ্রহাচার্যকে ডাকিরা পাঠাইলেন। গ্রহাচার্য আসিলেন; অপ্ন-কথা শুনিয়া তিনি প্রার্থপনার আঁক কবিলেন, দিক্নির্ণন্ন করিলেন, লগ্ন নির্ণারণ করিলেন। তারপর ফলাদেশ করিলেন,— 'কল্যাণি, তোমার জীবনের এক মহা সদ্ধিকণ উপস্থিত। কিছু শব্দিত হইও না; অন্তে ফল শুভ হইবে। এক দিঙ্গাগ-সদৃশ মহা-তেজনী পুক্ষবের সহিত তোমার পরিচর বাটিবে; এই পুক্ষসিংহ তোমার প্রতি প্রসন্ন হইবেন। ডোমার বিবাহের কাল্ভ আসন্ন। শুভ্যন্ত।' গ্রহবিশ্রের

ভাব গতিক দেখিরা মনে হইল তিনি সৰ কথা খ্লিরা বলিলেন না, কিছু চাপিরা গেলেন।

তিনি বিদায় হইলে রটা দীর্ঘকাল করলা কপোনে বিসয়া রহিলেন; শেবে নিখাস ভাগে করিয়া ভাবিলেন— নিয়তির বিধান যখন অথগুনীয় তখন চিন্তা করিয়া লাভ কি ?

कृत्य व्यवदाङ्ग रहेत।

ওদিকে চিত্রক দীর্ঘ দিবানিজার পর জাগিয়া উঠিয়াছে
শরীর বেশ স্বচ্ছন্দ; গত কয়েকদিনের নানা ক্লেশজনিং
গ্রানি আর নাই। তাহার মনেরও শরীরের অন্তপাতে
প্রকৃষ্ণ হওয়া উচিত ছিল; কিন্ত চিত্রক অন্তভ্য করিল
তাহার মনপ্রকৃষ্ণ না হইয়া বরংক্রমশ উবিশ্ব হইয়া উঠিতেছে

রাজপুরীর আদর আপ্যায়নে সে অভ্যন্ত নয়
উপরক্ত কঞ্কী লক্ষণ যেন একটু অধিক পরিচা
করিতেছে। সে দণ্ডে দণ্ডে আসিয়া চিত্রকের স্থ
আছেল্যের সন্দেশ লইতেছে; তছপরি তাহার কয়েকা
অস্ত্রচর সর্বদাই চিত্রককে বেষ্টন করিয়া আছে। কে
ব্যক্তন করিতেছে, কেহ শীতল তক্র বা ফলামরস আনিঃ
সন্মধে ধরিতেছে, কেহ বা তাত্মল দিতেছে। মৃহুর্তে
জন্মপ্ত সে একাকী থাকিতে পাইতেছে না। তাহা
সন্দেহ হইল, এই সাড়ম্বর আপ্যায়নের অস্তরালে অদৃঃ
জাল তাহাকে বিরিয়া রহিয়াছে। সে মনে মনে অভি
হইয়া উঠিল। হঠতাবলে রাজকুমারী রটার নিমন্ত্রণ গ্রাহ

সন্ধার প্রাক্কালে চিত্রক মনে মনে একটি সন্ধর দি করিয়া গাত্রোথান করিল। উত্তরীর স্বন্ধে লইতেই এ কিষর যোড়হন্তে আসিয়া সমূথে দাড়াইল—'কি প্রয়োজ আদেশ করুণ আর্থ-আগবেতু।'

চিত্রক বলিল — 'বহির্ভাগে পরিভ্রমণ করিবার ইঃ করিয়াছি। বায়ু সেবনের প্রয়োজন।'

কিকর পশ্চাৎপদ হইয়া অন্তর্হিত হইল।

চিত্রক রাজভবনের বাহিরে পদার্পণ করিয়াছে, কোণ্
হইতে কঞ্কী আসিয়া হাসিমুখে তাহার সহিত বোগ দিল
'সায়ংকালে বায়ু সেবনের ইচ্ছা হইয়াছে? ভাল ভাদ চলুন আপনাকে রাজপুরী দেখাই।' বলিয়া লক্ষণ ক্ষুব্য লক্ষণ আতার সতই তাহার সহগামী হইল। ্ই**জনে পুরভ্**ষির বজজজ বিচরণ করিতে গাগিল। বুমিল পুরীর বাহিরে বাইবার চেষ্টা রুখা, সে পুর-

বাহিরে বাইবার ইচ্ছা প্রকাশ করিলে কঞ্কী।
বাধা দিবে না, কিন্তু নিজে সঙ্গে থাকিবে। স্থভরাং
র বাইবার স্বাগ্রহ প্রকাশ না করাই ভাল।

বৈজ্ঞ পুরস্থমির স্থানে স্থানে বৃক্ষ-বাটিকা, লতা-মগুপ। বেশী নাই ; বাহারা আছে তাহারা অধিকাংশই সমস্ত্র শ্র কিয়া রক্ষা, হুই চারিজন উভানপালও আছে।

সকলে নিজ নিজ কার্যে নিবুজ।
তত্তত প্রমণ করিতে করিতে চিত্রক অফুভব করিল,
ছাড়াও অস্ত কেই তাহার উপর লক্ষ্য রাথিয়াছে,
অলক্ষ্যে থাকিয়া তাহাকে অস্থসরণ করিতেছে।
চক্তিতে কয়েকবার বাড় ফিরাইয়া দেখিল, কিন্তু
মন্দালোকে বিশেষ কিছু ঠাইর করিতে

না।

গরপর এক বৃক্ষ-বাটিকার নিকটে চিত্রক তাহার অদৃত্য

গকারীকে মুখোমুখি দেখিতে পাইল। এক বৃক্ষের

ল হইতে একযোড়া ভয়ত্বর চকু তাহার দিকে চাহিয়া

, হিংসাবিক্বত মুখে জলস্ত ত্টা চকু। চিত্রক চমকিয়া

া— 'ও কে ?' সকে সকে মৃতি ছায়ার স্থায় গেল।

শ্ৰুকী ৰলিল— 'ও শুহ। আপনাকে নৃতন মাহ্য
 বাধ হয় কৌতৃহলী হইয়াছে।

চত্রকের গত রাত্রের কথা মনে পড়িল: হাঁ, সেই
কিছ গত রাত্রে গুংর চোখে এমন তীব্র দৃষ্টি ছিল
চিত্রক কঞ্কীকে প্রশ্ন করিলে কঞ্কী সংক্রেপে
। গুংর বৃত্তান্ত বলিল। তথন চিত্রক, অন্ধক্পে পৃথার
যে কাহিনী গুনিয়াছিল তাহার সহিত মিলাইয়া প্রকৃত
অনেকটা অস্নমান করিয়া লইল। গুংই পৃথাকে হরণ
। কৃটরক্রে স্কাইয়া রাথিয়াছিল, ইচ্ছা ছিল যুদ্ধ শেষ
কিরিয়া আসিয়া ভাহাকে দখল করিবে, কিছ মন্তকে
ত পাইয়া ভাহার শ্বতি ভ্রংশ হয়। তর্ সে সব কথা
নাই; কোন অর্থ-বিভ্রান্ত বৃত্তির হারা পরিচালিত
গোপনে পৃথাকে থাভ দিয়া যাইত। শতাবীর
যরিয়া সে এই কাল করিয়াছে! আন্চর্য মন্তিকের
, আন্চর্য জীবের সহজাত সংস্কার!

ক্রমে দিবালোক বৃছিয়া গিয়া চাঁদের আলো স্টিয়া উঠিল। রাজপুরীর ভবনে ভবনে দীপমালা অলিল।

প্রাদেশের এই সন্ধিক্ষণে চারিদিকে চাহিরা চিত্রকের মনে হইল সে এই নির্বান্ধন পুরীতে একান্ধ একাকী, নিতান্ত অসহায়। কাল বন্দী হইবার পর অন্ধন্দার্থ কারাকৃপের মধ্যে তাহার বে অবস্থা হইরাছিল, আন্দ রাজপুরীর দীপোন্তাসিত প্রান্ধণে সে অবস্থার কিছুমাত্র পরিবর্তন হর নাই।

সহসা তাহার অস্তর অসহ্ অধীরতার ছট্কট্ করিরা উঠিন; সে বেন অল হইতে তীরে নিক্ষিপ্ত মীন। কিছ সে তাহার মনের অবস্থা সহত্রে গোপন করিরা কঞ্কী সমভিব্যাহারে নিজ বাসভবনের দিকে ফিরিরা চলিল।

রাত্রির মধ্য যামে রাজপুরীর আলোকমালা নির্বাপিত হইয়াছিল; শুক্লা চন্তুর্দশীর চন্ত্র পক্তিমদিকে ঢলিরা পড়িরাছিল। মাঝে মাঝে লঘু মেঘথও আসিরা অছ আবরণে চন্ত্রকে ঢাকিয়া দিতেছিল।

রাজভবন স্থা; কোথাও শব্দ নাই। চিত্রক আপন শহনকক্ষে শ্যায় লখ্মান ছিল, বীরে ধারে উঠিয়া বসিল। সে ঘুমায় নাই, কেবল চকু মুদিত করিয়া শ্যায় পড়িয়াছিল।

বরের এক কোনে ন্তিমিত বর্তিকা ক্ষম্পষ্ট জালোক বিকীর্ণ করিতেছিল; মুক্ত বাতায়ন পথে মৃত্ বার্র সহিত ক্যোৎনার প্রতিভাগ কক্ষে প্রবেশ করিতেছে। চিত্রক নিঃশব্দে পালক হইতে নামিয়া বাতারনের সন্মুখে গিরা দাঁড়াইল। কোধাও জনমানব নাই; চন্দ্রিকালিগু পুরী নিথর দাঁড়াইয়া আছে।

চক্ৰবিদ্ব আছে মেৰে ঢাকা পড়িল; বহিদু আ আৰছায়া হইয়া গেল। চিত্ৰক তথন বাতায়ন হইতে সরিয়া আসিয়া দার পথে উকি মারিল। দারের বাহিরে একটা কিন্তর বসিয়া বসিরা অ্মাইতেছে; অন্ত কেহ নাই। চিত্ৰক নি:শব্দে ফিরিয়া আসিল। প্রাচীর গাত্রে তাহার সকোব অসি ঝুলিতেছিল, সে তাহা কোমরে বাঁধিল।

ভারপর শব্ পদে বাভারন শব্দন করিয়া সে পুর-ভূমিতে উত্তার্ণ হইল। দীর্ঘনিখাস টানিয়া ভাবিল, একটা ৰাধা উদ্ধীৰ্ণ হইয়াছি, স্বার একটা বাকি-পুরপ্রাকার। ইয়া পার হইলেই মুক্তি।

আদৃরে একটি লভা মগুণের অস্তরাল হইতে ছুইটি তীক্ষ চক্ষু বে ভাহাকে লক্ষ্য করিছেছে ভাহা সে আনিতে পারিল না।

চন্দ্রের বুখে আবার মেবের আচ্ছাদন পড়িল। এই ছবোগে চিত্রক ছরিত পদে প্রাকারের দিকে চলিল। প্রাকারের ভিডর দিকে ছানে হানে প্রাকারণীর্বে উঠিবার সকীর্ব সোপান আছে, তাহা সে সাহংকালে লক্ষ্য করিছাছিল।

প্রাকারণীর্বে উঠিয়া চিত্রক বাহিরের দিকে উকি
নারিল। প্রাকার বহিত্বি হইতে প্রার পঞ্চদশ হত্ত
উচ্চ; তাহার মহন্দ পাবাণ-গাত্র বাহিয়া নামিবার বা
উঠিবার কোনও উপার নাই। এক উপার, বজ্লাদ-বলী
পবনপুত্রকে শ্বরণ করিয়া নিয়ে লাফাইয়া পড়া; কিন্ত
ভাহাতে বদি বা প্রাণ বাঁচে, হত্ত পদ রক্ষা পাইবে না;
আহি ভাদিবে। তখন পলারনৈর চেটা হাস্কর প্রহেসনে
পরিণত হইবে।

তবে এখন কী কর্তব্য ? আবার চুপি নুপি গিয়া শ্যায় শুইরা থাকা ? না, আরও চেটা করিতে হইবে। বাহির হইবার একমাত্র পথ তোরণ বার। তোরণ বারে প্রতীহার আছে—ভাহার চোথে খুলা দিয়া বাহির হওয়া কি সম্ভব ? কে বলিতে পারে, প্রতীহার হয়তো খুমাইয়া পদ্বিয়াছে।—

চিত্রক প্রাকারের উপর দিয়া তোরণ বারের অভিমুখে চলিল। সাবধানে চলিতে চলিতে তাহার মনে হইল পশ্চাতে কেহ আসিতেছে। সে চকিতে ফিরিয়া চাহিল, কিছ কাহাকেও দেখিতে পাইল না।

তোরণ অন্তের কাছে পৌছিরা চিত্রক সম্বর্গণে নিয়ে দৃষ্টি প্রেরণ করিল; দেখিল প্রাজীবার বারের লোক করাটে পৃষ্ঠ রাখিলা পদবন্ধ প্রসারণ পূর্বক ভূমিতে বসিলা আছে, ভাবার চিবুক বক্ষের উপর নত হবলা পড়িয়াছে, ভলটি আছর উপর স্থাপিত। প্রভীহার বে নিজাস্থপ উপভোগ করিতেছে ভাহাতে সন্দেহ নাই।

ভাষাকে কেৰিতে কেৰিতে চিত্ৰকের নাগাপুট ফুরিত কইতে লাগিল, ললাটের দীকা বীরে বীরে রক্তবর্ণ ধারণ

R

করিল। বেহের সাহুপেশী কঠিন করিরা সে কণকাল চিন্তা করিল তারপর নিঃশব্দে কোব হইন্ডে ভরবারি বাহির করিল। ইহাই এখন একমাত্র উপায়। ভোরণ বারের গাত্রে বে কুল্ল কবাট আছে ভাহা খুলিরা সে বাহির হইবার চেষ্টা করিবে। প্রতীহারকে না জাগাইরা বহি বাহির হইতে পারে ভাল, আর বদি প্রতীহার কাগিয়া ওঠে, তখন—

নিকটেই শীর্ণ সোপানশ্রেণী; চিত্রক নীচে নামিল। ভোরণভত্তের গা খেঁবিয়া অতি সতর্ক পদসঞ্চারে নিদ্রিভ প্রতীহারের দিকে অ্এসর হইল। এতক্ষণে সে প্রতীহারের মুধ দেখিতে পাইল; দেখিল গত রাত্রির সেই প্রতীহার।

ওঠাধর দৃচ্বদ্ধ করিয়া চিত্রক আর এক পদ অএসর হইল। কিন্তু আর তাহাকে অএসর হইতে হইল না। এই সময় পশ্চাতে একটা গভীর গর্জনধ্বনি হইল; সক্ষে সক্ষে ভরুকের মতো একটা জীব তাহার মদ্ধে লাফাইয়া পড়িয়া ছই বজ্রবাহ দিয়া তাহার কঠ চাপিয়া ধরিল।

অতাকত আক্রমণে চিত্রক সন্মুখ দিকে পড়িয়া গেল।
আক্রামকও সলে সলে পড়িল, কিন্তু তাহার বাহবদ্ধন প্রথ
হইল না। চিত্রকের খাস রোধ হইবার উপক্রম হইল।
শক্র পৃঠের উপর— চিত্রক তাহাকে দেখিতে পাইল না।
অন্ধলাবে মাটিতে পড়িয়া সে অদৃত্য আততায়ীর সহিত বৃদ্ধ
করিতে লাগিল; তাহার মৃষ্টি হইতে তরবারি পড়িয়া
গেল। তুই হাতে প্রাণণণ চেষ্টা করিয়াও কিন্তু সে
আততায়ীর নাগপাশ হইতে নিজ কঠ মৃক্ত করিছে
পারিল না।

এদিকে প্রতীহার সাচ্ছিতে ঘুন ভালিয়া দেখিল ভাহার সন্মুখে গজ-কছপের যুদ্ধ বাধিরা গিয়াছে। কিছু না বুঝিয়াই সে লাফাইয়া উঠিল এবং কটি হইতে একটা ভূরী বাহির করিয়া ভাহাতে কুৎকার দিতে লাগিল। ভূবের ভারধানিতে চারিদিক সচকিত হইয়া উঠিল।

চিত্রকের অবহা তভক্ষণে শোচনীর হইরা উঠিয়াছে; তাহার সংজ্ঞা পৃথ্য হইরা আসিতেছে। কণ্ঠ মৃক্ত করিবার চেঠা রখা। অভ্যাবে চিত্রক নাটিতে হাত রাখিল; তরবারিটা ভাহার হাতে ঠেকিল। নোহত্রভাবে তরবারি মৃষ্টিতে লইরা চিত্রক কোনও ক্রমে ভাছর উপর

উঠিল, ভারপর ভরবারি পিছন দিকে কিরাইল; আভভারী বেখানে ভাহার পৃষ্ঠের উপর অভাইরা ধরিয়াছে সেইখানে ভরবারির অগ্রভাগ স্থাধিরা ছুই হাতে আকর্ষণ করিল। ভরবারি বীরে ধীরে আভভারীর পঞ্চর মধ্যে প্রবেশ করিল।

কিছুক্দণ আততারী তদবস্থ রহিল; তারপর তাহার বাহুবন্ধন সহসা শিধিল হইল। সে চিত্রক্ষের পৃষ্ঠ হইতে প্রভাইরা মাটিতে পড়িরা গেল।

কৃস্কৃস্ ভরিরা খাসগ্রহণপূর্বক চিত্রক টলিতে টলিতে উঠিরা দাড়াইল। ইতিমধ্যে তৃরীধ্বনিতে আরুষ্ট হইরা করেকজন পুরবাদী ভত্তা ছুটিরা আসিয়াছিল এবং দণ্ডাদির ঘারা চিত্রককে প্রহার করিতে উভত হইরাছিল; কিছ চিত্রক উঠিয়া দাড়াইলে তাহার মূপ দেখিয়া তাহারা নিরভ হইল।

তোরণ প্রতীহার ভঙ্ক অগ্রবর্তী করিয়া কাছে আসিয়া
মহা বিশ্বরে বিশিষ্টা উঠিল—'আরে এ কি! এ বে কাল
রাত্রির চোর—না না—মগধের দৃত মহাশর! এভ রাত্রে
এখানে কি করিতেছেন? ওটা কে?'

চিত্ৰক যন যক নিষাস ফেলিতে ফেলিতে বলিল— 'জানি না। আমাকে পিছন হইতে আচ্ছিতে আক্ৰমণ ক্ৰিয়াছিল—'

আতভারীর অসিবিদ্ধ দেহটা অধ্যেম্থ হইরা পড়িরা দিল, একজন গিরা ভাহাকে উপ্টাইরা দিল। তথন চক্রালোকে ভাহার মুখ দেখিরা সকলে তক্ত হইরা গেল— শুহ। শুক্ সরিয়াছে; ভাকার কেক্টা শিধিল অভূপিতে পরিণত ক্রাছে।

প্রতীহার বিশ্বর-সংহত কঠে বলিল—'কি আশ্র্য— ভহ! ভহ আপনাকে আক্রমণ করিয়াছিল! কিছু সে বড় নিরীহ—কথনও কাহাকেও আক্রমণ করে নাই। আৰু সহসা আপনাকে আক্রমণ করিল কেন?'

চিত্রক উত্তর দিল না, এক দৃত্তে গুৰুর বৃত-বুখের পানে চাহিরা রহিল। গুৰুর মুখ শাস্ত; বেন দীর্ঘ জাগরণের পর সে বুমাইরা পড়িরাছে। এই মাহ্যবটাই ক্লেক পূর্বে হিংল ক্লের ক্লার তাহার ক্রঠনালী চাপিয়া মারিবার উপক্রেম করিরাছিল তাহা বুঝিবার উপার নাই। এই ধর্ব ক্লে দেহে এমন পাশবিক শক্তি ছিল তাহাও ক্রহমান করা বার না।

প্রতীহার ওদিকে প্রশ্ন করিয়া চলিরাছে—'কিছ শুর আপনার প্রতি এমন মারাত্মক আক্রমণ করিল কেন? সে অবশ্য পাগল ছিল, কিন্তু কাহাকেও অকারণে আক্রমণ করা—'

চিত্রক বলিল—'অকারণ নয়। আমার প্রতি তাহার বিবেবের কারণ ব্ঝিয়াছি। পৃথার মুক্তি। গুছ ভাবিল্লা-ছিল, আমিই তাহার গুপুধন চুরি করিয়াছি।'

গুহর পাশে নতজ্ঞাস হইয়া চিত্রক ধীরে ধীরে ভাহার পঞ্জর হইতে তরবারি বাহির করিয়া লইল। মৃত্যুত্র পরপারে গুহ আবার ভাহার লুপ্ত শ্বতি কিরিয়া পাইয়াছে: কিনা কে জানে!

(과지막:)



রাশিফল

জ্যোতি বাচস্পতি

সেম্বাস্থি

আগনার জন্মরানি বদি বেব হয়, অর্থাৎ বে সমরে চক্র আকাশে মেব-নক্ষমপুঞ্জ ছিলেন, সেই সময়ে বদি আগনার কন্ম হ'রে থাকে, ভাহলে এই রক্ষ কন হবে—

প্রকৃতি

আগনি ভাবধ্বণ প্রকৃতির লোক, কিন্তু আগনার ভাবের মধ্যে সকীবতা ও তীত্রতা বতটা আছে, প্রসাত্ত বা গভীরতা ততটা নেই। আগনি সকল বাগারেই চান তীক্ষ অমুভূতি ও উত্তেজনা, কাজেই আগনার মধ্যে অধীরতা ও চাঞ্চ্যা কম-বেশী প্রকাশ পার। আগনার মধ্যে আদ্ম সচেতনতা পুব বেশী এবং আগনি কম-বেশী স্পর্শকাতর। আগনার ইন্দ্রিরজ অমুভূতিভানিও সাধারণতঃ বেশ তীক্ষ। কাজেই অতি সামাক্ত কারণেই আগনি বেষন উৎকুল হ'রে ওঠেন, তেমনি সামাক্ত কারণেই মুহুমানও হ'রে পড়েন। কোন ভাবই আগনার মধ্যে হারিছ লাভ করতে পারে মা।

নিজের দিকে আপনার বেশ খর দৃষ্টি আছে, সেইজন্ত কোন কিছু
আপনার বিক্লছে গেলে, আপনি অধীর ও খিটখিটে হরে ওঠেন।
আনেক সমর সহজেই রেপে যান, কিছু আপনাকে শান্ত করাও শক্ত
নর, অলু চেইাতেই আপনি প্রসম্ভ হ'রে ওঠেন।

আপনি বাধীনতা-প্রির ও উচ্চাভিনাবী এবং আগনার সংগঠন শক্তি
খুব বেদী না পাকলেও, নিজের পরিবেশের মধ্যে কর্তৃত্ব করতে চান।
কিন্তু কর্তৃত্ব পেলেও অধীরতা ও চাঞ্চল্যের মস্ত তা প্রারই হারা
হর না। আপনি নিজের মতে কাল করতে ভালবাসেন, অপরের
সলে পরামর্শ করলেও অধিকাংশ কেত্রে সে পরামর্শ উপেকা বা
অপ্রাঞ্চ করেন। এমন কি নে পরামর্শের বিপরীত আচরণও
করতে পারেন।

আপনার উপর আপনার আবেষ্টনের অথবা বংশ ও পরিবারের প্রভাব খুব বেশী অভিবাজ হওরা সভব। পারিবারিক আবেষ্টন খুব ভাল না হ'লে নৈতিক অবনতির আশহা আছে। সল নির্বাচনেও আপনার সতর্ক থাকা উচিত। অসৎ সলে পড়লে সলীদের প্রশংসা পাবার লক্ত, অথবা ভাদের উপর নেতৃত্বের লোভে ছুণীত আচরণ করা আপনার পক্ষে অসন্তব্ধ নয়।

অর্থভাগা

আৰিক ব্যাপারে আপনার কম বেশী চিন্তা থাকিবে। অবেক সনর আর-ব্যরের সামঞ্জ রাখা কটিন হবে। এক সমর আপনি হরতে। জাব্য ব্যরেও বিমুধ হবেন, আবার আর এক সমর অবধা ব্যরে মুক্তবত হ'রে উঠবেন। অর্থ উপার্জনের ব্যাপারেও অবেক কেত্রে আপনাকে

বাধ্য হ'রে কৌশল বা গোপনীরতার আত্রর নিতে হবে। কোন আত্রীরার জন্ত আপনাত অবধা অর্থ ব্যর হ'তে পারে, কিন্তু সেহদীলা আত্রীরার কাছ থেকে আপনি সাহাব্যও পেতে পারেন। টাকা খাটানোর ব্যাপারে আপনার বিশেব সাবধান হওরা উচিত। অনেক সমর অপাত্রে ধণদান ক'রে অধবা বেরাড়া ব্যাপারে টাকা লগ্নী করে বিশেব ঝঞাটের আশকা আছে। আর্থিক অবহা শেব পর্যন্ত বোটের উপর সচ্ছল হ'লেও, আর্থিক ব্যাপারে কম-বেশী ওঠাপড়া আপনার বরাবয়ই চলবে।

কৰ্মজীবন

আপনার সেই সকল কাম ভাল লাগবে—বাতে কর্মের ধারা বা পরিবেশের খন খন পরিবর্তন আছে। একেবারে ধরাবাঁধা কাজ আপনার থিয় নয়। আপনি সেই সব কাজের দিকে আৰু ই হবেন যার মধ্যে থানিকটা অনিশ্চরতা আছে অথবা বাতে সাহসিকতার পরিচর দিতে হয়। ুস্লুতরাং দৈনিকের কান্ত্র, চিকিৎসকের বৃত্তি. রসায়ন শিল্প, পূর্তকার্ব, ধাতুর ব্যবসা, রাজনৈতিক কার্বকলাপ প্রভৃতির যে কোনটাতে হোক আপনি কৃতিত দেখাতে পারেন। আপনার ৰম নকত যদি অধিনী হয়, তা'হলে বাজনৈতিক কাল, ইঞ্জিনিয়ারিং, বৈজ্ঞানিকের কাজ ইত্যাদি আপনার ভাল লাগবে। বদি ভরণী নক্ষত্র হয় তা'হলে বে সব কাজে বিপদের আশহা আছে সেই সব কাজের দিকে আপনার ঝোঁক থাকবে। আপনি মাঝে মাঝে পরিবর্তন চান, কারেই একই ভাবে, একই স্থানে, একই কারে লেপে থাকা আপনার ক্ষচিকর হবে না। কর্মকেত্রে আপনি প্রাধান্ত লাভ করতে পারেন কিন্ত কৰ্মের ব্যাপারে বহু শক্তভা ও প্রতিম্বন্দিতা ঠেলে আপনাকে অপ্রসর হ'তে হবে। উন্নতি হ'লেও সে উন্নতি বজার রাধার বক্ত আপনাকে বস্তুরমত লড়াই করতে হবে, না হলে কিরে অবনতিও হ'তে পারে। বাইরের শক্তর বারা মিখা অপবাদ বা নিম্মাপ্রচার ত হবেই, অনেক সময় আপনার পারিবারিক আবেষ্ট্রমণ্ড আপনার উন্নতির বিশ্ব সৃষ্টি করবে। শক্রর সঙ্গে বিবাদে অনেক সমর এত শক্তিও সময়ের অপবার হবে যে আপনার অনেক কর্তব্য কামও সেম্বন্ত অবহেলিত হ'তে পারে। স্বভরাং শক্রতা আপনি বত এড়াতে পারবেন ভতই আপনার পক্ষে মলল ৷ আপনার যদি কুতিকা লক্ষমকত হয় তা'হলে এ বিবরে বিশেষ সভর্কতা আবক্তক, মড়বা কর্মে পূর্ব উন্নতি কথমই मखब स्टब मा ।

পারিবারিক

আত্মীয়-কুট্ৰের সজে আপনার নোটের উপর সৌহার্য্য থাকাই সভব। আপনার মধ্যে আভিসাত্যের একটা গর্ব থাকতে পারে অন্ততঃ পারিবারিক প্রতিষ্ঠা ও বংশর্মবাদার বিক্ আপনার তাঁক দুষ্টি থাকলে এবং সর্বত্র আপনার যারণা অনুসারে পরিবারত্ব সকলের আচরণ নির্মিত করতে না পারলে আপনি অবজিবােথ কর্মবেন। মেহ প্রতির বাাপারে আপনার আবের্গ থুব প্রবল হবে এবং কোন কোন কেতে তা সহজ্ঞ ক্রানের সীমা অতিক্রম ক'রে বেতে পারে। সন্তানের উপরই হোক আপনার কিনরই হোক আপনার এই প্রতি অনেক সমর তাদের পকে পীড়াদারক বা ক্ষতিকর ক'তে পারে। ক্তরাং এ বিষয়ে আপনার সংযত হওরা আবশুক। আমোদ-ক্রমেদের কল্প ও সম্ভানাদির ক্ষম্প আপনার অনেক সমর অপবার হ'তে পারে; বার ক্ষম্প পরে অনুশোহনা করতে হবে। সন্তানাদির বিবাহের ক্ষম্প আপনার কোন রক্ষম চিন্তা হ'তে পারে এবং কোন সন্তানের দুর্দেশে অথবা চুর্গম প্রদেশে বিবাহ হওরাও অসক্তব নর।

বিবাহ

বিবাহের ব্যাপারে কিছু বাধা বিশ্ব হ'লেও আপনার দাশ্পত্য জীবন বোটের উপর মন্দ নর। স্ত্রী (অথবা থামী) নম ও নিরীহ অফুতির হওরাই সম্ভব এবং তিনি আপনার অফুগত হবেন। আপনার ভাব-অবপতার অঞ্চ মধ্যে মধ্যে তার সঙ্গে অকৌশল হ'লেও গুরুত্তর কোন মনোমালিক্ত না হওরাই সভব। আপনার স্ত্রী (অথবা ধামীর) মেহ একটু ছুর্বল হ'তে পারে। যদি এরক্ষম কারো সঙ্গে আপনার বিবাহ হয় বার জন্মনাস বৈশাধ, ভাত্ত, কার্তিক অথবা পৌব কিংবা বার জন্মতিধি কুক পক্ষের তৃতীয়া বা গুরুপক্ষের দশমী, তাহ'লে আপনার সঙ্গে তার বিশেব সন্তাব হবে।

বন্ধত্ব

আপনার বন্ধর সংখ্যা বে হওয়াই সক্তব। কিন্তু বন্ধুবের বাপারে আপনাকে কম বেশী অপাস্তিভোগ করতে হবে। অনেক সমর বন্ধুর ক্ষক্ত আপনার নিলের কোনরকম বিপদ বা বিজ্ঞাট উপস্থিত হ'তে পারে; অথবা বন্ধুর কোনরকম বিপদ বা বঞ্জাটে আপনার মানসিক লান্তি বাহিত হ'তে পারে। বন্ধুর ক্ষক্ত কোনরকম পারিবারিক বঞ্জাট উপস্থিত হওয়াও বিচিত্র নর। আপনি সাধারণতঃ আকৃষ্ট হবেন সেই সব ব্যক্তির দিকে বাদের ক্রমাস বৈশাধ, ভাত্র, অথবা পৌব এবং বাবের ক্রমাতিবি কুক্তপক্ষের ভূতীরা অথবা শুক্রপক্ষের ক্সমী।

খাষ্য

আপনার মধ্যে বংশগত ব্যাধির অবশ্তা থাকতে পারে এবং কোন রক্ষ আশান্তর অবশা মনোকট্ট আপনার বাছাহানির কারণ হ'তে পারে। আপনি থাওরা দাওরার ব্যাপারে সাধারণতঃ তীব্র ও রক্ষ জিনিব পছক্ষ করেন, সেইলছ মাধকের দিকেও আপনার একটা আকর্বণ আসতে পারে। কিন্তু তা সকছে পরিহার করা উচিত। কেন না আশ্নার খাছ্যের পক্ষে বে কোন বাদক বিশেষ ,অনিট্টকারী; এমন কি চা, তামাক, কমি, অভ্তিরও অপরিমিত ব্যবহার আপনার বাধ্যের ক্ষতে ক্ষতে পারে। একেবারে অক্ষতোরনও আপনার

বাছ্যের পক্ষে ভাল নর। বারে বারে অর পরিবাণে থার এইণ করা আপনার পক্ষে ভাল। তরল থাতের চেরে গুড় ও ভর্তিত থাতই আপনার উপবোধী বেশী। আহার বিহারে সংব্যা এবং শার্ড পরিবেশ বাহ্য ভাল রাথার রক্ত আপনার পক্ষে একার্ড আব্রক্তর।

অন্তান্ত ব্যাপার

আপনার মধ্যে এমণ ও ছান পরিবর্তনের ইচ্ছা থাকবে বটে, কিন্ত আনেক সময় বে উদ্দেশু নিমে আপনি অমণ বা ছান পরিবর্তন করবেন কার্যক্ষেত্রে তা সকল হবে না। প্রবাসে বা অমণের সময় কোনমুক্ষ বিপদ আপদ সম্বন্ধেও সতর্ক থাকা উচিত। বিদেশে শক্রের ছারা বিপর হওরীরও আশহা আছে।

কোন শুফ্ৰিছা অথবা আধ্যান্ত্ৰিক সাধনার দিকে আপনার ঝেঁকি আসতে পারে কিন্ত তাতে বিপদের আপকা আছে। বিশেষ ক'রে আপনার যদি ক্ষয় নক্ষয় ভরণী অথবা কৃত্তিকা হর তা'হলে শুফ্রনাথনা একেবারে বর্জনীয় এবং শুক্তিমার্গে কিছু আনক্ষ পেতে পারেন।

বাতে নিজের দেশের, সমাজের বা সম্প্রদারের বার্থ ক্ষড়িত আছে ব'লে আপনি মনে করেন, তার উপর আপনার একটা বিশেব মমতা থাকা সম্ভব এবং তারজন্ত অনেক সমর আপনি আত্মতাগ এবং অর্থব্যর করতেও কুন্তিত হবেন না। কিন্ত সে ক্ষেত্রেও আপনার কর্তৃত্ব পাওরা চাই, নতুবা নিরুৎসাহ হ'রে আপনিটুলে সম্বক্ষে উদাসীন হ'রে উঠতে পারেন।

चर्गीय चंडेना

আপনার ৪, ১৬, ২৮, ৪০, ৫২ এই সকল বর্বে নিজের বাছোর ব্যাপারে অথবা পরিবার মধ্যে কারো কোনরকম ছুর্বটনা বটতে পারে। ১০, ১২, ২২, ৩৪, ৪৬, ৫৮ এই সকল বর্বগুলিতে কোনরকম অভিয়ন্ত। হ'তে পারে।

वर्व

হালকা লাল রং বা হলদে আভাবুক লাল রং আপনার বিশেষ উপবােগী। বিশেষ ক'রে গেরুরা রং, টাপাতুলের রং অথবা নােনালী রং আপনার বিশেষ সৌভাগ্য বর্ধক হওরা উচিত। বাের লাল রং ব্যবহার না করাই ভাল, কেন-না তাতে উন্তেজনা বৃদ্ধি হতে পারে। অহুছ অবহার সাধারণতঃ বেনী চক্চকে বা অল বলে রং বর্জন করা উচিত। কেন না তা অনেক সময় অহুতিকর হ'তে পারে এবং উপসর্গ বাড়িরে তুলতে পারে।

व्य

আপনার ধারণের উপবোধী রছ সোনাপাধর (Gold Stone) এবাধার (Amber) হলবে পোধরার প্রভৃতি।

বে সকল খ্যাতনামা ব্যক্তি এই রাশিতে ক্ষেত্রের তারের ক্ষর্ভরের নাম—হত্রপতি নিবালী, উপ্তলতান, জেলারেল গর্ভন, রালা বিনয়ত্বক বেব। বহামহোপাখ্যার বহেনচক্র ভাররত্ব, কবিরাক গলাকসাদ সেন, লাস্টিন্ সারবাচরণ বিত্ত প্রভৃতি।



(পূর্ব প্রকাশিতের পর)

নাগৰা থেকে ফিরে এসে আর আমাদের রাজনীরে থাকতে ভাল লাগছিল না। অতীত ভারতের ইতিহাস যেন ইলিতে আহ্বান করছিল —বেরিরে পড়ো—বদি দেগতে চাও বৌদ্বর্ণের অগণিত বিল্পু ঐষর্ব, বদি ভগবান তথাগতের পদান্ধ অসুসরণ ক'রে ফিরুতে চাও পরিবালকের নতো—তবে চলো—পৃথিনী—পাটলিপুত্র—বৌদ্ধগরা— সারনাধ—সাঁচী, আবতী—কুনীনগর—কপিলাবন্ত—কৌশাধী—

কিন্ত মূজিল হরে পড়লো আমাদের রাজনীর পোষ্ট অফিস থেকে ব্যাসবারে টাকা না পাওরার। কলকাতার একটি প্রসিদ্ধ ব্যাকরেজ্বারী ও ইনসিরোর ক'রে আমাদের প্ররোজনমত টাকা পাঠিরেছেন কলে আমাদের জানিরেছেন, কিন্ত রাজনীর পোষ্ট অফিসে কেউ না আমার ইনসিরোর বিলি হর নি। ডাক্যরে গিরে থবর নিয়ে জানা পেল রেজেপ্তারী ও ইনসিরোর করা চিঠি একখানি আমার নামে এসেছে ঠিক, কিন্তু, সে থানি বিলি করবার মালিক যিনি সেই পোষ্টমান্তার কলাই গত একসপ্রাক্তনাত ডাক্যরে অস্কুপন্থিত। শোনা পেল তিনি দিন ছুই তিনের ছুটা নিরে কি একটা বিভাগীর পরীকা দিতে পাটনা গেছেন। কাজেই পোষ্ট অফিসে কেবল চিঠি বিলি ছাড়া আরু সব কাল বন্ধ আছে। মণিন্মর্ভার করা বা নেওরা ছুইই চলছে না, টেলিগ্রামণ্ড বন্ধ, রেজিট্রেশান এবং ইনসিরোর কিছুই হ্বার উপার নেই, পাবারও উপার নেই! বিদেশে প্রবানে বারা গিয়ে পড়েছে তালের পক্ষে একটা গুরুতর অবস্থার অভিজ্ঞতা!

পরলা ডিসেমর আমরা "মপ্তপর্ণী" হেড়ে চলে আসবো—বাড়ীর মালিক অর্থাৎ আমাদের বেরান ঠাকরণের সলে এই রকমই কথা ছিল। কিন্তু, কথা রাথা গেল না। এছের নিরুপনা দেবীর জ্যেটা পুত্রবধু মানাদের ভাগিনেরী কল্যাণীরা শ্রীমতী কমলকে পত্র লিখে সমস্ত অবহা জানিরে ১৫ই ডিসেম্বর পর্বস্ত সপ্তপর্ণীতে থাকার মেরাদ বাড়িয়ে মেণ্ডরা গেল।

রোলই একাধিকবার ডাকবরে যাই—পোট্টমাট্টার কিরেছেন কিনা
খবর নিতে। যেখি রীতিমত ভীড় জমে গেছে দেখানে। কত
লোক বে মণিকর্ডার ইনসিরোর রেজিট্রেশান আর টেলিগ্রাকের জভ
ধর্ণা বিচ্ছে ভার সংখ্যা হর না। আপাততঃ পোট্টকার্ড এবং ডাকটিকিটও
নিঃশেব হরে গেছে। চিটিপত্রের আবান প্রদানও বন্ধ হবার উপক্রম।
কর্তনান বুলে পৃথিবীর কোনও সভ্যবেশের সরকারী ডাকবরের বে
প্রক্রম অক্টা বিনের পর বিন চলতে পারে এ আমাবের ধারণাই
ক্রিয় না। ভারত্বর্ব আক্রম বেশ, এখানে সবই সভব। বাবীন

ভারতের কংগ্রেস সরকার এখন বিহার প্রবেশের শাসনকর্তা। এঁরের শাসন পরিচালনার গুণে একটি বিনিষ্ট তীর্বহানের ভাকষর বে এমনভাবে ভেঙে পড়তে পারে একথা ভাবলেও সক্ষাও কট বোধ হয়। প্রায় একসপ্তাহকাল ধরে এই পোট্টমাট্টার-হীন-ভাকষর কংগ্রেস সরকারের শাসন পরিচালনার অবোগ্যভা জনসাধারণের কাছে সপ্রমাণিত করে দিতে লাগলো।

ইতিমধ্যে কলকাতা খেকে লোক মারদৎ আমাদের হাতে কিছু টাকা এনে গেল। আমরা তথন শীরামকৃষ্ণ সেবাশ্রবের খামী কুপানক্ষরীকে এবং তাঁর অবর্তমানে সরকারী ডাক্তার শীবুক্ত ডি, এন, দাসকে, পৃথকভাবে এক একথানি 'অধিকার পত্র' দিরে পাটিলিপুত্র সন্দর্শনে রগুনা হরে গেলুম। এই 'অধিকার পত্র' খামীলীকে এবং তাঁর অবর্তমানে ডাক্তারবাবুকে আমাদের যাবতীয় চিঠিপত্র, প্যাকেট, পার্বেল, ইনসিরোর ও রেজেষ্টারী করা কলার, বৃক্পোষ্ট, মণিঅর্ডার এবং টেলিপ্রাম পর্বস্ত বিলি করবার জন্ত ডাক্যরকে নির্দেশ দিরে এলুম।

আমাদের প্রবাসের বন্ধু মার্টিন রেলের কর্মচারী শ্রীপুক্ত বিনর নশী মহাশর আমাদের পাটনা বাত্রার সমস্ত ব্যবস্থা ক'রে দিলেন এবং নিজে আমাদের সঙ্গী হরে পাটনা পর্বন্ধ এলেন। তিনি সঙ্গে না এলে আমরা কথনই সেদিন বক্তিয়ারপুর ট্রেশান থেকে 'বেনারস-এক্সপ্রেস' ধরে পাটনা বেতে পারতুম না। কারণ মার্টিনের রেল সমর রক্ষা সথকে মোটেই নির্ভরবোগ্য নর। অধিকাংশ দিনই তিনি করেসপতিং ট্রেনথানি ছেড়ে বাবার পর হাপাতে হাপাতে বক্তিয়ারপুরে পিরে হাজির হন। যাত্রীদের প্রারই পরবর্তী গাড়ী ধরবার জন্ত ষ্টেশনে অপেকা করতে হয়।

আমরা
ই ডিসেম্বর রাজগীরের বাড়ী চাবীবন্ধ ক'রে চাবীশুলি রিজিট্রার্ড ও ইনসিয়োর পার্দেলে নিরূপনা দেবীর কাছে পাঠাবার ব্যবহা ক'রে গাটনা রওনা হরেছিলুন। বক্তিমারপুর ষ্টেশনে নেনে দেবি করেসপতিং ট্রেণ ছাড়বার ঘণ্টা পড়ে গেছে। সমন্ত নালপত্র মৃটের মাধার ভূলে ছুটতে ছুটতে গিরে দেবি ষ্টেশনে ঢোকবার গেট বন্ধ। লোকে লোকারণ্য সেধানে! প্যাসেঞ্জার ও ষ্টেশন টাকের সঙ্গে ভ্রমন ভীবণ মারামারি চলছে। রেল পুলিশ বে-পরোরা লাটি চালনা ক'রেও কীও জনতাকে শাত্ত করতে পারছে না।

একটি 'ওভারত্রীল' পার হরে ট্রেশনে বেতে হর। বিনরবার সংল বাকার এবং 'ওভারত্রীল' পার হবার সবর না বাকার আবরা তাড়াতাড়ি হবে বলে লাইন অভিক্রম ক'রে ট্রেশনে এসেইল্যুন, কিন্ত বালাহালানা চলতে বলে এবেশ করতে পারলুর না। বিনরবারু তুলিধের

সজে নিবে আযাদের ষ্টেশন কেনসিংরের ধার বিরে বিরে অঞ্চসর इ'एक व'रम त्राहे कीएकत मरशा अवश्र इ'रत रारमन । अवस्थ शरहहे দেখা খেল ভিনি বেলগ্ডরে ইাফের একলন লোক সক্ষেত্রিরে ছুটে আগছেন। প্লাটকর্মের মাঝামারি কেসসিংরের গামে একট বিশেষ 'প্ৰবেশ-বার' ছিল। তার সন্ধান রেলওরে কর্মচারীরাই জানতেন। विमन्नवायुक्त मामक (त्रमाकर्महाद्वीष्टि माने महामान हानीष्टि नित्त अम्मिक्तन । আহরা এঁথের সাহাব্যে কোনও রক্ষে পলস্বর্ম হরে ট্রেণে উঠলুব। "বে বে পাড়ীতে বারগা পাও কিছু কিছু মাল নিরে উঠে পোড়ো" এই हिन विनवतातूत आरमन, कांत्रन रानात्रम अम्राध्यम शावरे छर्छ हरत আবে, ভাছাড়া ট্রেশের সময়ও উত্তীর্ণপ্রার! কম ভীড়ের পাড়ী পুঁজে দেখে সকলের একগাড়ীতে বাকার অবকাশ নেই তথন। কুলিরা ঝপাঝপ বে বে গাড়ীতে পারল মাল কেলে দিলে। আমরাও বিনয়বাবুর উপদেশ যতে বে বে গাড়ীটা সামনে পেলুম উঠে পড়পুম। আমানের সঙ্গের ভূতা ও পরিচারিকা রামচন্দ্র ও বিনোদিনীর ভূতীর শ্ৰেণীর টিকিট ছিল। কিন্তু, সে কান্রাগুলিতে প্রবেশ ক'রে কার সাধা। বিনয়বাবু তাদের যে ক্লাশে খুনী তুলে দিলেন। আমি ও ধুকী সেকেও ক্লাল টিকিট থাকা সড়েও ইন্টার ক্লালে উঠে পড়লুম: বিনি আমাদের কামরার এল ৷ মেরেদের বিনরবাবু কার্টু ক্লাপে তুলে দিলেন। রামচন্দ্র কোবার গেল তার কোনও উদ্দেশ পাওয়া গেল না। জিনিস্থলো সব উঠলো কিনা বিনয়বাবু তার তদারক ক'রে-কুলি মিটিরে বধন আমাদের গীড়ীতে এসে উঠলেন গাড়ী তথন চলতে আরম্ভ করেছে। সমস্ত ব্যাপার্টা লিগতে বডটা সমর গেল তার শতাংশের একাংশ সমরের মধ্যে আমরা ছুটোছুট করে ট্রেণ ধরেছিলুম। এ ট্রেণ ধরতে না পারলে আমানের বড় কটু পেতে হ'ত। ওধু আমানের কেন, পাটনার আমাদের নবপরিচিত বন্ধ শশাক্ষমোহনকে ধবর দেওরা ছবেছিল স্টেশনে আসবার জন্ত, কারণ, তারই সনির্বন আগ্রহে ও অনুরোধে এবং সাদর আহ্বানে আমরা পাটনার ছ'একদিনের জন্ত ভারই স্মাতিশ্য এহণ করতে বাচ্ছিলাম। স্তরাং এ ট্রেণে না বেতে পারলে আৰৱা দেদিৰ আৰু পাটনা পৌছতে পাৰতাম না। ব্যাক্তের বড়সাহেব मनाष्ट्रसाहरमञ्जल क्लेमरम हुटि चाना-वालबाब नमब महे ह'ल এवर व्यामली ৰ্মোজোৎসা ৰেচারার অতিৰি পরিচর্বার আরোজনও পও হ'রে বেড।

বাইহোক, বজিনারপুর থেকে পাটনা বাবার পথে নার্বের একটা ক্রেন—কি নাম বনে নেই—হাঁ, 'ছাপ্রা' বোধহর; জনেক লোক নেমে গেল। গুলনুম ছট্' পরবের জন্ত ভারী ধুম হর 'নাকি এখানে। বিনরবাবু এই ক্রোপে জামাদের ছড়িরে-পড়া মালপত্র ও লোকলমদের একতা করে কেললেন। রামচন্ত্রকে জাবিদার করা কেল একথানি দেড়া-নাগুলের গাড়ীতে। জলের কুঁলো ও পেলাস ছিল ভারই হেপালতে। ভ্রুলাত নবনীতা জলপানের লভ উত্যক্ত করে ভূমছিল জামাদের। রামচন্ত্রকে কুঁলো পেলাস করেত পাওরা ক্রেড জামরা বেন হাঁক ছেড়ে বাচনুম। বীনতী ভার ভারার ক্রেড নেরু সংক্রেণ বার করে ছিলেন। ভূথার্ড ও

শিশানাও হরেছিলার সকলেই। বাভ ও শানীয় পেরে অবেকটা বাড্য হওয়া সেল।

বজিরারপুর থেকে পাটনা বার ৫০ বাইল পথ, বনে হজিল বেল বা পথের আর শেব নেই । চলেছি ও চলেইছি । ছু'পালে বিহারের বিচিত্র পরিবেশ। ঝান, শহর, শতক্ষের, পোচারপভূমি, কড কি পার হ'রে চলেছি কিন্ত দৃষ্টি নেই দেলিকে। কারণ বন হ'রে উঠেছে তথ্য পাটলিপুত্রের জন্ত বাাকুল। চথের সঙ্গে বলি মনের বোপ বা বাকে ওবে আমাদের দৃষ্টি হরে বার শৃত্ত। (vacant) চোধ চেরেও আমরা তথম কিছু দেখতে পাইনি, অর্থাৎ পরিগৃত্তমান বন্ধ নিচর তথ্য আমাদের ফলের উপীর কোনও ছাপ কেলতে পারে না তাই ভাবের স্থপও আমাদের কাছে ধরা পড়েনা।



নৰনীভার কুকুর—'ছুটু'

বেলা পাঁচটার বেলারস এক্সত্রেস আমাদের পাটনার নামিরে দিলে। 'পাটনা সিটি' নর—নতুন শহর-পাটনার। অপাকার মালপত্র-সহ আমরা ঠাকুর চাকর ও কুকুর নিয়ে পাটনা স্টেশনে নেবে এধার থেকে ওধার পর্যন্ত শুঁজে শশান্ত ভারার কোন পান্তাই পেন্ম মা। অগত্যা, বিনরবাব বললেন—চলুন পাটনার অভিট্ এসে আহি বে হোটেলে থাকি সেপানে নিয়ে বাই—পুব ভাল হোটেল, বাঙালীর হোটেল—বিহার অঞ্চলে এ হোটেল "পিন্টুবাবুর হোটেল" নামে বিবাতে।

আমরা সকলেই এ প্রভাবে সম্মত হরে ছ'খাসি কিটম ও একথানি বন্ধ গাড়ীতে মালপত্র বী চাকর ও নিজেরা উঠে পাটনার রাজপথে পা বাড়ালুম।

"সব্র! সব্র!" কে একজন থেকে উঠলেন পথ থেকে। উকি মেরে কেথি পণাক ভারা বরং সাইকেল চালিরে গাড়ীর পিছু পিছু বুঁটে আসহেন। গাড়ী থামানো হল। পণাক এসে বললেন—'আপনার্না বে কোন পথ দিয়ে স্টেশন থেকে এলেন—মানি কোথাও পুঁকে পূৰ্ব বা আপ্ৰাদের। ভাৰণুৰ--হয়ত নিৰ্দিষ্ট বিনে বালগীৰ খেকে ভিনি আৰাদের আগমন সংবাদ পেরে--পিছু পিছু ছুটে. এনে विकरित भारतमित, अथवा करवनभावित (द्वेपीट मिन करवरहम।' याँहै ল্লাক পাণ্টাপাণ্টি অভিযোগাতে জানা গেল বে আমানের সঙ্গে . "बुद्दे,"--সেই 'बुद्दे,'র নিশানা থেকে একজন টকিট চেকার মারকং উপর--তার নিজের কোরাটারে।

बदब्दाक्त ।

এইভাবে পথ থেকে পাকড়াও ক'রে শশাভ ভারা আমাবের নিরে ল্কেরী≱ার বে 'গোভেন ককার "প্যানিরেল' কুকুরটি ছিল—বার নাম এসে তুললেন ইউনাইটেড, ইঙাট্টিরাল ব্যাকের প্রণক্ত বাড়ীর ছিতলের

ৰিচার

শ্রীনগেন্দ্রবিহারী বস্থ

প্রামের মধ্যে কালীনাথ একজন সম্বতিপন্ন লোক। গ্রামে ছুইখানা লোকান, মোটা রক্ষের চাব, তা ছাড়া তেজারভি কারবারও ছিল। একদিন স্কালবেলায় অনেক টাকা गए गरेबा कांगीनांथ मध्या किनिए वाहिएत याहेर छिल। গৰুর গাড়ী প্রস্তুত, এমন সমর স্ত্রী আসিয়া বলিল-আজ ভোমার বাওয়া হবৈ না। ভোর রাতে আমি একটা कूचश (मर्थिष्ट् ।

कानीनां बिकांना कतिन-कि चन्न (मरबह ? खी बनिन--रनए७ त्नहे, राज कूचश्र करन गांव। কালীনাথ হাসিল—ভবে আর कि। বল নি তো, স্বপ্ন আর ফলবে না।

ची लांत्र केंद्रिया विनन-चामांत्र मांशा शांक, এवांत्र योख्यां वह करे।

কালীনাথ ন্ত্ৰীর মাথার হাত রাথিয়া বলিল—স্বপ্নের কি त्कान मात्न चाहि, ७ हित्रमिनहे मिथा। ७ नव वास्य क्षिनिरंव मन দিলে আমাদের ব্যবসাচলে না। তা ছাড়া ভগবানের নাম নিয়ে বেরিয়েছি। ভোমাকে আমি বল্ছি कान विशव हरव ना-निवाशक वाड़ी किरव **आंगरवा**।

ল্লীকে নানারণ বুঝাইরা, ছেলে ছটিকে কোলে করিয়া छारवत्र भारत पूर्व हुम् थोहेवा त्र त्रखना हहेवा त्रता । খাইবাম :সময় গাড়ী হইতে মুখ বাহির করিয়া বলিল-ভয় तिहै, किरत्र जांगरवा, नांत्रावन्तक एएरका, गांवशांत रंशका ।

भारत ज्ञा विश्व कर्म स्था रहेग। अक्षा किनिएक वाहित रहेशाहिन। मक्साकारन छ्रेकरन भाक्षिक्राचांद्र अक शांदित जामंद्र गरेत।

श्रीमकान। ध्रथत द्वीरा मिन्न कानीनांव पूर कहे পাইয়াছিল। তাই ভোরের ঠাগুর পথ চলিবে ঠিক করিয়া অতি প্রত্যুবে হোটেল হইতে বাহির হইল। বরের ছ্বার ধ্লিতেই নজরে পড়িল কপাট ভেজান, ধিল খোলা রহিরাছে। প্রথমে চমকিরা উঠিল—এ কি? শুইবার সময় সে নিজেই তো খিল বন্ধ করিয়া শুইয়াছিল। জিনিসপত্র পরীক্ষা করিরা দেখিল কাপড-চোপড, টাকার (थाल मर हिक चाहि। यन कतिन, मकी विक इन्नाल বাহিরে গিয়াছিলেন, খিল বন্ধ করিতে হরতো ভূলিয়া গিরা थांकिरतन। विवक उथन अमात्रीत छिछत पूमाहेरछ-ছিলেন, তাঁহাকে জাগান বুধা মনে করিয়া "ভুগা ভুগা" বলিতে বলিতে সে খর হইতে বাহির হইয়া গেল।

দেদিনও মধাকে আকাশ হইতে বেন অগ্নি বৃষ্টি হইতেছিল। কালীনাথ ও তাহার গাড়োয়ান তৃষ্ণাভুর হইরা পড়িয়াছিল। গঙ্গ ছটি চলিতে পারিতেছিল না। নাক মুথ দিয়া ফেনা গড়াইরা পড়িতেছিল। তৃতীয় প্রহরে পথের ধারে এক বৃক্ষ ছারায় ভাহারা আশ্রয় লইল।

গাছের তলায় বাদের উপর গামছা বিছাইয়া কালীনাথ শুইরা পড়িরাছিল, গরু ছটি ভিজা ছানি খাইভেছিল, গাড়োরান রাধিবার আয়োজন করিতেছিল, এমন সময় मननवर्ग भूगिरमत नारतामा व्यामिता छेनच्छ इरेग। कानीनारवन नाम, निवान প্রভৃতি कानिना महेना मारताना জিজানা করিল-বাড়ী হ'তে কবে বের হরেছ ?

কালীনাথ-পতকাল, সকাল বেলার। बारवाशा-- क्वाबाव बारव।

क्रांगीनांध-भरतः, मक्षां किनत्छ। মারোগা--রাতে শান্তিভাদার ছিলে? कानीनाथ-बाका है।

দারোগা—আর কেউ ছিল তোমার বরে ?

कांगीनाथ-हिन, जांत्र এक विनक। जांत्र मरक কালই পৰে আমার দেখা হয়। কিছ এত কথা আমার জিজাসা করছেন কেন?

দারোগা- সে মারা গেছে। রাতে কেউ ভার গলার ছুরি বসিয়ে তাকে পুন করেছে।

हकू विकातिक कतिया कांगीनांच वित्रा उठिन-पून ? पून करब्राह ?

দারোগা-সদের কাগলপত্ত দেখে জানা গেছে তার क्रांह व्यत्न होका हिन। पून करत्र छात्र नव निया श्राष्ट्र। कृषि ছाड़ा मिहे चरत चात्र किंडे हिन ना।

় কালীনাথ-না, আর কেউ ছিল না, আমরা ছুলনাই ७४ ७ तिहिनाम ।

ছারোগা কালীনাথের খানাতল্লাসি করিলেন। একটা ধলিরায় অনেক টাকা পাওরা গেল, বিছানার স্থানে স্থানে রক্তের দাগ দেখা, গেল, বালিশের তলা হইতে রক্তমাধা ছোরা বাহির হইল। কালীনাথ কাঁপিতে লাগিল।

দারোগা জিঞাগা করিল-স্বীকার করছ ?

कानीनाथ बानाहेन, होकांहा लाहात्र निर्वात, बात কোন কথা বলিতে পারিল না।

মারোগা বলিতে লাগিল-ছজনাই বণিক, ছজনাই मध्यां किनिएं वाहित हहेत्राहिन, इक्नांत काष्ट्रे डांका ছিল। শোবার সময় নিশ্চরই তুরার বন্ধ করে গুয়েছিলে। **ट्यान, डिक किना ?**

कानीनार्थ-किन। जानि निष्करे द्वात रद्ध करतिहनाम। नारताना-ठातिनिरकत व्यवका व्यविद्य निरक्ष वृतिहै पून करवह ।

कांगोनाच-ना वावू, अब किहूरे जानि वानि ना। দারোগা রক্তমাধা ছোরাধানা কালীনাথের চোথের সম্বাধ ধরিয়া ৰলিতে লাগিল-এই বেধ সেই ছোৱা. এখনও বন্ধ লেগে আছে। তোমার বিছানাতেই পাওরা গেছে। এর পরও ভূমি এর কিছুই কান না! ভূমি ছাড়া पटन दर ब्यान दम्बेर हिम ना ! '-

कानीनांध--नावांष्य कारनम, अन्न किन्नुरे कार्रि वानित्व ।

वाद्यांगा-७-कथा नवार वरण कानीमाथ। তাহলে আদানতেই প্রমাণ দাখিল হবে।

কালীনাথকে দিপাহিরা বাঁৰিয়া লইয়া পেল। কালীনাথ সময়ে তাহার নিজ গ্রামেও অন্নসন্ধান করা হইল। সেখানে তাহাকে সকলেই ভাল বলিয়া জানিত। তাহার বিছানার রক্তমাখা ছোরা পাওয়া গিরাছে ভনিমা প্রতিবেশীরা বিশ্বিত হইল, ভাবিল-অসম্ভব কি-মাছবের তো মন ?

कानीनार्थत जी कांवित्रा कांच मूच कुनाहेन, स्वरक्ष মাথা কুটিয়া রক্ত বাহির করিল। ছোট ছোট ছুইটি ছেলে, একটি এখনও মাতৃত্ত খার, তাহাদের লইরা লক্ষা সরম ত্যাগ করিয়া সদত্তে আসিল এবং বহু চেষ্টা করিয়া, অনেক টাকা খরচ করিয়া কালীনাথের সঙ্গে দেখা করিবার অমুমতি পাইল।

कानीनांव शक्रात, भूत यांगांवी, शांख शंक्रका, পায়ে বেড়ি, একটি কুঠুরিতে একথানি ক্বলের উপর পড়িয়াছিল। চোথ ছটি কোটরে বসিয়া গিরাছে, মাধার काला हुन कातक भांता हहेबाहि, निटोन क्लारन वान वित्रशाह, जात्वत्र माश्त्र अनिया शिक्षाह, अहे क्य वित्रहें म (यन कीवानद मण वहाबद अब व्यानाहेबा निवास । দেখিয়া অভাগিনী স্ত্রী সহিতে পারিল না আছাত থাইয়া चामीत भारत मांथा खेँ किया कटकन का विया गरेन। जात शत डेडिया निक्त हक मुहिदा बाहन मिदा चामीब कार्य मृहारेवा किन। विनन-तिनीकन थोक्रड नाव ना। यखकन षाहि इटी क्था क्छ। क्रिंश ना।

জড়িতখনে কালীনাথ বলিল—ভোমার খরাই কলে (शंग (मथहि

जी विनन-ना, ना, कन्रव ना, क्थरना कन्रव ना। ভূমিই ভো বলেছ খপু মিখ্যে, ভোষার কথা ভো কথনো बिट्ड इव ना। ध विशव नांबाबाश्व शबीका, छिनिरे गर्व কাটিরে ছেবেন।

कानीनाथ टाएथत कर हांछ विश्व मृहिश क्लिन। ত্রীর হাভ ধরিরা বলিডে লাগিল—মণিকা, শোন। আবি चांत्र त्य अक चरत्रहे श्रव्हिनांत्र । स्मानात्र नवत्र जिन्ह রতে আনিই ছরোর বন্ধ করেছিলান, বরে আর কেউ ছিল না। সেই রাতে সে খুন হ'লো, রক্তমাথা ছোরা শিক্ষার বিছানার পাওরা গেল। কে বিখাস করবে আমি মারি নি ?

শ্বী বলিগ—বিশাস? আমি আনি তৃমি করো নি, তোনাকে দিরে এ কাল হর নি, হ'তে পারে না। বে নাছৰ থেতে বসে ভাতের থালা ভিথিরিকে তৃলে দের, ভাতারখানার গিরে নিজের গা কেটে রক্ত দিরে অচেনা পরকে বাঁচার, আর নিজে রক্তপৃত্ত হরে ছ মাস বিছানার পড়ে থাকে, তাকে দিরে এ কাল হর না। নারারণ সব দেখ্ছেন ভোমাকে তিনি নই করবেন না। যদি নারারণে আমার ভক্তি থাকে, তোমার পারে মতি থাকে, তবে আল লোর গলার ভোমার বলছি, ভোমার মুক্তি তৃত্ম হবেই হবে। আল বাঁরা ভোমার কেলে রেখেছেন ভারাই একদিন নির্দোব কেনে ভোমার মৃক্তি দেবেন। ভেবে ভেবে শরীর ভো একেবারে মাটি করে কেলছ, থানন করে আর দেহপাত করো না, আমি যে আর সইতে পারি না। হে ভগবান, হে নারারণ—ওগো শুধু তাঁকে ভাকো, তিনিই ভোমার মুক্তি দেবেন।

কালীনাথ দীর্ঘধান ফেলিয়া বলিল—হাঁ মণিকা, এখন বাঁচাতে পারেন তিনিই। সত্যিই তিনি অসহায়ের সহার, কিছ তাঁকে ডাক্তে পারছি কই! বখনই ডাক্তে চাই, তিনি কেমন যেন বুক হতে খলে পড়ে যান। তাঁর জায়গার তুমি, ডোমার ঐ ছেলে তুটি বুক আমার জুড়ে বলে। কেবল মনে হর ডোমালের নিয়ে বিভোর হ'য়ে বলে থাকি। ভোনালের কি হবে, তুমি অসহায় স্ত্রীলোক, ছেলে তুটিকে নিয়ে কোথায় দাঁড়াবে। কেবল এই সব কথাই-ভাবি, মন এত তুর্বল, এত অন্থির—নারারণ। নারারণ।—

নিপাৰি আনিয়া বলিল—মাইজি ঘড়ি হো চুকা, আব্ বানে হোৱা।

বণিকা খানীর পারে হাত রাখিরা বলিল—চর্ম।
আনাদের জন্ত তেবো না। বখন আনাদের সমর ছিল,
তখন আনাদের নারারণের পারে ছেড়ে দিরে নিশ্চিম্ন
ছিলে। এখনও তাই করো। আনাকে, তোমার ছেলে
ছটিকে, তোমাকে ভারই পারে ছেড়ে দাও। তিনিই সব
কেখুকেন। হে নারারণ, হে ভগবান।

বতকণ দেখা গেল কালীনাথ জানালা দিয়া দ্রী পুত্তকে দেখিল। তাহারা অভ্যুত্ত হলৈ মাটিতে সুটাইরা পড়িয়া কাঁদিতে কাঁদিতে বলিল—হে হরি, ওলের তুমি দেখো।

ত্তী গৃহে আসিয়া বৃকের রক্ত দিয়া গ্রামের অঞ্চিত্রী দেবীর পূজা দিল। তিন দিন উপবাসী থাকিয়া গৃহ-দেবতা নারায়ণের পায়ে তুলসি দিল। নিজের অলকার, জমি, থান, পুক্র, বাগান প্রভৃতির প্রায় সমস্ত বেচিয়া আমীকে রক্ষা করিতে অর্থ ব্যয় করিল। থলিয়ার টাকা ভাহার যে নিজের সে কথা প্রমাণ হইল, কিছু কালানাথ থালাস হইল না। ভাহার প্রাণুদ্ধ হইল না বটে, চৌক বছরের ক্ষম্প কারাদুপ্তের আদেশ হইল।

ইহার পর দীর্ঘ পাঁচ বৎসর চলিরা গিরাছে। কালীনাথের চুল দীড়ি আর একটিও কাল নাই। তাহার দেহ
সন্ম্য দিকে ছইয়া পড়িরাছে। সে বীরে বীরে হাঁটে, আর
কথা কয়, কথনও হাসে না, জেলের কাল করিরা অবসর
পাইলেই ভগবানের নাম করে। রাত্রি প্রভাতে গলা
হাড়িয়া ভগবানের নাম গায়। ব্বা বয়সে সে প্রগায়ক
ছিল, দীর্ঘ কারাবাসে তাহার সব গেলেও গলার মিইছটুকু
তিলমাত্র নাই হল্ল নাই। জেলখানার লোক স্কল্পর শাল্প
উবার তাহার অঞ্চমাখা গান শুনিরা ভক্তিভরে মাটিডে
মাথা নোয়াইত, কত পাপ-তাপ দল্প হল্লর গলিরা চক্ষ্ পথে
উৎস বহিত। জেলের কর্মচারিরা তাহার ব্যবহারে ভাহাকে
ভালবাসিত, কয়েদিরা আছা করিত, কেহ ভাক্তিভ শোলা
ভাই", কেহ বলিত "সয়্যাসী"। জেলের মধ্যে সে সয়্যাসী
করেদী বলিরা পরিচিত হইয়াছিল।

একদিন একদল নৃতন করেদি সেই জেলে বদলি হইরা
আসিল। রাজিতে নৃতন প্রাতন করেদিদের মধ্যে পর
ভঙ্গব চলিতেছিল। কোথার বাড়ী, কাহার কি অপরাধ,
আরও কত কিছু। একজন বলিল—তাহার ভেজারভি
কারবার ছিল, গ্রাবের একজন থালা বাসন বন্ধক রাধিরা
টাকা থার নিরাছিল। করেকদিন পরে দারোপা আসিরা
সেই বাসন ধরিল। সেই বাসন নাকি চোরা বাসন।
বে বন্ধক রাধিরাছিল সে একেবারে অবীকার করিল; ভার
টাকাও গেল; বাসনও গেল, উপরভ বিনা দোবে তাকে
ভেলে দিল। আর একজন বলিল—ও রক্ষম হয়

াই। এই সেবার শান্তি-ভাশার হোটেলে একজনকে বুন ক'রে নিয়ে পেল পুরোপুরি একটি হাজার টাকা। বে বুন কর্লে ভার পান্ডাটি পেলে না, আবালের গাঁরের এক গাঁ-বেচারা, বিন্দু বিসর্গ কিছু জানে না—ভাকে ধরে নিয়ে জেল দিয়ে দিলে চোদ বছর। একেই বলে "উদোর পিণ্ডি বুলোর যাড়ে।"

পাশের বরে বসিরা কালানাথ সব গুনিভেছিল। শান্তিভাজার কথা গুনিরা ভাষার সমস্ত শরীরে কাঁটা দিরা
ভীঠিল। তুই বরের মধ্যে কাঠের ত্রার, ভালাবদ্ধ। কপাট
ঠেলিয়া ধরিলে সামান্ত একটু কাঁক হর। কালীনাথ সেই
ভাক দিরা দেখিল ভাষারই গ্রামের রজনী পাল। না ভূল
হর নাই, বাহিরের বিজ্লী বাভির উজ্জ্বল আলো বরের
রখ্যে আসিয়া পড়িয়াছে—রজনী পালই বটে। কি করিয়া
রানিল বে, খুনের দায়ে বাহার জেল হইয়াছে সে "নির্দ্ধোবী,
গোবেচারা, বিজু বিসর্গ কিছু জানে না।" কি করিয়া
লানিল—পুরোপুরি এক হাজার টাকা! তবে কি রজনী?
কালীনাথের বুকের ভিতরে সমুজের চেউ বেন বুকের হাড়গুলি ভাজিয়া ফেলিতে লাগিল।

প্রাণ কত কথা তাহার মনে পড়িল। এক পাঠশালার ছলনে পড়িরাছে, এক সবে থেলা করিরাছে, জুলনের কত বন্ধুৰ, কত ভালবাসা! রজনীর বিবাহে সে কত আনন্দ করিরাছে, তাহার নিজের বিবাহে রজনী নাচিরা কুঁদিরা হাসিরা হাসাইরা সকলকে পাগল করিরা দিরাছে। তারপর বৌবনে রজনী কুসংসর্গে পড়িল। বথন তাহার সর্বন্ধ বিক্রিছরা বার, তথন সে নিজে টাকা দিরা তাহার বসতবাড়ী রক্ষা করিরাছিল। রোগে পড়িরা রজনীর স্ত্রীর বাঁচিবার আশা ছিল না, টাকার জভাবে চিকিৎসা হর না জানিরা সে করিরাছিল। তাহার প্রথম খোকার অন্তর্থাসনে রজনী শেকাকে রূপার বালা দিরা আশীর্কাদ করিরাছিল; তাহার স্ত্রী জেলে বথন তাহাকে দেখিতে আসিরাছিল, তথনও খোকার হাতে সেই বালা ছিল; সেই রজনী! তাহার স্থ্য ছাংথের সাখী, বাল্যবন্ধ রজনী!

পর্যধিন রজনীর সজে কালীনাথের দেখা হইল। রজনী চিনিতে পারিল না, কালীনাথের কিকে চাহিলা রহিল। কালীনাথ বলিল—চিন্তে পারছো না ? আনি কালী-নাথ। শাভিভাকার পুনের লাবে জেল খাটছি।

রজনী বলিল—কালীনাথ ? কি বৰলেই পেছ ভাই, সভ্যিই আমি চিন্তে পারি নি ?

কাশীনাথ-কিছ ভোমার এ খণা কেন ?

রজনী—আর বল কেন ভাই। বোড়া চুরিতে জেল হয়েছে এক বছর। কিছু সভিটেই চুরি আনি করি নি। হাট হ'তে বাড়ী বাছিলাম। বোড়াটা মাঠে চর্ছিল। কাল বৈশাখী—পশ্চিমে মেষ উঠেছিল। ভাই বোড়াটার চড়ে বসেছিলাম ভাড়াভাড়ি বাড়ী বাবার জঙ্গে। বাড়ী গিরেই বোড়া আমি ছেড়ে দিভাম। বার বোড়া পথেই সে ধরে ফেলেছিল। আমার কথা হাকিম বিশ্বাস করলেন না, এক বছরের জেল দিয়ে দিলেন।

কাৰীনাথ-কডদিন বাড়ী ছাড়া ভূমি ?

রজনী—তা প্রার চার মাস। ছই বাড়ীরই সব ভাল দেখে এসেছি। বৌদি ভাল আছেন। ছেলে ছটি ছুলে বার—ভালই আছে।

কালীনাথের বুক ফাটিয়া দীর্ঘনিশ্বাস বাহির।ছইল।
মনে হইল কে বেন বর্ণা দিয়া তাহার বুকে খোঁচাইতেছে।
তাহার:জ্রা, ছেলে ছটি!—কত দিন দেখে নাই! কি
দোবে সে সব হারাইল। ভগবান ভাহাকে সব দিয়াছিলেন, কেন আবার কাড়িয়া লইলেন। অমন জ্রী—রূপে
লক্ষ্মী, গুণে সরস্বতী! ছেলে ছটি নধরকান্তি, হাসিতে
জ্যোৎমা সুটিত, কায়ায় মুক্তা ঝরিত। ভাহারা এখন
সুলে যার! কত বড় হইরাছে। ভাহাদের সে কড্টুকু
দেখিয়া আসিয়াছিল? ভাহাদের বুকে ধরিয়া, মুখে চুরু
খাইয়া সে কি স্থে! আর কি ভাহাদের বেখিতে পাইবে,
আর কি সেখানে কিরিয়া বাইবে!

কালীনাথের দিন আর কাটে না। বছদিন কারাবাদে তাহার অতি কটের দিনগুলি কালের নির্দে অনেকটা সহিরা গিয়াছিল। কিন্তু রজনীর সহিত দেখা হইবার পর হইতে মনে একটুকুও স্বতি ছিল না। তাহার বর সংসার, তাহার স্ত্রী পূজ, ভাহার পুকুর-তরা মাছ, গোলা-ভরা থান, ভাহার গরু বাছুর চাব, আরও কত কিছু দিবারাজি ভাহার বুকে ভোলপাড় করিয়া বুক্টাকে বেন ভালিয়া চুরিয়া কেলিত, এক বৃহুর্জের কচ্চও সে শান্তি পাইত রা। কেলেছ কাৰ করিতে করিতে কাল কেলিরা একলিকে চাহিরা থাকিত, পালীরালার আসিরা বলিত—'কেরা হরা সর্যাসী ভাই, বোথার হরা ?' থাইতে বসিরা থাইতে থাইতে ভাতে হাত রাথিয়া চুপ করিরা বসিরা থাকিত, সজী করেদিরা বলিত—"সন্ত্যাসী দাদা, থাচ্ছনা বে ?" দিনের পর দিন, সে এমনি অহির হইরাই কাটার'। দিনের বেলা টা সব চিন্তা, রাত্রিতে এ সবের অপ্ন দেখা!

এক রাত্তে, বোধ হর কোন স্বপ্ন দেখিরাই সে ধড়মড করিয়া বিছানা হইতে উঠিয়া বসিল। সমস্ত শরীর বামে একবারে ভিজিয়া পিয়াছে, মাথা চিন চিন করিভেছে। মাৰা টিপিয়া ধরিয়া সে হরের একটা জানালার কাছে আসিরা দাডাইল। বীর নৈশ বাডাসে দেহ মন যেন স্কুড়াইয়া যাইতে লাগিল। গভীর রাজি, বিশ্ববাপী 'অন্ধশার, উপরে নক্তরাজির ক্ষীণ দীপ্তিতে যেন এক व्यवज्ञान त्रीव्यर्थ कृष्टिश উठिशाहिन-चह्ह, विश्व, माधुर्यप्रस्त्र, ৰাব্ৰবার দেখিতে ইচ্ছা করে। দেখিতে দেখিতে कानीनार्थत्र भाविष्ठांकात्र कथा मत्न हरेन। तम विन হোটেলের বিছানার পড়িরা বাহিরের দিকে থোলা আনলা দিরা সে এমনি করিয়া চাহিয়াছিল। সে রাত্তি এমনি চন্দ্র লাবণ্যে তরা, এমনি তারকাথচিত আকাশ, এমনি করিয়া কোনাকি অগিতেছিল, এমনি প্রান্তিহারী বাভাস বহিতেছিল। আর সেই রাতে সেই বৰিকও নিশ্চিত্ত মনে সুমাইভেছিল। আহা নিরপরাধ সেট বণিক—উ: कि নিচুর! ঘুমত মাছবকে খুন! পুরাপুরি একটি হাজার छाकां कि नांक हरेन, बस्ती! कहे तिहे छाका ভোমার বেশ হইতে রক্ষা করিতে পারে নাই ভো। আহা সেই বলিক, ভাষার স্ত্রী, পুত্র, কন্তা—কোধার হয় তো ভাসিরা গিরাছে। তাহারের কারার আকাশ বিদীর্ণ रहेबाड-माञ्च कांविवाद्य. भश्तभको कांविवाद्य. वालांग পাগলের মত ছুটিরা বেড়াইরাছে !—ও কি ? পালের ৰে ব্যৱ বুজনী থাকিও সেই ব্যৱ হইতে কেমন একটা শব व्यागिरछडिन। কে বেন সম্ভৰ্গণে বা নারিয়া কিছ ভাভিভেছিল। छुই বরের মধ্যে বে ভালাবন্ধ ছয়ার তাহা र्दिनिएक्ट अक्ट्रे कांक रहेन। चरबत्र चालाएक कांनीनाथ ৰেখিল একজৰ লোক আন্ত দিয়া ব্যৱের দেয়াল ভাকিতেছে। ছমার তেঁলার পদ হইবামাল লোকটা, আন কেলিয়া কালীনাথের নিকট আসিরা দাঁড়াইল। সে রন্ধনী; কালীনাথ বলিরা উঠিল—ছুমি ?

त्रजनी विनन-हाँ छोरे, चामि।

कानीनारथत्र पूर्व निवा जात क्या वाहिः इटेन ना।

রজনী বলিতে লাগিল—জেল আর আমি সইতে পারহি না কালীনাথ, তাই পালাবার চেষ্টা করছিলাম।

কালীনাথ—পালাবার ? জেল হ'তে ? ধরা পড়বে বে;
রজনী—না ভাই, সে ভয় আমার নেই। আমাদের
পাহারার একজন নিপাহীকে বল করেছি। এই জেদে
বথন আসি সজে পুকিয়ে কিছু টাকা এনেছিলাম—এই
শো টাকার একথানা নোট। সেই টাকা দিরে সিপাহীকে
বল করেছিলাম। প্রথম ঠিক হরেছিল সে আমাদের
বরের হুয়োরের তালা খুলে আমাকে বের করে দেবে।
কিছু চাবি থাকে জমাদারের কাছে। সিপাহি কিছুতেই
সেই চাবি চুরি করতে পারে নি। অগত্যা দেরাল ভালা
ছাড়া আর উপায় রইল না।

কালীনাথ নির্ম্বাক। রজনীর মুখের দিকে চাহিরা রহিল। রজনী বলিতে লাগিল-সিপাহি দেরাল ভালিবার বন্ধণতি আমাকে দিয়েছিল; সেই সলে একটা ওবুং দিয়েছিল। সেই ওবুধ নাকে দিয়ে আমার বরের সন্ধিদ্ধে অঞ্চান করে রেখেছি। ভোরের আগে তাদের খুদ ভাঙ্গবে না। যদি দেৱাল ভালতে পারতাম তবে সিপারি শুপ্ত हृद्योव मिद्र श्रामात्क त्यलाव वाहेदव त्वव करव मिछ। कि कि कि हरे रामा ना। त्वताम कार्ति भक्त, त्वन रेटिय नत्र, लोहां मिर्दे छिति। श्राता छ चकी शतिक्षेत्र करत्रक ভিনথানি ইটের বেশী থসাতে পারি নি। ভার উপর জীবণ গরম, বেমে নেরে উঠেছি। ছাত একেবারে অবশ হয়ে পড়েছিল: একট জিরিয়ে নিয়ে বেই কাজ আরঙ করেছি অমনি ভূমি কেগে উঠে দেখে কেলেছ। বাক, তুমি লেখেছ তাতে আমার বিশেব ক্ষতি নেই, কিছ দেৱাল ভালা বুঝি আর হর না, বাইরে বেন করসা হরে मागरह।

কালীনাথ বলিল—তাই মনে হয়। প্রভাতী ভারা বেন আমি বেথেছি। কিন্ত ভোর হ'লেই ভো সব সেখে কেলবে। রজনী—দেপুক, আধার তর কি । আনাদের এই বি পাঁচ জন করেছি, কে করেছে ঠিক কি ? চার জন লগাই, এক এক জন পর পর পাহারা দের, কার পাহারার নার ঘটনা ঠিক হবে না । দেখ্বার মধ্যে একমাত্র তুমি। তামাকে দিরে আমার কোন অনিষ্ঠ হবে না । তুমি নিশ্চরই কিছু বলবে না ?

কালীনাথ—কিন্ত ওরা বলি আসার বিজ্ঞাসা করে ? রজনী—ক্ত্বে কিছু জানি নে। তুমি ভিন্ন বরে থাক, তোমার কি ?

कांगी-हि हि, ७ त मिरह कथा हरेव छाई।

त्रवनी कालीनांधरक किनिछ। त्र किङ्क कालीनांधित बिटक চাহিয়া রহিল, তার পর কাঁদিয়া ফেলিল। বলিল— कानीनाथ, कृषि ছয়োরের ওপারে, আমি এপারে, নইলে ভোষার পারে ধরতাম। জীবনে ভূমি আমার অনেক উপকার করেছ, অনেক বিপদে বাঁচিয়েছ। আশার বাঁচাও। ভূমি সাক্ষী দিলে ওরা আমার আত রাখবে না, কোড়া মেরে গায়ের ছাল ভূলে নেবে। জেল থেকে পালাবার চেষ্টা করার যে শান্তি, তা আমি সার এক ब्बल पर थहि। त जानि नहेल शावरवाना। जानि मत्त्र यात । हिला, त्यात्र, वडे-जात्त्रत्र चात्र त्यश्रु नात না। ভোমার পারে পড়ি আমার বাঁচাও, ছেলে-মেরেদের আমার দেওতে দাও। তাদের না দেবে আমি আর बाक्ट शांबिकाम नां, ठारे शांनाट करबिकाम। षामात्र तूरक षांश्वन वनहिन। छात्रा ए कि क्रब्रह, তাদের বে कि रुट्य किहूरे जानि ना-छाप्तत किहूरे बिरा चान्र भावि नि। चानाव अमन किहूरे तिरे কালীনাথ যে তারা থার।

অন্ত কেই ইংলে রজনীর কথার উত্তর দিতে পারিত। বলিতে পারিত কালীনাথের নিজের কথা, তার আপন স্ত্রী পুজের কথা, কিছু কালীনাথের মুখ দিরা বাহির হওয়া তো দুরের কথা, এদৰ ভাহার মনেও আসিল না। বজনীর চোধে কল দেখিয়া ভাহার চোধেও জল দেখা দিল।

(0)

নকাল কোতেই ভনত আরত হইল। করেনী কিংবা বিশাধিকের নিকট হুইছে কোনই সন্ধান পাওয়া গেল না। ৰশনীৰ ঘৰ হইতে দেৱাল ভাজিবাৰ আছ ও ক্লোৱোক্যনের একটি শিশি পাওৱা গেল। ইহাতে সন্দেহ হইল ঘরের সমত করেদি বড়বল্লে লিপ্ত নাও থাকিতে পারে—কেহ কেহ হর ভো ঔবধ প্ররোগে অক্লান হইরাছিল। সকলেই বধর কিছু জানে না বলিয়া প্রকাশ করিল তথন ভাক পড়িল পাশের ঘরের কালীনাথকে। জেলের সাহেব জিজ্ঞাসা করিলেন—তোমার পাশের ঘরের করেদিরা গভ রাভে দেয়াল ভেকে পালাবার চেষ্টা করেছিল, সে সহজে ভূমি কিছু জান প্র

কালীনাথ—জানি ছকুর। আমি গুরোরের কাক বিবে দেখেছিলাম, মাত্র একজন দেয়াল কাট্ছিল, অভ সব নির্দ্ধোব, তারা যুমুচ্ছিল।

বজনীর মুখ সাধা হইরা গেল।
সাহেব—এক জন ? কি নাম তার ?
কালী—ছজুর, নাম বলতে পার্বো না।
সাহেব—নাম জান না, বেশ, সনাজ্ঞ কর।
কালী—না হজুর, নাম জানি, বলবো না।।
সাহেব—কি ? বলবে না ?
কালীনাথ চুপ করিরা রহিল।
সাহেব বলিলেন—না বল্লে তোমার ভাষণ শান্তি
দেব। কোড়ার ঘায়ে দেহের চাম্ডা থাকবে না।

कानीनाथ छव्छ हुल कविया बहिन।

সাহেব বলিতে লাগিলেন—সন্ন্যাসী, বছদিন তুমি এই জেলে আছ। তোমার ব্যবহারে কোনদিন কোন পুঁত ধরা বার নি। তোমার সৎ চরিত্রের জন্ত তোমার দীর্ব মেরাদ কালের মধ্যে দেড় বছর রেহাই দেওরা হয়েছে—তুমি এখন বদি সব জেনেও অপরাধীর নাম না কর, তবে তোমার চৌদ্দ বছরের একটি দিনও রেহাই পাবে না। তার উপর তোমাকে ভীষণ শান্তি দেওরা হবে।

कानीनाथ वनिन-स्कूद्वत्र महसी।

সাহেব দীত দিরা নিজের ওঠ চাপিরা ধরিলেন—ক্পান কুকিত করিরা বলিলেন—খুন জুমি ঠিকই করেছিলে। কাসি হওরাই উচিত ছিল। তোমার বাইরেটা দেশে সন্দেহ হ'তো হরতো জুমি দোবা নও, বিচারে জুল হছে থাকুবে। এখন দেখছি ভা নর, আমাদেরই জুল, জুমি ঠিকই দোবা। এজদিন ভোষার চরিত্রের বে বাইরেটা दिर्शि तिहै। वारेट तहरे विनिन, किछद कृति वा दिल वाद तिह । वाति कामात्र त्यंत्र कथा वनिह कानी नांच— वीति विनिष्ठ कामात्र नमत्र विनाम । व्यथनक यित्र वन दक्षान माखि शाद ना । कामात्र दिश्र देवत त्यं वहदतत्र वक्षि विनक्ष कामा ताद ना, क्षानक माखि रूद ना"— विनित्र नामात्र विविद्य कामिलन । शांक मिनिष्ठ शक्ष वर्षेत्र विश्वलन—नाम् । नमत्र शांत्र ह्र द्व तिह्य । शक्ष वाद्य विग्वलन—नाम् । नमत्र शांत्र ह्र द्व तिह्य । शक्ष वाद्य विग्वलन विग्वलन विविद्य । नमत्र शांत्र ह्र विश्वला । श्रीव्य विद्य विश्वला । वाद्य व्यवस्था । नाम क्ष्या नाम क्ष्या व्यवस्था । नाम क्ष्या नाम क्ष्या व्यवस्था । वास्य क्ष्य नामात्र व्यवस्था । वास्य क्ष्य विनाम ।

° কোড়া এক প্রকার বেতের চাবুক। পাঁচ গাছা লক্ষকে পাকা বেত ঝাঁটার মত এক সকে বাঁধা থাকে। একটি আবাতে পাঁচটি আবাত হয়।

সেদিন সকল কয়েদির সমুথে কালীনাথের নয় দেহে কোড়া মারিরা সাহেবের আদেশ প্রতিপালিত হইল। কোড়াতে জর্জারিত হইরা কালীনাথ অচেতনের মত অসাড় হইরা পড়িয়া রহিল।

কালীনাথ জেলের হাসপাতালে। পরদিন বিকালের দিকে রঞ্জনী নিঃশব্দে কালীনাথের বিহানার পাশে আসিরা দাঁডাইল।

কালীনাৰ জিজাসা করিল—কেন এসেছ রজনী ?

রজনী ধীরে ধীরে রোগীর শব্যা পাশে বসিল— বলিল—আজ ভোমাকে একটা ধবর দিভে এসেছি। শাভিভালায় কৈ খুন করেছিল জান ?

कांनीनाथ-कानि। कृमि।

রন্ধনী চমকিয়া উঠিল—আমি ? এ তো কেউ জানে মা—ভোমায় কে বলে ?

কাণীনাথ—ভূমি। একদিন রাতে ভূমি আর করজন করেবীর সক্তে পদ্ধ ওজব করছিলে। শান্তিভাগা খুনের করাও উঠেছিল। আমি আমার বর হ'তে সব ওন্ছিলাম। ভোষার করাতেই বুঝেছিলাম, ভূমিই খুন করে ভার টাকা ক্রীয়ে পানিরেছিলে।

। प्रक्रमी-था पृति (कात्म । व नव (कात्म पानांत्र

कानीनाथ-कि कारे।

রন্ধনী একটু চুপ করিবা বিশিবা বিশিল—সে রাজে এক অন্ধানাকে খুন করেছিলান, ভোনাকে করি নি। বন্ধ বলে যে করি নি তা'মনে করো না।

কালীনাথ কোন কথা কহিল না।

রজনী বলিতে লাগিল—বে মাছব মাছবকে খুন করে তার আবার বন্ধ অবদ্ধ কি! সেই বলিককে খুন করে তোমার গলার বসাবো বলে ছুরি উচিরেছিলাম। সেই সময় বাইরে কার পায়ের শব্দ হ'লো, তুমিও একটু নড়ে উঠলে, ভরে আমার প্রাণ কেঁপে উঠলো, ভোমাকে আর খুন করা হলো না। ছোরাখানা ঘোমার বিছানায় রেখে পালিরে এলাম। কেন রেখে এলাম জান ? ভোমাকে জড়াবার জন্ত। ভোমার বিছানায় রক্তের লাগ থাকবে, রক্তমাথা ছোরা ভোমার বালিশের নীচে পাওয়া যাবে, ভোমাকে নিয়ে টানাটানি পড়ে যাবে, অক্ত কোন দিকে কার্মর নজর থাকবে না। আমি নিশ্চিত্ব—কানি আমার উপর সন্দেহ আস্তে গারে না। ভন্লে কালীনাথ কেমন ভোমার বন্ধু, কেমন বন্ধুর কল্পে আক্র তুমি হাসপাতালে মঙ্গুতে বসেছ। রক্ষনী কাঁদিয়া ফেলিল।

কালীনাথ ধীরে ধীরে রন্ধনীর গারে হাত দিল, বলিল —এ সব কথা আর কেন ভাই।

চকু মৃছিরা রজনী বলিল—তাই বলছি। শোন। আমি
সব ঠিক করেছি। কাল ওরা বখন তোমার বেত মারছিল,
বেতের বারে গা চিরে বখন মাংস উঠে বাজিল, গা বরে
রক্ত পড়্ছিল—তখন আমি দেখেছি, তোমার মুখ একটুও
বিকৃত হয় নি, কি একটা ফুলর জল্পাই হাসি ভোমার
মুখে ফুটে উঠেছিল। এমন আর কখনও দেখি নি। কি
সে শান্তি! কি তীবণ! কি নির্ভুর!—এমন শান্তির মাঝে
মুখের এমন ভাব আর কখনো দেখি নি। সেই খেকে
মাথার আমার আখন অগ্ছে। আমি সব ঠিক করেছি।
বিকি তো শেব হরেই গেছে, কোখার বাড়ী, কোখার বর,
কে তার আছে, লানি না। তবু তুমি আছে। ভোমার
ফুলর লীবনটা আমিই নই করে দিরেছি। তুমি নির্ভোব,
তুমি মাহার নও, তুমি দেবতা; তবুও তুমি জেল খাছি।
ভোলে আর ভোমার আমি রাখুতে দেবো সা, আমি সব

দৈৰে।" ধৰিবা কালীনাধের ছই পাৰে নাৰা হাৰিব। আনি নেহৰা। বেল খেঁকে মুক্তি পেৰে ভূমি বাড়ী কেওঁ ভাহার পারের পুলা দইবা চলিবা বাইতেছিল। কালীনাথ भीषकार्श्व छाक्नि-इसना !--

बसनी किविया मांकारेया विनाम-चात्र नव । चामाव क्यां त्यं रायाह, जानि क्यांत जारांशां, जारे जातात काट कमा हारे नि । भाषिरे कामारक निष्ठ रहत, छारे কালীনাথ। বলিয়া চলিয়া গেল।

तकती छाशंत जमछ अनताथ चीकांत कतिवाहिन। करत्रकतिन शत्र कांनीनारथत मुक्तित जारमण्ड जानिताहिक क्षि छारात शृद्धरे कागीनाथ अभारतत नमछ वसन हरेए মুক্ত হইবা ওপারে চলিবা গিরাছে।

विराणी शत व्यवस्था

১৯৪৯-৫০ সালের কলিকাতা চিত্রপ্রদর্শনী

শ্রীস্থপনকুমার সেন

নিধিল ভারত চালকলা প্রদর্শনীর চতুর্ঘণ বার্বিক অধিকেশনের পৌরোহিতা करतरहरू पारलाव अरवनेशाल मानगीव देकलाममाथ कार्रेजू। भूकी वाक्तिकां व्यवादां केरवां वन वारतां वन नन्पूर्व स्टब्ट्ड निःनत्वर ; क्रिक् निजी मध्यनात ७ जनगांवांत्रपत्र वर्षा मश्यांत्र शांवता वा केवत्र शस्त्रत মৰোরপ্ৰবের চেষ্টা করলেও সভিাকারের ভৃতি বিভে পারেনি এই धार्मनी ।

এবারে সংগ্রহ পূর্বাশেকা জের, কিন্তু নিথিল ভারত নামের মর্ব্যালা অকুর রাখতে অক্ষর; প্রধর্ণন পদ্ধতি পূর্ব্বাপেকা উরত। তবে এ



প্রতিলিপি-->

पक्रापंत्र आकर्षनी किया-धार्षनीय अपूर्ण नव । "इरित्र वांनात्र" अरे चाराष्ट्रि स्थात । वीहित बाक्त्यत मन्त्रा गतिकत्रमा त्रार्थ "कार्यकान" पक्षांन पश्च पनवार मां अवर छ। हिल-अवर्गनीत शत्क निकारे धनाय **464 468 31 1**

व्यक्तित मनाम व्यवनगाम-वर्ग-गरक fint: Can ce t. Grannias diet weifes

পভাসুপতিক বিশেষ পরিবর্ত্তন চোধে পড়ে না। এর পাশ্চাতা প্রবিত্ত काका ७३७ वर अवर्णन "जिनम" जात अक्षांनि जनत्रहा इवि विकासिकः শ্রেটারের সম্মান পেরেছেন, মহারালা বাহাছুর ভার কাবেশর নিংক্ বৰ্ণদক পোৰে। ২৮২ নং প্ৰদৰ্শন এই বিভাগে বিভীন সন্মান লাক क्राइक्न-मित्री देख इरमंत्र, वैवृक्त अन, नि, व्याद-र्दाणा नवक रमसंह । धरे विकाल मात्रक करतकवन निजीत कांव केरतकरवात्रा, कारबर करका শিল-কালোয়ান বুবের দুক্তাখন রমণীর। শিলীকে ২০০ টাকার একট বিশেষ পুরস্কার বিয়ে সম্মান দেওয়া হয়েছে—২০৪ নং প্রদর্শন ব্যবসাপক



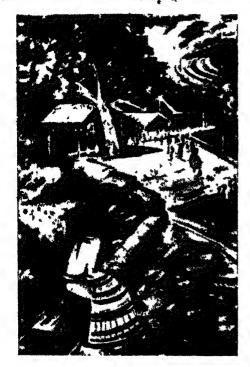
প্রতিনিগি--ং

চিত্র। আর বছে রও ব্যবহার করে ফুডিছ বেধিরেছেন শিল্পী। ওল্প শিল্পী রবেদ বভের কালও সমপর্ব্যার। শিল্পী চঞ্চা করের ওসকারে-ब्राइड मुझाइव (laudscape) वानि (अভिनिशि) नर) ब्राङ्गनीह । ছবিধানিতে শিলীর তুলির বলিঠতা একাশনাব।

শিলী বাধন ব্যৱহুত তৈলচিত্ৰ বিভাগে ভার আবছুল হালিদ প্রনামী

কর্মন "হাট" চিত্রে (প্রতিদিপী নং ২)। ঘিতীর স্থান অধিকার করেছেন, জে, পি, গাস্পী-রোপ্য গদক পেরে দিল্লী শাসু বস্থানার—

১৯৬ নং প্রদর্শন "ঘোড়-ঘোড়" চিত্রে। এই বিভাগের প্রদর্শন সংখ্যা
কর্মাধিক। করেকজন প্রখ্যাসনামা শিল্পীও এ বিভাগে যোগদান করে
কার্ম্মনীর মর্য্যাদা রক্ষা করতে চেটা করেছেন, তর্মধ্যে মাননীর শিল্পী
জে, পি, গাঙ্গুলী মহাশন, শিল্পী রমেন্ত্রনাথ চক্রম্বর্তী, শিল্পী এল, এম,
সেন। এর কাজের বৈশিষ্ট্য সহকেই পরিলক্ষিত হয়, অসমান অমিতে
ভৈল্পিতির অক্তন পদ্ধতি এরই সাধনাপ্রস্ত ; অপরাপর চিত্র থেকে
খাতস্ত্র্য বজাব রেখেছে। শিল্পী রমেন চক্রম্বর্তীর তৈল চিত্র প্রদর্শনাই।
ইম্নি। ৩৯২ নং প্রদর্শন, শিল্পী বসত্তর্মার গাড়ুলী মহালরের "তিনটি



প্রতিলিপি-৩

ক্ষণ ছবিথানি তিন ভয়ীর প্রতিকৃতি। তৈল চিত্রের বর্ণবিভাবের আজিলতা পরিকৃট, এর সম পর্যার আনে এমন চিত্র একথানিও প্রবর্শিত হয়নি এ বৎসর। ছানাভাবে বিশেব আলোচনা সভব হলোনা। শিলী সভীল সিংহ মহালরের তৈলচিত্রে রামারপের ছ'একথানি চিত্র ও কুরুক্তেরের চিত্রথানি মনোরম। শিলী পাণিকরের "তক্ষী মাতা" ৬০৮ নং প্রদর্শন তৈলচিত্রথানি অপূর্বে। শিলী এ, এ, আলমিল করের "চার বোন" ২৮৫ নং প্রদর্শন হবিথানির বিবর-বন্ধ ও বর্ণ বিভাগ প্রশাসনীয়। ক্যালকাচা প্রশাসন্তর কারগুলির মধ্যে শিলী রখান মৈত্রের "প্রাত্তোজন" ২৮৬ নং প্রদর্শন, ছবিথানিও প্রশংসনীয়। শিলী ট্রেলা প্রাত্তোজন" ২৮৬ নং প্রদর্শন, ছবিথানিও প্রশংসনীয়। শিলী ট্রেলা প্রাত্তোজন ব্যক্তির পূব্ আকর্ষীয় হরনি। বিবরবন্ধ নিত্রিল হরনি।

২৩১ বং চিত্রের শিল্পী গোপাল বোবের আঁকা চিত্রগুলির নথে জীর নিজব ধারা পরিস্ফুট। চিত্রের মধ্যে তুলির খাবলীলগতি ও বর্ণবিভাসের বলিঠ ইলিত অনখীকার্য। এঁর আঁকা ২১৩ বং প্রবর্ণন "কালিস্পঙ্এর ভূটিরা রম্ধা" (প্রভিলিপি নং ৩) চিত্রধানি সতাই দর্শককে আনন্দান



প্রতিলিপি—8

করার ক্ষমতা রাপে। শিলী দমন্তী চোলার আঁকা ৩৯৭ মং প্রদর্শন
"প্রসাধন" (প্রতিলিপি নং ৪) চিত্রপানির আলোছারার সমন্বর জতি
সহজে আমাদের চোপে ধরা দেয়। শিলী ডরেপা মেরীর আঁকা ৪৫নং
প্রদর্শন 'গ্রামের মেরে" (প্রতিলিপি নং ৫) চিত্রপানি মহিলা বিভাগে



প্রতিলিপি--

বিশেষ সন্মান পেয়েছে ও এতেনেশ বড়াল রেগিগাণক লাভ করেছেন।
শিলী কিশোরী রামের ১৪৩ নং প্রদর্শন শিলাচার্য্য দেবী প্রসাদের প্রতিন্ত্র্যী
তৈল চিত্রখালি আকারে ছোট হলেও স্থাতিছের দিকে নগণ্য গল।
প্রচাচ বিভাগে প্রবর্শন সংখ্যা পুর বেনী সন্ধ প্রবং ছিলেক্ড্র প্রকাশ



অতিলিপি--- ৬

ভব ভার ১০৪ নং প্রদর্শনে। শিল্পী পূর্ণচক্র চক্রবর্তীর খান করেক চিত্র প্রদর্শিত হরেছে কিন্তু সঞ্জীবতা প্রকাশ পারনি একটিভেও। শিলী कमलाबक्षम ठाकुरवब क्षानुभाविकाल मरनावम । এই विভाগে अँब ११० नर



অভিলিপি-->

অবর্ণন "অগবাদ বৃদ্ধ ও অ্লাভা" চিত্রপানি ২০০ টাকার গোটাস ট্ৰীষ্ট বিশেষ পুদ্ৰস্থায় পেলেছে ঃ এ ছাড়া এই বিভাগে স্থান কোনও **केटब्रब्टवाना अनुर्वन काटब नाइ ना ।**

विकुछ रूट का अरे विकासित अवर्गन स्वरंग नाम इ-अक्सन विव এই विकाशन जन्तान क्षमा करतहरून। शक करतक वक्षमत विशा शास्त्र, अहे विशाश क्रमनेहे कुर्तिन इत्त शहरह। शब वरमत नरके থেকে একটি প্রদর্শন পাটিরে প্রদর্শনীকে সাক্লাসভিত করতে টেট্রা करबहिरमम । करबकम भिन्नी, अ दश्मन छोत्रा य स्मानक सात्रार्थि হোক সহবোগিতা করেনি। এদর্শনীর বিশেষ ভর্মা কলকাডার আই কুলের উপর; কিন্ত চু:বের বিবর কলকাতা আর্ট কুলের এই বিভাগী বছদিন যাবৎ চুৰ্বল হয়ে আছে, সেধান খেকে আর বিশেব কিছু করা আমানের পক্ষে বাতুলতা। শিলী মুনীল পালের প্রদর্শিত বেং এবংশ্ব



প্রতিলিপি-- ৭

"শিরীশুর অবনীলুনাখের প্রতিষ্ঠি" (প্রতিলিপি ৬) একমাত্র প্রকর্ণন বার মধ্যে নৃত্তনত্ব আছে, বে কার্মধানিকে কেন্দ্র করে অনেক কিছুই वला बाग्र। कामधानि अभिकालत्र वार्थहे आमन्त्रशाम क्यार मान्तर नाई। এটিকে श्रीकामाहेनान क्षित्रिश वर्गभाक नित्त এই विकारनत आर्थ मन्त्रीय मिख्या राताह । अरे विकाशित जात এकथानि आववस अवर्णन रनर "চুখন" (প্রতিলিপি নং ৭) একথানি কাষ্টক্লক থেকে শিলী এটিকে बूँ क्र वात करवरहन । नित्री धनताम छन्दर अँतरे अनः धनर्मनशानित्क ভাকত বিভাগ ভারও নিজুট সংগ্রহ—ভারতীয় নিজীবের পূর্বপৌরব রারবাহাছর, আর, এন, মুখাবলী রৌপানবর্দ দিরে ন্যানিত করা

াছান্তর রৌপ্যপদক পেরেছেন শিল্পী বিশ্রচরণ মহান্তি ভার "প্রেম" ৮নং



অভিলিপি---

রেছে। এই বিভাগের বিভীর পুরকার রালা বিবেশর নিধে নাহকি । প্রাক্তি । ভারতী বিভাগের বিকাশন বিভাগে বিভাগের বিকাশন ৬০০, "ছই বোন" (প্রতিলিপি নং ৮) মৃত্তিশ কাঠ বোলাই চিত্রে বিশেষ পুরকার নরেশবাধ সুধান্দ্রী বর্ণপরক পোরেছেব শিল্পী হরেন বাস ৷ কাঠ त्यांगाई किन हिनाद्य व्यक्ति अपूर्व, अत्र स्मीनक्ष अम्बीकार्य । शिली অনিমা মুধাক্ষীর ৫৭ নং অদর্শন "সূত্যমতা কুমারী দল" (এতিনিশি नः ») ब्रिडिन कार्र स्थानाह काना, अधिक क्यांत अनवीन निरह वर्गनक পেরে সমানিত হরেছে।

> শিরী অনিলফুক ভটাচার্য ভার ১৭২ সং প্রথপন "আলোর তলে" প্যাষ্টাল চিত্রে ২ ৫০১ টাকার ইউনিয়ান বৃত্তি পেরে সম্বানিত হয়েছেন। निज्ञी निज्ञीन मक्षमास्क कांत्र २०० मः व्यवनीय "क्रुनी नूना" किर्य ১২**৫**ু টাকা লোটান ট্রাষ্ট পুরস্কার দিরে সন্মানিত করা হরেছে।

> পরিশেবে মন্তব্য হিসাবে শিল্পী ও শিল্প-রস্পিপাপ্রদের ভরত থেকে ছু' একটি বজবা হয়ত প্রদর্শনী কর্ত্তগক্ষের অলির সাগরে তবু বলতে वांश इच्छि, व्यक्तं विज्ञाद नर्सव्यक्तं नचान व विज्ञशामितक विश्वत হরেছে, কর্ত্তপক্ষের বিচারক গোটা কি তার চেরে ভাল এদর্শন এবারের চিত্ৰ প্ৰদৰ্শনীতে পুঁজে পাদনি ? না দেখেও চোধ বন্ধ করে কেলেছিলেন, বিশেব শিলীর প্রতি বরদ দেখানর অন্যুপ্রেরণার ? শিলী চঞ্চ কর. শিলী কালোয়ালকুক, তরণ শিলী রণেনশায়ান বন্ত, শিলী গোপাল বোৰ, এ দের চিত্রগুলি কি তথনও টাঙান হরনি। তৈল চিত্রের শ্রেষ্ঠ পুরস্কার প্রদর্শনী কর্তুপক্ষের তরকে লক্ষাই প্রকাশ পার। এখন ক্ষুসাধারণের বিচার চকু.উন্মীলিভ হরেছে, ছবি দেখতে তারা শিখেছে। সর্বাশের বছাব্য প্রদর্শনী থেকে বেরিরে আসার পর আর একথানি প্রদর্শনও ফলে রেখা-পাত করে থাকে না 1

অভিনন্দন

औरनलसकुष नाश

নাই পেলে তাহাদের ত্থ্যাতি, সন্মান, বীরছের আন্দালন কথা নাত্রে শেব, চল্ফে আজো লেগে আছে বপ্লের আবেশ, স্বাধীনভা মনে ভাবে ওদার্য্যের দান।

খাৰিকার-প্রমন্তের নাহি হেখা ভান উচ্চে বলি দেয় তারা সবারে নির্দেশ, আগরা ধরিতে, রিজ, আগরাই দেশ,

ছৰ্দিনে নেছম্বে করি ভোমারে আহ্বান।

েৰে পাৰে করিতে ভ্যাগ সে-ই ভগু পার। জীবনে আছের করে ছারুণ বিবাদ. বলের আকাশ কালো অন্ধ ভনসার, কে ৰাগাবৈ ? কে বুচাৰে এই অবসাহ ? নিতাঁক, ভোষার পাবে সারা ক্ষে চার. ভাষা জননীয় ভবি দভিলে প্রসার 1



(পূর্বাঞ্চলাশিতের পর)

ভর্নুক মহকুষা ও তৎপার্থবর্তী অঞ্লের নেতৃত্বক ২৭পে সেপ্টেবর छात्रित्य अक श्रुष्ट देवहरू नवरंग्छ हरेलन अवर निवास कवितन व बाना. আদালত-গৃহ প্রভৃতি সরকারী ভবনসমূহ দখল করিয়া ভাহার উপর জাতীয় পতাকা উড্ডীন করিতে হইবে। হাজার হাজার বেচ্ছাদেবক নইরা গঠিত বিদ্যাংবাহিনী ইহার প্রদিনই কর্মতংপর হইরা উঠিল। বড বড গাছ ভাটরা রাজার উপর কেলিরা, সেতু ধ্বংস করিরা এবং টেলিআক-টেলিকোনের তার কাটিরা দিয়া পোষ্টগুলি উপ্পড়াইরা কেলিয়া তমলুকের স্থিত বহিত্রগতের বোখাবোগ রহিত করা হইল। লাঠি চার্ক ও জালিবর্বণ অপ্রাক্ত করিরা দিন ছ'রেকের মধ্যেই তিন-চারিটি খানা অধিকার করিরা সেগুলির উপর উদ্যোলিত করা হইল জাতীর পতাকা। পাঁচটি বড বড শোভাবাতা ২৯শে তারিখে পরিক্রনা অনুযারী বিভিন্ন ্দিক হইতে সহকুমাসহর তমলুকের দিকে অঞাসর হইল। জনতা িখানার নিকটবর্ত্তী হইলে পুলিশ তাহাদের উপর নির্দ্ধরভাবে লাটি চালাইতে থাকিলেও সম্মাৰ্ক মনতা ভাহাতেও নিবৰ না হইয়া অএসর হইতে লাগিল। তপন শোভাবাত্রীদিগের উপর পুলিশ ও बिनिहोत्रि चक्र कत्रिन श्वनिवर्तन । हेहाएक किছ लोक जनिता (गेन वर्ते, ক্তি বাঁহারা শোভাষাত্রা পরিচালনা করিতেভিলেন, তাঁহারা পিছ না হটিয়া অপ্রসর হইতেই লাগিলেন। শুলিতে বহুলোক হতাহত হইল। রাষ্ট্রক বেরাকে সাংঘাতিকভাবে আহত অবস্থার প্রেরার করিরা ধানার লইরা বাওরা হইল। সংক্রাহীন অবস্থার তিনি থানার পড়িরা রহিলেন। ৰচক্ষণ পরে বধন উাহার সামাল্য জ্ঞান ফিরিয়া আসিল, তখন তিনি টলিতে টলিতে মুখ্যাক কলেবরে কোনও মতে থানার বাহিরের দিকের দরকার নিকট পর্যান্ত অঞ্চনর হইরা গেলেন। দেখান হইতেই তিনি ভাঁহার অপর সঙ্গীদিপকে ভাকিবার ভলীতে চীৎকার করিয়া বলিলেন,— "এই বে चानि पानात अमिह—पाना प्रथम स्टब्स्ट ।" क्यांश्वनि वनियात সঙ্গে সজেই ভিনি পড়িয়া বাদ এবং অবিদৰে সূতায়ধে পতিত হন।

এই সকল শোভাবাঝার একটিতে ছিলেন ৭০ বংসর বর্ষা যাভলিনী
হালরা। ভারতের বাধীনতা-সংগ্রামের ইতিহাসে তাহার অভিনব
লামবিদর্জন এক অপূর্ব বহিষার সমৃত্যক। তমলুক মহকুমানহরের
নানার বিকে উত্তর দিক হইতে বে শোভাবাঝাট অপ্রসর হইতেছিল—
তিনি ছিলেন তাহারই মধ্যে। সৈতসংগর প্রবল ভলিবর্ধণের মুধে
লাভাবাঝিন্দ সামরিকভাবে পন্তানপ্ররূপে বাধ্য হয়। সেই সময়
ক্রীনারামণ বাস নানক জনৈক বালক অপ্রসর হইরা একজন সৈত্যের
নকট হইতে ভাহার রাইকেল কাড়িয়া সইলে নির্মানত পতাকা হতে
ইবা করা হয়। সাভলিনী হালরা তথ্য ঝিবণি-রঞ্জিত পতাকা হতে
ইবা সৈত্যকরে অভ্যন্তরে প্রবেশ করেন এবং ভাহাবিসকে নির্ম্ব

করিবার এয়াস পান। তাঁহার আটুট দ্বতা ও সাহস দর্শনে সৈত্তরণ কিছুকণের অভ বেন হতবৃদ্ধি হইলা পড়ে এবং পিছু হটলা বাল, কিছ পরক্ষেষ্ট তাহার এতি ভাহারা ভলিবর্থ করে। বে হতে মাজনিনী। লাতীয় পতাকাটি ধারণ করিয়াছিলেন, তাহা খলির ধারা সাংবাজিক-ভাবে আহত হয়। মাতলিনী তথাপি পতাকাটি দচভাবে ধরিয়া বাকিয়া সৈত্ৰপণকে অনুৰোধ ক্রিতে লাগিলেন বাহাতে ভারতীয় হইয়া ভাহায়া : ভারতীয়গণের উপর শুলিবর্ষণ না করে এবং চাকুরী ভ্যাপ করিয়া তাহারাও বাধীনতার সংগ্রামে যোগদান করে। ইতিমধ্যে নিকিও আর একটি গুলি আসিরা ভাছার ললাট ভেদ করিয়া বার এবং ভপজিত হট্যা তিনি তংকণাৎ মৃত্যুদ্ধে পতিত হন। **তাহার মৃত্যুর পর্য**ভ দেখা বায় বে পভাকাট তিনি দৃঢ় হল্তে পূর্বেরই মত ধারণ ক্ষিত্রা আছেন। তাঁহার রক্তে চারিদিক পাবিত হইতে লাগিল। একলন সৈক্ত ছটিয়া গিয়া লাখি মারিয়া পভাকাটি কেলিয়া দিল। দেখা গেল যে মাতলিনীর আশে-পাশে লক্ষীনারারণ দাস প্রভৃতি আরও করেকঞ্জের মুত্তেহও পড়িয়া আছে । ইহার পর সৈঞ্চাণ সম্প্র ভাষ্ট পাহার। দিয়া রাখে এবং আক্তপ্রের মধ্যে বাহারা যম্রণার আর্থনার ক্রিতেছিল, তাহাবেরও শুশ্রবা ক্রিতে কাহাকেও নিকটে বাইটে (तर मा।

पुर्कर्व जनमाधात्र किन्छ कि इट्टिंग भारतका रहेन मा । जनम वाधाविष्ट অতিক্রম করিয়া তাহারা কার্যা চালাইতে লাগিল। মেদিনীপুরে चारचाननी धारत इहेन कांचि धार जमनुक महकूनाराई। धानी, পুলিপ-কাঁডি, ডাক্ষর, ইউনিয়ন বোর্ড অফিস, সদের বোকান প্রভঙ্জি জনসাধারণ আগুন দিরা পুড়াইরা দিল, টেলিপ্রাক-টেলিকোন লাইন ধাংস করিয়া দেওয়া হইল, কোন কোন সমকারী কর্মচারীকে লোকে গ্রেপ্তারও করিল। এই সময় ১৬ই অক্টোবর মেদিনীপুরের উপর দিয়া বে প্রচণ্ড বাঞ্ছা প্রবাহিত হইয়া বার এবং তাহার সহিত বে ব্যার श्रायम गाउँ, छाराएछ-- आकृष्टिक हार्गाश अवः नत्रकाती क्लाहारबात ब्रद्धा अविमी शूत्रवानी एवत्र अरमायम छानिता भएक माहे। व्यवहा त्यद পর্যান্ত এমন ভারে পিরা পৌছাইল বে কোন কোন অঞ্চল বুটিল-লাসক-কর্ত্তৰ একেবারেই ভালিয়া পড়িল। ১৯৪২ সালের ১৭ই ডিসেম্বর প্রতিন্তিত বুইল তাত্রলিপ্ত জাতীর সরকার। উক্ত সরকারের বস্ত একলন স্ক্ৰিবিনালক নিবুক্ত হুইলেন এবং ভাঁহাকে বিভিন্ন বিবলে সাহাব্য করিবার অক্ত করেকজন মন্ত্রীও নিবৃত্ত হইলেন। এই সরকারের অধীনে বিভিন্ন থানা-এলাকার আরও কতক্তলি অধীন শাসন-কেন্দ্র গঠিত হয়। পূর্বে গঠিত বিদ্যাৎবাহিনী এই সরকারের নির্মিত সেনাবাহিনীতে পরিণত হর। বিচারকার্যা, শাভি-শুখলা রকা ইত্যাদি সমুদর বিবাই স্থানার সহিত পরিচালিত হইতে থাকে। আর্থ ও ছঃছ ব্যক্তিবিগকে

কাভ, বন্ধ ও উবধপত্র বিভরণ করিল। কাভীর সরকার জনসংশর **অভূত** দেবা করেন।

এই আন্দোলন ষমনকলে বৃটিশ গভর্গনেণ্ড ব্যাপকভাবে ষমননীতি
মালাইতে থাকেন। নানা ছানে সৈত্তগণের ছাউনি পড়ে। পুলিশ ও
ক্রিনিটারির রাজত হল হইনা যার। গুলি চালনা যেন সাধারণ ব্যাপার
হইনা দীফার এবং বিভিন্ন ছানে যে কত লোক হতাহত হল, তাহার
ইম্বা নাই। গুণাগণকে উৎসাহ দিলা সৈত্তগণ ভাহাদের সহিত এক-বোগে দুটপাট চালাল, লোকের ঘর-বাড়ীতে আগুন দিলা পুড়াইলা দেল।
ক্রেইভাবে লক্ষ্ণক টাকার সম্পত্তি নষ্ট করিলা দেওবা হয়। পাইকারী
ক্রিমানা আদার করা হয় বছ ছালে। প্ররোজন হইলে বিমান হইতেও
পর্ব্যবেক্ষণ কার্য চালান হয়। আবাল-পুদ্ধ-বনিতা কেহই এই পীড়ন
ইইতে রেহাই পায় নাই। সৈত্তগণ বছ ছালে বহু নারীকে ধর্ষণ করে।
মেদিনীপ্রে অস্তিত নারকীর অত্যাচার বৃটিশ গভর্গমেণ্টের মুখে চূণকালি
ক্রেপিলা দিল।

আগষ্ট-বিপ্লব ভারতের সকল প্রদেশেই স্থক্ন হয় এবং উহার চেউ
নিয়া আসানেও পৌছার। আসানের সকল কংগ্রেস নেতাকেই গ্রেপ্তার
করা হয়। শোভাবাতা প্রভৃতির উপর পুলিশ বেপরোরা লাটি চালাইতে
কাকে। লাবং কেলার অন্তর্গত গোপুর থানা-ভবনে আতীর পতাকা
উজোলিত করিবার উদ্দেশ্যে ২০শে সেপ্টেম্বর একদল লোক অন্তর্গর
হইলে পুলিশ তাহাদের উপর গুলি চালার। ইহার ফলে বহু লোক
আহত এবং কনকলতা নারী জনৈকা মহিলা নিহত হন। কনকলতার
হন্ত হইতে আতীর পতাকাটি লইরা অপর একজন থানার দিকে অপ্রসর
হইলে পুলিশ তাহাকেও গুলি করে। প্রবল গুলি বর্ষণকে অপ্রাঞ্জনির শেব পর্যান্ত করেকজন গিয়া থানার উপর আতীর পতাকা উজ্জীন
করিতে সমর্থ হন।

উক্ত দিবসেই ঢেকাইজুলি থানা অভিস্থেও একদল শোভাবাত্রী
অপ্রসর হল। কুলেবরী নারী একটি অন বরত্বা বালিকাও আরও জন
কুড়ি লোক সেধানে শুলিতে প্রাণ হারার। একজন ব্বক সকল বিপদ
অপ্রায় করিরা অপ্রসর হইরা থানার উপর জাতীর পতাকা উড়াইরা দেন
—কিন্তু পুলিসের শুলিতে তিনিও সেধানেই প্রাণ হারান।

আসাম প্রবেশের চতুর্দিকেই প্রিসের ও বিলিটারির অভ্যাচার
ক্রমিতে থাকে—বছ নর-নারী গুলিবিদ্ধ হইরা নিহত হর। এই সকল
অভ্যাচারের বিরুদ্ধে প্রতিবাদ আপনের লক্ত তেলপুর সহরের মরদানে
এক জনসভা অস্ঠানের ব্যবহা হর। প্রিস ও সৈত্তপণ উক্ত সভা
আক্রমণ করিরা যথেক্তভাবে লাঠি ও গুলি চালার। ইহার কলে বছ
লোক আহত হয়। শত অভ্যাচার স্থা করিরাও আসাম প্রদেশের
অধিবাসিগণ আগন্ত-বিন্নবে উল্লেখবোগ্য অংশ প্রহণ করেন। আসামেও
রেলের লাইন তুলিয়া কেলা হয়, সরকারী ভবনসমূহ আক্রমণ ও স্বংস
ক্রা হয় এবং সৈত্ত-নিবাস ও বিনাস বাটি প্রভৃতি নই করিরা বুটিশ
গুরুষ্কের বৃদ্ধ প্রচেটার বিশ্ব ভারির চেটা করা হয়।

स्ताचारे अत्तरभव गांकावा स्वमाव चारचामन स्वम चांभक चांकाव

এইণ করে । উক্ত অঞ্চলে প্রায় এলাকাঞ্চলিতে ভাছারি হইতে লাসন-কর্তৃত্ব পরিচালিত হর । তথাকার জনসাধারণ অহিংস থাকিরা লাজিপূর্ণ উপারে কাছারিগুলিতে সভ্যাপ্রই পরিচালিত করিতে সকল করেন । তলস্থারী ২০শে আগষ্ট ভারিখে বহু লোক করানপ্রামের ভাছারিতে গিরা সভ্যাপ্রই আরম্ভ করিলে উহা বন্ধ হইনা যার এব্য সভ্যাপ্রইয়া তথার জাতীর পতাকা উভ্যেন করে । সরকারী কর্মচারিগাকৈ অসুরোধ করা হয় যে ভাছারা বেন আপনাদিগকে সলগণের সেবক বলিরা মনে করেন । নেভৃছানীর একজন সভ্যাপ্রইক্রিক্রাণিকে প্রস্তার করা হয় । যাহা হউক, এইভাবে আরও ক্রেক্টি কাছারিতেও সভ্যাপ্রহের কাল নির্বিশ্বেই সম্পান হয় ।

ক্ষিত্ব ভারত নামক থামের কাছারিতে একলল লোক সত্যাথ্যই করিতে বাইলে কর্তৃপক চরম ব্যবহা অবলঘন করিলেন । সহযাধিক লোক লইনা গঠিত শোভাষাত্রা বথন কাছারির অভিমূপে অপ্রসর হইতেছিল, তথম পুলিপ তাহাদের উপর গুলি চালাইতে লানিল এ উপর্গুপরি করেকটি গুলির আঘাত পাইরা সত্যাপ্রহীদলের নেতা পতাকা হত্তে শেব শব্যা প্রহণ করিলেন এবং আরও ক্রেকল্পন হতাহত হইল। নিহতদের মধ্যে ছুইটি বালকও ছিল। পুলিপ মুতদেহগুলিতে পদাবাত করে।

ইছার পর পুলিপ ব্যাপকভাবে উক্ত অঞ্চলে তলাসী চালার, বছ লোককে এেথার করে এবং লোকের উপর অভ্যাচার চালাইতে থাকে; কিন্তু তথাপি ইসলামপুর প্রামের কাছারিতে পুনরার সভ্যাপ্রত করিবার পরিকল্পনা করা হয়। সেথানে সভ্যাপ্রত করিতে গেলেও পুলিশ গুলি চালায় এবং বছ লোক হতাহত হয়। দলের করেকজনকে প্রেথার করা হয়।

করেকজন নেতা আত্মগোপন করিয়া থাকিয়া সাভারার আন্দোলন পরিচালনা করিতেছিলেন। ১৯৪২ সালের শেব দিক হইতে সাভারার আন্দোলন অন্ত পথ ধরিল। প্রায় কাছারি, রেল ষ্টেশন, ডাক-বাংলো ইত্যাদিতে আশুন ধরাইরা সেগুলি পোড়ান হইতে লাগিল এবং সম্বর্গ সাভারা জেলার খোগাবোগ ব্যবহা ধ্বংস করা হইল। করেক ছানে মালগাড়ীকে লাইনচ্যুত করা হইল। এইরাপ কার্যকলাপ সাভারা জেলার ১৯৪৩ সালের মাঝামাঝি সময় পর্যান্ত চলে।

পুলিশ ও বিলিটারির অত্যাচার হইতে আন্তরকা করির আন্তোপন পরিচালিত করিবার জন্ত শত শত কর্মীকে তথ্য আন্তর্গোপন করিরা থাকিতে হইরাছিল। পুলিশ বহু চেটা করিরাও ভাষাবিদর্শকে থুঁজিরা বাহির করিতে পারে নাই। এই সক্ষ আন্তর্গোপনকারী কর্মীকে খুঁজিরা বাহির করিবার জন্ত সভর্গদেও এবং চুইপ্রকৃতির বহু লোককে চর নির্ভ করেন। বাবুরাক্ষর্পনামক কুথাত একজন গুণ্ডা এই সকল চরের অক্ততম ছিল এক্ষিন একজন কংগ্রেশ কর্মীর অবেবণে একখল পুলিশসহ সে ভাষাবিদ্যালিতে বার এবং উক্ত কংগ্রেশ কর্মীর গায়ীকে ক্ষেত্রই জন্মীল কং

ব্যবিদ্ধা অস্থানিক করে। এইতাবে গুলা গুণান্ত নেথানকার তর অধিবাসীবের বসবাস হংসাধ্য হইরা উঠে। কর্মিগণ তথক এই গুলা-উৎপাত সমনের ক্ষত্ত বস্তানিকর হন। উপরোজ বটনার দিনকরেক পরেই এক্রিক বাবুরাও দেশমুধ-এর মৃতবেহ প্রের বারে পড়িরা বাক্রিতে দেখা বার। তাহার হাত ও পা ক্রেছ হুইতে বিভিন্ন করিয়া কেলা হইরাছিল।

সাভারা জেলার নানা ছানে বছ টাকা পাইকারী অরিমানা থার্য্য করা হর এবং তাহা আলার করা হইতে থাকে পাশবিক পীড়নের হারা।
বীলোকগণকে কেরাঘাত, জনগণকে ওলি করিরা যদৃচ্ছ হত্যা সাতারা কেলার দিত্যনৈমিত্তিক ব্যাপার হইরা পীড়ার। এই অত্যাচারউৎপীড়নের মধ্যেও সাতারার অধিবাসিগণ অটুট সকল লইরা আতীর সরকার প্রতিতিত করে। এই সরকার প্রম যোগ্যতার সহিত কিছুদিন সাভারার শাসন-ব্যবহা প্রিচালিত করেন।

বিহারেও আগন্ত-আন্দোলন পূর্ণ মাত্রার চলিতে থাকে। ১১ই আগন্ত সরকারী ভবনসমূহে জাতীর পতাকা উত্তোলিত করিবার জন্ত পাটনার ছাত্রগণ স্কুল-কলেজ ত্যাগ করিরা রান্তার সমবেত হর এবং পাটনা হাইকোর্টের দিকে অগ্রসর হইতে বাকে। সেখানে উপস্থিত হইরা তাহারা হাইকোর্টের উপর হইতে বৃটিশ পতাকা নামাইরা জাতীর পভাকা উড্ডীন করিবার দাবী জানার। প্রধান বিচারপতি অপ্রীতিকর অবহী এড়াইবার জন্ত ভাহার এক কর্মচারীকে দিয়া ছাত্রদের অস্থ্রোধ রক্ষা করেন। অতঃপর ছাত্রগণ বিহার প্রদেশের আইন-পরিবদ ভবনে পতাকা উড়াইবার জন্ত সেখানে গিয়া উপস্থিত হয়। একদল ছাত্র ব্ধন জাতীয় পতাকা সইরা পরিবদ-ভবনের উপর উঠিতে আরম্ভ করে, তথন পুলিশ গুলি চালার এবং তাহার কলে গাত জন নিহত হয়।

ইহার পর জনগণ কিপ্ত হইয়া উঠে এবং নানাছানে অবস্থা আরন্তের বাহিরে চলিরা যার। ১২ই আগত্ত হাজার হাজার লোকের এক বিরাট বিকুদ্ধ অনতা পাটনার বিভিন্ন স্থানের টেলিগ্রাক-টেলিকোন সংযোগ ধ্বংস করিরা কেলে। বাঁকিপুর জেলের সপুথে উপস্থিত হইরা এই জনতা বৃটিশ-বিরোধী নানাপ্রকার ধ্বনি দিতে থাকে এবং পুলিশের মহিত ভাহাদের করেকবর্টাবাাপী এক থওপুদ্ধ হয়। নানাছানে ভাক্ষর প্রভৃতি সরকারী ভবন আগুন ধরাইরা পোড়াইরা দেওরা হয়। পুলিশ ও মিলিটারির গুলিবর্বণে বিহার প্রদেশে কহলোকের মৃত্যু ঘটে। আন্দোলন তথাপি চলিতেই থাকে। বহুলাকে বৃটিশ-লাসন ভাজিরা পড়ার জনগণই আগনাদের পণরাজ প্রতিষ্ঠিত করে।

পাটনা সহরের কর্ড্ড সৈজগণের হতেই তুলিরা দেওরা হর। পরিচর-পত্র ব্যতিরেকে সাজ্য-আইন বলবৎ থাকার প্রাকালে লোক চলাচল নিবিদ্ধ হর। সহরের বহু সম্মানার্হ ব্যক্তিকেও বন্দীনিবিরে আটক করিরা শাল্তি লেওরা হর, অথবা প্রয়োজননত তাহাদিগকে বাব্য করা ক্রা প্রাক্তার স্বাল্পার করিছে। ঘটনার কোনও আছত বিবরণ অকশি না করির। নাজ সরকারী বিবৃতি বৃত্তিত করিবার বির্দেশ বেওরার কলে সংবাদ-প্রেগুলি সরকারী বিবরণ ছাশিতেও অধীকার করে।

বিহার থাদেশের অক্তান্ত অক্তোও উৎপীড়বের বারা বহু টাকা গাইকারী অরিমানা আদার ,করা হর। বহুলোককে অভ্যানেরের ভরে হানে হাবে বর-বাড়ী ছাড়িরা পলাইরা বাইতেও হর। নারীরপুও নৈজনের হতে নিগৃহীতা ও লাছিতা হন। আগন্ত-আক্ষোন উপলক্ষে বিহার থাদেশে হর শতাধিক লোক গুলিতে থাপ হারার। অনসাধারর তৎসব্বেও সরকারের নিকট নতি বীকার করে নাই।

বৃক্তপ্রদেশে এই আন্দোলন দমনকরে ঘরবাড়ী আলাইরা বৃট্টপাই চালান হর, মহিলাদিপকে পথে ছাড়িয়া দেওরা হর বিবন্ধ করিরা। বালিরা ও বাইরিরার গুলি চালাইরা পুলিশ ব্যাক্রমে ৪০ ও ২০ জনকে নিহত করে।

আগন্ত-বিশ্বব ভারতের অভাত অঞ্চলেও তীত্র আকার ধারণ করে এবং বৃটিণ গভর্গনেট অমাসুবিক অত্যাচার-উৎপীড়নের বারা তাঁহা বমন করিতে চেটা করেন। বিয়ালিশের বিশ্ববের সমাক কর-কবির ইতিহাস আজিও রচিত হর নাই। সংবাধ প্রকাশের পথে বিশ্ব শটি করিয়া কর্তৃপক ইহার বিত্তি ও প্রহুওতা রোধের ক্ষম্ব আপ্রাণ চেটা করিয়াছিলেন। এমন অপূর্ব্ব গণ-অভ্যুণান পূথিবীর ইতিহাসে বিরল।

বৃহতিদের বৃদ্ধকালীন প্রধান মন্ত্রী মিঃ চার্চিল ইংলেওর পার্লাবেকী
মহাসভাকে আবাস দিরা সদত্তে সরণ করাইরা দিরাহিকেন যে, মুক্তউপলক্ষে বহসংখ্যক ইংরাজ সৈন্ত ভারতে অবস্থান করিতেতে,
ক্রতরাং কংগ্রেস-নেতৃবৃন্দের গ্রেপ্তার এবং আগন্ত-আন্দোলনের
ক্রন্ত ইংরাজলাতির চিন্তিত হইবার কোনও কারণ নাই, অর্থাৎ
ক্রিরা প্ররোজন হইলে এ বহসংখ্যক সৈক্ত অলান্ত ভারতবানীদিগকে
আরেতা করিতে পারিবে। বাহা হউক, বিষযাগী বিজীন
মহামুদ্ধ চলিতেই লাগিল—আর ভারতে চলিতে লাগিল শাসনতাত্রিক
অচল অবস্থা। এদিকে বাধীনতা-সংগ্রামের অক্লান্ত বোদ্ধা হভাবতক্র
গোপনে ভারত ত্যাগ করিরা লিরা দক্ষিণ-পূর্বা এলিরার আলাদ-হিন্দ্র
কৌলের নেতৃত্ব গ্রহণ করেন এবং ভাহার সর্বাধিনারকত্বে আলাদ্ধা
হিন্দ-কৌর ভারতের পূর্বা সীমান্তে,আবাত হানিতে বাকে। বাহা হট্টক,
শেব পর্যান্ত আমেরিকার সাহায্যে মিত্রপক্ষই করলাভ ক্রিক্টে
এবং অক্ষ-পঞ্জির অন্তর্ভুক্ত দেশগুলি একে একে পরালর বরণ করিছে
লাগিলেন। ১৯০০ সালে মহারুদ্ধের স্বান্তি ঘটিল।

ইংলভের জর হইল—কিছ শক্তি, আন্তর্জাতিক স্থ্যাপা একং অর্থনৈতিক দিক দিরা ভাষার অবস্থা পরাক্ষিত দেশগুলি অপেকা বিশেষ উৎকৃষ্ট হইল না। সহাযুদ্ধবিধান্ত পৃথিবীতে ভাষার পূর্বক্ষমতা বলার রাধা আর সভব হইল না। চতুর্কিকে অলান্তি স্টে হইতে লাগিল—পৃথিবীর স্থানুঞ্জাতে অবস্থিত ক্ষুত্র ক্ষুত্র দেশগুলিতে পর্যান্ত দেখা বিল বর্ণনাগ্রণ। বুরুর্ব সামান্ত্রাণার ভাষার শেব সিংখাস ভাগে করিবার

উপক্রম করিতে লাগিল। বৃদ্ধকালে মি: চার্চিল বৃট্টপরাতিকে আবাইরা বিরাছিলেন বে, বৃট্টপ-সামান্তাকে বেউলিরা করিরা বিবার কম তিনি ক্ষাটের প্রধান মন্ত্রিক প্রবণ করেন নাই। বৃদ্ধপেরে কিন্তু তাঁহাবের অধিক্ষান্ত্রেও বৃট্টপ-সামান্তা বেউলিরা হইরা পেল।

ইতিমধ্যে ১৯০০ সালে কারাখারে থাকা অবছাতেই বে মাসে বহারা থাবী অনশন হার করেন এবং তথন ওাহাকে বুজি বেওরা হয়। ক্ষেপ হইতে বুজিলাভের পর তিনি বুশলিব লীগের সভাপতি কর্মান বহার আলি বিলার সহিত সাতাবাহিক সমতার সমাধান উল্লেখ্য ক্রেক্দিনবাাণী আলোচনা চালাইলেন, ক্ষিত্ত তাহা সকল ইইল না।

১৯৪৫ সালের নির্বাচনে ইংলপ্তের পার্লাবেন্ট প্রমিক্র বিপ্র সংখ্যার একক সংখ্যাসরিক্তা অর্জন করেন এবং ভারতীর সমস্তার স্বাধানকরে তাঁহাবের মধ্যে থানিকটা আন্তরিকতা বেঁথা বের। এ বিংসরের ১৫ই জুন কৃংগ্রেস মেতৃত্বশকে বুক্তি বেওরা হয় এবং বড়লাট লর্ড ওরাভেল বুটিশ গভর্গরেন্টের অসুমোদনক্রমে ভারতীর সমস্তার স্বাধান সম্বন্ধ আলোচনার লক্ত এ সময় সিমলার এক নেতৃ-সম্বেলন আহ্বান করেন। কংক্রেল ওরার্কিং ক্রিটি সম্বেলনে বোগদান করিতে সিক্রান্ত করেন।

কংগ্রেম ও লীগ নেতৃত্বস্থ এবং অভাভ আরও করেকজন দেতা লইরা
বিভালটের সভাপতিতে ২০শে জুন হইতে সিমলার বৈঠক হার হইল ;
কিন্তু বৈঠক শেষ পর্যান্ত কলপ্রস্থা হইল না—কভকগুলি মৌলিক বিবরে
লীগ ও কংগ্রেম-নেতৃত্বন্দের মতানৈক্যের কলে ১০ই জুলাই বৈঠক
ভালিয়া গেল। এক কথার বলিতে গেলে, সিমলা-সন্দেলনে ভেটো
প্রান্তের ক্ষতা রহিল সংখ্যাগবু সম্প্রাণরের প্রভিনিধি-প্রতিষ্ঠান
কুশলিন লীগের হাতে।

কিন্ধ বৈঠক ভালিয়া বাওয়াতেই সমন্তার সমাধান হইল না। সমগ্র ভারতে এদন এক পরিবিতির উত্তব হইতেছিল, বাহাতে স্পাইই বুবা খাইভেছিল বে ক্ষম্বছা আরজের বাহিরে চলিয়া বাইবার উপক্রম ক্ষরিতেছে। রাজনৈতিক চেতনাসম্পন্ন কোট কোট লোকের ক্ষরহার্যারতা গু বিক্লম মনোভাব লাভ করিয়া একটা বিরাট দেশকে কেবলমান্ত সৈশু সাহাব্যে শাসন করিতে গেলে বে বিপুল ব্যর বহন করিতে হয়, ভাহা প্রস্কুলান করিবার শক্তি মহাযুদ্ধবিধান্ত বুটেনের ছিল না। সমগ্র আন্তর্জাতিক পরিস্থিতিই,টিইদিনের মত সামাজ্যবাদের মৃত্যু-সমর নির্কেশ ক্ষরিতেছিল। অধীন ভারত অপেকা ব্যয়-শাসিত বন্ধুতাবাপর খাধীন ভারত বে পরোক্ষে বুটেনের শক্তি লোগাইতে পারে, ভাহা ইংলঙের বিচক্ষণ প্রসিক নেতৃত্বক ক্ষরণা উপলব্ধি করিলেন। ব্যক্তার ভুকির শ্রামা ক্ষমতা হতাত্তর করিলে ভারতে বুটেনের বাণিক্য ও ব্যব্যার বার্থত বিভার পাকার সভাবনা, ত্তরাং ভারতীর স্বভা নইবা ভারারা ববেট মাধা ধানাইতে বাগিলেন।

ইভিন্দে। সামাণ্যবাদ তাহার বরা কাবড় বিতে কন্ত্র করিল লা। আজান-হিন্দ-কৌজের বে সকল সৈত ও সেনাধ্যক বন্দিণ-পূর্বা এশিয়ার আত্মসমর্গণে বাধ্য হইয়াছিলেন অধবা যুত হইয়াছিলেন, ভাহারের করেক-জনকে করেক বকার বিজীয় লাল কেরার সামরিক আলালতে অভিযুক্ত ক্রিরা ১৯৪০ সালের শেব দিক হইতে বুদ্ধাপরাধী হিসাবে ভাছাদের বিচার হার হইল। আজাদ-হিল্প-কৌজের গৌরবজনক কার্যাকলাপের বিবর ভারতবাসিগণ বুদ্ধের সমান্তির পর বিশেবভাবে কানিভে পারেন এবং তাহার কলে তাহারা এই সময় বংশ্ব অনুপ্রাণিতও হন। নেতালীর বিশ্ব সহক্ষিগণের এই ভাবে বিচার-ব্যবস্থা হওরার ভারতের জনমত অভিনর শুৰ হইরা উঠে এবং চড়ুদ্দিক হইতে ইহার বিরুদ্ধে তীব্র প্রতিবাদ আপর করা হর। বুটিশ গভর্ণমেন্ট এবং উচ্চপদ্ধ সামরিক কর্তারা কিন্ত ভাঁহাদের জিদ ভাাগ করিলেন না-নীভির দোহাই দিয়া বিচার-কার্যা চালাইরা বাইতে লাগিলেন। কংগ্রেসের পক্ষ হইতে আঞ্চাদ-ছিঞ্ছ-কৌষের অভিবৃক্ত সেমাধাক্ষগণের পক সমর্থনের জক্ত একটি কমিট গঠিত হয় এবং পণ্ডিত অওহরলাল নেহেক্ল, ভূলাভাই দেশাই, সার তেলবাহাত্ত্ব সঞ্চ, লনাৰ আসক আলি ও ডা: কৈলাসনাথ কাটৰু অভিযুক্ত ব্যক্তিগণের পক্ষ সমর্থন করিতে খাকেন।

দিলীর লাল কেনার সামরিক আলালতে বিচার-প্রহ্নন চলিতে লাগিল। কাহারও কাহারও শুক্তর দুওবিধান করিয়া পরে আবার সেই দও নকুব করা হইল—কাহারও কাহারও লও বজার রাখা হইল। সন্ত্র ভারতে নানা হানে এই ভাবে আজাদ হিল্ল-কৌজের সেনানীর্লের বিচার এবং তাঁহাদের প্রতি প্রকৃত্ত দওর বিক্তে প্রতিবাদ আপন করিয়া বিক্ষোভ প্রদর্শন করা হয়। এই উপলক্ষে কোণাও কোণাও ভলিও চলিল এবং কেহ কেহ আহত ও নিহত হইলেন। স্বঞ্জঃ ভারত আবার বেল চঞ্চল হইরা উঠিল।

কিন্ত আঘাত দিতে গিরা বৃটিশ গতর্গনেণ্টও এক আচও আঘাও পাইলেম। সেই আঘাও হইল ১৯৪৬ সালের কেব্রুলারি মানে সংবটিত নৌ-বিব্রোহ। (আগামীবার্দ্ধে স্বাপ্য)

বার্জ-হত্যা প্রসঙ্গে গত চৈত্র সংখ্যা ভারতবর্ধ-এ অনবধানতা বলতঃ
একটু ভূল বিষরণ প্রকাশিত হইরাছে। আমরা জানিতে গারিরাছি
বৈ বানিনীলীবন খোব মহাশরের কোনও পুত্রই পুলিপের নিকট
শীকারোজি প্রধান করেন নাই বা রাজসাকীও হন নাই। রাজসাকী
হইরাছিলেন অপর এক ব্যক্তি। উচ্চ বিষরণ অনবধানতাবশতঃ প্রকাশিত
হওরার আমরা ছংথিত।—লেথক



পুইজারল্যাও

এচিত্রিতা দেবী

(भूर्व-अक्शनिएक भद्र)

क्रुगित क्रिम क्रूतिरतः अन । अथन करनक्रि देकीत्रनरकरतः। रमधान त्यस्य 'बरक्षांके'त्र विनान कृतात्रवरक व्यादाहर कत्रव-वात जात्रशत ? —क्टिंग व्हार क्रिक् नक्रारम्न त्याक मधान, जात्र मधन त्याक কলকাভার: রাভা উঠেছে বোঁপার কাঁটার মত বেঁকে। পাশ দিরে ৰ্ছ করে ছুটে বার গাড়ী, জার বেসব গাড়ীতে G. B. মার্কা তাদের ভিতর বেকে একটা উলান্ধনির সবে ক্লাল উড়তে দেখা বার। সমপ্ৰবাজীবের পরশারের প্রতি এই সৌরাস-বীকৃতি বেশ লাগে। 'জুলিয়ান,' 'ওবরল' আৰু সাস্' ভিনটী পাস পার হতে হবে। আহা কেৰ বে এগুলোকে পান্ বলা হয়। চমংকায় চওড়া রাজার পানে কলকৈর পরে নাম আছে লেখা। হয়ত কোনকালে ছুই ছুর্থিপম্য শিবরচূড়ার মাবে ছোট্ট একটু সরপথের চিহ্ন ছিল। আজও সেই পথ দেই পুরকালের বাবের স্বৃতি বহন করে আসছে। আলসের এই জেনী সাত হাজার কুটের বেনী উচু নয় — তবু বরফ-বরা খাসের রঙে কেমন একটা মৃত পাপুরতা। পাছঙলিতে কিন্তু বদক্তের ছোঁরা লেগেছে। এর উপরের অন্নের আজন বৃক্ষীন চিরতুহিনাবৃত। অভুত এই ছোট বেশটী—বেন পুরোপুরি একটা ছোট ইরোরোপ। ইরোরোপের এখান जिन्ने जागारे अधारन हरने द्वाक, जामान, देहानीवान। रेखारवारण বতরক্র আবহাওর। সভব, সব এথানে আছে। এদেনের 'লাগো' শ্রন্থতি মারগার স্থাসাগরতীরসন্মত চির্বসম্ভকাল। সেধানে ভূটা শার গনের কেন্ত, পান গাছের সারি আর চেষ্টনাটেব ছারা, আর আঙুরলতার কুঞ্জ। আবার ন' দশ হাজার কুট উপরে, জলহীন, বৃক্ষহীন, ব্দনত ভুৰার দল। আর এই ভিন হালার থেকে ৬।৭ হালার বুটের মধ্যে, বত পাইনগাছের বেলা, জীম ও ব্যস্তকালে সবুজ বাসের नमारबार। अहेशारमहे स्वीतकान आम ७ महत,--वळ हार्वीरवत यान। আন্তাৰল ও গোৱালের উপরভলার তালের বোটা বোটা কাঠের কুটার ১ লভাকুল বিবে ঢাকা। কাঠের খুঁটগুলোভে ঝুলছে অর্কিড্ কিবা জিবেলিয়ানের ভাছ। এখানকার বেলেরা ছোট ছোট তাঁতে কত শশনের ক্ষল, রেশবের বল্লাকাটা চাবর, থকরের বত বোটাপুড়োর বেডকভার তৈরী করে। আর ভার ওপরে করে সনংব্যরকণ ছুচের কাৰ। সে কামগুলির মধ্যে আমাদের দিশী হাতের কালের আকর্ব্য বিন, বেমৰ কৰা অববা প্রগতার মত লতা। পুনার্ণে একটা र्रोकारमञ् कारका जानमान, यूनिक अक्ट्री हानत । छाड़ा हास्त्रि हुत्हे গেনাৰ নে লোকাৰে, কী আশ্চৰ্য ভারভের কুটার শিল এচনুরে রপ্তানি र्व ?--- डेवर अन--नामा व्हेगस्यदंत हास्वर देवरी अरे हानहः।

रेगितनद्वन स्टब्स् आर्थितका इस्तिद्वत त्यांवा कात्रेत्रा । द्वान

হোটেলে ভিলধারণের স্থান নেই—ভাগ্যে আনাদের আগে থেকে লালগা ঠিক করা ছিল। হোটেলে চুকে লান গুনে বলিও বুধ গুকিরে আগে, তবু এ একেবারে বুর্জ্জারা ব্যাপার, বাকে বলে। টুরিইর্নের আডো তাই, লালগাটা অসংখ্য হোট হোট দোকানে ভর্তি। আর কি ক্ষর সব থেলনা, কাঠের কত হোট খাট ভিনিন, কারীরের মন্ত নঙ্গাকাটা, আর তার সঙ্গে বিলিভী মিল্লীর বাল্লিক বৃদ্ধি মিলেছে। হোট একটা চাববাড়ী, আরনা জাকা, কাগজের রঙীণ কুল যুলছে।



यरेकात्रकारकत व्हाल-भारत

পাশেই একটা বোতাম দীপলে বাড়ীর হাগটা পুলে গেল, ওমা ! একটা বান্ধ—তাতে চকোলেট ভর্তি—নার ভেতর থেকে মিট্ট একটা হুর জনতরকের বত বাজহে। প্রায় সব বাড়ীতেই একটা করে 'কুকু' বড়ি জাছে—পুকুকে সবাই ডেকে নিরে যার তাবের ঘরে, দেব আবাবের ঘড়ি ভোষার লাম থরে ডাকে। কত অজলারকম ঘড়ি, আর তাতে কত বিচিত্র কলকোলন। কোন ঘড়িতে কোকিল এনে কুছুকানি করে কটা আজিরে বার, কোনটার টুপিনাথার হান এনে ড্রান বাজিরে বার। পুরুব ভো বড়িব কেরানতি বেংধ একেবারে 'প'; পুরুব

যাবারও সেই দশা এবের বৈছাতিক কেরাবতি বেথ। সমত বেশ থেকে করলার ট্রেণ তুলে বিরেছে,—সর্বাত্র ইলেকট্রিক। গাহাড়ের গা বেরে একেবারে গোলা এরা ট্রেণটাকে তুলে বের অনেক সমর। গালাগালি ছটো লাইন পাতা থাকে—লিকটের নির্মে ছটো ট্রেণ পরস্পারের ভারে ওঠানামা করে। বৈজ্ঞানিক বৃদ্ধিতে এরা ইরোরোপের কোন লাতের চেরে কম নর। হাসপাতালগুলির ব্যবহা আধুনিকতম। অর্থাৎ লক্ষ্মীর সজে সরক্তীর মিলনসাধনের তপ্তার এরা রত। জানস্থারের যারা ধনসঞ্চর করে। সামাল্যারিভারের থপ্প এরা কথনো বেথেনি, তাই এতকাল ধরে পান্তিতে আছে। পোনা গেল সপ্তর্মণ শভালীতে এবের শেব গৃহযুদ্ধ হয়।—ওই বে বুদ্ধের বড় ইরোরোপের বুকের উপুর ছবার প্রক্ষরভাঙ্বে বরে প্রাল, এবেশের গারে আঁচড়টা



ख्ड भरब

লাগল না। এরা ছিল রেডক্রসের ভার নিরে। তুপক্ষের আহতরেরই নেবা করেছে। লীগ অবনেশনের সন্মিলন বসত এথানেই ক্রেমিন্টার।
"বুদ্ধে শক্তিক্ষর না করে সবটা শক্তি প্ররোগ করেছে দেশটাকে গড়ে
ভূলতে। সেইলজে দেশের প্রভূত অংশ কসলধারণের অনুপর্কু হলেও
এরা নানাদিকে নিজেদের বিক্সিত করে', দেশের ঐবর্ধা আহরণ করে।
বিদ্যুৎ এদের বাধা চাকর। আবার তা সন্থেও ছোটগ্রামের নিভূত
কূটারে, মেরের হাতে চলছে তাঁত, কাঠের টুকরোর কুলপাতা একে
শিল্পী গড়ছে খেলনা। এথানে দোকানে বাজারে সর্ব্দে ইংলভ্রের বভ

ধেলনার ভত্তর্লচির পারিচর আছে। বিদ্যুৎকে থাটাছে অসংখ্য কাজে।
এ করে বে শক্তির প্ররোজন, মহাদেব তার কটা থেকে অক্স খরণাধারার অবিজ্ঞান সে শক্তি এদের প্রতি বর্ধণ করছেন। প্রকৃতির
কলরাশিকে বাঁধ বেঁধে এরা সঞ্চর করে রেখেছে শক্তির ভাঙার।
বেশীর ভাগ কারখানাই জলের থারে তেরী। কিন্তু এমন পরিকার
পরিপাটা খোরা বর্জিত হঠার ছাঁচের তেরী বে, প্রকৃতির পরে
মাসুবের হাতের ছাপ পড়েছে বোঝা গেলেও সৌলর্ফ্যের হানি হর
না। লখা বারান্দার এককোপে বেতের কোঁচে হেলান দিরে ভাবছি
এই অভূত ফুলর দেশটার কথা, ইরোরোপের ভূষর্গ বাকে ফলে,
হঠাৎ চমকে উঠি গলার খরে—"ক্ষমা কর মানান, প্রসারিত হাতে
মাখা নত করে বাট করেন, হোটেল কর্জুপক্ষের কেউ একজন,—"বাল্ ভার সাতটার ট্রেণ ভোমাদের যফ্রাউ নিরে যাবে। ৩।টার সমরে
ভোমাদের বেকলান্ট, আর প্যাকেটে করে ক্রিছ্র লাঞ্চ পাঠিরে বেওরা
হবে। তাহলে এখন যুমতে যাওরাই সঙ্গত—কাল উঠতে হবে ভোরে।

ছ তিনবার কুজতর ট্রেণ বদল করে করে তুবার চূড়ার পাদন্তে বধন পৌছলাম, বেলা দশটা বেজে গেছে। বরজের উপুর দিরে লাইন নিতে পারেনা,তাইনীচে কুড়ল পুঁড়েছে। সাড়ে চার মাইল দীর্ঘ এই কুড়ল পুশে ট্রেণ চলেছে বিদ্রাতে। মাঝে মাঝে মোটা কাঁচের কেবিন হোলের মতন গোল জানলা। কাঁচের ভিতর দিরে বাইরের আলো এসে পড়েছে একট্ট আগট্।" একটা বারপার ট্রেণ থামালে আমাদের দেথবার জভে। আবক কাও। অন্ধকারের কুটোর মধ্যে দিরে আলাদীনের ঐবর্ঘ্য বিক্রিক্ করে উঠল। রোদ পড়ে অলছে রূপোর পারাড়। বাইরে অলভ সালা, ভিতরে অন্ধকার কালো। টানেল এসে শেব হর ছোট একটা পাতাল উপনে। পাতালের ওপরে আছে বরকের ম্বর্গ, আর তারো উপরে আছে ইয়োরোপের ধানমন্দির ছোট একটা রেভে বরা।

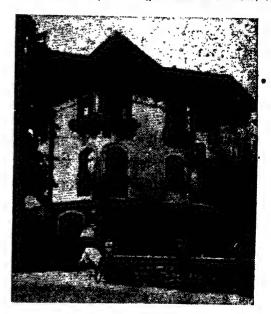
আশ্রহা—রূপ,—এমন যে দেখা যার ভাবতে পারি নি। হিষালরের ত্যার চূড়া দেখা হরত ভাগ্যে ঘটে উঠবে না—তার অনুজকে তো দেখে নিলাম। যেদিকে তাকাও ধু গু করছে সাধা—অরণা নেই, ক্রদ নেই, সবুজের লেশমাত্র নেই—যতদুর তাকাও কোখাও জন বসতির চিহ্মমাত্র নেই।—তথু তরজারিত বরকের নর্জ্পমি। পাহাড়ের মাধাওলি চেক্ষে চেকে গা বেরে নেমে নদীর আকারে দূরে মিলিরেছে। তক্ত কঠিন মৃত্যুর মত এই ং।৬শ ফিট গভীর জমাট নদীকেই বলে মেশিরার। বরকের উপ্পর কাঠের টুল গর্ভ করে চুকিরে বসে পিক্ষিক চললো—কুক্রের গাড়ী চড়ে বেড়ামোও চলছে। অতুত এই ইরোরোশীর আত—কথনো চুপ করে থাকতে জানে না।

মহামৌদের বাকথানে বাড়িরেও সবানে চলেছে হো হো। হোটেলের আরামককে বেমন ব্যবহার চলে এথানেও কি ভার একটু ব্যতিক্রম হরে না। ওই বে ওত্র তুবার চূড়ার বিরাটের নির্কাশ ইলিত—একি এডই অর্থহান এবের কাছে—এত বার্থ? আমার সকত শরীর এবের কাছে বেকে ব্রে বাবার করে উন্ধুধ হরে উঠল। গাইভকে ইসারা করে এগিরে চলি—একটু বুরে নিরে চল আর একটু—ওই নিরেবের বাড়ির কভি

পেরিরে জার একটু বুরে—বেধান বেকে ওবের কলকোলাকল কানে আসৰে মা—ভৰতার গভীৰ ব্যঞ্জা: আমার সর্বাঞ্চ বিদে ধরবে—ঐ ভবাবে। "বেওনা বেওনা না" শুকু চেঁচিরে ওঠে—উলসিত কলরবে স্বাই এল এগিলে।—উপদেশ দ্বার এমন হবোগ ছাড়ে কে। স্কলের লমকেত পরামর্শ আমার কালের মধ্যে ব্লেটের উপর ছুরির আঁচড়ের মত কর্কশ হরে বাজতে পাকে। এই উন্টো বিপত্তি দেখে খমকে গাঁড়ালাম। আমার অসহায় বিপন্ন বুধ বেধে গাইডের মনে দরা হোল। সে অনেক লোককে নিয়ে এনেছে—দৈবাৎ তার মধ্যে ভাবপ্রবণ লোকও ছিল—সে ৰললে,—"তার চেরে চল তুমি অবজারভেটরীর উপরে গিরে বসবে— সেধান থেকে আরো ভাল দেখতে পাবে। এখানে আর এগোনো, বাকে বলে বিপক্ষনক। কারণ একে তো আগে থেকে পৰ ঠিক করা श्त्रनि, जात्र ज्ञारोत्र विष्कृत स्त्र ज्ञानरह । अथान वारात्र नमन्न रहा সকান ১টা ১০টার মধ্যে। আর ভোষার পোষাকও উপবৃক্ত নর। এখানে মাৰে মাৰে ফাটল ধরে, হঠাৎ তার মধ্যে পড়ে গেলে অনন্ত करते।" "बाक्या अरे स्निनित्रात्र नाकि मस्त्र मस्त्र यात्र-- अ हरत ?"-- "है। हरन वह की। व्यक्ति शैत-व्यवाध अकता हना, त्यस्थ वासा यात्र ना, उत् এ বাত্রার বিরাম নেই। একটু একটু করে চিরকাল ধরে চলে।—একটা অভুত গর শোন, গাইড বলে,—"গত শতাকীর প্রথম দিকে একদল লোক আল্লন্ এক্সপীডিশনে আসে।" সবাই ঘনীভূত হলে দাঁড়ার গাইডের চার-পাশে।—চীনে সাদার উপরে ভূবো কালির আঁচড়ের মত, ভূতনাথের পাশে তার প্রেভসঙ্গীদের শত আমরা দাঁড়িরে গর শুনি। একই গাঁরের পথপ্রদর্শক ছিল জন করেক," গাইড বলে, "পাইক পুঁতে भूँ एक, पाए पिरत निरम्पापत रवैश्य रवैश्य कात्रा এগোচ্ছिन—हंशेष कीवन, 'শব্দিন করে ছক'কি হয়ে পেল পান্তের নীচের হিষরাশি—উর্চ্চে উৎক্ষিপ্ত হোল তার ভিতর থেকে বড় বড় বরফের ১৭৩, নিমেবের মধ্যে তিনটী পাইড় তলিরে পেল। তাবের অক্ত বনুটা গ্লেলিরারের এই শক্তিত ঠাটার উত্তর দিতে নেমে গেল সেই কাটল পথে কোমরে দড়ি ও মুখে প্যাসের ৰলি বেৰে, কটিল এঁকে বেঁকে চিড় খেলে খেলে নেমে গেছে কোন গভীর পাঁতালপুরীতে। ৩০০ কুট গিরেও যথন কিছু পাওরা ধেল না, সে ক্রির এল পরাজিত হরে। বৈজ্ঞানিক তথন বিচার করে বলেন, মেসিরারের চলা বলি সভ্য হর ভবে ৪০ বছর পরে পাহাড়ের নীচে এ ক্রিলে বেবে চোরাই মাল। ট্রক একচল্লিশ বছর পরে হঠাৎ একদিন দেখা গেল, সেধানে পড়ে আছে তিনটা নরকপাল, করেকগুছে কাল ও নোনালী চুল, করেক টুকুরো জামা কাপড় ও একটা নিটোল ওল হাত। বন্ধু এল সনাজ করতে, ছোটবেলার বন্ধু শ্রীভি ভরে বে হাতে কভবার ক্রবর্দন করেছে হঠাৎ সেই একটি পরিপুষ্ট বিচ্ছিত্র হাত দেখে কথা সরল না মুধে। পুথিবী বাকে ভূলে পেছে, বরফ তার হিমনীতল বুকে ভাকে তেমনি নবীন করে রেপেছে। বৃদ্ধ বন্ধু একবার ভার গোলচর্ম কুকিত হাতের দিকে আর একবার বৃত্যুঞ্জর সেই বৌবন কুঠান হাভের ৰিকে তাকিয়ে ৰীৰ্থাস কেনে চলে এন।" পঞ্চাত লোকৰের গলে ভারী क्रिज अन वाक्ता। नगरि हुन करत अनिता हरनाए। पूज्र किस अस्तत

চেরেও হালকা—লে বলে আইন প্যালেন বেখব আগে"—আমি ভাইলে
অবলারভেটরীর উপরে বাই।" আরে নাবা—আইনপ্যালেনটা চটু করে
একবার দেখে নিরে,ওথানে গিরে বতক্ষণ খুনী বোন,"খুকুর বাবা হুলককে
সামলান। বরকের পাহাড় কেটে গুহার মধ্যে প্রকাও প্রানাদ তৈরী
করেছে। বিশাল নাচবর, খাম দিরে বেরা, কোণে কোণে তুবারের
বেণীতে তুবারের কুলদানী। তাতে একগুছু ভালা ফুলঃ, বরকের
আলোদানে ইলেক্ট্রিক বাতী। তাতে কোথাও লাল, কোখাও বা নীল
আলো বপ্পজাল মেলেছে—এ কোন বাহুকরের দেখা।

অবলারভেটরীর ছাতের উপরে বসে আছি—নীচে, উপরে চারিপাশে বতদুর চাও, ধু ধু করছে বরফ, অলছে পূর্ব্যের আলোর, একএকদিকে তাকানো বার না। তীক্ষ সাদার ধার ছুরির ফলার মত বি ধছে চোধে।



একটি বাড়ির নক্না দেওরাল

বনে থাকতে থাকতে কেমন বেন লাগে। মন কেমন করা অঙ্ক এক অসুভূতির আথানে আছের হরেছে সন্থা। আরি বে আমি, সে কথা একেবারে
ভূলে গেছি। এই বে আমি এখনি নীতে গিরে বাত্রীদের সজে কলরথ
করতে করতে ট্রেণে চড়ব, কিরে গিরে ডিনার থাব, এ আমি কোথার
নূরে সরে গেছে।—আর এই রৌক্রকরোজ্ল তুবাররাশির দিকে তাকিরে
আছে আমার এক অপরিচিত সন্থা। শুধু তাকিরে থাকা—কিছু ভাষা
নর, হাসি নর, শুধু চোথ দিয়ে অসুক্তব করা। একেই কি বলে তুবারের
নারা। আরসের নোহমত্র সমন্ত চেতনা চেকে ছারা কেলে। থীরে বীরে
বদলে আসে সব। ছুরির কলার মত তীক্র সালা মরম হরে আসে নারা
রঙের বাণকাভলে। আরে দেখতে দেখতে একী! এ বে সোনা,
একেবারে সোনা। ক্টিন বর্ণের ভূপে আগুর লেগেছে বেন। আর
ভারি থালে বালে চুড়ার চুড়ার, রামণসূর বিচিত্র লীলা।—এ কি এ—?
এক্রি এই পৃথিবীর ? এই বে পূর্বিবীতে আনরা সকাল থেকে রাভ অথধি

ক্ষান্ত বিষ ।— দেকি, বেতে হবে । এখন স্বাধান গোৱা বেই, টোণের ক্ষান্ত হেছে। হাঁ বেতে হবেই। এখনি স্বাধানই বেতে হব, ভাল জিনিব খেলীকণ থাকে লা। তথাই ক্ষিক, মু:খ জনত। বান বান চোপ বুকে ক্ষেত্ৰ মধ্যে গভীৱভাবে এ কে নিতে চাই ছবি, চোপ খুললেই জপন্তপের ক্ষেত্রের বাবে বান। খ্যানের দৃষ্টি জাসার নেই, বাকে চোপে ক্ষেত্রাক, ভাকে ব্যাহে বাবে ভাবে ক্ষান্ত স্থানি বাবে বাবে পানি

কই। কুম্বান্তে বেগতে হয় গুৰু কাপ বিজে না, বন নিজে । কুট্টি সম্ভাবের সৰ কি আবাদের আছে ! কুয়ানা ঢাকা মনের আকানে তেনান করে কুটে ওঠে মা নেই ছবি—অবাক্ত বেবনার মুক হরে বার নন—বীরে উঠে আসি—কিয়ে বেতে হয় প্রভাবের পৃথিবীতে। ক্ষিত্রের বার হুরে বার। কোন মান্ত বলে নেমে এসেছিল পাহাড় চূড়ার বর্গ এই সরস্কীর সীমানার আবার গেল বিলিয়ে।

তুইটী বটগাছের কথা

যমদত্ত লিখিত

ইংগালী ১৭২৭ সালে পলাশীর বুদ্ধলরের পর লও ক্লাইব (,তথন অবশ্র ভিনি লও উপাধি পারেন নাই; সর্বা সাধারণে কর্ণেল রবার্ট ক্লাইব বলিয়া পরিচিত ছিলেন) বল, বিহার ও উঞ্চিলার ন্তন স্থবেদার নবাব বাহাছর শীর্লাক্ষর আলি খাঁরের নিকট হইতে বে চবিবেশটা পরগণার অশীলারী সনন্ লাভ করেন ভাহা হইতেই বর্ত্তমান ২৪ পর্গণা জেলার উৎপত্তি। রবার্ট ক্লাইব বে ২৪টা পরগণা পাইয়াছিলেন, ভাহার কতকাংশ অন্ত জেলার চলিয়া গিয়াছে এবং অক্লান্ত জেলারও কতক কতক অংশ বর্ত্তমানের ২৪ পরগণা জেলার অন্তর্ভুক্ত হইয়াছে। ভারত বিভাগের ফলে বশোহর জেলার ছুইটা ধানা, বধা:— বনগাঁ ও গাইঘাটা, ২৪ পরগণা জেলার সহিত বুক্ত হইয়াছে।

লর্ড ফ্লাইব বে ২৪ পরগণার সনদ পাইরাছিলেন ভাহার
কিং হইতে ৭৯৯নং পর্যন্ত তোলীর জনীদার ছিলেন সাবর্ণি
ক্লান্ত চৌধুরীরা। কাল ক্রমে ইইাদের বহু জনীদারী
ক্লোন্ত ও জনিছার অন্ত লোকের হাতে চলিরা বার।
ক্লোন্তান্ত অনিছার অন্ত লোকের হাতে চলিরা বার।
ক্লোন্তান্ত অনিছার অন্ত লোকের হাতে চলিরা বার।
ক্লোন্তান্ত বংসরের মধ্যে কলিকাভার একমাত্র ইনিই
নাভ্তাান্তে "দল্পতী-বরণ" করিতে পারিরাছিলেন) ও
কলিকাভা হাইকোর্টের সর্ব্ব শেব "শ্লীভার" রাজেজনাথ
ক্লের (ইইাকে একবার হাইকোর্টের অন্ত করিবার প্রভাব
ক্লেন্তার প্রধান বিচারপত্তি Sir William Comer
ক্লিকোন্ত ক্লিন্তান্ত প্রিপুক্ত নহন বস্তু বখন
ক্লিন্তান হইতে জানিরা গলাতীরে পানিহাটী সমাজ্ঞান

es co

বলিরা ঐ গ্রামে ভিটা পতন করেন; তখন অপরের জনীদারীতে বসবাস করিবেন না বলিরা বছওণ পোনে ভনং ভৌলী ধরিদ করেন।

পানিহাটী পূর্বে কিরুপ সমাজগ্রাম ছিল সে সম্বন্ধে তুই একটা কথা বলিলে আশা করি পাঠকগণ থৈহাচুছ हहेरवन ना। प्रक्रिन त्राष्ट्री कांब्रह नमास्त्र कत्र वर्रामत स्थान উচ্চে-ইইাদের তুই সমাজ, পানিহাটীর কর ও বন্দীপুরের कत्र। खैरिहण्डास्य स्थेन शानिसामित्र चानिसाहित्सन. তথন মকরন্দ কর তাঁহাকে আহবান করিরা নিজ বাটাজে লইয়া গিয়াছিলেন। -ভাঁহার ভিটা "হলদে কালিবাজীর" উত্তর পশ্চিম কোণার ডা: রাধিকাপ্রসার চটোপাধ্যারের ভিটার সামিল ভারগায় ছিল। অবিনাশচন্ত দভের পূর্ব-शुक्रव बीवर्ष मख वांश्वा मन ১२०१ कि ১२०৮ नांत्र পানিহাটীর শেষ করের নিকট হইতে তাঁহার ভিটা ক্রয় করিরা বসবাস করিতে আরম্ভ করেন। কোবালার লিখিত থাকে বে ঠাকুর দালান ক্থনও ভগ্ন করিবে না। ভাঁহার ক্শথরেরা এই প্রতিশ্রুতি গত সন ১০৪+ সাল অবধি রকা করিয়া আসিয়াছেন। একণকার অবস্থা বলিতে পারি না। পানিহাটীতে গত একশত বংসরেম मधा कानल कर वः गिरंबर महान शाह नाहै।

পানিহাটার কারস্থ যোববাব্রা কিরপ সুলীন ও প্রতিঠা-সম্পন হিলেন তাহা ছুইটা ঘটনা হইতেই ব্যাবাইরে। শোভাবালারের রালা রাজ্ফুক্স কেব বাহাছর তাহার এক্ষাত্র কলা কৃষ্ণভাবিনীর বিবাহ পানিহাটীর হরকালি যোহের সহিত কেন। আর ক্লিকাভার বিবাহে ধনী

The second secon

রারহুলাল নেব তাঁহার জ্যেত পুর আর্তভোষ দেবের (বিলি ছাড়ু বাবু নামে বিবাত) বিবাহ পানিহাটা নিবাসী শভ্চক্র বোবের ক্যা নবীনমণির সহিত দেন। হরকালি ঘোবের বিবাহ হয় আক্ষাক্ষ ইংরাজী ১৮০১ সালে; আর নবীনমণির বিবাহ হয় আক্ষাক্ষ ইংরাজী ১৮২০ সালে।

পানিহাটীর মিত্রেরা স্থবিশ্যাত ও বছ শাখার বিভক্ত।
শামী বিবেশানন্দর পিতা পানিহাটীর মিত্র বাটাতে কলা
সম্প্রদান করিরা গর্ম্ম অহতেব করিয়াছিলেন। কবি
গিরীক্রমোহিনী পানিহাটীর হারাণচক্র মিত্রের কলা।
বিখ্যাত সরদ্ ও সেতার বাদক ও সুলীতক্র ৺উপেক্রনাথ
মিত্র মহাশার একবার আসামে বেড়াইতে বারেন।
সেথানকার বজদেশীর কারস্থাণ বেই শুনিলেন তিনি
পানিহাটীর মিত্র বংশীর অমনি তাঁহার গলায় মাল্য ও চন্দন
বিশ্বা তাঁহার সম্বর্ধনার ব্যবস্থা করিলেন।

धरेक्राण चाम मननवाय धनः छोजी नरेलन; कान দশুলরা অভান্ত ভৌজী অর্জন করিলেন; রাম চৌধুরীদের वह टोनी चान्नत्र हत्य हिनता वात्र। वांश्नात शवर्गत জেনারেল Warren Hastingsএর রাজস্ব ব্যবস্থার ফলেও वह टोनी छैशित्वत रूपहाछ स्त्र । Warren Hastings धत দেওয়ান শোভাবাজায় রাজবংশের প্রতিষ্ঠাতা মহারাজা নবক্তম্ম দেব বাহাছর এইরূপে ১৫৫।১৫৬নং প্রভৃতি বহু छोबीत बाणिक श्रतन । अश्रताका छेशावि शारतन। अहे छैशाधि विद्योद वाक्नांह स्ट्रेटिंड नांचे मार्ट्ड बानाहेबा বিবাছিলেন। ভাঁহার পুত্র রাজা রাজকৃষ্ণ দেব বাহাতুর। ইনি টালিগঞ্জের টিপু স্থলতানের বংশধরদের গোঁরারার দহিত বুক চাণ ড়াইতে চাপ ড়াইতে "হাসান, হোদেন" শব করিতে করিতে পদত্রকে বারেন। ইহাতে গোঁডা ইন্মুরা আগত্তি করাতে তিনি চৌদ মাদলের কীর্ত্তনসহ শোভাবাভার রাভবাটী হইতে বহির্গত হইরা থড়াহের श्रीमञ्चलदेव मन्तित बाद्यन ७ श्रीमञ्चलदेव भ्रमाव नीमाव गोगां भन्नाहिन्ना (यन ।

দেশবান গোরীচরণ রার চৌধুরী পূর্ব্বে নিশ্কির অর্থাৎ নিম্বক মহালের দেশুরান ছিলেন। তিনি নিজেও সাবর্দি নার চৌধুরী বংশসভূত। তিনি আডিগণের নিকট হইতে ১৭২বং হইছে ১৯৪মং প্রভৃতি বহু তৌলী ধরিব করেন ও চেম্বাবত করেন প্রক্র কালক্রনে বিশাল ছুর্গাপুর অধীদারীর নালিক হরেন। লাই অক্ল্যাণ্ডের সমন্ত একমান্ত , বহুঁনানের মহারাজাধিরাজ বাহাছর ব্যতীত হুবে বাংলার মধ্যে অপন্ত কোনও জনীলার এত বেলী রাজত সরকারকে আলার দিতেন না। তিনি নিজ জনীলারীভূক্ত পানিহাটী প্রামে বিশাল জট্টালিকা নির্দ্ধাণ পূর্কক জ্ঞাতিগোলিদের আনাইরা ব্রহ্মান্তর ও জমীলারী দান করিয়া কোবাস আরম্ভ করেন। ইইাদের নির্দ্ধিত ৭ কোকর বিশিষ্ট ঠাকুর দালান আক্রও বর্তমান। সন্মুখের নাটমন্দির তিন্তলা সমান উচু করা হয়—বাহাতে দোতালায় বা তে-তলায় বসিরা মেরেলা পর্দ্ধার আড়াল চইতে বছরা, নাচ, গান, তামাসা প্রভৃতি দেখিতে পার। বাড়ীর দেওরাল সব ও কুট করিয়া চওড়া—চোরে বা ডাকাতে সারা রাত্রি ধরিকা বিশিষ্ট দিশেন্ট

দেওয়ান গৌরীচরণের দত্তক পুত্র করগোপাল রায় होधुनी वर्ष लोबीन, खब्दी खिक्सावान शूक्य हिलात। দেওয়ান গৌরীচরণের নিজের কোনও পুত সন্তান ছিল না। তিনি বেইদিন হুর্গাপুর ভালুক অর্জন করেন লেই দিনই অন্নগোপালবাবু জন্মগ্রহণ করেন। তিনি তাঁহার মাভার জন্ত্রম গর্ভের পুত্র সন্তান। ভাঁহার জন্মের জন্ত্রম দিন 'আট-কৌডের' আয়োজন করিতেছেন তাঁছার ক্ষেঠাইমা, অর্থাৎ দেওয়ান গৌরীচরণের জী। এমন্ত সমরে হঠাৎ ভাঁহার গর্ভধারিণী মা বলিলেন যে "निकि! चामात धरे ছেলেকে ধর, তোমাকে দিলান, তুমিই ইহাকে মাছৰ করিও: আমার শরীর অত্যন্ত ধারাপ বোধ করিতেছি: আমার ডাক আসিরাছে-আর তোমার **रमखन्नरक थवन मांछ, यमि त्याव स्था कतिरछ शांति।"** বলিতে বলিতে তিনি অঞ্চান হইয়া গেলেন ও অৱস্থা পরেই মারা গেলেন। বাডীতে কারার রোল উল্লেখ দেওয়ান গৌরীচরণ বাড়ী ফিরিয়া সবই গুনিলেন: ভাইটে वितान व वो-मां छ ছেलिटिक कामात्मत्र मित्राह्म, ভূমি বলি মত কর ত শুভ দিন কণ দেখিয়া ইহাকে দত্তক গ্রহণ করি। তাই প্রথমে শুক্র-বিক্রয় করিতে রাজি रायन नारे; शाद तांची रायन किंद कथा बारक रन व्यावश्रक रहेरल व्यवस्थाना छारावश्र धाकानि कविरक्त । **(बश्रवान (शीबीहरूव देश्यांकी ১৮**٠১ नाल (बहरूकां करत्व । া অন্বৰ্ণোপাল বাহুর সংখ্য কথা একটা বলি ; ভিনি: বে

নত্তর বসিতেন সেই ব্রের দেওবালে প্রের কান্ধনার্থ্যর ভিতর কানী, লক্ষে, প্রভৃতি হান হইতে আনীত হাতির দাঁতের উপর অফিত নানাবিধ রজীণ ছবি পাতলা অত্তর সাকনি দিরা গাঁথা ছিল। সমগ্র রামায়ণ ছবিতে দেখানছিল। আর কাছারী বাড়ীর দেওরালে শখানেক হাতির দাঁতের বাঁট দেওরা তরবারী, অসি ও সোনালী গুল্ দেওরা গুণারের চামড়ার ঢাল ঝুলিত। বসিবার আসনের পিছনে ক্রেকটা কান্ধকার্য্য পচিত বন্দুক ও একটা বড় "কড়া-বীন্" (carabine) ছিল। বাড়ীর ছাদের ওপর 'হছুম-গান' ছিল। গলার এপার হইতে ছুঁড়েলে ওপারে সিরা গুলি বাছট্রা পড়িত।

একবার সেকালের বিখ্যাত ডাকাত ভক্তরে সন্ধার ভুরকে ভজুরা সর্ধার কোন্নগরের মিত্রবাবুদের বাটীতে চিঠি দিল্লা ডাকাতি করিতে আসিলে খুব লাঠালাঠি সোর-গোল হয়। জয়পোপালবার তাহা ভনিতে পাইয়া নিজ ছাতে তাগ্করিরা "কড়া-বীন্" বা "হছুম-গান" ছুঁড়েন। ব্দরগোপালবাবুর গুলির আবাতে ভবহরির বাঁ হাত ভাবিরা नात्र- छक्रित निरक्षत्र मनवन नहेन्ना भनावन करत्रन । छक्रहित ছ: ধ করিরা বলিয়াছিল বে সাল্থিয়াতে (হাবড়ার সন্ধিকট---ক্লিকাতা হাটথোলার আড়পার) ডাকাতি করিতে গিয়। श्रीकेरियांनात्र प्रख्यांतूरम्त्र क्डांगीरनत्र "(शरत्रक-नान्" प्रत्थ-ছিলাম; আর আমার ডান হাত (তাহার একমাত্র পুত্র শরহরি—নরহরি তরবারির এক কোপে মহিষের মাথা উড়াইভে পারিত ; নিত্য ২॥ সের চাউলের ভাত থাইত) रात्राहेबाहिनाम ;--आत आजरक वाँ राज (शन। हेरा हैश्त्राका काम्नाक ১१৯० वृष्टीत्वत्र कथा। मिळवावृत्रा ভৌহাদের কৃতজ্ঞতার চিহুত্বরূপ অরগোপালবাবুকে একটা ু মন্দিণাবর্ত্ত পাণি-শব্দ উপহার দেন। বছদিন ইহা তাঁহার ্বংশে ছিল-পরে কোন জামাই ইহা চুরি করিয়া লইয়া चारवन ।

জরগোপালবার পানিহাটীর বাজার স্থাপন করেন ও শালামাল আনিবার স্থবিধার জন্ম বাঁধাবাট করিরা দেন। আট করিরা দিলে কিরুপ স্থবিধা হর লোকের রায় চৌধুরী বাবুরা ভাহা জানিতেন। পূর্বে জমীদাররা নিজ নিজ এলাকার সহজে জন্ম কাহাকেও বাঁধা বাট করিতে দিজেন লা; কিন্তু রায় চৌধুরীবাবুদের ব্যবহা জন্তরপ। কোন প্রকা বা আন্ত কেহ বাধা খাট ছাপন করিতে ইছুক হইলেই তাঁহারা লিখিত অহমতি দিতেন এবং এই অমীর থাজন লইতেন না। এই জন্ম পানিহাটী প্রামে ও রারচৌধুরী বাবুদের এলাকায় মত বাধা ঘাট তত বাধা ঘাট—জন্ম কোনও জায়গায় নাই।

তিনি বাজার বাটের হুই পার্শে নহবৎ-থানা করিতে গার্শবর্তী গ্রাম স্থপচরের জমীদার "রাজারা" (শোজাবাজারের মহারাজা নবক্রফ দেব বাহাছরের পুত্র রাজ্য রাজকৃষ্ণ দেব বাহাছর) আপন্তি ভূলেন বে পানিহাটীয় "বাব্রা" যথন রাজা নহেন বা বাদসাহী পাঞা পান নাই তথন তাঁহাদের নহবৎ-থানা গাঁথা বে-আইনী। স্থপচরের "রাজারা" বহু হাব্দী গুগু। আনিয়া একদিন নহবৎ-থানা ভালিয়া দেন।

"রাজাদের" স্থভরে স্থলর বাগান বাটা আছে। গলায় क्न वांत्रानांत्र नीरहत्र वरत्र कांशना कांशनि क्यर्वन करत्-এইরূপ ব্যের বসিয়া সন্ধ্যা-আহ্নিক করিবার স্থাবিধার স্বভূ চারিদিক মার্কেল পাথর দিয়া বাঁধান ও গলা লানের স্থবিধার জ্যু নাগাও ছোট সি^{*}ড়ি আছে। রাজা ভার রাধাকাছ দেব বাহাছুর এই বরে বসিয়া সন্ধ্যা-আফিক করিতেন ঃ একদিন সন্ধ্যায় এক বাছুরের কাতর হাছা রব শুনির: তাঁহার মনে নির্বেদ্ উপস্থিত হয়; তিনি বুন্দাবন-বাসী হয়েন। মৃত্যুকাল পর্যান্ত তিনি বৃন্দাবন ছাড়িরা বাহিছে কোথাও বায়েন নাই। ভারতের তদানন্তীন বড়লাট লড়-गरतम छांशांक K. C. S. I. छेशांवि (मन ; मत्रवाहः তাঁহাকে দেখিতে না পাইয়া অহসন্ধান করেন বে রাজ রাধাকান্ত দেব কেন উপস্থিত নাই। যথন জানিতে পারিলেই र त्रांका वृत्पायन-वांनी श्हेशांहिन धवः वृत्पावत्नत्र हकूः সীমার বাহিরে কোথাও যাইবেন না সভল করিয়াছেন ७ थन छिनि वृत्तांवरनत्र अधावरन (आधात्र) Special durbar कतिता डीहारक K. C. S. Iत जनव राग-बाजां ब्रब्स्ट्रार्थ बज्यथान जीव हिःमा ७ त्शा-रुजा नाहे-সাহেব বন্ধ করিয়া দেন। এই ছকুম গোবিশ্ববন্ধত পছঃ भजीत्वत्र भूकं भग्रं वरान हिन।

বাক্ এই সর কথা। ত্থাচরের "রাজারা" নহবৎ-খান ভালিরা দিলে জয়গোপালবার্ রাজাবের ত্থাচরের বাধান-বাটা বুঠ করেন ও ভালিয়া দ্রেন। এই বাধানে গোলুকী ক্ষের উপর প্রতিষ্ঠিত এক শালগ্রাম ছিল—তাহাও স্টিরা গইরা আইসেন।

विवान क्रमभः हे शांकिया डेंडिन। উख्य शक्करे वनवान —পুনরায় বল পরীকার আয়োজন চলিতে লাগিল। এক-দিন স্থাচর গ্রামের সীমানার রাজারা প্রার পাঁচ-শভাধিক गांठितान, म् किखाना, वन्क्खत्राना, श्व मी कितिह-**६द्यांना जमारत्रछ क**त्रिरानन। जद्यांशांनानात्रेषु जाहांकी গোরা, শান্তিপুরের গোড়ো গোরালা, তুর্কী সভয়ার ও দাঁওতালী "এক কাঁড় বিধাঁই" (অর্থাৎ তীরন্দাক) প্রভৃতি সংগ্রহ করিলেন। সীমানা পাহারা দিবার জক্ত গোড়ো গোয়ালাদের রাখিলেন। শেষ রাত্রি হইতে রাজারা ভাহাদের উপর চড়াও হইলেন; লাঠির চোটে গোয়ালারা त्राचारमत्र रहेरिक नाशिन-- अमन ममरत्र रक्षात्र रहेरिन वन्द्रक ध्वानात्रा निमाना कतिया शायानारमञ्जल मन भिराप्त মারিতে লাগিল। সামস্দীন বন্দুকওয়ালা এক ত্রিশুলের উপর বন্দুক রাখিরা অব্যর্থ টীপে গোয়ালাদের মারিতেছে। छोरांत्रां करम करम रहिया अथन दार्थात्न रतिमहन्त्र परखत দেবালয়ের দক্ষিণ-পশ্চিম কোণে বটগাছ আছে ঐ অবধি শাসিল। ইতিমধ্যে থবর জয়গোপালবাবুর কাছে গিয়াছে—তিনি ও "নীলা-সবিদ্ধ" বোড়ায় চড়িয়া উপস্থিত হইলেন। তাঁহার উপস্থিতিতে উৎসাহিত হইয়া তাঁহার দল এগাইয়া চলিল। হুকুম দিলেন আনিতে পারিবে। সামস্থদীন বাদদাহী ফৌজে কাজ क्तिशाहिन; পানিপথের युद्ध नड़ाई कतिशाहिन विनश গৰ্ম করিত। খ্রামা ঢুলী ঢোল ফেলিয়া দিয়া গুস্তিতে টিপ করিয়া সামস্থানের চোথ উপড়াইয়া ফেলিল। এইরূপে **धारकत शत धक कतिया वस्कुक अवामा एवं कक् नहें कतिए**छ नांशिन। बांकारमब मन भनाहेर्ड नांशिन। এই সময় बाबरारे धुत्रीरमत त्राभिश्वन वावित्रा छेजिन-छारारमत मन ভান-কানি আক্রমণ করিয়া রাজাদের নদীর দিকে ঠেলিয়া गरेया गारेए नाभिन। हुनौता छान वास्राहेए नाभिन!-

ठिष्ठांक् छम् । ठिष्ठांक् छम्— इवसत्तत्र व्याद्ध्य शिष्ठ्य । ठिष्ठांस् छम् । ठिष्ठांक् छम्— धृक्तांवित वष्ठ धृम्-वष्ठ धृम् ॥ त्राकारमञ्जलक मण विद्याल गानिन । नामञ्जलीनत्व गरेता

হটিতে গাগিল—এমন সমরে ছিলাম ঢার্লি তলওরাবের এক কোপে ভাহার মাথাটা কাটিয়া কেলিল। ভাহারা ঠাকুরদাস বাবাজীর আথজার দক্ষিণ অবধি হটিয়া গেলেন। এই আথজার আয়গায় এখন মহেন্দ্রবাব্র ঠাকুর-বাজী হইয়াছে। "সাহেব-বাগানের" উত্তর-পশ্চিম কোণে বে বটগাছ আছে এখানে সামস্থলীনকে কবরত্ব করা হল। ভাহার মাথাটা ছিদাম ঢালি প্রস্থার পাইবার পর গজায় ফেলিয়া দেয়। জয়গোপালবাব্ ভামা ঢুলি ও ছিদাম ঢালি ছই জনকেই ৫০০ টাকা করিয়া হাজার টাকা প্রস্থার দেন।

এই সময়ে বারাকপুর ছাউনীতে বাইবার জয় কলিকাতার গড়ের মাঠের কেলা হইতে এক রেজিমেট গোরা সৈক্ত বড় রাস্তা (Barrackpore Trunk Road তथन रव नारे-पूर मखर नीलगरक्षत ताखा) धतिवा कृत् সঙ্গে তুইটা কামান টানিরা লইরা করিতেছিল। ষাইতেছিল। বরাহনগর সিঁভির কাছে আসিয়া ভাহারা "তহ" দত্তের বোম-ফাটা পুক্রিণীর স্বাস্থ্যপ্রদ কাক-চঞ্ জল থাইবার জন্ত বিশ্রাম করিতেছিল। "ভয়" বাবুর বাগানে থবর আসিল যে রাজাদের সঙ্গে পানিহাটীর वावूरमत्र त्यात्रजत माना वाधिशाहि—२०।१९ वन चार्यम হইয়াছে। "তহ্ন" বাবুর দকে কর্ণেল সাহেবের আলাপ পরিচয় ছিল—ভিনি তাঁহাকে এই লড়াই থামাইয়া দিজে অহরোধ করেন। কর্ণেলও রাজি হয়েন। এক প্রহর বেলার সময় দালার ছলে উপস্থিত হইয়া চুই পক্ষকে श्रीमिट्ड हेमात्रा कत्रिलन এवः विवनमान छूहे म्हलन मर्पा इहे नाति शोता-देनक नाकाहेबा मिलन ।

পরে বিবাদ মিটাইয়া দিলেন এই সর্জে—রাজারা বতদ্র পর্যন্ত অগ্রসর হইয়াছিলেন পানিহাটী গ্রামে সেই-থানে একটা বটবৃক্ষ পোঁতা হইবে। কন্মিনকালে কেছ এই বটবৃক্ষ কাটিতে পারিবে না। আর রায়-চৌধুরীদের লোক স্থাচর গ্রামের ভিতর বতদ্র অগ্রসর হইয়াছিলেন সেইখানে আর একটা বটবৃক্ষ পোঁতা হইবে—এই গাছও কেছ কথনও কাটিতে পারিবে না। এখনও এই বটবৃক্ষ ছইটা খোবনজালে বহাল তবিয়াতে বর্জনান থাকিয়া স্থান্ম জতীতের ঘটনাবলীর সাক্ষ্য দিতেছে।

भाव এই इरे वहेबुट्कब किंक मास्थात एक स्कार

রাজারা কথনও অন্তশন্ত লইয়া স্থলবের এই বটর্কের
দক্ষিণে আসিবেন না; আর পানিহাটীর বাব্রাও তত্রপ
পানিহাটীর বটর্কের উত্তরে আসিবেন না। উত্তর পক্ষই
এইরপ প্রতিজ্ঞা, করিলেন। বিবাদ প্রায় মিটিরা পেল,
এমন সমরে গোল বাধাইল গোমতীচক্র ও শালগ্রাম শিলা।
রাজারা ইহা কেরৎ চাহিলেন; রায়চৌধুরীরা প্রান্ধণ বলিরা
অরং পূজার দাবি করিলেন ও বলিলেন বে তাঁহারা ঠাকুরকে
আরভোগ দিতেছেন, ফেরৎ দিলে কায়স্থ বাটীতে তাহা
হইবে না—স্বতরাং ঠাকুরের কই হইবে। স্বতরাং ঠাকুর
তাঁহাদের কাছেই থাকুক। রাজারা ইহাতে রাজি হইলেন
না, বলিলেন ক্রপ্রোপালবাব্ বদি রাজাদের এলাকার
বন্ধোন্তর দান গ্রহণ করেন তাহা হইলে তাঁহারা ঠাকুর
হাজিরা দিতে সম্বত্ত আছেন। ক্রপ্রোপালবাব্ ইহাতে
রাজি হইলেন না।

কর্ণেল সাহেবের থাস ক্লীজী নিশির এই বিবাদের এক সমাধান করিয়া দিলেন। তাঁহার জানা এক নিঠাবান রাজ্য এই গোমতীচক্র ও শালগ্রাম পূজার ভার পাইলেন। জয়গোপালবার পাটনা গ্রামে দশ বিশা দেবোদ্তর করিয়া দিলেন; রাজারা পূজার জন্ত মুড়াগাছা পরগণার মধ্যে পঞ্চাশ বিখা দেবোন্তর করিয়া দিলেন। সকল বিবাদ মিটিয়া গেল।

পানিহাটীর শেব জমিদার জয়গোপাল রারচৌধুরীর পৌত শিবচন্দ্ৰ বায়চৌধুরী মহাশ্রকেও (শেব অমীদার वनिएक कि कम य शानिकाणित वर्तमान क्योमानता जात পানিহাটী গ্রামে মেওয়ান গৌরীচরণের ভিটায় ব্যবাস করেন না) এই প্রতিশ্রতি রক্ষা করিছে দেখিয়াছি। বধনই তিনি বাড়ীর বাহির হইতেন ছুই জন চাপরাসী সংখ ভরবারি লইয়া বাইত। কিন্তু এই বটগাছের উত্তরে चानित हत अकता, ना हत नित्रत हानतानी नत्न नहेंत्री আসিতেন। আমরা একবার তর্ক করিয়া তাঁহাকে विश्वाहिनाम-य व कांत्र ७ व व व व्यवहात्र धहे श्रिकेषि ए दश्य बहेशांकिन वर्षमारन राहे राहे कारन वा অবস্থা নাই, তিনি কেন এই dry formality বজার রাধিতেছেন। ইহাতে তিনি বুলেন বে পূর্ব্বপুরুষের প্রতিশ্রতি রক্ষা করা ত পরম ধর্ম বটেই, আর তাঁহাদের বিষয় ভোগ করিব; কিন্ত তাঁহাদের প্রদত্ত প্রতিশতি বা দেবোত্তর ত্রন্ধোত্তর রক্ষা করিব না এইরূপ বে-ইমানী করা कि छे हि १ नाम ता हिन्तू-वित्मय बाज्यन ।

চাওয়া

ঞ্জীহাসিরাশি দেবী

ভোষার চরণ-ধ্বনি নিত্য যেন আমার অন্তরে
বাজে ক্ষণে ক্ষণে
ছায়া ঢাকা বনপথে, রৌজ্ঞরা বিজন প্রান্তরে—
যৌন আবাহনে।
বসন্তের বেলা শেবে—মুঞ্জরিত পিরাল শাখার,
উদানী চৈতালী হাওয়া যেন এসে ভাক হিয়ে যায়—
ভোষার কঠের গানে; বরবার বেশুবনে বেন এর স্থর—
আমারে উন্মনা করে;—হে স্কুর! আমার স্কুর!

তোমার নয়নপাতে নিত্যকার মুহুর্ত আমার
পরিপূর্ব হোকৃ—
প্রহর শেষের আলো প্রাযুট করুক বারবার
কিংগুক অনোক।
আমার পৃথিবী তরা আলো আর আকাশের নীল,
তোমারই মাঝারে বেন খুঁজে পার অনন্ত নিধিল
রূপে, রুসে, গজে তরা;—বেছনার—মিলনে—উজ্লাবে,
ভোমার ইন্সিত বেন কাছে আসে—আরো কাছে আসে



মীরাবাঈ

কৌন যতন প্রাত্ পায়ো মীরা কৌন যতন প্রাত্ পায়ো।
নৈ তো প্রীতম ত্তনে আঈ, অপনা আপ গরায়ো॥
ফীকে পড়্ গয়ে বন্ধন সারে জিন হাই ইম ভরমায়ো।
হুক উঠা ঐসা জীবনমে জীবন ফির নহি ভায়ো॥
ছোড়ী আস নিরাশা ছ্টা ছুটো অপনো পরায়ো।
"জগ রঠে—অব তু না রঠে—রো রো মীরা গায়ো॥
জনম জনমকী প্রীত প্রানী—মোহন! না বিদরায়ো।
জুঁ ভাবে অব রাখো খামী! তুথমে ভী মুখ পায়ো॥

তোমারে কেমনে পাবে মারাহার, তোমারে পাবে কেমনে ?
আপনারে যবে হারালো সে এসে তোমারি অবেষণে ?
মমতারা হল শিথিল—যাহারা বেঁধেছিল বন্ধনে,
তারি বেদনায় সাধ আর নাথ রহিল না এ-জীবনে!
আশা ও নিরাশা মিলালে—আপন-পর কি রহে অরণে?
সব যায় যাক্—ফিরায়ো না মূথ তুমি এ-আধার কণে।
জন্ম জন্ম চেয়েছি তোমারে রেখো প্রভু রেখো মনে,
স্থেধ রাখো কি বা ছুধে রাখো, যেন ছুধে মীরা স্থধ্যণে।

হিন্দিকথা—শ্রীমতী ইন্দিরা মালহোত্র, বাংলা অমুবাদ ও হুর—শ্রীদিলীপকুমার রায়, তাল—চতুর্মাত্তিব

भार्तार्बर्ङा नर्दा । र्दा-। र्ङ्का मी रिक्ड मार्बर्ङा दी र्ङ्का । र्वेदा-। नी-। रि 5 আ - ঈ - ঢ নে প্ৰী - ত .ম আ না রে য বে হা - রা লো **সে - এ সে** প । भानाना मी । त्री नर्भानशाना मुला मा लगा ला II মা বা য়ো -ना অ গ (e) -য তো মা র ন -নে र्मार्मा -1 I জামামা মা I পা 4 भा श সা ঋা সা রা ড় গ য়ে ব ध न সা রে ন্ য় য (5) (F) শি થિ ল -তা রা হা রা স্থিতি স্থা বুল বুলু মাজুৰ বিজুলি । স্কুলি খা স্থা-া | -1 -1 -1 -1 I fsi a য় ક **হ ম ভ** মা য়ো -র বে - ধে - ছিল বন ধ নে -ৰ্মাৰ্জুমাৰ্জাখা। সা-াসা া । পদা ণদ 1 91 -1 পা -া **I** পণা দা की - जे - ক উ সী 2 की -ন মে তা - রিবে - দ না য় সা ধ আ র न आ। मा मा ना সা I ঝা **ঝ**া म्। । । 91 थवा मा भा II জী ফি ঠি 4 র ন ভা য়ো --•ि ही র লো না এ নে ব ण र्भा मिंग न र्मान I মক্তা মতা ক্তামা পা ণা 21 -1 511 -1 ভী আ শ নি রা (5) -\$ নি মি হ্য - 1 9 রা শা লা আ লে ণা | পার্সা পার্সা | পা জুল রাসা | -া -া 27 -1 -1 I টো আ প নো প র য়ো কি - র র হে র ୯୩ मा छन्। । अन् न मा मा मा र्था मा न 97 -1 F1 -1 I Ġ ৰ্ ্জ तं না िक স যা য় যা ক রা য়ো मू

खा	97	म	-1		সা	পা	মা	-1	I	35 AT	-1	সা	-1		-1	-1	-1	-1	II
বো	-	রো	-		मी	•	রা	-		গা	-	য়ো	-		-	-	-	-	
তু	-	মি	এ		আঁ	-	ধা	র		ক্ষ	-	Cel	-		-	-	-	-	
সা	ঝা	জ্ঞা	মা	1	পা	দা	মা	-1	I	<u>জ</u> ্বা	মা	পা	দা	I	ণা	र्भा	F	N -1	I
S	ন	ম	জ		ন	म	কী	-		প্রী	-	T	পু		রা	-	3	1 -	
জ	ন্	म्	-		ব্ৰ	ન્	भ	-		CE	য়ে	ছি	-		ভো	শা	Ç	র -	
		•																	
911	म	ণা	স্ব	1	*1	ভ্ৰ 1	পা	ম্	I	**************************************	-1	ৰ্স (-1	-	-1	-1	-1	-1	I
শো	-	इ	न	·	না		বি	স		রা	-	য়ো							
রে	-	খো	2		-	ভূ	বে	থো		ম	-	নে							
							_												
7 स्र 1	-1	*1	-1		পদ্ব	-1	স 1	স্	I	नन्।	-1	91	-1	1	পদ্	-1	म	-1	I
क्राँ	-	ভা			বে	-	অ	ব্		রা	•	থো	-		স্থা	٠.	भी	-	
3	থে	-	রা		বে	1 -	কি	বা		ছ	পে	•	রা		থে1	-	য়ে	ন	
** L.I	- 14				***************************************		-			37			a.	,	J.	J	J		**
मश्री	পা	পা	-1		20 XI				1	मन्त्रा	-1	সা	-1	1	-1	-1	-1	-1	H
ছ	খ	মে	•		ভী		স্থ			পা	-	য়ে	-		-	-	-	-	
ছ	থে	-	मी		রা	-	স্থ	શ		গ	-	ণে			-	-	-	-	

পালবংশীয় মদনপাল ও গোবিন্দপাল

ডক্টর শ্রীদীনেশচন্দ্র সরকার

বাঁহারা বাংলাদেশের ইতিহাসের চর্চা করেন, তাঁহারা সকলেই অবগত
আহেন বে, পালবংশীর রাজগণের লিপিতে বিভিন্ন নরপতির রাজত্বের
বর্ধান্থ মাত্র উল্লিখিত হইত, উহার ভারিখে কোন অব্দ বা সাল ব্যবহারের
অব্ধা অচলিত ছিল না। এই কারণে কোন পালরাজারই সিংহাসন
আরোহণের কাল নিরূপণ করা সম্ভব হর নাই।

পালরাজগণের সময়কালীন মাত্র ছুইথানি লিপিতে বিক্রমণংবতের ব্যবহার দেখা বার। ইহার মধ্যে প্রথম মহীপালের সারনাথ শিলালিপি প্রথম উল্লেখ করা প্রয়োজন। এই লিপির তারিখ ১০৮০ বিক্রমান্ত অর্থাৎ ১০২৬ খ্রীষ্টান্ত। লিপিথানি কালীর নিকটবর্তী বৌদ্ধ তীর্থ সারনাথে পাওলা গিরাছে। লিপিতে উল্লিখিত হইরাছে বে, রাজা তীর্থ ক্রমণ করিতে পিরা ভাছার ছই আতার সাহাব্যে ঐ অঞ্চলে কতকগুলি

মন্দিরের নির্মাণ ও সংসার কার্য্য সমাধা করিরাছিলেন। মৌধরি, শুরুর-প্রতীহার প্রভৃতি বংশের রাজগণের চেট্টার ইতিপ্র্কেই বর্তমান উন্তরপ্রদেশ অঞ্চলে বিক্রমসংবতের ব্যবহার স্থাচলিত ইইরাছিল। এই ছানীর প্রধার প্রভাবই মহীপালের সারনাথ লিপিতে বিক্রমান্দ ব্যবহারের একমাক্র কারণ। ছঃধের বিষর, লিপিথানিতে ১০৮০ বিক্রমান্দের সঙ্গে সঙ্গে প্রথম মহীপালের রাজ্য সংবৎসরের উল্লেখ করা হন্ত নাই। তাহা হইলে অস্ততঃ এই পাল নরপতির সিংহাসন লাভের কাল হিসাব করিরা বাহির করা যাইত।

বিক্রমান্দের তারিখদংবলিত পাল যুগের বে বিতীর লিপিখানি পাওরা গিরাছে, উহা গোবিন্দপালের গরা শিলালিপি। গোবিন্দপাল যে জনৈক উত্তরকালীন পালবংশীর নরপতি, তাহাতে কাহারও মন্দেহ হয় নাই; ক্সি ভারার সহিত এই রাজবংশের পরিচিত নরপতিগণের কোন সম্পর্ক অভাবধি নিরূপিত হর নাই। গোবিন্দপালের গরালিপির তারিধ ১২৩২ বিক্রমান্দের আধিন মাসের গুকা পঞ্চমী। উত্তর ভারতে প্রচলিত ৰাইশভাচক্ৰামুবারী বৎসরটির মাম দেওরা হইরাছে বিকারী। পশ্চিতগণ হিদাব করিরা সিদ্ধান্ত করিরাছেন বে, গরা লিপির প্রকৃত তারিখ ১১৭৫ গ্রীষ্টাব্দের ২২শে সেপ্টেম্বর। লিপিটির তারিখে আরও বলা হইয়াছে বে. ১২৩২ বিক্রমান্স ছিল রাজা গোবিন্দপালের "গত রাজ্যের" ১৪শ বর্ব। সাধারণতঃ নরপতিগণের রাজ্যসংবৎসর উল্লেখ ছলে "প্রবর্দ্ধমান বিজয় রাজ্য" প্রভৃতি ক্যার ব্যবহার দেখা যায় : কিন্তু সে ভূলে গরা-লিপিতে গোবিৰপালের বিগত রাজ্যের উল্লেখ করা হইয়াছে। ইহা হইতে পণ্ডিতগণ স্থির করিরাছিলেন যে, গোবিন্দপাল রাজ্য হারাইবার পর চতর্দ্দ বংসরে উলিখিত গরা লিপি উৎকীর্ণ হইরাছিল। এই हिमाव अपूर्मादा ১२১৯ विक्रमारम अर्था९ ১১७२-७७ श्रीहोरम श्रीविन्य-পালের রাজ্য শত্রুহন্তগত হইরাছিল। কেম্বিজ বিশ্ববিভালরে রক্ষিত একথানি বৌদ্ধরান্থের পুথিতে গোবিন্দপালের ৪র্থ "বিজয়রাজ্য সংবৎসরে" উহা সমাপ্ত হইবার উল্লেখ আছে। হুতরাং পণ্ডিতগণ সিদ্ধান্ত ক্রিরাছিলেন যে, গোবিকপাল অভতঃ চারি বৎসরকাল রাজত্ব করেন, অর্থাৎ অন্তত:পক্তেনি আমুমানিক ১২১৬ বিক্রমান্ম (১১৫৯-৬০ প্রীষ্টাম্ব) হটতে ১২১৯ বিক্রমান্দ (১১৬২-৬৩ খ্রীষ্টাম্ব) পর্যান্ত রাজত্ব করিয়াছিলেন। গোবিন্দপালের রাজ্য শত্রুকর্ত্তক অধিকৃত হইবার পর কেন তাহার ভূতপুর্বে প্রজাগণ নৃতন রাজার রাজ্যসংবৎসরের পরিবর্তে গোবিব্দপালের রাজ্যান্ধ উল্লেখ করিত, ইহার কারণ স্বরূপ পণ্ডিতেরা বলিয়াছেন যে, রাজান্তই বৌদ্ধ রাজা গোবিন্দপালের প্রতি দক্ষিণ বিহারের বৌদ্ধ অধিবাসিগণের পক্ষপাতিত্বই ইহার কারণ। সম্ভবতঃ বাঁছারা গোবিন্দপালকে উচ্ছেদ করিয়া দক্ষিণ বিহার অধিকার করেন. ভাহার। বৌদ্ধ ছিলেন না। যাহা হউক, গোবিন্দপালের রাজতকাল সম্বন্ধে পশ্চিতগণের উপরিলিখিত সিদ্ধান্ত নিতান্তই অসার বলিয়া বোধ হর। রাজার রাজ্যলাভের সমর হইতেই রাজ্যাকের পণনা আরম্ভ হওরা শাভাবিক: রাজা রাজা হারাইবার সময় হইতে কালগণনার কল্পনা অভান্ত অবাভাবিক। গোবিন্দপালের গয়া নিপির এবং পূর্ব্বোক্ত পুঁথিখানির তারিধ হইতে শাষ্টত:ই বোধ হর বে, তিনি ১২১৯ विक्रमारम (১১৬२-७७ श्रीहोरम) मिश्हामन चारवाहन कविवाहिरमन : **শত:পর তিনি অন্তত: তাঁহার চতুর্ব রাজ্যসংবৎসর অর্থাৎ** ১২২২ বিক্রমান্স (১১৬৫-৬৬ খ্রীষ্টান্স) পর্যান্ত সিংহাসনে অধিষ্ঠিত ছিলেন: কিন্ত তাঁহার রাজালাভের পরবর্ত্তী চতর্দ্দিশ বংসরের অর্থাৎ ১২৩২ বিক্রমান্দ বা ১১৭৫ খ্রীষ্টান্দের আখিন মাসের পূর্বেই ভদীর রাজ্য শত্র-হত্তগত হইরাছিল। অবশ্র রাজ্য হারাইবার পরেও কিছকাল পর্যাত ছক্ষিণ বিহারের প্রজাগণ দলিলে তারিখ দিতে বা পুথি সমাপ্তির কাল বুৰাইতে গোবিশ্বপালের রাজ্য সংবৎসরের গণনাই ব্যবহার করিরা াইতেছিল। এই সিদ্ধান্তের সমর্থক একটি অকাট্য প্রমাণ আমি সম্প্রতি -আবিকার করিতে সমর্ব হইরাছি।

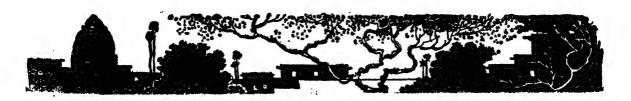
পালরাজগণের বংশলতার সর্ক্ষমিয়ন্তানবর্তী নরপতির নাম মদমপাল। অফ্রান্ত পালরাজার জার ইতার রাজ্যকাল সম্পর্কেও পণ্ডিভদিপের মধ্যে একমত্য নাই। মদনপালের জয়নগর লিপির তারিখ তদীর রাক্সড়ের চতুর্দ্ধশ বংগুর। স্থভরাং তিনি অস্ততঃ চৌন্দ বংসরকান রাজত্ব করিয়াছিলেন, এইরপে মনে করা হইত। গত জাতুরারী মাসের প্রথম ভাগে আমি মুক্তের জেলার পশ্চিমাঞ্চান্থিত কভিপর প্রামে শিলালিপি প্রভতির থোঁজ করিতে গিয়াছিলাম। এই সময়ে আমি ইট্র ইভিয়ান রেলপথের লক্ষ্মীসরাই ষ্টেশনের নিকটবর্ডী এক প্রামে মদন-পালের একথানি শিলালিপি আবিষ্কার করি। এই লিপিটি রাজা মদনপালের ১৮শ রাজাসংবৎসরের ১১ই জার্চ তারিখে উৎকীর্ণ হইয়াছিল। কিন্তু লিপিটির একটি মূল্যবান বৈশিষ্ট্য এই বে, ইহার তারিখে মদনপালের ১৮শ রাজান্তের সহিত ১০৮৩ শকান্তের অর্থাৎ ১२১৮ विक्रमान वा ১১৬১-७२ औद्रास्मित है हिन चाहि । देश हरेल नि:मःभए साना ताल ए महन्त्राल ১०७७ भकास खंधी९ ১२०১ विक्रमास বা ১১৪৪-৪৫ খ্রীষ্টাব্দে সিংহাসন আরোহণ করিয়াছিলেন এবং অন্ততঃ ১১৬১-৬২ খ্রীষ্টাব্দ পর্যান্ত রাজত করিয়াছিলেন। আমরা ইতিপূর্কে দেখিয়াছি যে, গোবিন্দপাল ঠিক ইহার পর বৎসর রাজ্যলাভ করেন। ञ्चा जाविमाना व महनभाता छेखारिकां में वर्ष वाविष्ठ পরবর্তী রাজা ছিলেন, তাহাতে কোন সন্দেহের অবকাশ নাই। সম্ভবতঃ গোবিস্পাল মদনপালের পুত্র ছিলেন। বাহা হউক, বর্ত্তমান লিপি হইতে ইহাও নিশ্চিত জানা গেল যে, গোবিশ্বপাল ১১৬১-৬২ খ্রীষ্টান্দের পর্বেচারি বংসর বা তদ্ধিককাল রাজত করিয়া ঐ সময়ে রাজ্যচাত হন, পণ্ডিতগণের এই ধারণা আন্ত। নবাবিক্ত লিপিখানি উত্তর-কালীন পালরাজগণের ইতিহাসের উপর অনেকথানি নূতন আলোকপাত করিয়াছে। প্রথমত:, ইহাতে মদনপালের সিংহাসন লাভের সময় দ্বিরাপে নির্দারণ করা সম্ভব হইল। বিতীয়তঃ ইহা হইতে মদনপালের রাজত্বের সমাপ্তির কাল অনুমান করা সম্ভব হইল। তৃতীয়ত:, এই লিপির উপর ভিত্তি করিয়া মদনপাল ও গোবিন্দপালের পারস্পরিক সম্পর্ক নিরূপণের একটি পুত্র পাওয়া গেল। চতুর্থতঃ, ইহার সাহায্যে গোবিৰূপালের রাজত্কাল সম্পর্কিত প্রচলিত আন্ত ধারণার অসারতা কুলাই রূপে প্রমাণিত হইল।

পালবংশীর নরপতিগণ বাংলা ও বিহারের অধীবর ছিলেন। কিন্তু বাদশ শতাব্দীতে মদনপাল ও গোবিন্দপালের সমরে এই বিশাল সাম্রাজ্যের নানা বিতৃত অঞ্চল হইতে পাল অধিকার বিলুপ্ত হইরাছিল। বাংলাদেশের প্রায় সম্দর অংশ এই সমরে সেনবংশীর রাজসপের হস্তগত হইরাছিল। এই বংশের প্রথম স্বাধীন নরপতি বিজয় সেন ১০৯৫ হইতে ১১৫৮ খ্রীষ্টান্দ কিংবা ১১২৫ হইতে ১১৫৮ খ্রীষ্টান্দ পর্যন্ত রাজত্ব করিরাছিলেন। তিনি প্রথম জীবনে পাল সম্রাটগণের অধীন সামস্তমাত্র ছিলেন; কিন্তু জীবনের শেব দিকে পালবংশীর নরপতিকে পরাজিত করিরা তিনি বাংলাদেশে স্বাধীন রাজ্য প্রতিষ্ঠা করেন। বিজয় সেন কর্ত্তক পরাজিত পরিরা তিনি বাংলাদেশে স্বাধীন রাজ্য প্রতিষ্ঠা করেন।

নছে। দেন বংশীরেরা মূলতঃ দাকিণাড্যের কর্ণাট অঞ্চলের অধিবাসী ছিলেন। একাদশ শতাব্দীর শেব দিকে তাঁহারা বাংলাদেশে আগমন করেন। এই সময়ে আরও একটি কর্ণাটীয় রাজবংশ পূর্বভারতে বাধীন রাজ্য স্থাপন করিরাছিল। ১০১৭ খ্রীষ্টাব্দে নাস্তদেব নামক स्रोतक क्रनीहेरानी वीत्रशुक्रव निश्निता व्यर्थाए छेखन विशास नाला প্রতিষ্ঠা করেন। তাঁহার উত্তরাধিকারিগণ দীর্ঘকাল পর্যান্ত স্বাধীনভাবে টাত্তর বিহার শাসন করিয়াছিলেন। কুতরাং দেখা যার যে, ছাদশ শতাক্ষীর মধাভাগে মদনপাল এবং গোবিক্ষপালের সমরে কেবলমাত্র ছক্ষিণ বিহারে পাল বংশীয় রাজগণের অধিকার-খীকৃত হইত। কিন্ত প্রাচীন পাল সাম্রাজ্যের এই অতি কুত্র অংশেও পাল অধিকার অকুর ও অব্যাহত ছিল না। মদনপালের সিংহাসন লাভের পর্বে হইতেই দক্ষিণ বিহারের অধিকার লইরা পাল এবং উত্তর প্রদেশের গাহড-বালবংশীর রাজগণের মধ্যে বিবাদ উপস্থিত হইয়াছিল। গাহত-বালবংশীয় পরাক্রান্ত নরপতি গোবিন্দচন্দ্রের ১১১৪-৫৫ খ্রীষ্টাব্দ মানের তামশাদন হইতে জানা যায় যে. ১১২৪ খ্রীষ্টাব্দে তিনি আধনিক পাটনা অঞ্চলে ভূমিদান করিয়াছিলেন। আবার ১১৪৬ গ্রীষ্টাব্দে প্রদত্ত লার তাত্রশাসন হইতে জানা যার যে, এ সময়ে গোবিন্দচন্দ্র বরং মুলগগিরি অর্থাৎ মুঙ্গেরে অবস্থান করিতেছিলেন। অবস্থা পালবংশীয় মদনপালের কতিপর লিপিও দক্ষিণ বিহারে পাওরা গিয়াছে। উপরে আমরা যে নবাবিষ্কত শিলালিপির উল্লেখ করিয়াছি, তদকুসারে ১১৬১-৬২ থ্রীষ্টাব্দে পাটনা ও মুঙ্গেরের মধ্যবন্ত্রী অঞ্চলে মদনপালের অধিকার স্বীকৃত হইত। ইহা গাহডবালদিগের সহিত সজ্বর্গে মদনপালের সাকলা হুচিত করে। কিন্তু পরিণামে এই গাহডবালেরাই বে দক্ষিণ বিহার হইতে পালবংশীয়দিগের শাসন উচ্ছেদ করিয়া-ছিলেন, ভাহাতে সন্দেহ নাই। কারণ ১১৭৫ খ্রীষ্টান্দের সীহবর ভাষ-শাসন অনুসারে গোবিন্সচন্দ্রের পৌত্র জয়চেন্দ্র (১১৭০-৯৩ খ্রীঃ) পাটনা জেলার অন্তর্গত একটি গ্রাম দান করিয়াছিলেন। এই জয়চ্চল্রের একথানি শিলালিপি বোধগরাতে পাওয়া গিয়াছে। ইহার তারিখ ১২৪ • বিক্রমান্ত • (১১৮৩.৮৪ খ্রী:) কিংবা উহার কিঞ্চিৎ পরবর্তী। পরা অঞ্লে ১১৭৫ খ্রীষ্টাব্দে গোবিন্দপালের বিগতরাজ্যের উল্লেখ এবং উহার মাত্র করেকবৎসর পরবর্তী জয়চ্চল্রের এই লিপিথানির व्याविकारत मान हत्र, अत्रक्षान्त्र शाविनाशानक উक्ष्म्प कविद्या-ছিলেন। এই ধারণা সভ্য হইলে, গোবিন্দপাল অন্ততঃ দশ বৎসর वामक क्रियाहित्सन विम्ना ध्वा याहेर्ड शादा।

গোবিন্দপালের গরা লিপিতে বিক্রমসংবতের উল্লেখের কারণ এই বে, এই সময়ে ঐ অঞ্চলে গাহডবাল বংশের অধিকার প্রতিষ্ঠিত

হইরাছিল এবং এই বংশের রাজগণ রাজকীর দলিলপত্তে ঐ সংবতের ব্যবহার করিতেন। উত্তরপ্রদেশবাসী বৌদ্ধগণও বিহারের বৌদ্ধ তীর্থগুলিতে বিক্রমসংবতের বাবহার প্রচলনের জন্ম আংশিকভাবে দায়ী ছিলেন বলিয়া মনে করা ঘাইতে পারে। কিন্তু মুঙ্গের জেলার পশ্চিমাঞ্লে আবিষ্কৃত মননপালের পূর্ব্বোলিখিত লিপিথানিতে শকাৰ ব্যবহারের কারণ নির্দ্ধারণ করা সতাই কঠিন। পূর্বভারতের বে সকল লিপি ও এছে শকান্দের ব্যবহার দেখা বায়, তল্মধ্যে এই নবাবিকুত লিপিটিই সর্বাপেকা প্রাচীন। খ্রীষ্টার দশমশতাব্দীতে পদ-বংশীয় নরপতিগণ উডিম্বানেশে শকান্দের বাবহার প্রচলিত করেন। ঘাদণশতাব্দীর প্রথমভাগে গলবংশীর রাজগণের অধিকার উত্তর-পূর্ব্ব দিকে ভাগীরধা নদার তারবর্ত্তা প্রদেশ পর্যান্ত বিত্তত হয়। এই রূপে বাংলাদেশের দক্ষিণ-পশ্চিমাংশের সহিত শকান্দের পরিচর হট্যাছিল। কিন্তু বাংলাদেশে পকান্দের ব্যবহার জনপ্রির হটবার প্রধান কারণ, ঐ দেশে দাকিশাতা হইতে আগত সেনবংশের প্রতিষ্ঠা। मिन्नान विकास कर्ना इंटिंग वांश्वास्त्र चार्या वांग्या क्रिक वांग्य क्रिक वांग् আমদানী করিয়াছিলেন বলিরা বোধহর। সেনবংশীর নরপতিগণ রাজকীয় দলিলপত্রে পূর্ববন্তী পালরাজগণের ভার রাজ্যাত্ব ব্যবহার করিতেন; কিন্তু সেন আমলেই শকান্দের ব্যবহার বাংলাদেশে হুপ্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। বলালসেনের অভূতসাগন্ধ ও দানসাগর প্রছে শকাব্দের ব্যবহার দেখা যায়। শ্রীধরদাসকৃত সত্রজ্ঞিকণীমূত প্রস্থেত শকান্দের তারিধ রহিয়াছে। আবার ডোম্মণপালের ফুম্মরবন তাত্র-শাসন (১১১৮ শকান্ধ), হরিকালদের রণবন্ধমন্নের ত্রিপুরা ভাত্রশাসন (১১৪১ भकाक), पार्यापरवा ठाँ शाम जासगानन (১১৬৫ भकाक) অভৃতি লিপিও এই প্রসঙ্গে উল্লেখনীয়। এই বুগে বাংলাদেশ হইতে আসামে শকান্দের ব্যবহার প্রচলিত হর। ১১-৭ শকান্দে প্রদৃত্ত वल्ल छात्र वास्त्र निवालिया विकास का नार क এই সম্পর্কে প্রমাণস্বরূপ উপস্থিত করা যাইতে পারে। মিবিলার কর্ণাটকংশের প্রতিষ্ঠা সম্ভবতঃ উত্তর-বিহারে আংশিকভাবে শকাব্দ প্রচলিত হটবার প্রধান কারণ। কিন্তু বাংলা, আসাম ও উত্তরবিহারে नकारमञ अठलन १६-१ए कांत्रर्ग ए एकिश थाकून, मूरकत स्त्रलाह আবিষ্কৃত মদনপালের লিপিটতে উহার ব্যবহার সতাই কিছ অম্বাভাবিক। এই লিপির বিষয়বস্ত ছুইজন পর্ম বৈক্ব ব্রাহ্মণ-কর্ত্তক একটি নারারণ মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠা : ইহা মদনপালের কোন রাজকীর দলিল নছে। সম্ভবতঃ ঐ ছুইজন আহ্নাণ মূলতঃ ভিন্ন কোন দেশের व्यविवानी हिलान এवः छांशांस्त्र चार्या नकांस्त्र वावशांत्र सनिधाः

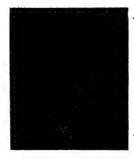


রুসে

শ্রীতারকচন্দ্র রায়

অষ্টাদশ শতাকীতে যে সকল মনীবী করাসীদেশে নৃতন ভাবের প্রচার করিরা করাসী বিপ্লবের ক্ষেত্র প্রস্তুত করিয়াছিলেন, রূপো তাঁহাদের অক্সতম! বৈজ্ঞানিক জ্ঞানের বহল প্রচারের উদ্দেশ্যে ডিডেরো ও ড্যালেঘার্ট (Diderot and D'Alembert) যে বিশ্বকোব (Encyclopedia) প্রকাশ করিতে আরম্ভ করেন, রূপো প্রথমে তাহার সহিত সংলিষ্ট ছিলেন। Diderot ও Voltaire তাহার বন্ধু ছিলেন, পরে মতভেদের কলে বন্ধুত্র-বন্ধন ছিল্ল হইয়া যায়। Encyclopedistগ—প্রজ্ঞাবাদী (Rationalist) ছিলেন, যুক্তিকেই তাহারা স্ক্বিব্রু বিচারের মানদও বলিয়া প্রহণ করিয়াছিলেন। ক্ষিত্র রূপো যুক্ত অপেকা হাদমবৃত্তিকে (feeling) প্রাথায় দিতেন। রূপ্রেন অকৃতপক্ষে ঘার্দানিক ছিলেন না; কিন্তু সাহিত্য, রাজনীতি ও প্রচলিত কৃচিও আচার ব্যবহারের সহিত্য দশনের উপরও যথেই প্রভাব বিশ্বার করিয়াছিলেন।

১৭১২ খৃষ্টাব্দে স্ইজাবল্যাণ্ডে জেনিভা নগরে ক্রেন। জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতামাতা করানী বংশীর এবং ক্যালভিন (Calvinist) সম্প্রদারভুক্ত ছিলেন। বাল্যকালে রুগো নিষ্ঠাবান ক্যালভিনীরের উপযোগী শিক্ষাই প্রাপ্ত হইরা-ছিলেন। তাঁহার পিতার অবস্থা ভাল ছিল না। ঘড়ী নির্মাণ



রুসে!

করিয়া ও নৃত্যশিকা দিয়া তিনি জীবিকা অর্জন করিতেন।
শৈশবেই ক্লেমের মাতার সূত্যু হওরায় এক আত্মীয়া তাঁহার লাজনশালনের ভার গ্রহণ করেন। ছাদশ বৎসর বরসে বিভালয়
ত্যাগ করিয়া তিনি একটির পরে একটি করিয়া নানা ব্যবসায়ে
শিক্ষানবিসী করেন, কিন্তু কোন ব্যবসায়ই তাঁহায় মন:পৃত না হওয়ায়,
বোড়শ বৎসর বয়সে গৃহ হইতে পলায়ন করিয়া কপর্মকহীন অবস্থায়
ইটালী দেশের ভাতর প্রদেশে উপন্থিত হন। তথায় শ্রীবিকা
উপার্জনের কোনও উপায় দেখিতে না পাইয়া, তিনি এক Catholic
পাজীয় নিকট গিয়া Catholic ধর্মের দীক্ষা-গ্রহণের ইচ্ছা বাজ্ত করেন,
এবং Turin নগরে ক্যাথলিক-ধর্মগ্রহণেছ্র্লিগের শিক্ষাপ্রমে
প্রেরিত হন। সেই আপ্রমে বাসকালে আপ্রমবাসী এক পাবও কর্তৃক
ভাহায় উপর পাশবিক বলপ্রয়োপের এক কাহিনী রুসো তাঁহায় শ্রীবনচরিতে বর্ণনা করিয়াছেন। আশ্রমের কর্তৃপক্ষের নিকট প্রতিবোগ
করিসে, তাহায়া ছুর্ভিয়ের শাভিবিধান তো করিলেনই না, পরত্ত

ঘটনাটি প্রকাশ না করিতে তাঁহাকে উপদেশ দিলেন। শিক্ষা-শেষে রুসো Catholic ধর্মে দীক্ষিত হইলেন। কিন্তু যে আশার পৈতৃক ধর্মত্যাগ, তাহা পূর্ণ হইল না। প্রস্তুত উপদেশও সামান্ত অর্থ (২০ ফ্রাক্সের কিছু বেনী) দিয়া আপ্রমের অধ্যক্ষ তাঁহাকে বিদা দ্ব দিনে।

করেক দিন ঘোরাব্রির পরে এক পোবাকের দোকানে রূসো
সহকারীর পদে নিযুক্ত হইলেন। দোকানের মালিক বিদেশে ছিলেন।
ভাহার যুবতী স্ত্রী—Madame Basle—ক্লোর প্রতি যথেষ্ট সদর
ব্যবহার করিতে লাগিলেন। উভয়ের মধ্যে ভালবাসার সঞ্চারও
হইয়ছিল। কিন্তু ব্যাপার অধিক দুর অগ্রসক্র-হইবার পূর্কেই দোকানের
মালিক দেশে ফ্রিয়া আসিলেন। ক্লো কর্মচ্যুত হইলেন।

ইহার পরে Madame de Vercele নামে এক মহিলা রুলাকে ভূত্যের কালে নিযুক্ত করেন। তিন মাস পরে মহিলার মূত্যু হর। তথন ওাহার একগাছি ফিতা রুসোর নিকট পাওয়া বায়। রুসোফিতা চুরী করিয়াছিলেন, কিন্তু ধরা পড়িয়া Marion নামী এক যুবতী পরিচারিকার নিকট উহা পাইয়াছেন, বলিলেন। ফলে বুবতী কর্মচুত হইল। এই মিখ্যা অভিযোগের কারণ বর্ণনা করিতে গিয়া রুসোলিখিয়াছেন, যুবতীকে তিনি ভালবাসিতেন এবং তাহার কথা সর্ব্বনাই তাহার মনে হইত। আপনার দোশকালনের উপায় যথন চিন্তা করিতেছিলেন, তথন যুবতীর কথা মনে হইল, এবং বিবেচনা না করিছেতিনি তাহার নাম করিলেন। অভুত ব্যাখ্যা !! অভিবাস শুনিয়া বুবতী কাতর দৃষ্টিতে রুসোর দিকে চাহিয়াছিল, একট নির্দোষ বালিকার সর্ব্বনাশ না করিতে তাহাকে অকুনয় করিলা বলিয়াছিল; কিন্তু রুসোর ভালবাসা তাহাতে কর্ণপাত করে নাই। এই হীন কার্য্যের জন্ত রুসো চিরকাল অকুতপ্ত ছিলেন।

ইহার পরে Turin ত্যাগ করিয়া রূপো Annecy নগরে গমন করিলেন। সেথানে madame de Warrens তাহাকে আশ্রের দান করেন। সম্রান্ত-বংশোন্তবা এই মহিলা স্বামীর আশ্রের ত্যাগ করিয়। Annecy নগরে বাস করিতেছিলেন, পৈতৃক ধর্ম ত্যাগ করিয়। Catholio ধর্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন এবং Savoyএর রাজার নিকট ইইতে বাৎসরিক ১০০০ লিভার বৃদ্ধি পাইতেছিলেন। নয় বৎসর রূপো এই মহিলার সহিত বাস করিয়াছিলেন। তাহাকে তিনি "মা" বলিয়া তাকিতেন, কিন্ত তাহার সহিত তাহার যে অবৈধ সংসর্গ ছিল, তাহা তিনি লিখিয়াছেন। Grossi নামে মহিলার এক কর্মচারী ছিলেন। মহিলা Grossi ও রূপো উভরেরই শ্যাস্ত্রিনী ছিলেন। Grossiর মৃত্যু ইইলে তিনি আর একজনকে তাহার হলাভিসিক্ত করেন। মর্মাহত হইরা রূপো তথ্য অন্তন্ম অন্তন্ম বান। (১৭৪১)

ক্লনেকে জীবনে ক্প্ৰেতিটিত করিবার জন্ত, তিনি যাহাতে বাধীনভাবে জীবনযাপন করিতে পারেন তাহার জন্ত, Madame de
Warrens জনেক চেষ্টা করিরাছিলেন, কিন্তু ক্লোর ইচ্ছাশজির

হুর্বলতার জন্ত কোনও চেষ্টাই কলপ্রস্ হর নাই। কেহই তাহাকে
কোনও কর্মের উপযুক্ত মনে করে নাই। অন্থিরচিত্ত, জলস ও
ব্যাত্র প্রফুতির জন্ত কোন কার্বোই কনো সকলতা লাভে সমর্থ হন
নাই। ভবিন্ততের জন্ত তাহার কোনও চিন্তাই ছিল না; উচ্চাকাজ্যার
প্রেরণা তিনি কথনও অনুভব করিতেন না; বেশী কিছু তিনি চাহিতেন
না, কোনও প্রকারে শান্তিতে থাকিতে পারিলেই সন্তেই হইতেন। অভাবের
তাড়না না থাকিলেও যৌন-লিপ্সা প্রবল ছিল এবং জীবনে একাধিক
স্তীলোকের সহিত অবৈধ সংসূর্য তাহার সংঘটিত হইরাছিল।

Madame de Warrensএর আত্রর তাগে করিয়া ঘাইবার পূর্ব্বে তিন বৎসর ক্রুসো জীহার সহিত চার্মের (Charmettes) নামক প্রীগ্রামে এক মনোরম গৃহে বাস করিয়াছিলেন। এই তিন বৎসর তাহার নিরতিশর ক্রথে অতিবাহিত হইরাছিল। এই সময়ে নানা বিষয়ে প্রস্থপাঠ করিয়া তিনি জ্ঞানার্জনের চেষ্টা করিয়াছিলেন, কিন্তু অধারনের কোনও **স্থাচিন্তিত প্রণালী না পাকার ইচ্ছান্তর**প সফলতা লাভ করিতে পারেন নাই। Voltaireএর Letters Philosophique তিনি আরহের সহিত পাঠ করিরাছিলেন। Montaine, La Bruvere. Boyle, Bossuct এর প্রস্থপ্ত বড়ের সহিত পড়িয়াছিলেন। দর্শনশান্তে Locke's Essay, Malebranche:, Leibnitz, Descartes, Logic of Port Royal প্রভৃতি পড়িয়াছিলেন। দর্শনের পরে শাৰীর বিভা (anatomy), জামিতি, বীলগণিত, জ্যোতিব ও লাটিন ভাষার চর্চাও করিয়াছিলেন। অধারন প্রশালী সম্বন্ধে তিনি তাঁহার জীবনচরিতে লিখিয়াছেন: "এই সময়ে আমার ভ্রাস্ত ধারণা ছিল, বে কোনও গ্রন্থ পড়িয়া লাভবান হইতে হইলে, তাহা व्विनात्र अन्त एव एव विश्वत्रत्र स्थान आवश्यक, मार्ड मार्ड विश्वत्रत्र সম্পূৰ্ণ জ্ঞান থাকার প্রয়োজন। তখন জানিতাম না, যে এই প্রকার জাৰ অনেক সময় গ্রন্থকার দিপেরও থাকে না। তাঁহারা প্রাজনমত অক্স গ্রন্থকারের গ্রন্থের সাহায্য গ্রহণ করেন। আমার আন্ত ধারণার ফলে পাঠে অগ্রগতি বিলম্বিত হইত। প্রত্যেক প্রস্থেই পদে পদে পাঠ স্থাপিত করিয়া প্রস্থান্তর হইতে আয়োজনীয় জ্ঞান সংগ্রহ করিয়া স্থপিত পাঠ আরম্ভ করিতে হইত। এমনও বটিরাছে, যে আরম্ভ গ্রন্থের দল পুঠা মাত্র লেয় করিবার পূর্বেই এই বন্ধ ক্রিয়া অক্ত বহু গ্রন্থ পড়িয়া লইতে হইরাছে।" ভুল ব্বিতে পারিরা রুসো পঠনপ্রণালীর পরিবর্ত্তন করেন। Encyclopedeaর বিভিন্ন বিবরের প্রবন্ধ পাঠ করিয়া তিনি নানা বিবরে জ্ঞানলাভ ক্রিলাছিলেন। ভিনি লিখিরাছেন—"২০ বৎসর বরুসে বে বুবক किहरे जानिए ना, अथह यावधीत विवास काननाए हेक्क बरेताहिन, সমরের বর্ষোচিত ব্যবহার করা ভাছার পক্ষে অপরিহার্ব্য হইরাছিল। মৃত্যু অথবা ছুরুদুই বশতঃ বে কোনও সময়ে আমার চেটা বাাহত হইতে

পারে জানিয়া, আমার ক্ষমতার বাভাবিক প্রবণতা কোন্ দিকে.
এবং কোন্ কোন্ বিভা চর্চচা করিবার আমি উপযুক্ত, তাহা জানিবার
লক্ত সকল বিবয়েই কিছু কিছু জ্ঞান সঞ্চরের লক্ত আমি চেষ্টা করিতে
লাগিলাম। * * * অধ্যরনের লক্ত নিশ্চরই আমি জ্বয়গ্রহণ করি
নাই। কোনও বিবয়েই আমি অর্ছ্ব ঘন্টার অধিককাল মনঃসংবার্গ
করিতে পারিতাম না। অক্তের চিন্তা অমুদরণ করিতে চেটা করিয়া
অক্সেই ক্রান্ত হইয়া পড়িতাম। কিছু নিজের চিন্তার অনেক সমর
অধিককণ কাটাইতে সক্ষম হইতাম। * * * এমনো হইয়াছে যে
কোনও প্রন্থের কয়েক পৃষ্ঠা পড়িবার পরেই আমার মন অন্তত্ত চলিয়া
গিয়াছে। তথন মনঃসংযোগের চেষ্টা করিয়া দেখিয়াছি, মন শুন্তিত
হইয়া পড়িয়াছে, কিছুই ধারণা করিতে পারে না। কিছু বিভিন্ন বিবরের
প্রন্থ একটির পর একটি অবিচ্ছেদে পড়িতে গিয়া দেখিয়াছি,, মনোযোগ
অক্স্থ খাকে। এক বিবরে অধ্যয়নের ক্রান্তি বিষয়ান্তরে মনোনিয়োগের
ফলে বিস্বিত হয়। * * * এই ভাবে পাঠপছ্তির পরিবর্তন করিয়া
সমন্ত দিনই বিনা ক্রান্তিতে পড়িতে পারিয়াছি।"

দর্শনশাস্ত্র পাঠকালে কলো বিভিন্ন দার্শনিকদিপের পরস্পর বিরোধী মতের সমন্তর সাধনের চেটা করিয়া বিষ্ণপ্রায়ত হয়। অবশেবে সমন্বরের চেষ্টা ত্যাপ করিরা তিনি প্রত্যেক লার্শনিকের মত বিদা অতিবাদে গ্রহণ করিয়া, তাহার বিকাশ ও পরিণতি বুঝিবার চেটা করেন। সেই মতের বিরুদ্ধ কোনও বৃক্তি মনে উঠিলেও ভাহা প্রাহ করিতেন না। এই প্রসঙ্গে তিনি লিখিয়াছেন "আমি ভাবিলাম, প্রথমে আমার মনের ভাঙারে কতকগুলি ভাব (idea) সঞ্চয় করিয়া লইব। সে সকল ভাব যদি বিশদ হয়, তাহা হইলে তাহারা সভ্য 🖛 মিখা।, जाश मक्यकारल रिश्य मा : পরে যথন যথেষ্ট পরিমাণে ভাব সঞ্জিত হইবে, তথন তলনা করিয়া কোন্টি গ্রহণ করিব, কোন্টি বর্জন করিব, তাহা ভাষা ঘাইবে। করেক বৎদর অস্তের চিন্তার স্বারা চালিত হইরা দেখিতে পাইলাম, যথের বিভা অর্জন করিতে সক্ষম হইয়াছি। তথন অপরের চিস্তার সাহাথ্য বর্জন করিয়াও চিস্তা করিবার পক্তি অর্জন করিয়াছি, এবং স্বকীয় বুদ্ধি ছারা অধীত বিবয়ের বিচার করিবার সামর্থাও লাভ করিয়াছি।" যথেষ্ট চেষ্টা সত্তেও ক্লুসোর শিকা কথনও পূর্ণতা লাভ করিতে পারে নাই। Encyclopedist দিগের সর্বতোমুখী বিভার সহিত তাঁহার ক্রিত বিভার তুলনা হইত ना। Plutarch, Tacitus, Seneca, अस Plato e Virgil তিনি অধায়ন কবিয়াছিলেন সতা, কিন্তু প্ৰাক ও লাটিন ভাষার অভান্ত লেখকদিপের সহিত তাঁহার পরিচয় ছিল না।

চারমেতে বাস করিবার সময় কলো প্রতিদিন স্ব্রোদ্রের প্রেই শ্ব্যাত্যাগ করিয়া অমণে বহিগত হইতেন এবং অমণের সময় প্রকৃতির স্টেকর্ডার উপাসনা করিতেম। তিনি লিখিয়াছেন "আমার উপাসনা কেবল কতকগুলি শক্ষের উচ্চারণেই শেষ হইত না। আনন্দ-দায়িনী প্রকৃতির অস্তার বিকে আমার স্থানর তুলিয়া ধরিয়া রাখিডাম। ব্রের মধ্যে উপাসনা করিতে আমার ভাল লাগিত না, বরের দেওবার ও ব্যরের মধ্যের বাবতীর দ্রব্য ভগবান ও আমার মধ্যে ব্যবধান হাটি করিত। ভগবানের হাটর মধ্যে তাহার খ্যান করিতে আফার ভাল লাগে। * * * বাহার জীবন আমার জীবনের সহিত অভেন্ত বজনে বাধা ছিল, তাহার ও আমার নিজের জন্ত পাপ-বত্রপা-ও-অভাবমূক্ত নিজোব লাভিপূর্ণ জীবন, ধার্মিরেলাচিত মৃত্যু এবং পরলোকে ধার্মিকোচিত গতি ভিন্ন অন্ত কিছুই আমার প্রার্থনীর ছিল না। প্রার্থনার সঙ্গে ভগবানের ধ্যান করিতাম। আমি জানিতাম সর্ব্যমঙ্গলাতা ভগবানের অনুগ্রহের উপবৃক্ত হওরাই তাহার অনুগ্রহ পাইবার প্রেট্ট উপায়—প্রার্থনা নয়।"

১৭৪১ সালে Madame de Warrens এর আত্রর ত্যাপ করিয়া ক্রসো প্রারিদ নগরে গমন করিলেন। তথন তাঁহার সমল ছিল ১৫ লুই (রোপ্য), একথানা নাটকের হস্তলিপি, এবং সঙ্গীতের স্বরলিপির এক নুত্ৰ পদ্ধতি, বাহা হইতে তিনি অৰ্থ ও যণ:, উভয়ই আশা করিরাছিলেন।' পার্রিসে কিছুদিন ইতন্তত: গমনাগমনে অতিবাহিত हरेन। Fontenelle, Marivaux, Condillac & Didenot ও করেকজন সম্রান্ত মহিলার সহিত এই সমর পরিচর হইরাছিল। -Diderata সহিত পরিচর বন্ধুত্বে পরিণত হইয়াছিল। একজন মহিলার অনুরোধে কাসো ভিনিমত্ব করাসী রাষ্ট্রপুতের সেক্রেটারী নিযুক্ত ছইলেন। (১৭৪০) কিন্তু রাষ্ট্রদূতের সহিত কলহ করিরা সে পদ ভাগে করিলেন। এই কলহে ক্লমোর দোষ ছিল না। রাষ্ট্রণত তাহার বেতন না দেওয়ায় তিনি পাারিদে আসিয়া প্রর্থেটের নিকট বিচার-প্রার্থী হন। বছদিন পরে তিনি প্রাণ্য বেতন পাইয়াছিলেন। প্যারিসে ক্রিরা আসিবার পরে ক্সোর করেকথানা নাটক রক্সকে অভিনীত হয়, কিন্তু তাহা হইতে অর্থাগম হয় নাই। ১৭৫৪ সালে তিনি Therese le Vasseur নামী এক হোটেল পরিচারিকার প্রণয়ে আবদ্ধ হন এবং তাহার সহিত খামী খ্রার মত বাস করিতে থাকেন। Theresse অশিক্ষিতা ও দেখিতে কুৎসিত ছিলেন। লিখিতে অথবা পড়িতে জানিতেন না, বৎসরের মাসগুলির নাম কখনও একাদিক্রমে বলিতে পারিতেন না, সংখ্যা গণনা করিতেও শেথেন নাই। Thresse মাতা তাহার সহিত বাস করিত এবং মাতা ও কল্মা উভয়েই ক্লো এবং ভাহার বন্দিগকে অর্থোপার্কনের উপায়বরূপ ৰ্বহার করিত। Theresseএর প্রতি রুসোর বে বিলুমাত্রও ভালবাসা ছিল না, তাহা তিনিই লিপিয়াছেন। তবুও ২৫- বৎসর ভাছার সহিত বাস করিরা অবশেবে ভাছাকে বিবাহ করিয়াছিলেন। Theresse এর গর্ডে রুসোর পাঁচটি সম্ভান হইরাছিল। স্কলগুলিকেই ভিনি মাভহীন শিশুদিগের হাসপাতালে দান করেন। (Foundling Hospital) এই কাল্ড কালের অন্ত কালো তাহার "Confessions এত্বে অনুভাপ প্রকাশ করিরাছেন। খীর সন্তানের প্রতিপালনের দারিত্ব নিজে প্রহণ না করিয়া রাষ্ট্রের উপর অর্পণ করিয়া তিনি বে শ্বন্ধতর অভার করিরাছিলেন, তাহা ডিনি বুরিতে পারিরাছিলেন। অমুভপ্ত ধর্মবৃদ্ধিকে সাজ্বা দিবার জন্ত তিনি লিখিয়াছেন "বীয়

সম্ভানদিগকে উপযুক্তভাবে লালনপালন করিবার আর্থিক সামর্থ্য আমার ছিল না। তাহাদিগকে স্থানিকত করিয়া ভোলা আমার সাধাতীত হিল। ভাবিয়াহিলাম উপযুক্ত শিক্ষার অভাবে আমার সম্ভানের। সাধু উপায়ে ভক্তজীবন্যাপন করিতে পারিবে না। Theresse এর মাতা ও তাহার আতা ভগিনীদিশের সংসর্গও কাহারও পক্ষে মকলকর ছইতে পারে না। অথচ আমার সন্তানগণ গৃহে অভিপালিভ হইলে, ভাহাদের সংসর্গ অপ্রিহার্য হইবে। এরপ অবস্থায় সরকারী শিশু-আশ্রমে এতিপালিত হইরা তাহারা যদি কুবক অথবা শিলীর ব্যবসাথে সাধুভাবে জাবিকা উপার্জ্জনে সক্ষম হল, তাহাই শ্রেয়: বলিয়া মনে করিয়াছিলাম। Platoর কলিত Republica জন্মের পরেই শিশুনিগকে পিতামাতার নিকট হইতে স্থানাম্ভরিত করিয়া রাষ্ট্রের তত্মাবধানে তাহাদের শিক্ষার ব্যবস্থা আছে। কোনও শিশুরই সেধানে শ্রীর পিতামাতার সন্ধান পাইবার সম্ভাবনা নাই। মেটোর আদর্শে রাষ্ট্রের নাগরিকের কর্ত্তব্য আমি পালন ক্রিয়াছি।" তাঁহার বন্ধবান্ধবদিগের न(श কেহ **(**\$\$ তাহার সস্তাননিগের প্রতিপালনের ক্রহণ করিতে ভার সম্মত ছিলেন, কিন্তু তাহাদের প্রস্তাব ক্রমো স্বীকার করিলে, তাঁহার সম্ভানদিগের জীবন অধিকতর স্থী হইত বলিয়া তিনি বিশ্বাস করিতে পারেন নাই। অন্ত কর্তৃক প্রতিপালিত হইরা তাহারা আপনাদের পিতামাতাকে যুণা করিতে শিধিত, তাহাতে সম্পেহ নাই।

৩৭ বৎসর বর্ষেও ক্লোর জীবনে তাহার উচ্ছল ভবিশ্বতের কোনও চিহ্নই লক্ষিত হয় নাই। তখনও তিনি তাহার জীবনের লক্ষ্যের সন্ধান পান নাই। উদ্দেশুহীন ভাবে ঘুরিয়া বেড়াইতেছিলেন। তার পরে হঠাৎ একদিন অচিন্তিত ভাবে তাহার জীবনের গতি কিরিয়া গেল, তিনি তাঁহার অন্তর্নিহিত শক্তির সন্ধান পাইলেন। ১৭৪৯ সালে একদিন ক্ষাে তাহার বন্ধু Diderota দলে দেখা করিতে বাইতেছিলেন। Diderot তথ্ন পারিদ হইতে হয় মাইল দুরে এক কারাগারে আবদ ছিলেন। পদত্রজে পথ চলিবার স্বমর রূসো একথানা সাহিত্যিক পত্রিকার পাতা উণ্টাইতেছিলেন। হঠাৎ ওাহার দৃষ্টি পড়িল সেই পত্রিকার মৃত্রিত একটি বিজ্ঞাপনের উপর। Academy of Djion "বিজ্ঞান ও কলার উন্নতি দারা মাসুবের নৈতিক উন্নতি অথবা অবনতি इडेग्राह्ण **এ**डे मदस्य ध्यवस्त्र **अञ्च এक्টा পু**त्रकात स्वावश कतिवाहित्वम । এই श्वारणा शार्रमाज क्रामात्र माम ध्वरण च्यान्माणन चात्रक रहेण। শত শত ভাব তাঁহার মনের মধ্যে কলরব করিরা উঠিল। ভাবের উত্তেজনার তাহার স্থাসরোধের উপক্রম হইল। এক বৃক্ষতলে উপবেশন করিরা তিনি অর্থ্ডবন্টা প্রগাচ চিন্তার অতিবাহিত করিলেন। মনে হুইল তিনি অন্ত কপতের অধিবাসী, অন্ত সামুব হুইরা পিরাছেন। Academys अस्त्रत छेउन्ने ए क्यन छोहात मन् छेनिछ स्टेनाहिल, ভাহা নহে। অন্ত বহু সভ্যও ভাহার মনে একাশিত হইরাছিল। সেই মুদ্রুর্তে রুলো আপ্নার বরুপের পরিচর প্রাপ্ত হইলেন। তথ্য বে সভ্যের

ান তিনি পাইরাহিলেন, তাঁহার ভবিভতের সমত রচনা তাহার লোকে উত্তাসিত হইরাহিল।

ক্রাসী সমাজে তথম অশান্তির অগ্নি অল্লে অল্লে ধ্যায়িত হইতেছিল।

নানর্জিত রাজপন্তির অধীনে নৈতিক দিখিলতা ক্রমশ: বিভার লাভ
করিডেছিল। মানব-জীবনের মহন্দে সন্দেহ সর্বল্রেণীর মধ্যে প্রসারিত
হইতেছিল। সাইত্রিশ বৎসর যাবত ক্রমো ভববুরের জীবন যাপন
করিরাছিলেন। সমাজের বিধি ও নিবেধ গ্রাহ্ম করেন নাই। রাজপন্তির
ব্যেক্তাচার ও সামাজিক ত্রনীতি দেখিরা তাহার মন মাঝে
মাবে বিচলিত হইত, বিরক্তি দমন করিয়া রাখিতেন। কিন্ত
দমিত বিরক্তি ও বিল্লোহী ভাব মনে সঞ্চিত হইতেছিল।
আলি তাহা বিক্রেরিত হইরা পড়িল। সমাজের ক্রমবর্জমান
মুনীতি ও অনাচার তাহার লেখনী-মুখে লোহিত বর্ণে রঞ্জিত হইয়া
উদ্বাতিত হইল।

ক্লো Academy of Dijon এর প্রস্তাবিত বিবরে প্রবন্ধ লিখিয়া পাঠাইলেন। তাঁহার এই প্রথম রচনা পুরস্কারের যোগ্য বলিয়া বিবেচিত হইবে, ইহা তিনি আশা করেন নাই। কিন্তু যাহা অপ্রত্যাশিত ছিল, তাহাই সংঘটিত হইল। তাহার প্রবন্ধই পরীক্ষণণকত্তি পুরসারের জন্ত নির্বাচিত হইল। হঠাৎ তাহার যশ: বিতীর্ণ হইয়া পড়িল। বিপ্লৰস্টির কোনও উদ্দেশ্য তাহার না থাকিলেও, পাঠকেরা তাঁহার অবন্ধের মধ্যে বিপ্লবের ইঙ্গিত দেখিতে পাইল। প্রবন্ধে তিনি থমাণ করিতে চেষ্টা করিরাছিলেন, যে সাহিত্য কলাও বিজ্ঞান স্থনীতির অধান শক্ত। অনাবশুক জব্যের অভাব-বোধের সৃষ্টি করিয়া তাহার। মানবের স্বাধীনতা অপহরণ করে এবং তাহাকে দাসে পরিণত করে। সভাতা হইতে পরিচছদের প্রয়োজন অমুভূত হইরাছে; আমেরিকায় অসভাদিগের মত বাহারা উলঙ্গ থাকে, ভাহাদিপকে দাসবশ্থলৈ আবদ্ধ क्त्रा मध्यभन्न इत्र ना। विकास ७ स्वीिं भन्नान्त्र-विद्यांथी। नीह ७ শ্বণিত ৰূল হইতে যাবতীয় বিজ্ঞান উত্ত হইয়াছে। কৃসংসার-প্রস্ত ক্লিড জ্যোতিৰ হইতে জ্যোতিবশাল্পের (astronomy) ক্রম : অর্থনোভ ইইতে জামিতির উৎপত্তি; বুখা কৌতুহল প্রাকৃতিক বিজ্ঞানের জনক; নামুৰের অভিযান হইতে চরিত্র-নীতির উত্তব: উচ্চাকাজ্ঞা বাগ্মিচার ব্রহতি। শিকা ও মূজায়ত্র বারা মামুবের কোনও উপকারই হর ীই। অসভা মানুষ হইতে সভা মানুষের ব্যাবর্ত্তক সমস্ত গুণ ও আচারই ৰসকলের আক্তর। শৈশবে পঠিত Plutarch's Lines কুলোর উপর বিশেব প্রভাব বিস্তার করিরাছিল। এবেনস অপেকা স্পার্টার জীবনবাপন ৰণালী তাহার অধিকতর মনোমত ছিল। Lycurgus তাহার ৰিশেব শ্রদ্ধার পাত্র ছিলেন। বুদ্ধে শ্ররলাভ ক্রসো পৌরবের বর্গু বলিরা াদে করিতেন। কিন্তু ইরোরোপীরদিপের সহিত বুদ্ধে পরান্তিত নকাদিনের প্রতি তাহার প্রজার অভাব ছিল না। মানবের স্থ-ও-াভিবিধানে সভ্যতার কোনও কুভিত্ব তিনি দেখিতে পান নাই। ভাতার উন্নতিতে তিনি মানবলাতির অবন্তিই দেখিতে পাইরাহিলেন, ^{এবং} ভাষার সর্বাধাংসী সংস্পর্ণ হইতে ব্যিও ঠাহার অব্যভূমি জেনিভা ও

আপনাকে রক্ষা করিতে চাহিরাছিলেই, তথাপি তাঁহার প্রবন্ধ হইডে কোনও প্রকলের প্রত্যাশা তিনি করেন নাই।

হতে লেখনী ধারণ করিয়া কুসো থামিতে পারিলেন না। এথব অবন্দের সকলতার তাঁহার চিন্তার প্রোত প্রবলতর বেগে প্রবাহিত হইতে লাগিল এবং যে সমস্ত চিন্তা মনে উদিত হইতে লাগিল, বিস্তারিত করিয়া তাহা বর্ণনা করিবার জঞ্চ তিনি ব্যাকুল হইরা পড়িলেন। এই সময়ে ভাহার মূত্রাশরের পীড়া প্রবল হইরা উঠিল। চিকিৎসকেরা ৰলিলেন, ছর মাসের অধিক তাঁহার বাঁচিবার সম্ভাবনা নাই। এই জন্তই যাহা বলিবার আছে, তাহা বলিরা শেষ করিবার জক্ত তিনি চঞ্চল হট্যা উঠিলেন। যে সমস্ত দার্শনিকের মত তিনি শ্রন্ধার সহিত পাঠ করিয়াছিলেন, তাহাদিগের শিক্ষা ভ্রান্তি ও নির্ক, ছিতা ভিন্ন আর কিছুই এখন দেখিতে পাইলেন না। সমাজের সর্বাঙ্গে বর্তমান অভ্যাচার ও ছুৰ্গতি ভাঁহাকে পাঁড়া দিতে লাগিল। ভাঁহার মনে হইল নিজের বিখাদের সহিত যদি ভাঁহার জীবনের সামঞ্জ না খাকে, তাহা হইলে কেহই তাঁহার কথায় কর্ণপাত করিবে না। এই বিখাসে তিনি বকীয় জীবনযাপন-প্রণালী পরিবর্ত্তিত করিয়া ফেলিলেন। সাদা মোজা ও সুন্ম বন্ধ বর্জন করিলেন, যড়ি বিক্রম করিলেন, মোটা কাপড়ের সাধারণ স্থট ব্যবহার করিতে আরম্ভ করিলেন। ইহার পূর্ব্বেতিনি এক আফিসে ধনরক্ষকের পদে নিযুক্ত হইয়াছিলেন। সে কাজ ছাড়িয়া দিয়া বরলিপি নকল করিয়া জীবিকা উপার্জ্জন করিতে আরম্ভ করিলেন। তাহার অন্তরে যে বিপ্লব সংঘটিত হইয়াছিল, এ সকল তাহার বাঞ্ছিক প্রকাশ। শতবৰ্ণ পৰে ভাছাৰই শিক্ষা ও দুপ্ৰান্তে অমুখ্যাণিত হইবা কাউণ্ট টলাইব সর্কবিধ বিলাস বর্জন করিয়াছিলেন। রূসোর বভাবেও সম্পূর্ণ পরিবর্ত্তন লক্ষিত হইল। ভয় ও লজ্জার সম্বোচ তিরোহিত হইয়া গেল। প্রচলিত আচার ও সংস্থারের বশাভূত লোকের প্লেষ ও বাস অবজাভরে অগ্রাহ্য করিয়া তিনি অসম সাহসে সমাজের ত্রনীতি ও কুসংস্কার্থের প্রতি কশাখাত করিতে উচ্চত হইলেন। তুই বৎসর পূর্বেও দশ বৎসর পরেও যিনি মনের ভাবপ্রকাশের উপযুক্ত ভাষা বুঁলিয়া পাইতেন না, ভাহার রেবোক্তি সমগ্র পারিসের মূপে মুখে ধ্বনিত হইতে লাগিল। करन व्यानत्कत्र मान छैशित बाकि माजन विषयात्र मृष्टि एहेन।

১৭৫৩ সালে রুদোর "Discourse on the origin of Inequality" প্রকাশিত হয়। এই গ্রন্থে তিনি পূর্ব্বগ্রন্থে প্রকাশিত মত বিত্তভাবে ব্যাখ্যা করিয়াছিলেন এবং "ব্যক্তিগত সম্পত্তি" (Property) কে সামাজিক বৈব্যের কারণ বলিয়া নির্দ্ধেণ করিয়া, রাষ্ট্রকর্তৃ ক এই অসাম্য—নিয়্রপ্রের প্রয়োজনীয়তা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। ধনী সম্প্রদার কর্ত্বক রাষ্ট্র-ক্ষরতা অক্তায়পূর্ব্বক অধিকৃত হইলে বে রাষ্ট্রের অবনতি হয় ও প্রজাসাধায়ণ দাসে পরিণত হয়, তিনি তাহা ও প্রমাণ করিছে চেষ্টা করিয়াছিলেন। অষ্ট্রাদশ শতকের অনেক পূর্ব্বে এই দার্শনিক মত প্রকাশ করিয়াছিলেন, কিন্তু তাহাদের কেহই বকীয় মতকে সাধায়ণ-বুদ্বিপ্রাঞ্চ রূপ দান করিয়া রুস্নোর মত দৃচভাবে ব্যক্ত করেন মাই। এই সময়ে কোনো কার্যাই ক্লো অর্জুসমাপ্ত করিয়া হেলিয়া রুস্নিক্ষেত্র

লা। চিন্তা ভাহার নিকট ক্রীড়া অথবা বিলাসের উপকরণ মাত্র ছিল ৰা। যাহা ভাল বলিয়া বুৰিতেন, একাত্তিক আগ্ৰহের সহিত ভাহা এহণ করিতেন। তিনি লিখিয়াছিলেন, মামুব বভাবত: নিস্পাপ; ভাষার স্ট প্রতিষ্ঠানই তাহাকে কলুবিত করে। এই মত পুটুধর্মের "बानि शाश" (Original Sin) ও "চার্চের মাধ্যমে মুক্তি"বাদের (Salvation Through the Church) বিরোধী। তৎকালীন অনেক দার্শনিক "প্রাকৃতিক অবস্থা"র কথা বলিরাছিলেন। রুগো এই ব্দবস্থার বিস্তারিত বর্ণনা করিরাছিলেন। এই অবস্থা যে কোথাও কর্মান নাই, কথনও বর্ত্তমান ছিল না, এবং ভবিক্ততেও কখনো ইছার উদ্ভব হইবে না, তাহা তিনি স্বীকার করিয়াছেন। কিন্তু মাসুবের বর্তমান অবস্থার সমাক জানের অস্ত এইরূপ এক অবস্থার করনা করা পাবগুক। "প্ৰাকৃতিক ব্যবহারে"র (Natural Law) ধারণা "প্রাকৃতিক অবস্থার সমাক ধারণা ব্যতীত উৎপন্ন হইতে পারে না। মাসুবের কডটুকু প্রকৃতি হইতে প্রাপ্ত, যতকণ সে সম্বন্ধে সুস্পষ্ট ধারণা ৰা জন্মে, ততক্ষণ তাহার জন্ত আদিতে বিহিত, অথবা তাহার সেই **অবস্থার সম্পূর্ণ উপবোগী নিরম কি. তাহা নির্ণয় করা অদন্তব। এই** নিম্নের যাহারা অধীন, এই অধীনতা সম্বন্ধে তাহাদের সচেতন হওয়া শভীব প্রয়োজনীয়। এই চেতনা চেষ্টাপ্রস্তুত না হইয়া বাভাবিক হওয়া আৰম্ভক। ৰামুৰে ৰামুৰে যে খাভাবিক ভেদ আছে, তাহাতে কুসোর আপত্তি নাই। বরুস, স্বাহ্য, বুদ্ধি প্রভৃতি বিষরে ভেদ অপরিহার্য। কিন্তু সমাজকর্ত্তক অনুমোদিত বিশেব অধিকার সমর্থনযোগ্য নহে।

"ব্যক্তিগত সম্পত্তি"ই সামাজিক বৈবন্যের মূল। প্রথমে যে লোক একখণ্ড ক্ষমিতে বেড়া দিয়া বলিরাছিল "এই ক্ষমি আমার," এবং ভাহার কথা সরলভাবে বিশাস করিয়া তাহার প্রতিবাসীদিগকে তাহার শামিক বীকার করিতে দেখিয়াছিল—সেই লোকই সমাজের (Civil Society) প্রতিষ্ঠাতা। তাহার পরে ধাতুর ব্যবহার ও কুবিকার্থার উদ্ভাবন থারা এক অনিষ্টকর বিমবের স্পষ্ট হইয়াছিল। শত্ত মানুষের ছর্জাগ্যের প্রতীক, ইয়োরোপে সর্বাপেলা অধিক শত্ত ও লোহ উৎপর হয়। এই জন্ত ইয়োরোপের ছ: ধক্ট অধিক। এই অনিষ্টের প্রতীকার করিতে হইলে সভ্যতা বর্জ্জন করিতে হইবে। কেননা সভ্যতাবর্জ্জিত খাভাবিক মানুষ গোহহীন; অসভ্য মানুষের যথন উদর পূর্ণ থাকে, তথন সমগ্র প্রকৃতি ও তাহার মধ্যে শান্তি বিরাজ করে; তথন সে অলাতীয় সকলেরই বজু।

ন্তন গ্রন্থের একথঞ্জ কলো ভলটেরারকে পাঠাইরা দিরাছিলেন। গ্রন্থ পাঠ করিয়া ভলটেরার লিথিরাছিলেন, "মানবলাতির বিক্লছে লিথিত আপনার গ্রন্থ প্রাপ্ত হইরাছি। তজ্ঞপ্ত বস্তবাদ দিতেছি। আমাদিপের সকলকে মূর্থে পরিপত করিবার উদ্দেশ্তে এয়ণ চতুরতা পূর্কে কথনও দেখা বার নাই। আপনার গ্রন্থ পড়িরা চারি হাত পারে হাটবার ইচ্ছা হয়। কিন্ত ৬০ বৎসরের অধিককাল পূর্বে যে অভ্যাস ত্যাগ করিয়াছি, ছর্ভাগ্যক্রমে এখন তাহাতে কিরিয়া বাওয়া অসভব। Canadaর অসভ্যাদিগের অস্বন্ধানে যাত্রা করাও

আমার পক্ষে দন্তব নর। কেননা যে সমস্ত পীড়ার আমি ভূগিতেছি, তাহার জ্বস্ত একজন ইরোরোপীর চিকিৎসক আমার আবশুক ছিতীর কারণ এই বে ক্যানাডার এখন যুদ্ধ চলিতেছে, এবং আমাদের দৃষ্টাস্তে সেথানকার অসভ্যগণও আমাদের মতই ছুর্নীতি-পরারণ হইর পড়িয়াছে।" ইহা হইতেই ভলটেয়ার ও ক্সোর কলহের স্ত্রপাত।

"Discourse on Inequality" কুসো জেনিভার নগরপিত সিগের (City Fathers) নামে উৎসর্গ করিয়াছিলেন। কিন্ত এই প্রস্থপাঠে তাঁহার। সন্তুষ্ট হন নাই। সাধারণ নাগরিক্দিগের সনা বলিয়া গণিত হওয়া তাঁহাদের বাঞ্নীয় মনে হয় নাই। কিং ক্লোর বশ: বিস্তৃত হইতে দেখিয়া তাহারো তাহাকে জেনিভার নিমন্ত্রণ করিলেন। ক্লো নিমন্ত্রণ গ্রহণ করিলেন এবং ক্যালভিনী। সম্প্রদায়ের লোক ভিন্ন কেহ জেনিভার নাগরিক হইতে পারিত ন विन द्यामान का। बिनक धर्म वर्डक क्रिया व्यापिका धर्म পুনরায় দীক্ষিত হইলেন। ইহার পূর্বে হইতেই তিনি আপুনাথ জেনিভার নাগরিক বলিয়া অভিহিত করিয়া আসিতেছিলেন জেনিভার বাস করিবার ইচ্ছাও তাঁহার মনে উত্থিত হুইরাছিল ৷ কিং জেনিভার শাসনকর্তাদের তাহাম গ্রন্থের প্রতি **বিরাগ দেখিয়া** হে ইচ্ছা ত্যাগ করিলেন। জেনিভায় বাস না করিবার আরও এক কারণ ছিল। ভলটেয়ার তথন জেনিভার নিকটবর্তী এক পলীথে বাস করিতেছিলেন। জেনিভায় কোনও নাটক অভিনীত হইতে পারিং না। ভলটিয়ার এই বাধা দর করিবার চেষ্টা করিতেছিলেন তাঁহার ইচ্ছা ছিল জেনিভায় তাঁহার নাটকের অভিনয় হয়। রুদে নাট্যাভিনরের বিরুদ্ধে লেখনী চালনা করিলেন। অসভোরা নাটকে: অভিনয় করে না। প্লেটো নাট্যাভিনয়ের অনুমোদন করেন নাই বাহারা অভিনয় করে ক্যাথলিক পুরোহিতগণ ভাহাদের বিবাহে অথং অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়ার পৌরহিত্য করেন না। Bossnet নাটককে ইন্সি লালসার পাঠশালা (School of Concupiscence) বলিয়াছেন ইত্যাদি যুক্তির প্রয়োগ করিয়া রূসো বিলাসবর্জ্জিত কঠোর জীবনে পক্ষে ভর্কযুদ্ধে অবতীর্ণ হইলেন।

১৭৫৫ সালে ভাষণ ভূষিকস্পে লিসবনে বহুসংখ্যক লোক মৃত্যুম্' পতিত হয়। এই সংবাদে বিচলিত হইরা ভলটেয়ার এক কবিতা করণাময় স্পষ্টকর্তার অতিথে সন্দেহ প্রকাশ করেন। এই কবিত পাঠ করিরা রুসো বিরক্ত হইয়া লিখিলেন—"হণ:, পৌরুব ও সম্পদে গর্মে অভিভূত ব্যক্তিকে মানবজীবনের হু:থকটের বিরুদ্ধে স্থান্তিক তী: বচন প্রয়োগ করিতে এবং জাগতিক যাবতীর পদার্থকে অমহলম্মানিরা ঘোষণা করিতে দেখিয়া, তাহাকে স্বহানে প্রশ্পপ্রতিক্তিত, ধ্লগতের প্রত্যেক পদার্থই যে উৎকৃত্ত, তাহা প্রমাণ করিবার অর্থহীইছা আমার মনে উদিত হইল। ভলটেরার দৃশুতঃ ইবরে বিশাংকরিলেও, প্রকৃতপক্ষে সম্নতান ভিন্ন কাহারও অতিথে বিশাস করে করিলেও, প্রকৃতপক্ষ সম্নতান ভিন্ন কাহারও অতিথে বিশাস করে না। বে স্বর্গর তিনি বিশাসের ভাণ করেন, তিনি এক ইর্ণ্যাধিং প্রকৃষ মাত্র, অনিপ্রকর কার্য্য ভিন্ন করে করিলেও, প্রকৃতপক্ষ কর্য্য ভিন্ন করে করেন, তিনি এক ইর্ণ্যাধিং

চার এই মত স্পষ্টত:ই যুক্তিহীন। সর্কবিধ সৌভাগ্যের অধিকারী সুখের ক্রোড়ে শারিত ব্যক্তির পক্ষে তিনি নিজে বে ছঃখকট্টের বাত ভোগ করেন নাই, তাহার ভরাবহ নিকরণ চিত্র অকিত ররা, অপরকে নিরাশার গবেরে নিকেপ করিবার চেষ্টা নিভাস্তই ।ক্তিকর। মানবজীবনের ছ:খকষ্টের বিরুদ্ধে অভিযোগের অধিকার হার অপেকা আমার অধিক থাকিলেও, আমি নিরপেক বিচার া প্রমাণ করিরা দিলাম যে মাসুবের চুঃধ কটের জভ ঈখর ्याज्ञ पात्री नर्दन। यानवीत वृक्ति निष्ठवत्र (Faculties) াব্যবহারই তাহার জন্ত দায়ী। পদার্থের বন্ধপের সেজন্ত কোনও ুঁশারিত্বই নাই।" রুসো ভলটেয়ারের কবিতায় কঠোর সমালোচনা 审 রিয়া তাঁহাকে এক পত্র লিখিয়াছিলেন। তাহাতে লিখিয়াছিলেন শ্ভমিকম্প লইয়া এত হৈ চৈ করিবার কোনও সমত কারণ নাই। ামধ্যে মধ্যে কতকগুলি লোক যে মৃত্যুমুখে পতিত হইবে, ইহাতে অমঙ্গলের কিছুই নাই। লিসবনের লোকেরা যদি সপ্ততল গৃহ নির্মাণ ুঁলা করিয়া বিচ্ছিন্ন ভাবে অরণ্যের মধ্যে বাস করিত, তাহা হইলে ভাহাদের বিপদ ঘটত না। প্রকৃতির বিরোধী আচরণ দারাই তাহারা বিপদ আহ্বান করিয়াছিল।" ভলটেয়ার রুসোর পত্তের উত্তরে কোনও **শিত্র ভাহাকে লেখেন নাই। উত্তর দিয়াছিলেন** ভাহার ('a**n**clude সামক প্রন্থে। এই প্রন্থে তাহার ভীষণতম অল্ল-"ভলটেয়ারের প্লেন" (The mockery of Voltairs)—ক্ষোর বিকত্বে প্রয়োগ করিয়া-ছিলেন।

এইরূপে ভলটেয়ার ও রুসোর মধ্যে যে কলহের স্ত্রপাত হইল, তৎকালের সমস্ত দার্শনিকই তাহাতে একতর পক্ষ গ্রহণ করিয়াছিলেন। ভলটেয়ার রুসোকে "মনিষ্টকারী উন্নাদ" বলিতেন। রুসো ভলটেয়ারকে "অধর্ম্মের ভেরী, উৎকৃষ্ট প্রতিভার অধিকারী, কিন্তু নীচ আস্বা" প্রভৃতি অভিধানে ভূবিত করিয়ছিলেন। ১৭০০ সালে ভিনি ভলটেরারকে নিধিরাছিলেন "আমি বস্তুতঃ আপনাকে মুগা করি, কেননা আমার মুগাই আপনি চাহিরাছিলেন। যদি আপনি চাহিতেন, আপনাকে ভালবাসিতেও পারিতাম। এক সময়ে আপনার সম্বন্ধে বে সমস্ত ভাবে আমার অন্তর পূর্ব ছিল, তাহাদের মধ্যে কেবল আপনার প্রতিভার প্রতি আমার এবিং আপনার রচনার প্রতি আমার্থিই অবশিষ্ট আছে। আপনার প্রতিভা ব্যতীত অন্ত কিছুর প্রতি যদি আমার প্রদ্ধানা বাবেন, তাহা হইলে তাহাতে আমার দোব নাই।"

Discourse on Inequality গ্রন্থে কুলো ক্রমবর্জমান বর্বেচ্ছাচারের প্রতিরোধের উদ্দেশ্যে উত্থাপিত বিদ্যোহকে "বিধিসমত কার্যা" (Judicial action) विनया त्यावना कतियाहितन। এভाলन मछ-প্রচারে বিপদ তো ছিলই। অধিকত্ত রূসো সাধারণের উপর প্রভুত প্রভাব-বিস্তারে সমর্থ বাকপটভার অধিকারী ছিলেন। ভিনি মুক্ত বাতাসে বক্তৃতার উপযোগী এব রচনা-শৈলী সৃষ্টি করিছাছিলেন। তাহা পাঠে জনসাধারণ উত্তেজিত হইরা উঠিত। ১৭৫৮ সালে তিনি D' Alember কে যে ২৮৩ পৃষ্ঠাৰ্যাপী পত্ৰ লেখেন, ভাহাতে এই রচনা-শৈলীর পরিচয় প্রাপ্ত হওয়া যায়। এই পত্রে উন্মাদিনী বাগ্মিতার স্রোত প্ৰবাহিত ছিল। পাঠ করিয়া সাধারণে বিশেষ ভাবে উত্তেজিত ছইয়া উঠিয়াছিল। বিখ্যাত পণ্ডিত, বহু বিষৎপরিবদের সভ্য, I)' Alembert তাহার সহিত তর্ক্যুদ্ধে অগ্রসর হইতে সাহসী হন নাই. ।তিনি তাহাকে লিখিয়াছিলেন "আপনার লেখনীর মত লেখনীর বিরুদ্ধে বৃদ্ধ করা বিপজ্জনক। যে অবজ্ঞা আপনি সাধারণের প্রতি প্রদর্শন করেন, ভাছা ঘারাই কিরূপে ভাহাদিগকে সম্ভষ্ট করিতে হয়, তাহা আপনিই জানেন।" এই পত্রে তিনি পুখারের সঙ্গে রুসোর তুলনা করিরাছিলেন।

(과지비:)

বৰ্ষার উৎসবে

শ্রীপ্রভাতকিরণ বস্থ

কাঁঠাল পাকাবে ব'লে জ্যৈষ্ঠ যবে আনিল গরম,
মনে হ'ল স'রে থাকি, কোরাগুলি মিঠে ও নরম
চেথে চেথে খাওয়া যাবে, গরম হোক্ সে ভালো ক'রে!
'দেখিনি এহেন গ্রীম্ম' মনে হয় প্রত্যেক বছরে,
এ আর এমন কিবা । তারপরে 'পরিত্রাহি' ভাক্!
থাক্ থাক্, ভগবান্ কাঁঠাল হবে না পরিপাক,
শাগলের নেশা বটে! কাঁঠালের ছটি মুদ্রা দাম!
টাকায় ভিনটি আম! ছ আনায় কুড়ি কালো জাম!
প্রাণ যায়, বেমে ঘেমে হয়ে পড়ে থাড়!
মেঘের প্রতী নিম্নে অক্সাৎ নামিল আবাঢ়।
তবলাপটিতে জল, জল জমে ঠন্ঠনে ভ'রে;

তবলাপটিতে জন, জন জমে ঠন্ঠনে ভ'রে; বন্ধ ট্রামে ব'সে ব'সে বর্ধার কবিতা লিখি জোরে। গকেটে ফাউণ্টেন্ পেন, আর ছিল লাইব্রেরীর বই তাতেই কবিতা লিখি, তারা আর দেখে নের কই? ছাতা ছিলনাকো কাছে, ঘরে কবে ফিরিব কে জানে !
ফুটপাত থেকে জল ঢোকে গিরে দোকানে দোকানে ।
আমি ত কবিতা লিখি—ভালোবাসি প্রবল বর্ষণ,
মাঝ পথে নয় বন্ধু, অধিকার ক'রে গৃহ কোণ ।
সমস্ত ছপুর ধ'রে, আর ধ'রে সমস্ত রাত
ঝয় ঝয় ঝয় ধারে আকাশের ঝয়ক প্রাণাত ।
কবে ভালো লেগেছিল, আজো যে তেমনি ভালো লাগে,
মুড়ি তেলেভাজা আর খিচুড়িতে ভালোবাসা জাগে ।
বরষারে ভালোবাসি, এঁকে যেতে পারি তার ছবি,
এ পোড়া বাংলা দেশে তাই লোকে বলেছিল 'কবি'।
নগণ্য কবির মাঝে পেরেছিয় একটু ঠাই!
পথের কাদার ভয় কুকুরের ভয় বায় নাই।
আমার এ কাব্যথানি অঞ্চ কবি পড়ে দিক তবে,

বর্ষণের আশক্ষার গেলাম না বর্ষার উৎসবে॥



(প্রাম্বৃত্তি)

দেবু চারের কাপ হাতে শইরা বার ছই চুমুক দিয়াই অক্তমনস্ক হইয়া গেল।

সে গিরীশদের কথা ভাবিতেছিল।—ইতিহাসের চক্রান্তের চড়কে পিঠে বাণ কুইড়িয়া পুরুষায়ক্রমে মহানন্দে বুরপাক থাইতেছে—আর ভাবিতেছে পাকে পাকে উঠিয়া আর্গে চলিয়াছে। হিন্দুর শিবঠাকুরের সিংহাসন গিয়াছে দেই কবে, মুসলমানের পীরের মসনদও গিয়াছে, সিংহাসন বল মনসদ বল—দথল করিয়া বসিয়াছে ইংরাজ, তব্ও হিন্দু মুসলমানের আক্রোশ আর মিটিল না। ছই বিড়ালের ঝগড়ার রুটির গোছা লইয়া বাঁদর গাছে উঠিয়া পরমানন্দে রসাভাদন করিতেছে—বিড়াল ছইটার সেদিকে দৃকপাত নাই—ভাহারা লেজ এবং রেঁায়া ফুলাইয়া নথ বাহির করিয়া পরস্পরের বৃক্ চিরিয়া হৎপিও বাহির করিবার জন্ম মুছে মাতিয়া রহিয়াছে।

সে ব্ঝিতে পারে না—কেন এই সহজ সত্যটা তাহাদের বোধগম্য হয় না। অবশ্ব সে নিজেও একদিন ব্ঝিতে পারিত না। একদিন বিশুভাইরের সঙ্গে এই লইয়া তাহার বিরোধও হইয়াছিল। সে কথা মনে পড়িলে আজও তাহার তু:খ হয়। সজ্জাও হয়। মনে মনে তাহার জেলবাসটাকে সে ভাগ্য বলিয়া মানে। ভাগ্যে তাহার জেল যাওয়ার অংযোগ হইয়াছিল!

স্থাৰ কান সারিরা বাহির হইরা আসিল। তোরালে দিরা মাধার চুল মুছিতে মুছিতে জিজ্ঞাসা করিল—কি হ'ল ?

দেব্ ব্যঙ্গ করিয়া বলিল—সনাতন ভৌতিক কাও। ভূতে সব উপ্টে দিলে।

-- मारन १

—মানে আবার কি? এ দেশে সর্বের মধ্যে ভূত বাসা বেঁধে থাকে। হাটের ব্যাপারেও হিন্দু মুসলমানের দালা বাসা বেঁধে রয়েছে। স্বৰ্ণ যত বিস্মিত হইল তাহার চেয়ে অনেক বেলী উদ্ভপ্ত হইয়া উঠিল। স্থির দৃষ্টিতে দেব্র মুখের দিকে চাহিয়া— দেবুকেই কঠোর স্বরে বলিল—হেঁয়ালী রাধ বাপু। কি হয়েছে বল!

— মুসলমানেরা দাবী করেছে—হাটে জরতারার আশ্রমের জন্তে বে তোলা ওঠে—তার ভাগ পীরের দরগার জন্তে দিতে হবে।

—ভারপর ?

—তারপর স্থার কি? হিন্দুরা বলছে—তার চেরে স্থানাদের জমিদারের সঙ্গে মিটমাট করাই তাল।

—মিটমাট করাই ভাল! এই কৰা বললে? কে?

--- গিরীশ।

খৰ্প জৰু হইয়া গেল। কোন্তে জৰু হইয়া গেল। দেৰু একটু হাসিল—বিলি—কথা বল না যে!

वर्ष विन-अपन्त-

—ওদের কি ?

কথা বোধ হয় খুঁ জিয়া না পাইরাই স্থাবিলন-ওদের ম'রে যাওয়া উচিত। ম'রে বাক, সব ম'রে বাক।

তাহার মুখচোথ কোভে লাল হইরা উঠিরাছে। দেব্র চেরে উত্তেজনা তাহার অনেকগুণে বেনী। স্বাভাবিক ভাবেই বেনী। ধর্মাই হোক—রাজনাতিই হোক—সংসারই হোক—মেয়েরা যত আবেগের সঙ্গে আঁকড়াইরা ধরিতে পারে, নিজেদের কঠিন পাকে জড়াইরা দিতে পারে— পুরুষে ততথানি গাঢ় আবেগের সঙ্গে জড়াইরা ধরিতে পারে— না। তাহার উপর স্বর্ণ স্বামী পাইরাছে—সংসার পাইরাছে; কিন্তু আন্তন্ত সন্তান কোলে পান্ন নাই। রাজনীতির পথে পা দিয়া সে দেব্র অপেকাও প্রবল বেগে ছুটিতে চার। সে দিক দিরা—পঞ্জামের মান্তবের সঙ্গে অনেকগুণে বেনী পৃথক—বেনী স্বতর হইরা উঠিরাছে। নারীপ্রকৃতির স্বভাবধর্মাই বোধ করি এমনি, জীবনে বাহা আঁকড়াইরা

ৱবে—তাহাকে পরিত্যাগ করা তাহার পক্ষে জীবন ারিত্যাগ করা অপেক্ষাও কঠিন, কিন্তু কোনজ্রমে পরিত্যাগ করিলে আর সে সেদিকে ফিরিয়াও তাকায় না, য় নৃতন খাতে সে প্রবেশ করে—দেই পথেই ছুটিয়া চলে প্রবলতর গতিতে, যে নৃতন আশ্রয়কে পায়—ভাহাকেই ৰ্ড়াইছা ধরে সবলতর আবেগে। দেখুড়িয়ার তিনক্ড়ি াওগ-লাভিতে সদ্গোপ-নিজে হাতে সে চাষ করিত, जोकांत्र कका (म। सभ वरमत वस्तम विश्वा करेग्राकिन. ভারবেলা হইতে উঠিয়া হিন্দুসমাব্দের আচার-আচরণ भानन कतिया চলिত, हिम्लू नमारकत व्यक्तियान গ্রাকডাইয়া ধরিয়া বাপের সংসারে থান কাপড় পরিয়া, গাধার চুল ছোট করিয়া ছাটিয়া, নানা ব্রতবারে উপবাস **⊋त्रिया—ভাইরের আমলে ভাজের সঙ্গে ক**লহ করিরা হিন্দু ानविधवात्र क्रोवटनत्र वैधि ছবে ছবে—चुतित्रा এकमा ্গালকধানের ঘুঁটির মত বৈকুঠে যাওয়ার কথা। কিছ তিনকড়ি মেরেকে লেখাপড়া শিখাইতে হুরু করিল। স্বর্ণ ठोहोत मोमा शीरतत वह नहेशा পडास्त्रना चात्रस कतिन। ভারপর বটিল বিপর্যায়। ডাকাতির মামলায় তিনক্ডির জ্বল হইরা গেল। দ্ধেলেটি ও মেয়েটি দেবুর উপর নির্ভর করিয়া বসিল। দেবু স্বর্ণের ভবিশ্বৎ চিস্তা করিয়া তাহাকে লেখাপড়া শেখানোই সর্ব্বোক্তম পদ্ধা বলিয়া মনে করিল। তিনক্জির ছেলে গৌরের লেখাপড়া হইল না, সে দেবুর নাপ্রাহে আসিয়া কংগ্রেসের ভলেন্টিয়ারী স্থক করিল। তারপর একলা হটল নিক্রদেশ। স্বর্ণ প্রাণপণে লেখা-পড়াকেই আঁকড়াইরা ধরিল। মাইনর পরীক্ষায় বৃত্তি भारे**ण। त्मवूत रेक्श हिल-प्यर्गत्क मारे**नत्र भाग कत्रारेत्रा থাবেই ছোট ছেলে-মেরেবের পাঠশালা খুলিরা বদাইরা দিবে। হয়তো—ভাইই হইত। কিছ ভিরিশ সালে দেবু পেল জেলে। জেল হইতে ডিটেনশনে। স্বৰ্ণ তথন নৃতন পথে ছটিতে ক্ষক করিয়াছে। জংসনের বালিকা বিভালরে ছোট দিদিমণির চাকরী শইরা—ग্যাট্র পরীকা দিবার ব্ৰছ উঠিয়া পড়িয়া লাগিয়া গেল। বংসন ভার বীবনে আনিল নৃতন ধারা। সে ম্যাট্রিক পাস করিল, দেবু জেল ইইছে ফিরিল। তারপর একদিন কি জানি কেমন করিয়া কি হইরা গেল—দেবু অভ্যতন করিল—বর্ণকে তাহার শীবনে: চাই। আন্তর্ব্য—বর্ণ শিভরিয়া উঠিল না, ব্যলিয়া

উঠিণ না, পুলকিত শক্ষার মাধাটি হেঁট করিরা বনিল—এত বড় ভাগ্য যে আমি ভাবতৈও পারি না দেব্দা। আমাকে ভূমি—? দেবু বনিল—আমরা রেজেট্রী ক'রে বিয়ে করব অৰ্থ—যদি চাও তা হ'লে পুরুতও ভাকব!

বিবাহ হইরা গেল। কিন্তু শিবকালীপুর দেখুড়িরা; তাই বা কেন—পঞ্ঞামের সমাজ অসহ হইরা উঠিল। বর্ণের কৃতিন্তে একলা সকলে মুগ্ধ হইরাছিল, দেবুর আত্মত্যাগে সেবায় গোটা পঞ্চগ্রাম তাহাকে নেতৃন্তের আসন দিয়াছিল, কিন্তু এই বিবাহের পর গোটা পঞ্চগ্রামের সমাজ তাহাদের দিকে প্লাছন ফিরিয়া বসিল। পূর্কের কাল হইলে হয়তো অনেক নির্যাতন সহ্ করিতে হইত। বিংশ শতাজীর চতুর্থ দশকে সেটা সম্ভবপর ছিল না। শুধু সকলে যেন সরিয়া গেল।

খৰ্ণ এবং দেবু একদা আসিয়া জংসনে বাসা করিল। দেবুর রাজনৈতিক জীবন কেত্র খুঁজিয়া পাইল। খর্প দেবুর কাছে সেই শিক্ষা গ্রহণ করিল। তারপর আসিল অরুণা। দেবুই যোগাযোগ করিয়া তাহাকে এখানে আনিল। সদ্গোপ গৃহস্তের শান্তশিষ্ট বালবিধবা কন্তাটি কোথায় যে হারাইয়া গেল এই নৃতন খর্পের মধ্যে, সে কথা বোধ করি খুণ নিজেও জানে না। জানা দ্রের কথা, কোনদিন কোন মুহুর্জের জন্ত সে-দিনের কথা তাহার মনেও পড়ে না। পড়িলে বোধ হয় নারী হইয়া এমন ভাবে গিরাশ-কাকাদের বলিতে পারিত না—ওদের ম'রে যাওয়া উচিত। ম'রে হাক সব, ম'রে হাক।

দেবু চারের কাপটি শেষ করিরা আরও থানিকটা চা
ঢালিরা দইরা বলিল—তুমি বেণী উত্তেজিত হরে কাউকে
কিছু ব'লো না বেন।

- —কাব না ? কেন ? তোমার ভয় **হচ্ছে** না কি ?
- —ভূমি ইন্থলে চাকরী কর বর্ণ। ওরা সব আগে থেকেই চেষ্টা করছে তোমাকে সরাবার।
 - —চাৰুৱী ছেড়ে দেব।
 - -ना। मि ठिक रखना।
- —আমার কিন্ত এই ভাবে গুকোচুরি খেলে চাকরী করতে ভাল লাগছে না। চাকরী ছেড়ে আমি পার্টির কাকট কারব।
 - --ना। वथन क्यादांचन हत्व ७४न विरुष्टे हत्व।

সে প্রায়েক এখনও আসে নি। ভার চেয়ে স্থাপর চাকরীতে অনেক বেশী কাজ হচ্ছে।

—কিন্ত এবার অবস্থাটা কি হ'ল ভেবে দেখছ ?
অরুণাদি চ'লে গেলেন। এবার বে কে আসবেন—কেমন
লোক—ভার সঙ্গে বনিয়ে চলতে গারব কি না—সে সব
ভেবে আমার একদম ভাল লাগছে না।

হঠাৎ উনানে ফট্-ফট্ শব্দে করলা কাটিরা তাহাদের চকিত করিয়া তুলিল। স্বর্ণ বলিল—দাড়াও।

লোহার শিক দিয়া নিচে খুঁচাইয়া আঁচ খানিকটা নামাইয়া দিল, তারপর ভাতেরে হাঁড়ি চাপাইয়া দিয়া বলিল—এক একবার মনে হয় কি জান? মানে, ইচ্ছে হয়। ইচ্ছের কথা বলছি। ইচ্ছে হয়—চাকরী ছেড়ে শিবকালী-পুরে গিয়ে থাকি,। আগের আমলের মত ওথানে কাজ করি।

वां ना किया त्मत् वित्न-तम् वांत्र हय ना ।

- हरव ना त्कन ? हरव ना— मरन ভावलाहे हरव ना। हरव, विचाम त्रांचेल हरछहे हरव। कथारछहे त्रस्त्रह्— 'त्नहे वनल माल्यत्र विष थारक ना।'
- —কথাটা মিথো খর্প। বিষধর সাপ যদি হয়—তবে
 পৃথিবীগুদ্ধ লোক 'নেই' ব'লে সমন্বয়ে চীৎকার ক'রে
 উঠলেও —বিষ না-থাকা হবে না, বিষ থাকবেই। আর
 যদি হেলে বা জল-ঢোঁড়া হয় তবে 'নেই' বলে নাচেঁচালেও বিষ থাকবে না। শিবকালীপুরে ফিরে যাওয়া
 —বাস করতে যাওয়া—আর হবে না।

সে বারবার ঘাড় নাড়িয়া অস্বীকার করিয়া কথাটার উপর জোর দিতে চেষ্টা করিল।

—পণ্ডিত! পণ্ডিত মশার!

দরজার কড়াটা নড়িরা উঠিল। সলে সলে বাহির
হৈতে কে ডাকিল—পণ্ডিত দশার! কঠছর বত শাস্ত
তত কুন্তিত। দেবু মুহুর্ত্তে চিনিল—নলিন ডাকিতেছে। এ
কঠছর আর কাহারও হইতে পারে না। বি-এ পাস
করার পর জংসনে সে দেবু মাষ্টার—মাষ্টার মশাই নামে
পরিচিত, তাহার জীবনের সকল পরিবর্ত্তনকে বীকার
করিয়া লইয়া—পঞ্জাম সমাজও ওই নামেই ভাহাকে
ডাকে। শিবকালীপুরের জগন ডাক্তারও তাহাকে মাষ্টার
বলে, শুধু নেলো বা নলিন তাহাকে বলে, গণ্ডিত মশার!

স্থা দরজা খুলিরা দিল। নেলো আসিরা নীরবে দাওয়ার বসিল। দেবু প্রাশ্ন করিল—কি সংবাদ নলিনচন্ত্র, বল।

নেলা খুঁট খুলিয়া টাকায় পরসার রেজকিতে প্রায় মুঠাখানেক নামাইয়া দিয়া বলিল—গুনে নেন। মহিলা সমিতির টাকা।

স্থান বিদ্যাল টোকা তো মাদের শেষে নেওয়া হয়। এখন কেন? ষ্টক মিলিয়ে হিসেব ক'রে নিতে সময় লাগবে তো!

দেবু ব্ৰিয়াছে। সে জ কুঞ্চিত করিয়া বলিল—হয়েছে
কি ? হঠাৎ টাকা প্রদা মিটিয়ে দিতে এসেছিল ?

নলিন সায়ুরোগগ্রন্তের মত বাদ্রক্ষেক কাঁধ ঝাঁকি
দিয়া— নড়িয়া চড়িয়া সংকোচ কাটাইয়া বলিল—আপনার।
আলাদা লোক দেখুন। ও—আমি—

সে নথ দিয়া মাটি খুঁটিতে আরম্ভ করিল। দেবু বলিল—তুই পারবি না ? শান্ত নিরাসক্ত ভাবে নলিন বলিল—না।

- -किन ? कि र'न ?
- —হয় নাই কিছু। হবে আর কি ? মানে—। বাড় হেঁট করিয়া সে নথ দিয়া মাটির উপর ছবি আঁকিতে হৃদ করিল।
 - —মানেটা কি রে ? সেই তো জিঞ্চেদ করছি।
- মানে—। বাড় তুলিল নেলো, কিন্তু দেবুর দিকে তাকাইল না— অন্ত দিকে দৃষ্টি রাখিয়া বলিল— মানে, আমি পারব না। মানে—। আবার বাড় হেঁট করিয়া নথে। আঁকা ছবির দিকে চাহিয়া বলিল— মানে, মনটা আমার খচ-খচ করছে।
- —মন থচথচ করছে ? কেন, সেই ছেলেটার হাত থেকে পুতুল কেড়ে নেওয়ার জন্তে ?
- —হাা। তা ছাড়া—। নদিনের হেঁট-ক্রা **দাণাটা** নানা অব্যহন ভাগতে নড়িতে নাগিল।
 - —তা ছাড়া আবার 🗣 ?

কিছু না। টাকা নিয়ে ওকে যেতে দাও। খর্ণ তীব্র-খরে বলিয়া উঠিল।—ও বধন পান্নবে না, তথন কোর ক'রে লাভ কি? জেনেই বা হবে কি?

शंतिवा (सर् विका—ना—ना । कानरक रहत देव

📚। নলিনের সজে আমার তো সাধারণ সম্পর্ক বয়।

শ্বৰ্ণ বিশিল—না। সব মিথো। যেখানে শার্থ নেই
স্থানে সম্পর্কের কোন দাম নেই। বথন নলিনের রঙবুলি কেনার পরসা ছিল না, বথন গাঁরের লোকে ওকে
বর্মা করত, বা-তা বলত, তখন তুমি ভালবেসেছিলে,
নাপনার জনের মত সেহ করেছিলে, সাহায্য করেছিলে
—তথন সম্পর্কের দাম ছিল। আজ নলিনের হাতের পুরুল
সেথে কলকাতার ব্যারিষ্টারের ছেলে—কন্ধনার জমিদাররাড়ীর বংশধর কাঁদে, হাটে নলিনের ডালা-ডালা পুরুল
বিক্রী হয়—আজ আর তোমার সঙ্গে সম্পর্কের দাম কি
বলতে পার ? সাধারণ সম্পর্ক নয়—মানে—অসাধারণ
সম্পর্ক ! হাসিও পার —ত্বংথও ধরে । ছি ! তোমার
সক্ষা হয় না, কিছ আমি লক্ষা পাই ।

া টাকা প্রসাগুলি মুঠার তুলিয়া স্থাপ বরের মধ্যে চলিয়া গেল। বলিল—মহিলা-সমিতির সঙ্গে তোমার সম্পর্কও কিছু নাই, আমি এগাসিষ্টান্ট সেকেটারী, আমি নিলাম টাকা। ইক মিলিরে হিসেব ক'রে দেখে নেব। নলিন, তোমাকে আমি থালাস দিলাক। আমাদের ব্যবস্থা আমরা যা হয় করব।

নশিন খাড় হেঁট করিয়া বসিয়াই রহিল। কোন উত্তর সে দিল না।

त्वत् विन- हा शवि ?

নশিন খাড় নাড়িল—না। খাড় তুলিয়া বলিল—চা থেয়েছি একবার। তারপর একটা দীর্ঘনিখাদ ফেলিয়া উঠিয়া দাড়াইয়া বলিল—তা হ'লে আমি যাই।

-- আফা।

যাইতে গিয়া নলিন কিন্ত ঘূরিয়া দাঁড়াইল। বলিল—
ছেলের হাত থেকে পুতুলটা নেওয়া কিন্ত আমার মনে
ভারী লেগেছে পণ্ডিত। আমি একদিন বাব্দের বাড়ীতে
গিয়ে একটি বুড়ো পুতুল ওদের দাওরার ওপর রেখে
পালিরে এলেছি। ভনলাম বাবু সেটাকে লাখি মেরে
ভেঙে দিরেছে। তা দেক। তার ধর্ম তার ঠাই—
আমার ধর্ম আমার কাছে।

আবার একটু চুগ করিরা থাকিরা বলিল—স্বরদিদি কললে আমাকে কথাগুলান—তা—কথাগুলান সভিয়। একটুকুও বাড়িরে বলে নাই। সেই নজরবলীবাব্ আর তুমি না থাকলে পণ্ডিত আমার ভাগ্যে—। বোধ হর থানিকটা ভাবিয়া লইয়া বলিল—মূটে মজুরের কাজ ক'রেই জীবন কাটত আর কি! আমার জাতজন্ম নিয়ে পাঁচজনে পাঁচ কথা বলে—বাড়ীতে চাকরও কেউ বোধ হর রাথত না। তা ছাড়া তুমিই আমাকে টেনে নিয়ে এলে জংসনে। আমার খুব ভয় ছিল। জংসনকে দেখে এখনও আমার ভয় লাগে। জংসনে টেনে এনেছ, তাই পুতুল বিজ্ঞী হচছে। লোকে জানতে পেরেছে—তারিফ করছে। তা—। তা যতদিনী বাঁচন—আমি বলব স্বাইকে, আজও বলি—এর প্রও বলব—পণ্ডিত ছিল ভাই আমার সব। তা আমি বলব।

দেব্ এতক্ষণে রাগ করিল। যাহার কাছে ক্তক্ততাপাওনা থাকে—দে অক্তক্ত হইলে তু: থ অবস্থাই হয়, কিছ
কৃতক্ততা স্বীকার করিবার ভান করিয়া স্থাকামি করিলে
সর্কাঙ্গ জলিয়া যায়। দেব্র মনে হইল, নেলো এইবার
স্থাকামি স্থক্ক করিয়াছে। ক্র ক্ঞিত করিয়া সে বলিল—
দেন না বললেও চলবে রে। সে আশা ক'রে ভোকে আমি
সাহায্য করি নি। বুঝলি!

—সে আমি জানি পণ্ডিত। আমার গুণ আছে দেখে ভুমি সাহায্য করেছিলে। আমিও এতদিন ভুমি या तलाइ--ना कति नारे। जूमिरे तल পণ্ডিত। ज्ञथन আমি ছেলেমারুষ, ভূমি—সেই নজরবন্দীবাবু কত চিঠি व्यामादक निरव्यक् ... वामि कः त्रान- त्रनदत्र निरव्य अदम्ब-ভেবে দেখ! তার পরে—কত ছবি কৃমি বরাত করেছ— আমি এঁকেছি, ভূমি ভেবে দেখ। সেই একটা শেকল বাঁধা মাহ্য—টেনে শেকল ছি ডুছে ছবি ভুমি আঁকালে—আমি আঁকলাম। তুমি বললে না কিছু, তবু আমি তো বুঝতে পেরেছিলাম ওর মানে কি? 'না' ভো আমি করি নি। দারোগা ডেকে নিয়ে বললে—ডুই এঁকেছিস। তোমার विभाग करत तूरवा जामि बलाहिनाम-ना । भात पिरविहन-তবু হাঁা বলি নাই। মনে কর তুমি। তারপরে কত ছবি আঁকালে। কিন্ত-ও-সব আমার ভাল লাগে না পণ্ডিত, তাতেই পণ্ডিত—। ভাবছিলাম অনেক দিন থেকেই। এবারে এই ব্যাপারে মনে আমার ভারী খা লেগেছে। তাই সৰ ৰ'লে ক'য়েই আমি স'ৱে যাচিছ।

এই ধরণের কথা দেবু নলিনের কাছে প্রভাশা করে নাই। সে ভাহাকে দিয়া দলের মত-অহুযারী কতক্তলা পোষ্টারের ছবি আঁকাইরাছিল। উদ্দেশ্রটা কেবল বে मलात कार्याकात अकथा ठिक नत्र, ठिजिनिसात कन्ननात्र অঙ্ব-পদ্ধতিতে তাহার চোধের সামনে একটা নৃতন পথের ইবিত দিতেও চেষ্টা করিয়াছিল। সেই চেষ্টাকে এমন বিক্লতভাবে নেলো গ্রহণ করিবে—তাহা সে ভাবে নাই। **(ए**वूब मांथां ब मर्था ब्रख्न खन हन्हन् क्रिबा छेठिन। न्ताना প্রসাক্তির ব্যাপারে অভ্যন্ত হিসাবী এবং কুপ্র সে তাহা জানে। সেই কারণে পোষ্টারের ছবি আঁকাইরা সে তাহাকে মৰুরী দিতেও চাহিলাছিল। নলিনই লয় নাই। হাতজোড় করিয়া বলিয়াছিল-পণ্ডিত, তোমার কাছে আমি ছবির দাম নিতে পারব না। এখন আমার भन्नमा आहि। किছू होका आमि अभिराष्टि। यनि অভাব কথনও হয়—এমনি চেম্নে নোব। তুমি যা করেছ —আমার বাপ-দাদাতে তা করত না পণ্ডিত। তারা আমাকে ছবি আঁকতে রঙ তুলি কিনে দিত না। বোষ্টমের ছেলে—কাঁধে ঝোলা দিয়ে বলত—ছবি আঁকতে হবে না পোটোর মত—ভিক্ষে ক'রে আন্ গিয়ে। নয় তো ভদ্রলোকের বাড়ীতে চাকর-খানসামার কাজে ভৰ্তি ক'রে দিত।

কথাগুলি গুনিয়া দেবুর বড় ভাল লাগিয়াছিল, গুধু ভাই নয়—নেলোর উপর ভাহার বে নেং সেই সেহের সলে একটা শ্রদ্ধাবোধ যুক্ত হইয়াছিল। মনে হইয়াছিল—ছেলেটা গুধু জন্মগত শিল্পবোধ লইয়াই সংসারে আসে নাই—শিল্পবোধের সলে গুদ্ধ মহান্ত-ভৃষ্ণাপ্ত লইয়া আসিয়াছে!

আৰু দেবুর সমন্ত ধারণা এক মুহুর্তে ধ্লিসাৎ হইরা গেল। রাগ তাহার হইরাছিল—সে-রাগ সংযত করিরাও দেবুর কণ্ঠন্থর মাত্রাতিরিক্ত গন্তীর হইরা উঠিল। গন্তীর কণ্ঠে দেবু বলিল—তার জন্তে তো আদি মন্ত্রী দিতে চেয়েছিলাম নলিন। তুমিই নাও নি। ভাল ক'রে ন্বরণ ক'রে দেখ ভূমি।

নিলন একটু চদকিয়া উঠিল—বলিল—ভা কি স্থানি বলেছি পথিত ?

--তবে ? তবে ভূমি বলছ কি ?

—বলছি—। নদিন মাথা চুলকাইতে লাগিল। মনের কথা সেঁ বেন ঠিক প্রকাশ করিতে পারিতেছে না।

-कि वल्छ-वल ?

—মানে—। ও সব আঁকিতে আমার ভাল লাগে না।
ও-সব—। এবার সে একবার বাঁ কাঁধ—একবার ডান
কাঁধ কাঁকি দিয়া নিজের মনের অস্বাচ্ছল্য এবং অক্ষরতা
অসহারভাবে প্রকাশ করিল। তারপর বলিল—স্বামি
যাই পণ্ডিত মশার। নতুন দোকান করছি—ভার উর্গ
আছে। স্বামি যাই।

1 8/F-

निन वार्वात वारेट यारेट पूरिन-विन-वामि নিজেও আর হাটে দোকান কর্ব না পণ্ডিত মশায়। তাতেই আরও মিটিয়ে দিলাম আপনাদের সমিতির টাকা। বাবুদের ছেলের হাত থেকে পুতুলটা ছোঁ মেরে ভূলে নিলে বড় দিদিমণি, গেটাও আধার বেমন মনে লেগেছে, বাব্দের ছেলের জন্তে পুতৃল দিয়ে এলাম--সেই পুতৃল বাবু লাখি মেরে ভেঙে দিয়েছে—তাও তেমনি আমার মনে লেগেছে। ওদের হাটে আর আমি দোকান করব না। দে যদি না-থেতে পেছে ম'রেও যাই, তবুও না। আমি ইষ্টিশানের ফটকের ধারে বড় অশব গাছটার निट्ट- मिकान भाष्ठ्य। ७३ य- कर्यत्रक जान मभाव আছেন—উনি নিয়ে গিয়েছিলেন স্থরপতিবাবুর কাছে ;— উনি ডিট্টিক্ট বোর্ডের ভাইস-চেম্বারম্যান তো, ওঁকে বলে ক'রে দিলেন। রান্ডা বোর্ডের, জারগাটাও বোর্ডের। গাছতলায় একটি ভক্তাপোষ পাত্ৰ, তার ওপরে কাঠের পুপরী ঘর ক'রে নোব-পানের দোকানের মভ। ভা ছাড়া থানিকটা---

একসদে এতগুলা কথা বলিয়া ফেলিয়া নলিন হঠাৎ
চূপ করিয়া পেল। অত্যন্ত অক্তচ্নল হইয়া উঠিল। বে
কথাটা বলিতে গিরা থামিয়া গিয়াছে—সে কথাটা
সংকোচে আটকাইয়া গিয়াছে। ওই গাছতলায় দোকান
বন্দোবন্ত শুগুয়া ছাড়াও সে থানিকটা ভিটা বন্দোবন্ত
লইয়াছে। জংসনে দক্ষিণ দিকে একটা দেহব্যবসায়িনীদের
পদ্ধী আছে। সেই গলীর মুখেই একটি ভিটে সে
কিনিয়াছে। গিরীশ ছুভার মধ্যে থাকিয়া সন্তার ভিটাটা
করিয়া দিয়াছে। ওইথানেই সে বর ভুলিবে। একখানা

—একটা বড় চালা, আরও একটা ছোট চালা। বানার সে বাস করিবে, ছোট চালাটার রালা হইবে, ই চালাটা হইবে ভাহার পুতুল গড়িবার ঠাই।

দেহব্যবসারিনীদের সম্পর্কে ভাহার নিজের কোন কোচ নাই। কিছ দেবু পশুত, স্বর্থ—ইহাদের আছে, ন কথা জানে বলিয়াই কথাটা বলিতে গিয়া সে হঠাৎ নিমিয়া পেল।

দেবু বেশ একটু বিশ্বর বোধ করিল। সমত ওনিরা বিশ্ব মনও অনেকটা প্রসন্ন হইরা আসিরাছিল। বিশেব বিরা জমিদারের হাট পরিত্যাগ করিয়াছে এই সংবাদে বাহাদের ছুইজনেই খুসী হইরাছে।

স্বৰ্ণ বলিল-এডক্ষণ এ কথা বলিস নি কেন ?

দেবু হাসিল—বিশিল—শ্রীমান নিশ্বনচন্দ্রের কথাবার্তার

রপই এই । ফ্র্যাস ব্যাকটা ধুব পছল ওর ।

নলিন বার ছই কাঁধ ঝাঁকি দিয়া বাহির হইয়া গেল।
ঠাৎ যেন পলাইয়া গেল। দেবু একটু ব্যস্ত হইয়া
টাকিল—নলিন ৷

দরকার ওপার হইতে উত্তর আসিল—কাল আসব। মাজ—

আজ সকালেই সতীশ বাউরীর আসিবার কথা আছে।
ব্রি ঠিকা লইবে। সতীশ বাউরী পঞ্চ্যামের মধ্যে পাকা
নওরাল-বাক্সই, তাহার হাতের কাঁচা মাটির বরের আজও
নকশ বংসর পরমার।

সভীশ বলে—চার শতারু—পাঁচ শতারু বর সে আমরা গারি না। তবে—হাা, শতারু বর—মানে বদি ঠিক মতন হালন টালন দিয়ে রক্ষে করেন তবে একশো বছর বাবে। তন চার বছর অন্তর পোঁতা বেঁধে বাবেন—মেঝেতে ইত্র নাগলে—খুঁড়ে জল ঢেলে—নতুন মেঝে করবেন—ব্যস্।

সভীশও আক্রকাল পঞ্জামের জীবনগণ্ডী অতিক্রম

রিরা জংসনে আসিয়াছে। অবশু প্রাপ্রি নর,

রাংশিক ভাবে। চাবের সময় পঞ্জামের মাঠে চাব করে,

সল উঠিয়া গেলে—মাস চারেক সে জংসনে আসিরা

নিচা মাটির বাড়ী ঠিকা লইয়া কাজ করে। গিরীশ ছুডার

রাল কাঠামো তৈরী করে, সে সভাশকে কাজ জুটাইয়া

রের, সভীশ দেওয়াল ভৈয়ারী করিয়া গিরীশকে কাঠামোর

হাজ আনিয়া দের।

গিরীশ বলে—এটা আমাদের গিরীশ সতীশ এগও কোম্পানী লিমিটেড। কন্ট্রাকটার বিন্ডার এগও কারণেটার।

সতীশ হাসে।

গিরীশ বলে—তুই বদি হোলটাইন হ'তে পারভিদ সতীশ, হাকটাইন হলেও হ'ত একরকন। এ বে কোরাটার টাইন। মোটে ভিন চার মাস!

গিরীশ নলিনের তক্তাপোব দোকানটা ঠিকা লইরাছে।
বলিরাছে—এক্সা বানিরে দোব, দেধবি। পিছনের কাঠের
দেওরালে—থাক্ লাগিয়ে ধাব। ছই পালে কজা দিরে
ছপালা—ভাতেও থাকবে আলমারী। বন্ধ ক'রে তালা
দিয়ে দাও, একটি বন্ধ আলমারী। খুলে দাও, থাকে-থাকে
পুত্ল সাজানো সারি-সারি। সব্জ রঙ লাগিয়ে দোব।
সাদা হরফে লিখে দোব—"গিরিন কেবিন—পুত্লের
দোকান।" অর্থাৎ গ্রাণ কেবিন—।

খণ বলিল—মিথ্যে ওর ওপর রাগ করছিলাম আমরা।
সেকালের মন ওদের, ওরা সব ব্যতে পারে না। তুমি
বে সব আইডিয়া দাও, সে সব ওর ঠিক মাথার ঢোকে না।
দেবু একটা দার্থনিখাস ফেলিল।

নদীর ধারে মুখার্জীবাবুর মিলে— চং চং করিরা আটটা বাজিল। সে উঠিল। প্রাইভেট টিউশনির সমর হইয়াছে। ঠিক প্রাইভেট টিউশনি নয়, কোচিং ক্লাস। ষ্টেশন-মাষ্টারদের ছেলেমেরেদের লইয়া সকাল সন্ধ্যা কোচিং ক্লাস করে সে। দশ বারোটি ছেলে, ছেলে পিছু তিন টাকা মাইনা। পঁয়ত্রিশ চলিশ টাকা ওখানেই হয়। এ ছাড়া খবরের কাগজ আছে, গৌর কাগজ বেচে, কমিশনের অর্থেক সে পায়, অর্থেক দেবুর, তাহাতেও দশ পনের টাকা পায়। অর্থ মাইনে পায় তিরিশ টাকা। আলী টাকার বেশ চলিয়া বায় ছজনের। চাবের ধান চালটা ইহার পরে।

—হালো ক্**ম**রেড ডেবেনোভরি!

দেবু দেখিল—উকীল ক্রপতিবাবু বাইনিক্লে চড়িরা পিছন হইতে আসিতেছেন। আগে ক্রপতি দেবুক্তে অত্যন্ত অবজ্ঞার চোধে দেখিতেন, বলিতেন—চাবা!

व्याक्कान मृष्टि थानिकिंग भान्डेरियारह। अथम ग्रम

করিরা বলৈন—কমরেড। কথনও কমরেড গোড়া, কথনও কমরেড ভেবেনোড্ডি, কথনও বলেন—এই যে ব্রাদার—এলোমেলো ক'রে দে-না লুটেপুটে ধাই।

কান্ধ স্বপতির নাই—দে দেবু জানে; গুধু ওই কমরেড ডেবেনোডঝি বলিরা ব্যক করিবার জন্তই ডাকিয়াছে। দেবু ফিরিয়া হাত তুলিরা নমস্কার করিরা হাসিল।

স্থরপতি সাইক্ল হইতে নামিরা বলিল— কি ব্যাপার ভাই দেবনাথ? তোমার সেই কারিগর ছোকরা দেবকী সেনের হাতে গিয়ে পড়ল কেন্দ্রন ক'রে বল ভোঁ? আমার কাছে গিয়েছিল সেনকে নিয়ে—টেশনের ধারে ডিট্টিই-বোর্ডের গাছতলার দোকান করবে। আমি অবিখি ভাকে কিজাসা করলাম না কিছু, তবে একটু আশ্চর্য্য হয়ে গেলাম। তোমার বাদ দিয়ে দেবকীকে নিয়ে এসেছে—ব্যাপার কি? হাটে ইল করছিল—ভোমাদের মহিলা-সমিতির ইলের সঙ্গে—হঠাৎ ঘুড়ির মত গোঁতা ধেয়ে লাইনের ওপার থেকে—এপারে এসে পড়ল ছোকরা!

দেবু হাসিরা বলিল—কি জানি কি হ'ল! গুধু বললে
—হেলের হাত থেকে পুতৃল কেড়ে নিলে পণ্ডিভ—!
সেটিমেন্টে লেগেছে আর কি!

স্থরগতি বলিলেন—ঠিক করেছিলেন অরুণা ভটচাজ!
ওতে আনি তোমাদের সঙ্গে আছি। কন্ধনার অমিদারনন্ধন প্রজার বুকের রক্ত-চোষা টাকার বিলেত থেকে
ব্যারিষ্টার হরে এসে একেবারে লীডার সেজে বসবার
মতসব—ওদের আমিও একেবারে দেখতে পারি নে।
আরে বাবা, পাড়াগাঁরের মহালে প্রজাদের সঙ্গে যা
করিস তা' করিস, জংসন ছারমগুলের মত একটা এতবড়
আরুগা—এথানে পর্যন্ত অমিদারী চাল চালতে যার!
অমিটার—বলে কি জান!—অমিটার বোঝ তো! অমিদার
কাম্ ব্যারিষ্টার—অমিটার! অমিটার সাহেব—সেদিন
বলে—অরুণা ভটচাক্রের চাকরী থেতে হবে—বর্ণের
চাকরীও। শেব বলে—স্থায়রত্ব অরুণা দেবীকে নাত-বউ
বীকার ক'রে ওর বাড়ীতে যথন নিমন্ত্রণ নিলেন—তথন
উক্তে পতিত করা হোক! আনি তো হাসব—না—কাঁদব
তেবে পাই নে!

(सर् विम-जानि । अरनिक तर।

—ভনবে বই কি। ভোষাদের ল্পাইরিং সিটেব—
প্লিদের চেম্বে থারাপ দর। স্থরপতি হো-হো- করির
হাসিয়া উঠিলেন। হঠাৎ হাসি থামাইরা বলিলেন—জরণ্
দেবীর রেজিগ্নেশন আমি এটাক্সেণ্ট করতে চাইনে।
উকে আমি লিথেছি—আপনি একহার অন্ত আহ্বন:
চার্ক্ক ব্ঝিয়ে দিতেও ভো আসতে হবে। তথন আহ্বন—
এলে সাক্ষাতে সমন্ত কথাবার্তা হবে। ভারপর বা হর
করবেন। আজ চিঠি পেলাম—আসছেন তিনি। শীগ্রির
আসবেন।

— আসছেন ? লিখেছেন ? দেবু চকিত হইরা উঠিল।
— আজই সকালে চিঠি পেছেছি। আচ্ছা, চলি। ই্যা,
কথার কথার আসল কথাটা ভূলে থিরেছি। হাটের ভোলা
নিরে, আন্দোলনটা বন্ধ করছ কেন ? ধান চালের চল্ডা
লখরর্ত্তি—ও হুটো নিরেও বা আরম্ভ করেছ, থতে
আমার সিম্প্যাধি আছে। ফুল সিম্প্যাধি।

স্থরপতি চলিয়া গেল। বড় ভাল সাইক্ল চালান ভজ্র-লোক। ধীর গতিতে চলেন—বনিয়াদী চাল সাইক্লের গতির মধ্যেও ফুটিয়া উঠে।

ভিশনের কাছাকাছি আসিয়া সে থমকিয়া দাঁড়াইল।
সামনেই রেলওরে কম্পাউও, ডিট্টিভ-বোর্ডের রান্ডাটা
মাসিয়া রেলের ফটকের মুথে শেব হইয়াছে। চারিপাশে
মনেকটা থোলা জায়গায় খান দশেক মোটর বাস দাঁড়াইয়া
মাছে। থোলা জায়গাটার চারিপাশে বড় বড় গাছেয়
শ্রেণী একটি ছায়ামগুলের সৃষ্টি করিয়াছে। আগে গরুর
গাড়ী প্রেশনে যাত্রী আনিয়া এই ছায়ায় বিশ্রাম করিত।
মোটর-বাসের চলন হওয়ার পর গরুর গাড়ীয় সংখ্যা
কমিয়া গিয়াছে। এখন এই সব গাছেয় ভলায়—ছোটখাটো দোকান বসিভেছে। পান-সিগায়েট, চানাচুয়,
ভেলে-ভালা, গোটা করেক ছোট চায়ের দোকান—ভাঁড়েচা-বিক্রেভা, একটা গাছতলায় মাড়োয়ারী ব্যবসারীদের
কলসত্র—এই সব লইয়া বেশ একটি ছোট বালার বসিয়াছে,
এইখানেই সম্ভবত এই শ্রশণ গাছটার ভলায় নেলোর
দোকান বসিবে।

বাসের ভিড়ের মধ্য হইতে একটা ছোকরা ছুটিরা আসিল।—মাঠারলী!

ছেলেটা উচ্চিংড়ে।

শিৰকালীপুরের সন্পোপদের একটি জনাধ ছেলে।
। আর সে জনাধ নয়, নিজের ভার সে নিজেই
।ছে। ছেলেবেলার জনাধ ছিল। বছর আটেক
ন—মা-বাপ ফুইই মারা গিয়াছিল, ছেলেটা পথে
ধেলিয়া বেড়াইড—প্রতিবেশীর দাওয়ায় বা চণ্ডীপ—ছুমাইভ, লোকের বাড়ীভে মাগিয়া খাইত।
কছ কর্মকারের সন্তানহীনা জ্বী—ছেলেটাকে কুড়াইয়া
। মাহুব করিয়াছিল। কামার-বউ একদিন চলিয়া

(पर् मोर्चनियोग स्मिनिन।

উচ্চিংড়ে আসিরা জংসনে আপনার স্থান করিরা লইরাছে। প্রথমে করিত জিকা। তারপর সে নিজের কাল বাছিয়া লইরাছে। বাসে আসিয়া কাল লইরাছে।

উচিচংড়ে একথানা চিঠি দেবুর হাতে গুঁলিয়া দিয়া চলিয়াগেল।

উচ্চিংড়ে দেবুর চেলা। দেবুর একটি চেলার দল আছে।
দল নহিলে—পৃথিবীতে বাঁচিবার উপায় নাই। বিশেষ
জংসনে।
(ক্রমশঃ)



দালী ব্ৰক্ষের পক্ষে জাতীয় বাহিনীতে বোগ দিবার হবর্ণ বোগ উপছিত। ১৮ হইতে ৩০ বৎসরের বাছাবান ব্ৰক মহকুমা-সক্ষের নিকট সম্বর আবেদৰ করুন। আন্দান্ত তিন সপ্তাহ শিক্ষা ওরা হইবে; বাহারা উত্তীর্ণ হইবে. বিভিন্ন কার্ব্যে নিবৃক্ত হইতে রিবে। বালালী বৃদ্ধ করিতে হবোগ পার না বলিরা বাহারা তদিন অকুবোগ করিতেন, আশা করি. সম্বর এই জাতীয় বাহিনীতে রাগ দিবার প্রেরণা দিবেন। দেশের ছেলেদের দেশরকা কার্ব্যে কিলাতের এ মহাকুযোগ কথনই ত্যাগ করা উচিত নয়। —পদ্মীবাসী

্বর্ধনান জেলার নবপ্রতিষ্ঠিত বিরাট নগরী ভিত্তরপ্রনে বালালীর ছান । অথচ বালালীদের মধ্যে সহল্র সহল্র বেকার পথে ঘাটে ঘূরিরা বড়াইতেছে। প্রাহেশিকতার চিত্তরপ্রন বিবাক্ত হইরা আছে। অবশ্র র্থানে প্রাদেশিকতা করিড়েছে মার্রাজীরা। মার্রাজী কেরাগা, মার্রাজী টিইপিট, এনন কি মার্রাজী খুল শিক্ষণ্ড চিত্তরপ্রনে সমত্ত দিক দখল সিরা আছে। উপরের কথা তো বলিতেই নাই। কেমিট্র নামার, ব, এন, ই, শারী- চার্জ্জনেন সীতারনন, কুক্রামী ও তক্তপ্রতা মারারণ নিবীর, বীর রাঘবনের দৃষ্টাক্ত এবং তাহাদের সম্বন্ধে অন্ত্রস্থানেরও সির্লেই সব ব্রা বাইবে। খলনঞ্জীতি আত্মীলপোবণ চিত্তরপ্রনেরও নিতিক লীবনকে কল্বিত করিয়াছে।

নাংবাদিক সম্বেদনে পশ্চিম্বলের সম্পাদকপুণের) মুখপাত হিসাবে শুউবাজার প্রিয়োক সম্পাদক শ্রীজনকৈলালি বেবি উল্লেখ উভর রাষ্ট্রের মধ্যে মিলনের অন্তরার কোথার তাহা থোলাখুলিভাবে বিলেবণ করিতে গিরা বলেন, "পাকিস্তানের বিলক্তে আমাদের প্রধান অভিবোপ এই যে উহার ভিত্তি ধর্মের উপরে। আমাদের শাসনত্য অসুবায়ী, আমাদের রাষ্ট্র ধর্মনিরপেক এবং শাসনতত্ত্বে সংখ্যালবুবের অধিকার রক্ষার বাবস্থা রহিয়াছে। ভারতের প্রধান মন্ত্রী বিনিই হউন না কেন, তাঁলার লাভ শাসনতম খারা বাঁধা, কিন্ত চুংখের বিষয় পাকিন্তানে সেরপ কোনও ব্যবহা নাই। পাকিন্তানের প্রধান বত্রী পাকিলানে হিন্দের বুকা করিবার আখাদ দিয়াছেন, কিছ এই প্রতিশ্রুতি মৌথিক! কাল হয়ত জনাব লিয়াকত খান পাকিতাবের প্রধান মন্ত্রী বা জনাব মুরল আমিন পূর্ববঙ্গের মুখ্য মন্ত্রী না থাকিতে পারেন। তাঁহাদের ক্লাভিবিস্কণণ শাসনভন্তপত কোন বাধাবাধকতা না থাকায় এই প্ৰতিশ্ৰুতি নাও মানিতে পারেন।" সম্পাদক সম্বেদনে বীবৃত ঘোষ পরিকারভাবে ভারতের দাবী পেল করিরাছেন। আমরাও বরাবর পাকিতানের রাষ্ট্রীর আদর্শকে ধর্মনিরপেক বলিয়া বোষণা করিতে দাবী জানাইরা আসিতেছি। পাকিস্তান গণপরিবল এথকঃ भिर स्व मारे । शांकिकाम हैका कृतिक जानहे छाहा कृतिएउ शास्त्रम ।

বালালী ধনী কমিদার আৰু সৰ্পাহার। হইলা পশ্চিমককে অবস্থান করে। এক নুঠা নামলাদা ভাজার ও ব্যারিষ্টার, উদিল লইলা বালালী জাভি নহে। বে দেশে শতকরা ৮৮লম নিরক্ষর অমিক ও মারী, সেই দেশকে বীচাইতে হইলো, এই সুক মুখে বে ভারা দিতে

-- नाटमानव

হইবে ওপু তাঁথা অক্ষর পরিচয় নহে। আমাদের বরে বরে ইবর বিবাসের উপাসনা-মত্র উচ্চারণ করিতে হইবে। ব্রাক্ষ মুহুর্তে প্যাত্যাপের ব্যবহা যাহাতে হর, সেই দিকে মন দিতে হইবে। সমষ্টিচৈতক্তকে
কাগাইবার জন্ম আমাদের সমাদের স্থনীতি প্রবর্ত্তন করিতে হইবে।
আমাদের ব্যক্তিপজ্জি সমষ্টিগঠনে চিরদিন অসুব্ত্ত্ত, তাই আমাদের দেশের
েটী ব্যাক্ত অকৃতকার্যা হইয়া মাথা গুলিল। যৌথ কারবার গড়িয়া
উঠার প্রদীপশিধা আগাইতে সিরাও বালাগী জাতি অকৃতার্থ হইল।
ধন-সম্পদে, সমাজে, রাব্রে সমষ্টিপজ্জি বিনিরোগ করার জন্মই আমরা
লাতির প্রাণশজ্জির মূলে ঈশ্রেবিশাসের দীপশিধাই উজ্জ্লল করিতে বলি।
ব্যক্তির ধনদৌলত, বাড়ী-বর কিছুই ছাত্র। হইবে না, সমষ্টিপজ্জির প্রাণ
চাই। সেই সমষ্টির মূলে ঈশ্রেচিতক্ত যদি জাগ্রত না হর, আমরা বে দল
পড়িব—সে দল স্থার্থ-কপ্রিত হইয়া হিয়মন্তার স্তার আপনার কঠনালী
ছিল্ল করিয়া আপনারই রক্ত পান করিবে।

-- नवगःच

প্রবিদ্ধ হইতে আগত উঘান্তর। মলা পাইরা বসিরাছে। বাহার বেথানে খুনী থালি বাড়ী দেখিলেই চুকিরা পড়িতেছিল এবং থালি লমি পাইলেই খুঁটি গাড়িতেছিল। সরকারী কর্মচারীরা এতদিন শুখুইহাদের দৌড় কতন্ত্র তাহাই দেখিতেছিলেন। ইহারা ভাবিরাছিল এমনি করিয়াই বোধ হর দিন চলিরা বাইবে। কিন্তু পরে পিঠে বখন লাঠি পড়িল এবং নাকে চোথে টিরার-গ্যাস চুকিল তখন নাকের জলে চোথের জলে এক হইরা আইনের মধ্যাদা কি উপলব্ধি করিতে পারিল। এই সামান্ত কথাটা তাহারা বুবিতে পারে নাই বে তাহাদের অনৃষ্টে বিদ্দিশান্তি থাকিবে তাহা হইলে সাতপুরুবের ভিটা পরিত্যাগ করিতে হইবে কেন ? আবার শুনিলাম ইহারা দল বাঁধিরা বাংলার মুখ্যমন্ত্রী রার মহাশরের নিকট কৈকিয়ৎ তলব করিতে গিরাছিলেন। আলকর্ম্ব শ্রিরা একটা কালের মত কাল করিরাছে। — মুগ্যনাগ্রী

উচ্চপদত্ব সরকারী কর্মচারী পাবলিক সার্ভিস ক্ষমিশন কর্ম্বন্ধিক করা নিয়ম। কিন্তু আনেক ক্ষেত্রে এই নিয়ম পালন করা বইতেছে না। মন্ত্রীদের প্রিয় এবং অনুসূরীত ব্যক্তিদের সরাসরি নিয়োগ করা হইয়া থাকে। সম্প্রতি শোনা বাইতেছে যে সেলস ট্যান্স ক্ষিশনার এবং আরও কোন কোন উচ্চপদত্ম কর্মচারী পাবলিক সার্ভিস ক্ষিশনকে না আনাইরা সেল ট্যান্স ক্ষিশনারকে বীয় পদে পাকা করা হইয়াছে। এই নিয়মের ব্যতিক্রম কেন হইল পাবলিক সার্ভিস ক্ষিশন গ্রপ্তিকেটর নিকট তাহা আনিতে চাহিয়া কোন অবাব পাম নাই। ইহা সত্য কি না গ্রপ্তিকেট তাহা আনাইবেন কি ?

—বুগবাণী

ভারতের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত সপ্তর্বলাল কেছের প্রাক্তম মার্কির প্রেসিডেন্ট ছতারের প্রতাবের প্রতিবাদ করিরা বাহা বলিরাছেন ভালা আককের দিনে ভারতের মনোভারকেই বিরেশ করিরাছে। তিনি বলিরাছেন, রাশিরা ও অভ্যান্ত কমিউনিষ্ট দেশকে বাদ দিরা জাতি-সংঘকে নৃত্ন করিরা গঠন করার প্রতাব অবিজ্ঞোচিত ও অনিষ্টকর। বে উচ্চাকাজ্ঞা লইরা আভিসংঘ গঠিত হইরাছিল, ভালা অবশ্র পূর্ণ হর নাই। কিন্তু একখাও সভ্যা বে, আভি সংঘের শুধু অভিদ্যের দরশই আমরা বহু বিপদ হইতে রক্ষা পাইরাছি।

আতিসংঘ ছিধা-বিভক্ত হইলে পর বছ রাষ্ট্র এই ছিধা-বিভক্ত সংস্থার অস্থাভূত হইতে রাজী নাও হইতে পারে। ঘটনাবলীর চাপে অধবা নিজেদের বার্থে এই গকল রাষ্ট্র কোন জোটের সহিত মিলিত হইতে সম্মত হইবে না। তাহারা তথন বতর অভিদে রকা করিরা আমর্শের সেবা করিরা যাইবে। জাতিসংঘের রূপ পরিবর্জনের চেষ্টা করা হইলে, তাহা ছারা আরও শক্তিশালী সংস্থা গড়িরা উঠিবে না।

—দৈনিক

বিহার প্রাণেশিক কংগ্রেস কমিটির সম্প্রতি অস্থান্টিত এক অধিবেশনে একটি প্রভাব গৃহীত হইতে দেখিরা অত্যন্ত বিশ্বর বোধ করিতেছি। ওঁছারা ক্রোশলে বিহারের অন্তর্গত বাসলাভাবাভাবী অঞ্চলসমূহের পশ্চিমবঙ্গে অন্তর্ভু ক্তির যে বছদিনের দাবী, ভাহা চাপিরা বিবার চেষ্টা করিয়াছেন। প্রভাবটির মর্ম্ম এই: পূর্ববর্গনাত শরণাখীদের পুনর্বাসকে সাধ্যমত চেষ্টা করার স্বন্ধ কমিটি কংগ্রেস কর্মিগণের নিকট আবেদন করেন। কিন্তু এক প্রেণীর দায়িছহীন লোক যে এই অবহার ছ্যোগ লইরা বিহারের অংশবিশেব বাসলার অসীভূত করার দাবী করিতেছে ভাহার নিক্ষা করিয়া বলা হর যে, ইহাতে বিহারবাসীদের মনে ভীর অসম্ভোব স্কৃষ্টি হইবে এবং শরণাখাদের স্বার্থহানি হইবে।

পাল্চমবরের অনুকুলে তাহার প্রাপ্য ভূমি ছাড়িয়া দিতে বিহারের আনিছার সংবাদ জানি। কিন্তু একটি প্রাদেশিক কংপ্রেস ক্মিট পাল্চমবলের বছকালের দাবীকে কিন্তুপে এই বলিয়া বর্ণনা করিতে পারেন বে, এক প্রেণীর দায়িদ্বহীন লোক এই অবছার হ্ববোগ লইডেছে. তাহা বুবিতে পারি না। বিহার রাজ্যের কংপ্রেস তথা সরকারের এই কুটকৌশল মনোভাব সহত্তে প্রত্যেক বালালীরই ওয়াকিবহাল থাকা কর্ত্তর।

--- जनरगरक

পশ্চিমবন্ধ সরকারের সদর দথার রাইটাস বিভিন্নে সম্প্রতি ট্যাপিওকা হইতে প্রস্তুত নানাপ্রকারের খাত্রব্য পরীক্ষার্থ পরিবেশন করা হইরাছে। ট্যাপিওকা ত্রিবাস্কুরের অধিবাসীদের একট অন্তত্য প্রধান খাত। পশ্চিমবন্ধ সরকারের কৃষিবিদ্যাক সংক্ষেক বিঃ প্রেপরী কথা প্রস্তুত্ব ১৯০০ সালে বাংলাদেশের ছুর্তিকের কথা উল্লেখ ক্রিয়া

लाम (ब, लाई ममात्र जिवाकूत्वल क्रिक वार्ड, क्रिक जिवाकूत्वल ালার হালার লোক এই ট্যাপিওকা আহার করিরা প্রাণরকা করেন। থাত হিসাবে দেখা পিরাছে ট্যাপিওকা আলুর অপেকাও ৰেশি ৰাভপ্ৰাণসম্বিত। বাংলাদেশে ইহার প্রচলন আৰও না হুইলেও পাত্তমন্ত্রী শীগুড সেন এই বলিয়া আশা একাশ করেন যে একদিন না একদিন ইহা বাঙালীর প্রিরখান্ত হইরা উঠিবে। খান্ত সম্বন্ধে বাঙালীর অভ্যাস ধেরণ অভ্তত, তাহাতে এই আশা কোনদিন পূर्व इट्टर किना विलिए भाति ना। व्यवश्र छेभात्राखत्र ना मिथता থাভের ব্যাপারে অনেক কিছু অমুবিধাই বাঙালীকে সহু করিতে হইতেছে: কিন্তু তথাপি বন্ধনের প্রণালী পরিবর্তনের কোন লক্ষণ দেখা बाब मारे। विरम्पेक: शन्तिमवन व्यपिवानीरमत्र এरे कन्न व्यत्न क्वि হইতেছে। বহু রন্ধনীয় উপকরণের মধ্যে ভেজাল আছে জানা সন্তেও মুখরোচক আবাদের লেভি আমরা পুরাতন রন্ধনের প্রণালী ত্যাগ করিতে প্রস্তুত নহি। এই রক্ষনের প্রণালী এবং বিশেষ বিশেষ অথরোজনীর রম্মন জব্যের আসন্তি ধীরে ধীরে ত্যাগ করিতে না পারিলে আরো কভো হর্ভোগ ভাগ্যে আছে তাহা বলা শক্ত। —নির্ণয়

ৰিভিন্ন প্ৰদেশের প্ৰধান মন্ত্ৰী ও কংগ্ৰেস প্ৰেসিডেন্টগণের দিলীতে অনুষ্ঠিত সাম্প্রতিক সম্মেশনে একটা বন্ধ-মেরাদী অর্থ-নৈতিক কর্মপুচী अहर करत्र सेनमाधात्रापत्र कर्ष्य छेरमाह वर्धनित बाखाव मुशेख हत्र। •••क्डि এই थार्रहे। चाँके कड़्तिल इत्र नारे। ••• नकलारे बीकात्र করছেন বে বাধীন ভারতের সরকার যে মানসিকতা পরিবর্তনের হলে অর্থ-নৈতিক ও অক্তান্ত বিষয়ে প্রগতি অনিবার্যা হ'রে ওঠে, সে मन्नर्पर्क वावचा कदारा भारतनि । . . काद्रश कनमाधाद्रति प्रदेश है करमा সঞ্চার সরকার করতে পারেননি। •• সমাঞ্চবিরোধী কার্যাকলাপ যথা চোরাবালার, অভার মুনাকা, ট্যান্স ফাঁকী, ভেজাল প্রভৃতি অপরাধ আইলের চক্ষে ধরা পড়ে না। উপরত্ত এই চুক্তকারীরা সরকারী উৰ্বতন কৰ্তাদের প্রভাবিত কোরে শাসন পরিচালনা বিবাস্ক করে ভূলেছেন। সাধারণ লোক মনে করে বে কতকগুলি ধনী ব্যক্তিরাই **কারেমী বার্থের প্রয়োজনে শাসন ক্ষতা নিয়ন্ত্রণ করছে এবং প্রকৃত** शक्त बहारक स्वनमाधादरमञ्ज मदकाद वना यात्र ना ।... এकन धादासन ছিল এই সবের বিক্লছে কঠিন শান্তিমূলক ব্যবহা অবলঘন করা, বাতে সাধারণের সঙ্গে সরকারের খনিষ্ঠতা বৃদ্ধি পেতো। তারই অভাবের বছাই অনুসাধারণের মধ্যে সরকারী প্রচেষ্টার উভ্যের সাড়া পাওরা वात्र मा । • • नामारमत्र विचान এই नमाख-विरत्नां वी कृकुक कात्रीरमत्र विकृत्क **पश्चिमान ठानारनः ... व्यक्तिस्य क्रम्माश्वर्शनः वेक्ष्यात्र व्यक्षात्र वृर्गन वारतः।** - शिमुद्दान द्याकार्ड

বর্তমান কোনার পাঁচটি টেলিকোন এরচেঞ্চ হইরাছে বটে, কিন্ত একটি এরচেঞ্চ হইতে অভ এল্পচেঞ্জ কথা বলিতে গেলে ট্রাছকল চার্জ্ঞ করা হর অতি তিন বিনিটে এক টাকা আট আনা। এখান হইতে কলিকাতা ও সহরতনীতে টেলিকোন করিতে গেলেও তিন মিনিটে এ দেড় টাকাই চার্জ্ঞ দিতে হর। কিন্তু বর্দ্ধমান হইতে বেনারী টেলিকোন করিতে গেলে প্রতিদিন মিনিটে লোক্যাল চার্জ্ঞ হিসাবে লাগে হর আনা মাত্র। এক জেলার বাস করিয়া জেলাছিত বিভিন্ন এক্সচেপ্রে বিদি কলিকাতার জার সম হারে কোন-সেলামী দিতে হর, তাহা একান্ত পরিতাপের বিবয়। আমরা বর্দ্ধমান জেলাছিত সমত একটা প্রত্তাতে পরশার কথা আদান প্রদানের হুবোগের জন্ত একটা জাব্য পরিমাণ লোক্যাল চার্জ্জ ধার্য করিয়া ট্রাক্কনের দার হইতে অব্যাহতি দিবার ক্রন্ত অমুরোধ করি।

— দামোদর

অনেকেরই ধারণা আছে যে ভারতের আদর্শবাদী কংগ্রেসী প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত নেহর র্যাকমার্কেটের উপর নিতান্তই থড়গহন্তঃ। তাহাদের
অবপতির জন্ত আনাইতেছি যে পণ্ডিতলী বার বার এই প্রথম নিজত
হইরা নিজেই ইহার তীর প্রতিবাদ করিবাছেন। ধানবাদে তিনি
বলিরাছেন যে ব্যাকমার্কেটিরারদের কাঁসি দিবেন একথা তিনি কোনদিন
বলেন নাই, তবে ১৯৪৬ সালের বাস্ত্রপার ছন্তিক্লের সময় বাহারা
চাউলের ম্যাকমার্কেট করিবাছিল তাহাদের কাঁসি হওরা উচিত ইহাই
তিনি বলিরাছিলেন। বড়লোকের নামে ছন্তলোকে বা তা রটার, ইহা
সকলেই আনে। কিন্তু এরপ ভাবে মিখ্যা কথা রটাইয়া বাহারা
কংগ্রেসের বিশিষ্ট ব্রুক্বীদের সঙ্গে পণ্ডিভলীর বিরোধ ঘটাইবার চেটা
করিতেছেন তাহারা নিতান্ত পাবও এবং দেশজোহী সন্দেহ নাই।

-- বুগবাণী

দানোগর পরিকল্পনার স্থানই মর্বাকী পরিকল্পনা আর একটি শুকুত্বপূর্ণ পরিকল্পনা। এই পরিকল্পনা সম্পূর্ণভাবে কার্য্যকরী হইলে পশ্চিমবলের বীরকুম, মুর্লিদাবাদ এবং বর্জমান জেলার ১৮লক্ষ বিষা জমিতে জল দেচের ক্ষরবন্ধা ইইবে এবং ৮১ লক্ষ মণ থান ও ৫৩ লক্ষ ৫০ হাজার মুন্দ রবিশস্ত উৎপন্ন হইবে। অলুমান, এতদ্ধলের কুবি সম্পাদ শতকরা একশত গুণ বৃদ্ধি পাইবে। মর্বাকীর বাঁথ নির্দ্ধাণ কার্য্য ক্ষতগতিতে অপ্রসর হইতেছে। বীরকুষের সিউড়ী শহরের ছই মাইল দ্বে ১০১০ কুট দীর্ঘ তিলপাড়া বাঁথ প্রার সম্পূর্ণ হইরা আসিল। আশা করা বার, ১৯৫১ সালে বর্ধা সমাগ্যের পূর্বেই উহা সমাপ্ত ইইবে। এ পর্যন্ত আকুমানিক ছই কোটি টাকা ব্যরিত ইইরাছে।

ভারওসরকারের আইন সচিব ডাঃ বি, আর, আবেদকর ও জাহার পত্নী নরাবিল্লী বৌদ্ধবিহারে অনাড়বর অসুঠানের মধ্যে বৌদ্ধবর্ম গ্রহণ করিয়াছেন। ডাঃ আবেদকর তপশ্লিল প্রেণীভূক্ত হিন্দু নেতা! তিনি মুই বৎসর পূর্বে এক আক্রণ মহিলাকে বিবাহ করেন। তপশীলিকের সামাজিক ও রাজনৈতিক অধিকার গাভের কত জাহার বিভিন্ন সকরে বিভিন্ন এচেষ্টার কত জাহার খ্যাতি ও শাসনতাত্ত্বিক আইনে জাহার গভীর পাভিত্যের কত তিনি ভারতে এক বিশেব হান অধিকার করিবা আছেন। বিশেবত: তিনি ভারতের বর্তমান শাসনতত্ত্বের অভতন অধান রচিয়তাক্রপে চিরম্মরণীয় হইরা থাকিবেন। বর্তমানে তিনি মনে করেন বে একনাত্র বৃজ্বের শিক্ষাই পৃথিবীর শান্তি আনিতে সমর্থ।

ছিতীর বহাবৃদ্ধ শেব হইরা গেলেও আরও একটি বে বৃদ্ধ পৃথিবীর অন্তরালে আদ্ধানাশন করিরা আছে ইহা আমরা সকলেই জানি। আর জানি, সেই মহাবৃদ্ধে জগতের যে-বেরুদণ্ড ভাঙিয়া প্রিয়াছে তাহা জোড়া না-লাগা পর্বস্থ কেই ভরাবহ বৃদ্ধ কোনোদিন্ট সম্ভব হইবে না। কিন্ত স্বিলয়ে লক্ষ্য করিতেছি, পূর্বের ভাঙা-হাড় জোড়া না লাগিতেই বৃদ্ধের জন্ত প্রার সকলেই গোপনে প্রস্তুত হইরা রহিরাছে। এই গোপন-প্রতাতির অন্তরালে আর বাহাই খাকুক, শান্তি যে কেইই চাহিতেছে না ইহা প্রশান্ত। অথবা শান্তির জন্তই আর একটি দারণ অশান্তিকে আহ্বান করিয়া আনিতেছে। কিন্তু সেই শ্বশানে শান্তি আনিরা জনতের কি কল্যাণ সাধিত হইবে আমরা বলিতে পারি না।

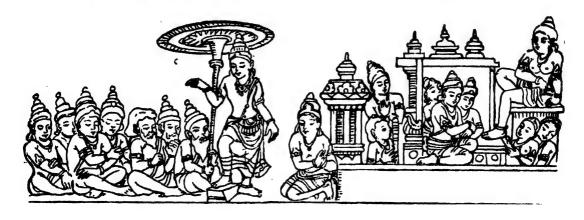
বিতীয় মহাযুদ্ধে ক্যাসিষ্ট শক্তিবর্গ—আর্মানী, ইতালী ও কাপান, ইংরেক, ক্রাসী, রূপ ও মার্কিন শক্তিপুঞ্জের উপর বে আঘাত হানিরাছিল, তাহাতে এই চতুবর্গ এক সজে মিলিত হইরাছিলেন ক্যাসিষ্ট শক্তি ধ্বংস ক্রিবার জন্ত । কিন্ত ধ্বংস-কার্য পেব হইলে দেখা গেলো, তাহারা আর এক লক্ষ্যে হাত ধ্রাধরি ক্রিরা অঞ্জসর হইতে পারিলেন না। এ অবহার পশ্চিমি শক্তিবর্গ নিছক আত্ম ঘার্ব রক্ষার তার্মিনেই লোট বাধিলেন এবং উত্তর অতলান্তিক চুক্তি হইতে স্ক্র ক্রিরা ক্লাবো ও সিডনীর ক্মনগুরেলধ সম্মেলন পর্যন্ত যতকিছু উচ্ছোপ আরোক্ষ হইরাছে, তাহার যাধ্যনে নিজ নিজ অধিকার রক্ষার জন্ত কোষর বাধিলেন—এইভাবেই বুজোন্তর পৃথিবী অনিবার্থ আবর্গ

বিরোধে বিধাবিতক হইরা পড়িল। শুধু তাই নর, বেখা গেলো, আড়ানে আড়ানে কুই তরকই ব্যাপক রণ-প্রভাতির উভোগ আরোলন প্রায় শেব করিরা কেলিরাছে। আরো লক্ষ্য করা খাইতেছে, বে জিলার "বিপন্ন ইসলাম" ধুরার, রভো এই সকল অঞ্চলে পাল্টাত্য গণতন্তভালিও একটা "বিপন্ন,ইউরোপীর উদার নীতি"র ধুরা তুলিতেছেন। শুধু ধুরা তুলিরাই তাহারা চুপ করিরা রহিলেন না, দল ভারী করিবার বিবিধ চেটা ঐ সলে করিতে লাগিলেন।

অসুমান করা বাইতেছে, এই প্রাথমিক উজোগ পর্বের আড়ালে একটা বৃহৎ সভাবনা আসন্ধ। — সৈনিক

ভারতবর্ষ হইতে বংসর বংসর বে কোটি টাকা মূল্যের চা বিমেশে র্থানী হয় তাহার কারবার বেডারদের একচেট্রা। এই অনভিঞ্জেড অবস্থার পরিবর্তনের অক্তত্তত উদ্দেশ্ত লইরা ভারত সরকার কিছুদিন পূর্বে ইভিয়ান টি মার্কেট এক্সপেনসন বোর্ডের স্থলে কেন্দ্রীয় চা বোর্ড নামে একটি প্রতিষ্ঠান গঠন করেন এবং মি: এম কে সিংছ উহার সভাপতি নির্বাচিত হন। সম্প্রতি মিঃ সিংহ ছটি লওরাডে তাহার ত্বলে জেমন কিমলে এও কোম্পানীর মি: বেলকে উক্ত পদে নিবৃক্ত করা হইরাছে। এই পদে নিবৃক্ত করিবার মত একাধিক বোগা ভারতবাসী থাকা সন্ত্রেও একজন খেতালকে কেন এই পদে নিৰ্ফু করা হইল ভাহাতে অনেকেই বিশ্বিত হইরাছেন। আলোচ্য বোর্ড প্রতিষ্ঠিত হইবার পর হইতে ভারতবাসী যাহাতে চারের রপ্তামী ব্যবসারে প্রকেশ করিতে না পারে তজ্জ্ঞ ইউরোপীর চা ব্যবসারিগণ উঠিয়া পড়িরা লাগিরাছেন। এরপ অবহার বোর্ডের সভাপতির ভার দারিছপূর্ণ পদে উক্ত ইউরোপীর চা ব্যবসারীবেরই একজন প্রতিনিধিকে নিরোপ করার ফলে ভারতীর চা ব্যবসায়ীদের বার্থের সমূহ ক্ষতি হইবে বলিয়াই আশভা হইতেছে। এই কারণে উক্ত নিয়োগ সম্বন্ধ পুনর্বিবেচনা করিবার জন্ত ভারত সরকারকে আমরা অসুরোধ জ্ঞাপন করিতেছি।

--ভাৰ্ষিক জগৎ





-- 91/51-

রশবের কুঠির শ্রীহীন কম্পাউগুটার মাঝখানে দার্শনিকের তো নিরাসক্ত হয়ে দাঁড়িরে ছিল কু সাহেব।

দৃষ্টিটা আকাশের দিকে। একটা বিশাদ কালো

চৰলের করেকটা ছিরবিচ্ছির খণ্ডের-মতো ভেনে বেড়াছে

চালো মেবের টুকরো। রক্তমাধানো ছটো ঠোঁটের ফাঁকে

চাকে বেন এক ঝলক তীক্ষ হাসির আভাস জাগিয়ে

লালে বাছে বিছাৎ। আজ হোক কাল হোক—সাল
াটির রাঙা ধূলোয় তাওব ভূলে ছুটে আসবে ঝড়, ভেঙে

ডিবে রূপোর তীরের মতো ধরধার বৃষ্টি।

উগ্র স্থিকিরণের আলায় কঠিন পোড়া মাটি এলিরে মাছে একথানা বিশাল পাধরের মতো—যেন বলির রক্তের । মাধা। বর্বার জল পড়লে একরাশ বন রক্তচলনের তো কোমল হরে বাবে—ত্পাছ্র মাধা ভূলবে এথানে। শুকিরে আসা বিলগুলো ভরে বাবে বোলা জলে নার গাঢ় সবুজ উজ্জল পদ্মপাতার।

এখনো বেন পোড়া মাটি খেকে কী একটা উঠছে

।নিক তথ্য দীর্ঘবাসের মতো। শুকনো কলাপাতার মতো

রা ঘাসের রঙ। জলহীন থানা ডোবার ফাটলে ফাটলে

।করাশ শুট্কি মাছের মতো কুগুলি পাকিরে ঘূমিরে

।াছে জীওল নাছের ঝাঁক। তিন হাত মাটির নিচে শক্ত

থালার ভেতরে পা-মুখ গুটিরে নিয়ে বোগময় আছে

হরাণর কল—সাঁওতালেরা এখনো ওফের সভান পাবে না।

কিছ ক'বেঁ আসবে বৃষ্টি ?

একটা অভ্ত চোধ মেলে তাকিরে রইল কু সাহেব।

লগ্-মিগন্তব্যাপী নাঠকুড়ে ছুটে আসবে নহানকা— প্নর্তবা
নানাইরের কল, দান বাসের শীরকে বারো হাত লহা করে

লরে সমুজের ঢেউ থেলবে সীনাহীন 'চাকালে চাকালে' ?
নার চাকাল থেকে সেই কল বরে আসবে এই তকনো
নিক্তের সংকীৰ্ণ থাত দিবে—বরে নিরে বাবে, ভাসিরে

নিয়ে বাবে মাটির তলায় সম্বর্গণে পুঁতে রাখা বাদানী রঙের সেই হাডগুলি ?

थ्न। तम थ्न करतरह।

নিজের হাত ছটো চোথের সামনে বাড়িয়ে ধরদ ক্
সাহেব। 'বেন মণিবকের হাড়ছটো তার ভেঙে তেঙে
ভঁড়ো ভঁড়ো হয়ে গেছে, তাই আঙু দভলো অসহার ভাবে
কাঁপছে ধর ধর করে। তাদের ওপর কোনো কর্তৃদ্ব
নেই তার। দিনের পর দিন—বছরের পর বছরগুলি
মনের বে অককার সংকীর্ণতার ভরে তরে মাকড়শার জাল
বুনেছিল—জটাধর সিংয়ের খুন সেই জালটাকে ছিঁছে
টুকরো টুকরো করে দিরেছে।

তথনো মার্থা আসেনি জীবনে। তথনো আরম্ভ হরনি এমন একটা শাস্ত-নিরীহ অহিংস অধ্যার। পার্নিজ্ঞাল ক্যাকর উদ্দাম রক্ত ধমনীতে ধমনীতে মাতলামি করে ক্রিছে। কালো মারের তথ্য কামনার সঙ্গে বালের মন্ত লালসার প্রেরণায় সেদিন—

একটার পর একটা উল্কা ঝরে পড়া সেপ্টেম্বরের রাত্রে—চামড়ার মতো পুরু নীরেট অরকারে—হাওয়ার শির্শিরানি লাগা ঘন বেনাবনের মধ্যে। বার করেক রূপ দপ করে অবাভাবিক ক্রুত গতিতে বেকে উঠেই—হঠাৎ একটা ফুটবল-রাডারের মতো চুপ্সে নেমে গিরেছিল হুৎপিওটা। হাতের তলার সেটা স্পষ্ট টের পেরেছিল স্থাইদ্ ক্যারু। টের পেরেছিল কেমন করে শরীরের উত্তাপ নিবে পিরে তা ক্রমশ নীতল আর আড়েই হরে আসতে থাকে।

—बाला चारेत्!

কোথার বেদ বিক্ষোরণ ঘটন ডিনামাইটে। ছেড়া ছেড়া মেবের কোলে বিছাতের রক্তমাথা ঠোঁট থেকে বেন বেরিয়ে এল বজ্লের ক্রুদ্ধ গর্জন। অন্তলবাহী কোনো লাভাজোতের উৎক্ষেণে বেন দোলা থেরে উঠন পারের ভ্রমার মাটিটা। -शाला चारेत्!

ভগবানের ভূল হতে পারে, শরভানের ভূল হওয়াও সম্ভব, কিন্তু জ্যাল্বার্টের নর। তিবতের কোনো পাহাড়ী গুহার গিরে পুকিরে থাকলেও সে ঠিক আবিকার করে কেলত। প্রশাস্ত মহাসাগরে ডুব দিরে থাকলেও ডুব্রী হয়ে ঠিক ধরে ফেলত জ্যালবার্ট।

কোড়ার মধ্যে ছুরি বসিরে ডাক্তার ক্লণীকে হাসতে বললে কেমন দেখার, সেটা অভিব্যক্ত হল জু সাহেবের মুখে। একটা প্রাণান্তিক মোহিনী হাসি হেসে বললে, ফালো ভালবার্ট।

- —অনেক খুঁলে আগতে হল—পিঠের ওপর একজোড়া বন্ধ্বের ভারে কুঁলো হরে হাঁপাতে হাঁপাতে আগবার্ট বলনে, সে রীভিমতো আঁড়ে ভেঞার—একেবারে মলোপার্কের মডো
- —মলোপার্কের পরিণারটা তোমারও ঘটলে আমি বেঁচে বেতাম—মনে মনে দাঁত খিঁচিয়ে বলণেও বাইরে দেঁতো হাসিটা বজার রাখতেই হল ক্যাক্সকে: কিন্তু আজকে তো তোমার—
- —না, আমার আসবার প্রান ছিল আগামী কাল সকালে। কিন্তু শিকারের লোভে মনটা এমন ছটফট কন্নছিল বে একটা দিনও আর দেরী করতে ইচ্ছে করল না। ভাছাড়া ভাবলাম, ভোমাকে একটা সারপ্রাইক্ও ক্বে, ভাই—
- —কিছ তোমার তো পুব কট হল। যদি কাল
 সকালের ট্রেনে আগতে তা হলে এসব ট্রাবল হত না—
 এতক্ষণে একটা আগত আগ্রেপ্রতারের স্বর কুটল ক্যাকর
 গলার। সভিতি তো, কালকের ট্রেনে যদি আগলবার্ট
 আগত, তা হলে কী হত কে বলতে পারে? কে বলতে
 গারে একথানা গাড়ি নিরে সে স্টেশনে বেত না, একটা
 রাজকীর আরোজনের মধ্য দিয়ে অভ্যর্থনা করে আনত না
 আগলবার্টকে। একটা রাজি—একটা সম্পূর্ণ রাজি ছিল
 ভার হাতে। সে রাজিটিতে কী হতে পারত আর কী কে
 হতে পারত না—তা তো আগলবার্টের জানার কথা নর !

অক্টা দল আড্ভেঞার তো হল না!

কীবের

প্রপর ছটো বন্দুকের তার বরে হাঁপাতে হাঁপাতে আল্বার্ট

ভাকালো নিম্মের ইাউলারের বিকে। পা বেকে ভক্ক করে

কোমর পর্যন্ত দাল-কালো কাদার একাকার। চকচকে ভূতো কোড়ার আভিজাত্য একরাশ কাদার প্রলেপে চাপা পড়ে গেছে। নিরাষ্টা করুণ চোধে লক্ষ্য করে অ্যালবার্ট বললে, টাবলও অবশ্র দিয়েছে কিছু কিছু।

তাই তো, ছি: ছি: — সংখদে জানালো জু সাংহ্ব কিন্তু মনের মধ্যে যেন একটা হিংল্ল উল্লাস সাড়া দিরে বললে, বেশ হরেছে, বেশ হয়েছে। যেমন জ্বারণে ভূতের মতো পরের বাড়ে এসে চেপে বসতে চাও, উপবৃক্ত একটা শিক্ষা হরেছে তার। শুরু কাদা কেন, কাঁদড়ের ভেতর ভূমি ঠ্যাং ভেঙে পড়ে থাকলেই জামি সত্যিকারের পুশি হতাম।

পাকা বারো মাইল পথ ঠেলিরে এখন অ্যালবার্টের প্রার নাভিষাস। শুরু কাঁধের ওপর ছটো বন্দুক রুলছে ভাই নর—হাতে একটা আধমণী স্কট্কেস। ক্যারুর প্র্যান্টেশনের স্বপ্ন স্থালবার খেসারত ইতিমধ্যেই অনেকথানি দিতে হরেছে অ্যালবার্টকে। মাঠে গোক ছেড়ে দিরে সুমুবার আশার গল্পের যে লোকটি খাটিয়া সলে করে নিয়ে গিয়েছিল এবং তারগর সারা ছপুর বাকে সেই খাটিয়া পিঠে বেঁধে মাঠঘাট বন-বাদাড় ছুটতে হয়েছিল গোকর পিছে পিছে—অ্যালবার্টের এখন সেই দুশা।

নিৰূপাৰ হয়ে শেব পৰ্যন্ত বলেই ফেলল।

- —কি হে স্মাইদ, এখন কি এখানে ঠার দাঁড় ক্রিয়ে রেখে রসালাপ ক্রবে, না ভোমার বাড়িতে নিরে গিয়ে একটু বসতে দেবে ?
- —ওহো—সো সরি !—চোথ কান বুঁলে হেছিস্ কিংবা নিখোতে ঝাঁণ দিরে পড়বার মতো জু সাহেব বললে, এসো, এসো। ওই আমার কুঠি।

কৃঠি নয়—আফিকার জনগ। কালো জানোরারের
মতো থাবা পেতে বদে আছে মার্বা কার । ও কাইস্ট্—ও
হোলি শেকার্ড, এই মহা-সংকটে নিরীহ মেবশাবক ক্
সাহেবকে রক্ষা করো প্রভূ! ইহনীদের জনন ক্সের বহনা
সইতে পেরেছ, আর মার্থার দাঁতের ধার একটু সভ্ করতে
পারবে না ? হে মানবপুত্র, ইচ্ছে করতে ভূমি সব পারো।

ধরা ইত্রকে নিয়ে বেড়াল বেমন ক্রিছুক্ষণ নিজৰিয় ভিতে থেলা করতে থাকে, তেম্নি নিম্পুর ভবিতে, সহজ নীন্তরিকতার স্থালবার্টকে আহ্বান এবং স্বাগত স্থানালো নার্থা।

পাছে অ্যালবার্ট আদবার দলে দলেই মার্থা ভার নাভাবিক গলা-বাজানো শুরু করে, এই ভরে আগে থেকেই গিয়ার হতে চাইল জু সাহেব। বেশ শক্ত করে, নাটবাট বেঁধে!

—थ्र विष् चरत्रत्र एक्टल क्यानवर्षि ।
 मार्था जःटकटल वनटन, क्रै।

— ওর এক পিসেমশাই লর্ড। লর্ড অফ—লর্ড অফ— াহাব্যের আশার আইদ্ এবার কাতর দৃষ্টিতে তাকালো গুলবার্টের দিকে।

্ আনেবার্ট তথন ঝুঁকে পড়ে গভার মনোধোগের সঙ্গে র্দমাক্ত ছ্ভোটার ফিতে খুলছিল। মাথা না ভূলেই কু রাহেবের অসমাথ্য কথাটা শেষ করে দিলে: লর্ড অফ ব্রটনক্রকশায়ার, নর্থ এক্সিটার।

ব্রেটনক্রকশায়ার—নর্থ এক্সিটার ! গালভারী শব্দ টো বোমার আওয়াজের মতো ক্রু সাহেবের নিজের নানেই শোনালো। এই ছটো প্রচণ্ড ভয়ক্কর নামের কী তিক্রিয়া মার্থার ওপরের ঘটে, সেটা লক্ষ্য করবার জন্ত সাহেব তাক্ষ চোবে তাকিয়ে রইল স্ত্রীর দিকে।

না, লক্ষ্য একেবারে ব্যর্থ হরনি। বেশ কিছুক্ষণ ধরে কটা সম্রাক্ষ বিশ্বরের চমক লেগে রইল মার্থার মূথে চোথে। গাল্ডার্স গ্রীনে কোনো এক 'ক্যাক্ষ্ক'-এর অবাস্তর একটা রম্তি নর; আালবার্টের মধ্যে সার আছে, ভার আছে। রার টাই-পিন, জামা আর হাতের বোতাম খাটি সোনার। হাতের কড়ে আঙুলের আংটিটার সব্জাভ একটুকরো থির ঝলমল করছে—হীরে হওয়াই স্তর। খুলো-কাদার থা বেশ-বাসে ক্ষান্ত স্ক্রেলতার ছাপ। আপাতত প্রক্রিটা কাদার প্রলেপের নিচে ঢাকা পড়লেও জুতোজোড়া বাটি পেটেন্ট লেদারের তাতে সন্বেহ নেই।

শেরেদের জন্মগত তীক্ষ্ণ পর্যবেক্ষণশক্তির সাহায্যে
নিট তিনেকের মধ্যে এতগুলো জিনিস আবিকার করল
র্থা। আরো আবিকার করল—অ্যালবাটের চুলের রঙ
ানালি, গারের বর্ণ তুবার গুল, মার্থার হাতের 'ক্যাট্স্
ই' পাথরটার মতো কপিল চোধের তারা।

মার পাশাপাশি কাক ? কালো মারের কালো

ছেলে; পার্সিভ্যালের এতটুকু চিক্ কোনোখানে পুঁকে পাওয়ার কোনেই।

একচোধে বিরাগ আর একচোধে বিষ্ণু বিশার ফুটিয়ে
মার্থা বললে, হাতমুথ ধুয়ে তাজা হরে নিন মিস্টার ফিলিপসন
——আমার চা এখনি তৈরী হরে যাবে।

জুতোটার ভন্বাবধান করতে করতে মাথা না জুলেই অ্যালবার্ট বললে, অনেক ধ্রুবাদ।

লর্ড অফ ত্রেটনক্রকশাম্বার, নর্থ এক্সিটার—শন্ত ত্টোকে কানের মধ্যৈ ভরে নিয়ে চায়ের সন্ধানে চলে গেল মার্থা।

শুধু কু সাহেব দাঁড়িয়ে রইল নিস্তক হয়ে। এথনো
সামলে নেয়নি আালবাট, এথনো ঠিক ধাতৃত্ব হয়ে ওঠেনি।
কিন্তু একটু পরে ? মিথ্যার বালির বাঁধটা ধ্বনে একাকার
হয়ে গেছে। কোন্ অলোকিক উপায়ে এখন আল্বার্টকে
দেখানো যাবে সারি সারি ফলস্ত আথরোটের বন, টলটলে
নীল কলের নদীতে কার্পের ঝাক, ছবির মতো পামগাছের
সারি! কোন্ ইক্রজাল দিয়ে স্পৃষ্টি করা যাবে পার্সিভ্যালের
সেই জম্জমাট রেশমের কুঠি—একখানা নয়, তৃ-তৃথানা
মোটর গাড়ি ?

কু সাহেবের কপালে ঘামের কোঁটা জমতে লাগল। জুতোটাকে ছুঁড়ে ফেলে আলবার্ট ক্লান্ডভাবে শরীর্টা মেলে দিলে।

-wi: !

কু সাহেব অপেক। করতে লাগল বলির পশুর মতো।

- —কী বিশ্রী কাদা এদিককার। উঠতে চায় না কিছুতেই।
- —হাঁ, এঁটেল মাটি।—সভায়ে জবাব দিলে জু সাহেব। বেন মাটিটা ভারই হাতে ভৈরী—সেই অপরাধে কৈফিয়ও দিচ্ছে একটা।
 - পথে थाना-थनना थूर।
- বৰ্ষায় জল জাসে।—ফিস্ফিসে গলায় কু সাহেব জানাল।
- —বোসো না, দাঁড়িরে আছো কেন ?—সহজ অন্তরন্বভার আলবার্ট বললে।

ৰসভে ভর করে। কেমন শক্তিহান হরে পড়বে, ইচ্ছে করলেই উঠে পালাভে পারবে না। তবু বসভেই হল। ারে কোথাও একবিন্দু কোর নেই। বেন সাভদিন লেরিরার ভূপে এই মাত্র উঠে দাড়িরেছে।

যে বরটার জ্বনে বসেছে—এটাই জু সাহেবের ছবিং

। পার্সিভ্যালের আমলে ঝলমল করত প্র-সমৃদ্ধিতে;
জৈতে ছিল তু ইঞ্চি পুরু রং-বেরঙের ছবি আঁকা কাশ্মারী
র্পেট; ছিল সোকা সেটি, গদী মোড়া চওড়া চওড়া
ততর চেয়ার। এখন সে কাশ্মীরী কার্পেট কুঠিবাড়ির
সানো ছাত ফাটা অন্ধকার বরে একরাশ ধূলোর লক্জায়
গীন হয়ে গেছে; সোকা সেটি কোন্ মন্তবলে ডানা মেলে
জু গেল কাক সাহেবের নিকেরই তা ভালো করে জানা
টি। ভাঙা বেতের চেয়ারগুলিতে ছারপোকার রাশি
ায়েদেরে আরসোলার আকার ধারণ করছিল—মার্থা
টি সেগুলোকে বাড়ির পেছনের আন্তাকুঁড়ে বিদায়
টির সেগুলোকে বাড়ির পেছনের আন্তাকুঁড়ে বিদায়
টিরছে।

সিমেন্টের চটা ওঠা মেজেতে এখন খানকরেক কাঁটাল তৈর চেরারা। শুরু সেদিনের স্থতিচিক্ত হয়ে ঘরে টি কৈ হৈছে—বার্মা সেগুনের একথানা বার্ণিশ ওঠ ভারী টেবিল; ওয়ালে ফাটা কাচের ক্রেমে বিবর্ণ কয়েকথানা ছবি—পানিবেশিক ইংরেজের ক্রচিমাফিক থানকতক শিকারের চত্র, ক্যান্ডাল্রিচার্জের একটা রোমহর্ষক ব্যাপার, রঙ্লে বাওয়া সোনালি ক্রেমে একথানা পঞ্চম জর্জের ছবি, গার ভলার ল্যাটিন হরকে গড়্সেভ ছ কিং। আর আছে বুজ ক্রেমে ওভাল্শেপের বড় একথানা ব্রেজিলিয়ান রাম্বা—পারা উঠে গিয়ে তার ভেতরে ফ্টেছে বসস্তের ভতাত্তের মতো একরাশ বিন্দ্চিক্ত—কাচের ওপর কুয়াশার তেথা একটা ঝাপানা আবরণ।

গৃহসজ্জা থেকে শুরু করে টানা-পাথার শৃদ্ধ ছকে

নাকড়শার জাল পর্যন্ত কিছুই দৃষ্টি এড়াল না অ্যালবার্টের।

নুছু হেসে পকেট থেকে সিগারেট কেস বার করল।

একটা সিগারেট দিলে কু সাহেবকে। একটা নিজে

রন্ধালো।

শুক্তা। কী বলা বাবে কেউ খুঁজে পেল না খানিককণ। তবু আগল্বাটই শুক্তা ভাঙল।

- —এথানে তোমরা কতদিন আছো ?
- —থায় চলিশ বৎসর।—বলভে গিয়ে ব্রু সাহেব জিলানিকেটের গোচাটা চিবিয়ে কেসল।

কিছ আর যাই হোক, নিষ্ঠুর নর আগল্বার্ট। বন্দুক দেখেই বে পাখি মাটিতে লুটিয়ে পড়েছে, তার ওপর অকারণে আরো হুটো একটা টোটা খরচ করবার প্রবৃত্তি নেই তার। আর তা ছাড়া—তা ছাড়া মদের নেশা। সেই নেশার ঝোঁকে নিজের অত্প্ত কামনাগুলোর ওপর করনার রঙ কলিরে ছিল আইদ্। তার দোষ নেই।

স্থতরাং অ্যালবার্ট সমস্ত জিনিসটাকে বেন পাশ কাটিয়ে গেল।

—তোমাদের বাড়িটা একটু পুরোনো হলেও নেহাৎ ধারাপ নর।

-0 I

—বেশ থোলা মেলা। চারদিকে চমৎকার মুক্ত-প্রকৃতি ?

ঠাটা করছে নাকি? জু সাহেব বৃঝতে পারণ না। একবারের জন্তে মাথা ভূলেই চোখ নামিরে দিলে।

—শহর থেকে এখানে এসে বেন স্বস্তির নিংশাস কোতে পারছি। আ:—কী চমৎকার মাঠের হাওয়া। দূরের গাছপালাগুলোকেও কি স্থন্ধর দেখাছে।

ঠাট্টা ? জু সাহেব একটা ঢোঁক গিলল। বদি ঠাট্টাও হর—তব্ কি অন্তৃত ক্তিৰ আালবাটের ! ছুরি বদি চালিন্ত্রেও থাকে, তার আগে ব্যবহার করেছে মর্ফিল্লা— বেদনা বিন্দুমাত্র টের পাবার উপায় নেই!

-E !

—আমার এই সব কুঠিবাড়ির ওপরে একটা অত্ত্ত মোহ আছে। ইংল্যাণ্ডের প্রাচীন ক্যাস্লগুলোডে গেলে এইরকম একটা অত্ত্ অহুভৃতি জাগে আমার। পুরোনো বাড়ি আর বিচিত্র প্রকৃতি মিলে বেন একটা আশ্বর্ষ অতীতকে জাগিয়ে তোলে। বর্তদানটাকেই কেমন অবাত্তব বলে বোধ হতে থাকে।

কাব্য করছে নাকি জ্যাল্বার্ট ? না ব্যক্ষাব্য ?

এবার সাহসে তর করে কু সাহেব সোজা তাকিরে দেখল। না—ব্যক্তের চিক্ত কোথাও নেই। নিজের মধ্যে বেন মর্য হয়ে গেছে আগবার্ট, হারিরে গেছে নিজের ভাবনার গভীরে। চোশ ছটোতে একটা মুগ্ধ হুদায়ভা। সে কি এই বাড়ির প্রভাবেই ? না—ইংল্যাভের সেই

স্ক্রীতের বনছারার মারার স্বাচ্ছর স্বতিকার ক্যাস্লগুলির স্বপ্ন-স্বতিতে?

দিপজের সর্ক গাছগুলি ছাড়িরে আরো দূরে সঞ্চার করে কিরল অ্যাল্বার্টের দৃষ্টি।

- —আচ্ছা, আকাশের কোলে ওই যে নীল মেখের মতো রেখা—ওটাই কি হিমালয়ান রেঞ্চ ?
- ওর নাম— তি— তিন পাহাড়। বাংলাদেশের ভূগোল সম্পর্কে জ্যালবার্টের জ্ঞানটা থুব মারাত্মক নত্ত্ব, এমনি প্রত্যাশা করে কু সাহেব বললে, তা হিমালয়ান্রেঞ্ছ বলতে পারো বই কি!
- —ভারী স্থন্দর দেখাছে ভো°। ঠিক বেন একটা মোবের পিঠের মতো যনে হছে।
 - -- E 1
- —আছো, মাউণ্ট্ এভারেস্ দেখা বায়না এখান থেকে? আর কাঞ্নজভ্যা?

এতবড় মিথ্যে কথা আর কী করে বলা যার ? জবাব দিতে হল, না।

- —তবু এও মন্দ নয়।—হাতের সিগারেটটার কথা ভূলে গিরে অ্যালবার্ট পাহাড়টার দিকে তাকিয়ে রইল।
 - हां धरमत्ह ।

বীণার ঝন্ধারের মজো শোনালো মার্থার গলা। চমকে ছ্লেনেই ক্ষিরে ভাকালো। মার্থার এ গলা ক্যাক্ত সাহেব সর্বশেষ ভনেছিল জীবনের পূর্বরাগ পর্বে। ভারপর এভকাল ধরে কাটা-কাঁসরের পালাই চলে এসেছে।

তথু তাই নয়। মাত্র পনেরো মিনিটের মধ্যেই আশ্রেকভাবে নিজের ভোল বদলে কেলেছে মার্থা। কোন্ কান্দে একটা ভালো পোষাক ভূলে রেখেছিল, সেইটে পরে একটো ভালে মুখে পড়েছে প্রসাধনের একটা লঘু প্রতেপ। হঠাৎ যেন দশ বছর আপেকার কিশোরী মার্থা নবজর লাভ করেছে।

তথু তাই নর। পুরোনো কাঠের বান্সটা থেকে কী করে খুঁজে এনেছে সে আমলের একটা আর্দালীর পোবাক। চাপিরেছে রাজবংশী চাকরটার গারে। ছ একটা জারগার পোকার কেটেছে বটে, তবু তো মন্দ বেখাছে না একেবারে।

চাক্রটা নামনের টেবিলের ওপর একটা কাঠের

টেতে করে চা আর ধাবার রাধল। কোধার পোল মা চিনির চা—কেনন করে এল শালা কটি, একট্থানি মাধঃ ছটো ডিম? বিহবল হয়ে ক্যাক সাহেব বসে রইল!

কুধার্ত অ্যালবার্ট গোগ্রাসে কটি ডিম গিলতে লাগং আর মাঝে মাঝে ক্বতজ্ঞ দৃষ্টি কেলতে লাগল মার্থার ওপত্রে

কিছ গুধুই কি ক্বতক্ত দৃষ্টি, না আরো কিছু? আ ক্যাকর মনে হল, দশবছর আগে কিশোরী মার্থা সভি: ফুল্মরী ছিল তা হলে! হোক নেটিভ ক্রীশ্চানের মেটে তবু ফর্সার দিকেই তার গায়ের রঙ, চোধের তা ছটো আশ্চর্য গভীর—মুখে একটা লিখ ক্মনীরভ আরো আশ্চর্য, মার্থার বা গালে একটা ছোট ভিল আছে—সেটাও কেন এভদিন তার চোধে পড়েনি?

—তুমি চুপ করে বলে আছ কেন ? চা থাবে না ? সম্ভাবণটা ক্যাক্তর প্রতি। এবার আর বীণা বা না, কাটা কাঁসরের রেশটা অস্পাই ভাবে শুনতে পাং গেল।

—হাা, এই যে নিই—খতসভ থেছে একটা চা কাপ কোলের দিকে টেনে নিলে জু সাহেব।

থাবার শেব করে রুমালে মুখটা সুছে নিলে আালবা মার্থাকে পরিভপ্ত স্বরে জানালো, অশেব ধ্রুবাদ।

মার্থা হাসল। কু সাহেবের আবার মনে হল ছ শালা দাঁতগুলি।

মার্থা বললে, এই পাড়াগাঁরে বখন এসে পড়েরে তথন এ কটটুকু করতেই হবে। এথানে এ ছাড়া গ কিছুই পাওয়া যায় না।

বেশ ভালো ইংরেজি বলে তো মার্থা। সহল, ছ্র্ চমংকার নির্ভুল উচ্চারণ। ইা—হাঁ, মনে পজে, মিশনারী বাপের মেরে—দার্জিনিংরের কী একটা ছুল থে জুনিয়ার কেছিল পাশ করেছিল বটে। আর এই মার্থ এতকাল ভূলে ছিল আইদ্ ক্যাক্ষ—ভূলে ছিল দার্থ দশ । ধরে। পোল্ডার্স গ্রীপে ক্যাক্ষ কোম্পানির জাঞ্জভ এতদিন এই বাত্তব জগংটা কোন্ধানে হারিরে গিরেছি

ক্যাক্সর কালো হাতের পাশে ধব্ধবে সাদা এক হাত আাল্বার্টের। সে হাতের কড়ে আঙুলে থকখক ক ক্ষমং হরিং একথও পাধর—হীরেই নিশ্চর। সোট রঙের চুলে থকখক করছে বিকেলের সোনালি আহ এই-ই পার্দিছ্যালের সৃত্যিকারের স্বন্ধাতি, তার সংগাত ।
আপাদমন্তক এমন একটা অনক্ততা নিবে সামনে এসে
দাঁড়িয়েছে বে এর পাশাপাশি কালো মারের কালো ছেলে
এক মৃহুর্তে মিথ্যে হয়ে গেছে। যেন অবচেতন মনে হঠাৎ
উপলব্ধি করতে পেরেছে, অমন করে তাকে পথের খ্লোর
কলে দিয়ে কেন চলে গিয়েছিল পার্মিস্ভাল কার !

- —আপনি কথনো বান নি ইলোরোপে?—মার্থার প্রতি জ্যাল্বার্টের একটা উজ্জল প্রসর প্রশ্ন।
 - -- नाः-- मार्थात्र मीर्ययान ।
- বাবেন একবার। দেখে আসবেন। মার্থাকে আসবার্ট বলে চলল, যদি আগে থেকেই খবর দেন, আমিও না হয় সহযাত্রী হবো। তারপর আমাদের ওখানে ছ চারদিন আতিথা নিয়ে আসবেন।

* ক্যারু সাহেব চুপ করে বসে রইল। এ আলাপের বখ্যে তার যেন কোথাও স্থান নেই। সে যেন একান্তই অনাস্থত, অবান্থিত আগন্তক। এথানে আলবার্ট পার্সিভ্যালের সাগোত্র—আর মার্থা? মার্থা যেন হঠাৎ লশ বছর আগে তার কুমারী জীবনে ফিরে গেছে,—পরিছেন, কমনীয় একটি বিত্বী মেয়ে। গোল্ডার্স গ্রীপের স্থা না দেখালে যে মার্থাকে কোনোদিন জয় করা বেত না।

ক্যাক ভনে যেতে লাগল।

- -- वाद्यन अभिवादि । त्मर्थ भूमि हत्यन ।
- की चार्छ प्रभवात १-मार्थात नाग्रह श्रम।
- —সেণ্ট্ পিটারস্ ক্যাথিজ্ঞাল। আটশো বছর আগেকার।

--আর গ

—আর জয়তত। উইলিয়াদ দি ক্লারার তৈরী ক্রিয়েছিলেন।

এক্সিটার। চোধ বুবে মার্থা দেখতে লাগল।

— ওখান থেকে কিছু দ্রেই ত্রেটনক্রকশায়ার।
সেইখানে আমাদের বাড়ি ক্রকশায়ার হল। ছবির মতো
একেবারে। বড় বড় পপলার গাছের ছায়া। হনিসাক্লে
ঢাকা বাড়িগুলি। পপিতে আলো করা বাগান, আর রাশি
রাশি পাকা আপেল।

কু সাহেব বেমন করে তার প্ল্যাণ্টেশনের গল বলেছিল,

এ কি তাই ? ঠিক ব্ঝতে পারল না। কিন্তু এটা ব্ঝতে
পারল এই মূহুর্তে মার্থা আর অ্যালবার্টের মধ্যে সে বেন
কোথাও নেই। একটা অন্ধিকারীর মতো সসম্বন্দে

মাঠের ওপারে স্থ অন্ত গেল। অন্ধকার নেমে আসবার আগেই উঠল ঝিঁঝিঁর ডাক। কুঠিবাড়ির কলা-ভাঙা জানলা বাতাসে আর্তনাদ তুলতে লাগল পেদ্বার কারার মতো।

মার্থা উঠে দাঁড়িয়ে বললে, আলো জেলে আনি।

আশ্চর্য চঞ্চল পায়ে বেরিয়ে গেল সে। আটলো বছর
আগেকার সেণ্ট্পিটারস্ ক্যাথিজাল তাকে হাতছানি
দিছে, ডাক পাঠিয়েছে উইলিয়াম দি ককারারের
সিটাডেল। হনিসাক্লের আবরণে ঢাকা বাড়িগুলির চারপাশ থেকে তার রক্তে সাড়া দিয়েছে হয়তো দীর্ঘকায়
পপলার-বীথির মর্মর স্বর।

ज्यानवार्षे अक्टा निशादवरे धवादना ।

আর আইদ্ ক্যারু ভনতে পেলো মাঠের ওপারে ডেকে উঠ্ছে শেয়াল। ক্রমশঃ



পূৰ্ববঙ্গের আত্রয়প্রার্থী সমস্থা (৩)

অধ্যাপক শ্রীশ্যামস্থন্দর বন্দ্যোপাধ্যায়

পূর্ববন্ধের আশ্ররপ্রার্থী সমস্ভার সর্বব্রোসী চাপে পশ্চিমবঙ্গের নিজম ছালার সমস্তা যে আজ চাপা পড়িয়া গিয়াছে, একথা বর্তমান প্রবন্ধে আগেই বলা হইয়াছে। এই অ্যান্ডাবিক পরিস্থিতির প্রতিক্রিয়া মুদুরপ্রসারী। পশ্চিমবঙ্গের শিল্প বাণিজাগত আয় যতই হউক এবং শিল বাণিজ্যে যত লোকেরই কর্মসংস্থান হইয়া থাকুক, অরণ রাখিতে ছইবে বে, এই সব শিল্পবাণিজ্যের মূলধন বা শ্রমিক সংস্থানের ব্যাপারে অবালালী প্রতাপই বেশী, বালালার নিজৰ লাভ একেত্রে পুরই সীমাবদ্ধ। কাজেই মোটের উপর পশ্চিমবঙ্গের পুরাতন অধিবাদীদের আর্থিক অবস্থা কোনকালেই বচ্ছল নছে। এই প্রদেশে ঘ্রাশিরে নিবৃক্ত শ্রমিকের সংখ্যা সাড়ে ছয় লক্ষের কিছু বেশী, ইহাদের মধ্যে অবাঙ্গালী শ্রমিকদের কথা বাদ দিলেও পশ্চিমবঙ্গের প্রায় আডাই কোট অধিবাসীর হিসাবে যন্ত্রশিক্ষের শ্রমিক সংখ্যা সমগ্র প্রদেশের সার্ব্যঞ্জনীন কর্মসংস্থান সমস্থার পরিপ্রেক্সিতে যথেষ্ট্র নর এবং সহজেই অনুষান করা যাইতে পারে যে, ভারতের ক্সার সমগ্রভাবে পশ্চিমবঙ্গের অর্থনীতিও কুবিকেন্দ্রিক। অত্যধিক লোক কুবির উপর নির্ভরশীল বলিয়া পশ্চিমবলে আবাদযোগ্য পতিত কুবি জমির পরিমাণ প্রচুর হইতে পারে না। অনুমিত ইর এইরূপ জমি পরিমাণে ২০ লক্ষ একরের মত। এই জমি কিন্ত টুকরো টুকরো ভাবে প্রদেশের নানা স্থানে **इ**फ्रांटेंबा व्याद्ध এवः माधात्र विचारत देशांत्र होर नाच्यनक वा महस इत नाई बिनदाई हु:इ कृतिकीवी পन्চिमदक्रवामी এগুলি অনাবাদী পাকিতে দিয়াছে। ১৯৪১ খ্রীষ্টাব্দের আদমহুমারী অনুযায়ী বাংলার গত ৪০ বৎসরে শতকরা ৪৩% ভাগ জনসংখ্যা বাড়িয়াছে। कृषिक्रित्र পরিমাণ বাড়ে নাই বলিরা এবং ক্সল উৎপাদন বাড়িবার পরিবর্ত্তে নিমপ নীতি অমুবারী কমের দিকে গিরাছে বলিয়া এই অদেশে আর্থিক তথা বেকার সমস্তা ক্রমণ:ই তীব্র আকার ধারণ করিয়াছে। পূর্ববঙ্গের তুলনার অপেকাকৃত অমুর্বার পশ্চিমবঙ্গেই যে কৃষিজীবির পক্ষে এই সমস্তার চাপ অধিকতর ভরাবহ হইরাছে, তাহা বল। বাহলা। বাধীনতালাভের পর সরকারী প্ররাসে পশ্চিম বাজ্ঞার স্থারী অধিবাসীরা নিজেদের দীর্ঘকালীন ছঃখমোচনের অনেক আশা করিরাছিল। কিন্ত দেশবিভাগের পর পাকিন্তানে বসবাস অসম্ভব হন্তরায় পূর্ববঙ্গ হইতে বেভাবে লক লক লোক পশ্চিমবলে আসিয়া উপস্থিত হইল এবং বেভাবে তাহারা সরকারের আর্থিক সঙ্গতি বিপন্ন করিল, তাহাতে পশ্চিমবক্ষের আর্থিক পুনর্গঠনের প্রশ্ন আরু পশ্চিমবলের নিছক অভিত্ব বন্দার প্রথের অন্তরালে আত্মগোপন করিতে বাধ্য হইরাছে। ভারতীর বুজরাষ্ট্রের, বিশেষ করিয়া পশ্চিমবলের উপর গভীর ভর্সায় ফেব

সর্বহারা সীমান্ত অতিক্রম করিরাছে, তাহাদের উপস্থিত বাঁচাইবার সমস্তা এত জরুরী যে, এখন আশ্ররপ্রার্থী সমস্তা ছাড়া পশ্চিমবঙ্গে অক্ত কোন সমস্তা আলোচিত হইবারই ক্যোগ পাইতেছে না। কিন্ত मानवजात आरवनन ये महानहे हर्डेक, এইভাবে স্বকিছু आत मीर्यकान উপেকা করা উচিত নর। আশ্রয়প্রার্থী সমক্তা এমনই বিচিত্র এবং প্রদারপ্রীল বে, পরিমিত সম্পদু লইয়া এ সমস্ভার সমাধানের পর অন্ত কিছুতে হাত দিবার কলন। করাই বাতুলতা মাত্র। এক্ষেত্রে দেখিতে শুনিতে ধারাপ হইলেও দীর্ঘ উপেক্ষিত পশ্চিমবক্সের নিজৰ সমস্তাগুলি এইবার আপন ঋকতে বিবেচিত হওৱা সরকার। পশ্চিম-বঙ্গের ভৌগলিক অবস্থিতি, আর্থিক অবস্থা ইঙ্যাদি শ্মরণ করিয়ঃ সারা ভারত যদি পূর্ববঙ্গের আশ্রয়প্রার্থী সমস্তাকে সত্যকার সর্বভারতীর সমস্তা হিসাবে গ্ৰহণ করিত, তাহা হইলেও পশ্চিমবঙ্গও অবশুই বেচ্ছার ষভটা সম্ভব হু:খবরণে অপ্রদর হইত, কিন্তু কার্যাত: সর্কভারতীর সক্রিয় সহযোগিতা যথেই না হওয়ায় পশ্চিমবঙ্গের উপরই চাপ পড়িতেছে অসম্ভব রকম বেশী এবং ফলে পশ্চিমবঙ্গের অর্থনীতি ও সমাজব্যবস্থা ভাঙ্গিয়া পড়িবার উপক্রম হইরাছে। এই শোচনীয় পরিস্থিতির পরিপ্রেক্ষিতেই অনেকে সাম্প্রতিক দিলী-চুক্তির পর বিষয়মনে শরণার্থীদের পূর্ববঙ্গে প্রত্যাগমনের প্রয়োজন লইয়া আলোচনা করিতেছেন।

দিলীচুক্তি বতটা কাৰ্য্যকরী হর এবং ভারতসরকার ও ভারতের বিভিন্ন রাজ্যের কর্তৃপক সহাতৃভূতিস্চক ননোভাব লইয়া বভটা আগাইয়া আসেন, তত্তই মঙ্গল। অবশ্র পরিছিতির প্রভুত উন্নতি লইলেও পূর্ববঙ্গ হইতে আগত সমন্ত আশ্ররপ্রার্থীর পূর্বেবকে প্রভাগমন আশা করা যায় না। অবস্থার উন্নতি না ইইলে আশ্ররপ্রার্থী সমস্তাই হয়তো পশ্চিমবন্ধের সর্বনাশ ঘটাইবে। যাহা হউক, পরিকল্পনাদি রচনার সমর আশাবাদী মনোভাব লইরা অগ্রসর হওয়া ছাড়া উপায়ও নাই। পূর্ববঙ্গের বহু শরণার্থী শেব পর্যান্ত ভারতে থাকিরা যাইবে, অন্ত প্রাণেশে বছাই ছান হউক, পশ্চিমবঙ্গে থাকিবে ইহাদের একটি বড অংশ। এই সব আশ্ররপ্রার্থীর কর্ম্মংস্থান ছাড়া পশ্চিমবঙ্গের নিজৰ বেকার সমস্তা বিদুরণেও অনেক কর্মাংছানের প্রয়োজন। এইভাবে বহুসংখ্যক মৃতন কর্মের সংখ্যন ভুৱাহিত না হইলে অৰ্থনৈতিক ও আভান্তরীণ বিশ্বলার চাপে পশ্চিমবজের ভবিষ্যত অঞ্জার হইরা বাইবে বলিয়া আশভা হয়। পশ্চিম্বক্রে নিজের ক্ষ্ডা বেরুপ, ডাহাতে এই কুরাকার এবেশ এ বিষয়ে লক্ষণীয় সাক্ষালাভ করিতে পাদিবে কিনা সক্ষেত। আপেই

ৰণা হইরাছে পশ্চিমবজের আবাদবোগ্য পভিত জমির পরিমাণ ২০ লক এক্রের মত হইতে পারে, তবে এই জমি অত্যন্ত বিচ্ছিরতাবে আদেশের নানা স্থানে ছড়াইরা আছে। এই জমি বতদুর সম্ভব ব্যবহার -করিতেই হইবে। এখানে উল্লেখযোগ্য বে, পশ্চিমবঙ্গের প্রতিবেশী রাজ্য আসাম, বিহার ও উডিয়ার সমগ্রভাবে আবাদবোগ্য পতিত অমির পরিমাণ যথাক্রমে ১ কোটি ৭৪ লক্ষ একর, ৬৪ লক্ষ ৫০ হাজার একর ও ৩১ লক ৪৪ হাজার একর, বিশেষভাবে ২০।২৫ লক শরণাথী কৃষিজীবীকে এই সৰ অমিতে পুনৰ্বাসন করা চলিতে পারে। পশ্চিমবাংলার কৃবিব্যবস্থা বর্ত্তমানে বুগান্তরের প্রতীক্ষার রহিরাছে, দামোদর পরিকল্পনা কার্য্যকরী হইলে » লক্ষ একর ও মরুরাকা প্রভৃতি অস্তান্ত দেচ পরিকল্পনা কার্য্যকরী হইলে আরও ১৩ লক একর, একুনে পশ্চিমবলের এই ২২ লক্ষ একর জমিতে ৰলনেচের সম্ভাবনা আছে। কাজেই শরণার্থী পুনর্বসতি এবং আদেশিক আর্থিক পুনর্গঠনের প্রশ্নের নিরিখে এই কুবিসম্পর্কিত উন্নয়ন পরিকলনাগুলির কার্যাকারিতা ক্রুতত্তর হওয়া দরকার ভবে ইহা সত্ত্বেও বলা যাইতে পারে যে, পূর্ব্ববেসর শরণাবীদের মধ্যে অধিকাংশ কুষক খ্রেণীর লোক হওরার ইহাদিগের সামান্ত অংশকেই নিজ বৃত্তিতে পশ্চিমবঙ্গে পুন: সংস্থাপন সম্ভব श्हेरव ।

দিলীর বিধাত অর্থনৈতিক সাত্তাহিক 'ইটার্ণ ইকনমিট্র' গত ২১শে এতিলের সংখ্যার পশ্চিমবঙ্গের নিরোগসমস্তার সমাধানস্থচক একটি পরিকল্পনা প্রকাশ করিয়াছেন। এই পরিকল্পনার তাঁহারা অনুষান করিরাছেন যে, এই আদেশের কুবিশিল্পের উন্নতিসাধন করিরা এখানে আগামী তিন বৎসরের মধ্যে ৫ লক নৃতন কর্মসংস্থান সম্ভব হইতে পারে। একভ ওাহারা নূতন মূলধনের প্রয়োজন অফুমান করিরাছেন ১২৫ কোটি টাকা। পশ্চিমবঙ্গের বর্ত্তমান জাতীর আয়ের পরিমাণে ৭০০ কোটি টাকার মত। উপরোক্ত মূলধন খাটবার কলে আতীর আর শতকরা ২০ ভাগ বাড়িলে ৫ লক বাড়তি কর্মসংখ্যানের সভাবনা। তবে শতকরা ২০ ভাগ বা ১৪০ কোট টাকার মধ্যে ভাহারা কুবির উপর বেশী ভরসা না করিরা কুবির হিসাবে ৩৫ কোট টাকা লগ্নী করিয়া বৎসরে ১০ কোট টাকা আর বাড়াইবার কথা ৰলিয়াছেন এবং আশা ক্রিয়াছেন বে সম্প্রারিত কুবিতে নৃত্ন এক লক লোকের কর্মসংস্থান হইবে। পশ্চিমবল বলিও শিল্পের হিসাবে কিছুটা সুৰুত্ত, তবু আপেক্ষিক হুবিধা থাকার পশ্চিমবলে আরও निसम्बानात्र महत्र ७ मध्य विन्ता हेडार्व हेक्निमाडेत्र धात्रणाः ভাছাৰের মতে শিল্পাশিজ্যপাতে ৮৫ কোট টাকা বিনিযুক্ত হইলে আগামী ভিন বৎসরের মধ্যে বাৎসরিক ১৩০ কোট টাকা ভার বৃদ্ধি ছইতে পারে এবং কর্মসংস্থান হইতে পারে বোট । লক্ষ্য লোকের। এই क्रुटन छेट्यथरवाश व शन्तिभवटन वर्डमादन निव मश्मर्वन स्ट्रेट अहे প্রায়েশের জাতীয় আরের শভকরা ৩৪ ভাগ বা ২৪০ কোট টাকা আর হয় এবং এই সব পিছে সাড়ে হয় লক্ষের কিছু বেশী লোকের কর্মসংস্থান

হইরাছে। এই শিল্পভানিতে নিরোজিত মূলখনের পরিমাণ ১০০ কোট ৫৫ লক্ষ টাকা।

ইটার্ব ইকন্মিট্ট পত্রিকার উপরোক্ত পরিকল্পনার গুরুত্ব অবস্তই খীকার্যা, কিন্তু সমস্ভার ব্যাপকভার তুলনার ইহা বে বথেষ্ট নর, ভাহা লইরা আলোচনা না করিলেও চলিবে। তবু ইটার্ণ ইকন্মিট বাহা বলিয়াছেন, কাৰ্যাক্ষেত্ৰে ভাহাও কডখানি সম্ভব হইবে কে জানে ? করলাখনি এলাকার নিকটবর্তী হওরার এবং কলিকাতা বন্দর থাকার পশ্চিমবলের শিল্প সংগঠনের স্থবিধা অবশুই আছে, কিন্তু সারা ভারতের হিসাবে পশ্চিমবঙ্গ ইতিমধ্যেই বেভাবে শিলসমুদ্ধ হইরাছে, ভাছাতে এই প্রদেশে আরও অনেক বেশী শিল্পপ্রদারের চেষ্টার বুঁকি আছে। পুৰিবীর সর্বত্য বুদ্ধোত্তর অর্থনৈতিক মন্দা দেখা দিতে আরম্ভ করিয়াছে, এসময় মুলখন বিনিয়োগে লোকের ইভন্তত: করাও বেষদ বাভাবিক, মূলখন বিনিয়োগে লাভের ভরসাও ভেমনি কম। সীমান্তবর্তী প্রদেশ ছিসাবে পশ্চিমবঙ্গে বিশুখলা যথন তখন আশহা করা যার, কারেই খীরে হুছে পরিকল্পনা অনুযায়ী শিল্পস্থানারণ ও সম্প্রদারিত শিল্পে ৰাড়ডি কৰ্মসংস্থান ইচ্ছা থাকিলেই হয়তো নিশ্চিত হইবে লা। পশ্চিমবঙ্গ ইতিমধোই বিশালায়তন ভারতের আয়কর ও কর্পোরেশন ট্যান্সের এক পঞ্চমাংশ জোগাইরা থাকে। ইহা হইতেই পশ্চিমবলের শিল্প সংস্থান অফুমান করা বার। ইহার উপর প্রচুর পরিমাণে নৃতন শিল্প এই প্রদেশে বাড়াইবার আগে অক্ত প্রদেশের শিল্পপ্রসারের প্রয়াসও লক্ষ্য করা দরকার। কলিকাতার বন্দর দিয়া এখনই বৎসরে ৩০০ কোটি টাকার বড পণ্য চলাচল হয়। পশ্চিমবাংলার উৎপত্ন শিল্পগ্রের মূল্য ২৪০ কোটি টাকার মত এবং ইহার মধ্যে একমাত্র কলিকাভার কেল্রে ১৬০ কোট টাকা মূল্যের পণ্য উৎপন্ন হর। আশ্ররপ্রাধা সমস্তার চাপে এবং রাজনৈতিক **কাটকাবাত্রীর পীঠন্তান হওরার কলিকাতার বর্তমানে বে হাল হইতেছে,** ভাহাতে কলিকাতা-কেক্সিক পশ্চিমবাংলার আরও প্রভৃত শিল্পসন্তানারণ সভাই অনিশ্চিত। হুগলী নদী মঞ্জিরা বাইভেছে বলিয়া বন্দর হিসাবে কলিকাতার ভবিষ্ঠত সকলেরই মাথাব্যধার কারণ হইরা উটিভেছে। শিল্প ৰাণিজ্যসন্তানারণ করিয়া পশ্চিমবঙ্গে অসংখ্য নৃতন লোকের কর্মসংস্থানের ওভেছা একাশের সময় হগলী নদীর ক্রমাবনভিন্ন কথাও অবস্তই স্মরণ রাখিতে হইবে ৷ সমগ্রভাবে পশ্চিমবঙ্গের সরকারী অর্থনীতির কাঠামো ভালিয়া পড়িবার উপক্রম হইয়াছে, বেসরকারী অর্থনীতিও বে শোচনীয় গুৱে আসিরা পড়িরাছে তাহা টাকা ও শেরার বাজারের মন্দা অবস্থা হটতে অনুসান করা বার। এসমর শিল্পস্থানারণ হটবে ভাহার দায়িছে? অবচ একথাও টিক বে, ভূবির অসার-সভাবনা একাছ সীমাবদ্ধ বলিয়া কর্মসংস্থানের জন্ত শিল্পবাশিল্যের বুধাপেকী বা হটরা উপার নাই। পশ্চিমবল নীমান্তের রাজ্য বলিরাই হউক, व्यवता अहे बारारन कारनंद्र मक नर्सिविश क्षतिशत कामा मा बाकिनाव বছই হউক, অবালালী শিল্পভিত্রা ইতিবংখ্য বাংলা হইতে ভাহাদের কার্যার বতটা সভব ভটাইবার কথা চিতা ক্রিভেছেন। কোৰ কোৰ বড় প্ৰতিষ্ঠাৰ ইতিষধ্যেই **কলিকাতা হইতে তাহা**ছের ধ্যান অফিনের ফারুকর্ম ভারতের অন্ত কোন বত সহরে ছানান্তরিত করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। ভারত সরকারের শিল্পনীতিও বিকেঞ্জী-করণের দিকে। সরকারী প্রবাসে ভারতে বে ছুইটি লোহ ও ইস্পাতের ৰত্ব কারথানা বসিতেছে, আপেকিক হুবিধা থাকা সত্ত্বেও তাহাদের একটিও পশ্চিমবঙ্গে অভিটিত হইতেছে না। স্বতরাং একেত্রে সরকার ৰবি নীতি পরিবর্তন করিয়া ইনডাস্ট্রিয়াল কিনাল করপোরেশনের ছবিধা দিছে বা পঞ্চলবে পর্থ সাহাব্য করিতে রাজী থাকেন, তবেই পশ্চিমবঙ্গে নৃতন করিরা শিল্পসম্প্রদারণ আশা করা বার। বেসরকারী পুত্র হইতে মূলধন সংগ্রহ এখন কিরুপ কঠিন ও অনিশ্চিত হইরা উঠিরাছে, ভারতসরকার ও সিদ্মিরা চীম নেভিগেশন কোম্পানীর বুক্ত প্রবাসে পরাবাধী জাহাজ প্রতিষ্ঠান স্থাপনের চেট্রাতেই ভাহার প্রমাণ विनिद्ध। এই श्रान्तिकान देष्टार्थ निर्णिश कर्त्भारतम्बन स्ननगांधात्रत्व निक्टे इट्रेंड मठकता २७ छात्र मूनधन मः श्रहत कथा हिन, किंद्र শেৰপৰ্য্যন্ত বাজারের অবস্থা দেখিরা সরকার জনসাধারণের আশা ছাড়িরা দিরা নিজেদের পূর্ব্বসিদ্ধান্তমত শতকরা ০১ ভাগ শেয়ার ছাড়াও উপরোক্ত ২০ ভাগ শেরারও নিজেরাই গ্রহণ করিবার সংকল করিরাছেন।

পশ্চিমবলের আর্থিক অবস্থা তাল নয়, কেন্দ্র হইতে আশ্রয়এথার্থী থাতে বে ৫ কোটি টাকা পাওয়া গিয়াছে, সামরিক সাহাব্যদান ব্যবস্থা পরিচালনায়ও তাহা ববেষ্ট মনে হয় না; এখন পূর্ববঙ্গ হইতে আগত বছ লক লোকের পূনর্বাগতির সুমন্তার সমাধান কিয়পে হইবে ৄ আগেই বলা হইরাছে, পূর্ববঙ্গ হইতে বাহারা আগিয়াছে তাহারা অধিকাংশই কৃষিজীবী এবং তাহাদের অনেকেই নিঃসবল। ইহাদের বরের ব্যবস্থা করিতে হইবে, কাজের ঠিক করিয়া দিতে হইবে, বতদিন না নিজের পারে ইইবে, কাজের ঠিক করিয়া দিতে হইবে, বতদিন না নিজের পারে ইইবে, কাজের ঠিক করিয়া দিতে হইবে, বতদিন না নিজের পারে ইইবে। খাস পশ্চিমবলে এসব হওয়া কেমন করিয়া সম্ভব ৄ আলোচ্য প্রবন্ধের পূর্ববিদ্যালিত অংশে দেখানো হইয়াছে ১৯৪১ খ্রীষ্টাব্দের আদমস্থমারী অসুবায়ী ২ কোটি ১২ লক্ষ লোকের উপর দেশবিভাগের প্রথম ধাকায় আশ্রয়প্রার্থী ও মৃত্যু অপেকা জয়াহারের আধিক্যের দক্ষণ বাড়তি জনসংখ্যা ধরিয়া বে লোক বাড়িয়াছে, তাহাতে এখানে প্রতি বর্গনাইলে জনবস্থির বনত্ব গদ্ধ বলা হল, এইওলির মাইল পিছু জন-

मःशात्र यनम् यथाक्राम १०७, ६৮२ ७ ७१७। कात्वरे महामुक्छि আছে বলিয়াই পূৰ্ববঙ্গের অসংখ্য শরণাখীকে পশ্চিমবন্ধ বদি স্থান দিবার তুঃসাহস করে, ভাছা ভাছার আত্মহত্যারই কারণ হইবে। কোন রাষ্ট্রের একজন সাধারণ নাগরিক সম্পর্কে রাষ্ট্রের বতথানি দারিছ, একজন সর্বহারা শরণার্থীকে আত্রর দিবার দারিছ তাহার চেরে অনেক বেশী। পশ্চিমবন্ধ তাহার বহু ভুর্ভাগ্য পীড়িত পুরাতন বাসিন্দাদের কিছু ক্রিতে পারে না, শরণার্থীদের সব প্রয়োলন মিটাইবার দারিছ শইবে কোন সাহদে ? দেশ বিভাগের সময় ভারতীয় নেতৃবর্গ বে প্রতিশ্রুতি দিয়াছিলেন, শরণার্থীদের দেই প্রতিশ্রুতিই সবচেরে বড় ৰুলধন। এই প্ৰতিশ্ৰুতি পালন করিয়া তাহাদিপকে বাঁচাইবার দারিত্ব ভারতসরকারের তথা ভীরতের সমস্ত রাজ্যের। পশ্চিমব**লে** ভিডের প্রথম চাপ পড়িবেই, কিন্তু তাই বলিয়া পশ্চিমবঙ্গকে বর্ত্তমানে পুনর্বদতির বে বিপুল সম্ভার সন্থীন হইতে হইতেছে, ভাছা পশ্চিমবঙ্গের সাধ্যাতীত। কেন্দ্রীর সরকারের অর্থসাহাব্যে শরণার্থীদের বর বাঁধিয়া দিলেই বা তাহাদের সাম্মিক সাহায্য করিলেই সমস্তার लिय इहेरव ना. এই अनजात हाल इहेरिक लिकियतस्त्र माधात्रण अर्थ-ৰাবস্থাকে বন্ধা করিবার কি হইবে ?

স্থানাবেপের দিক ছইতে শরণার্থীদের পশ্চিমবঙ্গে আশ্রয়লান্তই বাঞ্নীর, অক্তপ্রদেশে তাহাদের বাঙ্গালীত্ব হরতো বিপর হইবে, কিন্তু পরিছিতি বর্ত্তমানে যেরপ তাহাতে এই ক্রদমাবেগের কথাই সমস্তা সমাধানের শেব কথা ধরিয়া লওরা উচিত নর। পূর্ব্ববেল বসবাস বিদ শেবপর্যান্ত অসম্ভবই হয়, একেবারে নি:বদের যতটা সন্তব পশ্চিমবঙ্গ হইতে অক্তপ্রদেশে পাঠাইবার ব্যবহা হওরাই দরকার। পূর্ব্বসতির সময় অবস্থা লক্ষ্য রাখিতে হইবে বাহাতে বাহারা একসঙ্গে বসবাস করিবে তাহাদের মধ্যে ফুটি বা সংস্কৃতিগত একটা বোগাবোপ বেল রক্ষিত হয়। পূর্ব্ববেল হইতে আশ্রমপ্রমাণী হিসাবে বাহারা আসিতেছে, তাহারা সকলেই পশ্চিমবঙ্গে সব কিছু হবিধা পাইরা পুনর্ব্বসতির হুবোগ লাভ করিবে, শুভেচ্ছা হিসাবে এই দাবীর বে নুলাই বাক, বান্তবেক্তে ইহা অসম্ভব। পশ্চিমবঙ্গ বর্ত্তমানে আশ্রর-প্রাথীদের সকলকে আশ্রম দিতে ও বাঁচিবার পূর্ণ হুবোগ দিতে যদি না পারে, ধরিয়া লইতে হইবে তাহা তাহার অনিচ্ছার নহে, অক্ষমতারই পরিচারক।





ৰান্তহাৱা পুনৰ্বসভি-

পুর্ববদ হইতে প্রায় ৫০ লক বাস্তহারা পশ্চিমবদে আগমন করায় ভাহাদের পুনর্ব্বসভি সমস্তা এখন সকল দেশকর্মীকে বিব্রত করিয়াছে। পশ্চিমবল পরী মলন স্মিতির পক্ষ হইতে তাহাদের পুনর্ম্নতির এক পরিকল্পনা প্রস্তুত করিয়া গত ৩১শে মে এক সাংবাদিক সন্মিলনে উপস্থিত করা इहेशाছिल। পশ্চিমবলে প্রায় ২ হাজার ইউনিয়ন বোর্ডের অন্তর্গত ৩৫ হাজার গ্রাম আছে। প্রত্যেক গ্রামেই এখন রম্বক, নাপিত, ছুতার, কামার, ब्रांक्तिबी, डांडि कृषक প্রভৃতির অভাব হইরাছে। ঐ সকল গ্রামের অধিবাসীরা বলি ২।৪ বর করিয়া প্রয়োজন মত বাস্তহারা গ্রহণে অগ্রসর হন ও তাহাদের বাসের জক্ত জমি, বাসগ্রহের ব্যবস্থা-প্রভৃতি করিয়া দেন, তাহা হইলে কয়েক লক ৰাজহারাকে বাংলার গ্রামগুলিতে স্থান দান করা বাইতে পারে। এ বিষয়ে সকল ইউনিয়ন বোর্ডের সভাপতি ও গ্রাম-দেবক কর্ম্মীদের অমুরোধ করা হইয়াছে। কলিকাতা আমবাজার ১৭৫-এ রাজা দীনেক্র ষ্টাটে সমিতির मन्त्रोप्तक जीरमरवन्त्र भेज महानग्रदक श्व निथित व বিষয়ে বিস্তৃত বিবরণ জানা যাইবে। পল্লী মঞ্চল সমিতির এই নৃতন পরিকল্পনা সাফল্য মণ্ডিত করিবার জন্ম সকলেরই চেষ্টা করা কর্তব্য।

পশ্চিম বাংলার পথ সমস্তা-

গত প্রার ১০ বৎসর যাবৎ সকল জিনিবের মূল্য বৃদ্ধির ফলে পশ্চিম বাংলার সকল পথের অবস্থাই অত্যস্ত থারাপ হইরাছে। মিউনিসিপালিটা, জেলা বোর্ড, ইউনিয়ন বোর্ড প্রভৃতির আন্ধ-ছাদ ও ব্যয় বৃদ্ধির ফলে তাহারা রাজাগুলির মেরামত করিতে সমর্থ হয় নাই—ন্তন পথও নির্দ্ধিত হয় নাই। সেই জক্ত আজ দেশবাসীর অস্থবিধা ও কটের শেষ নাই। সেজক্ত জনগণের পক্ষ হইতে একটি পথ ও যানবাহন উন্নতি সমিতি গঠিত হইরাছে। সমিতির পক্ষ হইতে দেশের পথ সমূহের প্রবোজনীয়তা স্থিরীকৃত হইতেছে ও কোথায় অবিলব্ধে ন্তন পথ নির্দ্ধাণ করা

প্রয়োজন, সে বিধয়েও তদন্ত করা ইইতেছে। সহ্ জেলা ও মহকুমা সহরে ও থানার প্রামে যাইবার উপরুত্ পথ না থাকার সকল সময়ে জনগণকে কট ভোগ করিছে হয়। এ বিবয়ে পশ্চিমবন্ধ সরকার কাল আরম্ভ করিরাছে বটে, কিন্ত ওপু সরকারা চেটার এ কাল শেব কর সম্ভব ইইবে না। পূর্বে বহু ধনী লোক ব্যক্তিগত আদে ন্তন পথ প্রস্তুত করিয়া দিতেন—এখন আবার জনগণহে সে কার্য্যে অবহিত করা বিশেষ প্রয়োজন। জেলাবোর্ড, ইউনিয়ন বোর্ড প্রস্তৃতি ছারাও নৃতনভাবে অর্থ সংগ্রহ করিয়া গ্রাম্য পথগুলির সংস্কার বা পুননির্ম্মাণ করা অবিলহে প্রয়োজন। পথ ও যানবাহনের ব্যবস্থা না ইইলে লোকের পক্ষে গ্রামে যাতায়াত করা বা বাস করা কিছুতেই সম্ভবপর ইইবে না।

থান্য উৎপাদেনের জন্ম পুরক্ষার—

গত বৎসর পশ্চিমবঙ্গের কৃষকগণকে অধিকতর ধান্ত উৎপাদনের अञ्च পুরস্কার দিবার ন্যবস্থা করা হইয়াছিল। সাধারণত: প্রতি বিধা ক্ষমীতে সাড়ে ৫ মণ ধাক্ত জন্মে--र नकल कृषक अधिक शतिमार्ग थांग्र উৎপाদन ক্রিয়াছেন, তাঁহাদের মধ্যে শ্রেষ্ঠ বলিয়া বিবেচিত ২২০জন ক্লফকের প্রত্যেককে ১০০ টাকা হিসাবে মোট ২২ হাজার টাকা পুরস্কার দেওয়া হইয়াছে। মোট ২০৭টি थानांत्र मर्था २२० ि थानांत्र कृषक शूत्रकांत्र शहित्राह्न । এইভাবে উৎসাহ দানের ফলে এবার পশ্চিমবলে ৮৭ হাজার বিশা অধিক জনীতে ধানচাবের ব্যবস্থা হইরাছিল। যে সকল কৃষক পুরস্কার পাইয়াছে, তাহাদের প্রত্যেককে व्यक्षतः २ विश अभी हांव कतिए इरेब्राइ। स्मिनीपूत জেলায় একজন তিন বিখায় ৭০ মণ ৩০ সের, ছগলী জেলার ৫৮ মণ ২৭ দের ও নদীয়া জেলাছ ৫৮ মণ ১৩ দের ধাক্ত উৎপাদন করিয়াছেন। এইভাবে সকল প্রকার কৃষির জ্বন্ত পুরস্কার দানের ব্যবস্থা ক্রিলে দেশে খাত উৎপাদন বৃদ্ধি পাইবে, ফলে থাছাভাব দূর হইবে ও বিদেশ হইতে থাত আমদানী করার প্রয়োজনও থাকিবে না।

মউনি**সি**পাল-শাসন—

হুগলী জেলার আরামবাগ মিউনিসিপালিটার কমিশনার-**१८क** निर्मिष्ठे कर्डवा शांनात प्रायां शां क्रित करिता শ্চিমবন্ধ সরকার মিউনিসিপ্যালিটি বাতিল করিয়া ্যোছেন ও একজন সরকারী কর্মচারীর উপর কার্যা পরিচালনার ভার দিয়াছেন। এ ব্যবস্থা নৃতন নহে, क्लिकां कर्लाद्रिमन हरेट बाइड क्रिया वांश्नांत्र वह মিউনিসিপালিটাই এইভাবে বাতিল হইয়াছে। প্রকাশ— পৌর সভার পরিচালনায় কয়েকটি কুকার্য্য, অনিরম ও দলাদলি ঘটিয়াছিল এবং একজন কমিশনারকে অপর এক ব্যক্তির বেনামিতে মিউনিসিপাল ঠিকাদারী দেওয়া হইয়াছিল। অনান্তা প্রস্তাব গ্রীত হওয়া সত্ত্রেও চেয়ার-ম্যান বা ভাইস-চেম্বারম্যান পদত্যাগ করেন নাই। এইরূপ অবস্থা বর্তমানে পশ্চিমবঙ্গের অনেকগুলি মিউনিসিপালিটীর মধ্যে বর্তমান থাকা সত্ত্তেও সরকার পক্ষ কঠোরতার সহিত কার্য্য করেন না। যে কারণেই হউক, স্বায়ত্তশাসন ব্যবস্থায় গলদ হইয়াছে। ইহার দুরীকরণে সরকার পক্ষ উত্তোগী না হইলে মিউনিসিপাল শাসনের নামে দেশে ক্রশাসন চলিয়া দেশবাসীকে ক্ষতিগ্রন্ত করিবে। আমরা এ বিষয়ে সরকারী স্বায়ন্তশাসন বিভাগকে উৎসাহের স্থিত কর্ম্ববাপালনে অব্যিত হুইতে অমুরোধ করি।

মন্ত্রী ও গভর্ণর-

শীষ্ত শীপ্রকাশ আসামের গভর্ণর ছিলেন, তাঁহাকে সম্প্রতি কেন্দ্রীয় সরকারের মন্ত্রী নিযুক্ত করিয়া দিল্লীতে লইয়া বাওয়া হইয়াছে। শীব্ত করামদাস দৌলতরামও পূর্বে বিহারে গভর্ণর ছিলেন, তাঁহাকে কেন্দ্রায় সরকারের মন্ত্রী নিযুক্ত করা হইলাছিল—এখন আবার তাঁহাকে আসামের গভর্ণর করা হইল। উভর ব্যক্তিই আলীবন কংগ্রেস কর্মী—বোগ্য ব্যক্তি। কিছু এই একই লোককে বার বার বিভিন্ন পদে নিযুক্ত করা অত্যন্ত অশোভন ব্যাপার। বিশেষ করিয়া গভর্ণরের পদ যেরূপ সম্বানন্ধনক—তাহাতে প্রাদেশিক গভর্ণরের পদে নিযুক্ত করা ভাকে ক্ষমীপদে নিযুক্ত করা আদে) ভাল দেখার না। ইহাতে শাসন ব্যবহার ক্রেটিই পরিলক্ষিত হয়। তাহা ছাড়া, সকলেই মনে করে, ভারতে পণ্ডিত নেহন্দর সহকর্মী ক্রেম্বক্ষন লোক ছাড়া উচ্চপদে কাল করিবার বোগ্যতা

আর কাহারও নাই। এই প্রাসকে শ্রীচক্রবর্তী রাজাগোপালাচারীকে পুনরার মন্ত্রী নিরোগ করার কথা
আসে—গভর্পর ক্লেনারেলের পদ হইতে অবসর গ্রহণ করার
পর আর তাঁহাকে নিমপদে নিমুক্ত না করাই শোভন
হইত। তিনি যোগ্য ব্যক্তি হইতে পারেন, কিছ
অপেক্ষাকৃত কম ব্যসের কাহারও উপর ঐ কার্যভার
দিলে হয় ত তিনি অধিকতর যোগ্যতার পরিচর দিতে
পারিতেন।



ক্ষরবন প্রজামকল সমিতির যুগ্ম সম্পাদক ব্রহ্মচারী ভোলানার ও ক্ষমরবনবাসী প্রীপ্রস্তুর মিভার ক্ষমরবন প্রামাঞ্চলের চোরাই চালান দমন মানদে ২৪ প্রগণা জেলার কাক্ষীপ, সাগর আনা প্রস্তুতি এলাকার নৌকাঘোণে পরিজ্ঞান ক্ষমিন প্রতিশ্রিকাশ

সাহিত্যপরিষদ 🖣 উ–

কলিকাতায় সাহিত্যপরিষদ দ্রীটে বহুসংখ্যক থাটালে গো-মহিব রাখার ব্যবস্থা থাকায় ঐ অঞ্চলটি দিয়া জনগণের বাতায়াত অত্যন্ত কইকর ছিল। সম্প্রতি কলিকাতা ইমপ্রভানেণ্ট ট্রাষ্ট ঐ অঞ্চলের খাটালগুলি তুলিয়া দিয়া নিবা জমা দখল করিবেন ও ৫০ লক্ষ টাকা ব্যবে তথায় পার্ক ও বাসগৃহাদি নির্দ্ধাণ করিয়া দিবেন। এত দিনে যে এ বিষয়ে কর্ত্পক্ষের দৃষ্টি আকৃষ্ঠ হইয়াছে, ইহা সত্যই আনন্দের বিষয়। উহার অনতিদ্রে হরিনাথ দে রোডেও পশ্চিমবন্দ সরকার খালি জমীতে দরিজ জনগণের বাসের ক্য গৃহ নির্দ্ধাণ করিয়া দিবার পরিকয়না গ্রহণ করিয়াছেন।

किनिकाकात वजीश्वनि कारम कारम किनिया निया क्यांय क्या काणात वांजी निर्मिक हरेल महरतत तारता हुन हरेरा, प्रतिस कामभाव वारमत क्यांव स्थित स्विश्व कामभाव वारमत क्यांव स्विश्व कामभाव किन्या व्याप्त क्यांव कामभाव क्यांव क्यां

রাব্যেও আদিবাসীর সংখ্যা অবিক। সভ্য জানি লোকেরা অপেকারত কম সভ্য আদিবাসীদের উন্ধি লভ্ত প্ররোজনীয় চেটা করে না। ভারাই প্রজন্ম শিংএর অভিবোগ। আগামী নির্মাচনে বারাতে আদিবা ছাড়া অন্ত কোন সম্প্রবারের সদক্ত ব্যবহা পরিবদে প্রত করিতে না পারে, সেকভও এখন হইতে প্রচার কা চলিতেছে। অথও ভারতকে বিচ্ছিন্ন করিয়া ক্রমে : প্রদেশে বিভক্ত করার চেটা সর্মত্র চলিতেছে। ইহার ফ কি হইবে বলা কঠিন। মান্রাল ও বোলাই বিভাগে



বিগত ২ংশে বৈশাপ জোড়াস্ট্রা ঠাকুরবাড়িতে রবীক্রনাথের । দি ব লে শ্র ছা প্ল লি—দ ভা শীপ্রভাত মুখোগাধ্যার পৌরোর্চি করেন শীহালারীপ্রসাদ ছি। মসলাচরণ করেন।

क्छा-अभावा व

ঝারগঞ্জ অন্তেশ-

শ্রীর্ক জয়পাল সিং ছোটনাগপুরে আদিবাসীদের
নেতা। তিনি ঐ অঞ্লে ঝাড়থও প্রদেশ গঠনের জক্ত
তীর আন্দোলন আরম্ভ করিয়াছেন। আদিবাসীদের বাংলা,
বিহার ও উড়িয়া—তিনটি প্রদেশের মধ্যে পৃথক ভাবে বাস
করিতে না দিয়া—সকল আদিবাসী-অধ্যুবিত অঞ্চল একর
করিয়া একটি স্বতন্ত্রপ্রদেশ গঠন করাই শ্রীজয়পাল সিংএর
উল্লেন্ড। ছোটনাগপুরের সকল জেলাতেই আদিবাসীর
সংখ্যা অধিক। সেরাই-কোলা ও ধরসোয়ান রাজ্য এধন
বিহারের মধ্যে। মর্বভঞ্জ উড়িয়ার মধ্যে। ঐ সকল
রাজ্য ছাড়া ও কিওনঝড়, বোনাই, বাসরা, গাংপুর,
বশপুর, সারগুজা, উদয়পুর, কোরিয়া ও ভোগরেকার

আন্দোলন প্রবলতর হইরাছে। বাংলা, বিহার, উণি পূর্ব্বে একটি প্রদেশ ছিল—এখন তিনটি হইরাছে—আ বিভক্ত হইলে শাসন-বার জেমেই বাড়িরা বাইবে।

ভতর ভাষাপ্রসাদ মুখোণান্তার ও প্রবৃত্ত কিউশি
নিরোগী কেল্রীর মন্ত্রিসভা হইতে প্রভাগি করার
কলিকাতা হাইকোর্টের ভূতপূর্ব বিচারগতি ও কলিক
বিষবিভালরের ভূতপূর্ব ভাইস-চেলেলার শীচাকচল্ল বিষ
কেল্রীর মন্ত্রিসভার সহকারী মন্ত্রী নিরুত্ত হওরার বাং
দেশে কেহই ভাহার এই কার্যাে কল্পে হইতে পারেন ন
এবং এই নিরোগের কল্প কেহ প্রধান করা প্রিত নেহ
কার্যাও সমর্থন করেন নাই।

দ্বিয়া কোন প্রকারে বাংলার মান বজায় রাথা হইয়াছে।
চারতের মধ্যে আল পশ্চিম বাংলার সমস্তাই সর্বাপেকা
দ্বিক—সে সকল সমস্তার কথা কেন্দ্রীয় মদ্রিসভাকে ঠিক
চাবে জানাইবার জন্ত পশ্চিম বাংলা হইতে একজন শক্তিগালী সদস্তকে বদি কেন্দ্রীয় সরকারে মন্ত্রী নিযুক্ত করা
হইত, ভবে লোক কভকটা সন্তই হইতে পারিত। বাংলার
জ্ঞভাব অভিযোগ শুনিবারও লোক নাই—ইহা অপেকা
বাংলার ছুর্ভাগ্য আর কি হইতে পারে? বালালী কি
দত্যই ধ্বংসের পথে অগ্রসর হইতেছে? ভাক্তার
বিধানচন্দ্র রায় মহাশ্রের মন্ত লোক প্রধান মন্ত্রী থাকিতেও
পশ্চিম বাংলার প্রতি এইরপ অবিচার কি ভিনি সন্থ করিয়া
ঘাইবেন?

কলিকাভায় চুগ্ধ সরবরাহ-

কলিকাতা সহরে প্রতিদিন ২০ হাজার মণ হঞ্জের প্রয়োজন। কিছ ভাহার জন্ত কোন ব্যবস্থা নাই। সম্প্রতি পশ্চিমবৃদ্ধ সরকার দক্ষিণ কলিকাভার ৪০টি ডিপো খুলিরা ১০০ মণ তথ ১২ আনা সের দরে সরবরাহের ব্যবস্থা করিয়াছেন। জ্রুমে এই ব্রেম্বা প্রসার করিয়া সমগ্র সহরে তথ সরবরাহ করা হইবে। থাত মন্ত্রা আশা করেন, এক বৎসরের মধ্যে সহরে ছুধ জোগান দেওয়ার रहेर्द । কাঁচরাপাড়ার নিকট হরিণঘাটায় একটি সরকারী গো-শালা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে—ইহাও সম্প্রসারণের ব্যবস্থা চলিতেছে, পাশুমন্ত্রীর আমরা পরিক্লনার সাফল্য কামনা করি। সঙ্গে সঙ্গে বলা প্রাক্তন, সরকারী অর্থ বেন এ জন্ম অপবায়িত না হয়। অনেক সময় দেখা যার. জনগণের সামার উপকার করিছে গিরা সরকারী কর্মচারীরা অনাবশ্রক অধিক অর্থ বার করিয়া খাকেন। হরিণঘাটার সরকারী গোশালা मिथित तर जनग्रास जामकार मत रहा। उथाय त ভাবে অর্থ ব্যবিভ হইতেছে, ব্যবসা হিসাবে ছগ্ধ বিক্রয় कविद्या नांख कता काम्बर इटेर विनदा मरन इता थाए-মনী নহাশ্রকে আমরা এ বিষরে বিশেষ সতর্কভার সহিত কার্য্যে অগ্রসর হইতে অন্নরেশ্ব করি।

मध्दलं उटलंब अन्तित-

ক্ষাৰ কোৰ আৰাপুৰ ইউনিয়নের অন্তর্গত দেউণিয়া আহৰ বিখ্যান্ত প্রাচীৰ সম্ভূমেউলের মন্দির আছে—উবা মনাগ্রাম রেল টেশন হইতে এক মাইল উত্তর পশ্চিমে অবহিত। মেরামত ও রক্ষার অতাবে মন্দির গাত্রের কারুকার্য্য ধবংস হইতেছে। ইটগুলি খুঁড়িয়া বাহির করিয়া লোকে লইয়া যাইতেছে। ঐ স্থান হইতে বছ মূর্তিও স্থানান্তরিত হইরাছে। গ্রামটির সর্ক্রে ও পালের মার্চ-গুলিতে প্রচুর ইট পাওয়া যায়। আমরা সরকারী প্রায়তত্ত্ব-বিভাগকে মন্দির রক্ষার জন্ত অবহিত হইতে অহুরোধ করি। খাধীন দেশে পুরাকীর্তিগুলির রক্ষার জন্ত অবিলাহে উপরুক্ত ব্যবস্থা হওয়া উচিত।

কৰি নৱেন্দ্ৰ দেব ও ৱাখাৱালী দেখী-

বাংলা দেশের এই স্থপ্রসিদ্ধ কবি-দম্পতী হৈ জুন তারিখে 'পি এণ্ড ও' কোম্পানীর জাহাজ 'এস্, এস্, চিত্রলে' বোদাই হইতে পৃথিবী ভ্রমণে বাহির হইরাছেন।



করা নবনীতা সহ কবি দল্পতী—শীনরেল্ল দেব ও শীরাধারাণী দেবী তাঁহাদের একমাত্র করা কুমারী নবনীতাও সলে গিয়াছেন। তাঁহারা ইংল্যাও, ফটল্যাও, আরারল্যাও, নরওয়ে, সুইডেন, ডেনমার্ক, হল্যাও, বেলজিয়্বম, আলসেস-লোরেণ, রাইনল্যাও, কাল, সুইজারল্যাও, ইটালি, কুমানিরঙ

বুংগাঞ্চাভিরা, চেকোগ্লোভাকিয়া, আলবেনিয়া, স্পোন, পোর্তুগাল ও মিশর খুরিয়া ভারতে প্রত্যাবর্ত্তন করিবেন'। লাভ সাগর পারে তাঁহাদের এই প্রবাসবাত্তা শুভ হউক এবং তাঁহারা নিশ্চিন্ত নিরাপদে ভ্রমণ শেষ করিয়া স্কৃত্ব দেহে বাদেশে প্রত্যাবর্তন কর্লন ইহাই আমরা সর্বাস্তঃকরণে ভামনা করি।

প্রকোকে স্নামী অয়তানক্ষ -

গত ১৮ই মে বৃহস্পতিবার প্রাতে ৯ ঘটিকার সিওরানে শীরামক্বফ বিবেকানন্দ মঠের প্রতিষ্ঠাতা স্থামী অমৃতানন্দ মহারাজ দেহত্যাগ করিয়াছেন। ঠাকুর পরমহংসদেবের স্থার তিনিও ক্র্নালীতে ত্রস্ত ক্যান্সার রোগে স্থাক্রান্ত ইইয়াছিলেন। মুক্তিব্রতে দীক্ষাদাতা ও অগ্নিমন্তের উপাসক



খামী অমুতানন্দ

অহনীলন সমিতি ও বোণেক্র ঠাকুরের পরিচালিত অন্তর্বলে খাধীনতা লাভে দৃঢ়দংকর বিজোহী ব্রকগণের সংসর্গ হইতে ঠাকুর পরমহংসদেবের মন্ত্রশিশ্ব খামী ত্রহ্মানন্দ মহারাজ তাঁহাকে পরম নোক্ললাভের পথে খামী বিবেকানন্দের আদর্শে উব্দ করিবা সন্ত্যাস ধর্মে দীক্ষা দেন। পূর্বাপ্রশে তাঁহার নাম ছিল নলেক্র দেব। ঠনুঠনিরা

ছিলেন। ভিনি পরলোকগত দেশকর্মী রাজেন্দ্র দেব এবং বিশিষ্ঠ কবি ও সাহিত্যিক শ্রীনরেন্দ্র দেবের কনিষ্ঠ প্রাতা ছিলেন। আমরা তাঁহার আত্মার মুক্তি ও শান্তি কামনা করি।

প্রস্থাতে বাহ্যালী কবি সন্মিলন-

গত ১৬ই বৈশাপ এলাহাবাদ প্রয়াগে বিচিত্রা কৃষ্টি
সংবের উত্তোগে স্থানীয় বালালী কবিদের এক সন্মিলন
হইয়া গিয়াছে। এলাহাবাদস্থ অমৃতবালার পত্রিকার
বার্ত্তা সম্পাদক প্রপ্রমানকুমার সেন সম্মেলনে সভাপতিত্ব
করেন। ১৪ জন কবি মিলিত হইয়া স্বর্ত্তিত কবিতা
পাঠ করেন—তাঁহাদের নাম—প্রীমতী প্রতিভা মুখোপাধ্যায়,
প্রীক্ষমর মুখোপাধ্যায়, প্রীনিশিকান্ত বন্দ্যোপাধ্যায়, প্রীপ্রথব
মুখোপাধ্যায়, প্রীজহর রায়, প্রীস্থনীল বস্থ, প্রীসমরেক্ত দে,
প্রীহরিপদ চট্টোপাধ্যায়, প্রীসমর ঘোষ, ডাঃ আলামুঞ্ল
দাস, প্রীমতী জাহুবী চট্টোপাধ্যায়, প্রীমতী উমা
মুখোপাধ্যায়, কুমারী সাধনা চট্টোপাধ্যায় ও কুমারী
অর্চনা মুখোপাধ্যায়। স্থানীয় বালালী সাহিত্যিকগণের
উপস্থিতি ও সহযোগিতায় সম্মেলন সাফল্যমণ্ডিত হইয়াছিল।
ভাক্তাব্র আধ্রাহ্য ও প্রীস্থাক্ত স্ক্রমান

কেন্দ্রায় গভর্ণমেণ্টের অর্থ-সচিব ডাঃ জন মাথাই ও পুনর্বদত্তি-সচিব শ্রীমোহনলাল সাক্সেনা গত ৩১খে মে পদত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহাদের স্থানে শ্রীচিস্তামণি দেশমুখ ও শ্রীক্ষজিতপ্রসাদ জৈন নৃতন মন্ত্রী নিযুক্ত হইয়া কার্য্যভার গ্রহণ করিয়াছেন। পদত্যাগ কালে णाः माथारे विषयास्य त त्रांडे भित्रहानन वाशिलाह মূলনীতি সম্পর্কে প্রধান মন্ত্রার সহিত মতভেদ হওয়ার তিটি পদত্যাগ করিতে বাধ্য হইয়াছেন। তাঁহার বিখান পণ্ডিত নেহক যে পথে ভারতকে পরিচালিত করিভেচেন তাহাতে শীঘ্ৰই দেশে অৰ্থ-নৈতিক সৃষ্ট উপন্থিত হুইবে শ্ৰীদাকদেনাও পদত্যাগ কালে বলিয়াছেন-মন্ত্ৰী নিৰুছ रहेश छिनि त्य **श्रीक्टिं**कि मिशाहित्वन, नाना कांत्रत्न छिटि তাহা পালন করিতে সমর্থ হন নাই। কাজেই তাঁহাং পক্ষে পদত্যাগ করা ভিন্ন অক উপায় ছিল না। ভক্ত ভাষাপ্রসাদ ও কিতীশবাবুর উক্তির পর ডাজার মাথাই ং গ্রীসাকসেনার বিবৃত্তি কি প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত নেহক্ষু মর্যাং

মভাত্নসারে কাল করিতে সমর্থ হন নাই। ইহার পর কি হর, ভাহাই আমাদের চিন্তার বিষয় হইয়াছে।

🚵 যুত হরেরহয় মহাতাব—

উড়িকার প্রধানমন্ত্রী থাকাকালীন ব্রীযুত হরেকৃষ্ণ মহাতাব উড়িয়া-দেশবাসীর নানা প্রকার ত্বথ ত্রবিধার বাবন্তা করিয়া দেশবাসীর ধন্তবাদভাজন হইয়াছিলেন। উড়িয়ায় ৰাখালী বাস্তহারাদের পুনর্বাসন ব্যবস্থাতেও ভিনি বিশেষ সাহায্য করিয়াছেন। তাঁহার চেষ্টায় কয়েক সহস্র বান্ধালী উড়িয়ায় বসবাসের স্থবিধা লাভ করিতে সমর্থ হইয়াছেন। তিনি কেন্দ্রীয় পরকারের শিক্স ও সরবরাহ বিভাগের কুর্যাভার গ্রহণ করিয়াই কতকগুলি বিষ্বে নৃতন নীতি প্রবর্তনে অবহিত হইয়াছেন। তিনি বলিরাছেন, তিনি বক্তৃতা অপেকা কাজ বেশী করিবেন। শিল্প ও সরবরাহ বিভাগে তিন পক্ষকে একত হইয়া কাজ করিতে হয়—তিন পক্ষের কার্যই পরস্পর বিরোধী—(১) শিল্পতি ধনী পক্ষ (২) সরকার পক্ষ ও (৩) দরিদ্র শ্রমিক পক্ষ। তিনি সকল পক্ষকেই বিবেচনার সহিত কাজ করিতে অফুরোধ করিয়াছেন। শ্রমিক মালিক বিরোধ লাগিয়াই আছে—তৃতীয় সরকার পক্ষকে সর্বদা তাহা মিটাইবার ব্যবস্থা করিতে হয়। সরকার পক্ষের স্ঠিত ধনীদেরও বিবাদের অন্ত নাই--- শ্রীযুত মহাতাব কি সে বিষয়ে কিছু করিতে পারিবেন ? যাহা হউক, কার্য্যভার গ্রহণ করিযাই গত ২৮শে মে তিনি দিল্লীতে যাহা বলিবাছেন, তাহা অন্তত সকলের মনে আশার সঞ্চার করিবে।

বাস্তভ্যাগী ছাত্রদের জন্ম ব্যবস্থা—

২৪ পরগণা মসনন্দপুরের নিকটন্থ দক্ষিণ চাতরা উচ্চ ইংরাজি বিভালয়ের কর্তু পক্ষ এক শত বাস্তত্যাগী ছাত্রকে তাঁহাদের বিভালয়ে বিনা বেতনে শিক্ষা দানের ব্যবস্থা করিয়াছেন জানিয়া আমরা আনন্দিত হইলাম। ঐ সকল বাস্তত্যাগী ছাত্র বদি ছাত্রাবাদে থাকে, তবে মাসিক মাত্র ১০ টাকায় তাহাদের আহায় ও বাসস্থানের ব্যবস্থা করা হইবে। বিভালয়টি ফাঁকা মাঠের উপর, নদীর ধারে, আমের বাহিয়ে অবস্থিত—সেধানকার স্বাস্থ্য ভাল—কাজেই তথায় এইভাবে একটি বৃহৎ আবাসিক বিভালয় গঠিত হইতে পারে। আমরা এই চেটার অন্ধ বিভালয়ের সম্পাক্ষ বেশক্ষী জীহরেজনাথ রায়কে অভিনন্দন জাপন

করি এবং আশা করি, তাঁহার এই আদর্শ সর্বত্ত অহস্তত হইবে। দক্ষিণ চাতরা বসিরহাট মহকুমার অন্তর্গত একটি গণ্ডগ্রাম।

বোস্বাহয় বাঙ্গালীর সম্মান-

ভাকার বীরেক্রকুমার নদী সম্প্রতি পার্লে-আনধেরী এলাকা হইতে বোখাই মিউনিসিপ্যাল কর্পোরেশনের সদক্ত নির্দ্রাচিত হইরাছেন জানিরা আমরা আনন্দিত হইলাম। তিনি ১৯৪৭ ও ১৯৪৮ সালে সংক্রামিক ব্যাধির সময়



७ के व शैरवळ क्यांव नमी

সাহায্য কার্য্য পরিচালনা করেন ও সে সময়ে মিউনিসিপ্যাল শাসনের সহিত সংযুক্ত হইবার তাঁহার ইচ্ছা হয়। ইহার পূর্বে কোন বালালী বোঘায়ে মিউনিসিপ্যাল সদক্ত নির্বাচিত হন নাই। তাঁহার কেন্দ্র হইতে যে ও জন সদক্ত নির্বাচিত হন নাই। তাঁহার কেন্দ্র হইতে যে ও জন সদক্ত নির্বাচিনে সাফল্য লাভ করিয়াছেন তল্মধ্যে ডক্টর নন্দাই স্বাপেক্ষা অধিক ভোট পাইয়াছেন। তিনি কলিকাতার এম-এস-সি, ম্যাকেন্টারের পিএচ-ডি ও লগুনের এ-আই-সি। টেডিংটন কেমিকেল কার্থানার তিনি প্রধান কেমিট, ম্যানেজার ও ভিরেক্টার। আমরা তাঁহার সাফল্য কামনা করি।

শ্ৰীপ্ৰশংশুকুমাৱ হালদাৱ—

পশ্চিমবদ সরকারের প্রম-মহাধ্যক্ষ (লেবার কমিশনার) শ্রীস্থবাংগুকুমার হালদার আই-সি-এস সম্প্রতি ভারত সরকারের প্রতিনিধি-উপদেষ্টারূপে কেনিডার আন্তর্জাতিক আম প্রতিষ্ঠানে যোগদান করিতে গিরাছেন আনিরা আমরা আনন্দিত হইলাম। তিনি ১৯৪৯ সালের এপ্রিল মাস হইতে প্রম-মহাধ্যক্ষের পদে কাজ করিয়া সকলের প্রাশংসা আর্জন করিয়াছেন। তিনি স্প্রপতিত ও স্থ্যেধক—তাঁহার বহু প্রবন্ধ 'ভারতবর্ধ' পত্রিকায় প্রকাশিত হইয়াছে।



শীক্ষাং ওকুমার হালদার আই-সি-এস

জেলা-জন্ধ ও টাইবিউনালে জন্ধ হিসাবেও তিনি বছদিন
দক্ষতার সহিত কাজ করিয়াছেন। আমাদের বিখাস,
তাঁহার উপস্থিতি ও কার্য্যের হারা জেনিভার বালালীর
গৌরব বৃদ্ধি পাইবে ও আমিক সমস্তা সমাধানের নৃতন
উপার উত্তাবিত হইয়া জগৎবাসীর কল্যাণ সাধন করিবে।
আমিকীয়া ক্লেক্যায়া উল্লেখ্যে সকল্য

নদীয়া জেলার শান্তিপুর ও রাণাঘাটের মধ্যবর্তী ফুলিয়া টেশনের নিকট সরকার সাড়ে ৩৭ লক্ষ টাকা ব্যর করিয়া একটি নৃতন উঘান্ত সহর নির্মাণ করিতেছেন। তথায় প্রায় ৩০ হাজার লোক বাস করিতে পারিবে। অধিবাসানিপকে কাজ দিবার জন্ত তথায় আড়াই লক্ষ টাকা ব্যরে একটি কারিগরী বিভালয়ও প্রতিষ্ঠা করা হইবে। ঐ কেজ্রে কাহাকেও ধ্যরাতী দান দেওয়া হইবে না। ইহা একটি আশার সংবাদ বটে; কিছ ২৪ পরগণা জেলার বসিরহাট মহকুমার ৩ শত বিঘা জমী দখল করিয়া সরকার তথায় যে ৫ শত উঘান্ত গৃহ নির্মাণ করিয়াছেন, তাহার সংবাদে আমরা চিন্তিত হইয়াছি। ঐ সকল গৃহ নাকি বর্ষায়্রীকরে না—২।১ প্রলা বুলির পরই পড়িয়া বাইতেছে—

অথক প্রত্যেকটি গৃহ নির্মাণে ৫ শত টাকা ব্যয় হইরাছে।
নদীয়ার ন্তন সহর্ত নির্মাণের পূর্বে সে জন্ত আমরা
কর্ত্বপক্ষকে সতর্কতার সহিত কার্য্যে অগ্রসর হইতে অন্ধরোধ
করি। 'সংগঠনী' পজে বসিরহাটের 'জাতীর অর্থের
ছিনিমিনি' শীর্ষক যে সংবাদ প্রকাশিত হইরাছে, সে জন্ত
উপযুক্ত ভদত হওরা ও অপরাধীদের শীতিবিধান হওরা
বাঞ্লনীয়।

শ্রীকিতীশচক্র নিয়োগী-

শ্ৰীকিতীশচন্ত্ৰ নিয়োগী কেন্ত্ৰে মন্ত্ৰিছ ভ্যাগ করিয়া व्यानिश वर्षमात्न कनिमशः व विश्वाम श्रद्ध कति एए एन। তিনি তথায় যুগান্তরের প্রতিনিধির নিকট বলিছাছেন-"আমি নিজে পূর্ববঙ্গের লোক ও পূর্ববজের বর্ত্তমান অবস্থায় আমি নিজে তথার বাইরা নিউরে বসবাস করিতে পারি ना। कार्या मही हिनाद आमि पछ लाक्त किन्नरन তাহা করিতে বলিব ? কাজেই মন্ত্রীম্ব ত্যাগ করা ছাড়া চুক্তির পর আমার অন্ত উপার ছিল না।" কিতীশবাবুর এই স্পষ্ট উজ্জির পর আর কিছু বলিবার নাই। পণ্ডিভ নেহর ডক্টর খ্রামাপ্রসাদ ও কিতীশবাবুর মত সহকর্মীদের এই মনোভাব জানার পরও কেন বে চুক্তি করিয়াছেন, তাহা আমরা বুঝিতে পারি না। ডক্টর খ্রামাপ্রসাদের মত কিতীশবাবুরও তাঁহার মনের কথা ব্যক্ত করিয়া বর্ত্তমান সমস্তার দেশবাসী সকলকে কর্ত্তব্য নির্দেশ করা উচিত। তাঁহার পদত্যাগে দেশবাসী বেমন আনন্দিত, তাঁহার মত অসাধারণ ধীশক্তিসম্পন্ন ব্যক্তির উপদেশ ও পরামর্শ লাভ করিলে তেমনই ভাহারা উপকৃত হইবে।

হরিপথাটায় নদী-বিজ্ঞান মন্দির—

গত ২১শে মে রবিবার সকালে প্রধান বল্লী ডাঃ
বিধানচন্দ্র রায় কলিকাতা হইতে ৩২ নাইল বৃত্তে হরিণবার্টায় পশ্চিম বাংলার নদীর গঙি প্রকৃতি সহকে গবেবণার
ক্ষণ্ড নদী-বিজ্ঞান মন্দিরের ভিত্তি হাপন করিয়াছেন।
১৯৪০ সাল হইতে নদী-বিজ্ঞান সহকে গবেবণা চলিভেছে।
এতদিন গলসিতে একটি রিভার বভেল ষ্টেশন ও
বেলবরিরায় একটি টাইডেল মডেল ষ্টেশন হিল। পরে
(১) পরিসংখ্যন বিভাগ (২) পরার্থ বিজ্ঞান বিভাগ (৩)
রসায়ন বিজ্ঞান ও (৪) হাইড্রলজিকাল বিভাগ থোলা
ইব্যাছিল। মৃতিকা প্রেক্নারাক্ত সারে ক্রিকিটিছ

হইরাছে। বর্ত্তপানে সকল বিভাগ নৃতন মন্দিরে স্থানাস্তরিত হইবে। বাংলা দেশের সকল বাণিজ্য ও ঐশর্ব্য নদীর গড়িপ্রকৃতির সহিত জড়িত। কাজেই নদী-বিজ্ঞানের আলোচনা এদেশে বিশেষ প্রয়োজন। এই মন্দির সম্বর দেশের প্রকৃত মদল সাধন করিতে পারিলেই—ইহার প্রতিষ্ঠা সার্থক হইবে।

পূৰ্যব্যক হিন্দুর লাঞ্ছনা-

নেহক্ল-লিৱাকৎ চুক্তি লিপিবছ হওয়ার পর লোকে भरन कतिशादिन त्व शूर्वतरक हिन्तूरम्ब छेशव मूमनमानरम्ब चाछा होत वक इहेरत । हु कि त शत विम्मू एवत शिक्त भारत বা আসামে গমনে ও অস্থাবর সম্পত্তি আনয়নের কিছু श्रुविशा हरेब्राट्ट वर्षे, किन्द भूक्ववरक मुमनमान कर्ज्क हिन्दूत नाक्ष्मा लात्र नमकाद्वर हिन्दू वाक्ष्मा लात्रिष्ट । ভক্তর স্থামাঞ্চাদ মুখোপাধাার এ বিষয়ে বহু তথ্য সংগ্রহ ক্রিরাছেন এবং সেগুলি অবশ্রুই তিনি উপযুক্ত কর্তৃপক্ষকে कानाहेबारहन। कर्डुशक मूर्य वाहाहे वनून ना दकन, कैं। होता ७ ज्वल जःवान कारनन । २५८न स्म मिनी व्हेट काना शिवादक दर अहे जकन वजाहादात काहिना पित्री কত্ত পক্ষ পাকিতান কৰ্ত্বপক্ষকেও জানাইয়াছেন। কিন্ত छोशांत क्लान कल इट्टेंब विनिया आमता मदन कति ना। কারণ পূর্বের স্থার এখনও পাকিন্ডান কর্তৃপক বলিতেছেন বে ঐ সকল অনাচার সরকারী লোক করে না, বেসরকারী ওতা বা আনসার দল তাহা করিয়া থাকে-কিছ সে কথা সভা নহে। সভা হইলেও সরকারী কর্মচারীরা সে সকল অভাচার বন্ধ করার কোন ব্যবস্থা করেন না। এ অবস্থার চুক্তির সর্প্ত ভারতরাই কতদিন আর **মানি**হা না পার, তবে ত এই বৃক্তি বিফলই হইয়াছে। তাহার পর দেশবাসীর কর্ম্বর্য কি ?

অথ্যাপক ভাঙারকর-

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালরের খ্যাতনামা অধ্যাপক, ভারতীর নংইভিতে অপশ্রিত ভাজার দেবলত রামকৃষ্ণ ভাগারকর বংসর বরুদে গভ ৩০শে মে কলিকাতার পরনোক গমন করিবাছেন। তিনি প্নার খ্যাতনামা পশ্রিত, ভাগারকর ইনিষ্টিটিটটের প্রতিষ্ঠাতা পর্গত সার রামকৃষ্ণ ক্রোপ্রশ্বভাগারকরের পুরু । তিনি ১৯১৭ সাল ইইতে

দীর্থ ২০ বৎসর কাল কলিকাতা বিশ্ববিভালত্বে প্রাচান ভারতীর সংস্কৃতির অধ্যাপক ছিলেন। তিনি তারতের প্রাচীন সংস্কৃতি সহস্কেও বছ প্রছ রচনা করিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুতে একজন শিক্ষাব্রতী পণ্ডিতের অভাব হইল।



শ্রীশ্রীবোগেষরী রামকৃষ্ণ মঠে পশ্চিমবন্ধের প্রদেশপাল ডাঃ কৈলাসনাথ কাটজু। সমবেত সভ্যবৃন্দ ও প্রদেশপালের সমক্ষে মঠের বাৎসরিক আর ব্যয়ের হিগাব দাধিল রত মঠ-দম্পাদক শ্রীরাজেল্রালাল বন্দ্যোপাধ্যার। বামে মঠের অঞ্চতম কর্মী শ্রীশৈলেন মুখোপাধ্যার

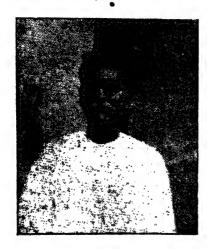
क्छो-- निनीश मन

কাশ্মীর সমস্তা ও ভাহার সমাধান—

ভারতরাষ্ট্র ও পাকিন্তান উভয় দেশই কাশার দাবী করায় বে অচল অবস্থার উদ্ভব হইয়াছে, তাহার সমাধানের ক্স রাষ্ট্রসংবের পক হইতে সার ওরেন ডিক্সন ভারতে আসিয়া সকল অবস্থা পর্যাবেক্ষণ করিতেছেন ও উত্তয় পক্ষের সহিত কথা বলিয়া সমস্তা সমাধানের চেট। করিতে-ছেন। তিনি কয়েকদিন সকলের কথা ওনার পর মন্তব্য टाकांग कविशारहन (व, नमका अज्ञन कविन (य छेशांत সমাধান সহজ্ঞসাধ্য হইবে না। অপচ কান্ধীর সমস্তা সমাধানের উপর ওধু ভারত-পাকিন্তানের শাভি নহে, সমগ্র অগতের শান্তি নির্তর করিতেছে। উত্তর পক্ষক সভাই করিয়া ভিনি সমাধানের ব্যবস্থা করিবেন বলিয়া আশা করেন। কিন্তু শেষ পর্যন্ত কি তাহা সম্ভব হইবে ? প্রথমেই के सम प्रथम ना कतिया शिक्ष अहत्रमांन त्नहक त्य कृत করিরাছেন, তাহার অক্ত তারতকে হয় ত শেষ পর্যাস্ত দারুণ ক্ষতিগ্রন্ত হইতে হইবে। সে সময়ে লাতি সংবের बाब्रह ना इट्टाई পভिত्रनी छान काम कतिरछन। ध्रथन বোধ হয় কাশ্মীর ভাগ অথবা বৃদ্ধ—এ ছাড়া সমস্তা সমাধানের অভ উপায় নাই। পণ্ডিতকী বৃদ্ধ-বিরোধী, কাকেই কাশ্মীর ভাগ করা ছাড়া অভ উপায় দেখা বাইতেছে না।

নগেল্ডকনাথ মুখোপাধ্যাস্ত্ৰ—

নদীয়া জেলার রাণাঘাট নিবাসী থাতনামা উকীল, নদীয়া জেলা বোর্ডের ভূতপূর্ব্ব চেয়ারম্যান নগৈন্দ্রনাথ মুখোপাধ্যায় মহাশয় গত ২১শে মে ৭৮ বৎসর বয়সে ভাঁহার রাণাঘাটের বাসগৃহে পরলোক গমন করিয়াছেন।



नरशक्तनाथ मूर्यां गांधाव

তিনি সামান্ত অবস্থা হইতে নিজ পরিশ্রম ও কর্মাদক্ষতায় উন্নতিলাভ করেন। তিনি এক সঙ্গে ২০ বংসর নদীয়া জেলাবৈর্তির চেয়ারম্যানের কাজ করেন—সে সময়ে নদীয়া জেলার মুনলমান প্রাধান্ত ছিল। তিনি সমবার আন্দোলনের প্রথম হইতে উহার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন। তাঁহাকে ১৯২৮ সালে রায় বাহাত্বর ও ১৯০৭ সালে ও-বি-ই উপাধি দেওয়া হইয়াছিল। রাণাঘাটের সকল সদহ্ঠানের সহিত তিনি সংশ্লিষ্ট ছিলেন ও সর্বাদা রাণাঘাটের উন্নতির জন্ত চেষ্টা করিতেন। তিনি ১২ বংসর কাল রাণাঘাট মেউনিসিপালিটার ভাইন চেয়ারম্যান ছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পর সপ্তম দিনে তাঁহার পত্মীও পরলোকগমন করিয়াছেন।

ক্রমানিট তীক্ষ বিজ্ঞাৱা—

ফ্লোরেন্সে রাষ্ট্রসংবের শিক্ষাবিঞ্চান-সংস্কৃতি প্রতিষ্ঠানে

কৃষ্ণনের প্রভাবে শাতীয়তাবাদী চীনের প্রতিনিধিকে অহণ করার প্রভাবের বিপক্ষে ৩০ জন ও পক্ষে মাত্র ৪ জন ভোট দেওয়ায় ঐ প্রভাব অগ্রাহ ইইয়াছে। ১৪ জন প্রতিনিধি নিরপেক্ষ ছিলেন। এই ঘটনা হইতে সাম্রাজ্য-বাদের অবস্থা স্পষ্ট বুঝা যায়। পৃথিবী গণতজ্ঞের যতই জয় ঘোষণা করুক না কেন, সাম্রাজ্যবাদীদের প্রভৃত্ত প্রতিষ্ঠা এখনও পৃথিবীতে পূর্বভাবেই রহিয়া গিয়াছে সে জয় কয়্যনিষ্ট চীন চৈনিক সংস্কৃতির প্রকৃত প্রতিনিধি হইয়াও রাষ্ট্রসংবে স্থান লাভ করিতে পারিল না।

কম্যুনিষ্ট দলের পলদ-

ভারতে এক সময় কম্যুনিষ্ঠ ভীতি সকলকে সম্রদ করিয়াছিল এবং নানা প্রদেশে ক্ম্যুনিষ্ট অনাচার স্থ হওয়ার দেশবাসী শকিত হইয়াছিল। কিন্তু ঐ দলের যুদ্ধ কালীন নেতা প্রীপুরাণটাদ যোশী দল হইতে বহিষ্কু হওয়ার পর দলে ভালন ধরিয়াছে ও দল ক্রমশঃ হীনব হইয়া পড়িতেছে। শ্রীযোশী ৬৪ পৃষ্ঠার একথানি পুতিই প্রকাশ করিয়া দলের গল্য প্রকাশ করিয়াছেন ও ডাহা ফলে দল হইতে বহু ভাল নেঙা সরিয়া পডিয়াছেন ওধু দেশের সকল কাজ পণ্ড করিয়া নিজ নিজ স্বাং निषित अन्त य क्यानिष्टे मन ' प मिल गठिं रहेमा हिः তাহা যে স্থায়িত্ব লাভ করিতে পারে না, তাহা প্রং रहेर७हे तूया शिवाहित। এकमन अमुब्हे त्राक्रनीि क्यों जून कविशा के मरल क्षराभ करत ७ शरत यर নিবেদের ভূল বুঝিতে পারে, তথন দল ছাড়িয়া চলি আসে। শুধু স্বার্থসিদ্ধির উপায়রূপে কোন রাজনীতি मन मिट किया थेकिए शास्त्र ना। यह अधिक क्यू ि এই সত্য বুঝিতে পারিবে, ততই দেশের পক্ষে মঙ্গল।

ভারকেশ্বরে গণ্ডগোল-

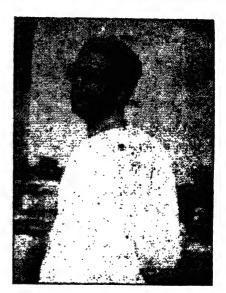
তারকেশবে ভোগ বিলি লইয়া গণ্ডগোলের ক তীর্থগুরু মোহান্ত মহারাজের উপর বে আক্রমণ হইয়াছি সে সংবাদে দেশবাসী সকলেই ব্যথিত হইয়াছে যাহারা ঐ আক্রমণের কল্প দারী, তাহারা মোহ মহারাজের নিক্ট ক্ষমা প্রার্থনা না করার তথার এ ক্ষচল অবহা প্ট হইয়াছে। সম্প্রতি পশ্চিমবক গ্ প্রজান কর্ন সমিতির ব্রহ্মচারী ভোলানাথ প্রভৃতি তথার নাইরা ঐ সহক্ষে তদন্তের পর বে বির্তি প্রকাশ করিরাছেন, তাহাতে সভ্য ঘটনা জানা যার। ভোগ-বিতরণ ব্যাপারে বেমন ক্রটি দেখা যার, তেমনই জাক্রমণ-কারীদের কার্যাও কিছুতেই সমর্থন করা যার না। বছ দিন হইতে ভারকেশ্বর পরিচালনা-ক্রমিটার সহিভও মোহান্ত মহারাজের বনিবনাও হইতেছিল না। বর্ত্তমান এ সমস্রার সমাধান হওয়া প্রয়োজন। আমরা পল্লী-মজল সমিতিকে অগ্রনী হইয়া অব্যবস্থা দূর করিবার জল্প চেষ্টা করিতে অহরোধ করি। তারকেশ্বের বর্ত্তমান মোহান্ত বাজালী ও অসাধারণ পণ্ডিত ব্যক্তি—সাধক। তাহার সমরে ভারকেশ্বের গওগোল থাকাও আন্দৌ বাজনার নহে। স্বাধীন দেশে ধর্মস্থান সংস্কারেও শাসক-মণ্ডলীর চেষ্টা থাকা প্রয়োজন।

দিলীতে ডাঃ বিধানচক্র রায়-

व्यथान मञ्जी পণ্ডिত व्यव्यान त्वर्क्य व्याख्तान शाहेशा . পশ্চিমবঙ্গের মুখ্যমন্ত্রী ডাক্তার বিধানচক্র রায় দিল্লী গিয়াছিলেন এবং গত ২৭শে ও ২৮শে মে দিল্লীতে ছিলেন। লিয়াকৎ-নেহক চক্তি সম্পর্কে ডক্টর স্থামাপ্রদাদ ও ভক্তর প্রফুল্লচন্দ্র যোষ যে সকল বিবৃতি দান করিয়াছেন, তাহাতে বিচলিত ভুটুয়া ও সে বিষয়ে পশ্চিমবন্ধ সরকারকে কর্ত্তব্য নির্দ্ধেশ করিবার জন্ত পণ্ডিভজী णाः त्रावटक मिल्लोरा व्याख्यान कतिशाहित्यन। शूर्वतक **गत्रकारबंद गनिष्ठा मध्यक श**न्तिम वांश्लाय বিশ্বাস স্থাপন করিতে পারিতেছেন না—সে কথা বার বার ভক্টর খ্যামাপ্রসাদ ও ভক্টর প্রফুল বোব আকশি করিয়াছেন। পশ্চিমবন্ধ গভর্ণমেণ্টের পক্ষে দেশবাসীর সে মনোভাবের পরিবর্ত্তন সাধন কি সম্ভব ? পণ্ডিত নেহক ইন্দোনেশিয়া হইতে ফিরিবার পথে २८८म सून कृतिकाछात्र सांगिरतन ७ २ पिन शांकिश शिक्तमस्त्वत्र व्यवहा त्वशित्रा याहेरवन । **जिनि कि** त्य मनत्य गछ পরিবর্ত্তন করিতে সমর্থ হইবেন ? পুর্ববিদ্ধে উৎপীয়ন ও অজ্যাচার বন্ধ হইবার কোন আশাই দেখা ৰাম না—কাজেই চুজি হয় ড শেব পৰ্যান্ত হৈড়া কাগজে प्रतिशृष्ट करेरत ।

মণীক্রচক্র সমাদার-

'বিহার হেরল্ড' সম্পাদক ও 'প্রজাতী' মাসিক পত্রের প্রতিষ্ঠাতা মণীক্রচক্র সমাদার গত ২৩শে মে মাত্র ৩৬ বংসর বরসে পাটনায় পরলোক গমন করিয়াছেন জানিয়া আমরা মর্মাহত হইলাম। তিনি গাটনার খ্যাতনামা ঐতিহাসিক অধ্যাপক বোগীক্রনাথ সমাদারের কনিষ্ঠ পূত্র। 'বিহার হেরাল্ড', নামক ইংরাজি সাপ্তাহিক ১৮৭৪ সালে অর্গত গুরুপ্রসাদ সেন প্রতিষ্ঠা করেন—১৯০৮ সালে মণীক্র ঐ পত্রের সম্পাদক হন। কৃতিত্বের সহিত এম-এ পাশ



মণীক্রচক্র সমাদার

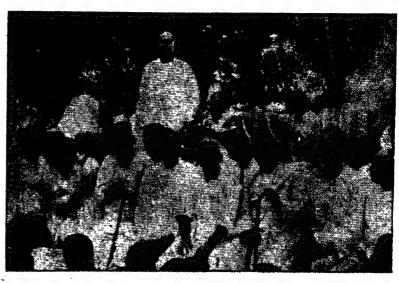
করিয়া তিনি সরকারী চাকরী বা অধ্যাপনার জীবন গ্রহণ না করিয়া সাংবাদিক হন ও গত ১০ বৎসর ধরিয়া বাধীনভাবে দক্ষতা ও সাহসের সহিত সে কাজ করিয়া গিয়াছেন। ১৯৪০ সালে ভিনি পাটনার বাদালী সমাজের মুখপত্ররূপ 'প্রভাতী' প্রকাশ করেন। এক বৎসর পূর্বে তিনি প্রভাতীর সম্পাদনভার প্রীবৃদ্ধদেব ভট্টাচার্ব্যের উপর অর্পণ করিয়াছিলেন। মণীক্রের এই অকাল মৃত্যুতে পাটনার সাংবাদিক সমাজের ও বাদালী অহিবাসীদের বে ক্ষতি হইল তাহা সহজে পূর্ব হইবে না। আমরা তাঁহার শোকসম্বর্থ পরিবারবর্গকে সমবেদনা ভাগন করি।

বান্তভাগি ও ডক্টর শ্বামাপ্রসাদ—

ড্টর শ্রীখানাপ্রদাদ মুখোপাধ্যার মহাশর কেন্দ্রীর সরকারের মন্ত্রীর কাজ ছাডিয়া দিয়া কলিকাভার ফিরিয়া श्रांनिश्च निन्छ हरेश বসিরা থাকেন নাই। তিনি পূর্ববন্ধ

হইতে আগত লক লক বাস্ত-हात्रात्र इःथ इक्ना महत्क তদন্ত করিয়া খুরিয়া বেড়াই-তেছেন ও সে বিষয়ে কর্তব্য নির্দ্ধেশ করিতেছেন। তিনি পর পর কর্মিন কাঁচরা-পাড়া, রাধাষাট, বেনাপোল, ্বনগাঁ প্ৰভৃতি হানে গমন कतियोक्तिमा क्रिक्रि धवित्रां नतीत्रा ७ मूर्निनारात ৰেলার সীমাত্তবিত গ্রাম-श्वामित्र अप व का स्मित्री আসিয়াছেন। সাহাযা ও পুনর্বসন্তি কার্য্যে যে সকল भनम त्मथा याहेरलह, जिनि সেগুলি সহজেও কর্ত্তপক্ষকে ব্দবহিত করিতেছেন। সে ব্যস্ত কয়বার তিনি পশ্চিম

অধিবাসীরা নানারণ ছ: ধক্ট ভোগ করিতেছে। বংসর বোগেশগঞ ইউনিয়নে ও পার্ববর্তী ইউনিয়নে পানীয় জলের অভাবে বহু লোক কলেরার মারা পিয়াছে। ঐ অঞ্চল জেলাবোর্ডের যে সকল হেল্থ এসিষ্টান্ট



কাঁচরাপাড়া চাঁদ্যারী আত্ররপ্রার্থী নিবিরে জনসভার বস্কুতা-রত ডক্টর স্থ্যানাঞ্চরাদ বুংগাপাখার। দক্ষিণে শীমাধনলাল দেন, বামে শীকণীশ্রমাধ মুধোপাধ্যার, মেলর প্রভাত বর্ধন,ডাঃ ডি-এন, ভার্ড্ডী প্রভৃতি। ছবির নিমে উপবিষ্ট পশ্চিমবল পল্লী-মলল সমিতির সদক্তপণ--(বাম দিক হইতে) - শীর্জনীকান্ত পাল, শীদেবেজনাথ মিত্র (সম্পাদক), শীক্ষরকুমার বস্থ, শীহেমচজ রার विशेष्त्रक्षमाथ थत्र. विविश्वक हत्वाभाषात्र ७ विश्वकानहस्र हत्वाभाषात्र

বব্দের প্রধান মন্ত্রী ডাক্তার রায়ের সহিতও সাক্ষাৎ ক্রিয়াছেন। মোটের উপর কি ভাবে তুর্গত বাস্ত-হারাদের পুনরায় উপযুক্তভাবে বাসস্থান ও কার্য্য দেওয়া বার, ভক্তর ভাষাপ্রাগাদের সে বিষয়ে বন্ধ ও 🦀 চেষ্টার অভাব নাই। মোটা বেডনের চাকরী ছাড়িরা দিয়া আদিয়া তিনি যে দেশদেবার কার্য্য গ্রহণ করিয়াছেন, ভজ্জ তিনি পূর্ব ও পশ্চিম বন্ধ উভত্র রাষ্ট্রের অধিবাসীদেরই বস্থবাদভাদন হইয়াছেন, তাঁহার এই চেষ্ঠা সাফ্ল্যমণ্ডিত रुष्ठेक, नकरनरे छेश श्रीर्थना कत्रिएछह । वर्छमान दुर्गछ বাংলার তাঁহার এই দেবাকার্য তাঁহাকে অসরত্ব দান कब्रिय ।

কুম্মরবন অঞ্চলে চুরবছা--

আছে তাহারা মাত্র ২০ টাকা মাসিক বেতন পান ৩ माम २० होका छाछा, शांत्रात वह र होका ६ বাড়ীভাড়া ২ টাকা মোট ৪৭ টাকা পাৰ। অৰচ এ অঞ্লে সরকারী হেল্থ এসিষ্টাণ্টগণ বেতন ৪০ টাক गरेवा यां >٠৫ होका शहेवा शहका कारक তাহাদের বারা কডটুকু কাল হয় ভাহা সহকেই বুব याय। अथा के अथन रहेए वाक्या शतिवार 8 अन नमः নিৰ্বাচিত হইয়াছে—তন্মধ্যে শ্ৰীবিষণচন্দ্ৰ সিংহ ও শ্ৰীহেষচঃ नक्षत्र मजी, अव्यक्तमूरमध्य नक्षत्र भागीरम्होती (मार्किहाई बीठाक्टल जाजाती ज्ञान्य मधी। जन्न मधी बिर्द्रह নাথ চৌধুরীও ঐ অঞ্লের অধিবাসী। ভাঁহারা ব ञ्चात्रवरतत्र रतिक अविवागारस्य गण्डा अक्षे अवहि विका वारनाव विकाश की मार्ख २८ वजना (कर्माव हन, छाव छाहाजा वह आकारत **छे**नकुछ हरेएछ नाहित

ন্ত্ৰ ও অতি সামীত। ২৪ প্রপণা জেলা বৈতি ত্তৃপক্ষ ও এ সম্পর্কে কিছু করেন বদিরা দলে হর না।

খাৰীনতা লাভের পর দেশরকা ব্যবস্থা সম্বন্ধে নৃতন नामक मधनीरक भवश्यि हरेए हरेबाहा। काल व সামরিক বিভাগ ছিল, তাহা সম্প্রদারিত হইরাছে। পদাতিক ও অখারোহী সৈত ছাড়া এখন নৌ-সেনা ও বিমান-সেনার বিশেব ব্যবস্থা করিতে হইয়াছে। প্রদেশ গুলিতেও দেশরকা বিভাগ স্থাপন করিয়া বিশেষ প্রবোজনের জন্ম সৈত্ত সংগ্রহ বা স্বেচ্ছা-সৈনিক সংগ্রহ করা হুইতেছে। পশ্চিম-বন্ধ আৰু বিশেষ বিপন্ন। পাকিন্তান হইতে অত্যাচারী আক্লার বাহিনী প্রায়ই ২ হাজার মাইল সীমান্তের বে কোন স্থান দিয়া পশ্চিম বন্ধ আক্রমণ করিতেছে-লিয়াকং-নেহক চুক্তির পরও সে আক্রমণ বা चारणाहात वक इव नारे। चात्रमार्ग वांश मिवांत कान উপৰক্ত ব্যবস্থা পশ্চিম বন্ধের পক্ষ হইতে করা হইরাছে विशा मरन इव ना। आमत्रा नहीत्रा ७ मूर्निकारास्त्र সীমান্ত পরিভ্রমণের সময় যে অব্যবস্থা দেখিয়াছি, তাহাতে **हिन्दिल ना रहेबा थोका यात्र ना। 8 माहेल व्यस्तद्र এक**हि করিরা সীমান্ত পুলিস^{*}টেশন—তথার মাত্র ১١৬ জন প্রহরী বাস করে—তাহার পর ৪ মাইলের মধ্যে কোন পাহারা नाहे। जीमांत्व थांठीव, नहीं वा त्कान वांश दिवांत कि इहे নাই। ভাহার হুযোগ লইরা পাকিতানী আন্দারগণ আমাদের রাজ্যে আসিরা প্রয়োজন মত সকল জিনিব লুঠ ক্রিয়া বা ক্রেয় করিয়া লইয়া যাইত। সে ব্যবস্থা এখনও বন্ধ হইরাছে বলিয়া মনে হয় না। পাকিন্তান হইতে আগত हिन्दूर्वा ঐ সকল সীমান্তে গৃহ নির্ম্মাণ করিয়া বাস করে। তাহাদের উপর আনুসারদের ক্রোধ অধিক-কাজেই ঐ সকৰ हिन्दू প্ৰায়ই অভ্যাচারিত ও বৃত্তিত হয়। পাকিতানা খানসার বাহিনী ওমেশে সীমান্ত বক্ষার কাল করে। चार्माएव बांच्या क्षेत्रण कान बच्चीपरणव वावश नारे। একদল লোককে জাতীয় রক্ষী বাহিনীর অন্তর্ভুক্ত করিয়া गांगतिक निका मान कता हरेशांह वर्षे, किंड এथन भर्गा**ड छाशास्त्र शीमांड** ब्रक्शंत्र कार्यं। निवृक्त कहा स्त्र নাই। ২৪ পরগণার সীমাতত্ত্তিত এখন পর্যন্ত অরক্তিত चरहां चाट्। त नका दान मिश कांत्रारे मान আমদানী রপ্তানী হইয়া থাকে—পাহারার ব্যবহা না থাকার।
চোরাই কারবারের ব্যবসারীরা তথার কালোবালার তৈয়ারীর
স্থবিধা পাইয়া থাকে। ঐ ভাবে কত মাল যে ভারত রাই
হইতে পাকিভানে চলিয়া গিয়াছে, ভাহার কোন হিনাব
পাওয়া যায় না। আমাদের শাসকবর্গ কেন বে এখনও
দেশরকা ব্যাপারে উপুর্ক্ত সতুর্কতা অবলঘন করেন নাই,
ভাহা জানি না। এ জন্ত বে পরিমাণে রক্ষী বাহিনী গঠন
করা প্রয়োজন হিল ভাহাও করা হয় নাই। সে জন্ত
পাকিভানী আক্রমণ চলিলেও এ পক্ষ হইতে ভাহাতে বাধা
দেওয়া সন্তব হয় না। কতদিন এই ভাবে আমরা আক্রান্ত
ও অভ্যাচারিত হইব, ভাহাঁকে জানে ?

ৰক্ষ-রোপণ উৎসব-

গত কয় বংসর ধরিয়া পশ্চিম বন্ধ গভর্মেণ্টের কুৰি বিজ্ঞাগ হইতে বর্বাকালে বুক্ষ রোপণ উৎসবের আয়োজন कत्रा ब्हेर्फिट्ह । किंक छु: स्थत विवय और त्य, धक निर्दे জনগণের উৎসাতের অভাব, অভ দিকে সরকার পক্ষের मामूली विकाशन-डिलाइत अस वाधकमःशाक नुक तांशान्त्र वावका प्रथा यात्र ना। वांश्मा प्राप्त शास्त्रक সংখ্যা কমিরা বাওরায় উপযুক্ত বর্ষারও অভাব দেখা দিয়াছে, সে জন্ম বন বিভাগ হইতে পশ্চিম বাংলার কোন কোন জেলায় নৃতন করিয়া বন স্টিরণ্ড আয়োকর: চলিতেছে। এ দেশে সাধারণ গৃহস্থগণ গ্রামে আম, আম, কাঁঠাল, পেয়ারা, জামকল, লিচু প্রভৃতি ফলের বাগান নিজ নিজ গুহের চতুর্দিকে তৈয়ার করিত। মাহুব গ্রামের বাক छाणियांक, मकाल महात्रत श्रांक चांकहे हहेतांक, कांत्कहे কেচ আরু কলের বাগান ভৈয়ার করে না। পিডামত বা প্রাপতামহ যে ফলের বাগান তৈয়ার করিয়া গিয়াছিলেন. গত মহাযুদ্ধের সময় একটা গাছের দাম এক শত টাক্ হওয়ার (কর্মার অভাবে কাঠের চাহিদা বাড়ার) লোছ সে সকল গাছ অর্থের লোভে বিক্রের করিয়া দিয়াছে, সে সকল ফলের গাছের স্থানে নৃতন বাগান তৈয়ারী হয় নাই সে জন্ম আজ বাংলায় ফলের দামও অতাধিক হইয়াছে এ অবস্থার সরকারী কৃষি-বিভাগ হইতে বৃক্ষ রোপণ সম্বং বিশেব চেষ্টা প্রয়োজন হইরাছে। বাহাতে প্রত্যেক গৃহ নিজ নিজ জমীতে ফলের গাছ রোপণ করেন, সে জ

मुक्नार्क प्रवृश्चि कर्ता श्राद्धांकन । मत्रकाती वांगारन करनत বাছের চারা ভৈয়ার করিয়া তাহা সকলের মধ্যে স্থলভে সরবরাহ করা কর্তব্য। এবার বাংলায় প্রচুর আম হইলেও আনের দর কমে নাই-কারণ নাছবের সংখ্যার ভুগনায় স্মাম গাছের সংখ্যা খুবই কমিয়া গিয়াছে। ধনীরা যাহাতে কলের বাগান করিতে উৎসাহিত হয়, কুর্বি-বিভাগ সে चष्ठ क्लान किहा करवन ना। वृक्त विशिषक नाना मिक আছে। নিম বঙ্গে প্রচুর নারিকেল উৎপর হয়—অধ্চ নারিকেলের চাব বৃদ্ধিতেও সরকার কোন প্রকার উৎসাহ দান করেন না। বে ভাবে ধান্ত-চাষীদের অধিক পরিমাণ कमन छेर्भारतित कन शुक्कांत श्रामान कता श्रेताह. সেই ভাবে ফলের বাগান তৈয়ারীর জন্ত, অধিক পরিমাণ ভরি-তরকারী উৎপাদনের অক্তও পুরস্বার প্রদানের ব্যবস্থা ৰব্ৰা উচিত ছিল। অনেক বড় বড় প্ৰশন্ত নৃতন পথ তৈয়ার इहेएछह्— सहे नकन शर्बत भारत कनवान वृक्त हार्शन ক্ষরিলে পথের সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি পায়, পথচারীরা রৌজের তাপ হইতে বক্ষা পার ও সঙ্গে সঙ্গে ফল উৎপন্ন হইরা দেশে কলের অভাব দূর করে। সে বিষয়ে কাহারও কোন চেষ্টা দেশা যায় না। পুরাতন পথগুলির ধারে যে বৃক্ষরাজি हिन, त्मश्रीन नहे रहेश गरिएएह, छारात शास न्छन वृक माशाहेबात्र७ त्कान क्रिंश त्मथा यात्र ना। ०० वरमत भूत्र्य আমরা দেখিয়াছি, বারাকপুর টাব্ব রোডের ধারে কেছ একটি নৃতন গাছ তৈয়ার করিয়া দিলে তাহাকে ৫ টাকা পুরস্কার দেওয়া হইত। এখন কি আবার সে প্রথা প্রবর্তন করা বার না? অবখ্য এখন পুরস্কারের পরিমাণ ৪।৫ গুণ করা প্রয়োজন হইবে। তাহা করিলে তবু ঐ একটি পথের খারেই করেক সহস্র গাছ তৈরার হইতে পারে। আমাদের এক বন্ধু কয়েক বৎসর পূর্বের বড় বড় রান্ডার ধারে নারিকেন গাছ রোপণের প্রভাব করিয়াছিলেন। প্রচুর পরিমাণ নারিকেল উৎপন্ন হইলে তহারা দেশের থাডাডাব ক্ষতক পরিমাণে কমিয়া যাইবে। বর্তমানে দেশে আলানি कार्टित भूवरे ज्ञाव। अवह अक त्यनीत जागानी कार्टित গাছ পথের ধারে রোপণ করিলেই বড় বড় গাছে পরিণত হয়—সে গাছগুলি অতি শীত্র বর্জিত হইয়া থাকে। বে দিকেও কৃষি বিভাগের কর্তৃপক্ষের যম্বান হওয়া প্রয়োজন। মিউনিসিপালিটা, ইউনিয়ন বোর্ড, জেলা বোর্ড প্রভৃতি যাহাতে এ কার্য্যে অগ্রসর হয়, সরকারী সায়ন্তশাসন বিভাগ ও কুবি-বিভাগ সে বিষয়েও কেন অবহিত হন না ক্রানি না। স্থুল কলেকের ছাত্রদিগকে অতি সহকে এই কার্য্যে নিযুক্ত করা যায়। তাহারা যৌবনে এ কার্য্য উৎসাহ পাইলে সারা জীবন সে অভ্যাস রক্ষা করিয়া চলিতে পারিবে। বাঙ্গালা দেশের বছ ছানে রথের উৎসব হয়, রণের বাজারে পূর্বের বহু গাছের চারা বিক্রীত হইত-এখনও কোন কোন স্থানে সে ব্যবস্থা দেখা যায়। বৰ্ষার প্রথমেই রথ হয়—কাজেই লোক রথের বাজারে চারা কিনিয়া বর্ষার প্রথমে তাহা বাগানে রোপণ করিলে বর্ষার জলে সে সকল গাছ বাঁচিয়া যাইত। সে ব্যবস্থায় উপযুক্ত ব্যক্তিদেরও অহপ্রাণিত ও উৎসাহিত করা প্রয়োজন। ক্রবি-বিভাগের কর্মচারীরা বাহাতে এ সকল কাজে মন দেন, তাহার ব্যবস্থা প্রয়োজন। খাত্য-বিভাগ হইতেও এ বিষয়ে কাল করা উচিত। ফলের গাছই হউক, আলানী কাঠের গাছই হউক—আমাদের খান্ত ব্যবস্থা সম্পর্কে সেগুলির বিশেষ প্রয়োজনীয়তা আছে। পূর্বে পথের ধারের তেঁতুল গাছওলি হইতে এত অধিক তেঁতুল পাওয়া যাইত বে তেঁতুলের সের ছিল ১ পয়সা। আর এখন তাহা ৮ আনা। পথের ধারে কাহাকেও আর নৃতন তেঁতুল গাছ বদাইতে দেখা যায় না। প্রাবণে হয় ত সরকার পক্ষ হইতে বুক রোপণ সপ্তাহ অমুষ্ঠিত হইবে, সে জক্ত আমরা এখন হইছে সকলকে উৎসাহের সহিত সে বিষয়ে কার্য্য করিতে অহরোং कति। एएएन श्राह्म नक्नाती यहि ध विवाद मरनारवाई इन, छारा इरेल সমস্তার সমাধান করা আদৌ কটকঃ हरेरव ना।





क्षारक्ष्मचत्र क्रहीशांबात

চুটবল লীপ গ

ক'লকাতার গড়ের মাঠে ক্যালকাটা ফুটবল লীগের ইভিন্ন বিভাগের থেলা যথারীতি আরম্ভ হয়ে গেছে। তে বছরের থেকে খেলীর মাঠের দর্শক সংখ্যা বছগুণ ছি পেরেছে। মোহনবাগান কিছা ইস্টবেকল দলের সঙ্গে य त्कान कुर्वन परलंद (थनाय मोर्ट्स त्या पर्नेक नर्मानम চেছ। এর কারণ, খেলার ভাল স্ট্যাণ্ডার্ড নর, প্রধান রারণ হ'ল ক'লকাতার লোক সংখ্যা অনেক বেড়ে গেছে। এ পর্যান্ত প্রথম বিভাগের লীগে যতগুলি থেলা হয়েছে গার ফলাফলের উপর লীগের উপরের দিকে আছে গত ছেরের লীগ ও শীল্ড ক্জিয়ী ইস্টবেদল ক্লাব, মোহনবাগান এবং বাজস্বান। ইস্টবেলন ৯টা খেলায় ১৭ পয়েণ্ট করেছে। জর্জ টেলিগ্রাফের সঙ্গে তাদের খেলার কলাফল এর সঙ্গে ধরা হয়নি। সেদিন খেলা শেষ হবার নিষ্কারিত সময়ের তিন মিনিট আগে পর্যান্ত থেলাটা ড্র াচ্ছিল এমন সময় ইস্টবেঙ্গল এক গোল দেয়। এই গোল रवात्र আগেই রেফারী অফ্ সাইডের হুইদেল দেন। কিছ মাঠে একদল উচ্ছুৰ্ল দৰ্শক চুকে পড়ায় খেলাটা শেষ পর্যান্ত আর হয়নি, অসমাপ্ত অবস্থায় থেকে বার। এ খেলার পরেণ্ট সম্পর্কে আই এফ এ-র কাছ থেকে এখনও কোন স্বস্পষ্ট মত পাওয়া যায়নি। ইস্টবেকল **ज़ोर >•ों (थलांत्र मर्स्य ○र्क्ट (थलांत्र मरलंत्र स्ट्रनाम स्रह्मात्री** থেলতে পারেনি। তাদের থারাপ থেলা হয়েছে कानीबांह, बर्ब्ड टिनिशाक धवर कानः गांत्रिमन मलात गत्न। कानीवां क्रांदित गत्न (थनात रेफेरिकन क्रांव শেব পর্যান্ত ১-০ গোলে জয়ী হয়ে কোন রকমে মান রকা করেছে। খেলার আগে কেউ ভাবতে পারেনি

অখ্যাতনামা একেবারে তরুণ বালালী খেলোয়াড নিয়ে কালীঘাট ক্লাব গত বছরেঁর লীগ-শীল্ড-রোভার্স বিজয়ী है के रिवन को वरक अरक वारत नारकहान करार । निर्दाशक-ভাবে সেদিনের খেলা বিচার করলে ঐ দিনের খেলার কালীঘাট ক্লাবের অয়লাভই সমত হ'ত। 'কালীঘাট ক্লাৰ-হুর্ভাগ্যক্রমে হেরে গেলেও দর্শকদের একথা বুঝিয়ে দিরেছে বাকলার বুব শক্তি উপেক্ষিত হলেও এখনত মরেনি: অভিজ্ঞতা এবং খ্যাতির দিক থেকে কালীবাট সাব ইস্টবেশ্বল দলের খেলোয়াড়দের সামনে দাঁড়াভে পারে না কিন্ত এ সমন্তই সভ্যবদ্ধ জাতীয়তাবোধের কাছে কি ভাবে চুরমার হতে পারে সেদিনের খেলার তারা দেখিরে দিয়েছে। আমরা কালীঘাট ক্লাবের বালালী খেলোয়াড়দের আন্তরিক অভিনন্দন জানিয়ে বলি 'সাবাস! সাবাস! **এই मरक रव मन क्रांव छे९क** है क्लीब चार्थ वाहरवब খেলোয়াড আমদানী ক'রে লীগ-লীল্ড পাওয়াটাই একমাত্র কাম্য হিসাবে গ্রহণ করেছে, তাঙ্গের সেদিনের খেলার অবস্থা অমুধাবন করতে অমুরোধ করি। বর্জ্জটেলিগ্রাকের সলে খেলায় ইস্টবেদল দলের আক্রমণ ভাগের খেলোয়াডরা पर्यकरमत्र रूजांग करत्रहा। (श्रामात्राज्ञ एत कार्के कार्य সমর্থকেরা শেষ পর্যান্ত বিরক্ত হয়ে উঠেছিলেন। ক্যালকাটা ইস্টবেশ্বলের তিনজন নির্মিত বিপক্ষে থেলোয়াড় নামেনি। ভিবে মাঠের স্থবিধা পেরে সৈনিকদল ইস্টবেদল দলের থেকে অধিক অব্যর্থ গোলের স্থযোগ পার কিন্ত ফুর্ভাগ্যক্রমে তার একটারও সন্থাবহার করতে পারেনি। ইস্টবেশল দলের থেলোরাড় আবিদ এবছর মহমেডান प्रभार्तिः मान त्यांश्रमान कतात मानत विश्वय कि । তাদের 'ফরওয়ার্ড লাইন' এখনও অক্ত দলের থেকে :

সর্কাশেকা জভসানী এবং শ্রেষ্ঠ। সেই ভূলনার হাক লাইন স্থবিধার নয়। রক্ষণভাগে একমাত্র ব্যোদকেশ বোসই নির্ভরশীল। তাজ মহশ্বদের মত একজন শক্তিশালী ্ব্যাকের অভাব বেশ বুঝতে পারা বাচ্ছে। আক্রমণভাগে শক্তিশালীখেলোয়াড় থাকার জন্ত রক্ষণভাগে এখনও তেমন চাপ পড়েনি। দলের ক্বডিছ এ পর্যান্ত একটা খেলাতেও হারেনি এবং মাত্র একটা গোল থেয়েছে। গোল দিয়েছে ই-আই রেলদলের মেওরালাল। খেলা ড্র গেছে একটা, र्धानकोमित्र मर्ल । > छो (थनाव २) छ। (शान बिरव्राह । >० । (थनाव >७ পরে॰ कि. कहत विजीव शांत আছে গত ব্ছরের আই এফ এ শীক্ষের রানার্স-আপ মোহনবাগান ক্লাব। মোহনবাগান এখনও পর্যস্ত হারেনি। ২০টা ুগোল দিয়ে ৩টে গোল থেয়েছে। দলের নভুন থেলোয়াড়দের মধ্যে উল্লেখযোগ্য ফরওয়ার্ডে সন্তার (মহংস্পোর্টিং), এস গড়গড়ি, অনিল মুধার্জি (রাজস্থান) ; হাফ্ব্যাকে ডি পাইন (এরিয়ান্স) এবং রন্তন সেন (রাজস্থান)। মূল্যবান এক পরেণ্ট নষ্ট করেছে স্পোর্টিং ইউনিয়নের সঙ্গে থেলা ছ ক'রে। রাজ্যান ক্লাব ১ টা থেলে ১৫টা পরেণ্ট পেরেছে। রাজস্থান লীগের থেলায় थाथम (हर्द्राह >-) (गांत हे के दिवन मतन को हि। রাজস্থানে একাধিক নামকরা খেলোরাড় এ বছর যোগ দিরেছে। ভারতীয় অলিম্পিক গোলরক্ষক সঞ্জীব, राक्तांत्क चातांकिया चामी ७ महावीत, कत्रख्यांदर्ध वक्ष ভেশু, খ্রাম্পানী, রমন, এন্টনি এবং ডি জুল। দলের রকণ এবং আক্রমণভাগ সমান শক্তিশালী। খেলোয়াড় সংগ্রহের দিক থেকে রাজস্থান ক্লাব ফুটবল ক্রীড়ামহলে যে চাঞ্চল্য স্ষ্টি ক'রেছিল খেলায় ভেমন কিছু দেখাতে পাচ্ছে না। এ পর্যান্ত বেশী গোল দেওবার কৃতিত্ব লাভ করেছে আর দাশগুথ (কালীঘাট) ৭; 'মেওয়ালাল (ই-আই-আর) ৭; **এই সলে উল্লেখযোগ্য, ভেঙ্কটেস ও ধনরাজ** (ইস্টবেক্স) ७; (क निःह, (कानीषाठ) ७ ; a वानार्कि (कर्कटिनिः)—e ; हेर्फेटवां श्रीय मनारंखन ध्वकां धानी विधां क कांनकां है। क्रांव नीरभव (नव शाल चारक । >२हा (थनाव २ शरव हे करतरक । পর পর দশটা ধেলার হেরে ক্যালকাটা ক্লাব ভবানীপুর দলের সঙ্গে ২-২ গোলে খেলা ছ ক'রে এক পরেণ্ট পার। এবছর কোনু দল লীগ পাবে এবং কোনু দল বিভীয় খেলার সরস্থ ক'লকাভার গড়ের মাঠে গভ বে মাসের

বিভাগে নামৰে এ জানবার আগ্রহ মর্শক্ষহলের সমান। भिव भर्गां विम क्रांगकांका क्रांवर नीत्भव मर्कत्मव श्वांन অধিকার করে তাহলে এই দলের সন্মান কি উপারে বজার वांथा यात्र धरे निरम निक्त कीषांमरूल नाना अजना कन्नना চলবে। এটা কম উপভোগ্য বিষয় হবে না।

মহমেডান স্পোর্টিং শীগের তালিকার বর্ত্তমান অবস্থার ১ - টা থেলায় ১৩ পরেণ্ট ক'রে চতুর্থ স্থানে আছে। হার र्याष्ट् > छोत्र, बाक्शन मलात कार्ष्ट् > - ॰ शाला। वर्ष-টেनिগ্রাফ আছে পঞ্চম স্থানে এদের হার ২টো।

ভবানীপুর ১০টা খেলায় ৮টা ম্যাচ ছ করেছে, হেরেছে > होत्र, इंकेटवननम्हानत्र कार्ष्ट् व्यवः निष्ठाह् कार्गनकाही গ্যারিসনের সঙ্গে ৮ গোলে। 'কালীঘাট ৮-১ গোলে বি এন আরকে হারিরেছে। এ বছর এ পর্বান্ত এত বেশী গোলে এই ছ'দল ছাড়া কোন দল ব্বিত তে পারেনি। ইলিংশ ফুটবল মরসুম ৪

১৯৫০ সালের ইলিংস ফুটবল মরস্থমের পরিস্মাপ্তি

चिंदि । नीति कनांकन स्वश्वा रन ।

এক এ কাপ:

विवशी

রানাস-আপ

আসে নাল—২ সিভারপুল-•

প্রথম বিভাগ লগে

রানাস'-আপ চ্যাম্পিয়ান্স

পোর্টসমাউথ-(৩০) উল্ভার হামটন ওয়াপ্তারাস (৩০) দ্বিতীয় বিভাগ নীগ:

টোটেনহাম হটসপার (৩১) শেফিল্ড ওরেডনেসডে (৫২) তৃতীয় বিভাগ (সাউৰ)

নটস কাউন্টি (৫৮) নৰ্থহাষ্টন টাউন (৫১) ভূতীয় বিভাগ (নর্থ)

ভনকাষ্টাৰ্স বোভাৰ (ee) গেটসহেড (৬০)

৪২টা খেলার কোন দল কড পরেণ্ট করেছে তা দলের नांत्मत्र शत्र वक्षनीत्र मत्था त्मख्त्रां र'दाह् ।

স্বটিস লীগ 'এ' রেঞ্চার্স (৫০) हिवांबनिवान (8>)

ু ডিভিসন 'বি' মটোন (৪৭) এয়ারভ্রিওনিয়াব্দ (৪৪) জাতীয় জীবনে ফুটবল খেলা \$

वांकना स्थापन गव (थर्क कर्निन स्थापन स्टेनन

প্রথম থেকে ফুরু হয়ে গেছে। ক'লকাতার গড়ের माठेटक नाता ভातछत्र कृष्टेवन धावर हिक (बनाव महा-তীর্ধক্ষেত্র বলা অসমত হবে না। ফুটবল থেলার সঙ্গে বালালী লাভির ক্লষ্টি-সভাভার বেন এক অচ্ছেত সম্বন্ধ, বেষন জীবনধারণের ক্ষেত্রে ভাত ও মাছের। ক'লকাতা সহর ছাড়িছে বাংলার মফ:খল সহর, সহরতলী এবং পরী গ্রামাঞ্লগুলিতে ফুটবল খেলার জনপ্রিয়ভার তুলনা ভারতবর্বের অন্ত কোন প্রদেশে মিলরে না। অর্থনৈতিক ক্ষেত্রে বাঙ্গালী জাতি ইংরেজ রাজছের সমব থেকেই নি:স্ব হয়ে করুণাব পাত্র হাতে নিয়ে দাঁড়িযেছে। বৈদেশিক শাসক-কুলের স্বার্থের প্রয়োজনে বাদালী স্বাতিকে স্বাত্মতাাগ এবং নানা প্রলোভনের বিনিময়ে চাকুরীরুদ্ধির পথ বেছে নিতে বাধ্য করা হয়েছিলো। এর কুফল সমগ্র জাতির স্বাধীন मखात्र चार्छाविक विकारभन्न शर्थ बर्र्सहे वांधाव कांत्रण हरव দীড়ালেও বালালী জাতির মধ্যে একাধিক প্রতিভাবান মনীষি অন্মগ্রহণ ক'রে সারা ভারতের দাসত্ব শুঝলমোচনের সংগ্রামে নেতুছের সন্মান লাভ এবং সেই সভে চরম ছঃধ ছৰ্দ্দশা এবং মৃত্যু পৰ্যান্ত বরণ করেছিলেন। বান্দালী বাতির বীবনসভার মধ্যে রাজনীতিক চেডনার উলোব বৈদেশিক শাসকমগুলীর চোধে কিছ অপরাধের কারণ হরে দাঁভিরেছিল। এই অপরাধের শান্তিম্বরূপ শাসক সম্প্রধার সমগ্র বালালী জাতির ধন-প্রাণ, মান-সন্মানকে কি ভাবে লুটিত এবং লাছিত করেছে তার ইতিহাস मीर्यमित्तव थवः चाक्रदक्व कविक् वाकानी कािंठर বৈদেশিক কুটনীতি এবং নিপীজনের যুপকাঠে আত্মবলি বিষে আৰু নিক দেশে পরবাসী হয়েছে। অর্থনৈতিক চাপে নিশিষ্ট হয়ে সমগ্র বান্দালী জাতির মুখ খেকে चरनक दिन चार्शिं शिंगि विकाद रशह । राजानी হাসতে জানে না, এ রক্ষ মন্তব্য বাজালা জাতি সম্পর্কে দীৰ্ঘকাৰ চাৰু আছে। একথাটা বেমন খাঁটি সভা, ভেমনি এর ব্যতিক্রম আছে মাত্র হুটি ক্ষেত্রে। একদিকে, বেশবেষের গুরুত্ব অপরাধে অভিযুক্ত হরে ফাঁসির দড়ি গলার পরতে গিরে বাখালী বুধকদের মুখে হাসি ঝরেছে শশরবিকে বালাশীর মুখে হাসি বেখা গেছে ফুটবল খেলার मार्छ। চाकूबीसीवी मधाविक त्क्तावी, दून क्लात्सव श्रीक श्रीत कांत्र अरकत्र निरवरे कृष्ठेका व्याणावाफ सात

এরাই হ'ল ফুটবল থেলার দর্শক এবং বড় সমর্থক। বছরের
মধ্যে মে নাস থেকে অ্বরু ক'রে ভিনচার মাস ক'লভাডার
বালালী জাতির মধ্যে একটা আনন্দ-উদ্দীপনার সাড়া
পাওরা বায়। বালালী জাতি বে হাসভে পারে, তাদের
প্রাণে বে আনন্দের প্রাচুর্য্য আছে সেই সলে থৈর্য্য এবং
কট্ট-সহিম্ন্ গুণও যে আছে, বোশেও এবং ভটি মাসের
কাঠফাটা রোদে আবার আবাঢ়-প্রাবণ মাসের অবিরাদ
বারিপাতের মধ্যে থেলার মাঠে আট দশ ঘণ্টা অপেকামান
বালালী দর্শকদের দেওলে তা স্বীকার না ক'রে
পারা বায় না।

বুটিশ আমলে পুলিশের গুতো এবং যোড়ার লাখির বেড়াজাল পার হবে মাঠের মধ্যে চুকে সে 🗣 আরামের নিখাস আর একমুখ হাসি। আব যেদিন খেলার গোর কিখা ইউরোপীয় দলকে বালালী দল হারিয়ে দিত সেদিন मरनत जानत्म राजानी मर्नकरमत बूर्थ शंति छेश्रह পড়তো। আগের দিনে বাদালী ফুটবল থেলোয়াড়দের খেলায় নিষ্ঠা এবং আন্তরিকতার বিশেষ প্রশংসা শোন याय। अत्र शिष्ट्रान निष्टक (थलाठे हिं वड़ हिल ना, हि। বছদিনের উৎপীড়নের ফলে প্রতিশোধের আফোশু জাতীয়তাবোধ এবং রাজনৈতিক চেতনা। ভারতী। রাজনৈতিক এবং অর্থনৈতিক ক্ষেত্রে প্রভূষ নিয়ে रेरामिक मदकारदद माम जामारमद य विरदांध हिंग (थनात्र मार्फ जारमत्रहे काजीत कृष्टेवन (थनात्र हातितः আমরা ভাতীয় জয়লাভের সমান আনন্দ এবং আত্মপ্রসা। লাভ করভুম। শিক্ষা, সভ্যতা এবং কৃষ্টির ক্ষেত্রে বেদ্য পাশ্চাত্য পদ্ধতি এবং ভাবহারাকে আমরা অদ্বের মং चक्रकत्रण करत्रिह एकमि क्षेत्रण विरमणी (थना रूखर সত্তেও আমরা জাতীয় খেলার সমান পদম্যালা দিয়েছি ভারতীর ফুটবল খেলার যে একটা নিজম পছতি এব স্বাত্তা ধারা রয়েছে তার পথ প্রদর্শক হ'ল বাঙ্গালী ফুটক খেলোয়াভরা। আৰু যেমন ঘটনাচক্রে জীবনের বিভিন্ন ক্ষেত্রে আমরা পিছ হটেছি, তেমনি পিছনে পড়ে আছি থেলাগুলা धमन कि कृष्टेवल (बलाटिल। क'नकालात वर्षतान कृष्टेवः व्यवन्त्रिक नीकिहे कृष्टेवन (धनात्र वात्रांनी (धानावाकृत्यः कीवत्न हत्रम वार्थका एक क्षानाह । निकारकार

বেমন সট-কাট নোট মুখন্থ ক'রে ছাত্র-ছাত্রীরা পরীক্ষার সাফল্য লাভের সোলা পথ বৈছে নিয়েছে, আমাদের দেশের নামকরা একাধিক ফুটবল টীমের কর্তৃপক্ষ মহলকে শীগ-শীক্ত জয়লাভের অজনোহে জাতীয় সম্মান এবং থেলাধ্লার মূলনীভি বিসর্জন দিরে কেবল দলগত স্বার্থের উদ্দেশ্যে বাজলার বাইরে ভারভবর্বের বিভিন্ন অঞ্চল থেকে এমন কি বর্মা মূর্কেও থেলোরাড় সংগ্রহের আড়কাঠি পাততে দেখা গেছে। এসব কাজে তাঁদের কি উৎসাহ, উদ্দীপনা এবং আইনের ছিত্র প্রথ আবিকারের কূটবৃদ্ধি! আজ তাঁদের কাছে বড় কথা, লীগ-শীক্ত নিয়ে দলের নাম ক্রান্ডিটা ক'রে বেশী সংখ্যক সমর্থক যোগাড় করা। এর

মধ্যে নীতি বা কোন আদর্শের বালাই নেই, একমাত্র
দলার এবং ব্যক্তিগত স্বার্থ ছাড়া। মনের মধ্যে এবং
আচার ব্যবহারে প্রাদেশিকতা এবং সন্ধীর্ণতা পোষণ করা
মহত্বের যেমন পরিচর নয় তেমনি এর দোহাই দিয়ে এমন
উদারতার পথ নিশ্চয় অবলম্বন করা উচিত হবে না যার
ফলে সমগ্র জাতিকে আত্মপ্রতিষ্ঠা লাভের অধিকার থেকে
বঞ্চিত হ'তে হবে। আজ্ম ক'লকাতার যে অবালালী
ফুটবল থেলোয়াড়দের উপর দলের সম্মান রক্ষার ভার
ছেড়ে দেওয়া হয়েছে এবং যে সব কৌশলে তাদের দলভুক্ত
করা হয় তা আত্মপ্রবঞ্চনার সমান এবং তাতে সথের
থেলোয়াড়দের মর্যাদা রক্ষা হয় না। ১০০০ ০০০

নব-প্রকাশিত পুস্ককাবলী

নরেক্র দেব প্রণীত অমণ-কাহিনী "রাজপুতের দেশে"—৩০

নন্ধথ রার প্রণীত নাট্যাপজার "কুষাণ"—২

বীবিলীপকুষার রার প্রণীত স্বর্রালিপ "প্রবিহার"—৪, গানের বই
"ভাগৰতী গীতি"—৪,

বীবিলাথ মজুম্বার প্রণীত উপজার "মানস-প্রতিমা"—২০

বজ্ঞের রার-সম্পাদিত গল্প-গ্রন্থ "ধূদর প্রবিচ্ছ"—২,
বীব্দজকুমার চট্টোপাধ্যার প্রণীত "উপনিবদ" (তর খণ্ড)—২,
বীব্দজকুমার চট্টোপাধ্যার প্রণীত উপজার "কুর্দান্ত ম্বণন"—২১,
"হীরক-বীপে স্বপন"—২১, "অপরাজের মোহন"—২১,
বীকুম্বনাথ ঘোব-জনুদিত "আইভ্যান্হো"—১১,
বীকুম্বনাথ ঘোব-জনুদিত "আইভ্যান্হো"—১১,

শিল্পান্ত ক্ষা চট্টাপাধ্যার প্রণীত প্রীবনী "কানাইলাল"—৪০,
"সত্যেন বহু"—৪০

শ্রীব রাজ্রমোহন মুখোগাখার-সম্পাদিত রহস্তোগস্থাস

"প্রীব হাউস"—১৫

শ্রীব হাউস"—১৫

শ্রীব হাউস"—১৫

শ্রীব হাউস"—১৫

শ্রীবতী বিজনলতা দেবী প্রশীত উপস্থাস "খুলার ধরণীতে"—২৫

শ্রীবতী বিজনলতা দেবী প্রশীত উপস্থাস "লক্ষ বর্ষ পরে"—১৫

শ্রীবাদ্ধার প্রশীত শব্দুপ্ত কালো গোরেন্দা"—১

শ্রীবাদ্ধার প্রশীত শব্দুপ্ত কালো গোরেন্দা"—১

শ্রীবাদ্ধার সাখন সজ্য প্রকাশিত "পারের কড়ি"

(বক্ষচারী সন্দানন্দন্দীর প্রাবলী)—২১

শ্রীবালভমোহন ভট্টাচার্য প্রশীত কাব্যব্রন্থ "বনলতা"—৪০

শ্রীশানীক্রনাথ মিত্র প্রশীত "ভারতীয় সন্দীত পরিচিত্তি" (১ম খণ্ড)—২১

শ্রীকালিদাস রার প্রশীত "বন্ধ সাহিত্য পরিচন্ত্র" ২র থণ্ড—৬

মিহিরলাল সন্ধোপাধ্যার প্রশীত নাটক "পাটিলিপুত্র"—২১

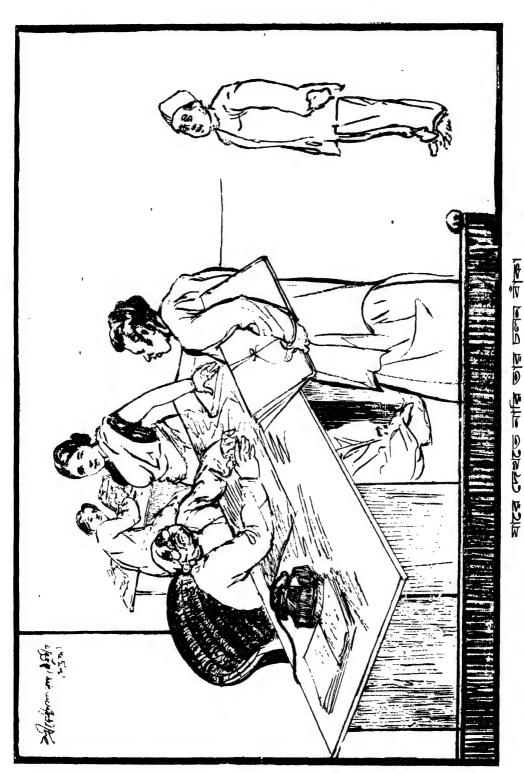
বিজ্ঞপ্তি

আনাদের পাকিতানস্থ গ্রাহকগণের মধ্যে বাঁহারা আনাদের কার্যালয়ে "ভারতবর্ধ"-এর চাঁদা পাঠাইতে বা জমা
দিতে অস্থবিধা ভোগ করিয়া থাকেন, তাঁহারা অতঃপর ইচ্ছা করিলে গ্রাহকনম্বর উল্লেখপূর্বক The Asutosh
Library, 78/6, Lyall Street, Dacca, East Pakistan—নিকট চাঁদা পাঠাইতে বা জমা দিতে পারেন।
নৃতন গ্রাহকগণ টাকা জমা দিবার সময় "নৃতন গ্রাহক" কথাটি উল্লেখ করিবেন। ইতি— বিনীত

কার্যাধ্যক—ভারতকর

जन्णानक--- बीक्गीलंगाथ बृत्थानापाय वय-व





সম্পাদ্ক ঃ--- অসম্ভব। ঐ চেহারা আর করে। শোধরাবেন। তা ছাড়া আপনার গুপ্তি-চাছনিটাও স্থবিধার নয়। শিলী ঃ—(প্রতাশ্যাত ছবিশুলি সংগ্রহ করিয়া) ফটে জানতে পার্লে সংশোধন করতে পারতাম।



日本ののの一つで

প্রথম খণ্ড

অষ্টত্রিংশ বর্ষ

দ্বিতীয় সংখ্যা

গীতায় সন্মাসের আদর্শ

बीधीरत्रखनाथ वरन्गां भाषात्र वम-व

কুরুক্তেরে যুদ্ধ আরম্ভ হইতে আর বিলম্ব নাই। শরবর্ষণের জন্ত ধছুর্বাণ তুলিয়া জর্জুন সহসা থামিয়া গেলেন,
সারথিকে বলিলেন—রথ ফিরাও, যুদ্ধ আমি করিব না,
বিজয় রাজ্য হুথ আমি চাহি না, 'ক্ষির-প্রদিগ্ধান' ভোগে
আর কাজ নাই। কর্মত্যাগ সংসারত্যাগ করিয়া আমি
সয়্যাসী হইব, ভিক্ষায়ে জীবন ধারণ করিব। কিন্ত
ফিরিবার পথ নাই—'সেনয়োকভয়োর্মধ্যে' রথ স্থাপিত।
পাণ্ডবপক্ষের সর্বময় অধিনায়ক রথীক্ত জর্জুনকে যুদ্ধ করিতে
বিম্থ দেখিয়া শ্রীকৃষ্ণ কঠোর ভাষায় বলিলেন—কৈবাং
মাম্ম গমং পার্থ। অর্জুন, ক্লীব হইও না, অধর্মের গ্রানিতে
কিন্ত বিশাল ভারতকে ভাঙিয়া চুরিয়া নৃতন মহাভারত
স্থাই কয়। বুর্জোয়া মনোবৃত্তি, আভিজাত্যের চিন্তাপ্রণালী
ছাড়িয়া দাও। একতরফা ভীয়-জোণের জন্ত 'কুপয়াবিষ্টমশ্রপ্রাকুলেকণ্য' হইলে জনসাধারণ—বেহপি স্থাঃ পাণ-

যোনয়:—জ্বী বৈশ্ব শুদ্র পতিত চণ্ডাল বাদ পড়িয়া যার। গণশক্তিই রাষ্ট্র-শক্তি।

যাঁহারা বলেন—রূপক ছলে অন্তর্জগতের রহস্তসমূহ
সমাধান করাই গীতার উদ্দেশ্য, গীতার কুরুকেত্র ঐতিহাসিক
কুরুকেত্র নহে, উহা মাহবের ছান্যক্রেত্র, মাহবের সহিত
মাহবের যুদ্ধ গীতার বর্ণিত হয় নাই, উহা সাধন-সমর,
তাঁহাদের সহিত আমরা একমত হইতে পারি নাই।
মাহবের অন্তর্জগতে বেমন পাপ-পুণাের হল চলিতেছে,
বহির্জগতে মাহবের বাত্তব কর্মজীবনেও সেইরূপ ঘাতপ্রতিঘাত নিরস্তর চলিতেছে। ভারতের নব্যুগে আজ
এই কথাটি স্বাত্রে মনে রাখিতে হইবে বে, এক
ঐতিহাসিক মহাযুদ্ধই গীতার পটভূমি, রক্ত-প্রাবিত
ইতিহাসের ক্ষেত্রেই গীতার বাণী উচ্চারিত। ধর্মক্রেত
আজ আর নৈমিষারণাের শাস্ত পরিবেশের মধ্যে নহে,

ভারতের শেষ বেদান্ত সকল লেব প্রশ্নের চরম মীমাংসা
দিতে রণভূমির কেন্দ্রনেই আবির্ভূত, কলকোলাংলমর
বৃদ্ধক্রেই শ্রীকৃষ্ণার্ভূন সংবাদরণে প্রকট হইরাছে।
ছবোগমর কুরুক্তেতেই শ্রীকৃষ্ণ 'ব্রদ্ধবিভারাং যোগশাস্ত্রে'র
উপদেশ দিয়াছেন, খূলিমলিন ধরার কর্মের মধ্যেই নৈছর্ম্যের
আদর্শ প্রচার করিরাছেন। গীতা ঝড়ের শাস্ত্র—ঝড়কে
বৃহক্ব লইরা কেমন করিরা পরম শাস্তি নামিরা আসে
সেই সংবাদ গীতা দিয়াছেন। শ্রাশানের শাস্তি গীতা প্রচার
করেন নাই।

সংসার যুক্তক্ত — ইহাই সংসারের স্বরূপ, এথানে সকলে যুর্ৎস্থ হইরাই সমবেত। বিশ্বপ্রকৃতি এথানে চ্যালেঞ্জ দিয়া বসিয়া আছেন—যো মাং জয়তি সংগ্রামে * * * স মে ভর্তা ভবিয়তি। এই যুক্ত-আহবান গ্রহণ করিয়া তাহাকে জয় করিতে হইবে। এই জয় করার সাধনা গীতাতে বণিত। অন্তর্জগতে বহির্জগতে যত প্রকার শক্র আছে সব জয় করিয়া সমৃদ্ধ রাজ্য ভোগ করিতে হইবে। ভিতরের কামক্রোধাদিই কেবল শক্র নয় বাহিরের আততায়ী ছর্যোধনাদিও পরম শক্র। এ বিশ্বে পরাজিতের স্থান নাই।

জটিল সমস্তাপূর্ব সংসারকে পায়ে ঠেলিয়া জগতের ७ भारत मुक्कित महान निवांत अष्ठ मकल डेभनियानत मात লইয়া গীতার সৃষ্টি হয় নাই। গীতার মুক্তি এই জগতের মাটির বুকে —ইহৈব তৈর্জিতঃ সর্গো যেষাং সাম্যে স্থিতং মন:- মৃত্যুর পূর্বে এই মানব দেহে-প্রাক শরীর-বিমোক্ষণাৎ। সংসার ত্যাগ করিলেই শাস্তি আসে না. রস-লালদা অত্থ্য-বাদনা অবচেতনায় বাদা বাঁধিয়া স্থযোগের অপেক্ষায় তত্ত্ব থাকে। অশ্বীকার করিলেই বিশ্বপ্রকৃতি অত্বীকৃত হয় না। ইহার অনেক দৃষ্টান্ত পুরাণকার দিয়াছেন--রাজা হুরও, বৈশ্র সমাধি, সৌভরি পরাশর ঋষশুক বিশ্বামিত রাজা ভরত। নিগৃহীত হইলেই কামনা मरत ना, बार्मधनरक कवारेल वामना कवात ना-रेश রোগীকে শেষ করিয়া রোগ উপশ্মের নিক্ষণ প্রয়াস। গীতার আদর্শ জনকাদয়:। রাজর্বি জনক প্রকৃতির সঙ্গে मः शास्य क्यी ब्हेश मः माद्र थाकियां रे महाभी। कर्य-ক্ষেত্রের মন্ততার মধ্যে তিনি স্থিতপ্রকা সমতা নৈম্বর্মোর অবিচল শান্তি আনিয়াছিলেন। ভোগ ও ত্যাগ, সংসার

ও সন্ত্যাস—উভরের সভ্য স্থন্ধ স্থাপন, ভাষাদের সমন্থ গীতার মহাদান।

কিছুদিন পূর্বে ভারতের তদানীস্তন মহামান্ত রাষ্ট্রপাং **জীরাকাগোপালচারী এক বক্ষুতায় বলিয়াছিলেন—ভারতে**? বৈদান্তিক সভ্যতা, তাহার অঞ্জবাদী সংস্কৃতি ভারতং সকল বিপদ হইতে রক্ষা করিয়া আসিয়াছে। আ সভ্যতার মূল প্রকৃতি, তাহার অধ্যাত্মবাদ একভাবে চলির আসিয়াছে, তাহা আৰুও অমান। সত্য বটে অং প্রাচীন সাংস্কৃতিক ঐতিহ বহন করিয়া ভারত আৰু বাঁচিয়া আছে, কিন্তু কিন্তাবে সে জীবিত তাহা আহ বিশেষভাবে প্রণিধান করিতে হইবে। কোনমতে টিকিং থাকাই পরম পুরুষার্থ নহে। একটা জাতি জীবন্দু অবস্থায় বছকাল টিকিয়া থাকিতে পারে. ক্ষয়রোগীং দীর্ঘনী হয়। বছকাল বাঁচিয়া আছি অতএব ভবিশ্বতে थां किन, अयुक्ति दानारकरे करता। अञ्चलवारमत निम अर्थः মহিমা, তবে সহস্র বৎসর ধরিয়া ভারতবর্ষ পরাধীন কেন মুসলিম আক্রমণ, বুটিশ-বণিকের রাজ্য প্রতিষ্ঠা সে প্রতিরো করিতে পারে নাই কেন ? পশ্চিম পঞ্জাবে মুসলমান সংখ্যাধিক্যের একটা কারণ থাকিতে পারে, কিব পূর্ববদ হিন্দুর দেশ, আফগানিস্থান বেলুচিস্থান হইতে তাহা অনেঃ দূরে, সেখানে মুসলমান সংখ্যাগরিষ্ঠ সম্প্রদায় হইল কেন চোখের উপর অথও ভারতবর্ষ ছিন্নভিন্ন হইল, তাহা তুইটি অঙ্গ ধসিয়া গেল। অজডবাদী সংস্কৃতি, ভাহা নেতিবাদ সকল বিপদ হইতে ভারতকে রক্ষা করিতে পা নাই-একথা আৰু অকুঠভাবে স্বীকার করিতে হইবে ভারতীয় সংস্কৃতির যে ত্রুটির বস্তু এই অ্দুরপ্রসাই পরাধীনতার জালা, ভাহার কোলের কোটা কোটা সস্তা हे मनामधर्म शहल कतियां हा नक नक की कान हहेबां हा **म्हें** शनम पूत्र कतिए हहेरव, याहार **का**त्र हहां भूनबावृष्टि ना परि। हिन्तूरक वैक्टिए हरेल, नवन चारीनजा चारी कतिएज इहेल, चारीनजा तकांत्र वांगाए লাভ করিতে হইবে, সনাতন ধর্মকে অচলায়তন সমাজত আবর্জনামুক্ত করিয়া প্রকৃত হিন্দুছের আদর্শে নবরুত রূপায়িত করিতে হইবে।

প্রশ্ন উঠে, ভারতার সংস্কৃতির ক্রটি কোপার এবং তা কেমন করিয়া আসিল ? কেমন করিয়া এই মহাদেশ ধীর্ট

রে নৈকর্মের প্রেরণার অভিভূত হইল, গীভার প্রাণবান ব্রব্যসূলক শিকা কেমন করিয়া চাপা পড়িল ? মাহুষের ोवत्न त्यमन त्योगांत्र त्योवन खत्रा-- खांजित खोवत्नश्र াইরূপ উত্থান সমৃদ্ধি ও পত্তন আবে। বহু কাল ধরিয়া াবনের সকল কেত্রে অপূর্ব সৃষ্টি-শক্তি, কর্মদক্ষতার পরিচয় বা কালধর্মে ভারতের জীবনীশক্তি কর্মপট্টতা চিম্ভা-শক্তি বিসন্ন হইগ। ভগবান বৃদ্ধ আবিভূতি হইলেন। একজন ালার ছেলে বিশ্বমানবের তঃখনিবৃত্তির সন্ধানে যৌবনেই किन भार्षिय क्षेत्र्य कुछ कतिया मद्यामी हरेलन। পণ্ডिত-াণ বলেন, গৌতম বুদ্ধই ভারতের প্রথম ঐতিহাসিক त्वामी। वोद्धर्भ श्रामंत्र कतिम-भूजनाम, भन्नलात्क नैर्वान ও ইरलाटक देनकर्षात्र मार्शायाः, व्यव्श्मित्र महिमा। বংসার অনিতা হ: খমর। হ: খ জয় করিতে হইলে इर्मरह्म हिन्न कतिन्ना मन्नामधर्म व्यवस्य कतिए हरेत. इत्वरे निर्वाणनां मख्य। परन परन लांक मःमात्र ভাগি করিয়া ভিক্রর জীবন গ্রহণ করিতে লাগিল। धक्रो श्रातम छिक् छिक्नीत विशास भतिनछ हरेन। লহারাজ অশোক অসাধারণ কর্মশক্তির পরিচয় দিলেন ৰটে. কিন্তু ভিনিও শেষে বাৰকাৰ্যে উদাসীন হইয়া াসন্নাদের দিকে আরুষ্ট হইলেন। ঐতিহাসিক ডক্টর त्रस्थितक मक्समात्र विथिरिक हन-But the policy of blood and iron was not suitable to Asoke tho embraced Budhism and spent his energy ln an organised missionary propaganda. * * * The political disintegration and foreign domination were perhaps the price India had to pay for the religious propaganda of Asoke. पुरक्त जीवनांवर्न, व्यत्नांदकत मुक्केश्व कांछित मदन शीदत বীরে প্রভাব বিন্তার করিতে লাগিল। গৌতম বুদ্ধ সনাতন ধর্মের ভিত্তি বেদকে অস্বীকার করিয়াছিলেন। আচার্য मंद्रत चारिकुं छ हरेलन। त्रोक्षमछ थेखन कतिया देविक ধর্ম প্রতিষ্ঠা করিশেও আচার্ব বুদ্ধের প্রভাব অভিক্রম করিতে পারেন নাই, ভিনিও বৌদ্দল্যাদবাদ স্বীকার ব্যরিলেন। আচার্বের মারাবাদ, নির্প্তণত্রক্ষের প্রতিষ্ঠা ध्येर दोहाएत मुख्याप ७ निर्दार भार्थका चि रुत्त । धरे বছাই বলে শহর 'প্রাক্তর বৌহ'।

আচার্যের মতে সল্লাস, পূর্বভাবে কর্মত্যাগ করাই চরম লক্ষ্য, গীতা যে বাসনা ত্যাগ করিয়া নিফামভাবে কর্ম করিতে বলিয়াছেন, তাহা কেবল প্রথম অবস্থায় চিৎশুদ্ধির জন্মই উপযোগী। জীব ও ব্রহ্ম অভিন্ন, কেবল অজ্ঞানের জন্ম জীব নিজেকে ব্রহ্ম হইতে পুথক বলিয়া মনে करत, এই অজ্ঞান দুর হইলেই সে নিজেকে ব্রহ্ম বলিয়া বানিতে পারে এবং তাহাই মোক বা মৃক্তি। काনেই মুক্তিলাভ হয়। নিষ্কাম কর্ম চিত্তগুদ্ধি করিয়া জ্ঞানলাভে পরোকভাবে সহায়তা করে মাত্র। অজুন অজ্ঞান অবিধান, তাই শ্রীভগবান পাগুবকে নিকাম কর্মের উপদেশ দিয়াছিলেন। গীতার শকর-ব্যাখ্যা সন্নাসমূলক এবং গীতার সকল প্রাচীন ব্যাখ্যা মূলত: শব্ধর ভাষ্কের অন্সরণে त्रिष्ठ। शतिषृष्ठमान अग९ প्राथक माम्रात हैलना, स्नीरतत কর্ত্ত অংশত্ব মিথ্যা, এই মিথ্যার অবসান করিয়া সদত্রক্ষে লীন হওয়াই জীবের পরমা গতি—এই বাণী অগণিত শাল্লব্যাখ্যার মাধামে, যততেতা বিচরণণীল • সহস্র সহস্র সন্ন্যাসীর মুখে, শত শত মঠ-মন্দির-আশ্রম হইতে ব্যাপক-ভাবে প্রচারিত হইল। গীতার সমন্বয়মূলক শিক্ষা এইভাবে চাপা পডিয়া গেল।

যে দিব্যৃষ্টি লাভ করিয়া মহাযোগী শক্ষর জগৎকে
মিথাা বলিয়াছিলেন সে উচ্চভূমিতে উঠিবার যোগ্যতা অভি
আয় মানবের ঘটয়া ধাকে। কালধর্মে জাতির জীবনে
বার্দ্ধকা আসিয়াছিল, তাহার চিস্তাশক্তি নিস্তেজ হইয়াছিল।
কর্মের নিজত্ব পারমার্থিক মূল্য অত্মীকার, জগৎ মিধ্যা
সঙ্গীত অবসয় জাতির কর্ণে মধুবর্ষণ করিল। মায়াবাদী
সয়্যাসীর জীবন্ত দৃষ্টান্ত কেহ দেখিল না। অয়পরিসয়
জীবনে যানবাহনহীন সেই প্রাচীন যুগের অবৈতবেদাস্তের
প্রাণপ্রতিষ্ঠাতা আচার্যের বিরাট কর্মের পরিচয় কেহ
লইল না। পণ্ডিত নেহক লিখিয়াছেন—And yet
Shankar was a man of amazing energy and
vast activity. He was no escapist retiring
into his shell or into a corner of the forest,
seeking his own individual perfection and
oblivious of what happens to others.

ব্যাপকভাবে মান্নাবাদ প্রচারের ফলে জনসাধারণ নির্বিচারে জগৎ মিধ্যা বলিয়া মানিয়া গইল। শব্দর-দর্শনে

'মিধ্যা' শলের প্রকৃত অর্থ না বুঝিরা সহল সহল অযোগ্য লোক সংসার ভাগে করিয়া সন্নাদী হইল। এভগুলি লোকের কর্মশক্তি হইতে জাতি বঞ্চিত হইল। বাহারা সংসার ত্যাগ করিতে পারিল না তাহারা চোথ কান বুজিয়া কোন রকমে সংসার করিতে লাগিল। সংসারে তাহাদের ঘোর অবিখাদ, সন্দেহ। মারা পিশাচী এথানকার প্রতি ধূলিকণায় লুকাইয়া চক্রান্তের জাল বুনিয়া জীবকে বিভাস্ত করিতেছে। সমুজ-সৈকতের ভপ্ত বালুচরে বৃষ্টিবিন্দু বেমন ক্ষণিকে মিলাইয়া যায়, এ সংসার, 'স্থভমিত-রমণীদশাল' তেমনি অনিতা ক্রপবিধ্বংসী। যে সংসার क्षांत्र जन्न, कृष्णांत कन, नब्डानिवांत्रांवत चांवत्व यांवांत्र তাহাকে অবহেলা করিয়া ইহলোকের পরপারে নিত্য বস্তুর সন্ধানে এদেশের ছোট বড় সকলেই ব্যাকুল-কবে তৃষিত এ মরু ছাড়িয়া বাইব ভোমার রসাল নন্দনে। যে জাতির অস্থিমজ্জায় রক্তে রক্তে চিম্ভার প্রতি স্পন্দনে এই শিক্ষা वहम्म, তाहाता পाथित जीवत्न कडहेकू उन्निक कतिरत ? সংসার পাছ-শালা, সংঘাত হইয়া তুঘটার পাছশালার উন্নতি কে করিতে চার ? দেশগুর লোক বে সংসার ছাড়িয়া সল্লাসী হইরাছে তাহা নয়, সংসারে থাকিয়া छांशां सीवत छैरमांश शांबारेबार्ड ; वहेक्राल वका बांडि निर्कीर कर्भविष्यं लोकिक वांशाद्य डेनांगीन। अ সংসার যদি প্রবাসভূমি তবে প্রবাসের উন্নতির জন্ত কে cb हो करत ? हम मन निक निरक्छरन, मःमात विरम्ध বিদেশীর বেশে ভ্রম কেন অকারণে ?

শৃন্তবাদ, মায়াবাদের মধ্যে যাহা কিছু উচ্চ আদর্শ জনসাধারণ ভাহা ব্ঝিতে পারিল না, তাহারা ব্ঝিল বে সংসার অনিত্য তৃংধময়, অভএব ভূচ্ছ ব্যাপারে মন না দিয়া পরলোকে মুক্তির জল্প প্রস্তুত হওরাই মায়বের কর্তব্য। এই মনোভাব জনসাধারণের মধ্যে কর্মবিমুখতা এবং ইহজীবনের প্রতি একটা বৈরাগ্যময় অবসাদ আনিয়াদিল। সর্ববিশেষের ক্ষেত্র এই সংসার হইতে মুখ ফিরাইয়া একান্ত নির্বিশেষের ভাবনাই ভারতীয় সংস্কৃতির ক্রটি। ইহাই পলায়নপরতা-রূপ ক্রৈব্য, যাহার জল্প শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে 'ক্রেব্যং মাল্ম গমঃ' বলিয়া সেহ-মধ্র তিরস্কার করিলেন।

गैछात्र म्महेवागी--- वृद्धिष्ठमः अनद्यमञ्जानाः कर्म-

गिकनाम्। रवाकरायः गर्वकर्मानि विवान युक्तः गमान्तः अक्रबनाक वर्ष वर्ष कथा विषया कर्मछ है कतिया विश् চালিত করিও না, তাহাদের বৃদ্ধি ভেদ অক্সাইও ন याँशां विशान वृद्धिमान छाँशांता जनन कर्म कडि माधात्रभारक कर्स निवृक्त द्रांशिरवन, कांत्रभ निर्विष्ठा कनमाधातर्गत मधा जान देवतार्गात कामर्न श्राहेत कति। তাহাদের বৃদ্ধির মধ্যে ছন্ত উপস্থিত হয়। কর্মের ছা मिषि हम ना, कारनम बाजाहे हम- वह मछ थखन कतियां জক্ত গীতা বলিভেছেন-কর্ম করিয়াই জনকাদি পূর্বভ মুক্তিলাভ করিয়াছিলেন। শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি বেরূপ আচম করেন সাধারণে না বুঝিয়াও তাহাই করে। তিনি ৫ আদর্শের সৃষ্টি করেন সাধারণ লোক তাহাই করে া২০-২১। শ্রেষ্ঠ ব্যক্তি কিরূপ আচরণ করেন অবভারর্জ ভগবান নিজের দৃষ্টান্ত দিয়া তাহা বুঝাইতেছেন। দেং অর্দুন, কর্মের দ্বারা লাভ করিবার আমার কিছুই নাই; ত্রিভূবনে কোন কিছুর জন্ত কাহারও নিকট আমি কিছু প্রত্যাশা করি না, তথাপি আমি কর্ম করি। আহি यि व्यानच्चरान कर्म ना कति, छटा लाटक व्यामात्रहे পথে চলিবে ও উৎসল্পে যাইতে। তা২২-২৪। সাধারণ লোকে সংসারে বে সব কর্ম করে জানীরাও সেই সকল কর্ম করিবেন, তবে আনী কর্ম করিবেন ব্যক্তিগত স্বার্থসিছির অন্ত নয়, আসজিশুক্ত হইয়া সর্বভৃতহিতের অন্ত, লোক-সকলকে ভগবানের দিকে অগ্রসর হইতে সাহায্য করিবার অন্ত । হাং সন্ত্রাসীরা মনে করেন তাঁহারা কর্মত্যাগ করিতে বাধ্য, কিন্তু ভগবান কর্মত্যাগ করেন না--বর্ত এব ठ कर्मि।

গীতার পঞ্চম অধ্যারে অফ্নের প্রশ্নের উত্তরেই প্রীকৃষ্ণ সন্ত্যাসের এক অভিনব আদর্শ স্থাপন করিরাছেন। সন্ত্যাসী বলিলে সাধারণত বুঝার বিনি সংসারের সকল কর্তব্য পরিহার করিরা পরিব্রজ্যা অবলঘন করিরাছেন। শরীর ধারণের কক্ষ বেটুকু কর্ম করিলে নর ভিনি কেবল ভাহাই করেন। কর্ম সাক্ষাদ্ভাবে মুক্তি দিভে পারে না, জ্ঞানের হারাই মুক্তি হয়—এই ধারণার বশেই সাধক সন্ত্যাসমার্গ অবলঘন করেন। তৎকালপ্রচলিত জ্ঞান-কর্মের এই বিরোধের কথা অফ্ন জানিতেন। অর্ক্ন প্রশ্ন ভূলিলেন—ভোষার কথার ভাবে বোধ ইইভেছে ভূমি কৰ্মত্যাগ ও কৰ্মাহঠান চুই-ই ক্রিতে বলিভেছ : এই ছবের মধ্যে কোনটি শ্রের ঠিক করিয়া আমাকে বল।৫।১। আমি সংসারে থাকিয়া কর্তব্যকর্মাদি করিব, না সর্বকর্ম वर्জन कविया नकल लोकिक मण्लक हिन्न कतिया नन्नामी ब्हें र शांग मना मकत कर्महे यथन दक्षन, **उथन कर्म**व হাজামার মধ্যে না গিয়া সর্বকর্ম ত্যাগ করিয়া সন্ত্যাসী হই না কেন ? উত্তরে প্রীকৃষ্ণ বলিলেন—সন্ন্যাস ও কর্মযোগ উভয়ই মোকপ্রদ (উভৌ নি:খের্দকরে) কিছ ছইয়ের मरक्षा कर्मरवारशंत এक हे विश्विष्ठा आह्न-कर्मश्रज्ञानार কর্মবোগো বিশিয়তে। সংসার ত্যাগ কথনই আচরণীয় नह अमन कथा श्रीकृष बलन नाहै। श्रवुद्धिखाल पूर्वात প্রেরণা আদিলে সর্বন্ধও তাাগ করিতে হয়। হাদিস্থিত ভগবানের আহ্বানে সিদ্ধার্থ সর্বত্যাগী, শঙ্কর আক্রম जज्ञांगी, जज्ञांगी निमारे পথে পথে क्लियुरंगत नवशांत्रजी ছরিনাম প্রচারে পাগল। সংসারে থাকিলেই বন্ধন হইবে একথাও ঠিক নহে। নিয়ত কর্মে রত গুহীও সন্নাসী হইতে পারে। কর্মত্যাগ করিলেই সন্নাসী হয় না महामि रहेलाई कर्मछा श रह ना। त्यर्थाती मान्यस्य भरक कर्म छारि वह वाश ब्यानक क्रिया कर्म ना कतिया कर কণনও ক্রণমাত্রও থাকিতে পারে না। জোর করিয়া কর্ম বন্ধ করিলে মন বিষয় চিস্তা করে—শরীরে মনে নানা ব্যাপার চলিতে থাকে--সে সবই কর্ম। কর্তার অন্তর্গত ভাবই বাহুত্বগতে কর্মরূপে প্রকাশিত হর। বাহু প্রকাশ ना शंक्रिक्ट य व्यक्षर्गं कार शंक्रिय ना जारा नहि। ध व्यवसाय कर्म वस कवा मिथानित । कर्म ना कविलाहे त्य সিদ্ধি হয় তাহাও নহে—ন চ সন্নাসনাদেব সিদ্ধিং সমধি-গচ্ছতি। কৰ্মজ্যাগ যখন অসম্ভব তখন কৰ্মমাৰ্গে থাকিয়াও কি করিয়া নৈছম্যের পরম শান্তি লাভ করা যায় প্রীকৃষ্ণ তাহা বলিতেছেন। কর্ম করিয়াও সন্নাসীর লভাস্থানে श्रीष्ट्रांन यात्र धवर कर्मरागालत याहा दिनिहा, मारमातिक ष्ण्यामय, छारा ७ कूझ रव ना। कर्मराश विना मन्नाम ७ क्टेक्ब--- महानिष्ठ महावादश दृ: थमाश्रुमरवान्यः। किन रि परिक्षियोगित अन महानि कहे कत, जोशेरा कर्मत्र विश्व निक्ठि—रेखियाजिखकार्थ बागावारो वावविर्छ। श्रिष्ठ ইব্রিয়েরই নিজ নিজ ভোগ্য বিষয়ে রাগ-বেব রহিরাছে। **অফুকুল বিষয়ে আসন্তি ও প্রতিকৃল বিষয়ে বিবেষের ফলেই** শাহবের কর্ম দোবযুক্ত হয়। গীতার মতে তিনিই চির-नमानी वैशित्र त्कान वह वा विवयं ब्रांगंड नारे विवय नारे।

ক্ষেয়: স নিতাসন্ন্যাসী বো ন ৰেষ্টি ন কাজকতি।
নিৰ্দিলা হি মহাবাহো ক্ষাং বন্ধাং প্ৰমৃচ্যতে॥
বাগদ্বে-হল্ম হইতে মুক্ত গৃহীও সন্ন্যাসীপদবাচ্য; তিনি
অনায়াসে সংসার-বন্ধন ছিন্ন করেন।

অনাপ্রিত: কর্মফলং কার্যং কর্ম করোতি ব:। স সম্মানী চ যোগী চ ন নির্মান্চাক্রিয়:॥

কর্মফলে আসক্তিশ্ন হইয়া সংসারের সমাজের সকল কর্তব্য যিনি করিয়া যান তিনিই একাধারে সন্মাসী ও যোগী। সংসারত্যাগ (নির্মি), কর্মত্যাগ (অব্রিম্ব) সন্মাসীর প্রকৃত লক্ষণ নয়, সন্মাসের লক্ষণ ফলকামনাত্যাগ। কর্মনারের পরিণতিও সন্মাস, কিন্তু তাহা বাহ্ম সন্মাস নয় আভ্যন্তরীণ সন্মাস। সন্মাস অন্তরের বস্তু, ভিতরের ত্যাগ—রাগবেষের হন্দ্র হইতে মুক্ত হইয়া নিকাম সমতা লাভ। আত্ম-কেব্রিক ভোগ-লালসার প্রেরণায় কর্ম না করিয়া সর্বভূত-সেবা হিসাবে যিনি কর্ম করেন, তিনি সন্মাসী। বিশ্বেখবের বিশ্ব-সেবার কাম্যকর্মের অর্পণকেই (স্থাস) গীতা সন্মাস বলিয়াছেন—কাম্যানাং কর্মণাং স্থাসং সন্মাসং ক্বরো বিহু:। শ্রীকৃষ্ণে ক্মার্পণই গীতার নৈক্ম্য—যৎ করোয়ি * * * তৎ কুরুত্ব মদর্পণম্। এই অর্পণ, শরণাগতি সাধনা গীতার পরম ও চরম রহন্ত্য।

শৃঙ্খলিত ভারতবর্ষ আজ বন্ধন-মুক্ত। বাহির হইতে ঘটনাস্রোত আসিয়া মায়াবাদের দৃদ্দুল শিথিল করিয়াছে। কিছ পাশ্চাত্য সভ্যভার স্পর্লে, তাহার জ্ঞান বিজ্ঞানের তীব্র আলোকে ভারত আর এক বিপজনক প্রতিক্রিয়ার সমুখীন। পাশ্চাত্যের ভোগবাদ ও জড়বাদের আদর্শে ভারতবাসী আরুষ্ট হইয়াছে। দেশজোড়া অভাবের তাড়নার, সমস্তার উপর সমস্তায় দিশেহারা মাহুষ বলিতেছে — ব্ৰগৎ সভা ব্ৰহ্ম মিথা। আৰই সভা, ব্ৰহ্ম নাই। পঞ্চত্তর চক্রান্তে পড়িয়া ব্রহ্ম আৰু কাঁদিতে বসিয়াছেন। প্রকৃতির নিষ্ঠর পরিহাস। এই ছুই বিপরীত প্রান্তের (সংসার-সন্নাস, ভোগ-ভ্যাগ) মধ্যবর্তী পথের সন্ধান গীতা নিৰ্দেশ করিয়াছেন, তাই আৰু সমৰ্যমূলক গীতাধৰ্ম ভোগের কেত্রে ভ্যাগের थेठारवव এड श्रायांकन। গীতার প্রাণ। গীতা বুগপৎ যুদ্ধশান্ত ও যোগশাল্প। কুটিল সংসারে চলিবার প্রকৃত কৌশল গীতা निश्रहेबार्क- त्वांशः कर्मञ्च कोमनम ।

একটি কাহিনী

শ্রীসম্ভোবকুমার অধিকারী

ভালো থাইরে ব'লে নাম ছিলো শৈলেশের। বন্ধু সিতিকঠের বৌভাতের নেমন্তরে কাল ওরা সদলে উপস্থিত থেকে
শৈলেশকে থাইরেছে। যদিও কেউই বাদ বায়নি, তব্
প্রচুর আরোজনের সদ্ব্যবহার শুধু বৃঝি শৈলেশের বারাই
সম্ভব হ'রেছিলো। সকলের সমবেত অহুরোধকে এমনভাবে এক সঙ্গে ককা করা আর কারও পক্ষে সহজ
হ'তো না।

সে রাত্রে শৈলেশের থাকার কথা ছিলো। কারণ সেই একমাত্র ঘনিষ্ঠ বন্ধু সিতিকণ্ঠের। আর থাকেও অনেক দ্রে—হাওড়া ময়দানের সামনে। খাওয়া-দাওয়ার পরে একটা ফাঁকা খরে ফরাসের ওপরে তাকিয়ায় ভর দিয়ে শৈলেশ বিশ্রামের চেষ্টা করছিলো। গোলমালের বাড়ীতে শোরার জন্মে এর চেয়ে ভালো জায়গা হয়ত আর পাওয়া যাবে না। আর একটু পরে ঘুমোনোর চেষ্টা করা চলবে। আপাতত: শৈলেশ একটি সিগারেট ধরিয়ে

অত্তাণের মাঝামাঝি চলছে। কাজেই রাত্তের দিকে
একটু শীতের আমেল পাওয়া যায়। থোলা জান্লা দিয়ে বেশ
থানিকটা ঠাণ্ডা হাওয়া এসে ছুঁয়ে যাচ্ছিলো শৈলেশকে।
এতক্ষণে শৈলেশের মনে হ'লো খাওয়াটা একটু বেশীই
হ'য়ে গেছে। সিগারেটে ছু' একটা টান দিয়ে সে
শরীরটাকে গরম ক'রে নেওয়ার চেষ্টা করলো।

সিভিকণ্ঠ এসে চুকলো ঘরে—কিরে, ব'সে ব'সেই ঘুমোচ্ছিস নাকি? এক মুখ খোঁয়া ছেড়ে শৈলেশ বললো — আর, বোস। খাওরাটা বেশ ভালোই হ'রেছে। একে ভোর বিরে, ভার প্রভ্যেকটা জিনিসই ভালো হরেছে। নেমন্তর খাওয়ার মত ত্বথ আর কিছুতে আছে কিনা ভাবচি।

সিভিকণ্ঠ তৃপ্তির হাসি হাসলো। কিন্ত শৈলেশ পরক্ষণেই বলে উঠলো—ভবু থেতে বসে থাওয়াটাক্তে বে কন্ত বিশ্রী লাগতে পারে, শুধু অবস্থার ভেদ বিশেব ঘট্লে —তাই,মনে হচ্ছে সামার। —কেন, কেউ নিমপাতা ধাইরেছিলো বৃঝি ? শৈলেশ গন্ধীর মুখে উত্তর দিলো—না। —তবে ? কেউ অপমান—

দিগারেটের ধোঁয়ায় সমন্ত ব্যের বর্ণ বদলাতে ক্রক
করেছে। অলভ টুক্রোটুকু ব্যের এক কোণে ছুঁড়ে
কেলে দিয়ে শৈলেশ যেন অনেক দ্র থেকে উত্তর দিলো—
এমন ঘটনা কি ঘট্তে পারে না ? মনে কর, প্রত্যেকটি
জিনিসই স্থাত্, আদর আপ্যায়নে কোন কটি নেই, সমন্ত
পৃথিবীর থিদে জমেছে পেটে—অথচ এক মৃহুর্জে মনে হ'লো,
খাওয়াটাই বুঝি স্বচেয়ে কুৎসিত ও জ্বস্ত রক্ষ তুঃসহ...

रेगलम राल हालाइ-मान कर्न, धमनि धक श्रांचम শীতের দিন। অপরাক্ষের মান ছায়ার তথনও আকাশ উদ্ভাসিত। স্থ্যের প্রধর ও চোধ-ঝলসানো গোলকে লালচে আভা ধরতে হুরু ক'রেছে। আর ভুই চলেছিদ মোটরবাদে এক অরণ্য-ভরা বিজন श्रीमा १४ धरत। मरन कत रम कांग्रगीं मूर्निकांबाक জেলার অন্তর্গত। আর বাদে যে পথ এগিয়ে চলেছিদ দে পথটা আটাশ মাইল দীর্ঘ। এই আটাশ মাইল বনপথ অতিক্রম ক'রে বাস যেখানে এ যাত্রার মত থামবে তুই সেইখানটায় নেমে পড়লি। কলকাভাবাসী শহরে যুবকের পক্ষে এই সন্ধ্যার অন্ধকারে আছ্র একান্ত বিজন একটি গ্রামের রাস্তা আতম্বনক বইকি, কিছ তোর বথেষ্ঠ সাহস ররেছে। তাই ভয় না পেরে সেধানে নেমেই প্রথমে খোঁক করবি সেখানে চারের কোন দোকান আছে কি না। নেই ভনে আবার প্রশ্ন করবি-'স্থামলগাছি এথান থেকে আরও কত দূর ভাই ?' বাসের भात वकि गांवी छाटक वनत- वहे छ महिन हारबक मांक ब्रांखा। कारनब वाफी बारवन जाशनि ? १७ कोधुबीरनब বাড়ী ? নরেন চৌধুরী আপনার বন্ধু ? ভা ভেনাদের ভ' বাড়ীর গাড়ী আছে। আপনি বুঝি ধবর না দিছেই আসছেন ? তা' এই পথ ধরে সোজা চলে বান ; সেই

বেধানে কাতলামারীর বিলের পাশ দিয়ে রান্ডাটা বাঁক ধেয়ে পূবে খুরে গেছে সেইধানে জিঞ্জাসা করবেন, সবাই দেখিয়ে দেবে। গাঁয়ে পোঁছুলে আপনিও চিনে নিতে পারবেন। এ তলাটে অত বড় বাড়ী ত' আর নেই। অত বড় লোকগু—'

তার কথা শেষ হওয়ার আগেই তুই চলতে হ্রন্ধ করেছিল? সেই নিঃশন্ধ গ্রাম্য পথে তথন জ্যোৎসা লুটোপুটি থেতে আরম্ভ করেছে। হাঁটু অবধি ভরে উঠেছে সালা গুলোর, পথের ত্থারে ছোট ছোট ঝোপ জলল। মাঝে মাঝে আতাকুলের একটু মিটি গন্ধ। কোনথানে আবার ত্-পালে মাঠ দুর পর্যান্ত বিস্তৃত হ'য়ে পড়েছে। তার মাঝে, মাঝে চালা খর। কিছ কোথাও মান্তবের সাড়া নেই। অকল্র চক্রালোকে উন্তাসিত আকাশ আর নতুন এ্যাড্ভেঞারের রসে ভরা সেই অরণ্যপথ··· কিছ তোর মনে তথন কবিত্ব নেই। তুই ভাবছিস অল্প কথা।

—ই। বেণুর কথাই। বেণু নরেনের ছোট বোন।
বিরে হয়নি তথনও। তোর সলে আলাপ হয়েছে
কলকাতায়। এম-এ পড়ার সময় নরেন ছিলো সহপাঠী।
অনেক দিন সে টেনে নিয়ে গেছে তোকে তাদের বাড়ীতে।
হালরা রোড বেখানে ল্যান্সডাউনকে খণ্ডিত ক'রে
বালীগঞ্জী আভিলাত্যের ছোঁওয়ায় প্রবেশ করেছে, সেইখানেই ওদের বাড়ী। ভূই অনেক দিন গিয়েছিস ওদের
বাড়ী—কিন্তু নরেন ছাড়া আর কালর সলেই আলাপ
হয়নি। আর হবেইবা কি করে? ভূই ত মেয়েদেরকে
চিয়কাল অবক্রা করিস। তাদের সলে মেশার মত চেষ্টাও
তাই কথনও ছিলো না।

তব্ একদিন আচমকা আলাপ হ'লে গেলো। নরেনকে
পূঁজতে তাদের বাড়ীতে প্রবেশ ক'রে তার একতলার
কীডিতে সোজা চুকে পড়েছিল। কিছ ঘরে চুকেই
অপ্রস্তুত হলে গেলি। নরেন নেই—তার চেয়ারে একটি
তরুণী ব'লে ব'লে বোধ হয় কিছু নকল করছিলো।
তোকে দেখেই লে উঠে দাঁড়ালো—"আহ্নন, দাদা নেই,
একটু বাইরে গেছেন। আপনাকে বসতে বলে গেছেন
দাদা।"

একটি অপরিচিতা ভক্নীর সামনে গাড়িরে ভূই বিব্রত

বোধ করছিল বইকি। সভোচের সজে হরত বলছিল— "আচ্ছা, আমি নাহর পরে খুরে আসছি।"

খিলখিল করে হেসে উঠলো তরুণীটি। অত্যস্ত সপ্রতিত্ত-কঠে সে বললো—"কেন, দাদা না থাকলে বসতে পারেন না? আমাদের সঙ্গে কথা বলতে লজ্জা করে নাকি?"

জোর করে লজ্জা ঝেড়ে তুই বলে উঠলি—"না লজ্জা নর, ইচ্ছে হয় না।"

—"ইচ্ছে হয় না!" একটু ঝাঝালো কঠে তর্মণী প্রশ্ন করলো—"কারণ ?"

"কারণ ।"···ভূই হঠাৎ বলে ফেললি—"আধুনিক মেয়েরা কথা বলতে জানে না বলে।"

ভূই যদি সজোচ ঝেড়ে মেয়েটির চোপে চোপে চাইতে পারতিস, তাহ'লে দেখা বেতো, প্রথমে রাগে লাল হ'ছে উঠলো তার মুখ, তারপর তার কপালে জাগলো ক্রকুল। চোথের কোণে নামলো তীক্ষতা। সেই মেয়েটি বলে উঠলো—"সত্যি কথা, আপনাদের মত লোকের সামনে দাঁড়িয়ে কথা বলতে জানার দরকার হয় না। পুরুষ দদি পুরুষ না হয়ে মেয়েমুখো হয়, তবে আমাদেরও ঘুণা আসে।"

অপমানে তুই ততক্ষণে বিবর্ণ হ'রে গেছিস। পুর শক্ত মত একটা প্রত্যুত্তর তৈরী ক'রে বলতে সিয়ে দেখনি, মেয়েটি সেখানে নেই। তোর কথার উত্তর দিয়েই সে ভেতরে পালিয়েছে।

অনেককণ শক্ত হ'রে দাঁড়িয়ে রইলি তুই। তারপর
অনিচ্ছার সদেই এগিয়ে যাবি চেয়ারটার দিকে। লক্ষ্য
পড়লে দেখবি,টেবিলের ওপর একটি ছোট্ট খাতা খোলা পড়ে
আছে। তাতে মেয়েলি অক্ষরের ছোট ছোট স্থলর হরফ্
যেন যত্ন ক'রে সাঞ্জানো। একটু কৌতুহলি হ'রে তুই মুঁকে
পড়বি থাতাটির ওপর। একি ? অবাক হ'রে তুই দেখবি
সেই খাতাটির বুকে লেখা ছোট ছোট অনেকগুলি গান।
আর সে গানগুলোর সবই তোর লেখা। এবারে চোখে
পড়বে ওপরে আর একটি থাতা খোলা পড়ে আছে।
তোর লেখা গানগুলো পড়বার জল্তে নরেন যে খাতাটি
নিরে এসেছিলো সেই খাতাটি। এতক্ষণে কেমন বেন
একটু আনন্দ আসবে তোর মনে। অপরিচিতা এক
তক্ষণীর হাতে নিজের কবিতাকে সমাদৃত হ'তে দেখলে
কার না আনন্দ হয়। মনে হ'লো এত গান লেখা সেই

একমূহুর্ভেই বুঝী সার্থক হ'বে উঠেছে। মেয়েটির ওপর এডকণ ধরে বে রাগ সঞ্চিত হ'বেছিলো ভোর, ভার সবটুকু ঝরে পড়বে। একটু অহুতপ্ত বোধ করবি। আর একবার দেখা পেতে ইছে হ'বে ভার। খাভার পাভাগুলি ওলটাতে ওলটাতে একলারগার এলে থমকে দাড়াবি। স্থান্দর অক্ষরে লেখা একটি নাম—শ্রীমতী বেণু চৌধুরী।

ইতিমধ্যে শ্রীমতী বেণু ফিরে এসেছে। থাতাটিকে তোর হাতে বিপর্যান্ত হ'তে দেখে প্রায় চিৎকারের স্থারে সে প্রায় করলো—"আমার থাতা আমার না ব'লে আপনি খুলে দেখছেন ?"

তার ক্রোধরক্ত চোধের দিকে ছুই বেন চেরে রইলি।
সূর্ব্বান্ধ তার তপনও কাঁপছে রাগে। সেই অবহার তার
মধ্যে এক অন্ত সৌন্দর্যোর সন্ধান পেলো তোর চোধ।
মিনিটধানেক চোধে চোধে চেরে থেকে হঠাৎ এক শুভ
মূহুর্তে ছুলনেই একসাথে হেসে উঠ্লি; আর সলে সলে
সেই হাসির মধ্যে দিরে তোদের সন্ধি হ'রে গেলো।

এরপর বেণুর একটু বর্ণনা দেওয়া বাক। বড়লোকের মেয়ে; বাড়ী মূর্নিদাবাদের অন্তর্গত এক অতি অধ্যাত পলীগ্রামে। বেণু ও নরেন কলকাতার থেকে পড়াশোনো করে। তারা মামারবাড়ী থেকে পড়ে এবং তাদের মামা কলেকের প্রোফেসর ও আধুনিক মনোভাবাপর।

আপাততঃ ধ'রে নেওয়া যাক্ বেণুর বরস প্রায় কুড়ি।
শরীরের গঠনে পাঞ্চাবী মেয়ের দৃঢ়তা। তার দীর্ঘ ও
বলিষ্ঠ দেহে কমনীয়তার অভাব ছিলোনা কিন্তু তব্ও সে
রূপনী নর। বর্ণ শ্রাম। চোধের দৃষ্টি গভীর কিন্তু চঞ্চল।
সে চোধে মপ্র দেখা চলে এবং অভিজাত বরের তুলালদের
কেন্ট্র কেন্ট্র সে চোধের মায়াজঞ্জনে মুখ্য হয়েছে বলে
শোনা বেত।

অভঃপর নরেনের সব্দে তোর বন্ধুত্ব আরপ্ত গভীর হ'রে উঠলো ও সে বাড়ীতে তোর বাতারাত নির্মিত হ'লো। অবশ্র এর মধ্যে মনোজগতের কোন দেবতার হাতের স্পর্শ আছে কিনা সে ধবর তুই রাখতিস না। কারণ প্রেমে পড়ার অভাব তোর মোটেই ছিলোনা। তুই ভালো-বাসন্তিস ওধু পর্যাপ্ত পরিষাণে চা ও বিস্কৃট ধ্বংস করতে, আর সে বাড়ীতে ইদানীং প্রবেশ করলেই চা ও বিস্কৃট প্রচুর পরিমাণেই এসে হাজির হ'তো। চা-সরবরাহের ভার গ্রহণ করেছিলো আগুডোবের আই-এ ক্লাসের ছাত্রী শ্রীমতী বেণু চৌধুরী।

দিনের পর দিন তুই ওদের সঙ্গে ধনিষ্ঠ হ'য়ে উঠতে
লাগলি। তোর মেলামেশায় কোন উদ্দেশ্য ছিলোনা।
তথু নরেনের অহরেবাধেই তুই ওথানে যেতিস। আর
ওথানে গেলেই বেণুর সাহচর্য্য অপরিহার্য্য হ'য়ে উঠ্তো।
অবশ্য বেণুর সাহচর্য্য পরিহার করবার চেষ্টাও তুই কোন
দিনই করিস নি। কারণ তোর মধ্যে কোন অসহদেশ্য
ছিলোনা। আর মেয়েদের চোধে চোধে তুই চাইতে
পারতিসনা। কাজেই বেণুর চোধে অহরাগের আগুন
সঞ্চিত হ'য়ে উঠ্ছে কিনা লক্ষ্য, করবার মত হ্বোগও
তোর আসেনি।

তবু হঠাৎ একদিন সে ধরা পড়লো তোর কাছে।
কিন্তু ধরা পড়লিনা তুই। তাই অনেক অমূল্য মূহূর্ত বুধাই
অতিবাহিত হলো। অনেক স্থ্য আকাশে অলে অলে ক্ষরে
গেলো। তবুও চেতনা এলোনা তোর। আচ্ছা, ধরে নে
একটি সন্ধ্যা—বে সন্ধ্যার তুই নিরমমত হাজির হলি
নরেনের থোঁজে। বাড়ী গিরে যথন শুনলি নরেন
বার্ষোস্কোপে গেছে, তথন তোর মনে পড়ে গেলো বে
তোরও যাওয়ার কথা ছিলো। কিন্তু তথন প্রার সাতটা।
কাজেই আর যাওয়া চলেনা। অগত্যা বসে পড়ে তুই
বললি—আমি চলি তাহ'লে?

ছই কালোচোধে বিহ্যৎ ঝলসে উঠ্লো। মেষের গরজনে শোনা গেলো—ইন্ আমি চা থাবোনা বৃঝি ? ছুই বোকার মত বলে ফেগলি—তা খাও না ? কিছ আমি থেকে কি করবো ?

সেই কালোচণল চোথ তথন বলে উঠ্লো—"বহুন চুপ করে। একা চা থেতে আমার ভালো লাগেনা।"

কিন্ত ভূই বে চিরকালের হাঁদা। এততেও ভূই উঠ্বার চেষ্টা করলি। বললি—"একা কেন, ভোমার মামা ও মামীমাও ত' চা খান ?

তবু সমান উৎসাহে বললো বেণু—"ও: তাহ'লেই হরেছে। তাঁরা গেছেন ভামবালারে নেমস্তম রাধতে। ফিরবেন রাত দশটার।"

কালেই ভোকে বসভে হলো। বোধহয় ভিন নিনিটের

খ্যেই বিছাতের মত চকিতে চা নিয়ে কিরে এলো বেণ্।
ললো—"একা একা চা থেতে হ'বে ভেবে এতক্ষণ বা
বিশ্বী লাগছিলো।"

কথার কথার তোরা অনেক কথার অবতারণা করি।
নেক আলোচনা হলো। রাতের ঘোর নামলো ঘরের
ধ্যে। বেণু তোর একান্ত পাশে বসেই গানের থাতাটা
লৈ রাখলো। বললো—"এ কথাগুলোর মানে ব্যুতে
বিরিনা যে ? •••••

এক সময়ে ভূই হঠাৎ উঠে পড়লি। বললি—"রাত 'য়ে যাচ্ছে, আমি চলি।"

नित्मत्व (माझा ह'रम् वम्ला तम, वन्ता—"ना ।"
—"वाः, बाठ इटाइ ना ?"

কেমন ধেন গভীর অম্বচ্ছ কঠে বেণু বললো—"না।"
হঠাৎ সে তোর মণিবন্ধটা তার কোমল একটি হাতের
পর্শে চেপে ধরে বললো—"বানু দেখি, কেমন জ্বোর গায়ে!"

কজিটা খুরিয়ে নিমেবের মধ্যে ছাড়িয়ে নিয়ে দরজার দকে এগিয়ে গেলি ভূই। কিছ পেছন থেকে ডাকলো বগু—"শৈলেশবাবু…"

হঠাৎ চমকে উঠ্লো শৈলেশ। আচমকা নিজের নাম
চিচারণ করে ফেলছে সে। অপ্রস্ততভাবে সিতিকঠের
দিকে চাইতে গিরে থেয়াল হলো সিতিকঠ নেই। তার
চন্ময়তার স্থাোগ নিয়ে সে কখন উঠে গেছে। আপন
ানে হাসলো শৈলেশ। বললো—ভাগ্যিস সিতি উঠে গেছে,
।ইলে ধরা প'ড়ে বেতুম বে!

কিছুকণ ভাৰ হ'লে থেকে এবার নিশ্চিন্ত হ'লে সে মাপন মনেই বলতে হুক করলো⋯

-- "रेनल्यनाव्..."

তুই ফিরে তাকালি। সোকার ওপর ব্যাকুল দৃষ্টি নিয়ে প্রতীক্ষা করছে বেণু। তার উদগ্রকঠে অফুট ধ্বনি জেগে ঠিলো—"নাদা এলে যাবেন; এখন না।"

क्ष्रिक् निः गर्स निष्ठित तहेनि छूहे, कि छ छोत्र अप्रांग वष् अब्रुष्ठ। छूहे वननि—"ना, कांक आह्र। मामि धथनहे यारत।"

শা বাড়াবার আগেই বিদ্যুৎগতিতে বেণু এদে পথরোধ দরে দাড়ালো।—"না, আপনি ধাবেন না।" সেই রাত্রির রহক্তে-আছের বেণুকে যে-কোন লোকেরই বিশ্বরকর ব'লে বোধ হ'তে পারতো। কিন্তু কবিতা লিখেও তুই কোনদিন মনে প্রাণে কবি হ'তে পারিস নি। বরের মধ্যে ফিরে এসে বললি—"তারপর ?"

বেণু ভোর বিরক্তিকুঞ্চিত চোথের দিকে চেয়ে মিটি করে একটু হাসবার চেটা করলো—"আমায় খুব বিরক্তি-কর মনে হচ্ছে ?"

তার ব্যবহের ত্র্বলতা গলার করণ স্থরে যেন বেজে উঠলো। কিন্তু তুই অবিচল। তোর মুখের দিকে চেয়ে অবশেষে হতাশ ভাবে সে বললো—"না, আপনাকে জোর ক'রে ধ'রে রাথবো না। আপনি যান…"

তুই আর বিলম্ব না করে একতলায় নামবার সিঁ ড়িতে পা দিলি। কয়েকটা সিঁড়ি মাত্র নেমেছিঁস—হঠাৎ বেপুঁ ঝড়ের মত লাফিয়ে এসে দাঁড়ালো তোর গা খেঁবে। হাত চেপে ধরে বললো—"না, যাবেন না।"

কিন্ত সেই মুহুর্ত্তে তোর চোপে জান্লাম ফাঁক দিরে আলো এসে পড়েছিলো। সেই চোথের দিকে চেরে ওর মৃষ্টি শিথিল হ'রে এলো। হাত ছাড়িয়ে নিম্নে ছুই নেমে এলি রান্ডায়। ভারপর সোলা ভোর মেসে ফিরে গেলি।

মনে কর, মেদে গিয়ে দেখলি একটা টেলিগ্রাম এসে পড়ে আছে। টেলিগ্রাম প'ড়ে তুই জানলি—বাড়ীতে মার টাইফয়েড। আর দেরী না ক'রে সেই রাত্রেই বাড়ী ফিরে এলি। মাকে নিয়ে মাসথানেক বাল্ড থাকা গেলো; ভোর পরীক্ষা ত' আগেই চুকে গেছে। কাজেই বাড়ী ব'সে চাকরীর দরখান্ড ছাড়তে লাগলি। ইতিমধ্যে আরও কিছুদিন কেটে গেলো।

এমনি একদিন রাজে হঠাৎ একটা দরকারে কলকাতার এলি। তারপর ভবানীপুরের দিকে কাল সারতে গিয়ে ইচ্ছে হ'লো হাল্লরা রোড অবধি এগিয়ে যাওয়ার। কিন্তু বেণুরা কেউ ছিলো না; কাল্লেই তোকে ফিরতে হ'লো। ধবর পাওয়া গেলো, ওরা দেশের বাড়ীতে ফিরে গেছে।

এই প্রথম একটা অমুতাপ এলো তোর মনে। আত্ম-মানিকে প্রশ্রের দেওরার মত লোক তুই নোস্, তব্ কেমন বেন ফাঁকা ফাঁকা লাগলো কলকাতা। একদিনের বেনী থাকতে ইচ্ছে হ'লোনা। পোট্লা বেঁখে রওনা দিলি বাড়ীর দিকে।

বাড়ীতে এসেই দেখা গেলো একথানা ছোট্ট চিঠি এসে পড়ে আছে। লিখছে খ্যামলাগাছি খেকে বেণু চৌধুরী। ধরে নেওয়া যাক্ চিঠিটা এই রকম—

শৈলেশবাব্, নববর্ষের প্রীতি ও শ্রদ্ধা গ্রহণ করুন।
নকুন বছরের স্থকতে আপনার শুভেচ্ছা কামনা করছি।
মনে আমার জল্পে যদি কোন স্থণা স্ঞ্জিত থাকে তবে তা
ভূলে যাবেন আশা করি।—বেণু—

সেদিন রাত্রে তৃই স্বপ্ন দেখবি। দেখবি দিগস্তের একটা রক্তরাতা মেব আতে আতে মাহুষের মূর্ত্তিতে রূপ নিলা। দেখবি, সেই মাহুষের মূর্ত্তিতে ফুটে উঠেছে বেণুর স্কুলান্ত মূথখানি। স্বপ্নের খোরে মনে হ'বে এই মেরেকে চেয়েই তুই জন্ম জন্ম সাধনা ক'রে আসছিস। কিন্তু খুম ভালতেই স্বপ্নের মারাও মিলিয়ে যাবে। তথন নিজের ওপরেই হয়ত অকারণ রাগ হবে।

তবু সারাদিন ধ'রে একটা ইচ্ছে হবে মনে—একবার শ্রামলাগাছি থেতে। পলীগ্রামের অফুরস্ক সৌন্দর্য্যের ছবি ভেসে উঠবে চোধে। কিন্তু যাওয়া হবে না। পরের দিন সকালেই একটা চাকরীর উমেদারীতে ভোকে বর্দ্ধনান ছুটতে হবে।

চাকরী নিয়ে বদেছিদ আদানসোলে। কাজের চাপে
অক্স কোন কথা হয়ত মনে নেই। কিছু আযাঢ়ের প্রথম
দিনে একটুক্রো একটা চিঠি এদেছে। লেখকের নাম
নেই, তবু লেখককে চিনতে দেরী হবে না। চিঠিটা হয়ত
এমনিও হ'তে পারে—"এই সজল আযাঢ়ের প্রথম দিনটিতে
তোমার জল্পে প্রার্থনা জানাচিছ। তোমার পথ্যাতা নির্বিষ্
হোক। আমায় কি একেবারেই ভূলে গেলে?" —দে—

হঠাৎ মনে হবে—না, ভূলিনি। ভূল সেদিন হ'মেছিলো। কিন্তু সে ভূলের সংশোধন করবো। নিজের সজে প্রভারণা করবোনা আর। বেণু, ভোষায় আমি খুঁজে পেয়েছি আঞ্চকে।

অপেকার দিনগুলি দীর্ঘ হ'রে উঠলো। অবশেবে আখিনের ছুটিতে বাড়ী আসার স্থযোগ ঘটলো। প্রোটা কাটিয়েই রওনা দিলি মুশিদাবাদের দিকে।

कांत्रश्व.....

আমার সেই প্রথম বর্ণনার স্থানে এসে দাঁড়িরেছি
ভূই। সেই জ্যোৎলা-কড়ানো কাঁচা রাভা ব'ছে এক
একটা ক'রে গ্রামগুলোকে ছাড়িরে এগিরে গেলি
বাঁদিকে বিলের মুখে প্রাকৈতিহাসিক বুগের এ
বটগাছকে ছেড়ে এগিরে গেলি। সেই নিঃশব্দ প্র
চলতে চলতে বারবার দাঁড়িয়ে পড়েছিস। পেছন দি
চেরে আবার এগিয়ে গেছিস। ভারপর একটা প্রায়
এসে থমকে দাঁড়ালি। পথের ওপরেই একটা প্রাসাং
মত বাড়া। সেই অরণ্যের দেশে একটা অস্তুত অভিনবছ

উৎসব শেষের বাতিটির মন্ত একটি ঝাড়লई ঝুলছিলে! তার বৈঠকখানায়। গোটানো সতরঞ্চিটি এপাশে ওপাশে জড়ো করা আসন আর পাতা। ব্যাতাবে এদিক ওদিক ছুট্ছিলো ত্'একটি চাকর। তাদের একজন এসে হয়ত প্রশ্ন করে বসবে—"কাকে চান।"

"নরেন নেই ?"

চাকরের ডাকে নরেন বেরিয়ে এলো। অত্যন্ত বিষ
ও ক্লান্ত মনে হলো তাকে। হরত সারাদিনের পরিশ্রেন
অবসর হ'য়ে পড়েছে সে। ডোকে দেখেই চমকে উঠি
যেন। তার মুখ থেকে বেরিয়ে আসবে কটি কথা—
"শৈলেশ?" এমনভাবে বিস্মিত হ'য়ে গাড়িয়ে থাকবে বে
বে, তুই কিছুটা লজ্জিত হ'য়ে পড়বি। মনে হবে এ
উৎসব বাড়ীতে হয়ত তার আসাটা উচিত হয়নি। কিং
নরেন বলবে—"আয় ভেতরে।"

ভেতরের ঘরে তোকে বসিয়েই নরেন অদৃশ্য হ'ে যাবে। তুই বসে বসে দেখছিদ বাড়ীতে একটু ব্যস্ততাঃ ভাব। চাকর এনে তোকে মুখ হাত ধোয়ার জল এফে দেবে। চাকরেই এনে দেবে চা। চা খেতে গিয়ে তোর একটা অভিমান আদবে মনে। কলকাতার বাড়ীছে বেণু বরাবর নিজের হাতেই তাকে চা এনে দিতো এখানে তার দেখাও পাওয়া গেলো না এখন পর্যান্ত। অধিক চা ধেরে ছুড়োনো চাটা সরিয়ে রেখে দিবি।

অবশেষে নরেন ফিরে আসবে। বলবে—"একটু দেরী হ'য়ে গেছে। কিন্তু সন্ত্যি বলছি, ভূমি যে আসবে এ' আমি কল্পনাও করিনি।"

অভিমানে ন্তৰ হ'ৰে তুই দীড়িৰে রইলি। হঠাৎ এক সময়ে মাথা ভূলতেই চোৰে পড়লো নয়েনের দশভরা চোথ ছটো। ভূই বিশ্বিতভাবে তার হাত চেপে রেবি·····শনরেন ?"

হাত ছাড়িরে নিয়ে সে ভাকবে—"আয়," নরেনের গলে খাওয়ার বরে এসে চুকবি। নরেন হাত খ'রে এনে গাতার সামনে বসিয়ে নিজেও তোর পাশে বসে পড়বে। গলবে হয়ত —'আমিও থেয়ে নিই।'

আয়োজনের ক্রটি নেই। পুচি তরকারি সন্দেশ।
প্রত্যেকটি জিনিব স্থপাচ্য ও পর্যাপ্ত। কিন্তু তুই তথনও
গাকুল হয়ে রয়েছিস—কই বেণু ত' এলো না একবার!
মবশেবে মুখ সুটে বলে ফেলবি—"বেণুকে দেখছিনা ত ।"

এক মুহুর্তে সকলের বিশ্বিত দুঁটি সমবেত হ'লো তোর ওপরে। থাওয়া বন্ধ করে নরেন বললো—"সেকি ? জুমি কি জানো না তবে…"

সামনে সাঞ্চানো সুচি তরকারি ও সন্দেশের ত্পুপ নিমেবে নিমপাতার মত বিশাদ হ'বে উঠ্লো। হাত গুটিবে নিয়ে ব্কের সমন্ত রক্তলোভকে তক্ক করে হাণুর মত বসে. বসে তুই তনে গেলি—বেণু মারা গেছে আজ দশ দিন— পুরো দশ দিন। তিন দিনের জরে হঠাৎ সে— আজই তার প্রাদ্ধ ; এ থাওয়া দাওয়ার সামান্ত আরোজনও সেই জন্তেই।

বিজেন্দ্রলাল রায়

শ্রীবিজয়রত্ন মজুমদার

দাল তেদরা লৈ । আর একটি তেদরা লৈ ছের কথা । বার মনে পড়িতেছে। কলিকাতার মাঠে ক্টবলের রেশুম। আমরা থেলা দেখিতেছি: প্রতিঘল্টিতা জার, । টে গম্ গম, খেলা খুব জমিয়া উঠিয়াছে। অকমাৎ একজন লাক আদিরা আমাদের এক বন্ধু-সহদর্শককে ডাকিয়া ইরা চলিয়া গেল। বন্ধু নি:শশে স্থান ত্যাগ করিলেন। হংগাকের তরে আমরা বিমনা হইয়া পড়িয়াছিলাম। । । তের মাদকতা অসাধারণ; প্রেয় স্ক্রদের অমুপস্থিতি বস্তুত হইতে বেশী সময় লাগিল না। কিন্তু সেদিনের দক্তমনস্কতার মনতাপ আলও অব্যাহত রহিয়াছে।

এই বন্ধ — দিলীপকুমার রায়। প্রদিন প্রাতঃকালে
বিনা মেবে বজাবাতের মত দিলীপের পিতা কবিবর
ইবেজলোল রায়ের বিরোগবার্তা সহরে ছড়াইরা পড়িল।
তুন নৃতন নাটক স্প্রী করিয়া আর তিনি বলীয় নাট্যশালার
প্রাষ্টী সাধন করিবেন না; নৃতন নৃতন গানে নিত্য নৃতন স্বর
শংবোগ করিয়া বাললার আকাশে বাতাসে আর তিনি নব
বব উন্মাদনার সঞ্চার করিবেন না; বত্তিশ্ব্যশালিনী জননী
কন্মভূমিকে নিতৃই নব, অভিনব সাজে সজ্জিত করিয়া,
বিচিত্র রূপে, বিচিত্র বর্পে, বিচিত্র রুজাকমারে
বিস্তৃবিভ করিয়া, জগজ্জননী, জগজাতীরপিণী জননীকে

নিত্য নৃতন রত্ন-বেদীতে অধিষ্ঠিত করিয়া সাতকোটা সস্তানের অন্তরে প্রেরণার বিদ্যুৎ প্ৰবাহ প্ৰবাহিত क्रिरियन ना ; इरद्रद्र मश्चवता आंत्र वाकाहरवन ना ; সঙ্গীতের মধ্য দিয়া ভারতের আকাশে ভক্তির ইশ্রধন্থ আর चाँकिरवन नाः भूनिमा मित्रालन चात्र श्राप्तत च्यानत জাগিবে না; বঙ্গাহিত্যে রদের মন্দাকিনী ফুলকুলনাদে আর বহিবে না; হাস্ত-রক্স-রহস্তের গগা-যমুনা-সরস্ভীর ত্রিধারায় বদভূমি আর প্লাবিত হইবে না। কাল সকালেও যাঁহার হাসি সম্ভোগ করিয়াছি, গান ভনিয়া মুগ্ধ মোহিত হইয়াছি, অপরিমিত অনাবিল স্বেহলাভে ধক্ত হইয়াছি, আজ আর তাঁহাকে দেখিব না। পিকবর নীরব; মধুচক্র অদৃখ্য; কুঞ্জবন ভঙ্গ। ছিজেন্দ্রশালের মৃত্যু অভ্যন্ত আকম্মিক। স্তুম্ব পিতাকে "বঙ্গনারী" নাটকের পরিশোধন कार्या गानु दिया पिनीन (थना दिवा निवाहिन; বাড়ী ফিরিয়া, বেহখরে আর সে "নটু" ডাক ভনিতে পাইল না। তার পর কত কাল কাটিয়া গিয়াছে! কত কাল ৷ কাল না কহিয়া, তার পর কত করান্ত বিগত हहेब्राह्ड वनिलाहे व्याधहब ठिक वना हव । किन्न कि छेवन, শুষ, বিরস, মরুভূমি সদৃশ কর আমরা অতিক্রম করিয়াছি।

ছিলেক্তের যোগ্য বন্ধনা আমরা করি নাই। তাঁহার

व्यां श्वार्कना ववरंषत्य इत्र नारे। धरे इजापत ভাঁহাকে স্পর্ণ না করিলেও, জাতির চিত্তপটে অন্তপনের কলকের পশরা হইরা রহিয়াছে এবং আজ, অতীব বীভৎদ আকারেই প্রকটিত হইতে চলিয়াছে। রুক্ষনগর रहेरछ थरत चानितारह, (य-शृद्ध विद्वल्लान क्या श्रश করিয়াছিলেন, সেই গৃহ পরহত্তগতপ্রার। তুনি, বেশী নর, পাঁচ সাত হাজার টাকার দারেই সেই মুক্তিকাথও নিলামে উঠিয়াছে। আমাদের জাতীয়তা বোধ যে কত অন্তঃসারশূক্ত অসার, ইহার আগেও বছবার—বারমার তাহা বিজ্ঞাপিত হইয়াছিল। কিন্তু ইতাবসরে দেশ স্বাধীন হইয়াছে-षामत्रा कंगर मंजाय षामन शाहेबाहि: इटेल कि द्य, অপ্যশের পশরা আজ্ঞও তেমনই পরিপূর্ব, তেমনই ভারি। ঈশরচন্দ্র বিভাসাগরের বাস-ভবনের কথা আমরাভূলি নাই। বৃদ্ধিদচন্ত্রের কাঁঠালপাড়ার বাড়ীর কথা কি ভূলিবার? কিন্তু কেন এমন হয় ? দাওয়ানজী কার্ত্তিকেয়চন্দ্র রায়ের সহধ্মিণী সেদিনের বন্ধ সমাজ মধ্যে রত্বপ্রস্বিনীরূপে সমাদৃতা ছिলেন। उँशित मकन मञ्जानहे पिक्शान-कृती ७ প্রতিষ্ঠা প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। সতাই কি তাঁহাদের বংশধরগণ ঐ পবিত্র মৃত্তিকাথগুটিকে রায় বংশের স্বাধিকারে রাথিতে অক্ষম? বঙ্গভারতীর প্রিয়তম পুত্র, স্বাধীনতার অক্তম সাধক, মাতৃমন্দিরের বরেণা পুরোহিত बिख्यमारात्र वः स्थाइङ विद्या, वद्याम ও वाकानीकां छि व्यवस्थान ठाँशाम्ब शान यानामाना छेनशांत्र मित्तः वक्रास्थ यङ्गित वक्रास्थ, वक्षांया यङ्गित वक्षांया, দেশপ্রেম যতদিন দেশপ্রেম, ততদিন তাঁহাদের পানে চাहिया नीवर अवाश्वाल अर्थन कविरद। आव এইটकू ---সমুদ্রের তুলনার গোষ্পদস্য-ভ্যাগ স্বীকারও অক্ষচিকর হইল ? যে মাহুষ গলাজলে অবগাহন করিছা দেহ মন ধক্ত, পবিত্র বোধ করে, গলোত্রির কোন মর্য্যাদাই সে দেয় ना : ध कि चार्क्या ! वक्रमीय नाग्रेभानाई वा निकिय নিশ্চেষ্ট থাকিতে পারেন কি রূপে তাহাও ত ভাবিয়া পাই না। ডি. এল, রায়ের নাটকের জাবর কাটিয়া ও তাহার অপচার ঘাটিয়াই তাঁহারা লক্ষ্মীর বরলাভ করিয়াছেন। এ कथा कि मान शास्त्र ना ? जमांतांत्रनिष्ठं अहे तम् बहेरल পিত তর্পণ কি তবে উঠিয়া গেল? অতঃপর অম্বদেশে भहांनवा निष्क प्रतित्र मिन विनवार शतिश्रीण हहेरव कि ?

তারপর, আমাদের এই বদভূমি ? সত্যক্থা বলিতে হইছে नित्रिक्षित्र मध्यात्र, नक्षित्र, मानमूद्ध देशहे वनिव (यः विक्यानान बारबद अनिवासीय सन अचीकांत कविश्रारे কৰ্ত্তব্য সম্পাদন করা হইয়াছে। পৃথিবীতে একটি ঋণ কোন मर्टि (मांध हम ना। त्म मांक्श्राण! त्मरकांत्र मयात्र मछ, প্রার্টের বারি ধারার মত, ভাগীর্থীর পুণ্য প্রবাহের মত, অপার্থিব মাতৃঋণ অষাচিত, অপরিমেয় ও অবাধে বর্ষিত হর। সম্ভানের সাধ্য কি সে অনস্ত ঋণভার শোধ করে ? আমাদের দেশের স্বাধীনতার ইতিহাস যগপি কোনদিন কোন নিরপেক ঐতিহাসিকের ছারা রচিত হয়, রাজনৈতিক ঝঞ্চাবর্ত্ত মুক্ত, প্রাদেশিকতার কলহ কলছ-বিবর্জিজত নিখুঁত ও गर्काकीन ইতিহাস প্রস্তুত হয়, তাহাতে দেখা বাইবে, णि. এन, त्राय नामशाती वाकानी नाठाकात ७ कवित्र अ**न** মাতখণের মত অসীম, অনন্ত ও অপরিশোধা। মারের মত এই কবিও মুক্ত হল্ডে কেবল দিয়া গিয়াছেন। প্রত্যাশা ছিল না; প্রতিদান চাহেন নাই; বিনিময়ের চিস্তাও করেন নাই। সেই ইতিহাসে আরও দেখা যাইবে, স্বাধীনতার ভালা আসর তিনিই জাগাইয়া রাথিয়াছিলেন: সে ভাঙ্গা কুঞ্জবন পিককুজনে তিনিই সজীব রাখিয়াছিলেন; কথায় আছে, মাহুষের দেহের মধ্যে রাবণের চিতা নাকি অনস্তকাল ধরিয়াই জ্লিতেছে—এ কথার অর্থ কি তাহা আমার জানা নাই বটে; তবে পরাধীন জাতির প্রাণের প্রাণে, অন্তরের অন্তরতম প্রদেশে স্বাধীনতা যক্ষের হোমারি স্থানীর্থকাল ধরিয়া জালিয়া রাখিতে পারা যে যায়, ভাহা এই আমি, আমার এই ছটি চর্ম্মচকু দিয়াই দেখিয়াছি। এই আমরাই দেখিরাছি, বাজ্লার অন্ধকার শ্রশানে দীর্ঘকাল দিকেন্দ্রলালই চিভাগি প্রধূমিত রাখিয়াছিলেন; স্বাধীনতার বর্ত্তিকাটি তিনিই নিবিতে দেন নাই। পরাধীন ভাতির নরনারী স্বাধীনভার গান্থানি পাছে ভূলিরা বার, মাতৃমত্ত্বে দীক্ষিত ৰাউল তাঁহার একভারাটি বারেকের তরেও থামিতে দেন নাই। সেই বিজেল্লগালের কোন मधानारे जामता पिर नारे। य जाि जीवतनत कृष्टि, সংস্কৃতি ও অতীতের গৌরব করে, তাহার পক্ষে ইহা শোভন, সত্বত ও স্মীচীন হইরাছে কিনা, আমি বদি আজ त्म कथा वक्रवामीक्षनत्क विरवहना क्रविष्ठ विश, जामा করি, তাহা অক্লার হইবে না।

বাললার আল চরম তুর্দিন। অভিকার হন্ডী কর্দমে প্রোধিত। রঙ্গ দেখিয়া পচা পুকুর পরিত্যাগ করিয়া লাদরীও ভাহাকে বাদ করিয়া বাইভেছে। দিলীর মন্ত্রী-সভার আসন লাভ করিয়া গোপালখানী আহেলারও বক্র ছাক্ত, বৰিম কটাক্ষ নিক্ষেপ করে। বৃদ্ধু-ব্র্যাপ্ত দীর্ঘন্সটা হঠাৎ-বোগী মিনিষ্টাররাও বাসলায় আসিয়া বাসালী বিধান-হল রায় ডাক্তারকে হিতোপদেশের পাঠ দেয়। আজ বাদলার মান মর্যাদা, বাদালীর প্রাণ, বদরমণীর সতীত্ব मिल्लीत मार्गा व'एजत चूँ हि इहेता शिष्क्यां हि । नवरहर व व ज़ ছ:খ এই যে, তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ ইতিহাসের দোহাই পাড়িতেও ছাড়ে না। সে ইতিহাস বোধ হয় তাহাদের মন-গড়া ইতিহাস। ৰান্তবের সহিত তাহার কোন সম্পর্ক নাই; সত্য তাহার ছারাও মাড়ার নাই। তাহারা ত জানে না, শতধা বিচ্ছিন্ন, সুষ্প্ত ও আত্মবিশ্বত জাতির अस्त बाजीयजा ताथ এই तकामण्डे बाजाह्याहिन। ভাহারা হয়ত ভূলিরা গিয়াছে, পরাধীন দেশের মর্ম্মে স্বাধীনতার আকাজ্ঞা এই বদদেশই স্থচিত করিয়াছিল। শ্বতি শক্তি তাহাদের খুব হাতধরা, তাহাতে তিলমাত্র সন্দেহ নাই। তাই তাহারা ভূলিয়া গিয়াছে স্বাধীনভার রাজ্পর যজ্ঞ, এই ব্লেই অফুটিত হইয়াছিল। সমিধ সংগ্ৰহ এই वाक्लाहे विद्योद्दित। उथन क्लाबाद्र हिन, ভারতবর্ষ ? সেদিন কোথার ছিল আয়েন্ধার সাক্সেনার দল ? জননী জন্মভূমির পূজা মণ্ডপে সন্ধি পূজার বাগড়াও যথন উদ্ধাম ও উদাত হইয়া উঠিত, নিদাঘের কুধিত, ছিল্লভিল ও বিদীর্থ-ৰক্ষ: ধরিত্রীর মত মণ্ডপের হাঁড়ি-কাঠ যথন 'বলি চাই' আরও 'বলি চাই' রবে ব্যাকুলতা নিনাদিত করিত; কামারের রক্তাক্ত থড়া মূহমূহ: যথন রবিকর ঝলকে উঠিত ও নামিত এবং ऋषित्र প্লাবনে এই বঙ্গের মৃত্তিকা উর্বার করিয়া, বঙ্গীয় छक्ष्वरक वीत्र निर्कीक निक्षम्य कतिया धूर्नितीका नकारकत्, স্পষ্ট ও নিকটতর করিরা: সাধনার সিদ্ধিকে করতলগত ক্রিতেছিল, তথন কোথার ছিল ভারতের অন্তান্ত প্রদেশ ও তাহাদের বাক্যবীরবুল? সে তুর্মদ রণরকে কে माणियां हिन ? यत यत वाजावनि काशंबा विदाहिन ? नां' क मा विनेता मकरनत आर्श क डाकियां हिन ? "राज्यमाण्यम्" मर्काद्यथम त्काथाय श्वनिष्ठ इटेशां हिन ?

জননী জন্মভূমির চরণারবিন্দে ভক্তিচন্দনচর্চিত প্রাণপূলাঞ্জনি বালালী ভিন্ন আর কে দিরাছিল? দিরী? দিরী বে আনিই করিরাছে তাহার ভুলনা মেলা ভার । আরু সিকিউলারের মামদো এমন পিকিউলাররূপে ভারতবর্বের যাড়ে চাপিয়া বসিয়াছে বে, "বন্দেমাতর্ম" ও পরিত্যক্ত হইরাছে; মা'কে মা বলিয়া ভাকা নিবিদ্ধ ও মাতৃপদে ভক্তিনিবেদনও সেকেলে কুদংকার বোধে বর্জ্জনীয় হইয়াছে। ভরদা আছে, অদ্র ভবিশ্বতে আমাদের অর্গাদপি পরিরসী জননী জন্মভূমি জ্যাকেট স্বার্ট ধারণ করিয়া ত্রিংশ কোটা সন্তানের নয়নানন্দ বর্জন করিবেন। আমরাও "ও মাই ডিয়ার কেয়ারিলাও" মন্ত্রোচ্চারণে তাঁহার বন্দনা করিব। হা রে হতভাগ্য জাত! যাত্রারন্তে, নবজীবনের প্রাক্তালে পবিত্র মাতৃনামও পরিত্যাগ করিল।

বাদলার স্বাধীনতা সংগ্রামের প্রথম পর্বের, স্বাদেশিকভার প্রভাবনা অধ্যায়ে ছিজেন্দ্রলালের বে দানই থাকুক, বর্তমান প্রবন্ধে তাহার আলোচনা আমি নিপ্রয়োজন মনে করি। বলসাহিত্যের সমৃদ্ধি করে তাঁহার অনস্থ, অবিনশ্বর দানও আমার আলোচ্য নহে। সাহিত্য কি আমার আফিসের লেডী টাইপিস যে, তাহার ভাল মন্দ সার্টিফিকেটের উপর তাহার চাকরীর উন্নতি অবনতি, স্থায়িত্ব নির্ভর করিবে ? সাহিত্যের রত্বভাগুরে তাঁহার বে দান, তাহা ত জাতীয় সম্পদ হইরা রহিরাছে; কালের তুলাদও ভাহার বিচার করিবে। আমি বলিতেছি ছিজেজ-সাহিত্যের কথা, যাহা জাতির, দেশের প্রভৃত হিত সাধন করিয়া সাহিত্য শব্দের সম্পূর্ণ সার্থকতা প্রতিপন্ন করিয়াছে। এ হিত কাল্লনিক हिछ नहर ; व्यवस निथिया तम हिछ-कथा व्याहेरछ हम ना ; হিতের পরিমাপ করিতে অথবা তাহার ঔৎকর্ষ যাচাই क्रिक्ट प्रभीष वा विष्मिश्चिष्ठित स्भाविम बाहिया विष्युं के विषय विषय विषय के व কবি; তাঁহার দানও বান্তব এবং আমাদের বন্ধভূমি ভাহা প্রতাক করিয়াছে। প্রভারে ংকীর্ণ লিপির মত ছিলেন্তের দান কাতির চিত্তফলকে থোদিত আছে: অনস্তকাল ধরিরা অনস্ত মহন্ত জাতি তাহা পাঠ করিবে।

তথন দানোদরের চল্ নামিয়া গিরাছিল। বজের অকচ্ছেদ উপলক্ষ্য করিয়া বজোপদাগরে যে আলোড়ন হইয়াছিল, তৎকালে বল দেশে যে প্রভঞ্জন বহিয়াছিল, বদীর সমাজ হইতে আগ্নেরগিরির যে লাভাপ্রবাহ ছুটিয়াছিল, ভাষা বামলা ভোড়া লাগায়, বুটিশের সেটেলড ফ্যাক্ট আন্সেটেলড় হওয়ায়, সে সকলই প্রশমিত হইয়াছিল। वणीत जरूरनंत्र शांख गीखा, वृत्क वीद्या ७ व्यश्टत "वरम मांजत्रम्" मञ्ज निश्चा श्रीव्यत्रतिन्न तरक त्य व्यश्चि यूरशत উर्दाधन করিরাছিলেন, সে দিগদাহী অগ্নির তেজও মন্দীভূত হইরাছিল। সে একটা সময় আসিয়াছিল। যেন কাল-বৈশাধীর প্রলয়ে মাতামাতি করিয়া বারি বক্ষ শাস্ত হইয়াছে। যেন গ্রীয়ের কাঠকাটা মধ্যাক্তে ছুরম্ভ শিশু गांत्रांक्रण मांभामांभि कृतिया व्यवस्था निखिला सन्नीत আঁচল ধরিয়া ঘুমাইয়া পড়িয়াছে। যেন কুরুক্তেত মহাসমরের পর প্রায়-নির্মহয় ধরিত্রী মাটিতে সুটাইয়া পড়িয়াছে। সংগ্রামে ইচ্ছা আছে কিন্তু শক্তি নাই : বাসনা উদাম অথচ সাধ্য নাই; দিতীয় বিশ্বযুদ্ধশেষে জার্মেনীর रायमन छक्र-छक्र, निः स्थिषि वक्षः ब्रक्क, ১৯১२ সালের পর হইতে আমাদের এই বাদলা দেশেরও সেই দশা ৰটিয়াছিল। একটা মহারণে রত সারমেয় বুগল বুদ্ধান্তে দুরান্তে এলাইয়া ক্ষতস্থান লেহন ক্রিতেছিল। ঠিক धे ममा के विकल्पनान बाद उँशित नांठकाकारत मञ्जीवनी क्रथा विनारेया वाक्नाटक वाँहारेया, वाक्नानीय श्राधीनछात्र সাধনাকে সঞ্জীব রাখিয়া, তাহার আশা-আকাজ্ঞার তক্ত-মূলে বারি সিঞ্চিত করিয়াছিলেন। মহাভারতের শেষের দিকে অর্গারোহণ পর্বের মত আধীনতারও অর্গ যাতার পালা ক্লক হইয়া গিয়াছিল। এই ডি-এল-রায়ই সে অন্তিম যাতা নিবারিত করিয়াছিলেন। দেশের তথন মহাযুদ্ধের পরে মহানিতা নামিয়া আসিয়াছে। বিরাট উত্তেখনার পরে নিরতিশয় অবদাদ আদে; উগ্র কর্ম্ম-চাঞ্চল্যের অবসানে সীমাহীন আভ্য দেখা দেয়: প্রবল আশা ভবে নিরাশার হিম প্রবাহ প্রবাহিত হয়। বঙ্গদেশেও बहेशाहिल। उन्हीशना এकहा आकान न्यान कतिशाहिल: আবার হতাশাও বাঙ্গালীকে রসাতলে প্রোথিত করিয়া-ছিল। তথন এই ডি-এল-রায়ই দৈতাগুরু শুক্রাচার্ব্যের মত মুমুর্ মৃতকল্প বাজালীকে পুনক্ষজীবিত রাখিয়াছিলেন। ৰিজেল্র-রচিভ একথানি নাটকের নাম্বিকাকে যুদ্ধকেত্রের "তুপীক্বত মৃত্যুর" মাঝধানে দাঁড়াইরা মৃতের সংকার ও আহতের সেবা করিতে দেখিয়াছিলাম। নাট্যকার ডি-

এল-রারকেও আমরা বনাককারাবৃত, নৈরাশ্রণীড়িত বাললার শ্মশানভূমিতে দাঁড়াইয়া আশার বাণী ওনাইতে দেখিয়াছি। কি শান্ত স্থানর উদার গন্তীর সে মূর্ত্তি! কি মিগ্ধ মধুর আশাপূর্ণ লণিত সে দৈববাণী! আমরা অত্যন্ত অকৃতক্ষ ও কৃতন্ত জাতি; তাই তাঁহাকে ভূণিতে বসিয়াছি। ডি-এল-রায় রাজপুতানা—রাজস্থানের ইতিবৃত্ত হইতে হিন্দু মুস্লমান—মুখ্ল রাজপুতের কাহিনী লইরা

হইতে হিন্দু মুসলমান-মুখল রাজপুতের কাহিনী লইরা নাটক রচনায় প্রবুত্ত হইলেন। নাটকের ভাষা করিলেন, অভিনব; ঘটনা সংস্থাপন অভিনব; গীতাবলী অভিনব; গানে হার সংযোগ করিলেন, তাহাও অপূর্ব্ব ও অভিনব। তাঁহার উদ্দেশ্য অভিনব ; লক্ষ্য অভিনব ; কার্ক্সেই অভিনবৰ উদ্ভাবন করিতে হইয়াছিল। যুদ্ধ নাই বটে; কিন্তু যুদ্ধার্থ জাতিকে প্রস্তুত করিতে হইবে: আশা নাই বটে, কিছ নিরাশামগ্র দেশবাসীর উচ্চাশার ভদ্তীগুলিতে ঝকার জাগাইতে হইবে। সে ত নিজা নয়, অবসাদের পাতালপুরী इहेट याधीनजाकामी नजनातीत्क छेक्ष् क कतिराज इहेटत, অভিনৰত্বের মহাসমারোহ ব্যতিরেকে তাহার সম্ভাবনা কোপার ? ডি-এল-রারের ঐতিহাসিক নাটকের অভিনর দেখিতে বসিয়া দর্শক বিজয়ী মুঘল সমাটকে দেখিত না; বিজিত রাজপুত অথবা হিন্দুকেও দেখিতে পাইত না;— দেখিত, বিজয়ীর বেশে বৃটিশের পদতলে বিজিত ভারতবর্ষ। নাটকের পাত্রপাত্রীগুলিকে দে মধ্য ভারতের—রাজপুতানা वा मिल्लीत अधिवांनी विनवां छाविए भाविल नाः वदाः তাহারা যেন বড় পরিচিত; যেন বড় চেনা; যেন রক্ষঞ্জের বাহিরে বাস্তবেও তাহাদিগকে নিতানিয়ত দেখিতে পাইতেছে। নাটকীয় সংলাপ, সে যেন সেই পাঁচ শত বর্ষের পুর্বের অদেখা, অজানা মহন্যগোগীর উক্ত নহে; পরাধীন ভারতবর্ষের প্রত্যেকটি নরনারীর অন্তরে সেঞ্চা সভত ধ্বনিত ও প্রতিধ্বনিত হইতে শুনিত। ডি-এল-রায়ের নাটকে নাটকীয় রঙ্গ রস-হাস্ত কৌতুক, গীত বাছ, প্রেম, ভালবাসা, অহুরাগ, পূর্বরাগ, কামক্রোধ বৃদ্ধবিগ্রহ চক্রান্ত বড়বছ সব ছিল, কিছুরই অভাব ছিল না; কিছ অভিনয়ান্তে ভারাক্রান্ত অন্তরে দর্শক যখন গৃহ প্রত্যাগত হইতেন, তথন নৈশাকাশে ভকতারাটির মত একটি উজ্জল নক্ষত্রই অমান জ্যোতি:তে তাঁহার হলরাকাশ প্রতাসিত রাখিত-দেশ-প্ৰেম। একটিমাত্ৰ আকাজনাই জাগদ্ধক থাকিত-স্বাধীনতার

কামনা। হুর্ভেক্ত আন্ধকারের মধ্যেও স্থবিমল ছাতি একটি শক্ষাই নির্দ্ধেশ করিত —খাধীন ভারতবর্ষ।

अक्षिन. अक मांग वां अक वर्गत्र नहा : वह वर्ष वहा कान धतियारे विस्वतनान ताय के कांखिक निर्शास्त्र, कक-তানমানলয়ে, ব্রতধারিণী হিন্দু বিধবার মত এই ব্রত উদ্যাপন कतिशाहित्तन। (मार्म, जर्भन क्लान चात्नातन हिल ना; निशास्त्र निखतक नतीत मठ स्म नीतर, निधत, भासा। আঘাতের পর আঘাত, নির্শ্বন নিষ্ঠুর আঘাতে সাত কোটা বাঙ্গালী অধ্যাবিত বঙ্গদেশ ভূশব্যাশান্বিত; চলচ্ছজিহীন, चक्रम, चमका मित्रका कानमित य मिक इहेर्द, পকাঘাতে অবসন্ন দেহ কোন কালে যে উজ্জীবিত हरेत, वलशैन, पूर्वेंन धर कांछि नव वला वलीयान হইয়া আবার যুদ্ধোত্তম করিবে, কোন আশাই ছিল না; নিশ্ছিদ্ৰ অন্ধকারে একটি ক্ষীণ আলোক রশ্মিও রেখাপাত করিত না; বরং আশকা হইত শরবিদ্ধ শাৰ্দ্দুলের মত এই বাকালীকাতিও শেষ শয্যায় শুইরা শেষ নিঃখাস পরিত্যাগের প্রতীকা করিতেছে। মুমুর্র কর্ণে হরি-নামের মত এই কবি মৃত্যুপথ ধাতার কাণে জীবনের গান, নয়নে নব জন্মের ছবি অধরে মৃতসঞ্জীবনীমুরা—ব্রাণ্ডি মকর-ধ্বৰ ঢালিয়াছিলেন। অবসাদে আছের জাতি আত্মহত্যায় জীবনাবদান না করে, হতাশার ঘূর্ণ্যাবর্ত্তে ভাদিয়া না যায়, প্রাদোষের অন্ধকারে দিকভান্ত পথিক অপঘাতে না আত্ম-বিশয় প্রাপ্ত হয়, নাট্যকার, গীতিকার, স্থারকার দ্বিজেন্দ্রগাল রাষের তাহাই ত্রত ছিল। ভবিয়াদ্রন্থা কবি জানিতেন, मिराकात, मिरापृष्टिएडरे पिथियाहित्वन, छर्दद क्व वित्रिष्टिन जैवत्र श्रीखद्र त्रिश्टित ना। धकष्टिन कृषक चानित्व ; क्कार्व वीववनन कतिरव ; अवश्रहे वृक्क त्रानन कतिरव ; সোনার ফদল ফলিবে। তাই তিনি স্যত্নে ভূমি প্রস্তুত রাথিয়াছিলেন; আগাছামুক্ত ক্ষেত্র কবিত করিয়া, জনির পাট করিয়া গিয়াছিলেন। প্রতিভার বরপুত্র কবি वानिरछन, वारात त्रशी वात्रिरन; वारात त्रथ हिन्द ; विकामका निर्धार कावांत्र कांत्रज्व शकान्त्र हरेत. স্বাধীনতা সংগ্রামে স্বাতির জ্বীবন মূত্যু স্বাবার পারের

ভূতা हहेरा ; তाई कवि १०० १ शिकांत्र दाधियाहित्तन। মনে আছে, তাঁহার এক একথানি ঐতিহাসিক নাটক একাদিক্রমে এক, দেড়, ছই বৎসর পর্যান্ত "ক্ষেত্র" উত্তপ্ত রাধিত এবং উত্তাপ মন্দীভূত হইবার পূর্ব্বেই আর একথানি নাটক আবিভূতি হইয়া ব্যারমিটারের পারদ পুনরায় মার্ত্ত স্পর্শ করিত। যাজিকের ধরদৃষ্টি, যজাগ্নি না निर्काि इय । निहाधक मन महर्क, वयनाद्वत जाश्वन যেন না নিবে। বৃদ্ধিমের মত ছিল্লেন্ডগালও পৌরুষ ও পুরুষকারেরই হোতা। স্থাকামী, ভগুামী ও বছতর "মীর" মর্মান্তিক শত্রু বিজেজনাল জাতিকে গৌরুবের প্রেরণাই দিয়াছেন। তাঁহার শেষ দান, "ভারতর্ব" বক্ষে জলদ-मत्त्र शूक्रस्वत्र शान, शीक्रस्वत्र मन्नोठ-"ভात्रञ्चर्य।" व्यथह, वाधीनछा-मः श्रांत्मत देखिशम निथित्व, वनित्व, বুঝাইতে বেন অনেকের নাম আমরাও করি, অনেকেই করেন, কিন্তু কেন জানি না, ছিজেঞ্জলাল রায় নামটি वान পড़िया याग्र। डाँशांत्र नामि वान পড़िया यात्र। তাঁহার নামটা কেহ করে না। রামায়ণ হইতে রামলক্ষণকে বাদ দিবার গৃষ্টতাও হয়ত একদিন দেখিতে ও সম্ম করিতে **इटेर्टर। এও তাগারই পূর্ব্বাভাষ। একদা বৃদ্ধিদন্তর জা**তিকে জাগাইয়াছিলেন: আর আঘাতে আঘাতে মৃতকর কড় ও অচৈতক কাতিকে অত্যক্ষণ ভবিষ্ঠতের জন্ম উবুদ্ধ করিতে বিজেন্দ্রণাল बाय छीरां विकशिनी लाधनी शांत्रण कविशाहिलन। বৃদ্ধিনকৈ আমরা ভূলিতে বৃদিয়াছি এবং বিজেজ-नालित अन व्याप्ते वयीकांत्र कतित्राहि वनित्व जुन हहेरव না। বৃদ্ধিচন্দ্র জাতীয়ত্ব বোধের জন্মদাতা জনক হইলেও জাতির পিততে তাঁহার অধিকার নাই যে কারণে, নিরাশা-নিপীড়িত জাডাক্লিষ্ট মৃতপ্ৰায় জাতিকে সঞ্জীবনী মল্লে সঞ্জীবিত রাখিলেও ঠিক সেই কারণেই ছিজেক্সলাল রায়ও व्यनापृष्ठ । विवाख-हेश्त्राक छाँशास्त्र नगारहे व्यनका छिनक আঁকিয়া দেয় নাই। তাই স্বাধীন ভারতবর্ষেও বৃদ্ধিচন্দ্র বকভাষার লেখকমাত্র! হা রে বরাত' আর হিজেজলাল, শুদ্ধ একজন নাটককার !!! বন্দে মাতরম। জয়হিন্দ।।



অসুর

শ্রীগোপালদাল চৌধুরী

অমরকোবে অফ্রনিগের দশটি নাম দেখা বার— "অফ্রা 'দৈত্যা' দৈতের 'দকুজেন্সারি-দানবাঃ'। শুক্রশিকা 'দিতিজ্তাঃ' পূর্বদেবাঃ 'ফ্রমিরঃ'" দুর্গবং। ১২।

অহর, দৈত্য, দৈতের, দমুল, ইন্সারি, দানব, শুক্রশিক্স, দিতিহ্বত, পূর্বদেব ও হুর্বিব্। অহুর শব্দের বাংপত্তি—অক্সন্তি কিপান্তি দেবান্ 'দেবতাদিগকে বাহারা কেপণ করে অর্থাৎ নিজের অধিকার হইতে বিভাড়িত করে, তাহারা অহার["]। অহাকেণণে অস্থাতু উণাদি "উরণ" প্রত্যর যোগে সিদ্ধ। অথবা বিরুদ্ধার্থ নঞ্-যোগে তৎপুরুষ সমাসে অস্থ্রপদ সিদ্ধ। অর্থ স্থ্রদিগের বিরোধী। এই বৃংপত্তি ভামুজী সন্মত। রামারণে স্থরা-সম্বন্ধ-রহিত বলিরা অস্থর হইয়াছে, এই বিবরণ জানা ঘার। সমুজমন্থনে স্থরা উত্থিত হইয়া এথম অস্থর সমীপে পমন করিরাছিল, কিন্তু অস্থরেরা শাপভরে এহণ না করার তাহারা ব্দস্তর নামে অভিহিত হইল। (১) কশুপ পত্নী দিতির অপত্যত্ব নিবন্ধন অপত্যার্থে (বিত্যাদিতা পাং। ৪।১।৮৫) "শু" প্রত্যর বোগে দৈত্য এবং চ্যক্ প্রত্যর বোগে (৪।১।১২০) দৈতের। কশুপ পদ্মী দকুর অপত্য দানব। হিরণ্যকশিপু প্রভৃতি দৈত্য, এবং শবর প্রভৃতি দানব-কিন্তু দোনৰ উভয়ই অহব। দুকু ছইতে জাত অভএৰ দুকুজ (জন+ড প্রত্যয়) ইন্দ্রের শক্ত ইন্দ্রারি, শুক্রের শিক্ত, দিতির হত ইহারা পূর্বে দেবতাই ছিল পরে অক্যায়াচরণে জ্ঞা হইয়া অফ্র নামে পরিচিত **रहेबारक। পূর্বেচতে দেবাশ্চেতি "পূর্ববদেবা:"।** সুরদিগকে বেব করে অভএব হুর্বিষ্ (হুর-বিব-কিপ্ ৩/২/৬১)। ভারুজী অভিমত অকাশ করিয়াছেন যে, যদিও ইহারা পাতালবাসিত নিবন্ধনে পাতাল वर्षा कविक इहेवात छेलवूक, जवालि म्व-विद्वाविक निवस्तन वर्शवर्ष পঠিত হইয়াছে। "যভূপি পাডালবাসিছেন পাতালবর্গে বস্তু:বৃক্ত:-**७वा**नि वृक्तभारताशानिरेश्रवाङाः", এই अन्नत्त्र वक्तवा त्व नांश्रतवेठः পাভালই অহ্রদিপের নিবাদছল বলিয়া পরিচিত। মার্ক এর পুরাণীয় চঙীতে (উত্তরচরিত ৮ম) শিবদূতীর উক্তি হইতে বুঝা যায় বে, পাতালই অহরদিপের স্থান যথা---

> "জৈলোক্যমিলোলভতাং দেবাঃ সম্ভ হবিভূ কঃ। যুমং প্রমাত পাতালং যদি জীবিতুমিছব।"

ইক্র তৈলোক্যাধিপতালাভ করণ, দেবগণ বজ্ঞীর হবি ভোজন করণ। তোমরা বদি বাঁচিতে চাও, তবে পাতালে চলিরা যাও। ১২ অধ্যারে আরও স্পষ্ট জানা যায় মে, শুভ নিশুত্ত বধের পর অংশিষ্ট দৈত্যগণ পাতালে গমন করিয়াছিল।

> "দৈত্যাক্ষ দেব্যা নিহতে গুৰে দেবরিপৌ ধুধি। কগৰিধবংসিদী তত্মিত্মহোক্রেতুলবিক্রমে। ৩৪ নিশুক্তে চ মহাবীর্ব্যে শেবাঃ পাতালমাববুঃ।৩৫

এখানে বিশেষ বক্তব্য এই যে যদিও সাধারণতঃ পাতালই অক্রের নিবাস বলিয়া বর্ণিত হইরাছে, তথাপি অক্তত্ত্বও ইহাদের বাসস্থানের প্রভূত প্রমাণ পাওয়া যায়।

বিলছরিবংশের বিষ্ণুপর্কান্তর্গত ষ্টুপুরবধবুত্তান্ত এই প্রদক্ষে উল্লেখযোগ্য। "পারিপাত্র নামক পর্কতের সামুদেশে ষ্টুপুর নামক অফুর নগর অব্স্থিত। শিব বিষ্ণুকে বলিয়াছেন,

> "ষ্টুপুরং নামনপরং দানবানাং জনার্দন! অত্তান্তর্ধরণীদেশে পরাক্রম্য মহাবলাঃ। এতে দৈত্যা ছরান্ধানো জগতো দেবকটকাঃ। ছরা বসস্তি গোবিন্দ সানাবত মহাগিরেঃ। অবধ্যা দেবদেবানাং বরেণ ব্রহুণোহন্দ। মাসুবান্তরিভান্তন্মান্ত্যেভান জহি কেশব!

> > বিশুপর্ব ৭৪ আ ৪৩।৪৫

এই পারিপাত্র পর্বতের সামুতে ভূবিবর প্রদেশে দানবদিগের বটুপুর
নামক নগর অবস্থিত। তুরাস্থা, জগতের কণ্টকবরণ দেবজোহী
অক্তরগণ প্রচ্ছরভাবে ইহাতে বাস করে। ইহারা ত্রন্ধার বরে দেবতাদিগের অবধ্য। অতএব তুমি মামুবশরীরে ইহাদিগকে বধ করিবে।
৮২ অধ্যায়ের পিতিতার্থ হইতে জানা যার বে, ত্রিপুরাম্বর বধের
পর বে সকল অম্বর জীবিত ছিল, তাহারা কঠোর তপভার দারা
ক্রন্ধাকে তুই দ্বিরা বর প্রার্থনা করিরাছিল বে,

"ত উচু: সর্বলেধানামবধ্যা: স্তাম হে বিভো। পুরাণি বটু চ নো দেব ভবস্তবস্তর্মহীতলে।১৭।

আমরা সকল দেবতার অবধ্য হইব এবং ভূমিতলে আমাদের বটুপুর হউক ইহাতে আমরা হবে বাস করিব।

মহাভারতের জোণপর্কের ২৯১ অধ্যান্তে ছালোকে অস্থ্রদিগের তিনটি পুরীর বর্ণনা দেখা যার। যথা,

> "অস্থ্রাপাং পুরাজাসং শ্লীপি বীর্যবতাংদিবি। আয়সং রাজতকৈব সৌবর্ণং পরমং মহৎ । ৬৪

^{(&}gt;) বরণত ততঃ কতা বারণী রঘুনন্দন। উৎপপাত মহাভাগা মার্গমানাঃ পরিএহং। দিতেঃ পুত্রা পতাং রাম অগৃহর্বরণাক্ষজাং। অদিতেতু ত্তা বীর অগৃহ তা-মনিন্দিতাম। অহরা তেন দৈতেরঃঃ হার তেনা দিতেঃ ত্তাঃ। হারীঃ প্রমৃথিতাখানন্ বারণীপ্রহণাৎ ত্রাঃ। (বালকাঙ্জ) ব সং। তদ। ৪

সৌবর্ণং কমলাক্ষ্ণ তারকাক্ষ্ণ রাজতং।

তৃতীয়ন্ত প্রবেধাং বিদ্যান্দালন আরসং। ৬০
বীর্ঘানা অহ্যরদিগের তিনটি পুর ছিল। একটি লোইমর
রাজতমর এবং অস্তুটি হ্বর্ণমর। হ্বর্ণমর পুরের অধীবর
রাজতপুরের স্বামী তারকাক্ষ এবং আরসপুরের স্বামী
। প্রসঙ্গতঃ বক্তব্য যে উক্ত ত্রিপুরনিবাসী অহ্যরগণই ত্রিপুরাহর
ছহিত এবং শিব কর্ত্ত্ক নিহত। ত্রিপুরাহর একটি নহে।
। ৩০ অধ্যারে ক্ষিত হইয়াছে যে,

নির্চ্চিতেষ্চ দৈত্যেষু তারকন্ত স্থতাপ্রয়: । তারাক্ষ: কমলাক্ষ্ক বিহান্মালীচ পার্থিব । তপু উপ্রং সমাস্থায় প্রমে নিয়মে স্থিতাঃ ॥ ৪।৫ ।

র রাজন্ ! দেবগণ কর্তৃক অস্থরের। পরাজিত হইলে তারকাস্থরের আতাহ তারাক্ষ কমলাক ও বিছারালী বিশেব নিয়ম পূর্বক উত্যাতপতা। বিরাছিল, তাহাদের তপভার ফলে ময় ভিনটি পুর নির্মাণ করিরাছিল।

> "ততোময়: স্বতপদা চক্রেণীমান্ পুরাণিচ। জাগি কাঞ্চনমেকংবৈ রৌপাং কার্ফায়েসংভ্রা। ১৫। কাঞ্চনং দিবিভ্রাদীদস্তরীক্ষেচ রাজতং। জায়দঞ্চান্তবদ্ ভৌমং চক্রন্থং পৃথিবীপতে॥ ১৬।

কটি পুর কাঞ্চনময় অপরটি রৌপাসর অক্টট কুঞ্লোহমর। কাঞ্চনময় বুর দ্বালোকে, রাজত অন্তরীক্ষে এবং লোহমর ভূলোকে নির্শিত ইয়াছিল। পুর চক্রের উপর বুচিত হইরাছিল।

বিক্পর্কের ৮০ অধ্যারের বৃত্তান্ত হইতে অবপত হওয়া যায় থে, গুরিয়েরাও অবস্থা-বিশেষে অহরের পক্ষভুক্ত হইয়া দেবতাদিগের
ক্রেছে যুদ্ধ করিত। ইহাও বুঝা যায় যে, সহর নিবাসে প্রাক্ষাাদিরও
বিস্থান হইত। যথা—

"বৈশম্পায়ন উবাচ---

এছসিয়ের কালে তু চতুর্বেদ-বড়াস্থবিং।
রান্ধণো যাজ্ঞবন্ধ্যন্ত শিক্ষো ধর্মগুণাঘিত: ॥১
রক্ষণভেতিবিখ্যাতো বিপ্রোবান্ধ্যনের ।
অসমেধ: কৃতন্তেন বস্থদেবক্ত ধীমত: ॥২।
স সংবৎরদীক্ষয়ং দীক্ষিত: বট্পুরালরে।
আবর্জারা: শুভে তীরে স্থন্তা ম্নিজ্ইরা॥ ৩।
স্বাচ বস্থদেবক্ত সহাধ্যায়া বিজ্ঞোভ্য:।
উপাধ্যায়ন্ত কৌবব্য কীরহোতা মহাস্থন: ॥ ৪।

বশল্পারন জনবেজরকে ুবলিতেছেন—এ সমরে •বড়জের সহিত
চুর্বেলবিৎ আক্ষাণ বাজবন্ধের শিশ্ব ধার্মিক বিবিধগুণসম্পার বাজসনেরী
বাধাধারী জন্মনত নামক এক বিপ্ত ছিলেন। ইনি বৃদ্ধিমান বস্থদেবের
বিষেধ সম্পার করিরাছিলেন। বটুপুরস্থ স্নিগণ—সেবিত আবর্ত্তা
বিক নদীর শোক্তন তীরে সেই আক্ষাণ সংবংসর ব্যাপক, বজ্ঞে দীক্ষিত
ইরাছিলেন ইনি বন্ধদেবের স্থা, সহাধ্যারী এবং কীরহোতা অর্থাৎ

অধার্ ছিলেন। (২) ইনি একজন উপাধ্যার ছিলেন। অথবা সহাধ্যরনের পর বহুবেবেরই উপাধ্যার হইরাছিলেন। এছনে উপাধ্যার শব্দের অর্থ সম্বন্ধে কিঞ্চিৎ আলোচনা আবশুক। অসর সিংহ বলিরাছেন, "উপাধ্যারোহধ্যাপকং," উপাধ্যার শব্দের অর্থ অধ্যাপক। ইহা হইতে প্রকৃত অর্থ প্রকাশ পাইল না। "উপেত্য অধীরতে অস্মাৎ" ছাত্র আসিয়া ইহার নিকট হইতে অধ্যয়ন করে এই অর্থে (ইঙক্ষ। পাং। ৩।৩।২১) এই পাণিনি স্ব্রাক্সনারে ইঙ্ধাতুর পর অপাদানে বঞ্ধাত্যর বোগে উপাধ্যার শক্ষ নিশ্দর হইয়াছে। স্থতরাং বর্ত্তমান বৃগের স্কুল কলেজের শিক্ষক অধ্যাপক নহেন। কারণ ইহারা ক্লাসে ঘ্রিয়া ঘুরিয়া পড়ান। সস্থ বলিরাছেন। ২।১৪১

"একদেশত বেদজ বেদালাক্সপি বা পুন:।
বোহধ্যাপয়তি বৃত্তার্থং উপাধ্যায়: স উচাতে।"
বেদের একদেশ অথবা বেদের অঞ্চ বিনি বৃত্তির জক্ত অধ্যাপনা করেন,
তিনি অধ্যাপক। বৃত্তি শব্দের অর্থ গুরুদক্ষিণা অথবা রাজ-প্রদত্ত
সাহায্য। বেতন নহে।

"বহুদেবজন যাতো দেবকা সহিতঃ প্রভো ।

যজমানং ষট্পুরস্থং যথাশকো বৃহস্পতিম্ ॥ ৫

তৎ সক্রং ব্রহ্মদন্তত বহুবরং বহুদক্ষিণম্ ।
উপাসন্তি ম্নিশ্রেষ্ঠা মহান্ধানো মহাব্রতাঃ ॥ ৬ ।
ব্যাসোহহং যাজ্ঞবকাশ্চ হুমন্তর্কমিনিত্তথা ।
ধৃতিমান জালানিশ্চিব দেবলাভাশ্চ ভারত ॥ ৭

বক্ষাম্মপ্রসাযুক্তং বহুদেবজ্ঞ ধীমতঃ ।
যাত্রেসিভান্ দদ্যে কামান্ দেবকী ধর্মানিরিণী ॥ ৮
বাহুদেব প্রভাবেণ কর্গৎ প্রস্কুর্মহীতলে ।
তিমিন্ সক্রে বস্তুমানে দৈত্যাঃ যটুপুরবাসিনঃ ॥ ৯
নিক্রাভাঃ সমাগম্য তমুচুক্ররদর্শিতাঃ ।
কর্ষাভাঃ যজ্ঞহাগো নঃ সোমং যাজ্যামহেব্রং ॥
কল্পান্ড ব্রহ্মদন্ত্রা নো যজ্মানঃ প্রবছত্তু ॥ ১০ ॥

হে প্রভো! দেবকীর সহিত বস্থানে বট্পুরে অনুষ্ঠিত সেই যজে বজনান এলগতের সমীপে বৃহস্পতি বজে ইল্লের স্থার গথন করিরা-ছিলেন। বহু অন্তর্গুর এবং প্রচুর দক্ষিণাযুক্ত প্রজানতের সেই সত্রে মহাত্রত মহান্ধা ম্নিশ্রেষ্ঠগণ গমন করিরাছিলেন। ইহাদের মধ্যে ব্যাস আমি (বৈশম্পায়ন) বাজ্ঞবন্ধ্য স্থমন্ত জৈমিনি গৃতিমান্ জাজলি এবং দেবল প্রভৃতি। সেই সত্রটি বৃদ্ধিমান্ বস্থানেরের সম্পত্তির অসুরূপ হইরাছিল। ইহাতে ধর্মচারিণী দেবকী প্রাবীর অভিলাবিত বক্ত দান করিরাছিলেন। জগৎশ্রই। বাস্থাদেবের প্রভাবাস্পারে ভৃতলে সেই সত্র্ আরক্ত হইলে বটুপুরবাসী নিকৃত্ত প্রভৃতি অস্তর্গণ উপন্থিত হইরা বলিরাছিল বে, আমাদের জক্ত বজের ভাগ নির্দিষ্ট হউক, আমরা

 ^(·) অধ্বর্গদ্পাতৃ হোভারো যকু: সালগ্বিদঃ ক্রমাৎ। বলবাপৃত বলুর্বেদ্বিদ্ রাজ্প অধ্বর্গ। অসর ব্রহ্বর্গ।

ৰজীয় দোষণভাৱ বিকট ধাইব। বজালুৱাতা একাণত আমাণিগকে কন্সা দান করুক, অক্সান্ত বস্তুও আর্থনা করিয়া জানাইয়াছিল বে,—

"ৰাজধা তুন যইবাং বয়মাজ্ঞাপরামহে"।১২
"ৰামরা আদেশ করিতেছি যে, আমাদের আজ্ঞা লজ্মন করিলে যাগ
করিতে দিব না।" এদিকে ব্রহ্মদন্তের নিমন্ত্রণে জরাসন্ধ প্রভৃতি ভারতীয়
নৃপতিবৃন্দ সমাগত হইরাছিলেন। অন্তরের সহিত বিবাদ করিবার
ক্ষা বহুদেবের অভিপ্রায়ামুসারে কৃষ্ণ প্রভ্রার প্রকৃতির সহিত বট্পুরে
উপস্থিত হইরাছিলেন। যুদ্ধের উপক্রমে নারদ মুনি চিস্তা করিরা অম্বর
সমীপে উপস্থিত হইলেন এবং বলিলেন—

"কথং বিরোধং যহভিঃকুতা বঙ্গে বিহাসতে।
যো একাদতঃ স হরিঃ সৃহি তক্ত পিতৃঃ সথা।"
তুমি বাদবদিগের সহিত বিরোধ বীধাইরা এথানে নিশ্চিন্ত ভাবে বসিয়া
আছি কেন? যে একাদত্ত সেই হরি। কারণ সে তাহার পিতা বস্থদেবের
সথা। কুঞ্চের কক্ত একাদত্ত বহু ভাল ভাল কক্তা রাথিয়াছে। তুমি
যে একশত কক্তা হিরণ করিয়া আনিয়াছ তাহা উপযুক্ত রূপে ক্ষত্রির
রাজাদিগকে ভাগ করিয়া দিয়া তাহাদিগকে সহায় কর। নারদের
পরাধর্শে নিকুত্ব তাহাই করিল।

"নিকুন্তোংধাত্রবীজ্ঠ: ক্ষতং স্বরিপুশুদা। জন্ববঁলিছা ক্ষতশু মাহান্তাং সতামেব চ ॥৫৯ তথন দেবশক্ত নিকুত্ত ইষ্ট হইয়া ক্ষতিয়ের মাহান্তা বর্ণনা ক্রিয়া বলিল—

> "যুদ্ধং নো রিপুভি সার্ধং ভবিষ্যতি নৃপোত্তমা:। সাহাব্যং দাতুমিচ্ছামো ভবস্তিত্তত সর্ব্ধথা । • • এবমন্থিতিতানুচুঃ ক্ষতিয়াঃ ক্ষীণ কিবিধা:। পাওবেয়ানৃতে বীয়ান্ ক্রতার্ধান্নারদান্বিভা ॥ • ১

শক্রর সহিত আমাদের যুদ্ধ উপস্থিত। হে নৃপতিশ্রেষ্ঠগণ! ইহাতে আপনাদের সর্ববিধা সাহায্য পাইতে ইচ্ছা করি। ইহাতে কেবল পাওবগণ ব্যতীত সকল ক্তিয়ই সন্মত হইলেন।

অতঃপর যুদ্ধ এবং তাহার কলাফল। আমরা এইমাত্র প্রতিপাদন করার অভিপ্রায়ে এই ব্রাস্তটি উদ্ধৃত করিলাম বে,— দেকালে ক্তিরগণ জ্ঞায় এবং ধর্ম্বের পক্ষপাতী ছিলেন না। স্বার্থ সিদ্ধির জল্ঞ দেবদিজের বিরুদ্ধেও অল্লধারণে বিরুত হইতেন না।

কিরাত-প্রসঙ্গ

বিকুপুরাণের ২ জংল। ২৮ অধ্যারে উক্ত হইয়াছে যে, "পুর্বেক কিরাতাযক্তহাঃ পশ্চিমে যবনাঃ স্থিতাঃ।" যে ভারতবর্ধের পুর্বে দিকে কিরাত নিবাস এবং পশ্চিমে যবন স্থান। পূর্বেক উল্লেখ করা হইয়াছে যে, কিরাত একজেণীর মেছে। ইহাদের নিবাস যে কেবল ভারতের বাহিরে পূর্বেদিকেই নিয়ত ছিল, তেমন বুঝা যার না। মহাদেব আরাধনার্থ অর্জ্জুন হিমালর পর্বতে তপন্তা করিতে সিয়াছিলেন। উহা উত্তর দিকে অবহিত। "দিশং হদীটীং কৌরব্য হিমবজ্ঞিধরং প্রতি।" (বনপর্ব্ধ ও অ-থা১) উত্তর দিকে হিমালর পর্বতের দিধরের উদেশে অর্জ্জুন গফ করিয়াছিলেন। এথানেই অর্জ্জুনের ছলমার জন্ত মহাদেব কিরাতবেং গমন করিয়াছিলেন। উমা দেবীও কিরাতবেশবারিণী হইয়াছিলেন।

"কৈরাতং বেশমাস্থায় কাঞ্চনদ্রম-সন্নিভন্।
বিজ্ঞান্তমানো বিপুলো গিরিপ্সেকরিবাচলঃ ॥ (বনপর্ব্ধ ৩৯ জা ২)
সেই মহাদেব কাঞ্চনবৃক্ষের জ্ঞার কৈরাভবেশ ধারণ করিরাছিলেন।
ইহাতে বিপুলকায় মহাদেব স্থমের পর্বতের জ্ঞার শোভা পাইরাছিলেন।

"দেব্যা সহোময়া শ্রীমান্ সমান্ত্রতবেশরা।
নানা বেশধরে ছাষ্টে ভূতিম্মুগত স্তানা ॥॥
কিরাত বেশ-সংছল্প শ্রীভিশ্চাপি সহস্রশঃ।
অশোভত তদা রাজন স—দেশোহতীৰ ভারত ॥॥॥

মহাদেব কিরাতবেশ ধারণ করাতে উপা দেবীও ঐ বেশ ধারণ করিয়াছিলেন। মহাদেবের অফুচর ভূতবর্গও নানাপ্রকার বেশ ধারণ করিয়াছিল। কিরাতবেশধারী স্ত্রীগণ কর্তৃক সমাচ্ছর সেই দেশ অভীব শোভা পাইয়াছিল।

এই বর্ণনা হইতে বুঝা যায় যে, হিমালয়ের অন্তর্গত ও কিরাত— নিবাস ছিল। কিরাতদিগের বেশভূষা কিরূপ ছিল, ভাহা ছরিতা দেবীর ধ্যানগম্য রূপের বর্ণনা হইতে বুঝা যায়।

যথা,—"ভামাং বহিকলাপশেধর-যুতা সাবঙ্গপর্নাং শুকাং শুঞ্জাহার-লসৎ পরোধরভরা মট্টাহিকাল বিভ্রতীর্। তাড়কাঙ্গত মেধলা-শুণরণক্মঞীরভাং বিভ্রতীং

কৈরাতীং বরদাভরোজতকরাং দেবীং তিনেতাং ভজে ॥"
ভামবর্ণা, ময়য়পুছনির্মিত-মস্তকভূষণালক্ষ্ণতা পত্রমন্ধন-পরিধানা,
গুল্লামরহারের হারা বাঁহার স্তন্ধর শোভমান, যিনি অন্ত সপ ধারণ
করিতেছেন, তাড়ক্ষ বলম-কটিস্ত্র ভূষিতা এবং শব্দারমান নুপুরধারিণা
কিরাত বেশধারিণা বরদ মুলাও অভয় মুলার হারা বাঁহার হস্ত উল্লভ তিনমনা দেবীকে ভজন করি। ইহা হইতে বুঝা যায় যে, কিরাভেরা
মস্তকে ময়য়পুছহ ধারণ করিত, লতাপাতার আবরণ বল্পরাপে ব্যবহার
করিত, এবং বুকে গুল্লার মালা পরিত।

ুকিরাতদিগের কিরূপ ধর্ম ছিল, তাহারও পরিচর পাওয়া যায়। তিখিতত্ব ধৃত স্থল-পুরাণীয় এবং ভবিদ্ধ-পুরাণীয় বচনে ক্থিত ইইয়াছে যে,—

"স্বামাংসাত্মপহাবৈশ্বপথজোবনা তু যা। বিনা মত্রৈতামদী ভাগ কিরাতানাত্ত সন্মতা ।" তপ যক্ত মত্র রহিত যে পূজা যাহাতে স্বরাও মাংস প্রভৃতি উপহার দেওরা হর সেই পূজা তামদী বলিয়া অভিহিত হইরাছে। ভবিভোত্তরে বলা হইরাছে যে,—

> "बक्तरेनः क्विदेत्र रेक्रिंडः मृदेखतरेखक स्निरदेकः । अवर नाना स्निष्ट्यरेनः भूकारु मर्कामग्रांडि ॥"

ণ ক্ষাত্রির বৈশ্র পুত্র এবং অক্তান্ত সেবকগণ প্রগা দেবীর পুত্রা করিরা।
। দম্যতা ব্যবসায়ী নানাপ্রকার স্লেচ্ছগণও পূলা করিরা থাকে।
বতা বুঝা বার যে, দম্যতাই কিরাতদিগের ব্যবসায় ছিল।
দশক্ষার চরিত কাব্যের অন্তর্গত উপহার বর্দ্মচরিত পাঠে জানা থার
বদেহ দেশ ও মগণের মধ্যস্থানে অরণ্য মধ্যে কিরাত নিবাস ছিল।
কার সমীপে কিরাতেরা নরহত্যা করিত।

ভারতবর্ষ

ৰিকুপুরাণ ২য় অংশ ২য় অধ্যালে মৈতেল কর্তৃক ভূমওল বিষয়ক ইজের উভরে পরাশর বলিয়াছেন;

"জন্ম প্রকারনারে) বীপৌ শালালিকাপরে। বিজ । কুশংকৌঞ্জন্ম শাকঃ পুন্ধরদৈত্ব সপ্তম ॥ ৫ এতে বীপাঃ সমুদ্রৈন্ত সপ্ত সপ্তভিরাতৃশাঃ। লবপেকুস্বরাসপির্বিধিহ্যাজলৈঃ সমম্॥ ৬

্ৰিবী মধ্যে সা গ্ৰটি ৰীপ অবস্থিত। তাহাদের নাম জম্বীপ, প্লক্ষীপ, গান্ধালিবীপ, কুশ্বীপ, ক্ৰেকিবীপ, শাক্ষীপ ও পুষর্বীপ। এই সাত্তি
নীপ, লবণ, ইকু, ফ্ৰা, যুত, দধি, হুগা ও জল এই সকল গ্ৰীপের
তিটি সমুদ্রের ঘারা সমভাবে আবৃত অর্থাৎ বেষ্টিত। এই সকল গ্রীপের
শাস্থালে জমুদ্বীপ অবস্থিত। এই জমুদ্বীপের মধ্যস্থানে স্থব্সির স্থাকে
শিক্ষত অবস্থিত।

হিমবান হেমকুটশ্চ নিবদশ্চাক্ত দক্ষিণে। নীলঃ খে গ্ৰুচ শুলী চ উওৱে বধ প্ৰত্যা: ॥ ১০

ংশালয় প্রভৃতি ছয়টি পর্বাচ বর্ষণংজ্ঞক অংশকে বিচ্ছিল্ল করিয়া। বিজ্ঞান করিয়াছে, অভএব ইহাদের নাম ব্য পর্বাচ। ব্য পর্বাচের খ্য হিমাল্য, হেমকুট ও নিষদ এই তিন্টি মেকর দক্ষিণে নীল, বেড ও জৌ এই তিন্টি প্রাচ ক্ষেক্ট উর্বে।

> "ভারতং অধমং বাং ততঃ কিম্পুক্ষং গ্রুতম্। ছত্তিবাং তথৈবাজন মেরোদ্দিশতো দিজ ॥ ১২ রমাক্ষোত্রে বাং তজৈনাগুহির্ম্যন্। উত্তরাঃ কুরবশ্চৈব যথা বেভারতস্তথা ॥ ১৪

দ বিজ নৈত্রের ! মেকর দক্ষিণদিকে প্রথমতঃ ভারতবর্ধ, তৎপর
দশ্ক্ষবর্ধ, তৎপর হারবর্ধ। মেকর উত্তরদিকে রম্যকবর ৩ৎসমীপে
রেমায়বন তৎপর উত্তর কুকবর্ধ। এই বর্ধ ভারতের মত অর্থাৎ
মুমাকার।

"নবসংস্রমেকৈকমেতেবাং দ্বিত্র সপ্তম। ইলাবৃতক তন্মধ্যে সৌবর্ণোমেককচ্ছিতঃ ॥ ১৪

ই সকল বর্ষের পরিমাণ নবসহত্র যোজন। ইলাধৃত বর্দেরও প্রমাণ বসহত্র যোজন ভাহার মধাভাগে হুবর্ণ মেক উল্লভভাবে অবস্থিত।

> "মেরোশ্চতুর্দিশং ওত্র নবদাহশ্রবিস্তৃতং। ইলাবৃতং মহাভাগ চম্বারশ্চাত্র পর্বাঠাঃ । ১৫

বসহস্র বোজন বিস্তৃত ইলাবৃত বর্বে মেকর চাঞিদিকে বিধম্ব স্বরূপ াতুত যোজন সমূরত চারিট পর্বতি আছে।

"প্ৰেণি মন্দরো নাম দক্ষিণে গন্ধমাদনঃ। বিপুলঃ পশ্চিমে পাৰ্দে স্পাৰ্দেটান্তরে স্বৃতঃ । ১৭ ব্ৰিদিকে মন্দর পৰ্বত, দক্ষিণে গন্ধমাদন, পশ্চিমে বিপুল, ভৱে স্থাৰ।

> "ভজাবং পূর্বতো নেরো: কেতুমালঞ্ পশ্চিমে। বর্ষে বে তু মুনিশ্রেষ্ঠ তরোর্মধ্যে ইলাবৃত্তম। ২৩

মেক্সর পূর্ববিদকে ভজাধবর্ধ এবং পশ্চিমদিকে কেতুমালবর্ধ, এই ছুইটির মধ্যে ইলাবুতবর্ধ।

ভারতের সীমা —বিষ্ণু পুরাণ হর অংশ ও অধ্যার পরাশর উবাচ

"উত্তরং বৎ সমূচণ্চ হিমান্তেশ্চৈব দক্ষিণং। বৰ্বং তৎ ভারতং নাম ভারতী বত্ত সন্ততি: । নববোজন সাহস্রোবিস্তারস্ত মহামূনে। ২

হে মুনি প্ৰবর । সমুদ্রের উদ্ভব্নে এবং হিমালয়ের দক্ষিণে নয় হাজার যোজন বিস্তৃত যে স্থান তাগার নাম ভারতবগ। এই ভারতবর্গে মহেন্দ্র মলয় সঞ্চ শুক্তিমান শক্ষ বিদ্যা ও পরিপাত্র এই সাভটি কুল পর্ব্বত আছে।

> মহেল্রো মলয়ঃ সঞঃ শুক্তিমান্ কক পর্বতঃ। বিকাশ্চ পারিপাত্রক সপ্তাত্ত কুল পর্বতাঃ। ৩

এই ভারতবদ নবভাগে বিভক্ত।

"ভারত্যাত বংজ নবভেদান নিশাম ।
ইন্দ্রীপঃ কণেশুমান তামবংগি গভজিমান ।
নাগরীপত্তথা সোম্যো গজ্ববস্থবাকণঃ ॥ ৬
অয়ত্ত নবমন্তেশাং দ্বীপঃ সাগর সংবৃতঃ ।
যোজনানাং সহস্ত্র দ্বীপোচরং দ্বিপোলিরাং ॥
পূর্বেকিরাতা যক্তপ্তঃ পশ্চিমে ব্বনাঃ স্থিতাঃ ।
ব্যান্ধা ক্রিয়াবৈতা মধ্যে শুদান্তভাগনঃ ॥ ৮
ইক্রা যুদ্ধবিজ্যাভৈব্বর্ত্যন্তাব্যস্থিতাঃ ।

ইসতে ইল্ল্মীপ কশেকমান তামবর্গ গছন্তিমান্—নাগরীপ, সৌমামীপ, গান্ধপামীপ, বাকণ্মীপ নবম। এই মীপ দক্ষিণোপ্তরে সহস্র বোজন বিস্তৃত—ডহা সাগর মারা সংগ্রু। ইহার পুর্বিদিকে কিরাই নিবাস এবং পশ্চিমে বনন নিবাস। ইহার মধ্যে প্রাহ্মন, ক্ষত্রিয়, বৈশু ও শুক্রপণ য য ভাগক্রমে বাস করে। ইহারা যজ্ঞ, যুদ্ধ, বাণিজ্য প্রভৃতির মারা জীবনধারণ করে। এই বর্ণনা হহতে বুঝা যায় যে, ভারতের পুর্বিদিকে কিরাই নিবাস এবং পশ্চিমে যবন অবস্থিত। পুর্পে উল্লেখ করা ইইযাছে কিরাই এক শ্রেণির মেচ্ছ। মহাদেবের আরাধনার্থ অর্জ্জুন হিমালয়ে ওপস্থা কারতে গিয়াছিলেন। এহা উত্তর্বিদকে অর্জ্জুন হিমালয়ে ওপস্থা কারতে গিয়াছিলেন। এহা উত্তর্বিদকে অর্জ্জুন গ্রুমিক অর্জ্জুন গ্রুমিক হিমালয়ের শিধরের উদ্দেশে অর্জ্জুন গ্রুমিক করিয়াছিলেন। এথানেই অর্জ্জুনের ছলনার জক্ত মহাদেব কিরাই বেশে গমন করিয়াছিলেন, এবং ডমা দেবীও কিরাত বেশধারিণা হইয়াছিলেন,

কৈরাঙং বেশমাস্তার কাঞ্চন জ্বসন্মিভয়। বিত্রাজমানো বিপুলো গিরির্দ্মেকরিবাচল: ।"

সেই মহাদেব কাঞ্চন বৃক্ষের স্থায় কৈরাত রূপ (কিরাত বেশ) ধারণ করিয়াছিলেন। ইহাতে বিপুলকার মহাদেব স্থানক পর্বতের স্থায় শোভা পাইযাছিলেন।

> "দেবা সহো মারা শ্রীমান্ সমানত্রত বেলরা। নানা বেশ ধরৈ হ্যষ্টেভূতিবসুগতত্ত্বলা ॥ ॥ কিরাত বেশ সংচ্ছন্ত: শ্রীভিন্তাপি সহস্রণ: ॥ অশোভত তদাধাজন সংদশোহতীব ভারত ॥ ৫।

মহাদেব কিরাভ বেশ ধারণ করাতে উমা দেবীও ঐ বেশ ধারণ করিরাছিলেন, মহাদেবের অফুচর ভূতবর্গও নানা প্রকার বেশ ধারণ করিয়াছিল। কিরাত বেশধারী শ্রীগণ কর্তৃক সমাজহল দেই দেশ অতীব শোভা ধারণ করিয়াছিল।



म्भम भतिराह्म

তিলক বৰ্মা

পরদিন প্রাতঃকালে সচিব চতুর ভট্ট রাজভবনে চিত্রকের সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিলেন। স্বন্ধিবাচন করিয়া বলিলেন—'কাল রাত্রে আপনি পুরভূমিতে আক্রাস্ত হইয়াছিলেন শুনিয়া অত্যন্ত তৃঃথিত হইয়াছি। আপনার দেখিতেছি মন্দ দশা চলিয়াছে; পদে পদে বিপয় হইতেছেন। গভীর রাত্রে অরক্ষিত অবস্থায় বাহির হওয়া নিরাপদ নয়: রাজপুরীর মধ্যেও বিপদ ঘটতে পারে।'

কঞ্কী উপস্থিত ছিল; সে বলিল,—সেই কথাই তো আমিও বলিতেছি। কিন্তু দূত প্রবরের বয়স অল্প, মন চঞ্চল—'বলিয়া মুখ টিপিয়া হাসিল।

চড়ুর ভট্ট বিজ্ঞাসা করিলেন—'রাত্রে কি নিদ্রার ব্যাঘাত ঘটিরাছিল।' প্রশ্নের অন্তনিহিত প্রকৃত প্রশ্নটি চিত্রক ব্ঝিতে পারিল; সচিব জানিতে চান কী জন্ত রাত্রির মধ্যবামে সে একাকী বাহিরে গিরাছিল। এই প্রশ্নের জন্ত চিত্রক প্রস্তুত ছিল, সে মনে মনে একটি কাহিনী রচনা করিয়া রাধিয়াছিল, এখন তাহাই সচিবকে শুনাইল।

—গভীর রাত্রে চিত্রকের ঘুম ভালিয়া যার। ঘুম ভালিয়া সে দেখে, একটা লোক বাতায়ন পথে তাহার কক্ষে প্রবেশ করিবার চেষ্টা করিছেছে। তথন চিত্রক তরবারি লইয়া দুরজীষ্ট ব্যক্তির দিকে অগ্রসর হয়। চোর তাহাকে জাগ্রত দেখিয়া পলায়ন করে; চিত্রকও বাতায়ন উল্লন্থন করিয়া তাহার পশ্চাকাবন করে। কিছুদ্র পশ্চাকাবন করিবার পর সে আর চোরকে দেখিতে পায়না। তথন ইতত্তত অধ্বেষণ করিতে করিতে তোরণ সন্নিকটে উপস্থিত হইলে শুহু তাহাকে অগ্রকিতে আক্রমণ করে—ইত্যাদি।

छो महाित वु वल्हाभाधाः

কাহিনী অবিশ্বাস্ত নয়। চত্র ভট্ট মন দিয়া শুনিলেন
মনে মনে ভাবিলেন, ইহা যদি মিথ্যা গল্প হয় তবে দ্
মহাশরের উদ্ভাবনী শক্তি আছে বটে। মুথে বলিলেন—'যা হোক, আণনি যে উন্মাদের আক্রমণ হইতে রক্ষ
পাইয়াছেন ইহাই ভাগ্য। আপনি মগধের মহামান্ত দ্ত
আপনার কোনও অনিষ্ঠ হইলে আমাদের আর সান্ত্রথাকিত না। কঞ্কীকে লক্ষ্য করিয়া বলিলেন—'লক্ষণ
দিবারাত্র দ্ত মহাশরের রক্ষার ব্যবহা কর। তিনি এখা
কিছুদিন রাজ-অভিধিরণে থাকিবেন; তাঁহার অনি

চিত্রক উদ্বিগ্ন হইয়া বলিল,—'কিন্ত আমি নীত্র' চলিয়া বাইতে চাই। আতিথ্য রক্ষা তো হইয়াছে, এবা আমাকে বিদায় দিন।'

সচিব দৃঢ্ভাবে বলিলেন,—'এত শীত্র যাওয়া অসম্ভব চণ্টন ছুর্গে মহারাজের নিকট মগণের লিপি প্রেরি: হইয়াছে, মহারাজ সভবত আপনার সহিত সাক্ষাকরিতে চাহিবেন। তাঁহার সহিত সাক্ষাকরিতে চাহিবেন। তাঁহার সহিত সাক্ষাকরিয়া চত্র ভট্ট নরম হুরে বলিলেন—'আপনি বাছ হুইতেছেন কেন? রাজকার্য একদিনে হয়না। কিছুদি বিশ্রাম করুন, আরাম উপভোগ করুন; তারপর বিটঃ রাজ্যের দৃত যথন পত্রের উত্তর লইয়া পাটলিপুত্রে যাইতে তথন আপনিও সঙ্গে ফিরিতে পারিবেন। সকল দিং দিয়া স্থবিধা হইবে।'

সচিব প্রায়ান করিলেন। চিত্রক হন্তাশা-পূর্ণ ছাদ বিসিয়া রহিল। তাহার মনশ্চক্ষে কেবলই শশিশেধরে সগুক্ষ মুখ ভাসিয়া উঠিতে লাগিল।

দিনটা প্রায় নিজিয়ে ভাবেই কাটিল। কঞ্কী লক্ষ যদি বা এ পর্যন্ত চিত্রক্তকে কদাচিৎ চক্ষের অন্তরাং করিতেছিল, এখন একেবারে জলোকার লায় ভাষা মদে ছুড়িরা গেল; লানে আহারে নিজার পলকের তরে ভাহার সঙ্গ ছাভিল না।

অপরায়ের দিকে উভয়ে অককীড়ার কাল হরণ করিতেছিল। বিনা পণের থেলা, তাই চিত্রকের বিশেষ নে লাগিতেছিল না; এমন সময় অবরোধ হইতে রাজকুমারীর অকীয়া এক দাসী আসিল। দাসী কৃতাঞ্জলীপুটে দাড়াইতেই কঞ্কী ঈষৎ বিশ্বয়ে বলিল—'বিপাশা, ভূমি এখানে কি চাও ?'

বিপাশা বলিল—'আর্য, দেবছহিতার আদেশে আসিয়াছি।'

কঞ্কী ছরিতে উঠিয়া দাঁড়াইয়া বলিল —'দেবছুহিতার কী আদেশ ?'

বিপাশা বলিল—'দেবত্হিতা উশীর-গৃহে অবস্থান করিতেছেন, সঙ্গে সধী সংগোপা আছেন। দেবত্হিত! ইচ্ছা করিয়াছেন মগধের দৃত মহোদয়ের সহিত কিছু বাক্যালাপ করিবেন। অহুমতি হইলে তাঁহাকে পথ দেখাইয়া লইয়া যাইতে পারি।'

কঞ্কী বিপদে পড়িল। কোনও রাজদ্তের সহিত অবরোধের মধ্যে সাক্ষাৎ করা রাজকলার পক্ষে শোভন নয়, নিয়মাহগও নয়। কিন্তু রাজকুমারী একে স্ত্রীজাতি, তায় হ্ণকলা; অবরোধের শাসন তিনি কোন কালেই মানেন না। উপরস্ত, গণ্ডের উপর পিশু, ঐ স্থগোপা সখীটা আছে। স্থগোপাকে কঞ্কী লেহের চক্ষে দেখে না। স্থগোপার সহিত মিশিয়াই রাজকলার মর্যাদাজ্ঞান শিখিল হইয়াছে। কিন্তু উপায় কি ? এদিকে অবরোধের শালীনতা রক্ষা করিতে হইবে; নহিলে কঞ্কীর কর্তব্যে ক্রটি হয়। আবার দ্ত-প্রবরকেও একাকী ছাড়িয়া দেওয়া যায় না—

শক্ষণ কঞ্কী চট্ করিয়া কর্তব্য স্থির করিয়া ফেলিল; বিপাশাকে বলিল—'তুমি অগ্রবর্তিনী হও, আমি দ্তু মহাশয়কে লইয়া অয়ং যাইতেছি।'

কৃষ্কী সঙ্গে থাকিলে অবরোধে পুরুষ প্রবেশের দোষ আনেকটা ক্ষালন হইবে, অধিকন্ত দ্ত মহাশয়ও চোথে চোথে থাকিবেন।

অবরোধের পশ্চিম প্রান্তে উশীর গৃহ। সারি সারি করেকটি কক; ছারে প্রাক্ষে সিক্ত উশীরের জাল। গ্রীমের তাপ বর্ধিত হইলে পুরন্ধীরা এই সকল শীতল ককে আশ্রের লইরা থাকেন।

একটি কক্ষে শুল্র মর্মর পট্টের উপর কুমারী রট্টা উপবিষ্টা ছিলেন; স্থগোপা তাঁহার কাছে কুট্টমের উপর তালরস্ক হাতে লইয়া বসিয়াছিল। কঞ্কী ও চিত্রক ঘারের কাছে আসিয়া দাঁড়াইলে স্থগোপা ভাড়াতাড়ি উঠিয়া একটি গৌড়দেশীয় মত্রণ পট্টকা পাতিয়া দিল।

উভয়ে উপবিষ্ট হইলে রট্টা মুখ টিপিয়া একটু হাসিলেন।
কঞ্কীকে চিত্রকের সঙ্গে দেখিয়া তিনি ব্যাপার বুঝিয়াছিলেন, কৌতুক-তরল কঠে বলিলেন—'এই অবরোধের
প্রতি আর্য লক্ষণের যেমন সতর্ক সেহ-মমতা, শিশু সস্থানের
প্রতি মাতারও এমন দেখা যায় না।'

লক্ষণ অভিশয় অপ্রতিভ হইয়া পড়িল। চিত্রকু রাজকুমারীর বাক্যে জোটন দিয়া বলিল—'কঞ্কী মহাশয় আমার প্রতিও বড় ক্লেংশীল, তিলার্ধের জন্তও চোথের আড়াল করেন না।'

বিড়মিত কঞ্কী নতমুখে হেঁ হেঁ করিয়া হাসিবার চেষ্টা করিল। ভাহার উভয় সকট; কর্তব্য করিলে বাক্য যন্ত্রণা, না করিলে মুগু লইয়া টানাটানি।

যাহোক, অভ: পর কুমারী হট্ট। চিত্রককে বলিলেন—
'দৃত মহাশয়, আমার সধী আপনাকে কিছু কথা বলিতে
চায়, তাই আপনাকে কট্ট দিয়াছি। স্থগোপা, এবার
তোর কথা ভূই বল।'

স্থাপো কোলের উপর তুই মুক্ত হন্ত রাখিয়া নতচক্ষে বসিয়া ছিল, এখন ধীরে ধীরে বলিল—'আর্য, আমি আপনার অনিষ্ট করিবার চেষ্টা করিয়াছিলাম, প্রতিদানে আপনি আমার ইষ্ট করিয়াছেন। আপনার প্রসাদে আমার মাতাকে ফিরিয়া পাইয়াছি।'

চিত্রক অবহেলা ভরে হন্ত সঞ্চালন করিয়া এমন ভাব প্রকাশ করিল যে মনে হয় এই সব ইষ্টানিষ্ট চেষ্টা ভাহার কাছে অকিঞ্চিৎকর। স্থগোপা তখন বলিল—'আপনি উদার চরিত্র। ভাই সাহস করিয়া আপনার নিকট একটি অম্প্রাহ ভিক্ষা করিতেছি। আমার অভাগিনী জননী—' স্থগোপার চক্ষু ছলছল করিয়া উঠিল—'উদ্ধার পাইবার পর শ্যা লইয়াছেন। ভাঁহার শ্রীর অভি ত্র্বল, বে-কোনও মৃষুর্তে প্রাণবায়ু বাহির হুইতে পারে। কিন্তু তাঁহার সংজ্ঞা সম্পূর্ণ স্থন্থ আছে। তাঁহার বড় সাধ আপনাকে একবার দেখিবেন, নিজমুখে কৃতজ্ঞতা জানাইবেন—'

চিত্রক বলিল—'কৃতজ্ঞতা ভানাইবার কোনই প্রয়োজন নাই। কিন্তু তিনি যদি আমাকে দেখিলে স্থী হন আমি নিশ্চয় দেখা করিব। কোথায় আছেন তিনি ?'

স্থগোপা বলিল—'আমার গৃহে। আমার কুটীর রাজপুরীর বাহিরে কিছু দ্রে। যদি অমুগ্রহ করেন, এখনি লইয়া যাইতে পারি।'

চিত্ৰক উঠিয়া দাঁড়াইল—'চসুন। আমি প্ৰস্তুত।'

কঞ্কী অন্তভাবে লাফাইয়া উঠিল—'আঁাা—রাজপুরীর বাহিরে! তা—তা—আমি সঙ্গে তুইজন রক্ষী দিতেছি—'

় চিত্রক বলিল:—'নিপ্রবাজন। আমি আত্মরক্ষা করিতে সমর্থ।'

বিত্রত কঞ্কী বলিল—'কিন্ধ তাহা কি করিয়া হইতে পারে.! আর্য চতুর ভট্ট—অর্থাৎ—আপনার রক্ষণাবৈক্ষণের দায়িত্ব আমার উপর—'

চিত্রক রটার দিকে চাহিয়া কক্ষণ হাসিল—'আমার উপর কঞুকী মহাশয়ের বিশ্বাস নাই। তিনি বোধহয় এখনও আমাকে চোর বলিয়াই মনে করেন। তাঁহার সন্দেহ, ছাড়া পাইলেই আমি আবার ঘোড়া চুরি করিব।'

রট্র। ঈবং জাকুঞ্চন করিলেন—'আর্য লক্ষণ, রক্ষীর প্রয়োজন নাই। স্থগোপা দৃত মহাশয়কে লইয়া যাইবে, পৌচাইয়া দিবে।'

পিও গলাধঃকরণ করিয়া কঞ্কী বলিল—'তা—তা— দেবস্থাভিনের যদি ভাহাই অভিকৃতি—'

চিত্রক মনে মনে ভাবিল—এই স্থােগ ! সে সার রাজকুমারীর সঙ্গে দৃষ্টি বিনিময় করিল না; রট্টার চোথে কি স্থানি কী সম্মোহন আছে, চোথােচােথি হইলে আবার হয়তাে তাহার মনের গতি পরিবর্তিত হইবে। সে স্থাােপার সম্মারণ করিয়া উশীর-গৃহ হইতে বাহির হইল।

রাজপুরীর তোরণ খারের সন্মুখ দিয়া যে পথ গিয়াছে তাহা দক্ষিণ দিকে কিছুদ্র গিয়া নিমাভিমুখে অবতরণ করিয়াছে, তারপর আরও থানিকদ্র গিয়া একটি বাঁকের মুখে আসিয়া আবার নীচে নামিয়াছে। এই বাঁকের উপর

স্থগোপার কুটার; ইহার পর হইতে রাজপুরুষ ও নাগরিক সাধারণের গৃহাদি আরম্ভ হইয়াছে।

স্থাপার কুটার ক্ত হইলেও স্থান্ত, পরিকার পরিছের; চারিদিকে ফুলের বাগান। স্থাপাপার মালাকর স্থামী গৃহেই ছিল; স্থাপাকে আসিতে দেখিয়া সে কুল-মাল্যাদি লইয়া বাহির হইল। বাজারে ফুল-মাল্য বিক্রেয় করিয়া যাহা পাইবে ভাহা লইয়া সে মদিরালয়ে প্রবেশ করিবে। লোকটি অভিশয় নীরব প্রকৃতির; আপন মনে উত্থানের পরিচর্যা করে, মালা গাঁথে বিক্রেয় করে, আর মদিরা সেবা করে। কাহারও সাতে পাঁচে নাই।

স্থাপা চিত্রককে মাতার নিকট লইয়া গেল। একটি
টবদক্ষকার কক্ষে পট্বার উপর স্বয়ন্তিক্ত শ্বার পৃথা
শুইয়া আছে। তাহার দেহ যথাসম্ভব পরিস্কৃত হইয়াছে;
নথ কাটিয়া মাথায় তৈল সেক করা হইয়াছে। কিছ
কেশের গ্রন্থিক ভাষাভ বর্ণ দূর হয় নাই। মুখের ও
দেহের তক দীর্যকাল আলোকের স্পর্শাভাবে হরিদাভ বর্ণ
ধারণ করিয়াছে।

পূথা শ্যার সহিত যেন মিশিয়া বিয়াছিল; কোটরগত
চকু উধ্বে নিবদ্ধ ছিল; চিত্রক নি:শব্দে তাহার শ্যাপার্শে বিয়া দাঁড়াইলে সে ধীরে ধীরে চকু নামাইল।
অনেককণ চিত্রকের মুথের পানে চাহিয়া থাকিয়া ক্ষীণকঠে
বলিল—'তুমিই সেই ?'

স্থাপা শ্যাপার্দ্ধে নতজাম হইয়া মাতার কপালে হস্ত রাখিল, নিয়কণ্ঠে বলিল—'হাঁ মা, ইনিই সেই।'

আরও কিছুক্ষণ চিত্রককে দেখিয়া পূথা বলিল—'ভূমি হুণ নও —আর্য।'

চিত্রক হাসিয়া বলিল—'হাঁ আমি আর্য। যে ছুণ ভোমাকে বন্দী করিয়া রাথিয়াছিল সে মরিয়াছে।' বলিয়া দুংক্ষেপে গুহের মৃত্যু বিবরণ বলিল।

ভনিয়া পৃথা বলিল—'এখন আর কী আচে যায়। আমার জীবন শেষ হইয়াছে।'

চিত্রক শ্যাপাশে বসিয়া সান্তনার কঠে বলিল,—
'এরপ কেন মনে করিতেছ? ভোমার শরীর আবার
স্থাহইবে। তোমার কলা আছে; তাহাকে লইয়া আবার
তুমি স্থী হইবে। যাহা অতীত তাহা ভূলিয়া বাও।'

পৃথার মুখে আশা বা আনন্দের রেখাপাত হইল না।

স অনেককণ চুপ করিয়া থাকিয়া বলিল—'আমার

গথা থাক। তোমার কথা বল। তুমি আমাকে উদ্ধার

গরিয়াছ, তোমার কথা শুনিতে চাই।—তোমাকে

দ্বিয়া মনে হইতেছে তুমি অপরিচিত নও—পূর্বে যেন

দ্বিয়াছি।'

চিত্রক লঘু হাস্তে বলিল—'ভূমি তো অন্ধকারে দেখিতে বিষয়ে নি-রাত্রে কৃট-কক্ষে দেখিয়াছিলে—হয়তো সেই ভি মনে জাগিতেছে।'

'তাহাই হইবে। তোমার নাম कि ?'

ৈ 'চিত্ৰক বৰ্মা।'

পৃথা নীরবে তাহার ক্ষতরেখা চিহ্নিত **অফে** চকু বুলাইল।

'মাতা পিতা জীবিত আছেন ?'

মাতা পিতা! চিত্রক মনে মনে হাসিল; তাহার মাতা পিতা থাকিতে পারে ইহাই যেন অসম্ভব মনে হয়। বলিন —'না, জীবিত নাই।'

'তোমার বয়দ অল্ল মনে হয়—'

'নিতান্ত অল্ল নয়, পটিশ ছাব্বিশ বছর।'

পৃথা কিন্তংকাল চক্ষু মুদিত করিয়া রহিল; শেষে ধীরে ধীরে বলিল—'আমার তিলক বাঁচিয়া থাকিলে ভোমার সমবয়স্ক হইত।'

'ভিলক কে ?'

'কুমার তিলক বর্মা। আমি তাহার ধাত্রী ছিলাম। দে আমার অ্বগোপা এক দিনে জন্মিয়াছিল; আমায় হ্থ তু'জনকে ভাগ করিয়া দিতাম।'

স্থগোপা নিমন্বরে বলিল—'মা, ও কথা আর মনে আনিও না।'

পৃথা চক্ষ্ নিমালিত করিয়া বলিল—'তাহার কথা ভূলিতে পারি না। নবনীতের স্থায় স্ফ্রার শিশু—সেই শিশুকে হুণেরা আমার বুক হইতে ছিঁড়িয়া লইল—তারপর —তারপর—'

আকালব্দা পৃথার পাঞ্র গণ্ড বহিয়া বিলু বিলু অঞ্চ ক্ষরিত হইতে লাগিল। স্থগোপা চিত্রকের সহিত বিষয় দৃষ্টি বিনিময় ক্রিল।

চিত্রক বলিল—'ক্ষত্রিয় শিশু যদি তরবারির আঘাতে

মরিয়া থাকে তাহাতে আক্ষেপ করিবার কী আছে? ক্রীতদাস হইয়া বাঁচিয়া থাকার অপেকা সে ভাল।

পৃথা নিন্তে স্বরে বলিল—'রাজার পুত্র ক্রীতদাস হয় নাই সে ভাল। কিন্তু রালজ্যোতিষী বলিয়ছিলেন, এ শিশু রাজটিকা লইয়া জ্যিয়াছে, রাজচক্রবর্তী হইবে। কই, তাহা তো হইল না! রাজজ্যোতিষীর কথা মিথ্যা হইল—'

চিত্রক মৃত্হাশ্রে বলিল,—'রাজজ্যোতিষার কথা অমন মিথ্যা হয়। কিন্তু রাজটীকা লইয়া জ্যানিছে ইহার অর্থ কি?'

পৃথা ধীরে ধীরে বলিল—'আমি যেন চোথের উপর দেখিতে পাইতেছি। তাহার জার মধ্যস্থলে জটুল ছিল; অন্ত সময় দেখা যাইত না, কিন্ত সে কাঁদিলে বা জুদ্ধ হইলে ঐ জটুল রক্তবর্ণ হইয়া ফুটিয়া উঠিত। মনে হইত যেন রক্ত-চন্দনের তিলক। তাই তাহার নামকরণ হইয়াছিল—তিলকবর্মা।'

বাতাদের ফুৎকারে ভন্মার্ত অসার বেদন শুরিত হইয়া উঠে, চিত্রকের ক্রনধ্যে তেদনি রক্তটীকা জ্বলিয়া উঠিল। সে ব্যায়ত চক্ষে চাহিয়া অর্ধাবক্ষ কঠে বলিল— 'কী বলিলে।'

পৃথা চফু মেলিল। সন্মুথেই চিত্রকের মুথ ভাহার মুখের উপর ঝুঁকিয়া আছে; সেই মুখে জ্বগলের মধ্যে প্রবালের ভায় তিলক জ্বলিতেছে। পৃথার চফু ক্রমে বিক্ষারিত হইতে লাগিল; ভারপর সে চীৎকার ক্রিয়া উঠিল,—'ভিলক! আমার ভিলক ব্যা! পুত্র! পুত্র!'

পূথা তৃই কন্ধানসার হতে চিএককে টানিয়া বুকের উপর চাপিয়া ধরিতে চাহিল; কিন্তু এই প্রবল উত্তেজনায় ভাহার দেহের সমস্ত শক্তি নি:শেষ হইয়া গিয়াছিল; সহসা ভাহার হত্ত শিথিল হইয়া চিত্রকের স্কন্ধ হইতে থসিয়া পড়িল। সে চকু মুদিত করিয়া মূতবৎ স্থির হইয়া রহিল।

স্থগোপা কাঁদিয়া উঠিল। চিত্রক পৃথার বক্ষের উপর করতল রাখিয়া দেখিল অতি ক্ষীণ হৃৎপিণ্ডের স্পন্দন অমৃত্ত হইতেছে। সে স্থগোপাকে বলিল—'এখনও বাঁচিয়া আছেন। যদি সম্ভব হয় শীঘ্র চিকিৎসক ডাকো।'

স্থােপা ছুটিয়া বাহির হইয়া গেল। রাজবৈভ রটার আন্দেশে পুথার চিকিৎসার ভার লইয়াছিলেন। রাজ- বৈত্যের বাসভবন নিকটেই; অব্লক্ষণের মধ্যে স্থগোপা বৈত্যকে লইয়া ফিরিয়া আসিল।

নাড়ী পরীক্ষা করিয়া বৈভারাক ঈষৎ মুখ বিকৃত করিলেন, তারপর স্টিকাভরণ প্রয়োগ করিলেন।

সে রাত্রে চিত্রক রাজপুরীতে ফিরিয়া গেল না।

সন্দিম্ব কঞ্কী আলক্ষিতে ছুইটি গুপ্ত-রক্ষী পাঠাইয়া-ছিল, তাহারা সারা রাত্রি স্থগোপার কুটারের বাহিরে পাহারা দিল।

গভীর রাত্রে পৃথা মোহাচ্ছর ভাবে পড়িয়া ছিল।
চিত্রক তাহার শ্ব্যাপাশে দাঁড়াইয়া স্থগোপার ক্ষরের উপর
হাত রাখিল—'স্থগোপা, ভূমি আমার ভগিনী; আমরা
একই শুনত্বর পান করিয়াছি।'

স্থগোপা ওধু সঞ্জ নেতে চাহিয়া রহিল।

চিত্রক বলিল—'যে কথা আৰু শুনিয়াছ তাহা কাহাকেও বলিও না। বলিলে আমার জীবন সংশয় হইজে পারে।' স্থাপা ভগ্নরে জিজাসা করিল—'এখন ভূমি কী করিবে?'

চিত্রকের অধরে খ্রিয়মান হাসি দেখা দিল — 'ভাবিয়া-ছিলাম পলায়ন করিব। কিন্তু এখন — কি করিব জানি না। তুমি একথা কাহাকেও বলিও না। হয়তো ডোমার মাতা ভূল করিয়াছেন; রুগ দেহে এরপ ভ্রান্তি অসম্ভব নয়—।'

ক্রগোপা বলিল—'ভান্তি নয়। আমার অন্তর্থামী বলিতেছেন, তুমি তিলক বর্মা।'

'তিলক বর্মা। শুনিতে বড় অছুত লাগে। কিন্তু সভা তোক মিথ্যা হোক,ভূমি শপ্তকর এ কণা গোপন রাখিবে।'

'ভাল, গোপন রাখিব।'

'কাহাকেও বলিবে না ?'

'না।'

পৃথার আমার জ্ঞান হইল না। রাত্রি শেষে তাহার প্রাণবারুনির্গত হইল। (ক্রমশ:)

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

অধ্যাপক শ্রীমণীন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় এম-এ, বি-এল

পাচ

২০-এ সেপ্টেম্বর ১৯৪৯ মঙ্গলবার তুপুরে এগ্ এগ্ মহারাজা জাহাক্স পোট-রেরারে পৌছিল। সঙ্গলবার সকাল হইতেই অর অর বৃষ্টি ইইতেছিল, পোর্টরেরার জেসীতে জাহাক্স ভিড়িবার সঙ্গে সঙ্গেই প্রবলভাবে বৃষ্টি

এবার জাহাজে বাত্রীসংখ্যা ছিল সাড়ে তিনশতের কিছু বেশী।
জাহাজের প্রথম শ্রেণীতে ছিলেন কংগ্রেসকর্মী শ্রীজীবানশ ভট্টাচার্য্য
মহাশর, তবে জাহাজে তাহার সহিত আলাপ হয় নাই, পোর্টরেরারে
পৌছাইয়া তাহার সহিত প্রথম পরিচর হইরাছিল। তিনি পুনর্ব্বাসন
বোর্ডের সন্ত্য, অতএব সরকারী ধরতে আশামানে পুনর্বসতির তত্ত্বাবধান
করিতে বাইতেছিলেন। আশামানে এক সপ্তাহ পাকার পর তিনি
আমাদের সহিত ঐ জাহাজেই মাদ্রাজে আসেন। আশামানে তিনি
জিলেন ভেপুটী কমিশনারের বাংলোতে, মাদ্রাজে আসিয়া তিনি Woodlands Hotel-এ উঠিয়াছিলেন। আমরা সামান্ত লোক তাহার সহিত
একত্রে পাক্তিতে পারি নাই। উপরস্ক মান্তাক হইতে তিনি বিমানবোগে
কলিকাতার কিরিয়াছিলেন। কাজেই তাহার সহিত আমাদের শেষ

(मथा माम्राक्किर रहेब्राहिल। मतकाती व्यर्थ **अप**म त्यनीत रमनून ७ বিশানে করিয়া যে সমস্ত দেশ-সেবক ঘোরাফেরা করেন, ভাঁহাদের সহিত আমরা সামাক্ত শিক্ষক--পকেটের পর্না থরচ করিরা একতা ঘোরাঘূরি করার সামর্থ্য কিরাপে লাভ করিতে পারি! জীবানন্দবাবু ছাড়া আরও কমেকজন জাহাজের প্রথম শ্রেণীতে আসিতেছিলেন, তাঁহাদের মধ্যে মিঃ চিকালা নামক আন্দামানের বনপাল (Conservator of Forests) ছিলেন। তিনি ফাষ্ট ক্লাদের ডেকের উপর সবেগে পারচারী করিতেন এবং হুযোগ ও হুবিধা পাইলেই সকলকে গুনাইরা দিতেন যে, তিনি ভারতের প্রধান সেনাধ্যক (Commander in Chief) মি: ক্যারিয়া-প্লার নিকট আন্দীর। এ ছাড়া করেকজন খেতাক ও অন্ত করেকজন কুফার যাত্রী ও জাহারের প্রথম শ্রেণীতে দিলেন, তাহাদের পরিচর পাই নাই। বিতীয় শ্ৰেণীতে কতকগুলি ছাত্ৰ পুঞাৰকাশে কলিকাতা হইতে পোর্টব্লেয়ারে নিজেদের আত্মীরের নিকট ফিরিভেছিল। ইহাদের মধ্যে কতকগুলি local born, অর্থাৎ পুর্বে তাহাদের দেশ ছিল ভারতের কোন না কোন প্রদেশে, তবে পিতা বা পিতামহ করেষীরূপে আন্দানানে গিরা দেইথানেই বসবাস করিরা ভাহারা এখন আন্দানানেরই

লাক হইরা গিরাছেন। শিক্ষা, পাচার ও ব্যবহারে তাহার। এখন ৰ কোন উচ্চন্তরের নাগরিকের সহিত সমান পর্যারে উন্নীত হইরাছে ব্রবং নৈতিকতার মান কোন অংশেই কম নাই। অপর কডকগুলি বুত্তের পিতা বা আত্মীর চাকুরী সূত্তে আন্দামানে আছেন, এ সমস্ত ক্লিত্রেরা ছটাতে বেড়াইবার উদ্দেশে বাইতেছিল। এ ছাড়া কডকঙাল ব্ৰান্থামানের কর্মচারী কোন না কোন কাজে কলিকাতার আসিয়াছিলেন. ব্রুনরার কর্মস্থলে ফিরিভেছিলেন। ইহারা নিজেদের চাকুরী অমুবারী ক্ষহ বিতীর শ্রেণী, কেহ বা তৃতীয় শ্রেণীর টিকিট পাইরাছিলেন। সরকারী র্ক্সচারীদের টিকিট বা T.A. দেওয়ার ব্যাপারে একটি অন্তুভ ব্যবস্থা बाह्य छनिनाम । जान्यामात्मद्र मद्रकादी कर्यकादीग्य निरम्भदापा লুমুবায়ী দিতীয়, তৃতীয় বা ডেক শ্রেণীর ভাতা কিম্বা পাস্ পাইয়া থাকেন, কৈছ তাহাদের পঞ্চীরা সর্ব্বদাই ডেকের ভাড়া বা পাস পাইয়া পাকেন। এই নিয়মের মূলে কি আছে জানি না। অথচ যে সমস্ত কর্মচারী প্রথম ক্রেণার অম্ব-ভাতা পাইয়া থাকেন তাঁহাদের পত্নীরাও প্রথম শ্রেণার ত্রাড়া পাইরা থাকেন। সাহেবী বুগের কোন এক অব্যক্ত কারণে এই নিয়ম বোধ হয় চালু হইয়াছিল। অস্তাবধি সেই নিয়মই চলিভেছে। সম্ভপক্ষে এপানকার চাকুরীতে নিযুক্ত কর্মচারীদের ছটার নিয়মও একট বিশেষ ধরণের। ভারতের অক্তত্ত্ব সকল স্থানেই যে কয়দিন অফিলে না খাওয়া যায় দেই কয়দিনই ছটা বলিয়া ধরা ছইয়া থাকে, কিন্তু আন্দামানের কৰ্মচারীগণ আন্দামান হইতে কলিকাতা বা মাড্রাকে আসিয়া বে করদিন ভারতে অবস্থান করেন, মাত্র সেই কয়দিনই ছটী লইরাছেন বলিয়া পরি-গণিত হয়, অর্থাৎ কাহাজে আঁদা-যাওয়ার আট দিন সময় ছটি বলিরা পণাহয় না।

জাহাজে চারিদিন একত্র অবস্থানের ফলে সহযাত্রী অনেকেরই সহিত আলাপ হইরাছিল। আন্দামানে গিরা কোথার উঠিব সেই বিবর ইহাদের সহিত আলাপ করিরা শেব পর্যান্ত ঠিক করিয়াছিলাম, যা হোক, একটা ব্যবছা হইরাই যাইবে। আমরা যে তিনজন একসঙ্গে ছিলাম, সেই তিন বক্তর মধ্যে একজন নাকি কমিউনিষ্ট, একজন ছিলেন মহাসভাপন্থী, অপার-জন কংগ্রেসভক্ত। কমিউনিষ্ট বক্তুটি জাহাজের মুগলমান যাত্রীদের সহিত রীতিমতক্ত্যালাপ জমাইরা তুলিলেন, কঙ্গরসী বক্তুটি ওদারধারীদের সহিত খনিষ্ঠ হইরা পড়িলেন, আর মহাসভাপন্থীটি কোন্ মুগলমান হিন্দু নারী-ছর্প করিরা পলাইভেছে সেই গ্রেবণার প্রাণ উত্যক্ত করিতে লাগিলেন। শেব পর্যান্ত নিজেকের মধ্যে রক্তা করা গেল যে, তিন মুর্ত্তি তিন দিক হইতে চেষ্টা করিব এবং বে কোনো দিক দিয়াই ব্যবস্থা হউক না কেন, কমিউনিষ্টরীতি অনুবারী তিমজনেই সমানভাবে উহা ভাগ করিরা সইব।

২০-এ সেণ্টেম্বর মুপুরে জাহাজ পোর্টরেয়ারে অর্থাৎ 'চাথামের' জেটিতে লাগিল বটে, কিন্তু বম্বম্ করিয়া বৃষ্টি পড়িতেছিল। নিজেদের মালপত্র বাধিয়া লইয়া বহু কটে এক কুলির ব্যবস্থা করিয়া ওয়াটারপ্রকল্প গারে ছাতা হাতে লাহাজ হইতে লাখিতে বাইব, গুলিলার পোর্টরেয়ারেয় ভাজার সাহের আহাজে আগিয়া বসিয়াহেল, ভাহার নিকট কলেয়া ও

বসত্তের প্রতিবেধক টীকা বে বেওরা হইরাছে, সেই সাটিকিকেট দেখাইভে হইবে। ভাবি যাত্রীদের অবগতির কক্ত চলিরা রাখি বে ইহা বিশেষ প্ররোজন। বাহা হউক, ডাজার বি চক্রবর্তীর নিকট সাটিকিকেট দেখাইরা উহাতে সহি করাইরা আমরা বাটে নামিরা পড়িলাম। এই ডাজার চক্রবর্তীর নিকট আমার একখানি পরিচরপত্র ছিল, কিন্তু তথন ও আর উহাকে চিনিতাম না, কাজেই তথন কোন পরিচর হয় নাই। অফিসী কারদার তাহার নিকট হইতে বিদার লইরা কেটার উপর অবতরণ করিলাম।

পরবর্ত্তী বিপদ, পোর্টব্রেরারে সচরাচর কোনরাণ ভাডাটে গাড়ী পাওয়া यात्र ना । भूक्वीरङ हिनिक्सान कतिरल है। कि आ वा गात्र । कि अ সমস্ত সংবাদ সে সমরে জানতাম নাপ এ ছাড়া আমাদের জানা ছিল বে. থাকিবার মত কোন হোটেলও নাই, নাছে এক সরকারী Guest house। এই সরকারী অতিবিশালাটি পোর্টরেয়ারের লাহালঘাট 'চাধাম' হইতে প্রায় দেড় মাইল দুরে একটি অভিস্থলর কাঠের বৃহৎ বাংলো বাটীতে অবস্থিত। এখানে সাতদিন পর্যান্ত থাকা বার, তবে আশাসানের চিক্ ক্ষিশনার বা এক্সিকিউটিভ ইঞ্জিনীরারের অনুমতি লইয়া সাভদিনের বেশীও থাকা যায়। এই সরকারী অভিবিশালার সর্বসমরের জন্ম একজন oare-taker এবং অনেকগুলি বেরারা-চাপরাশী থাকে। এখানকার দক্ষিণাও বড় কম নর। এই অভিবিশালার পাঁচথানি ঘর আছে। ১নং ও ২নং কামরায় পাকিতে হইলে জনপ্রতি দৈনিক ৫১ টাকা ভাডা লাগে. अनः ও धनः এ-টাইপ कामतात अन्न रिमिक माथा शिष्ट **३, টाका** এবং ৪নং বি টাইপ ও ৫নং কামরার জন্ম দৈনিক প্রতিজ্ঞানের ২১ টাকা ভাড়া লাগে। এ ছাড়া আহারের জক্ত দৈনিক ১-১ হইতে টাকা পর্যান্ত তিন শ্রেণীর তিন রূপ খানা আছে: প্রাত্যান ও অপরাঙ্গের চা পান বতর। অতএব ঠিক করিরাছিলাম, এবামে না উঠিয়া সম্ভাব্য অন্ত কোন ব্যবস্থা করিতে হইবে। গুনিয়াছিলাম, পোর্ট-ব্লেরার সহরের মধাস্থলে অবস্থিত এবং কেটা হইতে তিনমাইল দুরে Bachelor's Mess নামক একটি প্রতিষ্ঠান আছে, দেখানে পোর্ট ত্রেয়ারের বাজালী কর্মচারীগণ বাস করেন। ইচছা ছিল সেইখানেই याहेबा बाकात बावज्ञा कतिया। किन्द्र याहे कि कतिया। এपिटक ब्रिष्टे আরও জোরে পড়িতে লাগিল। কুলিরা রাগারাগি করিরা রাভার মাঝখানে মাল নামাইয়া দিয়া চলিয়া গেল। স্থনীলবাবু কোমরূপ अञ्चिषा इहेरलहे बिलवा छिठिरकम 'महा विश्वम'; छिमि स्वात अक्बात তাহার সেই প্রিয় কথাটি উচ্চারণ করিলেন।

বৃষ্টির মধ্যেই থোঁল করিয়া দেখা গেল, অনেকগুলি সালবাহী লরী দাঁড়াইয়া আছে এবং সেগুলিতে সাল ও সামূব উভয়ই উঠিতেছে। এইরপ কোন লরী পাওরা যায় কি না তাহার সকান করিতে পিরা দেখি আমাদেরই সহযাত্রী এক মুসলমান ছাত্রের দাদা তাহার ভাইকে লইবার অভ একথানি লয়ী আমিরাছিলেন। তিনি সেই লরীতে আমাদের তুলিয়া লইলেন এবং বলিলেন বে Bachelor's Moss-ই বাছালী আগতকের এখন বাওরার পক্ষে ত্রেই-হান এবং লরীতে

ক্তুক্প ব'াকুনি থাওয়ার পর বেলা প্রার তিনটা নাগাৰ আমর। রাচিলার মেনে উপস্থিত হইলাম।

ব্যাচিলার মেসটি সহরের মধ্যস্থলে অবস্থিত একথানি স্থান্দর কাঠের রাভলা বাড়ী। উহার একতোলার গভর্ণমেন্টের ছাপাধানা। দোভলার টিয়া যে বরে প্রথম বসিলাম উহা বাঙ্গালীদের রাব্দর। ঐ বরে রম্বতী পূজা হইতে বাঙ্গালীদের নাট্ট্যাভিনরের রিহার্সালি ও গরন্তজ্ঞব ভ্যাদি হয়, এবং এথানেই ভিনটি আলমারিতে বাংলা বই আছে, র্থাৎ উহাই স্থানীর বাঙ্গালীদের লাইত্রেরী। মেসের দরোরান বলিল ব, এথানে আজিবার মত কোম থালি জারপা নাই, অতএব—

মালপত্র কেলিয়া, ওয়াটার শ্রুক খুলিয়া বেঞ্চির উপর স্থির হইয়া
সিতে লা বসিতে মুবলবারে বৃষ্টি ৽নামিল। শুনিলাম এইয়াপ বৃষ্টি
।বানে নয়মাস বাবৎ হইয়া বাকে, বাকী তিনমাস অপেকাকৃত শুদ্ধ
কি। সহ্যাত্রী বৃদ্ধ নির্ম্মলবার্ তাহার ছাত্রের দাদা শীঠাকুরদাস
ক্যোপাধ্যায় মহালয়ের নামে একখানি চিঠি লইয়া গিয়াছিলেন। তিনি
মনের বেয়ায়াকে সেই চিঠি দিয়া ঠাকুরদাসবার্র স্থান লইতে
লিলেন। বেয়ায়া চলিয়া গেল। আধ্বল্টার মধ্যেই ঠাকুরদাসবার্
সিয়া উপস্থিত হইলেন।

अंक्रबनामवाव CPWD व ওভারসিয়ার, चाचावान প্রেয়দর্শন রসিক বক, এককথার মাই-ডিয়ার-জাতীয় লোক। কোনরূপ বিধাবোধ করিরাই এক বেয়ারার সাহায্যে আমানের মালপত্র উঠাইর। নিজের টীতে আনিয়া হাজির করিলেন। তাহার বাটা বিধী লাইন নামক क बाखाब छेलब, त्मन इट्रेट ब्रुव निकाम् वरहे वरहे। जी, निकक्का क कि एंडा लड़ेबा जिनि धावात क्यी जीवन यानन करवन। এই কুর্দাস্বাবুর সহায়তার আসরা আন্দামানের বহু বালালীর সহিত রিচিত হইরাছিলাম। অবশ্র তিনি মুখে বলিয়াছিলেন যে, তিনি ात्रास्त्र लहेन्रा (वनी विद्याहरू वा मिथाहरू शानित्वन ना. कात्रन शिक य क्यमिन वन्मात्र शांक. मि क्यमिन छीशामित वाडे वाल াকিতে হয়. ইত্যাদি। কিন্তু বাস্তবে দেখা গেল, তিনি আমাদের নইয়া ৰভাবে ঘুরাইলেন, তাহার অধিক কোন মাকুবের ছারা সম্ভব নয়। ্রকৃতপক্ষে আলামানের ঘাটে জাহাজ যাওয়া এবং থাকা একটা 'रमव बिल्मव। प्रात्मेन यावजीत किठि, थवरत्रत्र कांगक, प्राकारनत्र इस्रोक्षमीत्र मान ममछहे এই काहाल वार्श यात्र। लाहात्कत्र याल्या एक्टनंत्र 'खीवनकाठि', ठलिहा जाना 'मत्रनकाठि'। नात्रा वस्टत ১৮ वात्र াত্র জাহাজ ঘাইরা থাকে. ১২ বার কলিকাতা হইতে এবং ৬বার श्चाब रहेएछ । वे बक्शनि खादाब 'बन्बन महाबाबाहे' बहेछात ভারাত করে। এছাড়া ছই একথানি চাটার-করা আহাজও মধ্যে খো যার এবং বর্দা হইতে পেট্রলবাহী জাহাত্তও আলে।

কিন্ত এদেশের আসল প্রাণশক্তি-সঞ্চারকারী আহাজ ঐ 'এস্এস্
মহারাজ:'

বিকাল আন্দান্ত ৪টার সমন্ন বিধী লাইনে ঠাকুরদাসবাবুর বাটিডে আসিয়া হাত পা ধুইরা কাপড় ছাড়িরা চা এবং পাঁপর ভালা থাইতে সন্ধ্যা হইরা আসিল। বৃষ্টি সমানেই পড়িতেছিল। তিনি বলিলেন, বৃষ্টি এইরপেই পড়ে এবং পড়িতেই থাকিবে, অতএব বৃষ্টির ক্রম্ভ চিম্ছা করিলে চলিবে না। চাপানের পর তিনি আমাদের তিনজনকে লইরা চিফ্ কমিশনারের সেক্রেটারী এ কে সি ব্ল্যোপাধ্যার মহাশরের বাংলোর লইয়া চলিলেন।

প্রোচ্বয়ক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় পাকা সাহেবী কায়দার প্রবাসী বাগালী। বাড়ী বরের বন্দোবন্ত নিখুত সাহেবী ধরণে, নিজের পরিচ্ছদ এবং ব্যবহার অত্যস্ত ভক্ত এবং মার্ক্সিত ইংরাকের মত। চলচেরা হিসাব এবং ওল্পন করিয়া কথা,বলেন। নবাগস্তকের সহিত ভদ্ৰতা রকার জন্ম যতটুকু আবহাওয়ার সংবাদ এবং রাট্রনীতি চর্চার প্রয়োজন মাত্র তভটুকুই ক্রিলেন এবং আশামানের বাস্তহারা উপনিবেশগুলি ঘুরিবার জম্ম আমাদের পরিপূর্ণভাবে সাহায্য করিলেন। উাহার সহায়তা না পাইলে আমরা হয়ত সমস্ত দক্ষিণ আন্দামান বুরিতে পারিতাম না। তাঁহার সাহাব্যেই অমেরা 'রস' দীপে ঘাইবার জন্তু মোটর লঞ্চ পাইয়াছিলাম। তিনি নানাভাবে আমাদের নিকট প্রশ্ন করিয়া শেষে এই বলিয়া স্বীকার করিলেন যে, বিনা প্রয়োজনে, কোনরূপ আত্মীর বন্ধু না থাকা সত্তেও কেবলমাত্র বেড়াইবার উদ্দেশ্রে এ পর্যাম্ভ কেহ কথনও পোর্ট ব্লেয়ারে আদেন নাই এবং বলিলেন যে যদি কথনও কেই আন্দামানের উদ্দেশ্যহীন দর্শকের তালিকা প্রস্তুত করে, তাহা হইলে আমরাই দেই তালিকার প্রথম স্থান অধিকার করিব। প্রায় ঘণ্টাথানেক কথাবার্দ্রার পর আমরা দেখান হইতে বাহির হট্যা পডিলাম।

পরদিন সকাল 'হইতেই আমাদের আশামান জমণ স্থা হইল। জীপে, লক্ষে এবং পদরকো সাতদিন ধরিয়া সর্বাত ঘূরিয়াছি, কতকণ্ডলি পুরাতন বন্ধু এবং সহপাঠীর সাক্ষাৎ পাইয়াছি, কতকণ্ডলি মৃত্রু বন্ধু লাভ করিয়াছি, জনেকের বাটাতেই সাদরে জভার্বিত বার্ নিমরিত হইয়াছি এবং সাতদিন পরে যথন জাহাজে চড়িয়াছি তথন বহু প্রবাসী বাঙ্গালী স্ত্রীপ্রাথনে জেঠীতে আসিয়া আমাদের বিদায় সভার্বণ জানাইয়াছেন। জাহাজ যথন জেটী ছাড়িয়া বহুদ্র পর্বান্ত চলিয়া পিয়াছে, তথনও তাহালের মুর্জিগুলি ছবির ভায় জেঠীর উপর ছবি নিশ্চলভাবে বাড়াইয়াছিল, জ্বনর সমরে এখনও দেই এক সন্তাহের বন্ধু ও বান্ধবীদের চাখাম জেটীর উপর দখায়মান নিশ্চল মুর্জিগুলি চিয়াণিতবং মানসচকে ভাসিয়া উঠে।



রুসো

শ্রীতারকচন্দ্র রায়

(পূর্বে প্রকাশিতের অমুবৃত্তি)

দকলের কিছুতেই ক্লমোর তৃত্তি হইতেছিল না। সংগার হইতে নইরা পারিস হইতে দূরবর্ত্তী কোনও স্থানে নির্জনে বাস করিবার नि वाक्नि हरेलन। छात्रात्र अरे टेक्श्र विवय अवगंक हरेया বান্ধবী Madame d'epincy মন্ট্ মরেন্সির অরণ্যের মধ্যে নিজের পুত্রে সমিকটে তাহার জক্ত একটি গুহ নির্মাণ করিয়া । शृद्ध नाम इरेन Hermitage (निज़ कृतित)। ১৭৫৬ রুসো পারিস ত্যাপ করিয়া এই কুটিরে আসিয়া বাস করিতে ান। তাঁহার বন্ধুপণ•তাঁহার এই নির্জন-থিয়ভার অর্থ বুঝিতে ान ना। (क्र डाहारक मानव-विषयी (misanthrope) ৰ : কেই বলিলেন.প্ৰশংসা-লোভী। ১৭৬২ সালে Malesherbesক এক পত্তে কলো তাঁহার নির্জনবাসের কারণ বর্ণনা করিয়াছিলেন। লিপিয়াছিলেন "লোকালর-ত্যাপের প্রকৃত কারণ আমার অদম্য প্রকৃতি। এই প্রকৃতির নিকট সম্বান, ধনসম্পদ, যশ: কিছুরই া মূল্য নাই। এই প্রকৃতি আমার অহকার হইতে উদ্ভূত নহে ; ত আলম্ভ হইতে ইহার উদ্ভব। আমার এই আলফোর পরিমাণ ानी, যে তাহা বিশাস করিতে পারিবেন না। ইহার জক্ত সকল রই আমার ভর পার। নাগরিক জীবনের সামাগ্রতম কর্ত্তব্যও ীয় হইয়া পড়ে। বপন প্রয়োজন উপস্থিত হয়, তথন একটা কথা একখানা পত্ৰ লেখা, অথবা কোণায়ও গিয়া কাহারও নহিত े कत्रा, व्यामात्र छ।वन नीजानात्रक रहेन्रा উঠে।" क्रामात्र योवन्त्र थाउद्वीत मृत्न हिन এक व्याकाक्का-वनमत्र ଓ भाष्टि। जनमत স্তির স্থােগ উপস্থিত হইবামাত্র তিনি তাহা গ্রহণ করিলেন। 'ese ও ভাহার মাতাও ক্লোর দহিত Hermitage এ বাস ত লাগিলেন।

দলো চিরকাল ভালবাসার কাঙাল ছিলেন। নিজের স্নেহের র উলাড় করিয়া তিনি বন্ধুবান্ধবদিগকে দান করিতেন; বার্থর লেশ তাঁহার ছিল না। কিন্তু সে ভালবাসার উপবৃক্ত প্রতিদান ও প্রাপ্ত হন মাই। অন্তরের সমস্ত স্নেহ তিনি Theresecক মা দিয়াছিলেন, কিন্তু ভাহার নিকট যে স্নেহ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, তে ভাহার অন্তর ভ্রুত্ব হর নাই। Montmorencyর অরণ্যের তাহার অন্তর ভ্রুত্ব হর নাই। Montmorencyর অরণ্যের তাহার মধ্যে তাহার স্মৃতির দার উন্মৃত্ব হইয়া যাইত এবং অন্তর কার করিয়া উঠিত। তিনি লিধিয়াছেন—"বাঁচা ও ভালবাসার কাছে অভিন্তা। তব্ত কেন আমাতে সম্পূর্ণ অমুরক্ত একলন গাইলাম না ? * * * কেন আমাতে সম্পূর্ণ অমুরক্ত একলন গাইলাম না ? * * * কেন আমাত্র অন্তর স্নেহে পূর্ণ ও সহজেই বিল্লিভ হইলেও কোনও হাজিবিশেবকে আমি ভাল-

বাসিতে পারিলাম না ? ভালবাসিবার ইচ্ছার আগুনে দক্ষ হইতে ইতি বার্নক্রের নিকটবর্তী হইরাও আমার ইচ্ছা পূর্ণ হইল না । মৃত্যুর পূর্বের প্রকৃতপক্ষে বাঁচা আমার ঘটিরা উঠিল না । * * * যদি আমার স্থকোমল বৃত্তিনিচরের ব্যবহারই করিতে পারিব না, তবে কেন তাহা লইরা অন্মগ্রহণ করিরাছিলাম ? নিরতি আমার বণ সম্পূর্ণ পরিশোধ করে নাই; তাহার নিকট এখনও আমার কিছু প্রাপ্য আছে ।"

জুন মাদে একদিন বক্ষের ফুলীতল ছায়ায় উপবিষ্ট হইয়া সুদো চিতা করিতেছিলেন। নাইটিংগেল তপন মধ্রদ্বরে গান করিতেছিল; অদুরে প্রোত্থতী কুলকুলনাদে বহিয়া যাইতেছিল। ক্ষেত্রে দেহ আলপ্তে ব্দবশ ও মন স্বপাবিষ্ট হইরা আদিল। অক্সাৎ স্মৃতির ছার পুলিরা গেল। তাহার প্রেমাতুর মনের দন্মধে পূর্ব্ব-পরিচিতা ক্ষমরীগণের জীবস্ত চিত্র ভাসিরা আসিল। ফুল্মীগণ-পরিবেষ্টিত রুসোর প্রেমতৃকা প্রবল হইরা উঠিল, চিত্ত অস্থির হইল। অস্থিরতার মধ্যে মনে হইল ওাহার প্রেমনীলার বয়স উত্তীর্ণ হইয়াছে। বাস্তব জগতে প্রেম-পিপানার পরিতৃত্তি অসম্ভব জানিয়া কল্পনার জগতে মন ধাবিত হইল, অকীয় ফ্টির মধ্যে পরিতৃপ্তির সন্ধানে ছুটিল। তাঁহার অমর উপস্থাস I.a. Nouvelle Helloise এর নারিকা জুলি ও ক্লেয়ার তথন মুর্ত্তি পরি প্রত্রহ করিয়া ভাহার মানদ চকুর দমীপে আবিভূতি হইল। ক্লো এছ त्रहमा आंत्रष्ठ कतिरामन। ১৭५० मार्ग এই প্রস্থ প্রকাশিত হর। সমসামরিক সাহিত্যিকগণ ঈর্ণাবলে এছের কঠোর সমালোচনা করিয়া-ছিলেন। ভলটেয়ার অতি নীচ ও জবন্ত ভারায় রুগোকে আক্রমণ করিয়াছিলেন। কিন্ত জনসাধারণ ঐ সমন্ত সমালোচনা অগ্রাহ্য করিয়া বিপুল সমাদরে গ্রন্থের অভার্থনা করিয়াছিল।

Hermitageএ ক্লেন বছদিন বাস করিতে পারেন নাই, Madame d'epincyর সহিত কলছ করিয়া তিনি ১৭৫৭ সালের ডিসেশ্বর মাসে Montmorencyতে উঠিয়া যান, এবং সেগানে Duke of Luxemburgh এর আশ্রেছে বাস করিতে বাকেন। চারি পাঁচ বংসর তিনি এই ছানে বাস করিয়াছিলেন। এই সময়েই তাহার La Nonvelle Helloise সম্পূর্ণ হইয়া প্রকাশিত হয়। Letter to D' Alembert on the theatre, Emile ও Social Contractও এই সমরে রচিত ও প্রকাশিত হয়।

Emile শিকা সম্বীর গ্রন্থ। প্রকৃতির সঙ্গে সংযোগ রকা করিয়া কিরপে শিকা দেওরা বার, গ্রন্থে তাহারই আলোচনা আছে; এই শিকা-প্রণালীতে আপন্তিকনক কিছু না থাকিলেও "The confession of a Savoyard Vicor" নামক অধ্যারে "প্রাকৃতিক ধর্মের (natural ligion) বে ব্যাখ্যা আছে, তাহা পাঠ করিলা রোমান ক্যাপলিক ও াটেষ্ট্যান্ট উভন্ন সম্প্রদানই কুন্ধ হইলাছিল।

সভ্যতা তাহার মতে যাবতীর অনর্থের মূল। সভ্যতার অনিষ্টকর
চাব হইতে মূক পরিবেশের মধ্যে শিশুর শিক্ষা হওয়া উচিত।

চা মামুব কার হইতে মৃত্যু পর্যান্ত পরাধীন। কারমাত্র তাহাকে কাপড়

াইয়া দেওয়া হর, মৃত্যু হইলে ককিংন বন্দী করা হয়। প্রকৃতি

হার সন্তানদের শিক্ষার কাভ যে প্র অনুসর্গ করে, তাহাই শিশুদিগের

কার অবল্যতি হওয়া উচিত। নানাবিধ অন্থবিধান্তনক অবস্থার

লিয়া প্রকৃতি শিশুদিগের শরীর ক্টমহ করিয়া তোলে—ছঃখ ও ক্ট

করিতে শিক্ষা দেয়। শিশুদিগকে আ্যাত হইতে রক্ষা করিবার

রা করা উচিত নয়। ক্ট স্থ করাই তাহাদিগের প্রথম ও প্রধান শিক্ষা

রা উচিত।

অভাব অপেকা তাহা পূরণ করিবার শক্তি যাহার কম, তাহাকেই ল বলে। এই ছুর্বলতা দূর করিতে হইলে, অভাবপ্রণের শক্তি রূম করিতে শিকা দিতে হইবে।

বে ব্যক্তি যাহা সম্পন্ন করিতে সক্ষম, তাহাই ইচ্ছা করে এবং যাহা ছা করে, তাহাই করে, দেই প্রকৃতপক্ষে স্বাধীন। পারনির্ভরতা বিধ—জব্যের উপর নির্ভর ও মাজুবের উপর নির্ভর। প্রথমটির গনও নৈতিক ফল নাই, কিন্ত বিতীয়টি যাবতীয় দোবের আকর। শুদিগকে মালুবের উপর নির্ভর হইতে রক্ষা করা কর্ত্বয়। শিশু হা চার তাহাই তাহাকে দিওনা; যাহা তাহার প্ররোজন, কেবল হাই দেওরা উচিত। প্রকৃতির প্রথম তাড়নার কোনও দোব নাই। মাদিষ পাপ" (original sin) বলিয়া মালুবের অস্তরে কোনও গে-প্রযুত্তি নাই। কিন্তুপে কেন পাপ মালুবের অস্তরে প্রবেশ করে, হা লক্ষ্য করা যায়। শিশুদিগকে তাহাদিগের কর্ত্বয় কি, তাহা করা না দিরা, তাহাদের অস্তরকে পাপের শর্পা হইতে রক্ষা করাই চিত। শিশুর উপযুক্ত একমাত্র নৈতিক শিক্ষা এই—"কাহাকেও গোতাত করিও না।"

জ্ঞানের অভাব হইতে কাহারও কোনও অনিষ্ট হয় না। কিছ

য়েলের ফল মারাক্ষক। শিশুদের শিক্ষার অন্ত পৃত্তকের প্রয়োজন নাই।

যাহাদের ইপ্রিয়ের ব্যবহার করিরা ভাহারা শিশুক। সমগ্র পৃথিবীই

যাহাদের পৃত্তক, যাহা প্রভাক ভাহাই ভাহাদের শিক্ষার বিষয়।

রাকৃতিক ব্যাপার সকল ভাহাদিগকে পর্যারক্ষণ করিতে লাও;

সাহাদের কৌতুহল উদ্দীপ্ত হইতে লাও, শীত্র শীত্র সে কৌতুহল পরিভ্তা

নির্মার অন্ত ব্যত্ত হইও না। আগদার চেট্টাভেই ভাহাকে কৌতুহল

পরিভ্তা করিতে দিও। অনেক বিষর ভাহাকে শিধাইও না। কিছ

কোনও বিষরেই ভূল শিথিতে দিও না। শৃতি ও বিচারশক্তি বীরে ধীরে

রাসে, কিছ মিখ্যা সংখার আসে দলে দলে। ভাহা হইতে শিশুদিগকে

রক্ষা করা চাই। যদি কোনও পৃত্তক শিশুদিগকে দিতেই হয়, তবে সে
পৃত্তক Robinson Crusoe.

আন বৃদ্ধির চেষ্টা করিও মা। কিন্ত আনবৃদ্ধির সঙ্গে মাসুব বে পরস্পরের উপর নির্ভরশীল, তাহা বৃঝাইবার জন্ত শিল্পের দিকে তাহার মনোযোগ আকৃষ্ট কর। কৃষিই সর্বাপেকা প্রাচীন ও সন্মানজনক শিল্প; তাহার পরেই ধাতৃ-শিল্প, তাহার পরে স্ত্রধরের কর্ম। এইরপে মাসুবের পারস্পরিক সম্বন্ধের জ্ঞান ছইবে।

যদি এমন অবস্থা পুৰিবীতে আবিভূতি হয়, বে কাহায়ও পক্ষে অক্তার কর্ম না করিয়া জীবনধারণ অসম্ভব হয়, এবং লোকে অক্তার কর্ম করিতে বাধ্য হয়, তাহা হইলে অক্তারকারীর কাঁসী না দিয়া যাহারা তাহাকে অস্তার করিতে বাধ্য করেছে তাহাদেরই কাঁসী দেওরা উচিত। বর্তমান সামাজিক শুখলার উপর নির্ভর করিরা থাকিও না। এ শুঝালা চিরস্থায়ী নহে। ভবিশ্বতে সমাজে কি বিপ্লব আসিতে পারে, তাহা বলা যায় না। সে বিপ্লবে ধনী দরিক্ত হইয়া যাইতে পারে, দরিজ ধনী হইতে পালে : রাজা সাধারণ লোকের একজন হইতে পারেন। অদৃষ্টের আখাত কি এতই বিরল, যে তাহার আঘাত তোমার সন্তানদিগের উপর পড়িবে না বলিয়া নিশ্চিত্ত থাকিবে ? म मक्केकान अनुवर्शी। विभावत थात्र आमत्रा नांडाहेश आहि। সমাজের বাহিরে নির্কানে যে বাস করে, সে যেরূপ ইচ্ছা সেই ভাবেই বাদ করিতে পারে। কাহারও নিকট তাহার কোনও খণ নাই। কিছ সমাজে যে বাস করে, হয় তাহাকে অস্তের বায়ে জীবিকা নির্বাহ করিতে হইবে, অথবা তাহার জীবিকার জক্ত যাহা বার হয়, তাহা নিজের পরিশ্রম দারা পরিশোধ করিতে হইবে। ধনী, নির্ধন, সবল অধবা তুর্বল-সমাজের প্রভাককেই খাটিতে হইবে। যে পরিশ্রম করে না. সে তক্ষর। বিভিন্ন উপায়ে জীবিকা নির্বাহ করিলেও, সকল মাকুষ্ট সমান। বে শ্রেণীতে অধিকসংখ্যক লোক, সেই শ্রেণীই অধিক সন্মান পাইবার উপযুক্ত।

শিশুদিগের সঙ্গীনির্ব্বাচন এমন ভাবে করিতে হইবে, যে তাহারা সঙ্গীদিগকে ভাল বলিয়া মনে করিতে পারে। কিন্তু সংসারের সহিত তাহার পরিচম এমন ভাবে করিয়া দিতে হইবে বে, সংসারে যাহা ঘটে, তাহার সকলই সে মন্দ মনে করে। মানুষ বে বভাৰতঃ ভাল, তাহা শিশুকে বুঝিতে দিতে হইবে, কিন্তু সমাজ কিন্তুপে মানুষকে দূখিত করে তাহাও দেখাইতে হইবে। সাবধানে চলিতে, বরোজ্যেউদিগকে সন্মান করিতে, মিতভাবী হইতে, সত্য যলিতে সাহসী হইতে শিশুদিগকে শিকা দিবে।

শিশুদিগকে বিবাদ-বিস্থাদ ঘুণা করিতে শিক্ষা দিতে হইবে। পরের উপর প্রভুত্ব করিরা অথবা অঞ্চের কট্ট দেখিরা বেল তাহারা আনন্দ না পার। কট্ট দেখিরা বভাবতঃ বেল তাহাদের কট্ট হর।

মানুৰকে অসভ্যে পরিণত করা, অথবা পুনরায় জললে পাঠাইরা দেওরা আমার ইচ্ছা নহে। সংস্কার অথবা অদন্য প্রবৃত্তি বারা চালিড না হইরা তাহারা বৃক্তিসমত জীবনবাপন করে ইহাই আমার লক্ষ্য। চকু বারা বেমন দেখা বার, তেমনি হুদর বারা অকুতব করা চাই। ভূল শিকা পাইবার বিপদ আছে। "মৃত্তির জন্ত ইবরে প্রোজন" শইহা ঠিক ভাবে বৃবিতে না পারার জন্তই হিক্তার উত্তব হর। ঈবরে বিধাস না থাকিলেও মৃত্তি শবে সভবপর। শিশু ও উন্মাদদিগের ঈবর সবচ্ছে জান লাভের নাই। কেহ বদি ইচ্ছাপুর্বক অবিধাস পোবণ না করে, তাহা ছে অবছার অবিধাসী হইলেও পরলোকে ঈবরের সামিও হইতে বঞ্চিত হইবার কারণ নাই। বাহারা বৃবিতে পারে না, গের নিকট সত্য-প্রচারের ফলে ভূল প্রচার হইবে। ঈবর রাস্ত ধারণা থাকা অপেকা কোন ধারণা না থাকাই ভাল। অপ্যান করা অপেকা তাহাকে দেখিতে না পাওরাই ভাল।

nile ও Social Contract—উভয় প্রস্থ ১৭৬৭ সালে ত হয়। উভয় এম্ হইতে ৮০০০ ফ্রাম্ব লাভ হইবে বলিয়া াশা করিরাছিলেন। •এই অর্থ হস্তগত হইলে তিনি সাহিত্যক্ষেত্র ম্বসর প্রহণ করিয়া নিজের একখানা সতা জীবনচরিত লিখিবার রবিয়াছিলেন। কিন্তু ভাহার চতর্দিকে বিপদের মেব সঞ্চিত ল। বছসংখ্যক শত্রু তাহার সর্ব্বনাশের চেষ্টা করিতেছিল। "Tulie" গ্রন্থের এক স্থানে তিনি লিখিয়াছিলেন "রাজপুত্রের | (Mistress of a Prince) অপেকা করলা-ধনির আমিকও সম্মানের উপযুক্ত।" ইহা পড়িরা রাজার উপপন্ধী Madame omapadour তাহার উপর ভীবণ রুষ্ট হন। প্রধান মন্ত্রী ভাহার উপর ভরানক অসভট হটয়াছিলেন। lopedist গণ তাঁহাকে দলত্যাগী বলিয়া ঘূণা করিতেন। দেশব্যাপী খ্যাভি ভলটেরারের অসহা হইরাছিল। পার্নিরামেণ্টের তাঁহার প্রচারিত মত দেশের অনিষ্টকর বলিয়া মনে করিতেন। গ্রান্ট ও রোমান ক্যাপলিক উভয় সম্প্রদায়ের পুরোহিতগণই "প্রাকৃতিক ধর্মের" প্রচারে স্ব স্ব ধর্মের বিপদ দেখিতে পাইয়া-। এই সময়ে Encyclopedist ও श्रेष्ट्रश्च विश्वामी पिराध ্টীৰণ কলহ চলিতেছিল। ক্ৰমো লিখিছাছেন "উন্নত্ত বাজের মত া পরম্পরকে আক্রমণ করিয়া বুদ্ধে লিপ্ত হইয়াছিল। উপযুক্ত কোনও দলের ছিল না তাই রকা, নতুবা দেশে অন্তর্বিজ্ঞোহ 🤋 হইত। নিম্কুণ পরম্মানহিকুতাজাত ধর্মানংক্রান্ত যুদ্ধের ফল ্ত, তাহা ঈশরই জানেন।" এই বিরোধ শান্তির জন্তই রুসো relle Heioice এবং Emile গ্রন্থে পরমত সম্ করিবার াশীরতা ব্যাথা করিহাছিলেন। কিন্ত ভাচার কল চুটুরাছিল छ । छ छ मन मिनिछ इटेबा छोटात नर्खनात्न छ छ उ इटेन । া চতুর্দিকে যে বিপদের মেখ ঘনীতৃত হইরা উঠিতেছিল, কুসো िक्इरे बानिए भारतम मारे। निर्कत भन्नी-निराम निरमत সকলতার আনকে ভাহার দিন অভিবাহিত হইতেছিল। বেগ-তাহার শ্রুতিগোচর হর নাই। বধন বিপদের কথা কানিতে ান-জপরিসীম ভরে বিষ্যু হইরা পড়িলেন এবং যেখানে বিপদ না, সেধাৰেও বিপদ বেধিতে লাগিলেন। এই সময়ে তাঁহার

মন্তিক-বিকৃতি আবন্ধ হটল। সকলেই তাহার শক্ত, সকলেই ভাহাকে বিপন্ন করিবার চেষ্টা করিতেছে, এই বিশাসে ভাষার মনের সমতা হারাইরা ফেলিলেন—উৎপীড়নের ভীতি তাঁহাকে উন্মাণ করিরা তুলিল। ভাহার মূত্রাশয়ের পীড়া এই উত্তেজনার অসম্ভব রূপে বাড়িয়া উঠিল। যত্রণার অনেক সমর আত্মহত্যার ইচ্ছা তাঁহার মনে উদিত ছইতে লাগিল। Emile এত মুদ্রিত হইয়াজিল হল্যাঙে। হল্যাঙে এত মুদ্রাব্য হইতে বাহির হইবার পরে কুড়িদিন গত না হইতেই প্যারিদের পালিয়ামেণ্ট ক্লসোর নিক্ট হইতে কোনও কৈফিয়ত না লইয়াই উক্ত গ্রন্থ পোড়াইরা ফেলিবার এবং ক্সোকে বন্দী করিবার আদেশ थाठात कतिराम । अहे सून स्वारमन श्राप्त हत्त, अ वे उतिराध Palais de Justice এর সন্থা প্রকাশভাবে গ্রন্থ প্রথমে ছিড়িয়া ফেলা হইল, তারপরে আঞ্চনে পোড়ানো হইন। অনেকে প্রকান্ত ভাবেই বলিতে লাগিল, গ্রন্থের দলে গ্রন্থকারকে পোডাইরা মারা উচিত। কুসোর সম্ভান্ত বন্ধুগণ ভাহাকে পলায়ন করিবার পরামর্শ দিলেন। ১১ই জুনই ক্লো পলায়ন করিয়া ফুইজারলাওে উপস্থিত হইলেন। কিন্তু মেখানেও তিনি নিরাপদ হইতে পারিলেন না। তাঁহার শত্রুগণ দেখানেও তাঁহাকে অনুসরণ করিল। > দিন পরে জেনিভাতেও তাহার গ্রন্থ আগুনে পোডাইরা ফেলা হর। বার্ণ.ও মিটস্রাটল ও জেনিভার অমুসরণ করিল। সমন্ত ইউরোপে তাঁহার বিরুদ্ধে অভিসম্পাত উচ্চারিত হইতে লাগিল। এরপ প্রচণ্ড রোব পূর্বে কথনও দেখা যায় নাই। সর্ব্বত্রই ক্লেন্ত্র অবিবাসী নান্তিক, উন্মান, হিংল্রপন্ত, ব্যাদ্র প্রভৃতি অভিধানে অভিহিত করিতে লাগিল। ক্লোর মনে হইল, সম্প্র পুৰিবী তাঁহার বিরুদ্ধে বড়বল্লে লিও হইয়াছে। রুদোর অন্তর ছিল অতি দুৰ্বল ও কোমল। ভীষণ ব্যাণায়ক বাাধিতে তিনি ভূগিতেছিলেন। এরকম অবস্থায় যে ভীষণ বিষেধের বস্তা তাঁছার উপর আসিরা পড়িল, তাহার চাপে তিনি যে বৃদ্ধিবিবেচনা হারাইরা ফেলিবেন, তাহাতে আশ্চর্যাঘিত হইবার কিছুই নাই। জীবনের শেব দিন পর্যান্ত উৎপীড়ন-ভীতি তাহাকে ব্যাকুল করিয়া তুলিত।

ফুইজারল্যাও হইতে পলায়ন করিয়া রূপো প্রাসিয়ার রাজা
Frederick the greatus রাজ্যে Motiers প্রামে আত্রর লইলেন।
আড়াই বংসর তিনি তথার বাস করিয়াছিলেন। কিন্তু সেথানে অবছান
কালে জেনিভার রাষ্ট্র ও চার্চ্চকে আক্রমণ করিয়া প্রবন্ধ লেখার জপ্ত
পুরোহিতেরা ভীষণ উত্তেজিত হইরা উঠিল। Motier এর স্মীর্জার
ভাহার প্রবেশ নিষিদ্ধ হইল এবং গীর্জার পুলপিট হইতে ধর্মোপদেপ্তা
ভাহাকে anti-Christ (খুইশক্র) বলিরা অভিহিত করিলেন।
সাধারণ লোক উত্তেজিত হইরা পথে গাটে ভাহাকে আক্রমণ করিতে
আরম্ভ করিল। একদিন রাত্রিকালে বহুসংথ্যক লোক মিলিভ হইরা
ভাহার গৃহ আক্রমণ করিলে তিনি পলায়ন করিয়া জীবন রক্ষা করিলেন।
Bienne ছুদের ভীরে একমান বাস করিবার পরে Berne নগরের
শাসনকর্ত্তাগনের আন্তর্গন করিলেন।

দার্শনিক পঞ্জিত ডেভিড হিউম ক্লগেকে ইংলপ্তে নিমন্ত্রণ করিয়া-ছিলেন। এই বিপদের সময় তিনি তাঁহাকে আত্রর দিলেন। ইংলঙে সকলেই কুসোকে সাদরে গ্রহণ করিল। ইংলণ্ডেশ্বর তৃতীর কর্জ তাঁহাকে বুভি দান করিপেন। প্রসিদ্ধ বন্ধা বার্কের সহিত ভাহার बक्क रहेन, किन्तु त्म बक्क श्वाती रत्न नाहे। वार्क निधिताहरू "একমাত্র আত্মাভিযান ভিন্ন, তাঁহার হৃদয়কে প্রভাবিত অথবা বৃদ্ধিকে চালিত করিবার উপযোগী কোমও নীতি (Principle) তাঁহার ছিল না।" হিউম বছদিন পর্যান্ত বন্ধত্ব ক্লা করিরাছিলেন। তিনি তাহাকে ভালবাসিতেন, এবং শ্রম্ভা করিতেন। কিন্তু কুসোর উৎপীড়নভীতি তাঁহাকে সকলকেই অবিশাস করিতে শিকা দিয়াছিল। ভাহার বিশাস হইল, হিউমও তাঁহার শত্রুদিগের সহিত মিলিত হইরাছেন। মাঝে মাঝে এই অবুলক ধারণার লজ্জিত হইরা তিনি হিউমকে আলিখন করিয়া বলিতেন "না না। হিউম বিখান্যাতক নর।" কিন্তু অবশেবে অবিখাদেরই জর হইল, রুগো পলায়ন করিলেন। হিউম তাঁহার সথকে লিপিয়াছেন "তাঁহার সমস্ত জীবনই বেদনার (feeling) জীবন। তাঁহার বেদনাবোধ এত তীব্র হইতে দেখিরাছি, যে অন্ত কোণাও ভাষার তুলনা মিলে না। কিন্তু এই বেদনাবোধ ভাঁহাকে হ্বপ অপেকা হঃবের ভীব্রতর অনুভৃতিই দিয়াছে। যদি কোনও লোকের পরিচ্ছদের সহিত ভাহার শরীর হইতে ত্বকও খুলিয়া লওয়া হয় এবং দেই অবস্থায় দে প্রাকৃতিক দুর্য্যোগের সন্মুখীন হয় ভাহা হইলে তাহার যে অবস্থা হয়, রুদোর অবস্থাও তদ্ধপ।"

ইংলও হইতে পলায়নের পরে নাম পরিবর্তন করিয়া রুলো স্থান হইতে স্থানান্তরে ঘূরিয়া বেড়াইতে লাগিলেন। অবশেবে তাহাকে ক্রান্সে প্রভাবর্তনের অনুমতি প্রদত্ত হইল। পারিদে একটি সামান্ত প্রহে বরলিপি নকল করিয়া তিনি দরিজভাবে জীবন যাপন করিতে লাগিলেন। ইহার পুর্বেই তিনি তাহার জীবনচরিত লিপিয়া শেব করিরাছিলেন। এই জীবনচরিতের নাম দিয়াছিলেন Confessions (बीकाরোক্তি)। এই গ্রন্থ তিনি করেকলন বন্ধকে পড়ির। শুনাইরা-हिल्लन। किंदु Madame d'Epincy ও अन्नान वक्तान जाहारमञ् গুপ্তকথা প্রকাশিত হইবার ভয়ে পুলিশের সাহায্যে ইহার পাঠ নিবিদ্ধ করিয়া দিলেন। তাহার চিঠিপত্রও গবর্ণমেন্টের আদেশে ধুলির। পড়া হইতে লাগিল। ফলে রুসোর মানসিকবাাধি বাড়িয়া চলিল। ভিনি "নির্জন ছাঁপে রবিনসনকুনো" অপেকা প্যারিসে আপনাকে অধিকতর নিঃসঙ্গ মনে করিতে লাগিলেন। সমস্ত পুথিবী তাহাকে শত্ৰু বলিয়া গণ্য করে, এই বিখাসে ক্লো "Dialogues de Rousseau Jean Jacks" লিখিলেন। এই এবংশ ভাহার বিরুদ্ধে বড়বল্লের তিনি যে ভীষণ বর্ণনা করিয়াছেন, ভাহা উন্মাদের প্রলাপ মাত্র। তাহায় হতাশার আর্ত্রনাদ কোনও মানুবের কর্ণে প্রবেশ করিবে না, এই বিশাসে তিনি প্যারিসের Notre Dame পীৰ্জার বেণীর উপর তাহার গ্রন্থ ঈশ্বরকে সবর্ণণ করিবার ইচ্ছা করিলেন। কিন্তু বেদীর পথ ক্লব্দ দেখির।

আসিলেন। এই আঘাতে তাহার জনম একেবারে ভালিয়া পডিল। मत्न रहेन जेवत्र छारात थांठि विज्ञान। भञीत धर्मविवासम्ब करन তথন তাহার মনে হইল, ঈশর বখন তাহার উপর উৎপীতন হইতে দিতেছেন, তথন ইহা নিশ্চরই তাহার "স্নাত্ন আদেশের" (eternal decrees) অন্তর্ভ। স্বতরাং দেই আদেশের নিকট ছ:ধার্ড হাবরে বিখাদের সহিত নত হওয়া ভিন্ন তাহার করণীর কিছু নাই। এই বিখাদে তিনি কথঞিৎ শান্তি প্রাপ্ত হইলেন। কিন্তু মানসিক পাস্থা ফিরিয়া পাইলেন না। এই সময়ে Les Reveries du promeneur solitare গ্রন্থ লিখিতে আরম্ভ করিলেন। (১৭৭৬ সালে এই গ্রন্থ আরম হর, কিন্ধ শেষ হয় নাই) এই গ্রন্থে তাহার মন্তিক বিফুডির পরিচর পাওয়া যার। তিনি শিথিরাছেন "পুৰিবীতে আমি এका। छाই नारे, প্রতিবাদী নাই, वक्त नारे, সধা নাই, আমি ভিন্ন আমার কেহই নাই। মানবের মধ্যে যে ছিল সর্বাপেকা স্নেহশীল ও মিশুক, সকলেই ভাহাকে বর্জন করিয়াছে ৷.....কিন্ত প্রেরের তলদেশে হতভাগ্য মরণশীল মানুষ আমি শান্তই আছি--শান্ত কিন্তু ঈশবের মতই ত্বৰ ছঃবের অতীত।" তাঁহার Reveri'es সম্বন্ধে Roman Rolland লিখিয়াছেন "এই গ্রন্থে তাহার কলা-কৌশলের কোনও অপকর্বের পরিচর নাই। বরং তাহার বিশুদ্ধিই দৃষ্ট হর। অরণ্যের নিশুদ্ধতার মধ্যে বিষাদমগ্ন বৃদ্ধ নাইটিংগালের মধুর সঙ্গীতের মতই ক্লসোর এই শেব গ্রন্থ। এই গ্রন্থে তিনি তাঁহার জীবনের অল্পংখ্যক স্থাপের দিনগুলি আলোচনা করিয়াছেন—বধন তিনি প্রকৃতির অঙ্গে মিলিরা গিয়াছিলেন, বিখের সলে একীত ত হইয়াছিলেন। অন্ত সমস্ত অনুভূতিবর্জিত হইরা, সন্তার গভীরে (depths of Being) মনঃ নিমজ্জিত করিয়া আপনার মন্ত্ৰের আলিকনে বন্ধ (Entwined with himself) হইরা তিনি य विश्व छेन्नाम अपूछ्य कविद्याहित्वन, तिरे थांठा छेन्नाम (ecstasy) পাশ্চাতাদেশের কেহই ভাহার মত অনুভব করে নাই। জীবনের শেবের দিকে তিনি উদভিদ-বিভার আলোচনা করিতেন। বৈজ্ঞানিক জ্ঞান च्या ने प्रति वे व्यापित मार्ग्न अवः मार्ठ , खनानत्र, यन, निर्कनजा, সর্বোপরি শান্তি ও বিপ্রামের যে স্থৃতি এই আলোচনা হইতে উচ্ছ হইত, তাহাই তাহার কাম্য ছিল।" সঙ্গীতেও তিনি আনৰ পাইতেন।

১৭৭৮ সালের ২০মে ভারিখে M.de Gerardin নামে একজন
ধনী তর্তনাক রুনোকে তাহার দরিজ আবাস হইতে লইনা পিরা প্যারিদ
হইতে নর মাইল প্রে Ermenville নামক পৃহে প্রতিষ্ঠিত করেন।
এই বর্গতুলা উভান পৃহে রুনো পরম শান্তি প্রাপ্ত ছইরাছিলেন। ভারার
বাস্থ্যের ও কিঞ্চিৎ উন্নতি লক্ষিত হইরাছিল। কিন্ত ২রা জুন ভারিখে
হঠাৎ ভারার মৃত্যু হয়।

মৃত্যুর পূর্বের কলো বধন ভাষার কেন্ট্র নাই বলিরা বিলাপ করিরা ছিলেন, তথন তিনি জানিতেন না বে, বর্তনান ও ভবিছৎ তিনি কর করিরাছেন। তাঁহার মৃত্যুর পূর্বেই ভাষার প্রস্থাবদীর ছর সংস্করণ এবং La nouvelle Heloiseএর বশ সংক্রণ আকানিত ইইলাছিল। এবং তাহার বাণী বহুলপ্রচারিত হইরা পড়িরাছিল। ১৭৮২ সালে ভাহার Confessions এর প্রথম ভাগ এবং Reveries প্রকাশিত হর, এবং তাহার ঘারা পাঠকের মন বহুল পরিমাণে প্রভাবিত হর। ১৭৮০ সালে ফ্রান্সের রাণী ও রাজপুত্রগণ সহ অর্দ্ধ ফ্রান্স Peupliers ঘীপে বেখানে ভাহার দেহ সমাহিত হইরাছিল, তথার গিরা আপনাদের প্রছাভিত এবং তদবধি এই উন্মান পণ্ডিতের সমাধিক্ষেত্র ফ্রান্সের তীর্থক্ষেত্রে পরিণত হইরাছে। "দার্শনিক"গণের বিষ্বিদম্ব সমালোচনার ভাহার বলং বিলুমাত্রও ক্রম হয় নাই। ফ্রান্সের যুবকর্পণ দেখিরাছিল ভার্ণির অধিখামী ভলটেরার ক্রনোর মৃত্যুর একমান পূর্কে বিপুল এবর্ণ্ডের মধ্যে পরলোকে গমন করিরাছিলেন, কিন্তু বহু ছঃখক্টের মধ্যেও খীয় মত হইতে বিচ্যুত না হইরা ক্রনো মৃত্যু পর্যান্ত সাধারণের একজন খাকিয়াই চলিয়া গিয়াছেন। ভাবী ফরানী বিশ্লবের নারকর্পণ—বাহারা পরে পরম্পরের বিক্রাশ্যাধন করিয়াছিলেন—বার্ণেন্, ভ্যাণ্টন, কার্ণিট, বিলড, ভ্যারেন্, ক্রমন, ম্যানন রোলাও—সকলেই মিলিত হইরা

ন্ধনোর প্রতি শ্রদ্ধা প্রদর্শন করিয়াছিলেন। ক্ষপোর Discourse on Inequalityর ব্যাখ্যা করিয়া Brissot কারাদণ্ড ভোগ করিয়াছিলেন। Robespierre রাজনৈতিক জীবনে প্রবেশ করিবার পূর্বের রূপোর মত অন্থুসরণ করিবেন বলিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন, এবং ১৭৯৪ সালে যথন তিনি অপ্রতিদ্বালী ক্ষমতালাভ করিয়াছিলেন, তথন ৭ই মে তারিখের প্রসিদ্ধ বন্ধুতার তিনি রুপোর প্রতি Encyclopedistগণের শক্রতার প্রতিশোধ গ্রহণ করিয়াছিলেন। বিশ্ববের পক্ষ হইতে তিনি রুপোর প্রতিশ্রদ্ধানিবদন করিয়া তাহাকে বিশ্ববের অগ্রন্থ এবং মানব জাতির শিক্ষাঞ্জ বলিয়া অভিনন্ধিত করিয়াছিলেন। কৃতক্ত বৈশ্ববিকর্পণ বিপুল সম্মানের সহিত তাহার দেহ নির্কন Peupliers দ্বীপ হইতে আনিয়া প্যারিশের Pantheon প্রসাহিত করিয়াছিল। Constiuent Assembly গৃহে তাহার মর্মার মূর্ত্তি ফ্রাছলিন ও ওয়াসিংটনের মূর্ত্তির সম্মুধে প্রতিন্তিত হইয়াছিল।

(35회씨:)

রাশি ফল

জ্যোতি বাচস্পতি

মিথ্ন রাশি

আপনার জন্মরালি যদি মিণুন হয়, অর্থাৎ চক্র যে সময় আকাশে মিণুন নক্ষত্রপুঞ্জে ছিলেন, সেই সময় যদি আপনার জন্ম হ'য়ে থাকে, ভাহলে এই রকম ফল হবে।

প্রকৃতি

আপনি ইঙ্গিতজ্ঞ ও মেধাবী। যে কোন বিবন্ধ চট্ করে বোৰবার ও শেথবার শক্তি আপনার মধ্যে আছে। কিন্তু আপনার মধ্যে বৃদ্ধির তীক্ষতা যতটা আছে, গভীরতা ঠিক ততটা নেই। কাজেই বছতর বিশয়ে জ্ঞান অর্ধ্বন করলেও সে জ্ঞান কতকটা ভাসা ভাসা ধরণের হবে।

শিল্প, বিজ্ঞান ও সাহিত্যের দিকে আপনার একটা সহজ আকর্ষণ থাকবে এবং বছবিবর জানবার ও শেধবার একটা প্রবল আকাজ্জা আপনার মধ্যে লক্ষিত হবে। আপনার প্রকৃতির বিকাশ হবে হৃদরের মধ্য দিরে ভত্টা নর, বত্টা বুদ্ধির মধ্য দিরে।

আনেক কিছু লানার ইতহা আছে ব'লে, আপনার মধ্যে কম-বেনী অধিরতা ও চাঞ্চা লক্ষিত হবে এবং ঠিক একই বিবন্ন নিমে লেগে থাকা আপনার পোবাবে না। কাজেই লোকে আপনাকে একটু অব্যবস্থিত-চিত্ত ভাবতে পারে।

প্রত্যেক ব্যাপারে বাইরের খুঁটনাটি লাপনি যভটা লক্ষ্য করবেন, ভার ভিতরকার ভবের দিকে লাপনার ভতটা লক্ষ্য বাক্বে না। আপনি যদি শিলী বা সাহিত্যিক হন, তাহ'লে আপনার রচনা বা শিল্প মনোজ্ঞ হলেও, তার মধ্যে পুব বেণী গভীরতা পাওয়া যাবে না।

আপনি পরিবর্তনপ্রিয়। একই জারগায় একই ভাবে বেশীদিন ধাকা, অধবা দীর্ঘদিন ধরে একই কাজে আন্ধনিরোগ করা আপনার প্রকৃতির বিরোধী; কি লেখাপড়ার ব্যাপারে, কি বিষয়কর্মে, কি পারিবারিক বা সামাজিক ব্যাপারে সর্বত্তই আপনি চাইবেন পরিবর্তন। একই সঙ্গে একাধিক ব্যাপার নিয়ে খাকতে না পারলে, আপনার মন বেন স্বন্তি পার না এবং আপনার এ শক্তিও আছে যাতে আপনি মনকে চটু করে এক বিষয় ধেকে বিবয়ান্তরে চালনা করতে পারেন।

আপনার এই প্রকৃতির জপ্ত আপনার মধ্যে বছমুখীনতা দেখা যেতে পারে, কিন্ত এই জপ্তই অনেক সময় আপনার মধ্যে অধ্যবসায়ের অভাব ও অধীরতা দেখা যাবে, বাতে ক'রে কোন ব্যাপার সম্বন্ধে সর্বাদীন জ্ঞান লাভ করা আপনার পক্ষে সম্ভব হবে না।

আপনি সাধারণতঃ ঘোরাফেরা করতে ভালবাসেন এবং আপনার একাধিক শত্ম বাসস্থান একাধিক শত্ম পারিবারিক বন্ধন থাকা খুবই সম্ভব এবং সম্পূর্ণ শত্ম ভাবের একাধিক কাজে আশ্বনিয়োগ করাও আপনার শক্ষে অসম্ভব নর।

আপনি সাধারণত: আনক্ষপ্রির হবেন, সেইজস্ত আপনার সামাজিক ব্যবহার প্রারই মধুর হবে এবং বিবাদ বা বিতও৷ উপস্থিত হ'লে হয় সে স্থান ত্যাগ করবেন, না হয় বৃদ্ধি কৌশলের যার৷ বিস্থাদের কারণ স্থুর করার চেষ্টা করবেন। প্রতাক্ষতাবে বিরোধ করা আপনার প্রকৃতির বিরোধী।

আপনার মধ্যে সমালোচনা ও বিরেশণ করার শক্তি বংশই আছে এবং তর্ক বিতর্কেও আপনার কম বেশী পট্ড দেখা বাবে। আপনি অধিকাংশ ব্যাপারেই যুক্তিতর্কের সাহায্যে বোঝবার চেষ্টা করবেন এবং বা বৃক্তিতর্কের বিবর নর; বা প্রত্যক্ষ অমুভূত্তির উপর নির্ভর করে তাকেও বৃক্তিতর্কের গণ্ডীর মধ্যে নিরে আসতে চাইবেন।

পরের প্রশংসার উপর আপমার একটা লোভ আছে এবং অমৃতর-সহচরের প্রীতির চেরে তাদের প্রশংসা অর্জন করাই আপনার কাম্য হবে বেনী। অনেকক্ষেত্রে অমৃচর সহচরের মনোভাব হিসেবে আপনার নিজের আচরণ নির্মাতি করবেন। সেই জক্ত সক্ষ নির্বাচনে আপনার বংশপ্ত সতর্ক থাকা উচিত। সংসক্ষে পড়লে অনেক সমর যেমন আপনি আপনার বাসনা সংযত করতে পারবেন; অসৎ সংসর্গে পড়লে ভেমনি আপনার নীতি জানের বিক্লম্মে কাজ করতেও আটকাবে না।

আপনার মধ্যে যৌন আকর্ষণ প্রবল হওরাই সম্ভব। ভবে তাকে যদি উধ্বপিথে চালনা করতে পারেন, তাহ'লে আপনার বিলেব আধ্যান্ত্রিক উন্নতি হ'তে পারে। সাধারণতঃ কিন্তু তা আপনাকে যৌন ব্যাপারে প্রায়ই একনিষ্ঠ থাকতে দেবে না।

অর্থ-ভাগ্য

আর্থিক ব্যাপারে ঝাপনার অনেক উথান পতন ঘটবে। কোন্ঠাও বদি বিশেষ ভাল বোগ না থাকে তাহ'লে আর্থিক ব্যাপারে একটা অনিশ্চরতার ভাব প্রারই লক্ষিত হবে। এথর্য্য ও দারিত্র্য চুইই আপনাকে ভোগ করতে হবে এবং অনেক সময় আপনার নিজের ইচ্ছাতেই এথর্থ থাকা সম্বেও দারিত্র্য বরণ করতে পারেন। নিজের বৃদ্ধি-কৌণলে আপনি অর্থ উপার্জন করতে পারবেন, কিন্ত অর্থ আপনি যতই উপার্জন কর্মন, অর্থ সম্বন্ধে ক্থনই ঠিক নিশ্চিত্ত হ'তে পারবেন না। আপনার পারিবারিক ব্যাপারে এবং ব্রী-পূত্র বা মাতার জন্ত অর্থনাশ বা সম্পতিহানি হ'তে পারে। অর্থ উপার্জনের ব্যাপারে অনেক সময় আপনাকে কৌশল বা কৃটবৃদ্ধির আপ্রয় নিতে হবে।

কৰ্ম-জীবন

কর্ম-জীখনে আপনার বিচিত্র অভিজ্ঞতা হবে। কর্মের ব্যাপারে অনেক সমর ওঠাপড়া বা পরিবর্তন চলতে পারে। আপনার উচ্চাভিলাব নেই তা নয়, কিন্তু দে উচ্চাভিলাব অনেক সমর ঠিক নির্দিষ্ট পথে চলতে পারবে না। আপনার নিজের মানসিক অবহার কণ্ঠই হোক্, অপনার কর্ম-বিপর্যর ঘটতে পারে। তা হাড়া কর্মহানে আপনার অনেক শক্রও থাকবে। আপনার সহক্রী এবং অধীনহু ব্যক্তিদের বারা অনেক সমর প্রকাশ্রে লাক্তা হবে এবং আপনার শক্ররা আপনার ব্যক্তিগত বা পারিবারিক জীবন মিরে মিব্যা কুৎসা বা অপবাদ রটনা করতে পারে, বাতে করে

আপনার কর্মন্থলে কর্ম-বিপর্বর এবং সমাজে সক্সমহানি হ'তে পারে।
আপনার মধ্যে নানা রকম কর্মের ঘোগ্যতা আছে। আইনজ চিকিৎসক,
লেখক, সাহিত্যিক, শিল্পী, বক্তা সাংবাদিক প্রভৃতির কাল আপনি
যেমন যোগ্যতার সঙ্গে করতে পারেন, তেমনি দালালী দৌত্য কার্ব,
কেরাণীর কাল, কারিগরি, ইঞ্জি-নিয়ারিং প্রভৃতি কাজের যোগ্যতাও
আপনার মধ্যে আছে। মোট কথা যে সকল কালে হাতের কৌনল ও
নৈপুণ্য অথবা মত্তিক চালনা দরকার সে সর্ব কালে আপনার বিশেষ
যোগ্যতা প্রকাশ পাবে। আপনার প্রধান সম্প্রা হবে আপনার মন
ছির করা নিরে। আপনি মন ছির ক'রে যদি এর বে কোনটাতে
আল্পনিয়োগ করতে পারেন তাহ'লে শিক্ষা ও আবেইনের অমুপাতে
আপনার যথেষ্ট প্রতিষ্ঠা অবশ্রক্তাবী।

পারিবারিক

যদিও আপনার অনেক আন্দ্রীয় কুটুৰ থাকতে পারে, তাহ'লেও তাঁদের সঙ্গে ঠিক প্রীতির বন্ধন থাকা সম্ভব হবে না। অনেকক্ষেত্রেই তাঁদের সঙ্গে সম্বন্ধ মৌথিক শিষ্টাচারের মধ্যেই আবন্ধ থাকবে।

পারিবারিক ব্যাপারে আপনি বিশেব ভাগ্যশালী হবেন না। অনেক সময় ইচ্ছা করেই হোক্ বা বাধ্য হ'য়েই হোক্, আপনাকে পরিবার হ'তে বিচিত্র হ'য়ে থাকতে হবে। আপনার পরিবার মধ্যে কোন শুপ্ত রহস্ত থাকতে পারে। পরিবারে অথবা গৃহত্বালির ব্যাপারে কোন রকম বৈচিত্র্য বা অসাধারণত্ব থাকাও অসম্ভব নয়। পারিবারিক আবেষ্টন আপনার উন্নতি বা সাফল্যে বাধা শৃষ্টি করতে পারে। কিন্তু আপনি আপনার সন্তানদের উপর পুব সেহশীল হবেন এবং তাদের উন্নতির জন্ত তাগে থীকার করতেও পরামুথ হবেন না। সন্তানের মধ্যে কেন্ট কেন্ট বিশেব উন্নতিশীল হবেন।

স্নেহ প্রীতির ব্যাপারে আপনার মধ্যে দৃচ নিষ্ঠা থাকা কঠিন হবে।
আপনি সে সথকে হর একেবারে উদাসীন হ'রে উঠবেন, না হর ঘন ঘন
পরিবর্তন কামনা করবেন। মোটকথা স্নেহ প্রীতির ব্যাপারে আপনাকে
কম-বেদী হুংগ ভোগ করতে হবে।

বিবাহ

বিবাহ ও দাম্পত্য জীবন সম্বন্ধে আপনার বিচিত্র অভিক্রতা হ'বে বিবাহে বাধাবিদ্ধ বা বিলম্ব হ'তে পারে। বিবাহের পর শ্রীর (অথবা আমীর) সক্ষে আপনার সম্বন্ধ একেবারে উদাসীন হ'রে উঠতে পারে। মোট কথা আপনার এই রালি ছিরতর দাম্পত্য জীবনের অমুকৃষ নর। আপনার শ্রীর (অথবা খামীর) মতামতের সঙ্গে অমেক সমর আপনি নিজেকে থাপ থাওরাতে পারবেন না এবং তা নিয়ে কম বেশি থিটিমিটি বা অনান্তিও চলতে পারে। বদি আপনার শ্রীর (অথবা খামীর) সঙ্গে মধ্যে বিভিন্ন হ'রে থাকতে পারেন, ছাহ'লেই দাম্পত্য জীবনে কিছু লান্তি পাবেন, নতুবা অনান্তি কম-বেশী হবেই। বার জন্ম-বাস আবাচ, কার্তিক, পৌব অথবা ভান্তন, কিছা বার জন্মতিথি

কৃষ্ণকের প্রতিপদ বা । জরুপকের শইখী এরক্য কারো সজে বিবাহ হ'লে আপনার দাশতা স্বীবনের স্বশান্তি স্বেক্ ক্যতে পারে।

বৰুৰ

আপনার অক্চর-পরিচরের সংখ্যা বছ হবে এবং কোন বন্ধুর সঞ্চে আপনার গভীর সেহের বন্ধন থাকবে। সহকর্মীদের মধ্যেও আপনার হ'চারজন বিষয়ে বন্ধু থাকবে কিন্তু বন্ধুদের মধ্যে কেউ কেউ হঠাৎ আপনার বোরতর শত্রু হ'রে গাঁড়াবে এবং নানারক্ষমে আপনাকে বিব্রত ও অপদত্ব করবার চেটা করবে। এই রক্ত বন্ধুছের ব্যাপারে আপনি যেমন আনক্ষও পাবেন তেমনি ব্রুংথ ও সনন্তাপও ভোগ করবেন। আপনার প্রগাঢ় বন্ধুছ হওরা সভব তালের সক্ষে বাদের জন্ম মাস আবাঢ়, কার্তিক, অথবা ভান্ধন এবং বাদের জন্মতিথি কৃষ্ণশক্ষের অতিপদ কিশ্বা শুকুপক্ষের অইনী।

স্বাস্থ্য

খাহ্যের ব্যাপারে আপনার একটা উদাসীনতা থাকা সম্ভব। জনেক সমর পীড়ার প্রপাতে আপনি তা অগ্রাহ্ম করে চলার দরণ পীড়া গুরুতর হ'তে পারে, দে বিবরে সতর্ক থাকা উচিত। আপনার চর্মরোগ, রক্ত-সংক্রান্ত পীড়া ও স্নামবিক ব্যাধির প্রবেশতা আছে। অতিরিক্ত উত্তেজনা অথবা মানসিক পরিশ্রমের জন্ম স্নায়্বৈকল্য বা মন্তিকের পীড়া হ'তে পারে। সে সম্বন্ধেও সতর্কতা আবস্তক। নিজের অবিবেচনা; অবহেলা ও কুচিকিৎসা আপনার বাহাহামির কারণ হ'তে পারে।

অক্তাক্ত ব্যাপার

আপনার ত্রমণের অনেক স্থযোগ উপস্থিত হবে এবং অনেক সময় ধর্মোপলকে তীর্থত্রমণ্ড হ'তে পারে। তা ছাড়া কুল কুল ত্রমণ বা স্থান পরিবর্তন প্রারই হবে। আপনার দ্রদেশে বাত্রাও হ'তে পারে, এখন কি দ্র প্রবাদে মধ্যে মধ্যে দীর্ঘকাল বাসও করতে পারেন। বিদেশে বা ত্রমণের সময় অনেক অসাধারণ বা বিচিত্র ঘটনা ঘটতে পারে, বার কোনটা প্রীতিকর কোনটা বা অপ্রীতিকর।

স্মরণীয় ঘটনা

আপনার ১২, ২৪, ৩৬, ৪৮ এই সকল বর্বে আপনার নিজের অথবা পরিবার মধ্যে কারো কোন ছুর্ঘটনা ঘটতে পারে। ৩, ৬, ১৫, ১৮, ২৭, ৩০, ৩৯, ৪২ এই সকল বর্ষপ্রলিতে আনন্দজনক কোন অভিজ্ঞতা হ'তে পারে।

বৰ্ণ

আপনার প্রীতিপ্রদ ও সৌভাগ্যবর্ত্বক বর্ণ হচ্ছে গাচ সব্ত এবং সব্ত রঙের সব রকম প্রকারভেদ। ছাই রঙ্ অথবা ক্লেট রঙও আপনার উপযোগী।

বুতু

আপনার ধারণের উপধোগী রত্ব পালা, সব্জ Asct হরিৎক্ষেত্র বৈছর্বোগ (Cat's eye)।

বে সকল খ্যাতনামা ব্যক্তি এই রাণিতে জন্মছেন তাঁলের জন করেকের নাম—শ্রীশন্ধরাচার্য, এনি বেসান্ত, কবি বার্ত্ত্বপ, কবি জ্ঞান বড়াল, প্রসিদ্ধ গারক লালটাদ বড়াল, মসিঁরে লাকারেত, ডাক্তার মহেন্দ্র লাল সরকার, ডাক্তার বামনদাস মুখার্জি, জাস্টিস্ রমেশচক্র থিত্র, মহারাজা জ্যোতিক্রমোহন ঠাকুর, খামী শিবানন্দ, কালীপ্রসন্ধ কাব্য বিশারদ প্রভৃতি।

হরিশ্বারে কুম্ভমেলা

ব্রক্ষচারী রাজকৃষ্ণ

ভারতের তথা সমগ্র বিধের সর্ববৃহৎ ধার্মিক মেলা—কুজমেলা এইবার ধরিবারে বিশেব জাকজমকভাবে অমুষ্ঠিত হইরা গেল। বাধীন ভারতে এইটই ইহার প্রথম অধিবেশন। কুজমেলা ভারতের জাতীর মংগমেলা। লক্ষ লক্ষ মরনারী প্রাণের আবেগে সমবেত হয়—এই মহামেলা উপলক্ষে ভারতের চারিট প্রান্তে প্রয়াগ, হরিবার, উজ্জারিনী এবং নাসিকে। কে জানে কোল কুলুর অভীতের বক্ষ বিদীর্ণ করিরা এই মহান্ প্রেরণা ও উদ্দীপনামরী ওভ তিথির আবির্ভাবে আসমুত্র-ইমাচলবাসী হিন্দু ল্রনারীর প্রাণে এই প্রবল ধর্মোম্বাদনার স্বাষ্ট ধ্ইয়াছিল। ইতিহাসও তাহার পরিচর দিতে অপারগ।

কুৰ্মেলার উৎপত্তি সম্পর্কে পুরাণোক্ত ঘটনার পাই—কীর সন্ত মধ্যে অমৃতকুত কুছে ধ্যক্তরি আবিভূতি হুইয়া বেবরার ইত্রের নিকট

The second second

অমৃতক্স সমর্পণ করার দেবাস্থরে সংগ্রাম বাথে। দেবরাজ ইক্র তদীর
পূত্র জরস্তকে সেই অমৃত কুম্ব প্রদান করিলে—জরস্ত তাহা মর্ত্তের
চারিটি ছানে এক্দিন করিরা পুকাইরা রাথেন। দেবতাগণের একদিনে
মাসুবের বাদশ বংসর, তাই প্রতি বার বংসরে উক্ত চারিটি ছানে অমৃত
কুম্ববোর্গ উপলক্ষে মহামেলার অধিবেশন হইরা আসিতেছে।

এই কুছমেলা উপলক্ষে বিশেষ করিয়া হরিছার এবং প্ররাণে সহস্র সহস্র সাধু সন্মাসীর সমাগম হয়। এইবারও সিরি-বন-কান্তার অতিক্রম করিয়া হিমালরের তুবারমভিত শূলরালি উল্লেখন করিয়া দূর দূরান্তর হইতে সন্মাসীপণ আসিরাহিলেন দলে দলে—এই মহামেলায় সন্মিলিত হইতে। কী গভীর উৎকঠা আবেগ প্রাণে লইরা—এই সাধু সমান্ত মেলায় সমাগত হয়—তাহা বিশি মা দেখিরাহেশ—ভাবার করাণাতীত। উত্তরাধণ্ডের প্রথম ছুর্গমতা, শৈত্যের প্রচণ্ডতা উপেকা করিয়া ফক্ষিণাপথ হইতে সন্নাসীর দল আসেন এই মহাপুণ্য তিথিতে তুবার-শীতল প্রমাণারার অবপাহন করিতে। সানের যে কী উদগ্র আকাজকা পৃঠে সমাসীন হইরা অথবা শিবিকারোহণে ভাব গদগদকঠে বেদমন্ত্র ধ্বনিত করিতে করিতে সানার্থে বৃগবুগান্তরের আধ্যান্ত্রিক বিভূতি-মণ্ডিত ব্রহাকুও অভিমূথে বাইতেছিলেন—বিনি সে দুখা দর্শন না

একদল স্নানার্থী সন্মাসীর ব্রহ্মকুণ্ডে গমন



ভারত সেবাশ্রমসংবে কেন্দ্রীর সরকারের শ্রমমন্ত্রী জীজগন্দীবনরাম কটো—একাচারী মৃত্যুঞ্জর

ভাষা প্রত্যক্ষ না করিলে হাষ্ম্মসম করা অসম্ভব । স্নানাভিবানের দৃশুও বড় মধ্র ও ভাবাবেপপ্র। অটাকৃট্শোভিত, ভস্বিষ্ঠিত সন্নাসীগণ বধন সভ্যবস্থভাবে "হর হর মহাধ্যে" ধ্যনি করিছে করিভে হ্রী-স্থ-

বৃদ্ধ বৃদ্ধা আদেন—সারা জনমের পাপ-তাপ ক্লান্তি-কালিয়া বিস্তান দিয়া নির্ম্মণ নিস্পাপ নিদস্ব হইতে; জীবনতরণীর স্থায়িছের পরিমাপে অক্ষম —মধ্যম ব্রুসের মরনারী আনেম, অসমাপ্ত চল্ডি প্রেম্বর সাধ্যের সঞ্চ

করিয়াছেন—ভাঁহাকে কি ভাবে বুঝাইব—বে সেই দৃশ্য কত মাধুৰ্ব্য-মর বা ভাবপ্রদ। স্বালে ভন্ম অবলেপিত হইরাছে,--শিরোপরি কেশদাম অবড্রে জটার আকার ধারণ করিয়াছে। সামাক্ত পরিধের-টুকুও বিলাস-সৌধীনতার আশহায় বাঁহাদের অকে স্থানপার নাই, এমনতর সহস্র সহস্র সর্ববিত্যাগী সল্লাণী চলিরাছেন সামমত্রে আকাশ-বাতাস মুধরিত করিয়া স্থানাভিলাধে —এ দৃখ্য তো বিশ্বন্ত হইবার নহে। হে পাশ্চাত্য শিক্ষাগৰ্কী ভারতের নব্যসমাজ, একবার শ্রদাবুচিতে দর্শন করতোকুস্তমেলার ভাবোদ্বেলিত সন্মাসীসমাকের সানাভিযান,—বুঝিতে পারিবে ভোগোমুখ পাশ্চাত্য এবং তপদৈক-সম্বল প্রাচ্যের পার্বক্য কোপার!

সাধুদর্শন, সংগ্রসঙ্গ এবং মহা-পুণ্যিত এই ওভ লগ্নে স্নানভিলাখে লক লক গৃহী নরনারীরও সমাগম रत वहे कुछ। मना छेशन का। महत সহল মাইল দূর দুরান্তর, এমন कि अपूर्व व्यक्तिका उक्तामण इहेट हिन्तूगन जानिबाहिरतन- এই नाधू দৰ্শন তথা সভাপাতক সংহত্ৰী আহ্ৰীর পূত পবিত্র বারিরাখিতে नाःनात्रिक बालानाला धुरेना बृहिन নিঃশেব করিরা দিতে। আগামী মেলার আগমনের পূর্কেই খীয় कीवन-मीश निकाशतत्र जानक ক্রিয়া যেন সকলেই সমবেত হয়-এই মহাপুশ্যিত উৎসংখন মাধুর্ব্যের আৰাদ করিতে। তাই অশীতিপর

করিতে। আবার কেছ বা আদেন বুগর্গান্তরের আব্যাত্মিক শক্তি-পুত এই উৎসবের আনন্দ উপভোগ করিতে।

গৃহীর সহিত সয়াসীর মহামিলনের মহাতিথি এই কুজনেলা।
প্রাচীন ভারতে সর্ব্যাই সাধুসমাজের সহিত গৃহীকুলের সহজ ছিল
এক অক্ষেভস্তে গাঁথা। কিন্তু কালক্রমে সে আদর্শ পরিত্যক্ত
হইরাছিল। তাই আধুনিক ভারতে গৃহী তথা সাধুসমাজের এই
ছরবস্থা। আচার্য শংকর এই কুলমেলার সংস্কার সাধন করিয়া
সয়াসী-সমাজের সহিত গৃহস্থ-সমাজের এক সংযোগ স্থাপন করিয়া
ভারতের সয়াসী-সমাজকে আবার সমাজ সেবার উদ্ব্রু করিয়াছিলেন।
আচার্যাশংকর গিরি, সাগর, পর্বত, বন, অরণা, প্রী প্রভৃতি দশনামী

मन्नामी मन्धनात्रत यष्टि कतित्रा এক একটি সম্প্রদারের উপর জাতিগঠন, ধর্মপ্রচার প্রভৃতির দারিত্ব অর্পণ করিয়াছিলেন। পার্বভা প্রদেশে একদল সন্মাসী থাকিয়া ধর্মপ্রচার করিবে—তাহাদের নাম—গিরি অপবা পর্বত সম্প্রদার। সমুজের উপকৃলবভী অনপদে অবস্থান করিয়া একদল সম্যাদী জাতি সংগঠন, সমাজ সংকার ইত্যাদি কাষ্ণে আন্ধনিয়োগ করিবে—ভাহারা হইবে ন সাগর সম্প্রদারভুক্ত। এইরপে নগরে থাকিবেন-পুরী সম্প্রদার, অরণা-বনে থাকিবেন वन अवर अवना मल्लामात्र। পরাধীন ভারতে বিদেশী তথা বিধৰ্মীর শাসনকালে ভারতের সন্মাসী সমাজ আচার্ব্য শংকরের

অপিত দেই দায়িত বিশ্বত হইরাছে। আজ ভারতের সহত্র সহত্র সন্মানী বীয় দায়িত ছাড়িয়া সমাজের গলগ্রহ হইয়া গাঁড়াইয়াছে।

সাধ্যমাজের উপার শুন্ত দারিত তথা কর্তব্যের কথা দারণ করাইয়।
দেওরার উদ্দেশ্যেই ১৯২৭ সালে ভারত সেবাঞাম সংবের অধিষ্ঠাতা
আগর্বা বামী প্রণবানন্দরী।মহারাজ কুরমেলার সেবাকার্যা তথা ধর্মআগরের ব্যাপক আরোজন করেন। সেই সমর হইতে প্রতি কুরমেলার
সজ্য হইতে সেবাকার্য্য এবং ধর্ম প্রচারের ব্যবস্থা হইরা থাকে। এইবার
হরিবারেও সন্ন্যাসীগপের মধ্যে বিশেষভাবে প্রচারকার্য্য তথা বাত্রীলের
সর্প্রকারের সহারভাগানের ব্যবস্থা হইরাছিল।

এই বহারেলার সভব হইতে একটি সর্বভারতীয় সাংস্কৃতিক সম্মেলনের স্থারোল্ব করা ইইয়াছিল। ভারতের বিভিন্ন প্রান্ত হইতে প্রতিনিধিগণ বোগদান করিয়ছিলেন এই সম্মেলনে। ভারতীয় কাতীয় কংগ্রেসের নাধারণ সম্পাদক শ্রীযুত শংকররাও দেও, ওরার্কিং ক্ষিটির জন্মরী বৈঠকের জন্ম উপস্থিত থাকিতে না পারার ভারতের প্রমন্ত্রী শ্রীযুত জগলীবন রাম এবং অধিল ভারত আর্থার্থর্ম সেবাসজ্বের মভাপতি গোষামী গণেশদভ্রী উক্ত সম্মেলনে সভাপতিত্ব করেন।

সম্মেলনে বক্তৃতা প্রসঙ্গে শ্রীবৃত জগজীবন রাম বলেন—"বর্ত্তমানে ধর্ম ও লোকাচারের নামে ভারতীয় সংস্কৃতির মধ্যে বহু কুসংস্কার আসিরা পড়িরাছে, যাহার স্থান প্রাচীন সংস্কৃতির মধ্যে ছিল না। সেই কুসংস্কার রাজি অপসারিত করিয়া ভারতীয় সংস্কৃতিকে কলম্মুক্ত করিতে পারিকে তাহা পুনরায় সমস্তাসমূল ভারত তথা সমগ্র জগতের পক্ষে বিশেষ



ভারত সেবাশ্রম সংঘ কর্তৃক অমুপ্তিত হরিবার সাংস্কৃতিক সম্মেলনে শীলগন্ধীবন রাম। দক্ষিণে এবং বামে উত্তর প্রদেশের আবগারী বিভাগের মন্ত্রী চৌধুরী গিরিধারী লাল ও শীসি-এম-নিগম—হরিবার

কুম্বদোর নিয়োজিত অফিসর

কল্যাণকর হইবে।" অশ্শৃস্ততা ও অনাচরনীয়তার উল্লেখ করিয়া সভাপতি মহাশ্র বলেন—"হিন্দুধর্ম বদি বিবের সকলের মধ্যে একই আন্ধার অন্তিছের দাবী করে তবে তাহার স্মান্ত জীবনে শশ্সাম্পুঞ্জের উন্নত অনুন্ততের প্রশ্ন আসে কেমন করিয়া। বে হিন্দু-ধর্মের ক্রীরামচন্দ্র চঙাল গুহককে কোল দিয়াছিলেন—সেই ধর্মের বধ্যে ঘোর অন্দুস্ততা কিন্তুপে আসিল ?

ধর্ম ও বিজ্ঞানের মতবৈধতার কথা উল্লেখ করিয়া বীযুত অগলীবন রাম বলেন—"ধর্ম ও বিজ্ঞানের মধ্যে যে বিরোধ তাহা একাছ কাল্লিক। আমি বিজ্ঞানের ছাত্র, কিন্তু বিজ্ঞান আমাকে নাত্তিক করে নাই। বিজ্ঞান কতকগুলি সিদ্ধান্ত প্রথমে মানিরা লয়—পরে প্রমাণ বা প্রারোপের বারা উহার সভ্যতা নির্পন্ন করে। ধর্মত সেইরূপ কতকগুলি সত্যকে মানিরা লইরা প্রমাণ বা প্ররোগের খারা ভাষার সভ্যতা নির্দারিত করে। ভারতীর সংস্কৃতি বিজ্ঞানবাদের উপর প্রতিষ্ঠিত। বিজ্ঞানকে উপেকা করিয়া ধর্ম এবং ধর্মকে বাদ দিরা বিজ্ঞান টিকিতে পারে বা। ইহাই আমার পরিপূর্ণ বিখাস।"

'সিকিউলার ষ্টেট"—কথাটির তাৎপর্য ব্যাখ্যা করিয়া মন্ত্রীনহোদর বলেন—লামাদের সরকার ধর্মনিরপেক রাষ্ট্র বটে, কিন্তু সে রাষ্ট্র বদি ধর্মহীন হইভ তবে আমার ভার আতিকের ছান সেখানে হইভ বা। ধর্মনিরপেক রাষ্ট্র বলিতে ইহাই বুঝার সে রাষ্ট্র কোন সাংখ্যদারিক ধর্মের প্রথার দিবে না।"

সভ্যের সাংস্কৃতিক মিশনের নেতা খানী অবৈতানন্দলী বলেন— লাতি গঠনের সমস্তাই আল লগতের সমক্ষে প্রধান সমস্তা। এই

হরিষারে ভারত সেবাশ্রম সংবের সাংস্কৃতিক সম্মেলনে বামী অবৈতাদন্দ্রীর বক্তু ভা

সমস্তার সমাধানের জন্মই ভারতের স্বাধীনতা। ভারতীর সংস্কৃতিই এছদিন বিবকে শান্তির বাণী গুনাইরা জগতের প্রকৃত কল্যাণ করিরা-ছিল। সে দারিত আজ বাণীন ভারতের নাগরিক্সণকে প্রহণ করিতে হইবে।"

বহিন্তারতে ভারতীয় সংস্কৃতির প্রচার, পূর্ববন্ধের উবাস্থানের প্রতি সক্রিয় সহামুভূতি প্রবর্ণন, বিশ্ববিদ্যালরে বাধ্যতার্গক ভারতীয় সংস্কৃতির প্রচারের উপবৃক্ত শিক্ষা প্রবর্ত্তনের দাবী কানাইরা সম্মেলনে ক্রেক্টি প্রভাব গৃহীত হয়।

সম্মেলনের সাফ্যা কাষৰা করিরা বাঁহারা তাহাদের **ওভেজা এ**রের করেন তর্মধ্যে—ভারতীর পণতজ্ঞের সভাপতি ডাঃ রাজেল প্রসান, কথান মন্ত্রী পঞ্জিত অভহরলাল নেহঞ্চ, উপপ্রধান মন্ত্রী সূদ্ধার ব্যৱভাষ্ট

প্যাটেল, পার্লামেণ্টের স্পীকার বী জি-ভি মবলংকার, কেন্দ্রীর সরকারের মন্ত্রী বী কে-পান্তনম, ডাঃ শুমাগ্রসাদ মুখোপাধ্যার, পাঞ্লাব, মুক্তব্যবেশ, আসাম প্রস্কৃতি প্রমেশের গভর্ণর এবং প্রধানমন্ত্রীগণ, ভারতীয় জাতীয় কংগ্রেসের সাধারণ সম্পাদক বীশহর রাও দেও, বোঘাইরের মেরর বী এস-কে-পাতিল অক্ততম।

সন্ন্যাসী সমাজকে সমাজ সেবার উত্ত্ব করিবার উদ্বেশ্য সংজ্ঞর পক্ষ হইতে একটি অবিল ভারতীর সন্ন্যাসী সম্মেলন অনুষ্ঠিত হর। এই সম্মেলনে সভাপতিত করেন — প্রবণনাথ মঠের মঠাধ্যক্ষ মঙলেখর আমী মোহনানন্দী। সভাপতির অভিভাবণে বামীজি বলেন— "হিন্দু লাত্র 'আন্ধনোমোকার্থকে জগছিতার চ"— কর্বাৎ নিজের মুক্তি এবং জগছ কল্যাণের আমুণ্ সিদ্ধির জক্ত নিরন্তর কর্ম্ম করিবার জক্ত আদেশ

দিরাছেন। ছঃখের বিবর সাধু-সমাজ আজ জগৎ কল্যাণের আদর্শ বিশ্বত হইরা মারাবাদের নামে এক ভাত আত্মকেন্দ্ৰিক অধ্যাত্ম সাধনার ব্যাপত হইলা পড়িয়াছেন। তাহারা ভুলিরা পিরাছেন বে ব্যাস, আচার্যাগণ, বীরাম বশিষ্ঠাদি প্রীকৃষ্ণ আদি অবভার পুরুষপণ লোক সংগ্ৰহের অস্ত প্রাণ-পাডী পত্নিশ্রম করিয়া ভিলে ভিলে আ জাদান করিয়া গিয়াছেন। বর্ডমান যুগেও 🖣 রাম সুক विटवकानम, महर्वि प्रवानम, बानी व्यवानम व्यक्ति महानूस्वर्गन वह সমাজ সেবার আদর্শ বরণ করিয়াই নিজেদের জীবনের কর্ম পাছ! নিষ্কারণ করিরাছেন।"

বর্ত্তমান ভারতের ভয়াবহ অবহার পর্যালোচনা করিয়া বামীজী

বলেন—"ভারত বিভাগের সঙ্গে সঙ্গে আরু বখন লক লক আতা-ভণিনী বলন তথা সহারস্থলহীন হইনা নিদারূপ হুংখ বিপ্রের সৃত্থীন হইনাছে,—বখন সমাজের নৈতিক অধােগতি চরমসীনার উপনীত হইনা ভারতের অতীত ঐতিহনে কলভিত করিতে বসিরাছে,—বখন সাধ্সমাজের চিরভন সেবক গৃহত্তুল নানা সমস্তালালে বিভড়িত, সেই হুর্নোগ মুহুর্ভে ভারতের সাধ্সমাজ কিরপে নীর্ব নীখর হইনা খেল বে আনে ? এই মহা ছুর্দিনেও কী সন্থাসী সমাজের বােহনিজার অবসান্ ঘটিবে না ? পরিনেবে সভাপতি মহালর সরাাসী সমাজকে ভারত সেবাশ্রস্ক এবং রামকুক নিশনের সমাজ সেবার আঘর্মে অন্থানিত হইতে আবেষন আমান।

ফটো—ব্ৰহ্মচারী মৃত্যুঞ্জ

त्मनात अवन किए णाः बात्मक्षयमात विवाद **कालक्ष**े किनि

গলালান, গ**লাপুলা, মন্দির প্রদক্ষিণ ইত্যাদি অমুঠান** করিলে জন-সাধারণের মধ্যে বেশ একটা ভাবের স্থ**টি হ**র।

অধিল ভারত সাধুসন্দেলনের প্রস্তাবাবলী

১। সাধুস্ল্লাসী, ত্যাপী তপৰী মহান্দাগণই ভারতীয় শিক্ষা সংস্কৃতি, ধর্ম ও সাধনার প্রকৃত ধারক ও বাহক। সমগ্র জীবনব্যাপী কঠোর তপশ্চর্যার বারা তাঁহারাই ভারত্ত্ব ধর্ম ও সংস্কৃতিকে জাপ্রত জীবত্ত রাধিরা মাকুবকে প্রকৃত শান্তি ও কল্যাণ দান করিরাছেন। আল ধর্মের প্লানি, নৈতিক অধংপতন এবং প্রনীতি ও অনাচারের প্রসারের কলে সমগ্র দেশে যে হঃখনৈক্ত অলান্তি দেখা দিরাছে; সাধুস্মালের অকুষ্ঠ সেবা ও অক্লান্ত পরিশ্রমের বারাই কেবল তাহা দুরীভূত হইতে পারে। এতৎ সম্পর্কে তাহাদের এক মহান্ কর্ত্ব্য দায়িত্ব আছে। স্তরাং অধিল ভারতীর সাধু সম্মেলনের এই অধিবেশন মত, পথ ও সম্প্রদার নির্বিশ্বের প্রত্যেক সাধু, সন্ত, মোহান্ত, আখড়া ও মঠাধীশকে এই কর্ত্ব্য উদ্যাপনে অগ্রসর হইতে আবেদন জানাইতেছে।

২। সাধ্সমাজের অমনোযোগ ও অনবহিত থাকার স্থোপে বিলাতীয় রাইকর্ত্পক ভারতীর জনসাধারণের শ্রজার পাত্র সাধ্সমাজকে 'অলুৎপাদক' (unproductive) আখ্যার আখ্যারিত করিয়া সমাজবহিত্তি গণিকা শ্রেণীভূক্ত করিয়াছে। সাধ্সমাজকে সংঘবজ্ঞাবে ইহার প্রতিকারের উপার উদ্ভাবন করিতে এই অধিল ভারতীয় সাধ্ সম্মেলন অস্থ্রোধ জানাইতেছে এবং আগামী আদম স্মারীতে সাধ্সমাজকে উৎপাদক শ্রেণীর মধ্যে পণ্য করিতে এই সম্মেলন সরকারকে অন্ত্রোধ করিতেছে।

ইহা ছাড়া সাধুস্মাঞ্জকে উপযুক্ত শিক্ষাদীকা প্রদান করিয়া সমাঞ্চলেবর উৰ্দ্ধ করিতে অক্সরোধ করিয়া আর একটি প্রতান্সন্মেগনে গৃহীত হয়। সম্মেলনের সাফল্য কামনা করিয়া সারদাপীঠাধীশ অগদ্ভর শীশকরাচার্য্য বাণী প্রেরণ করেন।

এইবার মেলার প্রার ১২ লক্ষ নরনারীর সমাগম

মেলা স্থ চুরাপে এবং সাফল্য সহকারে উদ্যাপনের উদ্দেশ্যে সরকার হইতে এইবার বিশেষ পরিপাটির সহিত মুর্ব্ধপ্রকার ব্যবস্থা করা হয়। কলেরা প্রতিষেধক ব্যবস্থায় সরকার এই বংসর বিশেষ কৃতিত্ব প্রদান করিয়াছেন।

দেবা বিভাগের কার্যাদি হিন্দুখান স্বাউট, ভারতীয় গার্ল গাইছ, ভারত সেবাশ্রম সজ্য এবং মহাবীর দলের স্বেছানেবক তথা কর্তৃপক্ষণণের দিবারাত্র কঠোর পরিশ্রমের কলে বেশ ভালভাবেই সম্পন্ন হইয়াছে।

মেলার এখান স্নানের দিনের একটি মাত্র ঘটনার সমস্ত বেচ্ছাসেবক তথা যাত্রীগণের অন্তরে এক গভীর শোকের ছারাপাত করিরাছিল। পুলিশ কতুপিকের দূরদ্শিতার জন্তই বে উক্ত ঘটনাটি ঘটিয়াছিল— প্রত্যক্ষণশীর ইহাই অভিমত।

ত-শে চৈত্র, মহাবিষ্ব সংক্রান্তি প্রকৃত কুজযোগের তিথি। ২৯শে চৈত্র রাত্রি ১২টার পর হইতেই ুমান আরম্ভ হইরাছে। সহল সহল নরনারী "হর হর মহাদেব"—"গলা মারিকী জর" ধরনি করিতে বাটি অভিমুখে চলিরাছে। কী প্রাণের আবেগ, কী গভীর উৎকণ্ঠা হৃদরের। হাজার মাইল দূর হইতে বাত্রী আসিরাছে—এই রাত্রি নিশীশে পূণ্যধারায় একটি ডুব দিতে। পথের আভি-ক্রান্তিঃ সাংসারিক ছংখকট, গ্লানিয়ানি সব ধুইরা মুছিয়া নিঃশেব হইয়া বাইবে—এ একটিমাত্র ড্ব—একবার মাত্র মন্তক নিমজনের পরস্কুতে—। এই শ্রদ্ধা বিষাস লইয়া অগণিত যাত্রীর দল চলিয়াছে ব্রক্ষকুতে। স্লবাক হইতে হয়—মানের পরে তাহাদের প্রকৃত্বতা দেখিয়া। নির্ম্বল নিম্পাপ চরিত্রের প্রসন্নতা কুটিয়া ওঠে—সিতব্যসম ভজের মুধ্মওলে।

বেলা তথন প্রার ৭টা। ঘাটে ভিড্রের চাপ ক্রমশঃ বাড়িরা উঠিল, যাঞীদের নানা প্রকারে সহায়তা দানে আমরা এবং বেচহাসেবকণণ সকলে ব্যস্ত। ব্রহ্মকুণ্ডে আগমনের রান্তার একটি দরজার প্রিশ বাঞীদের ভিড় নিরন্ত্রণ করিতেছিল। অক্সাৎ জানিনা কী কারণে সেই দরজার কিছু অংশ বন্ধ করা হইল। মাত্র থমিনিটের মধ্যে দরজার উভয় পার্বে মাতায়াতের উপযুক্ত রান্তা না পাণ্ডয়ার ভীষণ ভিড় ক্রমিরা গেল। এই সময়েই জনতার পারের নীচে যাণ্ডরা ৩২জন প্রাণ হারাইল এবং বহু যাঞী আহত হইল।

কুজমেলা দর্শনের সোঁভাগ্য থাঁহার হইরাছে, তিনি ব্বিরাছেন বে ছিল্পর্বের মধ্যে প্রাদেশিকতার দেশ নাই, মতবৈধতার ছান নেই এতটুকু। একই উদ্দেশ্যে মহামিলনের পূর্ণ ক্বোগ রহিরাছে হিল্পুর তীর্থস্থানগুলিই হিল্পু সংস্কৃতির তথা জাতির মহাপীঠন্থান এবং এই তীর্থস্থানগুলিকেই কেন্দ্র করিরাই হিল্পুর্ধন্ধ আবার লাগ্রত হইবে।



নিজ্ঞান মনের পরিচয়

শ্রীশান্তশীল বিশ্বাদ

মাসুবের মন বলতে সাধারণের কাছে ও ধুসজ্ঞান (চেতন) মনের কথাই মনে হয়. কিছ এই সজ্ঞান মনই ত আর মাসুবের সমস্ত মন নয়; মনের বিভিন্ন তর আছে;—সজ্ঞান, আসংজ্ঞান ও নিজ্ঞান মন—এই সব কয়টা মিলিয়ে সতি।কারের মাসুবের মন। এখন মনের শেষোক্ত ছই স্তরের পরিচয় দেবার চেটা কয়া যাক্।

'আসংজ্ঞান মন' ঠিক সজ্ঞান মনের পরেই থাকে, যেথানে চিন্তারাশি এত তৎপর হরে থাকে বে একটু হ্যোগ পেলেই তা সজ্ঞান মনে চলে আসতে পারে। যেয়ন ধরুন, খরে বসে পড়া গুনা করছেন আর আপনার পাশের টেবিলে রয়েছে ঘড়ি, টিক্টিক্ শব্দে চলেছে, আপনার সজ্ঞান মনে সে শব্দবোধ আস্তে না কিন্তু আসবার অক্ত সর্বদাই তৎপর; হঠাৎ ঘড়িটা বন্ধ হরে গেল—অম্নি আপনার থেয়ালে এলো যে ঘড়িটাবন্ধ হরে গেছে। আর নিজ্ঞান মন বলতে বোঝার বেখানকার চিন্তারাশি সোলাহ্রিজ আপনার চেতনাত্তে আসবার চেট্টা করেও সহজে আস্তে পারে না, অথবা এলে আপনি তাকে চিত্তে পারেন না যে এ আপনার মনেরই কথা।

সাধারণ মাসুষ মনের এই সজ্ঞান ও নিজ্ঞান তারের মধ্যে সামপ্রস্থ বিধান চেতন বা অচেতন ভাবে করেই চলে। এই ছুই তারের মধ্যে যেদিন আর সামপ্রস্থা রাখ্তে পারে না তথনি হর দে অথাভাবিক। তাই অনেক অথাভাবিকতা বা সাধারণ মানুদের মধ্যে বা পাগলের মধ্যে দেখা যার তার কার্য্যকারণের সন্ধান মেলে ঐ নিজ্ঞান মনেই। এই ভাবে মনকে তারে তারে ভাগ করে নিয়ে কোনও মানসিক ঘটনার কারণ উদ্ঘটন করার মামই মনঃদমীকণ (Psycho-analysis)—যার প্রথম স্প্রীকর্তা ডাঃ সিগ্রুগু ক্রমেড।

এই নিজ্ঞান মনের গঠন সজ্ঞান মনকে সর্বাদাই প্রকাবায়িত করে বা করবার চেষ্টা করে। আমরা করনও তা ব্যক্তে পারি, কর্থনও তা পারি না! বেমন একজনের হয়ত দেশ-দেশান্তর বেড়াতে পুর ভাল লাগে। তিনি ছ্যোগ পেলেই তার জরপের কথা বল্তে চান্। তাকে বিদিক্ষানা করা বায় 'অমশ' আপনার এত ভাল লাগে কেন; তিনি পরিস্কার বলবেন যে তার ওটাই পুর ভাল লাগে অর্থাৎ তিনি সচেতন যে তার এই অমুপ্রেরণার উৎস তার নিজের ভেতরেই আছে—আছে তার নিজ্ঞান মনে এই ধরপের প্রেরণাপূর্ণ বিশেব মানসিক গঠনকে মনন্তবের ভাবার 'গুট্চবা' (complex) বলে। আবার আর এক ধরপের 'গুট্চবা' নিজ্ঞান মনে গড়ে ওঠে বা খেকে বার, সজ্ঞান মনে বার কোনও সহল পরিচর থাকে না। এই সকল মানসিক লটিলতা গড়ে ওঠে মানসিক ছটিলতা প্রক্রের আন্তান্তর মুণ্ডা আছে। সেই ব্যক্তিটি এমন এক কাজ পেলেন বাকে আপনিও পুর ভাল বাসেন, অথচ হয়ত কিছুছিন বাদে

দেখা গেল যে আপনার ঐ কাজটার ওপরে আর এআ নেই। আপনি স্বন্ধ করেছেন ঐ কাজটাকে যুণা করতে। আপনাকে জিজালা করলে আপনি বলবেন "আমার কাছে ও কাজটা ভাল লাগে না তার কারণ এই সব দিক্ থেকে কাজটা পুব খারাপ ইত্যাদি"। এই রক্ষভাবে ভূরো বৃত্তি দিয়ে ঐ কাজটার প্রতি আপনার যুণার কারণ দেখাবার চেপ্তা করবেন। অখচ যুণার আদল কারণ রইল আপনার নিজের কাছেও অলানা— "আপনার ঐ যুণিত লোকটি যে ঐ কাজ করে।"

এই রক্ষ মানসিক 'জটিলতা' আবিকারের মধ্যে দিরে আমরা জানা মানুবের অজানা মনের গঠন জানুতে পারি। এই মানসিক গঠন আবিকারের কতকগুলি প্রণালী ফলিত-মনগুৰ আজ আমাদের বলে দিরেছে, বেমন Word Association Test, Free Association Test, Thematic apperception Test, Rorschach Test. এর মধ্যে এক "Free Association Test" ছাড়া সব করটাই সাধারণত: মনগুলিক গবেবণাগারে বনে সহজে করা সম্বন। Word Association Test-এর স্কেক্ডা ডাঃ ইয়ুক (Jung) একবার নাকি এক হাসপাতালে এক চুরির ব্যাপারে আসল চোরকে বার করতে সক্ষ হয়েছিলেন।

অনেক প্রকার মানসিক ব্যাধির কারণ এই নির্জ্ঞান মনেই থাকে। এর একটা উদাহরণ দেওয়া থাক্। এক রকম মানসিক ব্যাধি আছে থাকে বলে কিউগ (Fugue)। এ রকম মানসিক ব্যাধিপ্রত রোগীকে দেখা যার হরত হঠাৎ বাড়ী খেকে উধাও হরে দূর ভিন্ দেশে গিরে অক্ত-এক উপার্রে কিছুদিন কাটিরে বাড়ী কিরে এনে আর সেই অবস্থার কথা মনে করতে পারে না। ছটো অবস্থার—হত্ত ও অক্তন্ত হিলাধারার মধ্যে সামপ্রত্থা বিধান করা আর সভব হর না। একে বলে বিসন্ধ (Dissociation)। আবার এমনও অনেক সমর দেখা বার যাকে বলে 'হৈত অন্মিতা' (Double Personality)। একই মামুব কিছুদিন একরকম অন্মিতা থেকে আর একরকম অন্মিতা অবলব্দন করলেন, অথচ একের সক্ষে অপরের সামপ্রত্থা নেই—তারা সম্পূর্ণ পৃথক।

এ সবের নিজ্ঞান মনের অবদমিত বাসনার খেলাই একমাত্র কারণ।
একটা বাত্তবিক ঘটনা দেখালে এটা পরিকার হবে। রেভা: এনসের বোর্ণ নামে একজন পাদ্রি সাহেব হঠাৎ বাড়ী থেকে উধাও হরে পিতে পেনসিলভীনেয়ার অন্তর্গত নরিস টাউনে এ, বে, রাউন নাম নিরে এক দোকান খুলে বসেন ; অথচ এই অবস্থার থাকবার সমরে তার পুর্বের পাদ্রি জীবনের কিছু মনে হিল না, তথু মনে হিল বে তিনি অভ কোষাও খেকে চলে এসেছেন। তারপরে এইভাবে করেক সন্তাহ কারিরে হঠাৎ আবার পূর্বে জীবনের কথা,বনে আনে,তিনি তারপরে বাড়ী কিয়ে আন্তর্গন । কির

তথন পলাতক জীবদের দিনগুলি কি করে কাটিরে ছিলেন তাও আর মনে পড়ে না তার। (Psychology of Insanity—Burnard Hurt)।

রেভা: বোর্ণ পাণ্রি হলেও তার নিজ্ঞনি মনে ব্যবসা করে বড়লোক হবার এক উপ্রবাসনা অবদ্যিত হয়ে ছিল, যা এত অভ্যুতভাবেই পরিতৃপ্ত হয়েছিল। এ ধরণের মানসিক ব্যাধি ধ্ব কমই দেখা বার। সাধারণতঃ যে সব মানসিক বিকার যেমন প্যারানোইরা, হিন্তিরিয়া, মেনিকডিপ্রেস্টিভ সাইকোসিন, অবসেশন, কম্পালসান নিউরোসিস, একজাইটাল নিউরোসিস ইত্যাদি প্র বেশী সংখ্যাতে দেখা বার। তাদেরও সমস্ত মানসিক বৈলকপ্যের কারণ পাওয়া যায় ঐ নিজ্ঞান মনেই। এই সব রকম মানসিক ব্যাধি নিয়ে আলোচনা এখানে হানাভাবে সম্ভব নয়। তাও হু' একটা মানসিক ব্যাধির লক্ষণ নিয়ে বিলেষণ করে দেখা যাক। অনেক মানসিক বোগী আছে আলের ধারণা তারা মন্ত বড়লোক, কেউ হয়ত বলবে যে সে বিজে গাজিলী, কি স্থভাব বোন, কি আরও কত কি। একে মনস্তব্যের ভাবার বলে 'মেগালোম্যানিরা'। এর কারণ দেখা বায় নিজ্ঞান মনে রয়েছে 'আল্প্রেম' ও বড় হবার উপ্রবাসনা—বা সকল হরনি তাই এই চাবে বাস্তব বিজলতা করতে চার পূরণ।

আবার এক রকম রোগী আছে যাদেরকে বল্তে শোনা যায় যে তারা মাতৃগর্ভে চলে বেতে চার, অথবা এমন ভাবে সর্বদা বনে থাক্তে চার যেমন ভাবে শিশু ভূমিষ্ঠ হবার আগে মাতৃগর্ভে থাকে। এর কারণ মাত্রব যথন মাতৃগর্ভে থাকে তথন তার থাকে না আত্ম অনাত্ম বোধ। যার কলে দে থাকে চরম স্থাথ। তাই ভূমিষ্ঠ হবার সাথে সাথে পার এক মানসিক আঘাত বাকে বলা যার জন্মাঘাত (Birth Trauma)। তথনই তার প্নরার প্রাক্তর্ম অবস্থার কিরে যাবার বাসনা জন্মার সেটা থাকে অবদ্যাত হরে নিজ্ঞান মনের অন্তর্মনে। সেই অবদ্যাত বাসনা পরিত্ত্ত্ত করতে চার মাতৃগর্ভে ক্রণ বে অবস্থায় থাকে সেই ধরণে বনে থেকে। এই ধরণের অবদ্যাত বাসনার পরিত্ত্ত্বির চেটার অভিবাক্তি ক্ষন্থ সাথারণ মাত্রবের মধ্যে দেখা যার তার কুরুর কুওলি হয়ে শোবার চেটাতে—তা ছাড়া কুরুর কুওলি হয়ে শুরে কি আর মাত্রব সব চাইতে আরাম পার ?

এবার সাধারণ ভূলের কথা ধরা যাক্, যার কারণ থাকে এ নিজ্ঞান মনেই। যেমন একজন তার সহকর্মীকে জিল্ঞানা করছেন "কাল অধিস্ ছটি না বন্ধ ?" তার কারণ তার নিজ্ঞান মনে রয়েছে কাল যেন অধিস বন্ধই থাকে। একজন ফ্রন্তের ওপরে অত্যন্ত চটা ছিলেন তাই তিনি তার বিক্লছে লিখ্তে গিলে 'Freud'এর বানান 'Fraud' লিখেছিলেন ভূলে। এই কারণেই অনেক সমরে অনেককে প্রশ্ন করতে দেখা বার Leading question এ "চা আপনি থাবেন না ত ?"

এই নিজ্ঞান মনের প্রভাব বে কড বেশী আমাদের জীবনে তা

মনোবিজ্ঞানীর চোধে দেখালৈ পরিভার হরে ওঠে। বেমন ধরা বাক্

তিলুর ছেলে মন্ত বড় সাহেব হরেও অনেক কুথাত থেরেছেন এমন
লোক্কেও শোলা গেছে নিকিছ গোমাংস খুব বড়াই করে থেতে গিলে

আর পারের নি অধবা ধেতে পেরেও অহন্ত হরেছেন—অবশ্র তথু মানসিক কারণে। তারপর তার মুথে শোনা গেছে "এই মাংসটা অন্ত কিছুর জন্ত থেতে আপত্তি নেই; আপত্তি তথু অবান্থ্যকর বলেই," অবণ্ট যে কারণে সত্যিকারের গোমাংস অবান্থ্যকর সে কারণ আরও অনেক প্রকার মাংসেই ত বর্ত্তমান; সে সব ত অনেকেই থেতে পারের অনার বদনে। এই রকম নিজের মনের আসল হুর্কালতাকে চাক্বার জন্ত ভ্রোযুক্তি থাড়া করার নাম 'যুক্ত্যাভাস' (Rationalisation)। এই যুক্ত্যভাস' দিরে আমরা আমাদের মনের অনেক সংস্কার ও হুর্কালতার চিলা যুক্তির বাধনকে করি শক্ত এতে কোনও সক্ষোত্র ও হুর্কালতার চিলা যুক্তির বাধনকে করি শক্ত এতে কোনও সক্ষোত্র ও হুর্কালতার চিলা যুক্তির বাধনকে করি শক্ত এতে কোনও সক্ষোত্র তে আনত বেই। এমনি করে নিজেকে দিই কাকি। এই যুক্ত্যভাসের জোরে আজও বেঁচে আছে অনেক সামাজিক কুসংস্কার যাদেরকে জানি আমরা অভ্যায় কিন্তু আসল কাজের সমন্ন পারি মাকরতে কিছুই। মন হুর্কল হয়ে পড়ে যলেই নিমে আসি ভূরোযুক্তির বোঝা। একটু চিন্তা করলেই পরিকার হয়ে যার যে আসরা অনেক সমরেই যুক্তির চেন্নে মানসিক অবস্থা ও গঠন হারাই বেনী চালিত হই। '

আবার এই নিজ্ঞান মনের অন্তর্নিহিতে বর্তমান সংশ্বারই করেছে , সমাজ জীবনকৈ সন্তব, আমাদের মনে সর্ব্বমূহুর্তেই আসছে নানা বাস্কা যাদেরকে দমন না কর্লে আমাদের সমাজ, সভ্যতা বলে পাকে না কিছুই। এই সভ্যতার ভাজন পেকে আমাদেরকে সর্বাদা নিকৃত্ত করে আমাদের নিজ্ঞান মনেরই নিবেধবালা যাকে ডাঃ ক্রন্তেড বলেছেন 'অধিলাত্তা' (Super Ego), যা গড়ে ওঠে আমাদের মধ্যে শৈশহ থেকে পিতা যাতার অসুশাসনে, অসুকরণে, একীকরণে ও পরিবারের ও পারিপার্থিকের প্রভাবে ও সেই প্রভাবের বিভৃতিকরণে।

কিন্ত এই অধিশান্তার শাসনও নিরস্থুপ নর ? তাকে বিপর্যান্ত করে দিতে চার প্রতি মুহুর্জে নানা ধরণের আদিম বাসনা (Primitive Instincts)— যারা এসেছে আমাদের মধ্যে আদিম পিতৃপুরুবের কাছ থেকে। তাই মাসুবের নিজ্ঞান মনের অন্তরালে চলে কল (Conflict)। এই বন্দে কোন কোন সমরে অধিশান্তা হয় পরাজিত, আমাদের বাসনা হয় পরিতৃত্তা, কিন্তু অধিকাংশ সমরে অধিশান্তা মানে না হায়, তাকে বলায় রাখ্তে হয় মিজের প্রতিপত্তি— সকল কল্ফকারী বাসনাকে মনের আরও নিভূতকোপে নির্কাসনাদিয়ে। এই বাসনা নির্কাসনের নামই মনন্তব্বের ভাষার অবদমন, (Repression)। কিন্তু এই নির্কাসিত বাসনা বন্দিশান্তেও হয়ে থাকে চিরবিজ্ঞাহী—প্রতিক্ষণেই করে চলে কল্ফ, তাই বধনই আর গারি না আমরা হই শক্তির ভারসাম্য রাখ্তে তখনই আমরা হই—অন্তাবিক—এমন কি পাগল।

নাধারণতঃ এই সব অবদ্দিত বাসনা পরিতৃপ্ত হর দিবা ৰপ্পে ও বপ্পে। ৰপ্পেই মানুবের নিজানি বাসনার পরিচন্ন বাকে সব চাইতে পাট্ট। ভাঃ ক্লরেড তাই ৰগকে বলেছেন "মনের অচেতনে যাবার প্রশন্ত দ্বাজপ্ব"। অবশু এই বগই অনেক সমর আমাদের হন্দ বিকুদ্ধ বনের মিজাকে রাণে অটুট, কিন্ত ৰপ্পেও এই বাসনার পরিতৃত্তি একেবারে সোজাস্থিতি সভব হর না, কারণ সঞ্জান মন নিজিত হলেও নিজানি ৰনের রাজত্বের শাসক প্রছরীরা (Censor) হর না সম্পূর্ণ জলস, कात्रा वांधा स्वत्र वागवारक वद्यत्ररूप এगে हांना विट्छ। छाँहै এই বাধাকে অভিক্রম করে আসতে হয় বাসনাকে নানা প্রক্রিয়া করে—বেমন কুমীকরণ, সাহেতিকতা, অবস্থান্তর, নাটন, অভিকেপ ইত্যাদি। আমরা বর্ণের প্রকাশিতরপকে প্রায়ই সব সমর পাই "রূপক রূপে"। ভাই কোনও খণ্ডের বিভিন্ন বিষয় বস্তুকে ভাগ করে ভাগের অসুবল নিয়ে যথম এসে পড়ি স্থের অস্তনির্হিতরূপে, তথন বেধ্তে পাই এ चिषु वामनाबर (बना। चरभव अरे मव बरूम व्यक्तिका निरम चारनावना করা স্থানাভাবে এখানে সম্ভব নয়, শুধু একটা উদাহরণ নিয়ে এটা वाबवात्र रुष्टे। क्रा वाक्।

ধকুদ একজন ৰশ্ব দেধলেন বে ভাঁকে বাবে ভাড়া করেছে। এই ৰগ বিরেষণ করলে দেখা যাবে যে বাস্তবে তাঁর পিতা বা অক্স কোনও শাসকের ভীতিই হচ্ছে এর কারণ। শাসক (authority) নিরেছে ৰগে বাবের প্রতীক। শিশুদের বগ্ন অনেকটা সোজাক্জি প্রকাশিত 'হয়, কিন্তু বরস্থদের স্বপ্ন আরু সমরেই আসে অ্টিলাকারে।

বেতে পারে। বেমন দেখি জনের স্বভাব জনভাতে (crowd) মিশে হরে যার অনেক, সময়ে আর এক। সাধারণ জনতার বভাব লক্ষ্য করলে দেখা যায় ভার অনেক বৈশিষ্ট্য-যেমন এক বিশেষ কারণ বা লক্ষ্যবন্তকে নিয়ে গড়ে ওঠা অনতার পাকে প্রবল ভাবাবেগ, আর সাথে সাবে হরে যায় অনেক পরিমাণে বৃদ্ধিহীন। তাই জনতার মনে মন ষিলিয়ে অনেক বিচক্ষণ লোকও করে কেলে দের অনেক দারিছহীন কার্ড। এরকম কেন হর ? ভার কারণ বিলেবণ জিলবার্গ, মাকডুগাল बाबूथ व्यावस्क व्यावक निराम्ग का विकास वर्गमा अथारन सम्मान राहे। - ভাধু দেখা যাক্ নিজ্ঞান মনও এখানে কতথানি দারী। পুর্বেই উলেধ করেছি বে আমাদের মনের অচেতলে রয়েছে 'আদিম বভাব' বা জনতার মাৰে অক্তকে অনুকরণে, একীকরণে ও অক্তের ভাবাবেগের প্রভাবে (Sympathetic Induction) জনতার মাঝে নিজের দারিছ এড়াবার স্ববোগ নিমে হয়ে পড়ে অভিব্যক্ত।

আরকে 'মনতত্ত্ব' নানা ক্ষেত্রেই এগিয়ে গিরেছে। 'শিরু' ক্ষেত্রেও এগিরে জাগতে পিছপাও হয় নি। বলিও এই 'শি**রু**' কেত্রে [']মনন্তছের আলোপ মাত্র বিশ কি পঁচিশ বছর, তবুও এ দিরেছে উজ্জল ভবিষ্ঠতের

ইপিত। আলকের দিলে শিলকেতে সব চাইতে বড় সবকা দেখা দিয়েছে 'অমিক 'সমস্তার' নানাদিক।—অমিক বিক্ষোভ, ধর্মবট, অনুপছিতি, প্রমিক পরিবর্ত্তন ইত্যাদি, এ সব কারণে 'শিল-বাশিলা' क्रमांख व कि विवार क्रिकिंगांवेन शब्द जात अक्री छेपांद्व छैदान করছি তাতে পরিষার বোঝা বাবে। আমেরিকাতে ফিবশার 🕏 হারা এ ছ'লনে ১৯৩৪ সালে একটা হিসাব নিমে দেখেছেন একমাত্র শ্রমিক পরিবর্ত্তনের ফলে এক বছরে ১০০০ ,০০০০ ডলার পরিমাণ অর্থের ক্ষতি হরেছে। আরো কত ক্ষতিসাধন বে হতে পারে এই 'প্রমিক বিক্ষোতে'র কলে তা বুঝতে আর বেশী চিম্ভার প্রয়োজন হর মা। আজকের 'ক্লিড মনন্তৰ' মনোভাব-পরিমাপক একাবালার এলোগ ও আরও অক্তান্ত পদ্ধতিতে গবেষণা করে দেখেছেন এবং এখানে ক্লিকাতা বিশ্ব বিভালয়ের 'ফলিত মনন্তৰ' শাধাও এধানে গবেষণা করে যা পেরেছেম ভাতে দেখা যার এই শ্রমিকবিক্ষোভের ।।ব চাইতে বড় কারণের পুত্র श्याल के निर्कान मानहे, अभिक नाशांत्रालंत मानत मिकांति य হীনতাভাব (Inferiority Complex) কৰে ওঠে নানা ভাবে তারা এই নিজানি মনের থেলা আরো নানা দিক থেকে বিভাগ করা। অবিহেলিত ও অপমানিত হয়ে তারই কলে দেখা দের সংবাত। "মাহিমা বাড়াও" এই ক্ষেহাৰ আর সব ধর্মষটের কারণ বলে প্রতীন্নমান হলেও মনস্তাত্ত্বিক কারণ বেশীর ভাগ ক্ষেত্রে ওটা নর।

> আবার রাজনীতি ক্ষেত্রেও এই নিজ্ঞান সন্মের প্রভাবকে আবিকার করা কঠিন নর। সাধারণ বৃক্তিবাদের ওপরে অনেক সমরেই ছান পায় মানুবের মনের অন্তর্নিহিতে বর্ত্তমাম পুঞ্জীভূত সংস্কার (Prejudice)। এই কৌশলকে অবলম্বন করে রাজনীতি ক্ষেত্রেও অনেক ভিছুই সম্ভব হচ্ছে আনও, তাই রাজনীতির সব চাইতে বড় আর হল "প্রচার"। এই প্রচার সৰ চাইডে সাকল্য লাভ করে বধন সামাক্ত যুক্তির আবরণে গা ঢাকা দিরে চলে বেতে পারে মাতুবের নিজাম মনের ভিত্তিতে। উদাহরণ বরূপ বলা যেতে পারে বে নাৎসী জার্দ্বানীতে ১৫% অন শিক্ষিত হয়েও হিটলারকে তারা নিখেলের আণকর্তা বলে মনে कत्रठ, नारगीमालत्र व्यागत्रकार्यात्र काला। अहे जारव व्यामत्रा मर्कामिक থেকেই দেখতে পাই নিজান মনের গুরুত্ব ও প্রভাব।

> পদার্থবিভার বেষন 'ইথারের' অন্তিম্ব শীকার করে মিতে ছয়েছে ভার প্রত্যক্ষ জ্ঞান ছাড়াই ভা না হলে অনেক সমস্ভার হর না সমাধান, তেমনি নিজান মনকে বীকার হাড়া বছ প্রশ্ন থাকে অসীমাংসিত।



ত্রীগীতগোবিন্দে পাঠভেদ

শ্রীহরেকৃষ্ণ মুখোপাধ্যায় সাহিত্যরত্ন

প্রীগীতগোবিন্দের মত একথানি বছল-প্রচারিত গ্রন্থে পাঠ-ভেদ থাকা স্বাভাবিক। বিভিন্ন দেশে প্রচলিত একই গ্রন্থের ভিন্ন ভিন্ন পাঠ প্রায়ই দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু শ্রীগীতগোবিন্দে পাঠভেদ অত্যন্ত অল্প। অথচ আটশত বংসর পূর্বের রিভিত এই গ্রন্থথানি সারা ভারতবর্ষে আজিও সমান সমানৃত।

শ্রীগীতগোবিন্দের সন্দীতগুলির রূপান্তর ঘটরাছে বলিয়া
মনে হয় না। পাঠান্তর পাওয়া যায়—শ্লোকের মধ্যে,
শ্লোকের সংখ্যারও ন্যুনাধিক্য ঘটরাছে। বন্ধার সংস্করণ
অপেক্ষা বোদাই নির্ণর্গাগরযন্ত্রে মুদ্রিত সংস্করণে কয়েকটি
শ্লোক অধিক আছে। আবার বাদালায় প্রচলিত গ্রন্থের
বাদালী টীকাকারগণও কেহ কেহ কোন কোন শ্লোক
ব্যাধ্যা করেন নাই। উদাহরণস্বরূপ সর্গাস্ত শ্লোকগুলির
উল্লেখ করিতে পারি।

বাঙ্গালী টীকাকারগণের মধ্যে বোধ হয় ধৃতিদাস বৈছ বয়োজোষ্ঠ। নিতাধামগতে রসিকমোহন বিভাভূষণ মহাশ্য তৎসম্পাদিত শ্রীগীতগোবিন্দের ভূমিকায় নারায়ণ দাসের সময় নিরূপণ করিয়াছেন। "বহুবাণ ভুবন গণিতে শাকে" ৮৫>৪=>৪৫৮ मकासाय त्रमानाथ मन्त्रा "मरनात्रमा" नारम 'কাতম ধাতুর্দ্তি' রচনা করেন। রমানাথ 'ৎসর' ধাতু वाष्प्रत पम धारान विहाद श्रीनी जानी विल्म र 'इनयमि विक्रमा विमायुक्त नामन भाग के बाज क कर धार मा नामाय দাসের টাকার উল্লেখ করিয়াছেন। রমানাথ প্রীমন্ মহাপ্রভুর সম-সাময়িক। নারায়ণ দাস তাঁহার পূর্ববর্তী। নারায়ণ দাস শকাকার চতুদ্দশ শতকে বর্ত্তমান ছিলেন বলিয়া অমুমিত হয়। নারায়ণ দাস অপ্রণীত সর্বাক হৃদরী' টাকার পদাবতী শব্দের ব্যাখ্যার ধৃতিদাসের টাকা হইতে উদাহরণ উদ্ধৃত ক্রিয়াছেন—"শৃকারিডঞ্চ্যাহ ধৃতিদাসন্তদ সমীক্ষিতা বিধানমূ"। স্থতরাং শকাস্বার वित्राम्म भठत्क शृक्तिमारमञ्ज कोवश्कान व्यष्ट्रमान कन्ना हता। ধৃতিদাদের টীকার নাম 'সন্দর্ভ-দীপিকা'। প্রতি সর্গের শেবে—"ইত্যাস্থান চ্ছুৱানন বিশ্বাস বৈগ 🗃 প্রতিদাস

বিরচিতায়াং সন্দর্ভদীপিকায়াং শ্রীগতগোবিন্দ টাঁকায়াং"
এইরপ দেখা আছে। বন্ধবর পণ্ডিত শ্রীযুক্ত দীনেশচন্দ্র
ভট্টাচার্য্য মহাশয় "ইত্যাস্থান চতুরানন"—কথা কয়েকটি
হইতে অহমান করেন গ্রতিদাস কোন রাজসভাসদ ছিলেন।

য়তিদাস এবং নারায়ণদাসের টীকায় সর্গান্ত স্নোকের ব্যাপ্যা নাই। এসিয়াটিক সোদাইটার (নারায়ণ দাসের টীকায়্জ) পুঁথিতে সর্গান্ত স্নোকের ব্যাপ্যা নাই। রসিক্সোহন বিভাভ্ষণ সংগৃহীত টীকায় এবং বাঁকুড়া জেলার ভাতুল গ্রামনিবাসী প্রীযুক্ত মহেল্রনাথ পালিত মহাশ্রের সংগৃহীত ১৫৬৫ শকাকায় অহলিখিত পুঁথিতে নারায়ণদাসের টীকায় সর্গান্ত শ্লোকগুলি প্রাক্রনার দে মহাশয় বলেন, সর্গান্ত শ্লোকগুলি সন্দেহজ্ঞনক। কারণ মৈখিল পণ্ডিত শক্র মিশ্রুও অপ্রণীত রসমঞ্জরী টীকায় শ্লোকগুলির ব্যাখ্যা করেন নাই এবং রাণা কুক্ত রসিক্সিয়া টীকায় চতুর্ধ সর্গের অন্ত-শ্লোকের ব্যাখ্যায় বলিয়াছেন—"প্রবন্ধ পৃথিবী ভত্রা প্রবন্ধ প্রতির হরেং"।

আমার মনে হয় রাণা কুল্ক বোধ হয় একটি প্রবাদের ভিত্তিতে এইরপ মন্তব্য করিয়াছেন। প্রবাদটি এই (সংক্ষত ভক্তমাল)—পুরীর রাজা একথানি গীতগোবিন্দ প্রণয়ন করেন। কোন গ্রন্থ জগলাথ দেবের প্রিয়, পরীক্ষার জল্প জয়দেব রচিত ও স্বর্লিত গ্রন্থ ছইখানি জগলাথ মন্দিরে রাখিয়া ছয়ার বন্ধ করিয়া দেন। ছয়ার খ্লিলে দেখা য়ায়—জয়দেবের গ্রন্থ উপরে ও রাজার গ্রন্থ নীচে রহিয়াছে। ইহাতে রাজা ছঃখিত হইলে দৈববারী হয়—

ক্ষ্মদেবকৃত গ্ৰন্থ দাদশ যে সর্বে। ভবকৃত বার শ্লোক থাকিবেক অথ্যে॥

উড়িয়ার অধীশব গলপতিরাজ পুরুষোত্তমদেবের রচিউ একধানি গীতগোবিন্দের পরিচয় পাঞ্চয় বায়—"অভিনৰ গীতগোবিদ্দ"। হয়তো এই গ্রন্থ লইয়াই প্রবাদের উৎপত্তি এবং রাণা কুন্তের টীকায় এই প্রবাদের ইন্দিত রহিয়াছে।

বলেশর দহজনর্দনদেব ও তৎপুত্র যত্ বা জলালউদ্দীনের সভাপণ্ডিত রাঢ়ের রায়মুক্ট রহস্পতি মিশ্র একজন খ্যাতনামা পণ্ডিত। তিনি গীতগোবিন্দের টীকার সর্গান্ত শ্লোকের বাাখ্যা করিয়াছেন, কিন্তু কবির পরিচর-প্লোকের ব্যাখ্যা করেন নাই। শ্রীমহাপ্রভুর জনভিপরবর্তী বিখ্যাত টীকাকার পূজারী গোস্থামী সর্গান্ত শ্লোক তথা কবির পরিচয় প্লোকরও ব্যাখ্যা করিয়াছেন। বৃহস্পতি মিশ্র পাঁচশত বৎসরেরও পূর্বের বর্তমান ছিলেন। পূজারী গোস্থামীর বয়স চারিশত বৎসরের বেশী নহে।

আমাদের মতে শ্রীগীতগোবিন্দের সন্ধাত ও অপরাপর শ্লোকগুলির মত সূর্গান্ত শ্লোকগুলিও কবি জয়দেবের রচিত। জয়দেবের প্রায় সম-সময়েই ১১২৭ শকালায় সমাট লক্ষণ সেনের মহাসামন্ত বস্থদাসের পুত্র শ্রীধরদাসের "সঙ্কলিত সভ্জিকর্ণামৃতে" জয়দেব রচিত একত্রিশটি শ্লোকের মধ্যে শ্রীগীতগোবিন্দের পাচটি শ্লোক উদ্ধৃত আছে। তন্মধ্যে—

"বয়ন্ত্রী বিশ্ববৈধ্বহিত ইব মন্দারকুস্কুনৈ:॥

(সহক্তিকৰ্ণামৃত ॥ ১।৫৯।৪ ॥ কৃষ্ণভূজ: ॥) প্লোকটি জীগীতগোবিন্দের একাদশ সর্গের অন্তিমল্লোক। আমাদের নিশ্চয়তার আরো একটি কারণ, সর্গান্ত খ্লোক-গুলি গুঢ়ার্থ ব্যঞ্জক। প্রতি সর্গের বিষয়বস্তুর সঙ্গে— এমন কি সর্গের নামের সঙ্কেও এই সমস্ত শ্লোকের খনিষ্ট সম্বন্ধ রহিয়াছে। উদাহরণম্বরূপ উদ্ধৃত শ্লোকটিই গ্রহণ कतिएकि। এकाम्म मर्गत नाम "मानन गोविन्न"। সর্গের বর্ণনীয় বিষয় শ্রীরাধার অভিসার। শ্রীরাধাকে কুঞ্জে অভিসার করিতে দেখিয়া গোবিন্দ আনন্দিত হইয়াছেন। উদ্ধৃত প্লোকে কৃষ্ণভূবের বর্ণনা আছে। বে বাহ্যুগল শ্রীরাধাকে আলিকনের অন্ত লালায়িত, সেই ভুজ্বর সাক্ষাৎ অন্তক্সদৃশ কুবলরাপীড় হন্ডীর মৃত্যু-পূর্ব্ব-বমিত রক্তবিন্দুতে মণ্ডিত হইয়াছে। অর্থাৎ এ হেন हक्ष्मकृष्युगनांनी जीकृष्य श्रीतांशांदक व्यानिकानत कन् সানন্দে প্রতীক্ষা করিতেছেন। প্রত্যেক সর্গান্ত প্লোকেরই এইরপ ব্যঞ্জনা রহিয়াছে। শ্রীমন্তাগবতের মধ্যেও এই জাতীয় প্লোক পাওয়া যাইতেছে। দশন ক্ষরের বড়বিংশ অধ্যায়ের খেব খ্লোকটি এইরূপ---

দেবে বর্ষতি বক্ত বিপ্লবক্ষমা বজ্ঞান্ম পক্ষমানিলৈঃ
সীদৎ পালপণ্ড জ্লিয়াত্ম শরণং দৃষ্টাত্ম কম্পাৎ ত্ময়ন্।
উৎপাট্যেক করেণ শৈলমবলো লীলোচ্ছিলীক্ষং বথা
বিভ্রৎ গোষ্ঠমপাং মহেক্সমদভিদ্ শ্রীয়ার ইক্ষো গবাং॥

সর্গের নাম সকল পুঁথিতে একরপ নহে। বন্ধীয় সংস্করণের প্রথম সর্গের নাম 'সামোদ দামোদর'। বোধাই নির্পরসাগর সংস্করণেও এই নাম গৃহীত হইয়াছে। কিছ রহস্পতি মিশ্রের টীকাসংযুক্ত পুঁথিতে এই সর্গের নাম 'মুগ্ধমনোহর'। নারারণ দাসের ও বৃহস্পতি মিশ্রের টীকা সংযুক্ত পুঁথি, ছইখানিতে চতুর্গ সর্গের নাম 'লিগ্ধনাধর', অক্সান্ত পুঁথিতে নাম 'লিগ্ধ-মধুস্থদন'। বোধাই নির্পরসাগর সংস্করণে, বৃহস্পতি মিশ্র ও নারায়ণদাসের টীকা সংযুক্ত পুঁথিতে দশম সর্গের নাম চতুর 'চতুর্জ।' অক্যান্ত পুঁথিতে নাম 'মুগ্ধ মাধব'।

প্রচলিত বন্ধীয় সংস্করণের সঙ্গে অনেক প্রাচীন পুঁৰির স্নোক বিস্থাসের ঐক্য নাই। প্রচলিত সংস্করণে প্রথম সর্গে "দরবিদলিত মন্ত্রী" স্নোকের পর "আতোৎসক" স্নোক, তাহার পরে "উদ্মীলন মধু গন্ধ" শ্লোক আছে। বৃহস্পতি মিশ্রের চীকাসংযুক্ত •পুঁথিতে "দরবিদলিত মন্ত্রী"র পর "উদ্মীলনমধুগন্ধ" স্নোক এবং তাহার পর "আতোৎসক" স্নোক আছে। এইরূপ অপর ছই একটি সর্গেও দেখিয়াছি। চতুর্থ সর্গে "গণন্ধতি বিহিত" স্নোকে বৃহস্পতি মিশ্র পাঠ ধরিয়াছেন—"কলরতি বিহিত" "কন্মর্প জর সংজ্বাতুর" স্থলে পাঠ "সংজ্বাকুল" ছাদশ সর্গে প্রভাহ: পুলকান্ধ্রেণ" স্থলে সদ্ক্তিকর্ণামৃতে পাঠ "উদ্মীলৎ পুলকান্ধ্রেণ" তেন্তা: পাট স্থলে সদ্ক্তিকর্ণা-মৃত্রের পাঠ অন্ত্রা: ।

দ্বাদশ সর্গের প্রচলিত

ইতি মনসা নিগদন্তং স্থরতান্তে সা নিতান্তথিয়াপী।
রাধা জ্বগাদ সাদর্মিদমানন্দেন গোবিন্দম্॥
এই সোকের পরিবর্ত্তে বৃহস্পতি মিশ্র নীচের স্লোকটি
গ্রহণ করিয়াছেন —

অথ কান্তং রতিক্লান্তমণি মণ্ডন বাশ্বরন্। নিজগাদ নিরাবাধা রাধা আধানভর্কা॥ বুহস্পতি থিকা ও নারায়ণ দাস আদশ সর্গের "মীলদৃটি মিলং" এবং "ব্যালোলঃ কেশপাশ" ক্লোক ব্যাখ্যা করেন নাই।

বন্ধীয় সংস্করণের একাদশ সর্গের "ভক্ষ্যান্তরাস্তং" শ্লোকের পর নির্বয়সাগর প্রকাশিত পুস্তকে এই শ্লোকটী আছে—

সানন্দং নন্দস্কর্দিশতুমিতিপরং সংমদং মন্দমন্দং
রাধামাধায় রাহেবার্বিবেরমন্ত্র্যুৎ পীড়য়ন্ প্রীতিযোগাৎ।
তুলৌ তক্ষা উরোজাবতন্ত বরতনোর্নিগতৌ মাম্মতৃতাং
পৃষ্ঠং নির্ভিত্ত তম্মাদ্বহিরিতি বলিত গ্রাবমালোকয়ন্ বং॥
বন্ধীয় সংস্করণের একাদশ সর্গোক্ত "জ্মন্ত্রীবিক্তকৈঃ" এই
প্লোকের পর নির্ণয় সাগর পুস্তকে এই গ্লোকটি আছে—

সৌন্দর্থৈকনিধেরনক লালনা লাবণ্য লীলা পুষো
রাধায়া হাদিপবলে ননসিজ ক্রীড়েক রক্ত্বলে।
রম্যোরোজ সরোজ থেলন রসিতাদাত্মান: ক্যাপয়ন্
ধ্যাভূর্মানসরাজহংস নিভতাং দেয়ায়ুক্নো মৃদং॥
বন্ধীয় সংস্করণের ঘাদশ সর্গে কবির পরিচয়েই গ্রন্থ শেষ
হইয়াছে। নির্বয়সাগর পুস্তকে তাহার পর এই
খোকটি আছে—

ইখং কেলিভতীর্বিশ্বত্য ষমুনা কুলে সমং রাধয়া
তদ্রোমাবলি মৌজিকাবলি যুগে বেণীশ্রমং বিশ্রতি।
তত্রাহ্লাদি কুচপ্রায়া ফলয়ো র্লিন্সাবতো র্হন্তয়ো
ব্যাপারাঃ পুরুষোভ্তমস্ত দদতু ফীতাঃ মুদাং সম্পদম্॥
বন্ধীয় সকল সংস্করণে নীচের শ্লোকটি পাওয়া যায় না।
কোন কোন টীকাকারও শ্লোকটির ব্যাথ্যা করেন নাই।

স্থানপ্রাপ্য ময়ি স্বয়্বরপরাং ক্রীরোদ ত্রীরোদরে
শক্তে স্থলরি কালকুটমপিবন্মুটো মৃড়ানী পতিঃ।
ইথং পূর্বরিকথাভিরন্ত মনদো নিক্ষিপ্য বক্ষেহঞ্চলং
রাধায়া তান কোরকোপরি মিল লেত্রো হরিঃ পাতৃবঃ॥
বৃহস্পতি মিশ্রের টীকা সংযুক্ত পূর্থিতে কয়েকটি নৃতন
লোক আছে। তৃইটি লোক একেবারে অস্পন্ত। অপর
লোক উদ্ধার করিয়া দিলাম। "য়দ্ গান্ধর্ব কলাহু" লোকের।
পরই নিয়ের লোকটি রহিয়াছে।

জয়ত্রী কাস্তত্ত প্রদারতর সারস্বত বত

ক্ষুরদ্ধনে গোবর্জনচরণরেণু প্রাণায়নঃ।

ইয়ং মে বৈদল্পী স্মারতরল বালাধর স্থা

রসত্তন্দ স্থাত জয়তি জয়দেবতা কবিতা॥

ভারত-আমেরিকার কাব্য-বন্ধন

শ্রীসন্তোষকুমার চট্টোপাধ্যায়

উনবিংশ শতাকীর আমেরিকার সর্ব্বাগ্রগণ্য কবি, সাহিত্যিক ও দার্শনিকের উপর প্রাচীন ভারতীয় কৃষ্টি, সাহিত্য ও দর্শনের যে প্রভাব পড়েছিল সে কথা আজ মনে করতে কেবল যে আনন্দই হর তা' নয়, বেশ একটা গৌরবও সেই সঙ্গে মনকে ভরিরে তোলে। আজ ভারত বাধীন, কিন্তু সেকালে এদেশে ইংরেজের আধিপত্য বেশ কারেমি হরে গিয়েছে। এক পরাধীন জাতির সাহিত্য-দর্শন, কলা-কৃষ্টি যে এক পভিনী দেশের বাত্তবপন্থী মনের উপর কোন আঁচড় কাটতে পারে তা' আমরাই সেকালে, বৃথতে পারা দূরে থাকুক, ভারতেও পারিনি। দার্থনিক এমার্গনি উপনিবদের অতীক্রিরতা উপলব্ধি করতে পেরেছিলেন। টালাসেরী খোরো ভারতীর ভারধারার এক অন্তঃশেশী সৌন্দর্য্য লক্ষ্য করেছিলেন। কবি ইইটম্যান ভারতীর সাহিত্য-দর্শনের আদর্শ সমন্ত মন দিরে গ্রহণ করেছিলেন। জগতের সভ্যতার ঐ আদর্শ যে এক অনুল্য সম্পত্তি তা' ইইটম্যানই প্রচার করেন সদর্শে। ১৮৭১ খুটাক্ষে একটা ছোট কবিতার বই প্রভানিত হয়। এ বইরে থাকে নাত্র একটা

কবিতা, তার নাম "প্যাসের টু ইভিয়া" (ভারত-যাত্রা)। যে বটনা
সমাবেশকে অবলখন করে কবিতাটি লেপা হয় তা' হছে এক কথার
পাল্চমের সঙ্গে পূর্কের যোগাবোগ। ইয়ুরোপে স্থরের থাল কাটা,
আর আমেরিকার "প্রশান্ত মহাসাগর" রেলপথ ছাপনা ঐ তুই ব্যবছাই
পূর্কে আর পশ্চিমের সম্পর্ক ঘনিষ্টতর করে ভোলার পথ উয়ুক্ত করে
দের। পূর্কে-পশ্চিমের মেলামেশার পৃথিবীতে যে এক বিরাট একক
সভ্যতার রুখা হ'তে পারে সে-স্থা দেখেন হইট্ম্যান। ঐ নবলাত
সভ্যতার প্রতীচ্যের বান্তবতা আর প্রাচ্যের আত্মজ্ঞান এই ছরের হ'বে
সম্মেলন। প্রতীচ্যু প্রান্তবতা আর প্রান্ত্যের আত্মজ্ঞান এই ছরের হ'বে
সম্মেলন। প্রতীচ্যু প্রতিচ্যের ঐ সম্মেলন পরম্বিতার ইচ্ছামুসারেই
হ'বে, আর সেই উদ্দেশ্যেই প্রতীচ্যের বিজ্ঞানী হ্রের খাল কেটেছেন,
আর যুক্তরাট্রে প্রশান্ত-মহাসাগর" রেলপথ উল্লোচন করেছেন। প্রাচ্যু
প্রতীচ্যের সংযোগ, তাদের মধ্যে আত্ম্ববোধ ভগবানের নির্দ্দেশ অমুবারী
বিজ্ঞানীর প্রচেষ্টায় ঘটতে চলেছে। সে-অবস্থার প্রতীচ্যের উপলব্ধি
ছঙ্যা প্রয়োজন যে প্রাচ্যে এবং বিশেষ হ'বে ভারতবর্ষে, কি এক

বিশেব কৃষ্টি, কি এক শ্বরংসম্পূর্ণ আন্মঞানী সভ্যভার বিকাশ হরেছে।
এ কৃষ্টি-সভ্যভা ভবিশ্বৎ অগতের কৃষ্টি-সভ্যভাকে এক বিশেব রূপে, এক
বিশেব আদর্শে গড়ে তুলতে সমর্থ। ছইটুমান তার "ভারত-যাত্রা"
কবিভার ঐ কথাই বলেছেন এক চরম উপলব্ধির পর। ভারতে আসার
পথ আবিদ্ধার হওয়ার মূল সার্থকতা হলো এমন এক পুরাতনী আদর্শকে
আবিদ্ধার করা, যা'র মাথে এক নৃতন যুগের বীজ আছে স্পুর্গ হ'রে।
ভারত্যাত্রার উদ্দেশ্রই হ'লো বিশ্বত জ্ঞানের উদ্ধার। এ যাত্রার
প্রতীচ্য প্রাচ্যের কোলে, যেমন ছোট ভাই বড় ভাইরের সম্বেহ আত্রার
লাভ করবে।

উনবিংশ শতাকীর শেষভাগে প্রতীচ্য প্রাচ্যের সন্ধানে নৃতন নৃতন সহজ পথ আবিষ্ণার করে। সেই পথে প্রাচ্যে গিয়ে ভারতীয় দর্শন-সাহিত্য, শিল্পুটর নানা অভিব্যক্তি সংগ্রহ করে এক নৃতন আন্তর্জাতিক সভাতা-কৃষ্টির সৃষ্টি করার জন্ম এক উদাত্ত আহবান প্রতীচোর দেশে দেশে ছড়িয়ে দেন আমেরিকার কবি ওয়াণ্ট হুইটম্যান। সে আহ্বানে সক্রিয় া সাড়া পাওরা যায়নি সভা, কিন্তু প্রভীচ্যের বুদ্ধিজীবীরা ভারত সম্বন্ধে অফুসকানী ও একাশীল হ'য়ে পড়েন। তাই বিংশ শতাকীর এথম দিকেই ভারতীয় কবি রবীশ্রনাথ ইংরেজী ভাষায় অনুদিত যে "গীজাঞ্চলী" উপহার প্রতীচ্যকে প্রদান করেন, তা' প্রতীচ্য সাদরেই প্রহণ করে। লণ্ডনের "ইভিয়া দোদাইটি" ১৯১২ খুষ্টাকের নভেম্বর মাদের পহেলা তারিখে "গীতাঞ্চলী" নামে ৭০০ খানা বইয়ের এক বিশেষ সংস্করণ প্রকাশিত হয়। এ বইয়ে কবির "নৈবেছ," "পেয়া" আর "গীভাঞ্জলী" বেকে গৃহীত ১৮৮টি বাংলা কবিভার ইংরেঞ্জী অসুবাদ সন্নিবেশিত হয়। বইয়ের পরিচিতি লেখেন আয়র্লণ্ডের প্রসিদ্ধ কবি ইয়েটস। আর বইয়ের গোড়াভেই কবির যে প্রতিকৃতি দেওয়া হয় তা' আঁকেন লওন রয়েল কলেজ অফ্ আর্চনের অধ্ক রংংন্টন্। লগুনে "গীতাপ্ললী" প্রকাশিত হওয়ার চারদিন আগে কবি আমেরিকার निष्ठ देवक महत्व श्लीरहरहन। निष्ठ देवक श्वर कवि माझा हरण यान हेनिनहेम् রाষ্ট্রের উরবানা সহরে। এ রাষ্ট্রে কবি নভেম্বর—ডিসেম্বর মাস এবং জামুয়ারীর ক্ষেক্দিন নানা গীর্জ্জার অতীন্ত্রির বিধরে বক্তৃতা দান করেন। চিকাগো সহর থেকে প্রকাশিত "পোয়ট্ট্র" (কবিতা) নামক এক মাসিক পত্রিকার ডিসেম্বর সংখ্যার ইংরেঞীতে অনুদিত ছ'টি "দীতাঞ্জনী" কবিতা প্রকাশিত হয়। "পোয়েট্র" পত্রিকার সম্পাদক ছিলেন একরা পাউও। পাশ্চাতা দেশে কবি রবীন্দ্রনাথের কবিতা প্রথম সাময়িক পত্রে প্রকাশিত হয় "পোয়েটি,"তে। ইলিনইস রাষ্ট্রে ভ্রমণ পর্বা শেষ करत्र कवि यान ठिकाशी महरत् : स्मर्थात विश्वविद्यालात "धाठीन ভারতীর সভাতা" সম্বন্ধ বস্তুতা দেন, তারপর সহরের ইউনিটারিয়ান হলে "অস্তারের সমস্তা"র উপর আলোচনা পাঠ করেন। এরপর কবি যান রচেস্টার সহরে, সেখানে আন্তর্জাতিক মহাসম্মেলনের অধিবেশন হর। এখানে ঝার্মাণ দার্শনিক রুডল্ফ রুকেনের সহিত কবির পরিচর বটে। ১৯১৩ খুষ্টাব্দের ৩-লে আসুরারী তারিখে ভারতীর কবি "আন্তর্জাতিক বিরোধ"এর উপর এক সারগর্ড বক্তুতা দেন। এরপর

কৰি যান ৰোষ্ট্ৰন সহরে, দেখানে বিশ্বৎসমাজের সজে কৰি আলাপ-আলোচনা করেন। এরপর কবির আমেরিকা অমর্থের এক বিশেষ অধ্যার রচিত হলো হারভার্ড বিশ্ববিভালয়ে পর পর গোটা করেক বক্তৃতা দেওয়ায়। পরে এসব বক্তৃতা প্রকাশিত হয় "সাধনা" নামক পুস্তকে।

কৰির আমেরিকা লমণের প্রথম প্রাার শেব হর হারভার্ড বিশ্ববিদ্ধালয়ে বক্তা দেওরার পর। এরপর রবীক্রমাণ বিতীর বারের জক্ত আমেরিকার যান ১৯১৬ খুটান্দের সেপ্টেম্বর মাসে। এবারে "পও লাইসিয়াব" নামক বিশিষ্ট বক্তা-ব্যবস্থা প্রতিষ্ঠানের সলে চুক্তিবদ্ধ হয়ে কবি আমেরিকার নানা স্থানে বক্তা দেওয়ার উদ্দেশ্তে ওয়াশিংটন সহরে প্রথম প্যার্পণ করলেন। প্রথম বক্তৃতা দেন আমেরিকার নারীদের এক সম্মেলনে; তার বক্ত্তার বিষয়বস্ত ছিল "লাভীয়ভাবাদ।" ঐ বক্তৃতায় তিনি ভারতে বৃটিশ শাসনের বিস্কাদ্ধ নানা যুক্তির অবতারণ। করেন, পাশ্চাত্য দেশগুলোর সামাল্যালিস্যার প্রতি কটাক্ষপাত করেন।

তারপর কবি পোর্টল্যাণ্ড, সান্ফ্রান্সিস্কো, লস্ এঞ্লিস্ ও নিউইয়র্ক সহরে পর পর বক্তৃতা দেন। সান্ফান্সিস্কোতে কবির বক্তৃতার বিষয়বন্ধ ছিল "আন্তর্জাতিক আতৃদবোধ।" নিউইয়র্ক সহরের কলম্বিয়া বিয়েটার হলে তার এক ছোট গল্পের অমুবাদ পাঠ করেন। এরপর ভ্রমণ ভালিকা তৈরী হয় পাদাডেনা, সণ্ট লেক দিটি, চিকাগো, আইওয়া, মিলওয়াঞ্চি, লুসেভিল এবং ডেট্রয়েট সহর নিয়ে। ভেট্রয়েট সহত্ত্বে "জাতীয়তাবাদ" সম্বন্ধে কবি যে আলোচনা ক্রেন আমেরিকার পত্রিকা মহল সে আলোচনার ভীত্র সমালোচনা করেন। সে সমালোচনার প্রধান বক্তবা ছিল যে কবি "মিষ্ট কথার অবসাদগ্রায় মৰের বিষ" উল্পার করেছেন মাত্র। কবি কিন্তু ঐ সমালোচনার বিশেষ বিব্ৰত হলেন না। ভাই ক্লিভ্লাভে যে বক্তা দেন তা'তে আমেরিকার "ম্বর্ণলোভের" প্রতি কটাক্ষপাত করেন। নিউইয়র্ক সহরের কার্ণাণি হলে কবি এসিয়াবাসীর প্রতি আমেরিকার বিছেব ও বিজ্ঞপকে শ্রোভাদের সামনে ধরে দিতে চেষ্টা করেন। ফিলাডেলভিয়ায় "ব্যক্তিত্বাদের" উপর বক্তা করেন। এ ভাবে ব**ক্তা দেও**য়ার ভালিকার শেব সহরের নাম এসে পড়লো, নিউইরর্ক। ভারপর ১৯১७ ब्रेहोत्कत फिरम्बत मारम । कवि एएल किरत अलान ।

প্রায় চায় বছর পর ১৯২০ খুটাব্দের অক্টোবর মাসে কবি পিরারসনকে সঙ্গে নিয়ে আমেরিকার যান। ইয়োরোপেই পিয়েছিলেন বেড়াবার অক্টে; পরে লগুন থেকে কবি যান নিউইরর্ক সহরে। কবির ঐ ভৃতীরবারের আমেরিকা অমণ! অক্টান সঙ্গীত শিক্ষারতনে কবি প্রাচ্য-প্রতীচোর মিলন" সম্বন্ধে সারগর্জ আলোচনা করেন। ফিলাডেলফিরার নারী বিশ্ববিভালয়ে "বাংলার দার্শনিক (মিস্টিক) কবি" ও নিউইরর্ক সহরে "কবির ধর্ম্ম" সম্বন্ধে কবি বক্তৃতা দেন। কবি চেট্টা করেন বিশ্বভারতীর অক্ট টাকা ভুলতে, কিন্ধ চরম বিকলতা এসে দাঁড়ার তার সামনে। এর পর কবি যান চিকাপো সহরে; পরে টেক্সাস্ রাষ্ট্রে বক্তৃতা দেওয়ার উদ্দেশ্যে কিছুকাল অমণ করে বেড়ান। ১৯২১ খুটান্দের মার্চ্চ মার্সের ভৃতীর সপ্তাহে ইয়োরোপে কিরে আসেন!

মানের মাঝামাঝি সময়ে। সঙ্গে নেন এলমহাষ্ট্র সাহেবকে। এবার ক্তবি যান দক্ষিণ আমেরিকায়। পেরু রাষ্ট্রের শতবার্বিকী উৎসব এ'বংসর হয়। কবি পূর্বাছেই নিমন্ত্রণ পান, সেই নিমন্ত্রণ রক্ষা করবার জন্ম বান কিন্তু অহস্থ হয়ে পড়ার জন্মে তিনি কোন বজ তাই করতে পারেন না।

১৯২৬ খুট্টান্দের কেব্রুয়ারী মাসের শেষাশেবি সময়ে কবি কানাডা যাত্রা করেন কলকাতা থেকে। কানাডার জাতীয় শিক্ষা পরিষদ ক্বিকে আমন্ত্রণ পাঠান তৃতীয় বার্বিক আলোচনা সভায় বক্তৃতা দেবার জক্তো। কবি হ'দিন হ'টি বস্তুতা দেন। প্রথমটি "অবসরের সার্থকতা": আর বিভীয়টি "সাহিত্যের ধর্ম"। কবি "অবসর"-এর এক অপূর্ব্ব দার্শনিক ব্যাখ্যা করেন।

"সাহিত্য-ধর্মের" উপর বক্তাও খুবই মনোজ্ঞ হয়। এপ্রিলের মাঝামাঝি পর্যান্ত সময় কবি কানাডায় অবস্থান করেন। আরও করেকটি স্থানে বক্তৃতা দেন। পরে আমেরিকার হারভার্ড, কলঘিরা, ক্যালিফ্রিয়া ও ডেট্রেটে বিশ্ববিভালয়গুলোর নিমন্ত্রণ পেয়ে লস্ এঞ্জেলিস সহরে যান। ইতিমধ্যে কবির পাস্পোর্ট হারিয়ে যাওয়ার এমন এক আন্তত অবস্থার হৃষ্টি হয় যে কবি এবারের আমেরিকা ভ্রমণ বন্ধ করে দিয়ে দেশে ফিরে আদেন। আমেরিকার সরকার কবিকে যে নুত্ৰ পাসপোৰ্ট দেন তা'তে লেখা থাকে—যে এই অনুমতি-পত্র এশিয়াবাদী অবেতকায় (কালা আদমি) জনদাধারণের এক

কবি চতুৰ্থবার আমেরিকা বাত্রা করেন ১৯২৪ খুষ্টাব্দের সেপ্টেম্বর বিশিষ্ট গুডিনিধিকে বিশেষ বাবস্থায় দান করা গেল। কবি ঐ বিশেষ ব্যবস্থা গ্ৰহণ করতে রাজী হলেন না, কারণ ঐ ব্যবস্থার সঙ্গে আচ্যের প্রতি আমেরিকার চরম বিদ্রপ প্রকট হয়েছিলো। কবি ক্ষিরে এলেন জাপানে। এরপর কবির আর আমেরিকা যাওরা ঘটেনি।

> আজ ভারত স্বাধীন রাষ্ট্র। রাজনৈতিক ক্ষেত্রে আমেরিকার দক্ষে এদেশের বোগাযোগ খুবই দৃঢ়। আজ কবিকে পাদপোর্ট নিয়ে কোন অপমান সহা করতে হতো না। কিন্তু যে-দেশের দার্শনিক এমার্সান, কবি হুইটুম্যান ভারতবর্ধের দর্শন, ইতিহাস, সভ্যতা সম্বন্ধে এককালে শ্রদাবান সেই দেশই কিনা ভারতের আন্তর্জাতিক কবি রবীশ্রদাথকেও 'কালা আদমি' ছাড়া আর কোন স্থাবে দেখতে চায়নি। এ' পরিতাপের বিষয় সম্পেহ নেই। যাই হোক, এ' অভত ব্যবস্থার ক্ষতিপুরণ হিসেবেই এশিয়াবাদীদের মধ্যে নির্দিষ্ট সংখ্যককে আমেরিকার নাগরিক অধিকার দেওরা হবে প্রতি বছরে—আমেরিকার আইনসভা এ' সিদ্ধান্ত করেছেন। ভারত-আমেরিকার কাব্য-দর্শনের বন্ধন এমাদ ন-ছইটম্যান, বিবেকানন্দ-রবীল্রনাথ করে গেলেও ভারত খাধীন রাষ্ট্র না হওয়ার দরণ ওদেশের কাছে উচিত সম্মান পারনি। বাত্তব পদ্মী আমেরিকার মন কেবলমাত্র বান্তব বিচারই গ্রহণ করতে পালে সহজ ভাবে, অন্ম বিচার নয়। তবে বাক্তিগতভাবে আমেরিকায় কাবা-माश्छा, पर्भन-कृष्टि, कला-भिल्ल मव किछुबरे वित्मव विठात, मव किछुबरे প্রতি বিশেষ প্রদা, আগেও চিল আঞ্জ আছে।

বসস্ত-শেষ

আশা দেবী

হঠাৎ কথন অক্তমনে কাজের ফাঁকে काननां हेकू शूरन, একটি ঝলক হাসির মতো এলো দ্থিন হাওয়া। নাম-না-জানা ফুলের গন্ধ বয়ে হাজার হাজার মৌমাছিরা গুনগুনিয়ে গেল পাগল-করা ফাগুন দিনের গান; মৌ-ঝরা ফুল একটি ছটি পড়লো এসে শিথিল কবরীতে হারিয়ে গেল মন।

হারিয়ে যাওয়া মন হঠাৎ যেন উঠলো কেঁদে অব্যের ঝরে

অকারণে পডলো মনে যেন: ফাগুন যে আজ বন্ধ আমার ঘরে আমার মনের গোপন কোণার বিজ কোঠাগুলো দেয় নি তো কেউ ভরে এমনিতরো ফাগুন দিনের মতো; मत्तत्र कक छेकां करत्र त्म नि कि मूर्छ ভাঁডার ঘরের আনন্দময় ধন।

আরশিথানা তুলে পড়েছি তো মহাকালের লেখা ফাগুন যে যার আবার আদে হারে; আসে না ভো ফিরে মনের ফাগুন দেহের আগল খুলি সেই যে গেছে সোনার রঙিণ রথে॥



গত কিছুকাল হইতে শিয়ালদং ষ্টেশনে একশ্রেণীর নারীপুরুবের নানাপ্রকার অনাচার ক্রিয়া-কর্ম্বের সংবাদ প্রকাশ পাইতেছে। স্থেপর বিষয়, কলিকাতা পুলিশ উদাস্ত নারী এবং বালিকাদের বিপদ হইতে রকা ক্রিবার জক্ত উপযুক্ত ব্যবস্থা অবলঘন করিয়াছেন। গত কয়েকদিনে श्रुनिम e • अन नात्री এবং s • अन श्रुक्षरक मत्मश्क्षनकভाবে शोतारकत्रात्र দারে প্রেপ্তার করিয়া চালান দিয়াছেন। ইহারা নাকি প্রলোভন দেখাইয়া **উषाञ्च नाडी** এবং বালিকাদের সরাইয়া ফেলিবার ফিকিরে ছিল। শিরালদহ ষ্টেশনে উদাস্ত নারীদের 'বিশেষ প্রকার' সামাজিক বিপদ হইতে রক্ষা করিতে হইলে পুলিসের একক চেষ্টার ধুব বেশী ফল হইবে না। এ-বিষয়ে, সাধারণ দায়িত্বশীল বান্ধির কর্ত্তব্য স্থানির্দ্ধারিত। নারীকে পণা ছিদাবে ব্যবহার করার প্রথা নতন নহে। সমাজ-বুকে এই পাপ বছকাল 'ইেতেই ক্ষতের মতো বিরাপ করিতেছে। কিন্তু এই পাপের প্রকাশ এমন ব্যাপকভাবে কলিকাতা সহরে ইতিপূর্বে আর কথনো দেখা যার নাই। মাকুবের চরম বিপদে এবং অসহায় অবস্থার স্থযোগে যাহারা মাকুবকে গভীরতম পক্ষে নিমজ্জিত করিতে চায় সামান্ত অর্থলাভের আশায়, তাহাদের ক্ষমা নাই। প্রয়োজন হইলে, প্রমাণিত অপরাধীর প্রতি চরম দতের ব্যবস্থাও বিশেষ আইনবলে করা দরকার ৷ গভীর পরিতাপের বিষয়, একদল বাঞ্চালী-নারীই আজ তুর্গতা নারীর ভীষ্ণতম অকলাপের সহায়করপে কার্য্য করিভেছে। এই দকল নারীর পশ্চাতে গোপনে যে বিত্তশালী সভ্য আছে, তাহাদের আবিষ্কার করা পুলিসের এবং জন-সাধারণের প্রধানতম কর্ত্তন। মনে রাখা প্রয়োলন, সামাল্য ফুত্র হইতেই —দৈনিক বস্তমতী বৃহত্তম বড়যন্ত্রের সংবাদ পাওয়া সম্ভব।

মরমনসিংহে প্র্ববঙ্গের সংখ্যালঘু সম্মেলনে অভ্যর্থনা সমিতির সভাপতি বীবৃষ্ণ যোগেশচল্র চক্রবর্তী বলিয়াছেন—"বর্ত্তমানে সংখ্যালঘুর। কতকগুলি অবাছেন্দ্যের সম্ম্পীন রহিয়াছেন। শুরুতর সাংসারিক প্রয়োজনেও সংখ্যালঘুর। তাহাদের ছাবর-অত্থাবর সম্পত্তি ইচ্ছামত বিক্রম্ব করিতে পারিতেছেন না। সংখ্যালঘুদের ঘরমাড়ী নানা অক্স্থাতে দখল করা হইতেছে। সংখ্যালঘুদের বাড়ীর কল, গাছ, বাঁল, পুকুরের মাছ যে কেহ ইচ্ছামত ব্যবহার করিতেছে দেখিরাও আপত্তি করিবার মত বল তাহার। পান না।" পাক-ভারত চুক্তির কলে পূর্ববিজের সংখ্যালঘুদের সমস্যা একেবারে জলবৎ তয়ল হইয়া দিয়াছে বলিয়া বাঁহারা ভারতীর ইউনিরনে বিসরা দিবারাত্রি প্রচার চালাইতেছেন, তাহারা একথা শুনিয়া কিবারাত্রি প্রচার চালাইতেছেন, তাহারা একথা শুনিয়া কিবারাত্রি প্রচার মহিমা হাড়ে হাড়ে মাল্ম পাইতেছেন—লোকে তাহাদের কথা বিষাস করিবে, না বিবাস করিবে ছাড়িতেছেন তাহাদের

কৰা ? সংখ্যাসৰু সম্মেলনে শীৰ্কা নেলী সেনগুপ্তাও বলিয়াছেন, "গত হাসামার সময় হইতে অসংখ্য লোক পূর্ববন্ধ ত্যাগ করিয়া চলিয়া বাইতে আরম্ভ করিয়াছেন। আজও পূর্বে বালালা হইতে উঘাগুদের ছানান্তর গমন বন্ধ হয় নাই। অলসংখ্যক উঘান্ত পূর্বে বালালার প্রত্যাবর্তন করিয়াছেন—কিন্ত তাহাদের মধ্যে অনেকেই নিজ নিজ সম্পত্তির বিলিব্যবন্ধা করার জন্মই পূর্ববিদ্যে ফিরিয়া আদিরাছেন।" অধিকাংশ উঘান্তই সম্পত্তির বিলি-ব্যবন্ধা করার জন্ম পূর্ববিদ্যে ফিরিডেছেন—একথা মিধ্যা প্রমাণ করিবার জন্ম কিছুদিন আগে পণ্ডিত জণ্ডহরলাল এক দীর্ঘ বিবৃত্তি দিয়াছিলেন। এবার তিনি ও উাহার দলবল কি বলিবেন।

— দৈনিক বহুৰতী

করিমগঞ্জ হইতে আমাদের নিজম্ব সংবাদদাতা এই মর্মে একটি সংবাদ প্রেরণ করিয়াছেন যে, গত ২৮শে মার্চ পূর্ববঙ্গ মুসলিম লীগের সভাপতি মৌলানা আক্রাম থা মোটর লঞ্যোগে কুশিয়ারা নদীর অপর পারে জকিগঞ্জে উপস্থিত হইরা তথাকার ফৌজদারী আদালতের প্রাঙ্গণে আহত এক সভার ভাষণ দেন। মৌলানা সাহেব বক্তৃতা প্রসঙ্গে শক্রুর বিরুদ্ধে জেহাদ ঘোষণার প্রস্তাব করেন এবং তক্ষক্ত আপাতত: বিনা বেতনে পাঁচ লক নৈক্ত সংগ্ৰহের আবেদন জানান। সংবাদটি এই পৰ্যন্ত পাঠ করিয়াই আমরা কল্পনার চক্ষে সভার অবস্থা প্রত্যক্ষ করিতে গিয়া দেখিলাম, সভাটা হয়তো বা এভক্ষণ সামরিক আবহাওয়ায় সরগরম হইয়া উঠিয়াছে এবং উপস্থিত 'জনগণের' মধ্যে জেহাদী দৈয়া তালিকার নাম লিখাইবার ব্দক্ত একটা তাড়া-হ্রড়া পড়িয়া গিয়াছে। কিন্তু সংবাদের পরবর্তী অংশট আমাদিগকে অত্যন্ত হতাশ করিয়াছে: সভান্তলে কে বা কাহারা বেই-না বলিল যে, ভারতীয় সৈম্মবাহিনী সীমান্ত আভমুখে অগ্রসর হইডেছে, অমনি সভাত্ব 'জনগণ' জানের ভরে দিগবিদিক জ্ঞানশুর হইরা মিরাপদ আশ্রের আশায় হিন্দু বাড়ীর সন্ধানে বাহির হইরা পড়িল। মৌলানা আক্রাম বা সাহেব এই ডামা-ডোলের মধ্যে পড়িয়। কি করিলেন ও কোথার গেলেন ভাবিয়া আমরা অত্যন্ত উদ্বিশ্ন হইতেছি: ছটাছট করিতে গিলা যদি হাত-পা ভাকিলা গিলা থাকে, তাহা হইলে বুড়ো-হাড় কি আর জোডা লাগিবে ! —আনন্দবাজার পত্রিকা

এবেশে শেঠ রামকৃক ডালমিরা দিলীর হাটে করেক দিন আগে কংগ্রেদী হাঁড়ি ভালিরা দন্তর মত 'চাঞ্চল্যকর পরিস্থিতি' স্থাষ্ট করিয়াছিলেন। আর বার্লিনে 'ররটারের' হাঁড়ি ক'াসাইরা মন্থ লোরগোল ভূলিরাছেন মিঃ জন পিট। ভজলোক ছিলেন বার্লিনে ররটারের প্রধান সংবাদদাতা। জকলাৎ একদিন পূর্ব-জার্দ্মাণীতে পিরা এক সাংবাদিক সন্ত্রেগনে তিনি ঘোষণা করিয়া বসিলেন—আর তিনি পশ্চিম জার্দ্মাণীতে

ইবিয়া গিয়া ইল-মার্কিণ সম্মর্কিপ্যুবের হাতের পুঁতুল হিদাবে কাজ চরিবেন না। শুর্থ এই সম্বন্ধ বোষণা করিরাই মি: পিট কাল্ত হন নাই। জ্যুসমাজে 'রয়টারের' নিরপেক সাংবাদিকতার মুখোস খুলিরা দিয়া বলিরাছেন, "পূর্ব্ব ইউরোপ এবং পূর্ব্ব আর্মাণীর জনসাধারণের চরতির চেষ্টা সম্বন্ধে বে সব থবর আমি দিজাম, ইচ্ছা করিরাই তাহা গিলিয়া রাখা হইত। এতদিনে আমি বুঝিয়াছি, পশ্চিম ইউরোপের রাইগুলিতে সংবাদপত্রের মাধীনতা আছে বটে, কিন্তু সে শুধু বুজাতক রচার করিবার ঘাধীনতা। আমরা সাংবাদিকরা এই প্রচারের কাজে সাহান্য করার অন্তই পরসা পাইয়া থাকি।" খলির ভিতর হইতে এই-ভাবে বিড়াল বাহির হইয়া পড়িতে দেখিয়া বতাবতঃই বার্দিনের রয়টারের কর্তারা মাখায় হাত দিয়া বসিয়া পড়িয়াছেন। তাহারা অক্টুট বরে যেন বলিতেছেন—"হেড অকিসের বড়বাবু লোকটি বড় শান্ত, তার যে এমন রাখার ব্যামো কেউ কথনো জানতো ?" কিন্তু মাথার 'ব্যামো' প্রমাণ করিবার চেটা করিয়াও এই কেলেছারী চাপা দেওয়া যে সহজ্ঞ হইবে, ব্যাপার দেখিয়া তাহা মনে হয় লা।

—দৈনিক বহুমতী

বর্ত্তমানে কলিকাতার বাঙ্গারে অনেকেই এরপ লক্ষ্য করিয়াছেন যে, দোকান হইতে ১০ গজ মাপের কাপড় ক্রয় করিয়া তাহা (धाराहेवात अत प्रथा यात्र त्य. छेहात्र देवर्षा व शत्कत त्यी नहह । এই ভাবে ছোট মাপের কাপড়ের উপর বড় মাপ ছাপ দিয়া জনসাবারণকে প্রতারণা করিবার ব্যাপার ^{*}সম্প্রতি **স্বাদান**ত পর্যন্ত গড়াইয়াছে। সম্প্রতি সিঙ্গাপুরস্থ ভারতীয় বণিক সভার সভাপতি সন্দার হরদয়াল সিং এরপ অভিযোগ করিয়াছেন যে, ঐ স্থানের বাজারেও অনুরূপ ধরণের কাপড় রপ্তামী করা হইতেছে। কেবল তাহাই মহে। রপ্তানীকৃত কাপড়ের বুনন সকল স্থানে সমান নহে এবং ভারতীয় রপ্তানীকারকগণ অর্ডার মাফিক মাল সরবরাহ করেম না বলিয়াও সিকাপুরের বাজারে অভিযোগ রহিয়াছে। মোটের উপর কাপড়ের কলওরালা ও কাপড় রপ্তানীকারকদের ছুনীতিমূলক কাজের জগ্র বিদেশের বাজারেও ভারতীর কাপড়ের তুর্নাম রটিয়াছে। উহার শেষ পরিণভিতে বিদেশের বাজারে ভারতের কাপড়ের কাটভি যে বন্ধ হইবে এবং ভারতের বাজারে উহার কাটতি বে সঙ্কৃচিত হইবে ভাহাতে সন্দেহ নাই। অবচ বর্তমানে বিদেশে কাপড় রপ্তানীর বারা ভারত শরকার ১০০ কোটি টাকার সমষ্লোর বিদেশী মুলা অর্জন করিবার প্রাণ করিতেছেন। মৃষ্টিমেয় কাপড়ের কলওরালার ছ্নীতিমূলক পার্থপরতার বাস্ত সমষ্টিগভভাবে ভারতের এই ভাবে বার্থহানি ভারত সরকার আর কতদিন নিরপেক দর্শক হিসাবে প্রত্যক্ষ করিবে ?

--আর্থিক জগৎ

আৰু মাজুৰের ডিস্তার মধ্যে বৈ আবিলভা প্রবেশ করিয়াছে ভাষা পূর কয়াই হইবে আৰকের দিনের প্রথম কাল। দেশ বাধীন হওয়ার

পরেও আমরা অক্তভাবে চিন্তা করিতে পারিলাম না-এই পরাবর, আৰু আমাদের বীকার করিয়া লইতে হইল। দেশকে সভাই আমরা ভালবাসি কিনা--দেশের জক্ত এতকাল ছু:খ বরণ করিরাও আলো আমরা অমাণ করিতে পারিলাম মা। ফাঁকি ক্রমণই আমাদের ধরা পড়িতেছে। ফ'াক ছিলো ঐ ভালবাদার মধ্যেই। ভালো দেশকে বাসি নাই—ভাল বাসিয়াছিলাম নেতৃত্বের লোভকে, আমার "বহং" কে। তাই সকল দিকের অনাচার আজ এমন কুৎসিৎরূপে আত্মপ্রকাশ করিল। দেশ-প্রেমিকতার এমন নাটকীয় অভিনয় আর কোন দেশের ইতিহাসে দেখা যায় নাই। 🛍 যুক্ত ক্ষিতীণ নিয়োগী মহাশয় পদত্যাপকালে ষাহা বলিয়াছেন, তাহাতে আমরা বিশ্লয়ে হতবাক্ হইয়া বিয়াছি। বাণিজ্য-সচিব নিরোগী মহাশরের অজ্ঞাতসারেই পাকিস্তানের সহিত এই বে গোপন চুক্তি এতকাল ধরিয়া চলিতেছিল—ইহার কোনো সহভ্তর গবর্ণমেন্ট দিতে পারেন নাই। রাষ্ট্রকে গণভান্তিক বলিয়া যোষণা করার পরেও সরকারের এই মনোভাব অপরিবর্তিতই রহিয়া গেলো—টি♥ এই কারণেই জনসাধারণ তাহার রাষ্ট্রকে আপন-রাষ্ট্র বলিয়া আজো মনে করিতে পারিল না। —দৈনিক

সিমলন অঞ্জে চাবীরা সরকারী বীজাগার হইতে আলুর বীজ কিনিয়াছিলেন, কিন্তু পথিমধ্যে এই আলুর-বীজ কল পাইরা পচিয়া গিয়াছিল। ফলে গাছ ঠিকমত বাহির হর নাই বা তাহাতে চাবীদের করি হইয়াছিল। এই ক্ষতি প্রণের জন্ত সরকারের নিকট আবেদন করা হইয়াছিল। এই ক্ষতি প্রণের জন্ত সরকারের নিকট আবেদন করা হইয়াছিল। সরকার এই আবেদনে বৌজিকতা উপলব্ধি করিয়া চাবীদের নিকট হইতে বাজারের আপুর দর যথন বা-—বা- মন, সেই সমর সরকার ১২া- দরে আলু কিনিয়া ক্ষতিগ্রত চাবীদের ক্ষতিপুরণের বাবস্থা করিয়াছেন। সরকারের এই শুচেটা নিক্টর প্রশংসনীয়।

পাকিছানী গুপ্তচর বা পঞ্চনাহিনীকে সম্লে উৎপাটন না করিপ্তে পারিলে আমরা ধ্বংস হইব। একথা কোন সময়েই বিশ্বত হইলে চলিবে না যে জনসাধারণের সাহায্য ও সহযোগিতা ব্যতীত কোন সরকার বা পুলিশ বিভাগই এই বিবর্ক্ষের মূলোৎপাটন করিতে সমর্থ হইবে না। মূর্লিদাবাদ জেলার রাট্রাসুগত প্রত্যেকটি হিন্দু-মূললমান জনসাধারণকে এবিষরে কর্মণী হইতে হইবে। আজ যাহারা আমাদের, রাষ্ট্রকে নিজের রাষ্ট্র বলিরা গ্রহণ করিতে কুন্তিত,—আমাদের নদ, নদী, আমাদের ডাক্মর, আমাদের কলকারধানা, আমাদের অফিস, আমাদের জাক্মর, আমাদের কেতের কলল, আমাদের যান-বাহন নিজের বলিরা গ্রহণ করিতে পারে নাই, তাহাদিগকে আজ পুঁলিরা বাহির করিতে হইবে। তাহারা হিন্দুই হউন, মূললমানই হউন, পুটানই হউন, অথবা বৌদ্ধই হউন কোন মতেই যেন তাহাদের ক্ষমা করা না হর। প্রতিদিন বাহারা আমাদের মূথের আহার, আমাদের পারণের কাপড়া, আমাদের রোগের উবধ ও রোগীর পথ্য ক্ষরক পথে চালাল দিন্তহে,

প্রতিদিন যাহারা আমাদের আলো নিতাইরা দিতেছে, আমাদের বাতাস বিবাক্ত করিতেছে, তাহাকে কমা করিও না! একজন নারেক আলী পলাইরাছে পলাইতে দাও, খরের কোণে প্রতিবেদী লারেক আলির স্পৃষ্টি বেন আর ভবিস্তৃতে না হয়।

—সপরাঞ্চ

ধারা ক্লগতে শান্তির প্লারী, যাঁরা মানবের কল্যাণ প্রতিষ্ঠার আন্ধ-সমাহিত, যাঁরা নিজের জীবনের উপলব্ধ সাধনা হারা সর্বসাধারণের মনে প্রেরণা সঞ্চার করছেন তাঁরা মমস্ত, প্রাঃ। সেই মহাপ্রুবের মধ্যে যাঁদের নাবেল প্রস্থার দেওয়ার কথা উঠেছে তাদের মধ্যে তারতীর আছেন জ্বীঅরবিন্দ, সর্বপর্লী রাধাকুকণ আর পণ্ডিত জওছরলাল। তাদেরই সঙ্গে একই পর্যায়ে পাশ্চাত্য দেশের যাঁদের নাম চোথে পড়ছে তাদের মধ্যে আছেন রুটেনের ভূতপূর্ব যুদ্ধকালীন প্রধান মন্ত্রী চার্চিল আর আমেরিকার বর্তমান প্রেসিডেণ্ট ট্রুম্যান। শেবাক্ত ছুই ব্যক্তির মধ্যে একজনের যুদ্ধের আশা আলত মেটেনি; অপরজন আগাসাকি ও হিরোসীমার মরমেধ যজে শান্তির বিল বদন করে খ্যাতি অর্জন করেছেন ও অহমিকার তুল লিখরে বদে সসাগরা ধরিত্রীর অধীবর হওয়ার স্বপ্ন দেখছেন। প্রস্থাবের ফদলের ক্ষেত্র পশ্চিযে। সেখারে শান্তির ধারণা কতথানি ম্পাই তা এই শান্তিক প্রারীদের নাম-মালায় প্রকাশ পেরেছে।

এবার দীর্থদিন জনাবৃত্তির কলে বর্জমানের মধ্যন্থিত বাঁকা নদাটী একেবারে শুকাইয়া সিয়াছিল ১৩০৭ সালের অনাবৃত্তির পর বাঁকার এমন তুরবছা আর দেখা যার নাই। স্থানে স্থানে যেটুকু এক থাকিত, এবংসর তাহাও নাই। বেখানে একটু অল আছে, সেখানকার অলে এমন তুর্গন্ধ যে, পার্শ্ববর্তী অধিবাসীয়া তিন্তিতে পারে না। বাধ্য হইয়াই জনেকে ঐ জলই পানীয় ও ব্যবহার্যারপে ব্যবহার করিতেছে। কলে বসম্ভ ও কলেরা রোগ সংক্রমিত হইতেছে। উল্লেখযোগ্য যে, বাঁকার অল বর্জমানের করেকটী অঞ্চলের লোকদের পক্ষে অপরিহার্যা। নদী নালা সংস্থারের অক্ত যে পঞ্চবার্ধিক পরিক্রনা হইয়াছিল, বাঁকা সংস্থারে সেই পরিক্রনা কার্যাকরী হইলে সহরের অলাভাব প্রভুতরপে লাখ্য হইবে এবং চাধ জাবাদেরও উন্নতি হইবে। — আর্ধ্য

পশ্চিমবন্ধ শিক্ষা-অধিকার কর্ত্তক প্রকাশিত তৃতীর শ্রেণীর পাঠ্য-পুস্তক "কিশলরের" একথও সম্প্রতি আমাদিগের হন্তগত হইরাছে। সরকারী দপ্তর্থানা ভিন্ন অন্তত্ত ইহার ছ্ম্মাপ্যতাই অবশু আমাদের বিলবে প্রাপ্তির প্রধান হেতু।

প্রাথমিক তারে পৃত্তকহীন-শিক্ষা-বাবস্থা চাপু করিয়া তাহারই
সহিত সক্ষতি রক্ষাকরে তৃতীর প্রেণীর জম্ম একটি পৃত্তক শিক্ষাঅধিকার নিজে প্রকাশ করিবেন এবং প্রাথমিক শিক্ষার ক্ষেত্রে অম্ম
কোন প্রস্থকারকে প্রবেশ করিতে গিবেন না—এই বিজ্ঞতি বে সমর
সংবাধ প্রাধিতে প্রথম প্রকাশিত হইরাছিল—তথ্ন গেশের বছ

বিশিষ্ট শিক্ষারতী এবং শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান উহার প্রতিবাদ করিরাছিলেন।
আমরাও তথন ইহার অন্ধ্যোদন করিতে পারি নাই।....

কিন্তু সরকার অবাভাবিক জেদের সহিত সে সকল প্রতিবাদ তথন
সম্পূর্ণ অপ্রাঞ্চ করিয়াছিলেন এবং তাহারই কলে আমরা সে সময়
বভাবতঃই এ কথা মনে করিয়াছিলাম যে প্রভাবিত গ্রন্থানি নিশ্চরই
অভিনব সম্পদসমূজ একটা অপূর্ব্ব পুত্তকই হইবে। ভাবিরাছিলাম,
প্রাথমিক শিক্ষার ক্ষেত্রে একটি বৃধান্তকারী গ্রন্থই হরত বা পশ্চিমবর
শিক্ষা-অধিকার এবার আমনানী করিতে ঘাইতেছেন মতুবা এতটা
দূদতা তাহারা দেখাইতেন না; কিন্তু প্রকথানি হাতে পাইরা আমরা
একেবারেই নিরাশ হইরাছি।

—বাঙলার শিক্ষক

প্রাথমিক শিক্ষার উন্নতি অনেকাংশে স্কুল সব ইনস্পেন্টার বা অবর পরিদর্শকগণের কার্ব্যের উপর, নির্ভর করে। প্রাথমিক শিক্ষকগণের এক হিসাবে তাহারাই বন্ধু, উপদেন্টা এবং পথ প্রদর্শক। অথচ এই অতি প্রয়োজনীয় কর্ম্মচারীয়ক্ষের ছর্দ্দশার প্রতি প্রাথমিক শিক্ষকগণেরই মত সরকার এবং জন সাধারণ তুলারূপে উদাসীন। আমরা বহু বৎসর ধরিয়া সংবাদপত্রে এবং বস্তৃতা মঞ্চ হইতে সরকার ও জন সাধারণের নিকট ইহাদের এই ছুরবছার কথা জানাইয়া আদিতেছি। কিন্তু এখনও পর্যান্ত ইহার কোন প্রতিকার হইল না। ইহাপেকা ছ:থের বিষয় আর কি হইতে পারে। ইহারা সকলেই উচ্চ শিক্ষিত। ছুরবুইবশতঃই শিক্ষা বিভাগের নিম্ন বিভাগে চাকুরী লইতে বাধ্য হইরাছেন। হাড়ভাঙ্গা থাটুনী ইহাদের থাটিতে হয়। কিন্তু বেশীর ভাগে সমরেই সেই থাটুনীর কিছু মাত্র পুরম্বার লাভ ইহাদের ভাগ্যে জুটে না। আমরা শিক্ষা সচিবকে আবার বলিতেছি ইহাদের সক্রিম্ব সাহায্য এবং পরিপূর্ণ সহযোগিতা ভিন্ন প্রাথমিক শিক্ষারাতির কোনও পরিক্ষানাই সাফ্ল্যামন্তিত হইবে না।

--শিক্ষক

এক সংবাদে প্রকাশ যে দিলার এক উষান্ত কেন্দ্রে উষান্তদের কুটারশিল ও অন্তান্ত কুল কুল শিল্প শিল্পাদানের অন্ত এক ব্যবহা অবলঘন করা হইরাছে। এই ব্যবহাসুবারী জাপান হইতে কিছু জ্ঞাপানী বন্তপাতি এবং কারিগর জানা হইরাছে। তাহাদের শিক্ষাধীনে ছই শতাধিক উষান্ত কারিগরী শিক্ষালান্ত করিতেছে। দেশের বিভিন্ন উষান্ত কেন্দ্রেও অনুরূপভাবে উষান্তদের কারিগরী শিক্ষাদানের অন্তারত সরকার নাকি আরো কারিগর এবং জ্ঞাপানী বন্তপাতির অর্তার দিয়াছেন। পরিকল্পনাটি নিঃসন্দেহে সকলে সমর্থন করিবেন। সাধারণভাবে বাঙালী উষান্তদের কর্ম্ম বিম্বতা এবং ছ্রবন্থা সম্বন্ধে নানা কথা শোনা যার। এই ব্যবহা বাহাতে শীল্প পশ্চিমবঙ্গ উষান্তদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতেছি। এই দৃষ্টান্ত হইতে শরণার্থীদেরও কি শিক্ষপার কিছু নাই?

—ভারত মুনামৃত্য ছাদের পুর্বে পাকিছানে বে পাট কর করে তাহা এবং আসাম হইতে পাকিছানের মধ্য দিয়া আমদানীর পথে অনেক পাট পাকিছান আটক করে। একস্ত ভারত পাকিছানকে করলা দেওরা বন্ধ করে। সম্প্রতি ভারতীয় পার্লামেন্টে একটি প্রয়ের উত্তরে জানা গিয়াছে যে, উক্ত পাটের মধ্যে ৫ লক্ষ ৯৬ হাজার ২০০ মণ পাকিছানী পাট এবং ৬ লক্ষ ৮৭ হাজার ০০৭ মণ আসামী পাট পাকিছান এই পর্যান্ত ছাড়িয়া দিয়াছে এবং উহার মধ্যে ৫ লক্ষ ৭৫ হাজার ৬২০ মণ আসামী পাট ও ৫ লক্ষ ১ হাজার ৮২০ মণ পাকিছানী পাট ভারতে পৌছিলছে। একমাত্র পাকিছানেই ২০ লক্ষ মণের উপর ভারতীয় পাট আটক পড়িয়াছিল। কাজৈই মোট পাটের এখনও কিছুই সামে নাই। ——আর্থিক জগৎ

দিল্লীর অসাম্বিক সরবরাই বিভাগের ডিরেক্টর তথাকার সংবাদিক গম্মেলনে প্রকাশ করেন যে, রাজধানীতে চোরাবাজারে ১ মণ ময়দার ফুলা ১০০১ টাকা। উহার নিয়ন্ত্রিত মূলা প্রতি মণ ১১১ টাকা। পক্ষকাল পূর্বে ব্যক্তিগতভাবে তদন্ত করিয়া তিনি অবগত হইয়াছিলেন ্য, চোরাবাজারে প্রতি মণ চিনি १•্ টাকা দরে বিক্রয় হয়। চোরা-াজারের সংবাদ ডিরেক্টর মহাশয় পাইরাছেন--সাংবাদিকদের সেই गःवाम পরিবেশন করিয়াছেন—मिল্লীর সংবাদে কেবল ইহাই জানিলাম। ক্ত জনসাধারণের জানিবার বিষয় চোরাবাজার দমনকলে দিলী কর্তৃপক্ষ শক্ষ হইতেছেন কেন ? ১১ টাকা যাহার নিয়্ত্রিত মূল্য তাহা ২০০ টাকায় ক্রম করে কাহারা, কেন এবং কোন্ উদ্দেশ্তে। দেশে চারাবাজার আছে—রাজধানীতে (রাজধানী মাত্রেই ধনপতিদের ামাগম ও সমারোহ ঘটে) হরতো বেশী আছে ইহা জনসাধারণ জানে ও বিখাস করে। কিন্তু "চোরাবাকার" নিমূল করিবার জস্ত রাজধানীর ন্দ্রা ভঙ্গ হইরাছে কিনা—ভাহাই আমরা জানিতে চাই। চোরাবাজার ামনের জক্ত সরকার ও সরকারী কর্মচারিপণ উঠিয়া পড়িয়া লাগিয়াছেন গ্নসাধারণের মধ্যে এই বিশ্বাস আনিয়া দেওয়া কিন্তু খুব শক্ত নহে; ক্ৰল বড় বড় ক্তকগুলি চোৱাকারবারীকে আদর্শ সাজা দান করিয়াই গ্রহা করা যার। —আনন্দবাজার পত্রিকা

পূর্ববদের উদান্তদের পশ্চিমবঙ্গে পুনর্ব্বনতির ব্যবস্থার জন্ত ডাঃ

ামাপ্রদাদ মুখোপাখ্যারের সভাপতিত্বে যে বোর্ড গঠিত হইরাছে,

াহার একটি পরিকল্পনা সম্প্রতি সংবাদপত্তে প্রকাশিত হইরাছে।

ইই পরিকল্পনাটি প্রশাসন করিরাছেন ডাঃ রাধাক্ষন মুখোপাখ্যার।

ইই পরিকল্পনার তেরো দক্ষা কর্মসূচী পাঠ করিয়া আমাদের ইহাই

নে হইতেছে বে, বেধানে ইচ্ছা আছে, দেখানে উপারের অভাব

র না। কিন্তু পুনর্ব্বনতি দপ্তরের শোভা হিসাবে যাহারা উচ্চপদে

বরাল করিতেছেন, এই ধরপের পরিকল্পনা বহু পুর্বেই ভাহাদের

কট হইতে আনা উচিত ছিল। একটা ভাষাভোগ, হৈটে-এর মধ্যে

থেব কথনও সন্থার হইতে পারে না। যাহারা প্রকৃত সাহায্য

ইইবার উপযুক্ত পাত্র, ভাহারা পিছনের আন্ধারের পড়িয়া খাকে,

আর বার্ধ ও হ্বোগদক্ষানী দল সমুথে আগাইরা সাহায্য লাভ করে।
এই দৃশুই আমরা গত তিন বৎসর ধরিয়া দেখিয়া আসিতেছি।
ভারত গতপ্রেণ্ট উবান্ত আশ্রেরপ্রার্থিদের জল্প এবাবৎ কম অর্থ ব্যর
করেন নাই, কিন্তু লক্ষ লক্ষ টাকা কোধার কাহার নিকট গিরাছে,
কিল্পপে উহা ব্যর হইরাছে তাহার সন্ধান বা হিসাব লইলে তাহা পুর
প্রিতিকর হইবে না। সে যাহাই হউক, অতীতের তিক্ত অভিক্রভার
প্নরালোচনা করিয়া লাভ নাই। বর্ত্তমানে এবং ভবিন্ততে লক্ষ লক্ষ
উবান্তর কিভাবে প্নর্বস্তির ব্যবহা হইতে পারে, তাহাদের আশ্রের
ও কর্ম সমস্তার কিল্পে সমাধান করা সম্বব তাহাই প্রয়। এই
প্রমের উত্তর ডাঃ স্তামাপ্রদাদ মুধোপাধ্যায় তথা ডাঃ রাধাক্ষল
মুণোপাধ্যায় দিয়াছেন এবং আমুরা বিবাস করি, গভর্পনেন্ট বন্দি
ভাগদের সহযোগিতায় পুনর্বস্তির কাল আল্রেরিকতার সহিত প্রহশ
করেন, তাহা হইলে অবিলয়ে না হইলেও অনতিবিলন্থ উহার
সামস্তপুর্ণ সমাধান সম্ভব হইবে।

—সুগান্তর

জন মাথাইরের পদত্যাগ, আচার্ঘ্য কুপালনীর বক্ত তা এবং শেষ্ঠ ভালমিয়ার পত্র দেশের বর্ত্তমান আর এক উত্তেগজনক বোষণা। জন মাধাই যে বিবৃতি দিয়াছেন তাহাতে গণভৱের পঙ্গুতা একটিত, স্মার শেঠ রামকৃষ্ণ নরনারী ও পাপশক্তি সম্বন্ধে যে ইন্সিত করিয়াছেন, তাহাতেও ছুনীভির কদর্য্য নারকীর রূপ দেখা গিয়াছে। আর শীকুপালনীর পার্লিয়ামেন্টের বক্তৃতা সকলের আসের কারণ হইয়াছে। তিনি মন্ত্রীপদে সমাগীন ব্যক্তির উৎকোচ গ্ৰহণের কথাও বলিয়াছেন। ইতিপূর্বে গুড় কেলেছারী, জমিদারী কেলেছারীর কথা তো প্রচারিতই হইরা গিয়াছে। মন্ত্রীর ঘুৰ লওরা উল্লেখ করিবার পর কুপালনী আর যাহা বলিয়াছেন ভাহাও অভ্যন্ত আতত্কলনক। তিনি বলিয়াছেন :-- "জনদাধারণ বলিতে আরম্ভ করিয়াছে যে, পুরাতম শাসনেই তাহারা অপেকাকৃত ভাল ছিল।" সে কি.—যাধীনভা অপেকা পরাধীনতা হথের ? কেন দেশবাসীর মনে এ ভাব জাগিল ? কাহার দোব? কাহাদের ফটা বিচ্যাভিতে? এদিকে নরা দিলীতে ১লা জুনের পার্লিয়ামেন্টের বিভর্কে প্রকাশ, শীগিরিজাশকর বাজপেয়ী লর্ড মাউন্টব্যাটেনের লোক হওরার পণ্ডিত নেহরু তাঁহাকে সমর্থন করেন এবং বাজপেরীর জন্মই কাশ্মীর ব্যাপার নাকি ভারতের প্ৰতিকৃপ হইতেছে। লর্ড মাউন্টব্যাটেন একদিন পানীলী-কথিত সমতানী শাসনের প্রতিনিধি ছিলেন এবং তিনি বিদেশী। পঙ্কিত জওহরলালের উপর এমন অনতিক্রমা প্রভাব কিলের জন্ত ?

আমেরিকার মুক্তরাষ্ট্রে বহুল পরিষাণ আলু উষ্ত হইরা পড়াওে উক্ত দেশ ২২ লক ৩৯ হাজার ২০০ ব্যাগ আলু স্পোন, পর্জুগাল, ইনরায়েল, সিংহল, বেলজিরান, ইটালী প্রভৃতি দেশে সন্তা দরে বিক্রম করিবার জক্ত দিরাছে। প্রতি ব্যাগে ১০০ পাউও আলু ছিল এবং প্রত্যেক ব্যাগের বৃল্য পড়ে ১ দেউ—আমাদের দেশের হিসাবে তিন প্রনার সানাক্ত কিছু বেশী।



(পূর্ব্যঞ্চাশিতের পর)

সিপাহী বিজ্ঞাহের সময় ইংরাজগণ ইছা বিলক্ষণয়পে উপলন্ধি করিয়াছিলেন বে বালালীরা বিশেষভাবে দেশপ্রেমিক ও চিন্তানীল এবং সেনাবাহিনীতে তাহাদিগকে রাখা মোটেই নিরাপদ মহে। ইহার কলে "বেলল আর্থ্রি" অলিয়া দেওয়া হয় এবং হীনবল করিবার জল্প বালালীদিগকে অসামরিক জাতিতে পরিণত করা হয়। বিজ্ঞোহের পর বুটিশ গভর্ণমেন্ট অতংপর মূলভং সাম্প্রদায়িক ভিত্তিতে অঞ্চলবিশেষ হইতে যতত্র যতত্র ভাবে সৈক্ষসংগ্রহ করিয়া সৈক্ষবাহিনীর পূন্পঠন সম্পন্ন করেন এবং তাহাদের মধ্যে যাহাতে ঐক্যবোধ জাত্রত না হয় ও একদল আর এক দলকে মুগার দৃষ্টিতে দেখে, সে সম্বন্ধে বিশেষভাবে সচেতন থাকেন। ভারতবর্ধ হইতে সংগৃহীত সৈক্ষবলের সাহাব্যেই শিক্তবপক্ষে ইংরাজগণ ভারতবর্ধ শাসন করিতেন—সামাক্ত গোরে সৈভ বাহা থাকিত, তাহা বারা সমগ্র ভারতবর্ধ মাত্র সামরিক শক্তির লোরে



দৈক্তপণ টেনগান লইবা বোঘাই নগরীর রাজপণে পাহারা দিতেছে শাসন করা বাইত না। ইংরাজের এই ছুর্বলতার বিবর যাহাতে ছারতবাসীদের নিকট বতদ্র সম্ভব গোপন থাকে, সে সম্বন্ধেও বৃটিশ গভপ্মেণ্ট হবেষ্ট চেষ্টা করিতেন।

অতএব দেখা যার, বে, ভারতীর দৈক্তগণের পূর্ণ আফুগত্যের উপরই ভারতে বৃটিশ গভর্ণমেন্টের ছারিছ ছিল প্রধানতঃ নির্ভরশীল এবং ইহাকেই মূলধন করিলা ইংরাজগণ নির্কিবাদে ভারতবর্ধ শাসন করিতেন; কিন্ত বিতীর মহাবুদ্ধের সময় প্রয়োজনের তাড়নার ব্যাপক-ভাবে দৈক্তবাহিনীতে লোক-সংগ্রহ করার ফলে দেক্তবাহিনীতে বহুদিনের সময়-রক্ষিত শূখলা অনেক্যানি বিপর্যন্ত হয় এবং মুদ্ধের প্রথম দিকটার দক্ষিণ-পূর্কা এশিয়ার বৃটিশের ভাগ্যবিপর্যায়ের ফলে এই শূখলা একেবারেই নই হইরা যায়। দক্ষিণ-পূর্কা এশিয়ার রণক্ষেত্র হইতে পক্ষালপসরণের সময় ইংরাজ দৈক্তপণ্র অপসরণই অগ্রাবিকার লাভ

করে এবং ভারতীর সৈশুগণের একটা বৃহৎ অংশকে পশ্চাতে বাঁটি আগ্লাইবার কন্ত রাখিরা অধিকাংশ ইংরাজ সৈশুই নিরাপনে হামত্যাগ করে। ভারতীর বাহিনী বিপদ ও অনাহারের মধ্যে পরিত্যক হর। পরবৃত্তীকালে মৃলতঃ এই সকল ভারতীর সৈশু ও অকিসারদের লইরাই আলাদ-হিল্প-ফৌল সংগঠিত হয় এবং এতহিনের সামান্ত বেতনভূক্ পেশাদার সৈশ্তপণ আপনাদের লাতীর বাধীনতা প্রতিষ্ঠার উদ্ব্য হইয়া বোগা নাহকের নেতথাধীনে লাতীর বাহিনীতে ক্লপান্তবিত হয়।

হাজার হাজার সৈজের এইভাবে পরিত্যক্ত হওরা এবং তাহাদিও বারা আলাদ-হিন্দ কৌর সংগঠিত হওরার কলে বুব্বান্তর কালে ভারতীয় সৈক্তবাহিনীতে এক গুক্তবর প্রতিক্রিরার স্টেট হর। ভারতীর সৈত্তবাহিনী তিপলক্তি করিতে ক্তর করে, যে, রণক্ষেত্রে কামানের গোলার খোরাফ হিসাবেই কেবলমাত্র তাহাদের প্ররোজন—তাহাদিগকে দরকার কেবল ইংরাজ সৈক্তপণের হানত্যাগ নিরাপদ করিবার ক্ষম্ত পশ্চাতের ঘাঁটি

আগ্লাইতে। তাহাদের স্থ-প্রিধা এবং মললের জন্ন ইংরাজ-সরকারের কোনও দারিত্ব নাই। এতঘাতীত সৈতা ও অকিসার হিসাবে ইংরাজ ও ভারতীরদের মধ্যে বেতনের তারতম্য ছিল গভীর। ইংরাজগণের তুলনার অতি নিকৃই শ্রেণীর থাভ ভারতীরগণকে দেওয়া হইত। ইংরার অফিসারদের নিকট হইতে অত্যত্ত আপত্তিকর ও অসম্মানজনক আচরণ লাভ করা হাড়া ভারতীর সৈভাদের আর কিছুই লাভ হইত না। এইরূপ অভিবোগিও তানা বার যে ক্যাভার কি "তুলারার" নামক জাহাজের নৌ-শিক্ষার্থীদের নাকি "কুলীঃ বাছো" ইত্যাদি সভাষণে আপ্যারিত করিতেন। বুজ শেং প্রয়োজন না থাকার সেনা-বিভাবে ব্যাপকভাবে হাটাইরের উল্লোগ চলিতেছিল। তাহার কলেও অনেকের সহসা বেকঃ

হইবার সভাবনা দেখা দেখার অসন্তোব প্রীভূত হইতে থাকে আলাদ-ছিল্ম কৌজের সেনানীবৃশ্দের বিচারকার্যা হার করার কলেও সেনা-বিভাগের ভারতীরগণের মধ্যে প্রবল অসন্ভোবের স্কার ছর।

কর্ত্বপক্ষ চেটা করিলে পি, সি, গভের আচরণের মধ্যেই নৌলক্ষাবিগণের মনোভাবের পরিবর্তন অনুধাবন করিতে পারিতেন।
ফারত ছাড় দাবী বে সমর-বিভাগের ভারতীরগণেরও দাবীতে

াড়াইরাছে—ভারা প্রকাশন করিতে ভারারী চেটা করিলেন না।

চরাচরিত সাল্লাজ্যবাদীমূলত মনোভাব লইরাই ভারারা ঘটনাকে আরত

সির্বার চেটা করিলেন। ফল যাহা হইবার ভারাই হইল—রক্ষ রোব

রখনে ধর্মবটের আকারে, পরে প্রচেও বিজ্ঞাহে আক্মঞ্জান করিল।

তলালার জাহাজের নৌ-শিকার্থীদের মধ্যে ধর্মবট প্রথম মুরু হইল

৮ই ক্ষেক্রলারি হইতে। প্রার ১১০০ নৌ-শিকার্থী এই ধর্মবটে অংশ

হণ করিল।

অসন্তোৰ ক্ষত বিভারলাভ করিতে লাগিল। • "কলাবতী," "আউধ," নাসিক" ও "নিলাস" জাহাজও পরের দিনই যোগদান করিল এই প্রতি। ইহাতে ধর্মবটী নি-সৈক্ত ও নৌ-শিকার্থিগণের সংখ্যা ড়াইল প্রার ২•,•••। ইহার পর ক্রমণঃ "আকবর," "মাচলিমার,"

করোজ" প্রভৃতি জাহাজের নৌ-শিক্ষার্থীরা এবং বিভিন্ন
কর শ্রমিকরাও ধর্মবটে যোগদান করার কলে ধর্মঘটাদের
ক্রি প্রভৃত পরিমাণে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইল। বোঘাই শহরের
ক্রেপথে ধর্মঘটাদের এক বিরাট শোভাযাতা বাহির ইইল।
কেল লরী ভাহাদের দখলে ছিল, দেগুলির উপরে
বিরোধ ও লীগের পভাকা এবং লালঝাঙা উড়াইরা
গাভাযাতা বাহির করা হইল। বিক্রম ধর্মঘটারা যে
ক্রিমরই শান্তিপূর্ণ রহিল, ভাহা নহে। কোবাও কোবাও
ারার ইংরাজ-লৈনিক অথবা পুলিল অফিসারদিগকে
বার করিভেও ছিলা করিল না। কভকগুলি ইউরোপীর
ভিঠানও ভাহাদের ছারা আক্রান্ত হইল। ধর্মঘটাদের
বা কেনিও প্রথান্ত ব্রায় রহিল না। ২১শে ভারিবের

ধ্য বোধাই পোতাশ্ররের প্রার কুড়িখানি জাহাল বিজ্ঞাহীদের কৈ চলিরা গেল—এমন কি, প্রধান সেনাপতি বরং বে জাহাজধানিতে কেন, সেই কুগাসিপ "নর্ম্মণা" পর্যন্ত বাদ পড়িল না। ববশুলি হাজের,উপরই বৃটিশ পতাকার পরিবর্ত্তে কংগ্রেস ও লীগের পতাকা াভা পাইতে লাগিল।

নৌ-বিয়োহ ছফ হওয়ার সজে সজেই বোবাই শহরের অধিবাসীরাও
ল হইয়া উঠিল। ধর্মবিটাদের প্রতি সহাত্ত্তিসম্পন্ন নাগরিকগণ
ত হইয়া বোবাইয়ের সিরগাও ও কলবাদেবী অঞ্চল ট্রাম্বাস
কিয়া আওন ধরাইয়া বিভে লাগিল, সরকারী অফিস প্রভৃতি
ক্রমণ ও লুঠ করিতে লাগিল, বৃটিশ সৈত ও প্লিশের সহিত লড়াই
রবার লক্ত ছালে ছালে ব্যায়িকেড রচনা করিল। সমর্ বোবাই শহরে
সা-হালাবা আরত হওয়ার প্রনাত্রার অরাজকতা ও বিশৃথকা বিরাজ
রতে লাগিল। প্রতিশ ও সৈত্তগণ বিভিন্ন ছানে বছবার ওলি চালাইল।
নৌ-ধর্মবিটাদের প্রতি সহাত্ত্তি প্রস্থানের লক্ত বোবাইয়ের মেরিন-

ভাইত ও আৰেরী এলাকার ভারতীয় বৈমাদিকগণও ধর্মত হক্ষ করিল। বাংলার কলিকাতার উপকঠিছিত বেহালার নৌ-লিকার্থীয়া, মাবেরহাটের নৌসৈভাগণ এবং "হগলী" আহাজের নৌ-লিকার্থীয়াও ধর্মঘট আরম্ভ করিল। মান্তাজে "আদিয়ার" রণপোতের নৌসৈভারাও কাজ বন্ধ করিয়া দিল। বিজ্ঞাহ কিন্ত প্রবল আকারে দেখা দিল করাটার বন্ধরে। দেখানকার "হিমালয়", "বাহাছয়", "চমক" এবং "হিন্দুরান" প্রভৃতি বিজ্ঞাহে বোগদান করিল এবং তাহাদের নেতৃত্ব করিতে লাগিল "হিন্দুরান"। "হিন্দুরান" জাহাজের নৌসৈভারা একেবারে চরম-পত্র দিলা বিলি। তাহায়া সোজাইজিং আনাইয়া দিল, যে, সজ্ঞা হল ঘটিকার মধ্যে তাহাদের দাবী বীকার করিয়া না লইলে তাহায়া সৈপ্তদের উপর ওলিবর্গণ করিল—"হিন্দুরান" তাহার প্রত্যুত্তর দিল ভুইটি কামান হইতে গোলাবর্গণ করিয়া। সিগজালের বারা ইলিত করিয়া "হিন্দুরান" করাটার অভান্ত বিজ্ঞাহী জাহাজওলিকে আবভাক নির্দ্ধোদি দান করিতে লাগিল।



নো-বিজোহীদের সমর্থনে বোঘাই-এ গণ-বিকোক। মিলিটারির **ওনিতে** নিহত করেক্জন

আলাদ-হিন্দ কৌর ভারতীয় নৈক বিভাগে বে ভালন ধরাইয়াছিল,
নৌ-বিজাহে তাহা আরও গুলতর আলার ধারণ করিল। সামরিক
সংগঠনের বিভিন্ন বিভাগে ভারতীরগণের বে একান্তিক আলুগত্যের উপর
বৃটিল-সামাল্যের প্রতিষ্ঠা স্থাচ ছিল, ইংরাজ ক্টনীন্তি ও সমরনীতিবিদ্গণ
বৃথিতে পারিলেন বে তাহা আর বিন্দ্যাত্র নির্ভর্যোগ্য নহে। বে বিজ্ঞাহ
নৌ-বিভাগে স্কুল্ল হইরাছে, বে কোন মুহুর্জে অভান্ত বিভাগেও তাহার
সংক্রমণ সংঘটিত হইতে পারে। অসম্ভুট অনসমন্তি, বিকল্প আন্তর্গাতিক
পরিছিতি এবং বিজ্ঞাহী সৈক্রদল লইরা তাহারা বালণের তৃপে বসিলা
আছেন—বে কোনও মুহুর্জে বিন্দোরণ ভ্রাবহরণে আরও প্রচণ্ড
হইতে গারে। অতএব সত্য সত্যই ভারত হইতে বৃটিশ সিংহের সমলাবে
প্রহানের সমন্ত্র স্বাগত হইরাছে। ক্ষতা হতান্তর সবলে তথ্যও
কর্ত্পক্রের মনে বেটুকু ইতন্ততঃ ভাব ছিল, নৌ-বিজ্ঞাহ স্কুল হওলার
সঙ্গেল তাহা দুরীভূত করিলা বান্তব সিভান্ত প্রহণ করিতে হইল।

तो-विद्वाह क्त 'इख्वात अक्षिम शहर >>se সালের >>ce

কেবদারি বিলাতের শ্রমিক গভর্গমেন্ট ভারত সম্পর্কে এক সিদ্ধান্ত বোষণা করিলেন। তাহাতে বলা হইল যে, ভারতে শীপ্রই এক বিশ্র-মিশন প্রেরিভ হইবে এবং ভারত যাহাতে ক্রন্ত বাধীনতা লাভ করিতে পারে, ত্রিবরে সাহাব্য করিবার জল্প তাহারা ভারতের নৃত্ন শাদন-তন্ত্র স্বন্ধে ভারতীয় নেতৃর্ক্ষের সহিত আলাণ-আলোচনা করিবেন।

করেকলিন যাবৎ নৌ-সৈল্পণ ক্যাস্ল ব্যারাকের মধ্যে ঘাঁটি করিয়া বৃটিশ সৈম্ভগণের সহিত তুমুল সংগ্রামে রত রহিল। ব্যারাকের অভ্যন্তরন্থ অন্তাগারটি মহিল তাহাদেরই দধলে। ২১শে তারিথে রাত্রে ইংলপ্তের অধান মন্ত্রী মিঃ এটাটলি কমল সভার এক বিবৃতি দিরা জানাইলেন, যে, ঘটনাকে আরত্বে আনিবার জক্ত বৃটিশ तो-वश्त्रत्र अकठा वढ़ पण वाचाई वन्पत्र व्यक्तिपूर्थ देखिमर्थाई याजा ক্রিরাছে। নরাদিলীর প্রধান কেন্দ্র ইইতেও ঘোষণা করা হইল, मक्किमानी तो, इन ७ विमानवाहिनी वाचाई, भूगा ७ क्वाठीए ুপ্রেরিত হইয়াছে। ভারতীয় নৌ-বহরের প্রধান সেনাপতি ভাইস্ এ্যাডমিরাণ গড়ফ্রে ঐ ২১শে তারিধেই বোখাই বেতার-কেন্দ্র হইতে (नो-विद्यारीत्मत्र উদেশে এক ভাষণে आमारेत्मन, विद्यारीत्मत्र अलाव-অভিবোগ সম্পর্কে তদন্ত করা হইবে এবং স্থায়সকত দাবীগুলি পূরণ कतात्र (ठहे। कत्र। इटेरव-किंड विद्यादीनिगरक कत्रिए इटेरव विना সর্ভে আত্মসমর্পণ। তিনি শ্মরণ করাইরা দিলেন, পভর্ণমেণ্টের শক্তি व्यक्त मरह अवः श्राद्धांकन हरेला नम्य भक्ति विख्यांह-नमरन निखांकिछ ছইবে; এমন কি, দেজক আয়োজন ছইলে তাহাদের গৌরবের तो-वश्वतक भारत कवित्रा किनाउँ और जीवा विश्व किवित्व मा ।

২>শে কেব্রুগারি রাত্রেই ভারতীয় নৌ-বহরের একটা দল গিয়া বোৰাই বন্দরে প্রহরার নিবৃক্ত হইল এবং কয়েকথানি জগীও বোমার বিমান উপর হইতে পর্যাবেক্ষণ কার্য্য চালাইতে লাগিল। উভয় পক হইতেই সারা রাত্রি গুলিও গোলা ব্যব্ত হইতে লাগিল।

বোষাই শহরের অবহা আরও চরমে উঠিল। ২ংশে তারিথে জনসাধারণ কতকণ্ডলি অঞ্চলে এতই বিক্লুর হইরা উঠিল যে, পুলিশ ও মিলিটারি নানা হানে বছবার গুলি চালনা করিল। সেদিনের গুলি বর্বণে নিহত হইল প্রার ৬০জন এবং আহত হইল প্রার ৬০০ ব্যক্তি। জনসাধারণ সেদিন আন্দাল ৪০খানি সামরিক লরি আগুল লাগাইরা পুড়াইরা দিল, ১২টি ডাকঘর ও ৩০টি র্যাশন দোকান লুঠ করিল এবং ইম্পিরিয়াল ব্যাক্তর ওটি লাখা আক্রমণ করিয়া জিনিব-পত্র আজিয়া শুড়াইয়া লগুভগু করিয়া দিল। দাঙ্গা-হালামা এতই প্রচণ্ড আক্রিয়া গুড়াইয়া লগুভগু করিয়া দিল। দাঙ্গা-হালামা এতই প্রচণ্ড আক্রম ধারণ করিল যে, করেক হলে মিলিটারি ও পুলিশের সহিত অনভার রীতিমত লড়াই হইয়া গেল। সরকারী পক্ষে নিহত হইল এবং ওণ্ডন অধিসার।

বেতার মারকত নৌ-সেনাপতির ভীতি প্রদর্শনে কোনও কল কলিল লা ৷ ইতিকর্ত্তব্য নির্ভারণের কক্ষ কেন্দ্রীর ধর্ম্মট কমিটির প্রতিনিধিতৃক্ষ জাতীর নেতৃত্বের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন এবং তাহাবের নির্দেশ প্রার্থনা করিলেন। প্রীপুরুবোন্তমদান ত্রিক্ষদান, সন্ধার বরভতাই প্যাটেল, জনাব মহম্মদ আলি জিল্লা প্রভৃতি নেতাগণ বিজ্ঞাহীদিগকে আত্মসমর্পণ করিতে বলিলা শান্তির জক্ত আবেদন জানাইলেন। সন্ধার প্যাটেল আরও জানাইলেন বে, নৌ-দৈলগণের অভাব-অভিযোগ প্রশের ব্যাপারে এবং ভাহারা যাহাতে শান্তি না পান্ন দে বিষয়ে কংগ্রেম ব্যাপাধ্য চেষ্টা করিবে।

ইহার পর ২২শে ফেব্রুগারি রাত্রে "তলোয়ার" জাহাজে কেল্রীয় ধর্ম্মঘট কমিটির যে অধিবেশন হইল, তাহাতে জাতীয় নেতৃর্ক্ষের উপলেশ ও আবেদন অসুযায়ী বিনা সর্প্তে আজ্বসমর্পণ করারই সিদ্ধায় গৃহীত হইল। পরদিন ভোর ৬টা ১০ মিনিটের সময় আজ্বসমর্পণের নির্দ্ধেশনুলক সাক্ষেতিক, বার্জা বিজ্ঞোহী ঘাঁটিগুলিতে প্রেরণ করা হইল। বিভিন্ন ঘাঁটির বিজ্ঞোহী নৌ-সৈক্ষরণ এবং জাহাজগুলি ইহার একদিন পুর্বেই বিজ্ঞোহের পরিসমাপ্তি ঘটে। ২২শে তারিপে উভ্রমপক্ষে প্রবাজানে গোলাগুলি বিনিময়ের পর বৃটিশ ছ্ত্রীবাহিনীর আক্রমণে নিরুপার হইয়া সকাল ১১টা ১০মিনিট সমরে "হিন্দুহান" এবং অক্যান্য জাহাজ আজ্বসমর্পণ করে।

১৮৫৭ সালের সিপাহী বিজোহের পর নৌ বিজোহের মত এতবড় বিজ্ঞোহ সমরবিভাগে আর ঘটে নাই। পতনশীল হুটশ-সাক্রাজ্ঞের ভিত্তি ইহার ছারা যেন কম্পিত হইরা উঠিল।

১৯৪৬ সালের ১৫ই মার্চ্চ ইংলণ্ডের , শ্রমিকদলীর প্রধান মন্ত্রী মিঃ
এটিলি আর একটি ঘোষণার জানাইলেন, সংখ্যালর সম্প্রান্ধসমূহকে
আর সংখ্যাগুরু সম্প্রদারগুলির অগ্রগতি ব্যাহত করিতে দেওয়া হইবে
না। মন্ত্রি-মিশন প্রেরণ সম্পর্কে তিনি বলিলেন, ভারতবর্ধ বাহাতে
ফত বাধীনতা লাভ করিতে পারে, দে বিষয়ে সাহাত্য করিবার ক্ষপ্তই
ভাহার সহকর্মিণণ ভারতে গমন করিতেছেন। ভারতের ভবিত্তৎ শাসনব্যবহা কিরূপ হইবে, ভারতবাসীদের ধারাই ভাহা ছিরীকৃত হইবে।
ভাহারা ইচ্ছা করেন যে, ভারতের জনগণ সম্বর এ সম্বন্ধে সিদ্ধান্ধ প্রথন
করেন। ভারতের পূর্ণ বাধীনতা দাবী করিবার অধিকার ভিনি স্বীকার
করিলেন এবং যথাগভব ক্রন্ত ও সহজভাবে ক্ষমতা হতান্তর করিতে
অভিলাব প্রথাশ করিলেন।

ইহার পর মত্রি-মিশনের তিনজন মদক্ত—ভারত-সচিব লর্ড পেথিক লরেক, বাণিজ্য-সচিব। ভার ট্রাফোর্ড ক্রীপ্,স এবং নৌ-সচিব ানঃ এ, ভি, আলেকজাণ্ডার—২৩শে মার্চ করাচীতে আসিরা পৌছাইলেন। মিশনের নেতা ছিলেন লর্ড পেথিক লরেক। ভারতে আসিরাই মিশনকে সংখ্যালঘু-সংখ্যাগুরু সম্পর্কার মিঃ এটিলির ঘোষণার ব্যাখ্যাম্পর্ক প্রথমের সম্প্রীন হইতে হইল। উহা ব্যাখ্যা প্রসল্পে তাহারা বলিলেন বি উক্ত ঘোষণার মুসলমান সম্প্রানরেক সংখ্যালঘু সম্প্রান ইনাবে গণ্ড করা হর নাই; অর্থাৎ তাহার নির্গলিতার্থ এইরূপ দীড়াইল বে ভারতংক আঞ্চাক ভিত্তিতে বিচার করিলে বে সব এলাকার মুসলমানগণ

সংখ্যাগরিষ্ঠ, সে সকল ছাবে তাঁহারা সংখ্যাগরিষ্ঠ হিসাবেই পরিগণিত হইবেন। এইভাবে ভারতকে অথগুভাবে বিচার না করিয়া মুসলমান-গণকে সমগ্র ভারতে সংখ্যালয় সম্প্রদার হিলাবে বিবেচিত হওয়ার আশহা হইতে মুক্ত করা হইল। ইহার পুর্বে বড়লাট লর্ড ওয়াভেল একবার ঘোষণা করিয়াছিলেন বে, ভৌগোলিক, সামরিক এবং অর্থ-নৈতিক দিক দিয়া ভারত অর্থগু—ইহার উপর পাকিতানী-অল্লোপচার চলিবে না। মন্ত্র-বিশ্নের ব্যাধ্যায় কিন্ত পাকিতানের আভাবই যেন ভঁকিফুকি মারিভে লাগিল।

ভারতে উপস্থিত হইমা বিভিন্ন সম্প্রনায় এবং দলকে তাঁহাদের বক্তব্য এবং প্রস্তাবসমূহ মন্ত্রি-মিশনের নিকট উপস্থাপিত করিবার জন্ত মিশন আমন্ত্রণ জানাইলেন এবং বিভিন্ন দলের নেতৃত্বন্দের সহিত আলাপ-আলোচনা চালাইতে লাগিলেন। আলোচনার প্রথম পর্যার শেষ করিয়া মন্ত্রীক্রর বিজ্ঞাম প্রস্তাব্য উদ্দেশ্তে করেক দিনের জন্ত ১৯শে এপ্রিল তারিবে কাশ্মীরে গমন করিলেন। তাঁহাদের কাশ্মীর হইতে প্রত্যাবর্তনের পর ৫ই মে হইতে মন্ত্রি-মিশনের সদস্তগণ, বড়লাট এবং কংগ্রেস ও লীগনেতৃত্বন্দের ত্রিদলীয় বৈঠক সিমলায় স্থক্ষ হইল; কিন্তু মূশনিম লীগের পাকিস্তান দাবী এবং কংগ্রেসের অবও ভারত দাবীর টানা-তেইচড়ার ১২ই মে সন্ধ্যার বৈঠক ভাঙ্গিয়া গেল।

মন্ত্র-মিশনের সহিত আলাপ-আলোচনার প্রবৃত্ত হইবার পূর্বেকংগ্রেদের পক্ষ হটুতে এই প্রতিশ্রুতি আলার করিরা লওরা হইরাছিল বে, কংগ্রেদ ও লীগের মধ্যে কোনও মীনাংসা সন্তব না হইলেও ভার তবর্ধ স্বধ্বে শ্রামিক গভর্পমেন্টের বোবণাকে কার্ব্যে পরিপত করিতে হইবে; স্করাং বৈঠক ভালিয়া গেলেও মন্ত্রি-মিশনের কার্য্য শেষ হইল না। উত্তর দলের মধ্যে কোনও মীনাংসা সন্তব না হওরার এক বিবৃত্তি মারস্কত বড়লাট এবং মন্ত্রীত্রর ছংথ প্রকাশ করিলেন এবং ইহাও জানাইলেন বে, আলোচনা ব্যর্থ হওরার সকল উল্ভোগ শেষ হইল না; পরবর্জী কর্ত্বব্য সন্বন্ধে শীঘ্রই এক বোবণা করা হইবে।

দেই ঘোষণা প্রকাশিত হইল ১৬ই মে। উহাতে গণ-পরিষদ গঠন এবং ভারতের ভবিছৎ রাষ্ট্রীয় রূপ সম্বন্ধ স্থপারিশের আকারে এক পরিকল্পনা প্রচারিত হইল। পরিকল্পনার ছইটি অংশ—একটি দীর্ঘন্যাদী ও অপরটি বলমেরাদী। দীর্ঘন্যাদী পরিকল্পনার পররাষ্ট্র, দেশরক্ষা এবং যানবাহন ব্যতীত অপর সম্দর ক্ষরতা প্রাদেশিক ও দেশীর রাজ্যের সম্বান্ধে এক ভারতীর যুক্তরাষ্ট্র গঠনের কথা বলা হইল। পররাষ্ট্র, দেশরক্ষা ও যানবাহনের প্রাপুরি কর্ত্ত্ব ক্ষেবল যুক্তরাষ্ট্রীয় স্বকারের হত্তে থাকিবে। প্রাদেশিক ব্যবস্থা-পরিষদের সদস্তগণ কর্ত্ত্বক সাম্প্রদারিক অমুপাতে একক হত্তান্তর-বোগ্য ভোটের ঘারা নির্বাচিত প্রাপ্তরাম্বন্ধের ভোটের ভিত্তিতে প্রতি দশ লক্ষে একজন হিসাবে মোট ৩৮৫ জন সদস্ত লইরা ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রের অক্ষ এক শাসনতন্ত্র-রচনাকারী গণ-পরিষদ গঠিত হইবে। ৩৮৫ জন সদস্তের মধ্যে বৃটিশ ভারত হইতে থাকিবেন ২৯২ জন এবং দেশীর রাজ্য হইতে

৯৩ জন। মুশলিম লীগের পাকিতান দাবী আংশিকতাবে প্রবের কাট বৃটিশ ভারতের প্রদেশগুলিকে এভাবে তিনটি মগুলীতে ভাগ করার বাবহা হইল, বাহাতে মুদলমানগণ যে বে অঞ্চল লইরা পাকিতান গঠন করিতে চাহেন,সেই দেই অঞ্লের প্রাদেশিক শাদন-তত্র প্রণয়নে তাহাদের সংখ্যাগরিষ্ঠতা অক্ষর থাকে। এইরপ ব্যবহা হইল বে, গণ-পরিবদের প্রথম অধিবেশনেই ক, ধ ও গ প্রদেশ-মগুলীর অন্তর্ভুক্ত প্রতিনিধিবর্গ পরিকল্পনার উদ্ভিথিতসভ তিনটি বিভিন্ন ভাগে বিভক্ত হইরা তাহাদের অব মগুলীর অন্তর্গত প্রদেশনমূহের জন্ত শাদনতত্র রচনা করিবেশ এবং ঐ সমূদ্য প্রদেশ লইরা মগুলী গঠিত হইবে কি না এবং হইলে কোন কোন বিষয়ের ভার ঐ মগুলী গ্রহণ করিবে, তাহা ছির করিবেন। ন্তন শাদনতত্র চালু হওয়ার পুর কোনও প্রদেশ ইক্ষা করিলে উহা যে মগুলীর অন্তর্ভুক্ত আছে, তাহা ছইতে বাহির হইরা আসিতে পারিবে। আলোচনা কমিটির মাধ্যমে দেশীর রাজ্যগুলির ভারতীয় যুক্তরাট্রে যোগদান সযকে আলোচনা করিতে এবং যোগদানের অভ্যুক্ত বিরু কিরিতে নির্দেশ দেশুরা হইল।

অৱমেয়াদী পরিক্রনায় বলা হইল, যে সকল প্রধান প্রধান দল উপরোক্ত দীর্ঘমেয়াদী পরিক্রনা মানিয়া লইবেন, তাহাদের মধ্য হইতে সদস্য লইয়া অন্তর্গর্জী কালের জন্ম ভারতগভর্ণমেন্ট পুনর্গটিত হইতে।

২৯শে জুন তারিখে মক্তি-মিশনের সদক্তগণ ভারত ত্যাগ করিলেন। মত্রি মিশনের সনিকান্ধ অমুরোধে কংগ্রেস সর্ভ্যাপেকভাবে দীর্ঘ-মেয়াৰী প্রস্তাবটি গ্রহণ করিলেন—কিন্ত স্বর্মেয়াদী প্রস্তাব স্বীকার कतिया व्यक्तर्वर्शे मद्रकात्र शर्रेटन दाक्षि श्हेरलन मा। मूनलिय नीत প্রথমে উভর প্রভাবই গ্রহণ করিলেন, কিন্তু বৃটিশ প্রভর্গমেন্ট একমাত্র তাহাদের লইয়া অন্তর্ক্তী সরকার গঠনে উত্তোগী না ছওয়ার এবং দীর্ঘ মেয়াদী পরিকল্পনায় মগুলী-গঠন প্রভৃতির ব্যাখ্যা লইয়া মভান্তরের करल डाँशां शास व्यावाद वीकिया विमालन । ১৯৪७ मालद क्लाहे भारत অদেশসমূহ হইতে গণ-পরিবদের সদস্ত-নির্বাচন সমাপ্ত হইলে দেখা গেল যে, উহাতে কংগ্রেস দলের ২১১ জন এবং লীগের মাত্র ৭৩ জন সদস্ত স্থান পাইরাছেন; স্বতরাং বিপুল সংখ্যাগরিষ্ঠতা (মি: জিল্লার ভাষার Brute Majority) থাকার ফলে গণ-পরিবদে কংগ্রেসের প্রভাব বিন্দুমাত্রও কুথ হওয়ার সভাবনা ছিল না৷ তথন ২৯নে জুলাই তারিখের এক অধিবেশনে লীগ কাউন্সিল মন্ত্রি-মিশনের পরিকল্পনা সম্পূর্ণভাবে পরিত্যাপ করিয়া স্বাধীন, সার্ব্বভৌম পাকিস্তানের ব্যক্ত প্রাক সংগ্রাম হরু করার সিদ্ধান্ত গ্রহণ করিলেন। ১৬ই আগষ্ট প্রত্যক্ষ-সংগ্রাম-দিবস হিসাবে পালন করা স্থির হইল।

পণ্ডিত নেহের ইতিমধ্যে অন্তর্ক্কী সরকার গঠনের জক্ত আমত্রিত হইলেন। লীগও বাহাতে অন্তর্ক্কী সরকারে বোগদান করেন, পণ্ডিত নেহের তজ্ঞক্ত জনাব মহন্দ্রণ আলি জিল্লার সহিত বোবাই নগরীতে গিল্লা সাক্ষাৎ করিলা আলাগ-লালোচনা চালাইলেন—কিন্ত লীগের মনোভাবের কোনই পরিবর্তন হইল না। এদিকে ১৬ই আগন্থ প্রত্যক্ষ-সংগ্রাম-দিবসে নানা হানে ভীবণ দালা-হারামা হুল

হুইল—তল্পা কলিকাতার দালাই হইল জ্যাবহ। উহার পর হুইতেই অভাপি নানালানে দালা হালানা চলিয়া আসিতেছে।

পণ্ডিত নেহেরের নেতৃত্বে ংরা সেপ্টেবর অন্তর্মবর্তী সরকার গঠিত
ছইল। ইহার পর বড়লাট লর্ড ওরাভেলের সহিত লীগ-সভাপতি মি:
ক্রিয়ার গোপন আলোচনার কলে হীর্ত-মেরাদী পরিকল্পনা মানির।
নি লইলেও লীগের পাঁচ অন সদক্তকে ২৬শে অক্টোবর অন্তর্মবর্তী
সরকারে গ্রহণ করা ছইল; কিন্ত ইহার কল ওড ছইল না। ছইটি
প্রতিব্দী দলের আদর্শগত পার্থক্যের অক্ত সদক্তগণের মধ্যে মত-বিরোধ
এবং অসহবোগিতা ভীত্র আকার ধারণ করিল।

কই ডিদেশর হইতে গণ-পরিবদের অধিবেশন ক্রন্ন হইবে বলিরা হির হইরাছিল; কিন্তু অন্তর্গর্তী স্বকারে থাকিরাও লীগের উক্ত গণ-পরিবদ বর্জন করার সিদ্ধান্তে উত্তব হইল এক ফটেল পরিছিতির। তথন লর্ড ওরাভেল কংগ্রেস, লীগ ও লিখ নেতৃবৃন্দকে লইরা মিঃ এ্যাটলির আমন্ত্রণে আলোচনার কক্ত লগুনে গমন করিলেন। ক্যাটেলের তরকে গোলেন পণ্ডিত কণ্ডছরলাল নেহের এবং লীগের ভরকে মিঃ ক্রিলা। আলোচনার কিছুই মীমাংসা হইল না। লীথ-ধেরাদী পরিক্রানা সম্পর্কে লীগের ব্যাখ্যা সমর্থন করিরা মিঃ এ্যাট্লি ৬ই ডিদেশর এক বিবৃতি দিলেও এবং কংগ্রেস সেই ব্যাখ্যাই মানিরা কাইতে সম্মত হইলেও লীগ গণ পরিবদে যোগদান করিতে রাজি হইল লা। লীগ সদস্তগণের অনুপত্নিতি সংস্বেও ১ই ডিদেশর কিন্তু গণ-পরিষদের প্রথম অধিবেশন বলিল।

১৯৪৭ সালের ২০শে কেব্রুলারি মি: এটালি ভারত সম্পর্কেক্ষণ সভার এক চুড়ান্ত ঘোষণা দিলেন। উহাতে বড়লাট হিসাবে লর্ড ওরাভেলের স্থলে লর্ড পূই মাউন্টব্যাটেনের নিয়োগ ঘোষণা করা মইল এবং বলা হইল যে, বৃটিশ গভর্ণমেন্ট ১৯৪৮ সালের জুন মাসের মধ্যে ভারত শাসনের সকল দারিড় ও ক্ষমতা পরিত্যাগ করিবেন। ক্ষমতা হন্তান্তরের কাল অবিলব্দেই আরম্ভ করা ইইবে এবং কেন্দ্রীর ও প্রাকেশিক গভর্ণমেন্টসমূহ যাহাতে এ সময়ের মধ্যে ক্ষমতা গ্রহণের উপরুক্ত হর, তক্ষম্ভ বিশেষ বিশেষ ক্ষমতা প্রদান করা ইইতে থাকিবে। সমগ্র বৃটিশ ভারত উক্ত নির্দিষ্ট সময়ের মধ্যে ঐক্যমত ইইরা ক্ষমতা প্রহণে ইচ্ছুক না ইইবে, কাহার নিকট ক্ষমতা হন্তান্তর করা হইবে, সে বিবরে বৃটিশ গভর্ণমেন্ট চিন্তা করিরা দেখিবেন। তথন বিবেচনা করিরা দেখা ইইবে থা, কেন্দ্রীর সরকার বা অঞ্চল বিশেষে প্রাদেশিক

সরকার অথবা ভারতের স্বার্থ ও ভারপরারণভার দিক হইতে অপর কাহার হতে ক্ষতা হতাত্তর করা বার। বস্ততঃ এই বোবণার স্বারা ক্সি-মিশনের পরিক্ষনা কার্য্যতঃ পরিত্যাগ করা হইল।

ক্ষতা হস্তান্তরের দারিত লইরা নার্চ্চ মানের শেব দিকে বড়লাট হইরা আদিলেন নর্ড লুই মাউণ্টব্যাটেন। কংগ্রেস, লীগ ও শিখ নেতৃবৃক্ষের সহিত আলোচনার পর তাহাদের সম্মতিতে তিনি ওরা জুন তারিপে ভারত-বিভাগের প্রভাব উত্থাপন করিলেন। ইহার কলে বালালা ও পাঞ্জাব বিভক্ত হইল—আদামের শীহট জেলার পণভোট গ্রহণের পর উহা পূর্ববিক্ষের সহিত বৃক্ত, হইল। উত্তর-পশ্চিম-সীমান্ত প্রদেশেও গণ-ভোট লইরা উহার পাকিস্তানে বোগদান সাবান্ত হইল।

১৯৪৭ সালের ৪ঠা জুলাই ইংলণ্ডের পার্লামেন্ট মহাসভার হাউস
আক কমল এ ভারতীর শাধীনতা-আইন উপাপন করা হর এবং
আলোচনান্তে অতি ক্রত ১৪ই জুলাই ভাহা চূড়ান্তরূপে গৃহীত হর।
বিলটি লর্ড সভার অনুমোদিত হর ১৬ই জুলাই তারিখে। রাজা বঠ ঝর্জ্জ
১৮ই জুলাই বিলে সক্ষতি দান করিলে উহা আইনে পরিণত হর।

উক্ত আইন অনুবারী ১৯৪৭ সালের ১৫ই আগষ্ট ভারতীর যুক্তরাই ও পাকিস্তান নামে ছুইটি নৃতন ডোমিনিরন গঠিত হর এবং উক্ত ছুইটি ডোমিনিরনের উপর বুটিশ মন্ত্রি-সভার সর্কবিধ কর্তৃত্ব লোপ পার। দেশীর রাজ্যগুলির উপরও ইংলভেখরের সার্ক্তভাষ্থের অবসান ঘটে এবং অভিগ্রার, সংস্কৃতি ও নৈকটা অনুবারী এগুলিকে ছুইটি ডোমিনিরনের যে কোন একটিতে যোগদানের অধিকার ও পরামর্শ দেওরা হর।

ভারতীয় গণ-পরিষদ শাসন-তক্ত প্রশাসনের কার্য্য চালাইরা যাইতে থাকেন। ইভিমধ্যে ভারত-রাষ্ট্রের সংলগ্ন দেশীর রাজ্যগুলিও একে একে ভারতীয় যুক্তরাষ্ট্রে যোগদান করেন। ১৯৪৯ সালের ২৬শে ডিসেম্বর গণ-পরিষদের শাসনতক্ত প্রশাসন কার্য্য সমাও হইরা প্রদিন উলা চূড়াভরুপে গৃহীত হর। তালার কলে ১৯৫০ সালের ২৬শে আফুরারি মহান্ ভারতীর গণতাজিক প্রকাতক্ত স্থাপিত হইরাছে এবং ভারত ফেছার উপনিবেশ-গোজীয় মধ্যে থাকিলেও ইংলপ্তের রাজার প্রতি তালার আফুগত্যের সমাওি ঘটরাছে।

আমাদের বাধীনতা-লাভের ইহাই ইভিহাস। বাঁহাদের বিপুল বার্থত্যাগ এবং আন্ধবিসর্জ্ঞানের উপর এই বাধীনতার অভিচা—উাহার। চির্দিন পুলিত হউন।

The state of the s

নমাপ্ত

বিশ্বের বিখ্যাত প্রাবলী

ডাঃ শ্রীমাখনলাল রায়চৌধুরী শাস্ত্রী

क्रिकेत करनात क्रथम र्वोवरनत शव

পত্র পরিচয়—

করাসী ভিউর হুগো বালালী পাঠকের নিকট অপরিচিত নন, তার রচনা "লে মিলারেবলগ," "হুঞ্ বেক অব্ নতার দাবের" ইংরেজী অসুবাদ শিক্তি বালালী সাথাহে পাঠ করে।

করালী বিজ্ঞাহের সমকালে ১৮০২ সালে বিখ্যাত হগো পরিবারে তার জন্ম। ১৫ বৎসর বরনে তার প্রথম কবিতা প্রকাশিত হয়েছিল; ১৯ বৎসর বরনে তার শৈশব শ্বেলার সাধী এডিলির প্রতি তিনি আকৃষ্ট হন। তান বৎসর অসংখ্য কবিতা, উচ্ছাস, পত্র বিনিমর, মান অভিমান। ২২ বৎসর বরনে এডিলিকে বিবাহ করেন। তারপর ভিত্তর হগোর ছরস্ত চিন্ত শাস্ত হয়। Le Dermier Jour d'em Condemne, নামক রচনার মানব-জনরের প্রেমাকাজ্ঞার অপূর্ব বিরেশণ করেন। প্রেমের আবেদনই ভিত্তর হগোর প্রেমাকাজ্ঞার উপ্রতি কবিতার উৎস। এই কবিতাগুলি ক্রমশ: ভিত্তর হগোকে পৃথিবীর স্ক্রেণ্ডেষ্ঠ গীতি কবির আসন দান করেছে।

পরবর্তী জীবনে ভিক্টর হুগো নানা বিষয়ে রচনা আরম্ভ করেন এবং রাজনীতির আবর্ত্তে অড়িকে পড়েন। তৃতীর নেগোলিয়নকে তিনি প্রথম নেগোলিয়ানের 'নীর্ণ সংক্ষরণ' বলে আখ্যারিত করেন। Napoleanic Legend, Napolean le Petit এই ছুইটী কথা ইউরোপের ইতিহাসে অবিনশ্বর। ফলে ভিক্টর হুগোকে প্রার ২০ বংসর নির্বাসন ভোগ করতে হয়েছিল।

এই भारताछ পত्रशांति विवारङ्क शूर्व २३ वरमद वहरम लाथा ।

नका।—खक्रवात, मार्ट ১৫ ১৮২२ श्व:

এডিলি !

আৰু রাত্রিতে আর আমি বাইরে বাব না, কাল এবং পরও ছইটা
সন্ধ্যা আমার বেল কেটেছে, আৰু সন্ধ্যার আমি আমার ঘরে বলে থাকব
এবং তোষার নিকট পত্র লিথব। এডিলি, আমার কলনার এডিলি,
তোমাকে বলবার মন্তম আমার কত কথা আছে আন ? গত ছই বিদ
আমি কেবল আমাকেই প্রশ্ন করেছি প্রতি মূহর্তে—এই আমল কি
বংগর বিলাস মাত্র! আমার মনে হচ্ছে আমি বাহা অনুতব করি,
তার সক্ষে পৃথিবীর কোম সক্ষা নেই। আমণ্ড আমি মেবমুক্ত আকাল
পরিকলনা করে উঠ্তে পারি নি।

এডিলি, তুমি ধারণা করতে পারবে না, জামি কত নিঃম্ব করে আমাকে নিবেদন করে দিরেছি। ছাই, আমি কি ডাই আমি ! জামি ছর্বলি ; তাই আমি ভেবেছিলাম, আমি লাস্ত। আমি এক উদ্বাধ নিরালায় আছের হরেছিলাম, তাই আমি ভেবেছিলাম, আমি নির্তীক, জামি এলাস্ত। আজকে আমাকে তোমার চরপ প্রান্তে নিবেদন করবা অধিকার দাও—তুমি কত বিরাট, কোমল, লভিম্মনী! আমার কেবা মনে হচ্ছে তোমার নিকট আমাক আম্বনিবেদনের চরম পরিপত্তি হবে—তোমার জন্ত আমার আল্প-বিসর্জ্জন। কিন্তু এডিলি, তোমার প্রেমে আতিশয়ে আমার অল্প তোমার সমস্ত শান্তি উৎসর্গ করার আরোকা করেছ!

এডিলি, গত আট দিন তোমার ভিত্তর কি অঙ্ত চিন্তা করে।
কান ? কলনায় তোমার অপূর্ব প্রেমের অর্থ্য প্রহণ করে।
যদি আমার পিতা আমার অনুরোধ উপেক্ষা করে অর্থ প্রদানে অসক্ষাহন, তবে হয়ত যে কোন উপায়ে কিছু অর্থ সংগ্রহ করে তোমাকে নিয়ে বাব। কারণ, তুমি আমার সিলনে বারা বিদ্ধ—তাদের ক্ষান্ধ থেকে বহু দুরে তোমাকে নিয়ে বাব। আমরা করাসী দেশ অতিক্রম করে বাব। আমরা এমন দুরদেশে বাব বেখানে আমাদের অধিকা নিঃসন্দেহ। দিনের বেলায় আমরা একই বানবাছনে পথ চলব, রাজিশে আমরা একই গৃহতলে স্বিধ লাভ করব।

মহিমমনী এডিলি! তুমি ভেবো না, আমি ভোষার বিখাদে অস্তার হুযোগ নেবো, তুমি নিশ্চর একথা ভেবে আমার উপর অবিচা করবে না আশা করি। তোমার ভিত্তর হুগোর নিকট তুমি অত্যা প্রভাব পাত্রী। আমাদের যাত্রাপথে তুমি নির্ভারে নির্ভা যাবে আমার সং একই গৃহতলে; কিন্তু তোমার ভিত্তরের স্পর্শে তুমি আত্তিত হুং উঠবে না, তোমার ভিত্তর তোমার প্রতি দৃষ্টিক্ষেপও করবে না। আর্থি তোমার পার্থে একটা আসনে বনে থাকবো, অথবা ভোমার শহ্যার বিশ্ব গৃহতলে বনে তোমার বিশ্রামের গ্রহরী হয়ে থাকব। তোমার প্রতীত্থাপ করে বে, সে বামীর অধিকারেই ভোমার রক্ষাকর্ত্তা আসন প্রহণ করবে। তার পর বেদিন ধর্মবালক ভাকে ব্লেখিকার স্বের্থ

এডিলি! তুমি আমাকে মুণা করো না, আমার মুর্বলভাকে ক্ষা করো; ভোমার শক্তির আচুর্বো তুমি মহীরসী। আমার নিঃসকত আমার আ্রীয় বিচ্যুতি, আমার পিভার অবীকৃতির কথা এককা বিবেচনা করে দেখো। একটা সপ্তাহ কেটেছে বখন ভোমাকে কা হারিছেছিলাম, আমার নিরাশার তীব্রতার তুমি আশ্চর্বা হরো বা আনার ছোট্ট আদরের বস্তুটী, তুমি বে কত লাবার বস্তু! তোমাকে
পুর্বের অপ্যরার সঙ্গে তুলনা করলে অপ্যরাকে গৌরবাহিত করা হবে।
বিধাতা তোমাকে তার সমস্ত সম্পদ অকুঠ দান করেছেন—তুমি পেন্নেছ
বৈধ্যা, তুমি পেরেছ অফুরস্ত আগ্রার।

এভিলি, এইগুলি অবশ্য আমার করন। তোমার লিপি আমার দিকট কথনো আশা, কথনো বা হতাশা বহন করে আনত। তুমি যদি বল্তে— আমাকে ভালবাদ, তুমি জাল আমার কি আনল হত? তুমি যে কি অপুর্ব অমুকৃতি উপভোগ করেছ তা' আর করনা করব না।

এই অনুভূতির প্রতীক 'আনন্দ' ভিন্ন আরু কোন শব্দ রচিত হর নি কেন বলত ? মানুবের ভাবার শক্তি নেই যে তার ভাবার মধ্য দিরে দে এই অনুভূতিকে কোন রূপ দের। শোকাবহ আত্মবিশ্বতি থেকে অক্সাৎ এক অপূর্বে আনন্দাসূভূতি আন্ত আমাকে বিহলে করেছে। এই মূহুর্ত্তে আমি আমারই পার্শে বদে আছি; তবু আমি মাঝে মাঝে আত্তিত হরে উঠি এই বুঝি আমার দিব্য স্বপ্পানুভূতি থেকে বিচ্যুত হরে পড়ব।

আরু তুমি আমার এডিলি! এতদিন পরে তোমাকে আপনার ভাবতে পারছি। করেক মাসের মধ্যেই, আশা করি, আমার অপরা আমার বাহপাশে তুমিরে পড়বে, আমার বাহপাশে রেগে উঠবে, আমার বাহর আবরণে জড়িরে থাকবে, সর্বক্ষণ তোমার সকল চিন্তা সর্কৃক্ষণে তোমার সকল চৃষ্টি আমাকে কেন্দ্র করে মিবিড় হরে থাকবে, আমার দৃষ্টি আমার চিন্তা তোমারই হবে, আমার এডিলি!

এবার তুমি আমার হবে, একান্ত আমার, একমাত্র আমার।
আজকে আমার মর্ত্তলোকে বর্গের আনন্দ উপভোগের দিন। আজকে
তুমি আমার মবপরিণীতা ত্রী, তারপর তুমি মা হবে—আমার সন্তানের
জননী। কিন্তু তুমি আমার চিরন্তনী প্রথম দিনের মতনই কমনীর।

বিবাহিত জীবনের পরিপতিতেও তুমি কুমারী জীবনের মত ত্কুমারী থাকবে। প্রেম কার্বে, বল, বল তুমি, তুমি কি চিরস্তন বিবাহ বন্ধনের মধ্যে অবিনধর প্রেমের আনন্দের পরিকর্মনা করতে পার ? অবশ্য দেদিন আমাদের আদবে এনেছে।

এভিলি, কোন বাধাই আজ আমাকে নিরুৎসাহ করতে পারছে না। তুমি মনে করো না যে, আমি তোমাকে মিনতি জানাজি। আমি কেবল লিথছি, লিথেই চলেছি, আমার গৌরবে তুমি গরবিনী হবে। এই বিশ্রামহীন পরিশ্রম কত আনন্দ বহন করে আনে জান ত। আমি সহস্রবার ভগবানকে মিনতি জানিয়েছি—আমার সমন্ত জীবনের বিনিময়েও যদি তোমাকে একটু আনন্দ দিতে পারি! আজ আমি কত সুখী, আমি কত সুখী হতে চলেছি!

এডিলি, আমার ধর্গের দেবী, আমার প্রিয়তমা এডিলি ! বিদার। তোমার স্থকোমল কেশদাম চুবন করে আমি আমার শযাার কিরে বাব। আমি তোমার কাছ থেকে বছদুরে, কিন্তু তোমার র্পপ্র যে আমার কত কাছে। এই ত করেকদিন পরেই তুমি আমার পার্বে এদে দীড়াবে। বিদার। তোমার বামীর এই বিহ্বলতাকে ক্ষমা করে। তার আলিক্সন গ্রহণ করো, আমার শ্রদ্ধা গ্রহণ করো। ইহলোকে আর পরলোকে। তোমার আলেকা ?

পত্র পরিণাম:--

ভিত্তর হগো অভিজাত পরিবারের সন্তান। তার পিতা নেপোলিয়ানের যুগের দৈক্তাধ্যক। এই বিবাহে ভীবণ আপত্তি। কিছ ভিত্তর গোপনে এডিলির সঙ্গে বিবাহ দ্বির করলেন। শেবে বাধ্য হরে ছই পরিবারই বিবাহে মত দিরেছিলেন। এই বিবাহের পরে ভিত্তর হগোর আতা ইয়ুজেন হগো হঠাৎ বিকৃতসন্তিক হরে পড়ল। তাকে বাতুল আত্রমে প্রেরণ করা হল। এই উন্মন্ততার কারণ এডিলির প্রতি নিক্ষল আকর্ষণ।

এডিলি বছ হস্তানের জননী; বছ সন্তান মৃত। বামীর গর্বে এডিলি গর্বিতা। কিছ ভিত্তর হগো সেই প্রেমের মর্যাদা রক্ষা করেন নি। তরল ফরাসী সমাজ জীবনের আবর্ত্ত খেকে ভিত্তর হগো মৃতি পান নি, সমাজের পছিল স্পর্ণ তাঁকে নানাভাবে কল্বিত করেছিল।





(প্রপ্রকাশিতের পর)

ঠিথানা আসিয়াছে জেলার সদর হইতে। এ জেলায়
ব্দের যে দলটি আছে সেই দলের সেক্রেটারী
থিয়াছেন। লিথিয়াছেন—"কোন বক্ষে সরকারী
বাপন থবর পেলাম যে, আগামী হাটবারে আই-বি
লাইমেন্টের একটা দল ওথানে যাবে। এস-পি যাবে
বিগের দিন। দরবারী শেথ আজ রওনা হবে। বিশেষ
ছু একটা ঘটবে তাতে সন্দেহ নেই। পত্র পাওয়া মাত্র
গদ্র সম্ভব সাবধানতা অবলম্বন করবেন। সম্ভবত পুলিশ
রিপ্ত কাছ থেকে থবর পাছে।"

দেবু জ কুঞ্চিত করিয়া দাঁড়াইয়া রহিল। অনেককণ ডা করিল, ঠিক করিয়া লইল কি কি করিতে হইবে।

कः धारत्र माथा त्मकूरमत्र य जेनमनि विश्वास आहि হারা নিজেদের মত ও পথ অমুযায়ী হাটের দিন অভ্যস্ত জ্য হইয়া ওঠে। হাটের দিন এখানকার চারিদিক তৈ যে বিপুল জনসমাগম হয় তাহার স্থবিধা তাহারা ইণ করে। পল্লীতে পল্লীতে যে সব প্রাম্যকর্মীরা আছে शंत्रा निस्करमत्र कांटकरे शांटे आरम, जाशांसत मरक থা হয়, তাহাদের হাত দিয়া প্যাক্ষলেট পাঠায় গ্রামে-रिम। এই मव लाटकरानत्र मरधा योशांत्र! विरम्बङारव হাদের প্রতি আরুষ্ট হইয়াছে তাহাদের লইয়া বৈঠক স। তাহাদের নিকট হইতে গ্রামাসংবাদ সংগ্রহ রে। বিশেষ করিয়া গ্রামা-বিরোধের সংবাদ। জমিদার-মা, মহাজন-থাতক, জোতদার-ক্ষাণ, ধনী-দরিদ্রের শ্য বিরোধ বাধিলে সেই সব বিরোধের ক্ষেত্রে তাহারা গ-খাতক-কুষাণ-দ্বিদ্রদের প্রতি সহাত্ত্তি জানায়-माक्चीरमत्र मिक्युकार्य माहाया कतिएक निर्देश मित्र । রও নানা আলোচনা গল হয়। দেবদের দলের বাদগত দৃঢ় বিশ্বাস এই যে, স্বাধীনতা আন্দোলনে যে

সংগ্রাম আসিতেছে সে সংগ্রাম সামগ্রিকভাবে বিপ্লবাত্মক না হইলে কোন ক্রমেই সার্থক হইবে না। এক সঙ্গে তাহারা রাষ্ট্র এবং সমাজ ছই ব্যবস্থাকেই প্রচণ্ড আঘাত হানিয়া ভাঙিয়া তুই ব্যবস্থাকেই নৃতন করিয়া গড়িবে। বিশ্বনাথের কাছে একদিন এই সব কথা শুনিয়া সে শিহরিয়া উঠিয়াছিল, কিন্তু ধারে ধীরে দলগত মতবাদ সংক্রান্ত বই পড়িয়া, অর্থনীতিশাল্পে বি-এ পাশ করিয়া এবং দলের বিভিন্ন নেতার কাছে শিক্ষালাভ করিয়া আজ এমনই দাডাইয়াছে যে এই ছাডা আর কোন পথ তাহার দৃষ্টির সমূপে নাই। তাহার দৃষ্টির সমূপে প্রসারিত এই তুর্গম পথের শেষ প্রাস্তে তাহার কল্পজগত সে স্পৃষ্ট দেখিতে পায়। সেখানে সে দেখিতে পায় অপরূপ এক রাজ্য-অপূর্ব্ব এক মাহুবের সমাজ। মাহুবে মাহুবে ভেদ নাই, ব্ৰাহ্মণ নাই-শুদ্ৰ নাই-চণ্ডাল নাই, হিন্দু নাই-मुनलमान नार-श्रष्टान नारे; धनी नारे-प्रतिक नारे, वाजा नारे-अन नारे, त्यायक नारे-त्यायिक नारे, আছে শুধু মাত্রষ, ভেদ নাই তাই বিরোধ নাই, বিরোধ নাই তাই মিথাা নাই; আছে ভুধু মাহুৰ আর পুথিবীর কর্মক্ষেত্র ও কর্ম। মাহুষ আপন আপন সাধ্য অহুবায়ী কাজ করিয়া যায়, প্রত্যেকে কাজ করে সকলের জন্ম, সকলে কাজ করে প্রত্যেকের জন্ম। ওধু তাহারা ভারতবর্ষকেই দেখে না, তাহারা দেখে সমগ্র পৃথিনীকে। ভারতীয় ক্ম্যুনিষ্ট পার্টার একটি শাখা, দেবু এই শাখার সেকেটারী। ইহারা চরমতম উগ্রপন্থী বলিয়া ইংরাজ সরকার কঠিন দৃষ্টি রাখিয়াছেন। আরও কয়েকটি वामश्री मन कः धारमञ्ज माधारे चारह—कः धारी ममाकाजी দল। কিন্তু কংগ্রেদী সমাজতন্ত্রী দলের কোন শাখা এখানে नारे। मित्रमत्र मलात्र এकটা विरमय श्रविधा আছে, বিগত যুগের বিশিষ্ট বৈপ্লবিক কর্মীদের অনেকে এট মত-সেই সঙ্গে এই দলকে গ্রহণ করিয়াছেন; আরও

স্থবিধা - আছে—সেইটাই খুব বড় স্থবিধা—এই দলের ভাগুারে অর্থ আছে।

দেবু মনে মনে স্থির করিয়া লইল কি কি করিতে হইবে। হাটবার আগামী শুক্রবার, আজ সোমবার। দরবারী শেখ নামক পুলিশ কর্মচারীটি কাল সকালে আসিয়া পৌছিবে। লোকটি আকৃতিতে প্রকৃতিতে একেবারে সম্বতান। উপরের ঠোঁটটা জন্মকাল হইতেই कांग्री-अदम्य वल-श्रम कांग्री-हेश्त्राकीरा याहारक বলে হেয়ার-লিপস। কাটা ঠোঁটের ফাঁক দিয়া উপরের মাড়ির ছইটা দাঁত বাহির হইয়া থাকে। এ জেলার পুলিশ সাহেব সমশের সাহেবের ডান হাত—উপযুক্ত অত্তর। সমশের থান অলবয়সী-অাই-পি। কিন্তু ইহারই ► मर्था देश्तां अ शूनिम-कर्यातातीत्मत्र त्नक नक्तत अिखारि । উনিশ শো তিরিশ সালে মেদিনীপুরে সত্যাগ্রহীদের উপর চরমতম অত্যাচার করিয়াছিল এই খান সাহেব। এ জেলায় আসিয়া বিরাট বড়যন্ত্র আবিষ্কার করিয়া এক ষড়যন্ত্র মামলা করিয়া উপরে নাম কিনিয়াছে। যড়যন্ত্র মামলার কথা আরণ করিলে দেবুর হাসি পায়। দেবু তখন অন্তরীণ অবস্থায় জেলের মধ্যে ছিল বলিয়াই রক্ষা পাইয়া গিয়াছে। আগামীদের মধ্যে একজনের স্বীরুতি অমুষায়ী একটা বড় দীঘি হইতে একটা ট্রাক্ক উদ্ধার করা হয়। সে নাকি বলিয়াছিল যে, ডাকাতি করিয়া ছয় মান আগে এই দীঘিতে টাকটা ডুবাইয়া রাখা হইয়াছে, ট্রাকের ভিতর নগদ টাকা—একটা রিভলভার কিছু গহনা লুকানো ছিল। গহনার মধ্যে ছিল একছড়া সোনার চেন ও সোনার ঘড়। মহা সমারোহ করিয়া মাস্থানেক ধরিয়া দিবারাত্রি চৌকীদার-পাহারার মধ্যে প্রচর ধরচ कतिया मिथीत जल मातिया त्मरे हैं। क वारित कता रहेबाहिल। এখানকার জেলা ম্যাকিষ্টেট তরুণ বাঙালী আই-সি-এস আগাগোড়াই এই মামলাটিকে সন্দেহের চক্ষে দেখিয়া-ছিলেন বলিয়া থান সাহেব ওই ট্রাক উদ্ধারের সময় উপস্থিত থাকিতে অমুরোধ করিয়াছিলেন। ম্যাঞ্জিষ্টেট সাহেব কৌতৃহলবশত গিয়াছিলেনও। সতাই ট্রাক উঠিয়াছিল, টাঙ্কের মধ্যে স্বীকারোক্তি অহুধায়ী প্রত্যেকটি জিনিয়ও मिलियां हिल। किस अक्षे अव्येव व्यविवाहिल-ছय मान পূর্বে কলে ডুবানো ট্রাকটার মধ্যে রাখা বড়িটার সেকেণ্ডের কাঁটাটাকে টিক্ টিক্ শবে চলিতে দেখা গিয়াছিল।
ম্যাঞ্জিট্রেট সাহেব খড়িটা হাতে লইয়া খান সাহেবকে
বলিয়াছিলেন—কি মেকারের ঘড়ি খানসাহেব? এক দমে
ছ মাস চলছে? অছুত!

সামসের সাহেব দেখি—দেখি বলিয়া ঘড়িটা হাতে লইয়াছিলেন—স্বিশ্বরে বলিয়াছিলেন—কই? চলছে কই? না তো! বলিতে বলিতেই ঘড়িটা তাঁহার হাত হইতে বাঁধানো ঘাটের উপর পড়িয়া চুরমার হইয়া গিয়াছে

তাহার পরই সামসের সাহেব গেলেন কলিকাতায় দিন হয়েক পরে ফিরিয়া আসিলেন। তথন ম্যাজিট্রেট সাহেবের কাছে তার আসিয়াছে—অবিলম্বে জেলার সদরে গিয়া জেলার ভার গ্রহণ কর। তোমাকে বদলী করা হইল।

কিছুদিন আগে—বৎসর হুয়েক আগে—আরও একট বিচিত্র রাজনৈতিক মামলা হইয়া গিয়াছে। জেলার সদরে শহর হইতে ষ্টেশনে যাইবার পথে একটা নির্জ্জন বৃদ্তি ডাক-লুট হইয়াছিল। ইনসিওর এব হীন স্থানে পোষ্টাপিদের টাকা লইয়া প্রায় হাজার কয়েক টাক ছিল। ওই অপরাধে জেলার কংগ্রেস প্রেসিডেণ্টের এ^হ ছেলের এবং আরও ছইটি ছেলেকে দীর্ঘকাল জেলে রাথিয় অবশেষে ছাড়িয়া দেওয়া হইয়াছে। ডাকলুটের কো किनाता इस नाहे। श्रकां च किनाता इस नाहे। कि। এই দরবারী শেখ যে থানায় এস-আই ছিলেন সে थानात এक करनहेवल ज्ञानीय পোहाशिरम मिल्यर्डा করিতে গিয়া পোষ্টমাষ্ট্রারের হাতে ধরা পড়িয়াছিল তাহার নোটের নম্বরে এবং আরও কতকগুলি চিহ্নে সব্দে পোষ্টাপিদের সেই লুট-হওয়া নোটের নম্বর ৮ हिट्टित मह्न मिनिया शियाहिन। क्रान्हेवन विनयाहिन-সে নোট পাইয়াছে দরোগাবারুর কাতে! অর্থা मत्रवाती (भेथ সাহেবের काছে। विक्रिक वावशा। मत्रवार्व শেখের উন্নতি হইরা গিরাছে এই ঘটনার পর। তি^{নি} महत महत्व এक्कार्य (थांह ममर्बर्ग थान मार्ट्स त्रीषांत्र बहेशा शिशांत्वन । अना गांहेत्वत्व, सत्रवाती (* সাহেব অতঃপর আই-বি বিভাগে বিশেষ পদে উগী व्हेर्यन ।

দরবারী শে**থ আসিতেছে আগামী কাল।** আর্জ

বিধান হইতে হইবে। সর্বাত্যে সাবধান করিতে হইবে গীরকে। সে দিনরাজি খুরিয়া বেড়াইতেছে। অফুহাত বিশ আছে, সে ধবরের কাগল বিক্রী করে। এখানে । ড়ী বাড়ী কাগল বিলি করে অপরাকে। পরদিন কালেই সাইকেল ঠেড়াইয়া বাহির হইরা যায় গ্রামের দিকে।

ভর স্বর্ণ সম্পর্কেও স্বাছে। সে বে রক্ম উগ্রমতবাদী
ইয়া উঠিয়াছে তাহাতে ভয় অহেতৃক নয়। পড়াগুনার
নধ্যে ইস্কুলের মেয়েদের যে কি বলিয়াছে তাহা সেই
কানে। তবে বলিয়াছে তাহাতে সন্দেহ নাই। মেয়েদের
কাছে জিজ্ঞাসাবাদ করিলে অপ্রকাশ ধাকিবে না। কিছুদিন হইতেই এই লইফা স্কুলা বারবার তাহাকে বলিয়াছে
—ঠিক এ রক্ম ক'রে কথা-বার্ত্তা মেয়েদের বলো
না স্বর্ণ।

খর্ণ শ্লেষ নিশাইয়া হাসিয়া উত্তর দিয়াছিল—কেন ? ভয় করে আপনার ? তারপর বলিয়াছিল—কি করবে? চাকরী থেকে ছাড়িয়ে দেবে ? দিক না! কিখা পুলিশে ধরবে ? ধরুক। ভুকুর ভয়ে ঘরের কোনে লুকিয়ে তা ব'লে আর থাকতে পারব না।

উচ্চিংড়ে ছেলেটা আবার আদিয়া কাছে দাড়াইল।
—মাইারজী।

(पर् विन-वन्।

— চিঠ্যি উঠ্যি—কুছ দিন্দীয়ে গা ?

দেব্ জ কুঁচকাইয়া বলিল—ফের ভুই যদি হিন্দী বলবি, তোর মাধায় ডাণ্ডা লাগাব আমি।

উচ্চিংড়ে খিল খিল করিরা হাসিয়া উঠিল।

দেবু বলিল—হাসিস না। হিন্দী কেন বলিস ভূই ?

উচ্চিংড়ে বলিল—যো সাদী কো যো মন্তর মাষ্টারজী!

তারপর বলিল—মোটর চালায়েকেজী। চলেকে— ইধর—উধর—কেতনা দেশ—দিল্লী লাহোর—বিনা হিন্দীসে ক্যায়সে চলে গা, বলিয়ে তো?

- —ওদিকে মটরের হ**4** বাজিতেছে ঘন-ঘন। জ্রাইভারটা হাঁকিতেছে—আরে—এ। এ উচিংড়োয়া!
- —আভি আয়া জী! বলুন, বলুন, চিঠি দেবেন ? —না। তুই শুধু বলিস—যে—ঠিক আছে সব। আয়—

- আর প্রত্যেক বাসের দিকে নজর রাথবি। দরবারী শেপ দারোগার এথানে আসবার কথা আছে। সেয়দি—
 - —কে? সেই গন্না-কাটা <u>?</u>
- —হাা। সে যদি বাসে আবদে তবে আমি যেন সক্ষে সঙ্গে থবর পাই।
- —ঠিক হায়। ঠিক মিলেগা। গোবরা আপনাকে
 ঠিক জানিয়ে আসবে। আমি শদরে গেলেই ও ছুটি
 পাবে। পরের বাদেই ও ফিরবে। ওকে আমি বলে
 দোব। ও এখানে থাকবে। নামলেই থবর পাবেন
 আপনি। ও রেলে এলেও থবর পাবেন। ষ্টেশনেই
 থাকবে আজ গোবরা। চায়ের দামটা দেবেন।

বলিয়াই ছুটিয়া গিয়া লাফ দিয়া বাসে উঠিয়া পড়িল উচিচ°ড়ে। হাঁকিতে লাগিল—আব চলে গা—ভুফান মেল ! চল্লো—চল্লো – চল্লো। এই ছেড়ে চল-লো!

বাসের গায়ে হই তিনটা চাপড় মারিয়া শব্দ ভুলিয়া বলিল—অ-ব ঠিক হায়!

एमत् এक हे शिना। त्मरे छिक्ठिः एए— ७ त्मावता। শিবকালীপুরে লোকের ঘরে ভিক্ষা মাগিয়া খাইয়া ফিরিত। নি:সন্তান কর্মকার-বধু পদ্ম অন্তরের ক্ষধায় উচ্চিংডেকে কাছে টানিয়া আপন করিতে চাহিয়াছিল। कर्षकात-वर् धकला निक्रालन श्रेश-एहाल कृष्टे जानिया আশ্রয় লইল জংসনে। দেবু ভাবিয়াছিল—তুইটা ভিকুক वाड़िल, घूटेंहा खुशारहात कि रहात वाड़िल। किन्छ विहित्व এই বিংশ শতাব্দীর যন্ত্রসভাতা-প্রধান নগরসৃষ্টি। কর্ম-প্রবাহ যেমন বিপুল গতি, তেমনি বিশাল পরিধি, ভরু তাই নয়—তেমনি তাহার বহু বিচিত্র স্রোতধারা। এখানকার मिछित यह एहरल पृष्टे छोरक व्याकर्षण कतिल। श्राथम श्राथम মোটর বাদের পাশে বসিয়া থাকিত, বিস্মিত দৃষ্টিতে এই यञ्जयानश्विनात्क तमिक । याजीतमत्र कार्ट विका हारिक। ক্রমে বাস-ডাইভারদের সঙ্গে ভাব জনাইয়া মোটর বাসের কাছে আসিল। তারপর বিনা বেতনে বেগার থাটিতে क्क कतिल। जांत्रभत अःमन महत्त्रत्र विभूत विभाग কর্মপ্রবাহের এই বিচিত্র স্রোতে ঝাঁপ দিয়া পড়িয়াছে। সংসারে যে কোন কাল ছইলেই তো মান্তবের চলে না.

কাব্দ করিয়ে তৃপ্তি হয় না, প্রয়োজন হয় কাব্দের সক্ষে অন্তরের ক্ষতির যোগাযোগের।

দেব জানে—এই ভাঙা ভগ্ন সমাজের নিঃম্ব রিক্ত দেশটার মাছবের পঙ্গু জীবন এই জংগনের মত ন্তন ক্ষেত্রে সার্থক সচল হইয়া উঠিবে। কংগ্রেসের চরকা-থদরে তাহাদের বিখাস নাই; যন্ত্রশিল্পের বিকেন্দ্রীকরণের কথায় একটু বাঁকা হাসি তাহাদের ঠোটের কোণে স্টিয়া ওঠে।

তাহার প্রমাণ চাই ?

দেবু তাহাকে বলিবে—একবার সকালে কি সন্ধায় টেশনের ওভারব্রিদ্ধের উপর দাঁড়াইয়া দেখিয়া। সার্থকতা কোথায় একথা সাহ্যকে বলিয়া দিতে হয় না, জীব-জীবনের আণ ও স্পর্শ শক্তির মত একটা শক্তি আছে তাহার, সেই শক্তিবলে তৃষ্ণার্ভ জীবের বাতাসের সজল স্পর্শ হইতে জল কোন দিকে আছে বুঝিতে পারার মত সে বুঝিতে পারে—কোথায় আছে জীবনের সার্থকতা। গ্রামে গ্রামে গ্রামে গ্রামে করিয়া এই জাবনধারা ও সভ্যতাকে লইয়া যাও—দেখিবে সেথানেও মাহ্যের জীবন সার্থক হইয়া উঠিবে। ঠিক এই কারণেই এই জংসনকে সে তাহার কর্মাকেত্র হিসাবে বাছিয়া লইয়াছে। পৌছাইয়া দিবে সে বক্ষীবনের ধারা।

--- মাইার মশায় !

দেবু ফিরিয়া দেখিল—টেশন কম্পাউত্তে কোয়াটার্স
এলাকায় ছোটবাবুর বাসার বারান্দায় ভাহার ছাত্রদের
একজন দাঁড়াইরা ভাহাকে ডাকিতেছে। মাটারদের
ছেলেপিলেরা একটু বিচিত্র ধরণের। একটা যেন স্বভন্ত
জাতি বা সম্প্রদায় হইয়া দাঁড়াইতেছে। জীবন স্বপ্র—
রেলের চাকরী। পড়াগুনা—পাশ করিবার জ্বা। সে
প্রাণপণে চেষ্টা করিভেছে উহাদের স্বভাব বদলাইবার জ্বা
—কিন্তু সমস্ত ব্যাপারটা যেন উহাদের রক্তগত হইয়া
দাঁড়াইয়ছে। ফুটবল থেলা—থিয়েটার এই তুইটা হইল
—সংস্কৃতির সর্বোত্তম শিধর। যাক—সে ভাহার কর্ত্তব্য
করিয়া ঘাইবে। পাশ করাইয়া দিতে হইবে। সে
অগ্রসর হইল। ভাহার আগে চিঠিখানা ছিঁড়িয়া ফেলিয়া
দিল। থবরটা না আসিলে বিপদ হইত। ক্ষেকদিন
আগেই প্রচুর প্যাক্ষণেট আসিয়াছে। সেগুলাকে নই
করিলে চলিবে না। লুকাইয়া রাথিবার খুব ভাল জায়গা

ভাহার আছে। রামবিলাস তাহার ব্যবস্থা করিবে। প্রয়োজন হইলে—রেলের কোন গুদামের মালের মধ্যে মিশাইয়া রাখিয়া দিবে। ওদিকেও একটা স্থাবিধা হইয়াছে। এ জেলায় পুলিশের মধ্যেও দেখা দিয়াছে একটা বিরোধ। সামসের খাঁ আসিয়া অবধি এটার স্টি। শীগ-শাসনের জক্ত-সমসের খার মধ্যে ইংরেজ-ভক্তির সঙ্গে মুসলীমপ্রীতিও অত্যস্ত উগ্রভাবে দেখা দিয়াছে। বিশেষ করিয়া দরবারী শেখকে অত্যধিক অহুগ্রহ করার জন্ম হিন্দু কর্ম্মচারীরা অভ্যস্ত চটিয়া গিয়াছে। তার উপর कः সনের এই हिन्दू-भूजनीय वित्रांदित करन त्म वित्रांद ভিতরে ভিতরে প্রবদ হইয়া উঠিয়াছে। হিন্দু পুলীশ-কর্মচারীরা অভ্যন্ত গোঁড়া হিন্দু। অথাম্ম কুথাম বিচার না-করিলেও-তাহাদের দৃঢ় বিশাস-চোর-ডাকাত-খুনে-সন্ত্রাসবাদীর হাত হইতে ভাহাদিগকে বাঁচাইয়া রাখিয়া-ह्म-(मव-(मवीता। वित्मव कतिया-मा काली! (मव् আবার একটু হাসিল।

* * * *

দেব গোপনে সংবাদটা কয়েকজনকেই জানাইয়া দিল। কংগ্রেদ আপিসে জানাইল; গ্রামের কল্মীদের মধ্যে যাহারা দলের সভা তাহাদেরও জানাইল-ঘাহারা সভা নয় তাহাদের জানাইল যে, এখন ছুই তিন হাটবার দেবু বা অন্ত প্রধানেরা অংসনে থাকিবে না, স্কুতরাং তাহারা যেন দেবুর বাসায় বা কংগ্রেস আপিসে, কি রেলওয়ে ইয়ার্ডের মধ্যে মহাবীর-তলায় না যায়। রাজনৈতিক मत्तत्र मर्था कानाहेन ना **७**४ हिन्मश्त्राम**ाटक।** ७हे मलिटिक दार मत्ना मर्थारे गंगा करत ना। वत्न- ध यूर्ग ওটা হ'ল নিতান্তই সথের যাত্রা থিরেটারের দল-এবং नां हे कि दक्त विकास कि विकास कि विकास कि । পালার নাম-হিড়িখার স্বয়খর; হিড়িখার মালা পাবার জন্ম যত বর-সবাই ভাম সেজে-তুলোর গলা হাতে निरत-निःशान कुर् वरम-न्नितिष्ठेशांम निरत्न चाँछ।-হেপি চুলের গোঁকে তা' দিছে। কথাটা অল্প বিস্তর সত্য, কারণ কমনার অমিদার বাড়ীর ছেলে—যাকে স্থরপতি বলে—'জমিষ্টার'—নে, কি এছিরি ঘোষ, কি শেঠ স্বর্যমল রাজরোবে ইহাদের কোন ভয় থাকিতেই পারে না।

কিন্তু দেবকী সেনকেও সে সংবাদ দিল না। দলের প্রধানদেরও সরাইয়া দিল।

चर्न वितन-जूमिछ करमक मिन मद्र बाछ।

- না। এখান থেকে সরব না। তবে বাড়ী থেকে সরে থাকব।
 - —কেন ? এথানে থাকবারই বা এখন প্রয়োজন কি ?
 - —আছে। তোমার জন্তে।
 - व्यामात्र करछ ? मात्न ?
- তুমি জল একটু বেনী খোলা করেছ খর্ন। যদি বাড়ী সার্চ করে, কি—তোমাকে ডাকে—। দেবু শিহরিয়া উঠিল। দরবারী না-পারে এমন কাজ নাই। দরবারী একটা পশু।

স্বৰ্ণ তীক্ষ হাসিয়া বলিল—ধরেই যদি নিয়ে যায় করবে কি ?

- —করব আর কি? তবু উৎকণ্ঠা থেকে বাঁচব।
- -কোথায় থাকবে ?
- —থাকৰ রামবিলাসের আড্ডায়।
- —রামনিলাস—এথানকার রেলকর্মীদের একজন মাতব্বর। জংসনের ইয়ার্ডের একজন পয়েণ্টস্ম্যান। টেড ইউনিয়নের একজন সভ্যও বটে। নিলুয়া অঞ্চল ইইতে বংসর্থানেক আলে এখানে বদলী হইয়া আসিয়াছে।

বেলা আড়াইটার সময় কলিকাতা হইতে ফার্প্ত পাাদেপ্রাবে ধবরের কাগজ আদে। গৌর ষ্টেশনে গিয়া কাগজ ডেলিভারি লইয়া থাকে।

হালদার দারোগা—প্রেশনে দাড়াইয়াছিল। গৌর প্রেশনে আসিতেই তাহাকে বলিল—কি ধবর? ওথানে কি?

(गोत्र शिम्बा विनन-कांगल (छनिछात्री त्नव।

- -খবরের কাগল ?
- -शा।
- —বোনাই কোথায় ? দেবু **ঘো**ষ ?
- —কাল রাত্রে কলকাতা গিয়েছে।
- —হাা! কলকাতা গিয়েছে **!**
- —তারপর—আর সব ধবর কি ? কি রকম চালাচ্ছ শাক্ষাল ?

- Pa ?
- --দলের কাজকর্ম ?
- দলবল আর নাই। খেতে পাই না—দল করব!
- ভূঁ। তাই বলছিল বটে সব। তা গাঁৱে গিরে চাষবাস কর নাকেন ? ধবরের কাগল বিক্রী ক'রে আর কি হবে ? না—লাঙল ধরতে লজ্জা করে ?

গৌর একটু ছাসিয়া বলিস—তা করে একটু আবটু। ওই টেণ আসতে আমি যাই।

সে ভিড়ের মধ্যে মিশিয়া গেল।

ত্রেক-ভানের দরজায় গিয়া কাগজের বাণ্ডিল বগলে করিয়া সে আর ষ্টেশন প্রাটফর্মের গেট দিয়া ফিরিল না, প্রাটফর্মের প্রাস্তভাগ দিয়া বাহির হইয়া গেল। কিন্তু গেটের কাছে ফিরিতে হইল তাহাকে। তাহার সাইকেল খানা গেটের কাছে পানওরালার দোকানে রাথিয়া আসিয়াছে।

গেটের কাছে আসিয়া সে আশকায় হতবাক হইয়া গেল।

— ও কে ? সাদা থান কাপড় পরিয়া বিধবার বেশে ও কে অরুণা-দিদি ? হাঁা অরুণা-দিদি তো! একেবারে চেনা যায় না। চিনিবার উপায় নাই। এ অরুণা-দিদি যেন সে অরুণা-দিদিই না।

সে অরুণা-দিদিকে দেখিয়া মনে হইত—কুমারী মেয়ে।
অরুণা-দিদি বিধবা, সেকণা সে জানিত। কিন্তু অরুণা-দিদি
পেড়ে কাপড়-ব্লাউজ পরিত। হাতে ছইগাছি চুড়িছিল।
ভাহার দকে বাঁহাতে থাকিত রিষ্টওয়াচ, মাথার চুল
বাঁধিবার ধরণেও কুমারী বা বিধবা চিনিবার উপায় ছিল না।

এ অরুণা-নিদির পরণে সাদা থান কাপড়, সাদা ব্লাউজ, থালি হাত, বেশ-প্রসাধনের ধরণের মধ্যেও বৈধব্যের ইন্ধিত রহিয়াছে।

সে ছুটিয়া কাছে আদিয়া দাঁড়াইল।—অরূণা-দি!

মুখ ফিরাইয়া অরূণা গৌরকে দেখিয়া বলিল—গৌর!
—হাা। কিছ—।

মধ্যপথেই তাহার কথার উপরে—কথা বলিল অরুণা।
বলিল—তোদের কাউকেই খুঁজছিলাম।—ভালই হয়েছে।
তারপর মুখ ফিরাইয়া অঞ্চ কাহাকেও বলিল—আমার ব্যাগ
বিছানা ধানার নিয়ে বাবার কি দরকার আছে? ঠেশনে

তো দেখেছেন সব? এ ছটো বাসায় পাঠিয়ে দিতে আপন্তি আছে আপনার?

দরবারী শেথ পানের দোকানটার ওপাশে ছিল, গৌর দেখিতে পায় নাই। দরবারী শেথ বলিল—না। ও তুটো আপনি পাঠিয়ে দিতে পারেন।

জ্ঞকণা বলিল—এ ছটো তুই বাসায় পাঠাবার ব্যবস্থা কর গৌর। আমায় একটু ধানায় যেতে হবে।

-থানায় কেন?

রুক্ম ভাষায় শেখ বলিল-দুরকার আছে !

গৌর ছুটিল বাদার দিকে, স্বর্ণকে থবরটা দিয়া সে ছুটিল ইয়ার্ডের কোয়াটার্সের দিকে—দেবুলাকে সংবাদ দিতে হইবে। গৌরের সলে সঙ্গে আরও একজন রওনা হইল। আপনার নৃতন গিরীণ, কেবিন পুতুলের দোকান বন্ধ করিয়া সেও ছটিল। সম্পূর্ণ শেষ না হইলেও, গিরীণ তাহার দোকানটা গাছের গায়ে বসাইয়া দিয়াছে। নেলো ছটিল—আন মহাশয়—অর্থাৎ দেবকী সেনের কবিরাজ্ঞানার দিকে। সেন ছিল না। সে গিয়াছে জয়তারা আশ্রমে স্থায়রত্বের কাছে। নেলো আবার ছটিল। ঘণ্টা-থানেক পরে—বৃদ্ধ স্থায়রত্ব দেবকী সেনকে সঙ্গে করিয়া থানায় আসিয়া উঠিলেন। তথন স্বর্ধ সেথানে আসিয়া প্রানিয়ার তারিলেন। তথন স্বর্ধ সেথানে আসিয়া প্রানিয়ার ভাতিরে।

সাহিত্যিকের কর্ম্মসাধনা

শ্রীচপলাকান্ত ভট্টাচার্য্য

সংবাদপত্তের সীমাবদ্ধ ক্ষেত্রে সাহিত্য সাধনার যতটুকু স্থবোগ পাওয়া যায় তাহা অতিক্রম করিয়া সাহিত্য সম্মেলনের বিস্তৃত্তর ক্ষেত্রে যোগ দিবার অবসর সাংবাদিকের কর্মজীবনে সহত্রে ঘটিয়া ওঠে না । সাহিত্যের ধারক ও বাহক হইলেও উহার নিয়মিত সাধক হইবার স্থবোগ সাংবাদিকের জীবনে স্কুরিত হইবার অবকাশ পায় না । সাহিত্য নিত্য, কিস্তু সাংবাদিকের অবদান সামরিক ও নৈমিত্তিক । যে ফুল প্রভাতে ফুটিয়া সন্ধ্যা না হইতে হইতেই ঝরিয়া যায় সাহিত্যের দিক দিয়া সেই ফুল ফুটাইয়া যাওয়াই আমাদের কর্ম্ম ও সাধনা । তথাপি উহারই মধ্য দিয়া সাহিত্যের যক্তস্ত্রে কিছু দান যে ঘটে, রাপ-রস-গব্দে কিছু প্রকাশ যে দেখা যায়, তাহা উপলব্দি করি তথনই, যপন মনীবীর সম্মেলন সাহিত্যের অর্থ্য রচনার জন্ম সাংবাদিককে আহ্বান করেন ।

মেদিনীপুর জেলার বন্ধ সাহিত্য সম্মেদনে বাঁহার নাম শ্রদ্ধা ও কুডজতার সহিত সর্বপ্রথমে উল্লেখযোগ্য, বাঙলা ভাষা ও বাঙলা সাহিত্য গঠনে অপ্রণিগণের পূর্ববিজ্ঞ সেই ঈশরচন্দ্র বিজ্ঞাসাগর মহাশর এই মেদিনীপুরেই আবিভূতি হইরাছিলেন। তাঁহার কথা এবং বাঙলা ভাষা ও সাহিত্যের সহিত তাঁহার সম্বদ্ধের কথা যথন চিছা করি—তখন রামারণের একটি চিত্র মনশ্চকুতে ভাসিয়া ওঠে। রামচন্দ্রের অধ্যেধ-বজ্ঞসভার বান্মীকির সহিত সীতা যথন প্রবেশ করিতেছেন তাহার বর্ণনার রামারণকার বলিয়াছেন:

"তাং দৃষ্ট**ু। শ্রুতি**সায়ান্তীং ব্রন্ধা**ণ্যতু**গামিনীষ্।"

বিভাসাগর মহাশরের অকুগামিনী হইরা বাঙলা ভাবা ও সাহিত্য বেভাবে বিখসভার প্রবেশ করিয়াছে রামায়ণের উরিশিত বর্ণনাটি ভাহার উপযুক্ত উপমা। পরবর্তীকালে যে গছা রীতি অবলখন করিয়া বাওলা সাহিত্যের বিকাশ বটিয়াছিল বিভাগাগর হইতেই তাহার প্রষ্টি। শ্রহ্মাবনত-চিত্তে লক্ষ কোটিবার প্রণাম করিয়াও তাহার প্রতি আমাদের শ্রহ্মা প্রকাশ অসম্পূর্ণ রহিয়া যায়। তাহার নামে স্মৃতিমন্দিরের নামকরণ করিয়া এবং তশার বার্বিক সাহিত্য সম্মেলন আহ্বানের ব্যবস্থা করিয়া মেদিনীপুরের অধিবাসীরা উপযুক্ত কার্যাই করিয়াছেন।

সাহিত্যের পক্ষে সম্পূর্ণ প্রামঙ্গিক না হইলেও আর একটি অবগ্র-পালনীয় কর্ত্তব্য আমাকে করিতে হইবে। মেদিনীপুরে আসিয়। পরলোক-গত কুমার দেবেল্রলাল থানের স্মৃতির উদ্দেশ্যে নিবেদন না করিলে কর্ত্তব্য ক্রটা হইবে। তাহার সামাজিকতা, বদায়তা প্রভৃতির কথা তুলিবার প্রমোজন নাই। তাহা স্পরিচিত। যাহা বিশেষভাবে স্মরণীয় তাহা হইল দেশ-হিভার্থে তাহার ত্যাগ ও ছঃখবরণ। এই ত্যাগ ও ছঃখবরণের সম্পূর্ণ কাহিনী লোক সমক্ষে কখনও হয়ত প্রকাশিত হইবে না; ইতিহাসে তাহার ক্তথানি পরিচয় থাকিবে ভবিয়তের কথা।

সাহিত্য অবসরের সৃষ্টি। যথেষ্ট অবসর এবং যথেষ্ট বিরাম না মিলিলে উন্নতন্তরের সাহিত্য বা স্থান্না সাহিত্যের সৃষ্টি হয় না। হং^{বের} অবস্থাতেই হৌক বা ত্রংথের অবস্থাতেই হৌক, সাহিত্য সৃষ্টির জল্প অবসর অভ্যাবশুক। বাহিরের দিক হইতে ইহা স্পান্ট বা প্রভাক্ষ না হই^{লেও} মনের দিক হইতে ইহা অবিসংবাদিত সত্য। বাহিরের লোকেরা ইহা হয়তো বুঝিতে পারে না; কিন্তু সাহিত্য রচনা বে করে সে আপেনার মধ্যে ইহার সত্যতা প্রত্যক্ষাবেই উপলব্ধি করে। সাংবাদিকের

অভিবান্ত জীবনে বাহিবের ও অস্তরের দিক হইতে এই অবসরের একান্ত অভাব বলিয়াই উলিখিত মন্তব্যের সত্যতা আমরা যেমন উপলব্ধি করিতে পারি এমন বোধ হর আর কেহ পারে না। একই ক্লেত্রে সাহিত্যিক ও সাংবাদিকের সংমিশ্রণ বাঙলা সাহিত্যে একাধিকবার ঘটিয়াছে। কিন্ত সেক্লেত্রেও দেখা গিয়াছে সাহিত্যেই যাহার মৃত্রান্তর্ভি শেষ পর্যান্ত সাহিত্যই তাহার একান্ত উপজীব্য হইয়া উঠিয়াছে।

সাহিত্যের যাহা উপজীব্য, ইতিহাদের যাহা উপাদান তাহা মেদিনী-পুরের দিকে দিকে পরিকীর্ণ হইরা আছে; গন্ধারনাণী সমৃত্য-সলিলে বিধৌত এই ভূমির প্রাকৃতিক পরিবেশের মধ্যে মহন্ত ও বিশালত্ত্বর রূপ যেন আপনা হইতেই মিনিয়া রহিয়াছে। উচ্চতম মহিমা, গভীরতম বেদনা এবং নিবিড়তম অকুভৃতি—এইগুলিকে আত্রর করিয়াই সর্বজনসমানৃত হ্বায়ী সাহিত্যের উদ্ভব হইয়া পার্কে। মেদিনীপুরের পুর্ব-প্রাপ্তত্ব সমৃত্রপৈকতে দাঁড়াইয়া বিজমচন্ত্র যে 'কপালকুগুলার' উপলব্ধি করিয়াছিলেন তাহা অকারণ নহে। বহু পুরাতন কথার উত্থাপন করিব না, ১৯২০ সালে 'অসহযোগ আন্দোলনের' প্রারম্ভ হইতে রাজনৈতিক কর্মজীবনে মেদিনীপুরের যে সকল বন্ধানের' প্রারম্ভ হইতে রাজনৈতিক কর্মজীবনে মেদিনীপুরের যে সকল বন্ধানের সহিত পরিচয় হইয়াছে, যে সকল ঘটনার সহিত অঞ্ববিত্তর ঘনিষ্ঠভাবে পরিচয় লাভের স্থোগ হইয়াছে এবং যে বিপর্যায় ও উত্থান-পতনের ঘাত-প্রতিঘাত লক্ষ্য করিয়াছি তাহা হইতে উপলব্ধি করিতে পারিয়াছি যে, সাহিত্যাহাইর মূলগত পুর্বোক্ত উপাদাননমূহ এখানে প্রচুর পরিমাণে বর্ত্তমান।

সাহিত্যের কথা অপেকা বাঙ্গালীর নিজ জীবন-সমস্তার কথাই আজ আমাদের কাছে অত্যন্ত বড হইয়া উঠিয়াছে। বাঙ্গালীর জীবনাকাশ আজ নিবিড় খনঘটায় সমাচ্ছন্ন আর তাহারই নিক্ষকুফ ছায়া পড়িয়াছে বাঙ্গালীর সমাজ ও সাহিত্যের উপর। ইহা আদল্ল বর্ষায় নবসম্ভাবনাপুর্ণ মেঘদঞ্চার নছে—যে মেঘের জক্ত তৃষিত, আকুল ও আশাপূর্ণ চিত্তে লোকে চাহিল্লা থাকে, যাহা নবস্থান্তর স্থচনা করে, ফলভার-পরিমাণ সাকল্যের প্রেরণায় বাহা নুতন জীবনীশক্তি বহন করিয়া আনে। আমাদের শীবনাকালে এখন যে খনঘটা দেখা দিয়াছে ইহা সেই মেঘ যাহার মধ্য मित्रा धानारात्र देनिक ७ युग्ना धाकरे दहेगा ७८५, कान-दिनाथात क्रिक অকাশে যাহার ধাংসকারী শক্তির পরিচর মাঝে মাঝে অকস্মাৎ আমরা পাই-যাহার ঘর্ষণে ঘর্ষণে বিভাগত্তি লোকতাস উৎপাদন করে-যাহা বড়বঞ্চা, উৎপাত, মহামারীর বার্দ্ধা বহন করিয়া আনে। জীবনের এই সন্ধট আমাদিগকে মনুব্যন্তের চরম পরীক্ষায় আহ্বান করিতেছে। সেই পরীকার কিভাবে আমরা উত্তীর্ণ হই তাহার উপরেই আমাদের সমাজ ও সাহিত্যের স্থিতি ও ভবিষ্তৎ নির্ভর করিতেছে। ইতিহাদের যুগ-পরিবর্ত্তনে ও রাষ্ট্রবিপ্লবের পূর্ব্বেও যে বাঙ্গালীসমাজকে এমনতর শৃষ্ট ও সমস্তার সমুখীন হইতে হইয়াছে তাহার প্রমাণ ও পরিচয় সামাদের সাহিত্যের মধ্যে রহিয়াছে, সাময়িক পাহিত্যের উপর তাহা আপনার ছাপ রাখিয়া গিয়াছে। যে সৃহটের প্রকাশ ও ক্রিয়া আমরা শ**ৰ্বে দেখিতেছি, ইহার ঘাত-প্রতিঘাত** সাহিত্যের উপর কি আকারে (एथा पिरव छाङ्ग ऋथीक्षरमञ्ज किस्त्रमोत्र विवद ।

ডা: ভাষাপ্রদাদ মুগোপাধ্যার আমার উপরে এক বিশেষ ভার স্তন্ত করিয়াছিলেন। বর্ত্তমানে কি কর্ম্মাধনা অবলম্বনীর তৎসহক্ষে ধীর অভিমত দিতে হইবে। সাধারণ লৌকিক ক্ষেত্রে ইহার যে উত্তর দেওয়া যায়-সাহিত্যের ও সাহিত্যসাধনার মাধ্যম অবলম্বন করিয়াই সেই উত্তর উপস্থাপিত করিতেছি। সাহিত্য সম্বন্ধে যে আলোচনা করিলাম তাহাতেই ইহা বুঝাইবার চেষ্টা করিয়াছি যে, ইহা বন্তচালিত রচনার ধারা বা সমষ্টি নহে। ইহা শক্তির সম্বর ও প্রকাশের কেন্দ্রখন্ধপ। ইহা শক্তিকে কেন্দ্রীভূত করে এবং ব্যক্তির মধ্যে ও সমষ্টির মধ্যে নবশক্তি উর্বোধনের প্রেরণা দেয়—নবশক্তি জাগাইয়া তোলে। ভাবের রাজ্যে, চিন্তার রাজ্যে, অনুভূতির রাজ্যে প্রেরণা ও আলোডন জাগাইয়া তাহাকেই কর্মজগতের মধ্যে নৃতন রূপ দের। আমরা সেই প্রত্যক্ষরপ দেখিয়া মুগ্গ হই, অভিভূত হই। কিন্তু স্থান ও বিলেখৰ করিলে দেখিতে পাই যে, মূল শক্তির ক্রিয়া হইতে উহার উদ্ভব, সাহিত্যের শক্তির আধারেই তাহা প্রথমে সঞ্চিত ও সঞ্চারিত হইয়াছে। সবিশেষ পরিচয় দিবার সময় ও অবসর এথানে নাই। কিন্তু বিশ্ব-সাহিত্য ও বিশ্ব-ইতিহাস একত্রে পাশাপাশি রাখিরা অসুধাবন করিলে আমার বক্তব্যে উহার অর্থ ও উদ্দেশ্য পরিকটে ইইবে। ছুইটা দৃষ্টাত দিতেছি। ফরাসী বিপ্লবের মূল শক্তির সন্ধান_ত রহিরাছে ^করণোর রচনায়। বাঙলার ও ভারতের নব জাতীয়তার মূল প্রেরণা রহিয়াছে विकास यानमामार्थ ।

ইংরাজ রাজত্বের প্রথম দিকে বাঙ্গালী সমাজ ভারতের সর্বত্ত ছড়াইয়া পড়িয়াছিল-ইংরাজ রাজত্বের অবদানে পুনরায় ছড়াইরা পড়িতেছে বা ছড়াইরা পড়িতে হইতেছে। কিন্তু উত্তর অবস্থার মধ্যে কি মর্মভেণী পার্থকা! তথৰ বাঙ্গালী ভারতবর্ষে আপনাকে প্রসারিত করিয়া দিয়াছিল স্বয়ুপ্ত ভারতকে জাগাইবার জন্ম জানের বর্তিকা হাতে লইয়া, মুক্তিমত্রের প্রেরণা সর্বত্ত সঞ্চারিত করিয়া; তাহাতে ভারত জাগিয়াছিল, বাঙ্গালীর নিকট হইতে জ্ঞান-সাধনায় ও মুক্তি-সাধনায় দীকা লইয়াছিল ; বাঙ্গালীকে শুরুর আসনে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিল : বাঙ্গলার প্রতিভাও দেশাস্থাবোধ সেদিন অজ্ঞ ধারার আপনার দানে ভারতবর্ধকে পরিপুষ্ট করিয়াছে; উহাকে নৃতন রূপ দিয়াছে; আপনাদের খানের ভারতকে অধ্যান্তলোক হইতে আনিয়া চক্ষের সম্মুখে নবরূপে প্রতিষ্ঠিত করিয়াছে। সেদিন, আর এদিন! আক আমরা ছড়াইরা পড়িতেছি, সংদার ও সমাজ হইতে বিচিত্র वाखरात्रा रहेता, व्यानप्रशाता रहेता, मर्करात्रा रहेता; स्त्रत्छ। वा अमू अंदरत आर्थी এवः कुलात आर्थी हहेता। वित्रमास्त्रत निक्रे ভারতীয় সংস্কৃতির যাঁহারা বার্ত্তাবহ এবং অগ্রদূত,—রাজা রামমোহন इडेट**ा आत्रक्ष क**तिया त्रवीत्मनाथ পर्वाक,-- এই वाक्ष्मा (पन इडेटाउँ তাহারা উদ্ভূত হইরাছেন। আজ ভিকাপাত্র হাতে লইরা দাঁড়াইতে हरेरव देशरे कि **आ**मारमंत्र विधिनिशि ? वृक्षिरं शांत्र ना, **छविष्ठ** দেখিতে পাই বা উপলব্ধি করিতে পারি এমন অভিযানও পোষণ করি না ; তথাপি সঞায় দৃষ্টিতে বর্ত্তমানকে পরীক্ষা করি এবং ভবিস্ততের

দিকে চাহিরা থাকি—পরিণাম কি এবং পরিপতি কোধার ? ভারতে ইংরাজ শাসনের প্রারাবসানকালে আসর তুর্গতির সম্ভাবনা উপলক্ষি করিরা ভবিস্ততের দিকে প্রসারিতদৃষ্টিতে রবীন্সনাপ তাঁহার 'শেব জন্মদিনের' অভিভাবণে বলিরাছিলেন:

"ভাগ্যচক্রের পরিবর্ত্তনের ছারা একদিন না একদিন ইংরেজকে এই ভারত সামান্ত্র ত্যাগ করে যেতে হবে। কিন্তু কোন্ ভারতবর্ষকে সে পিছনে ত্যাগ করে বাবে ? কী লক্ষ্মীছাড়া দীনতার আবর্জ্জনাকে। একাধিক শতাকীর শাসনধারা যথন গুছ হয়ে যাবে, তথন এ কী বিত্তীর্ণ পঙ্কশ্যা ছুর্বিসহ নিজ্লতাকে বহন করতে থাকবে।" আরু দেখিতেছি কবির এই ভবিত্তৎ উপলব্ধি তাহার স্বপ্রদেশ সম্বন্ধেই সত্য হইরা উঠিয়াছে। যে সংঘর্ধের পরিণামে ইংরাজ শাসনের অবসানে ঘটিয়াছে এবং ইংরাজ শাসনের অবসানের সহিত যে সংঘর্ধ উদ্ভূত হইয়াছে সেই উভন্ন সংঘর্ধসঞ্জাত হলাহল পান করিবার ভার বিধাতাপুক্রষ বাঙলা দেশের উপর স্বস্ত করিয়াছেন।

সাহিত্য সমাক্ষের উপর নির্ভর করে। সমাজ যদি ভাঙ্গে, সাহিত্য কিসের উপর দাঁড়াইবে ? সাহিত্যিকের পক্ষে এবং সাহিত্য-দেবীর পকে ইহাই গুরুতর সমস্তা। সাহিত্য কুত্রিম বস্তু নহে, कृतिमधीर উहा रुष्टे इय ना वा উहात शृष्टि कता यात्र ना। ममास्कत মধ্য হইতে রস ও জীবনীশক্তি আহরণ করিয়া উহা আপনিই গড়িয়া ওঠে এবং পরিপুষ্ট হয়। অবশ্য ইহা সত্য যে, যে সাহিত্য দেশ, কাল ও পরিবেশকে বতথানি অতিক্রম করিয়া উঠতে পারে, তাহা ততথানি স্থায়া সাহিত্যের পর্যায়ে উনীত হয়। তথাপি উহার মূলে সামাজিক স্থিতির অবশ্র প্রয়োজন। এই স্থিতি হইতে এট্ট হইলে সাহিত্যের ধারা অবলুগু ও ওক হইয়া থার। বাঁহারা দৃষ্টান্ত চাহিবেন তাঁহাদের দৃষ্টি সংস্কৃত সাহিত্য ও পালি সাহিত্যের প্রতি আকর্ষণ করিব। এই উভয় সাহিত্যেরই সম্পদ প্রচুর। কিন্ত কোনটিরই ধারাবাহিকতা রক্ষিত হর নাই। বে সমাজে এবং সমাজের বে অবস্থায় এই দুই সাহিত্য উদ্ভূত এবং পরিপুষ্ট হইয়াছিল ধীরে ধীরে তাহার অবসানের সহিত সাহিত্যের সজীব ধারাও অবলুপ্ত ছইতে চলিয়াছে। মধ্যে মধ্যে সামাজিক পুনরভাগায়ের সহিত সংস্কৃত সাহিত্যের ধারা জাণিরা উঠিয়াছে বটে, কিন্তু পালি সাহিত্যের ধারা আর জাগে নাই। কারণ, সেই সমাজ ও সেই সামাজিক পরিবেশের পুনরভাগর ভারতবর্বে আর ঘটে নাই। বাঙ্গালীর জীবনে বর্ত্তমানে বে সন্ধট দেখা দিয়াছে এবং সমাজ ষেভাবে থও বিখও হইয়া পড়িতেছে ভংগ্ৰতি লক্ষ্য করিয়া বাঙলা সাহিত্যের এই সম্ভাবিত বিপদের কথা আপনিই মনে আসে।

রাজনীতির সাধনার বহু বিপদের সমুধীন আমরা হইরাছি, বহু বিপদ বরণ করিরাছি এবং বহু বিপদ আমরা অতিক্রমণ্ড করিরাছি। বাজালী সমাল তাহাতে বিন্দুমাত্র বিচলিত হর নাই। তাহার ক্রমক্তি আমরা হাসিমূপেই গ্রহণ করিরাছি এবং জীবনীপজ্জির প্রাচুর্ব্যে তাহা কর্মকি ক্রমিনাজি জারা জারা জারাজিককে বিচলিত ক্রিতে পারে নাই,

এইজন্ত বে, সে আঘাত নিতান্ত বাহিরের আঘাত, অন্তর্নিহিত শক্তিতে ভাহার প্রতিরোধ করা আমাদের পক্ষে সহজ হইরাছে। কিন্তু বাঙ্গা সাহিত্যের উপর কোন আঘাত বা উহার কোন ক্ষতির महारमा मिथा मिला छाहा आमामिशक विव्वास करता कांत्र , त्म আবাত লাগে একেবারে আমাদের মর্ম্মনুলে। রাজনীতির ক্ষতি বাহিরের, কিন্তু সাহিত্যের ক্ষতি আমাদের পরমৈশধ্যের হানি। বাঙ্গালী অর্থনৈতিক-ক্ষেত্রে দরিক্র হইলেও, সাহিত্যের ক্ষেত্রে ভাহার বৈভব অতুলনীয়। এই বৈভবের প্রাচুর্য্যে কেবল ভারতে নহে, সমগ্র বিশ্বে ভাহার একটা প্রাণান্ত আছে। সাহিত্যই আমাদের সম্বন্ধ ও গৌরবের চিহুন্ধপে সকলের সম্প্রধান দর্শনীয় বস্তু। কেবল আমাদের নহে, ভারতবর্ধ আপনার পক্ষ হইতে গৌরবের নিদর্শন স্বরূপে বিশ্বের সন্মুখে বাহা উপস্থাপিত করিতে পারে, বাঙলা সাহিত্য তাহার মধ্যে অক্সতম প্রধান। বর্ত্তমান যুগে ভারতের যদি কিছু গৌরব থাকে দে, গৌরব বাঙলা সাহিত্যই আহরণ করিরাছে। কেবল সাহিত্যও নহে, সঙ্গীত, 6িত্র, নৃত্য, চারুশিল, ভাষর্থ প্রভৃতি ললিভকলার সকল অংশেই ভারতবর্ধ তথা বিৰদভাতা বালালীর প্রতিভার দানে সমৃদ্ধ। ভারতের রাজস্ম যক্তশালা হইতে আজ শীর অন্তর্দ্ধান ঘটবে, যদি তাহা বাঙ্গালীর করম্পর্ণ হইতে বঞ্চিত হয়।

যে অবস্থার মধ্যে আজ আমরা সহসা উপনীত হইরাছি এবং থে ব্যবস্থার মধ্য দিয়া চলিয়াছি ইহার মধ্যে সাহিত্যিকের স্থান ও কর্ত্তব্য কি এবং নাহিত্যের উপযোগিতা কোবার সে কবা আলোচনা করিব। পুর্বেই বলিয়াছি মসুস্থ জীবনের গভীরতম বেদনাই সাহিত্যের প্রধানতম উপকরণ। কেবল এ দেশ নহে, সর্ববদেশে ও সর্ববিধাকেই ইহা সত্য। জগতের শ্রেষ্ঠ সাহিত্য, যাহা স্থায়ী সাহিত্যরূপে সমাজের প্রামাণ্য বলিয়া খীকৃত হইরাছে তাহার মধ্যে মানুবের গভীরতম বেদনার অমুভূতি পুঞ্জীভূত ও কেন্দ্রীভূত হইরা আছে। রামারণ মহান্তারত, শক্তলা বা ইলিয়াডের যুগ হইতে এ কাল পর্যান্ত ইহা সত্য। করাসী সাহিত্যে 'লা মিজারেব্ল্', রুশীয় সাহিত্যে 'মাদার' জোরান্ বোরারের 'পিল্রিমেক' প্রভৃতিও আমার কথার দুইাক্তর্ল।

রামায়ণ রচনার সার্থকতা সীতার বেদনা প্রকাশের মধ্য দিরাই ফুটিরা উঠিরাছে। লক্ষা যুদ্ধের সমাপ্তি ঘটিরাছে; সীতা বিজয়ী রাসের সঙ্গুবে আনীতা হইরাছেন; দীর্ঘ বিজেদের পর সীতাবিরহিত রাম ও রামবিরহিতা সীতার সাক্ষাৎ। সীতার তথন মনের অবস্থা করানা করিবার। সেই অবস্থার রামচন্দ্র সীতাকে কি সভাবণ করিলেন। প্রেমের সভাবণ নর। তিনি বলিলেন—'তুমি আমার সন্মুখে উপস্থিত হইরাছ বটে, কিন্তু তোমার চরিত্র সম্বন্ধে সামার সন্মুখে উপস্থিত হইরাছ বটে, কিন্তু তোমার চরিত্র সম্বন্ধে সামার সন্মুখে তোমার উপস্থিত আমাকে পীড়া দিতেছে। দশনিক উন্মুক্ত আছে বে দিক্শেইছো চলিয়া বাও।' তৎকালীন সীতার বে বেদনা সে বেদনাকে রূপ দিতে পারে একমাত্র সাহিত্য। রামারণে সে বেদনা প্রতিফলিত হুইরাছে। সেইকল্প রামারণ আমাদের এত প্রিয়।

রামারণ হইতে আর একটা উদাহরণ দিতেছি। অগ্রিপরীকার দ্ধতীর্ব হট্টরা সীতা অযোধাার ফিরিয়াছেন। তারপর মিধ্যা অপবাদে পুনরার তাঁহার বনবাসের আদেশ হর। দীর্ঘ বনবাসের পর অবদেধ যজ্ঞসভার বালীকি যথন রামচন্দ্রের নিকট আবেদন করেন সীতাকে গ্রহণ করিবার জন্ম, তথন রামচন্ত্র গ্রহণ করিবার প্রস্তাব অনুমোদন করেন নাই। বজ্ঞসভার সর্বসমক্ষে পুনরার পরীকা দিবার প্রভাব হয়। যে খামী তাঁহাকে অগ্নিপরীকা উত্তীর্ণ হইতে দেখিরাছেন তিনিই পুনরার পাতিব্রত্যের পরীক্ষা দিতে বলিতেছেন। সীতার হৃদয়ের তৎকালীন বেদনার কি কোনো পরিমাপ আছে ? এই পরীক্ষাই সীতার জীবনের চরম পরীক্ষা। তিনি রামচন্দ্রের মুখের দিকে চাহিলেন না। ইষ্ট্রদেবতা পূর্ব্যের দিকেও তাকাইলেন না। তিনি বুঝিতে পারিলেন তৎকালীন তাঁহার যে বেদনা---সে বেদনা সহাঁ করিবার শক্তি সর্বাংসহা বহুমতী ছাড়া আর কাহারুও নাই। সেইজন্ম সীতা তথনি পৃথিবীর দিকে চাহিন্না বলিলেন--রাম ছাড়া আর কাহাকেও আমি জানি না-একথা যদি সত্য হয়, কায়মনোবাক্যে আমি রামের অর্চনা করিয়াছি —একথা যদি সত্য হয়, তাহা হইলে মা পৃথিবী আমাকে তাঁর বুকে ত্বান দিন। সীতার মুখ হইতে তিনবার একণা উচ্চারিত হইবার পর যাহা ঘটিয়াছে তাহা আপনারা জানেন। এই অনন্তকালব্যাপী রূপ দিতে পারিয়াছেন বলিয়াই বাল্মীকি আদি কবিগুরু। মহাভারতের আথায়িকার ভিত্তি দৌপদীর বেদনার উপর প্রতিষ্ঠিত। কৌরব রাজদভায় দৌপদীর অবসান মহাভারত রচনার মূল প্রেরণা। জৌপদী यथन लाक्षिका इन-- ७थन छै। हात्र प्रहेपित्क क्रुक्ट्लित पूरे गांथा। দ্রৌপদী একবার দক্ষিণে একবার বামে তাকাইলেন না। কিন্তু তাঁহাকে অবমান হইতে রক্ষা করিবার জন্ম কাহাকেও তিনি উচ্চত দেখিতে পাইলেন না। মানুষ যখন সেই অবমাননার প্রতিকার করিতে পারিল না তথন দ্রৌপদী আকুল আবেদনে অতীক্রিয়শক্তির নিকট আপনার বেদনা নিবেদন করিলেন। তৎক্ষণাৎ দেই শক্তির ক্রিয়া প্রকাশ পাইল। অবমানিতা জৌপদীর বেদনা মহাভারতকারের রচনার মধ্যে অমরতা লাভ করিল। ইহাই সাহিত্য-সাহিত্যের মূল ভিত্তি মাসুষের (रमनाटक त्राप मियात्र कम्मठा। भव्रवर्शीकात्म अकूछनात्र मत्या, मिक्र-পীরবের রচনায় ও বঙ্কিমচন্দ্রের রচনার মধ্যে মাতুষের বেদনা রূপ লাভ ব্রিয়া অমর ও সর্বাকালখারী সাহিত্য সৃষ্টি করিয়াছে।

জীবনের অগ্রগতির পথে, রাজনীতি ও সমাজের বিবর্তনের পথে মধ্যে মধ্যে বিপর্ব্যন্ন আবেন। সেই বিপর্ব্যায়ের রপচক্রতনে কত মানুষ নিশিষ্ট হইরা যার। মানুষের জীবনধারা এবং মানুষে মানুষে সম্পর্ক হিন্ন বিচ্ছিন্ন হইরা যার। সমাজ, সংস্কার ও ঐতিহ্ন সংসা ভাসিয়া পড়ে। ইতিহাস এইগুলিকে সাত্র ঘটনা হিদাবে এবং ঘটনার অগ্রগতির চিক্ত হিদাবে উল্লেখ করিয়া যায়। কিন্ত ইহার প্রকৃত রূপ এবং অন্তর্নিহিত সত্য রক্ষিত ও পরিষ্টুট হয় সাহিত্যে। সাহিত্যিক আপনার অমুভূতিকে প্রসারিত করিয়া মমুম্বজীবনের ও মহাম্সমাজের বাজিগত ও সমষ্টিগত অনুভতিকে গ্রহণ করেন এবং ভাহাই পুনরার আপন করনার বর্ণবিজ্ঞানে ভাষার মধ্যে রূপ দিয়া সমাজের নিকট ফিরাইয়া দেন। ইতিহাসের যুগদিক্ষিণ এইরূপ সাহিত্যিকের উদ্ভবের অপেকা রাখে এবং যুগদলিকণে এইরূপ সাহিত্যিক দেখা দেয়। তাহারাই লাভ করেন যুগদাহিত্যিকের পদবী। বাওলার ইংরাজ-শাসনের প্রথম যুগে 'ছিয়ান্তরের ময়ন্তর' দেখা দিয়াছিল; দেশে ও সমাজে বিপর্যায় আনিয়াছিল। মাতুষের সেই পুঞ্জীভূত বেদনা রূপ ও ভাষা পাইবার জন্ম যুগদাহিত্যিকের উদ্ভবের অপেকা করিতেছিল। প্রায় এক শতাব্দীকাল পরে ইহাই রূপ লইল বৃদ্ধিমচন্দ্রের 'আনন্দমঠ'। মাকুষের গভীরতম অনুভূতির আবেদন কথন ব্যর্থ হয় না। স্থল সম্ভার উদ্বতর কোন শুরে উহার ক্রিয়া থাকিয়া নায়। সংবেদনশীল মনের ও অধ্যান্ত-চেতনার স্পর্ণ পাইলেই উহা পরিপূর্ণরূপে রূপায়িত হইয়া ওঠে। ব্রিমের মধ্য দিয়া উহা আমরা প্রত্যক্ষ করিয়াছি।

বাঙ্গালীর জীবনসন্দের উপর দিয়া আজ যে মন্ত্রন চলিয়াছে সেই
মন্ত্রনের মধ্যে আমাদের চক্ষের সমূধে মন্ত্রজ্ঞীবনের গভীরতম বেদনার
ঘটনা ও প্রকাশ অহরহঃ ঘটতেছে। ইহার বিস্তার ও গভীরতা
এতথানি যে, সাধারণ চিন্তা ও কঞ্জনাথ সাধ্য নাই যে, ইহাকে ধারণ
করে। বাঙ্গালীর জীবনে যে এতবড় ছর্দিন আসিয়াছিল ইহার নিদর্শন
রক্ষিত হওয়া প্ররোজন। কিন্তু ইহাকে ভাগা ও রূপ কে বিবে?
বাঙ্গালা সাহিত্যের পূর্বেওরগণ আজ বর্ত্তমান থাকিলে তাহাদের চিন্তা
ও রচনার ধারা কিরূপ হইত বলিতে পারি না। কিন্তু যাহা দেখিয়াছি
ও যাহা দেখিতেছি ইহাকে রূপ দিবার জন্ম বর্ত্তমান বা ভবিন্ততে
যুগসাহিত্যিকের প্রয়োজন অপরিহার্য। উৎপীড়িত মানবান্ধার অনুভূতি
অধ্যান্ধ্রচতনার স্তরে যে আঘাত ও যে তরকের স্পষ্ট করে, তাহা
সাংবেদনশীল মনে সঞ্চারিত হইয়া আপনিই যুগসাহিত্যিককে জাগাইয়া
তোলে একথা সত্য। তথাপি মানব বেদনার এই প্রকাশকে রূপ ও
ভাষা দিবার জন্ম সাহিত্যিকের যে দায়িও আছে, বর্ত্তমান, সাহিত্যিকগণকে
তাহাই বিশেষভাবে শ্বরণ করাইয়া দিতেছি।*

 ৪ঠা জুন মেদিনীপুর বিভাগাগর হলে বঙ্গীয় সাহিত্য পরিবদের মেদিনীপুর শাধার বার্বিক উৎসবের সপ্ততিংশৎ সাহিত্য সন্মিলনের সভাপতির অভিভারণের মর্ম।





—বারো—

—একবার জয়গড়ে আস্থন, খুব জরুরি দরকার। নগেন ডাক্তার থবর পাঠিয়েছেন।

ছপুরে সাধারণত চাকরী থাকে না। এই সময়ে গীভোক্ত কোন্তের—অর্থাৎ কুমার ভৈরবনারারণ বিশ্রাম শ্যার গা এলিয়ে দেন। এই বিশ্রাম পর্বটা দেখবার স্থবোগ একবার ঘটেছে রঞ্জনের। ব্যাপারটা শুরু রোমাঞ্চকর নয়—রীতিমতো ভয়াবহ। জাহাজের মতো একথানা স্থবিশাল থাটে বপুয়ান কুমার বাহাত্র পড়ে থাকেন একটি ব্রহ্মদেনীয় শিশু-হন্তীর মতো। ছবেলা কৃন্তি-করা ছজন ছাপরাই চাকর তথন সশকে তাঁর অঙ্গদেবা করতে থাকে। মহিব দান করারার দৃশু তার চোথে পড়েছে—ডলন-মলনের আপ্তয়ার শুনতে পাপ্তয়া যায় আধা মাইল দূর থেকে। কিন্তু কুমার বাহাত্রের অঞ্জ-মর্দনের ধকল একদিন সহ্ করতে হলে বুনো মোষও জেলী মাছ হয়ে যেত। বত্তা জোয়ান ছ তুটি পালোয়ানেরও মুখ দিয়ে ফেনা ছুটতে থাকে; মাথার ওপর বায়ায় ইঞ্চি পাথার প্রচণ্ড ঘূর্বন সন্ত্বেও তাদের গা দিয়ে দরদর করে নামতে থাকে কাল-ঘাম।

রাজা ভগবানের সাক্ষাৎ প্রতিনিধি—সন্দেহ কী!
সকালে-বিকেলে অন্তত করেক হাজার লোক হাত বুলিয়ে
আসে কানীর বিশ্বনাথের মাথায়। অবশু হাত বুলিয়ে কিছু
তারা হাতাতে পারে কিনা কে জানে, কিন্তু বিশ্বনাথকে
বসে বসে দিতে হয় থৈবের পরীক্ষা। সে-হিসেবে তৈরবনারায়ণ নিশ্চয় দেবাংশসভূত। বিশ্বনাথের কাছে কিছু নগদ
বিদার মেলে না, এথানে অন্তত রাজসেবায় ছটি প্রবল-মল্ল
প্রতিপালিত হচেছ।

বারোটা থেকে পাঁচটা—এইটুকুই সব চেয়ে মূল্যবান সময়। সাময়িকভাবে ঘটোৎকচের পতন। তারপর পাঁচটার চা—তার মধ্যেই ফিরে এলেই চলবে। তথন কুমার বাহাত্রের চার পাশ ঘিরে বসবে ভাবকের দল— ডাক্তার, পোই-মাষ্টার, সদর-নায়েব, স্থমীরনবীশ। বোড়ায় চড়ার গল্প, ভৌতিক কাহিনী, কান্তনগরের যুদ্ধের ইতিহাস, লাট-সাহেবের একথানা আন্তো থাসির রাং থাওয়ার আলামন্বী বর্ণনা। সেই সমন্ত তাকে হাসতে হবে, হেঁ হেঁ করতে হবে— বিমুগ্ধ বিশ্বরে তাকিয়ে থাকতে হবে বিশ্বারিত দৃষ্টিতে। তার আবে পর্যন্ত আপাতত ছুটির পালা।

কুমার বাংগছরের অঙ্গ-মর্দন চলতে থাকুক, এই ফাঁকে তার জয়গড় ঘুরে আসা দরকার।

ঘরটায় একটা তালা দিলে, তারপর বারান্দা থেকে সাইকেলটা নামিয়ে বেরিয়ে পড়ল রঞ্জন।

আবার সেই ধান-ক্ষেতের মধ্যে দিরে কুমারীর সিঁথির
মতো পথের রেখা। অগণিত পদ্মকোরকের মতো
তুঁষের হিরগ্রম পাত্রে ঘন ক্ষীরের মতো জমে-আসা ধান।
দ্র-দ্রান্তবাপী হরিতের ওপর হিরণের দ্যুতি পড়েছে—
আর কদিন পরেই পাকতে আরম্ভ, করবে। কিন্তু এবার
কিছু পোকার উপদ্রব আছে, কিছু নই হবার সম্ভাবনা।
তা ছাড়া আকাশে কালো মেধ্বরও আনাগোনা চলছে—
যদি জল আসে তাংলে এদের অর্থেক ডুবে যাবে এমন
আশকাও জেগেছে লোকের মনে।

ত্ ধারের ধান ক্ষেতের চড়াই-উৎরাই ভেঙে সে চলল। হাল্কা ধূলোর ওপর সাপের রেখা, আর মাহুষের পদচিছের ওপর চাকার দাগ টেনে চলল সাইকেল।

এই ক্ষেত্টা পার হলে তিন চারটে শিমূল গাছ এক জায়গায় জটলা পাকিয়ে গোল হয়ে দাড়িরে—; ওইখান দিয়ে ত্রিভূজের একটা কোণের মতো ভৈরবনারায়ণের এলাকার মধ্যে খানিক দ্র ঢুকে গেছে ফতেশা পাঠানের জমি। ছজনের মধ্যে ওটা নিয়েই লাঠালাঠি আর ঝামেলা। এই সীমাস্ত-রেখার ওপরে পর পর সাঁওতালদের কয়েকখানা ছোট ছোট গ্রাম—ফতে শাছর অবাধ্য প্রজার দল। টুল্কু আর ধীরুয়া সাঁওতালের জয়ভূমি।

মাঠ পার হয়ে শন-খাসের বন ঠেলে চলতে চলতে মনে

পড়ছিল দিন করেক আগে এথানেই সাঁওভালদের ব্নোশ্রোর মারতে দেখেছিল সে। আরো মনে পড়ল
সাঁওভালদের ওথানে নাচ দেখবার এবং মাংস-ভাত
থাওয়ার একটা নিমন্ত্রণও ছিল তার। সেদিন সেটা রক্ষা
করবার স্থযোগ হয়নি—একদিন এসে চুকিয়ে যেতে হবে
ভাকে।

-वामाव वावू।

তাকিরে দেখল পাশের আল্ দিয়ে একদল মুসলমান চাবী এগিয়ে আসছে। সম্ভাষণটা তাদেরই।

—হাজী সাহেব বে। থবর কী ?—প্রসন্ন মুথে সাইকেল থেকে নেমে পড়ল রঞ্জন: জিয়াকৎ আছে নাকি কোথাও ?

দলটি তথন রান্তার সামনে এসে পড়েছে। সকলের আগে আগে শিয়ার হাজী—এ তলাটের তিনিই সামাজিক নেতা। সম্পন্ন চাষী। প্রায় একশো বিবে জমি রাথেন, খান চারেক গরুর গাড়ি আছে। অল্ল-সল্ল ইংরেজী জানেন —হজ ঘুরে এসেছেন।

মধ্যবয়সী লোক—মুখে একটি প্রসন্ন হাসি লেগেই খাকে। হেসেই বললেন, না, জিয়াকৎ নয়।

—তবে এত সে**ৰু** গুজে চলেছেন কোথায় ? আৰু তোকোনো পূৰব নয়।

শাল গোছের ঘটা সকলেরই একটু আছে, সন্দেহ নেই। কারো মাথায় শাদা ধব্ধবে গোল টুপি, কারো রাঙা টকটকে ফেল্ল। শাদা পায়জামার ওপর হাজী সাহেব কালো রঙের একটা লঘা কোট পরেছেন, পায়ে চকচকে ছ্তো। বাকী সকলের কারো ফর্সা পালাবী, কারো লাপানী-আর্দির জামা, পাট-ভাঙা লুকি আর পায়জামা। বেশ সমারোহ করেই বেরিয়েছে দলটা।

হাজী সাহেব বললেন, একটা মিটিং আছে আমাদের।

- —মিটিং ? কিসের মিটিং ?
- —লীগের।
- —লীগের কাজকর্ম এ তল্পাটেও আছে নাকি?—
 রঞ্জন বিশ্বিত হয়ে জিজ্ঞাসা করল।
- এতদিন ছিল না— এইবারে হছে। হাজী সাংহ্বের হাসিটা এবারে আর একটু বিস্তৃত হয়ে পড়ল। ফুটে বেরুল একটা আন্তরিক প্রসরতা।
 - —সে ভো বেশ কথা। কিন্তু মিটিংটা হচ্ছে কোণায়?

- —শাহর কাছারীতে। কাল ঢোল দিয়ে গেছে গ্রামে গ্রামে।
- —শাছর কাছারীতে !—রঞ্জনের শ্বতি আবার সঙ্গাগ হয়ে উঠল: আনিমুদ্দিন মাস্টারও আছেন নিশ্চয় ?
- —ভিনিই তো গোড়া। তাঁর চেষ্টাতেই সব হচ্ছে।

 —কুভজ্ঞতার রেশ লাগল হাজী সাহেবের গলায়: খুব
 এলেমদার লোক।
- —হাঁ, আমার আলাপ হয়েছে তাঁর সঙ্গে—রঞ্জন বললে, আচ্ছা, আপনারা যান। ওদিকে আবার আপনাদের দেরী হয়ে যাবে।—রঞ্জন সাইকেলে উঠল।
 - —**আ**পনি কোথায় চললেন ?
 - যাব একটু ব্রুগড় মহলে।
 - —আদাব—
 - ---নমস্তার ---

শন ঘাসের বনের নধ্য দিয়ে আবার এগিয়ে চলল রঞ্জন।

আলিম্দিন মাসীর ! ই.—বার তিনেক নানা উপলক্ষে দেখা হয়েছে তাঁর সঙ্গে। কণাবার্তার স্থযোগও ঘটেছে কিছু কিছু। তীক্ষণী, বিচক্ষণ লোক। চাপা ঠোঁট— মুখের ওপর একটা শাস্ত কাঠিছা। বজুগর্ভ মেঘের মতো চেহারা। দেখলেই বোঝা যায়, অনেকগুলি মানুষকে নিয়ন্ত্রিত করবার শক্তি তাঁর আয়ন্ত।

তিনিই লীগের সংগঠন কাজে মন দিয়েছেন! খুব চমৎকার কথা। দেশের প্রতিটি সম্প্রদায় আত্ম-সচেতন হোক, নিজের মর্যাদাকে ফিরে পাক; মুক্তি লাভ করুক স্বর্থমের হীন্মক্তার পীড়ন থেকে। এর চেয়ে বড় জিনিস আর কী হতে পারে! জাতির এক একটি অক যদি শক্তিলাভ করতে পারে, তা হলে তার সমগ্র দেহের পূর্ব জাগরণে আর কতথানি দেরী হবে!

পৃথক্ জাতীয়তা—পৃথক্ সংস্কৃতিবোধ! হোক— কোনো ক্ষতি নেই। অন্তত্ত বাঙালি মুসলমান যে প্রধানত দীক্ষিতের সন্তান—এ ঐতিহাসিক সত্যকেও ভূলে বাওয়া চলে! আর সংস্কৃতি! অন্ধের মতো চোথ বৃদ্ধে না থাকলে মানতেই হবে সত্যপীরের পাঁচালী আর মাণিক পীরের গানের মধ্য দিয়েও তার ব্যবধানের সীমাটাকে কোনোদিন একেবারে মুছে ফেলা বারনি। এমন কি, "দীন-ইলাহী"র ঐক্য মন্ত্র বিনি দিয়েছিলেন, সেই সমাট আক্বরের সময়েও আগ্রা শহরে মস্কিদের সামনে বাজনা বাজানো নিরে সাংপ্রাদারিক দালা হয়ে-ছিল—এমন কথা ইতিহাস বলে।

স্তরাং পৃথক্ জাতিতকে আপত্তি নেই।. ইস্লাম জাগুক। গুধু আসর বক্সার ওই মেঘগুলোর মতো একটি প্রান্ন মনের মধ্যে ঘ্রছে। এই হঠাৎ ঘ্ন-ভাঙা হর্দান্ত মানবতা যথন থান্ত-বস্ত্র-মৃক্তি—সংস্কৃতির আকুলতায় স্থার্ত গরুড়ের মতো প্রান্ন ভালে প্রতিবেশী কিরাত-পল্লী দেখিয়ে দেবেনা তো এর উল্গাতারা? তার ক্রির্ন্তি প্রণ করবার মতো পর্যাপ্ত সংস্থান তাদের আছে তো?

সেইখানেই ভয়। আর সে ভয় যে একেবারে অমূলক নয়—তারও আভাদ দেখা গেছে নানাভাবে। অক্সকে অবিশাদ করা নয়—নিজেকে বিশাদ করতে পারাই সব চেয়ে বড় কাজ।

হয়তো আলিমুদ্দিন মাস্টার তা পারবেন।

জয়কালী মন্দিরের বট গাছটা সাইকেলের ক্রতগতির সঙ্গে সক্ষে ক্রমশ দিগস্ত থেকে সামনে এগিয়ে এগ।

এই জয়কালীর মন্দির থেকেই সম্ভবত জয়গড়।
গড় হয়তো কোনোদিন ছিল—হয়তো 'পাল-বুকজে'র
গড়ধাই এরই সীমাস্ত রেখা। কিন্তু গড়ের চিহ্নমাত্র
নেই কোথাও। গ্রামের পূব-দক্ষিণ জুড়ে ইংরেজী
'এল্' হরফের মতো অজগর জললে ছাওয়া একটা
জালাল আছে বটে—হয়তো গড়ের প্রাচীরের ধ্বংসশেষ।
জয়কালীর পুরোনো মন্দির এখন একটা মাটি ঢাকা
ইটের পাঁজা—গ্রামের লোক কিছু ধ্রচপত্র করে একটি
ছোট মন্দির তুলে দিয়েছে এখন।

পেছনে একটা বড় বট গাছ—তার তলায় একথানা পঞ্চমুগ্ডী আসন। বাংলা দেশে 'ডায়ার্কির' বুগে বথন সারা উত্তর-বাংলা জুড়ে ভয়াবহ অরাজকভার স্রোত বব্বে গিরেছিল—সেই সময়ে কোনো দহ্যপতি ওই আসনে বসে সিদ্ধিলাভ করেছিলেন। তার পাশে একটা মজা-দীবি'—ওর ভেতরে সন্ধান করলে নাকি এখনো একশো আটটি নরবলির কন্ধাল-করোটি খুঁজে পাওয়া যাবে। তুর্বল লায়্র মাহবে আজো নাকি রাত-বিরেতে বিজীষিকা দেখে এই পঞ্চমুগুী আদনের পাশে।

নির্জন মন্দিরের পাশ দিরে যেতে যেতে রঞ্জনের মনে হল, আফ আবার নতুন করে এক তন্ত্রপাধনার স্ক্রপাত হয়েছে এই জয়গড়ে। এও কত নরবলি দাবী করবে কে জানে। কিন্তু এই সাধনার শুধু একটিমাত্র মাহ্যবিদ্ধিলাভ করবে না—লক্ষ লক্ষ মাহ্যবেক মুক্তি দেবে।

গ্রামে চুকতে গোকর গাড়ির লিক-**আঁকা** একটা মেটে রান্তা পাওয়া গেল। সেই রান্তা দিয়ে আর একটা বাঁক খুরতেই থানিকটা উচু ডাঙার ওপর ছোট একটি মহুয়া বন। আর এই মহুয়া বনটির পরেই নগেন ডাক্তারের বাড়ি।

বাড়ির বাইরের ঘরে ডিস্পেন্সারী। ছোট ডিস্পেন্সারী—যৎসামান্ত আয়োজন। একটা বার্ণিশ-বিহীন চেয়ারে বসে এবং সাম্নে কাগজ-পত্র আর ডাক্তারী ব্যাগরাখা টেবিলটার ওপরে পারেথে কী যেন পড্ছিল নগেন ডাক্তার।

বারান্দায় সাইকেল তোলার স্কে বই সরাল নগেন, পা নামালো। সাদরে ডাকল, রঞ্জনদা? এসো— এসো—

রঞ্জন ঘরে চুকে নগেনের মুখোমুখি একটা চেয়ার নিয়ে সশব্দে বদে পড়ল।

সামনে ঝুঁকে পড়ল নগেন। অস্তর্জ গলায় বললে,
আমার চিঠিটা পেয়েছিলে তা হলে ?

—পেয়েছি।—রঞ্জন হাসল: কিন্তু যত তাড়া আবার দিয়েছিলে, তোমার মধ্যে সে তাড়া তো দেখছি না। দিবিয় নিশ্চিন্ত মনে পড়াওনো হচ্ছিল। কী পড়ছিলে ?

নগেন হাসল লজ্জিভভাবে—গাল ছটো রাঙা হয়ে উঠল। এত ভালো কর্মী, এমন দৃদ্বত, তবু একটা অপূর্ব শাস্ত কমনীয়তা আছে ওর ভেতরে। বয়েস চিকাশ-পটিশ—তবু এখনো ছেলেমাছ্যি চেহারা। দেখলে মনে হয় আঠারো উনিশের বেশি বয়েস হবে না।

সলজ্জ গলায় নগেন বললে, একটা লিটায়েচার পড়ছিলাম।

-की निर्धेदिकांत्र ?

— আমাদের ভাক্তারীর। বিলিতী ওব্ধের কোম্পানি ।ঠিয়েছে।—নগেনের চোপ হুটো বিষয় হয়ে উঠল: কিছ দিয়ে আমরা কী করব? এ সব পেটেণ্ট ওষ্ধ প্রেস্- নগনন করবে শহরের ভাক্তারেরা—মোটা দাম দিয়ে দনে থাবে শহরের লোক। তা ছাড়া এদের অধিকাংশই কোরদের সর্বনাশ করছে।

রঞ্জন বললে, তোমার প্রথম কথাটা ব্রুলাম, কিন্ত ভীয়টা ধোঁয়াটে রয়ে গেল। ডাক্তারদের সর্বনাশ করছে যন ?

নগেন বললে, মেডিসিন তৈরী করতে ভূলে যাচছ কাররা—এদের ওপরেই বরাত দিয়ে নিশ্চিম্ভ হচ্ছে। র ফল কী দাঁড়াচ্ছে জানোঁ? কম্পাউন্ডিং করে দিলে যার ম পড়ত বারো মানা, পাঁচ টাকা দিয়ে তার পেটেন্ট যুধ কিনে থেতে হচ্ছে লোককে।

রঞ্জন হাসল: পৃথিবীতে দেখছি সমস্ভার আর অস্ত ই। কিন্তু ও কথা যাক—ওসব আমার পক্ষে একেবারে বিধকার চর্চা। এখন বলো দেখি, এমনভাবে হঠাৎ ড়াকেন ?

নগেন বললে, বলছি সর। কিন্তু এখানে নয়। চলো তরে। অনেকগুলো দরকারী পরামর্শ আছে তোমার ক।

হাতের ঘড়ির দিকে তাকিয়ে রঞ্জন বললে, এখন ড়টা। চারটের মধ্যে আমায় ছেড়ে দিতে হবে—মৃহ্ ুস বললে, নইলে আমার চাকরী যাবে, জানো ?

— শাওয়াই ভালো—নগেনও হাসল: নাও, ভেতরে গা।

বাড়িতে মাটির দেওয়াল, টিনের চাল। তবু পাড়া-যের নিছুল পরিচ্ছরতা ঝক ঝক করছে সব জায়গায়। ঠানে টে কি আছে, তার পাশে লাউ মাচা। পেছনের চীর বিরে বড় একটা বাতাবী গাছ—অকুপণ ফলের ারোহ সেখানে।

নিজের শোবার ঘরে নগেন নিয়ে এল রঞ্জনকে।
আড়ছরহীন ছর। একধারে ছোট একটি শেল্ফে
বিভাবনা ডক্তপোষের মাধার
ছে জড়ানো সভর্কির বিছানা।

नर्गन वनरन, त्वारमा।

রঞ্জন বিছানায় বসল। সামনে একটা টুল টেনে নিলে নগেন।

- —ভারপর 🕈
- দাঁড়াও। অনেক দূর থেকে এসেছ—একটু কল থাও আগে।
 - —পাগল নাকি! এই তো খেয়ে-দেয়ে বেরিয়েছি।
- —ছ' মাইল সাইকেলের ধান্ধায় সে হলম হয়ে গেছে—
 নগেন চীৎকার করে ডাকল: উত্তমা, উত্তমা ?
- —আসছি দাদা—বাড়ির কোনো এক দ্রপ্রা**ন্ত থেকে** সাড়া এল।
 - —উত্তমা কে? তোমার বোন বুঝি?
- —ই।।—নগেন বললে, তুমি ওকে দেখোনি আগে।
 মামাবাড়ি গিয়েছিল মাস তিনেক আগে—মামীমার খুব
 অহ্থ চলছিল।—একটা প্রসন্ন নেহ ফুটে উঠল নগেনের
 মূখে: ও আমার ডান হাত। সব কাজ-কর্ম করে দেয়।
 মোটামুটি খানিক কম্পাউগুরী শিবিয়ে নিয়েছি, দর্কীর
 হলে ওমুধ-পত্র করে দেয়। ও না থাকায় খুব অহ্ববিধে
 হচ্ছিল।
 - —বিনা পয়সাম্ব বেশ কম্পাউণ্ডার পেয়েছ তো।
- —তা পেয়েছি।—নগেন হাসল: কিন্ত ওই কম্পাউগুারটির আলার আমার ডাক্তারথানা চ্যারিটেবল ডিস্পেন্সারী হয়ে উঠেছে।
 - —কেন ভাকছিলে দাদা ? দোরগোড়ায় উদ্ভদাকে দেখতে পাওয়া গেল।
 - —কে এসেছে, চিনিস একে ?
- —ব্ঝেছি, রঞ্জনদা।—উদ্ভদা হাসল, এগিরে এসে প্রণাম করল রঞ্জনকে।
- —আরে ছি: ছি:—থাক থাক—সসকোচে পা সরিয়ে নিলে রঞ্জন।
- অত বাবড়াচ্ছ কেন? প্রণামটা পাওনা জিনিস—
 আদায় কয়ে নিতে লক্ষা নেই।

উত্তমা খিল্ খিল্ করে হেদে উঠল। প্রচ্র স্বাহ্য আর অপরিমিত প্রাণ থাকলে যে হাসি আলোর মতো নির্মন্তিত হরে পড়ে—সেই হাসি। রঞ্জন ভালো করে তাকিয়ে দেখল উত্তমাকে।

স্থানবর্ণের ছোট-খাটো একটি নেরে। রূপের

ব্যাকরণে স্থানী বলতে বাধে। পরণে আধ-ময়লা ডুরেশাড়ী। মেধাবী পুরুষের মতো চপ্ডড়া কপাল—গ্রামবুজারা হয়তো সংজ্ঞা দেবেন 'উচ কপালী' বলে। সেই
কপালের ওপর এক গুছু অলকের নিচে স্বেদবিন্দু চিকমিক
করছে। অটুট স্বাস্থ্যে গড়া শরীর। আর সব চাইতে
আগেই চোধে পড়ল পরিপুষ্ঠ নিটোল ছ্থানি হাত।
আঙুলগুলি কঠিন—মেয়েদের ভুলনার একটু বেশি লম্বা।
চম্পক-কলির ব্যঞ্জনা কোধাও নেই—পরিশ্রমের নিভূলি
চিক্ত। হাতে চারগাছা করে কাঁচের চুড়ি—তাদের ওপর
মাটির একটা হাল্কা আত্তরণ পড়েছে।

- -को कत्रहिलि (त ?
- —বাগানে মাটি কোপাচ্ছিলাম।
- —বেশ করছিলি। তা মাটি কোপানো এখন থাক। রঞ্জনদার জন্তে কিছু খাবার নিয়ে আয়।
- —না—না, কিছু দরকার নেই—সম্বস্তভাবে রঞ্জন জ্বাব দিলে।
- —গুরুপাক কিছু নয়, সামান্ত কিছু গাছের ফল।—
 নগেন হাসল, তা ছাড়া আমি ডাক্তার—আমার ওপর
 ভূমি নির্ভর করতে পারো। যা—হা—দাড়িয়ে রইলি কেন?
 উত্তলা বেরিয়ে গেল।

কথা আরম্ভ করার আগে চিন্তাটাকে যেন গুছিরে নেবার জন্তে একবার জানালা দিয়ে বাইরে তাকালো নগেন। জানালার ওপারে মহন্বা বন—তার পেছনে টাঙ্গন নদীর থাড়া পাড়ি। অন্তর্মূখী চোথটাকে সেদিকে রেখে নগেন বললে, ভূরী-পাড়ার পঞ্চায়েতে আমি থাকতে পারিনি। ভূমি যথন গিয়েছিলে, তখন ওতেই কাজ হয়েছে। কেমন মনে হল ?

- —চমৎকার। একেবারে বারুদের মতো তৈরী। আগত্তন ধরিকে দিলেই হয়।
- —হাঁা—ওরা বেশ গড়ে উঠেছে। ভালো লড়াই করতে পারবে—কচি কচি মহরা পাতাগুলোর দিকে চোধ রেখে নগেন বললে, এত ব্রেস হরেছে, তবু সোনাই মগুলের কী রকম জোর দেখেছ?
- —তাই দেশলাম।—উৎসাহিত হয়ে উঠল রঞ্জনের খর: ওরা তো চাবী। ওদের কাছ খেকে এতথানি আশা আমাদের ছিল না।

- চাষী আর কোথার দেপছ!—নগেন এবার চো
 ফিরিয়ে এনে সোজা রঞ্জনের দিকে তাকালোঃ ওদে
 দেনার অবস্থা জানো? বেশির ভাগেরই এখন কেত
 মজুরের দশা—লাভের মোটা টাকাটা সোজা চলে যা
 মহাজনের হাঙর-পেটে। যাও সামাস্ত কিছু হত—ডাঁড়া
 বানে একেবারে পথে বসিয়ে দিছে। এবার ডাঁড়া
 বাধ না দিলে ওদের আর বাঁচবার জো নেই।
- কিন্ত ডাঁড়ায় বাঁধ দিলে কী হবে বাড়তি জলটার ওদিকে বান ডাকবে না তো ?
- —না, না, সে সব ভর কিছু নেই। ডাঁড়ার মুখ ব করলে দক্ষিণের ঢালু মাঠটা দিয়ে জল চলে বাবে। তো মরা মাঠ—এমনিতেই বর্ষায় সায়র হয়ে বার…হাত খানেক করে জল বাড়বে এই বা। আসলে ক্ষতি ৬ ভৈরবনারায়ণের, জলকর হুটোয় একটু অস্থবিধে হবে কিছু করেকশো টাকার জলকর বাড়াতে গিয়ে ছু হাজ বিবে জমির ধান এমনভাবে বরবাদ হবে নাকি?
- —না, এবার আর তা ওরা হতে দেবে না। কা
 পুখ্রিতে আগুন জলবে, আমি স্পষ্ট ব্রতে পেরেছি
 নগেন বললে, রঞ্জনদা ডোমার কাছ থেকে আফ
 পরামর্শটাই বাকী। ঘত দ্র মনে হচ্ছে—শুধু তুরী
 ে
 একার লড়াইতেই হবে না। এ অঞ্চলের সমস্ত মাহ
 শুলোকে নিয়ে একটা 'কমন্ কল্' তৈরী করতে হবে।
 - —আহীররা ?
- নিশ্চয়। ওরা তো আগওনের মতো গরম হ আছে। হাতের লাঠি ওদের তৈরী! তা ছাড়া জটা দিংয়ের খুনের পর পুলিশ এসে ওদের জন-পাঁচেককে ধ নিয়ে গেছে। শোননি বুঝি ?
 - **—**না তো !

উদীপ্ত মুখে নগেন বললে, কাল আমি ওদের ওখা গিয়েছিলাম। এতদিন আমাদের ক্ববাণ-সমিতির ক বলেছি—কিন্ত আমল পাইনি। এবার দেখলাম—অ ভাবনা নেই। একদম তৈরী। এ লড়াইরে ওরাই ই ভ্যানগার্ড। তুরীদের লড়াইরের কথা ওদের বলেছি।

- —তার পর ?
- —বা কেপে আছে, একটা স্থবোগ পেলেই হল।
- -- वांक, बठा बक्ठा ऋथवत्र।

নগেনের চোথ অলতে লাগল: টিলার সাঁওতালদেরও গাওয়া যাবে।

- ওরা তো ফতে শা পাঠানের প্রজা।
- —তাতে আটকাবে না। সব জমিদারই ওদের পক্ষেমান। যদি আমরা ভালো করে অর্গানাইজ করতে বারি, তা হলে সমস্ত এরিয়ার মাহ্যগুলোকে এই লড়াইয়ে টনে আনতে পারব—নগেনের গলার স্বর একটা আগামী সভ্যাশায় উচু পর্দায় চড়তে লাগল আতে আতে: ওই গৈওতালদের ওপর ভোমার হাত আছে—ওদের টেনে ামাতে হবে তোমাকে।

—দেখি চেষ্টা করে—রঞ্জন হাসল : কিছ তোমাদের
নালায় কুমার বাহাছক্তের ওখানে আমার অমন ভালো
কিরীটা চলে যাবে দেখছি। কোনো ঝামেলা ছিলনা—
স্থু নির্বিদ্ন গীতাপাঠ। ভবিষ্যতেরও আশা ছিল—হয়তো
নকটা ব্রহ্মান্তরও মিলে যেত এক সময়ে।

নগেনও হাসল: আথেরের ভাবনা ভাবতে হবে না।
তামার নাম আমাদের বইতে টোকা আছে। ছনিয়া
খন পাল্টাবে—যখন নজুন করে মাটির বিলি-ব্যবস্থা
বে, সেদিন ভূমিও ফাঁক পড়বে না। তবে ভার আগে
। অস্থবিধেটুকু ভোগ করতেই হবে।

- —তার মানে এটা ইন্ভেস্টমেণ্ট ?
- —ভাই—নগেন হেদে উঠল সশব্দে।

উত্তমা প্রবেশ করল। শাড়ীটা বদলে পরিক্ষার পরিচ্ছম
র এসেছে—ধুয়ে মুছে এসেছে শরীর থেকে মাটি
নাপানোর চিহ্ন। গাছ-কোমর বাঁধা আঁচলটিকে বিশ্বস্ত
রে নিয়েছে শোভন কমনীম্বতায়। একহাতে ঝক্ঝকে
গতলের থালায় সমজে কাটা বাতাবী লেব্, কয়েক
করো পেঁপে, ছটি কলা আর কিছু নারকেলের নাড়,
ার এক হাতে কাচের মাসে জল। সব মিলিয়ে বেন
পূর্ব একটি রূপাস্তর হয়েছে উত্তমার। একটু আগেকার
ঠিনবাছ সেই কর্মী মেয়েটি নয়—চির-পরিচিত একটি
াবার নন্দিনী সামনে এসে দাঁডিয়েছে।

নগেন উঠে জার একটা টুল টেনে দিলে। তার পর থালা গ্লাস নামিয়ে রাখল উত্তমা।

- —এত কী হবে ?
- --शादन।--উद्धमा हामन।

- —সব ?
- --- স্ব।
- কিন্তু আমি তো একটু আগেই থেয়ে এসেছি।
 নগেন বললে, রঞ্জনদা, বিনয় বন্ধ করো। খাওয়াটা
 শেষ করে নাও—অনেক দরকারী কাল:আছে।

রঞ্জন বললে, আচ্ছা লোক ভো দেখছি। এমনি ভাষায় বুঝি অতিথিকে অভ্যৰ্থনা করে ?

— অতিথি হলে তো অভ্যর্থনা করব। — নগেন বলগে, নাও, নাও। রাজবাড়ির রাজভোগের ব্যবস্থা অবশ্র এখানে নেই। কিন্তু টাট্কাঁ গাছের ফল, আর বরের নাড় — সম্পূর্ণ হাইজিনিক।

অগত্যা আহারে মন দিতেই হল।

—মা কইরে উত্তমা ?

জ্যাঠামশাইয়ের ওখানে গেছেন। ফিরতে **দেরী** হবে।

—আমি পছল করি না—মেঘের মতো মুখ করে নগেন বললে।

উত্তমা বললে, মা বলেন, সামা**জিকতা রাধতে** হবে।

—না রাখাটাই নিরাপদ—নগেনের মুধ আরো কালো হয়ে উঠল।

উত্তमा कवाव किल नां, कांकिएय बहेल निःभटक ।

- নীরবে খাওয়া শেষ করল রঞ্জন। জাকুঞ্চিত করে বদে রইল নগেন, আর জানালা দিয়ে বাইরের ,মছয়া বন আর টাঙ্গন নদীর উচু পাজির দিকে তাকিয়ে রইল উত্তমা।
- —আর দেব ?—থানিক পরে মৃত্ গলার উদ্ভমা বিক্রাসাকরল।
- —সর্বনাশ—এই ম্যানেক করতে প্রাণাপ্ত! নিতাব্ধই নগেনের ভয়ে এতগুলো খেতে হল।

থালা স্থার গ্লাশটা হাতে ভূলে নিলে উন্তমা। বেরিয়ে যাওয়ার মুখে নগেন পিছু ডাকল।

- —है। त्त्र, (भाके।त्रश्राला लिया राव श्राह ?
- —সামান্ত কিছু বাকী।
- —इश्रुद्वहे (नव करत्र निवि—गरकात्र आर्श आमात्र हाहे।

- —बाष्टा—डेख्या विविद्य शंग ।
- কিলের পোজীর ?— কমালে মুথ মুছতে মুছতে বিজ্ঞানা করল রঞ্জন।
- আমাদের কৃষক সমিতির ঘোষণা। আগামী লড়াইরের প্রস্তুতি।—নগেন একটু হাসল : আর এ গ্রামে আমাদের সবচেরে বড় শক্র, কে জানো? আমার জ্যাঠামশাই।
- —ও ?—রঞ্জন তাকিয়ে রইণ জিজ্ঞাস্থ চোখে। থানিকটা বোধগম্য হচ্ছে—উত্তমা আর নগেনের ব্যক্তিগত আলোচনার তাৎপর্বটা।
- —বড় কোতদার। অনেক হাল আর বিশুর কুষাণ।
 তিনি আমাদের সমিতিকে ভাঙবার জন্তে তলে তলে
 মতলব আঁটছেন। এখনো স্থবিধে করতে পারেননি—
 তবে সময় হলেই ঘা দেবেন। যাক, সে কথা। এবার
 তোমায় একটু উঠতে হবে রঞ্জনদা।
 - " —আবার কোথায় ?
- —বেতে হবে আমাদের কিবাণ সমিতিতে। বে প্ল্যান প্রোগ্রাম হচ্ছে, সে সহজে ওরা তোমার সঙ্গে আলাপ করবে একটু।
- —আছা চলো—হাতের খড়িটার দিকে তাকিরে রঞ্জন বললে, খণ্টাখানেক সময় আছে এখনো।

আগেই থবর পেরে কুড়ি পঁচিশব্দন এসে অপেক।
করছিল ক্যাণ সমিতিতে।

বড় একথানা ঘর। ওপরে খড়ের চালা—নিচে চাটাই। মাটির দেওয়ালে কিছু পোস্টার—কিছু ছবি। কাতে হাতৃড়ীর ওপর জলজলে একটা লাল তারা—ওদের পথের নির্দেশ।

শকিস-সেক্রেটারী মনোহর জানাল, এদিকে ব্যবস্থা শামরা করে এনেছি। অস্তত ছুশো লোক নিয়ে যেতে পারব।

—আহীররা আসবে, সাঁওতালদের ভারও নিয়েছেন রঞ্জনদা।—নগেন বললে, এই আমাদের প্রথম লড়াই। মনে রাখবেন এই আমার শক্তি পরীক্ষা। এখানে যদি আমরা জিততে পারি—তাহলে আমাদের পথ কেউ রুখতে পারবে না।

বিপ্লবের জয়ধ্বনিতে ঘরখানা কেঁপে উঠল।

ফেরবার পথে বিকেলের আলোয় বছদ্র থেকে ভৈরব-নারায়ণের প্রাসাদটা ধেন আজ আবার নভুন করে চোথে পড়ল। চোথে পড়ল, বাড়িটার মাথার ওপর একপাল শকুন উড়ছে—ধেন আসম অপমৃত্যুর আভাগ পেরেছে ওরা। (ক্রমশঃ)

वीधीरतस्मनाताय ताय

আমি
তোমারেই ভালবেদে যাই—
হাসির মতন বাঁশীর মতন
তিমির অন্ধ নাশীর মতন,
শিথার মতন ক্যোতির মতন
প্রেমের মতন ভেসে যাই।
আসে
প্রাণের সাগরে আলোর উৎস নামি'
মার
মুখ হিয়ায় অলকনন্দা কামী—!
ভুনি'

তজ্ঞার মত আধো-জাগরণে
চেতনার শত কনক-কিরণে
শরণ-শাস্ত দেশে বাই॥
তুনি
তত্র দীপ্ত দিশ্ব বহি ভরা,
আমি
যুগে যুগে চাই, ভোমারে বায়না ধরা—
এলে
শরনে স্থানে অসীমের নীলে,
হে চিরবন্ধ, মন্নমে-নিধিলে,—
স্থান্ত-ছল হ'তে যেন ভেসে



경짜(취기이 기업)론-

কেন্দ্রীয় গভর্ণনেণ্টের কৃষিমন্ত্রী শ্রীযুত কানাইয়ালাল मुमीत चारियन में गंड भी कुनारे हरेए १रे कुनारे ভারতের সর্বত বন-মহোৎসব ও বুক্ষরোপণ সপ্তাহ পালন করা হইয়াছে। নানা কারণ এদেশে গাছের সংখ্যা কমিয়া গিয়াছে—কেহ বুক্ষরোপণ করে না। তাহার ফলে অনার্ষ্টি, অমির উর্ব্বরতা ক্ষয় প্রভৃতি নানা বিপদ উপস্থিত হুইয়াছে। আমেরিকাতে এই অবস্থা উপস্থিত হওয়ায় ১৮৭২ সাল হইতে বংসরে একদিন সর্বত আহুষ্ঠানিক ভাবে বুক্ষরোপণ উৎসব করা হইতেছে। বৃক্ষরোপণের প্রয়োজনীয়তার কথা ঐ দিন সকলকে স্মরণ क् तारेया (मुख्या इरेया शास्त्र। এर উপলক্ষে वाकाना দেশের রাষ্ট্রপাল ডা: कांटेब्रू किलकांछ। দেশবন্ধু পার্কে, बुशामञ्जी ডाः विधानहत्व तात्र वातांकश्वत गांकीषाटि, মন্ত্রী হেমচক্র নম্বর ইডেন গার্ডেনে বুক্ক রোপণ করিয়াছেন। অক্তাক স্কল মন্ত্রীও নানাস্থানে বৃক্ষরোপণ করিয়া বেড়াইয়াছেন। তাঁহারা বুক্সরোপণ করিয়া বিড়াইবেন—ইহার কোন মূল্য না থাকিতে পারে—কিন্ত প্রত্যেক মাহবেরই বে নিজ নিজ এলাকায় এ সময়ে ফুরোপণ করা উচিত—এই **উ**ৎসবের দারা তাহাই ^{মুর্ণ} করাইয়া দেওয়া হইয়াছে। সরকারী কৃষি বিভাগ ⁵ বন বিভাগ হইতে এ জন্ত ক্ষেক লক গাছ বিতরণ म्त्रो श्रेग्राहि—तम मकन शोह श्रेष्ठ जानानि कार्ठ छ ্যবহারবোগ্য কাঠ পাওরা বাইবে। তাহা ছাড়া অল্পন্ত্য মাম ও শিচুর গাছও সরকারী কৃষি বিভাগ হইতে বতরণ করা হইরাছে। ফলের গাছের সংখ্যা দেশে ্বই কমিরা গিরাছে—সে জন্ত থাছাভাব উপস্থিত। শমরা বার বার বলিয়াছি, আম, লিচু, কাঁঠাল, নারিকেল, ামকল, জাম, পেলারা, কলা, পেপে প্রভৃতির গাছ বদি াচুর পরিমাণে করা হয়,ভবে ঐ সকল গাছের ফল থাইয়াও াহব জীবন ধারণ করিতে পারে। আজ বৃক্ষোপণ

উৎসব সেই কথাই সকলকে বলিয়া দিতেছে। এ বিষয় धरे डेरमव डेशनहक वह वक्कामान, क्षवक ब्रह्मा, পৃষ্টিকা প্রকাশ প্রভৃতি হইয়াছে—জনগণের মধ্যে দেগুলি প্রচারিত হওয়ায় লোকে কর্ত্তব্যে অবহিত হইবে বলিয়া মনে হয়। জালানি কাঠের জন্ম গাল্ডের চাষ করিলে কয়লার अञाव कमिश्रा यांहेरव-धमन कि कश्रनांत्र मृत्राश्व द्वान . পাইবে। স্থামরা জালানি হিদাবে গোমর ব্যবহার করি: কিছ গোময় একটি সর্বাপেকা শ্রেষ্ঠ সার-জমীতে গোময়-সার প্রদান করিলে তাছার উর্বরা শক্তি বছ গুণ বৰ্দ্ধিত হয়। গোময় জ্বালানি রূপে যাহাতে ব্যবহৃত না হয়, সে জায় জানগণের পক্ষ হইতে চেষ্টা হওয়া উচিত। গোময়ের পরিবর্ত্তে কাঠ ব্যবহার করাই যুক্তিযুক্ত। অনেক দেশে মান্তবের বিষ্ঠাও জ্ঞার সার্রপে ব্যবহৃত ইয়-সে সকল স্থানে বিষ্ঠা সংগ্রহ ও তাহা কা**জে লাগা**ইবার উপযুক্ত ব্যবস্থা আছে। আমাদের দেশেও তাহার চেষ্টা হওয়া উচিত। পশ্চিম বঙ্গের ক্র্যিবিভাগ এই উৎসব মাত্র ৭ দিনে শেষ না করিয়া ১৫ই আগষ্ট পর্যান্ত অর্থাৎ দেডমাস কাল যাহাতে চলে, সে জন্ম জনগণকে অহুরোধ জানাইয়াছেন। ফলবান বুক্ষ সংগ্রহ করা সকল সময়ে সহজ নহে-সে জক্ত সময় বৃদ্ধির ফলে লোক বৃক্ষ সংগ্রহের সময় ও স্থবিধা পাইবে। জালানি কাঠের গাছ বেশী সংখ্যার পাওয়া যায় বলিয়া সরকার হইতে তাহার কয়েক লক্ষ চারা বিতরণ করা হইয়াছে-কিন্ত ফলবান বুক্ষ রোপণ করিলে কাঠ ও ফল ছইই পাওয়া বাইবে। সে जन मि विषये लाकित विषये के पार थाका श्री का **दिन्यांनी क**नश्रण थांच छेरशानन विष्ट्य विमूथ रखदांत्र ফলেই আৰু দেশে খাছাভাব এত অধিক দেখা দিয়াছে। এই উৎসব যদি দেশবাসীকে অন্ততঃ क्खरा डेब्क करत छरारे देश मार्थक इदेशाह বুঝিতে হইবে। আমরা প্রত্যেক দেশবাসীকে বিষয়টি গভীর ভাবে চিন্তা করিয়া কর্তুব্যে প্রবৃত্ত হইতে আহ্বান ব্দানাইতেচি।



দিকাপুরের গভর্ণরের আহ্বানে এক ভোজ্মভার ভারতের প্রধান মন্ত্রী পশ্তিত জহরলাল নেহক

'অদেশী' প্রচার-

উড়িয়ার প্রধান মন্ত্রী শ্রীযুত হরেকৃষ্ণ মহাতাব কেন্দ্রীয় গভর্ণমেন্টের শিল্প ও সরবরাহ মন্ত্রী নিযুক্ত হইয়া দেশীয় শिक्रममुद्दत छेन्नछि विधारनत क्या वहविध हिट्टोत व्यवहिछ হইয়াছেন। তিনি উৎসাহী কর্মী—তাহার পরিচর উড়িয়ার তিনি দিয়াছিলেন। সম্প্রতি কলিকাতার আসিয়া বণিক সভাসমূহের এক সন্মিলনে তিনি সকলকে আবার স্বদেশী দ্রব্য ব্যবহার করিতে অহরোধ করিয়া গিয়াছেন। বিদেশী শাসনের আমলে খদেশী তাব্য ব্যবহারের কথা প্রচার নিবিদ্ধ ছিল। এখন আব সে অবস্থা নাই। অথচ वाकारत कामता प्रिक्षिक शाहे-विष्मीत श्रिकाशिकात करन वक श्रिकारत चरमी नित्र नहें श्रीव প্রচারের বিশেষ প্রয়োজন আছে। শুধু লোককে খদেনী वायशंत्र कतिरा विनाति मत्रवतार मिरिवत कर्खवा भाष হইবে না—উপযুক্ত রক্ষা-শুক্ষের ব্যবস্থা করিরা খদেশী **मिह्नश्रिक वैक्तिया बाधाव वावश कतिएक हरेरव धवर** विरम्भी ज्या जांभमांनीत ऋविधा वस कतिए इहेरव। स्मर्भ यह निश्च-कांत्रथाना निर्मिल इहेग्राहिन, किन्त विरामी लाटकब সহিত প্রতিযোগিতায় দেশী মাল বিক্রয় কম হওয়ায় ঐ
সকল কারখানা বন্ধ হইবার উপ্রুক্তম হইয়াছে। এনামেল,
কাঁচ, পোর্দিলেন বা মাটার বাসন প্রভৃতির কথা সহজেই
বলা যাইতে পারে। ঐ সকল জিনিমের বছ কারখানা
প্রোয় অচল হইয়াছে। ঐয়ুত্ত মহাতাব যদি এ সকল বিষয়ে
উপয়্ক অহসদ্ধানের ব্যবস্থা করেন, তবে ভয়ু কারখানার
মালিকগণ লাভবান হইবেন না, হাজার হাজার বেকার
কল্মারও কর্মসংস্থানের ব্যবস্থা হইবে। তিনি যে খায়ীন
দেশের লোককে আবার 'অদেশী'র কথা অরণ করাইয়া
দিয়াছেন, সে জয়্ল আমরা ভাঁহাকে অভিনন্ধন জ্ঞাপন
করিতেছি ও আশা করি, তিনি এ বিষয়ে যথা আবিশ্রক
ব্যবস্থা করিয়া দেশবাসীর মকলসাধন করিবেন।

שוש אששו-

গত ২৪শে জুন এক বেতার বজ্ঞার পশ্চিমবংগর থাত মত্রী প্রথমজনকর সেন থাত-সমস্থার কথা বিশেষভাবে বিবৃত করিয়াছেন। এদেশে বে চাল উৎপন্ন হর, তাহাতে মাথা পিছু রোজ মাত্র বেড়ে পোরা চাল বরাজ করা বার জার বে গম উৎপন্ন হর, তাহাতে বছরে মাথা পিছু মাত্র এক সের গম পড়ে; সেকস্থ বিদেশ হইতে প্রচুর চাল

३ शम आमहानी कर्ता टाइफिन रत। जान, मतिया, গাথ ও আলুর চাষ এদেশে বৃদ্ধিনা করিলে এ সকল জনিবের মূল্য কোন দিন কমিবে না-বিদেশ হইতে श्राममानीत कला के नकन किनित्यत माम अछा छ दिनी দতে হয়—অথচ এদেশের লোক একটু চেষ্টা করিলে বনী পরিমাণ আধ, আনু, ডাল'ও সরিষা উৎপন্ন করিতে গারে। মাছ, মাংস ও ডিমের অভাব পশ্চিম বাংলার ার্বাপেকা বেশী-অথচ ঐ সকল জিনিষ উৎপাদনে গ্রহারও কোন চেষ্টা দেখা যায় না। তথ্য হত ও মাধনের म्था ना विनालके क्या अप्राप्त भी-भीनन क्षीय वस्त ইয়াছে। কাজেই হুধ, বি বা মাধন পাইবার কোন পার নাই। পশ্চিমবৃদ্দ সরকার এ বিষয়ে উত্যোগী ইয়াছেন বটে. কিছ ব্যবসা হিসাবে তাঁহাদের গো-পালন ্বস্থা কতটা সাফল্যমণ্ডিত হইবে, তাহা এখনও বলা চলে া। থাত মন্ত্রী মহাশয় থাত্ত-উৎপাদন বাডাইবার জল ় সকল দেশবাসীকে উৎসাহিত করিতেছেন, ইহাই ংশের পক্ষে মঞ্চলের কথা। অক্তাক্ত ব্যবসায়ের মত ষিকার্যকেও যাহাতে ধনীরা ব্যবসা হিসাবে গ্রহণ করেন, জিত ধনীদের বাধ্য **ক**রার বাবস্থা করা প্রয়োজন। ারখানার মালিকগণ বদি কারখানার শ্রমিকদের জন্ম রিতরকারী, মাছ, মাংস, ডিম, তুধ, বি প্রভৃতি উৎপন্ন রিতে বাধ্য হন, দেকত তাঁহাদের উপর চাপ দেওয়া য়োজন। দরিল কুষকদিগকে অর্থাভাবে কৃষিকার্য্যে না অস্ত্রবিধা ভোগ করিতে হয়, ধনীরা ক্রষিকার্য্য ব্যবসা সাবে গ্রহণ করিলে আর সে অফুবিধা থাকিবে না। গর প্রত্যক্ষ প্রমাণ আমরা স্থানরবন অঞ্চলে গো-সাবায় রলোকগত সার ডমিয়েনল হামিল্টনের চেষ্টায় গ্য করিয়াছি। প্রত্যেক শিল্প প্রতিষ্ঠানের ঐ ভাবে ষ ও থাত উৎপাদনে আৰু অবহিত হওয়ার প্রয়োজন সিয়াছে।

াকালার কৈবচুর্বিবপাক -

গত জুন মাসের প্রথম ভাগে ১১ই হইতে কয়েকদিন

কিন বাংলার অভিবৃষ্টির ফলে যে কভি হইরাছে, তাহা
নাতীত। দাজিলিং জেলার বে কভি সাধিত হইরাছে,
হার পরিমাণ করেক কোটি টাকা। দাজিলিং সহরে

ং জেলার নাবাহানে শত শত বাসগৃহ ধ্বংসপ্রাপ্ত

হওরার কত লোক যে মারা গিয়াছে, এখনও তাহার गःथा काना यात्र नाहे। मार्किनिः बाहेबात (तनभथे**८** এমন ভাবে ক্ষতিগ্রন্ত হইয়াছে যে তাহা মেরামতে কোটিরও অধিক টাকা ব্যয়িত হইবে এবং তাহা সম্বেও পথগুলি পূর্বের মত কাল্কের হইবে না। ঐ অঞ্চলের সকল থাতশতাও নষ্ট হইয়া গিয়াছে। দাৰ্জিলিং অঞ্ল হইতে প্রত্যহ কয়েক শত মন কাঁচা তরকারী কলিকাভান্ন আসিত, তাহাও বন্ধ হইয়া গিয়াছে। সেধানে উড়োজাহাল ছাড়া অন্ত কোন উপায়ে খালপ্রেরণের স্থবিধা নাই-কাকেই স্থানীয় অধিবাদীরা দারুণ থাতাভাব ভোগ করিতেছে। বাসম্বানের অভাবে লোক দলে দলে পদত্রকে দাৰ্জিলিং ত্যাগ করিয়া চলিয়া আসিতেছে। নৃতন যে আসাম-লিক রেল ভৈয়ারী হইয়াছিল বক্তা ও অভিবৃষ্টির ফলে সে পথেরও বত অংশ না হইরা গিয়াছে. উহা মেরামত করিতে কয়েক মাস সময় লাগিবে। जनभारे खड़ी दननात वह वाम, वित्मव कतियाँ जनभारे खड़ी সহর বন্ধার জলে কভিগ্রন্ত হওয়ায় সেধানেও বহু লোক মারা গিয়াছে ও বছ দরিত ব্যক্তির বাড়ী নষ্ট হইরা গিয়াছে। দেখানকার ক্ষতির পরিমাণও করেক লক টাকা হইবে। জলপাইগুড়ীতেও সেজকু দারুণ থাছাতাব উপস্থিত হইয়াছে। ১৪ মাইল পদব্ৰজে আসিয়া হলদীবাড়ী हिमान दिन धित्रशा लांक मान मान भाकिकारने मधा দিয়া কলিকাতার চলিয়া আসিতেছে। গৃহ সমস্তা ও থাঅসমস্থা জলপাইগুড়ী কর্ডপক্ষকে বিশেষভাবে বিব্ৰত করিয়াছে। ঠিক ঐ সময়ে নিমবক্ষেও অভিবৃষ্টির কলে वर्क्षमान, वीत्रज्ञम ७ मिलनीभूत ख्लात वह द्वान विश्व হুইরাছে। বর্দ্ধানে দামোদরের বাধ ভালিয়া করেকটি স্থান জলমগ্ন হইয়াছে। বীরভূমে ময়ুরাক্ষীতে প্লাবনের ফলে নুতন যে সেচব্যবন্থ। নির্মিত হইতেছিল, তাহা কতি-গ্রন্ত হইয়াছে। মেদিনীপুর জেলার কাঁথি মহকুমাতেও জলপ্রাবনে করেক শত গ্রাম ভূবিয়া গিয়াছে। পশ্চিম वांशा खर् बाबनाछिक कांब्रत विशव नरह, दिवक्किंशादकछ আৰু তাহার হঃধ হুদ্দশা চরমে উপস্থিত হুইয়াছে। এ সকল বিপদের উপর কাহারও হাত নাই-তথাপি বিপন্ন ব্যক্তিগণের ছর্দ্দশার কথা চিন্তা করিয়া আমরাও चाक निरम्दानत विशेष व्याध कतिरक्रकि

एकेंद्र भागाधमारलव नकत—

ছুরবছার প্রতীকারের উপার নির্দারণের অন্ত ভক্টর

বেড়াইরাছেন ৷ নদীয়া ও মূর্শিদাবাদ সীমাত্তে পাকিতান ৰাস্তহারাদের প্রকৃত অবস্থা জানিবার অন্ত ও তাঁহাদের হইতে বহু হিন্দু আসিয়া বসবাস করিতেছেন। উভয় জেলায় भीमार**स**ष्टे वह मूननमान वान कतिछ—छाहात मरश करनरक

পাকিতানে চলিয়া গিয়াছে ও এক অংশ উভর রাষ্ট্রেই গৃহ বকা করিতেছে। ঐ সকল মুসলমান উভয় রাষ্ট্রের মধ্যে যাভায়াত করার ফলে ঐ সকল অঞ্চলে কালোবাজার জোর চলিতেছে—ভাহারা পাকি-ন্তানের মাল আনিয়া হিন্দুস্থানে বিক্রন্ত্র করে ও হিন্দুস্থানের মাল লইয়া গিয়া পাকিন্তানে বিক্রয় क्रता हिन्दूशन बाह्रे म्बर কোন ওজ চায় না। তাহা ছাড়া ঐ সকল লোকের সাহাযো পাকিন্তানের আন্দারগণ মধ্যে মধ্যে হিন্দুস্থানের গ্রাম আক্রমণ ও বুর্চন করিয়া থাকে। এ সকল সামান্ত রক্ষার উপযুক্ত ব্যবস্থা নাই। কল্পেক মাইল অস্তর সীমান্তে একটি করিয়া পুলিশ থানা আছে—সেথানেও অতি অল সংখ্যক লোক বাস করে। খামাপ্রসাদ বাবু নিজে **ঐ সকল তুর্গম স্থানে** বাইয়া প্রকৃত অবস্থা দেখিয়া আসিয়া-ছেন—আমরা আশা করি ইহার ফলে ঐ অঞ্লের হিন্দু व्यथितांनीत्वत्र कः थ क्ष्मांत्र অবসান হইবে। প্রামাপ্রা वांवू बाजात्मक वह कान तमाश আসিয়াছেন। অত্যন্ত ছঃখ ও



শিলংএ;ডাঃ ভাষাপ্রদাদ মুপোপাধাায়—বামে, লাদামের।ভূতপূর্বে মন্ত্রী খ্রীরোহিণী চৌধুরী ফটে:-- শ্রীপারা সেন



भौराणि मात्रकि राज्य जाः श्रामाध्यमार मूर्याभाषात ७ जामायत ध्यम मन्नी भागीनांच वत्रमरेन

ফটো—শ্রীপালা সেন

শ্রীখ্যামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যার গত > মাসেরও অধিক কাল নানাম্বানে ভ্ৰমণ করিতেছেন। তিনি কয়দিন ধরিয়া নদীয়া কেলা ও বৰ্ণিদাবাদ কেলার পাবিংয়ানী সীমান্তঞ্জল । দেখিয়া

পরিতাপের বিষয় এই বে ক্ডিপর আসামবাসী হিন্দু আনাব হইতে বাঙালী বিভাড়নের জন্ত মুসলমানগণের সহিত একবে^{ত্র} कांक करिएलाम । शांकिकांक स्टेएक वह हिन्स के बहुनभवि

বসবাদের স্কুবোগ স্থবিধা করিয়া দেওরা হইয়াছে, হিন্দুদের ভাহা করা হর নাই। আসামে এখনও বাকালী হিন্দুদের তাড়াইবার জয় অসমিয়া হিন্দুরা ও মাসাম রাজ্যের কর্তৃপক্ষ সর্ব্ধপ্রকার চেষ্টা করিতেইন। অথচ আসামে

আসামে গমন করিরাছে—তথার মুসনমানগণকে যে ভাবে চেষ্টা করা হইয়াছে। আসাম কর্তৃণক বে ভাবে চলিতেছেন, তাহাতে আলামে শীঘ্রই সুসলমান অধিবাদীয়া गरथाधिक मच्छानाव इहेरव ७ **छाहात करन जाना**म शांकिन्छान विषया शंगा हहेर्र । कर्ड्भक्तित्र अ कथा वृश्वितात्र वृक्षि वा भिका नारे प्रथिया आमता खुखि हरेशाहि। वारा

ভারত ও পাকিস্তান সীমান্তে সাগরপাড়া প্রামে ডাঃ স্থামা-প্রদাদ-এখানে তিনি বাস্ত-হারাদের একটি শিবির উবোধন করেন ফুটো— শীপারা সেন





ৰহরমপুর হইতে পঞ্চাশ মাইল দুরে এক প্রামে কভিপর নমঃশৃত্তের সহিত কথোপক্ষন-রত ডা: খামালসাদ। মুখোপাধ্যার क्टो-निभान्न मन

व्यविगित्रीत जर्था क्य नहा वाजारमत अकला ডক্টর খ্রামাপ্রসাদের সহিত তুর্ব্যবহার করিতেও ⁵ হয় নাই। ডিনি যে সকল সভার বক্তা गिर्देन, त्र्याह्न द्वानामा गतिहा गढा शरकत

इकेक, एक्टेन भामाळागांच म्हान वह मानन इक्टिन विश्व वांचांनी विन्तुरमत तका कतांत्र वावचांत्र क्छा स क्रिं করিতেছেন, ভজ্জাত তিনি চিরদিন বালালী হিন্দু সমাজের राज्यकांच्यांस्य हरेगां शीरिशहरतः ।



লালবাগ—ৰূপিদাবাদের অধিবাদীগণ কর্ক ডক্টর বীভামাঞ্চাদ মুখোপাখ্যারকে সম্বর্জনা জ্ঞাপন—মাইকের সমুখে বস্তৃভারত ডা: ভামাঞ্চাদ কটো—বীপালা সেন

বিশ্ৰশান্তির উপায়-

গত ১৯শে জ্ন লেকসেসন্থিত সন্ধিলিত জাতিপুঞ্জের রেডিও হইতে বিশ্ববিধ্যাত বিজ্ঞানী পণ্ডিত ডক্টর আইনইাইন ঘোষণা করিয়াছেন—"মহাত্মা গান্ধীর পণই হইল
শান্তির পণ—বাহাকে অক্সায় ও পাপ বলিয়া জানি,
ভাহার সহিত অসহযোগই হইল সেই পণ ৷ বিভিন্ন
জাতির মধ্যে অল্পন্ত বৃদ্ধির প্রতিযোগিতা চালাইলে
বৃদ্ধ বাড়িবে—বৃদ্ধ বন্ধ করার পণ তাহা নহে। সমসামন্ত্রিক রাজনীতিজ্ঞাদের মধ্যে মহাত্মা গান্ধীর চিন্তা ও
মতই হইল সর্ব্বাপেক্ষা মহৎ ও শ্রেষ্ঠ। আমাদের সকল
প্রচেষ্ঠা তাঁহার ভাবে ভাবিত হইয়া করিতে হইবে।"
বর্ত্তমান যুগের সর্ব্বশ্রেষ্ঠ বৈজ্ঞানিক এই মত প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহার কথা ভনিবে কে? মামুষ
নিজেই তাহার ধ্বংস চাহে—ভাই সকলেই ধ্বংসের পণ্থে
ক্ষত অগ্রসের হইতেছে।

প্রথম সাধারণ নির্বাচন-

আগামী প্রথম নির্বাচনে পশ্চিমবন্ধ হইতে কেন্দ্রীয় লোক পরিবদের কতলন সদস্য নির্বাচন করা হইবে সম্প্রতি তাহা স্থির হইয়াছে। মোট ৩৪জন সদস্য নির্বাচিত হইবেন—তাহারা এইভাবে স্থান পাইবেন—কলিকাতা ও সহরতলী—৪, মেদিনীপুর—৫, ২৪পরগণা—৫, বর্ছমান— ৬, নদীরা, হুগলী, হাওড়া, বাঁকুড়া, বীরভূম ও মুর্শিদাবাদ প্রতি জেলায়—২, দার্জিলিং, জন্পাইগুড়ি, কুচবিহার, পশ্চিম দিনাজপুর ও মালদহ—প্রতি জেলায়—১জন। পশ্চিমবদ্ধ রাজ্যের পরিষদের সদস্ত সংখ্যা হইবে উহার ৭ গুণ অর্থাৎ ২৩৮ জন। পশ্চিমবদ্ধের জনসংখ্যা ১ কোটি ২১ লক্ষ ও কলিকাতা মিউনিসিপ্যাল এলাকার জনসংখ্যা ২৬ লক্ষ—এই হিসাব ধরিয়া ঐ প্রকার প্রতিনিধি নির্বাচন ছির হইয়াছে। এ বিষয়ে দেশে আলোচনা হওয়া প্রয়োজন এবং কোন স্থান যাহাতে প্রতিনিধি প্রেরণে বঞ্চিত না থাকে, তাহার জন্ত চেষ্টা প্রয়োজন। নির্বাচনক্তের উপর প্রতিনিধিত্বের গুক্ত নির্ভর করে।

রেশম শিল্প রক্ষা—

গত ২৮শে জুন কলিকাতায় কেন্দ্রিয় রেশম বোর্ডের বাধিক সাধারণ সভার সভাপতিত্ব করিতে আসিরা প্রীযুত হরেকৃষ্ণ মহাতাব বলিয়াছেন, "অদূর ভবিয়তে ভারতীয় রেশম শিল্প অভান্ত দেশের রেশম শিল্পর সহিত তাঁর প্রতিযোগিতার সম্মুখান হইবে। এই বৈদেশিক প্রতিযোগিতা হইতে আত্মরকা করিবার একদাত্র উপায় সামাদের দেশে কাঁচা রেশম উৎপন্ধ করা।" গত বৎসর তথ্য লাকার কাঁচা রেশম বিদেশ হইতে ভারতে আমদানী করা ইইয়াছে। এ বৎসর আরপ্ত অধিক টাকার রেশম বিদেশ লইতে আসিতেছে। সেল্ভ প্রীযুত মহাতাব দেশের সর্ব্বরা কাঁচা রেশম বাহাতে বেশী

উৎপন্ন হয়, সেক্ষপ্ত চাধীদিগকে উৎসাহ দানের বার্বস্থা করিতেছেন। ঐ উদ্দেশ্যে তিনি মুশিদাবাদের রেশম উৎপাদন কেন্দ্রগুলিও দেখিয়া আসিরাছেন। আমাদের বিশাস কেন্দ্রিয় সরকারের সাহায্যের ফলে দেশের লোক কাঁচা রেশম অধিক পরিমাণে উৎপাদন করিয়া বিদেশীর প্রতিযোগিতার হাত হইতে রেশম শিল্পকে রক্ষার ব্যবস্থা করিবেন।



আচাৰ্য্যপ্ৰস্কলন্ত রাজের ষষ্ঠ মুজ্যবাৰ্ষিকী উপলক্ষে নিষতলা খাণানঘাটে 'ভারতবৰ্ধ' সম্পাদক কৰ্ত্বক জাচাৰ্য্যের সমাধিকেতে মাল্যদান

ফটো-শ্রীপারা সেন

কলি**কাভা**য় **পশুভ নেহরু**–

দক্ষিণ পূর্ব্ব এসিয়া ও ব্রহ্মদেশ শ্রমণ শেষ করিয়া ভারতের প্রধানমন্ত্রী পণ্ডিত জহরলাল নেহক গত ২৫শে ইন ২ দিনের জক্ত কলিকাতার আসিয়াছিলেন। তিনি গাংলার সকল শ্রেণীর নেতাদের সহিত দেখাসাক্ষাৎ করিয়া বাজালার প্রকৃত অবস্থা ব্রিবার চেটা করিয়া গায়াছেন। পশ্চিম বজের বর্ত্তমান তুর্দ্দশার কথা তিনি বিষাও কিন্তু ব্রেন না—বাস্তহারাদের তুঃথের কথা গ্রনিয়াও জনেন না। এখনও কেন মে পূর্ব্বেক হইতে প্রত্যহ হয়েক হাজার করিয়া হিন্দু দেশত্যাগ করিয়া পশ্চিমবজে লিয়া আসিতেছে, পশ্তিতজী তাহার কারণ অহসদ্ধান চরিয়া তাহার প্রতীকারের কি কোন ব্যবস্থা করিয়া গায়াছেন? লিয়াকং-নেহক চুক্তি কি ভাবে পূর্ব্বেশিক্তানে পালিত হইতেছে, তাহা বাজালা দেশের গোদপত্র সমূহে নিজ্য প্রকাশিত হইতেছে। তাহা

সংখণ্ড যদি পণ্ডিতদী চক্ষু বুজিয়া বলেন—পাকিন্তাৰে চুক্তি ঠিক ভাবেই পালিত হইতেছে, ভবে এ বিষয়ে আমাদের আর কি বলিবার থাকিতে পারে? প্রীর্ত চাক্ষচন্দ্র বিধান নৃতন মন্ত্রিত্ব লাভ করিবার পর চাকরীর মোহে কি সত্য যাহা দেখিতেছেন, ভাহা প্রকাশ করার সাহস করেন না? ভাক্তার বিধানচন্দ্র রায়ের মন্ত্রিন ভাগু কি এসকল বিষয় পণ্ডিত নেহকুকে স্পষ্ট ক্রিয়া জানাইয়া দেন নাই? বাঙ্গালার এই তুর্গতির দিনে কে বাঙ্গালীকে রক্ষা করিবে কে জানে?

গত ছই মাসে ভারতের সর্বতে স্বারত্বশাসন প্রতিষ্ঠানের প্রাথমিক কেন্দ্র হিসাবে গ্রাম্য-পঞ্চারেৎ সমূহের সমৃত্ত নিৰ্বাচন হইয়া গিয়াছে। কংগ্ৰেদ সদস্যগণ শুধু এই নির্বাচনে ভোট দিয়াছেন। এবার কংগ্রেস-সদক্ত সংগ্রছের সময় বহুলোক কংগ্রেদের প্রতিবিরক্তি বশতঃ কংগ্রেদের সম্বস্ত হন নাই। কাজেই এই প্রতিনিধি নির্ব্বাচন ব্যাপারটিতে প্রকৃত প্রতিনিধিগণ নির্বাচিত হওয়ার স্থবোগ লাভ করেন নাই। একদল ক্ষমতা-লেভী লোক নিজেদের গণ্ডীর মধ্যে কংগ্রেদ-সদক্ত সংগ্রহ করিয়াছিল এবং তাহারাই পঞ্চাত্তেৎ ছার নির্বাচনে নিজের দলের লোকদিগকে নির্বাচিত করিয়াছে। পাছে ভোট-যুদ্ধ হইলে দলীয় স্বার্থ ব্যাহত হয়। সে জন্ম অধিকাংশ ক্ষেত্রে বিনা যুদ্ধে নির্বাচন শেষ করা হইরাছে। গ্রাম-পঞ্চারেৎসমূহের উপর ভবিস্ততে वह नामिष्मूर्व कार्याङात धानान कता बहेरव-कार्यह তাহাদের নির্বাচন ব্যাপারটি এইভাবে উপেক্ষা ও অবহেলা করার ফলে দেশ ক্ষতিগ্রন্থ হইয়াছে বলিতে হইবে। অনেক হানে বহু অবোগ্য ও স্বার্থান্ধ লোক নির্বাচিত হওছার দেশের জনগণের মধ্যে ক্ষোভ উপস্থিত হইয়াছে। নির্বাচন বাাপারে যেখানে দলীয় স্বার্থ রক্ষায় বাধা পড়িয়াছে, সেধানে স্বার্থান্ধ ব্যক্তিরা আদালতের আশ্রন্থ প্রচণ করার বছ অপ্ৰিয় সভ্য কথা প্ৰকাশ পাইয়াছে। একদল নেভা বার্থ কাষেমী রাধার জন্ম বে দকল চুনীতির আখায় এহণ ক্রিয়াছিলেন, তাহা প্রকাশিত হওয়ায় দেশবাসী জনগণ কংগ্রেসের প্রতি প্রকা ও বিশ্বাস হারাইতে বাধ্য হইরাছেন । हेरांत्र करण प्रत्यंत्र कृः थ कृष्णां य आत्रं वाष्ट्रिया बाहेर्द. तिवास गत्मर मांच नारे। य कराजम अक मनाता

ভ্যাগ ও সেরার প্রতীক ছিল, আজ বদি তাহা স্বাধারেবীর ও ত্নীতি পরারণের অবিধা লাভের ক্ষেত্রে পরিণত হয়, ভবে তাহা অপেকা পরিতাপের বিষর আর কি হইতে পারে? কংগ্রেস নির্বাচনের পর উর্বতন প্রতিঠানগুলির নির্বাচনের সময় বাহাতে এই ত্নীতি পুনরার অহস্ত না হয়, সেজক সকলের অবহিত হওয়া কর্ত্ব্য। সদত্ত। জাতীরভাবাদী মুস্লমান হিদাবেও ছিনি সর্বজ্ঞ পরিচিত। পূর্ববেদ ঐ ভাবে শ্রীষ্ত বারকানা বারোরীকেও মন্ত্রীপদে নিযুক্ত করা হইরাছে। কিং তাঁহার নিয়োগের পর পূর্ব পাকিন্তান ব্যবস্থা পরিষদে বিরোধী দলের নেতা শ্রীষ্ত শ্রীশচক্র চটোপাধ্যার মহাশা বলিরাছেন যে শ্রীষ্ত বারোরী কংগ্রেস বাতপশীলভুক্ত কো



কাকর্তার ভারতের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত জহরলাল নেহর—বামে ইন্দোনেশিয়ার প্রেসিডেন্ট ভা: সোকর্ণ এবং দক্ষিণে প্রধান মন্ত্রী ডা: বোহাম্মদ হা

পশ্চিমবঙ্গে শুভন মঞ্জী—

ভাঃ আর আমেদ নামক কলিকাতার একজন প্রসিদ্ধ কর-চিকিৎসক গত ৪ঠা জুলাই পশ্চিমবলে নৃতন মন্ত্রী নিযুক্ত হইরা কার্যভার গ্রহণ করিরাছেন। দিল্লী চুক্তি অহসারে পশ্চিমবলে এই প্রথম একজন মুসলমানকৈ মন্ত্রীপদে নিযুক্ত করা হইল। ভাঃ আমেদের বরস ৩০ বৎসর—১৯১৫ সালে আমেরিকা হইতে কর চিকিৎসা শিক্ষা করিয়া আসিয়া তিনি ১৯১৯ সাল হইতে কলিকাতায় চিকিৎসা ব্যবসা করিতেছেন। ১৯২০ সালে তিনি বে প্রথম দন্ত চিকিৎসা হাসপাতাল প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন, সম্প্রতি তাহার পরিচালন ভার গভর্গদেক গ্রহণ করিয়াছিলেন, তিনি কয়েক বৎসর কলিকাতা কর্পোরেশনের কাউলিকার ও অলভারম্যান ছিলেন এবং পশ্চিম বলের প্রেট মেডিকেল ক্যকালটীর

সম্প্রদারেরই প্রতিনিধি নহেন—কাজেই তাঁহার নিয়োগে পূর্ব পাকিন্তানবাদী হিন্দুরা আদৌ সম্ভাই হন নাই। পূর্ব পাকিন্তান ও পশ্চিম বলের শাসন ব্যবহার রীতি এ নিয়োগ হইতে স্থপ্রকাশ। আমাদের বিশাস ডাঃ আমেদে নিয়োগে পশ্চিম বাদালার কোন অসভোবের কার হইবে না।

শিক্সালদহ ষ্টেশ্সমে বাল্ডহারা-

গত কর মাস ধরিরা শিরালদহ টেশনের প্লাটফরে সকল সমরেই করেক সহল বাজহারাকে বাস করিতে দেই বাইতেছে। গত সলা জুলাই হইতে তাহাদের সংখ্যা নারি ১০ হাজারেরও অধিক ইবাছে। তাহাদের অসহনী হংথ কট দেখিলে প্রভৌক মাস্থবই চঞ্চল হইরা উঠেন হালগুলি এমন সুর্গন্ধর বে শ্রেণ বাজীদের প্রভাজাহাদে

मधा विद्या यांजाबाज क्योरे क्हेक्य-नगरव नगरव वाल-হারাদের ভিডের জন্ত লোক যাতায়াত করিতে পারে না ও त्म सम् क्षेत्र किन स्व। धरे रामात्र रामात्र लाक्त्र बादनत जन नारे, পাत्रशानात वाक्या नारे-आशांत छ मूदतत কথা। পূর্বেক করেকটি দেবা প্রতিষ্ঠান থাত রন্ধন করিরা चानिया जाशादन बाखग्राहेख-मध्या मत्रकाती चारमरम रम वावका वक्ष कता हरेगाहिल-छथन छाशास्त्र कल हिए। গাউকটা প্রভৃতি বরাদ হইত-নাবার নাকি রন্ধন-করা-খাত मात्नत्र वाक्षा हरेगारह। अरे नक्न लोकरक गर्छर्गरमण কেন কোন ভাল জায়গায় লইয়া না গিয়া ষ্টেশন প্রাটফরমে क्लिया त्रां श्विताहरून छारा आभारतत त्कित अनगा। কলিকাতার যে কোন স্থানে বড় বড় খালি বাড়ী সংগ্রহ कतिया गर्डिंपण्डे हेशास्त्र उथाय नहेवा गांहेर्ड भारतन । তাহাতে তাহারা অন্ততঃ ভাল বাসস্থান লাভ করিতে পারিবে। সরকারী সকল ব্যবস্থাতেই আমরা কিপ্রতার অভাব দেখিয়া বিশ্বিত হই। সাহায্য ও পুনর্বসতি বিভাগে কর্ম্মচারীরও অভাব নাই—অর্থেরও অভাব নাই। তথাপি এত অধিকসংখ্যক লোক এরূপ প্রকাশ্য স্থানে এইভাবে পশুর মত বাস করিতে বাধা হয় কেন ? কেহ কি তাহাদের অবস্থাটা দেখাও প্রয়োজন মনে করেন না ?

আসাম বেল লিকের ক্ষতি-

দাৰ্জ্জিলিংয়ের বঙ্গার ফলে আসাম বাইবার ন্তন রেল পথ কিরূপ বিপন্ন হইরাছে তাহার বিস্তৃত বিবরণ প্রকাশিত হইবাছে। (১) মনিহারীঘাট হইতে ফকিরাগ্রাম পর্যান্ত ২০০ মাইল রেলপথের মধ্যে শিলিগুড়ী হইতে বাগরাকোট পর্যান্ত ২০ মাইল পথ মেরামত হয় নাই—বাকী পথ মেরামত হইরাছে। (২) তিন্তা ত্যালী লাইট রেলে শিবক হইতে গেলেখোলা পর্যান্ত ২০ মাইল রেলপথ নই ইয়া গিরাছে। ঐ পথ দিরা শিলিগুড়ী হইতে কালিম্পং, গ্যাংটক ও অভান্ত ছানে যাওয়া হইত। ঐ পথ এখন মেরামত করা ঘাইবে না (৩) কার্সিয়ং হইতে দার্জ্জিলিং শ্রান্ত করা ঘাইবে না (৩) কার্সিয়ং হইতে দার্জ্জিলিং শ্রান্ত করা মাইলের এত অধিক ছান নই হইরাছে বে শুড়র উহার মেরামত হইবে না এ। (৪) শিলিগুড়ী হইতে গার্গান্ত ২০ মাইলের মধ্যে ন্তন ভিতা রেল খুগের পূর্বাংশে ৭৬০ কিট নই হইরাছে—উহা মেরামত

করিয়া আগামী ১৫ই আগষ্ট ঐ পৰে রেল চলিবে বলিয়া মনে হয়।

এই বিবরণ প্রকাশিত হওয়ার পরও >লা জুলাই হইছে দার্জ্জিলিং জেলায় আবার অভিবৃষ্টি হইয়াছে। ভাহার ফলাফল এখনও জানা যায় নাই। তবে ভবিষ্ঠতে দীর্ঘকাল বে দার্জ্জিলিং বাভায়াত বন্ধ থাকিবে, সে বিবরে সন্দেহ নাই।

যুক্ত ২০ বংসর চলিবে-

থ্যান্তনামা বৃটীশ দার্শনিক বার্দ্রীশু রাসেল গত ৩০শে জুন প্রকাশ করিয়াছেন যে রাসিয়া বর্তমান কোরিয়াবৃদ্ধে যোগদান করিবে ও এই যুদ্ধ ১০ বংসর কাল ছারী
হইবে। ইহাই পৃথিবীর তৃতীয় মহাযুদ্ধ। রাসেলের বয়স
৭৮ বংসর, ভিনি লর্ড উপাধি পাইয়াছেন, কিন্তু সে উপাধি
কথনও ব্যবহার করেন না। গণিতজ্ঞ বলিয়া পৃথিবীর
সর্বত্র তিনি সম্মানিত। তাঁহার এই ভবিশ্বদ্বানী পৃথিবীর
সকলকে শক্ষিত করিয়া তুলিবে, সন্দেহ নাই।

বাংলার চুরবস্থা-

গত ৬ই জ্লাই মৌলানা আবুল কালাম আজাল দিলীতে
বিসিয়া পশ্চিম বাংলার ত্রবন্থা সহদ্ধে এক বিবৃতি প্রচার
করিয়াছেন, তাহাতে তিনি সকল রাজ্যকে প্রাদেশিকভার
মনোভাব ত্যাগ করিতে অহুরোধ করিয়াছেন। আসাম,
বিহার ও উড়িফায় বালালী-বিভাড়ন চেন্তা ও ব্যবস্থা
তাঁহাকে ব্যথিত করিয়াছে। ভারত-বিভাগের পর পাঞাব
ও বাংলাই স্বাণেকা অধিক ক্তিগ্রত্ত হইয়াছে। এ
অবস্থার পাশের তিনটি রাজ্য বদি বাংলার অধিবাদীদের
সহিত তাল ব্যবহার না করে, তবে তথু বাংলা নহে, ভারত
রাইই তবিশ্বতে বিপন্ন হইবে। মৌলানা আজাদের এই
অহুরোধে কেছ কর্ণপাত করিবে কি ?

শ্রীমাখনলাল সেন-

থাতনামা প্রবীণ সাংবাদিক শ্রীমাথনলাল সেন কলিকাতা বিশ্ববিভালয় কর্ত্ত ১৯৪৯ সালের 'রামানন্দ বক্তৃতা' দানের অন্ত নির্বাচিত হইয়াছেন। তিনি স্বাধীন ভারতে সাংবাদিকতা সম্বন্ধে বক্তৃতা করিবেন। সাধনবার্ স্থার্মি ৩০ বংসর সাংবাদিকতার সহিত সংশিষ্ট আছেন। তিনি প্রথম জীবনে বিপ্লববাদী ছিলেন ও সমগ্র জীবন কংগ্রেসের সেবা করিয়া দেশকে মুক্তির পথে জাগাইয়া দিরাছেন। তাঁহার এই সন্মান প্রাপ্তিতে দেশবাসী সকলেই আনন্দিত হইবেন।

মেদিনীপুর বস্তা-

মেদিনীপুর কেলার তমলুক মহকুমার কাঁসাই নদীর শাখা থেরাই নদীর জল পর পর বর্জিত হওরার মরনা থানার ৮৪ থানি গ্রামের মধ্যে ৫৫ খানি গ্রাম গত ১৪ই জুন হইতে জলমগ্র হইরাছে— তাহার ফলে প্রায় ৮০ হাজার একর জমী চাবের অহপর্ক্ত হইরা গিরাছে। ঐ অঞ্চলের ৫০ হাজার অধিবাসী বিপন্ন হইরাছে। নানা স্থানে এইরূপ দৈব-ছ্বিপাক আজ পশ্চিম বাংলাকে ধ্বংস করিতেছে। কি ভাবে ঐ অঞ্চলের অধিবাসীদের রক্ষা করা যাইবে, তাহা চিন্তার অতীত।

৬ কর জীপরিমল রায়—

ধ্যাতনামা শিক্ষাত্রতী ও কোবিদ ভক্টর শ্রীপরিমল রায় সম্প্রতি পশ্চিম বলের ডিরেক্টর অব পাবলিক



ডাঃ পরিমল রার

ইনস্টাকসন (শিক্ষা অধিকর্তা) নিযুক্ত হইরাছেন জানিরা আমরা আনন্দিত হইলাম। মৈদনসিংহ সহরে জন্মগ্রহণ করিয়া ডিনি ১৯১৭ সালে ম্যাট্রক ও ১৯২৩ সালে অর্থ- নীডিতে এম-এ পাশ করেন। ঢাকা বিশ্ববিভালরে ৬
বংসর অধ্যাপনার পর তিনি ১৯২৯ ইইতে ১৯৩২ পর্যান্ত
লগুনে অর্থ-নীতি শিক্ষা করেন ও তথার পি-এচ্ডি উপাধি পান। ১৯৩৬ সালে তিনি কলিকাতার
গভর্গমেন্ট কমার্সিয়াল ইনিষ্টিটিউটের অধ্যক্ষ ও পরে
ঢাকা ইন্টারমিডিয়েট কলেল, রুফনগর কলেল ও
হুগলী কলেলের অধ্যক্ষ ইইয়াছিলেন। ১৯৪৪-৪৫ সালে
তিনি ভারত সরকারের প্রচার বিভাগে কাল করিয়াছিলেন। ঢাকার তিনি বিশ্ববিভালরের সমাল সেবা ও
পল্লীমলল সমিতির প্রাণস্বরূপ ছিলেন। ১৯৪৯ সালে
তিনি সম্মিলিত জাতিপুঞ্জের দপ্তরে অর্ছ বিভাগের অর্থনীতিক উপলেষ্টা নিযুক্ত হইয়া তঁথার গমন করেন ও
সেখানে কাল শেব হইবার পূর্বেই নৃতন পদ পাইয়া
সম্প্রতি কলিকাতার ফিরিয়া আসিয়াছেন। আমরা তাঁহার
কর্মমর স্থলিবলীবন ও উত্তরোত্তর উন্নতি কামনা করি।

স্থামী সহজানক্ষ সরস্বতী-

বিহারের থাতনামা কংগ্রেসনেতা স্থামী সহজানন্দ
সরস্বতী গত ২৬শে জুন মজঃফরপুরে পরিণত বরসে
পরলোকগমন করিয়াছেন। তিনি যৌবনে সন্মাস গ্রহণ
করিয়া তপত্যা করিতে বান নাই—তিনি দেশের জনগণের
ছঃথছ্র্দ্রশা দেখিরা গত প্রায় ৫০ বৎসর কাল সেই
ছঃথছ্র্দ্রশা দ্র করিবার আন্দোলন পরিচালিত করিয়া
ছিলেন। ফ্রক সম্প্রদারের মধ্যে স্বাস্থ্য, শিক্ষা ও
স্থনীতি প্রচারেই তিনি জীবনের অধিক সমন্ন অভিবাহিও
করিয়া পিয়াছেন। প্রয়োজনের সমন্ন তিনি রাজনীতির
আশ্রর গ্রহণ করিয়াছেন বটে, কিছু সমাজ-সংস্থার ও
অর্থনীতিক আন্দোলনেই তাঁহার অধিক আগ্রহ দেখা
গিয়াছে। তাঁহার মত নিংবার্থ দেশপ্রেমিকের সংখ্যা
খুবই কম।

শরলোকে ডাঃ শঞানন নিয়োগী-

খ্যাতনামা বৈজ্ঞানিক ও শিক্ষাৱতী কলিকাতা খ্যাম-বাজারছ মহারাজা মনীক্ষচক্র কলেজের অধ্যক্ষ ডক্টর পঞ্চানন নিরোগী গত ২২শে জ্যৈষ্ঠ ৬৭ বংসর বর্ত্তে পরলোকগমন করিয়াছেন। তিনি রাজসাহী কলেজে ১৪ বংসর ও কলিকাতা প্রেসিডেজি কলেজে ১৭ বংসর রসায়ন বিভাগের অধ্যাপক ছিলেন। হুগলী জেলার ছোরা গ্রাহন ভাহার জন্ম হর। তিনি স্থবকাও লেখক ছিলেন। ১৯৪০ সালে পাটনায় ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসে তিনি রসায়ন বিভাগের সভাগতি হইয়াছিলেন। ক্ববিবিভার প্রতি তাঁহার বিশেষ আকর্ষণ ছিল। ভাষবাজারে গৃহ নির্মাণ করিয়া বাস করার সময় তিনি সহর্জনীতে বাগান করিয়া প্রত্যহ তাহার দেখা-শুনা করিতেন।

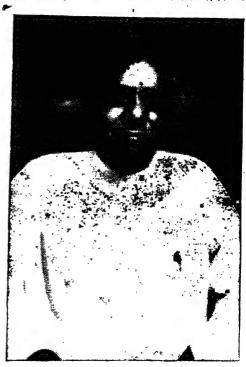
কোরিয়া-যুক্ত ও ভারভবর্ষ-

এডদিন ধরিরা ভারতবর্ষের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত জুহুরলাল त्नश्क विनन्ना व्यानिवाद्यन त्य, शृथिवीत वृद्यमान क्यांकित्वत्र কোন দলে ভিনি যোগদান করিবেন না, নিরপেক থাকিবেন। কিন্তু কোঁরিয়ার যুদ্ধ গত ২ংশে জুন আরম্ভ रहेरा दे पार्थ (भन य शिक्ष वासितिकांत मरन वांशमान করিলেন। ইহার তাৎপর্ব্য ভারতবাদী বুঝিল না। পৃথিবীতে একচ্ছত্ৰ প্ৰভূষ লাভের আশায় আমেরিকা যুদ্ধে নামিয়াছে। ক্য়ানিষ্ট ভয়ে ভীত বুটেন, ফ্রান্স,ডাচ প্রভৃতিও আমেরিকার দলে যোগ দিয়াছে। কিন্তু ভারতবর্ষের সহিত এই যুদ্ধের সম্পর্ক কোপায় এবং কি জক্ত ভারত এই যুদ্ধে আমেরিকার পক্ষ সমর্থন ক্রবিল তাহা কোন ভারতবাসীই ব্ৰিতে পাৰে নাই। বুদ্ধ করিবেন না বলিয়া বে পণ্ডিতজী পাকিন্তানের সহিত আপোষের জন্ত এত লালায়িত, সেই পণ্ডিতলী আৰু দক্ষিণ কোরিবাবাসীর ছ:৫৭ বিগলিত হইরা খাদর্শচ্যত কেন হইলেন, ভিনি তাঁহার বির্তিতে তাহা ^{ভামাদিগকে ব্ঝাইতে পারেন নাই। আজ যদি পৃথিবীর} 🕫 🕅 য় বৃদ্ধ আমিত হয় ও সে অস্ত ভারতে যুদ্ধের কেন্দ্র গ্রাপিত হর, তবে সে জক্ত ভারতবাসী সকলের হুর্দ্দশার শিশা থাকিবে না। পশুতজী মন্ত্রীর আসনে বসিয়া বোধ া সে কথা ভূলিয়া গিয়াছেন।

প্রাম-সংগ্রহ্ম কার্হ্যের আদর্শ—

শ্রীপঞ্চানন চোংদার কলিকাতার খ্যাতনামা ধনী বিসায়ী। তাঁহার বাড়ী হাওড়া জেলার আমতা থানার ভর্তাত বড়দা জামে। তিনি তাঁহার নিজ গ্রাম ও পার্যবর্তী ত গ্রামে অনেকগুলি জনহিতকর প্রতিষ্ঠান গঠন করিয়া ভাষিবানীদের বিশেষভাবে উপকৃত করিয়াছেন। তাঁর অর্থনাহাব্যে ঐ অঞ্চলে করেকটি বনিয়াদি বিভালয়, িশিকা বিভালয় ও মধ্য ইংরাজি বিভালয় স্থাপিত হইবাছে।

ঐ সকল বিভালয়ে বছ ছাত্র-ছাত্রী বিনা বেভনে শিক্ষা লাভ করে। তাহা ছাড়া তিনি ঐ অঞ্চলের ক্ষেক্টি উচ্চ ইংরাজি বিভালয়ের পরিচালক সমিতিরও সদক্ষ থাকিরা সেই সকল বিভালয়ের উন্নতির ব্যবস্থা করিতেছেন। তিনি তাঁহার নিজ গ্রাম বড়দায় এবং বড়দার ক্ষেক্ষ দাইল দ্বে অবস্থিত রসপুর গ্রামে দাতব্য চিকিৎসালয় প্রতিষ্ঠা



विशकानन कारमात्र

করিয়াছেন। আমতায় 'রামসদম কলেল' তাঁহার সর্বশ্রেষ্ঠ কীর্ত্তি। গ্রামের মধ্যে দামোদর নদের তীরে কলেজ স্থাপন করিয়া তিনি ঐ অঞ্চলে উচ্চ শিক্ষা বিভারের যে সাহায্য করিয়াছেন, তাহা অসাধারণ। ঐ কলেজের সংলগ্ন ছাত্রাবাসে থাকিয়া বহু ছাত্র অতি অল্প ব্যয়ে শিক্ষা-লাভ করিবার স্থবোগ পাইদ্বাছে। পঞ্চাননবাবুর এই গ্রাম-সেবার আদর্শ দেশের সর্ব্বত্ত অন্তকরণ হওরার যোগ্য।

দেৰেজমোহন ভট্টাচাৰ্য্য-

শেদিনীপুর ঝাড়গ্রামের দেবেন্দ্রমোহন ভট্টাচার্ব্য মহাশম সম্প্রতি ৬১ বংসর বয়সে সহসা পরলোক গমন করিয়াছেন। তিনি ঝাড়গ্রামের রাজার ম্যানেজার ছিলেন। গত ২১ বংসর কাল তিনি ঞ পদে নিযুক্ত গাকিষা রাজ্যের সর্বাবিধ উরতি বিধান করেন।
রাজার কাজের সহিত তিনি বহু বৎসর মেদিনীপুর জেলাবোর্জের চেয়ারম্যান ও ৪ বৎসর মেদিনীপুর মিউনিসিপালিচীর চেয়ারম্যানের কাজ করিয়াছিলেন। তাঁহার চেটায়
ও রাজার অর্থে মেদিনীপুরে বিভাসাগর হল ও বীরসিংহে
বিভাসাগর শ্বতি মন্দির নির্দ্ধিত হইয়াছে এবং বহীয় সাহিত্য
পরিবদে 'ঝাড়গ্রাম-রাজগ্রহ্মালা তহবিল' প্রতিষ্ঠিত হইয়া
বহু গ্রন্থ প্রকাশের ব্যবস্থা হইয়াছে। ঝাড়গ্রাম রাজের
অর্থে মেদিনীপুরে টেডিয়াম, মেটার্নিটি হোম,হোমিওপাধিক
কলেজ প্রতিষ্ঠায়ও তাঁহারই কৃতিত্ব ছিল। ঝাড়গ্রামে
দাতব্য চিকিৎসালয়, বালকদের উচ্চ বিভালয়, বালিকাদের
উচ্চ বিভালয়, বানী ভবন, কৃষি কলেজ, হিন্দুমিশন, গোড়ীয়
ঘঠ, সারদা বিভাপীঠ প্রভৃতি প্রতিষ্ঠা। করিয়া ঝাড়গ্রামকে
তিনি নবজীবন দান করিয়াছেন।



পশ্চিমবজের মৃথ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র রার—বারাকপুর গান্ধীখাটে
কুন্ধরোপণ করিতেছেন কটো—শ্বীপ্রভাতকুমার দেব
(পশ্চিমবক্ষ পদ্মীমকল সমিভির সৌক্ষেত্র)

শ্রীহেমন্তকুমার বত্ন-

উত্তর কলিকাতার থ্যাতনামা কংগ্রেসকর্মী ও পশ্চিমবন্ধ ব্যবস্থা পরিষদের কংগ্রেস মুলের সম্পাদক শ্রীহেমস্ক্রমার বস্থ সম্প্রতি কংগ্রেসের সহিত সকল স্পর্ক ত্যাগ করিয়াছেন। তিনি এক বিবৃতি প্রকাশ করিয়া লানাইয়াছেন যে কংগ্রেস এখন আর জনগণের প্রতিষ্ঠান নাই—কংগ্রেস তাহার আহর্শ—কৃষক-মলছর-প্রজা-রাজ প্রতিষ্ঠা চাহে না। কাজেই এখন আর কংগ্রেসের সহিত একযোগে কাল করা যার না। মাছ্র্য যখন আর ও বন্তের জভাবে বিপন্ন, তখন দেশের প্রধানমন্ত্রী ল'কেল্সক রক্ষা করিতে তৎপর—এই বিসদৃশ ব্যাপার সমর্থন করিতে না গারিরাই তিনি কংগ্রেস ত্যাগ করিতে বাধ্য হইরাছেন। হেমন্তবাব্ গত ৩০ বৎসের কাল একাল্প ভাবে নিষ্ঠার সহিত দেশসেরা করিরাছেন। তাঁহার পদত্যাগে দেশবাসী মাত্রই চিন্তিত হইবেন। আশা করি, ইহার পর কংগ্রেস— নেতাদের চোথ খুলিবে ও তাঁহারা নিজেদের ঠিকপথে লইয়া ঘাইবার চেন্তা করিবেন।

পাকতুনীভান আক্ষোলন—

ভারতের উত্তর পশ্চিম সীমান্তের নেতা খ্যাতনামা ইপির ফকিরের নেতৃত্বে ওয়াজিরিন্তানে পাকতুনীন্তান প্রতিষ্ঠার আন্দোলন ক্রমেই বর্দ্ধিত হইতোছে। ওয়াজিরী, মাসদ, বিঠানী ও ডাওয়ার প্রভৃতি পার্বত্য জাতিদের নেতারা এই আন্দোলন পরিচালনা করিতেছেন। সীমান্ত নেভারা এ বিষয়ে আলোচনার জন্ত কাবুলে বাইয়া আফগান গভর্ণ-মেণ্টের সাহায্য লাভ করিরাছেন। সীমান্তে পাকজুনীস্থান श्राणिए हरेल लिक्न-लाकिकान-दाका दका कहा कहिन হইবে বলিয়া পশ্চিম পাকিন্তান সরকার এ বিষয়ে বুটেন ও আমেরিকার শরণ দইয়াছিলেন। বুটেন ও আমেরিকা একবোগে আফগানিন্তানকে পাকতুনীন্তান আনোলন সমর্থন করিতে নিষেধ করিয়াছিলেন—কিছ আফগানিভান তাহাতে সম্বত হন নাই। পাঠানদের দাবী সম্পিত ন হওয়া পর্যন্ত আফগানিতান পাকতুনীতান প্রতিগার चात्सानन ममर्थन कतिरातन। भीमाञ्च-मम्बा स्म अर्थ वर्खमात्न हेन-मार्किन मनत्न हिन्तिक क्षित्रा कुनिवाह ।





হুধাংগুলেখর চটোপাধার

ভেষ্ট ক্রিকেট 🐒

ওমেষ্ট ইণ্ডিক : ৩২৬ ও ৪২৫ (৬ উই: ডিক্লেয়ার্ড) ইংলক : ১৫১ ও ২৭৪

ইংলগুর বিখ্যাত লর্ডসমাঠে অহুটিত ইংলগু বনাম
ওয়েষ্ট ইণ্ডিকের দিতীর টেপ্টম্যাচে ওয়েষ্ট ইণ্ডিক ৩২৬
রানে ইংলগুকে পরাজিত করেছে। ইংলগুর মাটিতে
ওয়েষ্ট ইণ্ডিক এই প্রথম টেপ্ট ম্যাচে জয়ী হ'ল। ১৯২৮
সাল থেকে ইংলগু বনাম ওয়েষ্ট ইণ্ডিক দলের মধ্যে টেপ্ট
ম্যাচ থেলা হুকে হয়েছে। এ টেপ্ট সিরিকের আগে
পর্যান্ত ৬টি টেপ্ট সিরিকে উভয় দল যোগদান করেছে।
ইংলগু 'রাবার' পেয়েছে ৩ বার, ওয়েষ্ট ইণ্ডিক ১ বার।
২টি টেপ্ট সিরিক অমীশাংসিভভাবে শেষ হয়েছে, উভয়
দল সমান সংখ্যক টেপ্ট ম্যাচ জয়ী হওয়ার জজে। এই
৬টি টেপ্ট সিরিকে মোট ২১টা টেপ্ট ম্যাচ হয়। ইংলগু ৮টা
টেপ্ট ম্যাচে জয়ী হয়; অপর দিকে ওয়েষ্ট ইণ্ডিক পাঁচটায়।

আলোচ্য বৎসরের টেপ্ট সিরিজের প্রথম টেপ্ট থেলার ইংলও ২০২ রানে ওরেপ্ট ইণ্ডিজ দলকে হারিরে দের। লর্ডসের বিভীর টেপ্টে প্রথম ব্যাটিং ক'রে ওরেপ্ট ইণ্ডিজ প্রথম দিনের থেলার ৭ উইকেটে ৩২০ রান তুলে। উল্লেখবোগ্য রান, এ রে ১০০, উইক্স ৩০, ওরেল ৫২।

षिতীয় দিনে ৩২৬ রানে ওয়েষ্ঠ ইণ্ডিক দলের প্রথম
ইনিংস শেষ হয়। ইংলণ্ডের কেছিনস ১১৬ রানে ওয়েষ্ঠ
ইণ্ডিক্সের ৫টা উইকেট পান; বেছসার পান ৩টে ৩০
রানে। থেলার বিতীয় দিনে ইংলণ্ডের প্রথম ইনিংস নাত্র
১৫১ রানে শেষ হয়। রামাধীন ৪০ ওভার বলে ২৭টা
মেডেন নিয়ে ৬৬ রানে ৫টা উইকেট পান। ভ্যালেনটাইন
পান ৪টে; ৪৫ ওভার বলে ২৮টা মেডেন নিয়ে ৪৮ রান

দিরে। ওয়েট ইণ্ডিজ ইংলুগুকে 'ফলোজন' না করিয়ে দিতীর ইনিংসের খেলা স্তব্ধ করে।

থেলার তৃতীয় দিনে থেলার নির্দ্ধারিত সময়ের মধ্যে ওয়েই ইণ্ডিজের ২য় ইনিংসে ৫ উইকেটে ৩৮৬ রান উঠে। উইকস ৬০ রান করে রান আউট হ'ন। ওয়ালকট এবং গোমেজ মথাক্রমে ১১৪ এবং ৫৭ রান ক'রে নট আউট থাকেন। ওয়েই ইণ্ডিজ ৫৬১ রানে অগ্রগামী থাকে। জেছিনস ৪টা উইকেট পান।

চতুর্থ দিনে ৬ উইকেটে ৪২৫ রান উঠলে ওরেই ইণ্ডিজ্ব ইনিংস ডিক্লেয়ার্ড করে। ওয়ালকট ১৬৮ রান ক'রে নট আউট থাকেন। গোমেল १০ রানে আউট হ'ন। ওয়েই ইণ্ডিজের থেকে ৩০০ রান পিছনে থেকে ইংলগু ২য় ইনিংসের থেলা আরম্ভ করে এবং চতুর্থ দিনের নির্দ্ধারিত সময় পর্যান্ত থেলে ইংলগু ৪ উইকেটে ২১৮ রান করে। ওয়াসক্রক ১১৪ রাণ ক'রে নট আউট থাকেন। থেলা জ্ব করতে ইংলগুর তথন ৩৮২ রান দরকার। হাতে ৬টা উইকেট।

থেলার পঞ্চম দিনে লাঞ্চের সময় ইংলণ্ডের ৯টা উইকেট পড়ে যায়। ২৭৪ রানে ইংলণ্ডের ছিতীয় ইনিংস শেব হ'লে ওয়েই ইণ্ডিজ ৩২৬ রানে জ্বরী হয়। এথানে লক্ষ্য করার বিবন্ধ, ওয়েই ইণ্ডিজ প্রথম ইনিংসে যে রান ভূলেছিল সেই রানের ব্যবধানে থেলায় জ্বরী হয়েছে। ইংলণ্ডের ছটো ইনিংসের রান বোগ করলে দেখা যায় ওয়েই ইণ্ডিজের ছিতীয় ইনিংসে ৬ উইকেটের ৪২৫ রানের সমান হয়েছে। এবারও ওয়েই ইণ্ডিজের রামাধীন বোলিংরে সাক্ষ্যলাভ করেন ৬টা উইকেট পেরে ৮৬ রান দিরে। ছুটো ইনিংস জড়িরে রামাধীন ১১৫ ওজার কল

দিরে १•টা মেডেন পান আর ১৫২ রান দিরে ১১ জন ধেলোরাড়কে আউট করেন। অপরদিকে ওয়েই ইগুজের ভ্যালেনটাইন উইকেট পান ৭টা, ১১৬ ওভার বল দিরে ৭৫টা মেডেন নিয়ে এবং বিপক্ষ দলকে ১২৭ রান করতে দিয়ে।

উইম্বলডন ভেনিস গ

উইখলতন লন্ টেনিস প্রতিবোগিতার ৬৪তম বাৎসরিক অষ্ঠান সম্প্রতি প্রবল প্রতিবন্ধিতার মধ্যে শেব হয়ে গেল। প্রবাপর বৎসরের মত এ বছরের প্রতিবোগিতার আমেরিকান টেনিস থেলোয়াড়রা আমেরিকার প্রাধান্ত অক্ষু রেথেছেন। গত বছর প্রতিবোগিতার ৫টি অষ্ঠানের মধ্যে আমেরিকা বথাক্রমে পুরুষ এবং মেরেদের সিললস এবং ডবলস—এই চারটিতে জয়ী হয়। একমাত্র মিক্ষড ডবলসে জয়ী হয় দক্ষিণ আফ্রিকা। এর মধ্যে মেরেছের সিললস, পুরুষদের ডবলস এবং মেরেদের ডবলসের কাইনালে আমেরিকান থেলোয়াড়রা নিজ দেশের থেলোয়াড়রের সঙ্গে প্রতিবন্ধিতা করে। অর্থাৎ ফাইনাল খেলোয়াড়রের সঙ্গে প্রতিবন্ধিতা করে। অর্থাৎ ফাইনাল খেলাখ্যাড়নের সঙ্গে প্রতিবিদ্যাতা করে। অর্থাৎ ফাইনাল খেলাখ্যাড়না দিট্রেছিলো 'All American Affairs.'

ফাইনাল খেলার ফলাফল ৪

পুরুষদের সিলনসে বাজ পেটি ৬-১, ৮-১ •, ৬-২, ৬-৩ সেটে ফ্রান্ক সেজম্যানকে (অষ্ট্রেলিরা) পরাজিত করেন।

পেট গত বছর ক্রেক চ্যাম্পিয়ানসীপ লাভ করেন।
ইতিপূর্ব্বে তিনি কথনও উইখলডন বিজয়ী হ'ন নি। ১৯৪৭
সালের সেনি-ফাইনালে এবং ১৯৪৮ সালের কোয়ার্চার
ফাইনালে উঠেছিলেন। এবার কাইনাল খেলার খেবে
বাজ পেটকে দৈহিক অবসালে একেবারে ভেলে পড়তে
দেখা বার।

মহিলাদের সিদলসে মিদ্ লুই ভ্রাউ (আমেরিকা)

সিক্ষাস বিজয়িনী হয়েছেন। ইতিপূর্বে মিসেস হেলেন উইলডস মৃডী পর্যায়ক্রনে ভিনবার (১৯২৭-৩০ সাল)— উইবলডন সিক্ষাস বিজয়িনী হয়েছিলেন।

মহিলাদের সিক্লসে পর্যায়ক্তমে ৫ বার (১৯৭৯-১৯২৩)
ক্রলাভ ক'রে উপয়ুপরি বেশী বার ক্র্যলাভের রেকর্ড
করেছেন স্ক্রানী লেংলেন।

পুক্রদের ভবলসে জন ত্রম্ উইচ এবং এছিয়ান কুইট (আট্রেলিয়া) ৭-৫, ৩-৬, ৬-৩, ৬-২, ৩-৬ সেটে জিওফ আউন এবং বিল সিড্ওরেলকে (আট্রেলিয়া) পরাজিত করেন।

মহিলাদের ডবলসে মিস পুই বাউ এবং মিসেস মার্গারেট ডিউপন্ট (আমেরিকা) ৬-৪, ৫-৭, ৬-১ সেটে মিস শার্লি ক্রাই এবং মিস ডোরিস হার্ডকে (আমেরিকা) পরাজিত করেন।

মিক্সড ভবলসে এরিক ষ্টারগেস (ম: আফ্রিকা) এবং মিস সুইস রাউ (আমেরিকা) ১১-৯, ১-৬, ৬-৪ সেটে জিওফ রাউন (অফ্রেলিরা) এবং মিসেস প্যাট্রীকিয়া টডকে (আমেরিকা) পরাজিত করেন।

আমেরিকার মিস সৃষ্ট ব্রাউ মহিলাদের সিজলস, ডবলস এবং মিক্সড ডবলস এই তিনটি বিষয়ে জয়লাভ ক'রে বিশেষ ফুভিজের পরিচয় দেন। ১৯৪৮ সালেও মিস্ ব্রাউ তিনটি বিষয়ে জয়লাভ করেন। গত বছর করেন সিজলস এবং ডবলসে, ডিউপন্টের সঙ্গে।

এই প্রতিবোগিতার ভারতীয় টেনিস খেলোয়াড়গণ বোগদান করেছিলেন। ভারতীয় এক নম্বর টেনিস খেলোয়াড় এবং এশিয়ান লন্ টেনিস সিক্লস বিজয়ী দিলীপ বহু প্রতিবোগিতার 'সিডেড' খেলোয়াড়দের নামের জনপর্যায় ভালিকার পুরুষদের সিক্লসে পঞ্চলশ স্থান লাভ করেছিলেন। এর অর্থ, এ বছরের পৃথিবীয় শ্রেট ২০ জন টেনিস খেলোয়াড়দের মধ্যে তাঁর স্থান পঞ্চদশ। ভারতীয় এবং বিদেশী টেনিস মহল আশা করেছিলেন দিলীপ বহু প্রতিবোগিতার বিশেষ সাফল্যলাভ করতে পারবেন। আমাদের তুর্ভাগ্য বে, তিনি প্রভিবোণিতার মাত্র করেজিন আরোভ হরে

করেই। এ অবস্থায় তিনি বে বিশেষ কিছু করতে সক্ষম ग्रायन ना जा जारन त्थरक जकरनरे अष्ट्रमान क्रवरक त्थरब-ছিলেন। প্রথম রাউত্তে বিলীপ বস্থ ৬-১, ১১-৯, ৬-১ দেটে অক্সফোর্ড বিশ্ববিশ্বালয়ের ক্যাপটেন ফ্রান্থ মসট্রীলিকে (स्नामात्रिका) পরাজিত করেন। বিতীয় রাউণ্ডের থেলায় সাওলকে (নেদারল্যাও) প্রথম সেটে ৬-৪ গেমে পরাজিত করেন কিন্তু বিতীয় সেটের খেলায় যখন তাঁর প্রতিষ্দী ৫-৪ গেমে অগ্রগামী হ'ন তথন শারিরীক তুর্বলতার ক্রন্তে খেলা থেকে অবসর নেন। অক্তান্ত ভারতীয় খেলোয়াড়দের माश नात्रस्थनांव छठीय ब्रांडिए ७-४, ৮-७, ७-० मार्ट ফ্রেড কোভালেছির (আমেরিকা) কাছে পরাজিত হ'ন। জোর প্রভিযোগিতা ক'রে নরেশকুমার তৃতীয় রাউত্তে পরাজিত হ'ন আমেরিকান 'সিডেড' থেলোযাড় গার্ডনার म्नारात को एक ७-२, ७-४ व्यवः ১२-১ मा ए । जन्मरम দিলীপ বস্থ শেব পর্যান্ত দৈহিক তর্মলতার জন্তে যোগদান করেন নি। একমাত্র সৌজজের থাতিরে তাঁর সহযোগিনী মহিলা থেলোয়াডের নিরাশার কথা স্বরণ ক'রে তিনি মিশ্রভ ডবলসে যোগদান ক'রে পরাজ্য বরণ করেন।

পুক্ষদের ভবলসের বিতীয় রাউণ্ডে নরেশকুমার এবং নবেজনাথ অভিজ্ঞ এবং দক্ষ থেলোযাড় ব্রাউন এবং বিল সিড ওয়লের (অট্টেলিরান) কাছে পরাজিত হ'ন। মিক্সড ডবলসের চতুর্থ রাউণ্ড পর্যান্ত খেলবার যোগ্যতা লাভ করেছিলেন ভারতীয় থেলোয়াড় স্থমন্ত মিল্ল এবং মিসেন্ গার্গনি। শেষ পর্যান্ত পরাজয় বরণ করলেও প্রভিষ্ণী থলোযাড়দের সলে তাঁরা যে মনোবল নিয়ে থেলেছিলেন চা খবই প্রশংসনীয়।

, डेवल लीश \$

ক্যালকটি ফুটবললীগের বিভিন্ন বিভাগের থেলা যথারীতি । প্রথম বিভাগের থেলার এক সমর লীগ চ্যাল্পিয়ান
শৈ নিয়ে জাের প্রতিবােগিতা চলেছিল ইস্টবেলল, মােহনশান এবং রাজহান এই তিন দলের মধ্যে। গত বছরের

গিচ্যাল্পিয়ান ইস্টবেলল ক্লাব এখনও লীগের থেলায়

বিজয় অবস্থায় প্রথম স্থান অধিকার ক'রে আছে।

শ্বৈকল ক্লাবের থেকে > পরেণ্ট কম পেরে বিতীয় স্থানে
ছে মােহনবাগান। রাজহান আছে তৃতীর স্থানে,

হনবাগানের থেকে ৪ পরেণ্টের ব্যবধানে। এরিয়ান্সের
প্রথমা দ্রু ক'রে এবং বি এন রেলদলের কাছে ২-০
লি হেরে গিরে রাজহান লীগ চ্যাল্পিয়ানসীপের পালা
কে অনেক নীচে নেমে পেছে। এখন মােহনবাগান

ইস্টবেলল দলের মধ্যে লীগ চ্যাল্পিয়ানসীপের শেষ
বিত্তি হবে। প্রথম বিভাগের লীগের ফির্ডি থেলায়

বিক্রমন্ত একটা মৃন্যবান পরেণ্ট হারিয়েছে ক্যালকটি।

সম্বার্থীর স্থান প্রথম হারিয়েছে ক্যালকটি।

সম্বার্থীর স্থাবান পরেণ্ট হারিয়েছে ক্যালকটি।

স্থাবান স্থাবান পরেণ্ট হারিয়েছে ক্যালকটি।

ক্যালকটোর বিপক্ষে বারা করোরার্ডদলে থেলেছিলেন তাঁদের নিষেই বি এন আর দলের বিপক্ষে ফিরতি খেলার हेळे. (तक्न मन a-• (शांक किर्फ्डिमा) क्लिके वास्टि **শেষ্টার হাফ এবং শেষট হাফ ব্যাকে যে সব খেলোরাড়** নেমেছিলেন ক্যালকাটার মত ছুর্মল দলের বিপক্ষে খেলবার বোগ্যতা তাঁদের যথেষ্ট ছিল। এখানে উল্লেখ-যোগ্য, সে সময় বি এন আর দলের থেকে ক্যালকাটা व्यत्नक शर्याकेंद्र नीरह हिल। वे मिन (थलांद्र स्थर ইস্টবেদল দলের একদল সমর্থক ঐ দিনের খেলোরাড নির্বাচন সম্পর্কে ক্লাবের কর্তুপক্ষের বিক্লছে জোর বিক্লোভ প্রদর্শন করেন। স্পোর্টিং • ইউনিয়নের সঙ্গে থেলার মোহনবাগান দলেরও ক্ষেক্তন নামকরা খেলোরাড र्यार्ग (मग्रनि। (थना ए इत्यक्तिला। के हु मितन থেলোৱাড় নির্বাচন ব্যাপারে আমরা চুই দলের ক্লাব কর্ত্তপক্ষের কোন অবিবেচক জ্ঞানের পরিচয় পাই• না। থেলোরাড়রা মাহুষ; যন্ত্রপাতি এবং কলকজার বেখানে নিয়মিত পূর্ণ বিশ্রাম দরকার সেখানে মাছব थिलाबाएएक य विभाग श्रीकन अक्षा वना वाहना মাত্র। এর উপর থেলোয়াড়দের হংধ-অহণ, থেলার শারীরিক আঘাতের সম্ভাবনা আছে এবং একটানা খেলার দক্রণ দৈহিক অবসাদ আসা খুবই স্বাভাবিক। থেলোরাড় এবং দলের স্বার্থের থাভিরে সেধানে ভাদের বিভাষ প্রয়োজন এবং ভার একমাত্র স্থযোগ পাওরা যার তর্মক দলের সবে খেলার দিনে। তুর্বল দলের সবে খেলার দলের নিয়মিত খেলোযাড়দের এ৪ জনকে বিশ্রাম দিয়ে ভাদের স্থানে নতুন খেলোরাড়দের খেলবার স্থােগ দেওয়ার একটা গঠনমূলক गांधू উत्संध बाह्य। শক্তিশালী দলের বিপক্ষে এবং নামকরা খেলোয়াডাদের সঙ্গে খেলতে খেলতে নতুন খেলোয়াড়রা খেলায় অভিক্রতা সঞ্চর করে: তাদের খেলার কড়তা এবং নারবিক তুর্বলতা দুর হয়ে সাহস বুদ্ধি পায়। বাংলা দেশের ফটবল খেলার স্ট্রাণ্ডার্ড নানা কারণে নেমে গেছে। কিছ অধ্যাতনামা বালালী খেলোয়াড বারা গঠিত কোন কোন কুটবল দল বে অলু ইণ্ডিয়া অথবা অলিম্পিক প্রত্যাগত ফুটবল খেলোয়াড়ৰারা গাঁঠিত ফুটবলটীমকে যথেষ্ট বেগ দিয়ে খেলা ড বা অমলাভ করতে পারে তার প্রমাণ এবারেম লীগের ধেলাতেও পাওয়া গেছে। লীগের ফিরতি ধেলার স্পোর্টিং ইউনিয়ন ক্লাব ১-০ গোলে মহমেডান স্পোর্টিংকে হারিরেছে। এ অপ্রত্যাশিতভাবে গোল দিয়ে জয়লাভ নয়, স্পোর্টিং ইউনিয়নকে রীতিমত জোর দিয়ে খেলে ছু' পরেণ্ট নিতে হরেছে। স্পোর্টিং ইউনিয়ন ২-০ পোলে ই আই রেলম্লকেও পরাজিত করে। এরপর এরিয়াল ক্লাব লীপের ভতীর ভান অধিকারী রাজভানকে লীগের কিলাজি

আর ২-০ গোলে রাজহানকে হারিয়েছে। রাজহানের থেলোরাড়দের নামের ভারত জোড়া থাতির সজে এরিয়ালের থেলোরাড়দের কি ডুলনা চলে! রাজহানের এগারটা থেলোরাড়দের কি ডুলনা চলে! রাজহানের এগারটা থেলোরাড়দের মধ্যে করেকজন অলিম্পিক প্রত্যাগত ভারতীয় ফুটবল দলের নির্বাচিত থেলোরাড় এবং বাকি সকলই ভারতবর্ধের বিভিন্ন ছান থেকে আগত নামকরা থেলোরাড়। কিছু অনেক সমন্ন ছর্কল দলের টামওয়ার্কের কাছে নামকরা থেলোরাড়রাও বে শেব পর্যান্ত দলের জয়লাভে সাহায্য করতে পারে না এরিয়াম্প বেমন গভবার লীগচ্যাম্পিয়ান ইস্টবেজলের থেলায় প্রমাণ করেছে এবার তেমনি করেছে রাজহানকে হারিয়ে। পূর্বে কালীঘাট ক্লাবকে ভারতবর্ধের বিভিন্নহান এমন কি বার্মা মৃত্বুক্ থেকে খেলোরাড় বোগাড় করতে দেখা বেত। এ করেক, বছর কালীঘাট ক্লাব ছানীর বালালী খেলোরাড় নিরে

টীন ক'বে অর্জটেণিগ্রাফ, স্পোর্টিং ইউনিরন, এরিরাজ এবং কালীবাট শক্তিশালী দলের বিপক্ষে বেশ থেলছে।
নীগ চ্যাম্পিরানদীপ না পেলেও সেই দব দলের প্রতি আমাদের অনুষ্ঠ সমর্থন থাকরে, যারা নীগ-দীল্ড পাওরার উগ্র নেশার বাইর থেকে থেলোরাড় আমদানী ক'বে লাতীর আর্থ বলি না দিবে। বাংলা দেশের তরুণ কৃটকা থেলোরাড়রা আন্ত রাক্তনৈতিক এবং সামাজিক অব্যবদার চাপে পড়ে করিফ্ এবং বিপর্যন্ত হলেও লাতীর সন্মানের পরীক্ষাক্ষেত্রে তাদের উপর যে আমরা নির্ভর করতে পারি তার অনেক শুভ লক্ষণই এখনও নির্দ্ধার অবহার হারী ররেছে। আমরা যহি তাদের উপেকা ক'রে চলি, সমগ্র লাতীর মেরুলও ভেলে পড়তে আর বেশী দেরী থাকবে না। কিবরের কাছে আমাদের প্রার্থনা, এবং জনসাধারণের কাছে আবেদন যে, আমাদের মধ্যে শুভ্রুছি এবং জাতীয়তাবেধ লাগ্রত হউক। ১৪. ৭. ৫০

নব-প্রকাশিত পুস্ককাবলী

ৰীপুণ্বীশচন্ত্ৰ ভটাচাৰ্য প্ৰণীত উপস্থান "পতক"—২।• শিলিরকুমার আঠার্যচৌধুরী-সম্পাদিত "বাংলা বর্বলিপি" (১৩৫৭)—২১ বীস্থাংশুকান্ত আচার্য প্রণীত শিকার-কাহিনী "আসামের অঙ্গলে"—৪১ বীশনধর দত্ত প্রণীত রহজোপস্থান "অশোক-বীপে বপন"—২১,

"মহাডেকা শপন"—২১, "মৃত্যু-রহক্তে মোহন"—২১ শ্রীকুণীভূষণ ভটাচার্য্য-অনুদিত "ভারতের জাতি পরিচয়"—৮৮

আহ্বাছ্বা ভয়চাব্য-বন্যত ভাগতের আতি গায়চয় — নত । আমরেক্সবার কেবর্জী প্রাণীত নাট্য-কাব্য "রবীক্স-প্রতিভা"— ১। • বিভোলানার সাহা প্রাণীত কাব্য-গ্রন্থ "বেহলা কাব্য"— ২১ বিষনাৰ চটোপাধ্যার থাণীত উপস্থাস "কথা কও"—৩।
বী মক্ষত্মার শুপ্ত থাণীত "বোগিরাজাধিরাজ শীশীবিশুদানৰ
পরসহংস"—৫

শ্রীনিবেক্রনাথ ওপ্ত প্রণীত উপস্থাস "আজিও বার তারা"— ৩ শ্রীনামিনীকুমার পাল প্রণীত উপস্থাস "মুশান ও কবর"— ২।•

"वाँदिकाव शाम बारव"-२४०

বিমল কর প্রণীত রহজ্ঞোপজ্ঞান "গ্যাসবাণীর"—২।• অমদনমোহন চক্রবর্ত্তী প্রণীত উপজ্ঞান "কলির অর্জুন"—২।•

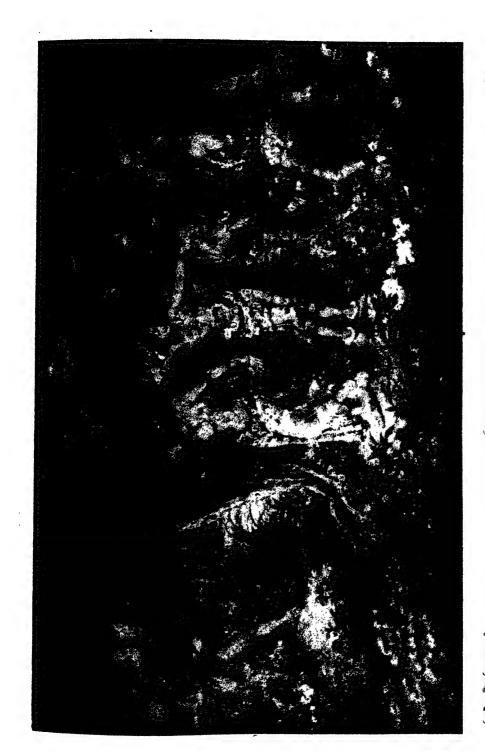
रिष् गाष्ट्रीम (त्रकर्छ— जून-जूनारे ১৯৫0

বৈক্ষৰ কৰি গোৰিন্দ দাদের পদাৰলীর ছু'থানি মধ্র কীত নি গীতি দিছে N 31211 রেকর্ডে অন্ধ্যারক কুক্চল্র তার 'থভিতা' পালা কীত নি এবার সরাপ্ত ক'রেছেন। পাঁচথানি রেকর্ডে পালাটি সম্পূর্ণ ক'লেও প্রত্যেক সানধানি ব্যাংসম্পূর্ণ—শিলীর ভাবমধ্র-কঠে সানগুলি প্রাণ্ধত ক'রে উঠেছে। "তুমি কত দূরে কোন সহল আধারে" ও "কেন আধি ছু'টি ডাকে বারে বারে" N 31212 রেকর্ডে ছু'থানি আধুনিক গান পরিবেশন ক'রেছেন—তা ভাব, ভাবা ও প্রকাশ ভংগীনার নতুনব্রের দাবী করে। শ্রীমতী রুমা দেবীর কঠে ছু'থানি আধুনিক গান N 31214 রেকর্ডে বেশ উপভোগ্য হরেছে। ছু'থানি পরী গীতি N 31216 রেকর্ডে গেরেছেন শিলী চিত্ত রায়। কেড় কোটি ঘর ভাঙা বাঙালির মর্ম্বন্ধ মর্মক্ষা মূর্ত ছ'রেছে। ছিলী গারের ছু'থানি ভাতমুনক গান N 31197 রেকর্ডে ও বিরুলা সেনের ছু'থানি ভাতমাইলা গান N 31208 রেক্ডে এবার প্রচারিত হ'রেছে। ভারতথ্যাত ক্লারিওবেটবাদক রাজেন সরকার N 31219 রেক্ডে ছু'থানি জনপ্রির ছিলী গানের হুর্বের্ড ক'রে ভুলেছেন।

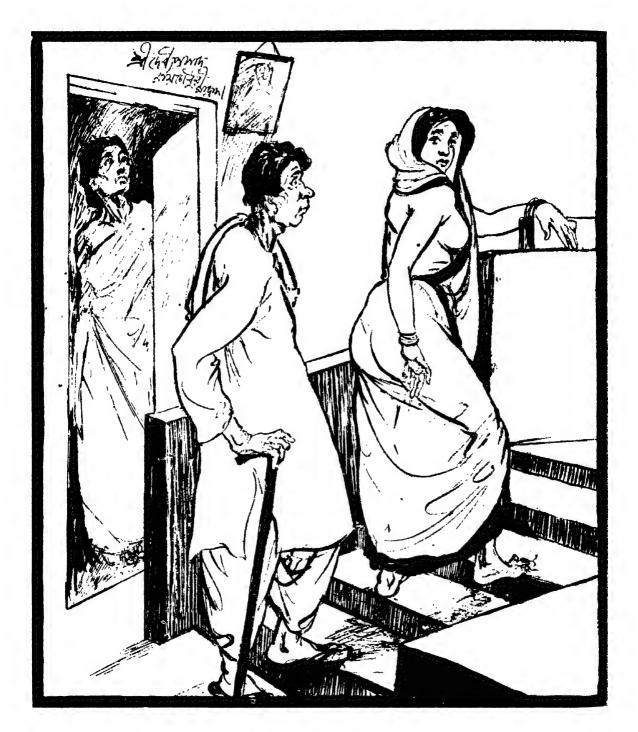
N 31229 শিলী বেছু যক্ত "বুণে বুণে বার চির বঞ্চি" একটি গানে তাবের অভিযান ও বেগনাকে ভূটরে তুলেছেন। অভ গানটিভেও বার্থিক ছাবরের প্রতি সববেগনার শিলীর কঠ ভ'বে উঠেছে। N 31230 কুমারী বাণী যোবাগের একক গালট, অভ বিকে প্রসিদ্ধ শিলী তর্গ কুমানী বাণী যোবাগের একক গালট, অভ বিকে প্রসিদ্ধ শিলী তর্গ কুমানী বাণী বিরুদ্ধ কিন্তুল কুমানী বাণী কিন্তুল "ব্রসাভ" এর ত্র'বাণি ভূনির্বাচিত ও ক্রবির গানকে বাণীর ক্রের ক্রপ বিরেছেন—গান ছুখানির বড তার ক্রের প্রকাশ অনবভ হ্রেছে। N 31233 ভ্রীন গারিকার কঠে ছ'বানি বনোরৰ আধুনিক গান বুর্ত হ'বে উঠেছে—রচনা সভাবে গান ক্রট সমুদ্ধ। N 31234প্রভাভ বিত্র—গারিক ক্রেক্ত নবীন। ভ্রুসিন্ধ গারক ও স্বাচীক পরিচালক ক্রমার বিব্রের হার সংযোগে সমুদ্ধ ছ'বানি গান শিলী এই রেকর্তে পরিবেশন

क्रान्त्रहन-नाम ब्रुटि ब्रह्मा क'रब्रह्म थाने बात ।

मणापक--- द्योकवीत्रनाथ सूर्वाशाचाय वय-व



[四]一副刘伯班 5四日



বিবাদে সামঞ্জেপ্ত

স্থামী:—বলনুম তো, চুড়ি গড়তে দিয়েছি। তবু বিশ্বাস কর না। তুমি কি ভাব আমি একজন সাধারণ প্রবঞ্চক ?

ন্ত্রী (তৃতীয় পক্ষ): - সাধারণ ! - এমন কথা আমার ভূলেও মনে আসে না।

निह्यी--- शिरमवी अमान ब्राइट रोपुती



915-5069

প্রথম খণ্ড

অষ্টত্রিংশ বর্ষ

তৃতীয় সংখ্যা

সাহিত্যে রূপক ও প্রতীক

অধ্যাপক জীঅমূল্যধন মুখোপাধ্যায় এম-এ, পি-আর-এদ

হিত্য সমালোচনা প্রসঙ্গে আজকাল রূপক ও প্রতীক এই ট কথা প্রায়ই ব্যবহার করা হয়ে থাকে। কাব্যে, টকে এমন কি গল্প-উপস্থাসেও রূপক ও প্রতীকের যোগ দেখতে পাওয়া যায়। এমন কি রূপক ও প্রতীকের তি প্রবণতা সাহিত্যের অক্সতম প্রধান প্রবৃদ্ধি বলে মনে রা বেতে পারে। এ সম্বন্ধে আমাদের ধারণাটা একটু রক্ষার করে নেওয়ার জন্মেই এই প্রবন্ধের অবতারণা।

রূপকের আলোচনাই প্রথমে ধরা যাছে। এ ক্ষেত্রে ন রাথা দরকার যে সংস্কৃতে নাট্য-সাহিত্যের আলোচনা ত্রে যাকে রূপক বলা হয়েছে, আজকাল রূপক বল্তে মরা তা' মনে করি না। সে ক্ষেত্রে রূপক মানে উচ্চতর নীর নাটক, তার আবার গোটা দশেক উপশ্রেণী আছে। লিদাসের 'অভিজ্ঞান শকুস্তলম্'ও রূপক, মৃচ্চকটিকও ক। বোধকরি রক্ষাকে আখ্যায়িকাকে নট-নটীর

সাহায্যে রূপারিত করা হ'ত বলেই রাজা-রাজ্ঞ গৃষ্ঠ-পোবিত, নাট্যশালায় অভিনীত এবং ভরতাদি আচার্য্য-গণের দারা উপদিষ্ট এই সমস্ত উচ্চ শ্রেণীর নাটককে রূপক বলা হ'ত।

সে অর্থে আজকাল ক্লপক কথাটা ব্যবহার করা হরনা।
অলকার শাস্ত্রে যে রূপক অলকারের কথা বলা হয়েছে, যাকে
ইংরেজিতে বলা হয় metaphor, তার সক্লেই সাহিত্যের
এই প্রয়োগটির বিশেষ সম্পর্ক আছে। রূপকের আসল
তাৎপর্য্য হ'ল বিজাতীয় ছটি বস্তর মধ্যে একটা সাদৃশ্য লক্ষ্য
করে তাদের মধ্যে অভেদের আরোপ। যখন কবি বলেন
"ভূমি বে স্থরের আগুন লাগিয়ে দিলে মোর প্রাণে" তখন
তিনি স্কর ও আগুন এই তুই বিভিন্ন বস্তর মধ্যে একটা
সাধারণ ধর্ম লক্ষ্য করেন; আগুনের হোঁয়া লেগে বেমন
তুল পদার্থ উজ্জন হয়ে ওঠে এবং তার কড় সন্তা দশ্ম হ'য়ে

স্থাবের প্রভাবেও কবির অন্তরের জড়তা তেমন করেই
নষ্ট হ'য়ে যায় এবং একটা মহনীয় ভাব ও অহুভূতি
ব অন্তরাত্মাকে অধিকার করে। সাময়িক ভাবে এই
খ্রি কবির কাছে একটা ঘনিষ্ঠ ঐক্যের লক্ষণ কলেই
নীত হয়েছে, তিনি হার আর আগুনকে ভিন্ন করে দেখতে
চ্ছেন না। তিনি এই তৃটি বস্তর মধ্যে অভেদের আরোপ
চ্ছন, হার আর আগুন সমধর্ম। হ'য়ে গেছে, আগুনের
স্থানত ভিনিয়ে দেওয়া যায়, আগুনের মত হারও
থানে ছড়িয়ে যায়।

বাক্যালন্ধার হিসেবে রূপকের ব্যবহার বহু প্রচলিত।

নবল সাহিত্যে আমরা রূপকের ব্যবহার দেখি তা' নয়।

ামাদের সাধারণ কথাবার্ত্তায় পর্যান্ত রূপকের অজ্ঞ্র

ায়োগ দেখতে পাওয়া যায়, আমরা না জেনেই রূপক

লক্ষার সর্বাদা ব্যবহার করি। বড়লোকের টাকার গরম

বখলে যখন আমাদের রাগের জালা ধরে, কিংবা বাক্য
ালে যখন আমরা প্রতিপক্ষকে জ্রুত্তির করি, তখন

গামরা অলক্ষার শাস্ত্র বা ব্যাকরণ না পড়েই রূপকের প্রয়োগ

ারি। মাহাবের ভাষা—এমন কি অশিক্ষিত বর্ববের

গাষাও যে রূপক-বছল, তা' ভাষাবিৎ মাত্রেই স্বীকার

করেন।

তবে বাক্যালকার রূপকের কথা এখানে আমাদের মুখ্য আলোচ্য নর। রূপক বলে বিশিষ্ট এক প্রকারের রচনা আছে, তার লক্ষণাদিই এখানে আমাদের আলোচ্য বিষয়। বস্তুত: রূপক সাহিত্যের অক্তম একটি পদ্ধতি। এই পদ্ধতিতে রচনা অনেক দেশেই হয়েছে, সেকালেও হয়েছে এবং একালেও হয়েছে। সাহিত্যের এই ধারাকে একটা সনাতন ধারা বলা যেতে পারে।

এই পদ্ধতিকে রূপক বলা হয়, কারণ বাক্যালয়ার রূপকের যা তাৎপর্য এরও তাই। অর্থাৎ এর আসল কথা হ'ছে এক বস্তুতে আর এক বস্তুর অভেদ আরোপ। এবং এই আরোপের মূলে আছে সেই একই মনোভাব অর্থাৎ উভয় বস্তুর মধ্যে সাদৃশ্রের উপলব্ধি। রূপক রচনার এই উপল্বি ক্বেলমাত্র একটি বাক্যোগশে সীমাবদ্ধ নয়। এই উপল্বিতেই সমগ্র রচনাটি বিবৃত। বাক্যান্ত্রার কপ্রের পরিধি যদ্ধি ক্রমশং বিস্তুত হয়, তা হলেই

যে এই জাতীয় রচনায় অমুভূতি ও কর্মনার ব্যাপকতা বিশেষভাবে আবশ্রক, শুধু ক্ষণিক একটা সাদৃশ্যের বোধ যথেষ্ট নম্ব। বস্তুতঃ এথানে ওধু একটি বস্তুতে অপর একটি বস্তুর অভেদ সাময়িক ভাবে আরোপ করা হয় না। এথানে একটি বস্তু-জগতে অপর একটি বস্তু-জগতের অভেদ আরোপ করা হয়। এই প্রকারের রচনায় যেমন একটা স্পষ্টির ক্ষমতা আবশুক, তেমনই একটা গভীর অন্তদৃষ্টিরও প্রয়োজন। একটা ভাবের জগৎকে একটা নৃতন বস্তবগৎ शृष्टि करत छोत्र मरक मिलिया मिर्छ हरत, धरे इरहे। खन्न এমন ভাবে থাপ থেয়ে যাবে যে তাদের মধ্যে আর ভেদ থাকবে না, বস্তুজগতের দিকে দৃষ্টিপাত করণেই ভাবজগৎ তার ভেতর থেকে ফুটে উঠ্বে। 'যেমন মাপসই আবরণের ভেতর থেকে অবয়বের সংস্থান আপনিই ফুটে ওঠে। ইংরেজিতে এরকম রচনাকে বলা হয় allegory. ভারতীয় অলঙারশাস্ত্রে সাঙ্গরূপক বলে একটা অলঙারের নাম পাওয়া যায়; সাক্ষরপক হচ্ছে রূপক অলফারের সম্প্রসারিত সংস্করণ। Allegory কথাটার প্রতিশব্দ হিদেবে সাকরণক কথাটা কবি হেমচন্দ্র 'আশাকানন' কাব্যের ভূমিকার ব্যবহার করে গেছেন, সে কথাটা আমরাও ব্যবহার কর্ত্তে পারি। তবে সংক্ষিপ্ত ও প্রচলিত বলে allegory বা allegorical অর্থে রূপক কথাটাই আমরা প্রয়োগ কর্ম, তাতে বাক্যালম্বার রূপকের সঙ্গে গোলমাল হ'য়ে কোন মারাত্মক ভূল হ'বার আশঙ্কা নেই।

রূপকের স্পষ্টি কি ক'রে হ'ল ? কেন লোকে রূপকের প্রয়োগ করে ? কেবল কি চটক দেবার জ্ঞান্ত রূপকের ব্যবহার করা হয় ? এসব প্রশ্নের উত্তর দিতে হ'লে বাগর্থ বিজ্ঞানের ইতিহাদের আশ্রেয় নিতে হয়। সংক্ষেপে এটুরু বলা যেতে পারে যে, শব্দমাত্রেরই অর্থ একটা সীমাবদ্ধ অভিজ্ঞতার জগতের অংশ। এই সীমাবদ্ধ অভিজ্ঞতার জগতের অংশ। এই সীমাবদ্ধ অভিজ্ঞতার জগৎ হ'ল আমাদের সকলের সাধারণ জগৎ। দশজনে 'গরু' বল্তে যে সব জীবকে নির্দ্দেশ (denote) করে, বা বে সব লক্ষণ (connote) বোঝে, তারই মধ্যে 'গরু' শব্দের অর্থ সীমাবদ্ধ। স্কৃতরাং মাহ্নেরে ভাষা হ'ল লৌকিক ও লোকসামান্ত অভিজ্ঞতার ভাষা। কিন্তু যা' অলৌকিক, যা অলোকসামান্ত, যা বিশিষ্ট বা নিতান্ত ব্যক্তিগত তাকে

(suggestion) । নেত্রবিকার ষেমন ইন্ধিত, তেমনি ভাষার বিকার বা বেঁকান ভাষা বা "বক্রোক্তি", অর্থাৎ অলপ্পত ভাষাও একপ্রকার ইন্ধিত। অন্ধকে বক দেখাতে হ'লে আমাদের কোন রকম ইন্ধিতের সাহায্য নেওয়া ছাড়া উপায় নেই। একমাত্র যে ইন্ধিত তার কাছে খাট্বে, সে হ'চ্ছে কথঞ্চিৎ সাদৃভ্যের ইন্ধিত অর্থাৎ 'কতকটা এই রকম', এই বলে তাকে খানিকটা বুঝ দেওয়া যেতে পারে।

বাছকে ভূমির সমান্তরাল করে কজি ও মণিবন্ধ পরস্পরের বিপরীত দিকে বেঁকিয়ে আমরা আন্ধের কাছে হাত নিয়ে আসি ও তাকে স্পর্শ কর্তে বলি। সেই স্পর্শ থেকে দৃশ্য-বকের মূর্ত্তি সম্বন্ধে একটা অসম্পূর্ণ ধারণা অন্ধ করে নেয়। অলোকসামার অভিজ্ঞতা সম্বন্ধেও আমাদের ভাব প্রকাশ কর্ত্তে হ'লে অফুরূপ একটা প্রক্রিয়ার সাহায্য নেওয়া ছাড়া উপায় নেই। সে অভিজ্ঞতা অপরের উপলব্ধির বাইরের জ্ঞিনিষ। কাজে কাজেই আমরা পরিচিত শব্দকেই নানাভাবে হুন্ড়ে বেঁকিয়ে এটার ঘাড়ে ওটাকে চাপিয়ে বা "আরোপ" করে আমাদের অভিজ্ঞতার সদৃশ একটা বোধ শ্রোভার মনে আনবার চেষ্টা করি। এইজন্ত সাদৃস্যালকারের উৎপত্তি—উপমা ইত্যাদি অলকার এই পর্যায়েই পড়ে। বিজ্ঞাতীয় ছটি বস্তর সাদৃশ্রবোধের তীব্রতার ফলে যথন অভেদ বোধ জন্মায়, তথন স্ষ্টি হয় রূপকের। এই বোধ যদি সাময়িক ও সকীর্ণ হয় তবে বাকাালকার রূপকের উৎপত্তি হয়, আর এই বোধ যদি ব্যাপক ও একটা স্থায়ীভাবের সঙ্গে বিজ্ঞাড়িত হয়, তবে রপক রচনার সৃষ্টি হয়।

কেবল অলোকসামান্ত অভিজ্ঞতা নয়, হল্ম (abstract)
যে কোন ভাবের প্রকাশ কর্দ্তে গেলেই আমরা রূপকের
আত্রর নিয়ে থাকি। 'টাকার গরম' বা 'বাক্যবাণ'
প্রভৃতি রূপক যথন আমরা ব্যবহার করি, তথন আমরা
একটা হ্মপরিচিত অথচ হল্ম (abstract) একটা অহভৃতির
কথা বলি। প্রথম প্রথম শব্দ মাত্রেই কোন না কোন
ছল বস্তকেই নির্দেশ কর্দ্ত। হ্যতরাং কোন হল্ম অহভৃতি
প্রকাশ কর্দ্তে হ'লে সদৃশ বস্তর সলে তুলনা ক'রে ইন্দিতে
রূপকের সাহায্যে তা' প্রকাশ করা হ'ত। তবে অনেক
অহভৃতিই সাধারণ বলে' ইন্দিতের তাৎপর্য্য এখন হ্মবিদিত

গুণবাচক শব্দের উৎপত্তি হ'য়েছে। যেমন 'রাগ' কথাটোঁ আমরা এখন একটা মানসিক জাব নির্দ্ধেশ করার অক্ষ ব্যবহার করি, কিন্তু গোড়ায় একথাটার মানে ছিল 'রঙ্'। রূপক হিসেবে ব্যবহার হ'তে হ'তে এখন একথাটার ডাৎপ্র্যা তুল বস্তু ছেডে ফুল্ল ভাবে প্র্যাবসিত হ'য়েছে।

এই ভাবে তুলবস্তর গুণ অথবা কোন প্রকার করে অফুভৃতি বা মনোভাব নির্দেশ করার জন্তে বাক্যালকার হিসেবে রূপকের উৎপত্তি হ'য়েছে, আর রূপক রচনার উৎপত্তি হ'য়েছে আলৌকিক অভিজ্ঞতা প্রকাশ করার জন্তে। আলৌকিক অভিজ্ঞতা সোজাহুজি প্রকাশ করার ক্ষমতা মাহুষের ভাষায় নেই। পার্থিব জীবনের প্রয়োজনে লোক-সামান্ত পার্থিব অভিজ্ঞতা নির্দেশ করার জন্তে ভাষার কৃষ্টি হ'য়েছে। কবির কথায়—

মাহ্নযের ভাষাটুকু অর্থ দিয়ে বদ্ধ চারিধারে,
ঘুরে মাহ্নযের চতুর্দিকে। অবিরত রাজি দিন
মানবের প্রয়োজনে প্রাণ তার হয়ে আদে ক্ষীণ।
এই জল্ঞে আলৌকিক অভিজ্ঞতা প্রকাশের উদ্দেশ্যে
সদৃশ সাধারণ অভিজ্ঞতার নানা কথাকেই এমন ভাবে
ঘুরিয়ে বেঁকিয়ে পরস্পরের সঙ্গে সংযোগ বা আরোপ করে
রূপকে বলা হয় যে লৌকিক থেকে আলৌকিকের দিকে
একটা ইন্তিত তার মধ্যে ফুটে ওঠে। রূপক রচনার মূলে
আছে একটা সাদৃশ্য-বোধ। অলৌকিক জগতের পদার্থনিচয়ের মধ্যে যে ধর্ম্ম, গুণ বা পারস্পরিক সম্পর্ক আমরা

স্ষ্টি অলৌকিক জগতের প্রতিভূ হ'য়ে দাঁড়ায় এবং তার অন্তর্নিহিত ইদিতের প্রভাবে আমাদের মন— "যায় চলি মর্ক্ত্যসীমা অবাধে করিয়া সম্ভরণ।"

উপলব্ধি করি, তারই সদৃশ গুণ বা ধর্ম আমাদের লৌকিক

জগতের যে যে পদার্থে বর্ত্তমান, তাই দিয়ে আমরা একটা

রপকের স্টি করি, সদৃশ ও সমধ্মী বলে এই নৃতন

রূপকের রচনা মানব-সাহিত্যের আদি কাল থেকেই
চলে আস্ছে। উপনিষদের ঋষি জীবাত্মার সহিত পরমান্মার
সম্পর্ক বুঝাবার জঞ্জে বলেছেন—

বা স্পূৰ্ণা সৰ্কা স্থায়া স্থানং বৃক্ষং পরিষ্যকাতে। তারোরভঃ শিপ্তলং স্থাস্বস্তানগ্রহাতোংভিচাকনীতি। 'ছই স্থলর পক্ষী একত্র সংযুক্ত হইরা এক বৃক্ষে বাস করিতেছে। তাহার মধ্যে একটি স্বাস্থ্র পিপ্পল আহার করিতেছে, অপরটি অনশনে থাকিয়া তাহা দেখিতেছে।' রূপকের এটা স্থলর উদাহরণ।

খৃষ্টান ধর্মণাজেও রূপকের ব্যবহার যথেষ্ট আছে।
Song of songs রূপক হিসেবে গৃহীত ও ব্যাখ্যা করা
হয়েছে। সেথানে ভগবানের সকে ভক্তের সম্পর্ক, তথা
বীভগৃষ্টের সকে মানবাত্মার সম্পর্ক বোঝান হয়েছে রূপক
স্পষ্ট করে। এই রূপকে ভগবান্ বা বীভকে বলা হয়েছে
প্রেমাম্পদ পুরুষ, আর ভক্ত বা মানবাত্মাকে বলা হয়েছে
প্রেমাম্পদ পুরুষ, আর ভক্ত বা মানবাত্মাকে বলা হয়েছে
প্রেমাকাজিকনী নারী। Song of songs ছাড়াও New
testament এ অনেক ভারগাতেই ভগবান্ ও ভক্তের
সম্ম বর ও বধ্র রূপকের হারা প্রকাশ করা হ'য়েছে।
বোধহয় এই রূপক রচনার প্রেরণা Bible এ থাকার জক্তেই
আগেকার দিনে সমগ্র ইউরোপেই রূপক সাহিত্য যথেষ্ট
পরিমাধে রিচিত হ'য়েছিল। Everyman প্রভৃতির স্পায়
রূপক নাট্য, Facrie queeneর তায় রূপক কাব্য,
Pilgrim's Progressর তায় রূপক কাহিনী বছ প্রচলিত
হয়েছিল।

আমাদের দেশেও রূপক রচনার অসভাব ছিল না। ভারতীয় সাধনার তত্ত্ব রূপকের সাহায্যেই ব্যাখ্যা করা হ'ত। বাঙ্লা ভাষার প্রাচীনতম কবিতা—

"কায়া তক্ষবর পঞ্চ বি ডাল
বঞ্চল চীএ পইঠো কাল—"

"কার্য্য গাবড়ি ঘা লিট মন কেড়ুবাল
সদ্ গুরু বঅনে ধর পতবাল।"
"ভবনই গহন গন্তীর বেগে বহি
ছু আন্তে চিথিল, মাঝে ন থাহী।
ধামার্থে চাটিল সাঞ্চম গরই।
পারগামি লো অ নিভর তরই॥"—ইত্যাদি

রূপক রচনা।

স্থপরিচিত বাউল সঙ্গীত—
থাঁচার মাঝে অচিন পাথী কম্নে আসে যায়।
ইচ্ছা করে মনোবেড়ি দিতাম তাহার পায়॥
ক্রপক সঙ্গীতের একটা চমৎকার দৃষ্টান্ত। রামপ্রসাদের
স্মিনরে কৃষি কাজ জান না, এমন মানব-জমিন রইল পতিত

আবাদ কলে ফলতো সোনা॥" "আর মন, বেড়াতে যাবি। কালীকরভক্তলে গিয়া চারি ফল, কুড়ারে খাবি" ইত্যাদি সঙ্গীতও রূপকের উদাহরণ। রবীক্রনাথের "হুই পাথা"ও রূপক। গীতাঞ্জলির "ঐরে তরী দিল খুলে" রূপক সঙ্গীত। আধুনিক কালে রচিত "আত্মদর্শন" একটি উল্লেখযোগ্য রূপক নাট্য।

क्रिक क्रिकां कर्यकृष्टि लक्ष्म भरन बांधा एवकां वा রপকের মধ্যে হুটো জগতের সন্ধান থাকে। একটা লৌকিক, সেটা প্রত্যক্ষ, আর একটা অলৌকিক, সেটা পরোক। প্রত্যক্লোকিক জগৎটা অপ্রত্যক্ষ অলোকিক জগতের—আরও শুদ্ধভাবে বল্তে গেলে, অলৌকিক ভাব ও প্রতায়ের একটা সমাবেশের প্রতিবিদ্ব। পদ্মিনীর প্রত্যক্ষ ছায়াটা আর অপ্রত্যক্ষ কায়াটার মধ্যে একটা রূপের ও সংস্থানের সাদৃত্য আছে। কাজেই পদ্মিনার ছায়া দেখে তার কাষাটার সম্বন্ধে একটা ধারণা করা যায়। অন্ততঃ ছায়াটার দিকে তাকালে কারা সম্বন্ধে আমাদের জিজাসা ও কল্লনা উদুৰ হ'বে ওঠে। কিন্তু ছায়াটা স্থপরিচিত বান্তব জগতেরই উপাদান দিয়ে তৈরী মনে হ'লেও ঠিক্ তারই একটা অংশ নয়, এরকম একটা বোধ আমাদের আছে। এটা যে কৃত্রিম, একটা পরিকল্পিত রচনা, খাঁটি বাস্তব জগতের একটা ভাঙা টুক্রো নর, এরকম বোধ সহজেই হয় এবং সঙ্গে সঙ্গেই এর অলৌকিক তাৎপর্য্যের দিকে মন আকৃষ্ট হয়। কথনও কথনও স্পষ্ট করেই রচনার এই রূপকত্ব গুণ উল্লেখ করা হয়; আবার কথনও এই রূপকত্বের কথা মোটেই উল্লেখ করা থাকে না। অথচ রচনার ভিতর থেকে একটা সমাস্তরাল অলৌকিক ব্দগভের অবয়ব-সংস্থান সুটে ওঠে।

()

এইবার প্রতীকের কথা। রূপক আর প্রতীক একই বলে অনেকে মনে করেন। "বার নাম চাল-ভাজা, তার নাম মৃড়ি"—বার নাম রূপক সাহিত্য, তারই নাম প্রতীক সাহিত্য—এই রক্ম একটা ধারণা অনেকের আছে। কিন্তু প্রনিধান করে দেখালে স্পষ্টই বোঝা বাবে যে রূপক আর প্রতীক বস্তুতঃ এক নর।

রূপকের মূলে আছে সাদৃত্যবোধ, আর প্রতীকের মূলে

আছে সংস্পর্শবোধ। রূপকের কারবার হচ্ছে ছটি বিভিন্ন
চিস্তাক্ষেত্রের অন্তর্গত ছটি বস্তু নিমে, প্রতীকের কারবার
হ'ছে একই চিস্তাক্ষেত্রের অন্তর্গত ছটি বস্তু নিয়ে।
রূপকে লক্ষ্যকরা হ'ছে ছটি বস্তুর সমগুণতা, আর প্রতীকে
লক্ষ্য করা হ'ছে ছটি বস্তুর সহচারিতা।

উদাহরণ দিলে বক্তব্যটা স্পষ্ট হবে।

প্রীরামচন্দ্র বনে গেছেন, সিংহাসনে তাঁর স্থানে তাঁর পাছকা অধিষ্ঠিত। এ ক্ষেত্রে শ্রীরামচন্দ্র ও পাছকার মধ্যে কোন সাদৃশ্য কল্পনা করা হচ্ছে না, ঘনিষ্ঠ সংস্পর্শের জন্ত্র পাছকা রামচন্দ্রের প্রতীক। আমাদের চিস্তাক্ষেত্রে রামচন্দ্র ও 'তাঁহার' পাছকার প্রতীক। আম্পুলিক। এই ভাবে চিস্তা জগতে জুশ খৃষ্টের প্রতীক, রূপক নয়; রাজমুক্ট রাজার প্রতীক, রূপক নয়। ত্রিবর্ণরিঞ্জিত জাতীয় পতাকা ভারতের প্রতীক—রূপক নয়। ত্রিশ্ল ও শালগ্রাম শিলা, মহাদেবের ও নারায়ণের প্রতীক—রূপক নয়। এইভাবে আমাদের মনে বস্তুর সক্ষেত্র তার প্রতীক ঘনিষ্ঠভাবে বিজড়িত। স্কুতরাং প্রতীক সহজেই আমাদের মনে প্রতিপাত্য বস্তুর প্রতাম্ব আন্তে পারে। বাক্যালক্ষারের

(metonymy synecdoche) সঙ্গে প্রতীকের ভারগত ঐক্য আছে। প্রতীক বন্ধর প্রতিনিধি; রূপক বন্ধর প্রতিবিধা। রূপকের সঙ্গে বন্ধর সম্পর্ক আরোপিত; প্রতীকের সঙ্গে খাভাবিক। বন্ধর সঙ্গের বোগস্ত্র দড়ির বাঁধ, প্রতীকের যোগস্ত্র নাড়ীর টান।

প্রতীকের ব্যবহার মান্থবের জীবনে বহু বিস্তৃত। হিন্দুদের পূজা-অর্চনা প্রতীকের সাহায্যেই করা হয়ে থাকে। শিলা, ঘট ইত্যাদির মধ্যে আমরা ভগবানের সাদৃষ্ঠ নয়, তার সংস্পর্শই কল্পনা ক'রে থাকি। অবশু পট বা মূর্ত্তি ব্যবহারের মধ্যে রূপকের প্রভাবও দেখতে পাওয়া যায়। রোমান্ ক্যাথলিক খুষ্টানদের Eucharist or mass. প্রভৃতি অষ্ঠানের মধ্যে প্রতীকের ব্যবহার স্পষ্ট। সেই অষ্ঠানের স্থরা, ফটি প্রভৃতি নৈবেত যীভ্রুপ্তের জীবনের একটা প্রধান ঘটনার শ্বতির সঙ্গে বিজ্ঞাত তাই আফ্রানের ব্যবহার করা হ'য়ে থাকে প্রিয়ন্তনের একগাছি কেশ বা একতাড়া চিঠি আমরা স্বত্নে রক্ষা করি প্রতীক হিসেবেই।

ইতিহাস

শ্রীশান্তশীল দাশ

যুগে যুগে এল কত মহান্তন জীবনের বাণী কঠে বহি'
বিশ্ববাসীরে শোনালো জীবন গান;
সাধনা তাদের সফল হ'রেছে শত ছঃসহ বেদনা সহি'
দিরে গেল ছারা অমৃতের সন্ধান।
উচ্চ কঠে জানালো স্বারে: মাটার মাহ্য,
তোমরা শোনো,

ত্থাবের মাঝে নহে জীবনের শেষ,
মৃত্যুবিহীন আছে সে রাজ্য, যেথায় নাহিক ত্থাথ কোনো,
চির স্থলর, চির শান্তির দেশ।
তাদের বারতা দিগ দিগল্পে প্রচারিত হ'লো অগৌরবে,
মুথরিত হ'লো মাটীর এ ধরাতল;
জেনে গেল তারা পরমানন্দে, মাহুষের মাঝে সফল হ'বে
দীর্ঘদিনের তাদের সাধন ফল।
মহামানবের তুর্লভ দান আজিও মাহুষ অরণ করে,
তাহাদের কথা হয়নি বিস্মরণ;
তাদের স্থান চিক্ত বহিছে মঠ মন্দির সাড্বরে
জেশে দেশে আর দিকে দিকে অগণন।

ক্রশের প্রতীক, পাদনথকণা, অস্থি-ভন্ম, কত না আর

মাত্র্য দিরেছে স্থোগ্য সন্মান;
তাদের ন্মরণে প্রতিবংসর কলরব ওঠে বন্ধনার

সান্ধার যতনে অর্ঘ মূল্যবান।
কোনো ক্রটা নাই, শুধু এইটুকু: দীর্ঘ তপশ্চর্যা করি?

দিরে গেল তারা যে পথের সন্ধান,
কত শতাব্দী কেটে গেল হার, মাত্র্য চলেনি সেপথ ধরি?

গ্রহণ করেনি অন্তরে সেই দান।

মরণের পাছে আন্তও তাই ছোটে, মরণের মাঝে বেঁধেছে বাসা

যুরে মরে তাই আধারের কারাগারে;
ব্যর্থ হ'রেছে সকল সাধনা, র্থা হেথা মহামানবের আসা

ধরণী ভরেছে বেদনার হাহাকারে।

মন্দিরে অলে শতদীপালোক, নানা উপচারে

শংখ, ঘণ্টা—স্থবিপুল আরোজন;
শুধু নাই দেবা দেবতা, প্রারী; র্থা ধুপ দীপ কুস্মদালা
কে করিবে পূজা, করিবে কেবা গ্রহণ ?



একাদশ পরিচ্ছেদ

নৃতন পথে

সত্য যথন অপ্রত্যাশিত ভাবে মাহুষের সন্মুখে আসিয়া আবিভূতি হয়, তখন তাহার রূপ যতই অদ্ভুত ও অচিস্তনীয় रहाक, जाहारक मजा विमया हिनिया नहेर् विनय हम ना। পারিপার্শ্বিক পরিবেশের মধ্যে নিজেকে সহজে স্বাভাবিক দ্বাপে প্রতিষ্ঠিত করিবার এমন একটি অসন্দিগ্ধ ভঙ্গী সত্যের আছে যে তাহাকে অস্বীকার করা একেবারেই অসম্ভব।

পুথার মুখে চিত্রক যথন নিজের পরিচয় শুনিল তথন ক্ষণেকের তরেও তাহার মনে সন্দেহ বা অবিশাস জন্মিল না। বরং ভাহার অতীত জীবনের সমস্ত পূর্বসংযোগ, তাহার সর্বাচে অসি-রেখান্ক, সমন্তই যেন এই নৃতন পরিচয়ের সমর্থন করিল। কিন্তু তথাপি, চিরাভ্যন্ত দর্পণে নিব্দের মুথ দেখিতে গিয়া কেহ যদি একটা সম্পূর্ণ অপরিচিত मूथ (मिथिए भाष जाहा इहेल त्म त्यमन हमिक्या डिर्फ, চিত্রকও আদৌ নিজের প্রকৃত পরিচয় জানিতে পারিয়া বিশ্বরে বিমৃত্ হইয়া পড়িয়াছিল। কিন্তু তাহা কণেকের জক্ত; পরকণেই সে দৃঢ়বলে নিজেকে সম্বরণ করিয়া শইবাছিল। তাহার মন্তিফ রন্ধে অযুত উন্মত্ত চিস্তা ঝাঁক বাঁধিয়া প্রবেশ করিবার চেষ্টা করিয়াছিল, কিন্তু প্রভূত্থের-মতি যোদ্ধার সবল সতর্কতার ছারা সে তাহার প্রতিরোধ कतिशाहिल। मकठेकाल वृद्धिः म रहेल मर्वनाम।

উপরম্ভ এই বাহু সংযমের তলে তলে তাহার মনের মধ্যে এক অন্তুত ব্যাপার ঘটিতে আরম্ভ করিয়াছিল। শৈশব হইতে যে বিচিত্র বাতাবরণের মধ্যে সে বর্ধিত হইয়াছে, বাঁচিয়া থাকার জৈব চেষ্টায় যে নিষ্ঠুর ঘাত-প্রতিখাতের সমুখীন হইয়াছে, তাহা তাহাকে একটি বিশিষ্ট ব্যক্তিৰ বা চরিত্র দান করিয়াছিল: এই চরিত্র কঠিন, ত্মার্থপরায়ণ, নীতি-বিমুধ ও ত্মযোগসন্ধী—ইহা আমরা

श्री भावितिक वल्हाशाधाध

পূর্বে দেখিয়াছি। এখন নিজের প্রকৃত পরিচয় জানিবার পর তাহার নিগৃঢ় অন্তর্লোকে ধীরে ধীরে একটি পরিবর্তনের স্ত্রপাত হইল; সে নিজেও জানিল না যে তাহার রজের প্রভাব—যাহা এতদিন আত্মপরিচয়ের অভাবে স্বপ্ত ছিল— তাহা তাহার অর্জিত চরিত্রকে অলক্ষিতে নৃতন করিয়া গড়িয়া তুলিতে আরম্ভ করিয়াছে।

পৃথার মৃত্যুর পরদিন প্রাত:কালে চিত্রক যখন রাঞ্পুরীতে ফিরিয়া আসিল তথন তাহার মুখের ভাব ক্লান্ত, ঈষৎ গম্ভীর; তাহার অন্তরে যে শীততক্রাচ্ছন্ন বৃত্তুকু নাগ জাগিয়া উঠিয়াছে তাহা কেহ জানিতে পারিল না। চারিদিকে বর্থকরোজ্জন পুরভূমি, চূর্ণবিলোপিত ভবনগুলি ইতন্তত ওল বুদুবুদ্-বিষের স্থায় শোভা পাইতেছে। ইহাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া চিত্রক ভাবিতে লাগিল—আমার! আমার! এ সকলই আমার!

কিছ-একথা কাহাকেও বলিবার নয়। বলিলে লোকে शंजिर्द, जैनाम विनया वाक कतिरव। এकसन जाकी ছিল, সে মরিয়া গিয়াছে। সে যদি বাঁচিয়া থাকিত ভাহাতেই বা কী হইত ? তাহার কথাও কেহ বিশাস করিত না, অসম্বন্ধ প্রলাপ বলিয়া হাসিয়া উড়াইয়া দিত। কিমা যদি বিশ্বাস করিত, তাহা হইলে পরিম্বিতি আরও সঙ্কটাপন্ন হইয়া উঠিত; চিত্রককে বেশী দিন বাঁচিয়া থাকিতে হইত না। বরং এই ভাল। ভুধু স্থগোপা জানিল। তাহাতে ক্ষতি নাই; স্থগোপা-ভগিনী শপ্ৰ করিয়াছে কাহাকেও বলিবে না। কিছুদিন নিভতে চিম্ভা করিবার অবসর পাওয়া যাইবে। তারপর—

এদিকে লক্ষণ কঞ্কী গত রাত্তে ছ্শ্চিস্তায় নিজা যায় নাই। কিন্তু আৰু প্ৰভাতে চিত্ৰক যথন পলায়নের কোনও চেষ্টা না করিয়া স্বেচ্ছার রাজপুরীতে ফিরিয়া আসিল তথন তাহার মন অনেকটা নিশ্চিত্ত হইল; ভাহার मत्न हरेन हजूबछहै वृथारे हिक्करक मत्नह कतिब्राहितन। সে দ্বিশুণ সমাদরের সহিত চিত্রকের সেবা করিতে লাগিল।

দিপ্রহরে আহারাদির পর চিত্রক বিপ্রামের জ্বন্ত শ্যাপ্রায় করিলে কঞ্কী লক্ষ্মণ বলিল—'আজ আপনাকে কিছু অধিক বিমনা দেখিতেছি। চিন্তার কোনও কারণ ঘটিয়াছে কি?'

চিত্রক বলিল—'জীবন-মৃত্যুর অচিস্তনীয় সম্ভাব্যতার কথা ভাবিতেছি। পৃথা পঁচিশ বংসর অন্ধক্পে বলিনী থাকিয়াও মরিল না; যেমনি মুক্তি পাইল, সেবা-যত্ন পাইল, অমনি মরিয়া গেল। বিচিত্র নয় ?'

লক্ষণ বলিল—'সত্যই বিচিত্র। মাহুষের ভাগ্যে কথন কী আছে কেহই বলিতে পারে না; আজ যে রাজা, কাল সে ভিক্ষা এই পঞ্চাশ বছর বয়সের মধ্যে কতই যে দেখিলাম!' বলিয়া সে দীর্ঘধাস মোচন করিল।

চিত্ৰক কণ্ঠুকীকে কিয়ৎকাল নিরীক্ষণ করিয়া বলিল— 'কণ্ঠুকী মহাশয়, আপনি কতকাল এই কার্য করিতেছেন ?'

'কঞ্কীর কার্য ? তা প্রায় বিশ বছর হইল। আমার পিতা আমার পূর্বে কঞ্কী ছিলেন—' লক্ষণের স্বর নিয় হইল—'রাষ্ট্রবিপ্লবে তিনি হত হন। তারপর ন্তন রাজবংশ প্রতিষ্ঠা লাভ করিতে কয়েক বছর গেল; ক্রমে বর্তমান মহারাজ আর্যাভাবাপয় হইলেন। তদবধি আমি আছি।'

'পूर्वछन बाकांबे को रहेन ?'

'শুনিয়াছি বর্তমান মহারাজ তাঁহাকে বধ করিয়াছিলেন।' 'আর রাণী ?'

'রাণী বিষ ভক্ষণে দেহত্যাগ করেন। তাঁহাকে কেহ স্পর্শ করিতে পারে নাই।'

উদ্গত নিশাস চাপিয়া চিত্রক অবহেলাভরে প্রশ্ন করিল—'রাজপুত্রটাও নিশ্চয় মরিয়াছিল ?'

'সম্ভবত মরিয়াছিল। কিন্ত তাহার মৃতদেহ পাওয়া যার নাই।'

চিত্রক আর অধিক প্রশ্ন করিতে সাহস করিল না, তহ্মার ছলে জুন্তন ত্যাগ করিয়া চকু মুদিত করিল।

দিনটা বিরস প্রতার মধ্য দিয়া কাটিয়া গেল।

সন্ধার প্রাক্কালে চিত্রক উত্তরীয় ক্ষমে ফেলিয়া ভবন হইতে বাহির হইল। কঞুকী আৰু আর ভাহার সম্

লইবার চেষ্টা করিল না, ওধু বিজ্ঞাসা করিল—'পুরার বাহিরে যাইবেন নাকি ?'

চিত্রক বলিল—'না, ভিতরেই একটু খুরিয়া বেড়াইব।'
কথ অন্ত গিয়াছে। প্রাসাদের বলভিতে কপোতগণ
কলহ-কৃষন করিয়া রাত্রির জন্ত নিজ নিজ বিশ্রামন্থল সংগ্রহ
করিতেছে। ক্রমে পূর্বদিগন্ত জ্যোতির্মন্তিত করিয়া
চক্রোদ্য হইল।

পুরভূমি প্রায় জনশৃন্ত, কদাচিৎ ছুই একজন কিন্তরকিন্তরী এক ভবন হইতে অন্ত ভবনে যাতায়াত করিতেছে।

চিত্রক অনায়াদ-পদে ইতন্তত ভ্রমণ করিতে করিতে
অবশেষে একটি শীর্ণ সোপান অভিবাহিত করিয়া প্রাকারে
উঠিল।

জ্যোৎসাগাবিত প্রাকারচক্র রৌপ্য নির্মিত স্বংস্থলির *
তায় শোভা পাইতেছে। তাহার উপর উদ্ভাস্ত চিত্তে
পরিভ্রমণ করিতে করিতে এক স্থানে স্থাসিয়া চিত্রক সহসা
থামিয়া গেল।

অদ্রে প্রাকার ক্ডাের উপর একটি নারী বিসরা
আছে। জ্যােৎকা-কুছেলির মধ্যে গুল্রবসনা রমণীকে
ভূষারীভূত জ্যােৎকার মতই দেখাইতেছে। চিত্রকের
চিনিতে বিলম্ব হইল না—কুমারী রটা যশােধরা।

রট্টা অন্ত মনে চল্লের পানে চাহিয়া আছেন। কোন্
বহির্ম্থী বৃত্তির আকর্ষণে তিনি আজ প্রাসাদ-শীর্ষের ছাদে
না গিয়া একাকিনী এই প্রাকারে আসিয়া বসিয়াছেন
তাহা তিনিই জানেন, কিয়া হয়তো তিনিও জানেন না।
চাঁদের পানে চাহিয়া চাহিয়া তিনি কী ভাবিতেছেন তাহাও
বোধকরি ভাহার সচেতন মনের অগোচর।

নিষাস রোধ করিয়া চিত্রক ক্ষণেক দাঁড়াইরা রহিল।
তাহার ললাটে থীরে থীরে তিলক ফুটিয়া উঠিল; তপ্ত
স্চির ভায় জালাময় অস্থা হৃদ্য বিদ্ধ করিল। ইনি
রাজনন্দিনী রট্টা—এই বিস্তীর্ণ রাজ্যের অধিধরী! জার
জামি—? এক ভাগ্যাঘেষী অসি-জীবী দৈনিক—

অধর দংশন করিয়া চিত্রক নিঃশব্দে ফিরিয়া বাইতেছিল, পিছন হইতে মৃত্ব কঠের আহ্বান আসিল—'আর্য চিত্রক-বর্মা!'

^{*} হাত্রলি।

চিত্রক ফিরিল। রাজকুমারীর কাছে গিয়া বুক্ত করে অভিবাদন করিল, গভীর মুখে বলিল—'দেবত্হিতা এখানে আছেন আমি জানিতাম না।'

রট্ট। ঈষৎ হাসিলেন; বলিলেন—'কোনও হানি হয় নাই, বরং ভালই হইয়াছে। অবরোধে একাকিনী অতিষ্ঠ হইয়াছিলাম, তাই এখানে আসিয়া বসিয়াছি। আপনিও বহুন।'

চিত্রক বসিল না; কুডো বসিলে রাজকন্তার সহিত সমান আসনে বদা হয়; ভূমিতে বসিলে অত্যধিক দীনতা প্রকাশ করা হয়। সে কুডোর উপর বাহু রাখিয়া দাঁড়াইল; বলিল—'আপনার স্থগোপা সখী বোধ করি আজ আসিতে পারেন নাই।'

'স্বগোপা আমাকে না দেখিরা থাকিতে পারে না— প্রভাতে একবার মুহুর্তের * জন্ত আসিয়াছিল। আপনার কত কথা বুলিল। সারারাত্রি জাগিয়া আপনি তাহার পাশে তাহাঁকে সাহায্য ও সাহচর্য দান করিয়াছিলেন। এমন কেহ করে না।'

'স্থগোপা আর কিছু বলে নাই ?'

त्रहे। क्रेय९ विश्वाय तक् िकताहेलन-'आत की विनद ?'

'না, কিছু না—' প্রসন্ধান্তর উত্থাপনের জক্ত চিত্রক চল্লের পানে চাহিয়া বলিল—'আজ বোধ হয় পৌর্ণমাসী।'

'হাঁ।' রটাও কিয়ৎকাল চাঁদের পানে চক্ষু তুলিয়া রহিলেন—'গুনিয়াছি আর্যাবর্তের অন্তত্ত্ব আজিকার দিনে উৎসব হয়—বসন্ত ঋতুর পূজা হয়। এখানে কিছু হয় না।' 'হয় না কেন ?'

'ঠিক জানিনা। পূর্বে বোধহয় হইত, এখন হ্ণ অধিকারের পর বন্ধ হইয়াছে। হ্ণদের মধ্যে বসস্ত উৎসবের প্রথা নাই। তবে বৃদ্ধ-পূর্ণিমার দিন উৎসবের প্রথা মহারাজ পুনঃপ্রবর্তিত করিয়াছেন।'

এই সকল জনস কথাবার্তার মধ্যে চিত্রক দেখিল, রট্টা প্রাকার কুড্যের উপর এমন ভাবে বসিয়া আছেন যে ভাঁহাকে একটু ঠেলিয়া দিলে কিছা আপনা হইতে ভারকেক্স বিচলিত হইলে তিনি প্রাকারের বাহিরে বিশ হাত নীচে পড়িবেন; মৃত্যু জনিবার্য। চিত্রকের বুকের ভিতর হুই চিত্রকের চোথে জ্যোৎসার শুভ্রতা লোহিতাভ হইয়া উঠিল।

রটার কিন্তু নিজের সকটময় অবস্থিতির প্রতি লক্ষ্য নাই; তিনি স্বচ্ছন্দে নির্ভয়ে কুড্যের উপর বসিয়া আছেন। চিত্রক সহসা যেন নিজেকে ব্যঙ্গ করিয়াই হাসিয়া উঠিল; বলিল,—'রাজকুমারি, আপনি কুড্য হইতে নামিয়া বহুন। ওথান হইতে নিয়ে পড়িলে প্রাণহানির সন্তাবনা।'

রট্টা একবার অবহেলা ভরে নীচের দিকে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন, বলিলেন—'ভয় নাই, আমি পড়িব না। কিন্তু আপনি হাসিলেন কেন ?'

কোভে অধর দংশন করিয়া চিত্রক বলিল—'ক্ষমা কঙ্কন, আমি কৌতুকবশে হাসি নাই। আপনার নির্ভীক অপরিণামদর্শিতা—কিন্তু যাক। রাজনন্দিনি, যদি ধৃষ্ঠতা না হয়, একটি প্রশ্ন করিতে পারি ?'

'কি প্ৰশ্ন ?'

'আপনি হ্ণ-ছহিতা। আর্থ জাতি অপেকা **হুণ জাতির** প্রতি আপনার মনে নিশ্চয় পক্ষপাত আছে ?'

কিছুক্ষণ নীরবে মনন করিয়া রটা ধীরে ধীরে বলিলেন,
— 'আর্য—! হুণ—! আমার মাতা আর্য ছিলেন, পিতা
হুণ। আমি তবে কোন্ জাতি ? জানিনা। সম্ভবত মহয়
জাতি।' রটা একটু হাসিলেন—'আর পক্ষপাত ? দৃত
মহাশয়, এই আর্যভূমিতে যাহারা বাস করে তাহাদের
সকলের প্রতি আমার পক্ষপাত আছে। কারণ তাহাদের
ছাড়া অক্স মাহ্য আমি দেখি নাই।'

'সকলকে আপনি সমান বিখাস করিতে পারেন ?'

'পারি। যে বিশাসের যোগ্য সে আর্থই হোক আর হুণই হোক, বিশাস করিতে পারি।' রটা লঘুপদে কুড়া হুইতে অবতরণ করিলেন—'এবার আমি অন্তঃপুরে ফিরিব; নহিলে আর্থ লক্ষণ ক্ষষ্ট হুইবেন।'

চিত্রক বলিল—'চপুন আমি আপনার রক্ষী হইয়া যাইতেছি।'

বাস্পের মতো একটা অশান্ত উদ্বেগ পাক থাইতে লাগিল।
তৃতীয় ব্যক্তি এথানে নাই; রট্টা বদি পড়িয়া বান কেহ কিছু
সন্দেহ করিতে পারিবে না। বে বর্বর হুণ তাহার সর্বস্থ
অপহরণ করিয়াছে, যাহার হত্তে তাহার পিতা নৃশংসভাবে
হত হইয়াছিলেন, এই যুবতী তাহারই কল্ঞা—

⁺ मूहर्छ-इरे १७-६४ मिनिए।

'আহ্ন--' বলিয়া রট্টা ষেন কোন্ গোপন কৌতুকে স্থলর মুধ উদ্ভাসিত করিয়া হাসিলেন; চম্রালোকে সেই চাসি তরকের মতো চারিদিকে ছডাইয়া পড়িল।

हिज्ञक क्रेयर मिलक्षां चारित विल —'हामिरलन (कन १' রট্টা এবার বঙ্গিম দৃষ্টিতে চটুলভা ভরিক্লা তাহার পানে চাहिल्मन; मूथ हिलिया विल्लान-'अ किছू नद। স্ত্রীলোকের হাসি-কান্নার কি কোনও অর্থ আছে?— हन्न।'

গভীর রাত্রে রটা শধ্যা হইতে উঠিলেন। তাঁহার শব্যার শির্বে প্রাচীরগাত্তে একটি কুটসক# ছিল, তন্মধ্যে একটি মণিময় কুজ বুদ্ধমূতি থাকিত। সিংহল দ্বীপে রচিত নীলকান্তমণির অসুষ্ঠপ্রমাণ এই বুদ্ধমূর্তি মহারাজ রোট্ট ধর্মাদিত্য কন্তাকে উপহার দিয়াছিলেন।

শ্য্যা হইতে উঠিয়া রটা একটি দীপ জালিলেন। ধ্যানাদীন বৃদ্ধমূতির সমূধে দীপ রাধিয়া তিনি যুক্তকরে **ए**न्गर्जिट नौर्यकान के निवाय्जित भारत हाश्या दिश्ला ; তাঁহার বান্ধলি পুষ্পতুগ্য অধর অল্প অল্প নড়িতে লাগিল। তাঁহার কুমারী হৃদয়ের. কোন নিভূত প্রার্থনা তথাগতের চরণে নিবেদিত হইল ভাহা কেবল তথাগত জানিলেন।

তারপর দীপ নিভাইয়া রটা আবার শয়ন করিলেন।

পরদিন অপরাত্ত্বে চণ্টন তুর্গ হইতে বার্তাবহ ফিরিয়া আসিল। মহারাজ রোট্ট ধর্মাদিত্য পত্র দিয়াছেন। পত্র পাঠ করিয়া মন্ত্রী চতুরানন ভট্ট চিন্তিত মনে রট্টার কাছে গেলেন।

'মহারাজের শরীর ভাল নয়, তিনি আরও কিছুকাল চণ্টন ছুর্গে থাকিবেন। কিছ কক্সাকে দেখিবার জন্ম তাঁহার মন বড় উতলা হইয়াছে।'

রটা বলিলেন—'আমি পিতার কাছে যাইব।'

চভুৱানন বলিলেন—'কিন্ত-যাওয়া উচিত কিনা ঠিক ব্ঝিতে পারিতেছি না।'

'যাওয়া অহচিত কেন ?'

ইতন্তত করিয়া চতুরানন বলিলেন—'কিরাত লোক

ভাল নয়। সে চণ্টন ছুর্গের সর্বময় কর্তা; ভাহার মনে यि कान अ कू वृद्धि था क-'

রটার মুখ রজবর্ণ হইল—'কিরূপ কুবুদ্ধি? আপনি কি দলেহ করেন, কিরাত পিতাকে নিজের কবলে পাইয়া এখন চলনা দারা আমাকেও কবলে আনিতে চায় ?'

'কে বলিতে পারে ? সাবধানের নাশ নাই।'

ब्रह्मे। मनर्प्य विलालन-प्यामि विश्वाम कवि ना। মহারাজের সহিত এরূপ ধৃষ্টভা করিবে কিরাতের এত সাহস নাই। আপনি ব্যবস্থা করুন, কাল প্রাতেই আমি চণ্টন হুর্গে যাইব। পিতৃদেবকে দেখিবার জ্পু আমারও মন অস্থির হইয়াছে।'

'উত্তম।—মহারাজ মগধের দৃতকেও চণ্টন ছুর্কো আহ্বান করিয়াছেন।'

রটার চোথের উপর অদৃশ্য আবরণ নামিয়া আসিল। তিনি ক্ষণেক নীরব থাকিয়া বলিলেন—'ভাল। ভিনিও व्यामात्र मत्त्र याहेरतन । जीहारक मःतान विकार

চতুর ভট্ট বলিলেন—'সঙ্গে একদল শরীর-রক্ষীও थाकिता ।- जान कथा, ठकेन क्रार्तत भथ मीर्च ७ क्रिम-দায়ক; পৌছিতে ছই দিন লাগিবে। মধ্যে এক রাত্রি পাছশালায় কাটাইতে হইবে। দেবছহিতার জন্ম দোলার ব্যবস্থা করি ?'

'না, আমি অশ্বপৃষ্ঠে যাইব।' 'मानी किन्नती (कह मदन याहरत ना ?' '레 I'

রট্রার নিকট হইতে চতুরানন চিত্রকের কাছে গেলেন। চিত্রক সমস্ত কথা গুনিয়া কিছুক্ষণ অধোমুখে বদিয়া রহিল। তাহার বক্ষে যে অদৃখ্য ভুষানল জ্বলিতেছিল ভাহা সহসা लिहि **नि**थोष्ठ **बालिए इहे**षा छेठिन ; कि**र ए** मन्द्र ভাব গোপন করিয়া উদাস নিস্পৃহ স্বরে বলিল-'আমি এখন आभनारमत्र अधीन : याशाहे विलादन छाशाहे कतिव।'

পর দিবস প্রভাতে স্র্যোদয়ের সঙ্গে সঙ্গে রট্টা এবং চিত্রক অশারোহণে রাজপুরী হইতে বাহির হইল। रमनानी नांहकन मण्ड कारबारी नरेवा मरक हिना।

কপোতকুট নগর তখন জাগিয়া উঠিয়াছে। পথে পথে গৃহ ও বিপনীর বার ধুলিয়াছে, নাগরিকগণ ইততত

⁺ कूनशी।

যাতারাত করিতেছে; নাগরিকারা কলসী কক্ষে জল ভরিতে যাইতেছে; কেহবা পূজার অর্ঘ্য লইয়া দেবায়তন অভিমুখে চলিয়াছে। পথের উপর বালকবৃন্দ দল বাঁধিয়া জীড়া করিতেছে। বৈদেহক ক্ষম্পে পণ্য লইয়া হাঁকিতেছে
—অ্যে লাজা—!

পুরুষবেশা রট্ট। যখন অখকুর ধ্বনিতে চারিদিক সচকিত করিয়া রক্ষীসহ রাজপথ দিয়া চলিলেন, তথন জনগণ সকলে প্রপার্ফে দাড়াইয়া সগর্বে উৎফুল নেত্রে দেখিল।

পণ্য পাটকের ভিতম দিয়া ষাইবার সময় রট্ট।
দেখিলেন, চতুপথের উপর একটা কিন্তৃত-কিমাকার
মাম্যকে ঘিরিয়া ভিড় জমিয়াছে। লোকটা রোমশ
ক্ষককেশ সুলকায়; অঙ্গে বস্তাদি আছে কিনা ভিড়ের
মধ্যে বুঝা যায় না। সে উচ্চকণ্ঠে সকলকে কী একটা
কথা বলিতেছে; শুনিয়া সকলে হাসিতেছে ও রঙ্গ তামাসা
দ্বিতেছে।

র্ট্টা <u>অখে</u>র রশ্মি সংযত করিয়া একজন পথচারীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, 'ও কে? কী বলিতেছে ?'

পথচারী রাজকন্মার সংখাধনে ক্বতার্থ হইয়া হাস্মাথে ালিল—'ও একটা গড়ল্—বলিতেছে নাকি ও কোধাকার াজদূত!'

চিত্রক একবার দৃষ্টিপাত করিয়াই চিনিয়াছিল— শিশেপর! সে আর সেদিকে মুখ ফিরাইল না।

রট্টা আবার অখচালনা করিলেন। ক্রেমে তাঁহারা গারের উত্তর বাবে উপস্থিত হইলেন। এইপানে শশিশেধরের কথা শেষ করা বাক।
সেইদিন সন্ধাকালে নগরের কোট্টপাল মন্ত্রী চতুর ভট্টের
সহিত সাক্ষাৎ করিলেন; বলিলেন—'একটা বিকৃতবৃদ্ধি
বিদেশী নগরে প্রবেশ করিয়াছে। সে বলে সে মগধের
রাজদৃত; কোনও এক তন্ত্রর নাকি তাহার সর্বন্ধ কাড়িয়া
তাহাকে দিগম্বর করিয়া মুগয়া কাননে ছাড়িয়া দিয়াছিল।
—লোকটা লতাপাতা দিয়া কোনও ক্রমে লজ্জা নিবারণ
করিয়াছে।'

চতুরানন জ্র কৃঞ্চিত করিয়া শুনিলেন। 'তারপর ?'

'নগররক্ষীরা তাহাকে আমার কাছে ধরিরা আনিয়া-ছিল। দেখিলাম, লোকটার বৃদ্ধিল: 'হইয়াছে। কখনও এক কথা বলে, কখনও অন্ত কথা বলে, কখনও বৃদ্বৃদাক্ষ হইয়া ক্রন্দন করে। তাহাকে লইয়া কি করিব বৃথিতে না পারিয়া কোর্ত ঘরে বন্ধ করিয়া রাখিয়াছি।'

চকুর ভট্ট বলিলেন,—'বেশ করির।ছ। গর্ভদাসটা একদিন আগে আসিতে পারিল না! এখন আর উপায় নাই। আপাতত কিছুদিন লম্পিকা ভক্ষণ করুক, তারপর দেখা যাইবে।'

অতঃপর এ কাহিনীর সহিত শশিশেখরের আর কোনও
সম্বন নাই। শুধু এইটুকু বলিলেই যথেষ্ঠ হইবে বে এই
আখ্যায়িকা শেষ হইবার পূর্বেই সে মুক্তি পাইয়াছিল
এবং ভবিয়তে আর কখনও দেশ পর্যটনে বাহির হইবে না
প্রতিজ্ঞা করিয়া খদেশে ফিরিয়া গিয়াছিল। (ক্রমশঃ)

সিংহলে কলিন্স উপনিবেশ

জ্রীজনরঞ্জন রায়

াচীন পালিগ্রন্থ মহাবংশ হইতে জানা যার বন্ধাধিপের উর্দে কলিক জিকস্থার গর্ভে স্প্রদেবীর অন্য হয়। তিনি যৌবনকালে উচ্ছুখাল ইয়া পড়েন এবং ছল্লবেশে একটি বণিকদলে মিলিয়া মগধের দিকে লায়ন করেন। লালের (রাচের ?) জঙ্গলে একটি সিংহ (বিহারের ংহে উপাধিক বস্থদহা?) তাহাদের আক্রমণ করে। সঙ্গীরা সর্ক্ষণ লিয়া পলাইয়া বার, স্প্রপলাইতে পারেন না। সিংহ তাহাকে নিজ হার লইয়া যার। সিংহের উর্সে তাহার প্র সিংহ্বাহর ও কন্তা গেহঞ্জীবলীর জন্ম হয়। এই সিংহ্বাহ রাচের অধিপতি হন। ংহবাহর জ্যেষ্ঠপুত্র বিজয়-সিংহ ও মধ্যম পুত্র হৃদিত্র। বিজয় তাহার

পিতার অবাধ্য ও প্রজাপীড়ক হইয়া উঠেন। তাঁহার সঙ্গীগণও মন্দ্রপ্রতির লোক ছিল। সেজন্ত প্রজারা তৃতীয়বার অভিযোগ করিলে সিংহবাছ আদেশ দেন যে, বিজয় ও তাঁহার সঙ্গীদের অর্জেক মাধা মৃড়াইয়া সাগরে ফেলিয়া দেওয়া হোক। এই ভাবে বিজয় ও তাঁহার অস্তরদের সাগর যাত্রা আরম্ভ হইল। তাঁহাদের সঙ্গে অন্ত মুইথানি নোকার তাঁহাদের স্ত্রী-প্তরপণও দেশছাড়া হইলেন। নাগরীপে আসিয়া প্রজাণের নোকা লাগিল, মহেক্র নামক স্থানে আসিয়া শ্রীপণের নোকা লাগিল এবং স্পারকপত্তনে স্পারিষদ বিজয়ের নোকা লাগিল। বিজয়কে ভিত্ত ছিল লা। সেধান হইডে

বিভাড়িত হইরা তিনি তামপর্ণীতে আসিরা নামিলেন। সেধানে আসির।
বিজয় দেখিলেন কুবেণী নামক যক্ষিণী দেখানকার রাণী। এই যক্ষিণীকে
বশীভূত করিরা তিনি তামপর্ণীর অধীবর হন। দিংহবাছর বংশ বলিরা
বিজয়কে সীহল (সিংহল) বলা হইত। বিজয় যেদিন তামপর্ণীতে
নামেন সেই দিনই (৫৩৩ খ্রীঃ পূর্বাক্ষে) বৃদ্ধদেবের নির্বাণ লাভ হয়।
বিজয় পাণ্ডা দেশের রাজার নিকট তাহার কন্তাকে বিবাহ করিবার
প্রভাব জানান। পাণ্ডারাজ সম্মত হইরা তাহার কন্তার সহিত বছ
নরনারীকে তামপর্ণীতে পাঠাইরা দেন। কিন্তু বৃদ্ধ বয়সেও বিজয় কোন
সন্তান লাভ করিতে পারেন না। সেজন্ত তিনি নিজের লাতা স্থমিত্রকে
আসিরা রাজ্যভার লইতে বলেন। স্থমিত্র তথন রাঢ্যের রাজা। এজন্ত
স্থমিত নিজ পূত্র পাণ্ড্বাসদেবকে সিংহলে পাঠান। কিন্তু পাণ্ড্বাসদেব
সিংহলে পৌছিবার পূর্ব্বে ৬৮ বৎসর রাজ্য করিয়া (৫০৫ খ্রীঃ পূর্ব্বাক্ষে)
বিজয় সিংহ তথন মারা গিয়াছিলেন। পাণ্ড্বাসদেব সিংহলে গিয়া
জ্যেষ্ঠতাতের সিংহাসনে অভিবিক্ত হইলেন।

এখানে আমরা দেখিতে পাইলাম, দেই আড়াই হাজার বৎদর পূর্বে তামপর্ণীতে कি করিয়া বিজয় সিংহ আসিলেন। আর দেখিলাম, কি করিয়া ভারতের প্রথম উপনিবেশকারীর বংশপরিচয়ে দেশের নাম वमनारेमा সिংহল इहेल। उथन यक्तनात्त्र वामज्ञि हिल म प्रान्। যকর। সম্ভব মুখল (Mongolian) জাতির লোক। তাহাদের বংশধররা ভারতেরও আদিবাসী। বঙ্গোপদাগরের দ্বীপপুঞ্জে তাঁহারা ছড়াইয়া পড়েন। বাঙলা দেশের পূর্ববিংশে বর্মা পর্যান্ত সর্বব্ ত্রী-প্রাধান্ত ছিল, এখনও কিছুটা আছে। চিত্রাঙ্গদার বিবরণে তাহা জানা যার। কাজেই সিংহলে তথন মেয়ে-রাজা ছিল শুনিরা বিচিত্র জ্ঞান করার কিছুই নাই। কিন্তু বিজয়সিংহ ভারতীয় রমণীকেই বিবাহ করেন। তিনি সিংহলের পরপারে পাণ্ডা দেশের রাজক্মারীর পাণি-প্রহণ করেন। পাতা দেশকেই ক্রিরনাসী উপনিবেশ স্থান বলা হয়। ন্থানটি দক্ষিণ ভারতের উপকৃলে। ইহার পূর্বাসীমা সমৃত্র। কিন্ত মহাভারতে সিংহলের নাম আছে। মহাবংশ অপেকা মহাভারত প্রাচীন। মহাভারতকে বিশ্বাস করিলে বৌদ্ধ বিবরণ মতো সিংহলের নামকরণের কাহিনী প্রভৃতি সবই মিণ্যা প্রতিপন্ন হয়। এখন বে মহাভারত আমরা পাই ভাহাতে 'সিংহল' নামটি প্রক্রিপ্ত হইয়াছে মনে করা বাইতে পারে। ভত্তবুগে পুরাণ সকল পুনলিখিত হওয়ার সময়, বহু পুরাণে বহু কথা প্রকিপ্ত হইরাছে ইহা বিশেষজ্ঞগণ বলিতে আরম্ভ করিয়াছেন। মহাভারতে সিংহল নামটি আসা ইহার অক্ততম নিদর্শন বলা বাইতে পারে। মহাভারত অভিযাতার বৌছ-বিরোধী। এই বৌদ্ধ বিবরণটি নপ্তাৎ করিরা দিবার জক্ত এরূপ করা হইরাছে মনে করার হেতু আছে। ভারতের বৌদ্ধ ধারার অভিভাবকত্ব করিয়াছে এক সমর সিংহল। সেই সিংহলকে অনকরে দেখিতেন না নিশ্চর ব্রহ্মণা ধারার বাহক মহাভারতের গৌরববর্দ্ধনকারী-গণ। বৰ্ণাশ্ৰমলোপকারী বৌদ্ধ নিধনে দেবতারাও আসেন, কাব্যগ্রন্থও আদে। মহাভারত এক্সণ একথানি মহাকাব্য। তাহাতে বৌদ-বিষেবের কথা দেখিরা ইহাও বনে করিবার হেডু আছে বে, তাহার রচনাকাল ভারতে বৌদ্ধ প্রাধান্তের পরে। বিজয়সিংহ যে সময়ে তাম্রপনী দীপে গেলেন, তথন সবেষাত্র বৃদ্ধদেব দেহত্যাপ করিয়াছেন। স্তরাং বৌদ্ধগুগের শুরুতেই তিনি যান। তথন মোটেই বৌদ্ধ প্রাবল্য আরম্ভ হয় নাই। মহাভারতে প্রবল বৌদ্ধ নিশ্বা পাকার তাহা প্রমাণ করে যে, বিজয়সিংহের পূর্বের তাহা নিশ্চয় লেখা হয় নাই। অব্যবহিত পরেও নয়, বরং অনেক পরে।

সাম্প্রতিক উড়িছার ইতিহাসে বিজয় সিংহকে উৎকলবাদী বলিয়া দাবী করা হইতেছে (Glimpses of Kalinga History by Prof. Manmothonath Daso of Balasore College)। পূর্বে বাঙালী ঐতিহাসিকগণ বিজয় সিংহকে বাঙালী বলিয়াছেন।

উডিয়ার এই ঐতিহাসিক বলিতেছেন-এই লাল (বালাড) নামক স্থান যেখানে বিজয় সিংহের পিতামহী সিংহ কর্ত্তক অপজত হন, তাহা বন্ধ ও মগধের মধ্যে। প্রতরাং তাহা উৎকলের কোন স্থান। कांत्रण तत्र ७ विशास्त्रत मगानाथर छे दकल धारमण। किन्न छेल् ঐতিহাসিক ঐ সিংহকে উৎকলবাদী বলিতেছেন না। বলিতেছেন— ভিনি বিহার প্রদেশবাসী সিংহ-উপাধিধারী কোন লোক। আমরা এই ঐতিহাসিকের দেশপ্রিয়ভার প্রশংসা করিলেও ঐতিহাসিকের সত্যপ্রিয়তার অভাব দেখিয়া হঃখিত হইতেছি।≁ুডিৰ দিক দিয়া দেখিতে গেলে লাল-রাঢ় না হইয়া উৎকলের কোন স্থান হইলে. দেখানকার জন্মলে উৎকলবাদীই থাকিবে, দেখানে কোন বিহারী আসিবে কেন? আমরা বেশ বুঝিতেছি উক্ত ঐতিহাসিক বিল্লাটে পড়িয়াছেন এই সিংহকে দেখিয়া। এই সিংহ যে পশুরাজ নয়, মানুষ সিংহ, অর্থাৎ সিংহ উপাধিধারী কোন লোক, তাহা তাঁহার মতো আমরাও বীকার করিতেছি। তবে এই উড়িক্সার ঐতিহাসিক এই সিংছ মহাশয়কে বিহারী বলিলেন কেন? তাহার প্রধান কারণ উডিয়ার লোকের সিংহ উপাধি ছিল না. এখনও নাই। সিংহ উপাধিটি বিহারীদের প্রায় একচেটিয়া। এই বিহারী সিংহের ঔরসে যে সিংহবান্ত হইলেন, তাঁহাকে বরং বাঙালী, উডিয়া ও বিহারী মিশ্রণজাত বলা উচিত। তাঁহার পুত্রের দেহেও এই তিন দেলের রক্ত ছিল। স্বতরাং উড়িয়ার ঐতিহাসিক कान मछ्डे निःश्वाहरक উৎकनवानी वनिर्छ भारतन ना। এই सभ সিদ্ধান্ত করিতে তিনি বছ ঐতিহাসিক তথা চমডাইয়াছেন, বহ কথা ঢোক গিলিয়া বলিয়াছেন। সিংহবার খারা সিংহপুর নামক শহরটি স্থাপিত হওয়ার কথা ইতিহাদে পাওয়া যার। শহরটি কোথায় ছিল তাহা আনা গিয়াছে, উক্ত ঐতিহাসিক বলিতেছেন। তাঁহার মতে গলাবংশের তাত্রণাসনে লিখিত সিংহপুর ও সিংহপুণ (হাতীগুক্ষার উৎকীৰ্ণ স্থান) অভিন। এই অনুমান কচদুর ভয়াবহ বলা यात्र मा।

এতকাল ৰাঙালী ঐতিহাসিক ও কবিগণ বিজয় সিংহকে ৰাঙালী বলিয়া গৌরব অফুভব করিয়াছেন। তাহারাও সিংহপুর কোথায় তাহা অআভতাবে প্রমাণ করিতে পারিয়াছেন মনে হর না। অক্তঃ এখন তাহাদের দাবী সমর্থনের জন্ম তাহা করা প্রয়োজন। কারণ উড়িছা সিংহবাছকে তাঁহাদের দেশের লোক বলিয়া টানাটানি শুরু করিয়াছেন।

বাঙালীরা সিঙ্গুরকে প্রাচীন সিংহপুর বলিরা থাকেন। হগণী জেলার ভারকেথরের রেলপথে শেওড়াফুলীর পরে তৃতীয় ষ্টেশন এই সিঙ্গুর। ধর্মস্থল এতে (অজেয় ঢ়েকুর কাহিনীতে) লাউদেন প্রসঙ্গে ইহার উল্লেখ আছে। পালরাজ্বত্বে শাউদেন একজন বড় সেনাপতি। তিনিই কামরূপ জয় করেন।

গঙ্গাবংশের পূর্ব্ব পরিচয় আমাদের আলোচ্য বিষয়ে সাহাযা করে না। অনস্তক্ক-চোর-গঙ্গা উৎকলের প্রথম গঙ্গাবংশীয় রাঞা (১১৩২ থ্রীঃ)। কেশরী বংশের অবসানে ভাঁহার শক্তি বিস্তারের বিবরণ পাওরা যায়। ১৫৩৪ থ্রীঃ গঙ্গাবংশের অবসান হয়। কিছুদিন পূর্ব্বে উড়িছার ইতিহাস নামক আর একথানি পুত্তক হইতে জানিতে পারা গিয়াছে চোরগঙ্গার আদিপুর্ব্য দক্ষিণ রাচ্ছে লোক ছিলেন। (History of Orissa by B. C. Muzumdar)।

দক্ষিণ রাঢ় বলিতে হুগলী ও হাওড়া জেলাকে বুঝায়। উত্তর রাঢ় বলিতে (দামোদর, অঞ্জয় ও গঙ্গার মধ্যবন্ত্রী অঞ্লে) বর্জমান, মুর্শিদাবাদ ও বীরভূম জেলার কতটাকে বুঝায়। উৎকল দখন করিলে দক্ষিণ রাঢ় পর্যান্ত উৎকলের অন্তভ্ ক হয়। অন্ততঃ চৌরগঙ্গার সময় তাহাই ছিল, তা' তিনি দক্ষিণ রাচের লোক হউন বা না-হউন। এইরপে উৎকলের ও রাঢ়ের সংস্কৃতি ১২শ শতান্দীর মধ্যভাগ হইতে চৈতক্তদেবের তথায় অবস্থানকাল (১৬শ শতাকীর মধ্যভাগ) পর্যান্ত প্রায় অব্যাহতভাবে নিশ্রণের স্কবিধা পাইয়া-ছিল। প্রায় বলিলাম এইজন্ত যে মুদলমান-ভীতি আরও হইয়াছিল বর্থতিয়ার বিলিঞ্জির নবদীপ বিজয়ের (১১৯৯ খ্রী:) পর হইতে। ব্যতিয়ার মগধ জয়ের পর নবছীপে আসেন ১৭জন অস্বারোহী লইয়া ইহা অবশু মিখ্যা ইতিহাস। এপানে তাহা লইয়া বিশদ আলোচনা অপ্রাদলিক হইবে। সামাজভাবে কিছু বলিব। মুদলমান ঐতিহাসিকের এই বিবরণ বিলাতী ঐতিহাসিকরা **দেদিৰ**ও কিন্ত সমর্থন ক্ষিয়াছেন। এখন প্রমাণিত হইয়াছে অন্ধৃপ-হত্যার মতো ইহা অসত্য কথা। মুসলমান ঐতিহাসিকের রায় লছমনিয়া, রাজা লক্ষণ দেন নহেন। রাজা লক্ষণ দেন নৰ্ছীপের পশুনের হয়তো পঞ্চাশ বছর পূর্বেই দৈহত্যাগ করেন। রায় লছমনিয়া সেন বংশের একজন সামন্ত রাজা ছিলেন অনুমান করা হইতেছে। দেন রাজাদের আসল রাজধানী তথন লক্ষ্মণাবতী (গৌড়ে) অথবা বিক্রমপুরে ছিল। যাহা হোক দকিব রাচ অঞ্চল পাঠানরা খ্রীঃ ১৪শ শতাব্দী পর্যান্ত জন্ম করিতে পারে নাই। রাজনৈতিক দিক দিনা রাচ উডিকার অধীন ছিল। কতলু থাঁ উড়িকা বিজয় করিলে (খ্রী: ১৬শ শতাক্ষীতে) তথার পাঠান রাজত ত্থাপিত হয়।—প্রদক হইতে দ্বে চলিয়া আসিয়াছি জানিয়াও এইটুকু বলা প্রয়োজন মনে করিতেছি বে, পাঠান আগার সলে সেন রাজাদের প্রাহ্মণ্য প্রচারের নব আন্দোলন (Neo Brahminical revival) সম্পূর্ণ দায়ী। ভাহাতে পাল আমলের ধনিক (বণিক)

শ্রেণীকে সমাজে অধংপতিত করা হইল। সমুজ্যাত্রা অভৃতি বন্ধ করিরা জাতিকে অর্থাপুত করা হইল। অর্থহীনতার জাতির মেরুদণ্ড ভালিল। পাঠানরা তাই বাধা পার নাই, বিজ্ঞোহী সমাজ বরং ভাহাকে বরণ করিয়াই আনিল।

আমরা বলিয়াছি যে, বাওলাদেশে পাঠান রাজত্বলণেও উড়িফার সীমারেখা হাওড়া জেলার ভাগীরৰী তীর এবং হুগলী জেলার কিয়দংশ (আরামবাগ) পর্যন্ত বিস্তৃত ছিল। স্থতরাং উড়িফার সঙ্গে বাঙালীর যোগাযোগ, মায় ভাষার সমতা অতি দীর্ঘ দিন পর্যন্ত ছিল। মৈধিলি সমাজের ভাষার সঙ্গেও বাঙলার সমতা খ্রী: ১০শ শতাক্ষী পর্যন্ত ভাল-ভাবে ছিল। রসুনাধ শিরোমণির মিধিলা গমনও মৈধিলি ভাষা এবং ভাবধারার সহিত বাওলার নিকট সম্পর্ক ছিল প্রমাণ করে।

এইভাবে বিহার, উড়িছা ও বাঙলার ভাষা ও কৃষ্টির সমতা থাকিলেও বিজয়সিংহকে লইয়া এই তিন প্রদেশ সমানভাবে টানাটানি করে নাই। তাঁহার বাঙালিডের বিরুদ্ধে প্রথম আঘাত আসিল উড়িছা হইতে। কোমর বন্ধের-নিচে-আঘাত ভাবিয়া ইহা যেন বাঙালী ঐতিহাসিকর্পণ উপেক্ষা না করেন। প্রাদেশিকতা ঐতিহাসিকদের মধ্যেও সংক্রামিত হইয়াছে।

বিজয়সিংছের প্রায় ৩০০ বৎসর পরে বৌদ্ধ কলিঙ্গ প্রদেশের সঙ্গে বৌদ্ধ সিংহলের যোগাযোগ হয়।

উড়িক্সা ও তাহার দক্ষিণ দিকের অনেকটা অংশকে তথন কলিক বলা হইত।

অশোক (বিন্দুসারের পুত্র প্রসিদ্ধ ২য় অশোক) ২৫৮ খ্রীস্টপূর্ব্বাব্দে হিন্দুধর্ম পরিত্যাগ করিয়। বৌদ্ধধর্ম গ্রহণ করেন। ইহা তাঁহার উৎকল জয়ের পরের ঘটনা। তিনি নিজের পুত্র মহেন্দ্র ও কন্তা সংঘ-মিতাকে বৌদ্ধ ধর্ম প্রচার করিতে সিংহলে পাঠান। অশোকের সময়ে ভারত ও সিংহলে বিশেব সন্তাব স্থাপিত হয়। বৌদ্ধ ধর্মের সহিত পালি ভাবার লিখিত বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থও সিংহলে বার। স্ক্তরাং পালিভাবার পঠন-পাঠনও সিংহলে আরম্ভ হয়।

কলিক দেশের পরপারেই সিংহল।

অলোকের শ্রেরিত ধর্মপ্রচারকগণ সিংহলে গেলে, সিংহলরাজ তাহার বিনিময়ে অলোকের নিকট বহুপ্রকার উপটোকনাদি সহ নিজ অনাত্যদের পাঠান। এই সিংহলবাসীরা ফিরিবার সমর অশোক, তাহাদের বোধিবুজের একটি লাখা প্রদান করেন। এ শাখাটি সিংহলরাজ অতি প্রজার সহিত নিজের অনুরাধাপুরের উন্তানে রোপণ করেন। সিংহলে যাতারাভকালে কোন্ বন্দর ব্যবহৃত হইয়াছে তাহা জানা যার না। তবে তাহা বাঙলার কোন বন্দর এরপ কেহই দাবী করেন নাই। এলক্ত তাহা কলিজের কোন বন্দর এরপ কেহই দাবী করেন নাই। এলক্ত তাহা কলিজের কোন বন্দর এরপ মনে করিবার যথেষ্ট কারণ আছে। মেদিনীপুরের তামলিপ্ত বন্দরের খ্যাতি ছিল উত্তর ভারতে। অপোকের সমর তামলিপ্ত বন্দর ছিল কি-না ঠিক বলা যার না। তবে সেধানে একটি বিরাট অশোকস্তম্ভ ছিল। থম স্কীষ্টান্দের প্রথম ভাগে প্রসিদ্ধ বৌদ্ধ পরিব্যালক ফাহিরান, তামলিপ্ত বন্দর হইতে ক্রলবামে

সিংহলে যান। ৬০৫ খ্রীঃ অপর একজন প্রসিদ্ধ বৌদ্ধ পরিবাজক ভরেগ্রদাং এই বন্দরে একটি বৌদ্ধ মঠ ও ২০০ হাত উচ্চ একটি অশোক ন্তম্ভ দেখেন। এই বন্দর হইতে বড় বড় অর্থবিপোতে রেশমী কাপড় ও রেশম সমুদ্রপারে রথানি হইত তিনি তাহারও বিবরণ দিয়াছেন। এই वन्मत्र इटें(ठ) हे निःश्रलात्र त्राङ्गा (भववर्श्वत नमप्त (१०१२-- ११२ औ:) বৌদ্ধ-ভারতের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন বৃদ্ধদন্ত ভারত হইতে সিংহলে স্থানান্তরিত হয়। কলিলের রাজা বৌদ্ধ শুহাশিব যথন হিন্দুরাজা সমুজগুপ্তের নিকট পরাজয় ভয়ে ভীত, তথন নিজ কথা হেমলতা ও জামাতা দত্তকুমারের দারা ভাত্রলিপ্ত বন্দর হইতেই বুদ্ধদত্ত সিংহল রাজের নিকট পাঠান, এইরূপ জানা যার। কলিকরাজকল্ঞার সহিত নিশ্চর একদল দেহরকী ও পরিচারক সিংহল যাতা করে। ভাহারা সকলেই সিংহলে বসতি স্থাপন করেন। কারণ ওাঁহাদের প্রত্যাবর্ত্তনের কথা কোন বৌদ্ধ গ্রন্থে নাই। সিংহলের অষ্ঠিম প্রধান নগর কান্দিতে একটি মন্দির মধ্যে এই বুদ্ধ দন্তটি রক্ষিত হইতেছে। প্রতিবৎসর আগষ্ট মাদে কান্দির দত্তোৎসব আঘাত্-মানে পুরীর রথবাত্রা উৎসবের অনুরূপ। কান্দির উৎসব ১৪ দিন ব্যাপী চলে। ইউরোপীয়রা বলিতেছেন, কান্দির এই বুদ্ধ দন্তটি মনুষ্ঠদন্ত নয়, তাহা কুঞ্জীর দন্ত। সিংহল ও ভারতের বিশেষজ্ঞদের এই কথা গণ্ডন করা প্রয়োজন।

এখন সমূজের গতি বদলাইরা গিয়াছে। তাম্রলিপ্তকে (তমলুক) আমরা রূপনারায়ণ নদের তীরে দেখিতে পাইতেছি।

ষ্যাতি কেশরীর-ভামশাসুনে (ৎম খ্রী:) 'লাল' জ্বের কথা আছে, উড়িয়ার উক্ত সাম্প্রতিক ঐতিহাসিক বলেন।

একজন উৎকল দেশের রাজা শক্র ভয়ে সিংহলে গিয়া বৌদ্ধ ভিক্ষু-জীবন যাপন করেন জানা যায়। হয়তো উত্তর হইতে রাজা হয়বর্দ্ধন অথবা দক্ষিণ হইতে চালুক্যরাজ ২য় পুলকেশীর আক্রমণ ভয়ে তিনি প্লায়ন করিয়াছিলেন (৬০১ খ্রীঃ)।

সিংহলের রাজা ৭ম মহেন্দ্র একজন উৎকল কন্থার পানি গ্রহণ করেন (১০ম খ্রীঃ)। সিংহলেরাজ বিজয়বাছ কলিজরাজকন্থা তিলকস্থন্দরীকে বিবাহ করেন (১১শ খ্রীষ্টাব্দের মধ্যভাগে)। এই সব বৈবাহিক আদানপ্রদানে সিংহলের সঙ্গে কলিজের সম্পর্ক ঘনিষ্ঠতর ভইলাচিল।

উৎকলের বিক্রমবাছ সিংহলের সেনানায়ক ছিলেন (১২শ খ্রী: প্রথম পালে)। তিনি রাজকারী বলিয়া বর্ণিত হইরাছেন। তাঁহার ইঙ্গিতেই তথন রাজকার্যা চলিত।

সিংহলরাজ মহান পরাক্রমবাছ (১১৫০ খ্রীঃ) ভারতের দক্ষিণে কাবেরী নদীর উত্তরাংশেছিত প্রাচীন চোলরাজ্য আক্রমণ করেন। সিংহলের প্রঝাদের হিতার্থে তিনি কিছু করিরাছিলেন। রাজ্যের শীবৃদ্ধি করিতে উভাম ও প্রামাদ সকল নির্দ্ধাণ করান। তিনি নিজ ক্সাকে উৎকল রাজপুত্র নিঃশঙ্কমরের সহিত বিবাহ দেন। উৎকলের সাম্প্রতিক ঐতিহাসিক বলেন—সিংহলের ইতিহাসে আছে বে, এই নিঃশঙ্কমর উৎকলের সিংহপুরে (১১৫০ খ্রীঃ) জন্মগ্রহণ করেন।

সিংহলের কোন্ ইতিহাসে তিনি ইহা পাইরাছেন তাহা উক্ত ঐতিহাসিক বলেন নাই। সিংহপুর উৎকল মধ্যে অবস্থিত ছিল ইহা বলিবার তিনি যে বহুপ্রকার উভয় করিয়াছেন, ইহা তাহার অক্ততম।

প্রাক্ষবাহর মুহার পর ভাহার ভাগিনের বিজরবাহ এক বংসর (১১৮৭ খ্রী:) সিংহলের রাজা ছিলেন। তাঁহার হত্যাকারীকে বধ করিয়া নি:শক্ষমল সিংহলের রাজ্মকুট ধারণ ।করেন। ভাঁহার সমরে (১১৮৭-১১৯৬ খ্রীঃ) निःश्लात (भीवत त्रित मधाक भगत छैटै। নিঃশক্ষমলের বহু অফুশাসন সিংহলের পোরনাক্রা নামক স্থানে পাওয়া যায়। তাহাতে তিনি সিংহলের প্রথম রাজা বিজয়সিংহের বংশধর বলিয়া নিজের পরিচর দিয়াছেন। আন্তর্গোরবচ্ছলে তিনি ইহা বলিলেও ইভিহাস ভাহা সীকার করিতে পারে না। নি:শক ভিনবার পাণ্ডাদেশ আক্রমণ করেন। নি:শঙ্কের মৃত্যুর পর তাঁহার পুত্র বীরবাহ এক রাত্রের জন্ত সিংহলের রাজা হন। সেনানায়কদের চক্রান্তে তিনি রাজদত ধারণে অক্ষম হন। কিন্তু নিঃশক্তের বৈমাত্রের ভাতা রাজা সাহসমল সাহদ করিয়া এই দময়েও কিছদিন মাধা তুলিয়া দাঁডাইতে পারিয়াছিলেন। কিছদিন পরে দিংহলের আদিবাসী প্রকর্মপাণ্ডা তিনবৎসর কাল সিংহলের রাজ্যও হস্তগত করিয়া রাখেন। ১২১৫ খ্রী: কলিক দেশ হইতে মধ নামক কোন বাজি কেরল ও মালব সৈপ্ত নিয়া সিংহল আক্রমণ করেন। তিনি প্রকর্মপাণ্ডাকে অন্ধ করিয়া দিয়া সিংহলের সিংহাসন হস্তগত করেন। মদ, গোড়া বর্ণাশ্রমী হিন্দু ছিলেন। তিনি সিংহলের বৌদ্ধাচার প্রায় উৎসাদিত করিয়া দেন। বৌদ্ধ সিংহলীরা তথন দেশ ছাডিয়া প্লায়ন করিতে থাকে। তিনি এ সব বৌদ্ধদের পরিত্যক্ত বাসভবন, কুবিক্ষেত্রাদি নিজ অফুগানী হিন্দুদের মধ্যে বন্টন করিয়া দেন। এই ভাবে তাঁহার আনীত শতসহত্র কেরল ও মালববাসী সিংহলের পাকা বাসিন্দাতে পরিণত হর। তিনি দীর্ঘ এক্শ বংসরকাল সিংহলের এক্ছত্র রাজা ছিলেন। ভারপর দীর্ঘকাল সিংহলের সঙ্গে কলিজ-সম্পর্ক ছিল ছিল। বৌদ্ধগণ বলেন, বিজয়বাছকে না'কি চীনারা অপহরণ করে। তাঁহার রাণী ছইটি নাবালক পুত্রদের নিয়া আন্ত্রগোপন করেন। বড়কুমার পরাক্রমবাহ সাবালক হইয়া বুদ্ধদন্তের মন্দির নির্মাণ করান। মাতা হুমিত্রা দেবীর শ্বরণার্থে তিনি কলখোর নিকট একটি বিরাট বিহার নির্দাণ করান। ভাহার পালিতপুত সিংহলের নিকটবর্ত্তী জাকলা দ্বীপটি দধল করেন। তথন জাফলার অধীবর নিজেকে আর্যাচক্রবর্তী ও কলিকের গলাবংশের লোক বলিতেন।

তারপর সিংহলে আসিল পর্জ্যীজরা (১৫০৫।১৫ই নভেম্বর)। কলিঙ্গ তথা ভারতের সঙ্গে সিংহলের প্রভাক্ষ সম্পর্ক নষ্ট্র হইল।

আমরা কিন্ত দেখিলাম খ্রীষ্টপূর্ব্ব ৬ চ শতক হইতে খ্রী: ১০ শ শতক পর্যায়—নীর্ঘ ছাই হাজার বংসর সিংহলে কলিখবাসীরাই প্রধানভাবে উপনিবেশ দ্বাপন করিয়াছেন। বদিও নিঃসন্দেহে বলা বার বাঙালী বিজয় সিংহ ও তাঁহার ক্রাভুস্তুত্ব সদলে আসিয়া সেধানে আদি উপনিবেশ স্থাপন করেন। কিন্ত ভারপর এগানে বছদিন দলে-দলে কলিজবাসীরাই আসিয়াছেন।

বাঙালী এইভাবে তাহার ভাবধার। নিরা গিরাছেন হছ ছানে, শুধু রিংহলেই নর। ভারতের ত্রিবাছুরে একদল লোক এখনও নিজেদের রাঙালী বলিয়া পরিচর দেন। তাঁগাদের মহিলারা কপালে সিন্দুর রাবহার করেন। বাঙালীর মতো হুলুধনি দেন মাঙ্গলিক কাজে, যাহা বাঙালী মহিলার বৈশিষ্ট্য। শুজরাটের নাগর ব্রহ্মণরা এখনও নিজেদের বাঙালী বলিয়া থাকেন। হিমাচল রাজ্যে, অর্থাৎ সিমলা ও পাঞ্জাবে এখনও বাঙালী সেন-রাজ্বংশের শাথা রাজত্ব করিতেছেন। যবদীপ, ইন্দোনেসিয়া, শ্রামদেশে ও ইন্দোচীনে বাঙালী সহ্যতার ভূরি ভূরি নিদর্শন পাওয়া গিয়ছে। জাপানে (১০ন ব্রাহা) বাঙলা অকরে লেখা পূঁথি হরিউজী বৌদ্ধ মন্দিরে পাওয়া গিয়ছে। হুলুর মধ্য এমেরিকার মেকসিকো প্রদেশে 'বাঙলো' ধরণের বাড়ি পাওয়া

গিয়াছে। চড়কগাছ, শিবলিক প্রভৃতি পাওয়া গিয়াছে। সেধানেও মেরেদের কপালে সিন্দুরবিন্দু দিতে দেখা গিয়াছে।—এ সমন্তই বাঙালীদের সেই সব দেশে উপনিবেশের নিদর্শন। বাঙালী ঐতিহাসিককে বিশেষভাবে এই সমন্ত আদি উপনিবেশিকের তথ্য অনুসন্ধানে তৎপর হইবার অনুরোধ জানাইতেছি।

পরিশেবে উড়িয়ার সাম্প্রতিক ঐতিহাসিক (অধ্যাপক শ্রীনম্মথনাথ দাস) মহাশরের নিকট উপকরণ ভাগের কতকাংশের জন্ম আমি কৃতজ্ঞতা জানাইতেছি। তিনি ভারতের এই প্রদেশের জন্মবারাছন্ন ইতিহাসে বছ স্থানে আলোকপাত করিয়াছেন। সিংহলে গিয়া ভিনি তাঁহার ইতিহাসের উপকরণ সংগ্রহ করিয়াছেন। বিলাতে বিশেবজ্ঞগণের নিকট তিনি তাঁহার সম্পাদিত ইতিহাস (Glimpses of Kalinga History) পাঠাইয়াছেন শুনিয়াছি। তাঁহার সঙ্গে ক্রেক স্থানে আমাদের ভিন্ন ত হইলেও তাঁহার পরিজ্ঞানের বিশেব প্রশাসা করিতেছি।

কোরিয়ার যুদ্ধ

ভান্ধর গুপ্ত

মাত্র অল্পকাল পূর্বে দক্ষিণ কোরিয়ার পার্লামেণ্টে মার্কিণ সেক্রেটারী অব টেট, মিঃ একসনের স্পেঞ্চাল এটা দিটাণ্ট জন ফ্রার ডিউল্স্ বক্তৃতা প্রসঙ্গে বলেছিলেন: আপনারা নিঃসঞ্জ নন। আপনারা কোন্দিনই নিঃসঙ্গ খাক্বেন না, যত্দিন আপনারা মানবের স্বাধীনতার প্রকৃষ্ট রূপ নির্ধারণে সাফল্যের সঙ্গের এগিয়ে যাবেন।

কিন্ত হায়! তিনি বোধহয় সেদিন ভাবতে পারেন নি তার কথাগুলি এত তাড়াতাড়ি কোথাও প্রতিক্রিয়ার রূপ নেবে। তিনি বোধহয় আরু শুধু মাত্র বিশ্নিত হ'য়েছেন। কিন্তু বড় আঘাত লেগেছে মার্কিণ সাম্রাক্র্যবাদে। সমগ্র স্থান্তর প্রাচ্যে এই আঘাতের প্রতিক্রিয়ার মার্কিণ আধিপত্য আতন্ধিত হতে পারে। মার্কিণ ষ্টেট ডিপার্টমেন্টের কথাঃ It's almost as if they were invading a bit of America. স্থানু-প্রাচ্যে কোরিয়া আন্তর্জাতিক বৃহৎ শক্তিবর্গের কুটনৈতিক ক্ষমতা রক্ষার ক্ষেত্র বিশেষ।

কোরিরাকে জাপানের কবল-মৃক্ত করার পর যদি সেদিন রাশিয়া ও আবেরিকা তাদের নিজেদের ভবিছৎ নির্ধারণের ভার তাদের হাতেই ছেড়ে দিতো তাহ'লে ছুই কোট কোরিয়া-অধিবাসী দেশ বিভাগের ছঃসহ বিবেবের হাত থেকে রক্ষা পেতো। রাশিয়া ও আবেরিকা সেদিন তাদের অধিকার ত্যাগ করে নি। তারা কোরিয়া ছুইভাগে ভাগ কোরে উত্তর ও দক্ষিণে ছুটি রাষ্ট্রের প্রবর্তন করে। প্রত্যেক ভারতবাসী এই 'বিভাগ'-এর ব্যর্থা সহকেই অফুমান করতে পারে।—

যেন একটি মাসুষকে কেটে ছ'ভাগ করা হোলো—উত্তরে থাকলো শিল্প, দিক্ষণে কৃষি। ছই অংশে যে ছটি রাষ্ট্র গঠিত হোলো, তার একটি (উত্তরে) রাশিরা প্রবর্তিত সমাজতন্ত্র, অপরটি (দক্ষিণে) মার্কিণ প্রবর্তিত গণহন্ত্র। ছটি সম্পূর্ণ বিপরীত নীতির আশ্রম-সীমার ভাগ হ'রে গেল একটি অথও দেশ, নির্বিরোধ একটি জ্বান্তি। আজ ছটি রাষ্ট্রে যে বিরোধের তীব্রতা প্রকাশিত হ'রেছে তার আমল কারণ রমে গেছে এই থণ্ডিত মার্থের অস্করালে। দৃশ্যত এটা দক্ষিণ ও উত্তর-কোরিয়ার যুদ্ধ হ'লেও বস্তুত যুদ্ধের উচ্ছোক্তা একদিকে রাশিয়া, অপরদিকে আমেরিকা।

এর পূর্বে কোণাও কথনো রাশিরা ও আমেরিকা প্রত্যক্ষভাবে পরশ্বরের সঙ্গে বুলেট বিনিমর করে নি। একেত্রে এটা জনিবার্য হ'রে উঠেছে। শুধু তাই নয়, কোরিরা যুদ্ধক্রের প্রতিক্রিয়া লাপানকে বাতে ম্পর্ক করতে না পারে তার লগুও প্রস্তুতি চলেছে। লাপামের তটরেখায় আত্মরক্ষাবাহ রচনা করতে হরেছে আমেরিকাকে। এই প্রেয়লন প্রতিধ্বনিত হ'রেছিলো গত বছর ১২ই সেপ্টেম্বর নিউ ইর্ক হেরক্ত ট্রিবিউন প্রিকার: The strategic aim of United States is to turn Japan into a great Anti-Communist bastion in the pacific. বছদিনের ঠাঙা বৃদ্ধ আল উত্তর্গ আকার বারণ করেছে—বিশ্বরের কিছু নাই। কিন্তু আল উত্তর্গ আকার পরিপত্তি কি বিবর্জে রূপান্তরিত হবে ?

বৃটিশ দার্শনিক বারট্রাও রাশেল বলেম--- এসিরার হাশিরা ভার

অধিকার ত্যাগ করবে মনে হর না। আমার বিবাস, আমরা তৃতীর বিবহুদ্ধের প্রাথমিক পর্বারে এসেই পড়েছি।"

লেক্সাক্সেসে নিরাপত্তা পরিবদের সভার সকলেই এক্বাক্যে একটি লক্ষ্যের কথা উচ্চারণ করে। তারা বলে: to get the measure of the conflict and devise means to end it. ওরা নিশ্চরই ঠাতা যুদ্ধ জিইরে রাধবার কথা বলে নি। উপরস্ক ভারা পরোক্ষভাবে স্বীকার ক'রে নিয়েছে স্থুর প্রাচ্যে আমেরিকার ষার্থকে। সেই অনুযায়ী স্বন্ধি-পরিষদে গুংীত প্রস্তাবে সম্মতি ও আমেরিকার নেতৃত্বে পরিকল্পিত আক্রমণ প্রতিহত করার প্রচেষ্টার তারা তাদের সামরিক সাহায্য দানের সদিচ্ছা প্রকাশ করেছে। আজ কোরিয়ার আক্রমণ প্রতিহত কোরে কোরিয়াকে যদি কম্যানিষ্টদের কবলমুক্ত করা যায়, ভাহ'লে আমেরিকা পরবর্তী পর্বায়ে এসিয়া বাদ দিলেও অফ্তত্র ক্মানিষ্টদের অধিকার সহা ক্লরতে পারবে কি না, এই প্রশ্নের যথাযথ উত্তরের উপরই নির্ভর করছে—কোরিয়ার যুদ্ধ বিষযুদ্ধে পরিণতি লাভ করবে কি না! কিন্তু আমেরিকার মনোভাব পরবর্তী পর্যায়ে কিভাবে স্থিতি লাভ করবে,কে জানে ? আমেরিকার হাউদ অফ্ ফরেন এ্যাকেয়াস किमिष्टित देवेंद्रक कथा উঠिছिला: We got a rattlesnake... The sooner we pound his head off the better. SIGNAR আশখা, কোরিয়া যুদ্ধের প্রতিক্রিয়া সহজেই ইউরোপে জার্মাণীতে অতিফলিত হ'তে পারে। একটা ঘটনার ধুব মিল দেখতে পাওয়া যাচ্ছে জার্মাণীতে ও কোরিয়াতে। কোরিয়ায় কমানিষ্টরা দেশের শাধীন সরকার প্রতিষ্ঠার পঞ্ছাতে প্রচার চালাচ্ছিলো যে You Americans, leave us in peace to hold our own elections and have a freely elected Government.

অমুরূপ কার্মাণীতেও সম্প্রতি এই রকম ইলেকশনের প্রচার চলছে। ভারা বলে: Tommy go home. Take Adenaner and Schumacher with you, Tommy go home. Leave us Germans in peace to hold our own elections and have a freely elected Government. ক্লানিলা এর পরের অবস্থা কি! কোরিয়ার দেখা গেছে এই উদ্দেশ্যে ভিনজন ক্যানিষ্ট দক্ষিণ

কেরলে দেখানকার কম্যুনিষ্টরা আন্দোলন স্থান্ধ করে, সঙ্গে সঙ্গের আ্বার করলে দেখানকার কম্যুনিষ্টরা আন্দোলন স্থান্ধ করে, সঙ্গে সঙ্গে স্থান্ধ । যদি জার্মাণীতেও অনুরূপ ঘটনার অবতারণা হয় তাহ'লে আমেরিকা ও তার সহযোগী অস্থান্থ জাতিসমূহ নিঃসন্দেহে কোরিয়াতেই বৃদ্ধের পূর্ণচেছদ টানতে পারবে না। ভূল থেকে গেছে বিতীয় মহাযুদ্ধের অন্তিম ভত্মন্ত পোরবে না। ভূল থেকে গেছে বিতীয় মহাযুদ্ধের অন্তিম ভত্মন্ত পোরবে না। ভূল থেকে গেছে প্রকাশিত হ'য়ে পড়েছে। তখন যুদ্ধরান্ত বিজয়ী শক্তিবর্গ বিধে শান্তি প্রতিষ্ঠার নামে নিজেদের অধিকার প্রতিষ্ঠার সচেতন হ'য়েই উঠেছিলো বেশা। একটা অথও দেশকে সেই প্রয়োজনেই বিভক্ত করতে হ'য়েছে। বিশ্ময়ের কথা, সকলের সমবেত মিলিত প্রচেটা এই অকুত্রিম প্রয়োলনে সহযোগিতা করেছে। ইউ. এন. ও তারই প্রতীক হিসেবে কাল করে এসেছে কোরিয়ার যুদ্ধ ঘোষিত হবার পূর্বদিন পর্যন্ত। ইউ. এন. ও-র বিরুদ্ধে এ অভিযোগ মিধ্যা নয়। ইউ. এন. ও তাই অল্পান্ত সম্প্র ভবিসতে হ্মতো তাকে ছুটে বেড়াতে হবে সমগ্র বিধে।

ভারতও এযুদ্ধের প্রভাব এড়িয়ে যেতে পারবে না। অবশ্ ভারত সরকার তার নীতি ঘোষণা করেছেন—নিরপেক। আমার বিশান এটা অর্থহীন। কারণ বে নীতি যুদ্ধের প্রয়োজনের নীতির নমনেকারীর, তার নিরপেকতা শুরু ঘোষণার সীমাতেই টিকে থাকে। আজ বে যুদ্ধের প্রয়োজন হ'রেছে সেটা কম্নানিজম প্রতিরোধের জন্ত। ভারত বরাবরই এই কম্নানিজম প্রতিরোধের দৃঢ়তা প্রকাশ ক'রে এসেছে। কে জানে ভারতেও সিভিল-ওয়ার বাধিবে কি না। যুদ্ধ তো এই নীতি প্রতিঠারই ভয়াবহ অভিয়ত্তি। বারট্রাও রাসেলের কথা: On religious grounds alone, India would strongly oppose communism. মি: রাসেল ভারতের অস্তরের কথাই বলেছেন। এক্ষেত্রে ভারতের ঘোষত নীতি ভারতের অস্তরের কথাই বলেছেন। এক্ষেত্রে ভারতের ঘোষত নীতি ভারতের অস্তরের কথাই বলেছেন। কারণে ভারতের নিরপেকতা ভারতীয়রা মেনে :নেবে বিশাস হয় না। অবশ্রুইতিহাসের গতি ইতিহাসেই তার প্রবাহ-শক্তি আহরণ করে। ভারত ঘাই ভাবুক, ভার প্রভাবের বাইরে সে কিছুতেই যেতে পারবে মা।

চাহিদা

শ্রীজ্যোতির্ময় সেনগুপ্ত

(3)

কলেজ-জীবনে বোড়ণা ও হুন্দরী স্বপার সহিত প্রিচয় হইবার স্থােগ হইয়াছিল। সে ছিল আর্টদের ছাত্রী, আমি বিজ্ঞানের। পরিচয়টা হইয়াছিল পার্কে।

পার্কে বসিয়া ভাহার সহিভ অনেক বিষয় আলোচনা

করিয়াছি। দেখিয়াছি, সে জগতের ছু: খে ভীষণ বিচলিত।
সে বলিত, জগতের সব ছু:খ সহ্য করা যায়, কিছ শরীরের
ছু:খ দেখাই বড় কষ্টকর। খাবার নাই তাই কুশদেহ,
বস্ত্র নাই তাই নগদেহ এবং দেহের বত্নের সামর্থ্য নাই তাই
কুগদেহ—এগুলি চোধে পড়িলে স্থার মূপ বেদনায় মলিন

হইয়া বাইত। হঠাৎ আলোচনা করিতে করিতে এক সময়ে মূহ হাসি হাসিয়া বলিত—"আমার অনেক টাকা থাকলে এদের খাওয়া, পরা ও চিকিৎসার একটা ব্যবস্থা করে যেতাম।"

স্থপার হৃদয়ের এই বেদনা-কাতর ভাবটি আমার বড় ভাল লাগিত।

(2)

চাকরি-জীবনে স্বপ্লাকে বিবাহ করিবার স্থাপ হইয়ছিল। আমার চাকরি পাওয়ার জন্ত স্থাকে পঁচিশ বছর বয়দ পর্যন্ত অপেক্ষা করিতে হইলেও বিবাহে আমরা স্থী হইয়াছি। আমার আয় বেণী নয়, কাজেই স্বপ্লা অনেক টাকা পায় নাই। তব্ও প্রথম পরিচয়ের পর দীর্ঘ নয় বৎসর কাটিয়া গেলেও আমাদের প্রেম ফিকা হয়্ম নাই।

বিবাহের পরদিন অনেক রাত্রে চৈত্রের পূর্ণ চাঁদের আলোতে ছুইজনে ছোট্ট বাগানে বেড়াইতেছি। অফুটে প্রণায়কুজন চলিতেছে। সে যেন এক স্বপ্লাছর মোগাবস্থা! কথা বলিতে বলিতে হঠাৎ সলজ্জ মৃত্কঠে স্বপ্লা বলিল—"টাকা থাকলে আজ কি করতাম জানো?"

一"年》"

—"একটা প্রকাণ্ড ফ্লের বাগান—ফ্লে ফ্লেডরা।
কঞ্চ্ছার ডালে ছটো পাশাপাশি ফ্লে-ঢাকা দোলনা।—
তোমার দোলনা ছলে যাছে উত্তরে, আমার যাছে দক্ষিণে,
—মাঝখানে শুধু এক মৃহুর্ত্তের জন্ত তুমি আমি একত্র
হচ্ছি। চৈত্রের হাওয়ায় উড়ে উড়ে আমার খোলা চুলের
রাশি লাগছে তোমার গালে—ভোমার সক্ষ স্থান্তি
উত্তরীয় উড়ে পড়ছে আমার চোখে-মুখে।—ঝর ঝর ক'রে
ঝরে যাছে কৃষ্ণচ্ছার লাল পাপ্ড়ি সেই দোলায় দোলায়
—নিবাক হাসিতে জ্যোৎসালোকে ছ'জনে শুধু ছলে চলেছি
নিশুকা রাত্রিতে!" …

_ (၁)

ভালোবাদার জোয়ার কাটিয়া ঘাইবার পরে স্বপ্লাকে
গৃহিণীরূপে পাওয়ার আমার স্থানাগ ইইয়াছিল। (মানে,
তার আগে আমরা কেউ মরিনি!) ছোট্ট আমার ঘর;
দে তাই নিয়াই আনন্দ করিয়া ফিরিত। এককোণে
একটু লাউয়ের মাচান ভোলা—বাগানটায় রকমারি ফুল
লাগানো। চারদিক পরিছার পরিছেয়। ঘরের মেজে
স্কেক্সেক—দেয়ালে দাগ নেই।

রবিবার ছপুরে থাওয়া-দাওয়ার পরে থবরের কাগজ
নিয়া ইজিচেয়ারে আরাম করিতেছি। স্বপ্লা—মানে
প্রোঢ়া স্বপ্লা—পান সাজিয়া নিজে থাইল ও আমাকে
দিল। তারপর বেড্কভারে ফুল তুলিতে তুলিতে বলিল,
—"টাকা থাকলে একটা ছোট্ট দোতলা বাড়ী করতাম।
যাই বলো, একতলা বাড়ী কোনো কাজের নয়। গরমের
দিনে দোতলার বারান্দা আর ছাদ—সভ্যি চমৎকার!"
তারপর একটু থামিয়া সলজ্জ হাসিয়া বলিল—"একটা
রেডিও না হ'লে—যাই বলো, গ্রামোকোন আজকাল
স্কচল।"

(8)

বৃদ্ধা স্বপ্লার সঙ্গেও বাঁচিয়া থাকার স্থ্যোগ হইয়াছিল।
ভগবানের অসম দয়া। ত্'জনে গাঁয়ের শিব-মন্দিরে
যাই। শিবরাত্রিতে সেথানে শিবপূজা করিয়া ইংরাজীপড়া স্থপ্লার ছই চকু সভি্যকার প্রশাস্তিতে ভরিয়া যায়।
রাস্তায় আসিতে আসিতে বলে—"টাকা থাকলে, সভি্য,
সমস্ত ভীর্থগুলো ত্'জনে ঘুরে আসভুম।—এমন শাস্তি
আসে মনে!"

(a) .

জরাতুরা, গলিত-কেশ-চর্ম-দশনা অপ্রার সাথে আমি আজিও বাঁচিয়া আছি। অপ্রার গাঁটে গাঁটে বাতের প্রকোপ, বাম অঙ্গে সাময়িক অনাড্তা এবং মাঝে মাঝে মৃতিভ্রংশ হইতেছে। স্থানীয় ডাক্তার কবিরাজ দেখাইতে ক্রটি করি নাই। বিশেষ কিছু হয় না। তারিণী কবিরাজ বাহিরে আসিয়া বলিয়াই দিয়াছেন—"ব্যাধিটা বৃদ্ধ বয়সের — কাজেই কতটা আর হইবেক।"

ফিরিয়া স্থপার শ্যা-পার্শে স্থাসিয়া বসি। বলি— "কেমন লাগছে আৰু ?

পাশ ফিরিয়া বেদনা-বিকৃত মুখে স্বপ্না উদ্ভর দেয়—
"আর কেমন!—এখন গেলে বাঁচি!…এদব হাতুড়ে
ডাক্তার কবিরাজের কারবার!" তারপর থানিকক্ষণ
থামিয়া বলে—"টাকা থাকলে কলকাতার একবার বড়
ডাক্তার দেখাতাম।"

টাকার অভাবে কলিকাতায় বাওয়া হয় নাই।

(•)

ছই দিন পরে স্বপ্না পরলোকে যাত্রা করিয়া গিয়াছে। দেখানে টাকা আছে কিনা এবং অনেক টাকা থাকিলে কেহ কিছু করিতে চায় কিনা জানিবার স্থবোগ্ন নাই।

রাশিফল

জ্যোতি বাচস্পতি

কৰ্কট ৱাশি

যদি কঠট আপনার জন্ম-রাশি হয় অর্থাৎ চন্দ্র যে সময়ে আকাশে কঠট নক্ষত্রপুঞ্জে ছিলেন দেই সময়ে যদি আপনার জন্ম হ'য়ে থাকে, তাহ'লে এই রকম ফল হবে—

প্রকৃতি

আপানি ভাবপ্রবণ অংকৃতির লোক। আপানার মধ্যে মনোবেগ ধুব প্রবল। অধিকাংশ ক্ষেত্রে আপানি বৃদ্ধি বিবেচনার চেয়ে আবেগের দ্বারাই পরিচালিত হবেন বেদী।

আপনার মধ্যে সহামুভূতি প্রবদ ব'লে, আপনি যেধানেই যান নিজেকে মানিয়ে নিভে পারবেন এবং সামাজিক ও সদালাপী ব'লে প্রশংসা পাবেন।

পারিবারিক আবেষ্টন ও পারিপার্বিকের প্রভাব আপনার উপর ধুব বেলী এবং অনেক সময় এই প্রভাব দিয়েই আপনার জীবনের গতি নিয়ন্তিত হবে।

আপনার ম্মরণশক্তি পুব প্রথম এবং অফ্করণ-স্কৃহাও আপনার মধ্যে যথেষ্ট আছে। অপরের ভাষধারা গ্রহণ ক'রে তাকে নিজের মত ক'রে নেওয়ার শক্তি আছি ব'লে অনেক সময় আপনি অপরের ভাব গ্রহণ ক'রে তা নিজের বলে প্রচার করতে পারেন। এক্ষেত্রে আপনার মধ্যে একটা আক্ষপ্রতারণার ভাব লক্ষিত হওয়া সম্ভব।

অধিকাংশ ব্যাপারে আপনি যুক্তিতর্কের চেমে নিজের আবেগের
ঘারাই পরিচালিত হবেন বেশী এবং প্রত্যেক বস্তুকে আপনার
মনোভাবের অমুকৃল যুক্তিতর্ক দিয়ে গ্রহণ বা বর্জন করতে চাইবেন।
বাস্তব ক্ষেত্রে তার অসঙ্গতি আপনি দেপেও দেপতে চাইবেন না।

রোম্যান্টিক ব্যাপারের দিকে আপনার একটা আকর্ষণ আছে এবং সাধারণকঃ আপনি কল্পনাপ্রিয় হবেন। অনেক সমন্ন বাস্তব কার্যক্ষেত্রেও আপনি আপনার কাল্পনিক ধারণা নিরে কাজ করতে অগ্রসর হবেন, যাতে করে অনেক ক্ষেত্রেই আপনার কাজ মঞ্জযুক্ত হবে না।

আপনার মধ্যে সহামুভূতি প্রবল ব'লে অপরের স্থ-ছু:থ আপনি হৃদর দিয়ে অন্তব করতে পারেন এবং সেইজক্ত কারে। উপর বিদ্বে প্রায়ই ছারী হর না; এমন কি বোর শক্রকেও মার্জনা করতে অপনার আটকার না।

আপনার মধ্যে পরিবর্তনপ্রিরতা যেমন আছে, পরিবার ও গৃহস্থালির ^{নিকে} তেমনি আকর্ষণও আছে। সেইজন্ত আপনি যেমন ত্রমণ বা

প্রবাদ ভালবাদেন, তেমনি প্রবাদেও গৃহস্থ চান। এর আদল অর্থ
হচ্ছে এই যে, আপনি সর্বত্র চান আপনার মনোভাবের অস্কুল
পরিবেশ। প্রতিক্ল ও সহাম্ভৃতিশৃত্য পারিপার্থিক আপনার পক্ষে
নিভান্ত পীড়াকর হ'য়ে ওঠে এবং দেখানে আপনি কোনমতেই ছির
বাকতে পারেন না।

একেবারে নি:দক্ষ অবস্থা আপনি মোটেই পছন্দ করেন মা।
সেইজক্ম গৃহ হ'তে দূরে গেলেও লাপনি নিজের চারপাশে একটা
আত্মীয়তার গণ্ডী গ'ড়ে তুলতে চান। অপরের সঙ্গে ভাবের আদান
প্রদান না হ'লে আপনার কোনমতেই স্বস্তি আসেনা। আপনার
এই প্রকৃতির জন্ম আপনি প্রায়ই লোকপ্রিয় হ'য়ে থাকেন এবং
জনসাধারণ প্রায়ই আপনার দিকে আকৃষ্ট হয়। আপনার এই
সক্ষপ্রিয়তার জন্ম, এমন কি আধ্যাত্মিক সাধনার ব্যাপারেও আপনি
নির্জন সাধনের চেয়ে স্বজনসাধনের পদ্পাতী হবেন এবং অনেকে
একসঙ্গে মিলে উপাসনা, নামকী ঠন ইত্যাদি সাংনার ভাল
লাগবে বেনী।

কাব্য, কলা, সঙ্গীত, চিত্র, অভিনয় ইত্যাদির দিকে আপনার একটা সহজ আকর্ষণ আছে, কিন্তু সে ক্ষেত্রেও আপনি রোম্যা**ণ্টিক** ব্যাপারের দিকে আকৃষ্ট হবেন। এসব বিষয়ে আপনি আর্টের চেম্বে আপনার বৈচিত্রা ও ভাবের প্রাবলাই কামনা করবেন বেশী।

মোট কথা আপনার প্রকৃতির মূলস্ত্র হচ্ছে ভাবপ্রবণতা। এই ভাবপ্রবণতা আপনার মধ্যে এত বেশী যে তার জন্ত আপনি যে কোন ত্যাগরীকার করতে পারবেন। যদি তা ঠিক পথে চালিত হয়, তাহ'লে একদিকে তা যেমন আপনাকে স্থাউচ্চ প্রতিষ্ঠা ও সম্মান দিতে পারে তেমনি বিপথে গেলে আপনাকে তুনীতির নিম্নতম তারে নামিয়ে নিয়ে যেতে পারে। পারিবারিক ও সামাজিক আবেষ্টনের উপর আপনার ভবিশ্বৎ নির্ভর করবে পুর বেশী।

অর্থভাগ্য

আর্থিক ব্যাপারে আপনি সাধারণতঃ হিসাবী ও সাবধানী লোক হবেন। অপবায় মোটে পঞ্জ করবেন না এবং অধিকাংশ ক্ষেত্রে আয় ব্যয়ের খুঁটনাটি হিসাবও রাণবেন। আপনার কাছে অর্থের বেশ একটা মূল্য আছে; তব্ও এক এক সময় আবেগের দারা পরিচালিত হরে সহসা এমন বহু ব্যর করতে পারেন যার জন্ম পরে অনুতাপ করতে হবে। আর্থিক ব্যাপারে ও অর্থ উপার্জন সম্বন্ধে আপনার মাধার নানারাপ কল্পনা উপস্থিত হবে, কিন্তু অনেক ক্ষেত্রেই তা ঠিক কাজে পরিশত করা সভব হবে মা। প্রথম জীবনে আর্থিক ব্যাপারে ভাৱতবৰ্ষ

একটা বিল্লসক্ষ্য অবস্থার মধ্য দিরে অপ্রসর হ'তে হবে। কোন কোন সমর বেছিসাবীভাবে অর্থনিয়োগ করে ক্ষতিপ্রস্তুও হ'তে পারেন। চুরি কি প্রতারণার দারা অর্থহানির আশকাও আছে।

কৰ্মজীবন

কর্মজীবনে আপনাকে অনেক বাধাবিদ্ন ও প্রতিছন্তিতার সমূখীন হ'তে হবে, কিন্তু ধীরভাবে অগ্রসর হ'তে পারলে আপনি তা অতিক্রম করে সাফলা অর্জন করতে পারবেন। প্রথম বরসে পারিবারিক বিপর্যরে আপনার উন্নতির কোন বিদ্ন হ'তে পারে অথবা পারিবারিক বার্থের জক্ত আপনার প্রকৃতির প্রতিকৃত্ব কাজে আত্মনিয়োগ করা প্রয়োজন হ'তে পারে। জীবনের শেবার্থে আপনার খ্যাতি ও সাফল্যের সন্তাবনা আছে। কৃষিকর্ম, গৃহভূমি, পথ প্রভৃতি সংক্রান্ত কাজ এবং জলজ বা তরল পদার্থের কোন ব্যবসা আপনার প্রকৃতির অ্রুক্ল। শিল্প, কলা, সাহিত্য ইত্যাদির সঙ্গে সংশ্লিষ্ট এবং জনসাধারণ সংশ্লিষ্ট স্বরক্ষম কাজে আপনি বেশ পটুডের পরিচয় দিতে পারবেন। জীবনের একেবারে শেবের দিকে সকল বিবর-ক্ম পরিত্যাগ করে জনহিতকর কাজে অথবা আধ্যান্ত্রিকতার অনুশীলনে আত্মনিয়োগ করতে পারেন।

পারিবারিক

আত্মীয়স্বজনের সঙ্গে জ্ঞাপনার বিশেষ অসদ্ভাব থাকবে না বটে এবং কর্মক্ষেত্রে উাদের কাছ থেকে আপনি সাহায্যপ্ত পেতে পারেন, কিন্তু আত্মীয়স্বজনের জন্ম আপনাকে অনেক বায় করতে হবে এবং পারিবারিক কারবে নিজের মনোমত কর্ম নির্বাচনে বিদ্বপ্ত উপস্থিত হ'তে পারে। কোন কোন সময় পারিবারিক ব্যাপারেও জন্ম আপনার কর্মহানি বা কর্মস্থানে কোনরূপ বিজ্ঞাত ভ্রমণ্ড অসম্ভব নয়। আপনাকে মধ্যে মধ্যে পরিবার থেকে বিচ্ছিন্ন হ'রে থাকতে হবে এবং কোন সমরে গৃহের থেকে বহু দূরে বা কোন তুর্গম স্থানে বাদ করতে পারেন। কিন্তু দূরে থাকতেও পারিবারিক দায়িত্ব আপনাকে অনুসরণ করবে এবং আপনাকে পরিবার সম্বধ্ধ ক্ম-বেণী চিন্তাও করতে হবে।

সেহ প্রীতির ব্যাপারে আপনার বিচিত্র অভিজ্ঞত। হবে। অনেক সমর অবস্থাগতিকে আপনাকে বাধ্য হয়ে প্রীতির পাত্র থেকে দূরে থাকতে হবে। আপনি স্বভাবতঃ স্নেহপরারণ হ'লেও, বিবেচনার অভাবে অনেক সমর এমন কাজ করতে পারেন যা প্রীতির পাত্রের ছঃপ কট্রের কারণ হ'রে দাঁড়াবে। সন্তানাদির ব্যাপারেও আপনার বিচিত্র অভিজ্ঞতা হবে। অকসাৎ সন্তানের সঙ্গে বিরোধ অথবা বিচ্ছেদ হওরাও অসম্ভব নয়। শেষ বয়দে আপনি ইচ্ছা করে সন্তানাদির সংশ্রব থেকে দূরে থাকতে পারেন।

বিবাহ

বিবাহ ও দাম্পত্য জীবন আপনার কর্মের উপর ক্ষ-বেশী প্রভাব স্থাপন করবে। আপনার বিবাহ ও দাম্পত্যজীবন সাধারণের

আলোচনার বিষয় হ'তে পারে, তা সে ভালর কল্পই হোক্, আর মন্দের জল্পই হোক্। সাধারণত: আপনি শ্রীর প্রতি মেহণীল হবেন কিন্তু আপনার কর্মের জল্প অনেক সময় তাঁর কাছ থেকে বিচ্ছিন্ন হ'রে থাকতে হবে। মোটের উপর আপনার শ্রী আপনার অমুগতই হবেন কিন্তু আপনার নিজের দোষে দাম্পত্যজীবনে অশান্তি সৃষ্টি হ'তে পারে। যাঁর জন্মমাস প্রাবণ অগ্রহারণ মাঘ অথবা চৈত্র, কিঘা যাঁর জন্মতিথি কৃষ্ণপক্ষের যন্ত্রী বা ত্রয়োদশী অথবা শুক্লপক্ষের চতুর্দশী বা পূর্ণিমা, এমন কারো সঙ্গেক বিবাহ হ'লে আপনার দাম্পত্যজীবন বেশ স্থাকর হবে।

বন্ধুত্ব

আপনার পরিচিত পূব বিস্তৃত হবে এবং আপনার বছ বিশ্বস্ত অমুচর পরিচর থাকবে। আপনার অধীনস্থ ব্যক্তিদের মধ্যে আপনি অনেক ঘনিন্ঠ বন্ধু পারেন ধাঁরা আপনার উন্নতির অন্ত যথেষ্ট চেটা করবেন। বন্ধুর জন্ম কিন্ত আপনাকে কম-বেশা ঝঞ্চাটও ভোগ করতে হবে। বিশেষতঃ অধীনস্থ ব্যক্তির কোন রকম বিপদের জন্ম আপনার অনেক সমর অলান্তি বা ছংগ উপস্থিত হবে। আপনার ঘনিন্ঠ বন্ধুত্ হবে উাদের সঙ্গে থাঁদের জন্মমাস আবণ অগ্রহারণ অথবা চৈত্র এবং থাঁদের জন্মতিথি কুকপক্ষের মন্তা কি ত্রয়োদশী অথবা শুক্রপক্ষের চতুর্বনী বা পূর্ণিমা।

স্বাস্থ্য

আপনার মধ্যে সংরক্ষণী শক্তি প্রবল, প্রতরাং আপনি চেষ্টা করলে আপনার বাহা ভাল রাথতে পারবেন। মধ্যে মধ্যে শ্লেমান্তনিত পীড়া বা উদর রোগের সম্ভাবনা হ'লেও আপনি নিজের ইচ্ছাশক্তি প্রয়োগে রোগ দূর করতে পারবেন। আহার-বিহারে যত মিতাচার অবলঘন করবেন আপনার বাস্থ্য তত ভাল থাকবে। মধ্যে মধ্যে উপবাস ও থাজের মধ্যে তরল পদার্থের আধিক্য আপনার বাস্থ্যের পক্ষে অনুকূল। জলাশরের নিকটে বাদ, নিয়মিত স্নান প্রভৃতিও আপনার বাস্থ্যে বৃদ্ধিতে সাহায্য করবে। আনেক সময় জল-চিকিৎসায়—আপনার নম্ভ বাহ্য কিরিয়ে আনতে পারে। আপনাকে মনে রাথতে হবে যে জলই আপনার প্রাণ।

অন্যাক্ত ব্যাপার

আপনার বছ এমণ হবে। অনেক সময় কোন গোপনীয় ব্যাপারের সংশ্রবে আপনার এমণ হ'তে পারে। এমণের মধ্যে কোন ছুর্গম প্রদেশে বা দূর বিদেশে আপনার জীবনও বিপন্ন হ'তে পারে, কিন্ত একটা অনুভা দৈবলক্তি আপনাকে রক্ষা ক'রে যাবে। দূর এমণে বা বিদেশে অকল্মাৎ কিছু প্রাপ্তি হওয়াও অসম্ভব নর।

স্মরণীয় ঘটনা

व्यानमात्र ४, २०, ७२, ८८ अहे प्रकल वर्ष व्यानमात्र मिरकत व्यवश

পরিবারের মধ্যে কোন ছুর্ঘটনা ঘটতে পারে। ২, ৪, ১৪, ১৬, ২৬, २৮, ७৮, ३•, ६• এই সকল বর্ষপ্রলিতে কোন আনন্দরনক অভিজ্ঞতা হ'তে পারে।

বৰ্ণ

व्यापनांत्र श्रीजि-श्रम ७ छागावर्षक वर्ष इत्त्रह नील। वित्नवहः ফিকে নীল, ফিরোজা প্রভৃতি আপনার বিশেব উপযোগী। দেহ-মনের অহুত্ব অবস্থায় কিন্তু সবুজরভের বাবহারে বেশী উপকার পাবেন। र्यात्र लाम त्र ७, वावशांत्र ना कताहे छाल।

বুতু

আপনার ধারণের উপযোগী রম্ব নীলা, পালা, ফিরোজা পাধর (Turkuyge) প্রভৃতি।

যে সকল খাতনামা ব্যক্তি এই রাশিতে জ্লেছেন তাদের জন-करहरकत्र नाम-श्रीधीतां पठल, महाञ्चा शाकी, त्ननिन, धन हिरखनवार्ज, পণ্ডিত জওহরলাল নেহেক, এমারসন, জন রাফিন, শরৎচক্র চটোপাধায়, অমুডলাল বহু, ডকটর ভাঙারকর, শশধর তর্কচডামণি প্রভৃতি।

বঙ্গীয় সংস্কৃত শিক্ষা পরিষৎ ডক্টর শ্রীযতীক্রবিমল চৌধুরী

বঙ্গীয় সরকার সংস্কৃত শিক্ষা সম্প্রসারণের নিমিত্ত যে পরিক্**রনা** গ্রহণ করেছেন, তা' অল্প-বিশুর সকলের স্থবিদিত। কয়েক মাসের মধ্যে কলিকাতা রাজকীয় সংস্কৃত মহাবিভালয়ে কয়েকজন নুতন অধ্যাপক নিযুক্ত এবং নবদাপে একটি নৃতন সংস্কৃত টোল সংস্থাপিত হয়েছে। ১০টি বড় টোলে মাসিক ৭৫১ পঁচাওর টাকা এবং ৯০টি অস্থান্থ টোলে মাসিক 👀 পঞ্চাশ টাকা হারে বৃত্তি প্রদান করা হয়েছে। এতদ্ভিশ্ন বাৎসবিক দশ হাজার টাকা যা' পুনের Imperial grant নামে চলতো-তাও এবার বৃত্তি হিদাবে ১২৫জন পণ্ডিতকে দেওয়া হয়েছে। পূর্নে পণ্ডিতমণ্ডলীকে যা' মাণ্ণি-ভাতা দেওয়া হতো ভার থেকে অনেক অধিকসংখ্যক পণ্ডিতমহাশয়দের মাগ্গি ভাতা দেওয়া হয়েছে। আশা করা যায় করপোরেশন এবং ডিষ্ট্রিট বোর্ড-সমূহও ।উত্তরোত্তর অধিকসংখাক পণ্ডিতকে সাহায্য প্রদান করবেন। সরকারের পরিকল্পনামুসারে কাঁথিতে সরকারী সংস্কৃত কলেজ স্থাপিত হলে এবং আজীবন সংস্কৃতদেবী পণ্ডিভধুরন্ধরদের নিমিঙ আজীবন-বৃত্তি গভর্ণমেন্ট কর্ত্তক প্রদত্ত হলে পণ্ডিতমণ্ডলীর ক্লেশের আরো লাঘ্ব হবে সম্পেহ নাই। পশ্চিম্বজীর সরকারের আরো অভিমত এই যে, যদি অর্থের সংকুলান হয় প্রতি বৎসর আরো ১০টি अधिकमः थाक छोटे টোল এবং २ हि अधिकमः थाक वर्ड हो। ल नामिक यथाक्राम ८०, शकान निका ७ १८, र्गहाउत्र होका वृत्ति ध्यानन করবেন, সর্ব্বসমেত ১৪·টী ছোট এবং ৩·টী বড় টোল বৃত্তি পেতে াারে। এই পরিকল্পনার সার্থকতা প্রার্থনা করি।

আম্ভ পরীক্ষার ভূগোল, ইতিহাস ও অহ এই বিষয়ত্রয়কে পাঠ্যতালিকার অন্তর্ভুক্ত করা হয়েছে। আজ আর এই বিষয়ে কারো মতহৈৎ নাই যে, পাঠ্যতালিকায় এই বিষয়দৰ্হের ^{অন্ত}ভূক্তি পণ্ডিতসমাজের প্রভূত কল্যাণপ্রস্ হবে। এই সম্ভ বিষয়বাপদেশে সংস্কৃতের সলে আধুনিক শিক্ষাপদ্ধতি এবং বর্ত্তমান অগতের নিকটভর সম্পর্ক ফুসংস্থাপিত হবে এবং উত্তর জীবনে আমাদের ইতিসমাল এতে বিশেব উপকৃত হবেন।

১৯৪৭ দালে বঙ্গীয় সংস্কৃত সমিতির সমাবর্ত্তন অভিভাষণে আমি বলেছিলাম—'আমাদের মূল লক্ষ্য বঙ্গীয় সংস্কৃত সমিতি ও সংস্কৃত কলেজের সময়য়ে একটি পূর্ণাক্স সংস্কৃত বিশ্ববিভালয় স্থাপন। বর্ত্তমানে আমরা পরীকা-গ্রহণ-সমিতিই মাত্র। কিন্তু আমরা চাই সংস্কৃত সাহিত্য, বিজ্ঞান, শিল্প প্রভৃতি বিষয়ে শিক্ষা বিভাগ প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য পদ্ধতি অত্যায়ী ও তুলনামূলক প্রাচ্য গবেষপ্রাদির সর্ব্বস্থোগস্থলিত অপুর্ন গবেষণা বিভাগ, গ্রন্থ প্রকাশক বিভাগ প্রভৃতি সম্বলিত একটি পূর্ণায়তন বিশ্ববিষ্ঠালয় ।"

স্থাের বিষয় ১৯৪৮ সালের এপ্রিল মাসে বিচারপতি ভক্তর ছীবিজন-কুমার মুপোপাধায়ের সভাপতিত্বে নিয়লিপিত হুধীবৃল্পসহ—

(১) শীমতুলচন্দ্র গুপু, (২) ডক্টর শীমুনীভিকুমার চট্টোপাধ্যায়, (৩) মহামহোপাধাায় শ্রীযোগেলনার তর্ক সাংখ্য বেদান্ততীর্থ, (৪) মহা-মহোপাধায় খীনীতারাম শান্ত্রী, (৫) মহামহোপাধায় খ্রীকালীপদ ভর্কাচার্য্য, (৬) ডক্টর শীলপেক্রকুমার দত্ত, (৭) ডক্টর শীক্ষীলকুমার দে. (৮) কবিরাজ শ্রীরামচল মল্লিক, (১) ভট্টর শ্রীনরেল্রনাথ লাহা. (১০) পণ্ডিত শ্রীনারায়ণচন্দ স্থতিতীর্থ, (১১) ডক্টর শ্রীদাভকড়ি মুখোপাধ্যায়, (১২) ডক্টর শীলেহময় দত্ত, পশ্চিমবঙ্গের ডিরেক্টর অব পাব্লিক ইন্স্ট্রাক্শন্. (১৩) শীমবিনাশচন্দ্র মন্ত্রদার, (১৪) অধ্যক্ষ ডক্টর শীযতীশ্রবিমল চৌধুরী, সম্পাদক—

যে সংস্কৃত বিজ্ঞোন্নয়ন সমিতি গঠিত করেন, সে সমিতিও বৎসরের মধ্যে বঙ্গদেশে সংস্কৃত বিশ্ববিদ্যালয় স্থাপনীই মৌলিক লক্ষ্য वल शावना करवन।

এই সমিতির সদক্তবুন্দের স্প্রিশ্বতিক্রমে গুহীত প্রস্তাবামুসারে ১৯৪৯ সালে পশ্চিমবঙ্গীয় সরকার বঙ্গীয়-সংস্কৃত-সমিতিকে বঙ্গীয় সংস্কৃত শিক্ষাপরিষৎ এই নৃতন নামে অভিহিত করে বছল সংস্কৃতোরয়ন ৰুশ্ব প্ৰচেষ্টার ভ্রতী হন। যদিও বঙ্গদেশের সমগ্র পণ্ডিতমণ্ডলী ও দংস্কৃতামুরাগিবুন্দের লক্ষীভূত এই সংস্কৃত বিশ্ববিষ্ঠালয় সংস্থাপনের मिक् (चटक अधि य व्यवश्र एक मूठना उपविषय मास्त्र व्यवकान नाहे,

তথাপি অভাপি আমরা পুর্কের মত পরীক্ষা গ্রহণ সমিতি এবং বর্ত্তমান সরকারের নির্দ্ধেশ অনুসারে বৃত্তি বিতরণ সমিতি মাত্র। অবশু আমরা সর্ব্বধা এ আশা পোষণ করি যে, বে শিক্ষামন্ত্রী ও সভাপতি ৬ক্টর বিজনকুমার মুখোপাধ্যার মহাশরের প্রোৎসাহে অল্পদিনের মধ্যে বিশ্ববিদ্যালয় সংস্থাপনের স্চনা সম্ভবপর হয়েছে, তাদেরই সাহায্যবলে আমরা আমাদের অভীষ্টলাভে সমর্থ হব। এই উদ্দেশ্য সংসাধনের নিমিত্ত আমাদের মৃথ্য প্রয়োজনাবলী এই—

- ১। একটী স্থায়ী নিজস বাসভবন। বর্ত্তমান কার্যালয়ের ভাড়াটে গৃহটী প্রথমতঃ এত কুমাকার যে তাতে আমাদের অভিলয়িত কোন কাজই চলিতে পারে না। বিতীয়তঃ এই গৃহটী বিপজ্জনক এলাকার অবস্থিত। বিশেষতঃ পণ্ডিতমঙলীর যাতায়াতের পক্ষে এ অঞ্চল বিশেষভাবে অস্বিধাজনক। সেজক্ত অতি শিঅই এ বাসভবন পরিবর্ত্তন আব্যাক।
- . ২। একটা গবেষণা-বিভাগ সংস্থাপন।
- ৩। একটা গ্রন্থাগার সংস্থাপন। পুরববদাগত উদ্বাস্থ পণ্ডিতমণ্ডলী বে সমত্ত অমূল্য পুঁলি ও গ্রন্থ নিয়ে এসেতেন, সেই সম্দরের
 সংরক্ষণ অত্যাব্শুক। বিশেষতঃ সরকারী বৃত্তি প্রদানপূর্লক যে ২২০টী
 টোল পরিচালনা করা হচেছে এবং ডিট্রিক্ট বোর্ড, প্রভৃতি যে সমন্থ টোলের
 অর্থসাহাযাবিধানপূর্লক সহায়তা করছেন, বঙ্গায় সরকারও
 মাণ্ণী ভাতা প্রদানপূর্লক যে পাঁচশতাবিক টোলের সংরক্ষণে তৎপর
 হল্লেছেন এই সমত্ত টোলের দরিক্র পণ্ডিতমগুলীর সর্কবিধ পঠন পাঠনের
 ক্রেয়োল-স্বিধা নিয়ন্তর্গের নিমিত্ত সমিতির একটা কেন্দ্রীয় গ্রন্থালয়
 স্থাপন অভিরে প্রন্থাজন। পণ্ডিতমগুলী অশেষ ত্রুগদারিত্রা সল্পেও
 যেসব গ্রন্থ বির্হিত করেছেন তৎসমূহের সংরক্ষণ্ড এ গ্রন্থালয়র
 অবস্থা লক্ষীভূত হবে।
- ৪। গ্রন্থ-প্রকাশ বিভাগ স্থাপন। ১৯৪৮ সালে উদ্থান্ত পণ্ডিতগণ কর্তৃক রচিত, অনুদিত ও সম্পাদিত বহু মৃল্যবান গ্রন্থ অপ্রকাশিত অবস্থার আছে। তণ্ডির আমাদের পরিবদের পরীকার জন্ম নির্দিষ্ট পাঠ্যপুত্তকাবলীর অধিকাংশই ছাপা নাই। এই জন্ম গ্রন্থপ্রকাশ বিভাগ স্থাপন অবিলয়ে অত্যাবশাক। বলা বাছত্য, এতে যে কেবল ছাত্র ও সংস্কৃতাকুরাগির্দের উপকার সাধিত হইবে তা নয়, পরস্ক পরিবদের ভবিশ্বৎ আয়েরও একটী প্রকৃষ্ট পন্থা অবলম্বিত হবে নিঃসন্দেহ।
- ে। পরিবদের মৃথপত্ররপে সংস্কৃত, হিন্দি, বাঙ্গালা ও ইংরাজী রচনাসংবলিত একটা গবেষণা পত্রিকা পরিচালনা। এই পত্রিকাই সমগ্র ভারতের সর্পত্র যত চতুস্পাঠী ও কেন্দ্র আছে দেইদব কেন্দ্রের ছাত্র অধ্যাপক ও হিতৈষিবৃদ্দের মধ্যে একটা বিশিষ্ট সংবাোগত্তর সংস্থাপনের অক্ষতম উপায়। তঘাতীত, সমগ্র বিশে সংস্কৃত জ্ঞান সম্প্রাপবের নিমিত্ত এ পত্রিকা পরিচালনা অত্যাবশ্রক।
- ৬। বৃদ্ধ, অসমর্থ, অতিহ্:স্থ পণ্ডিতমণ্ডলীর নিমিত্ত একটী স্থারী সাহায্যভাপ্তার সংস্থাপন। বিশেষতঃ হারা সংস্কৃত বিভাসুশীলনের নিমিত্ত প্রথিতবংশাঃ, অর্থচ বর্ত্তমানে জীবিকার্জনের উপায়বিহীন, তারা যাতে পরম্থাপেকী না হরে সসম্মানে বাকী জীবন অতিবাহিত করতে পারেন তজ্ঞ্ঞ তাঁদের নিয়মিত মাসিক বৃত্তি প্রদান অত্যাযুগ্ডক।

- বিশিষ্ট বিশিষ্ট ছার্নে সরকারী টোল ছাপন। কাঁথিতে অচিরে
 সরকারের পরিচালিত টোল ছাপন একান্ত বাঞ্চনীয়।
- ৮। আয়ুর্বেদ, অর্থনীতি প্রভৃতি নৃতন বিষয়সমূহের পরীকা প্রচলন ব্যবস্থা, এবং ভূগোল, ইতিহাদ, অভ, সংস্কৃত সাহিত্য ও সভাতার ইতিহাদ বিরচনের ব্যবস্থা।

আকস্মিক বিপদে অভিতৃত পূৰ্ববঙ্গ হইতে বিভাড়িত উদ্বাস্ত পণ্ডিতমণ্ডলীর হু:থে আমরা গভীর সমবেদনা জ্ঞাপন করছি। তাদের এই বিপৎপাতে পরিষৎ কিছুতেই উদাসীন থাকতে পারে না। ১৯৪৮ সালের আগষ্ট মাসে তৎকালীন বন্ধীয় সমিতির সম্পাদকের পরিকলনান্ত্রসারে পশ্চিমবঙ্গীয় সরকার উদ্বাস্ত পণ্ডিভগণের সাহায্যার্থ ত্রিশ হাজার টাকা তৎকালীন বঙ্গীয় সংস্কৃত এসোসিয়েগনের হল্তে প্রদানপূর্ব্বক আমাদের সকলের কুতজ্ঞতাপাত্র হয়েছেন। এই পরিকল্পনার একটা বিশেষ বৈশিষ্টা চিল-প্রতি মহাশ্যদের •সদ্মানে অর্থার্জনের বাবস্থা। অফুবাদ, পুঁথি নকল, প্রবন্ধ বিরচন, অভিধান সঙ্কলন প্রভৃতি শ্রেয়: কার্য্যের বিনিময়ে অর্থার্জ্জন তার। করেছিলেন। এই ব্যবস্থামুসারে ১৬০জন পণ্ডিত মাসিক ৯০১ নকাই টাকা পর্যান্ত আগন্ত থেকে ডিসেম্বর অব্ধি সাহাযালাভ করেছিলেন। দেশ বিদেশের পণ্ডিত্রমগুলীও এই ব্যবস্থার প্রভূত প্রশংসা করেছিলেন। বর্ত্তমানেও এরপে ব্যবস্থার পুন: প্রবর্ত্তন একান্ত আবশ্রক।

ভারতবর্ণীয় সমস্ত ভাষার জননীরপে সর্ব্বজনবন্দ্যা। এই সংস্কৃতই ভারতবর্ণীয় সমস্ত ভাষার জননীরপে সর্ব্বজনবন্দ্যা। এই সংস্কৃতই ভারত-জননীর পূর্ণ রূপ প্রতিফলিত হয়েছে। সংস্কৃতামুশীলনে তাই যাঁরা দত্থাণ, তাঁদের আমি শুতি নিবেদন করি। সংস্কৃতের অশেষ দীপ্তি মনীধীবৃন্দের চিত্ত অমুরঞ্জনপূর্ব্বক অভ্যুক্ত হিমাচল-গলে কিরীটগ্রাতিরপে শোভা পাবে। শত শত প্রাক্ত ও মনীবিগণের পদপ্রান্তে আজ আমি আমাদের পরম আশা ও আনন্দত্বল নবজাত এই সংস্কৃত শিক্ষাপরিয়দের জন্ম তাঁদের অশেষ আশীব্বাদ ও ওংহচছা প্রার্থনা করি।

হিংসার উন্মত্ত পৃথিবীতে ভারতবর্ধই দেখাবে মৃক্তির পথ। ভারতবর্ণের শাখত শাস্তি, প্রেম ও বিখমৈত্রীর অমৃত্তমন্ত্রী বাণী সমগ্র বিবে আজ প্রচারিত হোক্ এবং তারি ধারক ও বাহক গীর্কাণবাণীর অশেষ মহিমা দিগ্রিভিউন্তানিত হোক্।

> "গায়ন্তি দেবা: কিল গীতকানি ধন্তান্ত তে ভারতভূমিভাগে। ন্বর্গাপবগাস্পদমার্গভূতে ভবন্তি ভূয়: পুরুষা: স্বন্ধাৎ॥"

> > विकृत्रवान, राज्याररारह

অর্থাৎ "অক্ত সব দেশ ভোগভূমি, ভারতবর্ষ কর্মভূমি; ভাই দেবতাদের মধ্যেও ভারতবর্ধের সম্পর্কে এই পৌরগীতি প্রচলিত আছে যে ভারতভূমি ছচ্ছে স্বর্গ ও ধর্মাদি অপবর্গনাভের মার্গবর্মণ। সেই ভারতভূমিতে বাঁরা জন্মগ্রহণ করেন ভারা দেবতার চেমেও ধন্ত।"

রু(স

এতারকচন্দ্র রায়

(পূর্ব্বপ্রকাশিতের অনুবৃত্তি)

ক্রমোর রাজনৈতিক মত তাঁহার Social Contract এ বিবৃত্ত আছে। এই প্রস্থে ভাবুকতা বেশী নাই, যুক্তিক প্রচুর আছে। প্রস্থের প্রার্ভেই আছে "মামুধ ক্রমিয়াছে স্বাধীন, কিন্তু সর্ব্বেই সে অধীনতার শৃথলে আবন্ধ। একজন আপনাকে অন্তের প্রভু বলিয়া মনে করে, কিন্তু বল্পত: সে তাহাদিগের অপেক্ষাও অধিকতর পরাধীন।" স্বাধীনতাই দৃশ্যত: ক্রমোর চিতার লক্ষ্য হইলেও, সাম্যই তাঁহার নিকট অধিকতর মূল্যবান ছিল এখং স্বাধীনতার বিনিময়েও তিনি সাম্য-প্রতিষ্ঠার পক্ষণাতী ছিলেন।

গ্রন্থে প্রজাতন্ত্রের প্রশংসা আছে। কিন্তু প্রজাতন্ত্র বলিতে রূপো প্রাচীন গ্রানের নগর রাষ্ট্রের মত (City State) কুল্র রাষ্ট্রই ব্রিয়া-ছিলেন। এই সমস্ত কুল্র রাষ্ট্রের প্রত্যেক নাগরিকের পক্ষেই রাষ্ট্রশাসনের সহিত সংযুক্ত থাকা সম্ভবপর, কিন্তু বড় বড় রাষ্ট্রের পক্ষে প্রজাতন্ত্র তাহার মতে উপযোগী নহে। এই জন্ত বড় বড় রাষ্ট্রের পক্ষে প্রজাতন্ত্র তাহার মতে উপযোগী নহে। বর্ত্তমানে যাহাকে প্রজাতন্ত্র বলা হয়, রুপো সেই প্রতিনিধিমূলক শাসনকে (Representative Government) নির্বাচনমূলক অভিজাত তন্ত্র (Elective aristocracy) বলিয়াছেন। ভাহার মতে ছোট ছোট রাষ্ট্রের পক্ষে প্রজাতন্ত্র ইছাল; মধ্যম স্থাকারের রাষ্ট্রের পক্ষে শ্রন্ডিজাত তন্ত্র এবং বৃহৎ রাষ্ট্রের পক্ষে রাজ্তন্ত্র উৎকৃষ্ট।

"নির্বাচনমূলক অভিজাত তন্ত্র"ই রুদোর মতে সর্বোৎকৃষ্ট। কিন্ত ইং। সকল দেশের উপযোগী নহে। যে দেশের জল বারু নাতিশীতোক্ষ, যে দেশে প্রয়োজনের অতিরিক্ত জব্য উৎপন্ন হয় না, এই শাসন কেবল সেই দেশেরই উপযোগী। কোন দেশের উৎপন্ন জব্যর পরিমাণ যদি প্রয়োজনের অতিরিক্ত হয়, তাহা হইলে তাহাদিগের অধিবাসিগণ বিলাসী হইয়া পড়ে। সমগ্র সমাজের মধ্যে বিলাসের প্রদার অপেকা দেশের রাজাও তাহার সভাসদ্গণের মধ্যে তাহা সীমাবক্ত খাকাই মজলকর। এই মত অমুসারে পৃথিবীর বহু দেশই প্রজাতন্ত্র শাসনের উপযুক্ত নহে, যথেচ্ছাচারী রাত্যশাসনই তাহাদের উপযোগী। ইহা সত্ত্রেও ক্ষরাসী গভর্গমেন্ট যে এই গ্রন্থের প্রতি ভীবণ বিষেব পোষণ করিতেন, তাহার কারণ ইহাতে প্রজাতন্ত্রের প্রশাসা ভিল এবং রাজাদিগের "ঈশ্বর দত্ত অধিকার" (Divine Right of Kings) ইহাতে শেপুতঃ অধীকার করা না হইলেও, "চুক্তি" হইতে রাষ্ট্রশাসনের উৎপত্তি হইরাছে, এই মত ধারা ভাগা অধীকৃত হইয়াছে।

মাত্রবের ব্ধন শৃষ্টি হইরাছিল, তখন তাহারা সমাজবৰ হইরা বাস

করিত না। প্রত্যেকেই সাধীন ছিল ও নিজের ইচ্ছাতুসারে চলিত। কিয় কালক্রমে এইরপে বিভিন্ন থাকা সম্ভব হটল না। পরস্পরে মারামারি কটোকাটি না করিয়া পরম্পরের রক্ষার জন্ম সন্মিলিত প্রচেষ্টার প্রয়োজন অনুভূত হইল। সকলের সন্মিলিত শক্তি দার। প্রত্যেকের জীবন ও সম্পত্তি রক্ষা করিয়া কিরূপে প্রত্যেকের স্বাধীনতা রক্ষা করা যায়, ইহাই হইল তখনকার সমস্তা। "সামাজিক চ্কি" দারা এই সমস্তার সমাধান হইয়াছিল। এই চুক্তি অনুসারে প্রত্যেকর যাবতীয় অধিকারসহ আপনাকে সম্পূর্ণরূপে সমাজের নিকট সমর্পণ করিতে হয়; কোনও অধিকায়ই নিজের জন্ম রাখিয়া দেওয়া চলে না। কিন্তু ইহাতে ব্যক্তির স্বাধীনতা রক্ষিত হইল কোপায় ? ইহার উত্তরে ক্লো বলিয়াছেন—"প্রত্যেকেই যদি সম্পূর্ণভাবে আপনাকে দান করে, ভাগ হইলে সমাজের সকলের অবস্থাই সমান হইরা যায়, স্বভরাং এই অবস্থা কাহারও পক্ষে কট্টকর করিয়া তুলিবার ইচ্ছা কাহারও মনে উদিত হয় না। যদি সম্পূর্ণরূপে আপনাকে দান না করিয়া প্রত্যেকে क उक्क लि अधिकात त्राथिया भिक्त, छाटा ट्टेल क्ल ट्टेंक बड़े ख রুক্তি অধিকারসমূহ সম্বন্ধে বিবাদ উপস্থিত হইলে তাহার মীমাংসা করিবার কেহই খাকিত না। ইহার ফলে প্রস্টেকেই আপন ইচ্ছামত আপনার অধিকাত্মের ব্যাণ্যা করিত ; সমাজ-সংহতি বিনষ্ট হইয়া যাইত, নতুবা সমাজই যথেচছাচারী হইয়া পড়িত।" এই মতে প্রকৃত-পক্ষে ব্যক্তির কোনও অধিকারই থাকে না. সমস্ত অধিকারই রাষ্ট্রে সমর্পিত। অন্তত্র রুসো ব্লিয়াছেন "যদিও সামাজিক চুক্তি ছারা প্রভ্যেক ব্যক্তির উপর রাষ্ট্রকে পূর্ণ ক্ষমতাই অদত্ত হইয়াছে, ভথাপি মামুবের স্বাভাবিক অধিকারও আছে। সার্ব্বভৌম শক্তি অধীনন্ত লোক্দিগকে রাষ্ট্রের পক্ষে অনাবশুক কোনও শুঝল ছারা বন্ধ করিতে পারেন না। এরূপ করিবার ইচ্ছাই ভাগার হইতে পারে না।" কিন্তু সার্ব্বভৌষ শক্তিই যথন সমাজের প্রয়োজনের বিচারকর্তা, তথন রাষ্ট্রের অত্যাচার ইহা বারা প্রতিক্রম হইবার সম্ভাবনা কম।

Bertrand Russel এইভাবে সামাজিক চুক্তির ব্যাণ্যা করিরাছেন:
আমাদের প্রত্যেকে তাহার দেহ ও সমস্ত ক্ষমতা সর্বানিরস্তা (General Will) সাধারণ ইচ্ছার নিয়ন্ত্রণের অধীনে স্থাপিত করি; এবং আমাদের সম্মিলিত অবস্থার প্রত্যেককে সমগ্রের অচ্ছেল্ড অংশ বলিরা প্রহণ করি।" এই সমবার বারা একটি নৈতিক সমবারী অসীর স্পষ্ট হয়। নিজ্ঞির অবস্থার এই অস্কীকে 'রাষ্ট্র' বলে; ক্রিয়মান অবস্থার ইহার নাম Sovereign (সর্বাণজিমান) এবং সদৃশ অভ্যাসমবারীর সম্পর্কে ইহার নাম শক্তি (Power)। 'সাধারণ ইচ্ছা' বলিতে ক্রনো সমাজের

অন্তৰ্গত সকল বাজির মতন্ত্র মতন্ত্র ইচছার সমষ্টি বোঝেন নাই. অথবা ভাহাদের অধিকাংশের ইচ্ছা বোঝেন নাই, সকলের সমবায়ে যে অসীর উদ্ভব হয়, তাহার ইচছাই বুঝিয়াছেন। হব্দের (Hobbs) মতে বছর সমবায়ে গঠিত সমাজ একটি পুরুষ (Person)। এই মত গ্রহণ করিলে পুরুষের সমস্ত বৈশিষ্ট্য এই অঞ্চীর আছে। স্থতরাং ইচছাও আছে। কিন্তু সমবায়ী পুরুষের এই ইচছার নিদর্শন কি ? সাধারণ ইচ্ছা দকল দময়েই ফ্রায়দকত এবং দাধারণের মকলনায়ক বলা হইরাছে। কিন্তু "সাধারণ ইচ্ছা" ও "সকলের ইচ্ছা"এক পদার্থ নহে। প্রত্যেক ব্যক্তির রাজনৈতিক মত তাহার ব্যক্তিগত খার্থ মারাই নিয়ন্ত্রিত। কিন্তু প্রত্যেক "স্বার্থের"ই চুইটি অংশ আছে। একটি ব্যক্তিগত, দ্বি ীয়টি দকল ক্ষেত্ৰেই অভিন্ন। যদি ব্যক্তিগত স্বাৰ্থনিদ্ধির জতাপরস্পরের মধ্যে কোনও চুক্তি নাহয়, তাহাহইলে পরস্পর বিরুদ্ধ স্বার্থের কাটাকাটি হইয়া ঘাইবে, তাহাদের কিছুই অবশিষ্ট থাকিবে না; সকল ক্ষেত্রে অভিন্ন অংশই অবশিষ্ট থাকিবে, দেই অভিনাংশই "দাধারণ ইচ্ছ।"। পুৰিবীর প্রত্যেক প্রমাণু বিষের প্রত্যেক প্রমাণুকে আকর্ষণ করে। আমাদের উপরস্থিত বায়ু আমাদিগকে উর্দ্ব দিকে আক্ষণ করে, পদত্তলম্ব মৃত্তিকা নিম্নদিকে আকর্ষণ করে। কিন্তু দেই সমস্ত বিভিন্ন "সার্থপত্ন" আকর্ষণ কাটাকাটি হইয়া অকাষ্যকর হইয়া পড়ে; অবশিষ্ট ঘাহা থাকে, তাহা হইতে পুথিবীর কেন্দ্রান্তিমুগী আকর্ষণ উৎপন্ন হয়। পৃথিবীকে সমাজ বলিয়া গণ্য করিলে, তাহার কেন্দ্রাভিমুগী व्याकर्रनरक छोडां माधात्रन हेच्छा ननः योत्र । "माधात्रन हेच्छा मर्न्तनाहे श्राव्यमक्र - हेशद वर्ष এहे य- এই हेल्हा मकल व्यक्तिगठ यार्थद মধো সামাজ্যের প্রতীক বলিয়া, ইহা ছারাই সর্ব্যাপেকা অধিক পরিমাণে সমবেত স্বার্থনিদ্ধি সম্ভবপর হয়।

Sovereign এর ইচ্ছাই "সাধারণ ইচ্ছা"। তাহা সকল সময়ই
স্থায়সকত। প্রত্যেক নাগরিকের ইচ্ছা ইহার অন্তর্গত। কিন্তু সাধারণ
ইচ্ছার বিরোধী তাহার ব্যক্তিগত ইচ্ছাও তাহার মাছে। কেহ এই
ব্যক্তিগত ইচ্ছার বশে যদি সাধারণ ইচ্ছার আদেশ পালন না করে,
তাহা হইলে তাহাকে তাহা পালন করিতে বাধ্য করা প্রয়োজন। কুসো
বলিয়াছেন এই বাধ্য করার অর্থ—তাহাকে "বাধীন" হইতে বাধ্য করা।

Bertrand Russel বলেন—"এই স্বাধীন হইতে বাধ্য করার অর্থ অত্যধিক পরিমাণে দার্শনিকতাজড়িত (very metaphysical)! গ্যালিলিওর সময় কোপারনিকাদের মত সাধারণে গ্রহণ করে নাই। পৃথিবী বে সুর্ঘের চতুর্দিকে জমণ করে তাহা কেছ বিশাস করিল না। তথন "সাধারণ ইচ্ছা" নিশ্চয়ই কোপারনিকাদের বিরোধী ছিল। Inquisition যথন গ্যালিলিওকে সেই মত প্রত্যাহার করিতে বলিল, তথন কি গ্যালিলিওকে স্বাধীন হইতে বাধ্য করা হইল ? জুরাচার ব্যক্তিকে অপরাধের ক্রম্মত যথন কারাগারে আবদ্ধ করা হয়, তথন কি তাহাকে স্বাধীন হইতে বাধ্য করা হয় ? স্বনোর Romanticism দ্বারা অস্থাণিত বাররণের রচিত Corstir গ্রন্থে যে নৌ-দস্য অতল নীল সমুজ্রের বক্ষে সমুজ্রেই মত অসীন চিন্তা ও স্বাধীন হুদ্র লইয়া বিচরণ

করিত, ভাহাকে কারাগারে বন্ধী করিয়া রাখিলে কি দে অধিকতর 'বাধীন' হইত ? হেগেলও ক্রনোর মতই "বাধীনতা" শব্দের অপব্যবহার করিয়া রাষ্ট্রের আদেশ পালন করিবার অধিকারকেই বাধীনতা বলিয়াছেন।" এই সমালোচনা সঙ্গত বলিয়া মনে হয় না। ব্যক্তিগত বার্থের সংকীর্ণ গঙী হইতে, বার্থপর ইচছার আবিলতা হইতে মুক্ত হওয়াকেই রুদো বাধীনতা বলিয়াছেন। মত্তপ যথন পানাসক্তির দাস হইয়া পড়ে, তখন বলপ্রয়োগ বারাও ভাহাকে সেই অভ্যাস হইতে মুক্ত করিলে, তাহাকে যে বাধীনতা লাভে সাহায্য করা হয়, তাহাতে সক্ষেহ নাই।

ব্যক্তিগত সম্পত্তির উপর রুদোর শ্রন্ধা ছিল না। তিনি বলিয়াছেন, রাষ্ট্রের অন্তর্গত সকলের সম্পত্তির রাষ্ট্র মালিক।

কিন্ত রাষ্ট্রীয় শাসনে এই "সাধারণ ইচ্ছা" বাধাপ্রাপ্ত হয় কেন, ইহার উত্তরে ক্রুসো রাষ্ট্রের অধীনস্থ বহু সমরেত মপ্তলীর অন্তিংছর উল্লেপ করিয়াছেন। এই সমস্ত মপ্তলীরও স্বতন্ত স্বতন্ত্র "সাধারণ ইচ্ছা" আছে, সেই ইচ্ছার সহিত সমগ্র সমাজের "সাধারণ ইচ্ছার" সংঘাত সম্ববপর। এই সমস্ত নিমন্থ সাধারণ ইচ্ছার অন্তিত্ববশতঃ, যত লোক তত ভোট থাকে না, যত নপ্তলী তত ভোট হইয়া দাঁড়ায়। সাধারণ ইচ্ছাকে রাষ্ট্রের শাসনে ব্যক্ত করিতে হইলে, রাষ্ট্রের মধ্যে অধীনস্থ মপ্তলী গঠন নিষদ্ধি করিতে হয় এবং প্রত্যেক নাগরিককে তাহার নিজের চিন্তা ঘারাই চালিত হইতে হয়। লাইকারগান প্রতিষ্ঠিত শাসনতত্ত্বে তাহারই ব্যবস্থা ছিল। Machiavel এই মত পোষণ করিতেন বলিয়া ক্রুসো লিপিয়াছেন।

এই মতের পরিণতি কোধায় বিবেচনা করিলে দেখা যাইবে, ইহাতে চার্চচ, রাজনীতি, ট্রেড ইউনিয়ন, অথবা আর্থিক স্বার্থসহত কোনও দলেরই স্থান নাই। "দামগ্রিক রাষ্ট্রে" (Totalatarian Biate) স্পষ্টগু:ই ইহার পরিণতি। দে রাষ্ট্রে ব্যক্তির কোনও ক্ষমতাই নাই। সর্ক্রিধ মওলী নিবিদ্ধ করা গে ছল্লহ, তাহা হৃদয়ক্ষম করিয়া লগোলিখিয়াছেন, যে নিমন্থ মওলীগঠন নিবিদ্ধ করা যদি সম্ভব না হয়, তাহা হইলে তাহাদের সংখ্যা যত অধিক হয়, ততই ভাল; বছসংখ্যক মওলীর মধ্যে পরস্পরের বিরোধ বশতঃ তাহাদের কার্য্যকারিতার নাশ হইয়া যাইবে।

শাসনের বিষয় আগোচনা করিবার সময়, দেশের শাসন বিভাগ যে একটি স্বভন্ন বার্থ ও সাধারণ ইচ্ছাবিশিষ্ট মঙলী, তাহা রুসো শীকার করিয়াছেন। বড় বড় রাষ্ট্রের শাসন বিভাগের ক্ষুত্র রাষ্ট্রের শাসন বিভাগে অপেকা অধিকতর ক্ষমতাশালী হওয়া প্রয়োজনও অধিক। শাসন বিভাগের তিওলা করিবার তিনটি ইচ্ছা—নিজের ব্যক্তিগত, তাহার দলগত ও "সাধারণ" ইচ্ছা। ইহাদের মধ্যে বিরোধে রাষ্ট্রের সাধারণ ইচ্ছা সম্পূর্ণ কার্যাকরী হইতে পারে না।" বথন কোনও লোক শাসকের পদে প্রতিপ্তিত হয়, তথন তাহার সমন্ত পারিপার্থিক অবস্থাই তাহার প্রজ্ঞাও ধর্মজ্ঞান অপংরণের সহায়তা করে।" হুত্রাং দেখা বাইতেছে

"সাধারণ ইচ্ছা সর্ব্যসময়েই বিশুদ্ধ ও অপরিবর্ত্তনীয় হইলেও, তাহা ছারা অত্যাচারের প্রতিবিধাক হয় না, দে সমস্তা অমীমাংসিতই রহিয়া । বিশেষ বিশেষ ক্ষেত্রে পরীকা করিলে দেখা বায়, যে রাজনৈতিক সমস্তার সমাধানে ক্লুসোর Social Contract বিশেষ কিছুই সাহায্য করে নাই।

ক্লোর ধর্মমত তাহার Emile প্রবন্ধ Confession of a Savoyard Vicar শীৰ্ষক অধায়ে বৰ্ণিত আছে। ঈৰৱে তাহার দৃঢ় বিখাদ ছিল, কিন্তু এই বিশাস বৃদ্ধিগ্রাহ্ম কোনও যুক্তির উপর এতিষ্ঠিত ছিল না; হাদয়ের অমুভূতি ছিল তাহার ভিত্তি। একবার কোনও মহিলাকে তিনি লিখিয়াছিলেন "কখনও কখনও নিৰ্জ্জন অধায়ন কক্ষে অন্ধকারের মধ্যে, অথবা দিবালোকে হস্তবারা চকু আবৃত করিয়া আমার মনে হইয়াছে ঈশর নাই; কিন্তু প্রভাতে যুখন উদীয়মান তুর্যা নয়নগোচর হইয়াছে, যথন ভাহার আলোকে কুজাটিকার আবরণ উলোচিত হইয়া একৃতির দীপামান বিচিত্র মূর্ত্তি দৃষ্টিদমীপে আবিভুতি হইয়াছে, তথনই আনার অভরের সমত্ত সন্দেহ নিরাকৃত হইয়াছে; আমার বিখাস ফিরিয়া আদিয়াছে, আমার ভগবানকে পুন:প্রাপ্ত হইয়াছি। আমি তাহাকে শ্রদ্ধা করি, ভক্তি করি, তাহার সম্মূপে সাষ্টাঙ্গে প্রনিপাত করি।" অস্ত একজনকে লিখিয়াছিলেন "অস্ত সতো যেমন, ঈখরেও তেমনি আমার প্রবল বিখাস আছে। কেননা আমার বিখাস অথবা অবিখাদ আমার নিজের উপর নির্ভর করে না।" এক সময়ে এক ভোজে নিম্মিত ভজলোক নিগের মধ্যে কেই ঈশরের অভিতে সন্দেহ প্রকাশ করায় রূপো বিরক্ত হুইয়া ভোজগৃহ ভ্যাগ করিতে উত্তত ংইয়াছিলেন।

দার্শনিক দিণের যুক্তিতকে সন্দেহ অপগত না হইয়া বরং বৃদ্ধি প্রাপ্ত २म (पश्या ऋमा पार्विनक आलाइना वर्জन कविया अग्रद्धत्र आलारकत्र অনুসরণ করিয়াছিলেন। তিনি লিখিয়াছেন "আমি বুঝিতে পারিলাম আমি আছি। আমার ইন্দ্রিয়গণও আছে, যাহা ছারা আমি জ্ঞানলাভ ক্রি। বাহিরের যাহা কিছু আমার ইন্সিরে আঘাত করে, তাহাকে আমি জড় বলি। দার্শনিকদিগের পরমার্থ ও প্রত্যক্ষ (Reality or appearance) সম্বন্ধীয় ত্র্-বিত্রের কোনও মূল্য আমার নিকট নাই। আমি বিশ্বাস করি জ্ঞানবান শক্তিশালী কোনও ইচ্ছাপক্তি কর্ত্ত জগৎ শাসিত হয়। সেই শক্তিকে আমি দেখিতে পাই—"আমি অফুডব করি" বলিলেই ঠিক হয়। এই জগৎ কেহ সৃষ্টি করিয়াছে, অথবা চিরকাল বিষ্ঠান আছে, একই অথবা বহু উৎস হইতে যাবতীয় কিছু ত্রব্য উৎপন্ন হুট্যাছে, তাহা আমি ফানিনা, জানিবার কোনও প্রয়োজনও আমার नोरें। अप मनाजनरे रुप्तक अथवा यह भनार्थ रुप्तक, आदि। रेश मिक्स অপ্ৰা নিজ্ঞিয় থাকিয়া থাকুক, সমগ্ৰ জগৎ যে এক এবং একই বুদ্ধিমান ^{পুরংবের} অন্তিত্ব ঘোষণা করে, তাহা নিঃসন্দেহ। এই পুরুষকেই আমি ^{ঈখর} বলি। তাঁহার ইচছা আনহে, তিনি সেই ইচছা পূর্ণ করেন। ^{তা}গতে করুণা আছে বলিয়াও আমি বিখাস করি, করুণা তাহার বুদ্ধি-^{শক্তি}ও ইচ্ছার অবশুভাবী কল । ইহা ভিন্ন তাহার সথকে আমি কিছুই কানিনা। আমার ইন্সির ও বৃদ্ধি উভরের নিকটই তিনি আপনাকে
পুকারিত রাথিয়াছেন। আমি বেশ জানি তিনি আছেন, তিনি অরন্ত,
তাহাও জানি। আমার অন্তিত তাহার উপর নির্ভর করে, আমার
পরিজ্ঞাত প্রত্যেক দ্রবাই তাহার উপর নির্ভরশীল। সর্বব্য তাহার
কার্য্যের মধ্যে আমি ঈররকে প্রত্যক্ষ করি, আমার অন্তরের মধ্যে
তাহাকে অমুভব করি, আমার চতুর্দ্দিকে তাহাকে দেখিতে পাই। কিন্তু
যদি তাহার বিষয় চিন্তা করি, তিনি কোপার আছেন অথবা তাহার
করণ কি, যদি জানিতে চেষ্টা করি, তিনি অন্তর্হিত হন। আমার অশাস্ত
চিত্ত তথন কিছুই দেখিতে পার না।"

"প্রকৃতির মধ্যে সর্ববি শৃত্বা ও সামপ্তস্ত ; কিন্ত মানব জাতির মধ্যে সর্ববি বিশ্রালা। পৃথিবীর দিকে যথন দৃষ্টিপাত করি, তথনই "পাপ" (End) দৃষ্টিপোচর হয়।

"মাকুষ স্বাধীন ইচ্ছামত কার্যা করিতে সক্ষম। নিজের ইচ্ছাকুসারে মাত্র্য কর্ম্ম করে: স্বাধীন ইচ্ছার বশে যাগ্র করে, তাহা ঈশ্বরের নিয়ন্ত্রণের ৰহিভুতি এবং ভাহা ঈশবে আরোপ করা যায় না। স্বাধীনভার অপ্-ব্যবহার করিয়া মানুষ অমঙ্গল সৃষ্টি করে, ভাহা ঈর্বরের ইচ্ছা-প্রথত নহে। ইশ্বর মানুষকে পাপ করিতে বাধাও দেন না। ইহার কারণ এই হইতে পারে যে মানুষের মত কুদ্র জীবে যে প্রমঙ্গলের ইষ্টি করিতে সক্ষম, তাঁহার দৃষ্টিতে তাহা অতি সামান্ত। ইহাও অসম্ভব নয় যে-এই অনঙ্গল রোধ করিতে ২ইলে ইথা অপেকাও শুক্তর অনঙ্গল স্ষ্টি এবং মানুষের প্রকৃতি হীনতর করিতে হয়। পুণা ও পাপ, ভাল ও মন্দের মধ্যে মাকুষ পুণাই বাছিয়া লইবে, পাপ বর্জন করিবে, এই অভি-প্রায়ে ঈশ্বর ভাগকে স্বাধীনতা দিয়াছেন। মানুর হদি তাহার বৃত্তি সকলের উপযুক্ত ব্যবহার করে, তাহা হইলেই এই অভিপায় সিদ্ধ হয়। কিন্তু ঈথর মাকুষের ক্ষমতা এতই সন্ধীর্ণভাবে আবদ্ধ রাথিয়াছেন, যে ৰাধীনতার অপব্যবহার করিয়াও মামুষ প্রাকৃতিক শুখালা বিপর্যান্ত করিতে পারে না। মাতুর যে পাপ করে, তাহার নিজের উপরই ভাহার ফল উৎপন্ন হয়। জাগতিক শুখলার উপর তাহার কোনও ক্রিয়া নাই।

আমাদের ক্ষমতার অপব্যবহারই আমাদের ছংখের হেতু। প্রকৃতি হইতে যে সমন্ত অমঙ্গলের উদ্ভব হয়, আমাদের দোনেই আমাদিগকে তাহা ভোগ করিতে হয়। স্বক্সের ফল ছংখকট্ট ইইতে মুক্ত ইইবার উপায় মৃত্যু। প্রকৃতি কাহাকেও চির্কাল কট্ট দিতে ইচ্ছা করে না।

অমঙ্গল-প্রত্তী অস্ত কাহারও আমি অমুসদ্ধান করি না, মামুণ নিজেই অমঙ্গলের প্রত্তী। জগতে সকলই মঙ্গলকর। অবিচার সেথানে নাই। প্রবিচার ও মঙ্গল অবিচেছত সংসর্গে বদ্ধ। অসীম ক্ষমতা এবং যাবতীর চেতন প্রার্থের আয়্মন্ত্রীতির অব্যক্তিচারী ফল "কল্যাণ"। সর্ক্রশক্তিমান টাহার স্বত্ত প্রদার্থে অমুগ্রবিষ্ট। স্বত্তী এবং পালন, শক্তির চিরন্তন কার্যা। যাহার অন্তিত্ব নাই তাহার উপর শক্তির কোনও ক্রিয়া নাই।

* * আপনার ক্ষতি না করিয়া তিনি ধ্বংস অথবা ক্ষতি করিতে পারেন না। যাহা মঙ্গল, কেবল তাহা ইচ্ছা করাই তাহার পক্ষেদ্ধর। সর্ক্রশক্তি মান ব্লিয়াই তিনি সর্ক্রমন্ত্রণমর ও স্থারবান্।

তাহা না হইলে তাঁহার মধ্যে অ-বিরোধ উৎপন্ন হইত। যে শৃথ্যনা-প্রীতি হইতে শৃথ্যনার স্ঠাই হয় তাহাই মঙ্গল, যে শৃথ্যনা-প্রীতি দারা শৃথ্যনা দ্বন্দিত হয়—তাহাই স্থায় বিচার।

আছা যদি অড়পদার্থ না হয়, তাহা হইলে দেহের বিনাশের পরেও তাহার অতিত্ব থাকা অসম্ভব নয়। অতিত্ব যে থাকে, তাহার প্রমাণ এই যে পৃথিবীতে অধার্মিকের জয় ও ধার্মিকের প্রতি পীড়ন দৃষ্ট হয়। বিশ্ববাপী সামঞ্জত্তের মধ্যে এই বৈসাদৃত্তের ব্যাপা। কোথায় ? আমি বলিব জীবনের সমান্তিতেই সকল শেষ হয় না, মুহ্যুতে যাহার যাহা প্রাণা, তাহা সে প্রাপ্ত হয়।" তবুও প্রশ্ন থাকিয়া যায়, ইপ্রিয়-প্রাহ্ম দেহের যথন বিনাশ হয়, তথন আয়ার কি হয় ? যথন দেহ ও

আন্ধার সংযোগ বিনষ্ট হয়, তথন একটির ধবংস হইলেও অক্টের অভিত্ব থাকা সপ্তব। দেহ ও আন্ধা বন্ধপে এতই বিভিন্ন, যে তাহাদের সংযোগ যভাবতঃই অভিন্ত । সংযোগ বিচ্ছিন্ন হইবার পরে আন্ধার যে শন্তি নিজ্রিয় দেহকে চালনা করিতে ব্যয়িত হইত, আন্ধা তাহা পুনঃ প্রাপ্ত হয়। মৃত্যুর পরে আন্ধার প্রকৃত জীবন আরক্ক হয়। কিন্তু সেই জীবন কি অবিনশ্বর ? তাহা আমি জানি না। সীমাবদ্ধ অসীমের ধারণা করিতে আমি অক্ষম। শক্তি ইহা জানি যে দেহের বিভিন্ন অংশ ব্যবহারে কয়-প্রাপ্ত হয় বলিয়াই দেহের বিনাশ হয়। কিন্তু চৈতন্তের এতাদৃশ বিনাশ সম্ভবপর নহে। এই অমুমান শান্তিদায়ক। যথন ইহা অসঙ্গত নহে। তথন ইহা বীকার করায় ভয় কি।

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

অধ্যাপক শ্রীমণীন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় এম-এ, বি-এল

(পূর্বপ্রকাশিতের পর)

পোর্টরেয়ার সহরটি কিল্পপ, এই প্রশ্নের সংক্ষিপ্ত উত্তর দেওরা বার এই বলিয়া যে ইহা সমূল মধ্যস্থ অপেক্ষাকৃত উক্ষ কালিম্পং সহরে । ইহার গাছপালা, ঘরবাড়ী, রাস্তাঘাট অধিকাংশই কালিম্পং সহরের স্থায়। কালিম্পং-এর প্রশস্ত ডাকবাংলোর স্থায় ইহার গেষ্ট হাউদ, কালিম্পং-এর বাজারের স্থার ইহার বাজার, কালিম্পং-এর স্থার ইহার বাজার, কালিম্পং-এর স্থার ইহার আমার, কালিম্পং-এর স্থার ইহার আমার, কালিম্পং-এর স্থার ইহার আমার, কালিম্পং-এর স্থার ইহার আমার, কালিম্পং-এরই মত, উপরে লাল রঙ দেওয়া। এখানকার গাছপালা কালিম্পং-এরই মত, কালিম্পং-এর অমংখ্য পাইন গাছের পরিবর্ত্তে এখানে অমংখ্য মারিকেল গাছ দেপা যায়। এখানকার পথ ও মাঠের উচ্চ-নীচভা কালিম্পং সহরের মতই। এখানকার চাব-আবাদের অস্থ্য অধিকাংশ ক্ষেত্রেই মোপানকৃষির (Terrace cultivation) যে ব্যবস্থা আছে, ভাহা কালিম্পং-এর কৃষিক্ষেত্রের কথাই শ্বরণ করাইয়া দের।

এই পোর্টরেয়ারই আন্দামানের একমাত্র সহর। পুর্বেই উলিখিত হইয়াছে যে, ১৭৯০ খুটান্দে Blair সাহেব এইখানেই জাহাজ হইতে অবতরণ করিয়াছিলেন। এইখানেই কুপাত দেলুলার জেল গঠন করিয়া ইংরাজয়াজ ভাহাদের কয়েনী উপনিবেশ স্থাপন করেন। ১৯৪২ পর্যান্ত এই শীপ ইংরাজেয় অধীনেই ছিল। ১৯৪২-এ দেখা খায় বে, এই পোর্টরেয়ারকে কেন্দ্র করিয়া ১০০ বর্গ মাইল পরিমিত ছানে লোকবসতি গড়িয়া উঠিয়াছিল। এই ১০০ বর্গমাইলের মধ্যে ৬০ খানি প্রাম্ব এবং পোর্টয়েয়য়ার হইতে দক্ষিণ আন্দামানের নানা ছানে ৭৫ মাইল পাকা রাজা তৈয়ারী হইয়াছিল। ১৯৪২ হইতে সাড়েভিম বংসয়ভাল জাপানী অধিকারের সময় এবং পরেও বছ লোক উলাভ

হইয়া পলায়ন করে বা মারা যায়। ফলে পুরাতন ৬০ থানি প্রামের মধ্যে ২৫ থানি আম জনশৃত হইয়া পড়ে। এদিকে জাপানীরা বুদ্ধের জন্ম পোর্টব্রেয়ার সহর ও গ্রামগুলির উন্নতি সাধন করে। সহরের পাহাডগুলিতে গভীর গর্ভ করিয়া নিমে নানারূপ গুদান এবং অস্তাস্থ আশ্র স্থল প্রস্তুত করে। বর্ত্তমানে দেগুলি সম্পূর্ণরূপে অগম্য হইয়া পড়িয়াছে। সমুদ্রের তীরে তীরে বড বড কংক্রীটের নিরাপদ আন্তানা করিয়া জাপানীরা তাহার মধ্যে প্রকাণ্ড কামান স্থাপন করে। সমুদ্রের তীরবর্ত্তী রাস্তার প্রত্যেক মোড়ে কংক্রীটের পিশ্বরম্ম ইত্যাদি জাপানী কীর্ত্তিগেল এখনও সকলেই দেপিয়া থাকে। শুনিলাম একজন বড় মার্কিনী জেনারেল युष्कत्र शत्र आन्नामान मिथिया विनयाहिएलन एय. 'युष्क कविया এই चीश জয় করা অসম্ভব' এত ফুল্মরভাবে ইহা কুরন্দিত হইয়াছিল। জাপানী আমোলে দক্ষিণ আন্দামানে আরও ৩০ মাইল পাকা রাস্তাও নিশ্বিত ছয়। কাজেই পোর্টব্রেয়ার যে দেশের সংর, সেই দেশটির ২,১০০ ৰৰ্গমাইল এখনও বনজন্তল, কেবল ১০০ বৰ্গমাইল মাত্ৰ লোকালয়, উহার মধ্যে ৪৮ থানি গ্রামে লোকবসতি আছে, ২৫ থানি লোকহীন পরিত্যক্ত প্রাম, এবং ১০৫ মাইল ট্রান্থ রোড ভাতীর পাকারাতা, একটি বন্দর ও জাপানীদের বারা প্রস্তুত ও বর্ত্তমানে পরিতাক্ত একটি এরোড়াম আছে। স্থপতিদের মতে এই বিমানক্ষেত্রকে কার্য্যোপযোন ক্রিতে হইলে অন্ততঃ তুইগক টাকা ইহার জক্ত মেরামতি ধরচ ক্রিতে হইবে। ১৯৪৭ সালে স্বাধীন হইবার সময় ভারত সরকায় এইরপ व्यानामान(करे शारेशाहितन।

পোর্টরেয়ার সহরে একটি হাই ইংলিশ স্কুল থাছে, ইহা কলিকাগ বিধবিভালরের দারা অনুষোদিত। এখানে বর্ত্তমানে ম্যাট্রকুলেশান পর্যান্ত পড়া হয়, ইন্টারমিডিয়েট পড়িবার আরোজন সম্প্রতি করা ইউডেছে। গত বৎসর ১২ জন হাত্র ম্যাট্রক পরীকা দিরাছিল ত্যুধো ৭ জন মাত্র উত্তীৰ্ণ হইয়াছে। এ ছাড়া আন্দামানের গ্রামঞ্জলিতে সর্বসমেত ১৪টি নিম্ন ও উচ্চ প্রাইমারী কুপ আছে। হাইস্কলের পরিচালন করেন High School Managing Committee এবং প্রাইমারী স্কুলগুলি পরিচালিত হয় The Education Advisory Committee র ধারা। প্রাইমারী স্থল-গুলিতে সর্বাদমত আম বারশত ছাত্র শিক্ষালাভ করিতেছে। পোর্ট-বেগার সহরে একটি ভালো টকী সিনেমা আছে। সিনেমায় মধ্যে মধ্যে বাংলা ও ইংরাজী ছবিও দেখান হইয়া থাকে, তবে হিন্দী ছবিই অধিক হইয়া থাকে। এথানকার হাদপাতালটি স্থদক্ষিত এবং হাদপাতালে উপযুক্ত চিকিৎসকও আছেন অনেক। এখানে কোন ডাক্তারকেই প্রাইভেট প্রাক্টিন করিতে দেওয়া হয় না। যে কোন অহপের জন্মই পোর্টব্রেমারবাদীকে হাসপাতালে ধাইতেই হইবে এবং হাসপাতালই বিনাবায়ে ঔবধ দিবে. কাজেই এপানকার বাজারে ঔবধ বিক্রম হয় না। সহরে টেলিফোন এবং ইলেকটি কের ম্বন্দোবন্ত আছে। কংক্রীট ও পাঁচের চওড়া রাস্তা, রাস্তায় ইলেকটিক আলো, জলের কল, সানিটারী পার্থানা, ঘরে ঘরে রেডিও, গ্রামোফোন ইত্যাদি ঘল্লের এবং ভারতের নানা প্রদেশের নানাভাষার কণ্ঠ দঙ্গীত, স্বাস্থ্যবান হুবেশ নরনারী, সাইকেল আরোহী তরুণ বালকবুল সমস্ত মিলিয়া এগানকার আবহাওয়া বভ মনোরম। পোর্ট ব্লেয়ারবাদীর দাক্ষ্য-বিনোদনের জন্ম officer, local born, বাঙ্গালী ইত্যাদি বিভিন্ন শ্রেণীর জম্ম বিভিন্ন ক্রাব, বুদ্ধের জমণের জম্ম সমুদ্রতীরের নির্জন রাস্তা, খেলোয়াড়দের জন্ত বিখ্যাত জীমখানা ক্লাব, শিকারীদের ছুমীর দিনে শিকার ক্রিবার জ্বন্ত সহর হইতে পাঁচি-দাত-দশ মাইল দূরে হরিণের প্রাচুষ্য এ সমস্তই আছে। জঙ্গলে হুবিধা এই যে, হিংস্ত জন্ধ একেবারেই নাই। সহরে আরও একটি প্রকাও স্থবিধা, এখানে কোন সংবাদ-াত্র বা কোন রাঞ্চনৈতিক পার্টির অফিস নাই। সাইলোফোন শংযোগে কোন নেতা অথখা চিৎকার করিয়া এখানকার আবহাওয়াকে বিষাক্ত করিয়া তুলেন না, বা খবরের কাগজ পড়িয়া লোকে উত্তেজিত গ্রহীবার স্থবিধাও পায় না। এখানে সরকারী ছাপাখানা হইতে अक्षाना माळ भिक् क्लक्षाल माहेत्वब दिन्नक मत्रकाती मःवानलेख অকাশিত হয়। উহাতে পি-টি-আই ও ইউ পির টেলিগ্রামগুলি এবং স্থানীয় সরকারী কোন সংবাদ থাকিলে মাত্র সেইটুকুই रहेश शास्त ।

পোর্টরেরারের সমস্তই হিদাব করিয়া সরকারী পরদার গঠিত বলিয়া এশানকার ধর্ম ব্যবস্থাও দেইরাপ নিজি মাপিয়া করা হইরাছিল। পূর্ব্ববিত 'রদ্' ছীপের গির্জ্জা ছিল বড় সাহেবদের নিজেনের জন্ত। দেই গির্জ্জাটির কথা বাদ দিলে এখানকার অর্থাৎ পোর্টরেরারের গির্জ্জাটির কথা বাদ দিলে এখানে একটি কালীমন্দির, একটি মদজিদ্ একটি নিম্নিত আছে। ইহার উপর মুনলমানদের অর্থে আরও ছুইটি মদজিদ নির্দ্দিত হইয়াছে, হিন্দুরা একটি গোবিক্রার মন্দির করিয়াছেন। এখানে হিন্দু মুনলমানের সম্পর্ক

আপাত: দৃষ্টিতে বন্ধুত্পূর্ণ হইলেও যভটা দেখায় তভটা নয়। পুর্ববর্তী চীক্ কমিণনার মিঃ মঞ্জিদ্ এখানে সাম্প্রদায়িক তার বুকে ভালোভাবেই জনসেচন করিয়াছিলেন এবং ভারত বিভক্ত হইবার পর হইতে যে দেড়-বৎসরকাল তিনি ভারত সরকারের অধীনে আন্দামানের চীক্ কমিশনার রূপে প্রতিষ্ঠিত ছিলেন, দেই সময়ের মধ্যেই তিনি ভারতসরকারের নিযুক্ত ও কলিকাভার অবস্থিত মুদলমান Liason officer 'রিজ্ভি' সাহেবের সাহায্যে আন্দামানে বহু মুদলমান আমদানী করিয়া তলে তলে এরপ व्यवशांत्र रष्टि कित्रशाहित्यन त्य, व्यादेश किहूमिन এইऋप्न हिन्दम আন্দামান মুসলমান-প্রধান দ্বীপে পরিণত হইত এবং একবার মুসলমান প্রধান হইয়া পড়িলে তথন এই ফুক্র শগুভানের এবং নে) ও বিমান ষাটী গঠনের পক্ষে বিশেষ উপযুক্ত দ্বীপটি যে কাশ্মীরের অবস্থা প্রাপ্ত হইত বা গোলাপুলি পাকিন্তানের অন্তর্ভ হইতে পারিত, এই আশকা অনেকেই করেন। থাগ হটক বর্ত্তমানে হিন্দু মুসলমানের বাহ্নিক মিলন দেখা যায়। আমরা দেখিলাম হিন্দুর ভূর্গোৎদ্র ব্যাপারে মুদলমানগঞ আনন্দ উৎসবে যোগদান করিবার জন্ম ব্যবস্থা করিতেছে। এখানকার इंक्षिनीयांत्र 'अ महकांत्री Harbour Master श्रीमिहित माञ्चारलं वांरला সংলগ্ন ভূমিতে এখানকার সর্ব্বজনীন তুর্গোৎসবের অনুষ্ঠান হর। ওনিস্তাম যে, মুদলমানগণও এই উৎদবের আনন্দপর্বে হিন্দুর সহিত একতেই যোগদান করে।

পোর্টব্রেয়ারের বাজার অঞ্চলটি সহরের মধান্তলে অবস্থিত। বাজারে অনেকগুলি দোকান মাছে। কাপড়ের ও দক্তির দোকান, জুতার (माकान, वाठी काम्लानी, मत्नाहात्री त्माकान, कृष्ठी, विकृष्ठ, लक्किश्रुत्मत्र (पाकान, मुपिथाना, माडा लम्पान्ड हाडे कात्रथाना, वत्रक कल, माना-বিধ মাজাজী থাবারের দোকান, ভাতের হোটেল, পান দিগারেটের ছোট ছোট দোকান, নারিকেল, কলা, পেঁপে ইত্যাদি স্থানীয় ফল এবং আক্লৱ. কিস্মিদ, আপেল ইত্যাদি আমদানী-করা ফলের দোকান, ঘড়ি, ফাউন্টেন পেন, রেডিও, গ্রামোফন প্রভৃতির দোকান ও মেরামতের কারবার অনেক গুলি আছে। যুদ্ধের সময় হইতে আটা, চাউল ও চিনির বরাদ বাবস্থা বা রেশন কার্ডের বন্দোবস্ত চলিতেছে। রাস্তার উপর এই সমস্ত দোকান এবং এই লোকানগুলির পিছনে কাঁচা বাজারের লোকান। বাজার সকাল বিকাল সব সময়েই হয়। শাক, আলু, কপি, কুমড়া ইত্যাদি সমস্তই পাওয়া যায়, তবে আলু এখানে তেমন উৎপন্ন হয় না. অধি-কাংশই কলিকাতা এবং মাজাজ হইতে চালান আসিয়া থাকে। ডিম. কাঁকড়া এবং মাংস সর্ববদাই পাওয়া যায়, এ ছাড়া সমূদ্রের নানাঞ্চাতীয় মাছও আছে। ভোজনবিলাসিরা সকালে সমুজের ধারে আসিয়া জেলেদের নিকট হইতে সাছ সংগ্ৰহ করেন, বাজারেও টাটকা এবং শুটকী মাছ বিক্রম হয়। পোর্টপ্রেমারে মাত্র ৭২ জন রেজেষ্ট্রাকুত ধীবর আছে, তবে এ ছাড়াও বহু লোকেই মাছ ধরে। পোর্টরেরারে আর একটি জিনিব प्रिलाम, উशाब देश्बाकी नाम "edible bird's nest", व्यर्श ए एकन-যোগ্য পাথীর বাদা। উহার সম্বন্ধে বিশদ বিবরণ এই বে, একজাতীয় সাৰ্জিক পাৰী ৰাছে যাহারা সমূজের জলের ধারে পাধরের মধ্যে কোন গভীর গর্জ পাইলে উহার ভিতর নিজেদের বাসা বাঁধে। অক্তান্ত পাবীর তার উহারা বড় কুটি দিরা বাসা বাঁধে না, পরস্ক উহাদের মূব দিয়া এক প্রকার লালা নিস্ত হয়, সেই লালা দিয়া উহারা বাসা নির্মাণ করে। সেই বাসার সকান পাওয়া শক্ত, তবে ঐ পাবী কোবার উড়িয়া যাইতেছে, সমুদ্রের জেলেডিফি হইতে জেলেরা তাহা লক্ষ্য করিয়া সেইবানে গিয়া পাবরের গর্জ হইতে ঐ বাসা ভাঙ্গিয়া লইয়া আসে। প্রবম্পতঃ ঐ প্রকার পাবীর বাসা সংখ্যায় নিতাস্ত কম হয় বলিয়া এবং বিপজ্জনক স্থান হইতে আনিতে হয় বলিয়াও ইহার মূল্য খ্বই বেলী। ঐরূপ একটি গোটা বাসার মূল্য ৩০০, হইতে ৪০০, টাকার মত। ইহা রবারের তায় জমাট ও নরম, ইহাকে থও বঙ্গে করিয়া কাটিয়া ভরি' দরে বিক্রী করা হয়। এক তোলা ওজনের পাবীর বাসার দাম ৬, হইতে ১০, টাকা পর্যন্ত হইয়া বাকে। ইহা গরম মসলার তায় অতি সামাত্য পরিমাণে তরকারীর সহিত দেওয়া হয়। ইহা মৃগনাভির তায় স্থামী ও তেলকয় এবং য়ুরোপীয়দের ইহা অতায় প্রিয় থাত।

পোর্টব্লেয়ারে অনেকগুলি বিখ্যাত ব্যবদায়ী আছেন। ইহাদের নাম না করিলে এখানকার বাজারের কথা শেষ হয় না। তাহাদের मृत्या मर्सार्थका धनी B. Akooji & Sons । এই कांब्रवाद्वव ইতিহাদ পূর্বেই বলা হইয়াছে। বর্ত্তমানে ইহার নিজম্ব জাধাজ এবং সমগ্র কার-নিকোবরের নারিকেলের একচেটিয়া ব্যবদা আছে। দ্বিতীয় यावनात्री Krishnaswamis & Sons । এই काइबाब পোর্ট-রেয়ারগামী সমত্ত জাহাজে জাহাজের প্রয়োজনীয় মাল সরবরাহ করিয়া পাকেন। এ ছাড়া Govinda Rajula & Co, Sukram & Co, Arungar & Co, Kesholal & Co ইত্যাদি কতকগুলি বড় বড় বাণিকা প্রতিষ্ঠান আছে। ইহারাই এখানকার আমদানী রপ্তানির वानिका कतिया बाटकन। वर्डमारन देशवा कालक, ठाउँम, व्याठी. चानू, निंशां हे डाांनि चामनानी करत्रन এवः कार्य, नात्रिकन, कष्ट्रांनत्र থোলা, আহারযোগ্য পাপীর বাদা ইত্যাদি রপ্তানি করেন। (এখানে ১৯৪৯ এর হিদাব অফুমিত হয় যে, ঐ বৎসর প্রায় ১০০০ টন চাউল এখানে উৎপन्न ट्रेंबाछ्ल এवः ১,880 हेन हाउँल ও २०० हेन गम आमानी হইরাছিল।) পোর্টরেয়ারের এই আমদানী রপ্তানী বাণিলা কলিকাতা ও মালাজের সহিত হইয়া থাকে। এখানকার শতকরা ৭০ ভাগ আমদানী ও শতকরা ১০ ভাগ রপ্তানী বাণিকা কলিকাতার সহিত এবং অবশিষ্ট বাণিজ্য মাদ্রাজের সহিত হইয়া থাকে। তবে এই সংখ্যাগুলি সমস্তই আকুমানিক, কারণ এই প্রসঙ্গে কোন নির্ভর্যোগ্য হিসাব आन्यामात्मन मनकानी पश्चत्व भाउना यात्र मा। National Chamber of Commerce এর পক হইতে वैश्वधीन दक्षन विद्याम মহাनद আন্দামানের সংবাদ লইরা ভারত সরকারকে যে রিপোর্ট দেন ভারার মধ্যে তিনি লিখিয়াছেন, "There is in particular no record showing the total value of exports and imports, from and to the islands, and the one fact that struck me

was the absence of any statistical literature maintained by the Administration" I

পোর্টব্রেয়ারের এবার্ডিনের বাজারের কিছু দূরে দেলুলার জেলের পথের ধারে এখানকার 'পাওয়ার হাউদ'। পাওয়ার হাউদটি ছোট, এখানে ভিনটি ডিজেল-চালিভ এবং একটি পেট্রল-চালিভ বিহাৎ উৎপাদক ক্লেনারেটর আছে। তিনটি ডিজেলে যথাক্রমে ১০০, ৫০ এবং ৩৬ কিলোওয়াট এবং পেট্রলে ২৪ কিলোওয়াট বৈত্যতিক শক্তি উৎপাদন कता रहा। সহরে २८ घष्টाর মধ্যে মাত্র ছই ঘটা অর্থাৎ मकान ৮ इट्रेंड ১ - है। পर्शन्त आत्ना खल ना । अधु आत्ना खानिवांत्र জন্ম ইলেকটি ক লইলে বাড়ীতে মিটার থাকে না, প্রতি আলোর জন্ম মাসিক হু'টাকা করিয়া বিল দিতে হয়; কাজেই দিনে রাতে কেহই আলো নিভাইবার জম্ম তেমন ব্যস্ত হয় না। পোটব্লেয়ারে বৈছাতিক শক্তি বৃদ্ধির জন্ম একটি পরিকল্পনা চলিতেছে। ঐ পরিকল্পনায় ee• किला । प्राप्त मिल छ ९ भागन कतिवात कथा चार ; इहात क्क अकि বয়লারও বদান হইয়াছে। এ বয়লারের অভিনব ব্যবস্থা করা হইয়াছে যে, ইহাতে কয়লার পরিবর্ত্তে করাত-শুঁড়া (Saw Dust) দিয়া কাজ চালানো হইবে। এখানকার করাত কল হইতে যে প্রচুর করাত গুড়া এতদিন নষ্ট হইত, দেই করাত-গুড়াগুলি এই ভাবে কাজে লাগাইবার বাবন্তা হইতেছে।

পোর্টরেয়ার সহরে তিনটি ছোট কারখানা আছে। একটি সরকারী বনবিভাগের অধীনে Saw mill বা করাত কল। ইহা 'চাখাম' ছীপে জাহাজ ঘাটের পার্বেই অবস্থিত। এই কারখানায় মাসিক ২,৪০০ টন পর্যান্ত কটি চেরাই হইতে পারে। আন্দামানের বনবিভাগে হইতে বর্জমানে মাসিক ৪,০০০ টন কাঠ কাটা হয়, ভয়ধ্যে ২,৪০০ টন কাঠ 'চাখামে' চেরাই হইয়া রগুনী হয়, বাকী ১৩০০।১৪০০ টন কাঠ দেশলাই ভৈরীর জন্ত Winco Match Factory ক্রম করে এবং ২০০৩০০ টন শিম্ল জাতীয় কাঠ ভ্যানেন্তা (Plywood) করিবার জন্তা চালান হইয়া যায়। কাঠের ব্যবসাই আন্দামানের প্রধান কাজ এবং সেই জন্ত সমগ্র আন্দামানই সরকারী বনবিভাগের অধীনত্ব করিয়া এখনও পর্যান্ত রাখা আছে।

ষিতীয় কারথানা, Wimco Match Factory। ইহা Aberdeen-এ অবস্থিত। এই প্রতিস্থানটি ভারতে অবস্থিত হইলেও নৃগধন এবং পরিচালনায় ইহা একরাপ বিদেশী। এই West India Match Company সরকারী বনবিভাগ হইতে পুর্বেগলিবিত ১০০০, ১৪০০ টন নরম কাঠ কিনিয়া দেশলাইরের কাঠিও বান্ধ তৈয়ারী করিয়া ভারতবর্ধে চালান দেয়। বর্ত্তমানে পাকিন্তান ভাগ হইয়া যাওয়ার পর ভ্যানেন্ডাও দেশলাইরের উপযুক্ত নরম কাঠের (soft wood) বিশেষ অভাব হইয়া পড়িতেছে। এইরূপ কাঠ পুর্বে প্রচুর পরিমাণে পাওয়া যাইত চট্টগ্রাম, সিরাজগঞ্জ, আসাম ও আন্দামান হইতে। বর্ত্তমানে প্রথম হুইটি হান হইতে কাঠ পাওয়ার উপার নাই, সেইজ্ঞ আসাম ও আন্দামানের উপরই বিশেব করিয়া নির্ভন্ত করিতে হইতেছে।

তৃতীয় কারখানা, সরকারী ভক্ইরার্ড ও মোটর মেরাসভির প্রতিষ্ঠান।
ইহা পোর্টরেরারের Phoenix Bay নামক সম্প্রকুলে অবস্থিত।
এখানে নৌকা ভৈয়ারী হয় এবং জাহাজের অল্প মল্ল নেরামত এবং মোটর
গাড়ী ইত্যাদির যাবতীয় মেরামত কার্গ্য হইরা বাকে। জাপানী
অধিকারের সময় এই স্থানে ১০০ ফিট লখা ৮০ হইতে ১০০ টনের নৌকা
ও ছোট ছোট জীমলাঞ্চ পর্যন্ত প্রস্তুত হইত। এখানে ছুইটি ছোট ড্রাই
ডক্ও আছে।

क्ष्मिना, शामे भागा । भूनिम हिमन, मत्रकाती व्यक्ति, काहाती (কিছুদিন পূর্বে এখানে জলকোর্ট পর্যান্ত স্থাপিত হইয়াছে এবং ভিহাকে কলিকাতা হাইকোর্টের অধীনস্থ করা হইয়াছে) জাহাজী অফিস, বনবিভাগ ও পূর্ত্তবিভাগের অফিস, পোষ্ট অফিস ও টেলিগ্রাম (পোর্টরেয়ারের টেলিপ্রামগুলি সমস্তই বিনাভারে পাঠানো হয়. মাদ্রাজ উহা গ্রহণ করিয়া টেলিগ্রাম রূপে যথাস্থানে প্রেরণ করে।) ছাড়া উপরোক্ত করেকটি মাত্র উল্লেখযোগ্য কর্ম প্রতিষ্ঠান বর্ত্তমানে পোর্টরেয়ারে আছে। পোর্টরেয়ারে কুলি হইতে আরম্ভ করিয়া সর্ব্বোচ্চ-পদত্ব কর্মচারী পর্যান্ত লইয়া মোট প্রায় সাড়ে নয় হাজার ব্যক্তি নিযুক্ত আছেন। ভারতের সর্বপ্রদেশ হইতেই কর্মচারীবৃন্দ আসিয়াছেন, তবে কুলি মজুর অধিকাংশই ছোটনাগপুর হইতে আনীত। ইহারা রাঁচীর অফিস হইতে সংগৃহীত হয় বলিয়া 'র'াচী-কুলি' নামে অভিহিত। এই সমস্ত কুলিদের একবছরের চুক্তিতে চাকুরীতে বহাল করা হয়। থেদিন বাঁচীতে চাকুরীতে লওয়া হয় সেই দিন হইতে পুনরায় বাঁচীতে ফিরিয়া যাওয়ার দিন পর্যন্ত ইহারা নিয়মিত বেতন পাইয়া পাকে। জাহাজে কাসিবার ভাড়া এবং জাহাজের থাওয়ার ব্যয় সমস্তই সরকার বহন করিয়া থাকেন। আন্দামানে শ্রমিকের অভাবের জন্ম এই ভাবে overseas চাকুরীর স্থবিধা দিয়া ভারত হইতে শ্রমিক আমদানী করিতে হয়।

এখানে বর্ত্তমানে শ্রমিকের মজুরীর হার এইরূপ :--

সাধারণ শ্রমিক মাসিক বেতন ১৬১ + ২৫১ টাকা মাগ্রীভাতা। জাহাঙ্গে মাল তোলা-নামানোর কার্ব্যে নিযুক্ত শ্রমিক দৈনিক ২১ টাকা + মধ্যাক্ষের আহার।

ঐ কাজে নিযুক্ত সন্দার (mate) দৈনিক আ/• + মধ্যাংহের আহার।
জাহাজের ডকে নিযুক্ত শ্রমিকের সর্ব্বনিম্ন দৈনিক বেতন ১।• + ২৫১
টাকা মাসিক হিসাবে মাগ্যীভাতা।

ঐ সর্বোচ্চ দৈনিক বেছন ৮ +২৫ টাকা মাসিক হিদাবে মাগ্ণীভাতা।

বনবিভাগের শ্রমিকদের নাগিক বেতন ১৭, টাকা হইতে ৩০, টাকা +২৫, টাকা মাগিক মাগ্রীভাগা+৫, টাকা বনবাস ভাঙা।

আন্দামানের শ্রমিকদের মধ্যে অধিকাংশই ভারতীয় শ্রমিক, কেবল ডকের কাজে নিযুক্ত শ্রমিকের প্রায় শতকর। ১০ জন আন্দামানের Local Born হইতে সংগৃহীত। আন্দামানে একজনও বেকার নাই, উপরস্তু এখনও পর্যান্ত সেধানে বহু লোকের উপজীবিকার উপযুক্ত স্থান আছে।

এই পুত্রে উল্লেখ করা বোধ হয় স্প্রাদিকিক হইবে না যে, প্রতিমাদে এই দ্বীপ হইতে এখানকার কর্মনারী ও এমিকগণ সরকারী ট্রেজারীর মারক্ত আড়াই লক্ষ টাকা ভারতে নিজেদের আশ্লীয়বর্গের নিকট প্রেরণ করিয়া থাকেন।

এখানকার বাণিজ্য ও শিল্প সন্থকে উল্লেখ করিবার সময় একটি বিষয় বিশেষ ভাবে ত্মরণ করাইয়। দেওয়া প্রয়োজন যে, এগানে কোনও ব্যাক্ষের শাখা বা কোন বীমা কোল্পানী আদৌ নাই। একমাত্র পোষ্ট অফিস সেভিংস ব্যাক্ষ ছাড়া লোকের টাকা রাখিবার জক্ত কোন ছানই নাই। বীমা ও ব্যাক্ষ ব্যবদায়ীরা যদি এগানে কোন শাখা প্রতিঠান খোলেন, তাহা হইলে এখানকার অধিবাসী এবং যে-কোম্পানী এইরূপ শাখা পুলিবেন, ভাহারা উভরেই লাভবান হইবেন সম্লেহ নাই।

(ক্রমশঃ)

বাল্য-লীলা শ্রীবিষ্ণু সরস্বতী

ইন্দিরাসম স্থলরী সাজে নবীনা মাতার ম্রতি ধরি
ক্রন্দনরোল তুলিছে প্তনা আজো শত শিশু শোণিত হরি'।
আজিও ভারতে তৃণাবর্তের দেখি প্রতিদিন ঘূর্ণীপাক
উড়াইয়া দেয় সকল শান্তি রচিয়া দারণ দূর্বিপাক।
বৎসের রূপে কংশের দৃত আজিও ক্রফে হানিতে চায়,
পাপ অঘাক্রর পল্লী-বালকে আপন কবলে টানিতে ধায়।

বকের কণট ছলনার জালে জড়াইয়া পড়ে আজিও লোক,
বাড়াইয়া তোলে প্রতিটি দিবস মাহ্মেরে যত ছ:খলোক।
ভাবি তাই মনে ভনিতে পাইব আবার মধুর মুরলী গান,
বুলাবনের ধ্বংস সাধনে নিক্ষণ হবে এ অভিযান।
ছল-খল-দল-দমন-কঠোর কুটিল মারণ ম্রতি ধরি।
জানি আমি জানি ভনিতেছি ধ্বনি আসিছে দুর্পহরণ হরি।

বিশ্বের বিখ্যাত পত্রাবলী

অধ্যাপক শ্রীমাখনলাল রায় চৌধুরী

দার্শনিক নিট্শের পত্র সঙ্গীত-শাস্ত্রী ওয়াগনারের নিকট পত্রপরিচয়:

নবীন নিট্শে, প্রবীণ ওয়াগনার, দার্শনিক নিট্শে, হ্বরস্তা ওয়াগনার।
নিট্শের খ্যাতি তথনও জার্মান দেশে প্রথম প্রভাত রাগ রেখা।
ওয়াগনারের প্রতিভার তথন জার্মান সংস্কৃতি অমুপ্রাণিত। ওয়াগনারকে
জার্মান জাতির প্রতীক বলে সমস্ত দেশ তাঁকে শ্রামা নিবেদন করে
কৃতার্থমস্তা। ত্রিশ বংসর বয়সের পার্থকা সম্প্রেও নিট্শে ওয়াগনারের সঙ্গে
প্রীতির বন্ধনে অমুর্ক্পিত। ওয়াগনারের সঙ্গীতের জ্বস্তু নিট্শে শক্ষ
যোজনা করে ধ্রা। একদা নিট্শে নিবেদন করলেন, "সঙ্গীত বিয়োগ
দিলে মাস্থ্রের জীবন নিরর্থক। জার্মান ভাতির জীবন ওয়াগনারের
সঙ্গীত ম্পরিত।" নবীন দার্শনিকের স্তুতি প্রবীণ ওয়াগনারের অহকারকে
অত্যক্ষ করে তুল্ছে।

্১৮৬৯ সাল । জার্দ্মানজাতি অন্ত্রিরার সাঝাজ্যকে বিধ্বস্ত করেছে। ফরাসী স্থাট তৃতীয় নেপোলিরানের সঙ্গে আসর যুদ্ধের জন্ম জাতি বাস্ত্রত, জাতির প্রতি অঙ্গে অস্ত্রের অন্তর্ভাতির প্রতি অংক অস্ত্রের অন্তর্ভাতির প্রতি অংক অধ্যাপক। ওরাগনার বাস্লে স্বর্থতিত ধ্যানময়। ওরাগনারের গৃহে নিট্লে খুইমাসের অতিথি। ওরাগনার শুকু, নিট্লে শিক্ষ।

ওয়াগনারের অনুপ্রেরণার নিট্লে "সঙ্গীতের প্রচ্ছদপটে বিয়োগান্ত কাব্যের জন্ম" (Birth of Tragedy Out of Music) নামক গ্রন্থ রচনা আরম্ভ করলেন। এই রচনার আবেগে নিট্লে তাঁর সর্বেজিন দার্শনিক তথ্য আবিকার করলেন। সে তথ্যের মূলবক্ত হল "আমি অনুভব করি বে, মানব জীবনের সর্ব্বপ্রেষ্ঠ সাধনা ও সর্ব্বোত্তম প্রেরণা কুচ্ছুতম জীবন যাত্রার মধ্য দিরে বিকশিত হতে পারে না। সংগ্রামের অভিলাস, শান্তিলাভের অভিলাস, বিজন্মের অভিলাসের মধ্য দিরেই মান্তবের জীবনী শক্তি চরম প্রকাশ হবে।"

শিশ্ব নিট্শে ওরাগনারকে অভিনন্দন জানালেন, "আপনি দিতীর প্রাক সঙ্গীত-বিশারদ এসকাইলাসের প্রতীক; আমি আপনাকে তুলনা করি ডায়োনিদাসের সঙ্গে।" ওরাগনার এই স্ততিকে ব্যক্তিগত উচ্ছাস বলে প্রহণ করেন নি বরং সমপ্রজাতির শ্রন্ধাবলে প্রহণ করলেন। নিট্শে ছিলেন জার্মান জাতির মনোমন্দিরের প্রদীপাবাহক, ওরাগনার ছিলেন সেই মন্দিরের দেবতা।

হঠাৎ একদিন ওয়াগনারের সন্ধীত আলোচনার অবকাশে নিট্শে সমালোচনার পর্যায়ে উপনীত হলেন। শিভের সমালোচনার ওয়াগনার কুরু হলেন; তিনি চকিত হলেন। তিনি নিট্শেকে করণেন প্রাঘাত, স্থকলিত আতি দিলেন দেখিলে। বিচক্ষণ নিট্শে দিলেন প্রত্যুত্তর। উত্তর প্রত্যুত্তরের পরিণতি হল ছুই বন্ধুর বিচ্ছেদে।

নিট্লে প্রচার করলেন, "প্রতি মানবস্থার ছুইটী রূপ আছে— পুং-রূপ ও স্ত্রী-রূপ। সঙ্গীত স্ত্রী রূপেরই বিকাশ। সঙ্গীতের মধ্যে রয়েছে মানব মনের উপ্যাসিক ভরে অসংলগ্ন বাক্বিয়াস, আদর্শগত মিখ্যার রূপান্তর, মাসুধের বিবেকের লবু প্রকাশ। আমি দেপেছি সঙ্গীত একটি বিরাট মানব মনকে আছের করে রেপেছে।"

রচনা, আলোচনা এবং সমালোচনা ছই বছুর মধ্যে এমন বিছেদ হাই করল, নিট্নে ওয়াগনারের সঙ্গে পথে সাক্ষাৎ হলে বাক্যালাপ পর্যান্ত করেন নি। কিন্তুরচনার মধ্য দির্টে ছইজন মনীবীই পরস্পরকে আঘাত করে চলেছেন। ওয়াগনার লিখলেন Parsifal দিলেন একথও নিট্লেকে উপহার। নিট্লে লিখলেন Human All-too-Human, পুত্তকের মধ্যে ছিল সঙ্গীত ও শিক্ষা সম্পদে তাঁর তীত্র শ্লেষ; এবং পরোক্ষে ছিল ওয়াগনারের প্রতি আঘাত। নিট্লে পুত্তকথানি ছম্মনামে প্রকাশ করবেন বলে স্থির করলেন, কারণ হয়ত ওয়াগনার-পন্থীগণ আঘাত পাবেন। নিট্নের মন্তব্যে লিখিতদের অনেকেই ছিলেন নিট্লের বলু। নিট্লে তাদের সঙ্গে বিরোধ ইচ্ছা করেন নি। কিন্তু পরাগনারের নিকট পুত্তকের পিতৃত্ব শীকার করে লিখলেন প্রাঃ—

পতাহবাদ:-

আপণার নিকট কামি Human, All-too-Human, পৃত্তকথানি পাঠিয়েছি। এর মধ্য দিরে আপনার ও আপনার সহধর্মিনীর নিকট এই পৃত্তকের রচনার দায়িত্ব ধীকার কচ্ছি, আমার মনের গোপন কথাগুলি প্রকাশ করলাম। আমার বিধাস আছে যে আপনারা ত্র'জনই আমার বিধাসের পূর্ণ মর্ব্যাদা ক্রকা করবেন। এই পৃত্তকের মধ্য দিরে আমি মাহুব ও বস্তুর বিষরে আমার গোপনতম ধারণাগুলি সর্ব্বপ্রথম প্রকাশ করেছি, এর মধ্য দিরে আমি আমার চিন্তা রাজ্যের পরিধি পূর্ণ পরিক্রমণ করেছি। এই রচনা আমার প্রচন্ত ত্রংধের দিনে আমাকে প্রচুর সান্ধনা ধিরেছে; যথন পৃথিবীর সকল বস্তু আমার নিকট রসহীন, তথন এই রচনা আমার মধ্যে রসস্বাহার করেছে। আমি ব্রে এই রক্ষ একথানি পৃত্তক রচনা করতে পেরেছি, তাতে মনে হয় আমি এখনে জীবস্তু।

আমি করেকটী কারণে এই পৃত্তক রচনার ছল্মনাম গ্রহণ করেছি। প্রথমতঃ আমার পুরাতন রচনার প্রভাবকে আমি কুর করতে ইচ্ছা করিনা: ছিতীয়তঃ, আমি প্রথাকে বা পরোকে আমার ব্যক্তিগত মর্থনাকে কুর করতে প্রত্যাপী নই; সর্ববেশবে আমি ইচ্ছা করি বে, বৈজ্ঞানিক আলোচনার আমার বন্ধুবান্ধ নকলেই অংশ প্রহণ করবেন। অংশার নামে পুত্তক প্রকাশিত হলে অনেকেই অপ্রির আলোচনা করতে সংকোচ বোধ করবেন। আমার নামে পুত্তক প্রকাশিত হলে অনেকে এই পুত্তকের আলোচনা খেকে দুরে সরে বাবেন।

আমি জানি, অন্তঃ একজন মনীধী আছেন যিনি আমার প্রকাশিত ধারণাগুলি বথার্থ বলে বিবেচনা করবেন, কিন্তু তিনি প্রকাশুভাবে এই ধারণাগুলির বিক্ষতা করবেন।

আমি একজন আহত সৈনিক। বহু আঘাত সহু ব্যেও আমি জীবনের পথে অগ্রসর হয়েছি। আমি প্র্তি:তর শিখরে আরোহণ করেছি, নিশান উড়িঃছে। আমার চতুপার্থে নানা বীভংস দুখ নিরীকণ করছি, হঃথের অভিজ্ঞতাই আমার অধিক। আনন্দ আমার জীবনে পরোক অভিজ্ঞতা।

আপনি জানেন যে, আমি কখনো ব্যক্তিগতভাবে চিন্তা করিনি,
সমষ্টিগত চিন্তাই আমার প্রধান মূলধন। আবার সমাজ ও ব্যক্তি
ছইই আমাকে সমভাবে আকর্ষণ করে। আমি স্থপুর পথ অতিক্রম
করেছি— হবু আমি নিতান্ত নিঃসঙ্গ, আমি পশ্চাতে লক্ষ্য করে দেখিনি
আমার অনুগামী সহ্যাত্রী কত দ্বে; তারা মৃত কি জীবিত তাও
দেখবার অবসর আমার ছিল না।

পত্র পরিণাম:--

এই পত্র ওয়াগনারের হস্ত স্পর্ণ করেছিল কিনা সন্দেহ। পুস্তক-প্রকাশক বলেছিলেন যে নিট্লের নাম উল্লেখ না থাকলে পুস্তক বিক্রম হবে না, নিটশে পুস্তকের বহু অংশ পরিবর্ত্তন করেছিলেন কারণ ওয়াগনার হয়ত আহত হবেন। পুস্তকথানি নিট্লে বিনা ভূমিকাতেই ওয়াগনারের নিকট পাঠিয়েছিলেন। শুধু উপরে লিথেছিলেন:—

"আমাদের মধ্যে আর কোন বন্ধনই অবশিষ্ট নেই। আমরা সার্থাহে পরস্পরের ভাবধারার পরিপৃষ্ট হরেছি, যদিও অনেক সমর আমাদের চিন্তা সম্পূর্ণ বিক্রছপথচারী ছিল।"

কিছ অভিযানী ওরাগনার নিজের ধারণাকে কথনো নৈর্যক্তিক বলে বিবেচনা করেন নি। তিনি দাবী করতেন অকুষ্ঠ অর্থ, নিরস্কুশ প্রশংসা এবং বিধাহীন স্বাস্থ্যতা। কিছ ওরাগনার পুত্তক পাঠ করে কেথলেন—তার মধ্যে রয়েছে প্রাক্তন শিক্তের শুক্তম্মাহ; না, না, আরো বেশী, প্রিয় শিক্তের প্রতিভার আঘাত। এই পুত্তক পাঠের পক্ষে ওরাগনার এমন আঘাত পেলেন যে নিট্লের সঙ্গে আর পুনর্মিলনের কোন অবসর রইল না।

মৃত্যুর পূর্বাদিনে (১৯০০ খৃঃ) নিট্লে তার গৃহ প্রাচীরে বিলাখিত ওরাগনারের তৈলচিত্র নিরীক্ষণ করে মৃচ্ছার আবেশে বলেছিলেন, "এ এ, আমি তাঁকে যে অত্যন্ত প্রদা করতাম, অত্যন্ত ভালোবাসভাম।"

ব্যাদের সর্বস্ব

শ্রী অক্ষয়কুমার দতগুপ্ত এম-এ

ছাআব্যায় "শক্ষজা" পাঠকালে অধ্যাপক মহাশয়ের মূথে প্রায়ই এই গোকটি ভনিতে পাইভাষ—

> কালিদাসভা সর্বাধমভিজ্ঞান শকুন্তলম্। তত্ত্রাপি চ চতুর্বোহন্ধ শুক্র প্লোকচতুষ্ট্রয়ম্॥

কালিদাসের সর্বান্ধ (অর্থ বোধ করি ফুর্নেলেন্ড রচনা) হইতেছে "অভিজ্ঞান শকুন্তল" (অর্থাৎ শকুন্তলা নাটক), তার মধ্যে চতুর্থ অঙ্ক, তার মধ্যে চারিটি প্লোক।

শকুন্তলার ঠিক কোন চারিটি শ্লোক কালিদাসের "সর্বব্য" বলিরা গণ্য ইইবার যোগ্য এ প্রশ্ন অধ্যাপক মহান্যকে যুত্রবার জিজ্ঞানা করিয়াছি তত্বারই এক উত্তর পাইরাছি, "ভাল, ভোমরাই বল না কোন কোন চারিটি শ্লোক এবং বার যার মতের সমর্থনে একটি ছোট ধাটো রচনা লিখিয়া আমাকে দেখাও।"

বহ বৎসর পরে আন সেই কথাটা মনে পড়াতে ভাবিতেছি,

আছে।, কালিদাস হইতে বহ গুণে বড় ও বরেণ্য ব্যাসদেব-সম্পর্কে যদি ঐ রকম একটা প্রশ্ন করা যায়, ভাহা হইলে ভার কি উত্তর হইতে পারে ? যদি জনশ্রুতি নিভান্ত অমূলক না হয় ভাহা হইলে ব্যাসদেব—বেদব্যাস গুণু বেদবিভাগ করেন নাই, জগতের বিপ্লতম প্রশ্ন "মহাভারত", একথানি ছুইথানি নয়, আঠারখানি পুরাণ, করেকথানি উপপুরাণ, ধর্ম্মণান্ত, বেদান্তদর্শন (ব্রহ্মসূত্র) ইত্যাদিও রচনা করিয়াছেন। এমন কি পতঞ্জালির যোগস্ত্রের ভাত্তও ভাহারই রচিত বলিয়া প্রস্কিছা। এই প্রস্কৃত্তলির প্রভাগেরই মর্যাদা বিপ্ল হইলেও ইহাদের মধ্যে অবভাই ইতর-বিশেব আছে। সেইজন্ত কোনথানি ভাহার শ্রেষ্ঠ রচনা এরপ প্রশ্ন বোধ করি নিরর্থক নয়। প্রশ্নটি আমি সমূচিত বিনয়সহকারে পাঠকবর্গকে করিতেছি।

আমার জ্ঞান অতি সামার ; আমি সেই জ্ঞান হইতে কেবল পাঠকবর্গের কৌতুহল উদ্দীপিত করিবার জ্ঞান করেক প্রকার উত্তর নিমে দিতেছি। প্রধার স্থারিচিত ও জ্ঞানপ্রদীও উত্তরের জ্ঞা আমি (এবং সম্ভবতঃ এই প্রবন্ধের অনেক পাঠকও) স্থী ও স্থপত্তিত ব্যক্তিদিগের মুখের দিকে চাহিয়া থাকিব।

প্রশ্নতির প্রথম অমুমের অতি সহক উত্তর এই বে, অধিকার-বিশেষে ও স্পতিভেলে অর্থাৎ যে যেমন অধিকারী—ও যার যেমন স্পৃতি তছুপযোগী ও তদমুরূপ গ্রন্থই শ্রেষ্ঠ। এই মতের বিপক্ষে বজরা এই, এরূপ উত্তরে প্রশ্নটিকে এড়াইয়া যাওয়া হর মাত্র, উহার মীমাংসা কিছুই হয় না। অধিকার ও স্পৃতিভেলে মতভেদ অনিবার্য্য এবং কোনও মতই নিভান্ত নিংসার নর ইহা চিরকাল খীকৃত হইয়া থাকিলেও যে দর্শনশাল্পমমূহের পরম্পরের মধ্যে, এমন কি এক বেদান্ত দর্শনেরই বৈত, অবৈত, বিশিষ্টাবৈত, বৈতাবৈত ইত্যাদি ভিন্ন ভিন্ন বাদের মধ্যে এবং শৈব, শাক্ত, বৈক্ষবাদি বিভিন্ন সাধক-সম্প্রদারের পরম্পরের মধ্যে এবং শৈব, শাক্ত, বৈক্ষবাদি বিভিন্ন সাধক-সম্প্রদারের পরম্পরের মধ্যে এবং শৈব, শাক্ত, বৈক্ষবাদি বিভিন্ন সাধক-সম্প্রদারের পরম্পরের মধ্যে এবং শৈব, শাক্ত, বৈক্ষবাদি বিভিন্ন সাধক-সম্প্রদারের বিদ্যালয়ই হইয়া আসিতেছে এবং হইতে থাকিবে। ভিন্ন ভিন্ন বাদিগণ ব্যাসদেবের গ্রন্থাবলী সম্বন্ধীয় আমার প্রশ্নটির উত্তর দিন, এই আমার প্রার্থনা। উত্তর ভিন্ন ভিন্ন ভিন্ন হইবে ইহা থ্বই সম্বব। প্রামাণিক ব্যক্তিবর্গের ভিন্ন ভিন্ন শিন্তা বাহাও আমাদের মত সাধারণ জিক্তাহুগণ উপকৃত হইবেন সন্মেহ নাই।

· শারের অক্তবিধ উত্তর মধ্যে গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের মনীবীগণ বলিতে পারেন এবং ফলত: বলিয়াছেনও-ব্যাদের কোন গ্রন্থ ভাঁহার সর্বাধ তাহা তিনি নিজেই সেই গ্রন্থমধ্যে অতি স্পষ্টরাপেই বলিয়া দিয়াছেন। বেদবিভাগ ও নানা পুরাণ ধর্মশাল্ল প্রবন্ধাদি রচনার পরও চিত্তপ্রদাদ লাভ করিতে না পারিয়াই না দেবর্ষি নারদের উপদেশে ব্যাদদেৰ শীমদ্ভাগৰত রচনায় প্রবৃত হইয়াছিলেন ? স্বতরাং শীমদ্-ভাগবতই যে ব্যাদকুত সকল গ্রন্থের চূড়ামণিম্বরূপ সে বিষয়ে আর কি সন্দেহ থাকিতে পারে ? ভাগবতকে বলা হইয়াছে নিগম কল্পতকর কল-বাহা ওকমুপ হইতে অমৃতজবৰুক হইরা পতিত হইরাছে। যে লোকে এই কথা বলা হইয়াছে তাহার ব্যাথাার শীধরস্বামী বলিরাছেন, ৰ কেবলং সর্বাশান্ত্রভাঃ শ্রেষ্ঠতাৎ অক্তশ্রবশং বিধীয়তে, অপিতু সর্বা শান্ত্রকলরপমিদম্ অতঃ প্রমাদরেণ সেবিতব্যম্। কেবল সর্কাশান্ত্র হইতে শ্রেষ্ঠ বলিয়া যে ভাগবত-শ্রবণ বিহিত তাহাই নহে, ভাগবত ছইতেছে সূর্বশাল্লের ফলস্কুপ, অতএব প্রমাদরে ইছা সেবা। ভাগৰতের শেব স্বব্ধের শেব অধ্যায়েও "সর্ববেদান্তসারং হি এভাগৰত-মিছতে" ইত্যাদি নিষের শ্রেষ্ঠতা প্রতিপাদক করেকটা লোক আছে। সেই বস্তু এককালে গৌড়ীয় সম্প্রদায়ের মুখ্য আচার্য্যপ ভাগবত ভিন্ন অক্ত শান্তের চর্চ্চা আবশ্রক মনে করিতেন না। বীমদ্ জীবগোস্বামীর "বট্ট-সন্দর্ভ"-নামক পরম পাণ্ডিভাপূর্ণ গ্রন্থ ভাগবত অবলম্বনেই রচিত, ভাগৰতে প্ৰতিপাদিত ভদ্বাবলীর বিলেবণে ও আবশ্ৰক স্থলে অম্বরসাধনে নিযুক্ত। ইহারই এক সন্দর্ভে তিনি প্রমাণ করিতে চেষ্টা করিয়াছেন, পুরাণের স্থান বেদের উপরে এবং পুরাণসমূহের মধ্যে ভাগৰতের স্থান সকলের উপরে। গৌড়ীর বৈক্ষ**র সম্প্রদারের উদ্ভবের পূর্ব্বে অ**বৈড-वानी, विभिद्वेरीष्ठवानी, देवज्वानी ७ व्यदेवज्वानी मन्ध्रभावनान वय मठ-

স্থাপন অস্ত প্রস্থানত্ত্বির ব্যাখ্যা করিতেন অর্থাৎ প্রতিপ্রস্থানরূপে দশ উপনিবদের, স্থারপ্রস্থানরূপে ব্রহ্মপুত্রের এবং স্থৃতিপ্রস্থানরূপে গীতার ভাষ্ঠ করিছাছিলেন। আদি গৌড়ীর আচার্থ্যপণ অচিন্ত্যভেদাভেদবাদ নামে একটি বাদের প্রতিষ্ঠা করিলেও ত্র্মতামুসারে প্রস্থানত্ত্বের রাখ্যা অর্থাৎ ভাষ্ঠ প্রশন্ধন আবশুক মনে করেন নাই। ভাগবতই তাহাদের ছিল প্রথম ও শেব সম্থা। ফলে উত্তরকালে জরপুরে রামান্ত্রী সম্প্রদারের সহিত বাদে আহ্রত হইয়া ভদানীস্তন প্রেষ্ঠ গৌড়ীয় মনীবী (অতি বৃদ্ধ বলিয়া জয়পুর গমনে ম্বর্ম অলক্ষ্ঠা বিশ্বনাধ চক্রবর্ত্তীর প্রতিভাবান্ শিষ্ক বলদেব বিভাস্থ্যপকে কিঞ্চিৎ অপ্রতিভ হইতে হইয়াছিল। পরে তিনিই গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদারের ঐ অপুর্ণতা দূর করেন।

ভাল, যদি ভাগৰত ব্যাসের সর্ক্ষি হয়, তাহা হইলে পরের এখ হইতেছে উহার কোন অংশ শ্রেষ্ঠ। এ প্রখের উত্তর বোধ করি গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায়ের পক্ষ হইতে হইবে—দশম স্কন্ধের রাস-পঞ্চাধাায়। কেননা উহাই তাহাদের পরম প্রিয় বলিয়া—পাঠ, কথকতা ইত্যাদিতে অধিক প্রচলিত। মহাপ্রভু রায় রামানন্দকে প্রশ্ন করিলেন—

শ্রবণ মধ্যে জীবের কোন শ্রেষ্ঠ শ্রবণ ? রামানন্দ উত্তর দিলেন—

রাধা কৃষ্ণ প্রেম কেলি কর্ণ রসায়ন।

অবশ্য ভাগৰতে রাধার উল্লেখ নাই; কিন্তু গৌড়ীয় বৈঞ্বগণ মনে করেন, ভাগৰতের রাদলীলার বর্ণনায় তিনি অনতিঞ্চছয়ভাবেই আছেন।

রাস-পঞ্চাধ্যায়ের মধ্যে কোন কয়টি শ্লোক শ্রেষ্ঠ এ বিষয়ে আমার আমি অনুমানের ম্পদ্ধা করিলাম না। বৈক্ষবগণ বলুন।

আবার ভাগবতের সাররপে তথাক্থিত চতু:লোকী ভাগবতের মর্যাদা ও বৈক্ষরপণের চক্ষে বড় কম নর। স্বরং মহাপ্রভু প্রকাশানন্দের। সহিত বিচারকালে উহার উল্লেখ ক্রিরাছিলেন বলিরা অনেক বৈক্ষব প্রভার উহা পাঠ করেন। লোক চারিটি এই:

আহমেবাসমেবাথো নাজদ্বৎ সদসৎপরস্।
পশ্চাদহং য দেওচে বোহৰশিক্তেত সোহম্মাহম্ ।
কতেহর্বং যৎ প্রতীয়েত ন প্রতীয়েত চান্ধনি।
তদ্বিভাগান্ধনৌ সারাং যথাভাসো যথা তমঃ ।
বধা সহাভি ভূতানি ভূতেব্চাবচেবনু।
প্রবিষ্টাক্তপ্রবিষ্টানি তথা তেবু নভেবহম্ ।
প্রতাবদেব জিল্লাভ্যং তথা জিল্লাভ্যনান্ধনঃ।
ভাবদেব জিল্লাভাং তথা জিল্লাভ্যনান্ধনঃ।
ভাবদেব জিল্লাভাং বথা ভাব সর্ববিদা । (২০১০-০০)

গৃষ্টির পূর্বে আমিই ছিলাম, ছূল, কৃল্ম ও তাহাদের কারণ বে প্রধান সে সমন্ত কিছুই ছিল না। আমিও তথম কেবল ছিলামই (কোনও ক্রিয়া ছিল না)। গৃষ্টির পরে আমিই আছি, এই বে বিব তাহাও আমি, প্রলয়ে যাহা অবশিষ্ট থাকিবে তাহাও আমিই। বান্তব বন্ধ না থাকিলেও যা কিছু অধিষ্ঠান আন্ধার প্রতীত হর, আবার সত্য হইরাও যাহা প্রতীত হর না, তাহাই আমার মারা বলিরা জানিবে। দৃষ্টান্ত বথা বিচন্দ্র, যথা রাছ। বেমন মহাভূতসকল ভৌতিক বন্তসকলের মধ্যে স্টার পরে প্রবিষ্টও বটে, অপ্রবিষ্টও বটে, সেইরূপ ভূত ভৌতিক সকলের মধ্যে আমি আছি, আবার নাইও। আন্ধৃত্যক্তিজান্থ ব্যক্তির ইহাই বিচার্ঘ্য সকলের মধ্যে কারণরূপে অনুবৃত্ত হইরা এবং কারণাবহার যে সকল হইতে ব্যতিরিক্তরূপে সর্ব্যন্ত ব্যক্তির আন্ধা।

এই চারিটি লোক কিন্তু দশম ক্ষেত্র অন্তর্গত নয়; ছিতীয় ক্ষেত্র নবম অধ্যায়ের অন্তর্গত। আর ইহাও লক্ষ্য করিবার যোগ্য যে ইহাতে রাদলীলার বা রাগামুগা ভক্তির নাম গন্ধও নাই।

বস্ততঃ রাস-পঞ্চাধ্যায় আদিরসঞ্চধান বলিয়া কাবাংশে অত্যুত্তম হইলেও সাধারণের দিক দিয়া উহার উৎকর্ধ সর্ব্ববাদিসম্মত নহে (অবশ্রু গৌড়ীয় বৈক্ষব সম্প্রদায় ভিন্ন)। এই মতে আদিরসের পিচ্ছিলতা ধর্মন্দাধকের পতনেই আমুকুল্য করে; শাস্তরস নিরাপদ বলিয়া সর্ব্বাধিক বরেশ্য। এই দিক দিয়া দেখিলে জ্ঞান ও ভক্তি উভয় প্রধান বলিয়া তৃতীয় স্থলের অস্তর্গত কপিল-দেবহুতি সংবাদ অনেকের অধিক প্রিয়। আবার ভাগবতের সমস্ত শিক্ষা নয়টি প্রসংস বিভক্ত করিয়া—একত্র পুনর্বিত্ত করায় একাদশ স্বলের অন্তর্গত নিমি ও নবযোগীক্র সংবাদও ভাগবতের সারাংশের মধ্যাদা পাইবার যোগ্য বিবেচিত হইতে পারে।

ব্যাদের রচনাসমূহের মধ্যে শীমদ্ভাগবতের শেষ্ঠতা সম্বন্ধে ছুইটি আপত্তি কল্পনা করা যাইতে গারে। প্রথমটি এই যে, শীমদ্ভাগবত ব্যাদের রচনাই নর। আধুনিক গবেষকগণের মতে উহা বিষ্ণু, বার্ প্রভৃতি পুরাণের বহু পরে দাক্ষিণাতাবাসী কোনও পণ্ডিতের রচিত। ইহার ভাষা অক্সপুরাণের ভাষা হইতে অত্যন্ত জটিল এবং অনেকাংশে কৃত্রিম। এই আধুনিক মত এ প্রবন্ধে উপেক্ষা করিয়াও ইহা বলিতেই হইবে যে, শীমদ্ভাগবত ও মহাভাগবত (দেবীপুরাণ) এই ছুই গ্রন্থের মধ্যে কোনটি ব্যাদকৃত ভাগবত মহাপুরাণ, সে বিষয়ে প্রবল বিতর্ক বহ প্রচীনকাল ছইতেই চলিয়া আসিতেছে। বৈক্ষবণণ প্রথমটির এবং শৈব ও শান্তগণ শিত্রীরটির সমর্থক।

ষিত্তীর আপত্তি এই যে, শীমদ্ভাগবতকে গৌড়ীর বৈক্ষব সম্প্রণার যে মর্য্যাদা দিয়াছেন, অস্ত বৈক্ষব সম্প্রদার তাহা দেন নাই। বিশেষতঃ রামামুক্ত ও মধ্বাচার্য্য বিকুপুরাণকেই সমধিক প্রামাণিকরপে মর্য্যাদা দান করিরাছেন, উহা তাহাদের প্রণীত বেদান্তভাক্ত হইতে অতিস্প্রিরপেই অমুমান করা যার।

আরও একটি মত আছে—তদমুসারে পুরাণসমূহের মধ্যে অগ্নিপুরাণের বৈশিষ্ট্য সর্বাভিরেকী। ইহাতে একদিকে যেমন পরাবিভার
সম্চিত বিলেবণ করা হইরাছে সেইরূপ অঞ্চাকিক অপরাবিভারও বহু শ্রেষ্ঠ
শাধার—বধা ছন্দঃলাল্ল, অলভারণাল্ল, ব্যাকরণ, অভিধান,
জ্যোতিবাদিরও সমাক্ সমালোচনা করা হইরাছে—যাহা হইতে ঐ সকল
শাল্লের প্রবর্তী বিলেবকপণ বহু সাহায্য পাইরাছেন। এইরূপে স্বত্ত

খতত্র কারণে পদ্মপুরাণ, মার্কণ্ডেয় পুরাণাদিরও বহু পক্ষপাতী প**ভিত** আছেন।

এই স্থানে এরূপ অনুসানও করা ঘাইতে পারে বে এই প্রবন্ধের অনেক পাঠকই হয়ত বলিবেন, ব্যাদের সর্বান্থ অনুসন্ধানের চেষ্টার পুরাণ অরণ্যে মধ্যে গোলা দিগ্রাস্ত হওলা নিতাস্তই একটা শোচনীর ব পার। ব্যাস কি জগতে পুরাণকার বলিয়া প্রসিদ্ধ, মা মহাভারত-কার বলিয়া প্রসিদ্ধ ? কোন পুরাণের মর্য্যাদা মহাভারতের তুলা ? প্র্যোর কাছে যেমন দীপ, তেমনই মহাভারতের কাছে এক একটি পুরাণ। মহাভারত সর্কবিজ্ঞার খনি। "ঘাছা নাই—'ভারতে' তাহা নাই ভারতে" এ কথা ত এদেশে বহুকাল হইতে খীকুত। ইহা একাধারে ইতিহাস, পুরাণ, ধর্মশাস্ত্র, দর্শনশাস্ত্র, অর্থশাস্ত্র, রাজনীতি 😮 वावराजनाञ्च। मविष्किरे हेशद व्यवाधना यूर्व यूर्व स्मान विस्मान সকলের বিশ্বর উৎপাদন করিতেছে। মহাভারতই ব্যাসের সর্ববি এ বিৰয়ে কি আর কোনও সন্দেহ হইতে পারে ? মহাভারত লিপিয়া চিত্তের প্রসন্নতালাভ করিতে না পারিয়া ব্যাস নিজম রচনারীতি ত্যাস করিয়া উৎকট জটিল ভাষায় ভাগবত-পুরাণ লিপিতে বসিরাছিলেন-এ কথা সাম্প্রদায়িক গোড়ামি ভিন্ন মার কি হইতে পারে ? উহা কেবল অন্ধ বিশাসীরাই মানিবে।

ভাল, মহাভারতই যদি ব্যাদের সর্বাধ হয়, তাহা হইলে উছার শ্রেষ্ঠ অংশ কোনটি ? ইহার উত্তর কিন্তু সহজ নর। কেহ হয়ত বলিবেন, শাস্তি পর্বা; কেহ বনপর্বা, কেহ মুর্গারোহণ পর্বা; অধিকাংশ লোকে বলিতে পারেন ভীত্ম পর্ব্ব, গীতা যাহার অন্তর্গত। এইস্থানে প্রার্থ উঠিতে পারে, গীতা কি সভাই মহাভারতের অংশ 🤊 বিদেশীয় পতিতগণের মধ্যে অনেকেই গীতার মর্যাদা সমাকরপে মানিরা কইরাও উহা মূল মহাভারতের অন্তর্গত কিনা এ বিষয়ে সংশয় প্রকাশ করিরাছেন এবং দক্ষে দক্ষে ঐ মতের প্রতিধ্বনিরূপে অনেক ভারতীর পণ্ডিতও বলিয়াছেন ওটা প্ৰক্ষিপ্ত। বিচারপতি তেলাং এই বিষয়টি বিচার করিয়া রায় দিয়াছেন, গীতাকে মূল মহাভারতের অঞ্চ (integral part) বলিয়া মানিয়া লওয়ার পক্ষে স্থায়সঙ্গত কোনও বাধা নাই। আর একখাও এখানে বলা যাইতে পারে, পাশ্চাত্য পত্তিভগণের মধ্যেও একজন যিনি গীতাখানি সম্থিক প্রয়য়ের সঙ্গে পড়িয়াছেন, দেই আন্মান পণ্ডিত Dr. Rudolf Otto গীতার মধ্যে আটটি বতত্র স্তার আছে, এইরাপ নিদ্ধান্ত করিয়াও বলিয়াছেন, কাল: ক্রমে এইসকল সাম্প্রদায়িক শুর গীভার মধ্যে জমাট বাঁধিলেও মুল গীতা মহাভারতেরই অঙ্গ এবং উহার সহিত সম্পূর্ণ সামঞ্চত্যুক্ত। আমরা আধুনিক মত সকল এ প্রবন্ধে উপেক্ষা করিরাই চলিয়াছি। স্তরাং গীতার বোল আনাই মহাভারতের অন্তর্গত ইহা আমাদের बीकार्या।

আচ্ছা, গীতা যদি সহাভারতের সর্ববিধ বা শ্রেষ্ঠ অংশ হর, তাহা ছইলে পরের প্রশ্ন করা বাইতে পারে গীতার শ্রেষ্ঠ অংশ কি ? অসুমান ছইতে বলি, অনেকে হয়ত বলিবেন, কেন ? একানশ সর্ব…বেধানে অর্জুনের বিশ্বরূপদর্শন ও তৎসপ ত উজি অতি মনোরম ভাবার বর্ণি চ হইরাছে। অন্তবাদিগণ বলিতে পারেন, কাব্যাংশে একাদশ সর্গ শ্রেষ্ঠ হইলেও কাব্য গীতার সর্ববিধ নর—গীতার সর্ববিধ তত্ত্ব। "কাব্যেন হস্তত্তে শাত্রম্।" তত্ত্বাদিগণের মধ্যেও ঐকমত্য আশা করা বার না। ওাহাদের কেহ হরত বলিবেন, ঘাদশ সর্গ শ্রেষ্ঠ, কেহ ত্রয়োদশ, কেহ পঞ্চদশ। ভক্তগণ বলিতে পারেন এবং অনেকে বলিরাও থাকেন জানি, গীতার সর্ববিনাম অংশ নবম সর্গ এবং তাহার মধ্যেও বিশেষ করিয়া— এই পাঁচটি খোক—

অপি চেৎ বহুরাচারো ভজতে সামনস্তভাক্।
সাধুরের স মন্তব্য: সমাস্ ব্যবসিতো হি স: ॥
ক্ষিপ্রং ভবতি ধর্মান্ধা শবছোন্তিং নিগছতি।
কৌজের প্রতিজানীহি ন মে ভক্ত: প্রণশুতি ॥
মাংহি পার্থ বাপাপ্রিভা বেংপি ব্যাঃ পাপবোনর:।
ব্রিরো বৈশুটা তথা শুলা তেপি বান্তি প্রাংগতিন্॥
কিং পুন ব্রাহ্মণাঃ পুবা ভক্তা রাজর্বরন্তবা।
অনিভাসপ্রথং লোক্ষিমং প্রাণ্ড ভল্প মান্॥
মন্মনা ভব মন্ডকো মন্বাজী মাং নমসুরু।
মারেবৈছিসি যুক্তৈব্যান্ধানং মৎপ্রায়ণঃ ॥

বভাৰত: গুছুতপ্ৰবৰ মানবের পক্ষে ইহার অধিক আশার কৰা, ইহার অধিক জানিবার ও মনে রাখিবার বিষয় আর কি হইতে পারে ? আর ব্যাসদেবও কি এই অধ্যারের নাম রাজবিভারাজও্ঞ্যোগ দেন নাই ?

শুক্ত পাৰ্থ প্ৰবিদ্ধ দিক ধরিয়া চলেন, বোগীদিগের (এবং জ্ঞানী-দিপেরও) তাহা তাদৃশ মনঃপুত নর। যোগিগণের নিকট ষঠ অধ্যায় অধিক আদরণীর বলিয়া মনে করা যাইতে পারে।

আবার, চতু:লোকী ভাগবতের স্থান সপ্তলোকী গীতাও আছে।

উহাও বহু বুগ যাবং অনেকের নিত্য পাঠ্য। সেইজভ এরপও অসুমান করা বার, অনেকে বলিবেন সমগ্র গীতার সার উহাতে সংগৃহীত আছে বলিরাই উহার এরপ মধ্যাদা। এই সাতটি লোক আর এথানে উদ্ধৃত করা আবশুক মনে করিলাম না।*

মহাভারত সহক্ষে এই পর্যান্ত। পুরাণের ভার মহাভারতকেও ব্যাদের গৌরবের চূড়া বলিয়া স্বীকার না করিতে পারেন এইরাপ বাদীও অমুমানধোগ্য। এ পক্ষ বলিতে পারেন, প্রাচীন ভারতের এই শ্রেষ্ঠ কোবিদের প্রকৃত নাম কৃষ্ণদৈপায়ন যে তাঁহার বেদব্যাস এই উপাধি দারা আয় ঢাকা পড়িয়া গিয়াছে তাহার কারণ বেদবিভাগই তাঁহার শ্রেষ্ঠ কীর্ত্তি। বেদ অবশ্য তাঁহার রচনা নয়, কিন্তু বেদের জ্ঞানকাণ্ডের শিক্ষার সার প্রদর্শন করিবার জম্ম তিনি य रामाखनेन बकाएक नाम निया धारम कतियाहन, जाराहे कि अठ শতাকী পরেও ভারতের নাম যুরোপ ও আমেরিকার শ্রেষ্ঠ মনীবি-গণের কাছে চির আদরণীয় করিয়া রাখে নাই ? অবৈত, বিশিষ্টাদৈত ও হৈতাহৈত—ত্রহ্মস্তের যে ব্যাখ্যাই বল (এবং প্রকৃতপক্ষে এই বাদগুলির মধ্যে ভেদ অতি অন্নই), বেদাস্ত দর্শন বিশ্ব দর্শনের মুকুটমণি ইহা প্রায় অবিসংবাদিত সত্য। শীকৃষ্ণ পর্যান্ত গীতার প্রমাণরাপে (১৩।৪) ব্রহ্মপুরের উল্লেখ করিয়াছেন, অস্তে পরে কা কথা ? অভএব যদি ব্যাদের দর্ব্বস্ব বলিয়া তাঁহার গৌরবময়ী কৃতিদকলের মধ্যে কোনওটিকে নির্জেশ করিতে হয়, তবে ব্রহ্মস্ত্রই সেই কৃতি। আর ব্রহ্মফতের সার হইতেছে প্রথম চারি স্ত্র—"চতু:স্ত্রী" যাহার আশহরাচার্যাকুতভাষ্য দার্শনিক মণীষার উচ্চতম সীমা বলিয়া---দেশে বিষেশে খীকুত হইয়াছে।

লোক সাতটির ঠিকানা যথাক্রমে এই: ৮।১০, ১১।৩৬,
 ১৩।১০,৮৯,১৫।১৫।১৫,৩৪১৮।৬৫

পূৰ্ব আফ্ৰিকায় ভ্ৰমণ

বেদাচারী রাজকৃষ্ণ

(পুর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

বুকেনীতে আমরা (ভারত সেবাগ্রহ সংঘের প্রতিনিধি, হিল্পুধর্ম প্রচারের সন্ধ্যাসীবৃন্দ মাত্র তিন দিন থাকবার মনত্ব কোরেছি। আটাপে সেপ্টেম্বর বিকালে হানীর হিন্দু মহিলাদের একটা সভার সর্বাগন্তক্রমে একটা মহিলা মঙল ছাপিত হোল—বার কর্মপন্ধতি হির হোলো.—এই দূর বিদেশে ঘর সংসারে হিন্দু রীতি-বীতি আচার অসুঠান পালন কোরে চলার অস্ত সর্বপ্রকার প্রযন্ত ও নির্দেশ দান করা। সাপ্তাহিক অধিবেশনে রামারণ, মহাভারত, গীতা প্রভৃতি ধর্মগ্রহ পাঠ, পূজা, আরতি, ভজন কীর্ত্তনের মধ্য দিয়ে সহরে ছিল্পুদের ভাব জাগিরে রাখা। সন্ধার আবাদের শেব বন্ধুতার আরোজন হোরেছে। সভার বহিন্তারতে ছিল্পুদের

কী ভাবে থাকা দরকার, বাধীন ভারতের নাগরিকের দারিত্ব কি—এই সব বিবরে বক্তৃতা কোরলেন—মিলনের সহকারী নেতা বামী পরমানক্ষা। বস্তুতার পর স্থানীয় অবস্থা,আফ্রিকানদের মধ্যে কী ভাবে হিন্দুৎ প্রচার করা যান—দেই সব বিবরে বহু প্রকার আলোচনা হোল। রাত্রি প্রায় ১২টার লোকজন বিদার নেওরার পর আমরা শোওরার ঘরে পেলাম। লেঠ অমুত্তলালের দক্ষে অনেকক্ষণ পর্যন্ত বর্ত্তমান পরিস্থিতি সম্পর্কে আলোচনা চললো। বাংলা ও পাঞ্জাবের দাসা সেবা কার্ব্যের কক্ষ্ণ উটার ব্যক্তিগতভাবে ২৪ হাজার লিলিং পাঠানোর রসিদ পত্র সব দেখালেন। অমুত্তলালের বরস নিতান্তই অল্ল। ২৮।২৯ বছর হবে। কিন্তু ব্যবসারে প্রবীণ। তিন্টি মিলের বালিক। অত্যন্ত অমারিক, নিরহ্ছারী এবং আমুক্রছালু।

রাত্রি অবদানের দক্ষে দক্ষে আমাদের বুকেনী ত্যাগ কোরতে হবে। এ নির্দ্ধেশ আরু সন্তার পরে ক্রনৈক শ্রোতার নিকট হোতে পেরেছি। তবে সেই নির্দেশ বাধাতামূলক নয়। "আপনারা ভোরেই প্রস্তুত वाकत्वन-मामात्र सावित्र এतम माशनात्मत्र नित्त्र यात्व"-- এই हित्ना প্রানীয় একজন ধনী বাবদার। তীযুত কুরজী ভীমজীর নির্দেশ। বুকেনী (शत्क २८ मांहेल मृत्त्र स्त्रणा नात्म এकि आंभा महत्त्र कांत्र स्वात्र अकि ব্যবদায় কেন্দ্র আছে ; দেখানেও প্রায় ৬। ৭ টি ছিন্দু পরিবারের বাদ। তাই তার বিশেষ ইচ্ছা দেই প্রামেও আমাদের নিয়ে যান। অমুতলালকে ভার ঘরে পাঠিয়ে দিরে আমরা প্রার্থনা সেরে সবে মাত্র শুরেছি.—এমন সময় বাইরের দরজার টক টক কোরে খা পডলো। বাডীর মালিক অমৃতলাল শশব্যন্তে গিয়ে দরজা খুল্লেন "May I come in Sir" প্রাথ এলো : Of course বলে একটি ইংরেজ মহিলাকে অমুতলাল ঘরের মধ্যে ডেকে বিলেন। এতরাত্তে একাকিনী একটি ইংরাজ মহিলা কোণা থেকে এলো-কেন এসেছে সেটা কানার ইচ্ছা মনে জাগলেও-দে রাত্রে আর দে ইচ্ছা পুরণ না কোরে শুরে পড়লাম। ভোরে পাঁচটার সান-আহ্নিক দেরে নিয়ে তৈরী হোয়ে মোটরের অপেকায় রইলাম। वांहेरवब वावान्याय वरम व्यक्ति-अयन मयत्र रमहे हेश्वाक महिलांहि धव থেকে এনে আমার হাত ধরে বললেন—"Already I have heard from Mr. Amritlal about your mission. I am also a woman of that type. We are also preaching the ideals of Universal Brotherhood, I wish all success of your Mission. Now that India is free and it is hoped that now she will depute the Preachers of Her glorious Culture to the corners of the world."-- বলে বেশ একটা আনশ-প্রকাশ কোরলেন। প্রভাতরে আমিও তার প্রচারের সাফল্য কামনা ক্রলাম। ছ:খ কোরে জানালেন "সময়াভাবে আমি আপনার সঙ্গে বেশীকৰ আলাপ আলোচনা করতে পার্ছি না-কারণ আমাকে ৬-৪৫ মিনিটের ট্রেণে অক্তক বেতে হবে। এই বলেই পুনরার ধক্তবাদ জানিয়ে ^{(म) हेर्} दान-छेन्। पिरक इक्ष्मा होर्द्ध (ग्रालन । क्थ्म दिला आह খা•টা। প্রান্তরাশের পর সেই বারান্দার বসে আছি, হঠাৎ দেখি সেই है : ब्रांक महिनाहि किरत अरना । अरक वारत आमात मामरन अरम वरनन-Fortunately the train is coming a few minutes late, so I have got sometime to talk with you—এই বলে আলাপ বুক কোরলেন। পূর্বা আফ্রিকার কোথার কোথার গিয়েছি, কোথার कि वार्षा वार्षा, जामारमञ्ज अठावी विवन कि-डिजामि जितन नितन आन २०१२ विनिटिंद मत्था करल श्रीलन। योखदांत नमत मखरा स्कारत গেলেৰ—It has been proved that the Western Culture has already failed to establish peace in the world. To solve the present problems of the world the Universal ideals of India are essentially needed." ভাবনাম-বাধীন ভারতের नांश्रीतरकत्र खाला-बर्वाताला का कालकीता अरुव्यक्तित आफि वर्वारवांशा नवान

দিতে ইংরেজেরাও আজ শিথেছে। এতদিন "কালা-আদমী" বল্ডে বাদের বৃক্ থানা অহংকারে ফুলে উঠ্তো,—প্রস্তুহ্লন্ত ব্যবহারে বারা এতদিন অভ্যন্ত হোরে গিরেছিলো, তারাই আজ এত গভীর প্রেম ও শুদ্ধার সঙ্গে ভারতীরদের সহিত আলাণ আলোচনা কোরছে। বাধীনতার মর্ম্ম কতকটা অমুভব ক্রলাম।

এখনই আমাদের জেগার বাওয়ার কথা। বোটর আসতে একট্ট प्तत्री रहाल । अनित्क ऋत्वत्र ছाल्यास्त्र अवः हाउँ महत्त्रत्र हिन्तृत्र। প্রায় সকলেই এসে হাজির হোলো—আমাদের বিদার দিতে। সমবেত স্বরে মঙ্গলমন্ত্র উচ্চারণ কোরে আমাদের পথের সমগ্র বাধা বিপত্তি সরিৱে দিলো। নোটর আদতেই উঠে বোদলাম। ড্রাইভার একজন আফ্রিকান। সহর ছেড়ে মোটর কিছুদুর আদলে ড্রাইভার তার নিজধ কিসোরেলী (Kiswelli) ভাষায় আমাদের সম্বন্ধে গাড়ীর মালিক শ্রীকুরকী ভীমঙ্গীর সহিত আলাপ হার কোরলো। শীয়ত ক্রজী আমার সঙ্গে আলাপ করার জগু ডাইভারকে বলেন। কিন্তু ডাইভার জানালো—এই সমস্ত ° মহৎ ব্যক্তির সহিত তার কথা বলা সাজে না। এ কথা ওনে যথন আবাস দিয়ে উপযাচক হোয়েই আমি তার সঙ্গে কৰা বোলতে স্থক কোরলাম—তথন সে হাইচিত্তে বার্তালাপ স্থক কোরলে। দেখুলাম অনিক্ষিত হোলেও কত নিষ্টতা তার আলাপের মধ্যে—এবং ভারতের উন্নতি ও সমৃদ্ধি সম্বাদ্ধ কত উচ্চ আশা সে রাথে। বললো—"এখন ভারত স্বাধীন হোরেছে, এ দেশে এসে আমাদের হু:খ কষ্ট দেখে ভা খেকে মুক্ত করার চেষ্টা করবে নিশ্চরই। অতি শীঘই জাহাজের ভাড়া কমিয়ে দেওয়া হবে তথন বহু ভারতীয় আমাদের দেশে আদতে পারবে এবং আমরাও ওদেশে যেতে পারবো।" তারপর আমাকে বললে—"আমাদের দুঃখ কট্টের কথা অনুপ্রাহ কোরে আপনি ভারতে প্রচার কোরবেন।" তাদের সম্পর্কে ভারতীয় মেতাদের कानार्या र्वाल यथन जायान पिनाम-७थन जात्र कुछ ज्वाहरी राम वित्रांहे, ও উদার হোরে পেলো বলে মনে হোল। যাহাদের মধো ক্রতা বাসা বাঁথে নাই-সমলতা যাদের হৃদর্থানা স্থুড়ে ররেছে তারা बाकरेनिक हानवाकी अंक्षां की वृत्राद ? त्य (मानव व्यविवामी বভাৰত:ই ভারতের প্রতি এতথানি এছাবান ও বিশাসী হোরে উঠেছে, পাছে সেই ভারতবাদী কর্ত্র এই শ্রদ্ধানু জনগণের অন্তরে দেশগ্রেম লাগিয়ে দেওয়া হয় সেই আশ্ভায় সরকারের নৃতন আইনে খাধীন ভারতের নাগরিকের পক্ষে এদেশে আদা বা বদবাদ করা একএকার নিবিদ্ধই হোরেছে-এবং পরাধীন ভারতে ছ:খ চর্দ্দশার কর্মনিত হোরে যারা ভারত বন্ধ ত্যাগ কোরে এদেশে এসে অপেকাকৃত করে শান্তিতে বদবাদ কোরছে তাদেরও এদেশ থেকে বিতাড়নের বড়বল চলছে। কোনো ভারতীয় প্রতিষ্ঠানের পক্ষ খেকে এসে এ দেশবাসীর (native's) কল্যাণ কামনার কোনো কর্মপন্ধতি নিমে কাল কোরতে পারবে না ডাঙ প্রকারায়রে সরকার সিন্ধান্ত কোরে নিরেছে। এলপ কোরলে এ দেশবাসী ভারতের জনগণ তথা রাষ্ট্রের প্রতি অসুগত হোরে উঠতে शाद्य तारे क्छ और चाक्रिकानशंत्रक नद्रवाता त्यंद्रक दान जावशादकावन

সক্ষে 'রিজার্ড' কোরে রাখা হোয়েছে। শিক্ষার ব্যবস্থা সরকার থেকে যা করা হবে—উন্নতির প্রচেষ্টা সরকার যা করবে তাতেই সম্বন্ট থাকতে হবে। ভারতীয়গণের কোনো বে-সরকারী প্রতিষ্ঠান এ দেশবাসীর জন্ম কোরতে পারবে না—মোটাম্টি এই হোল আইন।

কথা প্রসঙ্গে সেই ড্রাইভার রান্তার পাশের ছোট ছোট কুঁড়ে ঘর (গরীব আফ্রিকানদের বাড়ী) গুলি দেখিয়ে জিজ্ঞেদ কোরভে লাগলো---এইরাপ ঘর ভারতে আছে কি না ? নিজেই মন্তব্য করে বললো---নিশ্চরই এত গরীব লোকের বাদ ভারতে নেই। নিজেই প্রমাণ (म्थाय़—क्न--এই मिल् मोब्रिक्ता थाक्त ना। मब्रकांत्र थिक कछ রক্ষে তাদের শোষণ করা হ'চেছ তার ইতিহাস আমাদের কাছে বলতে लागाला-जम क्रिंड ১२ मिलिश क्रव, शांक क्रिंड मिलिश शंकना, আরও কত রকমের কর যা তাদের সরকারকে দিতে হয় সে সব কানালো। এ প্রকার নানা স্থ-ছঃথের কথা শুনতে শুনতে আমরা - সামাদের গস্তব্যস্থল জেগার পৌছুলাম। মোটরে স্মামাদের দেখেই তো লোকলন অবাক্। কোখা খেকে এলো এই অভুত মানুবগুলো, মাধার পাগড়ী থেকে পায়ের জুতো পর্যন্ত গৈরিক রংএ রঞ্জিত। জেণার ইতিহাসে সন্নাসী পদার্পণ এই প্রথম এবং অধিবাসীর জীবনেও সাধুদর্শন এই প্রথম। একুরজী ভীমজীর বাড়ীতেই আমাদের থাকা থাওয়ার ব্যবস্থা হোয়েছে। আমাদের জন্ম নির্দিষ্ট খরে শ্রীশ্রীসঞ্বদেবতার আসন প্রতিষ্ঠা কোরে কাপড় জাসা বদলাতেই খাওয়ার আফ্রিকান পাচক পাকক্রিয়াদি সম্পন্ন কোরেছে। একুরজী অত্যস্ত সংখ্যাচের সহিত অমুনয় কোরে জানালো—অতিথি সৎকারের ক্রটীই ছবে থাতনেব্যের অধাত্তায়। কিন্তু আশ্চর্ব্য হ'লাম—থাতের বাদ ও দৌন্দর্য্যের পরিপাটিতায়। যারা নিজেরা কোনো দিন এত কুলরভাবে भाक करत थात्र ना ; यात्रा व्याक्छ कींठा मारम क्लम्लानि थ्यात्र জীবন ধারণ করে, তারা যে এত স্বন্ধর স্থাছ খাত প্রস্তুত করতে পারবে তা আমাদের কেন-বোধ হয় একুরজীরও ধারণার বাইরে ছিলো। যাই হোক থাওয়া ভো বেশ তৃত্তি সহকারেই শেব কোরলাম। নানা রকম সংবাদ জানা বা আলাপ আলোচনার জন্ম লোকজন বাইরে এসে অপেকা কোরছিলো—তাই খাওয়ার পরই বাইরে এলাম। নানা রকম কৰাবার্ত্তার সঙ্গে সঙ্গে ভারতের দাঙ্গা, স্বাধীনতা সংগ্রাম, সজ্যের কর্মপদ্ধতির ইতিহাস, সজ্ব-প্রতিষ্ঠাতা আচার্য্য স্বামী প্রণবানন্দ্রীর জীবনী আলোচনাও হোল। প্রত্যেক স্থানেই আমাদের পেরে প্রথমেই আমাদের এদেশে প্রেরক ভারত-সেবাশ্রম-সজ্বের কর্মপদ্ধতি ও প্রভিষ্ঠাতার বিষয়ে বিশেব আরহের সঙ্গে সকলে জানতে চার। ৰণ্টা খানেকের মধ্যে একে একে সকলেই বিদায় নিলো। তথন ভিতরের ঘরে গিয়ে কী যেন কাজে মনোমিবেল করেছি এমন সময় একুরজী একমন আফ্রিকান রামার সঙ্গে আমাদের খরে প্রবেশ কোরলেন। दाजांत পরিচয় দিয়ে जीकुतको বলেন—"ইনি এই জেলার রাজা, নাম भि: इषि" (Humby)। जामारण्य প्रविष्य जिन भि: इषिएक शूर्व्स নিশ্চয়ই দিয়েছিলেন—ভবু রীতি অমুযাধী পুনরার আমাদের সাক্ষাতে পরিচয় দিয়ে দিলেন। মিঃ ছম্বি বেশ শিক্ষিত লোক, তাই ইংরাজীতেই বার্দ্তালাপ হরু হোলো। কয়েক মাস পূর্বেব যথন আমরা জাঞ্লিবার দীপের স্থলতানের সহিত সাক্ষাৎ কোরে তাঁর রাজ্যের অধিবাদীদের বিষয় দোভাষীর সাহায্যে আলোচনা কোরেছিলাম তথন এত বেশী আনন্দ পাইনি। কারণ তিনি ইংরাজী জান্তেন না। মি: হিছি অপমেই তানের দেশে ভারতীয় সংস্কৃতি ও সভাতা অচারের জন্ম যে আমরা এসেছি তার জন্ম বিশেষ ধন্মবাদ জানিয়ে বললেন—"এতদিনে যে ভারতরর্ণ আমাদিগকে অজ্ঞানভার অন্ধকার হোতে উদ্ধার কোরে উন্নতির পথ প্রদর্শনের জন্ম তার মহান সভ্যতার আলোকবর্ত্তিকা জ্বালিয়ে দিতে আপনাদের এলেশে প্রেরণ কোরেছেন সেঞ্জ আমরা আজ আনন্দিত। ভারত সরকার যে আমাদের হু:থ হুর্দ্দশা অমুভব কোরে তা' লাঘবের জম্ম চেষ্টা কোর্তে আপনাদের পাঠিরেছেন এবং আপনাদের আন্তরিক প্রচেষ্টার কথা গত কয়েক মাস ধরে যা ওনে আস্ছি ডা আমার প্রজাদের জানাবো। সেই একান্তিক প্রচেষ্টার জন্ত আমার इःथी প্রজাদের পক্ষ থেকে ধন্তবাদ জানাচ্ছি আপনাদের মিশনকে।"

তার পর একে একে তাদের সমস্ত হু:খ কষ্ট জানাতে জানাতে বললেন—"কী যে ছঃথকট্টের মধ্যে আমাদের রাখা হোয়েছে তা' আপনাদিগকে জানাবার ক্ষমতাও আমাদের নেই। অজ্ঞানভার আড়ান দিরে আমাদিগকে সভ্যতার আলোক থেকে সরিয়ে রাথা হোয়েছে। কত রকম কর চাপানো হোয়েছে—আহাদের উপরে—" বলে একটা দীর্ঘনিঃখাস ছাড়লো। হঠাৎ জিজ্ঞেদ করলেন—সামীজি! সভ্যতা की এমনই জিনিব,—স্বাধীনতা की এতই চুর্লভ যা আমাদের ভাগ্যে দেগুলো লাভকরা সম্ভবপর হবে না। দেগুলো কী লগতের কতক-গুলো লোকেরই করায়ত্ত থাক্বে? আমাদের দেশের লোক কি ভার আবাদ পাবে না ? মি: ছবির চোথ বেকে অঞ গড়িয়ে পড়লো। বিস্মিত হ'লাম-প্রথা ওনে। আখাদ দিয়ে বলাম-- ভাই, তা কথনই হোতে পারে না। আমরা বে দেশের বুকে জন্মছি—বে মহান্ সভাতার আলোকরশ্মি আমাদের অন্তরকে আলোকিত কোরেছে—আমরা চাই সেই দেশের সংস্কৃতি ও সভ্যতার আদর্শ ও আলোক--বিশের সকলকে স্ব্যকিরণের মতো সমান ভাগে ভাগ কোরে ণিভে। ভারত চার জগতের উচ্চ-নীচ সকলকেই তার মহান সভ্যতার উদার বুকে তুলে নিতে ;—চায় তার অন্তরের অফুরস্ত প্রেমরাজি বিশ্বকল্যাণে বিলিয়ে দিতে। দেই আদর্শ নিয়েই আজ আমরা দেশের বাইরে এসেছি। সেই মহানু সভ্যতার চিরস্তন সভ্য ও উদার নীতির প্রচারই আমাদের मिশদের **कार्याभक्कि।**"

তার পর মি: ছখি ভারতীয় সভাতার বিখ্ঞাত্ত্বের আদর্শ যে সমগ্র জগতে প্রচারিত হওরা দরকার তার উপর জোর দিরে বলেন— "ভারতের আদর্শই একমাত্র লগতকে ধ্বংসের ক্ষল থেকে উদ্ধার কোরতে সমর্থ। সেই আদর্শ নিরেই যে আপনারা এই আজিকা মহাদেশে এসেছেন ভাতে আজিকাবানী ভারতের নিকট চিরকুতক

ধাক্বে। আপনাদের প্রচার ছারীভাবে এদেশে প্রয়োজন। এদেশের কুদংস্থারাচ্ছর জনসাধারণকে উন্নত, স্থসভ্য কোরে প্রকৃত মানুষ কোরে তুল্তে হোলে ছারীভাবে আপনাদের এই নিঃমার্থ সেবার প্রয়োজন। বারা আজ আমাদের পরম হিতৈবী সেজে আমাদিগকে তথাকথিত উন্নতির পথ প্রদর্শনের চেষ্টা কোরছে তারা যে প্রকৃতই আমাদের কল্যাণ চার না তা' আজ স্থান্থটি হোরে উঠেছে। তাদের এই কুটচক্রজালে আজ আমরা আবদ্ধ হোরে পড়েছি।" এইভাবে নানাপ্রকার আলোচনার প্রায় একঘণ্টা অভিবাহিত হোরে গেলো।

মিঃ হম্বি গত মহাযুদ্ধের সময় আফ্রিকান সরকারের পক্ষ থেকে ভারতে অবস্থানকারী নিপ্রো সৈনিকদের তত্বাবধানের দোষ ক্রটী অনুসন্ধানের জন্ম ভারতবর্ষে গিয়ে একটা বছর পরাধীন ভারতের বুকে কাটান। পরাধীন ভারতে মাত্র একটা বছর কাটিয়ে ভারতের সভ্যতা ও আদর্শের যে সামাক্ত পরিচয় পেয়েছেন তাতেই ভারতীয় সভ্যতা ও সংস্কৃতির প্রতি কী গভীর প্রেম ও আন্তরিক শ্রদ্ধা এই ভল্লগোকের। তথ্ব এই একজনেরই নয়, লক্ষ লক্ষ আফ্রিকান যারা জীবনে ভারতবর্শের মাটি স্পর্শন্ত করেনি তাদের অন্তর্গবানিও আন্ত ভারতীয় আদর্শের প্রেরণা লাভের ক্রক্ত উৎস্কক হোয়ে রোয়েছে।

রাত্রে সভার হাজিরার সংখ্যা বেশ ভালই হোল। গুণে দেখ্লাম প্রান্তিশজন। যে সহরের জনসংখ্যা (হিন্দুর) চলিশ জন সেখানের সভার প্রিত্রেশজনের উপস্থিতি ভালই বৈকি। সভার "হিন্দুধর্মের বৈশিষ্টা" বিষয়ে আলোচনা হোল। বক্তৃতার পরে কয়েকটি প্রশ্ন করা হোল। এদেশে কোনরঁকম বক্তৃতার পর বক্তাকে বক্তব্য বিষয়ে কিছু কিছু প্রশ্ন কোরে অবোধ্য বিষয়সমূহ জেনে নেওয়ার নিয়ম। এ নিয়ম ইউরোপের নিকট ধেকে শেখা।

ব্যবস্থা কোরে দিলেন। ট্রেণ আসবে রাত বারটায়। আমাদের গন্তবাস্থল কাহামা যেতে হোলে যে ষ্টেশনে নামতে হবে দেখানের ষ্টেশনমাষ্টারকে টেলিফোন কোরে রাত্রে আমাদের থাকবার ব্যবস্থা করার জম্ম এপানের ষ্টেশনমাষ্টার ত্রীযুত বাগ্টী বলে দিলেন। শুলাম বটে, কিন্তু যুদ আর হোল না। ট্রেণ আসার ঘণ্টা বাজলো। ডার-এস-দালাম হোতে আগত মাউঞ্ছা-গামী মেল এসে ঠিক রাত বারটায় বুকেনী টেশনে দাঁড়ালো। পূর্ব নির্দিষ্ট কামরায় উঠে বোণ্লাম। ট্রেণ ছাড়লো। ভীষণ অন্ধারের বুক চিরে আমাদের গাড়ী ছুট্ছে। শুধু কতকণ্ডলো আগুনের মূলিক ছাড়া এই গহন অন্ধকারে আর কিছু দেখা যাচেছ না, ভাই বাইরের দৃশ্য দেখার আশা ছেড়ে দিরে শুয়ে পড়লাম। রাভ আড়াইটায় আমরা ইসাকা ষ্টেশনে নামলাম। ষ্টেশনমাষ্টার শিগ। নিজে এসে আমাদের কামরা থেকে নামিরে তাঁর বাসায় নিয়ে গেলেন। রাত্রি যাপনের ব্যবস্থা পুর্বেই কোরে রেপেছিলেন—কিন্ত অল সময়ের মধ্যেই কাহামা থেকে আমাদের নেওয়ার জন্ম মোটর এলো। ভাই দক্ষে দক্ষে আমরা কাহান্দ অভিমুখে রওনাহলাম। ঘন জঙ্গলের মধ্য দিয়ে রাস্তা। তার উপর দারণ অন্ধকার। তথু মোটরের সামনের আলোয় ছু'একটা নাম-না-জানা জন্তকে রান্তার এপাশ থেকে ওপাশে চলে যেতে দেগলায়-ভাছাড়া আর কিছুই দেশা গেল না। প্রায় হু'ঘন্টা চলায় পর কাহামায় পৌছলাম। মোটরে যাওয়ার জক্ত শীতও বেশ কোরছে। যথন আমরা কাহামায় পৌছুলাম—ভখন শুকভারাটা চোণের সামনে অল্ফল্ কোরে অগছে; গাছে গাছে পাথীরা গাঝাড়া দিতে ফুরু কোরেছে। মোটরের আওয়াজে প্রামের কুকুরগুলো চীৎকার কোরে ডেকে উঠলো। মোটরের হর্ণ শুনেই আমের লোকজন এলো। হাত পা ধোয়ারও জল দিয়ে আলো ও বিছানাপত্র ঠিক্ঠাক কোরে দিয়ে আমাদের ঘুমোতে বলে চলে গেলো। আমরা আর না ওয়ে লান আহিক সেরে নিলাম। ক্রমে গাড় অন্ধকার, ধুসর হোতে হোতে একেবারে ফর্না হোয়ে গেলো। বিহণকুল আহারের সন্ধানে নীড ছেড়ে বেরিয়ে পড়লো। পুবের আকাশ ক্রমণঃ রক্তিম হোয়ে উঠলো। সুর্বাদেবের আবিভাবের দকে দকে আমাদের দকে দেখা দাকাত করার क्रम व्यत्नक लाकजन्त्रत्व व्यविद्या यहेला।

(좌자석:)



বাদশার প্রেম

শ্রীদোরীন্দ্রমোহন মুখোপাধ্যায়

আড়াই হাজার বছর আগেকার কথা। বাদশা কান্বিসেশসাইরাশ বাদশার সন্তান—তথন ইরাণের সিংহাসনে
মিশরের ফারাও-আমেশিসের কল্পা পরমান্ত্রন্দরী শুনে সেই
কল্পাকে বিবাহ করবেন, স্থির করবেন। কল্পাকে তিনি
চক্ষে কথনো দেখেন নি ভেখনকার দিনে দেশ বিদেশে
বেড়ানো সহজ্ব ছিল না। তার উপর ইরাণ থেকে মিশরে
বাওরা পরীকি ভ্রমাসের কমে বাওরা চলে না।

মাহবের পকে এতদ্র যাওয়া-আসা শক্ত হলেও
মাহবের মুখে মুখে খবরাথবর আসতো সহজেই · · দে খবর

শুনে বিশের লোক জেনে কেলেছিল, ফারাও আমেশিসের
ক্যার মতো ফুলরী তুনিয়ায় তুর্ল্ড।

ইরাণের বাদশা কান্বিসেশ প্রবেশ তাঁর প্রতাপ, প্রচুর তাঁর রাজ্যৈখর্য প্রতিরায় অর্দ্ধেকটা তিনি ক্ষয় করেছেন প্রতিনি পাঠালেন ফারাওর কাছে দ্ত প্রতাব জানিরে প্রতামার ক্যাকে আমি বিবাহ করবো!

কারাওর এক সন্তান ঐ কক্তা তার নয়নের
মণি তাকে হুদ্র বিদেশে পাঠিয়ে তিনি কি করে বাঁচবেন
তাকে হুদ্র বিদেশে পাঠিয়ে তিনি কি করে বাঁচবেন
তাজতদ্রে কল্তাকে পাঠানো চলে না না না এ বিবাহ
অসম্ভব। কিন্ত আবার ভন্ন হয় তাদশার যে রক্ম
প্রতাপ, বিবাহে অমত করলে সনৈক্তে বাদশা করবেন
মিশর আক্রমণ বিপদের সীমা থাকবে না তথন। উপার ?

ভেবে উপার স্থির করলেন। সন্ধান করে এক কিশোরী বাঁদা পেলেন···সেরা রূপসী···সেই বাঁদীকে ক্ঞা-পরিচয়ে তিনি পাঠালেন ইরাণে··তাকে ফারাও-ক্সার মতো শিক্ষাদীকা দিয়ে যোগ্য রম্বভূষণে সাজিয়ে।···

ইতিহাসে লেখা আছে, এই বাঁদীকে দেখে ইরাণের বাদশা প্রমন্ত হয়ে উঠলেন শ্বাদীকে প্রেরসী করে বাদশার আনন্দের আর সীমা নেই শএই বাঁদীর প্রেমে তিনি মশগুল ! শক্তি এ অংখ দীর্ঘ হলো না শক্তি করে' রহস্ত প্রকাশ হরে গেল শবাদশা জানতে পারলেন, এ কারাওর ক্যানর শএ হলো মিশরী বাঁদী।

वामना त्रार्श ज्यान छेर्रानन ... धमन म्लाका धहे वानीत!

বাদী হয়ে বাদশাকে বাহবদনে আবদ্ধ করেছে •• বাদশা বাদীকে •• এক ভূচ্ছ বাদীকে বুকে নিয়ে সেই বাদীর অধরে অধর মিশিয়ে স্থা বলে বিষ পান করেছেন! বাদশা ডাক্লেন ঘাতককে •• হকুম দিলেন •• বাদশার হকুমে বাদশার হকুমে বাদশার বিভার বিহবল—

নিখাদ ফেলে বাদশা বললে—বাদীর স্পর্কার শান্তি হলো! এবারে ঐ হুর্ভ ফারাও।

বাদশা এলেন দরবারে

শ্বনি মুথ ! দরবারে উজীর, ওমরাওদের দল বনে

তেবিলের উপর সরবৎ, সিরাজি,

মিঠাই, ফল—

বাদশা বললেন— তোমরা শুনেছো মিশরের ফারাওয়ের স্পর্কার কথা ? এমন জ্বস্ত অপমান করে আমার! আমি ইরাণের বাদশা…একটা হীন বাঁদীকে করেছি আমার শ্ব্যা-সঙ্গিনা আদরে ভালোবাসায় উপহারে অলকারে এক নীচ বাঁদীর মনস্তৃষ্টি সাধন করেছিং

রোবে আক্রোশে বাদশার কণ্ঠ হলো অলিত ক্লছ! নিশাস ফেলে বাদশা ডাকলেন—উঞ্জীর…

উন্সীর সেলাম করে উঠে দাড়ালো।

বাদশা বললেন—আমি মিশর আক্রমণ করবো।

বিনীত ভদীতে উদ্ধীর বললে—কিছু জাঁহাপনা…

মিশরে ফৌল নিয়ে যেতে হলে বহু উটের প্রয়োজন…

প্রথমে চাই বিশ হাজার উট সংগ্রহ…তাতে কত দীর্ঘ সময়
লাগবে…বহু ব্যয়…

বাদশা ভূললেন হ্যার—তাহলে এ অপমান আমাকে সয়ে থাকবে হবে ? বলো—

উজীর বৃদলে—না, জাঁহাপনা···ভা নয়···আপনার হুকুম অচিরে তামিল করা হবে।

—হাঁ লক কৌৰ তোৱের করো অধিনায়ক তিনার করে। করিব করিত

···একটা হীন বাঁদীকে আমি বুকে নিয়েছি···তার মুখে মুখ মিলিয়ে··অসহা! অগহা!

উজীর বললে—যথার্থ জাঁহাপনা···এ কলন্ধের কথা ইতিহাসের পাতায় লেখা থাকবে অনস্তকালের মতো। ···তাই আমি চাই এ কথাটা মোচনের কাহিনী মিশরের ফারাওয়ার রক্তে ধুয়ে মুছে দিতে···

লক্ষ কৌন্ধ নিম্নে বাদশা কান্বিশেন্ বেরুলেন মিশর অভিযানে প্রবর শুনে বৃদ্ধ ফারাও আমেশিন্ কাঁদতে কাঁদতে মারা গোলেন—জাঁর ভাইপো পামেথিক ভয়ে মিশর ছেড়ে পালিরে গেল, জার ফারাওর সেই রূপসী ক্সা— ভার কোনো সন্ধান পাওয়া গেল না।

বাদশা কান্বিশেসের মিশর অভিযান সফল হলো!

কিছ যাঁর। ইতিহাসের চার্চা করেন, তাঁরা বলেন, মিশরী বাদীর গদ্ধানা নেননি বাদশা কাছিসেশ—হারেমের এক মিনিষ্টারের হাতে দান করেছিলেন। বাই হোক, বাদশার অমন বিহবলতা, অত প্রেম—বাদীর পরিচয় জানবামাত্র যে ধেঁারার মতো উবে গিয়েছিল যে, সে সম্বন্ধে কারো মনে এতটুকু সংশয় নেই! এই ক্ষুই লোকে বলে—বাদশার প্রেম, তার কোনো দাম নেই!

(রুশ-লেখক মাইকেল জোশেমকোর লেখা গলের মর্মামুবাদ)

পুরীতে বিশিষ্টাবৈত মত

শ্রীবসন্তকুমার চট্টোপাধ্যায়

পুরীতে জগলাথদেবের মন্দিরে বিশিষ্টাবৈত মতের ধবেষ্ট প্রভাব দেখা যায়। জগন্নাপদেবের মুর্দ্ভির ভিলক শীবৈক্ষব (অর্থাৎ বিশিষ্টাবৈত মতে) রচিত হয়। সন্দিরে সিংহ হার দিয়া প্রবেশ করিয়া ভিতরে অপমে যে লাল পাপরের ছার দেখা যার, তাহার উপর এীবৈক্ষব তিলক बनः मध, रूपर्णन हक ७ शक्राह्य मूर्खि (पथा यात्र-व मकनरे श्रीरेनकर निमर्भन। बीरेक्कव क्ष्माव मर्कारभका तमी एका यात्र क्रभनाच मन्मित्त्रत অন্তর্গত লক্ষী মন্দিরে। আমি প্রথমে ইহা লক্ষ্য করি নাই। লক্ষ্মী মন্দিরে কিছুক্ষণ বসিতে হয়, তাই বসিয়াছিলাম। একটি প্রোঢ়া বিধবা পাঙা त्रम्भ व्यामादक हत्रभागुर मिल এवः विदेशक हिंदू मकल दार्थाहेबा मिल। জগন্নাথদেবের মন্দিরের স্থার লক্ষ্মীদেবীর মন্দিরও করেকটি বিভিন্ন অংশে বিভক্ত। বে অংশকে মোহন বা জগমোহন বলা বার, তাহার চারিদিকে দেয়ালের উদ্বাংশে কতকভালি শ্রীবৈক্তব তিলক, স্বদর্শন চক্র, শহ্ম প্রভৃতি চিত্রিত আছে। শীবৈশ্ব সম্প্রদারের ছত্রিশটি আচার্ব্যের কুন্তাকার ৰ্বি চিত্ৰিত আছে এবং অধিকাংশ ছলে নৃৰ্ত্তির নীচে নাম লেখা আছে। প্রথম আচার্যা শ্রীমহালক্ষ্মী—তিনিই শ্রীবৈক্ষর মত প্রথম প্রচার क्तिप्राहित्सन-असम् सन्तीसिवीत यस्मित्व वीरेक्टव हिट्टित गार्वकर्ण ।

> লন্দ্রীনাথ সমারভাষ্ নাথবামূনমধ্যমাং। অন্মদাচার্যপর্যন্তাং বন্ধেন্ত্রপরস্পরাং।

"আমি আমাদের (এবৈক্ষবসন্দানের) শুদ্ধ প্রন্পারাকে প্রণাম করি,—
বাঁহাদের সর্বপ্রথম হইভেছেন প্রবিক্, বাঁহাদের মধ্যম্বলে নাথ মুনি এবং
বান্নাচার্য্য, এবং বাঁহাদের শেবে আমাদের আচার্য্য।" আচার্য্যদের বে

সকল ছোট চিত্ৰ রহিয়াছে তাঁহাদের মধ্যে এই সকল নাম সমধিক পরিচিত :— অঙ্ক স্বামী, ভোডাক্রি, বামুনাচার্যা, গোষ্ঠীপূর্ব, শঠকোপ, গোদা অস্মা (ইনি রাজকলা ছিলেন, জীরক্ষমের বিকুর বিগ্রহের সহিত र्देशत विवार रुहेशाहिल), वतवत्र मृति, मरापूर्व, टेनलपूर्व, प्रतामन, ব্যাস, নাথমূনি, মধুর কবি। এইরূপ ৩৬টি চিত্র আছে। রামানুজের চিত্রটি ঘারের পার্বেই, ইহা প্রায় মতুত্ব আকৃতির সমান। তাঁহার ক্রোড়ে সম্পৎকুমার নামক বিষ্ণু বিগ্রহের চিত্র। এই বিগ্রহটি সম্বন্ধে একটি স্থার কাহিনী আছে। ইনি রামামুক্তকে বর্গে দর্শন দিয়াছিলেন এবং বলিয়াছিলেন দিল্লীর বাদশাহকভার নিকট তিনি আছেন। বাদশাহ হিন্দু মন্দির লুঠন করিয়া সেই বিগ্রহটি লইয়া গিয়াছিলেন, বাদশাহের কন্তা বিগ্রহটি লইরা থেলা করিতেন। রামানুক দিলী গিয়া বধন বিগ্রহটি প্রার্থনা করেন তথন বিগ্রহটি স্বরং চলিয়া আসিয়া রামালুজের ক্রোড়ে উটিলেন। সম্পৎকুমারের বিরহ সহ্ম করিতে না পারিয়া বাদশাহ-কলা বিপ্রহের সহিত দিলী ত্যাগ করেন, বিপ্রহটি পাকীতে আসিতে-ছিলেন, বাদশাহকভাকে পাকীতে ভোলা হয়, পাকীয় দরজা বন্ধ থাকে. পরে যথন খোলা হর তথন বাদশাহ কলাকে দেখিতে পাওয়া বার না। ঐ কন্তার প্রতিত সলে আসিরাছিল, সে আর কিবিরা বার নাই, বৈকব হয়, বামানুজ বলেন "তুমি পুরী যাও, সেধানে পভিতপাবনকে দর্শন করিরা তোমার মৃক্তি হইবে।" পুরীতে অগলাধদেবের সিংহ দরজার চুকিয়াই লগরাবদেবের একটি মুর্ত্তি আছে, ভাহাকে পতিভপাবন মুর্ত্তি বলা হর, কারণ অপরাধদেবের মন্দিরে প্রবেশ করা পতিতদের শাছদিবিদ্ধ,

তাহারা মন্দিরের বাহিরে দাঁড়াইরা জগরাবদেবের পতিতপাবন মুর্স্টি দর্শন করিয়া পুণ্য সঞ্চর করিতে পারে। বাদশাহের পুত্রের সমাধি পুরীতে দেখিতে পাওরা যার।

চারিদিকে দেওরালের উপর আনেকগুলি সংস্কৃত শ্লোক লেথা আছে। কতকগুলি স্নোকে বিশিষ্টাবৈতবাদের সিদ্ধান্ত স্ক্রণরভাবে দেওরা হইরাছে। নিম্নে করেকটি লোক দেওরা হইল।

দ্রে গুণান্তব তু সন্তবজন্তমাংসি
তেন এটা প্রথমতি ছিন্ন নিগুণিত্ম।
নিত্যং হরে নিথিল সদ্গুণসাগরং হি
ভাষামনস্তি পরমেশ্বমীশ্বাণাং ॥

লোকট রামাসুজের প্রিয় শিষ্ট কুরেশ স্বামিকৃত ইহাও লোকের নীচে লেখা আছে। ইহার অমুবাদ,—"হে হরি, দল্প, রজঃ ও তমাগুণ ভোমার অনেক দ্রে (তুমি এই সকল গুণের বহু উর্দ্ধে)। এজয় বেদ ভোমাকে নিগুণ বলিয়া বর্ণনা করিরাছেন। তুমি নিখিল সদ্পুণের সমুল, এজয় বেদ ভোমাকে সকল ঈশ্বরের প্রমেশ্বর বলিরাছেন।" বেদে ব্রহ্মকে নিগুণ ও সপ্তণ উভয়ভাবে বলিরাছেন। এই লোকে ভাহার সামঞ্জ বিধান করা হইরাছে।

"বাসবাক্য" বলিয়া নিয়লিখিত লোক উদ্ধৃত হইয়াছে—
সতাং সতাং পুনঃ সতাং ভুলমুখাপা চোচাতে।
ন বেদাচ পরং শাল্তং ন দেবঃ কেশবাৎ পরং।

"সত্য, সত্য, পুনঃ সত্য,—ভুজ উত্তোলন করত বলিতেছি। বেদ অপেকা শ্রেষ্ঠ শাস্ত্র নাই, কেশব অপেকা শ্রেষ্ঠ দেবঙা নাই।"

ব্ৰহ্মণংহিত। ইইতে নিয়লিখিত শ্লোক উদ্ধৃত করা ইইরাছে—
প্রথমোহনত্ত্বপশ্চ বিতীয়ো লক্ষণতথা।
ভূতীরো বলরামণ্ড কলে) রামাস্থলো মুনিঃ ॥
বাপরাস্তে কলেরাদৌ পাবগুপ্রচুরে জনে
রামাস্ত্রতি ভবিতা বিকুধ্যপ্রবর্তকঃ ॥

এখানে অনস্তের বিভিন্ন অবতারের উল্লেখ আছে—"প্রথম অবতার অনস্ত, বিতীর লক্ষ্মণ, তৃতীর বলরাম, এবং কলিতে রামাসুক্ষ বৃদি। ধাপরের শেবে এবং কলির আদিতে, যখন নাজিকের সংখ্যা বৃদ্ধি পাইবে তথন বিকুধর্মপ্রবর্ত্তক রামাসুক্ষের আবিজাব হুইবে।"

আর একটি শ্লোক (কাহার রচনা তাহার উল্লেখ নাই) এইরপ— নচেৎ রামামুজেভ্যেষা চতুরা চতুরাকরী। কামবহাং প্রপঞ্জে জন্তবো হস্ত মাদুশাঃ।

"বৰি চারি অক্ষর্কু "রামাসুল" এই কথা না হইত, তাহা হইলে আমার ক্তার জীবদের কি অবস্থা হইত ?"

বিরামাসুর প্রণীত বেদার্থসংগ্রহ হইতে নিয়লিখিত স্তবটি উভ্ত হইয়াছে:---

> অপেবচিদ্বতি পেবিণে পেবণায়িনে । নিৰ্মলানস্ত কল্যাণনিধরে বিকবে নমঃ ।

"বিধের যাবতীর চেতন ও অচেতন বস্তু বাঁহার অংশ যিনি শেষ শ্যাশারী, যিনি অনস্ত নির্মল কল্যাণ গুণের আধার সেই বিকুকে প্রণাম করি।"

নিয়লিখিত লোকগুলিও উদ্ভ আছে—

বচ্চ কিঞ্চিক্ষণত্যস্মিন্ দৃষ্ঠতে শ্রেরতেংপি বা। অন্তর্বহিশ্চ তৎ সর্বং ব্যাপ্য নারায়ণঃ স্থিতঃ । "তৈন্তিরীয় ১১ অনুবাক"

"এই জগতে যাহা কিছু দেখা যায় বা শোনা যায় সকলের **অন্তঃ** ও বহিঃপ্রদেশ ব্যাপ্ত করিয়া নারায়ণ অবস্থিতি করিতেছেন।"

শহাচক্রধরো বিদ্যান মালাং তুলসীজাং দধৎ স জীবমুক: (থজুর্বিদ)
"যে বিদ্যান দেহে শহা ও চক্রের চিহু ধারণ করেন, এবং তুলসীমালা
ধারণ করেন, তিনি জীবমুক্ত।"

(ইহা ।যজুর্বিদে আছে বলা হইয়াছে, কোপার আছে তাহা বলা হয় নাই।)

তং হ দেবমাস্থ্য জ্ঞাকাশং মুম্কুর্বৈশরণমহং প্রপত্তে
(খেতাখতর অঃ ১ মঃ ৮ ?)

"আমি মোক্ষণাভের ইচ্ছায় সেই দেবতার শরণ এহণ করিতেছি, যিনি আয়বৃদ্ধির ঘারা প্রকাশিত।"

বিষ্ণুপ্রীং ক্ষমাং দেবীং সাধবীং মাধবপ্রিরাং।
বিষ্ণুপ্রিরাং স্বাং দেবীং নমাম্যচ্যুত্বলভাং ।
"বিষ্ণুর পদ্ধী মাধ্বের প্রিয়া বিষ্ণুর প্রিয়া ও স্বী অচ্যুতের ব্রভা মাধ্বী
দেবীকে প্রণাম করি।" ইহা বোধহর ভূদেবীর প্রণাম মন্ত্র।

রামাসুজ বহু বৈক্ষবের সহিত পুরী আসিয়াছিলে। তিনি বলিয়াছিলেন এপানে নারদ পঞ্চরাত্র অনুসারে পূজা করিতে হইবে। পাঙাগণ তাহাতে রাজি হর নাই। তর্কে পাঙাগণ হারিয়া বার। এজন্ত রাজারামাসুজকে সমর্থন করেন। পাঙারা অনশন করে। রামাসুজ রাজে বার দেখেন যে জগরাখদেব তাহাকে বলিতেছেন—পাঙাদিগকে পূর্বের প্রধায় পূজা করিতে দাও। সকালে উঠিয়া রামাসুজ দেখেন কে তাহাকে রাজির মধ্যে পুরী হইতে কুর্মক্রেল লইরা আসিয়াছে। কুর্মক্রেল পুরী হইতে বহুদ্রে, ওয়ালটেয়ারের পথে আধুনিক চিকাকোল ট্রেশন হইতে বাইতে হয়। রামাসুজের সহিত একটি গোপাল বিত্রহ ছিল, সেটি পুরীতে থাকিয়া যায়। জগরাখদেবের মন্দির হইতে অর্গবারবাট (সমুত্র) যাইবার পথে বেণু গোপাল মঠে সেই গোপাল মুর্জি এখনও পুজিত হন। পুরীতে প্রার কুড়িটি শ্রীবৈক্ষর মঠ আছে। তল্মধ্যে এমার মঠ সর্বাপেকা ধনী।

কণরাথ মন্দিরে শছরাচার্ব্যের প্রভাব বিশেব দেখা যার না। মন্দিরের বাহিরে অবশু গোবর্দ্ধন মঠ আছে। তাহার মধ্যে একটি শিবালর, একটী গোপাল মন্দির ও একটি শছরাচার্ব্যের মন্দির আছে। এই মঠের মধ্যে দেরালের উপর নিয়লিখিত লোক ফুইটি দেখিলাম।

মৃক্তিমিচ্ছসি চেতাত বিবরান্ বিবৰৎ তাজ। ক্ষমার্জন দরাতোবং সভাং শীব্দবৎ ভল। "বংস, মৃক্তি ইচ্ছা কর তাহা হইলে বিবয়সকল বিধেরস্তার ত্যাগ করিবে এবং ক্ষমা, সরলতা, সম্ভোব ও সত্যকে অমৃত্তের স্থায় ভলনা কর।"

> নিশ্বন্ধ নীতিনিপুণা: যদি বা প্তবন্ধ লক্ষ্মী: সমাবিশতু গচ্ছতু বা যথেষ্টং। অত্যৈব মে মরণমস্ত যুগাস্তরে বা স্তারাৎ পথ: প্রবিচলন্তি পদং ন ধীরা:॥

"বাঁহারা নীতিকুশল তাঁহারা নিন্দাই করুন, বা তবে করুন, লক্ষী অবস্থান করুন বা অক্সত্র চলিয়া যান, আমার অভই মরণ হউক বা যুগান্তরে হউক,—কিছুতেই ধীর ব্যক্তিগণ স্থায় পথ হইতে একপদও বিচলিত হন না।"

শীজগরাধ মন্দিরে বিভিন্ন মহাপুরুষদের প্রভাবের অলোচনা করিতে-

ছিলাম। স্থতরাং এই প্রদক্ষে শ্রীচৈতক্সদেবের প্রভাব ও উত্তেপ করা যায়।

শীনৈতজ্ঞদেব যে গক্ষড় স্বান্তের নিকট দীড়াইরা অংগরাধদেবের ব্র্ধিনদর্শন করিতেন, সেই স্বান্তের উপার জীহার শীকরের অঙ্গুলির চিত্র এথনও দেখা যার, তিনি বাহ্মদেব সার্বভৌমকে যে বড়ভুজ ব্র্ধি দেখাইরাছিলেন তাহাও মন্দির গাত্রে অভিত আছে। মন্দির প্রান্তরের দক্ষিণ দরজার উপার একটি ক্ষুম্ম মন্দির- নির্মিত হইরাছে। মন্দিরের দক্ষিণ দরজার পার্বে একটি মন্দিরে শীনৈতজ্ঞদেবের মূর্ব্ধি প্রতিন্তিত আছে এবং নিত্য পূজার বাবস্থা আছে। ইহা ব্যতীত রাধাকান্ত মঠে যে গন্ধীরা গৃহে চৈতজ্ঞদেব বাস করিতেন সেই গন্ধীরা গৃহে তাহার ব্যবহৃত কম্বান্ত ওড়ম রক্ষিত হইরাছে। স্বতরাং শীজগরাধদেবের মন্দিরে অক্ত সকল মহা-পুক্রের যত প্রভাব পড়িয়াছে তদপেক। শীনৈতজ্ঞদেবের প্রভাবই অধিক।

দন্তের পরিণাম

কবিশেখর শ্রীকালিদাস রায়

क्रांभित्र एक करत्राह् एव वादित्र वादित्र রোগে শোকে আর খিত্র চর্ম্মে অকাল জরার ভারে বিকৃতাক সে ছুই দিন পরে চেনা নাহি যায় ভারে। কুলের দম্ভ করেছে যে-জন সভাজন সাক্ষাতে, ক্সা তাহার একদা গভীর রাতে, ত্তনেছি গিয়েছে বর ছেড়ে চলে এক চাঁড়ালের সাথে। মন্ত যে ছিল জাত্যভিমান নিয়ে পুত্র তাহার এক পাদ্রির ক্সাকে ক'রে বিয়ে বাস করিতেছে খুপ্তানদের পদ্মীর মাঝে গিয়ে। थरनत एख करत्रह य वात्र वात्र, ছয় মাদ পরে দেখেছি সহসা ভিখারীর দশা তার, वाकि एकत ह'र्य एकत ह'रव कांत्रवांत । গর্ব যে-জন করিত আপন স্থপুত্র জামাতার, দেখেছি তাহার ক্ষমে চেপেছে বিধবা ক্সাভার, পুত্র তাহার যক্ষা ব্যাধিতে অস্থিচর্ম্মদার। यात्व मर्ख भवनातीरमद नमिछ त्य नामा मिरम, তার সে সাধের মোটরটি উল্টিয়ে পুড়াল একদা তার দেহটাই পেটোল অ'লে গিয়ে। मात्तव मखी ভোটের জোরে যে হয়েছিল कांश्रामक,

বার বার হেরে ভোটের সমরে পেয়ে অপমান লাজ,

মানের সঙ্গে ধনও হারাঘে হয়েছে ফকির আজ।
হায় মহাকাল স্বার কপাল চুর্লিছে অবিরাম,
দেখিয়াছি নিতি দক্তের পরিণাম,
ছই দগুই কুন্তক্ কেনে করে সংগ্রাম।
উত্তত্ত্বা উদ্ধৃতলির গুঁড়ায় বজ্বপানি,
সকলেই দেখে কেউত না শেখে; মনে মনে লয় মানি'
রন্ধ্যকে অভিনয় বুঝি, নয় সতর্কবানী।
হায় মায়া মৃঢ় নর,
ভুমি যে গুধুই খেলার পুতুল নিয়তির কিংকর,
গ্র্ব করিতে কাঁপে না ও অন্তর ?

দস্ত যথন কর'
আপনারে তাবো সকলের চেয়ে বড়,
বিধাতা তথন হাসে অলক্ষ্যে অসি করে থরতর।
দস্ত কি চলে উন্মত ঐ থর থড়োর তলে
বিবপত্র চর্কিরা কুতৃহলে ?
বলির পশুর দস্ত ত নাহি চলে।
ফটিক স্তন্তে বসিয়া তোমার দস্ত কি ভাই সাজে ?
ঐ স্তন্তের মাঝে
বক্ষোবিদারী নরসিংহ যে রাজে।



ভারতীয় চা ও ভারতের অর্থনীতি

ভারতবর্ণ হইতে বিদেশে যত জিনিয় রপ্তানী হয়, তমাধ্যে পাটের পরই চামের স্থান। এই চা রপ্তানীর দারা ভারত বিদেশ হইতে প্রতি বংসর প্রস্তুত পরিমাণ অর্থোপার্জন করে। ভারতীর চারের আন্তর্জাতিক চাহিদা বৃদ্ধির ফলে ভারতের চা-শিল্প সম্প্রদারিতও হইয়াছে খণেষ্ট এবং এখনও এই শিলের বহু উন্নতিসাধন সম্ভব। ১৯৪৬-৪৭ খ্রীষ্টাব্দে ভারত रहें एक का विरम्पन ब्रश्नानी हम जाहान मृत्रा हिल ७६ क्लां**है ६**० लक টাকা। ভারত বিভাগের পর এইটের কিছু চা বাগান ছাড়া অথও ভারতের অধিকাংশ চা বাগান ভারতের ভাগে বার্কিরা বাওয়ার চা রপ্তানীর হিদাবে ভারতের ক্তি হর নাই। পত বংগর বা ১৯৪৯ খ্ৰীষ্টাব্দেও ভারত হইতে বিদেশে ৭২ কোটি টাকা সুলোর ৪৩ কোটি 👀 লক্ষ্ পাউণ্ডের মত চা রপ্তানী হইরাছে। ভারতীয় চা ডলার अनाकार्ड व्यक्त हरता। गड वरमद्र हा द्रश्रामी वावन छलाद এলাকা হইতে ভারতের ১১ কোটি টাকা আর হইরাছে। বলা ৰাহল্য, এদেশে চা শিলের উরতি করিয়া মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র আদি ডলার এলাকার চারের রপ্তানী বাড়াইতে পারিলে বর্ত্তমান ডলার সমটের তীব্রতা হইতে ভারত অনেকটা মুক্তি পাইতে পারে। চা নেশার সামগ্রী, কাজেই ইহার দর সহজেই সম্বোচন ও প্রদারণ করা বার। সাম্প্রতিক ডলার সম্বটের চাপ ক্ষাইতে হইলে ডলার এলাকার অধিকতর ভারতীর পণ্য রপ্তানী ও ডলার এলাকা-জাত পণ্য আমদানী ষতদুর সম্ভব নিয়ন্ত্রণ,-এই ছুই পথ অবন্দন করিতেই হইবে।

তবে বিদেশে রপ্তানীর কথা আলোচনা প্রসঙ্গে একটি বিবরের প্রতি
দৃষ্টি দেওরা দরকার। বিদেশে এখন বেমন চারের সমৃদ্ধ বাজার গৃষ্টি
হইয়াছে, ভারতেও ক্রমে ভারতীর চারের চাহিদা সেই পর্যারেই বাড়িয়া
গিয়াছে। এক্ষেত্রে ভারতীর চা বাহাতে ভারতবাসী ও বিদেশী উভরের
চাহিদা সমান হারে মিটাইতে পারে, ভাহারই ব্যবহা কাম্য। ভারতের
চা শিল্প এখনও প্রধানতঃ অভারতীরদের নিরম্বণাধীন। শোনা যার
উচ্চপ্রেণীর চা সরবরাহের ব্যাপারে ভারতীর ক্রেতাগণ বৈবম্যস্ক্
ব্যবহার পাইয়া থাকেন। ভাল ভারতীর চা চাহিদা থাকা সংব্রও
ভারতের বালারে বিদ্ধরের লক্ষ্ উপহাপিত না হইলে তাহা নিশ্চয়ই
ছঃবের কথা।

ভাছাড়া ভারতীর চা বিদেশে বে দরে বিক্রম হর ভারতে (পাঠাইবার থরচ বাঁচিয়া বাইবার জক্ত) ভাহার দর অপেকাকুত সন্তা হওরা উচিত। কিন্তু বে কারণেই হউক, ভারতীর চা ভারতের বাজারে বেশী দরে বিক্রীড হর। এখন এদেশে ব্যবহারবোগ্য এক পাটও চারের দর কম পক্ষে ছ টাকা, অষ্ট্রেলিয়ায় কিন্তু সমশ্রেণীর ভারতীর চায়ের থুচরা মূল্য ১৮০ পাই। এই দর আবার সম্প্রতি অষ্ট্রেলিয়ার চায়ের রেশন উঠিরা যাওয়ার হইয়াছে। রেশন ব্যবস্থা বলবৎ থাকা কালে অষ্ট্রেলিয়া সরকার আমদানী চায়ের মূল্য হারে সমতা রক্ষার জক্ত বে সাবসিভি বা সরকারী সাহায্য দিভেন, এপন রেশন উঠিয়া যাওয়ায় তাঁহায়া সেই সাহায্য প্রদান বন্ধ করিয়া দিয়াছেন বলিয়াই চায়ের দাম একটু বাড়িয়াছে। বলা নিপ্রায়েজন, স্বদেশীর চা ব্যবহার করিতে গিরা ভারতবাসীর এইভাবে কতি থীকারে বাধ্য হওয়া অভ্যন্ত অবাঞ্ছনীর ব্যাপার। এই অভ্যায় ব্যবহার কক্ত বন্টনকারী বা বে কেহই দায়ী হউক, ভারতসরকায়ের উচিত অবিলক্ষে হস্তক্ষেপ করিয়া বিদেশের ও ভারতের চায়ের বাজারের মধ্যে একটা সামঞ্জক্ত সাধনের চেষ্টা করা। অবস্থা ভারতীয় চায়ের রপ্তানী বাজার যাহাতে কোনজমেই ক্ষতিগ্রন্থ না হয়, সর্ব্বদাই তৎপ্রতি দৃষ্টি রাথিতে হইবে।

জাতীয়-করণের পর ব্রিটেনের কয়লা শিল্প

জাতীয় ত্বার্থের পক্ষে গুরুত্বপূর্ণ শিল্পসূত্র রাট্রায়ন্ত করা বিটিশ সরকার নীতি হিসাবে গ্রহণ করিয়াছেন। এই নীতি অনুসারেই ১৯৪৭ খুটান্দে করলা পদিলের জাতীয়করণ হর। জাতীয়করণের কলে বিটেনের করলা শিল্পের লক্ষ্ণীয় সমৃদ্ধি বটিয়াছে। শিল্পে ব্যক্তিগত মালিকানা শিল্পপ্রসারের অনুকূল, ব্যক্তিগতভাবে মুনাফা অর্জনের সন্তাবনা থাকিলে শিলপতি তাহার অর্থ ও অভিজ্ঞতা অধিকতর ফলপ্রস্করপে কাব্দে লাগাইবে,—এই ধরণের একটি বন্ধ ধারণা অনেকের আছে এবং এইলপ ধারণা রাষ্ট্রের জাতীয়করণ নীতির বিরোধিতা করিয়া থাকে। বলা বাহল্য, রাষ্ট্রায়ন্ত ব্রিটিশ করলাশিলের উল্লিভ এই ধারণার পরিবর্জনে সাহাব্য করিবে। ভারতে রাষ্ট্রীয়করণির নীতি বর্ধাস্থ্যর কার্য্যকরী হইবে বলিয়াই সকলে আশা করিয়াছিলেন, উপরোক্ত ধারণার ববেচনায় কর্ত্তপক্ষ এই পরিকল্পনা দশ বৎসরের জক্ত স্থাপিত হইরাছে।

সম্প্রতি ব্রিটেনের ভাগনাল কোল বোর্ড বা জাতীর করলা পরিবদের ১৯৪৯ খুটানের রিপোর্ট প্রকাশিত হইরাছে। এই তৃতীর বার্ষিক রিপোর্টে ব্রিটিশ করলা শিজের সর্ব্বালীণ উন্নতির স্পান্ত পরিচন্ন আছে। থনি হইতে করলার উৎপাদন বৃদ্ধি, উৎপাদন ব্যর হ্রান, রপ্তানী বৃদ্ধি ইত্যাদি নানা দিক হইতে সাফস্যলাভ করিয়া ব্রিটেনের করলাশিজে আলোচ্য বৎসরে ৯৫ লক্ষ্পাউপ্ত মুনাকা হইরাছে। রিপোর্টে আরপ্ত বলা হইরাছে বে, আলোচ্য বৎসর সরকারী পরিচালনাধীনে ব্রিটিশ

কয়লাশিলে মারাত্মক তুর্ঘটনার সংখ্যা পূর্ব্ব প্রস্তারের তুলনায় নিম্নত্ম হইরাছে।

১৯৪৭ খুঠান্দে বিটেনের থনি হইতে উত্তোলিত কয়লার পরিমাণ ছিল ১৮,৭২,০০,০০০ টন। ১৯৪৮ খ্রীষ্টান্দে এই পরিমাণ ১০ লক টন এবং ১৯৪৯ খুঠান্দে বা আলোচ্য বৎসরে ১৫ লক টন বৃদ্ধি পাইরাছে। সর্বস্পনেত ব্রিটেনে এবৎসর বিক্রমবোগ্য কয়লার পরিমাণ দিড়াইরাছে ২১,৫০,০০,০০০ টন। প্রাক্রমনার লক্ষ্য (Economic survey turget) ২১,৫০,০০,০০০ টন হইতে ২২,০০,০০০টন । ব্রিটেনের কয়লা শিল্পের ১৯৪৯ খুঠান্দে উম্লিভ পর্য্যালোচনা করিলে দেখা যায় যে, ব্রিটেনের কয়লাশিল্পের সহিত সংগিঠ প্রত্যেক ব্যক্তির হিসাবে এ বৎসর ১৯৪৮ খুঠান্দের ত্র্সনার ২ হন্দর করিয়া বেশী কয়লা পাওয়া গিয়াছে। ১৯০৮ খ্রীষ্টান্দে, অর্থাৎ বৃদ্ধ শুরু হুইবার আগের বৎসরে ব্রিটেনের প্রতিটি কয়লাখনি শ্রমিক পিছু যে পরিমাণ কয়লা উত্তোলিত হইয়াছিল, আলোচ্য ১৯৪৯ খ্রীষ্টান্দের মাথাপিছ উত্তোলন (২০ হন্দর) তাহার চেম্বেও বেশী।

১৯৪৮ খুঠান্দের তুলনায় ৩০ লক টন বাড়িয়া ১৯৪৯ খুঠান্দে বিটেনের করলা রপ্তানীর পরিমাণ দাঁড়াইয়াছে ১ কোটি ৯০ লক টন। এই কয়লা রপ্তানী ছারা বিটেন ৫ কোটি পাউপ্তের সমপরিমাণ বিদেশী মূলা অর্জন করিয়াছে। এছাড়া বিটিশ বন্দরসমূহে বিদেশী জাহাজে কয়লা তুলিয়া দিবার হিসাবে এবং জাহাজী বীমা প্রাভৃতিতে বিটেনের আরপ্ত ৩৭ লক্ষ ৫০ হাজার পাউ্ত লাভ হইয়াছে। *

ভারতীয় বাণিজ্যিক নৌবহর

ভারতীর যুক্তরাষ্ট্রের নিজৰ উপকুল ভাগের পরিমাণ ৩২০০ মাইলের মত। এই উপকুলভাগের বাণিজ্য ছাড়া পৃথিবীর বিভিন্ন দেশের সহিত ভারতের বাণিজ্যের ব্যাপারে প্রচ্র জাহাজের দরকার হয়। পণ্যবাহী নৌবহরের হিসাবে ভারতের অবস্থা এখনও শোচনীর। বুজের পূর্বে এদিক হইতে ভারতের মর্য্যাদা আলোচনারই উপর্ক্ত ছিল না, সম্প্রতি ভারতসরকার ববেট্ট আগ্রহাবিত হওরার এবং নিজিয়া ষ্টাম নেভিগেশন, ইতিয়ান ষ্টামনিপ কোম্পানী, ভারত লাইন ইত্যাদি ভারতীর প্রতিগান্তিল দারিত্রহণে অগ্রসর হওরার অবস্থার তবু কিছুটা উন্নতি হইরাছে। ১৯৪৫ খ্রীষ্টাব্দে ভারতীর সম্বাদামী লাহাজের পরিমাণ ছিল ১ লক ৫০ হাজার টনের মত, ইহা এখন পৌনে চার লক্ষ টনে পৌছিয়াছে। এই পৌনে চার লক্ষ টন জাহাজের মধ্যে ভারতের উপকুলভাগে নিযুক্ত আছে ১ লক্ষ ৯০ হাজার টন এবং বাকীটা ভারতের সহিত ইরোরোপ, মার্টেলিয়া ও মার্কিন যুক্তরাইর বাণিজ্যে নিরোজিত রহিয়াছে। এই

বহিবাণিজ্যে নিযুক্ত ভারতীর জাহাজের সংখ্যা বর্জনানে ২৪ খানি। ভারতে জাহাল তৈরারীর উপবৃক্ত ব্যবহা নাই, সিদ্ধিরা তীন নেভিগেশন কোম্পানীর তত্বাবধানে ভিজাগাণন্তনে যে জাহাল কারখানাটি রহিরাছে তাহার উল্লয়নের জন্ত প্রভৃত চেষ্টা চলিতেছে, কিন্তু এখনও বড় বাণিজ্যপোত নির্মাণে এ কারখানা সাফল্যলাভ করে নাই। ভারত সাধারণতঃ বিদেশ হইতে জাহাল কেনে, জনেক সমন্ন কেনে পুরালো জাহাজ, এই সব জাহাজের কর্ম-ক্ষমতা অপেকাকৃত কম। এই লক্ষই দেখা যার ভারতের উপকূল বাণিজ্যে সলক ১০ হাজার টন ভারতীর জাহাজ যে পরিমাণ মাল ও বাত্রীবহন করে, তাহা সলক ৪৫ হাজার টন বিদেশী জাহাজের সমানও হয় না।

ভারতসরকার অংশীদার হিসাবে সাহায্য করিতে অগ্রসর হওয়ার সম্প্রতি ভারতীর বাণিজ্যিক নৌবহরের ইতিহাসে নৃতন অধ্যারের স্চনা হইরাছে। এই নৌবহরের পরিমাণ আগামী পাঁচ বৎসরের মধ্যে ২০ লক্ষ টনে তোলা ভারতসরকারের ইচ্ছা। বলা নিপ্রয়োজন, সরকার প্রত্যক্ষভাবে সাহায্য না করিলে বুদ্ধোত্তর মন্দাবালারে বেসরকারী প্রচেষ্টায় এই অগ্রগতি সম্ভব নয়। সরকারী কর্তৃপক্ষ অবস্থা উপলব্ধি করিয়াই যৌগভাবে এ বিষয়ে অভিজ্ঞ ব্যক্তি বা প্রতিষ্ঠানের সহযোগিতার এই ব্যবসা পরিচালনায় অগ্রসর হইরাছেন।

উপস্থিত সিধিয়া খ্রীম নেভিগেশন কোম্পানীর সহিত ভারতসরকার সন্মিলিত ভাবে ইটার্ণ সিপিং কর্পোরেশন নামে একটি যৌধ প্রতিষ্ঠান গঠন করিয়াছেন। এইক্সপ আরও করেকটি প্রতিষ্ঠান গঠনের পরি-কল্পনা আছে। তবে ১৯৪৭ খ্রীষ্টাব্দে এই পরিবল্পনা অনুমোদিত ছইলেও ইহা কাৰ্যাকরী হইতে সওয়া ছই বংসর লাগিয়াছে এবং ঠিক যভটা সচ্ছলতার সহিত কোম্পানী প্রতিষ্ঠার প্রস্তাব হইয়াছল, তাহা বাস্তবারিত হয় নাই। প্রস্তাব হয় যে, ইষ্টার্ণ সিপিং কর্পোরেশনের মোট মূলধন হইবে দশ কোটি টাকা এবং ভারতসরকার ইহার শতকরা ৩১ ভার শেরার বা অংশ গ্রহণ করিবেন। এই প্রস্তাবে সিন্ধিয়া কোম্পানীকে শতকরা ২৬ ভাগ ছাড়া সাধারণ ভারতবাসীর মধ্যে শতকরা ২০ ভাগ শেরার বণ্টন করিবার কথা ছিল। বর্তমান মন্দাবালারে দেশবানীর নিকট শেরার বিক্রমে অন্তবিধা বিবেচনা করিয়া এথন ভারতসরকার কোম্পানীর শতকরা ৭৪ ভাগ শেরার গ্রহণ করিভেছেন এবং সিন্ধিয়া কোম্পানী গ্রহণ করিতেছেন শতকরা ২৬ ভাগ। মূলধন ১০ কোট টাকা থাকিলেও মাত্র ২ কোটি লইরা কোম্পানী কাজ আরম্ভ করিবে বলিয়া স্থির হইয়াছে। এবারের ভারতসরকারের বালেটে এই উপলক্ষে ১ কোটি ৪০ লক টাকা বরাদ করা হইরাছে। সিজিরা চীর নেভিগেশন কোম্পানীকেই ম্যানেজিং এলেউন হিনাবে ইটার্থ সিপিং কর্পোরেশনের পরিচালনার ভার দেওরা হইরাছে এবং ভারতসরকারের ভূতপূর্ব্ব বাণিজ্য-সচিব ত্রীবৃক্ত সি এইচ ভাবা হইরাছেন কর্পোরেশনের চেরারম্যান। এই কর্পোরেশনের পরিচালক্ষতলীতে ৬ জন সরকারের প্রতিনিধি ও ও জন সিন্ধির। কোম্পানীর প্রতিনিধি থাকিবেন। এই কোম্পানীর কম্ম সম্প্রতি ভারতসরকার প্রত্যেক্টি ১০ হালার টনের

বিটেনের কয়লা লিল সম্পর্কিত তথ্যাদি সংগ্রহে বিটিশ

 ইনকয়মেশন সাভিসের প্রচারপত্র হইতে সাহাব্য লওয়া হইয়াছে।

ছইথানি ক্যানাভীর জাহাজ ক্রর করিরাছেন। প্রতাব আছে, আগামী তিন বংসরের মধ্যে এই কোম্পানীর জাহাজের পরিমাণ ১ লক্ষ টন করা হইবে। ইটার্ণ সিপিং কর্পোরেশনের জাহাজগুলি বহির্বাণিজ্যে চলাচল করিবে বলিরা ছির হইরাছে। উপস্থিত ইহারা ভারতের সহিত সিরাপুর, বালর, ইন্দোনেশিরা, অষ্ট্রেলিরা, পূর্ব আফ্রিকা প্রভৃতির বাণিজ্যে অংশগ্রহণ করিবে।

দেশবাসীর নিকট উক্ত কোম্পানীর অংশ বিক্রীত হইলে পরিচালনার ব্যাপারে দেশবাসীর কিছুটা হাত থাকিত বলিয়া এই পরিকল্পনা বাতিল হওরায় সকলেই হুংথিত হইবেন। সিজিয়া কোম্পানীর জাহাজ ব্যবসার অভিজ্ঞতা প্রচুর, তাহাদের ম্যানেজিং এজেলিতে কুর হইবার কিছু নাই, কিন্তু ম্যানেজিং এজেলি প্রথাটই জ্ঞেটিবহল বলিয়া সরকারের অংশ সমন্থিত কোম্পানীর কার্যপরিচালনার ব্যাপারে সরকারী প্রতিনিধিদের সহিত সাধারণ দেশবাসীর প্রতিনিধিদের ছান থাকিলেই ভাল হইত। আমাদের মনে হর, জনসাধারণের নিকট শেরার বিক্রয়ের পরিক্রমনা বাতিল করিবার পূর্বের সরকারের আর একটু ধৈর্যসহ অপ্রসর হওরা উচিত ছিল। যাহা হউক, উপরোক্ত কর্পোরেশন প্রতিপ্তিত হওরার ভারতীয় বাণিজ্যক নৌবহরের শ্রীবৃদ্ধির সম্ভাবনার সকলেই আনন্দিত হইবেন।

ঋषि छेल्छेश

শ্রীপ্রভাত হালদার

১৮২৮ খুষ্টাব্দে কাউণ্ট লিঁয়ন নিকোলভিচ্টলষ্টয় রাশিয়ার এক ধনীর গৃহে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার জন্ম হয় তাঁহাদেরই জনিদারীর অন্তর্গত "ইয়ায়ায়া পোলিয়ানা" নামক স্থানে। তাঁহার মাতা রাশিয়ার জারের নিক্ট-ভাত্মীয়া ছিলেন।

এই মনীধী ধনীর ঘরে জন্মগ্রহণ করিয়াও 'দরিজের মহামানব' রূপে বিশ্বমানবের বেদনা আপনার অন্তরে গ্রহণ করিয়াছিলেন। আপনার হৃদরে দারিত্য এবং নিপীড়িত মানবের মর্শ্ববেদনার অংশ গ্রহণ করিয়া জগতের মাঝে তাহাদের হঃথ বেদনা প্রচার করিলেন।

কিশোর বয়সেই তিনি 'কাজান' বিশ্ববিদ্যালয়ের একজন প্রতিভাবান ছাত্র ছিলেন, কিন্তু যৌবনের প্রারভেই বিশ্ববিদ্যালয়ের পাঠ অসমাপ্ত রাখিয়াই বিলাসীর জীবন বাপন করিতে আরম্ভ করিলেন।

অক্সাৎ তাঁহার জীবনের গতি পরিবর্ত্তিত হইয়া যার, বিলাসের জীবন তাঁহার অন্তরকে তিজ্ঞ করিয়া তোলে। সেই কারণে তিনি সরল অনাড্যর জীবন যাপনের উদ্দেশে ককেশাস পর্বতের এক নির্জ্জন স্থানে গিয়া বাস করিতে থাকেন। এই নির্জ্জন বাসের পূর্বের অক্স ভোগের মধ্যে শাস্তি খুঁজিয়া পান নাই বলিয়াই তিনি নির্জ্জনে বাস করেন।

এই ককেশাস পর্বতের নির্জন প্রান্তে তাঁহারই এক

প্রতা তাঁহাকে দৈনিক হইবার জন্ত প্ররোচিত করেন।
অতঃপর দৈনিক বিভাগে তিনি একটি দায়িত্বপূর্ণ পদ গ্রহণ
করেন। এই দৈনিক বিভাগেই তাঁহার হৃদয়ের সাহিত্যের
বৃত্তিগুলি পরিপূর্ণ ভাবে প্রকাশ পায়।

এই স্থানে কার্য্যের অবসরে তিনি প্রথম প্রথম গল্প লিথিতে আরম্ভ করেন ও সেই গল্পগুলি তথাকথিত সাহিত্য-সমাজে বিশেষ ভাবে আদৃত হয় এবং অল্পদিনের মধ্যেই সাহিত্যিক হিসাবে তাঁহার থাতি দেশময় ছডাইয়া পডে।

দৈনিক জীবন আর ভাল না লাগার তিনি কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া দেণ্ট পিট্দবার্গে ফিরিয়া আদেন। এই স্থানেই তাঁহার সাহিত্যজীবনের স্থক্ষ হয়। সেণ্ট পিট্দ্ববার্গের সাহিত্যিকরা সমাদরে তাঁহাকে তাঁহাদের সাহিত্য গোঞ্ডীর মধ্যে: টানিয়া লন। এই স্থানেই টুর্গেনিভের সহিত তাঁহার প্রথম পরিচয় লাভ ঘটে। War and Peace এই সময়ে রচিত হয়।

কোন কোন সমালোচকের মতে War and Peace (1862-69) তাঁহার শ্রেষ্ঠ রচনা। তৎকালীন রাশিয়া অথবা ইহার সাহিত্যকে জানিতে হইলে সর্বপ্রথম War and Peace পড়া জাবশুক। কারণ এই পুস্তকে রাশিয়ার প্রকৃত রূপ-ই ফুটিয়া উঠিয়াছে।

Maurice Baring विश्वाह्य-"For the first time is an historical novel instead of saying.

This is very likely true, or what a wonderful work of historical reconstruction! We feel that we were ourselves there, that we know those people; that they are a part of our very own past."

সৈনিক বিভাগের কার্য্য ত্যাগ করিবার পর তিনি সেণ্ট পিট্স্বার্গ হইতে জার্মাণী, ইটালী ও অন্তান্ত দেশ ভ্রমণ করিয়া আবার সেণ্ট পিট্স্বার্গে ফিরিয়া আসেন ও বিবাহ করিয়া আপন জমিদারির উপর দৃষ্টি রাখেন।

এই জমিদারির মধ্যে যথন তিনি বাস করিতেছিলেন তথন দরিক্র ক্লযকদের ছংখ-ছর্দ্দশা তাঁহার অন্তরকে আকর্ষণ করে। এই দরিক্র ক্লযকদের ছংখ দৈক্র তাঁহার অন্তরকে এতদ্র বিচলিত করে যে তিনি তাহাদের ছংখ মোচনের জক্র দৃঢ়সকল হইয়া তাহাদের উন্নতির জক্র প্রাণপণ চেষ্টা করেন এবং ইউরোপের বিভিন্ন দেশ পরিভ্রমণ করিয়া ক্লযকদের জীবনযাত্রা প্রণালী লক্ষ্য করিয়া আদেন। এই সময়ে তাঁহার অক্ততম শ্রেষ্ঠ উপক্রাস "Anna Karenina" রচনা করেন (1875-77.)।

১৮৭৫ খুষ্টাব্দে দেক্ট পিট্স্বার্কের ঘটনাকে কেন্দ্র করিয়া এই "Anna Karenina"র জন্ম হয়। পুস্তক থানির মধ্যে রাশিশ্বার প্রকৃত রূপ ফুটিয়া উঠিয়াছে।

টলষ্টয় শেষ জীবনে একথানি বিরাট উপক্রাস রচনা করেন। এই পুস্তকথানির নাম "Resurrection." এই পুস্তক রচনা কালে লেথকের বয়স ছিল १० বৎসর (1808)। কেহ কেহ ইহাকেই টলষ্টয়ের শ্রেষ্ঠ রচনা বলেন। টলষ্টয় আর একথানি উৎকৃষ্ট উপক্রাস রচনা করেন
১৮৮১ খুষ্টাজে—এই পুস্তকথানির নাম "Kreutzar Sonata."

তাঁহার অসাত প্তক্তলি এই—"Boyhood, Child-hood and Youth." "The Two Hussars." "Family Happiness." "The Cosacks." (সৈনিক জীবনের ইভিহাস লইয়া এই প্তক রচিত হয়) "Polikuska." "The Death of Ivam Ilych." "Holstomer." "The Story of a Horse." "Master and Men." এবং তাঁহার মৃত্যুর পর "Hadji M 164 d," (ইহাত কৰাক সৈনিক্ষের লইয়া লিখিত)

প্রকাশিত হয়। তাঁহার রচিত গলগুলিও অভি স্থন্দর;
"Sevastopal." নামক পুত্তকথানির মধ্যে তাঁহার সৈনিক
বৃত্তির চমৎকার রূপ ফুটিয়া উঠিয়াছে। তাঁহার ছোট
গল্পের যে সঞ্চরন আছে তাহাও অভি স্থন্দর। "Twenty
Three Tales." নামক গল্প সঞ্চরনথানি তাঁহার মৃত্যুর
পর পৃথিবীর অক্সতম শ্রেষ্ঠ গল্প-সঞ্চরন হিসাবেই
প্রকাশিত হয়।

টলষ্টয়ের রচনার মধ্যে "সৌন্দর্যা কি ?" তাহাই
ব্ঝাইবার চেষ্টা করিয়াছেন। তাঁহার রচনার মধ্যে সৌন্দর্যা,
সরলতা এবং সততার রূপ পরিকার পাওয়া যায়। এই
সকল ছোট গরের মধ্যে "বর্ত্তমান সাহিত্যের রূপ"ই
লেথক দিয়াছিলেন। সাহিত্যের প্রাথমিক পাঠ হিসারে
যদি এই গল্লগুলিকে লওয়া হয়, তাহাতেও কোনও রূপ
ভূল হয় না। একথা প্রাচ্যের সকল সমালোচকই
বীকার করেন।

১৮৮৯ খৃষ্টান্দে টলষ্টয় "Kreutzar Sonata." নামক

য়রণীয় পুন্তকথানি রচনা করেন। তাহাতে খৃষ্টধর্ম মতে

বিবাহ, কৌনার্য্য, সতীত্ব প্রভৃতি বিষয়গুলি অতি নিপুণতার

সহিত স্থলর ভাবে আলোচনা করেন। এই পুন্তকথানি

যে কেবল মাত্র রাশিয়ার জন্ম লিখিত হইয়াছিল তাহা নহে।

নানা দেশের সামাজিক সমস্তা, ধর্ম প্রভৃতি বিষয় একটি

টেণের ক্যেকজন যাত্রীর আলোচনার মধ্য দিয়া বৃঝাইতে

চাহিয়াছেন।

সমাজের প্রতি তাঁহার ভবিষ্যৎ বাণী এবং যাহা তিনি সমাজের নিকট দাবী করিয়াছেন তাহা অতি স্থন্দর রূপ গ্রহণ করিয়া ফুটিয়া উঠিয়াছে।

টলপ্তম চিরকালই ঋষি প্রাকৃতির ছিলেন। পূর্ব্বেই বলিয়াছি তিনি নিজের দেশের নিপীড়িত মানবের মধ্য দিরা বিশ্ব-মানবের তৃঃথ, দৈল্য ও বেদনার সন্ধান পাইয়াছিলেন। তাই তিনি সমস্ত ধন ঐশ্বর্য পরিত্যাগ করিয়া মানবের তৃঃথ তৃদ্দশা মোচনের ব্রতে লেখনি ধরিয়াছিলেন। সেই কারণে আমরা দেখিতে পাই যে তাঁচার লেখনিতে তৃঃখ-দৈল্প ও অভাব অন্টনের চিত্রই অতি স্থলার ভাবে ফুটিয়া উঠিয়াছে। তাঁহার অসংখ্য উপল্লাসের মধ্যে "Child hood" (1852). "Cosacks" (1862). "War and Peace" (1862-69). "Anna Karenina" (1875-77). "The Kreutzar

Sonata". "Darkness" (1886). "Resurrection" (1898) এই উপক্লাসগুলি বিশ্ব-সাহিত্যের দরবারে অভি উচ্চ আসন লাভ করিয়াছে।

১৯০৮ খুরীবের এক ভীষণ ছর্য্যোগময়ী শীতের রাত্রে সমস্ত ধন ঐশ্বর্য পরিত্যাগ করিয়া অতি দীন বেশে নিরুদেশ ষাত্রা করেন। তাহার পর হইতে ছই বৎসর কোনও সংবাদ পাওয়া যায় নাই। অতঃপর ১৯১০ খৃষ্টাম্বে রাশিয়ার একটি সাধারণ রেলওয়ে ষ্টেশনে নিউমোনিয়া আক্রান্ত এক ভিথারীকে পাওয়া যায়। ইনিই ঋষি টলাইয়। এই রেলওয়ে ষ্টেসনেই তিনি মৃত্যুমুধে পতিত হন।

জয়দেবের ছন্দ

শ্রীস্থীভূষণ ভট্টাচার্য্য এমৃ-এ

ন্ধরদেবের গীতপোৰিন্দ সংস্কৃতে লেখা দাদশ সর্গে বিভক্ত একটি গীত-কাবা। ইহাতে ৮০টি লোক ও ২০টি গীত আছে। ইহাদের মধ্যে ৭৭টি লোক বিভিন্ন বৃত্তহম্প। একটি লোক জাতিছম্পে ও অবশিষ্ট ২টি লোক ও ২৪টি গীত অপত্রংশ ছম্পে রচিত। আমরা প্রথমে অরদেবের সংস্কৃত ছম্প ও পরে তাঁহার অপত্রংশ ছম্প সম্বন্ধে আলোচনা

জন্মদেব সংস্কৃত ছম্ম রচনায় বিশেষ নৈপুণ্যের পরিচয় দিরাছেন।
গীতগোবিন্দের করেকটি স্লোকে শিথরিণা, শার্কুলবিক্রীড়িত,
পুলিতাগ্রা, উপেল্রবজ্ঞা ও প্রধারা—এই কয়টি সংস্কৃত ছম্দের উল্লেখ
পাওয়া যায়। স্লোকগুলি যে ঐ সকল ছম্দে রচিত ইহা ব্ঝাইবার
স্লেক্ত কবি ছম্দের নাম কৌশলে স্লোকগুলিতে ব্যবহার করিয়াছেন।
ইহা হইতে ব্ঝা যায়, সংস্কৃত ছম্ম-শাগ্র তিনি যে ভালভাবে আয়ও
করিয়াছিলেন শুধু তাহাই নহে, ছম্ম সম্বন্ধে তিনি নিজেও যেমন
সচেতন থাকিতেন, সেইয়প ছম্দের প্রতি পাঠক ও প্রোতাদেরও
মনোযোগ আকর্ষণ করিতে চাহিতেন। নিয়লিথিত স্লোক্ষতি
ছম্মের নামটি (শিথরিণী) কবি কিরপ কৌশলে ব্যবহার করিয়াছেন,
তাহা লক্ষ্য করিবার বিবর:

ত্বরালোক: তোকত্তবক-ন্যকাশোক লতিকা বিকাশ:, কানারোপ্যন-প্যনোহপি ব্যবহৃতি। অপি জামাদ ভূকী রণিত রমণারা ন মুকুল প্রস্তিক্ত তানাং সধি শিধরিণীয়ং স্থরতি। (২,২০)

শার্গ নবিলীড়িত ছন্দ ভবভূতির স্থার জরদেবেরও বিশেব প্রির ছিল বলিরা মনে হয়। তিনি ৭৮টি জোকের মধ্যে ৩৭টিই এই ছন্দে লিথিরাছিলেন। শীতগোবিন্দে কোন্ ছন্দ কতবার ব্যবস্থাত হইরাছে, ভাহার তালিকা দেওরা হইল:

> বৃ**ওছ-ন্দ** শাৰ্দ_্স্বিক্ৰীড়িত ৩৭ বসন্ততিসক

ক্রতবিলম্বিত	>
শিখরিণী	۲
মালিনী	٠
বংশস্থ	•
হরিণী	٧
অফুষ্টুপ	৩
উপেশ্রবক্স	ર
পু শ্পিতাগ্ৰা	৩
অধ্য "	٤
জাতিছ ন্স	
আর্থা	3

আশ্চর্য্যের বিষয় সম্পাক্রান্তা ছম্পে একটি শ্লোকও নাই। অবগ্ কালিদাস সম্পাক্রান্তা ছম্মে যেরূপ উৎকর্ষের পরিচয় দিয়াছেন, ভাহার পর অস্ত কবির পক্ষে সম্পাক্রান্তা ব্যবহারে কুঠা হওয়া বাভাবিক।

জয়দেবের কয়েকটি বৃত্তছন্দের উপর অপ্রংশ পদ্ধতির প্রভাব পড়িয়াছে। শার্দিু লবিক্রীড়িত ছন্দে লেখা নিমলিখিত লোকটি পড়িলেই ইহা বুঝা ঘাইবে:

> বেদামুদ্ধরতে। লগন্তিবহতে। ভূগোলমুদ্বিত্রতে দৈত্যং দাররতে বলিং ছলরতে কত্রকরং কুর্বতে। পৌলত্যংকরতে হলং কলরতে কারণামাত্রতে মেচ্ছান্ মুদ্ধরিতে দশাকৃতিকৃতে কুঞ্চায়তুভ্যং নমঃ॥

> > (3, 30,)

এখাদে যতি ও মধ্যামুপ্রাদের সাহাব্যে এক একটি পংক্তিকে স্পষ্টত :
তিন ভাগে ভাগ করিরা শার্কু সবিক্রীড়িত হলে এক প্রকার তর্প বৈচিত্র্য স্পষ্ট করা হইরাছে। এই মিত্রাক্ষরতা ও বতি-প্রাধার্গ অপরংশ এবং পরবর্ত্তী প্রাদেশিক ভাষার বৈশিষ্ট্য। উক্ত শার্ক্ত্র্য । বিক্রীড়িত চরপ্রশিত বাংলা দীর্থ ত্রিপদীর আভাব পাওরা বাইতেহে।

অপত্ৰংশ ছন্দ

অবগ্য এই সকল শ্লোক অপেকা সীতগোবিন্দের ২০টি সীতই অধিক প্রসেদ্ধ। এই সীতগুলি অপত্রংশ মাত্রাছন্দে রচিত। ইহাদিগকে চারিট শ্রেণীতে বিভক্ত করা যাইতে পারে।

প্রথম শ্রেণী

এই শ্রেণীর ছন্দগুলি প্রাচীন জাতিছন্দের আদর্শ-অমুদারে রচিত। २१ है गीरजद मर्या > विरे वार्ड कार्जीय हत्य लिथा रहेबाहिल। জাতিছদের অপর নাম মাতা ছন্দ। একটি পত্ত পংক্তিতে ব্যবহৃত মাত্রা সমষ্টির উপর এই ছন্দের গঠন নির্ভর করে। কিন্ত ইহার আর একটি বৈশিষ্ট্য আছে। জাতিছন্দের এক একটি চরণ চার মাত্রার 'গণ' বারা বিভক্ত করা যাইতে পারে। আর্য্যা ছন্দেই চার মাত্রার গণের সূত্রপাত হইয়াছিল, বৈতালীয় ও ঔপশ্ছন্দসিক ছন্দে এই নূতন গণবিভাগ আরও ম্পষ্ট। কিন্তু তথনও উচ্চারণে মরাবাত-পদ্ধতি প্রতিষ্ঠালাভ করে নাই ও কবিতা তখন হার করিয়া পড়া হইত বলিয়াই বোধ হয় প্রাচীন জাতিছন্দের চার মাত্রার চলন ছন্দের গঠনকে প্রভাবিত করিতে পারে নাই। অপত্রংশ যুগের উচ্চারণে বরাঘাত প্রাধান্ত লাভ করায় কবিতা আবৃত্তির সময় এক প্রকার বে াক উৎপন্ন হইয়া পদ্ধ-পংস্ক্রিকে করেকটি ছোট ছোট অংশে বিভক্ত করিত। মিত্রাক্ষরতা প্রবর্ত্তিত হওয়ায় এই ঝেঁাক বিভাগগুলি আরও স্পষ্টতা লাভ করে। পূর্বের শার্দালবিক্রীড়িত ছল্মের একটি উদাহরণে তাহা দেখান হইয়াছে। একপ্রকার জাতিছদে এই ঝেঁক, মিল ও চার মাত্রার 'গণ' বিশেব প্রাধান্ত লাভ করিয়াছিল। সংস্কৃত ছন্দ-শাল্পে এই ছন্দ-গোলীর নাম মাত্রাসমক ছন্দ। আমাদের আলোচ্য প্রথম শ্রেণীর অস্তর্ভুক্ত গীতগুলি এই মাত্রাদমকের আদর্শে রচিত। এই শ্রেণীর মধ্যে নানাপ্রকার ছন্দের প্যাটার্ণ পাওয়া যাইতেছে। ইহাদের আবার কয়েকটি উপরিভাগ আছে:—

(क) একপ্রকার মাত্রাসমক ছন্দের নাম পাদাকুলক। ইহাও চার মাত্রার চারিটি অংশে বিভক্ত ১৬ মাত্রার ছন্দ ; তবে অক্তান্ত মাত্রাসমকের সহিত ইহার পার্থকা এই বে, পাদাকুলকে লবু শুরু অকরের ব্যবহার সম্বন্ধে কোন বিধি-নিবেধ নাই। ইহাই বাঁটি অপলংশ ছন্দ্র। প্রসিদ্ধ মোহমুদ্গরের লোকগুলি এই ছন্দের রচিত। আনেকে ইহাকে পল্লবাটকা ছন্দও বলেন। পাদাকুলকের সহিত লর্মেদেবের এই ছন্দের সামাল্ত পার্থকা এই বে, পাদাকুলক 'চতুপানী' ছন্দ বলিয়া গণ্য হয়, কিন্তু জারন্দেবের এ জাতীর ছন্দে তুই চরণের এক একটি অবক (stanza)। এই ছন্দে-রীতি পরবর্ত্তা বাংলা ছন্দে অফুস্তত হইরাছিল। গীতগোবিন্দের ৪টি গীত (গীত সং ৯. ১২, ১৪, ১৮) এই রূপ ৪+৪+৪+৪=১৬শ মাত্রার ছিপাদ পাদাকুলক ছন্দে বিচিত। একটি দুটান্ত:—

ত্তনবিনি। হিতমপি ॥ হারমু। দারম্। লামস্তে কুশ তম্বিব ভারম্। সরস মন্ট্রণপি মলরজ পদ্ম।
পশ্চতি বিবমিব বপুবি সশক্ষ্য। (গীত, »)

কে) অন্তদেব এইখানেই প্রাচীন শাস্ত্র-সমত ছম্ম পদ্ধতির নিকট ইইতে বিদার লইলেন। কারণ অবশিষ্ট সমত ছম্মই কতকটা নৃতন ধরণের। আমরা প্রথমে পাদাকুলক হইতে উৎপন্ন এক নৃতন ছম্মের উল্লেখ করিতে পারি। প্রচলিত পাদাকুলক পংক্তির শেবে একটি মাত্রা কমাইয়া এই নৃতন ছম্ম হৃষ্টি করা হইয়াছে। ইহার মাত্রা-বিস্থাসে—
৪+৪+৪+৩=১৫ | ১৬ সংখ্যার গীভিটি এই ছম্মে রচিত।—

অনিল ত-। রল কুব-। লয়-নয়। নেন।
তপতি ন সা কিশলয় শয়নেন॥
আজয়দেব ভণিত বচনেন।
আবিশতু হরিরাপি ক্লয় মনেন॥

- থে) এবার আমরা যে ছন্দের কথা বলিব, তাহাকে জরদেবের বিশেষ প্রিয় ছন্দ বলা যার, কেননা প্রথম শ্রেণীর অস্তর্ভুক্ত ১৯টি গীতের মধ্যে নরটিই (গীত সং—৩, ৪, ৫, ৬, ৮, ১৭, ২০, ২২, ২৩) এই ছন্দের রিত। ইহাও পাদাকুলকের স্থার চার মাত্রার গণ-বিভক্ত ছন্দ। কিন্ত ইহার উভর চরণেই ১৬ মাত্রার পরিবর্ত্তে ৪+৪+৪+৪+৪+৪+৪+৪
 ২৮ মাত্রা পাওয়া যার। এই ছন্দের উদাহরণ:—
 - (১) কেলিক। লাকুড়।কেন চ। কাচিদ। মৃংযমু। নাজল কুলে। মঞ্ল বঞ্ল কুঞাগতং বিচকৰ্ষ করেশ ছুকুলে।

(পীত, ৪)

(२) উন্নদ মদনমনোর পপথিক বধু জন জনিত বিলাপে। জনিকুল সন্ধুল কুন্থম সমূহ নিরাকুল বকুল কলাপে।

(গীত, ৩)

(খ ১) এই ছন্দে ১৬ মাত্রার পর প্রধান যতি-পতন হয়। কিন্ত ১১ সংখ্যক গীতের প্রতি পংক্তির ছুই স্থানে (৮ ও ১৬ মাত্রার পরে) প্রধান খোঁক পড়ার এবং ঐ ছুই স্থানে মিল ব্যবহৃত হওরার এই ছন্দের এক একটি পংক্তি স্পষ্টতঃ তিনভাগে বিভক্ত হইয়। পড়িতেছে। এই জাতীর ছন্দকে বাংলা ত্রিপদীর পূর্ববাভাব চলা যাইতে পারে, পূর্বেই তাহার উল্লেখ করিয়াছি। দুইাস্তঃ—

পততি প। তত্তে । বিচলিত। পত্তে । শব্দিত। ভবদুপ। বামন্। রচয়তি শয়নং সচকিত নয়নং পশুক্তি তব পদ্মানন্। মুধ্রমধীরং তাক মঞ্জীরং রিপুমিব কেলিয়ু লোলন্। চল সধি কুঞ্জং সতিমির পুঞ্জং শীলয় নীল নিচোলন্।

(খ २) খ শাখা বৰ্ণিত ছলের আরও ছুইটি নৃতন রূপ গীত-গোবিলের ছুইটি গীতে পাওরা বার। ইহার একটিতে উক্ত ১৮ মাত্রার ছল-পংক্তি হইতে এক মাত্রা কমাইরা ও পূর্ব্ব-বর্ণিত উপারে প্রবল বতি-পতন ও মিলের সাহাযো এক একটি পংক্তিকে ভিমভাগে বিভক্ত করিরা (৪+৪।৪+৪।৪+৪।৪+৪+৩-২৭) ছল্প বৈচিত্রা উৎপন্ন করা হইরাছে। বেমন:— খনচর। ক্লচিরে । রচরতি । চিকুরে । তরলিত । তরণা । মনে । কুরুবক কুঞ্মং চপলা স্থবং রতিপতি মুগকাননে । (গীত, ১৫)

- (ধ ৩) বিতীয়টিতে ঐ ছন্দের শেবে এক মাত্রা যোগ করিয়া (৪+৪+৪+৪।৪+৪+৫-২৯ মাত্রা ন্তনত্ব স্টেকরা হইয়াছে। নয়ন কু-। রজ ত । রজ বি-। কাশ নি-॥ বাস ক-। রে শ্রুতি। মণ্ডলে। মনসিজ পাশবিলাস ধরে শুভবেশ নিবেশর কুণ্ডলে॥ (শীত, ২৪)
- (গ) এ পর্যান্ত চার মাত্রার 'গণ'-গঠিত সম-পাদ (অর্থাৎ বে-ছন্মের চরণগুলি মাত্রা দৈর্ঘ্যে সমান) ছন্মের কথা বলা ইইল। কিন্তু পংক্তিগুলির মাত্রা-দৈর্ঘ্য ছোট-বড় করিয়াও ছন্মে বৈচিত্র্য স্থাষ্ট করা যাইতে পারে। গীত-গোবিন্মের একটি গীতে তবকের প্রথম চরণে পাঁচটি 'গণ' অর্থাৎ ৪×৫—২০ মাত্রা এবং বিতীয় চরণে চারটি 'গণ' অর্থাৎ ৪×৪—১৬ মাত্রা পাওরা যাইতেছে। প্রানিদ্ধ দশাব্তার জ্যোত্রটি এই ছন্মে রচিত:—

ঞালর পা-।-রোধি জ-। লে ধৃত। বানসি। বেদম্। বিহিক বহিত্র চরিত্রমধেদম্॥ (পীত, ১)

(খ) গীতগোবিন্দের দিঙীর গীতটিতে অসম-পাদ ছন্দের বৈচিত্র্য আরও অধিক। আমরা ইহাকে অমিল অসম ত্রিপাদ ছন্দ বলিতে চাই। ইহার প্রথম চরণে তিন 'গণ' ও ১২ মাত্রা (৪+৪+৪), দিঙীর চরণে ছর মাত্রা (২+৪) এবং তৃতীর চরণে ১১ মাত্রা (৪+৪+৩)। বেমন:—

শ্ৰেত কম-। লা কুচ। মণ্ডল।
ধৃত। কুণ্ডল।
ফলিত ল-। লিত বন-।মাল।
দিনমণি মণ্ডল মণ্ডন।
ভব পণ্ডন।
মুনিজন মানস হংস।

রবীন্ত্রনাথের

কোকলি দৃপতির। তুলনা নাই। জগৎ জুড়ি যশোগাথা।
এই ছন্দের সহিত উক্ত জরদেবী ছন্দের পাঠনিক সাদৃভ সামাল্য হইলেও
তাহা লক্ষ্য করিবার বিবর।

বিতীয় শ্ৰেণী

এ পর্যন্ত ও মাত্রার 'গণ' দারা গঠিত ছব্দের কথা বলা হইল।
কিন্তু গীতগোবিশে আর এক শ্রেণীর ছন্দ পাওরা যার, ইহা পাঁচ
মাত্রার 'গণ' দারা গঠিত। ছুইটি গীতে এইরূপ পাঁচ মাত্রার চলন
পাওরা যাইন্ডেছে।

(>) ইহার উভর চরণেই ৎ × ৪ — ২০ মানা। বেমন,

আহহ কল। রামি বল-। রাদি মণি। ভূষণম্।

হরিবিরহ দহন বহনেন বহ দুবণম্।

কুহম হকুমার ভলুমভজু শরলীলরা।

অর্থণি হৃদি হৃদ্তি মাম্তি বিবন শীলরা।

(২) ইহা দীর্ঘ ছন্দ, প্রতি চরণে ৩৪ মাত্রা; মাত্রা সমাবেশ— ৫+৫।৫+৫।৫+৫। যথা—

বদসি যদি। কিঞ্চিদপি । দক্তর চি। কৌ মূদী ।
হরতি দর। তিমিরমতি। ঘোরম্।
ফুরদধরসীধবে তব বদম চক্রমা
রোচরতি লোচন চকোরম্।
(গীত, ১১)

ইহার সহিত তুলনীয় রবীশ্রনাপের—
পঞ্চলরে দক্ষ ক'রে ক'রেছ একি সন্মাসী
বিশ্বমর দিরেছ তারে ছড়ায়ে।

অথবা--

একদা তুমি। অস ধরি। কিরিতে নব। তুবনে
মরি মরি অ। নঙ্গ দেব। তা,
কুত্ম রথে মকরকেতু উড়িত মধ্-পাবনে
পথিক বধু চরণে প্রণতা।

তৃতীয় শ্ৰেণী

এই গোটার ছন্দ সাত মাত্রার গণ' দারা গঠিত। একটি মাত্র পীত এই ছন্দে রচিত হইরাছিল। এই দিপাদ ছন্দের প্রতি চরণে १+१+१ +৩=২৪ মাত্রা থাকিবে। উদাহরণঃ—

> মামিরং চলি-। তা বিলোক্য বৃ-। তং বধু নিচ-। রেন। সাপরবিতরা মরাপি ন বারিতাতিভয়েন । কিং করিছতি কিং বণিছতি সা চিরং বিরহেণ। কিং ধনেন জনেন কিং মম জীবিতেন গৃহেণ।

> > (গীত ৭)

এই ছন্দের সপ্তমাত্রিক 'গণ' গুলির প্রথম ও চতুর্ব মাত্রার এক একটি গুরু অক্ষর ব্যবহাত হইরাছে। ইহার কলে কবিভাটিতে বৃত্তহন্দের ভাগ একটি বিশেষ প্যাটার্ণ-স্থাই হইরাছে। অক্ষর গুণিরাও এই ছন্দের বিরেষণ করা সন্তব। বৃত্তহন্দের গণ-পদ্ধতি অনুসারে বিরেষণ করিলে এই সপ্তদশাক্ষর ছন্দের গণ-বিভাগ হইবে র-স-জ-জ-জ-গ-ল।

চতুর্থ শ্রেণী

চতুর্থ শ্রেণীর অপব্যংশ ছব্দগুলিকে বিশ্র-ছব্দ বলা বাইতে পারে। বিভিন্ন মাত্রা-দৈর্ঘ্যের 'গণ' যারা এই ছব্দ গঠিত। স্থীতগোষিক্ষের ছ^{ই,চি} সীতে ছুই প্রকার মিশ্র ছব্দ পাওরা বাইতেছে।

(3) ১ম চরণ—৫+৫+৫=১৭ মাত্রা ২য় চরণ—৮+৫+২ = ১৫ " বা ৩+৫+৫+২ = " " উদাহরণ :---

মধুম্দিত। মধুপকুল। কলিত রা-। বে। বিলস মদন রস-। সরস ভা-। বে॥ মধুরতর পিক নিকর-নিনদ মুখরে॥ বিলস দশনকটি কচির শিখরে॥ (গীত. ২১)

(২) এবার বে মিশ্র ছন্দটির কথা বলিব তাহাতে জরদেব অপূর্ব্ব নৈপুণ্যের পরিচয় দিয়াছেন। ইহাকে 'চতুম্পাদ' ছন্দ বলির। গণ্য করিতে চাহি, ক-থ—ক-থ—এইভাবে মিত্রাক্ষর-বিস্তাদ করা হইরাছে।

> ১ম চরবে—৩+৩+৩=১১ মাত্রা, মিল ক ২য় চরবে—৩+৩+৩= ৯ " খ ৬য় চরবে—৩+৫+২=১০ " ৽ " ক ৪র্থ চরবে—৪+৪+৫=১৩ " খ

উদাহরণ :---

দহতি। শিশির। ময়্থে।
মরণ। মফুক। রোতি।
পততি। মদন বিশি। খে।
বিলপতি। বিকল ত। রোতি।
ধ্বনতি মধুপ সমূহে।
শ্রবণমপিদ্বীতি।
মনসি বলিত বিরহে।
নিশিনিশি কল্পুমুপ্বাতি।
(গীত. ১০)

এই ছলটির আর একটি বৈশিষ্ট্য এই যে, ইহার প্রতি চরণের প্রথম ছয়টি আকর লবু এবং অবশিষ্ট্যংশ (১) গুরু+লবু, (২) লবু+গুরু+গুরু, (৬) লঘু+লবু+গুরু এবং (৪) লবু+লবু+গুরু+ লবু আকর বারা রচিত। স্করাং ইহাকেও আকর ছলা বলা বাইতে গারে। বৃত্তহল অনুসারে ইহার গণ-বিভাগ হইবে—ন-ন-র, ন-ন-গ-ল, ন-ন-স, ন-ন-স-ল।

করদেবের অপত্রংশ ছল্মে শুরু অকরের প্ররোগ সহকে সাধারণ ভাবে ছই একটি কথা বলিব। ফুম-মাত্রিক ছল্মে (অর্থাৎ চার মাত্রার 'গণ-গঠিত ছল্মে) শুরু অকর সাধারণতঃ অকুম মাত্রার ব্যবহৃত ইইগাছে। ইহাদের মধ্যে ৪, ৭, ১১, ১১০ প্রভৃতি মাত্রা অংশেকা ১, ৫, ৯, ১০ প্রভৃতি মাত্রার শুরু অকরের প্ররোগই বেশী। ইহার কলে এ সকল অকরে উচ্চারণকালে এক প্রকার তরঙ্গ-ভলের স্পষ্ট ইইয়া থাকে। স্বায়লেবের সমস্ত অপত্রংশ ছল্মেই শেব 'গণে' অন্ততঃ একটি শুরু অক্রেরর প্ররোগ দেখিতে পাওরা যার। শেকস্ত পংক্তির শেব অংশে একটি বেশিক অনুভূত হয়। অধিকাংশ বাংলা ছল্মেও এই বৈশিষ্টাইকু পাওরা যাইবে।

জরদেবের ছক্ত বিরোধণ করিবার সময় কোন কোন গণের মাত্রা-দৈর্ঘ্য সম্বন্ধে পাঠকপণের মধ্যে মন্তন্তেল হইতে পারে। আমরা বাহাকে ৪+৪ এইরপ ছুইটি 'গণ' বলিয়ছি, অনেকে হয়ত কোন কোন ক্ষেত্রে উহা ৮ মাত্রার একটি বেঁাকে পড়িবেন, অথবা এরপ কোন কোন গণকে ২+৬ বা অন্ত কোন ভাবে গ্রহণ করিবেন। অনেক সময় ক্ম মাত্রায় শুক্ত অক্ষর ব্যবহার করিয়া আটমাত্রায় এক একটি যুক্ত গণ স্প্ত হইরাছে। বেমন, ধুমকেত্র্মিব', 'কনকদস্ত-কচি', 'বন্ধুন্তীবমধ্'। স্তরাং এক একটি গীতের গণবিভাগ ও গণ-দৈর্ঘ্য সম্বন্ধে আমরা বেরূপ বিধি নির্দেশ করিয়াছি, সমগ্র গীতের মধ্যে কাহারও কাহারও মতে ছুই এক ক্ষেত্রে ভাহার ব্যতিক্রম হইতে পারে। কিন্তু তাহাতে কিছু আসে যার না। জরদেবের ছন্দের প্রধান তিন শ্রেণীর চলন, অর্থাৎ চার, পাঁচ ও সাত মাত্রা সম্বন্ধে নিশ্চরই কোন মত্তেদ হইবে না।

'গণ' বিভাগ সম্বন্ধে আর একটি কথা মনে রাখিতে হইবে।
জয়দেবের সময়েও ছম্ম সংস্কৃত ছন্দের ভায় পংজি-নির্ভর ছিল,
বাংলা ছন্দের মত পর্ব্ব-নির্ভর হয় নাই অর্থাৎ একটি চয়ণে মোট
কত মাত্রা ব্যবহৃত হইল তাহার উপরেই ছন্দের গঠন নির্ভর করিত।
'গণ' বিভাস তথন ছন্দের গঠন-নির্ণয়ে সহায়তা করিত না। কিন্তু
বিভিন্ন পর্বের বা পদের মাত্রা-দৈর্ঘ্যের উপরেও বাংলার ছম্ম-প্রকৃতি
নির্ভর করে। প্রকৃত ও অপ্রংশ ছন্মেই যে এই প্রকার বতি বিভক্ত
কৃত্র কৃত্র 'গণ' বা পর্বের স্ত্রপাত হইয়াছিল, ইহা দেখাইবার জ্ঞাই
চার, পাঁচ সাত মাত্রার গণের কথা বলা হইল।

গীতগোবিন্দে গীতগুলির রাগ ও তালের উল্লেখ দেখা যার।
ঠিক এই সকল রাগ ও তাল জয়দেবের সময় হইতেই প্রচলিত ছিল
কিনা জানিনা এবং সমস্ত সংস্করণই এক একটি গীতের রাগ ও
তাল সম্বন্ধে একমত বলিরাও মনে হর না। তথাপি মিধিলা হইতে
প্রকাশিত লোচন কবি কৃত 'রাগ তরঙ্গিনী'তে এই সকল রাগ
রাগিণীকেই ছন্দের নাম বলিয়া গণ্য করার চেটা হইয়ছে। রাগ
ও তাল অনুযায়ী গীতগুলির প্রেণী বিভাগের সহিত ছন্দ বিলেবণ
করিয়া আমরা যেরাপ প্রেণী বিভাগ করিয়াছি, তাহার কোন মিল
নাই। যেমন, ১০টি গীত ৪×৭—২৮ মাত্রার ছন্দে রিভিত। কিন্তু
এই গীতগুলি বসন্ত ও যতি, রামকিরী ও যতি, শুর্জারী ও যতি,
মালব ও একডালি, কর্ণাট ও যতি শুর্জারী ও একডালি, ভেরবী ও
যতি, বসন্ত ও বতি, দেশ বয়াড়ী ও রাপক এবং রামকিরি ও যতি—
এই সকল রাগ ও তালে গীত হইবার কথা। স্বতরাং রাগ-য়াগিণীর
এমন কি তালের নাম অনুসারেও জয়দেবের ছন্দের প্রেণীবিভাগ
সমর্থন করা যার না।

জনদেব সংস্কৃত বুগের শিক্ষা এবং অপান্তংশ বুগের ক্ষৃতি গ্রহণ করিরাছিলেন, কিন্ত তাঁহার দৃষ্টি ছিল অনাগত নব-বুগের দিকে। সেক্স্প তাঁহার সাহিত্যে একাধারে প্রাচীন কাব্যের প্রভাব ও অপান্তংপোত্তর প্রাদেশিক সাহিত্যের স্ট্রনা দেখিতে পাওরা প্রার । জনদেবের ছল্ম আলোচনা করিরা আমরা কবির প্রতিভার এই দিকটি দেখাইতে চেষ্টা করিলাম।



সহাপুক্ষদের আবির্ভাব ও তিরোভাব দিবস প্রত্যেক বিন্ধালয়ে পালন করা উচিত। ঐ দিবস গুলিতে মহাপুক্ষদের জীবনের বিভিন্ন দিক সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া প্রবন্ধ ও কবিতা লিখিতে ছেলেদের উৎসাহিত করা উচিত। মহাপুক্ষদের জন্মন্থান, কর্মক্রে প্রভৃতি মাপের সাহায্যে শিশুদের দেখাইলে তাহারা আনন্দ পাইবে এবং দেশের ভৌগোলিক অবস্থান সম্বন্ধে জ্ঞানলাভও করিতে পারিবে। মহাপুক্ষদের বাণী হইতে সার্কাজনীম বিভেদহীন অংশগুলি বাছিরা শিশুদের মধ্যে বাহাদের হাতের লেখা ভাল তাহাদের দারা লিখাইয়া দেওরালে টালান উচিত। মহাপুক্ষদের প্রতিকৃতি তাহাদের বিশিষ্ট কর্মক্রেরের ছবি, শিক্ষক মহাশার শিশুদের সাহায্যে আকিবার চেটা করিবেন। মহাপুক্ষদের জন্ম, কর্ম্ম ও বাণী দেশের রাজনৈতিক ও গামাজিক সমস্তার সহিত বনিষ্ঠভাবে বৃক্ত। শিশুদের বরুস ও বাধ-শক্তির অনুবারী করিয়া তাহাদের কাছে সাময়িক রাজনৈতিক ও সামাজিক অবস্থাবী করিয়া তাহাদের কাছে সাময়িক রাজনৈতিক ও সামাজিক অবস্থাবীন করা বাইতে পারে।

—বাওলায় শিক্ষক

কলিকাতা বিশ্ববিভালরের আই-এ ও আই, এস-সি পরীকার কল প্রকাশিত হইয়াছে। এই পরীক্ষায় গতবারের তুলনায় অনেক কম ছাত্রছাত্রী পাশ করিরাছে। প্রায় ১৭ হালার পরীকার্থীর মধ্যে আই-এ পরীকার শতকরা ২৯ জন এবং আই, এস-সি পরীকায় মাত্র শত-করা ৩১ জন ছাত্র ও ছাত্রী উত্তীর্ণ হইতে পারিয়াছে। অপর দিক ছইতে হিসাব করিলে আই-এ পরীক্ষায় শতকরা ৭১ জন ও আই. এস-সি পরীকার শতকর। ৬১ জন ছাত্রছাত্রী ফেল করিয়াছে। এই অতাধিক কেলের সংখ্যা যেমন উদ্বেগজনক, তেমনি হতাশাব্যাঞ্জক। যদিও এক বিষয়ে অকৃতকার্য হইবার জন্ত ২১ শত পরীকার্থী পুনরায় সেই বিষয়ে পরীক্ষা দিবার দিতীয় স্থযোগ পাইবে, তথাপি সে नदीकात भान इहेलल छाहात्मत कार्यछः এकि वरमत नहेहे इहेरव। যে বিশ্ববিদ্যালয়ের পরীকার শতকরা মাত্র ২৯ জন বা ৩১ জন ছাত্র পাল হর, সেই বিশ্ববিশ্বালয়ের এবং বিশ্ববিশ্বালয়ের অধীনস্থ কলেজ-क्षानित शक्क हेश व्याभीतरवत्र विवत् । शांतिश्र यथाययञ्चारव श्रा-তৰা করে না বলিয়াই পরীক্ষার কল এত থারাপ হর-ইহাও বেমন আংশিক সত্যা, অন্তদিকে কলেজ কর্তৃপক বধাবধভাবে ছাত্রদিগকে পরীকার মত প্রস্তুত করিরা পরীকা দিতে পাঠান না, ইহাও তেমনি সতা। -- বুপান্তর

ভারতের বাইরে পৃথিবীর অস্তান্ত দেশগুলিতে কোণার কতজন ভারতবাসী আছেন এ বিবরে আজ সকলেই জানিতে বেশ উৎক্ষ। বিশেষ ভারতরাট্রের নাগরিক বলিরা এই সব প্রবাসী ভারতীরদের বর্ত্তমান দাবী ও তার নানা প্রতিক্রিয়া ইত্যাদির সহিত সকলেই কিছু কিছু পরিচিত আছে। একটি রাষ্ট্রের অধিবাসীদের প্রবাদে পাকাকানীন এই ভাবে আমুগত্য রক্ষার বিষয়ে পশ্চিম দ্বীপপ্র্য়া (west Indies) থেকে জনৈক ভারতীর ভারত থেকে রাষ্ট্রভাষার কিছু কিছু শিক্ষক প্রেরণের অমুরোধ জানিয়েছেন। ভারত থেকে পৃথিবীর নানা দেশে ভারতীয়দের এইভাবে ছড়িয়ে পড়া গত দেড়শ' বছর ধরে যে ভাবে চলেছিল, যার ফলে কোন কোন দেশে ভারতীয়রাই এখনও কৃষি, বাণিজ্য, শিল্প ও অস্থান্ত জীবিকার শ্রেষ্ঠ স্থান দখল করিয়া আছে। একণে খাধীন ভারতের, নাগরিক হিসাবে যোগস্তে রক্ষায় ভারতের রাষ্ট্রভাষায় তাদের সন্তান সন্ততিদের শিক্ষিত করে তুগতে চায়। প্রবাদী ভারতীয়দের পক্ষে অপর একটি দেশকে ক্রম্থান, কর্মন্থান ও বর্ত্তমানে বাসন্থান বলে দ্বাত্ত গ্রহণ করে নিয়েও কেবল আদিহান ভারতরাষ্ট্রের প্রতি আমুগত্য শীকার ও ভাষার চর্চায় ভারতীয় পরিচয়টুক্ কতথানি স্ক্ললায়ক হইবে একপা রাষ্ট্রনীতিবিদ্দের প্রণিধান যোগ্য।

—সভ্যাগ্ৰহ পত্ৰিকা

পশ্চিমবঙ্গের বর্ত্তমান খাম্ব পরিস্থিতি লইয়া পণ্ডিত লক্ষ্মীকাস্ত মৈত্র যে ভাবে প্রাদেশিক তথা ভারত সরকারের সহিত আলোচনা চালাইতেছেন তাহা আমরা লক্ষ্য করিতেছি। তিনি কেন্দ্রীয় সরকারকে অবিশবে পশ্চিম বাংলার জন্ত ৫ লাখ টন খাত্রণতা সরবরাহ করিবার জন্ত অমুরোধ জানাইয়াছেন এবং কেন্দ্রীয় পান্তশস্ত কমিটির চেয়ারম্যান হিসাবে কোৰা হইতে বা কি ভাবে এই পরিমাণ ৰাষ্ট্রণস্ত সংগ্রহ করা যাইতে পারে, ভাহাও তিনি জানাইয়াছেন। আলোচনা প্রসঙ্গে পণ্ডিত মৈত্র বিশেষভাবে নদীয়া জেলার থাত পরিস্থিতির সংবাদ দিয়া জানাইয়াছেন যে নদীয়া জেলাতে চাউলের দর মণ করা ৪০, টাকা উঠিয়াছে। মুশিদাবাদ জেলা সম্বন্ধে অবহিত হইলে তিনি বশিতে পারিতেন যে এই জেলার কোনও কোনও স্থানে ৪২১ টাকা মণ দরেও চাউল বিক্রম হইরাছে এবং ৩৫, হইতে ৪০, দরে বছ ইউনিয়নে বিক্রম হওয়ার সংবাদও আমরা পাইয়াছি। কাজেই **খাছ-সমগ্রা** বে কেবল नगीया स्त्रमार्ट्ड अप्रिम इरेबा উठियार ठारा मरह, मुनिमानाम स्नमार्ट्ड খাভ সমস্তা ক্রমেই জটিলতর হইরা উঠিয়াছে। --- यूर्निमावाम ममाठाव

বাকুড়া জেলার অধিবাসীদিগকে ছুইটি শুক্তর শকার মধ্যে অবস্থান করিয়া জীবন বাপন করিতে হয়—একটি শকা ম্যালেরিয়া, অপরটি কু^ঠ। অর্থাৎ জেলাবাসীকে জলে কুমীর ও ডাঙ্গার বাব লইয়া প্রাণ রা^{থিতে} প্রাণাম্ভ হইতে হইতেছে। বিকুপুর মহকুমা ম্যালেরিয়ার ধ্বংস হ^{ইতে} চলিয়াছে, প্রামের পর প্রাম উলাড় হইয়া যাইতেছে, ম্যালেরিয়ার ভূ^{গিরা} ভূণিরা প্রানের লোক মরিরা ভূত হইরা বর্ণে (!) ছুন্ভি বাজাইতেছে। দরণ উভর দেশেরই জনসাধারণের মধ্যে ছু:খছর্মণা ও বেকার-সদর মহকুমার করেকটি থানাতেও, এমন কি বাঁকুড়া সহরেও ম্যালেরিরার প্রভাব বর্থেষ্ট বৃদ্ধি পাইরাছে—তাহার উপর কুঠরোগ বাপকভাবে প্রদার লাভ করিয়া বাইতেছে—বিশেবজ্ঞদের মতে জেলায় প্রার একলক কুঠরোপী আছে। জেলার ম্যালেরিরা দমনের কার্যা পশ্চিমবৃদ্ধ সরকার আরম্ভ করিয়াছেন—কিন্তু কুঠ রোগ দমনের জ্ঞ কোন কাৰ্যাকরী পদ্ম অবলম্বিত হইরাছে বলিয়া আমরা জ্ঞাত নহি।

---প্রচার

…"বাঁহারা ভাবিয়াছিলেন, দেশ বিভাগ হইলে সাম্প্রদারিক সমস্তার সমাধান হইরা যাইবে, তাঁহারা ভূল করিয়াছেন। দেশ বিভাগের দক্ষে দক্ষে শরণাথী-সমস্তা ও কাশ্মীর-সমস্তার সৃষ্টি হইল। কাশ্মীরের ব্যাপারে যুদ্ধের সিদ্ধান্ত হইল। কিন্তু আন্তর্জাতিক জটিলতার অনুহাতে ভারত সরকার পূর্ববঙ্গ সম্পর্কে চুপ করিয়া গেলেন। আড়াই কোটি হিন্দুর জীবন ও মর্যাদার প্রশ্নে কেন যে অমুরূপ সিদ্ধান্ত গৃহীত হইল না, তাহা আমি বুঝিতে পারি না। পণ্ডিত নেহের যেভাবে চলিতেছেন, তাহাতে জাতির কোনই সাহায্য হইবে না। তিনি যেন চুক্তির বিষয় পুনবিবেচনা করেন এবং পুর্ববঙ্গের সাজানোগোজানো সকর করিয়া আসিয়া বাঁছারা রিপোর্ট পেশ করেন, দিলীতে বসিয়া সেই রিপোর্ট পড়িয়া বেন তিনি মতামত নির্দ্ধারণ না করেন।" শিলচরে নাগরিকদের সম্পর্নার উত্তরে শ্রামাপ্রসাদ মুখার্চ্ছি উপরি উক্ত ভাষণ দেন।

---সমাধান

টিকিট পাওয়ার অহবিধা, টিকিটের হুনুল্যতা ও হুম্পাণ্ডা, বিকাওয়ালা ও কুলির জুলুম প্রভৃতি এড়াইবার লক্ত অনেক কলিকাতা-याजी अथन वह वह तोकारवारन वाहरलहन। हेहार श्रीमात्र কোম্পানীর উপর চাপ কমিতেছে। অক্তথা যে হারে লোক যাইতেছে, তাহাতে ২াত মামেও ভিড কমিত না-বানরীপাড়া, গৈলা, বহুরকাঠী. ভোলা, চরচক্রবোহন, লালমোহন ইত্যাদি ছইতে হাজারে হাজারে গোক নৌকা আত্রর করিতেছে! ইহাতে অধিকসংখ্যক জালিয়া, বাড়ৈ, কুমার, তাতি প্রভৃতি ঘাইতেছে—আবার বয়শীরকাঠীনিবাসী ব্রিশালের ক্বিরাল জীবুক্ত উমাচরণ দাশগুর শ্রেণীর লোকও এই নৌকায় ষাইভেছে। —বরিশাল হিতৈষী

বিগত বিৰব্যাশী মহাবুদ্ধে ব্যবসা বাণিজ্য ক্ষেত্ৰে ইংলণ্ডের স্বচেরে বড় ছইটা প্রতিষ্দ্রী দেশ—আর্মানী ও আপানের একসঙ্গে ^{পতনের} ফলে ইংলভের খুব ফ্বিধা হইরাছিল। কিন্ত লাপান এবং ^{পশ্চিম} আশ্বানীর একাংশের শাসক হিসাবে আমেরিকার যুক্তরাই একণে আর এই ছুইটা দেশকে শিল ব্যবসার ক্ষেত্র ছইতে দুরে ^{বাধা} স্বীচীন মনে ক্রিভেছেন মা। -কারণ শিল ব্যবসা না পাকার

সমস্তা অবল হইয়াছে এবং উহার কলে উহারা কমিউনিষ্ট মতবাদের প্রতি বুঁকিরা পড়িবে এক্লপ আশহা হইরাছে। ফলে সম্প্রতি যুক্তরাষ্ট্রের শাসকণণ জাপানকে অধিকতর পরিমাণে সাইকেল ও বন্ধ প্রস্তুত করিয়া তাহা বিদেশে রপ্তানীর স্থযোগ দিয়াছেন। পশ্চিম জার্মানীর আমেরিকান অধিকৃত অঞ্চেও কলকজা অধিকতর পরিমাণে শুক্তত করিয়া তাহা বিদেশে রপ্তানী করিবার স্থযোগ দেওরা हरेबारह। উरात करन देशनरक्षत सरवान स्विधा विनष्ठ इरेवात छेनास्य হইয়াছে। কারণ বন্ধ, সাইকেল ইত্যাদির ব্যাপারে জাপানের সহিত এবং কলকজার ব্যাপারে জার্মানীর সহিত প্রতিযোগিতার দণ্ডারমান बाका है:लए अब माधावन मरह। काटक है वह बालाव नहेबा है:लए अब সহিত আমেরিকার যুক্তরাষ্ট্রের একটা মনোমালিক্তের স্ষ্ট হইবার --আৰ্থিক জগৎ উপক্রম হইরাছে।

সম্প্রতি যে সকল ভ্রমণকারী শরণাধী এবং ব্যবসায়ী চীন পরিত্যাপ করিয়া আসিয়াছে তাহাদের নিকট হইতে প্রাপ্ত বিবরণে জানা-যার যে চীনের ক্রমবর্দ্ধমান ছুরবন্থা রোধ করিবার জক্ত চীনা ক্র্যানিষ্টপ্র বে 'পরীক্ষা' আরম্ভ করে তাহা বার্থ ত হইরাছেই, বরং অনেক কেত্রে ছরবস্থাকে আরও বাড়াইয়া তুলিয়াছে।

হংৰংএর জনৈক দলত্যাগী বিশিষ্ট চীনা ক্য়ানিষ্টের কথার প্রকাশ যে লেনিনের 'প্রাম সংগঠনের' মতবাদ অনুসরণ করিবার প্রতিশ্রুতি দিয়া মাও-দে-ডুং চীনের অধিবাসীদের সমর্থন লাভ করিয়াছেন। ঐ मठवान कृषकरमत्र दूःश्वर्कना अभनः पूत्र क्षिवात्र छेशत स्मात्र मित्रा থাকে। প্রকাশ ই্যালিনের কথার মাও সে প্রতিশ্রুতি উডাইরা দিয়া উহার পরিবর্ত্তে লেনিনের অপর মতবাদ 'সহর সংগঠনের' নীতি গ্রহণ করেন। উহাতে মাতৃভূমি রকার জগু শিল্পসমূদ্ধ সহরগুলিকে নামরিক উদ্দেশ্যে স্থাংহত করিবার উপর জোর দেওরা হইয়া থাকে। —সার্থি

বৰ্দ্ধমান জেলার জলনমহল সার্কেল পঞ্চাশটী প্রাম লইরা পঠিত। क्लाइ मध्य हेश अञ्चलम दृहद मार्कन। किन्न এ अक्ल कान ইউনিয়ন বোর্ড না থাকার আমবাসীরা সকল প্রকার স্থবোগ স্থবিধা হইতে বঞ্চিত হইতেছে। জেলার মধ্যে একমাত্র এই সার্কেলেই কোন ইউনিয়ন বোর্ড নাই। বুটাশ শাসনের আমল হইতে এই ব্যবস্থা চলিরা আসিতেছে। সংবাদে জানা যার, উক্ত অঞ্চলের অধিবাসীরা এ সম্পর্কে উচ্চত্য সরকারী কর্তুপক্ষের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াও এখন পৰ্যান্ত কোন কল পান নাই। উক্ত অঞ্লে ইউনিয়ন বোর্ড না ধাঞ্চার রাতা কনখাত্ব্য প্রভৃতি অবহেলিত হইতেছে।

ভারত গবর্ণমেন্ট দক্ষিণ আফ্রিকার ব্যাপারে আর একটি গুরুত্বপূর্ণ সিদ্ধান্ত গ্রহণ করিয়াছেন। সিদ্ধান্তটির মূল কথা এই বে, ভারত গবর্ণমেন্ট আর দক্ষিণ আফ্রিকা সংক্রান্ত গোলটেবিল বৈঠকে বোগ দিতে ইচ্ছা করেন না। দৃশুতঃ ইহা ভারত গবর্ণমেন্টের অন্দিছা মাত্র; কিন্তু করেন না। দৃশুতঃ ইহা ভারত গবর্ণমেন্টের অন্দিছা মাত্র; কিন্তু কার্যতঃ ইহা ভার প্রতিবাদ। ভারতের বর্তমান গবর্ণমেন্ট একান্তভাবেই শান্তিপ্রয়াসী এবং উদার পররাষ্ট্রনীতির সমর্থক। পৃথিবীর সমন্ত পর্রাট্রের সহিত সতত মৈত্রীস্ত্রে আবদ্ধ থাকিতে পারিলেই তাহারা সন্তই হন। তথাপি দক্ষিণ আফ্রিকার ব্যাপারে মালান গবর্ণমেন্টের সঙ্গে ভারতের কোন বোঝাপড়া কেন সন্তব হর নাই এবং ইইতেছে না, তাহা যেমন নিরপেক্ষ বিচার-বিবেচনা তেমনি গভীর উপলব্ধির বিষয়।

—আনন্দবাজার পত্রিকা

পশ্চিমবঙ্গে শিক্ষিত ও বৃদ্ধিজীবী বেকার কর্মপ্রার্থীর সংখ্যা ভারতের সব প্রদেশ ও রাজ্যের তুলনার সবচেরে বেশী। বিরাটসংখ্যক বেকার বৃদ্ধিজীবীর বেকারসমস্তাই পশ্চিমবঙ্গের বিশেষ সমস্তা। পশ্চিমবঙ্গের বিশ্বে-পীড়িত শিক্ষিত অথচ বিত্তহীন সমাজ জীবিকার অভাবে যে সমস্তার পড়িরাছে, তাহা বস্তুত: বাঙালীর সমর্ম সংস্কৃতির অর্ম্রগতির বিরুদ্ধে প্রতিবন্ধক হইরা উঠিয়াছে। পশ্চিমবঙ্গের কর্মসংস্থান পরিবদ শিক্ষিতের বেকার সমস্তা সমাধানে কি প্রয়াস করিরাছেন, তাহা আমরা জানি না। তবে সমুহজাবে যে বার্থ ইইয়াছেন, তাহা আঞ্চলিক কর্মসংস্থান পরিচালকের একটি মন্তব্যের দারা প্রমাণিত হয়। "একমাত্র এপ্রেল মানে ১২৪৫৬ জন কেরাণিগিরির কাজের জক্ত আবেদনকারীর মধ্যে মাত্র বিশক্ষনক কার্ম দিতে পারা গিরাছে।"

পূর্ববন্ধ সকর হইতে কলিকাতার প্রত্যাগত ভারতের সাইনরিটি মন্ত্রী
শ্রীবৃত চালচন্দ্র বিবাদের বিবৃতি পশ্চিমবলের সকলেই বিশেষ আগ্রহের
সহিত পাঠ করিবেন। এই আগ্রহ প্রধানতঃ পূর্ববঙ্গর বর্তমান অবস্থা
জানিবার আগ্রহ হাড়া আর কিছুই নহে। নেহল-লিয়াকৎ চুক্তির পর
দুই মাস অতীত হইরাছে। এই ছই মাস চুক্তির কলাকল পশ্চিমবলে কি
দাঁড়াইরাছে, তাহা এই রাজ্যে অবস্থানকারী মাত্রই প্রত্যক্ষ করিরাছেন।
কিন্তু পূর্ববঙ্গ কি হইরাছে এবং ইইতেছে, তাহার সংবাদ পূর্বের জার
বিভ্তভাবে প্রকাশিত হইতেছে না বলিয়াই তথাকার প্রকৃত অবস্থা জানিবার ও উপলব্ধি করিবার আগ্রহ এবং কৌতুহল এখন প্রবল হইরাছে।
মাইনরিটি মন্ত্রী শ্রীপুত বিশাস সেই কৌতুহল চরিতার্থ করার চেষ্টা
করিয়াছেন বটে; তবে বিবৃতির প্রার প্রথম হইতে শেব পর্যন্ত তিনি
পূর্ববন্ধ ও পশ্চিমবঙ্গে তালগোল পাকাইরা এমনভাবে কথা বলিয়াছেন,
ঘাহাতে তাহার মভামত উভর বন্ধ সম্বন্ধে বলিয়া ক্রম হয়। পূর্ববন্ধ
সম্পর্কে পৃথক্ ও পরিছার করিয়া কোন অভিমত ভারতের মাইনরিটি
মন্ত্রী এই বিবৃতিতে বেন প্রকাশ করিতে চাহেন নাই।

—আনন্দবাকার পত্রিকা

जुना-वारमामी এবং मिन-मानिकामत्र धारन जात्नानन अवः हिन्नहोहेन উপদেষ্টা কমিটির স্থপারিশে, তুলার মূল্য প্রতি 'কাস্তি' (৭৮৪ পাউও) দেড় শত টাকা বৃদ্ধি করিতে কেন্দ্রীয় সরকার সম্মতি দান করিরাছেন। কেন্দ্রীয় সরকারের মুখপাত্র বলিতেছেন, তুলার মূল্যবৃদ্ধির ফলে আগামী ৬ মাসকাল কাপড়ের মূল্য কোনোপ্রকার বৃদ্ধি পাইবে না। তাহার পরে শতকর। ১০।১১, টাকা মাত্র বৃদ্ধি পাইবে। তুলার মূল্য বৃদ্ধির অর্থ-নৈতিক এবং অস্তান্ত গৃঢ় কারণের আলোচনা করিয়া লাভ নাই। কারণ সংবাদপত্তে এই সকল আলোচনার মূল্য সরকারী মহলে প্রায় শৃষ্ট বলিলেও চলে। কিন্তু এই প্রদক্ষে সরকারকে একটা কথা পরম শ্রন্থা এবং বিনয়ের সহিত স্মরণ করাইয়া দেওরা কর্ত্তব্য বলিয়া মনে করি। যুদ্ধ-উত্তর কালে, গত তিন বৎসর কংগ্রেস সরকার শাসন ক্ষমতা হাতে লইয়াছেন, এই দীর্ঘকালে তাহারা আজ পর্যান্ত অত্যাবশুকীয় থাত এবং পরিধেয় কোনো এব্যের মূল্য কমাইতে পারেন নাই। বল্পের মূল্য গভ ছই মাদ বেশ কিছু বৃদ্ধি পাইয়াছে, তুলার মূল্য বৃদ্ধির কারণে আরো বৃদ্ধি পাইবে। বস্ত্র যে ক্রমশঃ জনগণের সাধ্যের বাহিরে যাইতেছে, এ-সংবাদ वाथाव पाविष वा कर्खवा त्वाध रुप्र काशात्वा नारे। वावमात्री এवः मिन-মালিকদের অতি-লাভের পরিমাণ কমাইবার সাহস কাহারো নাই। সর্বপ্রকার চাপ এবং মূল্যবৃদ্ধির শুরুভার জনগণের তুর্বল ক্ষলে আর কতকাল সহু হইবে বলা শক্ত। বল্প-ব্যবসায়ে বর্ত্তমানে লাভের পরিমাণ বেমন, তাহাতে বন্ত্ৰ-মূল্য আরো বৃদ্ধি করিবার কোনো বৃক্তিযুক্ত কারণ নাই। কিন্তু উপায় কি, শিশুরাষ্ট্রের কল্যাণে ঝুনো ব্যবসায়ী এবং मिल-मालिकापत्र पारी व्यवश्रह श्रीकात्र कप्रिएठ इट्टा ।

—দৈনিক বন্নসতী

উত্তরে হিমালয়ের পাদদেশ এবং পূর্বে ব্রহ্ম সীমাস্ত যেমন সামরিক প্রশ্নে গুরুতর, তেমনই যোগাযোগ, রাস্তাঘাট, সংবাদ আদান-প্রদান ইত্যাদির দিক হইতে পশ্চিমবঙ্গের সহিত ইহা অচ্ছেন্ত। ইহার মার্ব-থানে রহিল পূর্ব পাকিস্থান, রণ-নীতির ভাষার যাহাকে একটি কীলক বলা ষাইতে পারে। আসামবাসীদের নিশ্চরই শ্বরণ আছে বে, মিঃ জিলা ও মুদলিম গীগ দীর্ঘকাল বাবৎ আদামের এই অভিনব ভৌগোলিক অবস্থানের জন্ত উহাকে পাকিস্থানের কুকীগত করিবার জন্ত প্রবল আন্দোলন চালাইয়াছিলেন এবং সেই আন্দোলন ব্যর্থ হইবার মূল কারণ বালালী হিন্দুর বিরোধিতা। মুসলিম লীগের মন হইতে আসামের বিক্লছে দুরভিদক্ষির অবসান হইয়াছে একখা মনে করিবার কোন বৃজি-সক্ত কারণ নাই। কেবল পাকিস্থান হইতেই আরামের বিপদ সভাবনা নর, দক্ষিণ-পূর্ব এশিরার কমিউনিষ্ট আন্দোলনের সঙ্গেও আসামের ভাগা জড়িত। ব্রহ্মদেশ, আসাম ও পূর্ববঙ্গ সম্ভবতঃ কোনও কমিউনিষ্ট পরি-কলনার অন্তর্গত এবং ইহার সামরিক দিকটা স্পষ্ট হইরা উটিরাছিল ১৯৪২-৪৩এর আপানী যুদ্ধের সময়—বধন পশ্চিমবঙ্গ ও কলিকাতা ছিল আসামকে রক্ষা করিবার মূল সরবরাহ কেন্দ্র ও সামরিক বাঁটি। এই সমস্ত তথ্য আমরা উল্লেখ করিলাম একস্ত বে, পশ্চিমবঙ্গ ও আসামকে পরশারের হাত ধরাধরি করিরা চলিতে হইবে—বিরোধের পথ উভরের পক্ষে আত্মহত্যার পথ মাত্র। ডাঃ শুসামপ্রসাদের আসাম পরিভ্রমণ, আশা করি আমাদের প্রতিবেশী রাজ্যকে অধিকতর বন্ধুতা ও সহযোগিতার পথে আনরম করিবে।

পানাগড় মিলিটারী বেদের দির্মন্ট কুঞ্জন্মপুর বা কুলুপুকুর গ্রামে দুর্ভগণ কর্তৃ ক অগ্নি সংখোগের কলে প্রার দুই শত গৃহ ভঙ্মীভূত হইরাছে। করেক সহস্র মণ ধাস্ত ও বহু কাহন খড়ও পুড়িরাছে। আটজনের প্রাণহানি ঘটিয়াছে, ইহাদের মধ্যে পাঁচজন নারীও আছে। কিছুদিন পুর্বেষ মাড়ো গ্রামে অসুরূপ ঘটনা ঘটিয়াছে। গ্রামবাদীগণের ধারণা মিলিটারী বেদের সংশ্লিপ্ত ব্যক্তিগণ ইহার সহিত জড়িত আছে। ক্রেক বৎসর পূর্বেষ মিলিটারী বেদের লোকগণ কুলুপুকুর আক্রমণ করিয়া আগ্রি সংযোগ করিয়াছিল এবং দুর্ভগণ দল বা আদালত কর্তৃক দণ্ডিত হইয়াছিল। মিলিটারী বেদটি ঐ অঞ্চলের আতক্ষের কারণ হইয়াছে। এই অঞ্চলে নিয়াপতা রক্ষার জল্প বিশেষ ব্যবস্থা অবলম্বন করা আবশ্রুক। আমরা কর্তৃপিক্ষের দৃষ্টি আকর্বণ করিতেছি।

—বর্জমানের করা।

বিহার প্রাদেশিক সরকার শিক্ষা প্রসারের জস্ত নৃতন নৃতন পরিকলনা গ্রহণ করিতেছেন। শিক্ষা প্রসারের জস্ত, বিশেব করিয়া বিহারের মাতৃভাষা সকলের ক্লঠে জুড়িয়া দিবার জস্ত প্রচার কার্য চালাইতেছেন। জানা গেছে ১৯৫৭ সাল 'হইতে পাটনা বিশ্ববিভালয়ে পরীক্ষার মাধ্যম হইবে বিহারের মাতৃভাষা।

সম্প্রতি মানভূম কেলা বন্ধ সাহিত্য সম্মেলনের ক্রয়োদশ বার্ষিক অধিবেশনে এই মর্মে প্রতিবাদ করিয়া একটি প্রস্তাব গৃহীত হয়। প্রস্তাবে বলা হয় যে মানভূম ক্রেলাবাসীর মাতৃভাবা বাংলা ভাবাকে হীন প্রচেষ্টার দারা উচ্ছেদ ও বাংলা সাহিত্য ও সংস্কৃতি বিনষ্টের বে প্রচেষ্টার দারা উচ্ছেদ ও বাংলা সাহিত্য ও সংস্কৃতি বিনষ্টের বে প্রচেষ্টার জ্ঞারভাবে গত করেক বৎসর যাবৎ এই জিলার চলিতেছে, অবিলবে প্রজাতন্ত্রী ভারতের প্রথম প্রেনিডেন্ট ও ভারত সরকারের নিকট ইহাই প্রতিবিধান ও প্রতিকার করার দাবী জানাইতেছি।

—দৈনিক

বোদাই গভর্গনেণ্ট প্রদেশের কৃষি শিক্ষা ব্যবস্থার আযুল পরিবর্তনের ব্যবস্থা করিতেছেন। প্রত্যেক কেলার অস্তু একটি করির। কৃষি বিভালর স্থাপন করিরা যাহাতে প্রতি বৎসর অস্তত: ১ হাজার ছাত্র নৃতন বিজ্ঞানসম্মত প্রণালীতে কৃষি শিক্ষা পাইরা বাহির হুইতে পারে ইহাই তাঁহাদের লক্ষ্য। বর্ত্তমানে এই প্রদেশে মাত্র ৩টি কৃষি ক্লেজ ও ১৪টি কৃষি ক্লেজ আছে। নৃতন শিক্ষা ব্যবস্থার শিক্ষালাল হুই বৎসর হুইবে এবং যাহাতে ছাত্রেরা নিজেরা স্বাধীনভাবে নিজেদের কৃষি প্রতিষ্ঠান স্থাপন করিতে পারে সেইভাবে তাহাদের শিক্ষা দেওরা হুইবে।

—শিক্ষক

সকলকে স্থিরচিত্তে ও ধৈর্যা সহকারে ভাবিরা দেপিতে বলি, স্বাধীনতা লাভের পর সকল প্রকার স্থপ শান্তি পাইতে হইলে সত্যই কি আমাদের জনসাধারণের কিছুমাত্র দায়িত্ব বা কর্ত্তব্য নাই ? কেছ যদি এক বিঘা জমি লাভ করেন, বা একটা গাভী লাভ করেন, তবে সেইদিন হইতেই সেই জমিণানি আবাদ করিবার, তাহাতে সার দিরা ভাল বীজ বপন করিবার, ফ্সল উৎপন্ন করিবার ও সেই জমির কর আদায় দিবার দায়িত্ব ও কর্ত্তব্য তাহার বাড়ে আসিয়া পড়ে এবং সেই গাভীকে প্রতিদিন ভালভাবে খাওয়াইবার, ভালভাবে রাধিবার, লান করাইবার, তাহার গোয়াল প্রস্তুত করিবার ও তাহা প্রতাহ পরিষ্ণার করিবার দায়িত্ব ও কর্ত্তব্য তাহার খাড়ে আসিয়া পড়ে। এই কর্ত্তব্য ও দায়িত্বগুলি যদি তিনি পালন না করেন তবে তিনি সেই জমির ফদল পাইবার বা গাভীর হুগ্ধ পাইবার আশা করিতে পারেন ना, वतः अञ्चित्तिर मिर्ट समि वाकी करत्रत्र नात्त्र नीलाम रहेवात्र এবং গাভীটী পাতাভাবে মারা যাওয়ার ষণেষ্ট সম্ভাবনা হয়। কিন্তু এতবড় মহামূল্যবান্ ভাৰতবৰ্ষের স্বাধীনতা লাভ করিয়া আমরা সকলে যদি মনে করি যে আমাদের কিছুমাত্র দারিছ বা কর্ত্তব্য নাই, কেবলমাত্র কংগ্রেস গভর্ণমেণ্টের উপরই দায়িত্ব আসিরাছে, অতএব আসরা সকলে নিশ্চিন্তভাবেই নাকে সরিবার তেল দিয়া খুমাই, তাহা হইলে আমাদের হুখ শাস্তি ত কোনও দিন আসিবে না, বা হু:খ দারিজ্ঞা ও অভাব কোনও দিন ঘূচিবে না, বরং এই স্বাধীনতা রক্ষা করাই সম্ভব হইবে না।

—সভ্যাগ্ৰহ পত্ৰিকা



রেয়ন

(नक्ल (उभम)

শ্রীসন্তোবকুমার রায়চৌধুরী

ভারতবর্বে রেরন বা নকল রেশম শিল্প সম্বন্ধে সামান্ত কিছু গবেষণা চলিলেও প্রকৃত প্রস্তাবে নকল রেশম তৈয়ারীর ব্যবস্থা আরু পর্যান্ত এদেশে इत्र मार्ट अकवा निःमान्यहर वना हतन, अवह विकीत्र महावृद्धत शूर्व्य छ প্রথমদিকে বিখের রেয়ন উৎপাদনকারী দেশগুলি ছাড়া অভাগ্ত দেশগুলির মধ্যে ভারতবর্ধ দব চাইতে বেশী রেয়ন ব্যবহারকারী দেশ ৰলিয়া পরিগণিত হইত। ১৯৪০ সালে ভারতে রেয়ন আমদানী इय नव हाईएंड विनी। ये वरनव अप्रान व्यवन आमानी इव লক পাইও। "ইঙাষ্ট্রীয়াল ফাইবার" নামক हामित्रकीत ১৯৪৮ नाला मः ऋतर्ग प्रचा यात्र (य, ১৯৪১ नाल प्रयास ভারতে রেয়নের আমদানী ছিল অব্যাহত কিন্তু ১৯৪২ সালে ঐ আমদানীর পরিমাণ হঠাৎ কমিরা যার চারিদিককার ব্যবসা বাশিক্ষার विमुद्दानात अन्छ। ১৯৩৮ সাল इट्रेड ১৯৪७ সালের মধ্যে अध्य ठाति ब्दमद्र खर्थाद ১৯৩৮, ১৯৩৯, ১৯৪० ও ১৯৪১ সালে यथोज्ञास अम्म (बद्धामत आप्रमानी इत्र यशोक्ताप seo नक. २७० नक. ७८० नक ७ ২৩৮ লক্ষ পাউও। ১৯৪২ সালে এ আমদানীর পরিমাণ কমিয়া দাঁড়ার মাত্র » লক্ষ পাউও, অর্থাৎ পূর্ব্বের চারিটি বংসরের তুলনার মাত্র শতকরা ৩ হইতে ৫ ভাগ। ১৯৪২ সালের তুলনার ১৯৪**০** সালে রেরন আমদানীর পরিমাণ আরো কমিয়া দাঁড়ার মাত্র ১ লক্ষ পাউত্তে। তাহার পর হইতে অবশু ঐ আমদানীর পরিমাণ বাড়িতে আরম্ভ कतिवारह। ১৯৪৪, ১৯৪৫ ও ১৯৪৬ সালে রেরন আমদানীর পরিমাণ হর ব্রাক্রমে ৮ লক্ষ, ১৬ লক্ষ ও ৩১ লক্ষ পাউও। (১) ১৯৪৮-৪৯ সালে এই আমদানীর পরিমাণ বাড়িয়া দাঁড়াইয়াছে ভিন কোট নিরানবর ই লক পাউতে, যাহার মূল্য হইতেছে ১২ কোটী ৮২ লক টাকা।

শেষাক্ত বৎসরের আমদানীর হিনাব হইতে একথা নি:সন্দেহে
বলা বার বে, বৃদ্ধ পূর্বকালের চাইতেও আপাততঃ এদেশে রেরনের
ব্যবহার বৃদ্ধি পাইরাছে এবং তুলা বা রেশম-জাত বল্লের মূল্য না
কমিলে রেরনের ব্যবহার আরও বহুগুণ বৃদ্ধি পাইবে। কারণ তুলা
বা রেশম হুইতেছে ঐকৃতির স্টু। আবহাওরা, ভূমি, পারিপার্ষিকতা
ও অফুকুল পরিবেট্টনী ব্যতিরেকে উহাদের উৎপাদন সত্তব নর।
তাহাড়া উহাদের উৎপাদনও কডকটা সীমাবদ্ধ বলা চলিতে পারে।
কিন্ত রেরনের ক্ষেত্রে ঐ কথা প্রবোজ্য লহে। কারণ উহা সম্পূর্ণভাবে
মাফুবের স্টু—মাফুবের বৈজ্ঞানিক কৌতুহলের উহা একটি চরম
অভিব্যক্তি, স্থতরাং প্রয়োজনের অফুপাতে উহার উৎপাদন বৃদ্ধি,

মূল্যের সমতা রক্ষা করা মামুষের নিজের স্পৃত্তির মধ্যেই জাবর্ষ্ঠিত হইবে। ফলে স্থান্ত ভবিষ্ঠতে হরতো এমন একদিন জাসিতে পারে যথন এই রেয়ন বা নকল রেশমের মূল্য, গুণাগুণ বা প্রচারের দিক হইতেই বর্ত্তমান ভব্তশিল্পকে অনেক পশ্চাতে কেলিয়া ঘাইবে।

১৯৪১ সালে সমগ্র পৃথিবীতে রেয়নের উৎপাৰন সব চাইতে বৃদ্ধি পাইয়াছিল। ঐ বৎসর উৎপন্ন রেয়নের মোট পরিমাণ ছিল ১২৫ কোটী ৯ লক্ষ পাউও। কিন্তু ঐ সালের পর হইতেই রেয়নের উৎপাদন কমিতে থাকে এবং ১৯৪৫ সালে উৎপন্ন হর মাত্র ৯০ কোটী পাউত্তের मछ। व्यवश वे कम छेरशामरनत्र मूर्ल हिल कार्मान, काशान । इंट्रोनित রেয়ন উৎপাদনে ঘাটতি। কারণ ১৯০৮ সাল বা তৎপূর্ব্ব ও পরবর্তী কয়েকটা বংসরে উপরোক্ত তিনটা দেশে মোট উৎপন্ন রেরনের পরিমাণ ছিল সমগ্র পৃথিবীর উৎপাদনের শতকরা ৬৭ ভাগ। ১৯৩৯ मार्ग कां भारत स्वयन छेर भारत्य भविष्यं विश्वास किल वर्मात २० কোটী ৮৫ লক্ষ পাউও, যুদ্ধ শেব হওরার সঙ্গে সঙ্গে ১৯৪৫ সালে এ উৎপাদন কমিয়া হর মাত্র ৩৮ লক্ষ পাউও। তাহার পর ১৯৪৬ সালে এ উৎপাদন পূর্বে বৎসরের তুলনায় ৫২ লক্ষ পাউও বৃদ্ধি পাইলেও বৃদ্ধ-পূর্বে সময়ের তুলনার যে অপ্রত্যাশিতভাবে কম একখা অবভ बीकार्ग। बार्मान ७ हें जिनीत १८क्छ (महे अकहे कथा वना जल। ১৯৩৯ সালে যথাক্রমে আর্মান ও ইটালীতে রেরন উৎপন্ন হইয়াছিল ১৬ কোটী ৯৯ লক ও ১১ কোটী ৬৩ লক পাউও। আর ১৯৪৬ সালে সেইখানে উৎপন্ন হর যথাক্রমে ১ কোটা ৮৩ লক্ষ ও সাড়ে ছর কোটা পাউও। উপরোক্ত তিনটা দেশের শিল্পসমূহে যুদ্ধ-পরবর্তী যুগে যে কি ভাবে ভারন ধরিয়াছে ইহা ভাহারই একটা অক্তম এধান দুষ্টান্ত মাত্র।

পূর্বেই বলিয়াছি ১৯৪১ সালে পৃথিবীতে রেয়নের উৎপাদন বৃথি
পাইয়াছিল সব চাইতে বেলী। নিম্নে দশ বৎসরের যে ছকটি দেওয়
হইল ডাইা হইতেই প্রত্যেকেই ইহার সভ্যক্তা উপলব্ধি করিতে পারিবেন।
পৃথিবীর রেয়ন উৎপাদন। (২)

(কোটা পাউও)

বৎসর	উৎপদ্ধ বেরন	বৎসর	উৎপন্ন রেরন
>>09	24	>>84	229.7
790A	>**.>	2>8 ◆	P.866
79.67	>>6.2	3388	3.6.4
>846	22A.5	3386	A. 4.
1987	256.9	***	22

⁽³⁾ Industrial Fibre 1948.

⁽R) Industrial Fibre 1948.

উপরোক্ত ছকটাতে দেখা বার বে. ১৯৪৫ সালে উৎপাদন অভাত্ত বাহত হইলেও ১৯৪৬ সালে বেরন উৎপাদনকারী দেশসমূহ উৎপাদন বৃদ্ধির জন্ত কিছুটা প্রয়াস পাইয়াছিল। অবশ্য এই উৎপাদনের মূলে আছে আমেরিকা বুক্তসাম্রাজ্য ও গ্রেট-ব্রিটেনের শিল্প প্রচেষ্টা। বন্ধ-পূৰ্বকালে অভতম প্ৰধান বেমন-উৎপাদনকারী দেশ বলিলে বুৱাইত জার্মান, জাপান ও ইটালি : কিন্তু বর্ত্তমানে বোঝায়-জামেরিকা বুক্ত-সামাজা ও প্রেট-ব্রিটেনকে। তাহাদের এই প্রচেষ্টা সভাই প্রশংসনীর। ১৯৪৬ সালে পুৰিবীতে যে গোট ১১০ কোটী পাউও রেয়ন উৎপর হইয়াছিল তাহার মধ্যে ৬৭ কোটী ৭৫ পাউও উৎপন্ন হইয়াছিল আমেরিকা যুক্তসাম্রাজ্যে। ঐ বৎসর রেয়ন উৎপাদনে বিভীয় স্থান অধিকার করিয়াছিল গ্রেট ব্রিটেন। তাহাদের উৎপাদনের পরিমাণ ছিল ১১ কোটী পাউও। ইহাদের পরই উৎপাদনৈর দিক হইতে নাম করা চলে ফ্রান্স ও ইটালীর। ঐ বৎসর ইহাদের রেয়ন উৎপাদনের পরিমাণ ছিল যথাক্রমে ৬ কোটা ৮১ লক্ষ ও ৬ কোটা ৫০ লক্ষ পাউও। বেজিল, ক্যানাডা, জার্মানী, নেদারল্যাও, বেলজিয়ম ও স্পেনের উৎপাদন ছিল यथा करम २०२ लक. २०० लक, ১৮० लक, ১৮० लक, ১৭৫ লক্ষ ও ১৬০ লক্ষ পাইও। আর কিছ কম বেশী এক কোটী পাটও রেয়ন উৎপন্ন হইয়াছিল স্থইবারলাতে, আর্জেটিনা ও জাপানে এবং বাকী ৭ কোটী পাউণ্ডের মত রেয়ন উৎপন্ন হইয়াছিল অক্যাপ্ত प्पत्न । छात्रजंबर्स द्वयन अहकवादाङ छेरश्र हव नाहे, अथह ये वरमत রেয়ন আমদানী হইরাছিল ৩১ লক্ষ পাউও।

বর্জমানে এই রেয়ন বা নকল রেশম শিলের ক্রুন্ত বিস্তার ঘটিভেছে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে। অধুনাতম বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ার ইহার উৎপাদন বৃদ্ধি করার চেষ্টা হইভেছে এবং সেই সলে চেষ্টা হইভেছে ইহাকে অধিকতর প্রারোজনীয় করিয়া তোলার ও সহজ লভ্য করার। বৈজ্ঞানিকগণ অনেকাংশে সফলও হইয়াছেন এবং আশা করা যার যে ভাগারা আরও সফলকাম হইবেন। দামে সন্তা হইলে এবং স্থারিছেও মহুণ্ডার রেশমের সমতুল্য বা অধিকতর উপযোগী হইলে রেয়নের প্রচার বৃদ্ধি পাইবে সভ্য। কিন্তু ভারতে এই শিল্পের প্রচলন ও প্রদার না হইলে আমাদের কোন বার্থেই লাগিবে না, বর্থ আমদানীকৃত রেয়নের প্রাচ্থ্যে জাতীয় স্বার্থই বিপার হইবে।

রেরন উৎপাদনের এখান উপকরণ হইতেছে 'সেলুলোজ' (Cellulose)। আর 'সেলুলোজ' পাওরা যার তুলা ও কাঠ হইতে। ঐ হইটি উপকরণেরই এদেশে অভাব নাই, অভাব আছে শুধু চেট্টার। কাজেই আজিকার দিনে একখা মনে করা অনঙ্গত হইবে না বে, অনুর ভবিশ্বতে ভারতবর্ধও অক্ততম প্রধান রেরন উৎপাদনকারী অঞ্চল বলিরা পরিগণিত চইতে পারে।

'নেল্লোজ' তৈরারীর ক্ষম্ম সাধারণতঃ পরিত্যক্ত ত্তা ও ছোট আঁশের অপেকাকৃত অব্যবহার্য তুলা ব্যবহার করা হয়। তবে কাঠ হইতে সংগৃহীত 'নেশ্লোজ' অপেকাকৃত সন্তা দরের হয়, দেইজন্ত কাঁচা মাল হিসাবে ইহার প্রয়োজনীয়তা অনেকথানি কেনী। "এই কার্ব্যে ব্যবস্থাত তুলাকে প্রথমেই তেল, চর্বির, যোম ও অভান্ত রও স্টেকারী পরার্থ
হইতে মুক্ত করা হয়। পরে পরিশোধিত অব্যক্তলিকে ওক করিয়া
গ্রহণযোগ্য হইলে রনারনের সাহায্যে 'লেই' বা 'মঙ'এ (Pulp)
পরিণত করা হয় ও পরে পিচবোর্ডের মত পাত তৈরার করা হয়
পরবর্ত্তী কাজের হ্বিধার জন্ত (৪)। কাঠ হইতে 'সেলুলোজ'
গ্রহণ করিবার পদ্ধতি একটু অভা ধরণের। "বাছাই করা কাঠ
(সাধারণতঃ কার, হেমলক্ প্রভৃতি কাঠ) লইরা বিভিন্ন প্রক্রিকার ও
রসায়নের সাহায্যে সেলুলোজ পৃথকীকরণ করা হয় ও পরে একপ্রকার
'লেই' (Bleached Sulphite wood pulp) বাজারে ছাড়া হয়।"
(৫) ইহার পরও বছবিধ বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ার ও রসায়নের সাহায্যে
গ্র লেইকে পরিণত করা হয় একপ্রকার হক্ষ তত্ততে। ঐ তত্ত্ব হইতে
হয় সূতা।

বর্ত্তমানে প্রধানতঃ চারিটি প্রক্রিয়ার রেরন উৎপাদিত হইরা থাকে, চারিটি প্রক্রিয়ার মধ্যে প্রথমে আবিক্বত হয় 'নাইট্রো সেল্লোক' (Nitro cellulose) পদ্ধতি। তাহার পর আবিক্বত হয় যথাক্রমে 'কাপ্রামোনিয়াম' (Cuprammonium), 'ভিসকোন্' (Viscose) ও 'এ্যামোটিট' (acetate) পদ্ধতি, এই সমন্ত পদ্ধতি আবিক্বত হওয়ার মূলে আছে যে ইতিহাস, তাহা যেমনই চমকপ্রদ, তেমনি ঘটনাবছল। এই ক্ষুম্ম প্রবদ্ধে সেই ইতিহাস আলোচনা করা সম্ভব নয় তাই মি: ই, ছইলার প্রণীত 'মামুফ্যাকচার অব আটিন্ধিসিয়াল সিদ্ধ' নামক প্রত্ক হইতে সংগৃহীত সামান্ত ইতিহাস নিম্নের ছফ্র ক্রমটাতে দিলাম।

একখা অবশ্য প্রত্যেকেই জানেন যে অকুত্রিম রেশম বলিতে বাহা বুঝার তাহা হইতেছে গুটাপোকার ওজ লালা মাত। কীট বিশেষের মুখনিস্ত লালা শুক হইরা সৃষ্টি করে ভদ্ধর : সেই ভদ্ধ হইতে সৃষ্টি হর রেশমের। মাসুবের মনে প্রাকৃতির এই স্বাষ্ট-বৈচিত্রাই এনে দের নকল রেশম বা রেয়নের সন্ধান। কলে প্রকৃতির সৃষ্টি বৈচিত্রোর মতই বিচিত্র ও রোমাঞ্চকর হরে উঠে মাতুবের হাই রেশম বর্ণ-উজ্বলা ও স্থায়িত্ব। ১৬৬৫ সালে ছকস্ (Hookes) তাঁহার 'মাইক্রোগ্রাফিরা' (Micrographia) নামক আছে এই রেরন প্রস্তৃতির আভাব দেন। ভারপর মি: রেমার (Mr. Reaumar) শুটি পোকা সম্বার আলোচনা প্রসঙ্গে নকল রেশম প্রস্তুতির সম্ভাবনার কথার উল্লেখ करतन। अभन कि ১९९० नाल कतानी (मानत मि: जुरत (Dubet) করেকটা মৃত শুটাপোকার দেহ হইতে সংগৃহীত আঠাল পদার্থ হইতে তত্ত প্রস্তুত করিতে সমর্ব হন। অবশেবে ১৮৫৫ সালে বিলাভের অন্দেমার (Andemars) নামক এক ব্যক্তি নাইটোমেলুলোজ ভৈরারীর পদ্ধতি পেটেন্ট করির। লন। ১৮৮৩ সাল বা ঐ কাছাকাছি ममात्र व्यानक्टे नाहेत्री मिनुलाय नहेत्रा कांक व्यात्र कांत्रन।

^{(8) &#}x27;S (e) The Manufacture of artificial silk by E. Wheeler

এবং কাউণ্ট এইচ, ডি কাড্রানেট (Count H. De Chadrannet)
১৮৮৯ সালে প্যারিসের প্রদর্শনীন্তে নকল রেশম ও নকল রেশমের বোনা
বস্ত্র প্রদর্শন করেন। সেই হইতে 'নাইট্রো সেলুলোক্র' পদ্ধতি কাড্রানেট
পদ্ধতি নামেও প্রচলিত আছে। এই পদ্ধতিতে সাধারণতঃ স্ইজারল্যাও,
ক্রাক্র ও ক্রান্থানীতে নকল রেশম তৈরারী হয়।

১৮১০ সালে এই পদ্ধতি কিছুটা পরিবর্তিত হইয়া 'কাপ্রামোনিয়াম' পদ্ধতি নামে প্রচলিত হয় এবং তখন হইতেই প্রকৃত প্রস্তাবে ব্যবসারের লক্ত নকল রেশম বা রেয়ন তৈরারী হইতে থাকে। ১৮৯১ সালে কিন্তু এই নবাবিকৃত পদ্ধতিও পরিবর্তিত হইয়া বায়। কতিপয় ব্যক্তি সেলুলোল লইয়া কাল করিতে করিতে 'কার্কান বাই সালফেট' (Carbon bishalphite) সহবোগে সহসা এক অভূত পদ্ধা আবিকার করেন এবং প্রমাণ করেন যে এই পদ্ধতিই নাকি সব চাইতে সহক্ত পদ্ধতি। কলে ১৯০০ সাল হইতে 'ভিস্কোস্' (Viscose) নামে পদ্ধিতিত এই পদ্ধতিই ব্যাপকভাবে চালু লইয়া বায়। 'এয়াসেটেট' পদ্ধতি অবশু প্রচলিত ইইয়াছিল ১৮৬৯ সালে। কিন্তু এই পদ্ধতি প্রচলিত ছিল অভ্যন্ত সীমাবদ্ধ হানে, আর বিশেব করিয়া লাদ্মিনীতে।

বদিও কাউণ্ট কাড়ানেট ১৮৮৪ সালে প্রথম এই ধরণের সংশ্লেষিত তক্ত শৃষ্টি করেন তবুও ব্যবসারের কাজে এই তক্ত লাগে অনেক পরে। "সন্তা কাঁচামাল হিসাবে মালবেরী (Mulberry) গাছের শাখা ও ভট্টি হইতে সংগৃহীত লেই হইতে মিঃ কাড়ানেট প্রথম সংশ্লেষিত তক্ত শৃষ্টি করেন।" (৬) তাহার পর ১৯২৪ সালের একটী হিসাবে (৭) দেখা বার যে এ সমর সমগ্র পৃথিবীতে রেরনের মধ্যে

(6) (9) The Rayon Industry by Mois H. Avran.

শতকরা ৭৬ ভাগ উৎপর হইড 'ভিস্কোস' পদ্ধতিতে, বাকী ২০ ভাগের
মধ্যে ১৮ ভাগ 'মাইট্রে। দেলুলোক', ৫ ভাগ 'কাপ্রামোনিরাম' আর ১
ভাগ 'এ্যাসেটেট' পদ্ধতিতে উৎপর হয়। ১৯৪৬ সালের অক্ত একটী
হিসাবে (ইণ্ডান্ত্রীরাল ফাইবার ১৯৪৮) দেখা বার বে ঐ সালে
'এ্যাসেটেট' পদ্ধতিতে রেরন উৎপর হইরাছে মোট উৎপর রেরনের
শতকরা ২০ ভাগ, বাকী ৭৭ ভাগ উৎপর হইরাছে অপর তিনটি
ক্রোধার।

এই স্থলে উল্লেখবোগ্য এই যে এই নবাবিষ্কৃত সংশ্লেষিত তম্ভ (Synthetic fibre) বা নকল বেশমের নাম কিছ রেয়ন ছিল না। ">>२४ माल प्रत्मित्रकांत्र वावमात्रीत्मत्र এक मत्त्रमान এই वस्त्रीत्र नाम-করণ করা হয় রেয়ন "(৮) সেই হইতে উহার চালু আছে। বর্তমানে রেয়ন ব্যবহারকারী দেশসমূহের মধ্যে আমেরিকা যুক্তরাজ্যে মাধা পিছু রেয়ন ব্যবহারের গড় পরিমাণ হইতেছে ৫ ম পাউও বৎসরে। স্ইজারলাও, ক্যানাডা ও বেলজিয়নে রেয়ন ব্যবহৃত হয় বৎসরে গড়ে মাথাপিছু যথাক্রমে ৪ ব পাউও, ৩ ৩ পাউও ও ৩ ৩ পাউও। গ্রেট-বুটেন ও ফ্রান্সে ব্যবহৃত হয় মাধাপিছু ২'৪ পাউও করিয়া। ভারতবর্ষের রেয়ন ব্যবহারের পরিমাণ আপাতত: মোটেই উল্লেখযোগ্য নহে। কিন্তু যে পরিমাণে রেয়নের আমদানী প্রতি বৎসর বৃদ্ধি পাইতেছে— তাহাতে অনুর ভবিষ্ততে রেয়ন বাবহারের পরিমাণের দিক হইতে উপরোক্ত দেশগুলির কোন কোন দেশকে ছাড়াইয়া গেলেও তাহাতে বিশ্বিত হইবার কিছুই নাই। কারণ রেয়নের ব্যাপক প্রচারের মূলে আছে ইহার সন্তা দাম ও উজ্ঞল্য এবং সবর্গর উপরে ইহা বেশ টেকসই। এই শুণগুলিই রেরনের প্রচলনের পক্ষে যথেষ্ট।

(v) The Rayon Industry by Mois H. Avran.

বিগত দিনের ভুলের ফসল আজ হোক কাটা শেষ

শ্রীশচীন্দ্রনাথ চট্টোপাধ্যায়

আমাদের যত অস্তার আৰু দানা বাঁধি উঠিয়াছে,
আমাদের ত্যাগ আনিরাছে বহি শুধুই অকল্যাণ।
প্রশ্রের পেরে গুণা খাপদ হিংসার মাতিরাছে;
রান মুখ কেন, এতাে আমাদের পিতামহদের দান!
কর-ক্ষতি-লাভ যত কিছু সাথে লভেছাে অত্যাচার;
তিলে তিলে বারে স্পর্চা দিরেছে আপোয-বিলাসী মন।
প্রতিকার খোঁল কার কাছে গিরে ব্যর্থ ও চিৎকার;
উদ্বাপহীন ক্ষীণ শোণিতে কি জাগিল না কম্পন।

দ্বিত রক্ত সজীব হরেছে, করিয়াছে বিজ্ঞাহ, লোল চর্ম্মের প্রাচীর ভেদিরা চাহিছে নিজ্ঞান ; কৃষিরা রাখিতে চাহ ভার পথ, বৃথাই মোহ, গলিত মাংস গলে জাগিছে কীটের আমন্ত্রণ। বিগত দিনের ভূলের ফদল আজ হোক কাটা শেষ, বন্ধ্যা মাটির অলে জাগুক স্প্রনের শিহরণ। মেদ ও মজ্জার অপচয়টুকু হোক আজ নিঃশেষ; মাটীর ক্ষতির ক্ষত ঢেকে দিক শম্প-আন্তরণ।

প্রাচৌ শক্তি-সজ্যাত

অতুল দত্ত

ভিতীয় মহাবুদ্ধ চলিবার সময়ে সাম্রাজ্যবাদী আভিগুলি ইহা উপলবি করিয়াছিল যে, অতঃপর প্রাচীন সাম্রাজ্যনীতি আর চলিবে না : ওপনিবেশিক দেশগুলিতে যে মুক্তির আকাজ্যা প্রবল হইয়া উঠিয়াছে, তাহাকে বলপ্রক্ষক দমন করা অনন্তব। প্রকাম্পত সাম্রাজ্যনীতির অপ্রনিহিত দৌর্বল্য এই সময় স্বন্দান্ত হইয়া ওঠে। ক্ষিণ-পূর্ব এশিয়ায় একমাত্র কিলিপাইন্ দীপপুল ব্যতীত সর্বত্র আপানীরা প্রথমে মুক্তিদাতা বলিয়াই অভিনন্দিত হইয়াছল। ফিলিপাইন্সের বাটানে জেনারল ম্যাক-অর্থারের প্রভিরোধ-প্রচেষ্টা গণসমর্থন লাভ করে এই কারণে যে, ১৯৪৬ সালে রাজনৈতিক স্বাধীনতা-প্রাত্তর প্রতিশ্রতি ফিলিপিনোরা পূর্বেই পাইয়াছিল। দক্ষিণ-পূর্ব-এশিয়ার অস্তাক্ত দেশে "মুক্তিদাতা" জাপানীদের আচরণে জনসাধারণের ভূল ভাঙ্গিবার সঙ্গের প্রবল্গ প্রতিরোধ আন্দোলন গড়িয়া ওঠে। এই গণ-জান্দোলন পীত সাম্রাজ্যবাদকে স্থ্রতিন্তিত হইতে দেয় নাই; ইহাকে দমন করিয়া প্রাচীন পদ্ধতিতে বেত সাম্রাজ্যবাদের পূন: প্রতিঠা যে অসন্তব, ইহা চতুর সাম্রাজ্যবাদীরা বুরিয়াছিল।

যুদ্ধোত্তর প্রাচ্য-

এই কারণে যুদ্ধের পর দক্ষিণ-পূর্ব্ব এশিয়ার বিভিন্ন দেশের রাজনীতি ংইতে সামাজ্যবাদীদের কারিক অপসরণের এক পরিকল্পনা স্থির হয়। খানীয় পুঁজিপতি স্বার্থের সহিত ও দক্ষিণপন্থী রাজনীতিকদের সহিত আপোৰ করিয়া ঘৰনিকার অন্তরালে সরিয়া যাওয়া এই পরিকল্পনার ম্লকথা। পরিকল্পনা-রচয়িতারা ক্রিয়াছিলেন—ইহাতে আশা माआजावानी वार्व अकृत शांकित्व, अव्यक अनमाशांत्रत्व मत्न এই ধারণার সঞ্চার হইবে যে, বৈদেশিক শক্তির প্রভুত্ব হইতে তাহারা যুক্ত; সর্বোপরি, যে সাম্যবাদী আদর্শ প্রাচ্য অঞ্চলে প্রসার লাভ ক্রিতেছে, তাহার বিরুদ্ধে ছানীয় পুঁজিপতি বার্থের ও দক্ষিণপন্থী নেতৃত্বের সকল শক্তি নিরোজিত হইতে পারিবে। বিভিন্ন সামাজ্যবাদী मिक्ति प्रमृष्टित कम-रानी असूयात्री এই পরিকলন। असूर्ड इत বিভিন্নভাবে। আমেরিকা তাহার প্রতিশ্রতি অমুযায়ী ফিলিপাইন্স্কে নিজের অর্থনীতির নাগপাশে আছে পুঠে বাঁধিয়া নির্দিষ্ট সময়ে সেধানকার বাজনীতিক্ষেত্র হইতে সরিরা দাঁড়ার। বৃটেনের শ্রমিক-গবর্ণমেন্ট ভারতকে হুইভাগে ভাগ করিয়া দিয়া এদেশের রাজনীতিক অধিকার অভাহার করে; ব্রহ্মদেশ হইতে সরিবার পূর্বে দে অর্থনৈতিক ও শামরিক অধিকার প্রতিষ্ঠিত রাখিবার প্রতিশ্রুতি আদার করে; নিংহলে তাহার নজর থাকে আরও কিছু কড়া। মালরেও দে একটা রাজনৈতিক পৌজামিল দিবার চেষ্টা করিয়াছিল; কিঙ সে চেষ্টা

ব্যর্থ ইইরাছে। অনুরদ্ধী ওলনাজ সামাজ্যবাদীরা ওপনিবেশিক অধিকার শিধিল করিবার পূর্বের অত্যধিক গোঁরারতমি করিরা তিক্তার বৃদ্ধি করিরাছে। ফরাসী সামাজ্যবাদ একবার ইন্দোচীনের জাতীরতান বাদীদের সহিত আপোব করিয়াছিল; কিন্তু সে আপোবকে উপনিবেশ শোবণের বৌধ কারবারে পরিণত করা অসম্ভব বুঝিবামাত্র পুনরাম সশ্র আক্রমণ আরম্ভ করে। ইহাই মোটাম্ট যুদ্ধোত্তর প্রাচ্যে শেত প্রত্থাধীন উপনিবেশগুলির চিত্র। প্রাচ্য সামাজ্যবাদী জাপান যুদ্ধর পর মার্কিণ উপনিবেশে পরিণত হয়; জাপানের অধিকৃত কোরিয়া ছুইভাগে বিভক্ত হয়, ফরমোজা চলিরা বার চীনের অধিকারে। আর প্রাচ্যের আবা ওপানবিক দেশ—বিশাল চীন গৃহ-যুদ্ধে আলোড়িত হইতে থাকে।

যুদ্ধোত্তর প্রাচ্যে হুইটি রাজনৈতিক শক্তির প্রচণ্ড সঙ্ঘাত দেখা দিয়াছে। এই শক্তি-সজ্বাত বিশেষভাবে মূর্ত্ত হইরা ওঠে চীনের গৃহ-যুদ্ধে। ইহাকে ক্য়ানিষ্ট শক্তির সহিত জাতীয়তাবাণী শক্তির সজ্বৰ্য বলিয়া অভিহিত করা হইয়া থাকে। বিশ্ব একটু লক্ষ্য कत्रित्वहे (मशा याहेटव रा, हीरनत्र शृह-यूरक अक शत्क किन यूरकांखन माञ्राक्षावामी नौजित महरवात्री मक्टि এবং অद्य भएक हिन माञ्राकावाप-বিরোধী প্রকৃত জাতীয়তাবাদী শক্তি। শেবোক্ত শক্তির নেতৃত্ব ক্মানিষ্টরা করিয়াছে। কিন্তু সে নেতৃত্ব সম্ভব হইরাছিল তাহাদের কর্মস্টীতে আধা-উপনিবেশিক জাতির সমস্ত প্ৰতিফলিত হইয়াছিল বলিয়াই। কবিপ্ৰাণ প্ৰাচ্যে সামস্ততান্ত্ৰিক ভূমি-ব্যবস্থার সংস্থার জনগণের সর্ব্বপ্রধান দাবী। চীনের ক্য়ানিষ্ট নেতৃত্ব এই দাবী পুরবে প্রতিশ্রত হইয়াছিল এবং অবস্থা অমুকুল হইবামাত্র সে এতিশ্রত পালন করিরাছিল অকরে অকরে। শতাকীর পর শতাব্দী ধরিরা আচ্যের মাতুর পাশ্চান্ডা সামাজ্যবাদীর বোঝা বহিয়াছে : তাহার মমুক্ত অবমানিত ও লাঞ্চিত হইয়াছে পদে পদে। আল আলুস্থিত কিরিয়া পাইবার পর রালনৈতিক ও অর্থনৈতিক বন্ধন হইতে পরিপূর্ণ মৃক্তি তাহার অমোঘ দাবী। স্থানীর অফুচরদের সাহায্যে সাত্রাজ্যবাদী স্বার্থসিন্ধির যুদ্ধোত্তর নীতি তাহাকে প্রতারিত করিতে পারে নাই। চীনের ক্য়ানিষ্ট নেতৃত্বে এই যুক্তির নিশ্চিত আখাস ছিল। এমন কি, চীনের ক্য়ানিষ্ট নেতৃভাধীন মৃক্তি-সংগ্রামের প্রতি সোভিয়েট কশিয়ার নৈতিক সমর্থন ঘতই পাতৃক, তাহার প্রত্যক্ষ সংশ্ৰৰ এই সংগ্ৰামের সহিত কোণাও ছিল না। চীনের মৃক্তি-সংগ্ৰাম व मन्त्र्रीक्राल दिवानिक श्रष्टावमूक, अहे विवास कननार्गत मान विन्त्रमाज সম্পেহের উত্তেক হয় নাই। পকাস্তরে, তথাক্থিত জাতীয় শক্তির নেতা কুলোমিন্টাং দল ছিল সামস্ততাত্ত্ৰিক প্ৰতিক্ৰিয়ায় সমৰ্থনপুষ্ট, সামাজাবাদী বার্থের রক্ষক ও বৈদেশিক গাঁমরিক শক্তির সাহায্যপ্রার্থী।

সাম্রাজ্যবাদীর সহযোগী-

हीत्व (व मक्ति काक विक्रता, श्राहात श्राह श्राह क्रिकेट (मर्टन मिहे শক্তি দেশীর ও বিদেশীর প্রতিক্রিরার অন্তত মিলনের বিরুদ্ধে মাধা তুলিতে চেষ্টা করিতেছে। এই শক্তিকে কম্যুনিষ্ট বলিমা অভিহিত করিলে উহা নিশিত হর না; বরং ক্যুানিটুরাই উহাতে সম্মানিত হর —প্রাচ্যের জনগণের অথও নেতৃত্ব তাহাদের, এই অপ্রীতিকর সতা ইহাতে মানিরা লওরা হয়। প্রাচ্যের জাত্রত পর্ণশক্তির বিরোধিতার জভ "গণতম্র" রকার নামে যাহারা পাশ্চাতা সহযোগী হইরাছে, ভাহাদিগের সামাজ্যবাদীর পাত করিলে তথাক্ষিত ক্যানিষ্ট-বিরোধী অভিযানের নৈতিক পৌর্বল্য क्षणाहे क्षजीव्यान हरेरा। हीरन भगजरबाद श्वकारारी हन हिद्राः काह-लक, कात्रिवात्र निग्मान् त्री, हैत्साठीत्न वाख-माहे, किलिभाहेन् ৰীপপুঞ্জে কুইরিণো, ভাষে বিপুল সংগ্রাম। চিরাং কাই-শেক ও তাহার নৈতিক মেরুদণ্ডহীন সহকর্মীরা চীনের জনসাধারণকে রাজনীতি-क्टिज पित्राहिल प्रलीप এक नायक्य, प्रभौतिष्ठहे सामलाव्य, सर्थनीटि-ক্ষেত্রে দিরাছিলেন বৈদেশিক স্বার্থের অনুসত অধিকার; ভূমাধিকারীর উৎপীড়ন, সাধারণ মামুষের জক্ত দারিজ্ঞা, অনশন, মহামারী ও অচিকিৎসা। আমেরিকার ৫ শত কোটা ডলার চিরাং গোঞ্জীর গুনীতির জ্ঞতল গর্ভে বিলীন হইয়াছে। কোরিয়ায় যিনি তথাক্ষিত পাশ্চাতা পণতত্ত্রের ধ্বজাবাহী, সেই সিগ্মান্ রীকে মার্কিণ গণতত্তীরাই "বিতীয় চিরাং" বলিয়া বর্ণনা করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। ইনি কোরিয়াবাসীকে দিয়াছেন মাতৃভূমির বিধা-বিভাপ, জাপানী জমিদার ও শিল্পতিকে দিয়াছেন নিরাপত্তার প্রতিশ্রুতি, আর দিয়াছেন দ্যাসিত্ত শাসনপদ্ধতি, জনসাধারণের অবর্ণনীর ছর্দ্দণা। আমেরিকার ৭ কোটা কোরিরার সমর বিভাপকে ইনি কি ভাবে গঠন করিয়াছেন, তাহার নিদারণ পরিচর কোরিয়ার রণাক্ষনে পাওয়া গিরাছে। ইন্সোচীনের বাও-দাই বিভীর মহাযুদ্ধের পূর্বে আনামের রাজধানী হিউর রাজপ্রাদাদে প্রাচীন রাজতন্ত্রের ঐতিহাসিক সাক্ষীরূপে অবস্থান করিতেন। যুদ্ধের সময় জাপানী তাঁবেদাররূপে ইনি প্রতিষ্ঠা লাভ করিয়াছিলেন। বুদ্ধের পর হংকং এ আশ্রয় লইরা সেধানকার এক হোটেলে বিলাসিতার পঞ্চে ডুবিলা বান। পশ্চিমের গণতজনিষ্ঠ ধুরক্ষররা এ হেন বাও-দাইকে উদ্ধার করিয়া আমিরাছেন এবং তাঁহাকে সমূথে রাথিরা লকাধিক नजी मुक्तिकामी हेट्याठीमारात्र উष्पत्थ जुनिया धतियाद्य । किनिभारेन ৰীপপুঞ্জে কুইরিশো বৈদেশিক বার্থের বিশ্বন্ত অমুচর। ইনি কতক ভাল অসমত চুক্তিতে দেশকে বৈদেশিক বার্থের সহিত আবদ্ধ করিয়াছেন, रेवरम्भिक विनारमाशकात् वरमाभन्न वाकात्र छतित्र। पितारम् ; जूमि ব্যবস্থার সংস্থার হর নাই, শ্রমশিল প্রতিষ্ঠার ব্যবস্থা হর নাই। কিলিপাইন্সের শাসন ব্যবহার ব্যাপক ছুনীতি, সাধারণ মানুবের ছঃখ ভূজিণা দীমাহীন। ভাবে পাশ্চাতা "প্ৰতমের সহকোরী^{কা} হইভেছেন নাগৰাকী সমত নাল্ডালের বিজে কথান্ত ব্যাসিত বিপুল সংগ্রাব।

কোরিয়ার গৃহ-বুদ্ধের পটভূমি---

প্রাচ্যের ক্ষার্যন্ত গণ-শক্তি চীনের রণাঙ্গনে দেনীর ও বিদেশীর প্রতিক্রিয়ার অন্তত মিলনকে পরাভূত করিরাছে। বর্ত্তমানে ছুইটি শক্তির সামরিক সক্তর্বে কোরিয়ায়। চীনের সামরিক সক্তর্বে প্রতিক্রিয়াশীল পক্ষের বৈদেশিক সহবোগী ছিল ব্যবিকার অন্তরালে; কোরিয়ায় সে নিজে রাইফেল কাঁধে লইয়া রণক্ষেত্রে নামিয়াছে। কিন্তু গত এক মানের যুদ্ধের পতিতে চীনের সাম্প্রতিক ইতিহাসের পুনরভিনরই এখানে স্থাতিত।

কোরিয়ার বর্তমান যুদ্ধের পটভূমি এইরাপ। এই রাজ্যটি আরতনে বৃটেনের সমান; ইহার মোট লোকসংখ্যা ও কোটী। প্রায় অর্থ্ব শতাকী কাল জাপানী সামাজ্যবাদের চাকার এই দেশট নিপিট হইয়াছে। দ্বিতীয় মহাযুদ্ধের শেষের দিকে সোভিয়েট রুশিরা জাপানের বিক্তম যুদ্ধ ঘোষণা করিবার পর তাহার সেনাবাহিনী মাঞ্রিয়া ভেদ করিয়া কোরিরার পৌছার এবং জাপ-বাহিনীকে বিপর্যান্ত করে। ইহার পর জাপগভর্ণমেণ্ট আত্মসমর্পণ করিলে মার্কিণ সেনাবাহিনী কোরিয়ায় গমন করে। তথন মিত্র শক্তির মধ্যে দামধিকভাবে এই বাবস্থা হয় যে. ৩৮ হম অক্রেথার উত্তরে সোভিয়েট বাহিনী অবস্থান করিবে এবং पिकर्ण पाकिरव मार्किण रामावाहिमी। ১৯৪० मार्ल रमश् छिपन मारम কোরিয়া এই ভাবে দিধাবিভক্ত হইয়াছিল। ইহার পর ঐ বৎসর ডিদেশর মাদে মক্ষোর তিশক্তির সম্মেলনে স্থির হয় যে, জাপানী শাসনের কলকচিক্ঞলি মুছিয়া ফেলিয়া অতি সম্বর কোরিয়াকে বাধীন সার্বভোম রাষ্ট্রে পরিণত করিতে হইবে। উত্তর কোরিয়ার জাগানী সামাজাবাদের কলছচিহ্ন অপনোদনের ভার গ্রহণ করে সোভিয়েট কশিয়া, দক্ষিণ কোরিয়ায় দায়িত লয় মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র। উত্তর কোরিয়ায় সোভিয়েট কর্ত্তপক্ষের উৎসাহে বিভিন্ন রাজনৈতিক দলের **মিলনে** "পিপ্লৃদ্ কমিটা" গড়িয়া ওঠে। জমিদারী প্রথার উচ্ছেদ করিয়া কুবকদের মধ্যে বিনা মূল্যে ভূমি বন্টন করা হয়, বৃহৎ বৃহৎ প্রমশিল অতিষ্ঠান, ব্যাক, যোগাযোগ ব্যবস্থা প্রভৃতি রাষ্ট্রায়ত্ত হয়। পকান্তরে, দক্ষিণ কোরিয়ার রাজনৈতিক ও অর্থনৈতিক ক্লপ অপরিবর্ত্তিত থাকে। জাপানী শাসক ও শোবকের দল মার্কিণ প্রভুদের মনস্কৃষ্টি করির সেখানে নিরাপদ হয়। ভূমি ব্যবস্থার সংস্কার হয় না; এমণিলের ক্ষেত্র পূর্বের ব্যবস্থা বলবৎ থাকে, জাগানী ও মার্কিণ পু'জিপতিদের মিলনে উহার মালিকগোষ্ঠী নুভন রূপ পরিপ্রাই করে মাত্র। কাপানীদের পরিবর্ত্তে কোরিয়ান ও মার্কিণ প্রতিক্রিয়াপছীদের এই বৌধ প্রভূত্বে বিরুদ্ধে দক্ষিণ কোরিরার প্রবল বিকোভ আরম্ভ হর। ১৯৪৬ সার্লে অক্টোবৰ মাদে সমগ্ৰ কোরিৱাব্যাপী ধর্মঘট ও সশল্প বিজোহ ^{দেখা} দের। উহা দমন করিবার জক্ত বে হিংল্ল আক্রমণ চলে, তাহাতে f হালার কোরিরান্ নিহত অথবা নিথোঁল হইয়াছিল: আহত হই^{রাছিল} ७ हाळात्र, काताभारत निक्थि हत २८ हाळात्र ।

সোভিরেট ও নার্কিশ কর্ত্বপক্ষের অনুস্তত নীতির বৈপরীত্যের ^{রপ্ত} নোভিরেট-নার্কিশ নির্মিত কনিশনের কাল অচল হইরা ওঠে। নোভিরেট রশিরা তথন কোরিয়া হইতে উভয়পক্ষের সৈক্ত অপ্সারণের দাবী তোলে। ১৯৪৬ সালের হিংল্র অন্ত্যাচার সত্ত্বেও ১৯৪৭ সালে মার্চ্চ মাসে মার্কিণ সৈক্ষের অপসারণের দাবীতে আবার দেশব্যাপী অভ্যুথান ঘটিয়াছিল। সৈক্ত অপসারণের প্রশ্বটা মার্কিণ কর্তৃপক্ষের নিকট বড়ই অস্থ্বিধান্তনক। তাই, তথন তাহারা জাতিসভ্যের মারকৎ কোরিয়ায় একটি বিশেষ কমিশ্ব পাঠাইবার ব্যবস্থা করেন।

জাতিসজ্বের কমিশন অবস্থা প্যাবেক্ষণ করিয়া অভিমত প্রকাশ করেন যে, বর্তমানে সমগ্র কোরিয়ায় নির্বাচন সম্ভব না হইলে যতদুরব্যাপী অঞ্জ উহা সম্ভব, তত্ত দুরে নির্মাচনের ব্যবস্থা করিয়া উপযুক্ত শাসনব্যবস্থা প্রতিষ্ঠিত করিবার পর বৈদেশিক দৈতা অপনারিত হইবে। কোরিয়াকে হায়ীভাবে বিভক্ত করিবার এই হৃপে? ইঞ্তি দেশব্যাণী প্রবল প্রতিবাদের ঝড় ওঠে। এই প্রতিবাদ অগ্রাহ্য করিয়া এবং বছ সংখ্যক লোককে কারারজন করিয়া ১৯৪৮ সালের মে মাসে দক্ষিণ কোরিয়ায় নির্বাচনের ব্যবস্থা হয়। এই নির্বাচনে নানাবিধ ছুনীতির কথা গুনা যায়। যাহা হউক, ইহার পরই উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার নেতারা এক সম্মেলন আহ্বান করেন। এই সম্মেলনে সমগ্র কোরিয়াব্যাপী নির্বাচনের সিদ্ধান্ত গৃহীত হয়। সিগুম্যান্ রী-গভানেটের হিংমতা উপেকা করিয়া দকিণ অঞ্স সহ সমগ্র কোরিয়ার নির্বাচনের আয়োজন হইয়াছিল। এই সম্মিলিত নির্বাচনের সময় রী-গভর্ণমেণ্টের অভ্যাচারে ০ শত লোক নিহত এবং প্রায় ১০ হাজার লোক গ্রেপ্তার হয়। ১৯৪৮ সালের আগষ্ট মাসে সন্মিলিত নির্মাচনে উত্তর কোরিয়ার প্রায় সমস্ত নির্মাচক এবং দক্ষিণ কোরিয়ার শতকর। ৭৭ জন নির্বাচক যোগ দিয়াছিল। এই নির্মাচনের পর ৩২টি বিভিন্ন রাজনৈতিক দল ও প্রতিষ্ঠানের প্রতিনিধি লইয়া 'স্প্রীম পিপ্লদ এদেশ্বনী' গঠিত হয়। এই এদেশ্বনীতে নৃত্ব শাসনতপ্র গৃহীত হইয়া "কোরিয়ান পিপ্ল্স ডিমোক্টেক রিপাবলিক্" অতিষ্ঠা লাভ করে। এই ডিমোক্রেটক রিপাবলিকই এখন উত্তর কোরিয়ার প্রতিষ্ঠিত : সমগ্র কোরিয়ায় কর্ত্ত বিস্তার ইহার সঙ্গত দাবী। এই দাবী উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার জনসাধারণ কর্তৃক সমর্থিত। দেশীয় ও বিদেশীয় প্রতিক্রিয়ার প্রভাব হইতে মৃক্তির জন্ম —মাতৃভূমির দ্বিধা-বিভাগ অপনোদনের জন্ম জাগ্রত কোরিয়াবাসীর ^{বর্ত্তমান} সংগ্রামে উত্তর-দক্ষিণের ভেদাভেদ নাই। বর্ত্তমানে উত্তর কোরিয়ানরা কেবল সামরিক শক্তিতেই জয়লাভ করিতেছে না, ^{ङाहारमञ्} এक**টाना दिखद मञ्जद इ**ङ्ख्डा मुक्तिकामी কোরিয়ানদের ঐকান্তিক সহযোগিতার। প্রতীচীর প্রচার ঢাকগুলি অতি স্বত্বে এই অপ্রীতিকর সত্যকে চাপা দিতেছে।

প্ৰিতান্ত্ৰিক অৰ্থনীতির সন্ধট-

প্রাচ্যের এই মৃক্তি-সংগ্রামে প্রাথান্ত কম্নিট্রনের এবং ইহার নৈতিক সংযোগ গোভিনেট ক্লিয়ার নেতৃত্বাধীন রাষ্ট্রনজ্বের সহিত। প্রথম মহাব্যের শেবের দিকে ক্লিয়ার সমাজভান্তিক বিগ্রব সকল

হওয়ার বাস্টিক হইতে বেরিং সাগর পর্যন্ত বিশাল অঞ্লের অর্থনীতি পুঁজিতাত্ত্বিক বিখ-অর্থনীতির আওতার বাহিরে চলিয়া গিয়াছিল। দিতীয় মহাযুদ্ধের পর পূর্বে ইউরোপ পু'লিভান্তিক অর্থনীতির : প্রভাবমুক্ত হয়। সম্প্রতি এশিয়ার বিশালতম দেশ—৪**০ কোটা** নরনারী অধাৃষ্ঠি চীনও সমাজতাত্রিক পক্ষে চলিয়া গেল। ইহার পর, আচ্যের অক্তান্ত দেশের মৃক্তি-সংগ্রাম যদি সফল হয়, ভাহা হইলে বিৰের পু'জিতাত্রিক এলেকা আরও সৃষ্ট্টিত হইবে। পুঁজিতাত্রিক অর্থনীতি তাহার উন্নত অবস্থায় নিজ নিজ দেশের निर्फिष्टे मौमात मध्य आवक्ष पाकिएड शास्त्र ना ; विष्मानत अर्थ-নীতিক্ষেত্রে প্রভাব বিস্তৃতি উন্নত পুঞ্জিবাদের প্রভাবধর্ম। তাই, পুঁজিতান্ত্ৰিক এলেকার ক্রমবর্দ্ধমান সংস্কাচনে পাশ্চাত্যের স্বার্থ-সংশ্লিষ্ট মহল প্রমাদ গণিয়াছে। চীনের পর প্রাচোর আর কো**র্যাও** গণশক্তি যাহাতে ক্ষমতা হস্তপত করিতে না পারে, তাহার জক্ত এই মহলের এখন দৃচ্পণ। কম্যুনিজম বিরোধিতার মুখোদ পরিয়া পাশ্চাত্যের সমর্যন্ত্র যে ক্রমে ব্যাপকতর ও হিংমতররপে প্রাচ্যে নিয়োজিত হইতেছে, তাহার মূলে রহিয়াছে পু'জিতান্ত্রিক অর্থনীতির আন্তরক্ষার এই একান্ত প্রয়োজনীয়তা। উত্তর কোরিয়াকে আক্রমণকারী আখ্যা দিয়া জাতিদক্তে প্রস্তাব পাশ করানো, দেখানকার গৃহ-যুদ্ধে মার্কিণ নেতৃত্বে পুঁজি ভান্তিক শক্তির সশস্ত্র হস্তক্ষেপ, ফরমোজার কুরোমিন্টাং চক্রকে প্রতিষ্ঠিত রাধার আগ্রহ, ইন্সোচীনে মার্কিণ দাহায্য প্রেরণের ব্যবস্থা, ভাষ-মার্কিণ দামরিক চুক্তির আয়োজন প্রভৃতি সবের পশ্চাতেই পুঁজিতান্ত্ৰিক অৰ্থনীতির স্বার্থ রক্ষার—তাহার বাঁচিলা থাকার প্রবল তাগিদ।

क्रम्नित उँ९मव (!)—

কোরিয়ায় গৃহ যুদ্ধ আরম্ভ হইবার পর ভারতের প্রধান মন্ত্রী পশ্তিত জঙহরলাল নেহর যে আপোৰ মীমাংদার প্রস্তাব করিয়াছিলেন, তাহা অগ্রাহ্ম করিয়া পশ্চিমের পুলিভান্ত্রিক দেশগুলি অধিকতর সমরায়োজনে মাতিয়াছে; বভাবত: মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র এই বিষয়ে অগ্রা। রণ-বিক্ত ইউরোপের জনসাধারণ বুজের ঘোর বিরোধী: এমন কি মার্কিণ যুক্ত রাষ্ট্রেও সাধারণ মাত্রুব যুদ্ধ চাহে না। তাহাদিগকে উপেকা করিয়াই এই বিপুল সমরপ্রস্ততি। युद्धाः हाजनের सम्र. खर्थाः क्रमाधात्राचेत्र व्यवावश्या भेगा छेरभाष्ट्रमत क्रम बात कतिवात मह শক্তি ইউরোপের কোনও দেশেরই আর অবশিষ্ট নাই। ইহারা এখন বভাবতঃ অধিক পরিমাণে মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্রের প্রতি নির্ভরশীল इंदेर এवः अत्तर्भ अनकनार्षम्लक काद्य अम्पार्याणी इंदेर । ইহার ফলে বর্ত্তমান শাসকগোষ্ঠীর এবং সমরকামী মার্কিণ যুক্ত-রাষ্ট্রের বিরুদ্ধে ইউরোপে প্রবল পর্ণবিক্ষোত অবশুভাবী। প্রাচ্যের মুক্তি-আন্দোলন দমনের জন্ত পাশ্চাত্য সামাজ্যবাদী শক্তির দৃঢ়তা এইভাবে তাহাদের নিজেদের শিবিরের মধ্যে অন্তর্থ ব বৃদ্ধি করিবে। আর প্রাচ্যে পাশ্চাত্য সাত্রাজ্যবাদীর বিরুদ্ধে জনসাধারণ অধিকতর্ভ সংহত ও অধিকভর নির্দ্ধণ হইবা উটিবে। প্রাচ্যে ব্রিভিন্ন দেশের সুষ্টি

সংগ্রাম একটি নৈতিক বোগস্ত্রে প্রথিত হইলেও বিভিন্ন ভৌগোলিক অঞ্চলে ইহা আত্মপ্রকাশ করিতেছে বিচ্ছিন্নভাবে। এই সংগ্রামের জাতীর রূপ অবিকৃত। এই আতীর মৃক্তি-সংগ্রামের বিকৃদ্ধে পাশ্চাত্য সাম্রাক্ষ্যবাদীদের সমরপ্রচেষ্টা যে নৈতিক সমর্থন-বিবর্জ্জিত, তাহার র্মীবস্ত প্রমাণ সাম্রাজ্যবাদীদের সহচর চিয়াং, রী, বাও-দাই, কুইরিণো প্রভৃতি জীবগুলি। এই সব নৈতিক মেরুলগুহীন জাতিরোহীদিগকে আপ্রম করিরা পাশ্চাত্য সাম্রাজ্যবাদীর সামরিক শক্তি নিয়োজিত হইতেছে। কম্যুনিজম-বিরোধিতার ক্ষীণ মুখোসের অন্তর্মালে এই শক্তির প্রকৃত রূপ প্রাচ্যের জনসাধারণের দৃষ্টিগোচর হইতেছে। পাশ্চাত্য "গণতত্মীদের" এই নৈতিক ক্ষতির গুরুত্ব বিশাল; সামরিক ক্ষেত্রে ইহার প্রভাব স্বদূরপ্রসারী। জনপ্রিয় ও সর্ব্বতোভাবে জনসমর্থিত সেনাবাহিনীর শক্তি কিরুপ তুর্জ্জর, তাহার পরিচয় বর্ত্তমানে কোরিয়ার পাওয়া যাইতেছে। ইহা অপেক্ষাও উজ্জ্বতর দৃষ্টাত্ত মাল্য। এবানে তিন হাজার গোরিলাকে দমনের স্বস্ত ৬০ হাজার

নৈশ্ব ছই বৎসর বাবৎ ব্যর্থকাম হইতেছে। বুটেনের কোটা কোটা পাউও এখানে জলের মত ব্যর হইতেছে। করেকটি দেশজোহী অপদার্থকে সন্মুপে রাখিরা পাশ্চাত্য সাক্রাক্রাবাদীর সমরশক্তি বত অধিক পরিমাণে প্রাচ্যে নিয়োজিত হইবে, এখানে মুক্তিকামী জনগণের মৃত্যুপণ দৃঢ়তা ততই বেশী প্রবল হইবে; তাহাদের ঐকান্তিক সমর্থনে নিয়মিত সেনাবাহিনী ও গেরিলার জল অজের হইরা উঠিবে। এইভাবে কোরিয়ার, করমোজার, ইন্দোচীনে, মালরে, ব্রহ্মদেশে এবং পরে কিলিপাইন্দে ও স্থামেও যদি পাশ্চাত্য শক্তিবৃন্দের সমররথের চাকা জাটকাইয়া যার, তাহা হইলে ক্রেম্লিনের ঐ ব্যক্তিটি পাইপ মুখে ও জিয়া বিজ্ঞাপের হাসি হাসিবেন; তাহার নাগাল কোরিয়ায় যেমন পাওয়া যাইতেছে, না, প্রাচ্যের অস্ত্র কোনও অঞ্চলেও তেমনি পাওয়া যাইবে না। ঐ সমরে পশ্চিম ইউরোপের কোনও কোনও দেশে গণ-বিক্ষোভ যদি সশল্র অভ্যুত্থানে পরিণত হয়, তাহা হইলে ক্রেম্লিনে দেদিন হয়ত উৎসবের আরোজন হইবে।

প্রভাতী তারা

শ্রীসাবিত্রী প্রসন্ম চট্টোপাধ্যায়

বল দেখি, ফিরে একে কতদিন পরে ?
আমার এ ঘরে
তোমারে ধরিয়া রাখি ছিলনাক হেন আয়োজন
ছিল না বাসর-সজ্জা, করিনিক কুসুম চয়ন;
গন্ধদীপ ছিল নাক; মাটির প্রদীপ ছিল জালা;
আর ছিল হৃদয়ের ডালা
পরিপূর্ণ কামনার কুলে।
ভূমি এদেছিলে ভূলে,

ভূলে যদি গিয়ে থাক চলে
সন্ধ্যাদীপ আজিও ত জ্ঞলিছে বিরলে
আলোকিয়া শৃশু মোর ঘর;
বিরহ তুর্তর
সেও ভালো; বেঁচে থাক শুধু মোর আশা
মিলনের অশান্ত তিয়াসা
তীত্র হ'তে হোক তীত্রতর,
বিচেচ্ছ কামনা স্রোভ হোক থব্তর।

জাগ্রত আঁথির আগে শৃক্ত পথ ধরি
আবার বেদিন তুমি আসিবে স্করী,
সাজিয়া নৃতন সাজে নব অভিসারে—
সেদিন সে অন্ধকারে
কন্ধণে ধ্বনিয়া তুলি নবতন স্কর
একান্ত নিকট করি' দ্রান্ত স্থান্ত
ডাক দিবে পরিচিত স্বরে,—
মনে হবে,—এলে যেন নব স্বয়ন্থরে।

সেদিন আমার ঘরে ফুলের উৎসবে
গন্ধনীপ আলি দিবে উৎসর্গের আ্নন্দ-গৌরবে।
তবু জানি সে মিলন-রাত্রি অবশেষে
মলিন আননে ক্ষণে মৃত্ হাসি হেসে
নতনেত্রে চাহিবে বিদায়।
কতক্ষণ ধ'রে রাথা যায়
প্রভাতী তারার দীপ্তি, ক্ষণস্থায়ী আযুর সমান
এই আছে, এই নাই, পলক মেলিতে অন্তর্ধান।



(পূর্বামুবৃত্তি)

অরুণার খুব বেশী তুর্ভোগ পোহাইতে হইল না। আই-বি
ইনস্পেক্টর রণদাপ্রসাদ তাহাকে অল্লেই ছাড়িয়া দিল।
রণদাপ্রসাদ এই জেলাভেই সাধারণ সাব-ইনস্পেক্টর
হিসাবে কাব্দ স্থক করিয়া আপন কৃতিত্বে এখানকার
আই-বি ইনস্পেক্টর হইয়াছে। সেদিক দিয়া কর্মাজীবনের গোড়ার দিকে তাঁহার খ্যাতি এবং কৃতিত্ব
এস-পি-সমশের খান এবং দারোগা দরবারী শেখের
খ্যাতি ও কৃতিত্ব এক খাতের জল-স্রোতের মত স্বাদে
বর্ণে পলির পরিমাণে একরকমই ছিল। কিন্তু সমশের
খানের মুসলীম প্রীতি এবং হিন্দু বিছেষ রণদাপ্রসাদকে
সংপ্রেধ বা সত্যের পথের দিকে ঠেলিয়া দিয়াছে।

প্রথমেই দরবারী রণদাকে চটাইয়া দিল—সে থানার ইনস্পেকসন কমে অরুণাকৈ হাজির করিয়া বলিল—দেখুন ভার কি রকম ভোল পালটেছে দেখুন!

সপ্রশ্ন ভলিতে রণদা দরবারীর মুখের দিকে চাহিল।
দরবারীর কথাটা ঠিক তাহার মাথায় ঢোকে নাই।
দরবারী অরুণাকে বলিল— এখনও তো বুড়ী হও নি
তুমি—এরই মধ্যে তপশ্বিনী সাজলে যে?

অরুণার মুখ লাল হইয়া উঠিল। বকাটা কৌশলে ব্যবহার করিলেও—মূল প্রবাদ বাক্যে ব্যবহাত 'বেখ্যা' শক্ষটা তাহার মনে পড়িয়া গেল। তবু সে কঠিন হইয়া বিসিয়া রহিল। রণদাবাবুও চকিত হইয়া দরবারীর দিকে চাহিল। রণদাবাবুও চকিত হইয়া দরবারীর দিকে চাহিল। রণদা নিজেও কথাটা ব্যবহার করিতে পারিত, ইহার পূর্বে এ অপেক্ষাও কুৎসিত কথা সে অফলে অনর্গল ব্যবহার করিয়া আসিয়াছে। কিন্তু আজ তাহার মুখ-টোখ লাল হইয়া উঠিল। সে বলিয়া উঠিল—আঃ দরবারী! তবে জোরে ধমক দিতে সাহস হইল না। কিছুক্ষণ পরেই সমশের খাঁ আসিতেছে। মনে পড়িয়া গেল—বৎসর ছয়েক আগে যথন জেলার যড়য়ন্ত্র সামলা আবিভারে

শাঁ মাতিয়া উঠিয়াছিল—সেই সময় একটা ছিঁচকে
চুরিকেও সমশের স্থকোশলে বড়য়য় মামলার সলে গাঁথিয়া
দিয়াছিল—সেই সময় রণদা বলিয়াছিল—এটা বাদ
দিন—লোকে বলবে কি? না—না! সমশের তাঁহার
মুখের দিকে চাহিয়া সোজা সহজ স্থরে বলিয়াছিল—'আমি
দেখছি রণদাবাবু তোমাকে আবার সেই সাবইনস্পেক্টরশিপেই রিভার্ট করতে হবে।' এখন রণদাবাবু পাকাইনস্পেক্টর—তব্ও সমশের খানের মুখ মনে পড়িলে
খানিকটা দমিয়া বাইতে হয়।

ওদিকে দরবারী ওইটুকু ধনকে দনিল না। সে বলিল—না স্থার চঙ আমি বরদান্ত করতে পারি না। দেখুন না—থান কাপড় প'রে—হাত শুধু ক'রে—রুপু চুলে এলোকেশী হয়ে একেবারে গোঁসাই ঠাকরুপ সেজেছেন। মুসলমান হয়ে কলমা পড়ে বিয়ে করে— ফের হিঁছ হয়ে—

এবার রণদা দৃঢ় হইয়া ধনক দিল—দরবারী সাহেব ওগুলো আমাদের জিজ্ঞাসার বিষয় নয়। আপনি বাইরে বান, ওঁকে যা জিজ্ঞাসা করবার আমি করছি। যান—।

এ-আদেশ গতান করিতে দরবারীর সাহস হইল না।
দরবারী এখনও ঠিক আই-বি বিভাগের গোকও নর।
রণদার ব্যক্তিত্বও আছে।

দরবারী বাহিরে ষাইতেই রণদা বলিল—কিছু মনে করবেন না। ওদের আসল রাগটা হ'ল আপনি মুসলমান ধর্ম অবলম্বন করে বিয়ে করে ফের হিন্দু হলেন কেন ? এরা—। পুলিশ বিভাগের লোক না-হইলে রণদা হয় ডো আরও অনেক কথা বলিয়া ফেলিত। সমশের বাঁ এখানকার এস-পি না হইলেও বলিত। নিজেদের দলেল লোক এস-পি হইলেও বলিত। প্রাণ ভরিয়া—পেট খোলসা করিয়া বলিত। আত্মদমন করিয়া করেক মুহুর্ভ চুপ করিয়া রহিল—ভারপর বলিল—কি বলব বলুন ? এর

करम मात्री रुष्ट्रन व्यापनाता। कः धाम, द्रबंदि मनात्री পাট। স্বাধীনতা—স্বাধীনতা রব তুলে হজুক করে— আন্দোলন করে আর বোমা পিন্তল ফুটিয়ে দেশটাকে এদের হাতে ভূলে দিতেন না। স্থাপনারাই এর ব্দক্তে দায়ী।

অরুণা বসিয়া ছিল পাথরের মত। প্রথম বয়সে-व्यर्था एन यथन कूमाती व्यवस्था जारात मानात महन वह দলে যোগ দিয়াছিল—তথন—তুইবার তাহাকে কলিকাতার আই-বি আপিদে যাইতে হইয়াছিল। তথন সে মুখে তৃবড়ী ফুটাইয়াছিল। ত্-মাস পূর্বে হইলেও সে কাটা कांगे। करावरे मिछ। किंद्ध এरे इ-मारम मि अरकरादि পাণ্টাইয়া গিয়াছে: দেখিলে মনে হয় যে-একটা কঠিন জীবন-সন্কট রোগে ভুগিয়া—তাহার ধাতুটাই পাণ্টাইয়া গিয়াছে। রণদার কথার জবাবে দে এতক্ষণে কথা বলিল — আমি কংগ্রেসের মেম্বর পর্যান্ত নই; বোমা-পিন্তল ছুঁড়ে যারা স্বাধীনতা আনবেন—তাদের সঙ্গেও আমার কোন সংখ্য নেই।

व्याक ना इरेशा व्यक्तिन इरेल त्रमा टिविटन এक है। কিল মারিয়া তকার ছাড়িয়া উঠিত। ক্লাকামি, পাচ ক্ষিয়া উত্তর সে আদৌ সহু ক্রিতে পারে না। আজ কিন্তু তাহার মেজাজ আলাদা। সে এই হিন্দুক্রাটিকে কোন রকমে ছাড়িয়া দিতে পারিলে বাঁচে। উত্তরে মুখ একটু বিক্বত করিয়া সে বলিল—তা জানি, আপনারা আবার ক্যুনিষ্ট! বলিতে বলিতে দে ক্ষেপিয়া উঠিল—বলিল—আপনারা আবার জাত মানেন না, ঈশ্বর मारनन ना। है-जारेरिकरे अमन छारत मूमलमान हैरिक वार्थ नि । किंड-। मिछारे छा मत्रवादी मिर्था वरन নি—আবার মরতে হিন্দু হলেন কেন ?

অরুণা বলিল-এ কথার উত্তর আমি দেব না।

-एव-ना ? इब कूछे लक्षा स्काशन बनना छ्यादब (सहथोनाटक मिथिल क्रिया विश्वाहिल। (म महमा চল্লিশ ইঞ্চি ছাতি থানাকে ফুলাইয়া—সোজা হইয়া বসিল।

হাঁকটা বাহির পর্যান্ত গিয়াছিল। দরবারী দরকার ক্ৰেগোড়াৰ আগাইয়া আসিল। পদশব্বে রণনা ঘুরিয়া ভাকাইতেই বলিল—দেপছেন সার—ত্যাদড়ামী!

অরুণা সেন ? বিশ্বনাথ ভটচাজকে মুসলমান হয়ে বিয়ে কের হিন্দু হয়ে এখন অরুণা ভটচাঞ করেছিলেন। र्याइन १

- —ইা। এ তোগোপন করি নি আমি।
- করেছেন। এখানে যথন গার্লগ ইস্কুলে কাজ নেন —তথন এ পরিচয় দেন নি। স্বামীর নাম লিখেছেন— বিশু ভটচাজ।
- —আমার স্বামী ওই নামই ব্যবহার করতেন। বিশ্বনাপ বলতেন না নিজেকে। আর এখানকার কেউ আমাকে কোন প্রশ্নও করেব নি। এ দেশে ভর্ 'বিভ' বলে কেউ নাম লেখে না, তবুও কেউ প্রশ্ন করেন নি, 'বিশু' লিখেছেন কিন্তু পূরো নাম কি ?
 - —हैं। **जा**शनि क्यानिष्टे ?
- —এ যুগে সাধারণ শিক্ষিত লোকে স্বাই চায় ক্যানিজম সম্মত ব্যবস্থা।
 - —ত!—না। আপনি কম্যুনিষ্ট পার্টির মেম্বর ?
- -- ना। এक हो नीर्चनिश्वात्र फिलिन व्यक्ता। मिथा তাহাকে বলিতে হইল।
 - আপনার স্বামী ? বিশ্বনাথ তো মেম্বর ছিলেন ?
- —আপনারা আমার চেয়ে অনেক বেশী জানেন দেখছি--
 - -তার মানে ?
- তার মানে— আপনারা যা বলেছন, যা জেনেছেন— সে সব কথা আমি তো জানি না। তা ছাড়া, আমি তো নিজে কোন রাজনৈতিক দলে কখনও যোগ দিই নি। আমার দাদা অবশ্য জেল থেটেছেন, ডেটিয়া ছিলেন; তাঁর বন্ধ ছিলেন আমার স্বামী দেই হিদেবেই তাঁর সঙ্গে আমার পরিচয় হয়—সেই পরিচয় ক্রমে—

थामल अक्ना। मूर्थ ताथ इत्र वाथल। এक हे त्थरमह वनल-(भव विदय कत्रि इक्टन।

- —है। यूजनमान हरबिहित्नन (कन ? हिन्तू (शरक्छ তো বিয়ে করতে পারতেন। দশ বিশটাতেও তো বা^{ধা} (नहे।
 - —ও কথার জবাব দেব না। একবার তো বলেছি।
- —ना (मन मत्रकांत्र त्नहे (करन। এथन यां अर्थात्रन त्रशमा पृश्चिम्रा चक्रशास्क विका-चार्शन जा र'रन वार्शन।—ना-चात्र এको कथा। এथानकात (मर्

ঘোষই আপনাকে এখানে এনেছিল এ কথা কি ঠিক?
এবং তার সঙ্গে আপনার এত ছত্ততাই বা কিলের ?

- —উনি আমার খামীর বন্ধু, আমার স্কুলের দেকেও মিস্ট্রেদ স্বর্ণের খামী, পাশাপাশি বাদায় থাকি। সজ্জন ব্যক্তি। এই পর্যান্ত। উনি আমাকে চাকরীর থবরটা দিয়েছিলেন। আমি ওঁকে লিখেছিলাম—আমার খামীর দেশে থাকতে চাই।
- আছা যান আপনি। বলিরাই গলা নামাইয়া মৃহস্বরে তাড়াতাড়ি কি বলিতে গেল, তাও না বলিয়া একটা কাগছে থসথস করিয়া কি লিখিয়া,—কাগজটার দিকে অরুণার দৃষ্টি আকর্ষণ করিল। অরুণা দেখিল—রণদা লিখিয়াছে— "এখান থেকে পত্রপাঠ চলে যান, সমশের খানের হাত থেকে বাচা বোধ হয় অসম্ভব।" কাগজখানা সঙ্গে হাতের মুঠায় তালগোল পাকাইয়া ছোট্ট একটি গোল পিতে পরিণত করিয়াও ক্ষান্ত হইল না রণদা শেষে সেটাকে মুখে পুরিয়া চিবাইতে স্কুক্ করিল।

অরুণা উঠিয়া দাঁডাইল।

— দাঁডান। আর একটা কথা।

অরণা জবাব দিল না, প্রশ্নের প্রতীক্ষা করিয়া দাড়াইল।

রণদা বলিলেন—থাকবেন কোথায় ? নিজের বাদাতেই থাকবেন ভো ?

व्यक्षा विनन-हैं।।

- थाकरवन क' मिन ?

অরুণা সবিশ্বরে রণদার দিকে অসকোচে তাকাইয়া
রিংল—তারপর বলিল—মামি তো এখানে চাকরী করি—

—আপনি তো রেজিগনেশন দিয়েছেন। চার্জ্জ ব্ঝিয়ে দিতে এসেছেন। রণদার দৃষ্টিতে ইকিত ফুটিয়া উঠিল—'এখান থেকে পত্রপাঠ চলে যান'।

অরুণা শৃত্য দৃষ্টিতে চাহিয়া কি ষেন ভাবিয়া লইল—
যেন নিজের মনের সঙ্গে একটা বুঝাপড়া করিয়া লইল;
তারপর সেই শৃষ্ট দৃষ্টি রণদাবাব্র মুখের উপর ভূলিয়া
ধীরে ধীরে একটি একটি করিয়া কয়েক শব্দ বলিয়া গেল,
অসংলয় হইল—কিন্ত সুস্পষ্ট অর্থ এবং দৃঢ়তায় তাহার সে
উত্তর রণদাকে বিস্মিত এবং নিক্তর করিয়া দিল। অরুণা
বিলি—আমি—রেজিগ্রেশন—উইদ্ভ করেব।

নিকত্তর রণদার বিশ্বিত দৃষ্টিতে প্রান্ন ফুঠিয়া উঠিল—
আমি যে কথা তোমাকে লিখে জানালাম—তার পরেও
থাকতে চাও এখানে ?

নারী না হইয়া পুরুষ হইলে—রণদা মুহুর্তে উঠিয়া
দাড়াইয়া গালে অস্তত প্রচণ্ড একটি চপেটাঘাত ক্যাইয়া
দিত। নারী—আবার অরুণা না হইয়া—অস্ত কেহ
হইলে সমশের দরবারীর সঙ্গে বিরোধটা—স্থুস্পষ্টরূপে হিন্দু
মুসলমান বিরোধের ভিত্তির উপর গজাইয়া না উঠিলে রণদা
ছাড়িত না। দাতে দাতে ঘবিয়া গালাগালি করিয়া টেবিল
চাপড়াইয়া কাগু বাধাইয়া ভুলিত। উনিশলো সাতাশ
আঠাশ হইতে বিপ্লবীদের দলে মেয়েরা চুকিতে স্কর্ক
করিয়াছে—আই বি বিভাগের কর্ম্মচারী রণদাকে মেয়েদেরও
শায়েন্ডা করার অন্তাদ আগ্রন্ত করিতে হইয়াছে, সে—
অভাদ তাহার আছে। কিন্তু অরুণা মেয়েটি আল অভিনব
মৃত্তি লইয়া তাহার সম্মুধে দাড়াইয়াছে। নিরুচভুদিত
অথচ অনমনীয়—একটি মেয়ে। সে অবাক হইয়া অরুণার
মুধ্রের দিকে চাহিয়া রহিল।

দরবারী একখানা ত্তুম নামা আনিয়া রণদার সন্মুখে ধরিল। পুলিশ সাহেবের সই করা—ত্তুম নামা; নিয়মিত ভাবে সপ্তাহে তুইদিন থানায় হাজিয়া দিতে হইবে; কোথাও বাইতে হইলে জানাইতে হইবে—ইত্যাদি। তুকুমনামাটায় অকুণার নাম বসাইয়া লইয়া আদিয়াতে দরবারী।

রণদা দেখানা নিজের হাতেই রাখিয়া দিল, বলিল—
আচ্ছা যান আপনি। বলিয়াই আবার বলিল—চলুন—
বাইরে আমি পৌছে দিচ্ছি।

অরণা অগ্রসর হইল। দরজার কাছে গিয়া কিন্ত থমকিয়া দাঁড়াইল। দরজার একটা বাজু ধরিয়া যেন আত্মসম্বরণ করিতেছিল। রণদা প্রশ্ন করিল—কি হল ?

- —কিছু না। কেমন একটু—
- —অহন্থ বোধ করছেন ?
- --नां। ठिक चाह्य। त्र चारात्र शा राष्ट्रहेग।
- -জল থাবেন ?
- —না। সে অগ্রসর হইল।

বাহিরে স্থরপতি চেয়ারে বসিয়াছিল। ওদিকে বসিয়াছিলেন—ভাষয়ক তাঁহার পাশে দেবকী কেন। তাঁহাদের কাছেই বসিয়াছিল স্বর্ণ। গৌর দাঁড়াইয়া স্মাছে রাজার উপরে। নেলো বসিয়া কাঠা দিয়া মাটীর উপর একটা ছবি আঁকিতেছে।

ওদিকে বেলা গড়াইয়া আসিয়াছে। শেষ অপরাফ্লের স্থের আলোর লালতে রেশ ফুটিরা উঠিয়াছে, দেই আলো পরিপূর্ণ ভাবে পড়িল অরুণার সর্বাঙ্গে। পশ্চিমমূখী থানাটার বারান্দাটি যেমন দাওয়া উচু—ভেমনি প্রশস্ত ।

সুরণতি চকিত হইয়া উঠিয়া দাঁড়াইল, বলিল-কি? মিনেস ভটচাজ্জি-?

দেবকা দেনও উঠিয়া দাঁড়াইয়াছিল —দেও বলিল—কি হয়েছে ? অৰুণা দেবী ?

স্বর্ণের দৃষ্টি যেন জ্বলিতেছিল। এ কি মুথ হইয়াছে জ্বলণা দিদির? সে যেন এথনি এই মুহুর্ত্তে ভাঙিয়া মাটীর উপর লুটাইয়া পড়িয়া যাইবে।

স্থাররত্ব ধীরে ধীরে উঠিয়া দাড়াইলেন। শাস্ত বার্দ্ধক্য ত্র্বল কঠে ডাকিলেন—দিদি!

অক্ট সবে অরুণা সবিশ্বরে যেন প্রশ্ন করিয়া উঠিন—
আপনি? অর্থাৎ আপনিও আসিয়াছেন? আমার জন্ত ?
অর্থ আসিয়া ভাহার হাত ধরিল—বলিন—অরুণাদি?
ওইটুকুর মধ্যে অনেক প্রশ্ন নিহিত ছিল—এবং সেগুলি
স্কল্পন্ত।

অরুণা পুর্বের মতই ক্লান্ত কণ্ঠন্বরে বলিগ—ছাড়।

— কি হয়েছে বসুন ? স্বর্ণের কণ্ঠস্বর প্রাদীপ্ত, রি-এনফোর্সড কংক্রিটের ছাদের গায়ে প্রতিধ্বনিত হইয়া রণ রণ করিয়া বাজিয়া উঠিল।

রণদাবার বলিলেন—উনি বোধ হয় অক্স হয়ে পড়েছেন। গোড়া থেকেই কেমন যেন দেথাছিল। হঠাৎ—এই বেরিয়ে আসবার মুধে—এ রকম হয়ে গেলেন।

चर्व वितर-वस्त-वाशन-वस्त ।

-- না, ছাড়, দাতুকে প্রণাম করব।

আব্দণা গিয়ানতজ্ঞাহ হইরাবিসিয়া ভাররত্বকে প্রণাম ক্রিল।

স্থায়রত্ব তাহার মাথায় হাত দিয়া বলিলেন—ওঠ।
নিজেই তিনি হাত বাড়াইয়া দিলেন, বোধহয় অরুণাকে
হাত ধরিয়া ভূলিবার জন্ম! অরুণা বলিল—আমি নিজেই
উঠতে পারব।

হাসিয়া স্থায়রত্ব বলিলেন—না। এ বয়সে কাউকে ধরে তুলবার সামর্থ্য আমার নাই ভাই। আমি—। বলিয়াই অরুণার ললাট স্পর্শ করিয়া বলিলেন—তুমি অনুস্থ ?

অরুণা ক্লান্ত ভাবেই উঠিয়া দাঁড়াইল। বলিল— না-দাত।

স্থ্যপতি একটু অগ্রসর হইয়া আসিন-বিলল-আপনার মুধ দেখেই বুঝা যায় মিসেস ভটচাজ।

দেবকী বলিল—কাপনি বরং একটু বিপ্রাম করুন। বহুন।

স্বৰ্ণ বলিল—গৌর, দেখ তো, ষ্টেশনে গরুর গাড়ী আছে কিনা ?

ক্যায়রত্ব অরুণার মুখের দিকে তাকাইয়া ছিলেন, বার্দ্ধক্য ক্তিমিত দৃষ্টিতে অরুণাকে দেখিয়া বৃথিতে চাহিতে ছিলেন। তিনি বলিলেন—সভ্যই তো। তোমার মুখে যে—কোন হুরস্ক ক্লেশের ছাপ ফুটে উঠেছে!

—না—দাত্—না। অরুণা যেন হাঁপাইয়া উঠিয়াছে।
সে সিঁড়ি দিয়া নামিতে স্কুক করিল। এখান হইতে
পালাইতে পারিলে সে যেন বাঁচে।

— দাঁড়ান অফণাদি, এমন ক'বে ছুটবেন না। পড়ে যাবেন।

—না। পড়ব না।

-मिनि।

অরুণা পিঁড়ির শেষ ধাপে ফিরিয়া দাঁড়াইল।

দেবকীর হাত ধরিয়া স্থায়রত্ব ধীরপদক্ষেপে সিঁড়ি নামিয়া কাছে আসিয়া বলিলেন—একটু ধীরে চল ভাই। যতকণ এক সকে চলা যায়—এক সকেই যাই চল।

স্বৰ্ণ বলিল — বলুন অৰুণাদি কি হয়েছে বলুন। সকলের সামনে এখুনি বলুন। বলতে হবে আপনাকে। ওঁদের অসাধ্য তো কিছু নাই। বলুন!

অরুণা এবার বিচিত্র দৃষ্টিতে স্বর্ণের দিকে চাহিয়া বলিল
—আজ একাদশী স্বর্ধ।

অন্ধনার রাত্রে অভ্যক্তর আলোর ভরিরা দিয়া একটি উন্ধাপাত হইরা গেল যেন। চমকিরা উঠিল সকলেই—সঙ্গে সংশ্বে মুগ্র বিশ্বর কুটিরা উঠিল সকলের দৃষ্টিতে। শুধু পর্ব বিল—প্রশ্ন করিল—একাদনী ?

- **一**割!
- -- निर्व्छना ?
- —না। ভাপারব না। প্রয়োজনও নেই।
- —থান কাপড়ও পরেছেন দেখছি।

এ কথার উত্তর দিল না অরণা। নতমুখে ক্লান্ত-পদক্ষেপে স্বায়রত্ব ও দেবকী সেনের সঙ্গে অগ্রসর হইল।

ऋत्र शिव त्रामा व मूर्थ व नित्क हा दिया मूहिक हा निया विन-भारे गए!

রণদা লগাটের কুঞ্চন রেখায় প্রশ্ন উত্থাপিত করিয়া স্থির দৃষ্টিতে **অ**রুণা**কে দে**খিতেছিল। উত্তর আবিষ্<mark>ঞার</mark> করিতে চাহিতেছিল। স্থরপতির প্রশ্নে তাহার দিকে ফিরিয়া সেও মুচ্কি হাসিল। সঙ্গে সঙ্গে তুই কাঁধ আগ

করিয়া হাত হুইটা উল্টাইয়া দিয়া বলিতে চাহিল—কে खादन वावा।

থানার দাওয়ার উপর হইতেই দাওয়ায় ঠেদানো সাইকেলথানায় চাপিয়া বসিয়া প্যাডেলে চাপ দিয়া চালাইয়া मिया ऋत्र शकि त्र भारक विनि — आष्टा। हिन विश्व । रूरव मिथा भरत ।

সেও চলিল-অরুণা স্থায়রত্ব দেবকী সেন যে পথে গিয়াছে — দেই পথে। প্রশ্ন তার মনেও জাগিয়াছে। একাদনী করিয়াছে অরুণা? আবার সে আপন মনে मूठिक शिन।

থান কাপড় পড়িয়াছে-একাদনী করিয়াছে। অরুণা ভটচাৰ ? (ক্রমশঃ)

বৌদ্ধযুগে দাসত্ব

শ্রীসন্তোষকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

পুরাকালে পুথিবীর সকল দেশে দাস প্রথার প্রচলন ছিল। শুধু যে বাবস্থানা করিয়া ভাহাকে অন্তের নিকট বিক্রর বা বন্ধক দিত, এই ভারতবর্ষেই এই প্রথা সীমাবদ্ধ ছিল তাহা নহে, তুরক্ষ, মিশর, পারস্ত, র্থান, রোম, চীন প্রভৃতি দেশেও ইহা আরও কঠোরভাবে ছিল। নরনারীকে পশুর স্থায় বাজারে বিক্রয় করা হইত। ধনী, শিক্ষিত এবং গণামান্ত ব্যক্তিরা ইহাদিগকে হীন চক্ষে দেখিত। আবার উদারচেতা **ব্যক্তির। ইহাদের ভালবা**সিত।

খীক রাজদূত মেখাস্থিনিস যথন ভারতবর্ষে আসেন তথন এই দেশে দাসদাসীর অবস্থা অনেকটা নিয়মাবদ্ধ ছিল। তথন অক্সাক্ত দেশে ইহারা অত্যন্ত নির্বাতিত হইত। প্রাচ্য এবং পাশ্চাত্য দেশের অনেক মগপুরুষ এই প্রধার অশেব নিন্দা করিয়াছেন। কৌটলোর অর্থশাব্রে আনরা দেখিতে পাই আর্বোরা দাদছের বিরোধী ছিলেন। কিন্ত মেড্রা তাহাদের পুত্রক্ষাদের এই কাজে নিযুক্ত করিবার জস্ত গৃহে প্রতিপালন করিয়া বাজারে বিক্রম করিত। অত্যাচারী লোকেদের হাত হইতে ইহাদিগকে রক্ষা করিবার জক্ত কতকগুলি নিয়ম ও শান্তির বিধান ছিল। ইহাদিগকে মৃতদেহ বহন, মলমুত্রাদি পরিষ্ণার अपूर्णि नीह कारक नियुक्त किताल. ইहामिशक खनन व्यवस्थात द्राशितन, মিখ্যা গালাগালি করিলে, প্রহার করিলে, কোন দাদীর জোরপূর্ব্বক শতীত্নাশ করিলে, পাশবিক অত্যাচারীকে সাহায্য করিলে বিশেষ শাতির বাবছা ছিল। দাসদাসী বদি তাহার ক্রীভর্ল্য প্রভূকে কিরাইয়া দিত তাহা হইলে সে এই বল্ধন হইতে মুক্তি পাইত। যদি কোন প্ৰভু তাহা সম্বেও তাহাকে মুক্তিদান না কণ্ণিত তাহা হইলে ঐ প্ৰভুকে শান্তি পাইতে হইত। কোন আঁভু বদি তাহার পর্জবতী দাসীর কোন

অক্তায় কার্য্যের জক্ত উভয়কেই শান্তি পাইতে হইত। মুক্ত দানদানীকে যদি কেহ আবার কিকুল্ল কণ্ণিত বা বন্ধক দিত তাহাকেও শাস্তি পাইতে হইত। শান্তির নিয়মামুদারে দাদদাদীকে ক্রীতমুল্যের সহিত আরও কিছু অর্থ দিতে হইত এবং রাজসরকারে দিওাণ আর্থ-দও দিতে হইত।

यवन, कात्यांक, शाक्षांत्र, मीमाख अरमण ও উত্তর পশ্চিম अरमध्येत সমাজে অভু ও ভৃত্যের মধ্যে বিশেষ ব্যবধান ছিল: ইহার উল্লেখ নিকার ও মহাভারতে পাওয়া বায়। বিহুরপণ্ডিত জাতক হইতে জানা যার দাসদাসীরা চারি শ্রেণীতে বিভক্ত ছিল—(১) যাহারা দাস ও দাদীর গর্ভজাত, (২) অর্বের বিনিমরে যাহারা বিক্রীত হইত, (৩) আইন অমান্তকারীকে দাসত কলিতে হইড, (৪) যাহারা ৰইচ্ছার দাসত এহণ করিত। মুসুসংহিতার মতে ইহাদিগকে সাত ভাগে বিভক্ত করা হইরাছে—(১) বুদ্ধে পরাজিত ও ধৃত বন্দিগণ, (२) याशाजा नित्स्वत्मत्र कीविक। निर्दर्शास्त्र कम्छ मामच कत्रिज,

- (৩) যাহারা গৃহে জন্মগ্রহণ করিত, (৪) যাহারা বিক্রীত হইত,
- (c) বাহাদিগকে অপরের নিকট দান করা হইত, (৬) পুরুষামূক্রমে যাহারা দাদত করিত, (৭) আইনামুদারে যাহারা দাদত্ব করিতে বাধ্য হইত।

অর্থশাল্লেদশ প্রকার দাসদাসীর কথা আছে এবং নারদম্বতিতে ইহারও বেশী সংখ্যার উল্লেখ দেখিতে পাওরা যার। বৌদ্ধ জাতকে नामनामीत विक्रातक छेरलप माधना यात । भागि व्यभनान अप रहेरक ইহাদের বিষয় অনেক কিছু জানা যায়। সাধারণতঃ পুরুষামুক্রমে ইহাদের প্রেকস্থারা দাসদাসীর কাজ করিত। বাড়ীতে ইহারা রন্ধন কার্য্য করিত, বাজার করিত, জল আনিত, ধান ভানিত, চাউল তৈয়ার করিত, ভিক্ষা দিত, থাবার সময় প্রভুকে বাতাস করিত, গোরাল পরিক্ষার করিত, চাবের কাজ করিত, প্রভৃতি যাবতীয় গৃহস্থালী কাজ করিতে হইত। রোমের ক্রীতদাস ও ক্রীতদাসীর স্থায় ইহাদের উপর প্রভুদের সম্পূর্ণ অধিকার ছিল এবং ইহারা গৃহস্বামীর সম্পত্তির মধ্যে গণ্য হইত। বৌদ্ধ প্রস্থে আরও দেখিতে পাই ইহাদিগকে অপরের নিকট দান করা হইত। ইহাদের নিজ্ম স্বত্ধা এবং স্বাধীনতা বলিয়া কিছুই ছিল না। এমন কি বিবাহ করিতে হইলে প্রভুদের মত লইতে হইত।

যেমন একদিকে এইরূপ নিষ্ঠুর প্রকৃতির প্রভু ছিল. আবার স্নেহান্ধ পিতার স্থায় কতকগুলি প্রভু এই দব অন্তজ, নিপীড়িত ক্রীতদাস ও क्रीठमांनीरक ভाলবাদিতেন, স্নেহ ক্রিতেন, ইহাদের ছু:খ বুঝিতেন এবং সেই ত্র:খ মোচন করিবার চেষ্টা করিতেন। বিবেকবৃদ্ধি সম্পন্ন প্রভুরা এই সকল দাসদাসীকে নিজেদের সংসারের স্ত্রী, পুত্র কন্তা ও আত্মীয়দের মধ্যে স্থান দিতেন। ইহাদের মুখ ছঃখের কণা শুনিতেন প্রয়োজন ছইলে ইহাদের স্থপরামর্শ গ্রহণ করিতেন। ইহাদিগকে উন্নত করিবার জন্ত নিজেদের পুত্রকন্তাদের ন্তার লেখাপড়া ও শিল্পকার্য্য শিবাইতেন। প্রভুম হ্রথ ছ:থে ইহারা জড়িত ছিল। প্রভুদের রক্ষনাদি করিয়া দিত, বেশ পরিধান কাজে সাহায্য করিত, গৃহ পরিকার এবং নানাপ্রকার গৃহকাজ করিত। তথাপি প্রভুরা ইহাদের অপবিত্র বলিয়া ঘুণা করিতেন না। এই অশিক্ষিত অনুরত, নিমুখেণীর দাস দাসীরা বাহাতে সমাজে স্থান পায় সেজস্ত চেষ্টা করিতেন। মহাপ্রাণ প্রভুৱা ইচ্ছা করিলে ইহাদের এই দাদত বন্ধন ২ইতে মুক্তি দিতে পারিতেন। দানবীর শ্রেষ্ঠা অনাধপিওকের কোন এক ক্রীতদাসীর কল্পা তর্কে ব্রাহ্মণকে পরাস্ত করিরা মুক্তি পাইয়াছিল। অফুরত সমাজের এই সকল মেয়েদের সহিত উচ্চতর সমাজের পুরুষদের বিবাহের উল্লেখ বৌদ্ধ দাহিত্যে পাওয়া যায়। কোশলের রাজা প্রদেনবিৎ মলিকা নামে এক ক্রীভদাদীর ৰম্ভাকে বিবাহ করিবার পূর্বেব তাহার প্রভুর অসুমতি লইয়াছিলেন।

যাহারা যুদ্ধে পরাজিত বা ধৃত হইত, বিচারে যাহাদের প্রতি
মৃত্যুদণ্ডের আদেশ হইত, কিংবা যাহারা ধণগ্রন্থ হইয়া পড়িত, তাহারা
দাসত্ব করিতে বাধ্য হইড। আবার আনেকে বতঃ প্রবৃত্ত হইয়া দাসত্ব
করেত। একটি পরমাফলরী যুবতী রণকেত্রে বন্দিনী হইয়া দাসত্ব
অবলম্বন করিতে বাধ্য হইয়াছিল। দাস দাসীর দ্বঃথ কটের পরিসীমা
ছিল না। অতি সামাজ্য দোবে ইহাদিগকে কটিন শান্তি পাইতে হইত।
কোন এক গৃহয়ের স্ত্রীর কাছে কালী নামে একটী ক্রীতদাসী ছিল।
সে সমস্ত কাজ অতি ফ্রাক্রমণে করিত। একদিন বুম হইতে উঠিতে
তাহার দেরী হয়, সে জল্প গৃহক্রী তাহার উপর বড়ই বিরক্ত হন।
পরদিন সে আবার দেবী করিয়া উঠিলে তিরম্বত হয়। ভূতীয় দিন
আরও দেরী করিয়া উঠিলে গৃহক্রী রাগান্বিত হইরা কালীকে এরমণ
প্রহার করে যে তাহার মাণাটি একেবারে ভালিয়া বায়। ক্রীতদাসের
অপেকা ক্রীতদাসীর অবস্থা আরও শোচনীয় ছিল। গৃহেকাত দাস-

দাসীর মধ্যে বিরনীর নাম পাওয়া যায়। দাসী হস্পরী হইলে অপরকে উপহার স্বরূপ দান করা হইত। হ্ববিধা পাইলে দাস দাসীরা মনিবের অর্থ ও জিনিব পত্র চুরি করিত। অনেকে এই অত্যাচার সহ্য করিতে না পারিয়া হ্যোগের প্রতীক্ষার থাকিত। মুক্ত ও স্বাধীন জীবন যাপনের জন্ত, অত্যাচারী ও নিঠুর প্রভূদের হাত হইতে নিক্তি পাইবার জন্ত, দাসত্ব বন্ধন ছিল্ল করিবার জন্ত, নিজেদের প্রাণ বাঁচাইবার জন্ত, ইহারা প্রভূব বাটি হইতে প্লায়ন করিত।

কেবল যে রাজা ও ধনীরা ক্রীতদাস ও ক্রীতদাসী রাথিত তাহা নহে—এার্ন্নণেরা, শ্রামনেরা, গ্রামবাসীরা, কুষকেরা সকলেই তাহাদের কাজের জস্ত ইহাদিগকে নিযুক্ত করিত। বৌদ্ধান্ত দেখিতে পাই অত্যাচারী লোকদিগকে রাজার আদেশে দাসত্ব করিতে হইরাছিল। কোনও এক গ্রামের মোড়ল রাজার সন্মুখে গ্রামের লোকজনের বিরুদ্ধে মিখ্যা নিন্দা করার ফলে দাসত্ব গ্রহণ করিতে বাধ্য হইয়াছিল। এমন কি রাজমন্ত্রীরাও হিংসাবশতঃ যদি অস্তায় করিতেন কিংবা জ্বস্তায় করিতেন সাহায্য করিতেন তাহা হইলে তাহাদের শান্তি স্বরূপ দাসত্ব করিতে হইত। ইহা হইতে বেশ বুঝা যায় যে সমাজে দাসত্ব অতি ঘৃণ্য ও নীচ কাজ বলিয়া পরিগণিত হইত।

व्यहिश्म धर्मित व्यवर्कक महामानव वृद्धामायत वाणी क्रनगर्गत अमाप्र এক নৃতন আলোকের সন্ধান দিয়াছিল। এই হৃদয়হীন দাস প্রথা সমাজ হইতে দুরীভূত করিতে তিনি বহু চেষ্টা করিয়াছিলেন, কারণ তাঁহার ধর্শ্বের মূলমন্ত্র ছিল বিশ্বপ্রেম ও বিশ্বতাতৃত্ব। মানবের মুক্তিকামী বুদ্ধদেব দাদতকে কারা যন্ত্রণা-ভোগ, খণ, রোগ, এবং কণ্টকাকীর্ণ পথের সহিত তুলনা করিয়া বলিয়াছেন, ইহা অতীব কষ্টকর এবং ছ: থতাদ কাৰ্যা। তাঁহার অমৃত বাণী বহু অফুরত দাস দাসীর চরিত্র গঠনে সহায়ত কিরিয়াছিল। বৌদ্ধ সংঘে ক্রীত দাস দাসীর ও ঋণগ্রন্থ বাক্তির স্থান ছিল না। তিনি উপাসকদের দাস দাসী ক্রয় ও বিক্রয় করিতে নিষেধ করিয়াছিলেন। হতভাগ্য দাস দাসীদের অবস্থার উন্নতির জন্ম বৃদ্ধদেব সং গৃহস্থকে অতি প্রয়োজনীয় পাঁচটি কর্ত্তব্য প্রতিপালন করিতে উপদেশ দিয়াছিলেন—(১) শক্তি এবং সামর্থ্যাসুষারী ইহাদিগকে কার্য্যে নিযুক্ত করিবে, (২) ইহাদিগকে উপযুক্ত থাছ এবং বেতন দিবে, (৩) পীড়িত হইলে ইহাদিগের শুক্রবার ব্যবহা कतिरव। (४) निष्करमत्र मुश्रताहक ७ छान शास्त्र इहेर्छ हेरामिश्रक ভাগ দিবে, (৫) মধ্যে মধ্যে ইহাদিগকে ছুটি উপভোগ করিতে দিবে।

প্রাচীন ভারতে সমাজে দাসভ ছিল এবং দাস দাসীর সংখ্যা ক্রমণই বন্ধিত হইরাছিল, কিন্তু তাহাদের অবস্থার বিশেষ কোন উন্নতি দেখা যার না। বহু কষ্টকর কার্য্য হইলেও বৌদ্ধ্যুগে দাসভের অভিত বিল্পু হয় নাই।১

১। এই প্রবন্ধ প্রণায়ন কালে যে সমস্ত পৃত্তক হইতে আমি বিশেষ সাহায্য পাইরাছি তাহার তালিকা প্রদন্ত হইল :—বৃদ্ধিই, ইণ্ডিয়া (রিধুডেভিডস্), অর্থণাত্ত্ব (ভাম শাল্পী), এনসিয়েট ইণ্ডিয়া (ম্যাক্
ক্রিপ্ল), মহিম নিকার, পপঞ্চমদানি, বিনয় পিটক, মনুসংহিতা,
অসুত্তর নিকার, অপদান, আচার, সুস্ত্র, ধ্রুপদ ভাত বিনয়বত, ভাত,
দীব নিকার, মহাবংশ ইত্যাদি।



—তেরো–

একদল লোক যথাসাধ্য সেকে গুরু এসেছে—বেন हेराव नागारकत समाराय । जात এकान डिर्फ अरमहरू দোজা কেত থেকে, তাদের গায়ে লাল মাটির স্বাক্ষর। খড়ি-ওড়া কক শরীর—তেলের অভাবে জমাট বাঁধা লাল চুল; হাতে হাঁহেয়া আছে, লাঠিও আছে। ময়লা গামছায় বেঁধে চিঁড়ে মুড়ির নাস্তাও নিয়ে এসেছে কেউ (कडे—मत्त्र चार्ट गित्तत किरा (मनी नर्थन। ज्यानक দূবে থেতে হবে -- কত রাত হবে ফিরতে, কে জানে। আর বলা যায় না-জনায়েতের পরে হয়তো গানের ব্যবস্থাও থাকতে পারে—এমন আশাও কারো কারো মনে স্থান পেয়েছে। রাভটা মন্দ কাটবেনা তা হলে।

आंत्र आर्ष्ट सनकरमक कोकिनात । निरम्रदात **धांतिरक्टे जात्रा अरम कू**छिह्छ। त्रः-ज्ञल-गांख्या डेर्नित ওপর চকচক করছে পেতলের চাপরাশ—এই বিশেষ উপনক্ষাটির জন্মেই মেজে ঘষে তাদের পরিফার করা ংয়েছে। অনাহুতভাবেই সভার শান্তিরক্ষা করছে তারা।

- की शर्ष डिनिटक ? < त्रांनमान कतिरवन ना ?
- -- এই मिका, हुन कति देवरमा कार्रात। श्रारमाका **७३** कि व किवा बारमना नागाईल (इ?
- চিল্লাবা হয় তো এইঠি নাকি উঠি যাও। ইটা তামাসা নহো, ওয়াঞ হবি।

রোদে ঝক্ঝকে চাপরাশ আর গম্ভীর মুখেও তারা ষ্ণোচিত পদম্বাদা রাখতে পারছে না। নানারকম টীকা-विश्रनि जामह् जात्मत्र नका करत्।

—हेम्, जानशांना छाटबा टर ! यहान् माटबांगा रहन ! আর একজন চিষ্টি কটিল: আইতের (রাভের) योगा होत प्रिथित वांश वांश कित्र शांनावां श्रेष शोव ना ; এইঠে আসি মেলাল তাপাছে।

— निर्मारे कटला स्था काहमत वाानात किছू नारे—

আইতে আসি থামোকা চিল্লাই চিল্লাই খুমের দফা রফা প্রায় ছ্হাজার লোক জড়ো হয়েছে শাহুর কাছারীর সামনে। করি দেয়। ফের চৌকিদারী ট্যাকেসা না দিবা পারিলে ষটি বাটি ক্রোক করিবা চাহে।

> - এই চুপ চুপ- আট मण अन धमक मिरा छेठेल। मत्त्र मात्र इ शंकात लाक्ति पृष्टि शाविक श्ल अकरे पित्र।

> একখানা প্রোনো টেবিলের আশেপাশে খানকতক চেয়ার। তার পেছনে একটা উচু বাঁশের মাথায় অর্থ-চক্রাকৃতি হরিৎ পভাকা। পৃথিবীর সর্বদেশে, সর্বকারে ঐস্লামিক ভাতৃত্বের প্রতীক; ইদের চাঁদের চির প্রত্যাশা - একটি ঞ্ব-নক্ষত্রে সত্যধর্মের চির-ইন্সিভ, গাঢ় সবুজের বর্ণলেখায় চির-তারণাের প্রদীপ্ত প্রতিশৃতি। মোহমদ রম্বলের (দঃ) কদমে কদমে অনুসরণ করে ত্রুত্ত অভিযানের দিখিজয়ী ঝাণ্ডা।

> হাওয়ায় উড়ছে সবুজ পতাকা। শাহুর কাছারী থেকে নেমে সেই পতাকার তলার এসে আন্তে আন্তে দাঁডালেন পাঁচ সাত জন-আজকের অফুষ্ঠানের যারা কর্ণধার। তাঁদের মধ্যে সর্বাত্তা এসেছেন ফতেশা পাঠান-পর্বে কালো আলপাকার লংকোট, আদির পাজামা, মাধায় জরির কাজ-করা টুপি; বুকে দোনার চেনে বাধা একটা ঘড়িও সেঁটে নিয়েছেন। প্রশাস্ত গান্তীর্যে এসে তিনি মাঝখানের চেয়ারটা দথল করলেন—আজকের সভায় অনিবাচিত হলেও অনিবার্য সন্তাপতি তিনি। পেছনে পেছনে এলেন व्यानिम्मिन मार्फोत्र, এकांक व्यानी गांशांत्री, बन वृहे कून-माञ्चात, थानात कमानात भाट्य, शाननशत मम्बिट्सत हेमाम এवः हेम्माहेल। भाक जामन त्नवात्र मत्य मत्य তাঁরা হাততালি দিলেন-সমবেত জনতাও আনন্দে কর-তালি দিয়ে উঠল।

> বাকী সকলে কেউ কেউ চেয়ারে, কেউ কেউ সামনে পাতা ছুখানি বেঞ্চিতে বসতে যাচ্ছেন, এমন সময় আকাশে मूठि जुल देनमांदेन ही कांद्र करत फेर्टन: मूननिय नीन किन्दावाम-

সংস্থা সংস্থা গলায় শোনা গেল আন্তরিক প্রতিধ্বনি :
মুস্লিম লীগ জিন্দাবাদ—

- —পাকিস্তান—
- -- किन्तावात !
- -কায়েদে আজ্ঞ-
- -- किनावान !
- এইবার বস্থন সব, এখনি সভার কাজ আরম্ভ হবে—
 ইসমাইল আদেশ করল। বছর বাইশ বয়েস হবে ইস্মাইলের। একটু কুঁজো—একটু ঢ্যাঙা। অয়প্তে এলোমেলো মাথার চুল; মুখে খোঁচা খোঁচা গোঁফ দাড়ি।
 শার্টের আন্তিন কছইয়ের ওপর আরো খানিকটা গোটানো
 ক্সংকল্পে মুঠো-করা হাত। চোখের দৃষ্টিতে একটা উগ্র
 চাঞ্চল্য—যেন যে কোনো মুহুর্তে একটা ভয়ন্কর কিছু করবার
 জন্ম প্রস্তুত হয়ে আছে সে।
- —গোড়াতেই আমাদের উদ্দেশ্যটা একটু স্পষ্ট করে আপনাদের খুলে বলা থাক। ইন্মাইল আরক্ত করল: অবিশ্বাস্ত হলেও এটা সত্যি যে আমাদের অনেকেই পাকিন্তান কথাটার মানে পর্যন্ত জানেন না। এমন কি আমাদের মহান্ নেতা কায়দে আজম জিরার নাম পর্যন্ত শোনেন নি, এমন লোকও এ সভায় আছেন। স্থতরাং—

ত্তরাং জনন্ত ভাষায় পাকিস্তানের কথা বলতে আরম্ভ করল ইসমাইল। আরম্ভ করল আরবের মক্ষভ্নি থেকে কোরাণ আর জুল্ফিকারের গুনিবারের অগ্রগমনের ইতিগাস; আগুন-ঝরা ভাষার বলে গেল, কেমন করে কাফেরদের রক্তে তরবারি আর বর্ণা ফলককে লান করিয়ে, সিল্পু সোমনাথ-গুর্জর জরের ধারা বয়ে গৌড়-বঙ্গের প্রত্যম্ভে প্রভাম্ভে প্রল শেব-ধর্মের প্রাণবক্তা। বর্ণনা করে গেল কেমন করে বাদশাহ আলমগীর সারা হিন্দুখানের কোরেশ-দের ভাঙা বিগ্রহের শিলা দিয়ে রচনা করলেন মস্জেদের সিঁড়ি; তারপরে প্রল ইংরেজ—এল হিন্দুর চক্রান্ত। সে চক্রান্তের আজো শেষ নাই।

এই পর্যন্ত এসে ইসমাইল একবার থামল। সমস্ত সভা গান্তীর্বে গম গম করছে। বলবার শক্তি আছে ইসমাইলের। সভা কেমন করে জমিয়ে নিতে হয় সে তা জানে।

ইন্মাইল মাথার ওপর হরিৎ পতাকাটার দিকে

ভাকিয়ে নিলে একবার। উড়ছে স্থের আলোয়—উড়ছে একটা সগৌরব প্রায়ন্তায়। আজাদী কি ঝাণ্ডা।

--বন্ধুগণ, মন দিয়ে আমার কথাগুলো একটু বুঝতে চেষ্টা করুন। মনে রাথবেন, উনিশশো ছয় সালে আমাদের লীগ জন্ম নেবার পরে তাকেও অনেকথানি পথ কেটে এগোতে হয়েছে। আমরাও একদিন হিন্দু কংগ্রেসের হাতে হাত মিলিয়েছিলাম। ১৯১७ माल চুক্তিতে এক সঙ্গে আঞাদীর লড়াইয়ে দাঁড়িয়েছি আমরা, লড়েছি থেলাফতের দিনে। সেদিন আমাদের জিলা मार्टिव निष्मा कर्धामत व्यक्तामवक वन्छन। তারপর স্বাধীনতার লড়াইয়ে একধাপ এগিয়ে গিয়ে যেদিন আমরা পুরো স্বাধীনতা চাইলাম—দেদিন—দেই ১৯২২ দালে হিন্দু কংগ্রেদই "স্বরাজের" ভাওতা তুলে লড়াই थांभिए प्र पिता। अधु नज़ारे थामान ना-धन हिन्दू মহাসভা। দেখা গেল কংগ্রেসের পথ হিন্দুর পথ-আর মুসলমানের যদি কোনো রাস্তা থাকে তা হলে তা এই मून्लिम लौज-

पक्रिंग िक्क शिन हेन्याहेला हैं। एवं व्यागाय प्रथा मिला: किंक प्रत्यंत्र प्रत्यं प्रत्यं कार्णित। ১৯০१ नाल यिमन कर्धाराय नरक व्यामा एवं व्याप्त प्राप्त प्राप्त व्याप्त व्याप्त प्राप्त प्राप्त कर्धाराय कर्धाय कर्धाय व्याप्त व्याप्त प्राप्त व्याप्त प्राप्त व्याप्त कर्धाय कर्धाय व्याप्त व्याप्त

—পাকি তান জিন্দাবাদ!—সভার মধ্যে ঝোড়ো হাওরা গর্জন করল। কুনালে ঘর্মাক্ত মুখখানা সুছে নিয়ে বসতে বসতে ইসমাইল বললে, এবার মস্জিদের ইমান সাহেব আপনাদের তুচার কথা বলবেন। সভায় আবার প্রচণ্ড করভালি পড়ল।

ইমাম সাহেব একবার হাসলেব। চুম্রে নিলেন ধুসর রঙ-ধরা শাদা দাড়ির গোছা। তারপর উচ্চকণ্ঠে কোরাণের একটা 'হ্বরা' আউছে বললেন, এর অর্থ হ'ল, বিধর্মী কাফেরের সকে পাশাপাশি কথনো মুদলমানের বাস করা চলবে না, তাকে লড়াইয়ের জন্তে সব সময় তৈরী থাকতে হবে—দরকার হলে প্রাণ দিতে হবে—

উত্তেজনার যে বারুদ ইতিমধ্যেই সঞ্চিত করে রেখেছিল ইসমাইল, তাতে আগুনের উত্তাপ সঞ্চার করে আসন নিলেন ইমাম সাহেব।

সভার তথন মধুচক্রের মতো গুঞ্জন উঠেছে। ইস্মাইলের শহরে বক্তৃতা সকলের কাছে স্পষ্ট হয়নি, কিন্তু ইমাম সাহেবের কথাগুলো নির্মন এবং তীক্ষ। কোথাও কোনো আড়াল নেই—নেই বিন্দুমাত্র অস্পষ্টতার আভাদ।

- -इं।, পাकिन्डान निवा श्रव शंमादित ।
- —কাফেরের সাথ হাম্রা আর নি থাকিম্।
- -- शांकिन्छान जान मान विहे काराम कतिया हिरत ।
- —মোক্ থালি একটা কথা কহেন। পাকিস্তান হই যায় তো খুব ভালই। 'ফের প্যাট ভরি থাবা পামু তো হামরা ? সাটিফিকেট, উচ্ছেদ তো উঠি যাবে ? শাহু তো ব্যাগার ধরিবে না ? বকেয়া থাজনা তো মাফ করি দিবে ?

কথাগুলোর কোনো স্পষ্ট জবাব কেউ দেবার আগেই আবার সাড়া উঠন: এই চুপ, চুপ! মাস্টার সাহেব ক্রোছেন।

এবার প্রচণ্ডতম ক্রতালি। সব চাইতে জনপ্রিয়, সর্বজনশ্রদ্ধের আলিমুদ্দিন মাস্টার এইবার দাঁড়িয়েছেন তাঁর বক্তব্য বলবার জন্তে। সকলের হৃংথে কপ্তে অকুত্রিম বদ্ধ। প্রয়োজনের বাদ্ধব। হুর্দিনের একনিষ্ঠ আখাস।

পড়স্ত স্থের আলো পড়েছে সব্স পতাকায়—যেন একটা অপূর্ব দীপ্তি ছড়াছে তার থেকে। 'নৃর—এ— গাকিন্তান'! সে দীপ্তি পড়ছে আলিম্দিনেরও প্রশন্ত মুখে। কঠিন ভাস্কর্যে গড়া একটা তাম পিন্তল মূর্ভির মতো তার দেহের রেথাগুলো অত্যন্ত স্পষ্ট আর প্রকট হয়ে উঠেছে। দাকিপাত্যের মন্দিরের কোনো ছায়া-বন গর্ভ গৃহে দীপ-দীপিত দেবমুখের মতোই দেখাচেছ তাঁর মুখথানা।

ভারণর কয়েকবার নি:শব্দে নড়ে উঠল তাঁর ঠোঁট ছটি। বলবার আগে কিছু একটা যেন আউড়ে নিলেন নিজের ভেতর। একবার তাকালেন মাথার ওপরকার পতাকার দিকে। পতাকা ছাড়িয়ে আকাশের দিকে। ওই সব্জ পতাকার ওপর যে কিরণ-লেথা বিশ্বিত হয়ে পড়েছে তাকি পাকিন্তানের পূর্বাভাস না, কোনো আগামী শূক্যতার প্রতিভাস?

তারও পরে জনতার মধ্যে নামল তাঁর দৃষ্টি। একদল মাহ্য । তাঁর কাছ থেকে শোনবার জন্তে অপেক্ষা করে আছে। কিন্তু একদল মাহ্য ? না—এক হয়ে গেছে। একটা শক্তি—একটা বিশ্বজ্ঞাই শক্তি। যা অপ্রতিহত প্রভাবে এগিয়ে গিয়েছিল মক্কা থেকে মরোকা, মরোকা থেকে মন্বোকী। শক্তি। সহস্র ছাড়িয়ে লক্ষ—লক্ষ ছাড়িয়ে কোটি। শিখায়িত রক্তধারায়, বজ্ববাহী পেশীতে পেশীতে। The great human dynamo! Liberator of oppressed and exploited earth!

কিন্ধ।

কোন্ লক্ষো? সব সভ্য কি বলতে পেরেছে ইসমাইল? তথ্য দিয়েছে, আবেগ দিয়েছে ভার চাইতেও বেশি। কিন্তু ভারপর? কোন্ পথে এগিয়ে নিয়ে যাবে এই শক্তির বভাকে—এই চল-বিদ্যুতের ধারাকে? কারা নিয়ন্ত্রণ করতে পারবে এই বিপুল human dynamo?

একটা উগ্র চঞ্চলতা ইস্মাইলের চোথে মুখে—কোনো
নিশ্চিত লক্ষ্য নেই যেন। জলতে চায়—জালাতে চায়।
ফতেমা পাঠান? চমৎকার সেজেগুজে এসেছেন, গা
থেকে আতরের গন্ধ বেকছে—নির্বোধ আনলে ঘন ঘন
পাক দিছেন কাঁকড়া বিছের লেজের মতো গোঁফ
জোড়ায়। থানার জমাদার সাহেব অল্ল অল্ল হাসছেন,
নীচু গলায় কথা কইছেন পাশের একজন স্থল মাষ্টারের
সক্ষে: হিন্দু ইন্সপেক্টারটা থাকাতেই ডিগ্রেড, হয়ে
গোলাম, বুঝলেন। যদি কোনো মুসলমান থাকত—

ঘূবের দারে লোকটা ডিগ্রেডেড্ হয়েছিল—দোষ দিছে হিন্দু কর্মচারীর। এরা—এই এরা হবে রাষ্ট্রের কর্ণধার। আলিমুদ্দিনের রক্ত তেতে উঠল, জ্বালা ধরল মাধার ভেতর। ফডেমা পাঠান—ধোদাবজ্ঞ খন্দকার—

हेममाहेल करिश्वारित जाँदिक म्लान कर्रल।

—বলুন, বলুন মাস্টার সাহেব। প্রায় তিন মিনিট ধরে যে চুপ করে দাঁড়িয়ে আছেন!

হাঁ—বলতে উঠে বড় বেশিক্ষণ ধীরে ভাবছেন তিনি।
চমকে উঠলেন আলিম্দিন। তড়িৎ তরকের স্পর্শে উচ্চকিত
একটা শবদেহের মতো নড়ে উঠলেন। তারপর:

ভাইদব, আমার বন্ধু ইস্মাইল সাহেব আপনাদের দব মোটামুটি খুলে বলেছেন। কাজেই আমার আর নৃত্ন কিছু বলবার নেই। পাকিন্তান এবং মুদলিম লীগের সার্থকতা সহক্ষে আপনাদের যে কোনো দলেহ নেই, আশা করি, সে কথাও আমাকে নতুন করে বলতে হবে না। শুধু একটা প্রশ্ন আমার আছে। আমরা, বারা আজ এমন করে পাকিন্তানের কথা আপনাদের বলতে এসেছি—বুকে হাত দিয়ে আমাদের বলতে হবে—সে ভার নেবার যোগাতা আমাদের আছে তো ?

জনতা নির্বাক হয়ে তাকিয়ে রইল। ঠিক ধরতে পারছে না। আর চেয়ারে বেঞ্চিতে বারা বদেছিলেন, তাঁরা পরস্পারের দিকে জিজাম দৃষ্টিতে বুলিয়ে নিলেন—কোন্ দিকে এগোতে চাইছেন নাষ্টার ?

আলিমুদ্দিন বললেন, আমি জানতে চাই—কার জন্তে পাকিন্তান ?

অস্বন্ধিতে নড়ে চড়ে উঠল ইসমাইল: কেন মুসলমানের ?

—বেশ কথা। কিন্তু মনে রাথবেন, ১৯০৩ সালে
লীগের জন্মদিনে সব চেয়ে বেশি খুশি হয়েছিল ইংরেজ।
সেদিন সে আশা করেছিল, এই লীগের আশ্রয় নিরেই
দেশের আজাদীর লড়াইকে সে ডুবিরে দেবে।

ইসমাইল আর বসতে পারল না, ছটফট করে উঠে দাভালঃ

—মাস্টার সাহেব এতদিন পরে কেন তুলছেন ওসব পুরোনো কথা? ১৯০৬ সালে যা হয়েছিল, তারপরে ব্দনেক বছর পার হয়ে গেছে। আৰু তো মুসলমান স্ত্যিকারের লড়াইয়ে নেমেছে।

আলিমুদ্দিন বললেন, মানি সব মানি। কিন্তু একটা কথা আমার বলবার আছে। লর্ড মিণ্টোর আমলে যে আর্থপরের দল নিজেদের পেট-মোটা করবার জন্তে লীগের থাতায় নাম লিথিয়েছিল, তারা কি আজো আমাদের মধ্যে নেই ?

इनमाइन जिक्करत वनतन, तनह।

—আমি আপনাকে জবাব দিতে বলছি না ইস্মাইল সাহেব, আপনি বহুন।—তীত্র চোবে আলিমুদ্দিন ইসমাইলের দিকে তাকালেন।

মুঠো-করা হাতটাকে আরো শক্ত মুঠোয় ধরে ইসমাইল বললে, আপনিই অনাবশুক কথা বলছেন মাস্টার সাহেব, আপনারই বদে পড়া উচিত।

সভার একটা কলরব উঠল।

আলিমুদ্দিন সোজা শাহর দিকে তাকালেন: প্রেসিডেণ্ট সাহেব, আমি কি বদে পড়ব, না আমায় বলতে দেওয়া হবে ?

সামনে যারা ছিল, তারা সমস্বরে চেঁচিয়ে উঠল: বলুন, বলুন, বলে যান আপনি।

ফতেশা বিব্রহভাবে তাকালেন এদিকে। গোঁকে পাক না দিয়ে টেনে টেনে লখা করতে লাগলেন সেটাকে। বললেন, না, না, আপনি বলুন। বোসো হে ইসমাইল, এখন ওঁকে বাধা দিয়োনা।

অসম্ভষ্ট মুখে বিড় বিড় করতে করতে ইসমাইল বসে পড়ল। অধৈগভাবে তাকালো হাতের ঘটিটার দিকে।

শরীরটাকে আরো ঋতু করে দাঁড়ালেন আলিম্দিন।
মাধার ওপর রাঙা আলোর পতাকা ঝলমল করছে—
মহিমামর হরে উঠছে 'ন্র-এ-পাক্তান।' এই পতাকার
নিচে দাঁড়িরে মিথ্যে বলা যাবে না, কোনো কপটতাকে
প্রশ্রের দেওরা যাবে না। সত্য চাই, আত্মদর্শন চাই।
এখন থেকেই পরিষ্কার করে নিতে হবে সব হিসেব
নিকেশ। জেনে নিতে হবে কে দোভ, কে ছুশমন।
কে চলেছে সম্মুখের পথ কেটে, কারা পায়ের তলার গড়ে
ভূলেছে নিঃশব্দ চোরাবালি।

সেই 'নুরী ঝাণ্ডা'? নিচে তাঁকে মনে হতে লাগন

তাম্র-পি**স্তলের নির্ভূ**ণ, স্পষ্টরেথ দীপ্ত মূর্তি। তাঁকে বলতে হবে—সত্য বোষণাই তাঁকে করতে হবে।

আলিম্দিন বললেন, আবো সোজা কথার আমি আসব। ধক্ষন, এই সভাতেই এমন লোক উপস্থিত আছেন, বাঁদের মতো মুসলমানের শত্রু আর কেউ নেই। তাঁদেরই আগে আমাদের চেনা দরকার।

--কারা তারা ?

চেষ্টা করেও একটা কটু প্রশ্ন এড়াতে পারলনা ইস্মাইল।

— কারা তারা ? — মৃতির চোধছটো অংশজন করে উঠল

— দক্ষিণী মন্দিরের নটরাজের হীরক নেতের মতো। ধেন
দেখা দিল, অগ্নি-বর্ধণের পূর্ব-সংকেত।

আলিম্দিন বললেন, যদি বলি, আমাদের এই ইমাম সাহেব— যিনি একজন হাজী এবং বিখ্যাত আলেম, তিনি আমাদেরই সমাজের অংশ—আমাদের ভাই ধাওয়াদের মস্জিদে চুক্তে দেন না ? তা হলে কি বলতে হবে তিনি ইস্লামের ব্যু ?

- শাস্টার সাহেব !—যেন আর্তনাদ করে উঠলেন শাস্ত।
- —হঁ, আপনার কথাও আমি বলব।—আলিম্দিনের চোথ দিয়ে এবার সত্যিই আগুন ঝরতে লাগল: প্রস্থাদের আপনি বেগার খাটান। গরীবের মুখের গ্রাস কেড়েখান। অনবরত অত্যাচার করে দেশের লোককে আপনি শেষ-দফায় এনে ফেলেছেন। যে মেয়ে আপনাকে ধর্মবাপ বলে—বিহুবল শুক্ক সভাটার ওপর রক্তচকু মেলে আলিম্দিন বললেন, আপনি তার স্বাক্তে পারার ঘা ছড়িরে দিয়ে বিশ্বাসের মর্যাদা রাখেন। বলুন—আপনারাই কি নেতা? আপনাদের হাতেই কি পাকিশুনের ভবিশ্বৎ?
- চুপ কক্ষন—বসে পজুন—পাগলের মতো চেঁচিয়ে উঠল ইস্মাইল !
- —লোকটা কেপে গেছে—চীৎকার করলেন ইমাম সাহেব।

কতেশার মুখ দিয়ে শুধু একটা অব্যক্ত ধ্বনি বেকল।

এত জোরে সরু গোঁফটাকে আকর্ষণ করলেন যে ছিঁড়ে

যাবার উপক্রম করল সেটা।

—না, আমি বসবনা, আমি বলবই—আলিমুদ্দিনও

চীংকার করলেন এইবারে।

मणात्र विमुख्यात याष्ट्र वहेटह । नाना कर्छ नाना त्रकम

কোলাংল উঠছে। যেন ক্ষেপে গেল ইসমাইল। কামাটা ধরে সজোরে টান দিলে আলিমুদ্দিনের।

আলিমুদ্দিন তিন পা পেছনে হটে এলেন।

- আমি বলবই-আমি বলবই-
- —বেশ!—স্বরপ্রামকে সমুচতের পর্দায় তুলে শেষবার বললেন আলিমুন্দিন: তা হলে আমি জানিয়ে যাছি, পাকিস্তানের লড়াইয়ে আজ থেকে তুশমন মুসলমানও আমার শক্র। তাদের বিরুদ্ধেও আজ থেকে আমার লড়াই—

প্রচণ্ড ঝড়ের মধ্যে সভা পেকে একটা জলস্ত হাউইরের মতো ছুটে চলে গেলেন আলিমুদ্দিন মাস্টার।

বাতাস নেই। একটা গমগমে শুমোট সন্ধ্যা ঘনিয়েছে ঘরের মধ্যে। দিগ্বিস্থত বরেক্সভূমির মাঠের ওপরে হাওরা ঘেথানে চকিলে ঘণ্টা দামাল্ ছেলের মতো থেলে বেড়ার, বয়ে নিয়ে যায় মাটির গন্ধ, ঘাসের গন্ধ; গোথরো সাপের নিখাসের সন্ধে সন্ধে কেয়ায়ুলের সৌরভ বরে নিয়ে যায় তালগাছের মর্মর থেকে, শুরু করে শন্ধচিল আর গিন্নী শকুনের কারা,—সেথানে হঠাৎ সব থমকে দাড়িয়েছে যেন কোন্ অন্ত্ত ভাহ্মতীর মন্ত্রোচ্চারণে। যেন আকাশ থেকে ঘনাছে কোনো দিগ্দিগন্তব্যাপী অশরীরীর অপছায়া—আগর মৃত্যু, আসয় ঝড়, আসয় ত্রিপাক। আলেয়াজলা বরিন্দের মাঠে ঘর-পালানো রাত-চরা গোরুর দল যেন আচমকা ভয় পেয়ে বসে পড়েছে কোনো ঝুরি-নামা ডাইনির মতো অন্ধকার বটের ছায়ায়—ভাদের সবৃত্ত পিলল চোথে কিসের আত্নিত জিজ্ঞাসা।

শাহর বৈঠকথানা খরেও সেই শুরুতা, সেই শুমোট। ফরাসের সামনে ছটো জোরালো লর্চন। খরটা অভিরিক্ত আলো হয়ে আছে। সেই আলোর সঙ্গে কুয়াশার মতো জমছে বন-গরী তামাকের ধোঁয়া। রাশীকৃত শুরুতার মধ্যে শুধু অন্থরণিত হচ্ছে মশার প্রান্তিহীন শুঞ্জন।

मुर्थाम्थि क्षन। भाह बाद रेममारेल।

ইস্মাইল ডিব্ৰুভাবে হাসল। ডিৰ্যক চোখে তাকালো শাহর দিকে।

১ টাকা ১৪ আনা পর্যান্ত করার অনুমতি দেওয়া আছে। কিছ কোন কোন স্থানে সর্বার্থসাধক সমবায় সমিতিগুলি ১ টাকা ১০ আনা মণ দরে করলা বিক্রম করিতেছেন। তাঁহারা যে একেবারে কোন লাভ করেন না. এ কথা বলা बांब ना। कारकरे यांशांबा ५ होका ५८ जाना मन परंद कहना বিক্রম্ব করে, ভাহারা বে অত্যধিক মুনাফা করিয়া থাকে, (म कथा वनाई वांक्ना माळ। यक्ति कथनात्र नियस्त्रण वावला প্রত্যাহার করা হয়, ভাহা হইলে হয় ত কয়লার দাম সকল স্থানেই দেড টাকা পর্যান্ত মণে বিক্রীত হইতে পারে। শাধারণ মাহ্য আজ সকল প্রয়োজনীয় ত্রব্য অভাধিক মূল্যে ক্রম করিতে যাইয়া বিত্রত হইয়াছে। এ অবস্থায় একটি ঞ্জিনিষও যদি কম মূল্যে পাওয়া যায়, তাহা কম আশা ও স্থাবিধার বিষয় নতে। আমরা এ বিষয়ে পশ্চিম বাংলার नत्रवत्रोह विडार्टात पृष्टि व्याकर्षन कत्रि ও विश्वान कत्रि, তाँशांत्रा प्रतिस स्ननशांतत्र कृ: थ पृत कतिवांत सम्र ध विषय অবহিত হইবেন।

প্লী আস্থা কেন্দ্ৰ ও বুনিয়াদী বিভালয়—

छोकांद्र विधानहक्त दांद्र शन्द्रिम वांश्लाद अधान मञ्जी হইরাই বাংলার প্রতি ইউনিয়নে একটি করিয়া সরকারী পল্লী-স্বাস্থ্য-কেন্দ্র প্রতিষ্ঠার ব্যবস্থা করিয়াছেন। যে সকল हैं डेनियान अधिवागीया टाश्रामहे ध अब अभी ७ अर्थ मान कतियाद्यात, त्र मकत देउनियत वाको छाका मत्रकाती खहरिन हहेर**छ निया क्ल्य शां**भिछ हहेबारह । व्यवश्र यनि के नकत (कक्ष छेनवुक्कार नविहानिक श्व, जाश श्रेत স্থানীর জনগণের একটি অভাব দুরীভূত হইবে। কেন্দ্রে ঔষধ বিভরণ কেন্দ্র ছাড়াও আকম্মিক বিপদে চিকিৎসার জন্ম ২টি শব্যা ও প্রাস্থতিদের জন্ম ২টি শব্যা রাখা হইবে। ভাগ ছাড়া কেন্দ্রের ক্মীরা গ্রামে গ্রামে বাইয়া স্বাস্থ্য সম্বন্ধে প্রচার কার্যা চালাইবেন ও বোগের প্রথম হইতেই বোগীর যাহাতে চিকিৎদা-ব্যবস্থা হয়, দেজত চেষ্টা ক্রিবেন। অতি ত্রংখের সহিত প্রকাশ করিতে হইতেছে द चामांत्वत मत्या कृतीं जित्र चठाविक व्यनादात करन नर्व नवकाती वर्ष राविठ रहेला क्लाब गृहश्वी जान ক্ষিমা নিৰ্মিত হয় নাই। বাহাদের উপর নৃতন গৃহ-

নির্মাণের ভার দেওয়া হইয়াছিল, তাঁহারা যে কোন প্রকারে কাজ শেষ করিয়াছেন—বাডীগুলির ৬ মাস পরেই মেরামতের প্রয়োজন হইয়া পড়িয়াছে। সরকারী স্বাস্থ্য-বিভাগ-কর্ত পক্ষের যত্নের অভাবে কেন্দ্র গুলিতে কর্মী বাইতে वा अवशामि यांहेटल विमय हश्यां प्र मत्कांत्री व्यर्थ कि छाटत অপবায়িত হইতেছে, তাহা চিন্তা করিলেও বিশ্বিত হইতে হয়। অথচ সরকারী দপ্তরে পরিদর্শনকারী কর্মচারীর অভাব নাই। কেন যে এরপ অব্যবস্থা হায়ী হইতেছে, তাহা আমামরা ভাবিয়া পাই না। এই চুর্দিনে জনহিতকর कार्यात क्रम लांक कंमी लांन कतियाह, हाला कतिया वर्श-সংগ্রহ করিয়া দিয়াছে, কিন্তু তাহার যদি অপবায় হইতে দেখা যায়, তাহা অপেকা ছ:খের বিষয় আর কি হইতে পারে ? ঐ ভাবে নানা স্থানে নৃতন বুনিয়াদি বিভালয় স্থাপিত হইতেছে। দে জন্তও উৎসাহী ব্যক্তিরা জমী দিয়াছেন-জেলা বোর্ড ও সরকারী শিক্ষা বিভাগ হইতে অর্থ দিয়া বিভালয়গৃহ নির্মাণ করা হইতেছে-কিছ শুনা যাইতেছে, পল্লী স্বাস্থ্য-কেন্দ্রের গৃহের জায় বুনিয়াদী विकालरम्ब शह-निर्भारण्य शलाम थाकिया गांहरल्या । এই সকল কার্য্য সম্পাদনের সময় কর্ড পক্ষ কেন যে জনগণের সহযোগিতা ও সাহায্য গ্রহণ করেন না, ভাষাও আমরা वृति ना। (व-नवकाती कमिनिटक शृह-निर्माण कार्या ज्ञावशांन कदिएक मिर्ट **ब्रोहिंग व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति** व আমরা এ বিষয়ে স্বাস্থ্য, স্বায়ত্তশাদন ও শিক্ষা বিভাগের কর্তাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করি ও আশা করি, ভবিষ্কতে এই সকল অনাচার বন্ধের ব্যবস্থা অবলম্বিত হইবে।

ডক্টর শ্রীমভী রমা চৌধুরী-

খ্যাতনামা পণ্ডিত, অধ্যাপক ডক্টর প্রীমতী রমা চৌধুরী
সম্প্রতি কলিকাতান্থ লেডী ব্রেবোর্থ কলেকের স্থায়ী
প্রিলিপাল নিযুক্ত হইয়াছেন। তিনি কলিকাতা বিশবিভালরের এম-এ পরীক্ষায় দর্শন শাল্পে প্রথম শ্রেনীতে
প্রথম স্থান অধিকার করার পর বাজালী মহিলাদের মধ্যে
সর্ব্বপ্রথম অল্পফোর্ড বিশ্ববিভালরের ডক্টর অফ্ ফিলস্পি
ডিগ্রী লাভ করেন। তিনি ও তাঁহার স্থামী ডক্টর প্রীষ্ঠীপ্র
বিমল চৌধুরী সংস্কৃত সাহিত্যের প্রচারের জক্ত 'প্রাচারাণী'
মন্দির' প্রতিষ্ঠা করিয়া বহু বিবরে গ্রেবণা ও গ্রন্থ প্রচার

করিতেছেন। বেকল রয়াল এশিরাটিক সোদাইটিরও তিনি সর্ব্বপ্রথম মহিলা কেলো। তিনি দেশনেতা স্বর্গত আনন্দ মোহন বস্থ মহাশয়ের পৌতী।

কাশ্মীর মীসাংসার সর্ত্ত-

গত ২১শে জুন জীনগরে কাশীরের প্রধানমন্ত্রী সেধ আবহুলা কাশ্মীর বিরোধ দীমাংসার ছটি প্রধান সর্ভের কথা উল্লেখ করিয়াছেন (১) স্থপ্রতিষ্ঠিত গভর্ণমেণ্টকে বাজ্যের সমগ্র এলাকা প্রতার্পণ ও তথাক্থিত আজাদ কাশ্মীর গভর্ণমেন্টের ও তাহার সৈক্তদলের বিলোপ সাধন (२) शनामात्रशर्णत आक्रमर्गत करण मात्राशामा হওয়ায় যাহারা বাস্তত্যাগ করিয়াছে তাহাদের পুনর্কাসন। **এই इर्हेंট विषय मकल भीभाःमात्र भून एक। मर्ख इर्हें**ট পুরণে কেহ অসমত হইলে কাশ্মীরবাসীদিগকে মূলনীতি হইতে বিচ্যুত হইতে হইবে।—দেখ আবহুলার এই উক্তির পর কাশ্মীর মীমাংসার পথ সহজে সকলের নি:সন্দেহ হওয়া উচিত। এই কথা শুনার পরও রাষ্ট্রসংঘ-প্রতিনিধি শীশাংসার পথে কেন যে বাধা সৃষ্টি করিতেছেন, তাহা তিনিই জানেন। আমাদের বিখাস কাশ্মীর সমস্তার সমাধান কাশ্মীরবাদীদিগকে শেষ পর্য্যন্ত সম্ভোষ দান করিবে।

রাষ্ট্রওরু সুরেক্সনাথ—

গত ৬ই আগপ্ত বহু স্থানে রাষ্ট্রগুক্ষ স্থরেক্রনাথ বন্দোপাধ্যায় মহাশয়ের বার্ষিক স্থতি-সভা হইয়া গিয়াছে। ২৫ বংসর পূর্বের স্থরেক্রনাথ পরলোকগমন করিয়াছেন—তিনি ভারতের জাতীয় আন্দোলনের জন্মদাতা, এ কথা বিলিলে আদৌ অত্যুক্তি করা হয় না। কিন্তু দেশ আজ তাঁহার কথা ভূলিয়া গিয়াছে। কলিকাতা সহরে তাঁহার স্থতি-রক্ষার ব্যবহা হইয়াছে বটে, কিন্তু যে বারাকপুর মূল্বের গঙ্গাতীরে তিনি প্রায় ৫০ বংসর কাল বাস করিয়াটিলেন, তথার এখনও তাঁহার স্থতি-রক্ষার কোন ব্যবহা হয় নাই। যে স্থানে তাঁহার নখর দেহ ভন্মীভূত করা হইয়াছিল, সে স্থানে একটি স্থতিতত্ত নির্মাণের চেষ্ট্রান্ত এখন পর্যান্ত হারে পরিপত হর নাই। যে গৃহে তিনি বাস করিতেন, প্রে প্রকাত হর নাই। যে গৃহহ তিনি বাস করিতেন, প্রে গৃহ এখন ভাড়া দেওয়া আছে। ঐ গৃহটি যাহাতে সরকার কর্তৃক গৃহীত হইরা তথায় একটি জাতীয় যাত্বর প্রতিতা করা হয়, সে ক্ষম্ত স্থাধীন বাংলার নেতৃর্ক্ষের

সচেষ্ট হওয়া উচিত। স্বরেক্সনাথের প্রতিষ্ঠিত ভারতসভার কর্তৃপক্ষের এ বিষয়ে অগ্রনী হওয়া কর্ত্ব্য। তাঁহার
পরলোকগমনের পর ২৫ বৎসর অতীত হইলেও তাঁহার
কোন জীবনী এখনও প্রণীত হয় নাই। তিনি তাঁহার বে
আত্মজীবন রচনা করিয়া গিয়াছেন, তাহা বছ তথ্যপূর্ব
হইলেও তাঁহাকে পূর্বাঙ্গ জীবনী বলা যায় না। স্বর্গত
জ্ঞানেক্সনাথ কুমার তাঁহার জীবনী ইংরাজিতে ২ খণ্ড প্রকাশ
করিয়াছিলেন—তাহাতে ভগু প্রথম জীবনের ঘটনা ও
রচনাবলী প্রদত্ত হইয়াছে। ঐ অসম্পূর্ব গ্রন্থ সম্পূর্ব করিবার
জন্তও তারত-সভা কর্তৃপক্ষের উত্যোগী হওয়া উচিত। আমরা
তাঁহার স্থতি দিবলে তাঁহার উদ্দেশে শ্রন্ধা জানাই ও সঙ্গে
সঙ্গে দেশবাদীর নিকট প্রার্থনা জানাই, বর্জমান সময়ে বেন
তাঁহার আদর্শ প্রচারের উপযুক্ত চেষ্টার অভাব না হয়।
সমহান্তাক্ত সম্প্রক্রমান্ত্র—

১৭৭৫ খুটাৰে হে আগষ্ট কলিকাতা গড়ের মাঠে ফাঁসিতলা নামক স্থানে জাল করার অপরাধে মহারাজ नन्कूमाद्वत कांत्रि इहेबाहिल। त्र नमस्य नन्कूमाद्वत्र বয়স १ • বংসর। তিনি দরিদ্রের সম্ভান ছিলেন এবং নিজ বৃদ্ধি ও শক্তি ছারা শুধু অর্থার্জন করেন নাই, দেশের মধ্যে একজন অসাধারণ প্রভাবশালী ব্যক্তি হইয়াছিলেন। সে যুগেও তিনি বুঝিতে পারিয়াছিলেন, মুসলমান শাসক-দিগকে তাড়াইবার জন্ত বৃটিশকে প্রশ্রম দেওয়া বা সাহাব্য করা দেশের পক্ষে মঙ্গলজনক হইবে না। তৎকালীন ইংরাজ-প্রধান ওয়ারেণ হেষ্টিংস নন্দকুমারকে কোন প্রকারে বণীভূত করিতে না পারিয়া শেষ পর্যান্ত এক ষড়যন্ত্র করেন ও জাল করার অভিযোগে তাঁহার বিচার হর: বিচারপতি ইলাইজা ইম্পে ঐ সামাক্ত অপরাধে তাঁহার ফাঁসির আমেশ एन। नलकुमात्र हानि मूर्थ कांत्रित्र मरक चारताहन करतन। যথন তাঁহার গলায় ফাঁসির দড়ি দেওরা হয়, তথনও তিনি মালা হাতে করিয়া ৰূপ করিতেছিলেন। মৃত্যুকালে তিনি সামাক্ত ভূসম্পত্তি ও নগদ ৫২ লক্ষ টাকা রাখিয়া গিয়া-हिरान । भूमिनारान ब्याय वहत्रभभूत महरतत्र उन्दर्ध श्रीहरू কুঞ্বাটা নামক স্থানে তিনি প্রকাণ্ড অট্টালিকা নির্মাণ করিয়া তথায় বাস করিতেন। সে গৃহ আঞ্চ বর্তমান। গত eर ब्यांगर्ध मनिवांत्र के गृहर महातामा नमकूमारतत क्य স্থৃতি উৎসব হইয়াছিল। স্থানীয় নেতা আছত্রপতি রায়

উৎসবে পৌরোহিত্য করেন এবং কলিকাতা হইতে 🚉 বৃত্ত ্হেমেন্দ্রপ্রসাদ যোব ও শ্রীবৃত কণীক্রনাথ মুখোপাধ্যায় তথায় ৰাইরা অতিথিরূপে সভার যোগদান করিয়াছিলেন। महाताल नमकुमात मधरक छथा देश्ताल ঐতিহাসিকলিগের লিখিত বিবরণের মধ্যেই অধিক পাওয়া যার। তাঁহার মৃত্যুর ১০৭ বৎসর পরে বন্দদর্শন পত্রিকার নবম খণ্ডে আবাঢ় সংখ্যার তাঁহার সহত্তে তথ্যপূর্ব এক প্রবন্ধ 'প্রকাশিত হইয়াছিল। তথনকার দিনে লেখকের নাম ছাপা হইত না কাজেই ঐ প্রবন্ধ কাহার শেখা ৬৮ বংসর পরে আৰু আর জানিবার উপায় নাই। পণ্ডিত সভ্যচরণ শান্ত্রী লিখিত মহারাজা নক্ষকুমারের একথানি জীবনী গ্রন্থ আছে। বর্ত্তমান সময়ে ভাঁহার জীবনী রচনার উপযুক্ত দিন আদিয়াছে। নৃতন অবস্থার তাঁহার জীবনী রচিত হইলে দেশবাসী নন্দকুমার সহস্কে সত্য কথা জানিতে পারিবে। সে मिन गणांत्र वित्र इरेतारह-नम्बक्नारतत वः भवत त्कर नारे -- आत अर्थ छांशासत्र नाहे। कात्करे मतकात स्टेए কুঞ্জণাটার রাজবাড়ীটি দখল করিয়া লইয়া ঐ স্থানে কোন জনহিত্তকর প্রতিষ্ঠান গঠন করা উচিত। তাহা হইলে नक्क्यांत्रत्र चुिं हिरू चत्रेश गृशी त्रिक्छ श्रेर्ट -नत्हर উল সম্বর ধ্বংসপ্রাপ্ত হইবে। যে স্থানে কলিকাতার বিডন স্বোয়ার অবস্থিত, তথায় নন্দকুমারের কলিকাতার বাসগৃহ ছিল। সেখানে ও গড়ের মাঠে ফাঁসিতলায় নন্দ-কুমারের ছুইটি স্বতিভক্ত নির্মিত হওয়া উচিত। এ বিবরে আমরা দেশবাসী সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করি। থাঁহারা স্বাধীন বাংলাম্ব নন্দকুমারের স্থৃতি উৎসবে উত্তোগী হইরা সেই মহাপুরুষের আদর্শ আবার দেশবাসীকে শ্বরণ করাইয়া দিবার ব্যবস্থা করিয়াছিলেন, তাঁহারা সকলের প্রশংসার পাত সন্দেহ নাই।

গোপীনাথ বড়দলই-

আসাদের প্রধান মন্ত্রী গোপীনাথ বড়দলই গত ৩ই
আগষ্ট শনিবার রাত্রি ২টা ৪০ মিনিটের সমর সহসা ৩০
বৎসর বয়সে পরলোক গমন করিয়াছেন। তিনি শনিবারই
শিলং হইতে কিরিয়া আসেন ও রাত্রি ৯টা পর্যান্ত স্ত্রী ও
কুই কন্তার সহিত অভিনর দেখিরা আসেন। রাত্রি ১২টার
হাদযন্ত্রে বন্ত্রণা উপস্থিত হয় ও কোন চিকিৎসার কোন কল
হয় নাই। তাঁহার স্থানে অস্থারীভাবে অর্থ ও রাজ্য মন্ত্রী

শ্রীরুত বিষ্ণুরাম মেথী প্রধান-মন্ত্রী নিরুক্ত হইরাছেন।
গোপীনাথ ১৯১৫ সালে কলিকাভার এম-এ ও বি-এল পাশ
করিরা গোহাটিতে আইন ব্যবসা আরম্ভ করেন। অসহবোগ
আন্দোলনে এক বৎসর কারাদণ্ড ভোগ করিরা তিনি
১৯৩৭ সালে ব্যবস্থা পরিবদের সদশ্য নির্বাচিত হন ও ১৯৩৮
সালে প্রধান মন্ত্রী হন। ১৯৪০ সালে ১ বৎসরের জন্ত ও
১৯৪২ সালে ২ বৎসর তাঁহাকে কারাদণ্ড ভোগ করিতে
হইরাছিল। ১৯৪৬ সালে পরিষদ সদশ্য হইরা তিনি প্রধান
মন্ত্রী হন। তিনি গণপরিষদেরও সদশ্য হইরাছিলেন।
আসামী ভাষার তিনি বহু পুত্তক রচনা করিরাছিলেন।

অধিলচন্দ্ৰ দত্ত-

বাংলার খ্যাতনামা কংগ্রেস-নেতা, কেন্দ্রীয় ব্যবস্থা পরিষদের ভৃতপূর্ব্ব ডেপুটী-সভাপতি অথিলচক্ত দত্ত মহাশয় গত ৫ই আগষ্ট শনিবার বিকালে ৮১ বংসর বয়সে পরলোকগমন করিয়াছেন। ১৮৬৯ সালে ত্রিপুরা জেলার ভরগাছ গ্রামে তাহার জন্ম হয় ও ১৮৯৭ সাল হইতে তিনি কুমিলার ওকালতী আরম্ভ করেন। অল দিনের মধ্যে তিনি খ্যাতিলাভ করিয়া প্রচুর অর্থার্জনে সমর্থ হন। ১৯১৬ माल फिनि वारका भविषामय मम्ख ७ ১৯১৮ माल रकीय প্রাদেশিক রাষ্ট্রীয় সন্মিলনের চুঁচড়া অধিবেশনের সভাপতি হন। তিনি ১৯২৩ সালে আবার ব্যবস্থা পরিবদের সদস্য হন ও ১৯২৮ সালে বদীয় প্রাদেশিক রাষ্ট্রীয় সমিতির সভাপতি হন। ১৯৩২ সালে কেন্দ্রীয় ব্যবস্থা পরিষদের সদত্য ও ডেপুটা সভাপতি হন। ১৯৩৭ সালে সপরিবারে তিনি ইউরোপ ভ্রমণ করিয়াছিলেন। ১৯৪৫ সাল পর্যান্ত তিনি ডেপুটী সভাপতির কাজ করেন। তিনি বছ ব্যবসার বীমা ও ব্যাহ্ব প্রতিষ্ঠানের পরিচালক ছিলেন। ২ বৎসর পূৰ্ব্বেই তাহার স্ত্রী-বিয়োগ হইয়াছিল।

পরলোকে শ্রীশচক্র জ্যোভিরত্ব–

বাংলার খ্যাতনামা জ্যোতির্বিদ ও দার্শনিক পণ্ডিই
শীশচন্দ্র ক্যোতিরত্ব সহালয় গত ১০ই আঘাঢ় ৬৯ বংসর
বন্ধনে পরলোকগমন করিয়াছেন। তিনি নববীপের ভারতবিখ্যাত জ্যোতিবী স্থাত বিশ্বতর জ্যোতিবার্শবের জ্যেতিপ্র
ছিলেন ও নববীপ বিশ্ববিভাগীঠের জ্যোতিব শাস্তের
প্রধান অধ্যাপক ছিলেন। তিনি বলীয় সংস্কৃত প্রসোসিবেসন

ত নামী । বন বিমুখ খননা প্ৰভাৱ গৰাত হিসাবে বহু ভাবে সংস্কৃত সাহিত্যের সেবা করিয়া গিয়াছেন। পুর্ববক্তবাসীন্তিপতক হাক্সপ্রাবাদে

খেরণ-

পূর্ববন্দ হইতে আগত ৫০ হাজার বাজহারাকে হায়দাবাদ রাজ্যে লইয়া বাইয়া পূন্বাসন ব্যবহা করা হইবে।
তল্মধ্যে ৩২ হাজার লোক ঔরজাবাদ জেলার বোকারদান
তাল্কে স্থান লাভ করিবে। ইহার পূর্বে কোন হিন্দু
বাজহারাকে হায়দাবাদ রাজ্যে লইয়া যাওয়া হয় নাই।
য়ুদ্ধের পূর্বে ৭ লক্ষ মুসলমান বাজহারা নিজাম রাজ্যে গমন
করিয়াছিল—ভাহারা এখন অক্তঞ্জ চলিয়া গিয়াছে; পশ্চিমবলের বাজহারাদের এই স্থযোগ ত্যাগ করা উচিত নহে।
বাদালী বিহার, উড়িয়া, উত্তর প্রদেশ প্রভৃতি স্থানে স্বীয়
প্রাধান্দ প্রতিষ্ঠা করিয়াছে। হায়দাবাদে যাইলেও ভাহারা
বাসালীই থাকিবে—অপ্রত তথায় অয় বল্পের সমন্তা থাকিবে
না। তথায় বহু জ্বমী পতিত আছে, শিল্প প্রতিষ্ঠার
স্থযোগও কম নাই—বাকালী সে সকল স্থযোগ গ্রহণ করিয়া
তথায় স্থথে বাদ করিতে পারিবে।

বাস্তহারাদের শিক্ষার জন্ম দান-

পশ্চিমবলে পূর্ব্বপার্কিন্তান হইতে যে সকল বাস্তহার।
আসিয়াছে, তাহাদের শিক্ষার ব্যবহার অন্ত কেন্দ্রীয়
সরকার পশ্চিমবল রাষ্ট্রকে ৬৭ লক্ষ টাকা প্রদান করিবেন
হির হইয়াছে। ঋণ হিসাবে ৫০ লক্ষ টাকা দেওয়া হইবে
ও ১৭ লক্ষ টাকা পশ্চিমবল দান হিসাবে পাইবে। গত
১৯৪৯-৫০ সালেও কেন্দ্রীয় গভর্গমেন্ট ঐ অন্ত পশ্চিমবল
য়াষ্ট্রকে ২৪ লক্ষ টাকা দিয়াছিলেন—তন্মধ্যে মাত্র ১৬ লক্ষ
টাকা ব্যর করা হইয়াছে। শিক্ষা-বিস্তারের অন্ত এই
অর্থ বাহাতে ভালভাবে ব্যরিত হয়, সে অন্ত সরকার ও
য়নসাধারণ উভয় পক্ষেরই সাবধানতার সহিত কাল করা
টাচিত। অতি মৃ:বের বিবয় এই বে, বাস্তহারা ছাত্রদের
হয়্য প্রান্ত বহু অর্থ জনগণ কর্ত্বক অপব্যয়ের কথা শুনা
নিয়াছে। সে অন্ত সরকার পক্ষেরও বিশেষ সতর্কতা
ন্তন্মন প্রয়োজন।

িলের পথ সংক্ষার ও যাম-ব্যবস্থা—

ক্লিকাভার সম্প্রতি বে নিধিল ভারত পেইল বিক্রেডা িম্বন ক্টুরা সিরাছে ভাকার সভাপভিরূপে হাওড়া মোটরের শ্রীবৃক ছ্পীল্ডুমার দে তাঁহার অভিভারশে দেশের একটি বড় সমস্তার বিবরে দেশবাসীর ও সরকারের মনোবোগ আকর্ষণ করিয়াছিলেন। দেশের পথ সংকার ও নৃতন পথ নির্মাণ সমস্তা আৰু সকলকে বিব্রস্থ করিয়াছে। তাহা না হইলে গ্রামে লোকের বসভি, ক্লবি ও বাণিজ্য—কোন বিবরই সম্ভব হইবে না। সে জন্ত পেট্রল ও মোটর গাড়ী হইতে প্রাপ্ত সকল রাজত্ব পথ নির্মাণ



ৰী হুণীলকুমার দে

ও সংস্থার কার্য্যে ব্যন্ন করিবার জন্ত সরকারকে বিশেষ ভাবে অহরোধ জানাইরা সন্মিলনে প্রভাবও গৃহীত হইরাছে। দেশের মোটর যান চলাচল ব্যবস্থা সরকারের নিয়ন্ত্রণাধীন করার সম্পর্কেও সভাপতি মহাশন্ন তাঁহার অভিমত প্রকাশ করিবাছেন। পেট্রল-বিজেতারা আজ দেশের এই প্রয়োজনীর সমস্ভার সমাধানে সচেষ্ট হইরাছেন দেখিরা আমরা আনন্ধিত হইলাম।

আশ্রয়প্রার্থীদের জন্ম জমি দখল—

বাংলা সরকারের জমি-দখল বিভাগ হইতে কলিকাডার সহরতলীর বহু জমি তথাকথিত আশ্রহথার্থীদের জন্ত দখল-ব্যবস্থা করা হইরাছে। কিন্তু আশ্রহণির বিবয় এই বে, বাহাদের জন্ত লমি দখল করা হইতেছে, তাহারা আলো আশ্রহথার্থী বা গৃহহারা নহেন। ভাহাদের মধ্যে

অধিকাংশ লোক গভ ১০৷১৫ বংসর ধরিয়া কলিকাতা সহরে বা সহরতলীতে বাস করিতেছেন-অথন স্থবোগ বুঝিয়া ভাহারা বহু পভিভ জমি জোর করিয়া দখল করিরা বসিয়াছেন। ভাহার পর সে সকল স্থানে গৃহ-নির্দ্মিত হইতে দেখিয়া সরকার ঐ সকল কমি সরকারী আইনে দুখল করিয়া দিবার চেষ্টা করিতেছেন। আমরা পুৰ্বেই বলিয়াছিলাৰ—সংৱতনীতে যে সৰল বাসবোগ্য জমি গত ২০ বৎসর কাল ধরিয়া ব্যবহৃত হর নাই, সরকার যদি সে সকল জমি দখল করিয়া আতারপ্রার্থীদের বিক্রয়ের ব্যবস্থা করেন, তবে তাহাতে কাহারও আপত্তি করা উচিত হইবে না। কিছু কার্য্যতঃ সরকার তাহা না করিয়া, যে স্কল জমি তথাক্থিত বাস্তহারারা জোর ক্রিয়া দখল করিয়াছেন, সে গুলি দখলের ব্যবস্থা করিয়াছেন। এই নৃতন ব্যব্স্থার কোন যৌক্তিকতা **एक्या यात्र ना । शूर्व हरेएड ओ** जकन अभित मूना निर्कातिङ हरेला, वाशासत्र करावत मिक चाहि छपु ठाशांतारे थे সকল অনিতে বাইত। বাহারা জনি কোর করিয়া দখল করিয়াছে, তাহাদের জমির দাম দিবার শক্তি আছে कि ना काना नाहे। क्यीत मृता এथन अनिकांत्रिक इत्र नारे। य जनन क्यो कांत्र कतियां पथन कता हरेबाहर, छोहात अधिकाश्मरे अधिक मृत्ना विक्री हरेवात যোগ্য। অথচ তাহার অনতিদূরে অল মূল্যের জমী পাওয়া বাইত-সে সকল জমীর মূল্য দেওয়াও সাধারণের পক্ষে সম্ভব হইত। সরকারী নিয়ামক ও কর্মচারীরা যদি ভুধু ভাবপ্রবৰ্ণ হইয়া এ বিষয়ে কর্ত্তব্য স্থির না করেন-অবস্থা বুঝিয়া যদি তাঁহারা উপযুক্ত ব্যবস্থা করেন, তাহা रहेल क्निन शक्त्रवे अछिरगर्भत्र कात्रन शक्ति न। বাহারা জোর করিয়া জমী দখল করিয়াছে, তাহাদের यमि क्लानक्रभ मरखत राज्यां ना कता हत्, जरत म्हान क्र ভাবে আইন-समान कार्या दिन दिन वां जिया गाहेरव । কোন সরকারের পক্ষেই শাসন কার্য্য পরিচালন করা সম্ভব হইবে না।

দক্ষিণ পূৰ্ব এসিয়ার সফর—

ডা: বা ম এক সমরে ব্রহ্মদেশের প্রধান মন্ত্রী ছিলেন। ভিনি একজন চিন্তাশীল ব্যক্তি বলিরা পরিচিত। পণ্ডিত জহরলাল নেহক সম্প্রতি দক্ষিণ পূর্ব এসিরার সম্কর করার পর ডা: বা ম একটি বির্ভিতে সে বিবরে তাঁহার অভিমত প্রকাশ করিয়াছেন। তিনি বলিয়াছেন—(১) নেহরু চিয়াং-কাইসেকের স্থানে এসিয়ার নেতা হইবার চেষ্টা করিতেছেন (২) দক্ষিণ পূর্ব এসিয়াবাদী ২০ লক্ষ ভারতীয় নেতাজী স্কভাব বহুর অহুগত, পণ্ডিতজী ভাহাদের আহুপত্য লাভ করিতে গিয়াছিলেন (৩) ইল-মার্কিণ শক্তির হাতের পুতৃল হইরা পণ্ডিতজী সাম্যবাদের বিক্লছে আক্রমণ চালাইতেছেন (৪) দক্ষিণ পূর্ব এসিয়ার আদিম অধিবাসী-দের প্রতি পণ্ডিতজীর নজর নাই; তিনি ঐ অঞ্চলের ভারতীয়দের জন্মই দরদ প্রকাশ করিয়াছেন।—কথাগুলি বিবেচনার বিষয়। কোরিয়ার যুছে ভারত যোগদান করায় ডা: বা ম মহাশরের উক্তি সমর্থিত হইয়াছে। সত্যই পণ্ডিতজী ভারতকে কোন পথে লইয়া চলিয়াছেন সে চিন্তা আজ সকলকে বিব্রত করিয়াছে।

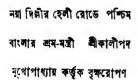
মাদ্রাক্তে থালাভাব-

শুধু পশ্চিম বাংলার নয়, মাদ্রাজ প্রদেশেও দারণ থাড়াভাব দেখা দিয়াছে। ত্রিচিনপল্লী, কইম্বাটোর, উত্তর আর্কট ও মালাবার জেলার থাড়াবস্থা এত থারাপ যে লোক গাছের পাতা, লতাগাছ প্রভৃতি থাইতে বাধ্য হইতেছে। ঐ সকল জেলার থাড়াভাবে বহু লোক মারা যাইতেছে। এরোদ জেলাতেও থাড়াভাবে বহু লোক মারা গিয়াছে। কোন প্রদেশেই চাল অধিক নাই— মাদ্রাজের লোক বেশী পরিমাণে চাল থায়—তাহাদের অন্ত কোন থাড় নাই। কি ভাবে ছুর্ভিক্ষের কবল হইতে জনগণকে রক্ষা করা যায়, তাহার পরিকল্পনাই চলিতেছে— আর ও দিকে মৃত্যুর হার ক্রমশং বাড়িয়া চলিয়াছে।

সেনাবাহিনী ও বাহালী-

খাধীনতা লাভের পর দলে দলে বালালী ছেলেদের সেনাবাহিনীতে বোগদান করার আহ্বান লানানো হলেও দেশে তেমন সাড়া দেখা যায় নাই। ইহার বহু কারণ বর্জমান। সতাই যাহাতে ছেলেরা সেনাবাহিনীতে বোগদান করে, সে চেষ্টা এখনও হয় নাই। ভাল করিয়া ঐ বিষয়ে প্রচার কার্য্য করা হইলে সেনাবাহিনীতে যোগদানের জন্ত বালালী ব্যক্তের জন্তাব হইবে না। সে জন্ত বাংলার প্রতি সহরে সৈনিক মেলা আরোজন করা, গ্রামাঞ্চলে ছাত্রবাহিনীর সন্ধিলিত কুচ-কাওয়াল দেখানো, কাঁচরাপাড়ার শিক্ষাপ্রাপ্ত চাবী ছেলেদের দল বাঁধিরা বিভিন্ন অঞ্চলে কট-মার্চ্চ করা প্রভৃতি বিশেষ প্রয়োজন। নানাভাবে ছবি দেখাইলে লোক সেনাবাহিনীর প্রতি আরুষ্ট হইবে। আমরা এ সকল বিষয়ে কর্তৃপক্ষের মনোযোগ আকর্ষণ করি।

ব্দু থামে ও গ্রামের লোক ঐ একই কারণে সহরে আসিতেছে। শনিবার ৫ই আগষ্ট বহরমপুর সহরে কালো বাজারে ৬৪ টাকা মণ দরে বিক্রেয় হইতেছে। ফলে বহু লোক অনাহারে দিন কাটাইতেছে। ঐ দিন সহরের লোক মিছিল করিয়া জেলা ম্যাজিট্রের বাড়ী যাইয়া চাল





মুশিদাবাদের খান্ত পরিস্থিতি—

ম্ৰিদাবাদ জেলা ধান উৎপাদন সম্পৰ্কে বাড়তি জেলা विशारे श्रीनिक हिन वर्षार के क्लांग क्लांगाजीत প্রোজনের অতিরিক্ত ধান উৎপন্ন হইত। কিন্তু গত ১ বংসরের মধ্যে করেক লক আশ্রম্প্রার্থী পূর্ববঙ্গ হইতে আসিয়া ঐ জেলায় বাস করায় এখন ঐ জেলাতেও দারুণ খালাভাব উপস্থিত হইয়াছে। স্থানীয় ছাত্র-কংগ্রেস হইতে भाषा कता रहेशार्छ- के दिना वाहिक व्यक्त विद्या যোষণা করিয়া খান্ত সরবরাহ ব্যবছা সরকারী নিয়ন্ত্রণাধীন না করিলে লোক থাতাভাবে মারা বাইবে; এখনও ^{মূশিদাবাদ কেলায় ১ লক ২৬ হাজার বিঘা জমী পতিত} আছে। বন্ধ বিভাগের পর সকল জেলার অর্থ-নিতিক অবস্থাই পরিবর্ত্তিত হইয়াছে—নদীয়ায় থাভাভাব কৃষ্ণি পাওরার আব মুশিদাবাদ জেলাও বিপন্ন। গত ৩রা আগষ্ট বৃহস্পতিবার হইতে মুর্শিদাবাদ কেলার किन शास थान वा ठाल नारे। जरतित लाक ठाला

চাহিয়াছিল—সেধানে নাকি পুলিস জনতার উপর লাঠি
চালাইয়াছে ও কাঁছনে গ্যাস ব্যবহার করিয়াছে। অবিলখে
জেলার সর্বত্র চাল সরবরাহের ব্যবস্থা না হইলে বছ লোক
মারা যাইবে। ১০৫০ এর ছর্ভিক্লের সময় মুর্শিবাবাদ জেলার
চাউলের মণ ২৪ টাকার অধিক হয় নাই—এবার সরকারী
বণ্টন ব্যবস্থার জ্রুটির জন্তুই এই ছুরবস্থা হইয়াছে। জ্রুটির
জন্তু যাহারা দায়ী তাহাদেরও শান্তি বিধান করা প্রয়োজন।
ব্রাক্রভাক্র প্রাক্ত-সন্মত্যা—

বাঁকুড়া জেলার প্রতি ৫ বংসরে একবার করিয়া ছভিক্ষ হইয়া থাকে। ঐ জেলায় এখনও প্রায় ৬ লক্ষ বিঘা জমী পতিত অবস্থায় আছে। এ বংসর বাঁকুড়ার দার্কণ খাতাভাব দেখা দিয়াছে। ঐ জেলায় অধিক পরিমাণে থাত উৎপাদনের চেন্তা খ্ব কমই দেখা বায়। মহসংহিতায় আছে—যে ব্যক্তি যে ভূমিকে বনাদি কর্তন-পূর্বক কর্ষণাদি ছারা উদ্ধার করে সে ভূমি ভাছারই হইয়া থাকে। ঐ প্রথা বিলুপ্ত হওয়ায় কৃষক আর কৃষির

প্রতি উৎসাহী হয় না। বাঁকুড়া জেলার চাবের জবিদ্ব উন্নতি সাধন না করিলে বাঁকুড়ার এই ছর্ভিক্ষ বন্ধ করা সম্ভব হইবে না। বর্ত্তমান বৎসরে আগামী ২।০ মাসে কি অবস্থা উপস্থিত হইবে, তাহা চিস্তা করিয়া লোক শব্দিত হইতেছে।

প্রাম্য-ব্যাক্ষ প্রতিষ্টা-

ভারতের গ্রামে ব্যাম প্রতিষ্ঠা সম্বন্ধে কেন্দ্রীর গভর্গবেন্ট কর্ত্তক যে তদত কমিটা গঠিত হইয়াছিল, সম্প্রতি তাহার রিপোর্ট প্রকাশিত হইয়াছে। গ্রামে ব্যাহ্ব না থাকায় লোক নানারূপ অসুবিধা ও ক্ট্র ভোগ করে। এক সমরে ইম্পিরিয়াল ব্যাক্তকে বছ জেলা ও মহকুমা সহরে नवकाती वाक्तिः कार्या कतिवात छात्र (मध्या हरेशाहिन। সে ব্যবস্থা অধিক বিভৃতি লাভ করে নাই। অনেক স্থানে এখনও ট্রেজারি বা সরকারী তোষাখানা হইতে টাকা चारान श्रमात्नत्र वावस्र चाह्य। जाहात्र चस्विश चत्नकः। ভাহা পরিবর্ত্তন করিয়া ব্যাঙ্কের উপর সে কাজের ভার দেওয়া হইলে লোক চেকের সাহায্যে আদান প্রদান কার্য্য চালাইতে পারে। পোষ্টাফিসে বে সেভিংস্ ব্যাক্ষ আছে, ভাষার কার্যাও প্রসারিত হওয়া প্রয়োজন। গ্রামে গ্রামে সরকারী বাছ খোলা হটলে সে দিক দিরাও সঞ্চয়কারীরা मास्यान इरेरव। ध विषय मिएन गर्यक श्राम अ আলোচনা প্রয়োজন। বহু বেসরকারী ছোট ছোট ব্যবসায়ী-ব্যাপ্ক ফেল করায় লোক আৰু আতকগ্ৰন্ত ও ক্ষতিগ্ৰন্ত। ভবিষ্যতে সঞ্চয় করিয়া লোক বাহাতে এই ভাবে বিপন্ন না হয়, সে জন্মই নৃতন ব্যবস্থার প্রয়োজন। কলিকাভার মাছ সরবরাহ-

একটি সংবাদে প্রকাশ বে, সরকারী কর্তৃপক্ষের চেষ্টার
বৃক্তপ্রদেশের এলাহাবাদ, আগ্রা, আলিগড়, কালী, চুনার,
কানপুর, লক্ষ্ণী, মোরাদাবাদ ও মীরাট জেলা হইতে,
উড়িয়ার বালেরর, কটক, বালুগাঁ, ছত্রপুর, ফুরুরী,
ধালিকোটা ও কালুগাড়া ঘাট (চিল্কা) হইতে এবং
বিহারের সামাই, বারুণি জংসন, মোকামা জংসন, পাটনা
সিটি ও সিমরী-বজিন্মারপুর হইতে পশ্চিমবলে মাছ
আমদানী করার ব্যবহা হইরাছে। গত ডিসেছর মাস
হইতে মালাজ ও বোহাই হইতেও কলিকাভার মাছ
আসিতেছে। সংবাদটি শুনিয়া সকলের আর্থত হইবার

কথা। কিছ কলিকাতার বাজারে এখনও সাছের সের সাড়েও টাকা, ৪ টাকা। দর হুলত না ইইলে আনদানীর কল ব্ঝা বার না। দর হুলত করার কি কোন ব্যবহা ইইতে পারে না। শুনা বার, একদল ব্যবসায়ী মাছের দর ক্যাইতে দেন না। এ কথা কি সত্য ?

পশ্চিম বাংলার খান্তমন্ত্রী মাননীয় প্রীপ্রফুলচন্ত্র সেন 'লাল আপুর চার' সম্বন্ধে এক প্রবন্ধ প্রকাশ করিয়া ঐ বিষয়ে দেশবাসীর দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছেন। তিনি লিথিয়াছেন-"মিষ্টি আলুর তুলনায় আলুর দাম স্ব সময়েই বেশী ও সেই দামেই আৰু किনে সকলেই মিটি আৰুর চেয়ে অনেক বেশী পরিমাণে ব্যবহার করে থাকেন। অথচ আপুর চেয়ে মিষ্টি আপু অনেক বেশী পুষ্টিকর। এতে অবশ্র আলুর তুলনায় প্রোটীন কিছু কম থাকে, কিছ আৰুর তুলনার প্রায় ৬ গুণ লেহজাতীয় পদার্থ, দেড্গুণ খেতসার জাতীর পদার্থ, ৪ গুণ ক্যালসিয়াম বা চুণ, ১ গুণ খাছপ্ৰাণ (ক) ও আড়াই গুণ খাত প্ৰাণ (খ) আছে। কাৰেই মিট আৰু বে একটি পৃষ্টিকর খাত সে विषय जन्मदित किছू निर्दे।" आमत्रा म्हान्त जक्नाक মিষ্টি আলুর চাষ করিয়া খাতাভাব দূর করিতে অফুরোধ করি। এক বিখা জমীতে ৫০।৩০ মণ মিষ্টি আলু হয়— সার দিরা চাষ করিলে উহা ১০০ মণ্ড হইতে পারে। আছেয় সেন মহাশয়ের প্রবন্ধটি বাহাতে অধিক প্রচারিত হয়, তাহারও ব্যবস্থা হওয়া প্রয়োজন।

কণ্টে লৈ ব্যবস্থা সমস্থা—

কেন্দ্রীয় সরকার ভারতে কণ্ট্রোল ব্যবহা রাখা উচিত কিনা, সে বিষয়ে পরাদর্শ লানের জন্ত যে কমিটা নির্ভাকরিয়াছিলেন সেই কমিটা কণ্ট্রোল-ব্যবহা রাধার বিক্ষমে মত প্রকাশ করিয়াছেন। কিন্তু সে নির্দেশ প্রকাশিত হওরার সলে সলে জ্ন মাসে কার্মমের উপর কণ্ট্রোল প্রভাবার মাসে পেট্রলের উপর কণ্ট্রোল প্রভাবার করা হইরাছে। একদল অর্থনীতিকের বিশাস, ধনী ব্যবসায়ীদের চাপে ভারতের স্থবিধা বিধানের জন্ত কেন্দ্রীয় সরকার এই ছুইটি জিনিবের উপর কণ্ট্রোল ছাড়িয়া দিরাছেন। এই ব্যবহার ফলে দেশবাসী উপকৃত না হইরাবরং অপকৃত ছুইরে। কাগজের বাজার ছিরতা লাভ

ভারবার পূবের কাগালর ভগর কন্ট্রেল চলিরা গোল—
ফলে কাগল আবার ছুর্ল্য ও ছুপ্রাগ্য হইবে বলিরাই মনে
হয়। পেটলের দামও বৃদ্ধি পাওরার সন্তাবনাই অধিক।
আমরা এ বিবরে বিশেষজ্ঞানের অভিমত প্রকাশ করিতে
অনুরোধ করি।

পাকিস্তানে সাইকেল স্মৃতিসভা–

পূর্বপাকিতানে এখনও বে সকল লোক বাস করিতেছেন, তাঁহাদের যে বদভাষা ও সাহিত্যের প্রতি নিঠা কমে নাই, তাহা সম্প্রতি বশোহর সহরে রামক্তক



यानाहात्र माहेत्कन छे प्रताय ममावक स्थी दुन्त

হুপলী জেলা সাহিত্য সন্মিলন -

গত ৩১শে আবাঢ় চন্দননগর অধিকাচরণ স্থৃতি মনিরে

শীর্ত হেবেজনাথ লাশগুরের সভাপতিতে হুগলী জেলা
সাহিত্য সন্মিলন হইরাছিল। তথার 'হুগলী জেলার
ইতিহাস' রচনা করার জন্ত শ্রীরুত স্থারকুমার মিজ

মহালয়কে সহর্জনা জাপন করা হইরাছে। স্থারবার্
আনাধারণ অধ্যবসার ও পরিশ্রম করিরা ঐ ইডিহাস

রচনা করার বহু বক্তা তাঁহার কার্যের প্রশংসা করেন।

শভার প্রবর্জক সংবের শ্রীমন্তিলাল রায়, শ্রীবোগেক্সকুমার

চটোপাধ্যার, শ্রীহরিহর শেঠ, শ্রীবোগেক্সনাথ ওও,
শ্রীনরেক্সনাথ বস্তু প্রভৃতি বক্তকা করেন।

আশ্রম বিভাগরে অষ্টিত মাইকেল মধ্যদন দত্তের শ্বতি উৎসব হইতে বুঝা যায়। বশোহর সাহিত্য সংবের উভোগে উক্ত সভা হয় এবং স্নাহিত্যিক শ্রীস্থাংশুকুমার রারচৌধুরী তথার সভাপতিত্ব ও শ্রীঅবলাকান্ত মভ্মদার উহার উবোধন করেন। জনাব মোসারফ হোসেন, আবছল শোভান প্রভৃতি সভার মাইকেলের প্রতিভা সহবে বক্ততা করেন।

জলপাইগুড়ির চুদ্দিশার সাহায্য-

গত অভিবৃত্তির কলে জলপাইগুড়ি সহর ও জেলার এট থানার ১৪টি ইউনিয়নের লকাধিক লোক দাকণ ছুর্জশাগ্রন্ত হইয়াছে—রেলে যাভায়াভ বন্ধ—নে জন্ত দাকণ থাভাভাব ক্তির পরিমাণ এক কোটি টাকারও অধিক। কলপাইপশ্চিমবঙ্কের একটি কোলা—বলাপীড়িত তুর্গতগণকে
সাহায্য করা সকলেরই কর্ত্তবা; সে জক্ত তথার প্রতিনিধি
স্থানীর লোকদিগকে লইয়া একটি সাহায্য কমিটা গঠিত
হইয়াছে—সাহায্য কলপাইগুড়িতে সেণ্ট্রাল ব্যাক অব
ইপ্তিয়াতে প্রেরণ করিলে কমিটা তাহা বিতরণের উপযুক্ত
ব্যবস্থা করিবেন। কলপাইগুড়ি হইতে যাহারা আসিতেছেন,
তাহাদের নিকট তৃঃপতুর্দ্ধশার কাহিনী শুনিলে অভিত
হইতে হয়। আমাদের বিশ্বাস—বাংলার চা-শিয়ের কেন্দ্র
কলপাইগুড়িকে রক্ষা করার ক্ষন্ত বালালীর উৎসাহের
অভাব হইবে না।



দক্ষিণ-পূর্ব্ব এসিয়ার পণ্ডিত জ্বহরলাল নেছের (অভিনন্দনের উত্তরে বক্তঃভারত)

প্রীক্রেক্রমণাথ মজুমদার—

কণিকাতার খ্যাতনামা এডভোকেট, বসিরহাট-বিবাদী অহরেজনাথ মন্ত্রমদার গত ১৫ই জুলাই ২৪ পরগণা জেলা স্কুল বোর্ডের সভাপতি নির্ব্বাচিত হইরাছেন। ১৯২৮ সালে ছাত্র-জীবনে তিনি স্কভাবচক্র বস্তুর সংগ্রেশ্বে

আদেন ও তদবৰি দেশে নানাবিং কনহিতকর প্রতিচানে
মধ্য দিয়া সমাজ-সেবা করিতেছেন। ১৯৪৩ সাথে
ফুর্ভিকের সময় ও ১৯৪৬ সালে সাম্প্রদায়িক দাকা
সময় তিনি নানাভাবে তুর্গতদের রক্ষা করিবার ব্যবং



শীহরেল্ডনাপ সজুমদার

করিয়াছিলেন। গত তিন বৎসর কাল তিনি কলিকাতা ইণ্ডিয়ান এসোসিয়েগনের সম্পাদকরপেও সাফল্যে সহিত কাজ করিয়াছেন। তাঁহার চেষ্টায় ২৪পরগণ জেলায় প্রাথমিক ও ব্নিয়াদি শিক্ষার প্রসার হউক-আমরা সর্বাস্কর্মকরণে ইহাই প্রার্থনা করি।

ভারতে খালাভাব–

গত প্রায় ১০ বংশর ধরিরা ভারতে দারুণ থাতাতা চলিতেছে এবং এখন পর্যন্ত তাহার প্রতীকারের কো উপায় নির্ণীত হয় নাই। অখচ আমেরিকায় বর্তমানে এ অধিক থাত উৎপন্ন হয় যে তাহা মনে করিলে বিশি হইতে হয়। আমেরিকায় প্রচুর গম ও অস্থাত থাতা শামকুত আছে—তাহা মাল গাড়ীতে ভর্ত্তি করিলে ১৭৬% মাইণ দীর্থ মালগাড়ীর সারিত্তে পরিণ্ড হইবে। তথা

এত অবিক শুক ডিম কমিয়া গিয়াছে বে ক্লটিওয়ালারা আগামী ৮ বৎসরেও তাহা খরচ করিতে পারিবে না। মাথন, ত্র্যচ্প, পনির, সরাবিন, শুকনা কল প্রভৃতিও এরপ পরিমাণেই তথার জমা হইয়াছে। আমেরিকা হইতে এ সকল জিনিব কিনিয়া আনিবার উপযুক্ত অর্থ ভারতের নাই—কাকেই ভারতবাসীকে ঐ সংবাদ পাঠ করিয়া অনাহারে প্রাণ ভ্যাগ করিতে হইবে। কিন্তু ভারত-সরকার কি এদেশে ঐভাবে থাত প্রস্তুত করার ব্যবস্থা অবলম্বন করিতে পারেন না? কবে এ বিধ্য়ে ভারতবাসী জনসাধারণের তথা ভারত সরকারের চৈত্ত উদয় হইবে, তাহা কে জানে?



দিলী প্রত্যাপত নৃত্য কেন্দ্রীয় সচিব—শ্রীচক্রবর্ত্তী রাজাপোপালাচারী

ব্রীবিধৃভূষণ সেনগুপ্ত—

ইউনাইটেড প্রেস অফ ইণ্ডিয়ার পরিচাশক ও প্রধান

শশাদক শ্রীবিধৃত্বণ সেনগুপ্ত সম্প্রতি কলিকাতা বিশ্বশিলালয়ের কেলো মনোনীত হওয়ার আমরা তাঁহাকে

শাবরিক অভিনন্দন আগন করিতেছি। ১৮৮৯ সালে

শিরা জেলার চুন্টা গ্রামে তাঁহার কয়। তিনি ১৯১৮

শালে রাইগুরু স্থরেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের 'বেকলী'

শৈনিক প্রে প্রথম সাংবাদিকের কাল আরম্ভ করেন ও

পরে কিছুদিন 'ইণ্ডিয়ান ডেলি নিউল' ও 'সার্ভাণ্ট' পরে ।
কাল করিয়াছিলেন। 'ক্রি প্রেস' নামক সংবাদ সরবরাহ প্রতিষ্ঠান গঠিত হইলে তিনি তাহার কলিকাতা শাধার ভারগ্রহণ করেন ও পরে ১৯৩০ সালে 'ইউনাইটেড প্রেস' প্রতিষ্ঠা করিয়া তাহাকে সর্বপ্রকারে জনপ্রিয় করিয়া ভূলিয়াছেন। ভারতীয় সংবাদপত্র-সেবী-সংবের সভাপতি ও নিখিল ভারত সংবাদপত্র সম্পাদক সম্মেলনের ষ্ট্রাণ্ডিং কমিটার সদক্ষ হিসাবে তিনি এ দেশের সাংবাদিকতার উর্লিড বিধানের জন্ত সক্ষা প্রকার চেষ্টা করিয়াছেন।
তাঁহার এই সন্মান প্রাপ্তিতে যোগ্যের সমাদর দেখিয়া দেশবাসী সকলেই আনন্দিত হইবেন।

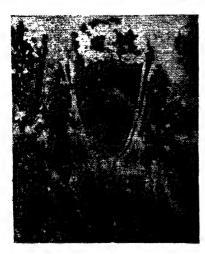


সাংবাদিক সন্মিলনে ডক্টর অভামাপ্রসাদ মুখোপাধার

বাস্তভ্যাগীর সংখ্যা-

ভই কুলাই তারিথের সংবাদপত্রসমূহে প্রকাশ, গড় ১লা জাহ্মারী হইতে এ পর্যন্ত ২৫ লক্ষ বাস্তত্যাগী পূর্ব্ব-পাকিতান হইতে ভারতীয় রাষ্ট্রে আগমন করিয়াছে। ভদ্মধ্যে ১৭ লক্ষ পশ্চিম বাংলায়, ৬ লক্ষ আসামে ও ২ লক্ষ ত্রিপুরায় গিয়াছে। পশ্চিমবন্ধ সরকার তাহাদের জন্ত প্রত্যহ ৩ লক্ষ টাকা ব্যয় করিতেছেন। ১৯৫০ সালে এই বাবদ পশ্চিমবন্ধ গভর্শমেণ্টের মোট ১২ কোটি টাকা ব্যয় হইবে বলিয়া মনে হয়। কিছু এই টাকা যে ঠিকভাবে ব্যয়িত হয় না, তাহা ৫ই জুলাই প্রকাশিত নেত্রক্ষের এক বিরুতি হইতে বুঝা বায়। শ্রীক্ষরণচন্দ্র ওই, ডাঃ প্রতাপচন্দ্র ওই রায়, শ্রীক্ষরেশচন্দ্র দাস, শ্রীক্ষরক্ষ বোষ ও শ্রীসভীশ চন্দ্র চক্রবর্তীর সাক্ষরিত এক বিরুতিতে সাহাষ্য ও পুনর্ব্বাভি

ব্যবস্থা সম্বন্ধে সরকারের দৃষ্টি আফুট হইয়াছে। ঐ কার্য্যের
জন্ম বহু লোক নিবৃক্ত করা হইয়াছে ও বহু টাকা ব্যয়িত
হইয়াছে। কিন্তু এ বিষয়ে সরকারের কোন পরিকরনা না
থাকায় প্রকৃত কাজ হইতেছে না। আদরা এ বিষয়ে বহুবার বহু অভিযোগ প্রকাশিত করিয়াছি, কিন্তু তাহাতে
কোন ফল হয় নাই। দেশে এখনও নি: মার্থ দেশ-সেবকের
অভাব নাই—তাহাদের যে কেন এই কার্য্যে সাহায্য ও
সহবোগিতার জন্ম আহ্বান করা হয় না, তাহা বুঝা যায় না।



দেশবন্ধু শ্বৃতি ভৰ্গণ—কৰিকাতা ভারতের ৫০ কোটি টাকা ক্ষকি—

শেঠ রামকৃষ্ণ ডালমিয়া খাতনামা ব্যবসায়ী ও অর্থনীতিক্স পণ্ডিত। তিনি সম্প্রতি এক বিবৃতিতে প্রকাশ করিয়াছেন—পাটজাত দ্রব্য রপ্তানী সম্পর্কে ভারত সর্কারের কর্ত্তব্য ক্রেটির ফলে সম্প্রতি ভারতের ৫০ কোটি টাকা ক্ষতি হইতেছে। নির্দ্ধারিত রপ্তানী মূল্য অপেক্ষা অধিক মূল্যে গোপনে ও বেসরকারীভাবে পাটজাত দ্রব্যাধি বিক্রেয় হইয়াছে, ফলে গভর্গমেন্টের রাজস্ব খাতে ২০ কোটি টাকা ক্ষতি হইয়াছে এবং পাটজাত দ্রব্য উৎপাদনকারী কোম্পানী সমূহের অংশীদারদিপের ৩০ কোটি টাকা ক্ষতি হইয়াছে। এই ক্ষতির জন্ম বাহারা দায়ী, ভাহাদের কি শান্তি বিধানের ব্যবস্থা হইছে পারে না। দেশে এইরূপ মূনাফা-খোরদের রাজস্ব আর কত্তিন চলিবে?

কলিকাতায় সমবার অর্থনীতি আলোচনার একটি প্রতিষ্ঠান আছে। ঐ প্রতিষ্ঠানের পক্ষ হইতে গত ওরা আগপ্ত কলিকাতার গ্রেট ইষ্টার্গ হোটেলে পশ্চিম কাকালার ন্তন সমবার মন্ত্রী ডাঃ আর, আমেনকে এক ভোক স্ভার
সংশ্বনা করা হইরাছিল। ভোকসভার সমবার মন্ত্রী
রলিয়াছেন—"সমবার নীতি সমাজকল্যাণমূলক একটি মহান
ও সার্বভৌম আর্থিক ব্যবস্থা। সমবার নীতিকে ভিত্তি করে
পাশ্চাত্য দেশে আজ এক দিকে অর্থ শক্তি, অন্ত দিকে
ব্যক্তি-প্রাধান্তহীন লোক-করায়ন্ত আর্থিক ব্যবস্থা গড়ে
উঠেছে। ক্ববি-শিল্প, ব্যবসা-বাণিল্য সকল কেন্তে সমবার
অর্থনীতি বিশেষ প্ররোজন।" আজ বাংলা দেশে সর্ব্বত এই
কথা সকলকে ব্যাইয়া দেওয়া প্ররোজন। আমরা আশা
করি, ন্তন মন্ত্রী এ বিষয়ে প্রকৃত চেষ্টা করিয়া দেশের
কল্যাণ বিধান করিবেন।

বৈষ্ণব এক্রের নিস্কা-

সম্প্ৰতি কলিকাতা কলেজ-স্বোয়ারত্ব থিয়সফিকাল সোসাইটি হবে অধ্যাপক জীপগেল্ডনাথ মিত্র মহাশরের সভাপতিত্বে রূপ সনাতন স্বৃতি সমিতির বার্ষিক অধিবেশনে এই মর্ম্মে এক প্রস্তাব গুণীত হইরাছে—"পুরীধামে রথবাতা উপলক্ষে এ বংসর উড়িফ্রা সরকার কর্ত্তক প্রচারিত পুত্তিকার মহাপ্রভু গৌরাকদেব প্রবর্তিত বৈফ্র ধর্মের প্রভাবে উড়িয়ার অবনতি হইয়াছে-এইরূপ অনৈতিহাসিক ও বৈষ্ণৰ ধৰ্ম্মের গ্লানিকর উক্তি প্রকাশিত হওয়ার এই সভা তাহার ভীব্র প্রতিবাদ করিভেছে। ঐতিহাসিক প্রমাণে উড়িয়ার ধর্ম, সংস্কৃতি, সাহিত্য ও শিল্পকলা শ্রীমন মহাপ্রভূ প্রেরণায় সংশোধিত বৈফবতা প্রসারের সভিত অবিচ্ছেত। ममश्र देवकव मन्ध्रनात्र के मस्तवात्र क्षकाहात्र नार्वे করিতেছে।" —এই প্রস্তাব সম্বন্ধে মন্তব্য নিপ্রবেশ্বন। আমাদের বিখাদ, উড়িয়া সরকার নিবেদের ভুগ বুঝিয়া কর্ত্তব্য পালনে বিলম্ব করিবেন না।

পাকিস্তানী আক্রমপ—

গত ৪ঠা আগষ্ট নয়া দিলীতে ভারতীর পার্লামেটে পররাই দপ্তরের সহকারী মন্ত্রা প্রীর্ত কেলকার বলিয়াচেট —গত ১লা এপ্রিলের পর হইতে এ পর্যন্ত পাকিতানীর ভারতীর সীমান্তের গ্রাম গুলিতে ৫৭ বার হানা দিয়াছে। ঐ সকল হানা সম্পর্কে পাকিতান সরকারের নিক্ট প্রতিবাদ করিয়া কোন উত্তর পাওলা বার নাই! ধবরটি চমৎকার—এক পক্ষ এইভাবে ক্রমাগত হানা দিতেছে আর এক পক্ষ দিল্লী-চুক্তি (নেহরু-লিয়াকং) স্কলা করাই অন্ত আগ্রহণীল। কতদিন এই অবস্থা চলিবে। ইহার ফর্মাই বা কিরুপ হইবে? সাধারণ মান্ত্রই হা বুলিতে ক্সন্মর্থ।



স্থাংগুলেধর চটোপাধ্যার

कृष्टिवल लोश ४

১৯৫ - সালের ক্যালকাটা ফুটবল লীগ প্রতিযোগিতার প্রথম বিভাগে ইষ্টবেঙ্গল ক্লাব লীগ বিজয়ী হয়ে পর্যায়ক্রমে তু'বছর লীগ চ্যাম্পিয়ানসীপ লাভের গৌরবঁ অর্জ্জন करति । देखिशुर्क्त >>84-8% मालिख देहेरवन ज्ञांव পর্যায়ক্রমে ছ'বার লীগ পার। এ বছরের লীগ পাওয়ার বিশেষভ, তারা শেষ পর্যান্ত লাগের কোন খেলাতেই হার খীকার করেনি। খেলোরাড় সংগ্রহ এবং দল গঠন ব্যাপারে ক্লাবের প্রচেষ্টা এবং দলগত সার্থ সার্থক হয়েছে। ভারতীয় ক্লাবের মধ্যে ১৯৪৮ সালে লীগে প্রথম অপরাব্যেয় ব্ৰেকৰ্ড স্থাপন কৰে মহমেডান স্পোর্টিং ক্লাব। যে সময় মহমেডান স্পোর্টি ক্লাও পর্যায়ক্রমে পাঁচবার লীগ চ্যাম্পিরান হরে লীগে নতুন রেকর্ড করেছে সে সমরে তারা অপরাজের রেকর্ড স্থাপন করতে পারেনি। মহমেডান স্পোর্টিং ক্লাব এ পর্যান্ত ৮ বার লীগ পেয়েছে, গত দশ বছরের মধ্যে পেরেছে ভিনবার। এর মধ্যে ২ বার (১৯০৬ ब्रदः ১৯৪०) ब्रक्टी क'रत रथनात्र छारमत होत राम्हा महरम्छान त्म्लाहिः नीश विक्रको हत्त्व नव व्यक्त विने (करवाड माठवांत ১৯৩৮ माल, व वहत नीर्न कार्रमम थ्रः महत्मकान क्लोर्हिः दात रथलात नमान शरतके केठि ।

ইইবেক্স ক্লাব এ পর্যান্ত লীগ পেরেছে ৫ বার, গড

দশ বছরের মধ্যে। প্রথম লীগ পার ১৯৪২ সালে। মাত্র

শৈ খেলার হার হওয়ার অভে তারা তিনবার অপরাজের

রেক্ড করা খেকে বঞ্চিত হরেছে। লীগ বিলয়ী হয়ে সব

থেকে বেশী হেরেছে তিনবার ১৯৪৯ সালে।

মাহনবাগান এ পর্যান্ত লাগ পেরেছে ও বার, গত দশ ^{বছরের} মধ্যে ২ বার। প্রথম পার ১৯৩৯ সালে।

উপর্পরি ২ বার লীগ পেরেছে ১৯৪৩-৪৪ সালে। মাত্র ১টা থেলার হার হরেছে ২ বার ১৯৩৯ এবং ১৯৪৩ সালে। ১৯৩৯ সালে মোহনবাগান হেরেছে ১-২ গোলে ভবানীপুরের কাছে এবং ১৯৪৩ সালে •-১ গোলে ইউবেজলের কাছে।

আলোচ্য বছরের লীনের মোট থেলার ইষ্টবেজল ক্লাবের শ্রেষ্ঠছ সম্পর্কে কোন প্রশ্ন উঠে না বলিও কোন কোন থেলার ভারা দলের স্থনাম অন্নবারী না থেলতে পেরে থেলা ডু করেছে অথবা জয়লাভ করেছে। লীগের ফিরতি থেলার মোহনবাগান, মহমেডান স্পোর্টিং এবং রাজস্থান এই ভিনটি বড় দলের সজে থেলে ইষ্টবেজল কার থেলা ডু করেছে। লীগের ফিরভি থেলার ভাদের মূল্যবান ১ পরেট নই হয়েছে ক্যালকাটার সঙ্গে।

এ বছরের লীগ চ্যাম্পিয়ানসীপ প্রতিযোগিতার ইস্টবেকল স্লাবের সকে নোহনবাগান স্লাবের ধ্ব জোর প্রতিবিদ্যা চলেছিল। ১৫ই জুলাই মোহনবাগান-ইস্টবেকল দলের কিরতি থেলার আগে পর্যন্ত ইস্টবেকল দলের হিনতি থেলার আগে পর্যন্ত ইস্টবেকল দলের হিনতি থেলার ৩২ পরেণ্ট ছিল অপর দিকে মোহনবাগানের ছিল ১৯টা থেলার ৩২ পরেণ্ট। মোহনবাগান-ইস্টবেকল দলের ফিরতি থেলা ডু ষাওয়ার ফলে উভয়দলের থেলা এবং পরেণ্টের সকে এক ক'রে যোগ হর। মোহনবাগান-ইস্টবেকলদলের ফিরতি থেলার কলাফলের উপর উভয় দলের লীগ চ্যাম্পিয়ানসীপের বে ভাগ্য নির্ভর করছিল থেলাটি ডু ষাওয়ার ফলে ইস্টবেকল দলের কিছুটা স্থবিধা হর। তবে মোহনবাগানের সমস্ত আশা একেবারে নষ্ট হয় নি। কারণ উভয় দলের আনেকগুলি শুক্ষবপূর্ব থেলা তথনপ্ত বাকি ছিল। স্পোটিং ইউনিয়ন

'হলের সঙ্গে খেলা ড ক'রে লীগ চ্যাম্পিরানসীপের পালা বেকে মোহনবাপান পিছিরে পড়ে, ইস্টবেক্লকার কিছটা নিরাপদ ছানে উঠে যায়। এরপর মোহনবাগান অক্সাৎ এরিয়ান্সের কাছে >- । গোলে হেরে যার। প্রথম থেলার মোহনবাগান ৪-০ গোলে এরিয়ালকে হারিয়েছিল। এই পরাজ্যের ফলে ইস্টবেজন ক্লাব নাগালের বাইরে চলে यात्र। लीश ह्यां निश्वानशैरशद श्रमक वांत्र क्रिया ज्यन মোহনবাগান ও রাজ্জানের মধ্যে কে লীগে রাণাদ আপ হবে এ গবেষণা মাঠে চলতে লাগলো। উভয়ের তথন ২৪টা (थनांत्र मर्मान ७७ भरतको। ज्यभन्न मिरक द्येनी (थरन ইস্টবেদলের ৪২। রাজস্থানকে ২-০ গোলে হারিয়ে মোহনবাগান যে ২ পরেণ্টে এগিয়ে গেল পরবর্তী থেলায় हे चारे जिनमरनत कारह •-२ शीरन रहरत चारात , बांक्झांत्नत्र नमान शरारके त्नरम धाला। २०१ क्लारे বুহুম্পজিবার মোহনবাগান-ম্পোর্টিং ইউনিয়নের থেলা ছ যায় এবং সেই সময় থেকেই মোহনবাগানের ভাগ্য বিভয়না আরম্ভ হয়েছে। দলের থেলোয়াডদের অফুস্থতা এবং আখাত শেষের দিকে লেগেই আছে। ২টো হার এরিয়ান্স এবং ই আই আর রেল দলের কাছে সতাই ক্রীড়া মহলে বিশ্বয়ের সৃষ্টি করেছে।

বালালী খেলোরাড় নিয়ে তৈরী স্পোর্টিং ইউনিয়ন,
এরিয়াল, কালীঘাট এবং কর্জটেলিগ্রাফের খেলার কথা
গতবার বলেছি। ফিরন্ডি খেলায় উল্লেখযোগ্য ঘটনা স্পোর্টিং ইউনিয়ন জ্ব করেছে মোহনবাগানের সঙ্গে এবং
হারিয়েছে রাজস্থানকে। লীগে তারা ৪র্থ স্থানে আছে।
এরিয়াল হারিয়েছে মোহনবাগানকে। কালীঘাট ১-০
গোলে হারিয়ে ফ্রে মহমেডান স্পোর্টিংকে।

বি এন রেল দলের কাছে রাজস্থানের পরাজ্য এবারের খেলার মাঠে আর এক বিশ্বয়। ক্যালকাটা গ্যারিসন ৪-১ গোলে ই আই রেল দলকে হারার এবং ২-০ গোলে এরিরাজকে ক্যালকাটা ক্লাব হারিয়ে শেব পর্যস্ত লীগের শেব ধাপেই রইলো। ক্যালকাটা গ্যারিসন লীগের শেবের দিকে ভালা টীম কোড়া লাগিয়ে বেশ থেলেছে। এবার লীগের ফিরভি থেলায় ক্যালকাটাকে ৭-২ গোলে হারিয়ে সব থেকে বেশী গোল দিয়ে ক্য়লাভের কৃতিত্ব অর্জ্ঞনকরেছে ভবানীপুর ক্লাব। ভবানীপুরের রঞ্জিৎ সিং একাই

ংটি গোল করেন। একটি খেলায় ব্যক্তিগতভাবে কোন খোলোয়াড় এত বেলী গোল এ বছর প্রথম বিভাগের নীগে করতে পারে নি।

ভেন্ত ক্রিন্ডের ; ইংলণ্ড: ওয়েপ্টইণ্ডিক

₹ 70 : 220 G 826

ওয়েষ্ট্র ডিছ: ৫৫৮ ও ১০০ (কোন উইকেট না হারিয়ে)

ইংলগু-ওয়েই ইণ্ডিজদলের তৃতীর টেই ম্যাচ থেলার ওয়েইইণ্ডিজ ১০ রাণে ইংলগুকে পরাজিত করেছে। প্রথম টেই ম্যাচে ইংলগু জয়ী হয়। বিতীয় এবং তৃতীয় টেই ম্যাচে ওয়েই ইণ্ডিজ জয়লাভ করায় তারা ২-১ ম্যাচে এগিয়ে রইলো। চভূর্থ টেই ম্যাচ থেলার ফলাফলের উপরই উভয়দলের 'রাবার' করছে। চভূর্থ ম্যাচটি অস্ততঃ ভ গেলেও ওয়েই ইণ্ডিজ 'রাবার' পাবে।

ইংলগু টদে জিতে প্রথমে ব্যাট করে। এক ঘণ্টার ধেলার মাত্র ২৫ রাণে ৪টা উইকেট পড়ে বায়। অক্ষন্থতার জন্তে হাটন এবং গিমরেট দলে যোগদান করতে পারেন নি। ওয়েষ্ট ইণ্ডিজের জোন্সের যারগায় জনসন ধেলতে নামেন। ২২০ রাণে ইংবণ্ডের ১ম ইনিংস শেষ হয়। ডি স্থাকলটন দলের সর্ব্বোচ্চ ৪২ রাণ করেন। ইয়ার্ডলে করেন ৪১। জনসন এবং ওরেল ওটে করে উইকেট পান। রামাধীন এবং জ্যালেনটাইন পান ২টো ক'রে। প্রথম দিনের ধেলার নির্দ্ধারিত সময়ের মধ্যে ওয়েষ্ট ইণ্ডিজ দল ১ উইকেটে ৭৭ রাণ করে।

থেলার দিনীয় দিনের নির্দারিত সময়ের মধ্যে ওরেই-ইন্ডিজ সারাদিন পিটিরে থেলে মাত্র ৩ উইকেটে ৪৭৯ রাণ তুলে। ওরেল ২০৯ রাণ এবং উইকস ১০৮ রাণ করে নট আউট থাকেন। রে এবং ইলমেরারের ষণাক্রমে ৬৮ এবং ৪৬ রাণ উল্লেখযোগ্য। ওরেল নট আউট ২০৯ রাণ করায় ১৯০৮ সালে ট্রেন্ট ব্রীজ গ্রাউণ্ডে প্রতিষ্ঠিত এস ম্যাক্কেবের ২০২ রাণের রেকর্ড ভেলে বার। ইন্ডিপূর্ব্বে ট্রেন্ট ব্রীজ গ্রাউণ্ডে কোন দেশের থেলোরাড়ই ওরেলের সমান রাণ তুলতে পারে নি। ১৯১৯ সালে প্রতিষ্ঠিত ছাটনের ১৯৬ রাণ এতদিন ইংলণ্ডে অম্বৃত্তিত ইংলণ্ড-ওরেইইন্ডিজ ট্রেট সিরিজের সর্ব্বোচ্চ ব্যক্তিগত রাণ ছিল। ওরেল সে রাণের

(तक्षं क एक्ट क्टबन । खे मिन खरतन धरा छेटे करनत জুটিতে বে রাণ উঠলো ওয়েইইণ্ডিল দলের পক্ষে যে কোন উইকেটের যে সর্ব্বোচ্চ ২২৮ রাণের (১৯২৯ সালের এম হেডলে এবং আর মলেন্স কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত) রেকর্ড ছিল তাও ভেকে গেল। ওরেলের খেলা দর্শকদের মুগ্ধ করে। তিনি ১টা ওভার বাউণ্ডারী করেন এবং 'চার' ১৪টা। থেলার তৃতীর मित्न अवहरे अन मानत भूकी मित्नत त्रांत्व मान १० तान र्यांश क्'ल भन्न जारमन ३म हैनिः मन तथना त्मव करन यात । **अदिन २७) त्रांग करत्रन। अदिरामत बार्ट २७) त्रांग र**'न ইংলতে অম্প্রিত ইংলও—ওয়েই ইণ্ডিজ টেই সিরিজের উভর দলের মধ্যে ব্যক্তিগত সর্ব্বোচ্চ রাণ। এই রাণ ভুলতে ৎ ঘণ্টা ৩৫ মিনিট সময় লাগে। রাণে ৩৫টা বাউগ্রায়ী এবং ২টো ওভার বাউগ্রারী ছিল। ৩০.০০০ হাজার দর্শক (সভারাও) দাঁড়িয়ে উঠে ওরেলকে সম্ভাবণ জানায় এবং মাঠ থেকে প্যাঞ্জিলন প্রয়ন্ত ওরেলকে হাততালি এবং জয়-ध्विनि मिरत मधर्मना कार्यन करतन। अरतम छात्र २७১ রাণের মাথার বেডসারের ইনস্থইং বল লেগে জোর পিটিয়ে মারেন। বলটা সজোরে গিয়ে ইংলপ্তের ক্যাপটেন ইয়ার্ডলের হাতে পড়ে; ইয়ার্ডলে বিতীয়বারের চেষ্টায় তবে ওরেলের বলটা হাতে ঝাগাতে পারেন। ওরেল এবং উইক্সের চতুর্থ উইকেটের জুটিতে ২৮০ রাণ উঠে। এই ২৮০ রাণ ওয়েই ইণ্ডিল্লদলের পক্ষে যে কোন উইকেটের সর্ব্বোচ্চ রাণ হিসাবে রেকর্ড হয়েছে। উইক্স ৩ ঘণ্টা ৪০ মিনিটে ১২৯ রাণ ভূলে আইট হন। মোট ১৮টা বাউগ্রারী करतन। अरबंडे देखिकामब अध्य देश्निरमब धारे ६६৮ तान ইংলভের বিপক্ষে ভাদের মলের সর্কোচ্চ রাণ হিসাবে রেকর্ড হরেছে। খেলার তৃতীয় দিনে ওয়েই ইণ্ডিজের गांठिं। डेटेटके ৮० मिनिटिंद मस्या १२ द्वार्ण পড़ यात्र। ইংলণ্ডের বেছদার একাই ঐদিন 👐 রাণে ৫টা উইকেট পান।

ওরেষ্ঠ ইণ্ডিজের থেকে ৩৩৫ রাণ পিছনে পড়ে থেকে ইংলও থেলার তৃতীয় দিনের বেলা ১টার পর বিভীয় ইনিংসের থেলা আরম্ভ করে। লাঞ্চের সমন্ত খ্ব জোর রৃষ্টি পড়তে থাকে এবং থেলা পুনরারম্ভ হ'তে ১৫ মিনিট দেরী দ্ব। লাঞ্চের সমন্ত ইংলণ্ডের কোন উইকেট না পড়ে ৮ বাণ উঠে। চা-পানের আগে বৃষ্টির লভে থেলা বেশ কিছুক্লণ

বন্ধ রেখে খেলোরাড়রা প্যাভিনয়নে আশ্রর নিতে বাধ্যা হন। চা-পানের সমর কোন উইকেট না পড়ে ইংল্ডের ৪৯ রাণ উঠে। বৃষ্টির জলে খেলার পীচের অবস্থা খুবই শোচনীর হয়ে পড়ে; জনসন একবার বল দিতে গিল্লে একেবারে কুপোকাং হয়ে পড়েন এবং বাঁ কাঁথে আঘাত পান। তৃতীয় দিনের নির্দিষ্ট সমরের মধ্যে ইংল্ডের কোন উইকেট না পড়ে স্কোর বোর্ডে ৮৭ রাণ উঠতে দেখা যার।

চতুর্থ দিনের থেলায় ইংলণ্ডের ওপনিং ব্যাটসমেন
সিম্পানন এবং ওয়াসক্রক যথাক্রমে ৯৪ এবং ১০২ রাণ করে
প্রথম উইকেটের ক্টেডে ২১২ রাণ করেন। ইংলও—
ওয়েই ইগ্ডিজের টেই ম্যাচে এই ২১২ রাণ (ওয়াগক্রক
১০২ এবং সিম্পানন ৯৪) প্রথম উইকেটের রেকর্ড হয়েছে।
লাক্রের সময় ইংলণ্ডের কোন উইকেট না পড়ে ১৯৮ রাণ
উঠে। চতুর্থ দিনের নির্দিষ্ট সময়ে ইংলণ্ডের ৫ উইকেট
পড়ে গিয়ে ৩৫০ রাণ উঠে। পার্কহাউস ৬৯ রাণ এবং
ভিউক্রের নট আউট ৫৫ রাণ উল্লেখযোগ্য।

টেই থেলার পঞ্চম দিনে অর্থাৎ শেষ দিনে ইংলগু
সময় এবং ওয়েই ইণ্ডিজের স্পিন বোঁলার রামাধীন এবং
ভ্যালেনটাইনের বিপক্ষে প্রচণ্ড মনোবল নিরে থেলছে
নামলো, হাতে পাঁচটা উইকেট। তিন হাজার দর্শক অধীর
ভাগ্রহে ক্রিকেট থেলায় ইংলণ্ডের মান ইজ্জত রাখার থেলা
দেখতে লাগলো। ৮৬ রাণে ইংলণ্ডের বাকি পাঁচটা উইকেট
পড়ে গেলে ২য় ইনিংস ৪৩৬ রাণে শেষ হয়ে বায়। ডিউজ্ল
এবং ইভেল বথাক্রমে ৬৭ এবং ৬০ রাণ করেন। রামাধীন
থেলার শেষ দিনে ৩টে উইকেট পান; মোট ৫টা উইকেট
পান ১০৫ রাণে। এরপর ভ্যালেনটাইনের ৩টে ১৪০
রাণে। লাঞ্চের পর ওয়েই ইণ্ডিজের রে (৪৬) এবং ইলমেয়ার (৫২) ২য় ইনিংসের থেলা আরম্ভ করে জয়লাভের
প্রয়োজনীয় ১০২ রাণ তুলেন। কোন উইকেট না হারিয়ে
ওয়েই ইণ্ডিজের ২য় ইনিংসে ১০০ রাণ উঠলে ওয়েই ইণ্ডিজের

জুলেস রিমেট কাপ 8

রিও ডি কেনিরোর (ব্রেজিল) অহাইত 'ক্লেস রিষেট ওরার্লও সোকার কাপ' প্রতিযোগিতার ফাইনালে উরু-গোরা ২-১ গোলে শক্তিশালী ব্রেজিল একাদশ দলকে হারিরে সারা পৃথিবীর কুটকা ক্রীড়াজগতে বিশ্বরের সাড়া এনে দিয়েছে। খেলার এই ফলাফলে মাঠে উপন্থিত ২০০,০০০ লক ব্রেজিলবাদা (দর্শক সংখ্যার হিদাবে পৃথিবীর রেকর্ড) হতবাক হয়ে পড়ে। খেলার বিবরণ বিনি রেডিও যোগে বিতরণ করছিলেন তিনিও শেব পর্যন্ত শেশন-স্থইডেনের অপর খেলার খবরটির ফলাফল বারণা করতে ভূলে গিয়েছিলেন। ব্রেজিলদলের খেলোরাড়রা পরালরে মৃহ্যান হয়ে অবনত মতকে ধীরপদে মাঠ পরিভাগে করেন। ফ্রান্সের এম জুলেদ রিমেট (বিনি এই কাপটি দান করেছেন) বিজয়ীদলকে নিক্ষ হাতে কাপটি প্রদান করেন। অরলাভের কল্পে বিজয়ী দলের খেলোরাড়রা স্থাপদক ছাড়া এক হাজার পাউও বোনাদ পায়।

থেলাধূলায় অভিজ্ঞতা সঞ্চর করা কোন দল বা ব্যক্তিগত থেলোয়াড়ের পক্ষে মন্ত বড় লাভ। থেলায় দোৰ ক্ৰট আবিষ্কার করা বা অপর কোন শক্তিশালী **ब्या**नात्रार्फ्त कोफ़ारेनशुग जरः दश्नात दिनिष्ठे छनि श्रावष করার পক্ষে একমাত্র শ্রেষ্ঠ উপায় হ'ল খেলার জয়-পরাক্রের চিন্তা মন থেকে দুর ক'রে প্রতিযোগিতায় বোগদান করা। জীবনে বারা অসাফল্য এবং পরাজ্বের কুঁকি নিতে সাহণী হ'ন তাঁরাই পরে সাফল্য এবং প্রতিষ্ঠা লাভ করতে পারেন। জীবনে সাফলালাভ বাঁদের লক্ষাবন্ধ তীরা অসাফল্য এবং পরাজ্যে হতাশ হ'ন না। পরাজ্য वाँदमत्र कीवटन विकीयिका धवः शत्राक्षत्रदक यात्रा জীবনে অত্যন্ত হীনতা মনে করেন তাঁরা স্বভাবতই নিজীয় পরমুখাপেকী অথবা আত্মপ্রবঞ্চক হ'ন। বাংলা দেশের वर्खमान कृष्टेवन (थनात व्यवशाष्ट्री ठिक धरे भर्गारत পাঁডিয়েছে। ক'লকাতার কোন কোন নামকরা ক্লাব থেলার अवनाख क'रत नीश-मील পांख्यांचा वड़ मरन करत । करन খেলার পরাজয় দলের পক্ষে তথা সমর্থকদের পক্ষে মন্ত বড় অক্ষমতা এবং হীনতা মনে করা হয়। কোন কোন নামকরা ফুটবল ক্লাবের কর্ত্তপক স্থানীয় খেলোয়াড়দের উপর আন্তা না রেখে ভারতবর্ষের বিভিন্ন অঞ্চল (श्रंक कांगनानी करा (श्रामात्राफ्रावर छेशत (श्री আহা রাখেন। তার কারণ, স্থানীর খেলোয়াড়দের উপর নির্ভর করতে পেলে লীগ-শীল্ড খেলার অনেক বেশী व कि निष्ठ इव धवर मालव भाक नाकनानां नमबनारभक

ব্যাপরি হরে দীর্ঘার। অনিকে ছ্বীর্থ সমর ব্যক্তির্গন পরিচালনার হলগত এবং ব্যক্তিগত প্রভাব বজার রাখতে হলে ক্লাবের সমর্থকদের হাতে রাখা দরকার। ক্লাবের: সমর্থকদল চার লীগ-শীল্ড এবং খেলার বিবিধ রেকর্ড; দলগত নামের উগ্রতা এবং ব্যক্তিগত ছার্থবাধ সভ্য এবং সমর্থকদের মধ্যে এতথানি বেশী যে, তাঁদের মধ্যে জাতীরতাবোধের একান্ত অভাব দেখা বার। কলে যে বছরের পরিচালক মগুলীর ব্যবস্থাপনার দল লীগ বা শীল্ড পার, পরবর্তী বাৎসরিক নির্বাচনের সময় সেই দলই সভ্যগণের বিপুলভাবে সমর্থন লাভ করে। দল গঠনের এই নীতি ছারা ব্যক্তিগত এবং দলগত ছার্থ অক্স্ম রেখে দলের সভ্য এবং সমর্থকদের উপর বেশী দিন প্রভাব বিভার করা বার বটে কিন্তু এ নাতি জাতীর স্বার্থের পরিপত্তি এবং আত্মগ্রবঞ্চনার সমত্ল্য।

বাইরের খেলোয়াড়রা নিছক ফুটবল খেলার আকর্বণেই কি থদেশ, সাত্মীর স্বন্ধন ছেড়ে ক'লকাতার খেলতে সালেন ? বর্ত্তমান বান্তব জগতের অর্থ-নৈতিক পটভূমিকায় ক্লজি-রোজগারের চিন্তা উপেকা ক'রে একমাত্র খেলার প্রেরণার এমনভাবে বে কেউ নিমেকে উৎসর্গ করতে পারে তা ধারণার অতীত। এমন কিছু একটা বড় আকর্ষণ আছে যার জন্তে তারা নিজ দেশের ফুটবল খেলার বোগদান করার মত পবিত্র কর্ত্তবাবোধ খেকেও নিজেদের দুরে সরিয়ে রেখে কর্ত্তবাচাত হ'তে সম্বোচ বোধ করেন না। সে আকর্ষণ গোপনীয় হলেও ক্রীড়া-মহলে অক্ষাত নর। ফুটবল থেলার সরস্থম শেব হওরার সবে সবে অথবা প্রতিবোগিতার দলের পরাত্তর ঘটলেই वाँ दिन कार्याक्त कृतिया यात्र। वाँ दिन विनीत कार्य चामा कित्र गात्र। এইভাবে এ দের ভাড়াটে (थानाबाएएक मछ ना (थनिय वाकानी (थानाबाएएकः कूठेवन (थना निकानारनत्र जैल्ला यनि औरमत्र मनजूर् कत्रा र'ठ छारल कान चित्रांत्र थाक ना। পনের বছর ধরে অবাঙ্গালী ফুটবল থেলোরাড়দের ক'লকাতার আমদানী অব্যাহত গতিতে চলেছে কি% ठाएमत (थनित मरनद नीम ७ नेक शास्त्र हाका वामान জাতির কোন গঠনমূলক উদ্দেশ্ত লাধক ইয়েছে কি ? বালালী খেলোয়াড়দের উপর স্লাব কর্ত্তপক আছা রাখতে পারেন

না কারণ অনেক শুলি স্লাবের পক্ষে বাছা বাছা নামকরা বালালী খেলোরাড় পাওরা সৃষ্টিল স্কুতরাং তাঁরা বে সংজ্ঞ পথটা আবিষ্ণার করেছেন সেটা বাইর থেকে খেলোরাড় আমদানী করে দলগঠন করা। লীগ-লীল্ড পাওয়ার আকাজ্ঞা মোটেই দোষণীয় নম্ম কিছ্ক উৎকট নেশায় জাতীয় আর্থ বিলি দিয়ে যথনই জয়লীভের বাহাদ্রী দেখানো হয় তথনই দোষণীয়। বালালী খেলোয়াড়দের উপযুক্ত ফুটবল খেলা শিক্ষা দিয়ে দলে খেলায়াড়দের উপযুক্ত স্কান সাবের প্রধান কাল হ'ল বাহির খেকে বাছাই করা খেলোরাড় ফাদ পেতে ধরে আনা, খেলোরাড় তেরী করা নম্ম। খেলোরাড় সংগ্রহের সঙ্গে যদি খেলোরাড়দের খেলা শিক্ষা দেওয়ার উপযুক্ত ব্যবহা খাকে তাহলে স্মালোচনার মুখ অনেকটা বদ্ধ হয়।

ইংলতে বিদেশ থেকে থেলোয়াড় আমদানী করার প্রথা চালু আছে এবং এদেশের থেকে বরং অনেক বেণী। এইতো আমাদের দেশের লালা অমর নাথ, ভিরুমানকড়, উমরী গড় প্রভৃতি নামকরা ক্রিকেট থেলোয়াড়রা উপযুক্ত অর্থের বিনিময়ে দেখানের বিভিন্ন দলে ক্রিকেট থেলায়াড়রা ওপাহ্রুক্ত অর্থের বিনিময়ে দেখানের বিভিন্ন দলে ক্রিকেট থেলারাড় আমদানী নীতির ফলে হানীয় থেলোয়াড়দের থেলার যোগদানের স্থবিধা থেকে বঞ্চিত করেনা এবং থেলার রোগদানের স্থবিধা থেকে বঞ্চিত করেনা এবং থেলার রাগভার নিম্নগামীও হয় না। কারণ ইংরেজ চরিত্রে অপরদিকে একটি গঠনমূলক শক্তি সদা জাগ্রত রয়েছে। বিদেশী থেলোয়াড়দের ক্রীড়ানৈপুণ্যে দর্শকেরা কেবল মুগ্ধ হয়ের চিন্ত বিনোদন করে না, এই শক্তিই হানীয় দর্শকদের বিদেশী থেলোয়াড়দের কাছ থেকে বা ক্রিছ শিক্ষণীর এবং অভিনব তা আয়ম্ব করতে অমপ্রেরিত করে। নিছক থেলার সাফল্যলাভ অথবা থেলা দেখে

विख-वितामत्त्र जिल्ला जिल्ला (श्रामान श्रामान) क्रवा हव ना। अथारन (थनांत्र मध्या आमदा (थरनांग्रांक এवः प्रनंकामत व्याधानात्राह्णाहिक काटम स छैरमाइ अवः নিৰ্নিপ্তভাব লক্ষ্য করি তার মূলে আছে বছদিনের পুঞ্জিকুত্ত অবিচার এবং অসম্ভোষ। এমন কি প্রধান প্রধান কুটবল প্রতিষ্ঠানগুলি এবং আই এফ এ নিজেও দারিছ সম্প:€ गटिकन नय वर्ण हे मर्न करमंत्र मर्स्य विरक्षांक मिन मिन वर्ष চলেছে। কেবল খবরের কাগজে বিবৃতি দিয়ে অথবা কঠোর সমালোচনা এবং পুলিশের পাহারা দিয়ে খেলার মাঠের স্বাভাবিক আবহাওয়া রাখা যায় না। দর্শকদের मत्न ७७१कि উদ্রেকের জতে আমাদেরও যথেষ্ট কর্তব্য चाहि। क्राव कर्ड्रभक वतः चारे वक व-त कडक्छनि গঠনমূলক কাঙ্গের উপরই দর্শক এবং খেলোয়াড়দের বৈ শুভবুদ্ধি নির্ভর করছে, ছঃথের বিষয় এটা তাঁরা কেউ চিন্তা ক'রে সেইমত গঠনমূলক কাজে উৎসাহ দেখান না। আই এফ এ, বিভিন্ন কাব কর্ত্তপক্ষ, খেলোয়াড়, দর্শক, সংবাদ ও সামন্ত্রিক পত্রিকার সমবেত cella uat পারস্পরিক সহযোগিতা ভিন্ন খেলাগুলার উদ্দেশ্ত সার্থক হতে পারে না। বাঙ্গালী জাতি আজ এক চরম জাতীর সহটের সন্মুখীন হয়েছে ! আজ আমাদের একান্ত দরকার रेथर्ग, नाहन, धक्छ। धवः ७ छत्कि। (थलात्र मार्क त উচ্ছুখণতার তাওব নৃত্য কৃষ্ণ হয়েছে তার প্রভাব আমাদের জাতীয় নৈতিক চরিত্রকে ক্লুষিত नर्कनात्मत्र मृत्थ अशिरत्र निरत्न वाटकः अथन विक स्वामता कर्त्वरा मचरक व्यवश्य ना रहे छारत व्यामात्मत्र क्लाल আরও অনেক ছর্ভোগ আছে। জাতই যদি এভাবে মরণের মুখে এগিয়ে যার তাহ'লে সাহিত্য, শিল্প, সমীত, ভাগ ভাগ ভদ্দধা এবং লীগ-লীভ পাওয়ার গৌরব कारमञ्ज्य मरहा ?



ন্ব-প্রকাশিত পুত্তকাবলী

শীপৃষ্ণাশ্চন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ্য্য প্ৰদীত উপভাগ "বৌৰনের শবিশাণ"—২৯০
শীলেকেরনাৰ শুহরার প্রদীত নাটক "ভালন কুল"—২
শীলেপালশহুর সরকার-সম্পাদিত "বর্ব-দীপিতা" (১৩৫৭)—৩৫০
শীকিরণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যর প্রদীত কাব্য "Voice of Silence"—৪
কল্যাপকুষার মুবোপাধ্যায় প্রদীত কাব্য "বুগের কাব্য"—১১
নরেশচন্দ্র সেনশুর প্রদীত "প্রদ্ধ বিধান"—১১
শীহরপ্রসর ভট্টাচার্য্য প্রদীত "চতুঃরোকী ভাগবত"—২৪০
শীহরপ্রসর ভট্টাচার্য্য প্রদীত লিকার-কাহিনী "আসাদের জন্মলে"—৪
বরেন বন্ধ প্রদীত "কর্মী ভিরেৎনাম"—১১

শ্বনৌরিশ্রনোহন মুখোপাধ্যার প্রণীত উপর্ভাগ "কুটন্ত কুক"—২১
শরৎ-সাহিত্য ভবন প্রকাশিত "পূরুব ও প্রকৃতি বা রভি লাত্র"—১১
"নতুন-পাওরা প্রিরা বা প্রেমপত্র"—১১
শ্বিশ্বীশ্রনাথ রাহা প্রণীত শিশুপাঠ্য উপন্তান "বিভালরে বাবল"—১১
শ্বি টেল অব্ট্রা সিটিক"—১১
শ্বিংপাক্রক্ চটোপাধ্যার-সম্ভাগিত সংক্ষিপ্ত "নীতারাম"—১১
শ্বিংগাপেলচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যার প্রণীত শ্বীবনীপ্রস্থ "বিপ্লবী শর্পচন্দ্র বৃহ্ণ"—।
কুক্পোপাল ভটাচার্য প্রণীত উপন্তান "অমরী"—৩।
শ্বানী তৈরবানন্দ্র প্রণীত দুর্শন-জালোচনা "বহুরূপে সন্মুখে ভোমার"—২।

এইচ্-এম্-ভি বাংলা রেকর্ড—আগষ্ট ১৯৫•

N 31240— অধিব্যুগের শুল, সাধকপ্রেষ্ঠ ব্রীক্ষরবিন্দের চরণে অন্তরের শুক্তির উচ্ছাস এই ব্রীক্ষরবিন্দ প্রণতি। লালগোলারাক এট রচনা ক'রেছেন, আর্থিণ্ড নিজেই ক'রেছেন—গীতাংশে যোগ দিরেছেন লছপ্রতিষ্ঠ শিল্পী অগন্ধর। N 31241—যে কঠিন সংগ্রামের পর ভারতবর্গ শোধীনতা লাভ ক'রেছে, ভার চেরেও কঠিন বৈদনাদারক সংগ্রামের পথে তাকে আত্মগুছি করতে হবে। লভানীর সঞ্চিত আবর্কনাকে পুড়িরে কেলতে বাইরের কেউ তাকে সাহায্য ক'রবে না। স্থ-সাহিত্যিক স্পেলকুক চটোপাধ্যার রচিত "ধাধীনতার শ্বরণে" তারই ইংগীত রয়েছে। N 31242—শিল্পী সত্য চৌধুরীর দরণী কঠে ছখানি অলন গীতি বিশেষ সমর উপযোগী হ'রেছে। গান ছটি রচনা করেছেন বিজ্ঞোহী কবি নজকল। N 31243—আপোক বন্ধোপাধ্যার হ'থানি আধুনিক গান পরিবেশন করেছেন, যার হুর সংযোগ করেছেন জমপ্রিষ্ঠ শিল্পী হেমন্ত মুখোপাধ্যার। N 31244—ব্রীমতী কল্যাণী মন্ত্র্যারের "একি বেলনার হার" ও "আবেশে পরাণ কাপে" আধুনিক গান ছ'থানি শিল্পীর ভাবপ্রবণ কঠের অনুস্কৃতি। N 31245—কুমারী মাধবী বোবের কঠের আধুনিক গান। N 31246—শৈলেশ রার ও অমর দত্তের বাণ্ণী ও ম্যাণ্ডোলিনের ব্যৱ-গীতি অনপ্রিয় হিশ্বী বাণী চিত্র 'প্যার কি লিং'এর ছ'থানি গানকে স্বর্ভ ক'রে তুলেছে। N 31230—রেকর্ডে রঞ্জিত রার ও তার সম্প্রাণারের গাওরা ছ'থানি গান বিশেষ উপভোগ।।

বিশেষ দ্ৰপ্তব্য

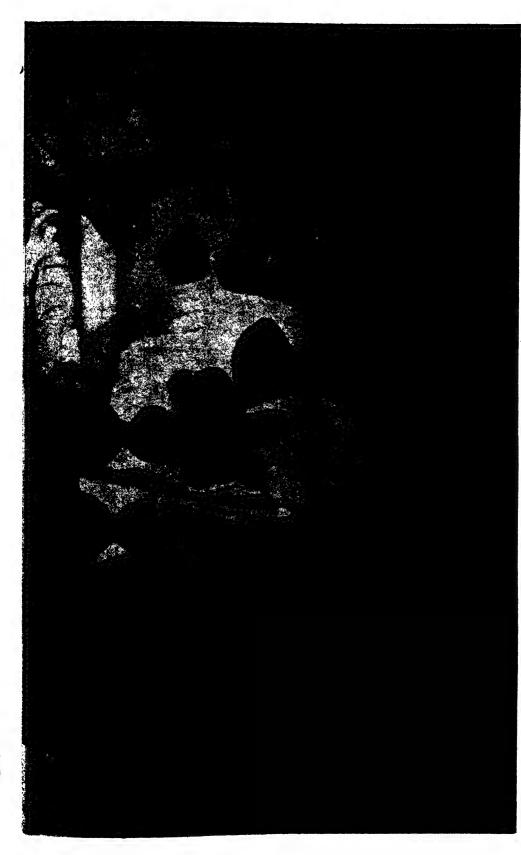
পূজার ভারতবর্ষ—শা র দী রা পূজা উপলক্ষে আগামী আরিম সংখ্যা "ভারতবর্ষ" ভাতের ৩য় সপ্তাতে এবং কান্তিক সংখ্যা আরিমের বিভীয় সপ্তাতে প্রকাশিত হইবে। বিজ্ঞাপনদাভাগণ অনুপ্রহপূর্বক ৫ই ভাতের মধ্যে আরিমের এবং ২০শে ভাতের মধ্যে কান্তিকের বিজ্ঞাপনের কশি পাতাইবেন। নির্দিন্ত ভারিখের মধ্যে পাতৃলিশি না পাইলে বিজ্ঞাপন ছাপা মা ইইবার সপ্তাবনা।

পাকিস্তানস্থ গ্রাহকদের জন্ম বিজ্ঞপ্তি

আমাদের পাকিস্তানহ গ্রাহকগণের মধ্যে থাহারা আমাদের কার্যাণরে "ভারতবর্ব"-এর চাঁলা পাঠাইতে বা জ্যাদিতে অস্থবিধা ভোগ করিয়া থাকেন, তাঁহারা জ্ঞাপের ইচ্ছা করিলে ঠিকানা ও গ্রাহকনম্বর উল্লেখপূর্বক The Asutosh Library, 78-6, Lyall Street, Dacca, East Pakistan—নিকট চাঁলা পাঠাইতে বা জ্যাদিক পারেন। নৃতন গ্রাহকগণ চাঁকা জ্যা দিবার সময় "নৃত্ন গ্রাহক" ক্থাটি উল্লেখ করিবেন। ইতি— বিনীত

কার্যাধ্যক—ভারতবর্গ্র

जन्मापक-- टीक्बीखनाथ यूट्यांशायाम् वय-व





কেবারে তুলি দিয়া আঁক।
শিলী— গ্রীদেবীপ্রসাদ রায়চৌধুরী



আশ্বিন-১৩৫৭

প্রথম খণ্ড

অষ্টত্ৰিংশ বৰ্ষ

চতুৰ্থ সংখ্যা

বুদ্ধের শরণে

অস্থাংশুমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়

উত্তৰকেন বন্দেহং পাদপংস্থ বক্তমং বুদ্ধো যো থলিতো দোদো বুদ্ধো থমতু তং মন। নন্দো বুদ্ধায় গুৰুবে ধৰ্মায় তারণে সভ্যায় মহন্তমায় চ।

জন্মমূত্যর চাকার ঘ্রতে ঘ্রতে মাহ্ম পৃথিবীতে আদে, ছক্-কাটা পরিধির ধারে ধারে জীবনের গোনা দিনগুলি কাটিয়ে দের। হাসি কারা, হুণ ছংগ, ওঠা পড়া, ভাঙা-গড়ার মধ্য দিয়ে চিরস্কনীর রথ চলে। তারই ভিতর অতকিতে একদিন নিত্যকালের সত্যমাহ্ম জেগে ওঠে, যে মাহ্মকে মাপা বার না, যে মাহ্ম অপরিমের, যে মাহ্মম অপরাক্ষের, যে মাহ্মকের উপর বিশাস হারানো পাপ, যে মাহ্মক জাতবিজোহী, অনবন্মিতশির, নিঃশঙ্কবিজ্বীবীর, মরগকে যে মানেনা, পরাভবকে যে ভরে না—বিধানীন, রাভিহীন, পরিপূর্ণপ্রাণ, বীর্যাবান, যে মাহ্য নিজেই
নিজেকে সৃষ্টি করেনেয়, স তহোপতপাৎ, যে মাহ্য রাত্রির
তপক্ষায় বসে উদয় দিগন্তের সন্ধানে। চলামি ইতিহাসের
তিশ্রোতা যথনই অবরুদ্ধ হয়, পদ্ধিল হয়, জটিল জটাজালে
জড়িত হয়, আবার বিচার বাহাহাহানের অচলায়তনে
নির্বিষ নিবীর্যা হয়ে ওঠে, তথনই বুগে বুগে ধরিত্রীর শত
পতিত অবজ্ঞাত অখ্যাতকে প্রাণের পাবন শিথার জলস্ত
করে তোলবার জক্ত আবির্ভূত হন দেবতার দীপ হাতে
মহামানবরা—'সম্ভবামি বুগে বুগে'—দিকে দিকে রোমাঞ্চ
লাগে মর্ত্যধূলির খাসে খাসে—ঐ মহামানব আসে'।
তাঁরা নিয়ে আসেন মুক্ত দীপ্ত জীবনের সন্ধান, মহতী
আশার বাণী—কানে দেন অভয় অশোক মন্ত্র। পৃথিবীতে
দেবদন্তের মত লোকের অভাব নেই। সামান্ত পাবীত
ভাদের তুণীরের তীর থেকে রক্ষা পায় না। পথে খাটে

আছে করাগ্রন্থ ও করতীরা, কত আতুর থঞ্জ করা, তথ্য, আর্ত্ত, ক্লান্ত—দিনে দিনে মাহুব চলেছে মৃত্যুর পহরবে। কেউ সন্ন্যাসী হয়, কেউ মরে, কেউ পালায় —কোথায় থাকে তার মান অভিমান ঐখর্য্য রূপ যৌবন গর্ব্ব, মাহুষ পালাবে কোথার, মার ছুটেছে পিছনে, ছুটেছে তৃঞ্চা রাক্ষসী তার লেলিহান কিহবা বিস্তার করে।

महामानत्वत्र मन कार्छ इत्त वत्न - इः थेरे कि शृथिवीत **চিরন্তন সভ্য, এই সমুদ্**য়ের कि নিরোধ নেই। রাজ্য সামাল্য, অর্থ বৈভব, তথী তরুণী, পুত্র কলত্র, সংসার সমাজ, মান সম্ভদ, সবে মনে হয় বাহা। পিতা ভদোধন, পত্নী যশোধরা, পুত্র রাজ্ল কেছই তার মনকে বাঁধতে পারে না। চৈত্রক পৃষ্ঠে এক ত্রিযামারাত্রির গভীরে তিনি বেরিয়ে পড়েন সত্য সন্ধানের অন্ত-বিখের আর্থ্ডি তাঁকে ব্যাকুল করে। এ তপস্থা নিজের জন্ম নমুক্তির জন্ম নয়, ঈশব কি জানবার জন্ম নয়, জাতার স্বরূপ কি উপলব্ধি করার क्छ नय, अर्थार्यात क्छ, निकित क्छ नय। क्याक्यांस्टरत চক্র বেয়ে কালাগ্নিপরিবেশের মধ্যে কর্ম্মের যে জলন্ত শিখা জলছে তার নির্বাণপ্রাপ্তি চাই। বাদনার, তন্থার, মোহের নির্বাণ। এ মুক্তি রবীন্দ্রনাথের ভাষায় নকর্থক नम्, मार्थक- ध निर्द्धांग निर्देश नम्, देखिराहक- ध মুক্তি কর্মত্যাগ নয়, সাধুকর্মের মধ্যে আত্মতাাগে, শুধু त्रांशद्यवर्ष्ट्वत्न नय, व्यवित्रयय देमजी नांधनाय। এ তপস্থা ভধু 'ইহাদনে ওয়তুমে শরীরং' বলে ত্বক অন্থি মাংস মেদের উৎসর্গে নয়, এ তপস্তা সম্বোধির জন্ত-ঘনান্ধকারের মাঝে আলোর জন্ত-কোথায় আলো, কোথায় আলো-দীপ काता. मीन काता-काज्यमीताहर। कात्र अमीन আত্ম তমিপ্রাকে দূর করে দীপান্বিতা করুক সমস্ত সন্তা। অন্তরের পূর্ণিমা ঝলমল করে বাইরের আকাশভরা পৌর্ণ-মাসীর সবে মিলে মিশে অপরূপ হবে, ভাইতো পূর্ণিমাই वाधित मिन। कूछे डेर्ठर अश्वत वाहित आलात भेठमा । जथनहे नवाहरक एएरक वनवात मिन-भेत्रण ने সেই বোধির, সেই জীবন-বেদের, সেই সজ্য শক্তির-জামি কেনেছি, আমি অরিহস্তা, মারকে জয় করেছি—ভয় নেই, পধ আছে—আর্য্য অষ্টমার্গ ধর্মচক্রের প্রবর্ত্তন, শীলের व्यक्तीनन- ७४ हारे नमान् मृष्टि, नमान् नःकत्त, नमान् वांक, नमान क्यांच, नमान कींव, नमान वांबांम, नमान স্থৃতি, সমাগ্র সমাধি। তবেই ব্রন্ধ বিহারে স্কুটে উঠবে নৈত্রী করুণা মুদিতা উপেক্ষা। আসবে অপ্রমাদ অনাসক্তি।

পরিনির্বাণ শ্যায় শায়িতাবস্থায় শেষ মৃহুর্তে ভগণান্
তথাগতের শেষ অফ্শাসন হলো—অব থো ভগবা ভিক্ত্
আমন্তেসি "হলদানি ভিক্ধবে আমন্তরামি বো বচোধর্মা
সভ্যারা অপ্নাদেন সম্পাদেয়াথি"—অয়ং তথাগতসস্
পচিনাবাচা—এই তাঁর শেষ বাণী অর্থাৎ সংস্কারসমূহ সব
ক্ষমশীল, অপ্রমাদের (জ্ঞান সমগ্রমুক্ত সম্যক্ স্থতির) সহিত
সর্ববর্ধা সম্পাদন করিবে। তার পূর্বে আনন্দকে
সংখাধন করিয়া ভগবান বলেছিলেন যে ধর্ম ও বিনয়ই
ভার অবর্তমানে শান্তার কার্য্য করিবে।

সারিপুত্র ভগবান বুদ্ধের প্রিয় শিষ্য। দিনের পর দিন, মাদের পর মাদ, শীত বর্ষা গ্রীম সহু করেন, মুরে বেডান শুরুর সঙ্গে, বনে জঙ্গলে, পথে, কাস্তারে, লোকালয়ে, রাজসভায়। একদিন তাঁর মনে সংশয় উপস্থিত হলো—কি পেলাম, কি জানলাম গৃহত্যাগ করে, প্রব্রজ্ঞা নিয়ে গৌতম ত কোন সমস্থারই সমাধান করিলেন ना, आमात्र वनवाम वृश्वि वृशा श्ला। मात्रिभूत्वत्र मूर्थ বর্ষাগ্রমের মেঘছায়া পড়িয়াছে দেখিয়া প্রমকারুণিক किळामा कतिलान-कि श्रेशां मात्रिश्व। जिनि छेखत দিলেন—প্রভু আপনি ত ভধু বলিলেন, অষ্টমার্গ অহসরণ করো, দেগুলি ত কয়েকটি নীতিস্ত্র মাত্র, অধ্যাত্ম জগতের কোন তথ্য তাতে পরিস্ফুট নয়, আত্মা কি, তাহার সহিত দেহের কি সম্বন্ধ, দেহ বিনষ্ট হইলে আত্মার কি গতি হয়, অহপরমাণু কিনে লীন হর, বিদেহী আত্মার অবস্থান কোথার, ঈশরের স্বরূপ কি, তিনি আছেন কি নেই, এদব কোন প্রশ্নেরই ত আপনি মীমাংসা করিলেন না-

ভগবান হেসে উত্তর দিলেন—দেখো একজনকে কেহ
শরাহত করিয়া ভূপাতিত করিয়াছে, অপর একব্যক্তি
তাহার হাদর হইতে সেইটি তুলিয়া ফেলিবার জন্ত অগ্রসর
হইতেছে, তথন যদি শরবিদ্ধ লোকটি বলে যে—আগে উত্তর
দাও এই বাণটি উত্তর পূর্ব্ব পশ্চিম বা দক্ষিণ কোন দিক
হইতে আসিয়াছে, কোন ব্যাধ বা ক্ষত্রির বা বৈশ্ব উহা
সন্ধান করিয়াছে তবে তোমাকে উহা ভূলিতে দিব।
তোমার প্রশ্নও সেই অবোধ ব্যক্তির মত। ভোমার চিত্ত

একান্ত আশান্ত হইরা শান্তি খুঁ কিতেছিল, আমি তোমাকে শান্তিলাভের উপারস্বরূপ এই অষ্টমার্গ দেখাইয়া দিয়াছি। এই পছা অফ্সরণ করিলে তুমি নিজেই সত্য দর্শন করিবে, আঅদীপ হইবে, ভোমার সব প্রশ্নের মীমাংসা হইবে। তপোনির্দ্মল চিন্ত না হইলে কোন প্রশ্নেরই সত্য উত্তর পাওয়া যায় না এবং নিজের মনেই নিজের প্রশ্নের উত্তর খুঁ কিতে হয়, তা না হইলে কোন উপদেশই কার্যাকরী হয় না।

ঐতিহাসিকের দৃষ্টিতে আজকের যুগের পরিভাষায় দেখিলে তথনকার সামাজিক পরিবেশে বৃদ্ধদেব যে কত বড় বিপ্লব আনিয়াছিলেন তা পরিমাপ করা যায়। বাত্তবনিষ্ঠ মনের পরিচয় পাওয়া যায় বৈশেষিক দর্শন, কনাদ, সাংখ্যে ও বৌদ্ধবাদে। এদের বলা হতো হেত্রবাদী।

জৈমিনিঃ স্থগভশ্চৈব নান্তিকো নশ্ব এবচ কপিলশ্চোক্ষপাদশ্চ বড়েতে হেতুবাদিনঃ।

একজন স্থারিচিত লেখক বলিয়াছেন 'সমাজ জীবনে যাহা পাথেয়, বৌদ্ধ ধর্ম্মে তাহাই পথ—ক্ষমা, মৈত্রী, করুণা, আর্য্য অষ্টমার্গ, ইন্দ্রির লাল্লদারও নয়, ইন্দ্রির সংহারেরও নয়, ভোগ ও ত্যাগের জীবননিষ্ঠ মধ্যপথই সাধারণ মাহুষের সাধ্য। তাই গড়ে উঠেছিল যাহাকে বলা হইয়াছে সমঘর-সন্ধানী সমাজ চেতনা এবং তার প্রকাশ হইয়াছিল তিনদিকে (১) এক কেন্দ্রাভিমুখী সংঘটন a centralised organisation (২) এক জনসমন্বয়ী ব্যবস্থা a socialised synthesis (৩) এক জীবন নীতির নির্দ্ধেশ a code of Ethics.'

এই জীবন-বেদকে স্বীকার করিয়া লইলে ভগবান আছেন কি নেই, এই প্রশ্ন হর অবাস্তর। তিনি আরণ্যিকের আন্ত ছংলপন না মহান্ প্রভূ বৈ পুরুষ অনাদি, অব্যয় কর, অকর হিরণাগর্ভ, প্রেমের ঠাকুর—একে বিচার বৃদ্ধিতে বিশ্লেষণ করবার দরকার হয় না। সত্যপথের সন্ধান গাইলে, সমাক্ অমুভব হইলে সমন্ত প্রশ্লেরই আপনি মীমাংসা হইলা যার।

শান্তার পরিনির্কাণের সব্দে সঙ্গের শিক্সদের মধ্যে মন্ডভেদ হয়। একদল বাদের বলা হইত "থেরাবাদিন্" টোরা বুড়ের অঞ্পাসনগুলি কার্মনোবাক্যে পালন করিবার

চেষ্টা করিতেন। আর এক দল হলেন 'মহাসভিবকা'— বাঁরা निरम्दार ही का विश्वनि बांता वृक्तरमवटक करत्र जूनरानन লোকোন্তর। দিগ্নিকারের ব্দ্ধালমতে বলা আছে যে বুদ্ধের জীবনান্তে 'কায়শুভেদে'র পর, দেবতা ও মাতুর কেংই তাঁর দর্শন পাবেন না-তার তথন 'অপ্লব্ডকা' ভাবং non-comprehensible state, তিনি ভাষ লোকোত্তর নন্, অরূপাতীত, অরূপ ব্রন্ধাতীত। এদিকে গড়িয়া উঠিল ত্রিপিটক, বিনয়, হুত্র, অভিধর্ম। এমন সময় ভারতের আকাশে এক পরম উজ্জল জ্যোতিকের উদয় হইল-তিনি মহারাজাধিরাজ রাজচক্রবর্ত্তী অশোক-রুদ্রবৌদ্রবিক চণ্ডাশোক নন, কলিকবিজয়ের পর ধর্মাশোক, রাজ্যজবে বিগতস্পৃগ্। গিরিগাতে উৎকীর্ণ রাজা প্রিরদর্শীর অফুশাসনগুলি আজ্ঞ কালের সীমানা পার হ'ছে সাক্ষা ছিচ্চে মহামানবের শিক্ষার ধারা। 'সবা मुनिरं शका मम' अमरखन अमरथन विकास ' '(भाजान পোকিতি'র শিক্ষা দিলেন তিনি—ভারতের এক প্রান্ত থেকে আর এক প্রান্তরে গিরিমরীশৈলমালার ওপর থেকে এপারে। বল্লেন—ধর্মচক্রের প্রবর্ত্তন করতে হবে, শিক্ষার, সেবার, ধর্মের শরণ লও—বে ধর্ম মাত্রুবকে বাঁচিয়ে त्रात्थ, मृष्टि (मग्न, शृष्टि करत, या माञ्चरक (मग्न मिक्न, প্রাণ, তেজ, বীর্ঘ্য, সম্ভ্রম, মহুয়াত্ব, যার জক্ত চাই त्मता, मःयम, वहश्वश्व। <u>बाक्</u>षणता शालाशालि मिटल य তিনি মোহাত্মা, বুদ্ধদেবকে বলা হলো 'বুষল', কিছ সভ্যের ব্যর্থ তাতে থামলোনা। কবির ভাষায় বলতে গেলে বলা যায়--'চলে গেছ আজ তুমি মহারাজ, রাজ্য তব অপ্রদম গেছে টুটে' কিছ আমাদের ছান্ত্র সিংহাসনে আজও তিনি মহারাজ। H. G. Wells এর কথা মনে পড়ে "Amidst the tens and thousands of name of monarchs that crowd the columns of History, their majestics, graciousnesses and Serenities royal highnesses and the like, the name of Asoka shines almost alone like a Star"

এই প্রেমাভিযান ওধু চণ্ডাশোককেই ধর্মাশোক করেনি, কত উপালি উদ্ধার করলে, কতো শ্রীমতীকে, কত মানন্দকে পথ দেখালে কত চণ্ডালিনীকে, কত প্রাক্ষণ কত শৃত্য, কত পাপী তাপী উদ্ধার পেরে গেলো ত্রিশরণের মন্ত্র নিরে। ডাইনে বামে ছন্দ নামলো নবজনমের মাঝে, বন্দনা গিরে মিশলো সঙ্গীতে ভঙ্গীতে, রূপে অরূপে, মন্দিরে মূর্ত্তিতে 'ক্রোভস্তাকো'।

অশোক বৈভাজ্যবাদীদের অর্থাৎ ধারা স্ত্রগুলিকে বিচার বিতর্ক করে গ্রহণ করতেন তাদেরই বেশী আদর করতেন। কিন্তু মূল বৃদ্ধবাণীকে অবলঘন করে নানা মতবাদের স্পষ্টি হতে থাকে। এলেন অর্থবোষ শৃণ্যবাদী, নাগার্জুন লিখলেন বিভাস, 'সিদ্ধনাগার্জুন কক্ষপ্টে' হলো তান্ত্রিক বৌদ্ধের সাধনার ইতিহাসের স্কুর্কু, এলেন আর্য্যদেব, সম্রাট কনিন্ধ, মিলিন্দু, স্থবির মৈত্রেয় নাথ, বিজ্ঞান বাদ্, যোগাচারবাদ, সর্ব্বাদ্ভিবাদ, মহাস্থবাদ, বজ্রখান, মহাযান, বোধিসত্থান, হীন্যান, পরিমিত ভার, মক্সার প্রভৃতি।

व्यार्थात्व वरमनः

শনাহি হার্য্য, নাহি চন্দ্র নাহি গ্রহ নক্ষত্র নিকর
নাহি ভূণ তরুগতা নদনদী পর্বত প্রান্তর
শূণ্য শূণ্য মহাশূণ্য
নাহি জন্ম নাহি মৃত্যু ইহলোক নাহি পরলোক
স্থপ্র সম শূণ্য সব মরীচিকা সম কার তরে করিতেছ
শোক

কে তোমার প্রিয়জন ? কার তরে কর অঞ্পাত কে মারিল ? কে মরিল ? কে করিল কারে অস্ত্রাঘাত ছিল হোক মোহবদ্ধ সব মিথ্যাদৃষ্টি হোক তিরোহিত মহাব্যোম সমান শৃণ্যতা, শঞ্চেশিব প্রপঞ্চ অতীত (প্রবাসী জ্যৈষ্ঠ ১৩৪৯)

মিলিল প্রশ্নেও এই সমতা—ভদন্ত নাগসেন তিনিই—
তিনি? না অন্ত কেউ? স্থবিরের উত্তর হইল—নচ সো,
নচ অক্ত ক্রোভি তিনিও নহেন, অক্তও নহেন। প্রথম
প্রহরে যে দীপ জালানো হয় শেব প্রহরে তার বে
শিথা সে শিথা কি প্রথম প্রহরের প্রদীপের অইসাহন্রিকা প্রজাপারমিতা শ্ণ্যবাদীদের বেদ বিশেষ—
তারা নির্বাণকে ক্রিলেন জনির্বাচনীয়—এমন একটা
কিছু যাকে ব্যক্ত ক্রা যার না—এ তথু নেতি নয়,
সম্পূর্ব ইভি বাচক্। এই সব মতবাদের মহাসাগরে

হাবুড়ুবু থেতে লাগলেন সন্ধর্মীরা—তর্ক হতে লাগলো নির্কাণ কার জন্ম, নিজের জন্ম না স্বার জন্ম। লাভের আশায় দেবতাদের ও শক্তির আশ্রয় গ্রহণ করা সমীচীন বলিয়া অনেকে মনে করিতে লাগিলেন। শক্তি মানেই বিভৃতি, বিভৃতি মানেই ক্ষমতা। কেউ वर्णन-'व्रगवसः एएच स्य' व्रगरक वैधिरवा-व्रग मारन পারদ না উপনিষদের রদ-না শক্তির সাধনা জানিনা-এই শক্তি লাভের চেষ্টাভেই তান্ত্রিকতার জন্ম। এলেন প্রকাপারমিতা. হেবজ্র। আচার্য্য পদাসম্ভব গেলেন ভিকাতে। তল্কের নাম হ'লো সেপার ঋগবুগ। श्वक मध्यमात्र ब्बर्ग डिर्राला, श्रव्लामानन नांच श्रष्टि, চারিচন্দ্রসাধন যোগিনীসাধন কিছ তখনও প্রাচীন আদর্শের প্রতি ভক্তি লুপ্ত হয় নাই। কারছবাহ নামক মহাধানস্ত্রে দেখি বোধিসত অবলোকিতেশ্বর করুণামহার্ণব রূপে চিত্রিত হইরাছেন। বলা হইতেছে এবন ময়া শ্রুতম এই রকম শুনিরাছি যে, একদিন ভগবান জেতবনে বিহার করিতেছিলেন এমন সময় এক অপূর্ব আলোকে সারা বিশ্ব উদ্ভাসিত रदा डेर्रंग, निरम्रता नवारे विकामा कतिराम-श्रव् এই আলো কোথা হইতে আসিতেছে—ভগবান উত্তর मिरान दर दाधिमञ्ज व्यवलां किराज्यंत्र व्यवीति नतरक অধামুধসত্ব পাপীতাপীদের উদ্ধারের জম্ম গমন করিতে-ছেন। ঐ কারগুরাহের বিতীয় অংশে দেখি, বোধিস্থ महाराव ७ जैमारक मानाकती विश्वानान कतिराहरन এवः मञ्ज निरम्भ '७म मनिश्रा इम-७म मृत्न मृत শুণ্যে স্বাহা। তাদের মতে (The Indian Historical quarterly vol XXIV no 4) আদি বৃদ্ধ ছিলেন স্বয়স্তু, অবলোকিভেশর। অবলোকিভেশর এলেন श्राह्म कार्त्य ७ शास्त्र हत्रम विकाम (Highest point of meditation) এবং তাই থেকে এলেন ব্ৰহ্ম নারায়ণ, সরস্থতী, তারা, প্রস্তা यांत्र (व वृक्त क्रमभंः वरे रूड (मर्था স্বরম্ভ ভগবানে পরিণত হয়ে গিয়েছেন—বে দেবতাকে তিनि निष्य चौकांत्र**७ करत्रनि, अचौकांत्र७ कर**त्र^{नि} —সেই পরম দেবদ্বে স্ষ্টিস্থিতিলয়ের তন্ধরূপে তি^{নি} প্রতিষ্ঠিত। নির্কাণের অন্ত লোকে ততটা কাতর ^{নর্ব}

ভক্তেরা চাম্ব সিদ্ধি, তারা চাম্ম শক্তি। তিবেতে, নেপালে, কামরূপে, পূর্ববন্ধে প্রচলিত মহাবানী বজ্ঞধানী বৌদ্ধতান্ত্রিকতাবাদ নিয়ে এসেছিল আচার অভিচার! ভারতবর্বে বৌদ্ধর্মের প্রায় শেষ ইতিহাস কিছুটা তান্ত্রিকতার মধ্যেই, কিছুটা বৈষ্ণব আগমে, কিছুটা সহজিয়া, আউলবাউল নাথেদের মধ্যেই দুপ্ত হরে গেল।

ভগবান তথাগতের বাণী কিন্তু সেইথানেই আত্মগোপন করে নাই। তাঁর পুণ্য আবির্ভাবের সময় হতেই
এই অমৃত মত্র ভারতের প্রমণ, ভারতের নাবিক,
ভারতের পথিক, ভিকু ভিকুণী পথে পথে দেশদেশান্তরে
বহন করে নিয়ে গেছে—তারা গেছে মরুকান্তার
গিরিদরীসমূল লঙ্ঘন করে গান্ধার হতে জল্ধিশেষ।
এই বৃহত্তর মহাভারতে অনেত্র প্রেমের রাজ্য প্রতিষ্ঠিত
হয়েছিল:

"পন্নাসন্ রয়েছে স্থির, ভগবান বৃদ্ধ সেথা সমাচীন চিরদিন মৌন যায় শান্তি অন্ত হারা, বাণী যার সকরণ সান্থনার ধারা" ভারতবর্ধ বর্ম্মে বর্ম্মে সজ্জিত হইয়া শূলপন্যভল্ল লইয়া রণতরী সাজাইয়া দিখিলারে যায় নাই, সে গিয়াছিল কৌপীনবন্ত হইয়া দণ্ডকমণ্ডলু হাতে। তিব্বত, চীন, জাপান, ছাপমর ভারত, খ্যাম, সিংহল, চম্পা, কাছোডিয়া খোটান সর্ব্বে আজও সেই পুণ্য শরণ আকাশে বাতাসে ওতোপ্রোভভাবে বিক্কড়িত। এ যাত্রা প্রেমের, এ যাত্রা মৈত্রীর, এ যাত্রা জপমালাগ্রত গৈরিক কাষায়বন্ত্র-পরিহিত মাছবের, যার শেষ প্রকাশ মহাত্রাজী—এ যে কতো বড় অভিযান, কতো মধুর, কতো উদার, কতো বিরাট, কতো মর্ম্মম্পর্কী,ভার একটি পাথুরে প্রমাণ উপস্থিত করিতেছি।

প্রায় আটশো বছর পূর্বে ব্রহ্মদেশে এক রাজা ছিলেন।
তাঁর নাম ছিল রাজা অলংসিপু। তিনি পাগানে আনন্দমন্দিরে প্রত্যরফলকে পালিভাষার যে প্রার্থনাগীতি উৎকীর্ণ
করিয়াছিলেন তাহা আন্তরিকতায় ও ভাবসম্পদে অপূর্বে।
চার হাজার বছর পূর্বে প্রাচীন ইজিপ্টের সমাট্
ইখ্নাটোনের স্থাতোত্তা আমরা পড়িয়াছি Breasleadএর
Dawn of Conscience নামক পুত্তকে। রাজার
প্রার্থনা বা King's prayer বলিয়া তাহা অভিহিত।
পৃথিবীর আর এক প্রান্তে হাজার হাজার বংসরের

ইতিহাসকে পিছনে ফেলে এসে মধ্যবৃগীয় সামস্ভভাত্তিক আর এক নরপতির আকুল প্রার্থনা আজও আমাদের কর্পে বাজিতেছে। বর্মা রিসার্চ্চ সোসাইটির ১৯২০ সালের পত্রিকার অধ্যাপক পে মংটিন্ ও অধ্যাপক সুস্ এই Shwegngyi Pagoda Inscriptionটি স্থণী ও ঐতিহাসিকদের দৃষ্টিতে আনেন। বঙ্গীর সাহিত্য পরিবদের রেঙ্গুন শাধার তৎকালীন সহসম্পাদক শ্রীবৃক্ত পরেশপ্রসাদ মন্ধ্যুদার মহাশর "স্থবর্ভভূমি" পত্রিকার মারক্তং এই প্রশন্তিটি আমাদের গোচরে আনেন। রাজা মন্দিরটি সন্ধর্মীদের দান করিয়া বলিতেচেন—

"এ দানের পুণ্যফল চাহি শুধু আমি সর্বজীবহিত; অন্তরে কামনা যত স্বারি অস্তরতম এ মোর কামনা! যেই মহাপুণ্য আজি করিছ অর্জন বিনিময়ে তার, এ জন্ম কি জন্মান্তরে নাহি চাহি কভু বন্ধলোক, সুরলোক কিলা মারলোক, যত অমর বৈভব হীরামুক্তামণিমর রাজার মুকুট একচ্চত্ত ধরণীর রত সিংহাসন-নহে নহে কাম্য মোর; বুদ্ধ শিশ্বপদে যে গৌরব তাও নাহি চাহি। আমি চাই সংসার নদীর বক্ষে বাঁধিবারে সেতু যে পথে অনস্তকাল বাবে পরপারে আনন্দধামের যাতী! সেই সেতু বেয়ে যাব আমি লয়ে বিশ্ববাসা জনে সংসার সমুদ্র স্রোতে ডুবিছে অতলে তুলে নেব সবাকারে—আমি চাই আপনি সংযত হয়ে. অসংযত জনে निशंहे मःयम ; मास्नात वानी निष्ठ আপন অন্তরে শোনাই তা জনে জনে সান্থনা পায়নি যারা। অভয় বিতরি ভীতৰনে—আপনি জাগিয়া স্থ জনে করি জাগরিত—শাস্ত করি অহরের माराधि माइन, निछारे भारत बाना হিংসার ঝটিকা যত দিই থামাইয়া। সৃষ্টির আদিম পাপ লোভ হিংসা মোহ

মোর চিত্ত মাঝে হোক তারা অঙ্কুরে বিনাশিত। রূপে রুদে খবে আর গন্ধে পরখনে ইন্দ্রির স্থম্পৃহা—দূর হোক আজি। नत्रामारक (अर्छ घिनि, य महामानव ভাজিলেন রাকৈশ্বর্য যশের গৌরব ভুচ্ছ ধূলিকণাসম, ঠিক সেই মত হায় আমাঝো বাসনা ত্যজি যাই বছ দূরে ধর্ম্মের আশ্রয় জাশে ত্রিরত্ব শরণে। আজি হতে আমি চাই ধর্মের বিধান মানব মঙ্গল ভরে—ছোট বড় সবি যেন সম শ্রদ্ধান্তরে করিগো পালন। দীক্ষিত ত্যাগের মন্ত্রে বোধিতবস্থা নিতা করি পান। মুক্ত হোক মোর কাছে সূত্র অভিধর্ম আর বিনয়ের হার। মামুষের ব্যথা হেরি সর্বাশক্তি দিয়ে যেন করি প্রতিকার

অন্তহীন কালসিদ্ধ আবর্ত্তন মাঝে ঘূরিভেছে গ্রহ ভারা দেব নর যত মুক্ত করি সবাকারে হেন শক্তি চাই।

যে প্রার্থনা সেদিনকার এই নগণ্য নরপতি করেছিলেন, তার ভগ্নংশও কি আমরা আজ এই বিংশশতাস্বীর আণবিক বিজয়রথদৃথ্য বিজ্ঞানের যুগে বলতে পারি। আমরা কি বলতে পারি

> সর্ব্ধ পাপস্ম অকরণং কুশলস্স উপসম্পদা সচিত্ত পরিশোধনং এতং বৃদ্ধায়শাসনং

সকল প্রকার পাপবর্জন, কুশল কর্মের অমুষ্ঠান, চিত্তের নির্ম্মলতা সাধন ইহাই বুদ্ধের অমুশাসন।

অভিথরেও কল্যাণে পাপা চিত্তং নিবাররে
দথ্যং হি করাতো পুঞ এতং পাপত্মিং রমতী মনো
কল্যাণলাভের কল্প তোমরা অতি ভরায় ধাবমান হও, পাপ
হইতে মনকে নিবৃত্ত করো, আলভ্রের সহিত পুণ্য কর্ম
করিলে মন পাপে নিরত হইরা থাকে

যথাগারং স্থচ্ছন্নং বৃটঠা ন সমতি বিজ্ঝতি এবং স্থভাবিতং চিত্তং রাগো ন সমতি বিজ্ঝতি বে গৃহ উত্তমরূপে আচ্ছাদিত তাহাকে ভেদ করিরা বেমন বৃষ্টি প্রবেশ করিতে পারে না—বে চিত্ত স্থভাবনাযুক্ত তাহাতেও নেইরূপ আগজি প্রবেশ করিতে পারে না।

যথাপি ফ্চিরং পু্পৃকং ব্রবস্তং আগদ্ধকং
এবং স্কুভাষিতা বাচা অফ্লা হোতি কুরবতো
বেমন স্থানর বর্ণমুক্ত পূজা গদ্ধহীন হইলে নিক্ষা হয় তজ্ঞপ স্কুভাষিত বাকা কার্যো পরিণত না হইলে নিক্ষা হয়।

অক্কোধেন জিনে কোধং
অসাধুং সাধুনা জিনে
জিনে কদরিরং দানেন
সচেন অলিক বাদিনং

ক্রোধকে অক্রোধের ধারা জয় করিতে হয়, অসাধুকে সাধুতার ধারা, ফুপণকে দানের ধারা, মিধ্যাবাদীকে সত্যের ধারা।

আক এই শরণেরই কামনা করি য়া আমাদের কর্মবিষ্ধ করিবে না, রাজসিকতায় মন্ত করিবে না,
তামসিকতায় লিপ্ত করিবে না, সান্তিকতায় অহক্ত করিবে
না। শরণ লবাে সেই বাণীর—যে বাণী সকলের, যে বাণী
পৃথিবীর, যে বাণী কাহাকেও দ্রে রাথে না, বর্জন করে
না, যে বাণীর মহাসাগরে যুক্ত হয়েছেন সব দেশের সব
মণীবীরা, সমস্ত ভুছতা কুজতা নীচভার উর্দ্ধে যে বাণী,
যেখানে কোন বিরোধ নেই, বিবাদ নেই, বিততা নেই—
মা মা হিংসা বলে যে মন্ত ভারতের গভীর সন্তার মুগে মুগে
ভারত ভগবানকে ভেকেছে সেই বুদ্ধেরই শরণ লইলাম,
মাথা নত করি সেই ধর্মের কাছে, আশ্রয় চাই সেই সভ্বশক্তির কাছে, সেই শরণই জয়য়ুক্ত হোক্। রবীক্রনাথের
ভাষার "সনাতন সভ্য ভারতবর্ষের মুক্তিমন্ত্র ত শুরু ক্রীড্ন
নয়, এ মুক্তি কর্মের বাসনা, জনসংবের আঘাত ও জিগীবার
উত্তেজনা হইতে মুক্তি"—

এ ধরার জন্ম নিছে বে সহামানব সব মাঞ্চবের জন্ম সার্থক করেছিলেন আজ-

> ন্তন তব জন্ম লাগি কাতর যত প্রাণী কর ত্রাণ মহাপ্রাণ আন অমৃত বাণী শাস্ত হে মৃক্ষ হে হে অনস্ত পূণ্য করণাখন ধরণীতল কর কলক শৃক্ত।

জনমত

শ্রীপৃথীশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

(3)

নোড়ের মাথার কেইঠাকুরের দোকান-

ঞ্চি-রোড হইতে বে রান্তাটা এই শিল্লাঞ্চলের গ্রামে চুকিয়াছে তাহারই মোড়ে ছোট্ট দোকান। দোকানের কোন খ্যাতি নাই কিন্ত প্রাধান্ত আছে। বালক বৃদ্ধ, ধনী নির্ধন সকলেই এই দোকানে বদিয়া আড্ডা দেয় এবং গলির মোড়ে বলিয়া এইস্থানে গ্রামের বা কলিকাতার শেষ সংবাদ পাওয়া বায়—এটি গ্রামের রয়টার অফিস্ বলিলেও অনুযুক্তি হয় না।

কেষ্টঠাকুরটি কুজকায়, অপ্রিয় সত্যবাদী, কিন্তু ব্যবহারে ভত্র ও রসিক। তাঁহার সবচেরে বড় ক্ষমতা বে, সব রকম লোকের সহিত তিনি একই রকম নৈকট্যের সঙ্গে সর্ব্ব বিষয়ে আলোচনা করিতে পারেন।

থ্রামের অধিবাসীদের বেশীর ভাগ চট্কলের চাকুরিয়া, না হয় কলিকাভার ডেলি-প্যাসেঞ্জার। তাঁহারা বৈকালে বা সন্ধ্যার পর আদেন এবং গ্রামন্থ নিদ্ধা যুবকগণ বাকী সময়ে ঠাকুরের দোকানে আড্ডা দেয়।

ঠাকুর লোক্তাযুক্ত পানে গাল ফুলাইয়া তর্জ্জনীর মাধায় চূণ লইয়া বসিয়া পাকেন এবং মাঝে মাঝে মিষ্ট তিক্ত কথায় নানারূপ টিপ্লনী ছারা হাক্সরুস পরিবেশন করেন।

স্তরাং ঠাকুরের দোকানটি কেবল্যাত্র রয়টার অফিগ ন্যু, তা গ্রামের ক্লাব্ভ বটে।

বাঁহারা এই ক্লাবের নিয়মিত সভ্য তাদের মধ্যে নিকর্মা

য্বক —বটু, বাদলা, ল্যাটা, মণি এবং গ্রামন্থ জমিদার

বাব্দের বাজীর—ভূতো, পটলা, শচীনবাব্, সভীশবাব্ ও
পাঁচ্বাব্ প্রধান। বলা বাহুল্য ইহাদের সকলেই একবয়নী
নয়, বালক হইতে প্রোচ সবই আছেন।

সেদিন সকালে বটু বাদলা মণি পটলা ও শচীনবাবু

বিসিয়া নৃতনতম সিনেমা ছবির আখ্যানভাগ, সদীত অভিনয়
প্রভৃতি সম্বদ্ধে গভীর ও গুড় গবেষণা করিতেছিল। পটলার

হাতে নট-নটাগণের ছবিযুক্ত একখানি মাসিক পত্রিকা—সে

তাহা হইতে কি একটা পড়িয়া গুনাইলেঠাকুর বিশেষ স্থার— হাাঁ-হাাঁ—বলিয়া উঠিলেন। কথাটা অর্থবোধক, তাই সকলে হাসিল। এই হাঁা হাাঁ—টিপ্পনীটি ঠাকুরের অস্থতম বৈশিষ্ট্য— তাহা নানা অর্থে নানা ভাবে প্রায়শঃই পরিবেশিত হয়।

একটি ভদ্রনোক গেঞ্জি গায় দিয়া রান্তার অপর পারের দোকান হইতে তেল ডাল প্রভৃতি কিনিয়া লইয়া যাইতেছিল। শচীনবার্প্রশ্ন করিলেন—লোকটা কে হে ? নতুন দেখছি—

পটলা বলিল—ঐ ত নবীনবাবুদের ভাড়াটে—রেফ্জি বান্ধাল।

- —কোন বাড়ীটা ?
- —ওই ত ভিম্বেন বাড়ীটা, সেইটে ০০ টাকার ভাড়া নিয়েছে—
 - —তা হ'লে শাঁসালো আছে—কি করে ?

বটু বলিল—তা জানি না, তবে ৯টা-১৫রয় রোজ ক'লকাতা যায়, আর বোধ হয় ৬টা ১৩'র আদে—

मि विनन-लोकिं। नािक थम-थ उत्ति ।

শচীনবার্ কৃথিলেন—ধ্যোৎ, এম-এ পাশ লোকের চেহারা অমনি হয়—গেঞ্জিগায় দোকানে আদে—

ঠাকুর প্রশ্ন করিলেন—তবে চেহারা কি রকম হয়—

পটলা বলিল—দেবার ছরিদাস যখন ম্যাট্রক পাশ ক'রলে, তথন সে গ্রামে কা'রো সঙ্গে কথাই ব'ল্তো না— পাম্পাস্থ আর পাঞ্জাবী ছাড়া ঘর থেকেই বেক্ত না—

মণি কহিল—ভবে ত ওর মটকার জামা পরে বাজার করা উচিত—

শচীনবাবু মন্তব্য করিলেন—যতই বল ও চেহারার এম-এ পাশ করা যায় না—বড় জোর ম্যাট্রিক—

भ**े**ना कहिन-किश्च वानान य !

ঠাকুর বান্ধান, তিনি কহিলেন—তবে হ'তেও পারে বা—হাঁ। হাঁ।

অর্থাঞ্জক হাঁা হাঁা গুনিরা সকলে হাসিল—
আড্ডা চলিতে লাগিল—
ন'টার সময় দেখা গেল ঐ ভদুলোকই হস্ত-দন্ত হটুৱা

ষ্টেসন পানে ছুটিতেছেন। সাধারণ ধৃতি পাঞ্চাবী, কিন্তু পরিকার, চোধে চশমা। শচীনবাব তাহার গমন লক্ষ্য করিয়া কহিলেন—এখন ত চেহারাটা মন্দ্র দেখাছে না—

ঠাকুর কহিলেন—মাহবের মতই ত দেখাছে— পটলা প্রতিধ্বনি করিল—হাঁ৷—হাঁ৷—

ভদ্রলোক প্রসক্ষেই নানা আলাপ আলোচনা চলিতেছিল, এমন সময় পাঁচুবাবু আসিরা জলচৌকী দখল করিয়া বসিলেন—ক্ষিলেন—কার কথা বলছ হে ?

পটলা বুঝাইয়া বলিল। শাচুবাবু কহিলেন—লোকটার সঙ্গে আলাপ হ'য়েছে টেলে। উচ্চশিক্ষিত এম-এ, রেফুজি—টালিগঞে যায় রোজ।

পটলার সিনেমার ঝেঁ।ক আছে, টালিগঞ্জ শুনিয়াই সে কহিল-ফিলিমে কান্ত করে নাকি ?

শাঁচুবাবু বলিলেন—হাঁ৷ হাাঁ—পথে আর এক ভদ্রলোকের সঙ্গে যে রক্ম আলাপ হ'ল তাতে সেই রক্মই মনে হয়—

—তবে ত ভদ্রলোকের সঙ্গে আলাপ ক'রতে হয়—
বাদলা বলিল—কি ক'রে ? বিদান লোক, তার পরে

হয়ত বড়লোকও—যখন ফিলিমে কাজ করে—আলাপ
ক'রতে ভয় ক'রবে না ?

পটলা চিশ্বিত হইয়া কহিল—তাই ত—কি করা শায়—ধোপ-ছুরত্ত কাপড় জামা পরে যাবো—

কিছুদিন পরের কথা—

উক্ত ভদ্রলোক স্থানীয় একটা সভায় পৌরোহিত্য করিতে নিমন্ত্রিত হইলেন—এবং জ্ঞানগর্ত বক্তৃতা দিয়া ফোলিলেন।

ঠাকুরের দোকানে সমবেত সকলে সেইদিন সেই প্রসাদের আলাপ করিতেছিলেন। পাঁচুবাবু জলচোকীতে উপবেশন করিয়াছিলেন, অক্সের প্রশংসা শুনিরা মন্তব্য করিলেন—বাদালদের ঐ শুণটা আছে, ভিটে মাটি বিক্রিক্রেও তারা পড়ে। আমাদের মত কেরাণী হয়ে ডেলি-পাব্ত হ'রে ধরাকে সরা জ্ঞান করে না—

ঠাকুর বাদাদের প্রশংসার স্থর করিয়া কহিলেন— হাা—হাা—

উপস্থিত অনেকে ঠাকুরকে বালাল বলিরা ঠাটা

করিলেন, কেহ কেহ বলিলেন—ওটের জালার মাছ থাব যো নেই, ইলিশমাছ চারটাকা হ'রে গেছে—

মণি বলিল—ঠিক, ওই ভদ্রলোক রোজ ক'লকা থেকে মাছ নিয়ে আসে—

তাহার পর কথাটা অন্ত প্রদক্ষে চলিয়া গেল।

আরও কিছুদিন পরে ভদ্রলোকের সঙ্গে আনেছে পরিচিত হইলেন এবং লোকটিকে সকলে মিশুক নিরহকার বলিয়া ধরিয়া লইল এবং আরও কিছুদিন পাঠাকুরের দোকানেও তিনি মাঝে মাঝে বসিতে আর করিলেন। তথন আর কাহারও সংশয় রহিল না ও লোকটি শিক্ষিত এবং সতাই নিরহকার ভদ্রলোক—না তাহার বীরেনবারু।

বীরেনবারু মাঝে মাঝে বসিলে পাকিস্থানের কথা উঠি তিনি পাকিস্থান ত্যাগের ইতিহাস ও কারণ বর্ণনা করেন অনেকে শোনে। কেহবা প্রশ্ন করে—পাকিস্থানে এখা ত গোলমাল নেই, আপনারা খামুকা এলেন কেন?

বীরেনবাবু হাসিয়া বলেন —সে আপনারা বুঝবেন না অর্থের চেয়ে আদর্শকে যারা বেণী ভালবাসে, তারা এমনি ভুল করে।

কেছ বোঝে কেছ বোঝে না—কেছ না বুঝিরাই েই ছেঁ করিয়া হাসে। বীরেনবাবু তাহার কথা বুঝাইবার চেই করেন এবং সেটা আন্তরিকভাবেই।

আর একদিনের কথা---

শচীনবাবু শীকার করিতে গিয়া একটি খুখু মারিয়াছেন সেই কথা হইতেছিল—এমনি সময় বীরেনবাবু আসিয়া বসিলেন। শীকারের গল্প চলিতে লাগিল, পাথী হইতে শুগাল নেউল, পরিশেষে ব্যাত্ত শীকার।

ল্যাটা স্থানীয় একটি ব্যাত্র শীকারের কাহিনী ও শীকারীর মৃত্যু প্রদক্ষে গল্প বলিয়া ধখন শেষ করিল, তথন বীরেনবাবু কহিলেন—মাটিতে দাঁড়িছে শীকারীর গুলি করা ত ঠিক নয়, কোন অভিক্র লোকই তা করে না। ভদ্রলোক বোধহয় নতুন শীকারী—

—না না, তিনি বহু বাঘ মেরেছেন।

—তা হ'লে ছর্ম্মতি হ'রেছিল—নেহাত নরণ বৃদ্ধি।
আমি বার সঙ্গে প্রথম শীকার করি তিনি হ'ট উপদেশ
দিরেছিলেন—একটা মাটিতে দাঁড়িরে গুলি না করতে

এবং আর একটি আহত বাবের সাম্নে না বেতে। মাটিতে দাড়িয়ে গুলি করলে বিটারদের গায়ে লাগতে পারে, আর বাবের প্রায়ই তুর্বল অঙ্গ পাওয়া যায় না।

বীরেনবাবু একটি ব্যাদ্র শীকারের কাহিনী বলিলেন, সকলে অত্যস্ত কোতৃহলী হইয়া শুনিল। শচীনবাবু কহিলেন, —থেলাধুলোও ক'রতেন?

—হাঁা, কিছু কিছু করেছি সব থেলাই, তবে ফুটবল ও ভলিটাই পারতাম ভাল।

পটলা कहिल-5लून ना, काल छलि (थल्रातन ।

— এখন বয়স হ'বেছে, তোমাদের সঙ্গে তাল রেখে খেলা ত হবে না। আচছা উঠি, রাজি হল। বীরেনবাবু উঠিয়া গেলেন।

পটলা বিশ্বিত হইয়া বলিল—লোকটার ত সবদিকেই বেশ আছে—লেথাপড়া, থেলাধুলো।

ল্যাটা কহিল—হাঁা—গুল্ মেরে গেল কিনা তা কি করে জানবে ?

পাঁচ্বাব্ কহিলেন—ভদ্রলোক, তার কথা অবিশাস করে গুল বলাটা ঠিক নয়—

ল্যাটা প্রতিবাদ করিল—দেখুন না, যদি ভাল খেল্তে পারে, তবে কুকুরের নামে নাম দেবেন।

পটলা কহিল—হাাঁ, দেখে শুনে বল—আগেই এ রক্ষ বলা ঠিক নয়।

শচীনবাবু মন্তব্য করিলেন—গ্রামে এ রকম ছ'চার জন শিক্ষিত উৎসাহী লোক থাক্লে হয়ত ছেলেপুলেগুলি মামুষ হবে—

नािं। विनन-कि करत्र ?

—শিক্ষিত লোক, তাদের দেখে উৎসাহ পাবে— উচ্চাকাজ্ঞা হবে—

পটলা কহিল—শিক্ষা, দীক্ষা পেয়ে লাভ কি—বাড়ী গাড়ী ত শিক্ষিত কারও নেই—বরং কালোবাজার-টাজার ক'রতে শিথুলে কাজ হ'তো—

ঠাকুর অন্থনাসিক হুরে হুর করিয়া কহিলেন—হাঁ, হাঁা—লেখাপড়া শিখে আর মাহুষ হ'ল কে ?

()

প্রায় বৎসরাধিক পরের ক্রা— বীরেনবারু নিকটম্ব একটি স্কুলে মাষ্টারী আরম্ভ করিয়াছেন। পাকিস্থান হইতে যাহা আনিয়াছিলেন তাহা নিঃশেষিত হইয়া গিয়াছে এবং উন্বাস্তদের সাহায্যকারী আফিনে ঘুরিয়া ঘুরিয়া বিফল-মনোরথ হইয়াছেন। উপায়ান্তর না পাইয়া উদরান্তর অক্ত মাষ্টারী লইতে হইয়াছে—টিউসনিও করিতে হয়—

ঠাকুরের দোকানে বসিবার সমন্ত্র আঞ্চলাল প্রারহি তাঁহার হয় না। রবিবার বা বদ্ধের দিনে সন্ধ্যার সমন্ত্র হয়ত একটু বসেন। পূর্বেতিনি আসিলে পাড়ার যুবকদল আসন ছাড়িয়া বসিতে দিত, আজ্ঞকাল তাহারা উঠেও না, বসিতেও বলে না। কেই কেই তাহাকে দাড়াইয়া থাকিতে দেখিয়া করনা করিয়া বলে—ব'সবেন নাকি বীরেনবাবু?

—না, না, তোমরা ব'লো।

তাহারা দ্বিভীয়বার বসিতে বলে না, বীরেনবাঁব্ও বদেন না।

সেদিন ঠাকুরের দোকান সরগরম। বিশুবাব্র রাঁধুনী বাম্নটি একটু ছিটগ্রস্ত, নিন্ধনা যুবকগণ তাহাকে রাগাইরা খুব আমোদ উপভোগ করিতেছে এবং হোঃ হোঃ করিয়া দোকান ও রাস্তার মোড় মুখরিত করিয়া ভুলিয়াছে; ঠিক এমনি সময়ে বীরেনবাবু উপস্থিত হইলেন।

বিশুবাব্র বাম্নটি তিরস্বার করিতে করিতে চলিয়া গেল, কিন্তু ব্যকগণের উৎসাহ তবুও কমে নাই। বীরেন-বাব্ একটু ক্ষীণ প্রতিবাদ করিলেন—লোকটি হয়ত মনে ব্যথা পায়—দরকার কি ?

যুবকগণের মাঝে একটা ইন্দিত খেলিয়া গেল— কর্ব স্থানিকার—এখন বীরেনবাবুর পিছনেই লাগা যাক্।

পট্লা বলিল—আছো বারেনবার, আপনার সে সিনেমার বই কি হ'ল ?

বীরেনবাবু কহিলেন—কি জানি, মামলা মোকর্দমা হ'য়ে কি হয়েছে—

- —থোঁজই রাখেন না ?
- —না, প্রয়োজনও নেই, সময়ও নেই—

ল্যাটা কহিল—আচ্ছা গত বছর রোজই আপনি দেকেগুকে কলকাতা যেতেন কি ষ্টুডিওতে ?

—না, না—চাকুরীর চেষ্টার ঘুরতাম, তা জুট্ল না।

ভূতো প্রান্ন করিল—আপনার ছাত্রেরা কি পাশ
ক'রবে ?

- —কেউ ক'রবে, কেউ ক'রবে না—
- —ছাত্ৰ—ঐ শেতলা **আপ**নার কাছে পড়ে বুঝি ?
- **−**₹n-

পট্লা কহিল—সে ত কলেজে পড়ে, সে আবার ওঁর কাছে পড়বে কি ? তাকে বাগালেন কি ক'রে ?

বীরেনবার অবাক হইলেন। ল্যাটা কহিল—ফেল ক'রবে বলেই ত পড়ছে!

ভয়ানক একটা রসিকতা হইয়াছে এমনি ভাবে সকলে হাসিয়া উঠিয়া চলিয়া গেল। বীরেনবাবু ব্যথিত দৃষ্টিতে চাহিয়া রহিলেন। বুঝিলেন সবই, কিন্তু কিছুই বলিলেন না—

ঠাকুর পান তৈয়ারী করিতেছিলেন, তিনি বারেনবাবুর অসহায় মুখের দিকে চাহিয়া কহিলেন—এই যে পান খান বীরেনবাব !

বীরেনবাব পানটী মুথে দিতে ঠাকুর বলিলেন—আপনি আশত্য্য হ'ছেন ?

- —একটু আশ্চর্য্য হ'য়েছি—
- —আমি কিন্তু হইনা। আমি জানি কিনা?
- **一**春?

ঠাকুর হাত ঘুরাইয়া কহিলেন—ওসব কিছু না— `কিছু না—

আর এক দিনের কথা--

পাড়ার নির্মালের সজে বীরেনবাবু আবোচনা করিতেছিলেন। নির্মাল একটা কিছু করিতে ইচ্ছুক, বীরেনবাবু
তাই বলিতেছিলেন—এথানে যথন ইলেকট্রিসিটি আছে
তথন একজাড়া ঘানিতে মাসে ২০০, টাকা, এমনি কি
একটা থড়-কাটা কলে মাসিক ১৫০, টাকা হ'তে
পারে—

বীরেনবাবু ছিদাব করিয়া জিনিবটা প্রমাণ করিতে-ছিলেন, এমন সময় শচীনবাবু অফিদ-ফেরৎ আদিয়া দাড়াইলেন। কহিলেন—টেন লেট্—িক হ'ছে আজ বীরেনবাবু?

ঠাকুর কহিল—শানি—খড়ের কল—
শচীনবাবু হাসিয়া কহিলেন—বেশ আছেন, অ্যাচিত উপদেশে বারেনবাবুর জুড়ি নেই। বীরেনবাবু কহিলেন—তা একটু অবাচিতই দিচ্ছি— যদি এরা কিছু করে—

—আপনি কি ক'রলেন—এত **পাক্তে ৫০।৬০**্ টাকায় মাষ্টারী কেন করেন ?

বীরেনবাবু হাসিয়া বলিলেন—মূলধনের মধ্যে দেহ ছাড়া যে কিছু নেই আর !

শচীনবাবু এক টিপ নস্ত লইয়া চলিয়া গেলেন।

কিছুক্ষণ বাদে পাঁচুবাবু, পটলা প্রভৃতি আসিয়া উপস্থিত। গল্প চলিতে চলিতে শীকারের কথা উঠিল— পাঁচুবাবু কহিলেন—এক ফায়ারে ভটার বেশা পাখী আমি কথনও মারিনি—তাই মেলে না—

ভূতো কহিল—কাকা সেবার এক ফায়ারে ২১টা পাথী মেরেছিল।

নানারপ তর্ক চলিতে লাগিল—এক ফায়ারে কতপাথী
মারা সম্ভব। পাঁচুবাবুর কথা ৮।১০টার বেণী মরিতেই
পারে না। ভূতো বলে, সে চাকুষ দেখিয়াছে ২১টা মরিতে।
তর্ক যথন অনেকটা জমিয়া উঠিয়াছে তথন ঠাকুর কহিল—
কেন বীরেনবাবু ত বাঘ-টাঘ মেরেছেন, ওঁর কাছে
শোনো না—

ভূতো প্রশ্ন করিল—আপনার জীবনে কভ বেশী মেরেছেন বলুন—

বীরেনবাবু নির্কিকারভাবে বলিলেন—৪৮টা—অবখ চ্যাগা অর্থাৎ লাইফ্—১০নং ছররায় মেরেছিলাম—

পাঁচুবাবু কহিলেন—ঐ রকমই বাঘ মেরেছেন বুঝি— একগুলিতে দশটা—

পটলা কহিল—সব গুল্—কামারের কাছে হচ চুরি? বন্দুক ছুড়েছেন ত ?

কথাটা লইয়া হাসি ব্যঙ্গ চলিয়া যখন আসর একটু ঠাণ্ডা হইল তথন বীরেনবাবু কহিলেন—আপনারা আপনাদের জ্ঞান বৃদ্ধি অভিজ্ঞতা দ্বারা অন্তকে বিচার করেন—তার বাইরে সব মিথ্যা। কিন্তু দেটা এ দেশ নয়—আমাদের সে সব বড়বিলে কথনও কথনও এত পাখা পড়ে বে জল দেখা যায় না—তাতে চোথ বুজে গুলি করলেও ৫০টা পাখী পড়তে পারে!

4 4 4 4 4

- एन प्रमुखे (कार्थात्र ?
- —পূৰ্ববৰে—

সকলে হো হো করিরা হাসিরা উঠিল। ভূতো কহিল — আমাদের এথানে বিল কোধার যে পাণী পড়বে— হাস্লেই ত হর না—

পাঁচুবাবু কহিলেন—ঐ জন্মেই ত ছেলেরা আপনার পিছনে লাগে—

বীরেনবাবু হাসিয়া বলিলেন—কেন? বলুন ত?

—আপনি বড্ড ছাবেলা, ওদের সামনে এসব গুল কি বলতে হয়! পাঁচ্বাবু বিজয় গর্মে হাসিয়া উঠিলেন।

বীরেনবাবু বিশ্বিত হইয়া কহিলেন-ছ্যাবলা ?

- —হাঁ, সকলের সঙ্গেই আপনি মেশেন—বদে গল্প করেন, তাতে ওরা মান্বে কেন আপনাকে— আপনার বয়স ও শিক্ষাদীক্ষার কথা ভেবে সংযত হয়ে থাক্বেন—
- —সকলের সঙ্গে মিশবো না কেন ? প্রতিবেশী, পাড়ার ছেলে—না মিশলেই সেটা অক্যায় ও অহকারের হবে— মিশতে হবে, তাদের উন্নতির চেষ্টা করতে হবে, উৎসাহ দিতে হবে—তাইত উচিত জানি—
 - —তাই ত ফলটা দ্বেথছেন—

বীরেনবাবু একটু উত্তেজিত হইয়া কহিলেন—সেজস্থ নয় পাঁচুবাবু, কারণ জানি আমি।

বীরেনবাবু উঠিয়া চটি পায় দিতেছিলেন—পাচু বললেন—কারণটা কি ?

— ওরা—মানে যাঁরা আমাকে অসন্মান করে, তারা শেখেনি কি ক'রে চলতে হয়। অর্থাৎ যতটুকু শিক্ষাপেলে রছ বা মানীর সন্মান রাখা বায় ততটুকু শিক্ষা এরা পায় নি—যে অন্তর থাক্লে অন্তের বেদনা বোঝা যায় সে অন্তর তাদের নেই—

বীরেনবাবু চলিয়া গেলেন। পট্লা কহিল—বাপরে অহকার! তবুও যদি মাষ্টার না হ'ত!

কেইঠাকুর হাত নাড়িয়া কহিল-কিছু না!

- —কি **?**
- —লোক্টা কিছু না! বাড়ী নেই, গাড়ী নেই, নগদ টাকা নেই—কিছু না—

কি ব্ঝিরা জানি না সকলে হাসিরা উঠিল—ঠাকুর কহিলেন—হাঁ।—হাঁ— (•)

বছর থানেক পরে---

বীরেনবাব্র ভাগ্যের পরিবর্ত্তন হইয়াছে—তিনি কলিকাতার এক কলেজে বর্ত্তমানে অধ্যাপক হইয়াছেন এবং মামলা-বিড়ম্বিত সিনেমার ছবিধানা এতদিনে কলিকাতায় মুক্তিলাভ করিয়া বেশ নাম করিয়াছে এবং সঙ্গে সঙ্গে আর একটা কাহিনীও বিক্রয় হইয়াছে। তিনি একট্ট জায়গা কিনিয়া বাড়ী করিতে আরম্ভ করিয়াছেন। ঠাকুরের দোকানে তাই বড় আসা হয় না—

ঠাকুরের দোকানে তেমনি আজ্ঞা চলিতেছে—পট্লা-ভূতোরা আছে, তাহার সঙ্গে পাঁচুবাবু ও তাঁহার খালুক দোকানে আসীন। কি একটা বিষয়ে আলোচনা চলিতেছিল। হঠাৎ একখানা মোটর মোড়ের উপর পামিল এবং বীরেনবাবু নামিয়া আসিলেন।

দোকানের নিকটবর্তী হইরা বীরেনবার কঞ্লেন— কীঠাকুর ভাল ?

- আছি একরকম। খোঁজত নেন না—
- সভিত্তি সময় পাই না ভাই, পেটের দারে খুরতে হর '
 তব্প প্রভিউসারের গাড়ীতে এসে পৌছেছি আটটার।
 পট্লা সমন্মানে জলচোকাটা ছাড়িয়া দিয়া কহিল—বস্থন,
 বীরেনবাব—

পাঁচুবার প্রতিধ্বনি করিলেন। বীরেনবার বরিষা কহিলেন—দিন ঠাকুর, অনেকদিন আপনার হাতের পার ধাই নি—

ঠাকুর পান দিলেন। অবাস্থর একটু কথাবা**র্ডার** পরে বীরেনবাবু চলিয়া গেলেন।

পাঁচুবাবু খালককে উদ্দেশ করিয়া ক*হিলেন*— লোকটাকে চেন ?

- —না। কে?
- —'পথশ্ৰান্ত' দেখেছ লাইট-হাউদে ?
- 一**刻**1
- —তারই কাহিনী-কার।

খ্যালকটি বিশ্বিত হইশ্বা বলিলেন—সভ্যি ?

পটলা কহিল—ওধু তাই নয়, কলেজের প্রফেসর— কলকাতায়— পাঁচুবাৰু কহিলেন—বিধান—জ্ঞানী—বিধ্যাত পুৰুষ—
ভালকটি কহিল—অপচ এমনি দোকানে বদে গল্প
ক'রে গেলেন—

- हा।

পাঁচুবাবু কহিলেন—তাই ভাপো। ছোকরারা কেরাণী হ'মে ধরাকে সরা জ্ঞান করে, অথচ অত বড়লোক, কিছ যেমন নিরহন্কার তেমনি অমায়িক—

-পটলা কহিল-সকলের সকে সমান ব্যবহারআমাদের সকে পর্যাস্ত-

কেষ্টঠাকুর হাত খুরাইরা কহিল—কিছু না—বা ছিল তাই আছে—

পাঁচুবাবু কহিলেন—তার মানে—এ রকম অমায়িক লোক পাওয়া যায় না—

ঠাকুর কহিল—যথন মাষ্টারী ক'রত তথন ছ্যাবলা ছিল, সম্প্রতি সিনেমার টাকা পেয়ে অমায়িক হ'য়ে গেছে—

পটলা প্রতিবাদ করিল—না—না—

কেইঠাকুর রমণীস্থলভ ভঙ্গিতে ও স্থরে, মেয়েলী কণ্ঠে কহিল—হাঁ।— হাঁ।—

রাশি ফল

জ্যোতি বাচস্পতি

সিংহ রাশি

বলি সিংহ আপনার জন্ম রাশি হয় অর্থাৎ বে সময় চক্র আকাশে সিংহ নক্ষত্রপুঞে ছিলেন সেই সময় যদি আপনার জন্ম হ'য়ে থাকে, ভাহ'লে ⊶এই রকম কল হবে—

প্রকৃতি

আপনার মধ্যে অমুভূতি অত্যন্ত গভীর এবং আপনার সকল কাজ নিয়ন্ত্রিত হয় আপনার হৃদয় দিয়ে। সব রকম স্নেহপ্রীতির ব্যাপারে আপনার মধ্যে যথেষ্ট আন্তরিকতা প্রকাশ পায় এবং প্রীতির পাত্রের জন্ম আপনি ত্যাগ বীকার করতেও পরাঘ্যুধ হন না।

আপনার মধ্যে বিধান ও আত্মপ্রতার বেশ ক্পরিণত, দেইজস্ত ছোট বড় বৈ কোন আরগাতেই হোক্ কর্তা, পরিচালক, নেতা অথবা দলপতি হ'রে থাকা আপনার পক্ষে অসম্ভব নর। আপনার মধ্যে বেমন উচ্চান্তি-লাম বা প্রভূত্মপ্রিয়তা আছে তেমনি উদারতা ও বদাস্ততারও অভাব নেই।

সৌন্দর্ধের দিকে আপনার একটা সহজ আকর্ষণ আছে, কাজেই চিত্র সঙ্গীত কাব্য অভিনর প্রভৃতি কলাবিক্সার দিকে আপনার কম-বেশী বেঁকি প্রকাশ পেতে পারে। কিন্তু এই সৌন্দর্ধপ্রিয়ন্তা বিপথে চালিত হ'লে, আপনি অভিমাত্রায় ভোগী ও বিলাসী হ'রে উঠতে পারেন. সে সঘদে সভর্ক থাকা উচিত। আহার বিহারে, পোষাক-পরিচ্ছদে সর্বত্রই আপনার সৌন্দর্বপ্রিয়তা লক্ষিত হবে। স্কল্বর পোষাক, আস্থাব, অলক্ষার, গন্ধ-জ্ববাদি ব্যবহার করতে আপনি ভালবাসেন।

আপনার মধ্যে কলনা ধুব প্রবল এবং আদর্শের দিকে কম বেশী বেশক আপনার মধ্যে দেখা যাবে। আদর্শকে অনেক সময় আপনি কাজে পরিণত করতে চাইবেন। একটা আদর্শ থাড়া ক'রে, তা দিয়ে আপনার সকল কর্ম-নিয়ন্ত্রিত করতেও পারেন। এর জস্ত অনেক সময় আপনাকে নিন্দা-অপবাদের সন্মুধান হ'তে হবে, কিন্তু তা সত্ত্বেও আপনি আপনার আদর্শ অনুদরণ করতে বিব্রত হবেন না।

আপনার যে মত বা ধারণা একবার আপনার হৃদয়ে দৃঢ়ভাবে অব্ধিত হবে, সহত্র বাধা, বিল্ল, যুক্তি তর্ক কিছুতেই তা বদলাবে না। যদি আপনি আধ্যাক্সিকতার দিকে যান তাহ'লে আপনার ভক্তি ও বিশ্বাস আপনাকে সাধনার উচ্চন্তরে নিয়ে যেতে পারে।

ভাল মন্দ্র যাই করণ আপনি তা একাপ্রভাবে এবং দৃঢ় নিষ্ঠার সঙ্গে করে যাবেন; কাজেই আপনার হৃদর যদি স্থপথে চালিত হয়, তাছ'লে তা যেমন উচ্চপ্রতিষ্ঠা ও সাফল্য দেবে, অপরদিকে বিপথে চালিত হ'লে আপনাকে তা পশুভের নিমন্তরে নামিরে নিয়ে যেতে পারে। তবে সাধারণতঃ থোলাপুলি ব্যবহার ভালবাদেন ব'লে, গোড়াতে একটু চেষ্টা করলেই আপনি সহজেই নিজের ভূল ব্রুতে পারবেন এবং তথন নিজের চরিত্র সংশোধন করা আপনার পক্ষে অসম্ভব হবে লা।

অর্থভাগা

আধিক ব্যাপারে আপনাকে সৌভাগ্যাশালী বলা চলে। দানস্ত্রে অথবা অপ্রত্যাশিতভাবে আপনি বছ অর্থ বা সম্পত্তি পেতে পারেন। কিউ অর্থের উপর আপনার খুব বেশী মারা-মমতা কথনই থাকবে না। অনেক সমর আপনার সঞ্চিত অর্থ কোন আক্মিক বিপদে নট্ট হ'তে পারে, কিবা কোন আদর্শের ক্ষন্ত আপনি অর্থ বা সম্পত্তি ত্যাগ করতে পারেন। তাহ'লেও অর্থের রিশেব অভাব আপনার না হওরাই সভব। অভাব হ'লেই অনেক সমর তা সঙ্গে সঙ্গেই পূর্ব হ'রে বাবে।

কৰ্মজীবন

কর্মকেত্রে অনেক সময় দায়িত্বপূর্ব কাজের ভার আপনার উপর এদে পড়বে এবং আপনি যদি হংবাগ অবহেলা না করেন তাহ'লে শুরু দায়িত্বপূর্ব কোন কাল থেকে যথেষ্ট গ্যাতি ও প্রতিষ্ঠা অর্জন করতে পারবেন। কিন্তু নিজের অবিবেচনা বা হঠকারিতার জন্ম অনেক সময় হযোগ পেয়েও ওা কাজে লাগাতে পারবেন না। যদিও আপনি আপনার বাক্তিগত গুণপণার জোরে কম বেনী খ্যাতি ও প্রতিষ্ঠা অর্জন করবেন—অপরের সাহায্য না নিয়েও, তবু সাবধান থাকা উচিত, যাতে কোন ভ্রান্ত ধারণা অক্সরণ ক'রে নিজের সকল প্রতিষ্ঠা না নই করে ফেলেন। সকল কাজে আপনার সংযম ও মন্ত্রগুতি একান্ত আবহুক। ভাবপ্রবণতার জন্ম ও বাড়াবাড়ি করার জন্ম অনেক সময় নিশ্চিত্ব সাফল্যেও বিল্ল এসে উপপ্রিত হবে।

আপনার দেই সকল কাজ ভাল লাগে যাতে অপরকে আনন্দ দেওয়া যায়, যার দঙ্গে কম বেশী গোপনীয়তা জড়িত থাকে বা যাতে কোন রকম বৈচিত্র্য বা অসাধারণত্ব থাকে। সঙ্গীত, চিত্র-অভিনয়, বস্তৃতা প্রভৃতিতে কুতিত্ব প্রকাশ পেতে পারে। যে সকল কাজের সঙ্গে স্টির আনন্দ জড়িত **থাকে, তা** দে স্থল স্তরেই হোক বা সুন্দ্র স্তরেই হোক সেই সকল কাজের দিকে আপনার একটা সহজ আকর্ষণ থাকা সম্ব। কাজেই কৃষি, বাগ-বাগিচার কাজ, উৎপাদন শিল্প প্রভৃতি, খাত জব্যের ব্যবসায়, হোটেল, রেস্তোর্গা, বেকারি প্রভৃতির যে কোন কাজে আপনার যোগাতা প্রকাশ পেতে গারে। তেমনি আবার ফুল্ম ত্তরে প্রন্থ-কর্ত্তর উদ্ভাবনা প্রভৃতিতে আপনি কৃতিত্বের পরিচয় দিতে পারেন। স্পেকুলেশান, লগ্নী কারবার, ব্যাদ্ধিং প্রভৃতিতেও আপনার দক্ষতা থাকা সম্ভব। মোট কথা যে সকল কাজে পরিশ্রমের সঙ্গে কিছ আনন্দ ও পরিশ্রমের পর দীর্ঘ অবদর থাকে এবং যাতে নিজের গুণপনার জন্ত বিশিষ্ট ব্যক্তিদের কাছে খ্যাতি বা প্রশংসা পাওয়া যায় সেই সব কাজ করতে পারলে আপনি বিশেষ সাফল্য লাভ করবেন সে বিষয়ে ^{সন্দেহ} নেই। আগনি খ্যাতি চান বটে, কিন্তু সন্তা জনপ্রিয়তা আপনাকে ভূপ্তি দিতে পারে না।

পারিবারিক

আধীন-স্বজনের ব্যাপারে আপনার নানা বিচিত্র অভিজ্ঞতা হবে।
সাধারণতঃ তাঁদের সঙ্গে আপনার প্রীতির বন্ধন দৃঢ় হবে, কিন্তু তা সন্ত্বেও
স্থানেক সময় তাঁদের কাছ থেকে বিচ্ছিন্ন হ'রে আপনাকে দূরে থাকতে
হবে। তা ছাড়া আত্মীন-স্বজনের সংগ্রবে এমন সব অভ্নুত ঘটনা ঘটবে
বার জন্তে আপনাকে মধ্যে মধ্যে আশান্তি বা মনোকন্ত ভোগ করতে
হবে।

পারিবারিক ব্যাপারে ও গৃহস্থালীর সংশ্রবে আপনার বহু ব্যয় হবে।
আপনার গৈতৃক সম্পত্তি বিভক্ত হওয়া সম্ভব এবং ওা নিরে কম-বেশী
বঞ্জাট হ'তে পারে। বঞ্জাট এড়াবার জক্ত বা অক্ত কারণে আপনি
সম্পত্তি বিক্রমণ্ড ক্লরতে পায়েন।

পিতা-মাতার জন্ম আপনার কম-বেশী চিন্তা উপস্থিত হ'তে পারে, তাঁদের জন্ম আপনার কিছু আর্থিক ক্ষতি অথবা উন্নতিতে বিশ্ব হওরাও অসম্ভব নর। পিতার অমণকালে কোন রক্ষ ছুর্ঘটনা অথবা জীবন-সংশয় হওরার আশকা আছে।

সন্তানাধির জন্তও আপনার কম-বেশী অশান্তি ভোগ করতে হবে।
সন্তান লাভে বিদ্ন হ'তে পারে, সন্তান হ'লেও তাদের ব্যাপার নিরে কম-বেশী চিন্তা থাকবে। সন্তানের মধ্যে কারো কোন রকম দৈহিক অথবা
মানসিক অসাধারণত্ব থাকতে পারে—তা ভালই হোক আর মন্দই হোক্।

বিৱাহ

আপনার দাম্পত্য-জীবন সাধারণতঃ ভাল হ'লেও দে সন্বন্ধে ক্ষ-বেশী চিন্তা উপস্থিত হ'তে পারে। আপনার দ্রী (অথবা স্বামী) আপনার অমুগত হবেন কিন্তু আপনাকে অনেক সময় তাঁর কাছ থেকে বিচ্ছিন্ত হ'রে থাকতে হবে তা ছাড়া অনেক সময় বন্ধু বান্ধবের জন্ম অথবা বিবর্কমের জন্ম আপনার দাম্পত্য জীবনে বিদ্র উপস্থিত হ'তে পারে। আপন্দি যদিও আপনার স্থীর (অথবা স্বামীর) প্রতি স্নেহশীল হবেন তথাপি অবস্থা গতিকে অনেক সময় তাঁর উপর আপনার কর্তব্য ঠিকভাবে পালন করতে পারবেন না এবং তার জন্ম-মধ্যে মধ্যে দাম্পত্য জীবনে কিছু অনান্তি উপস্থিত হবে অবশ্য তা খুব বেশী গুরুতর না হওয়াই সম্ভব। বাঁর জন্ম-নাদ বৈশাথ, ভাস্ত, পোব অথবা দান্ধন, কিলা বাঁর জন্ম-তিথি শুকুপক্ষের বন্ধী বা ত্রয়োদশী অথবা কৃষ্ণপক্ষের সপ্তমী, চতুর্দশী বা অমাবস্থা এ রক্ম কারো সঙ্গে বিবাহ হ'লে আপনার দাম্পত্য জীবন বিশেষ স্থেকর হবে।

বন্ধুত্ব

বন্ধুর সংশ্রবে আপনার বিচিত্র অভিজ্ঞ হবে। অনেক বিচিত্র ধরণের লোকের সঙ্গে বন্ধুত্ব হওয়। সম্ভব। বন্ধু সংসর্গ অনেক সময় আপনার বিবাদ বিস্থাদ, সম্মানহানি বা অপযশের কারণ হ'তে পারে, সে সম্বন্ধে সভক থাকা উচিত। আপনি সাধারণতঃ জনপ্রিয় হবেন এবং আপনার অনেক অনুচর পরিচরও থাকবে, কিন্তু তাদের সাহায্য আপনার বিশেষ কোন কাজে লাগবে না। অনেকক্ষেত্রে তাদের দারা গুপু-শক্রতা হ'তে পারে এবং কোন কোন ক্ষেত্রে তাদের জন্ত আপনার গুরুতর কভিঞ্
হ'তে পারে । আপনি নিজে বন্ধু-বৎসল হবেন কিন্তু বন্ধুর কাছ থেকে মৌধিক সহান্তুত্তি ছাড়া অন্ত কোন সাহায্য কমই পাবেন। বাঁর জন্ম মাস বৈশাধ, ভাত্র, অথবা পৌষ কিন্তা বাঁর জন্মতিথি গুরুপক্ষের ষঠী কি ত্রয়োদশী অথবা কৃষ্ণপক্ষের সপ্তমী, চতুর্দশী কি অমাবত্যা এমন কোন ব্যক্তির সঙ্গে বন্ধুত্ব আপনার পক্ষে কিছু আনন্ধদায়ক হবে।

স্বাস্থ্য

আপনার জীবনীশক্তি বেশ প্রবেদ হবে বটে, কিন্তু কোন দীর্ঘস্থারী জটিল ব্যাধি সম্বন্ধে আপনার সতর্ক থাকা উচিত। আপনার এমন কোন বিচিত্র ব্যাধি হ'তে পারে বা সাধারণ চিকিৎসা ঘারা দূর হওরা সন্তব নুর এবং বাস অস্তু দৈব কর্ম অথবা মানসিক চিকিৎসা প্রয়োজন হবে। ব্যক্ত সঞ্চাদনের ব্যাঘাত এবং স্নায়ুর ও অন্তের বৈকল্য সবচ্ছে আপনার সতর্ক থাকা উচিত। আপনার দেহ ভাল রাধতে হ'লে আনন্দ একাস্ত আবশুক। সুন্দার ও স্থাত থাক গ্রহণ, সুন্দার দৃষ্ঠ দর্শন, স্থান্ত সঙ্গীত-শ্রবণ প্রভৃতি আপনার নই সাস্থ্য ফিরিয়ে আনতে সাহায্য করবে। অস্তৃত্ব অবস্থায় লাল, গোলাপী, গেরুরা প্রভৃতি রঙের স্থব্যাদির ব্যবহার আপনার রোগ নিরাময়ে সাহায্য করবে। থাকে জলীয় পদার্থের বেশী ব্যবহার আপনার না করাই ভাল। উপবাস ও একটানা অভিরিক্ত পরিশ্রমণ্ড আপনার বাস্থ্যের পক্ষেক্তিকর।

অক্তাক্ত ব্যাপার

আপনার বছ লমণ হবে। অনেক তীর্থ লমণও হ'তে পারে। কর্মোপলকে লমণ বা দীর্ঘ প্রবাসও অসম্ভব নর। কিন্তু তীর্থ্যাত্রা আপনার পকে খুব হুবিধান্তনক নর। কেন-না সমূত্রে বা তীর্থ্যানে বিপদ-আপদের সম্ভাবনা আছে। এমন কি জীবনের আশহা পর্যন্ত উপস্থিত হ'তে পারে, কিন্তু স্থলপথে লমণে আপনার লাভ ও প্রতিষ্ঠা বৃদ্ধি হওরা সম্ভব। তা ছাড়া কর্মোপলকে আপনাকে অনেক সময় বিদেশ বাসকরতে হবে।

যৌন প্রেমের ব্যাপারে আপনার মধ্যে একনিষ্ঠতার একটী আদর্শ ধারণা থাকবে। কিন্তু সে সন্থকে আপনার কোনরকম বিচিত্র অভিজ্ঞতাও হওয়া সম্ভব, থাতে করে সে আদর্শে ছির থাকা আপনার পক্ষে কঠিন হবে। থোন প্রীভিত্র ব্যাপারে আপনাকে কম-বেশী হু:খ পেতেই হবে। প্রথম পাত্রীর (বা পাত্রের) সঙ্গে বিচ্ছেদ তার মৃত্যু অথবা কোন হুর্ঘটনা আপনার মনোকষ্টের কারণ হ'তে পারে। প্রণম ব্যাপারে কোনরকম কলম্ব বা অপবাদ হওয়াও বিচিত্র নয়।

স্থারণীয় ঘটনা

ः[२०५म वर्ष, ३३ चक, ६६ गरशा

আপনার ৭, ১৯, ৩১, ৪৩, এই সকল বর্বগুলিতে নিজের অধবা কোন আস্মীরের সংশ্রবে কোনরকম তুঃধন্তনক অভিজ্ঞতা হওরা সম্বব এবং ১৩, ২৫, ৩৭, ৪৯, প্রভৃতি বর্বে কোন স্থধকর ঘটনা ঘটতে পারে।

বৰ্ণ

আগনার প্রীতিগ্রদ ও আনন্দবর্ধক বর্ণ হচ্ছে সব রক্ষের মিশ্র ও বিচিত্র রঙ্। রামধকুর মত রঙ্। মর্রক্তি রঙ্ সমুজের বা আকাশের মত নীল রঙ্ও আপনার পক্ষে উপযোগী—যে সব রঙের মধ্য খেকে অক্স রঙের আভা পাওয়া যার বা ভিন্ন ভিন্ন রঙের সমবারে বিচিত্র যে সকল রঙ্হয় তাও আপনার পক্ষে ভাল। দেহ মনের অক্ষ্ অবস্থায় কিন্তু লাল রঙ্ব্যবহার করলে উপকার পাবেন। সবুজ রঙ্বজন করাই ভাল।

রত্ব

আপনার উপযোগী রছ বৈত্রার্ষ (Cats cyc) বিশেষত: বর্ণক্ষেত্রে বৈত্রার্ষ। ওপ্যাল (Opal), চক্রকান্ত মণি (Moon stone) প্রভৃতিও আপনার ধারণের উপযোগী।

যে সকল খ্যাতনামা ব্যক্তি এই রাশিতে জন্মছেন তাঁদের জন-করেকের নাম— শ্রীশ্রীতৈভন্ত দেব, বৃদ্ধিন চন্দ্র চটোপাধ্যার, অক্ষরচন্দ্র সরকার, ডবলিউ সি ব্যানার্জি, অর্দ্ধেন্দু শেখর মৃত্ত্বিক, প্রসিদ্ধ সঙ্গীত রচয়িতা রবার্ট শুমান, শ্রীযুত দিলীপকুমার রার, প্রসিদ্ধ ব্যবসায়ী কেশোরাম পোদার, ডক্টর দীনেশচন্দ্র সেন, প্রভৃতি।

রুদে

শ্রীতারকচন্দ্র রায়

(পুৰ্বামুবৃত্তি)

পাপিগণের অনস্তকালছারা শান্তিতে আমার বিবাদ নাই। ঈশরই একমাত্র নির্বিক্র পদার্থ (absolute), তিনিই একমাত্র চিন্তা-বেদনা-ইচ্ছাপজি-বিশিষ্ট সক্রিয় পুরুব; আমানের চিন্তা, বেদনা ও ইচ্ছা তাঁহার নিকট হইতেই আমরা প্রাপ্ত হই। যতই তাহার অসীমত্ব চিন্তা করি, ততই তাহাকে ব্বিবার অসামর্থ্য বোধ করি। যতই কম ব্বি, ততই বেশী ভক্তি করি। নতজাত্র হইরা বলি, "হে সমত্ত সন্তার স্তা, তুমি আছে, তাই আমি আছি। তোমাতে চিন্ত ছির রাখিরা আমার সন্তার উৎসে আমি উপনীত হই। তোমাতে বৃদ্ধি সমর্পণ করাতেই বৃদ্ধির সার্থকতা। তোমার অসীম সন্তার নিম্ক্রিত হইরা আমার মন আনক্রেপ্প হর, আমার অপূর্ণতা ত্বথ প্রাপ্ত হর।"

আমাদের হৃদরের তলদেশে একটি বৃত্তি আছে, তাহাছারাই কর্মের দোষগুণ আমরা বিচার করি। এই বৃত্তির নাম—ধর্মবিবক (Conscience)। এই বিবেক প্রত্যেকের অন্তরেই বর্ত্তমান। কিউ অব্যানগুক লোকেই তাহার আদেশ পালন করে। প্রকৃতির ভাষার তাহার আদেশ প্রদন্ত হয়, সংসারের মধ্যে সে ভাষা আমরা ক্রমশংই ভূলিরা ঘাই।

ঈশরকে আমি ভজি করি, তাহার দরার আমি অভিতৃত, কিন্ত তাহার নিকট কিছু প্রার্থনা করি না। তাহার নিকট কি চাহিব ? আমার জন্ত তিনি লগতের নিরম ভঙ্গ করিবেন ? আমার জন্ত আমি তাহাকে ব্যাপার সংঘটিত করিবেন ? যে লগৎ-স্থলার জন্ত আমি তাহাকে ভজি করি, আমার জন্ত সেই সুখলা ভঙ্গ করিবার জন্ত অনুবেশি

করিব ? দেরপ আর্থনার ক্ষম্ম শান্তি হওয়া উচিত। আমি চাই তিনি আমার ভূল সংশোধন করিয়া দিন, যদি সে ভূলে আমার বিপদ হইবার সম্ভাবনা থাকে।

ধর্ম্মের বাহ্মিক রূপ ও ধর্ম এক পদার্থ নহে। ঈশ্বর চাহেন অন্তরের সেবা। অকপট অন্তরের দেবা সর্বব্যই একরপ।

বুদ্ধিদারা বিশাস দৃঢ়ীকৃত হয়। সর্বাপেকা সরল ধর্মই সর্বোৎকৃষ্ট ধর্ম। অবোধ্য ও অবিরোধী অকুষ্ঠানের দারা ধর্মকে আচ্ছাদিত করিয়া প্রচার করিলে সন্দেহ উপস্থিত হয়। ঈশর অঞ্চলার ভালবাসেন না; তিনি আমাকে যে বুদ্ধি দিয়াছেন, তাহা ব্যবহার করিব না, ইহা তাহার ইচ্ছা নহে। আমার বুদ্ধি অন্তকে সমর্পণ করিতে বলার অর্থ যিনি বুদ্ধি দিয়াছেন, তাহাকে অপমান করা।

আমি প্রত্যেক ধর্মকেই মঙ্গলদায়ক বলিয়া মনে করি। মানবজাতির ছই তৃতীয়াংশ থিছদা, খুঠান ও মৃদলমান ধর্মের বাহিরে।
কোটি কোটি লোক মুদা, যিও ও মহম্মদের নামও কথনও শোনে
নাই। ঈশ্বকে যথন অন্তরের সঙ্গে পূজা করা হয়, তথন সকল
পূজাই সমান। স্থান্মর পূজাই পূজা, যদি আত্তরিক হয়, তাহা হইলে
কাহারও পূজা ঈশ্বর অপ্রাহ্ম করেন না। পূণ্যবান হাদয়ই ঈশ্বের মন্দির।
নৈতিক কর্ত্তরা পালন হইতে কোনো ধর্মেই অব্যাহতি দেয় না। প্রত্যেক
দেশে প্রত্যেক ধর্মেই সকলের উপরে ঈশ্বরেক ভালবাসা, এবং
প্রতিবাদীদিগকেও আপনার মত ভালবাসাই সকল কর্ত্রের সার।

যাহার। প্রকৃতির ব্যাখ্যাব্যপদেশে মানুষের অন্তরে ধ্বংসের বীজ বপন করে, তাহাদিগের নিকট, ইইতে দূরে থাকিও। দস্তভরে তাহারা মনে করে যে একমাত্র তাহারাই জ্ঞানী, এবং তাহাদের কল্পনাস্ট ছর্ম্পোধ্য তন্ত্রকে সভ্য বলিয়া গ্রহণ করিতে বলে। মানুষ যাহা বাহা শ্রহা করে, সকলই তাহারা উৎপাটিত করিয়া পদদলিত ও ধ্বংস করে; ছংগার্ভ জনসংগর শেষ সাস্ত্রনা তাহারা অপহণ করিয়া লয়; ধন-ওক্ষমতাশালী লোকনিগের রিপুর চরিতার্থতার পথে একমাত্র বাধা তাহারা অপসারিত করিয়া ছেলে; মানুষের হানয়ের গভীরতম প্রদেশ হইতে পাপের কল্প অমুতাপ ও সাধ্জীবনপ্রাপ্ত সমস্ত আলা উন্মৃতিত করে এবং মানবজাতির উপকারী বন্ধু বলিয়া গর্ম্ব করে। তাহারা বলে সত্য ক্ষমত অনিষ্ট করেনা। সে কথা আমিও বিধাস করি। আমি ইহাও বিধাস করি, তাহারা যাহা বলে, তাহা সত্য নহে।

উদ্ত দর্শনের (Philosophy) পরিণাম নান্তিকতা, অন্ধ শুক্তির পরিণাম ধর্ম্মোন্মন্ততা। এই উত্তরই বর্জনে কর। ধর্ম্মের পথে দৃঢ় হইয়া থাক, দার্শনিকদিগের নিকট নির্ভয়ে বল যে তুমি ঈশরে বিশাস কর, যাহারা পরমতাসহিক্ষ্ তাহাদিগকে সদয় ব্যবহার করিতে শিক্ষা দেও। ইয়তো ভোমাকে একাই পথ চলিতে হইবে; কিন্তু ভোমার অন্তর্থামী ভোমার সাক্ষী থাকিবেন, তাহার নিকটে বাহিবের সাক্ষীর মূল্য কি ?

Bayle প্রমাণ করিয়াছেন ধর্মাজতা নাত্তিকতা হইতেও জনিষ্টকর। তাহা অধীকার করা যার না। কিন্তু একথাও সত্য, যে নিষ্ঠুর ও রক্তিশিশাস্থ হইলেও ধর্মাজতা ভ্রম-সালোড়নকারী একটি প্রবল

বৃত্তি, যাহা মৃত্যুকে অবজ্ঞা করিতে শিক্ষা দেয় এবং মামুবকে বিপুল কর্মণক্তি দান করে। ইহাকে যদি যথোচিত ভাবে চালনা করা যায়, ভাহা হইলে মহত্তমগুণ ইহা হইতে উৎপন্ন হইতে পারে। কিন্ত ধর্মহীনতা কি করে ? ধর্মহীনতা ও তার্কিক দার্শনিক প্রবৃত্তি क्षीवत्तत्र भक्ति कत् करत. शैनल्य वार्थरवार्यत्र मर्या क्रमस्बद्ध প্রবল বৃত্তিদিগকে কেন্দ্রীভূত করিয়া, হীনতার পঙ্কে মানবান্ধাকে নিমজ্জিত করে এবং অলক্ষিতে স্থাজের ভিত্তি চুর্বল করিয়া ফেলে। কেননা ব্যক্তিগত আর্থের মধ্যে সাধারণ অংশ এভই কম. যে ভাছা বিরোধা স্বার্থাংশ দমন করিয়া রাখিতে পারে না। নান্তিকতা হইতে যে রক্তপাত হয় না, তাহার কারণ নান্তিকদিগের শান্তি-প্রিয়তা নছে: যাথা মঙ্গলকর, তাহার প্রতি উদার্যাগ্রই এই কারণ। অধ্যয়নকক্ষে নিজে নিরাপদে থাকিতে পারিলে, অন্তের কি হইল না হইল, তাহা আছ করিবার ভাহাদের প্রয়োজন নাই। ভাহাদের মভদারা নরহত্যা হয় নাসতা, কিন্ত জন্ম প্ৰতিকৃদ্ধ হয়, কেন না বে নীতি ঘারা মামুষের বংশবৃদ্ধি হয়, তাহার ধ্বংস হয়। মাতুষ হইতে মাতুষকে তাহারা পুৰ্ণক করে, তাহাদের সমন্ত ভালবাস। গৃঢ় স্বার্থপরতায় পরিণত হয়।

দার্শনিকনিগের উদাসীম্ম যথেচছাচারী রাষ্ট্রের শান্তির সমতুল্য। এই শান্তি মৃত্যুর শান্তি। যুদ্ধ ইহা অপেকা অধিক ধ্বংসকারী নহে।

যদিও ধর্মাদ্ধভার অব্যবহিত ফল তথাক্ষিত "দার্শনিকতার" ফল অপেকা অধিকতর অনিষ্টকর, ইহার পরবর্তা ফলের অনিষ্টকারিতা তাহা অপেকা অনেক কম।

Profession de foi গ্রন্থের দিতীয় থতে ক্লমো ঐশরিক প্রত্যাদেশের (Divine Revelation) যৌজিকতা প্রমাণ করিতে চেপ্তাং
করিয়াছেন। মানুষের বৃদ্ধি প্রত্যাদেশের সভাতা সথকে কোনও
মীনাংসায় উপনীত হইতে অক্ষম। বাইবেলের সরলতা ও মহন্তই প্রত্যাদেশের প্রকৃষ্টতম প্রমাণ। তৃষ্ট যে কেবল মানুষমাত্র ছিলেন না, তিনি যে
ধর্মান্ধ ও ইতর সাম্প্রনায়িকতা-ভৃষ্ট ছিলেন না, তাঁহার বিনয়নম্র আচরণ ও
চরিত্রের বিশুদ্ধি, তাঁহার জ্ঞান-গন্ধীর বচনের মাধুর্যা, তাঁহার ব্যক্তিক্ষের
মহিমা এবং তাঁহার উপদেশের মহন্ত স্বারাই তাহা প্রমাণিত হয়।
সক্রেতিল দার্শনিকের জীবন যাপন করিয়াছিলেন, দার্শনিকের মতই মৃত্যু
বরণ করিয়াছিলেন। যিশুর জীবন ও মৃত্যু, উভয়ই ঐশ্বরিক-ভাবাপার।
যিশুর চরিত্রের মত মহৎ চরিত্র বাইবেল-লেওকগণ কোবায় পাইরাছিলেন? এমন মহৎ চরিত্রনীতির উৎস কোবায় বর্তমান ছিল? এতাদৃশ
চরিত্রের স্পষ্টি ও এতাদৃশ সত্যের আবিন্ধার যিশুর বান্তব জীবন অপেক্ষাও
অলোকিক ব্যাপার। তাহার সন্বন্ধে যুক্তিতে যে সন্দেহের উদম হয়,
স্থানয়ের নিশ্চিতি স্বারা তাহা বিশ্বিত হয়।

• ক্লের মত তুর্বল-চরিত্রও যৌন বিষয়ে শিখিল-নীতি ব্যক্তির মুখে এই সকল উক্তি বিশারকর বলিয়া মনে হর। কিন্তু ক্লের সমগ্র চরিত্রই তাহার ভারথবণতা দারা সম্পূর্ণরূপে প্রভাবিত এবং তাহার বৃদ্ধিও ইচছা তাহার বেদনার (feelings) বশীভূত। এই বেদনা কত প্রবল ছিল, তাহা পূর্বোদ্ধত ছিলমের উক্তি হইতে বৃথিতে পারা বার। তাহার

ঈষরামুরাগ, বন্ধপ্রীতি, দরিন্তের প্রতি অমুকম্পা, প্রাকৃতিক দৌন্দর্যোর মধ্যে আন্ধবিশ্বত নিমজন প্রভৃতি যেমন তাহার ভাবালুতার ফল, আসঙ্গ-লিপনা প্রভৃতিও সেই উৎস হইভেই উদ্ভৃত। তিনি বেদনার উপাসক-ছিলেন এবং ভাষাবেগের আনন্দে মগ্র হইয়া থাকিতে ভালবাসিতেন। বেদনার উত্তেজিত কল্পনা তাহার যৌন লিপ সার উল্লেখন করিলেও. ছদরের মহতম প্রবৃত্তিসমূহও তাহা দারা উদ্বদ্ধ হইত। তাহার ধর্ম-মত ও রাজনৈতিক মত ও এই বেদনাদারা প্রভাবিত এবং তাহার স্বয় সাহিত্যও বেদনার রাগে রঞ্জিত। ইয়োরোপের Romantic movement এর তিনিই স্ষ্টিকর্তা। প্রজ্ঞাবাদিগণ (Rotionalist) সর্ব্ব-্ৰিবরে যুক্তিকেই বিচারের মানদওরাপে গ্রহণ করেন। কিন্তু রুসো যুক্তি অপেকা হৃদর বৃত্তিকে (feeling) প্রাধান্ত দিতেন। Pascalog মত ভিনিও বলিতেন "হাদরের ও যুক্তি আছে, যাহা মন্তকে বুঝিতে পারে या।" (The heart has reasons, which the head cannot understand)। ঈশবের অন্তিত্ব প্রমাণ করিতে পুর্বেবরী দার্শনিকগণ ূর্বে সমস্ত যুক্তি প্রয়োগ করিতেন,সে সকলই বৃদ্ধির যুক্তি (intellectual arguments)। কিন্তু ক্লুসো বৃদ্ধির উপর নির্ভর না করিয়া মাকুষের श्रास्त्रत मत्या नेपातत अखिर एत निवर्णन अस्त्रत्य कतिशाहिरलन, এवः তথার ধর্মাধর্ম-জ্ঞান, ভক্তি, শ্রন্ধা-মিশ্র ভয়, উন্নত জীবনের আকাজ্ঞা প্রফৃতির মধ্যে ঈখরের অন্তিত্বের নিশ্চিত প্রমাণ প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। ধর্ম, সাহিত্য, রাজনীতি ও সামাজিক ব্যাপারে বেদনাদারা প্রভাবিত হওমাই Romanticism। ভাবে বিগলিত হওয়া, দরিজের দ্বংপে অঞ विमर्कन, विलाग-वहल कोलाहलपूर्व नागत्रिक कीवरन विकृष्ण, भन्नीत শান্ত, সন্তুষ্ট, সরল জীবনে প্রীতি, সম্পদে বিরাগ, দারিয়্যের স্তুতি প্রভতি Bomanticism এর বিশেষত । ऋस्त्रात পূর্ববস্তী লেখকদিগের মধ্যে কাহারও কাহারও রচনায় এই সকল লক্ষণ অস্তাধিক পরিমাণে লক্ষিত হইলেও তাহার হস্তেই এই ভাব পরিণতি লাভ করিয়াছিল।

ক্ষুণার প্রভাব রাজনীতিতেই সীমাবদ্ধ ছিল না। জার্মাণ দর্শন ইহা ছারা বিশেষভাবে প্রভাবিত হইরাছিল। Romain Roland লিথিয়াছেন Emile পাঠ করিয়া Kant মুগ্ধ হইরাছিলেন। তিনি লিথিয়াছেন, "এক সময় ছিল, বথন মনে করিতাম জ্ঞানই সর্ব্বাপেকা গৌরবের বস্তু। এই ক্ষপ্ত গর্বতারে অজ্ঞ লোকদিগকে অবজ্ঞা করিতাম। ক্লুণো আমার চক্ষু পুলিয়া দিয়া মিখ্যা শ্রেষ্ঠয়াভিমান ভাজিয়া দিয়াছিলেন। তাহার নিকটই মানুষকে সম্মান করিতে লিথিয়াছিলাম।" Social Contract এর প্রভাবন্ত Kant এর উপর কম ছিল না। "যে স্বাধীনতা মানুবের বিশেষত্ব" তাহার ধারণা তিনি এই গ্রন্থ হইতেই পাইয়াছিলেন। * * * ক্ষার্মাণির Sturm and Drang আন্দোলনের নামকগণ—Lessing ও Herder হইতে আরম্ভ করিয়া Goethe ও Schiller প্র্যান্ত সকলেই—ক্ষুণার মত গ্রহণ করিয়াছিলেন। Schiller ক্ষুণার বন্দ্রনা স্কুকে একটি গীতি কবিতাও লিথিয়াছিলেন।

ক্লোর মধ্যে বিভিন্নমূখী প্রতিভার একতা সমাবেশ হইরাছিল। ভাঁহার চিন্তাই যে কেবল বিপ্লবমূখী ছিল, ভাহা নহে। ভাঁহার রচনার

রীতি ছারা বেদনার প্রকৃতি ও বেদনা প্রকাশের ভঙ্গীতেও বিপ্লবের প্রচ হইয়াছিল। ভবিষ্যতের কলারীতি (Art) তিনি রূপান্তরিত করিয়া. ছিলেন। তাঁহার বাকপটুতা অসাধারণ ছিল। এক Bossuet বাতীত ফ্রান্সে এ ক্ষেত্রে তাঁহার প্রতিষ্কী কেহ ছিল না। প্রাচীন গ্রীক ও রোমান বাগ্মিতা তিনি পুনরুজ্জীবিত করিয়াছিলেন। তাঁহার কতিপর রচনার বাক্যপট্তার একান্তই অভিভূত হইয়া পড়িতে হয়। Demosthenes এর রচনার স্থবমা, উচ্ছি তি এবং আলামর প্রবাহে তাঁহার রচনা সমৃদ্ধ। মনের নিভূত চিন্তার রূপায়নেও তিনি স্থদক ছিলেন। তাঁহার রচনা-কৌশলে তাঁহার চিন্ত। বাহ্যন্ত্রণ হইয়া পাঠকের সম্প্রথে আবিভ্রত হয়। তাঁহার Confessions পাঠকের মর্ম্ম ম্পর্ণ করে। তাঁহার সময় দোষ-গুণের মূল, ভাহার মানসিক ও দেহাভান্তরীণ বৈশিষ্ট্য, তাহার আত্মমগ্নতার (Egotism) অবশুদ্ধারী ফল। সামাজিক প্রথা ও সাহিত্যিক বীতি অগ্রাফ করিয়া, তিনি কেবল নিজের কথাই বলিয়াছেন। তিনি সত্য "অামির" স্থান পাইয়াছিলেন। মনের অন্ধকার ককে তিনি যে যে রেপা অঙ্কিত দেখিতে পাইয়াছিলেন, তাহারই অনুসরণ করিয়া-ছিলেন। "সহস্ৰ সহস্ৰলোক যাহা দমন করিয়া রাখে, তিনি নিৰ্লজ্ঞ ভাবে আপনাকে নগ্ন করিয়া তাহা প্রকাশিত করিয়াছেন। আধনিক মাকুবের মনকে তিনি মুক্তি দিয়াছেন, এবং শৃঞ্জভঙ্গ করিয়া আপনাকে জানিতে ও প্রকাশ করিতে শিখাইয়াছেন।

"এই নৃতন জগৎকে প্রকাশিত করিবার জন্ম তাহাকে নৃতন বন্ধন্দুক ও অধিকতর নমনীয় ভাষার স্বষ্টি করিতে হইয়াছিল। তিনি লিখিয়াছেন "আমার শৈলী আমি বাছিয়া লইয়াছিলাম। তাহার একক্সপতা রক্ষা করিবার চেষ্টা করি নাই। যাহা আসিয়া পড়িয়াছে, তাহাই গ্রহণ করিয়াছি এবং অসংকোচে তাহার যথেছে ব্যবহার করিয়াছি। যাহা অফুতব করিয়াছি, তাহা যেমন দেখিয়াছি বিনা ছিধায় প্রকাশ করিয়াছি, ফলের কথা ভাবি নাই। বিগত ঘটনার এবং তজ্জাত বেদনার শ্বতির মধ্যে অবগাহন করিয়া আমি আমার মনের অবহার ছিবিধ চিত্র অ্ছত করিব, একটি ঘটনার সমকালীন অবহা, ছিতীয়টি বর্ণনকালের অবহা শিক্ষ

ছন্দ ও ভাবাবেগের এই প্রাচ্গ্য বিশৃদ্বালায় পর্যাবসিত হইতে পারিত। কিন্তু রুদোর সহজাত স্বমাবোধ তাহা হইতে দের নাই। ১৭৬০ সালে তাহার মুদ্রাকরকে তিনি লিখিরাছিলেন "জামি প্রধানতঃ গারক, রচনালৈলীতে স্বমার মূল্য আমার নিকট এত অধিক, বে স্থামতার অব্যবহিত পরেই, এমন কি সত্যামুগতির পূর্বেও ভাহার ছান।" প্রয়োজন হইলে এই স্বমার জন্ম আখ্যানের সত্যামুগতি বিদর্জন দিতেও ভাহার কুঠা ছিল না। স্বমারক্ষার জন্ম ইচ্ছাপূর্বক ব্যাকরণের নির্মণ লক্ষন করিয়াছেন। তাহার কাছে ছন্দের স্থান ভাবের পূর্বে। তিনি বাক্য ও বাক্যাংশগুলি প্রথমে মনের মধ্যে গাহিরা লইতেন, জাহার পর ভাহাদিগকে শব্দে প্রথিত করিতেন। তিনি বে একজন বড় গন্ধ করিও জ্বাদী Romanticism এর অগ্রদূত ছিলেন, তাহার ছন্দ ও ছন্দারীতি, তাহার ভাবালুতা এবং তাহার প্রত্যর সকলের (idea) বিবর বিকেলী করিলে ভাহাতে সক্ষেত্র থাকে না। Chateaw briand এবং টিন

Martine লগো হইতেই উদ্ভূত ইইৱাছিলেন। Michelet ও George sandএর মধ্যে তিনি অনুপ্রবিষ্ট।

"শিকাসম্বন্ধীয় আধুনিক সকল মতই ক্লোর শিও সম্বন্ধীয় জ্ঞান ও ভাগার Emile বারা প্রভাবিত। জেনিভার প্রসিদ্ধতম নব্দিকা-প্রতিষ্ঠান রুদোর নামে এতিটিত। নিজের সম্বন্ধে চর্বল হইয়াও তিনি ধর্মবিবেক-সম্বন্ধে দৃঢ় অথচ কঠোরতাবর্জিত, স্বন্দাষ্ট্র, স্লাঘ্য চালক বলিয়া পরিগণিত হইরাছিলেন। সভা চরিজোৎকর্ম আবিভারে ভাহার একটি উদার সহজাত পটুতা ছিল। তাঁহার অনুমত চরিত্র-নীতিতে উগ্রতা व्यथता व्यवश्कि मार्ग हिल ना। जाहा পরিবেশ-নিরপেক हिल ना এবং কোনও বিশেষ তত্ত্ব অথবা বিশাদের উপর প্রতিষ্ঠিতও ছিল না। তাহার মূলে ছিল গভীর সহাতুভূতি এবং মাতুষের তুর্বলতার প্রতি অমুকম্পা। তাহা মামুধের স্থারামুগত প্ররোজনের উপযোগী ও कीवस किन।

"অবচেতন মনের ছার উদ্ঘাটিত করিয়া তিনি তাহার অবজ্ঞাত ও দ্মিত সম্পদ এবং libidoর রহস্ত সাহিত্যে প্রকাশিত করিয়াছিলেন। Freud তাহার নিকট অংশতঃ ঋণী।

"Tolstoi তাঁহার নিকট হইতেই যৌবনে "বজাঘাত" প্রাপ্ত হইয়া-ছিলেন। যুবক Tolstoi ক্লোর চিত্র সমন্থিত একটি পদক পবিত্র

মূর্ত্তির মত শ্রদ্ধান্তরে গলদেশে বারণ করিতেন। তাহার নৈতিক পুন-লম্ম এবং তাহার Iasnaia Polianaর বিভালর ক্রোর উপদেশ ও দৃষ্টাভের উপর প্রতিষ্ঠিত ছিল। জীবনের শেব দিন পর্যন্ত তিনি তাঁহাকে শ্বরূপ করিতেন। ধর্ম ও কলা, উভয়ত্রই তুলারূপে উভরের মধ্যে সাদৃত্ত ছিল। Tolstoi লিখিয়াছেন "ফুলোর রচনা আমার হুদর এতই লার্থ করে, যে আমার বিশাস আমিও এরপ লিখিতে পারিতাম।" সভাই তিনি ক্লোর লেখাই পুনরার লিখিয়াছেন। তিনি বর্তমান বুপের Jean Jacques। বর্ত্তমান বুগের চিন্তার উপর ক্লোর প্রভাবের এখনও শেষ হয় নাই। যুবক জাপান এবং নব চীন তাঁহার শিক্ষা এহণ করিয়াছে।"

ইহার পরে Romain Rolland তাহার ব্যক্তিগত কৃতক্ষতা রাজ করিয়া লিখিয়াছেন "যে লেমান হ্রদের চতুর্দিকে তাহার অস্তর অনবরত বুরিয়া বেড়াইত বলিয়া রুদো লিখিয়াছেন, ভাহার ভীরে অমণ কালে আমি অনেকবার তাঁহার ছায়ার (shade) সাক্ষাৎ পাইয়াছি। Ville: neuve এর গুহে বসিয়া যখন আমি এই পংক্তিঞ্জি লিখিতেছি, ভব্ন বাভায়নের ভিতর দিয়া Clarensএর উপসাগর ও সাকুদেশ আমার দৃষ্টিগোচর হইতেছে। তাহার শীর্বদেশে বৃক্ষরাজির মধ্যে জুলির গোপালরাগরঞ্জিত স্থাতুর গৃহ দাঁড়াইয়া আছে।"

আন্দামান ও নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

অধ্যাপক শ্রীমণীন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় এম-এ, বি-এল

नद्र

আনামানে জাপানী-রাজ

আৰ তিন বংগর পূৰ্বে মনিপুর রাজ্যের রাজধানী ইম্ফল, নাগা পর্বতের অধান সহর কোহিমা এবং বর্দ্ধা দীমান্তের কাবো উপত্যকা অঞ্চলে ত্রমণ করিবার হ্বোগ বটিয়াছিল। ঐ সমগু স্থানে থুজের মধ্যভাগে কিছুদিনের জন্ত জাপানী সৈত্ত আসিয়াছিল এবং সেই সময়ে যে সমস্ত লোক তথায় नाम कतिवाद जाहात्मत्र व्यत्नत्कत्रहे निकछे शहेरा अकरात्का কাপানীদের হুখ্যাতি গুনিরাছিলাম। কাপানীরা নিরতিশুর ভন্ত, পরিশ্রমী, নিয়মামুবর্ত্তী এমন কি খাভাভাবে মরিয়া গেলেও অপরের নিকট হইতে জার করিরা ক্ছি এহণ করেনা, এইরূপ উচ্ছুদিত প্রশংসা ওনিয়াছিলাম। আরও মজার কথা শুনিরাছিলাম বে, ইম্ফলের কোন লোকই ব্ঝিতে ^{পারে} নাই বে, নেতালী স্থভাব বা কোন ভারতীয় এই অভিবানে ছিলেন। তাঁহারা বলেন বে, বুজের জবসানের পর তাঁহারা এই সমত সংবাদ উনিয়াছিলেন, কিন্তু বুদ্ধের সময় কেবলমাত্র হাক্-প্যাণ্ট ও গেঞ্জী পরা, ^{টেন গান} বা ছোট রাইকেল শোভিত জাপানী দৈনিকই তাঁহারা দেখিরা-ছিলেন, কোন ভারতীয়কে আদৌ কেখিতে পান নাই।

জাপানী সম্বন্ধে মনিপুরের এই কাহিনীর সম্পূর্ণ বিপরীত বিবরণ শুনিলাম পোর্টব্রেয়ারে। পোর্টব্রেয়াবে ৪৩ মাস জাপানী রাজত ছিল। তাহা निमान अञ्चाहात, इःथ এবং विश्वीविकात পরিপূর্ণ। अपह मला এই যে, পোর্টক্লেয়ারের অধিবাসীরা জানিতে পারিয়াছিলেন বে, 'চক্র বোদ' (কণ্টিনেষ্টাল কামদায় স্থভাব চক্র বোদকে S. Chandra Basu বলা হইত) এই অভিযানের নায়ক এবং ১৯৪৩-এর নভেম্বর মাসে পোট'-রেয়ারের জিমপানা প্রাউত্তে তাহারা নেতাজীর বস্তুতাও স্থানিরাছিলেন। कार्शानी-आन्वामात्न वान कतिवाहिन, এই त्रश हिन्तू वा मूनलमान वाशा करे জাপানীদের সম্বন্ধে বিজ্ঞাসা করিয়াছি, ভাহারাই পূর্ব্ব কথা শ্বরণ করিয়া আর একবার ভরে শিহরিয়া উঠিয়াছিলেন।

আন্দামানে জাপানীদের রাজত্বাল সহজে ওথানকার স্থানীর লোকদের নিকট বে কাহিনী সংগ্রহ করিয়াছি, তাহাই সংক্রেপে লিপিবছ করিতেছি। ইহার সন, তারিধ এবং সমস্তই ওধানকার লোকের শুভি হইতে গৃহীত, কোন কাগুলে বা পাথুরে এমাণ কিছুই দেখি নাই। বিঃ त्राश् । मिः त्रक्षेक श्रम् अपनात्कत्र निक्षे इट्रेंट आज आज निम्नलिथिक रेजिराम माधुरीक रहेबाटर।

১৯৪১ সালের ডিসেম্বরে জাপানীদের হাতে সিঙ্গাপুরের পতন इंख्यांत्र मांग थानिक পর হইতেই আন্দামানে विशेषिका प्रिशा प्रिय এবং ভদানীন্তন ইংরাজ রাজ তিনগানি জাহাজ ভাড়া করিয়া আন্দামানে লইয়া বাইবার চেষ্টা করেন। কিন্তু হুইখানি জাহাজ প্রথমধ্যে জাপানীদের ছারা **শাক্রান্ত হইয়া জল**মগ্ন হয় এবং একথানি মাত্র জাহাল পোর্ট ব্লেয়ারে বাঁসে। ঐ শেষ জাহাজ 'S. S. Neurolia' পোর্টব্রেয়ারের বন্দর ছইতে ১২ই মার্চ্চ ১৯৪২ সালে ভারত অভিমূখে যাত্রা করে। ঐ জাহাজে আন্দামানের সমস্ত অস্তায়ী ভারতীয় অধিবাসীদের ভারতে প্রেরণ করা হয়, শেতাপ্রথাও অনেকেই চলিয়া যান, কেবল আন্দামানের Local Born-রা আন্দামানেই থাকিয়া যান। উচ্চপদস্থ সাহেবদের মধ্যে কাৰীন্তন চিফ্ কমিশনার মিঃ ওয়াটারফল্দ্, ভাহার দেক্টোরী মিঃ শার্ড, এক্সিকিউটিভ, ইঞ্জিনীয়ার মিঃ লিওদে, আন্দামানের বেতারকেন্দ্রের 🎮 বাক মি: লেণ্টি, জেল গানার অধ্যক্ষ মি: ম্যাক্মিলন্ এবং আরও ্**কজেকজন** পোর্টট্রৈয়ারেই থাকিয়া যান। আন্দামানের সামরিক রক্ষা শ্বৰেষ্টা কিছুই ছিল না, প্ৰকৃতপক্ষে উহা খোলা সহর (open town) হিসাবে অরকিতভাবেই পডিয়া ছিল।

১৯৪২-এর ২১শে মার্চ্চ ভারিথে সকাল বেলা হইতে পোর্টহ্রেয়ার ্**সহরে স**রকারীভাবে জানাইয়া দেওয়া হয় যে, জাপানীরা এই স্থানে ় **অবতরণ** করিলেই তোপ দাগিয়া সকলকে জানাইয়া দেওয়া হইবে। অকুতপক্ষে এই তোপের কারণ ছিল এই যে, পোর্টল্লেয়ারের বেতার কেল্রের (Wireless Station) নীচে ডিনামাইট বদান হইয়াছিল, এবং ঠিক ছিল যে, জাপানীয়া ধীপে অবভরণ ক্রিলেই 🐧 ডিনামাইটের **ষারা বেতা**র কে<u>ল্ল</u> উড়াইয়া দেওয়া হইবে এবং তাহারই **শব্দে স্থানী**য় অধিবাদীবর্গ জাপানীদের অবভরণ বৃঝিতে পারিবে। পরদিন রাত্রে অর্থাৎ ২২ ও ২৩ তারিখের সংযোগ হলে ২০।২৫ থানি জাপানী জাহাল হইতে জাপানীরা আন্দামানে অবতরণ করিতে আরম্ভ করে। তাহারা রস দ্বীপ, করবাইনোম্বোপ, ব্রুক্সাবাদ এবং মেমিওর দিক হইতে আন্দামানে অবতরণ করে এবং পূর্ব্দ পরিকল্পনা অমুসারে সেই মধ্য রাত্রেই ইংরাজগণ ডিনামাইট দিয়া বেতার কেন্দ্র ধ্বংস করেন।

পরদিন, অর্থাৎ ২৩-এ মার্চ্চ সকালে সূর্য্যোদয়ের পর হইতেই পোর্ট-ব্লেয়ারের পথে ঘাটে জাপানীদের গমনাগমন ফুরু হয়। তাহাদের আকৃতি দেথিয়া স্থানীয় লোকেরা অনেকেই গুর্থা দৈল্য আসিয়াছে বলিয়া প্রথমে ্ভুল করে কিন্তু পরে বুঝিতে পারে যে গুর্থা নয়, জাপানী। প্রথমত: · ইহাদের সহিত কাহারও কোন বিবাদ হয় নাই, উপরত্ত স্থানীর লোকেরা ইংরাজ রাজত্বের অবসান বুঝিয়া আনন্দিত হইয়া জাপানীদের অভি-নন্দনও জানাইয়া ছিল। কিন্তু জাপানীরা ধাঞ্চাভাবেই হউক বা অগ্র যে কোন কারণেই হউক, স্থানীয় লোকের বাড়ীতে প্রবেশ করিয়া থান্ত-সামগ্রী চাহিতে আরম্ভ করে, এমন কি জোর করিয়া জিনিবপত্র সুটপাট করিতেও ফুরু করে। ইহার ফলে তুই তিন দিনের মধ্যেই জাপানীদের বিরুদ্ধে স্থানীর লোকেরা বিরূপ হইয়া পড়ে।

বর্ণ ক্লাবের সন্নিকটে বেলা বারোটার সময় কয়েকজন লাপানী আকবর আলি নামক এক মুদলমান লোক্যাল-বর্নের বাড়ীতে প্রবেশ করিয়া পুঠতরাজ স্থরু করে এবং এই কারণে উত্তেজিত হইয়া আকবর আলির যুবক পুত্র জুল্ফিকর আলি তাহার নিজের বন্দুক লইরা ইহাদের তাড়া করে। ফলে একজন জাপানী সামাগ্ত আহত হয় এবং সকলেই লুঠ করার মতলব ছাড়িয়া দিয়া পদায়ন করে। বেলা আন্দাব্ধ তিনটার সময় একদল জাপানী দৈনিক অফিসার সহ ঐ পাড়ার আসিয়া আততায়ীকে ধরিবার চেষ্টা করে, কিন্তু জুলফিকর আত্মগোপন করিয়া পলায়ন করে। তথন জাপানীরা আকবর আলির বাটীতে আগুন লাগাইয়া দেয়। কাঠের বাড়ীতে আগুন দেওয়ার ফলে সেই অঞ্লের সমস্ত বাড়ীভেই আগুন লাগে এবং কয়েক ঘণ্টার মধ্যেই নিকটবর্ত্তী সমস্ত বাড়ী ভন্মীভূত হয়। এই সমস্ত গৃহের প্রায় ২০০।৩০০ অধিবাদীকে জাপানীরা দৈল দ্বারা পরিরেন্টিত করিয়া বলে যে, আততায়ীকে বাহির ক্রিয়া না দিলে উথাদের সকলের উপর মেশিনগান চালাইয়া সকলকেই হত্যাকরা হইবে। ইহাতে জুলফিকর নিজেই আসিয়া ধরা দেয়। রাত্রে জাপানীরা জুলফিকরকে বন্দী করিয়া রাখে।

পর্বদিন সকালে Local-Born Club-এর থেলার নাঠে (এই ক্লাবের অপর নাম ছিল Browning Club এবং অধুনা ইহার নামকরণ হইয়াছে Netaji Club) জুলফিকারের বিচার আরম্ভ হয়। এই বিচার দেখিবার জন্ম স্থানীয় সমস্ত লোককে দৈনিকদের দ্বারা জোর করিয়া ধরিয়া আনা হয় এবং মাঠের মাঝখানে সর্ব্বসমক্ষে জুলফিকারকে একটি মাত্র ছোট আখারওয়ার পরাইয়া মারপিট হার হয়। দশজন জাপানী দৈনিক এই প্রহার আরম্ভ করে। এইরূপ প্রহারের উদ্দেশ্ত অপরাধীকে দিয়া অপরাধ স্বীকার করানো। সত্য হউক, মিথ্যা হউক, প্রহারের ভাড়ায় অপরাধী নিরূপায় হইয়া অপরাধ স্বীকার করিলেই তাহার প্রাণদণ্ড সাবান্ত হইত এবং সঙ্গে সঙ্গেই জুজুৎস্থ প্রশালীতে তাহাঁকে বধ করা হইত। অবশু জুলফিকারের অপরাধ সর্বজনবিদিত, স্বতরাং ভাহার আর খীকারোক্তির প্রয়োজন ছিল না, একেবারেই **ভাহার উ**শর জুজুৎস্থ স্থারু হইয়া গেল। মাঠের চারিদিকে ভিন চারিশত স্থানীয় অধিবাসী নিরস্ত্র ভাবে দাঁড়াইয়া এই শান্তি দেখিতেছে ও চুইশত আশার্জ জাপানী সশল্প দৈনিক এই লোকগুলিকে পাহারা দিতেছে,—দর্শক্ষের মধ্যে জুলফিকারের পিতা, মাতা এবং স্থানীয় অসংখ্য নারী ও শিত সকলেই ছিলেন। কাহারও মাঠ ছাড়িয়া বাইবার হকুম ছিল না। "Zulficar Khan was jujutsued and killed" aft জুলফিকারের উপর জুজুৎস্থ প্রয়োগ করির। হত্যা করা **হইরাছিল।** এই জুজুৎস্থ যে কি ভয়ানক ব্যাপার তাহা যাহারা দেখিরাছে তাহারাই ভারত इरेग्नार्ष्ट এवः वह लाक मार्टारे मुर्क्टिंड इरेग्नाहिन। मुर्क्टिंड बाक्टिंपन লাখি মারিয়া জাপানী দৈনিকরা মুচ্ছা ভাঙ্গাইরা দিত।

জুজুৎসুর প্রথম পত্তন হইল একজন সৈনিক অপরাধীকে ^{কাৰে} তুলিরা মাটীতে আছড়াইরা ফেলিল। সঙ্গে সঙ্গে আর একজন তাহার লাপানী অধিকারের তৃতীয় দিবদে এবার্ডিনের বর্ত্তমান <u>একটি হাত ধরিরা মৃচড়াইরা</u> কাঁধের হাড় ভালিরা কেনিল, অপর এ^{ক্রন}

এইরপে অপরাধীর অপর হাত ভালিয়া দিল। অপরাধী মাটীতে পড়িয়া থানিকক্ষণ ছটকট করিল, অতঃপর পায়ের টিবিয়া নামক হাড়ের উপর বন্দুকের কুঁদা মারিয়া দৈনিকরা অপরাধীর তুইটি পায়ের হাড়ই ভালিয়া দিল। এই পর্যান্ত করিয়া সৈনিক-জলাদগণ কিছুক্ষণ বিশ্রাম করিল, পরে তাহাদের 'তেইকু' অর্থাং অফিনার সমবেত দর্শকদের ব্যাইয়া দিল যে, লাপানীদের বিরুদ্ধাচরণ করিলে এইরপে অবস্থাই হইবে। অপরাধী বাজি মুমুর্ অবস্থায় জল প্রার্থনা করিতে থাকিলে একজন দৈনিক মাঠ হইতে কিছু ধূলা লইয়া তাহার মুখে চোবে ছড়াইয়া দিল। হাত পা ভালা অবস্থায় অপরাধী চোথ মুগ হইতে ধূলা সরাইয়া ফেলিতেও অক্ষম। তাহার পিতা, মাতা, স্থা, প্র, ভারায় প্রতিবেশী সকলেই কাটের পুতুল হইয়া দাঁড়াইয়া থাকিতে বাধ্য। মুখে কোন শব্দ করিলে জাপানী রক্ষী দৈনিক বন্দুকের কুঁদা দিয়া বা লাখি শব্দিয়া আঘাত করিবে। নিক্রপায় দর্শকগণ এ অবস্থায় অপরাধার ক্রত তাই কামনা করে।

অতঃপর জাণানী জলাদেরা অপরাধাঁকে াড়িয়া দিয়া চলিয়া গেল, কেবল কতকগুলি দৈনিক প্রহরী রহিল। এই সময় রৌজ উঠিতে লাগিল। ক্রমে রৌজের তেজ বাড়িয়া গেল। ধূলায়, রৌজে, অসংখ্য মাছির তাড়নায় হস্তপদ ভগ্ন অবস্থার হতভাগ্য মাটীতে পড়িয়া ছটফট করিতে থাকিল, অবচ দর্শকগণের কাহারও মাঠ ছাড়িয়া যাইবার উপায় নাই বা হতভাগ্যের নিকটেও আসিবার উপায় নাই। স্কাল হইতে এইরপে বেলা বারোটা বাজিয়া গেল। জুল্ফিকারের চোথ ছইটি জ্বা ফুলের মত লাল হইয়া গিয়াছে ও গলা দিয়া কেমন একটা গোঁয়ানির

শব্দ ছাড়া আর কোন শব্দ নাই, হাত ও পারের বে ছাবে হাড়গুলি ভার্ম হইয়াছে, সেই স্থান গুলি ভীষণভাবে ফুলিয়া উঠিয়াছে, শরীরের অভান্ত নানাস্থানে রক্ত জমিয়া কালো হইয়া আছে, প্রস্রাব, বাহে এবং মুখের লালা ও চোপের জলে মাটী ভিকিয়া গিরাছে, গায়ের **ঘাম আর মাই**ট শুকাইয়া গিয়াছে, এই অবস্থায় একজন দৈনিক কতকগুলি আলপিন দক্ষী হতভাগ্যের নিকটে আসিয়া এক একটি আলপিন তাহার পেটে, পিট ও অন্তত্ত্ত আমূল বি[°]ধিয়া দিতে লাগিল। এক একটি আলপির বেঁধে, আর অসহায় অপরাধী চিৎকার ক্রিয়া নডিয়া চডিয়া উঠে. অনাহারে, প্রচণ্ড রোম্রে দাঁডাইয়া শিশু ও নারী দর্শকেরা এই পৈশাচিক বিচার বাবস্থা দেখিতে বাধা হয়। এই শান্তির নাম বিচার, ইহা শাকি বলিয়া ওদেশী ভাষায় অভিহিত হয় না। এইরূপে আরও এছবটা চলার পর বেলা একটার সময় যখন জুলফিকার মরিয়া গেল জুক্ট ইহার উপর সেই দশজন দৈনিক একত্রে বন্দক লইয়া ভাটি করিল। সেইদিন অপরাকে ঐ হতভাগাকে ঐ মাঠেই 🚁বর্ম দেওয়া হয়। জাপানী অধিকারে এই জুলফিকার পানই এ**ইরুপে অধ্** নিহত হয়। নেতাজী ক্লাব গ্রাউত্তে এক সন্ধ্যায় জুলফিকারের কর্ময় আমরা দেখিয়াছি। তাহার লাতা এই কবরটি আমাদের দেখাইয়াছিল। জুলফিকারের পিতা আকবর আলি তদবধি বিকৃত মন্তিক হইয়া গিরাছেন। বৃদ্ধ এখনও জীবিত আছেন। আমরা তাহাকে দেখিয়া**ছি, ভবে** ভাহার সহিত কোন ব্যক্যালাপ ক্রিবার চেটা ক্রি নাই, শুনিলাম তিনিও কাহারও সহিত কোন কৰাই বড একটা বলেন না। (ক্রমশ:)

অগ্নিস্নান

শ্রীশোরীন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য্য

ছঃখীরা সব বৈর্য্যে দাঁড়াও শোর্য্যে আজি শির ভোলো,
আআতেরের দীপ্তিতে ভাই জগনাথের হার থোলো।
বহুৎ তোদের পাপ হয়েছে অগ্নিতে চল্ কর্নি রান,
বৈর্য্যেরি এই সিদ্ধিতে আজ করতে হবে সর্বদান।
মন্থবিনা কেন্ট্র পাপ পুড়ে যাক দগ্ধ হয়ে হও খাঁটি,
নিশাপ হলে তার তৈরেতে ফাটবে ওরে এই মাটী।
হাজার হাজার বর্ষেরি পাপ তাহার প্রায়শ্চিত্র কর্,
আতির পাপের অগ্নিমানে পূর্ণাছতির মন্ত্রপড়।
ভদ্ধ হয়ে ওদ্ধোদন আজ উল্বোধনের গান গাহ,
সর্বনাশের অগ্নিনাশে বইতে হবে সব দাহ।
বাস্তনাশ আর মৃত্যুবরণ আজকে তোদের পুরস্কার,
ভ্যাকি নারী, ত্র্যোধন আজ দেখার যদি উরস্ তার।
বাজনেনীর তেজ দিয়ে ভূই ফাটিয়ে পাপের রাজ সভা,

নি:খাদে তোর ফ্টিয়ে আজি তোল্ দেখি মা লালজবা।
সেই জবারি পাঁপড়া ফেটে উঠবে হঠাৎ ভ্র্কারি,
শক্তিমারের মুক্তিতনয় ঐ নিকটে দিন তা'রি।
নির্দোষী আর নিজ্পাপীরা বৈর্যাধ্বের আজ দাঁড়া,
জাতির পাণের অগ্নিদাহে বীরের মতন রও থাড়া।
হর্গতদের হিসাবনিকাশ আসছে করাল রক্তচোথ।
কল্পাতার বজাবাত এ আশীর্বাদের পদ্ম হোক্।
আয়তেজে শোর্ব্যে দাঁড়া সর্বনাশের বন্দনাতে,
কল্প আবাত জীবন তোদের বাজাক্ নবীন ঝয়নাতে।
সর্বনাশের মুক্ট পরি' বর্বরতায় চরণদানি'
চল্ দাঁড়াবি বক্তপায়ে লক্ষকোটি বজ্পানি।
অগ্নিজনুক প্রলম্ন শিথায় জগনাথের গাওরে গান,
ভাষীজাই আজ ময় ধ্যানে গুকিতে কর্ অগ্নিনা।



-col-

স্বারোগা ভারণ তলাপাত্র সংগারবে আহীর পাড়ায় গিয়ে পৌছলেন।

বেশ সমারোহ করেই এসেছেন। বিখাস নেই লোকভলোকে। ফাঁকা আকাশের রৌদ্র আছে ওদের রক্তের
মধ্যে, কেন্দ্রিত হয়েছে অভসী কাচের আলোর মতো তীব্রভীক্ষহার। আছে তালগাছ বিদীর্ণ করা বজ্লের গর্জন—
মূল শুদ্ধ গাছ উপড়ে নেওয়া ব্রির অমার্থী উল্লাস।
বিখাস নেই—বিখাস নেই!

রিজ্পভার নিরেছেন, সকে ত্রিশ রাউণ্ড গুলি। এ-এস্-আই বদক্ষদিনের সকে বন্দুক। তা ছাড়া বন্দুকধারী ছ'জন কনেস্টবল, জন আষ্টেক চৌকীদারও।

কনেস্টবল আর চৌকিদারদের আগেই রওনা করে দিয়েছিলেন, তারা বধন গ্রামের কাছাকাছি এসেছে, তথন সাইকেল নিরে তিনি আর বদক্ষদিন এসে ধরেছেন তাদের। তারপর সম্রস্তভাবে এদিকে ওদিকে তাকিয়ে এসে চুকেছেন আহীর পাড়ায়।

নিমগাছের ছারার নিচে বড় একথানা আটচালা বর।
আট দশটা মহিব চরছে আশে পাশে। বরেক্রভূমির
আঠের মহিব। নিরীহ ছুর্বল জীব নয়; বস্তু-মহিষের মতো
বিশাল বপু—মাধার ওপর ধরশুক্তে আতক্ষলক সম্ভাবনা।

দারোগা বললেন, ওগুলো কী ? বদক্ষদিন বললেন, মোব ভার। ভারণ চটে উঠলেন।

—মোৰ বে তা আমিও জানি। আমি কি গোরু বে আমার মোৰ চেনাতে এসেছেন? সে কথা বলছিনা। মানে ওগুলো গুঁডোর কিনা?

বদক্ষিন সন্দিশ্ব চোধে অতিকার প্রাণীগুলোর দিকে ভাকাতে তাকাতে বললেন—কী করে বলব ভার, আমার সত্তে ওাদের আলাপ নেই।

তারণ একবার কট্মট্ করে তাকালেন বদকদিনের দিকে।

বললেন, আলাপ থাকলে কি আর থানার এ-এস্-আই হতেন ? ওইথানেই বাঁধা থাকতেন।

—की वल इन ज्ञांत्र ? — वषक फिरनत्र (ठार्थ विद्यांश प्रिश किला।

—না, কিছুনা।—ভারণ সাম্লে নিলেন। লীগের
মন্ত্রীক্ত্র—কাউকে চটানো ঠিক নয়। সব ভাই-বেরাদারের
দল। কখন পেছন পেকে চুক্লি খেয়ে দেবে—ভারপরেই
ভবিশ্বতের পথটি একেবারে বন্ধ। আর কিছু না হোক,
ট্রান্সফার ভো নির্বাৎ। ছুর্বটনা হিসেবে সেটাও কম
মর্মান্তিক নয়। এটা ভেলার একটা বিখ্যাত ক্রিমিন্সাল্
থানা—একদল অভ্যাচারী জোতদারও আছে। স্থতরাং
প্রাপ্তিযোগের ব্যাপারে থানাটা অনেকের কাছেই
লোভনীয়। পট্ করে যদি সদরের কাছাকাছি কোথাও
বদ্লি করে দেয়, ভাহলে বসে বসে বেলপাতা ভাকতে

স্তরাং তারণ মৃহ হাদলেন, একটু রদিকতা করছিলাম আপনার সঙ্গে।

— ওদব রদিকতা আমার দক্ষে করবেন না স্থার, আমার ভালো লাগেনা।—হাঁড়ির মতো মুখ করে জবাব দিলেন বদক্ষদিন।

কথা বলতে বলতে এগোচ্ছেন ছু'লনে। একটু পেছনে পেছনে আসছে চৌকিদার আর কনেস্টবলের। দিন ছুইয়েক আগে কী করে একটা খাসি বাগিয়েছিলেন দারোগা, সেই সম্পর্কে সরস আলোচনা চলছে তাদের মধ্যে। স্থতরাং একটু দূরে থাকাই নিরাপদ।

একজন চৌকিদার বলছিল, তুমি বৃঝি ভাগ পাও নাই চৌবেজী ?

চৌবে স্থণাভরে জবাব দিলে, হামি গোস্-উস্ থাইনা— ব্রাহ্মণ্ড্রাছি।

5 P. B. . .

—সব প্রাহ্মণকেই চিনা আছে হে—বিভীয় চৌকিলার মিটি মিটি হাসল।

চৌবে কানে আঙুল দিলে, ছি: ছি:—উ সব মত্ বোলো।

ছিতীয় কনেস্টবল বামাচরণ বাঙালি। ক্লাশ এইট্
পর্যন্ত বিলা। একটা স্থাপিরিয়রিটি কন্প্রেক্স আছে ভার—।
ধানায় যতকণ থাকে, ততকণ দে এল-সি—লোকে তাকে
দল্মান করে মৃত্রীবাব্ বলে—চৌবের মতো পাহারাওলা
দাহেব বলেনা। কিন্ত এই সমন্ত জন্ধরি ব্যাপারে ভার
পদমর্যালা খ্লিস্থাৎ হয়ে যায়—পট্টি পার্থড়ী এঁটে ভাকেও
বেরিয়ে পড়তে হয় বল্লুক কাঁথে করে। নিভান্ত অভ্প্র
বিরক্তির সঙ্গে বেরোয় বামাচরণ—পোষাকে না হোক,
অন্তত মুথের চেহারায় টেনে রাখতে চায় আভিজাত্যের
আবরণ।

স্তরাং বামাচরণ কিছু বলন না, শুনে যেতে লাগন।
ছতীয় চৌকিদার বললে, মিছাই খালি দারোগার দোষ
দেছেন। উ জমাদারটাই কি কম ঘুঘু হে! হামার ছই
ছইটা রাওয়া মোলুগা বেমালুম প্যাটত সান্ধাই দিলে!

- এই চুপ চুপ। ভানিবা পাবে। থামি গেইছে।
 সভািই থেমে গেছেন ভারণ। মোধগুলোর কাছাকাছি
 এসে পড়েছেন।
 - -বদক্ষদিন মিঞা পু
 - —বলুন স্থার।
 - —সামনে মোষ।

বদক্ষদিন বললেন, দেখতেই তো পাচ্ছি স্থার। আমার চোধ আছে, একজোড়া চশমাও আছে।

- —হ°!—দারোগা গন্তীর হলেন: ৩°তোবে নাকি ?
- কিছুই বলা যায়না স্থার !— বদরুদিন পরম তৃথিতে ^{হাই} তুপলেন একটা।

জাকুঞ্চিত করে লক্ষ্য করতে লাগুলেন তারণ। এই
শৃদী প্রাণীগুলো সম্পর্কে তিনি কিঞ্চিৎ হিধাগ্রস্ত — এমন কি
প্রবল পরাক্রান্ত দারোগা হয়েও একের সম্পর্কে তাঁর একটা
ভয়াবহ বিভীবিকা। কারণ আছে। ছেলেবেলার একবার
একটা এঁড়ে গোক ভাঁকে ওঁতিয়ে নর্দামার ফেলে দিয়েছিল
সেই থেকে ভিনি জীবগুলোকে আদে পছন্দ করেন না।

- —তা হলে দাঁড়ান, পেছনের ওদের আসতে দিন
- ওরা কা ভাববে স্থার ? মোষের হুরে এগোছে । পারছেন না আপনি ?—একটা চিষ্টি কাটলেন বধক্ষিন 🌬
- তা বটে।— দারোগা উত্তেজনা বোধ করলেন।
 কাপুরুষতার এই রকম অপবাদ সহ্ করা অসম্ভব। কোমর
 থেকে খুলে নিলেন রিভলভার।
 - —ওকি স্থার, রিভনভার আবার কেন ?
 - —তেড়ে এলে গুলি করব।
- আপনি যে হিন্দু স্থার—বদক্ষদিন আবার হাসলেন :
 ধর্মে বাধবে যে।
- —না, বাধবে না। গোরু মারলে পাপ হয়, কিছ মোর মারলে কা হয়, তা শাস্ত্রে লেখা নেই—সন্তর্পণে অগ্রসরী হলেন তারণ।

কিছ মোষগুলো লক্ষ্যই করলনা তাঁদের। বেন লক্ষ্য করবার যোগ্য বলেই মনে করলনা। প্রদন্ধ পরিত্**থিতে** মাটি থেকে কী একরাশ চিবিয়ে চলল তারা।

— বাক—বিপদের সীমানা পার হয়ে একটা **অভির** নিখাস ফেললেন দারোগা: একটা সমস্তা মিটল। কিছ যা বলছিলাম। সামনের ওই আটচালাটি কার বলুন তো?

वहक्रिक खवाव हिलान, यमूना खाशीद्वत ।

- যম্না আহীর !— দারোগা কপাল কোঁচকালেন ঃ যেন চেনা-চেনা ঠেকছে নামটা।
 - —হাঁ ভার। দাগীর থাতায় নাম আছে।
 - —হ', বুঝেছি। কি**ত কী জাতের** ?
- —ভেঞ্জারাস্। পাঁচ সাতটা হাসামার জড়িরেছে এ পর্যন্ত। একবার একটা খুনের দায়েও পড়েছিল—কিন্ত জালে পড়েনি, ছিটকে বেরিয়ে গেছে।
- —এবার আর বেরোবেনা, গলা টিপে ধরব—ভরাবহ একটা মুখ করলেন তারণ তলাপাত্র: জটাধর মার্ভারের ব্যাপারে ওর হাত থাকতে পারে, কী বলেন ?
- কিছুই অসম্ভব নয় ভার। চেহারা দেখলেই ব্যতে পারবেন।

তারণ আবার থামলেন। চিন্তিত মুখে বললেন, লোরান বৃঝি খুব ?

—विवारे।—अक्टमरण वनककित्नव बृर्थ**७ हिन्दा**व

ছাপ পড়েছে : আকারে প্রকারে ওই মোবগুলোর মতোই হবে। আর মেজাজও প্রায় ওই রক্ষ।

- —তা হলে দাঁড়ান। ওদের আসতে দিন। বে রুক্ব লোক বললেন, হঠাৎ যদি ঝাঁপিয়ে টাঁপিয়ে পড়ে, গোলমাল হতে পারে একটা। কী বলেন ?
- —নিশ্চর—এবার বদক্ষদিনও সমর্থন জানালেন।
 বাগানের মোষ সম্পর্কে তারণের মতো তাঁর অহেতৃক
 লারবিক তুর্বলতা নেই বটে, কিন্তু ষমুনা সম্পর্কে কোনো
 বিশাস নেই তাঁরও। বিশেষ করে কিছুদিন থেকে
 ডিস্পেপ্সিয়ায় ভ্গছেন—একটু শান্তিপূর্ব ভাবেই
 ঝামেলা মিটিয়ে ফেলাই পছন্দ করেন তিনি। বন্দুক
 একটা সঙ্গে এনেছেন বটে, কিন্তু সেটা ব্যবহার করতে না
 ইলেই জান্তরিক স্থবী হবেন।

তারণ একটা সিগারেট ধরালেন।

- —বুঝলেন বদক্ষদিন মিঞা, এরিয়াটা এমনিতে মন্দ নয়। কিছু এইদব লোকের জন্মেই বা কিছু গোলমাল। বদক্ষদিন 'দাদী'র একটা বয়েৎ আওডালেন।
- —সে তো ঠিক কথা ভার। কিন্তু ব্যাপার কী, জানেন? গোটা কয়েক কাটা না থাকলে কি আর গোলাপ তোলা বার?

গোলাপ না হোক, গোলগাল পাকা ফল তো বটেই।
কিন্তু কাঁটা বড়ড বেশি। মাঝে মাঝে তারণ তলাপাত্রেরও
কিতিক্রিয় হয়ে যেতে ইচ্ছে করে। আজ পনেরো বছর
দারোগাগিরি করে অনেক পোড় থেয়েছেন—কিন্তু
বুকের ধুক্পুকুনি থানেনি।

্**চৌকিদা**র আর কনেস্টবলের দলটা এদে পড়ল। **ভারণ এদিক** ওদিক তাকালেন।

- —লোকজন কাউকে তো দেখছি না। সব গেল কোৰায় ?
- ্ কাৰে-কৰ্মে গৈছে হয়তো। মোৰ চরাতেও বেতে পারে।
- হঁ! ডাকো তো দেখি কেউ —

 চৌকিদারেরা মুখিয়েই ছিল। ভিন চারজন এক

 সংক টেচিয়ে উঠলঃ যমুনা—বমুনা তে—

যমুনা এলনা—দোর গোড়ায় দেখা দিলে একটি মেরে। ঝুম্রি। রূপের সঙ্গে কঠিন একটা নিচুরতা মেশানো। রূপোর কাঁকন-পরা শক্ত বাছ। জ্বালাধরা চোখ। নাগিনা।

দোরগোড়ার পুলিদ দেখে একটা ভরের চমক খেলে গেল তার মুখের ওপর দিয়ে।

দারোগা মেয়েটার দিকে তাকালেন—কিন্তু চোথের ওপর চোথ রেথেই নামিয়ে নিলেন মাটিতে। দৃষ্টিটা যেন সহ্য করা যাচ্ছে না। অতসী কাচ। প্রতিফলিত— কেন্দ্রিত সূর্যের আলো।

—কে মেরেটা ?—মুখ ঘ্রিয়ে বদক্ষদিনকে প্রশ্ন করলেন তারণ।

জবাব দিলে বামাচরণ। অভিজ্ঞ গন্তীর গলায় বলনে, ওর মেয়ে — ঝুম্রি। বছর খানেক আগে একটা মারা-মারির ব্যাপারে একেও থানায় আনতে হয়েছিল স্থার। রেকর্ড আছে।

—হ^{*}। বাবের বাচ্চা বাব—নি**ল্পের অজ্ঞা**তেই যেন স্বীকারোক্তি করলেন দারোগা।

নির্ণিমের জ্বলম্ভ চোথে তাকিয়ে আছে মেয়েটা—কেমন অম্বন্তি লাগতে লাগল। দারোগার হয়ে বদক্ষদিনই প্রশ্ন করনেন—তোর বাপ কোথায় রে ?

- —শো গেয়া!
- —শো গেয়া! বামাচরণ ঝাঁকিয়ে উঠল: আসরা এতগুলো লোক এই ঠাটা-পড়া রোদুরে দাঁড়িয়ে ঠায় পুড়ছি আর তিনি শো গেয়া। ডাক, ডাক—
- —ব্যাটা খ্যান্ লাটসায়েব হছে !—একজন চৌকিনার ফোড়ন কাটল। এই মহলায় রাতে তার চৌকি দিতে হয় না—তা ছাড়া সঙ্গে সশস্ত্র বাহিনীও আছে। সেই ভরসায় আরো জোরের সঙ্গে সে তার বক্তব্য পেশ করল: ডাকি উঠাও জলদি!

মেয়েটা ঘরের ভেতর চলে গেল।

প্রথর ধারালো চেহারা। রূপের সঙ্গে নিচুর কঠিনতা একটা। চোথ ছটো অস্তুত জ্বলস্তা। দারোগা অস্তমনস্ক হয়ে গোলেন মুহুর্তের জ্বান্তা। ইস্পাত। নাগিনী।

শশব্যন্থে ধমুনা আহার প্রবেশ করল।

— দারোগাবার, জমাদারবার ! গোড় লাগি। তা বোদে কাঁহে দাড়াইয়ে আছেন ? আইরে বৈঠিনে— বারান্দায় রাথা শাটিয়া আর চৌপাই ফুলার দি^{কে} দৃষ্টি আকর্ষণ করে সে আহ্বান জানাল দলটাকে। সাইকেল নামিয়ে রেখে দারোগা সাকোপান্ধ নিয়ে বারান্দায় গিয়ে উঠলেন। তাঁদের দেহের ভারে ক্যাচ্ক্রে একটা আর্তনাদ জাগল খাটিয়ায়।

কিন্তু উদ্দেশ্য আতিথ্য নয়, কর্তব্য । যমুনার বিশাল দেহটার দিকে ভালো করে তাকিয়ে নিয়ে একবার রিভলভারের বাঁটটা স্পর্শ করলেন দারোগা—যেন আত্ম-বিশাস সঞ্চয় করে নিলেন। তারপর বার করলেন পকেট থেকে তাঁর নোটবই আর কপিয়িং পেন্সিলটা।

- —ভোষার নাম ?
- —যমুনা আহীর হজুর।
- -- (পশা ?
- —হামরা আহীর হজুর। দহি, ক্ষীর, ঘী তৈয়ার করি, বেচি।
- —আর কিছু করো ?—দারোগা নোট বই থেকে
 মুথ তুললেন। সন্তর্পণে এগোতে হবে এইবার, আতে
 আত্তে চ্কতে হবে কাজের কথায়। টোকা দিয়ে দেখা
 দরকার।
- আবার কী কর্ব ছজুর ? মহিষ-টহিষ চরাই—সরল উত্তর দিলে যমুনা আহীর।
- —কিছু করো না—না ?—রিভলভারের বাঁটের ওপর আলগোছে বাঁ হাতটা ফেলে রেথে দারোগা বললেন, এই মারামারি, খুন জখম ?

স্বাধহাত জিভ কেটে যমুনা বললে, না।

- —না? থানার থাতা কিন্ত অক্স রকম বলে।—
 দারোগা আর একটা দিগারেট ধরালেন: তা ছাড়া
 চেহারাও তো তেমন স্থবিধে নয় বাবু। ভালোমান্থ বলে
 তো মনে হয় না।
- —দেখছেন না, ব্যাটার চোথ কী রক্ষ লাল। বদক্দিন দারোগাকে আর একটু আলোকদানের প্রয়াস করলেন।
- চোধের আর দোষ কী হকুর ?— যমুনা আপ্যায়নের হাসি হাসল: হামি থোজা থোজা গাঁকা পী।
- —গাঁকা পী?—নারোগা ত্রকুটি করলেন: সে গুণটাও আছে তা হলে। আর নাম?
 - मिन्दिन्त त्थाजा त्थाजा श्री।

- —কোনোটাই বাকী নেই স্থার। "একেবারে সর্বস্থাবিত—বদক্ষদিন আবার সংশোধনী স্কুড়ে দিলেন।
 দারোগা অত্যন্ত বিশ্লেষণী দৃষ্টিতে পর্যবেক্ষণ করতে লাগলেন
 বস্থাকে। না—সন্দেহ নেই। এ লোকটা জ্বটাধরক্ষে
 পুন বদি নাও করে থাকে, খুন করার যোগ্যতা রাধে
 নিশ্লেষ্ট।
- —জটাধর সিংকে চিনতে তুমি ?

 একটা চকিত সতর্কতার আভা থেলে গেল যমুনার
 মুখের ওপর। আংশু ঢোঁক গিলল একবার।

—কে জটাধর সিং ?

বদক্ষিন খি চিয়ে উঠলেন: তাকামি হচ্ছে—না?
জটাধরকে চেনো না? কুমার ভৈরবনারায়ণের বরকলাজ?

- —কুমার সাহেবের বরকলাজ তো ঢের আছে ছজুর। কে জটাধর সিং ?
- —আহা, ভাঙ্গা মাছটা উল্টে থেতে জানো না ?— তারণ ভেংচি কাটলেন: একেবারে কেষ্টর জীব! যে লোকটা বিলের মধ্যে পুন হয়েছে, জানো তাকে ?
 - --না।
- এখন তো জানবেই না। দারোগা জুর হাসি হাসলেন, আর একবার ছুঁয়ে নিলেন রিজ্ঞসভারটা, ভালো করে দেখে নিলেন নিজের দলটাকে: আমিও তারণ তলাপাত্র, জানিয়ে ছাড়ব। যাক—তোমার বর থানাজ্যাস করব।
 - —কঙ্গন হুজুর।
- চুকুন বদক্দিন সাহেব—ভালো করে থোঁজ থাঁজ করুন।

বদক্ষদিন বিত্রত বোধ করলেন। এ দাজোগার অক্সায়। নিজে স্বার্থপরের মতো নিরাপদে বসে থেকে তাঁকে ঠেলে দিছেন বাবের গর্তের ভেতর! বিশাস নেই — এ লোকগুলোকে বিন্দুমাত্র বিশাস নেই। হাজের নাগালে পেলে যে কোনো সময় ঘাড়ের গুপর একথানা দা বসিয়ে দিতে পারে।

- —আপনিও চলুন না স্তার—
- আপনি গেলেই যথেষ্ট হবে— নিপারেটটার টান দিয়ে নিশ্চিত্তভাবে বললেন দাবোগা।

वषक्षिन विशव श्रूर्थ छाकारान अपिक छिपक ।

—বামাচরণ এসো, চৌবে, তুষ্ ভি আও।

কিছ সার্চ করে বিশেষ কিছু পাওয়া গেল না।
মিলল শুধু লোহার তার দিয়ে গাঁটে গাঁটে জড়ানো ত্থানা
অতিকায় লাঠি।

দারোগা বললেন, লাঠি ছটো নিষে চলুন! রক্ত টক্ত ধুরে ফেলেছে হয়তো। কিন্তু কেমিক্যাল্ আনালিসিস্ করলে কিছু না কিছু ট্রেস্ পাওয়া যাবেই।

- —আর লোকটা ?ছেড়ে যাবেন ?
- —পাগল!—দারোগা এবার থাপ থেকে রিভলভারটা বের করলেন, যমুনা, ভোমাকে গ্রেপ্তার করা গেল।
- —এেপ্তার !— যমুনা কিন্তু ভয় পেল না। অল একটু হাসল: কেন হকুর ?
- ফটাধর সিংয়ের খুনের দায়ে। চৌবে, পাকড়ো ইস্কো।

একটা সম্ভন্ত প্রস্তুতি পড়ে গেল। কিছু বেন আসম হয়ে আসছে। কোনো তুর্ঘটনা, কোনো তুর্যোগ। একুণি ভয়ংকর কিছু একটা হয়ে যাবে।

কিন্ত কিছুই হল না। যমুনা আবার হাসল। নিক্ষন্তরে হাভ ছুটো বাড়িয়ে দিলে চৌবের দিকে।

হাতকড়া পরালেন বদক্ষদিন। একটা অন্তির নিশাস কেলে উঠে দাঁড়ালেন। মনে হল, বেন বুকের ওপর থেকে একডাল পাথর নেমে গেছে—কেটে গেছে একটা ভ্যানক দাঁড়া। এত সহজে এমন প্রকাণ্ড মাম্যটাকে গ্রেপ্তার করা যাবে—এ বেন কল্পনাণ্ড ছিল না।

দারোগা বললেন, চলুন বদক্ষদিন মিঞা। এবার আর ছু চারটাকে একটু বাজিয়ে দেখা যাক। এ রকম সাসপেক্টেড আর কে কে আছে বলুন ভো?

প্রজ্ঞাবানের গন্তীর গণায় বামাচরণ বললে, ত্থীরাম আহীর, চুপ্তি আহীর, গণ্শা আহীর—

. - जन्न, तिथा शंक এक এक ।

দারোগা উঠে দাঁড়ালেন। যমুনাকে নিয়ে নেমে এলেন দাওয়ার বাইরে।

আর ঠিক সেই মুহুর্জেই দোরগোড়ায় এসে দাঁড়ালো সুমরি। রূপের সংখ নিষ্ঠুরতা। চন্দ্রবোড়া সাপের মতো সৌন্দর্যের সঙ্গে বিষাক্ততা; শানানো ইস্পাত্তের মডো দীপ্তির সঙ্গে ঘাতকের ইন্দিত।

মেয়ের দিকে তাকিয়ে যমুনা একটু হাসল।

—হাজতে চললাম বেটি। কবে আসব ঠিক নেই। ভৈঁসাগুলোকে দেখিস।

ঝুম্বি কথা বলল না। গুধু অতদী কাচের মজো চোথের অগ্নিদৃষ্টি ছড়িয়ে তাকিয়ে রইল থানিকক্ষণ। তারপর—

তারপর দারোগা বেই কথেক পা এগিয়েছেন, অমনি তীত্র তীক্ষ প্রচণ্ড গ্লায় একটা শিসের আঙিরাজ করল দে। রোদে পোড়া মাঠের ওপর দিরে সেটা সাইরেনের মতো দুর দ্রাস্তে ভেদে গেল।

আর সভয়ে দারোগা দেখলেন এক মৃত্তুর্তে মাথা তুলেছে শাস্ত নিরীই মহিষের পাল। তাদের চোথগুলোতে আদিম অরণ্যের অমার্জিত বক্ত হিংসা। লেজ আকাশে তুলে ক্রেক নিষাস ফেলতে ফেলতে সাত আটটা ছুটে আসছে তাঁদের দিকে।

গুলি করবার স্থাবাগ পেলেন না কেউ—হয়তো সাহসপ্ত হল না। ছই লাফে বদকদিন নিমগাছটার উঠে পড়লেন—তাঁর তৎপরতা দেখলৈ বানরও লজ্জা পেত। চৌকিদারদের একজন সিংয়ের গুতোর ছিটকে পড়ল—বাকী সব যে যেদিকে পারে, উর্ধ্বশাসে ছুটতে শুরু করল। তারণপ্ত হাতের সাইকেলটা ছুঁড়ে ফেলে গোটা ক্রেক লাফ মারলেন, তারপর আবিষ্কার করলেন, একটা পাঁকে তরা হুর্গন্ধ ডোবার মাঝপানে গলা পর্যন্ত তলিয়ে আছেন তিনি।

আর সেই অবস্থার, বিক্ষারিত চোধ মেলে তারণ দেখতে পেলেন—বছ দূরে বিশ্লাঘাসের বন ভেঙে ভীত্রগানী তীরের মতো একটা লোক ছুটে পালাচ্ছে। দেখতে দেখতে দৃষ্টির বাইরে সে নিঃশেষে মিলিয়ে গেল।

দে ধমুনা আহীর!

কিন্ত ভোঁস ভোঁস করে চলন্ত পাহাড়ের মতো এটা কি এগিয়ে আসছে এদিকে? মোব? চক্ষের পলকে পঢ়া ভোবার ভেতরে ডুব মারলেন ভারণ ভলাপাত্র।

(ক্রেমশঃ)



পশ্চিম বাংলায় আখের চার্য

শ্রীঅমূল্যরতন বন্দ্যোপাধ্যায় এম-এম্-সি, ডিপ-এগ্রি (ক্যাণ্টাব)

মাট চাবের ক্ষমির শতকরা মাত্র • ৫৮ ভাগে ও বে পরিমাণ চিমি টুংপর হর তাহাতে বছরের ৪ মাসও চলে না। এই তুলনার বিহারে हेशांत्र हांव ब्यांत्रं ३२ लक्क विषा ও উত্তর बारमान ६६ लक्क विषा এবং ইহা ভাছাদের মোট চাবের অমির শতকরা ব্যাক্রমে ২০১৮ ভাৰ ও ৪৮৬ ভাব। পাঞ্চাবের অবস্থা মোটাম্ট বিহারের মত।

আমাদের আখ-চাব কম হওরার দরণ অনেকের ভূল ধারণা আছে বে, পশ্চিম বাংলার আবহাওরা আপু চাবের উপযুক্ত নর। वञ्चठः এथानकात्र आवशास्त्रा आथ চাবের পক্ষে বিহার ও উত্তর



পশ্চিম বাংলার আধের চাব

यात्रानंत्र जूनमात्र अत्नक कान । अवात्म वृष्टि वृत्र रानी ७ अहेसक জনদেচ হাড়াও আথ-চাব করা সভবপর হয়। এখানে আথের জমির শিংশর। ১০ ভাগেও জল-লেচের ব্যবস্থা নাই। এই তুলমার জল ^{কে.১৫} ক্বিধাবৃক্ত আধের জমির পরিমাণ উত্তর প্রদেশে শতকরা ৬০.৭০ ভাগ, বিহারে ৩০-৪০ ভাগ, পাঞ্জাবে প্রার ৮০ ভাগ, মাডাজে भेर काम अवर महीमूब, त्वाचार छ श्वतावारम कात э०->०० ভাগ: বিতীয়তঃ, পাঞ্জাৰ বা উত্তর অংহেশের কোন কোন আরগার

শাহিম বাংলার আব চাব হয় প্রার ২ লক বিহা অমিতে অর্থাৎ ভুষারপাত ও অভিনিক্ত শীতে আবের দেরণ কতি হয়, গাঁকিই বাংলার সে আশহ। নাই। এইসব কারণে এখানকার আথের বিধাঞ্জি क्लन (वर्षात ১৫٠-२٠٠ प्रन, मिर्शात गूर्व-शाक्षात्व गढ़ क्लन स्वितिम्हि ১٠٠ मन अवः विहात ७ উত্তরপ্রদেশে ১٠٠-১৫**० मन**। এখানকার আবহাওরার আথের মধ্যে চিনির অতুপাতও বেশী হয়। विश्व ७ উত্তর आग्राम हिनित्र करण সাধারণকঃ আপের ওলনের শতকরা ১০ ভাগের কম চিনি পাওয়া যায়; সেই ভুলনায় পশ্চিম বাংলার ১০৮ ভাগ পাওয়া যায়। কাজেই পশ্চিম বাংলার আব্দের क्षान ७ । ७१ पृष्टे-रे छात हत, अवह अथारन विरात वा छेखत প্রদেশের মত আথ চাবের উন্নতির চেষ্টা ততটা হয় নাই।



काहिः वाहाहे

এককালে বাংলাদেশে ব্ৰেই আখ-চাব ছিল। অনেকের মতে বাংলার পুরাতন নাম গৌড শক্ষটি 'গুড' ও তাহার রাজধানী পৌও-वर्तन नक्षा अधानकात 'शृति' चारधत माम स्ट्रेंट छेड छ। हिमि-निक সংরক্ষিত হওরার পূর্বে ভারতবর্ব বর্বন চিনির বস্তু ব্রবীপের উপর নির্ভর করিত, তথমও এখান হইতে বিমেশে চিনি রপ্তানী হইত। हेशद शत मध्वकरणंत स्विशंद वश्य अम्पत् किमित कन शांशिक क्रेंटिक লাগিল তখন হইতে অবস্থার পরিবর্তন বটে। বিহার বা বৃক্তঞাদেশে द्वितर्गत्वत्र चूर कृतिया चाकाम ७ त्रशात्व काथ अक्षे विस्पर मास्क्रमक অর্থকরী ক্সল হওয়ার সেখানে চিমির কর্ল ছাপ্রের বভটা ছবিধা स्टेबाट्स वाश्नास्त्रम ७७के अविश सत्र मारे । वाश्नात नाटेस अक এक्ष भना गास्त्रत वाभिक हारवत स्विता शाकात अधानकात हारीता আধ চাবের প্রতি অনেকটা উদাসীন ছিল। ফলে উত্তর প্রদেশে **ठिनित्र करणत मःशा यिशान १० वित्र वित्र १० विद्रास्त्र १० विद्रा** ৰেশী' সেধানে পশ্চিম বাংলায় মাত্ৰ ২টি ও তাহার মধ্যে জাবার **এक** है ज्ञानक मिन इट्टेंड क्या ।

এই अवदात्र এथानकात्र आवशाख्या आथ हात्वत्र धूव अयुकृत পাকা সম্বেও এথানে চিনি ও গুড়ের ঘাটতি রহিরা গিরাছে। বর্তমানে প্রধান প্রধান খাছ-শত্ত, পাট ইত্যাদির অভাব থাকায়, আবের চাব বাড়ানোর উপার নাই। বন্তত: এই সব কারণে পত করেক বছরে আখ-চাব প্রায় ১০ হাজার বিঘা ক্ষিয়া গিরাছে। এই অবস্থার অন্ততঃ আথ-চাব প্রণালীর উন্নতি বিধান করিয়া বিঘাপ্রতি কলন বাড়ানোর চেষ্টা করা ধাইতে পারে। এথানে অফুকুল আবহাওয়ার দরণ যদিও গড় কলন বিহার বা উত্তর প্রদেশের তুলনায়



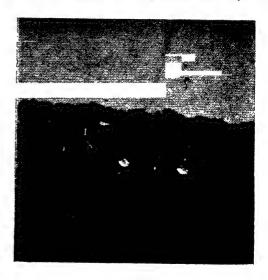
কোৰ্টিং লাগানো

किकिए तनी, शृथिरीत श्रधान श्रधान आध-छरशामनकाती (मानत जूनमात्र ज्यान क्म। यवदीश वा शंख्याहे दीश जात्वत्र विवाद्यिक नेष ক্লন আর ৫০০ নণ। পের, পোটা, রিকোও অস্থান্ত আর দেলেই আবের ফলন আমাদের তুলনার বেশী। ভারতবর্বের মধ্যেও বোখাই, মহীশুর, হারদ্রাবাদ প্রভৃতি অঞ্লের অনেক স্থানেই বিঘাপ্রতি ৪০০-৪৫০ মণ আৰু পাওয়া যার। পশ্চিম বাংলার সরকারী কুৰি-ক্ষেত্রে নাধারণতঃ বিঘাঞ্জতি ৩০০-৩৫০ মণ আৰু কলে বেধানে चार्माएव गंजु क्लम याज ১৫০-२०० मन । हिडी कवित्त ए क्लम वाजान বার, ইহাই ভাহার নিদর্শন। ফলদ বৃদ্ধির উপায় সম্বন্ধে এইবার আলোচনা করিব।

क्लम वृचित्र सम् काल-साकित वील-वावशांत कता सातीसन्।

ক্রমাগতঃ হইতেছে। এই সব উন্নত জাতের ক্লল বেম্বা, বলে চিনির অমুপতি বেশী, রোগঞাবণতা কম ও শক্ত হওরার বরুণ শিয়াল প্রভৃতি বন্ধ করের উপস্তবে ও বড়-বাতাসে ক্ষতিপ্রস্থ হয় না। ১৯৪০ সালে দেখা বায় যে, তাহার ১০ বৎসর পূর্বের তুলনার এদেশে গড় কলন শতকরা প্রায় ২০ ভাগ বাডিয়া গিয়াছে। উন্নত জাতের वावरात्रहे देशत मर्वधान कात्र। এইअङ पिन पिन छन्न इहेत्उ উন্নততর যে সৰ জাত উদ্ভাবিত হইতেছে তাহার চাব বাড়ানর প্রতি দৃষ্টি রাখা দরকার। বর্তমানে কোয়েখাটোর ৪২১, ৫২৭, ৪১৯,৩১৩ প্রভৃতি জাতগুলি পশ্চিমবাংলার পক্ষে উপযোগী।

সার প্রয়োগে আধের ফলন অস্বাভাবিকরপে বৃদ্ধি পার। পরীকা ৰারা জানা যায়, আথের পকে সর্বাপেকা নাইটোজেন ঘটিত সারের প্রয়োজন বেশী। প্রতি পাউও নাইট্রোজেন প্রয়োগে সার অনুযায়ী বিখা প্রতি ১মণ হইতে ৩মণ পর্যন্ত আথের কলন বাডে। বিঘা



मात्र बद्यांश

প্রতি মোটাবৃটি ৪০ পাঃ নাইট্রোজেন দিলে কসল বেশ ভাল হয়। वरे कछ विया शिक १०-१० मन भावत वा करकाहे, २मन धरेल उ ১ৰণ গ্রামোনিরৰ **সালকেট বরকার। গোবর লা বিরা** সবুজ পার মেওরাই ভাল। ইহা ব্যবহারেই বিশা প্রতি প্রার e-সণ স্থাধ (वर्षे स्त्न।

ৰাটিতে কন্কেটের অভাব হইলে, বিখা প্রভি ১মণ ছাড়ের গুঁড়া দিতে হর। লাল মাটিতে প্রতি বিযার ১মণ চুণ দেওরা সরবার। পটাৰ সার দেওরার আরোজন হয় না : কারণ বাটতে সাধারণত: यांचा बाटक छाडाई वरबडे।

' নার প্ররোধের সমরেরও বিশেব শুরুত আছে। গবেবণার ফ্^{রে} साना यात्र, छत्रा क्लाहेबात श्वान आद्य त्यावत, क्यात्माडे ଓ हार्ड्न গাবেৰণার কলে অসংখ্য উন্নত জাতের আৰু উভাবিত ক্ষমাহে ও স্থাড়া, ভগা ৰসাইবার সকলে এবং বিলাম (tillers) বাহিত্র ইবার

ফল পাওলা বার।

শেচ

ফলন বৃ**দ্ধির জন্ম সেচের ব্যবস্থা** বিশেব দরকার। উপবৃক্ত সেচ ছাড়া সার আলোপে সম্পূর্ণ কল পাওরা বার না। বর্গার আপে জলের অভাবে আপের চারার বাড় ব্যাহত হইলে ক্রনও কম হর।

চাৰ পদ্ধতি

চাব-পদ্ধতির ক্রটির ব্যক্ত ফলন ক্ম হয়। ডগা বসাইবার সময় ও প্রণালী, ডগার ভণাভণ, ক্সলের অস্তান্ত পরিচর্যা প্রভৃতির উপর ক্সন **थ्व**३ निर्छद्र करत्र ।

বে মাটিভে শীভকালে বেশ রস থাকে বা বেখানে জল-সেচের হবিধা আছে সেধানে মার্থ ফালগুনে ডগা বদান উচিত। পরীক্ষার জানা যার, কাল্ডনের পরে ডগা বসাইতে যত দেরী হয়, কলনও তত কম হয়। চৈত্রের শেবের দিকে প্রতিদিনের বিলম্বে প্রার ১০মণ হারে ফলন কমিতে পাকে।

ডগার 'চোৰ' সভেন্ন না হইলে প্রথম হইতেই চারা দুর্বল হইয়া পড়েও অক্সান্ত অবস্থা অমুকুল থাকা সংহও ফলন যথেষ্ট ক্ৰ হয়।

পরীকার দেখা বার যে, অগভীর নালীতে আৰ লাগাইলে বা वार्थित माति धन रहेरन विज्ञान कम रूप ७ देशांत अन्न कमन्छ যথেষ্ট কমিরা বার।

গাঁইট হওরা আরম্ভ করিলেই চারার গোডার মাটি দেওরা দরকার। তাংতে বিরাম ছাড়িবার স্থবিধা হর। পরীক্ষার জানা বার যে, ^{এই} সময় সার দিলে বিয়ান খুব শীভ্র বাহির হয়। বিয়ান অনেক দিন ধরিরা বাহির হইতে থাকিলে শুচেছর এক একটি আথ এক এক সময়ে পরিণত (matured) হর।

আখের পাভা ছাড়াইরা পরিকার রাধা ও পাছ বড় হইলে তাহার ^{(হাট} ছোট বিয়াৰ কাটিরা কেলা দরকার। পাছ যাহাতে মাটিতে প্রিয়া না বার সেদিকে লক্ষ্য রাখা দরকার। কারণ গাছ মাটিতে ^{প্রিয়া} শাখা **প্রশাখা বাহির হটলে রসের মিট্রতা ক্**মিরা যার।

धार नमत्रमञ्ज कांनात्र छेलात अड़ वा हिनित्र कमन ও ७१ हुईई ^{নির্নির} করে। **অপরিণ**ত বা অধিক পরিণত আধে চিনির ভাগ क्र बादि।

^{মৃড়ি} আখের (Ratoon) চাৰ ক্রিভে হইলে ভালরূপে সার ^{দে হুয়া} ও অক্তাভ পরিচর্বার ব্যবহা করিতে হর। তাহাতে ইহার

কালে এ্যামোলিয়াৰ সালকেট ও ধইল প্ররোগ করিলে সর্বাপেকা ভাল কলন পূর্ব-কললের তুলনার কম হর না। ভবে ১ বংসরের বেশী বৃদ্ধি আধ না রাখিরা শস্ত-পর্যার ('Rotation) করা ভাল।

রোগ ও কীট শত্রু

রোগ ও কীট শক্তর আক্রমণে সচরাচর শতকরা অভত ১০ ভাগ কলন কমিরা যার। ধনা রোগেই (Red-rot) সর্বাপেকা বেশী ক্ষতি করে। ইহাতে আথের ভিতর লাল হইরা যার। ইহা দমনের জন্ম উরত জাতের বাবহার, বাছাই-ডগা লাগান, কেতের জল নিকাশের ব্যবস্থা, কেত পরিছার রাখা ও শক্ত পর্যার করা আবশুক।

মাজরা পোকার (Stem-borer) আক্রমণেও ভরানক কভি হর ! এই পোকার শত্রু আর এক পোকা আছে। অমেক জারগার তাহাবের সংখ্যা বৃদ্ধি করিয়া ইহা দমনের ব্যবস্থা করা হইয়াছে। ইহা দমনের অভ



আধ কাটা

উন্নত জাতের ব্যবহার, আক্রমণের আর্ছেই পোকা ধ্বংস করা ও ক্ষেত্ত পরিছার রাখা দরকার।

ডগা ছিত্ৰকারীও এক রকম পোকা আছে। তবে তাহাতে ক্ষতির পরিমাণ বেশী নর। প্রথম- হইতেই ব্যবস্থা করিলে, ইহার বিভার ছইতে পারে না।

উটি পোকার উপত্রৰ কমাইবার ক্ষত্ত নালীর মধ্যে অধিক পরিমাণে निम वा बिष्टिय बहेन प्रश्वता, २८ वर्ती कान छ्या किनाहेन सरन (२ %) किमारेबा बाबा, एनाब काठा धारक मारवाद धानकाछना वा কেরোসিন লাগান, সেচের জলে আলকাতরা মিশান ইভাাদি ব্যবস্থা করা হাইতে পারে। এতি বিহার ১২—১৩ সের হারে গ্যামেক্সিম ডপা वमाहेबात जात्म मानीत मत्या विठाहेता वितन उपकार शास्त्रा वात ।



ভারতীয় শিশ্পসমূহে গবেষণার স্থান

শ্রীমোহন বিশ্বাস এম-এস-সি

মার্কিণযুক্তরাষ্ট্র একদিন কৃষিপ্রধান, অন্তরত জাতিসমূহের
মধ্যে পরিগণিত ছিল। ক্রমশ: শিরোয়য়নে মন দিয়ে,
বিশেষ করে সমগ্র দেশের শিরক্তেরে গবেষণার আবহাওয়া
স্পষ্টি করে এই মহাজাতি স্বর্রকালের মধ্যেই শিরজগতে
বিরাট প্রতিষ্ঠা লাভ করতে পারল এবং তার জাতীর
সম্পদ্ধ ও সমৃদ্ধ বহুগুণ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হল। ১৮৮০ সালের পূর্বের
মার্কিণে শিরসম্বন্ধীর ল্যাবরেটরি বা গবেষণাগার বলে কিছুই
ছিল না। উনবিংশ শতাজীর শেষভাগে বিদ্যুত প্রভৃতি
শিরে নৃতন নৃতন গবেষণা ছারা প্রভৃত উয়তি দেখা
গোল। বেল, এডিসন, টমসন প্রভৃতি মণীবিগণ স্ব স্ব
প্রতিভাবলে দেশীর শিরসমূহে বৃগান্তর আনয়ন করলেন
এবং ঐ সকল আবিদ্ধারের ছারা সমগ্র শিরজগত বেশ
লাভবান হল।

আমেরিকার আদর্শ ভারতীর শিল্পপতিগণের উপর বে প্রভাব বিভার করেছে তার কোন সম্বেহ নেই। তবে একথা বলা অভার হবে না—বে পরিমাণ অর্থ ও উৎসাহ মার্কিণযুক্তরাষ্ট্র শিল্পোমরনে প্রবেগে করেছে

তার একাংশও এখন পর্যান্ত ভারতবর্ষ পার নি। গ্রেট-বুটেনও মার্কিণযুক্তরাষ্ট্রের মত শিল্পবিন্তার গবেষণার উপযোগিতার বিষয় সমাক উপলব্ধি করেছে এবং প্রথম মহাসমরের পর বৃটিশ শিল্পসমূহ প্রভৃত উন্নতিসাধন করেছিল। আমেরিকাও ইংলণ্ডের মত জাপানের শিল্প-বিস্তার বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। তুইটি পৃথিবীব্যাপী মহাসমরের মাঝখানে জাপান যে পরিমাণ শিলোরয়ন করতে সক্ষম হয়েছিল তা সতাই বিশ্বয়কর। ১৯১৭ সালে জাপ সমাটের সৌজতে জাপানিজ ইনষ্টিটিউট অফ এণ্ড কেমিক্যাল রিদার্চ স্থাপিত হয়। ১৯৩৪ সালে ঐ ইনষ্টিটিউটে ৪০০ বিশেষজ্ঞ বিজ্ঞান সম্বীয় গবেষণায় নিযুক্ত ছিলেন। এখান হতে প্রায় ৫০০ পেটেণ্ট স্বত্ব গৃহীত হয়, যার প্রত্যেকটিই বেশ গুরুত্বপূর্ব। মুক্তার চাষ একটি বিশিষ্ট শিল (Stimulated pearl Industry)। भिः मिकिसाछि। এবং টোকিও বিশ্ববিভালয়ের প্রফেসর কিকিচি মিৎসিকুরি প্রভৃতি বিশিষ্ট বৈজ্ঞানিকগণ এই বিশ্ববিখ্যাত শিলের প্রতিষ্ঠা করেন। এই শিল্পের প্রথম পেটেণ্ট স্বত গৃহীত হয় ১৪৯৬ সালে। তথন মৃক্তার আফুতি অর্দ্ধবর্ত্ত্ব অবস্থার ছিল। স্থদীর্ঘ ৪৮ বৎসরব্যাপী গবেষণা ছারা পূর্ণবর্ত্ত ল আকারের মুক্তাসমূহ তৈরী করা সম্ভব হল। এই विवार भिन्न সমুजनता निर्मिष्ठ अपि वृहद कावशाना বিস্তৃত আছে এবং প্রায় ৪০,০০০ একর পরিমিত ছা এই সকল কার্থানা নির্মাণ করতে প্রবোজন হয়েছে। গবেষণা দ্বারা শিল্প কি পরিমাণ বিশ্বতি লাভ করতে পার্বে ইহা তার একটি স্থলর দৃষ্টান্ত।

ভারতীয় শিল্পসমূহের মধ্যে গবেষণার আবহা গ্রা অত্যন্ত বিরল। বিভিন্ন শিল্পপ্রতিষ্ঠানের রিসার্চ ল্যাবরেট বি-সমূহ মাত্র কাঁচামাল ও তৈরীমালের বিশুক্তা পরীকা করেই খালাস। অনেকে এমন কি অভি পুরাতন শিল্প-প্রক্রিয়াগুলিকে দেশবিদেশের গবেষণাশন্ধ নৃতন প্রক্রিয়া-সমূহের দারা কিছুমাত্র উন্নত করতেও অনিজুক। হ্রত একথা ঠিক বে সামান্ত সংস্থার করতে পারণে অনেক ক্ষেত্রে উৎপন্ন মালের গুণ গু দাম বহুলাংশে বেড়ে বাবে। বাজারে একটি গুরধ বা পণ্যন্ত্রব্য বেশ কাটিভি দেখা যায় এবং দেশী কারখানায় প্রস্তুত বলে জনসাধারণের কাছে বেশ আদর পেরেছে। ক্রমে ভাল ভাল বিলাভী মালের আমদানী বেড়ে গেল এবং দামগু সন্তা হল। তথন পূর্বোক্ত গুরধ বা পণ্যের কিঞ্চিৎ পরিবর্ত্তন আবশুক। আধুনিক গবেষণা ছারা ঐ গুরধ বা পণ্যের গুণ বাড়ান দরকার হবে, অবশু দামের দিকে নক্ষর দিয়ে। জনসাধারণ যদি দেখে আগের থেকে কিছুজাল কিনিস পাওয়া বাচ্ছে তথন বিলাভী-প্রীভি কিছু কমতে বাধ্য। কেবল স্থদেশীরানার দোহাই দিলেই চলবে না, দেখতে হবে সমরোপ্রাণী সংস্কারসমূহ মেনে নেওয়া হচ্ছে কিনা। পৃথিবীর সকল জাতির মধ্যে গবেষণার মনোভাব বেড়ে যাছে এবং ভারতবর্ষও ভার সঙ্গে তাল রেখে চলবে।

ভারতীয় শিল্পস্থের বর্তমান অবস্থা বর্ণনা করতে মিঃ মোরারজি দেশাইএর উজিটি উদ্ধৃত করা হল:—

"We in this country have not yet taken to research and experimentation to the required extent. We are only getting here in plant and machinery, what we see elsewhere, and after importing these we only learn to run them. But if we are to develop our industry, production of machinery has to go hand in hand with industrial research. Only then we will be able to work our industries successfully."

অর্থাৎ—"আমাদের দেশে এখনও পর্যান্ত প্রয়োজনীর গলেণা ও পরীক্ষাকার্য্য আরম্ভ হয়নি। মাত্র বিদেশের অন্তক্তরণে শিল্পের আয়তন-বৃদ্ধির জন্ত বিভিন্ন যত্রপাতি অন্তর্নানী করতে সক্ষম হয়েছি এবং ঐসকল যত্তের বার্লার শিক্ষার আমরা বিশেষ মনোবোগী হয়েছি। কিছ বিভিন্ন যথার্থ উন্নতি সাধন করতে হয় ত শিল্পমন্দ্রীয় গলেণার সঙ্গে আয়বিশিক্ষ বয়পাতি নির্মাণেও মন দিটেই হবে। কেবলমাত্র তখনই আমরা সাফল্যের সহিত শিল্পারমূন করতে সক্ষম হয়।"

আমেরিকার ইভিহাসে দেখা যার ঔপনিবেশিক অবহা
কালে এট বুটেন বখন শিল্প বিভারের জম্ম আমেরিকাকে

বর্রপাতি সরবরাহ করতে শৈবিল্য প্রদর্শন করে এবং ইংলণ্ডের আবিকার সমূহ ভার নিকট হতে গোপন করছে ক্ষুক্ত করে তথনই আমেরিকা ব্রুতে পারে যে প্রকৃত্ত শিরোম্বন করতে হলে—গবেষণা ও বন্ধ নির্মাণ উভয়-কার্যেই স্বাবলয় হতে হবে—পরমুধাপেকী হলে চলবে না। তথন থেকে নিজ আবিকার বাড়াবার চেটা হল এবং তাহার শিরক্ষেত্রে ক্রমশ: প্রচুর উন্নতি দেখা দিতে আরম্ভ করল।

বে কোন দেশের শিল্পগবেষণার উন্নতির পরিচন্ত্র পাওয়া বাবে তার গৃহীত পেটেণ্ট সমূহের সংখ্যা গণনা করে। ১৯৩০ হতে ১৯৩৭ পর্বন্ধ বিভিন্ন দেশে প্রতিবংসর গড়ে যে সংখ্যার পেটেণ্ট মঞ্র করা হয়েছিল, নিম্নে তার ভালিকা দেওয়া হল:—

टमम	বাৎসরিক গৃহীত পেটেন্টের সংখ্যা।
আ মেরিকা	8 ৮,৬৯ ৭
ৰা ৰ্মানি	૨•,७ ২১
ক্ৰান্স	₹•,•₹€
গ্রেট বুটেন (১৯০	•-oe) >1,8>9
ইটালি	>•,৬38
বেল জি শ্বাম	9,956
স্থ্ৰারল্যাও (১১৭	9,909
জাপান	8,৮8€
চেকোলোভাকিয়া	3,650
ভারতবর্ষ	484

উক্ত পেটেণ্ট তালিকায় দেখা বায় বে ভারতবর্ষ পৃথিবীর
মধ্যে কেবল যে আমেরিকা আমানি প্রভৃতি উরত রাষ্ট্রসমূহের অপেকা নিয়ে স্থান পেরেছে তা নয়—বেলজিয়াম,
স্ইজারল্যাও এবং চেকোস্নোভাকিয়া প্রভৃতি কৃত্র রাষ্ট্রসমূহ অপেকাপ্ত অনেক কম সংখ্যক পেটেণ্ট গ্রহণ করতে
সক্ষম হয়েছে। স্কুলাং শিল্পকেত্রে পৃথিবীর বিভিন্ন
রাষ্ট্রগণ যে পরিমাণ শ্রীরৃদ্ধি করেছে ভারতবর্ষ বর্তমানে
তাহা আশা করতে পারে না। বখন দেখা মার বে
প্রত্যেক রাষ্ট্রই পেটেণ্ট-প্রথাকে বেশ আদরের চক্ষেই
দেখছে, তখন ভারতবর্ষ তাহা অবহেলা করতে পারে না।
সকল রাষ্ট্রের পক্ষেই শিল্পোম্যনের একই পথ এবং আমীন
রাষ্ট্রি হিসাবে ভারতবর্ষকেও ঐ পথই অহুসরণ করতে

হবে। আবার দেখা যায় রে ভারতবর্বে গৃহীত পেটেন্ট-नम्रह्त मर्था विरम्नी निज्ञनिक्तर्वत्रहे कुछिष दनी। ভুতরাং শিল্প জাতীয়করণ করবার সময় শ্বরণ রাখতে চবে, যেন স্বাদেশের বৈজ্ঞানিক ও শিল্পজিগ্রণ সর্বাধ্যে নিম দেশের পেটেণ্টদমূহ সংগ্রহ করতে পারে। পেটেণ্ট क्षथा मचरक तमीव विरमयकशर्भत चाकात चलाव तमा বায়, অধচ আবার অনেককে বিদেশে পেটেণ্ট সংগ্রহের অন্ত আবেদন করতে দেখা যায়। ইহা কেবল যে আত্ম-প্রচার ছাড়া আর কিছু নয়, তাহা বলা বাহল্য। ইহা জনসাধারণের উপরও থানিকটা নির্ভর করে। বেমন **धकरे यह यमि कान विमाजी कान्यांनी (शर्हक मःश्रह** করে তৈরী করে ভ তাহা খাদেশে প্রস্তুত অপেকা বেশী नमापृष्ठ राव माल्यर ब्लारे। द्यानात्र खनमाधात्रवादक छारे चरित्यंत्र व्याविकात्रमम्हरक मेर्तार्थ পृथिवीत ममस्क वड़ करत जनाउ हार धवर हेशांड यमि निक निक विमांतिका ও ক্ষতির থানিকটা ত্যাগ করতেও হয় ত তাহা বাঞ্নীয়। পেটেণ্ট সম্বন্ধে দেশের বৈজ্ঞানিকগণের দৃষ্টিভঙ্গি সর্বাগ্রে वम्माटक हर्त। ভারতবর্ষের পেটেन্ট मश्रक দেওয়ান বাহাছর কে, রামাপাই যে নিয়োক্ত মন্তব্য করিয়াছেন তাহা বেশ সমরোপবোগী। "The role of the Patent system in India may be compared to the role of a hundred horse-power engine turning out one horse-power work, ninety percent of which is for the benefit of aliens."

অর্থাৎ—"ভারতীর পেটেণ্ট-প্রধার কার্যকারিতার সহিত একটি শতকাশক্তিবিশিষ্ট এঞ্জিনের ভূসনা করা চলে—বে এঞ্জিন নাত্র এক অশ্বশক্তির কাজ করে এবং ভার মধ্যেও আবার শত করা নকাই অংশ বিদেশীর হিতার্থে ব্যবিভ হয়।"

ইহা ভারতীয় বৈজ্ঞানিক এবং বিশেষজ্ঞগণের পক্ষে
কলকের কথা। বর্তমানে কাউলিল অব সারেশ্টিকিক এও ইণ্ডাঞ্টিরাল রিসার্চ পেটেণ্ট প্রধার উপর মনোবোগ দিয়েছে এবং ভারতীর শিল্পতি, বৈজ্ঞানিক ও বিশেষজ্ঞগণ সমবেত-ভাবে চেষ্টা করলে ভারতীয় শিল্পে ভারতীয় পেটেণ্টলম্ছের স্থান ক্রেমেই উন্নত হবে।

সরকার-নির্ম্ভিত এবং বেসরকারী শিল্প প্রতিষ্ঠান-ব্যুক্তে গ্রেবণার আবহাওয়া ইয়ানীং অনেক্টা ব্যুক্ত

গেছে। বর্তমানে অনেক কার্থানার ছতন্ত্র গবেষণা বিভাগ খুলতে দেখা দিয়াছে। অনেকক্ষেত্রে এই লকল গবেষণা-প্রতিষ্ঠান কেন্দ্রীয় গবেষণাগারের সহিত ঘনিষ্ঠ-ভাবে বোগাযোগ বক্ষা করতে দেখা বার। তবে একথা ৰীকাৰ্য্য যে কেন্দ্ৰীয় গবেষণা সমিতিতে যে মুষ্টিমেয় বৈজ্ঞানিক বা বিশেষক উপস্থিত আছেন, তাঁদের পক্ষে সর্বভারতীয় সরকারী এবং বেদরকারী শিলপ্রতিষ্ঠানসমূহের এবং সর্ববিধ বৈজ্ঞানিক গবেষণা নিয়ন্ত্রিত করা অসম্ভব বলে मत्न इद्र। (नरवांक देवकांनिक शदववांत्र मरश कृषि কার্য্যের জন্ত উপযুক্ত অমি সংস্থার, অমির উর্বরতা বৃদ্ধি, গবাদি পশুর লালনপালন, বন বিভাগ, খনিজ, ভেষ্জ প্রভৃতি শিল্পের উন্নতি সাধন, বিদ্বলী-শিল্পের সরঞ্জাম সমূহ, জালানি বিষয়ক গবেষণা প্রভৃতি পরিগণিত হয়। কেন্দ্রীর সমিতির পক্ষে সকল বিষয় দেখা শক্ত, স্থতরাং প্রত্যেকটি শিল্পপ্রতিষ্ঠানে এবং গবেষণাগারে গবেষণা विषयत यांगीनका (मध्या पत्रकात । करव अक्टे विषय नकन श्रीकिशास गरवर्गा कता व्यवाद्यनीय धवः धरे क्ल কেন্দ্রীয় সমিতির সাহায্য দরকার। আর একটি কথা---শিলপ্রতিষ্ঠান এবং শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানসমূহের মধ্যে আমাদের एए चारको कान योगारकार्ग तहे। विका-क्षेणिकान-সমূহে গবেষণারভ বৈজ্ঞানিক বা বিশেষজ্ঞগণ শিল্পপ্রতিষ্ঠান-সমূহের সমপর্যায়ভুক্ত বিশেষজ্ঞগণকেও অনেক খুণার চকে (सर्थ। (कवन (य-शरववर्ग সহযোগিতার অভাব তা নয়—অনেক সময় অতি উচ্চপ্রেণীর, গবেষণা কাৰ্য্য শিল্পপ্ৰিষ্ঠান হতে সম্পন্ন বলে চাপা দেবার চেষ্টা হয়। অবশ্র বর্তমানে এরপ আবহাওয়ার অনেক **डेबडि (क्था** यात्र।

শিরপ্রতিষ্ঠানসমূহের গবেষণাগারে উৎপর দ্রব্যের
মান নির্দারণ, বিভিন্ন শিরপ্রক্রিয়ার শিরকাত দ্রব্যের
উরতি সাধন প্রভৃতি বিষয়ে আশু মনোযোগ দেওয়া
কর্তব্য। এই সকল গবেষণা প্রতিষ্ঠানে কিছু স্বন্ধ্য প্রতিব্যার কোন একটি
ন্তন সমস্তার সমাধান কার্য্যে এখানকার বিজ্ঞানীরাও
ব্রতী হতে পারেন। এরপ দৃষ্টান্ত পাশ্চান্ত্যের শিরপ্রতিষ্ঠান
সমূহে বিরব নর। এই সকল গবেষণা প্রতিষ্ঠানের শ্রীর্তির
কল্প বহুলাংশে সরকারের মুধাপেকী হতে হয় এবং

জাতীর উন্নতির পরিকল্পনার মধ্যে শিল্প সমূহের বিস্তার-সাধন যথন একটি উল্লেখযোগ্য অংশ হিসাবে পরিগণিত ত্তথন স্বজাবতঃই পারে বে জাতীয় সরকার বিনা বিধায় এই সকল গবেষণা-প্রতিষ্ঠানের প্রতি আন্তরিক সহাত্মভৃতি ও महायां शिष्ठा श्राप्तनि कदार्वन । आहे नकन शरवर्यना श्राप्तिकारन स्प्रक देवकानिक ७ भिद्यीशत्वत्र बाटक ममादवन रुत्र व्यवः হুই একজন আন্তর্জাতিক মধ্যাদাসম্পন্ন বিশেষক্ত আমদানী করে বা দেশের মধ্য হতে ছই একজন থাতনামা विकानीतक शतवनात्र अन्त फेक द्वारन निवृक्त करत প্রতিষ্ঠানের স্থনাম বৃদ্ধির চেষ্টা করা একান্ত প্রয়োজনীয়। সরকার এই সকল বিষয়ে শিল্পপ্রিষ্ঠানসমূহকে প্রয়োজনীয় সাহায্য করতে পারেন। অবশ্য শিলপ্রতিষ্ঠানের বিশেষজ্ঞ-গণকে সরকারী চাকুরীভূক্ত বিজ্ঞানীদের সমপ্যায়ভূক্ত উপযুক্ত বেতন, সন্মান ও স্থযোগস্থবিধা मिट्ड हर्द, कांत्रण विकान-माधनांत्र छांत्रां भीवन छेरमर्ग করতে পারেন। তাঁদের মাহুষের মত বাঁচতে শিখে ব্ৰতে হবে। গবেষণার পক্ষপাতিছের নেই এবং শিল্পস্কীয় গবেষণার থারা আত্মনিয়োগ

করেছেন তারা জনহিতকর কাজই যে করছেন তাতে সন্দেহ নেই। স্বর্গায় ডাঃ উপেন্দ্রনাথ ব্রহ্মচারী মহাশয়ের বক্তৃতা থেকে নিয়োক্ত মূল্যবান উক্তিটি বিশেষভাবে উল্লেখবোগ্য:—

"In dealing with research workers there should be no jealousy, no distinction of caste or creed, no differential treatment on the part of those who have the privileged position of recommending sanction of money for research,"

অর্থাৎ—"গবেষণার জন্ত অর্থ মঞ্র করবার বিশেষ ক্ষমতা বাদের আছে তাঁদের দেখতে হবে বেন গবেষণারত বিজ্ঞানীদের সহিত ব্যবহার করবার সমন্ত্র কোনরপ বিদ্যোধনি, জাতিধর্ম বিচার কিংবা বৈষ্ম্যমূলক আচরণ-এর প্রপ্রায় না দেওবা হয়।

ভারতদরকারের শিল্পগেবেষণা বিভাগ বিভিন্ন পরিকল্পনাসমূহ গ্রহণ করেছে স্থাপের বিষয়, কিন্তু সরকারী ও
বেসরকারী শিল্পপ্রিভিটানগুলিকে এবং সেধানকার
বিজ্ঞানীদের এই সব পরিকল্পনার যোগ্য অংশ গ্রহণ
করবার স্থবিধা দেওবাও সরকারের অবশ্য কর্ত্তব্য।

সাহিত্যে রূপক ও প্রতীক

व्यशालक वीव्यम्लाधन मूर्यालाधाय

(পূৰ্বাহুবৃদ্ভি)

এইভাবে যে অহত্তিকে বা সন্তাকে শাহ্ব ভাষার নাগালের মধ্যে পার না, তাকে প্রকাশের অস্তে সাহিত্যে প্রতিকের ব্যবহার বছকাল ধরেই চলে আস্ছে। এই উল্লেখ্যে রূপকের ব্যবহারও বে চলে আস্ছে, সে কথা আগেই বলা হরেছে। কিছু রূপকের হারা বস্তুর ধর্ম ও ভা ইত্যাদিই আমরা উপলব্ধি করতে পারি, বস্তুর হুরূপ যেন নাগালের বাইরে থেকে বার। প্রতীকের হারা কিছু বস্তুর বিশেষ বিশ্বের গুণ নর, ভার সভারই স্পর্ণ বেন আমরা উপলব্ধি করি। রূপক সাহিত্য এক রুক্মের ব্যোজি, প্রতিক সাহিত্য এক রুক্মের ব্যোজি,

"ওধু তোমার বাণী নর গো, হে বন্ধু, হে প্রির, মাঝে মাঝে প্রাণে তোমার পরশ্বানি দিও।"

রূপক আমাদের কাছে নিয়ে আসে অলৌকিকের "বাণী," তার নানা গুণ ও ধর্মের ধবর; প্রতীক আমাদের প্রাণে অলৌকিকের "পরশ" এনে দেয়। এই জন্তে প্রতীক মাহাবের প্রাণে বে সাড়া আন্তে পারে, রূপক তা পারে না। প্রতীকের সাহাবেয় ভগবানের অরূপের পরিচয় দিলে, আমাদের মনে যে রক্ষম স্পান্ধন উৎপন্ন হয়, রূপকের সাহাব্যে পরিচয় দিলে সে রক্ষম স্পান্ধন হয় না।

किन माग्रदात जीवान थावः नाक नाक नाहित्ना खनीरका खनाव ७ वावशंत कमनः काम जान्द्व वानदे बान का

माञ्च कारम कारम स्'रत फेटर्राइ वृद्धिकीवी । वृद्धित विराजनी कमछाहे (बर्फ केंद्र हा। वस त्थरक स्थापक विद्यापण कत्रक মাহ্র এখন অভ্যন্ত হয়ে গেছে। সভ্য এখন ভার কাছে द्भन नम्, रुक्तः ज्ञवा नम्-जवाक्षर्भन ममुक्तन। या অনৌকিক বা অপ্রভাক তাকে কোন প্রতীক দিয়ে সে বুঝতে চায় না; সৈ চায় অপ্রত্যক্ষের সন্তার বৃদ্ধিগ্রাহ একটা বিশ্লেষণ। স্থভরাং সে প্রতীকে সম্ভষ্ট নর, সে চার রূপক। যা' অপ্রত্যক, তার সহদ্ধে আমাদের অমুভবের বা সংস্থারের ইতিহাসের সঙ্গে বিশ্বড়িত কোন সূল বস্ত वथन जामारमञ ভাবাবেগে তার প্রতিনিধি হ'রে ওঠে. তথন তাকে আমরা বলি প্রতীক। এই ভাবাবেগের ফলে নাম-ই ভগবানের প্রতিনিধি হ'য়ে ওঠে, "ৰূপিতে ৰূপিতে नाम" कापय ভাবাবেশে "व्यवन" रुद्ध পड़ि, সাক্ষাৎ উপলব্ধির অফুকল্প লক্ষণাদি —যেমন রোমাঞ্চ, পুলক, সমাধি ইত্যাদির चार्यन रंग। किन्छ माश्रस्यत विस्त्रयंगी मत्नात्रिक ध शर्थ এখন আৰু বেতে চায় না। ভাবাবেগ নয়, বৈক্লানিক প্রভারের দিকে ভার ক্রচি। বৈজ্ঞানিকের প্রভায় মানে नाना ७०, धर्म ७ नकरणंत्र সমूछद ; छारे पित्र देख्यानित्कत्र বুদ্ধি-লগৎ রচিত। স্বতরাং আধুনিক মন অপ্রত্যক্ষের পরিচর দের রূপকের সাহায্যে, কারণ রূপকের ভিত্তি হ'ল সাদৃত্তে, আর সাদৃভানির্ণয় মানেই হ'ল গুলের বিলেষণ। এই জভে সাহিত্যে প্রাচীন যুগের পর ক্রমশঃ প্রতীকের প্রভাব কমে এসেছে, লেখকদের রচনায় রূপকের ব্যবহারই व्यक्त डिटिंग्स वाकानकात विरम्प क्रिक्त वावशांत्र ত বৰ্ষেষ্ট্ৰ, তা ছাড়া নৃতন শব্দ রচনাভেও রূপকের প্ৰকৃত প্ৰভাব দেখুতে পাওয়া বায়। অপ্ৰত্যক্ষ ও অলৌকিক পদার্থের কথা বলতে গিরে লেথকেরা যদি শুষ গাণিতিক ও দার্শনিক পরিভাষা ত্যাগ করে সরস ও প্রাণবস্ত সাহিত্য রচনা করতে বান, তবে ভারা রূপকেরই ব্যবহার প্রায়শ: করে থাকেন।

তা ছাড়া এ কথাও সকে সকে বীকার করতে হবে বে প্রান্তীকের ব্যবহার জীবনে বভটা চলে, ভাষা ও সাহিত্যে ভঙটা চলে না। কারণ হচ্ছে যে সাহিত্য জিনিষটাই হ'ল বাভবের একটা অন্তক্ষরণ, ঠিক বাভব নয়। সাহিত্যে জীবনের ছায়াই থাকে, তাই রূপকের ব্যবহার সেধানে বেশী। কিছ জীবনটা কবি-করনা নয়, সাদৃভার ছায়া নিয়ে জীবন চলে না, সেথানে বাস্তবের দাবী বস্তু দিয়েই মেটাতে হয়, স্থতরাং কোন প্রতীক বস্তু দিয়ে অপ্রত্যক্ষের ফাঁকটা বুজিয়ে দিতে হয়।

যাই হোক, জনেক কাল থেকেই সাহিত্যে প্রতীক হান পেরেছে। ঋরেদের পুরুষ-সক্তে

সহস্রাধা পুরুষ: '
সহস্রাক্ষ: সংস্রপাৎ।
স ভূমিং বিশ্বতো বৃত্তাত্যতিষ্ঠদশাকুলম্॥

ব'লে পরম পুক্ষের বে বর্ণনা আছে, তাকে আমরা প্রতীক কাব্য বলেই বিবেচনা কর্ব্য; কারণ এথানে একটা অপ্রত্যক্ষ কগতের উপর একটা প্রত্যক্ষ ক্ষগতের আরোপ করা হয় নাই, সাদৃশ্রের উপর ভিত্তি ক'রে প্রত্যক্ষের ধর্ম দিবে অপ্রত্যক্ষের প্রকৃতির পরিচয় দেওয়া হয় নাই। অথচ প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার অগতের কয়েকটি বস্তর সঙ্গে বিজড়িত ভাবধারার সাহাযোে একটা অপ্রত্যক্ষ বিরাট ধারণার উলোধন করা হয়েছে। যে কল্পনা এথানে আমাদের মনে কেগে উঠছে তাকে আমরা পরম সন্তার একটা উপমান বলে মনে করিনা, তাকে সেই সন্তার প্রকাশ বলেই মনে

ইছদীদের শাস্ত্র Old Testament এও আমরা প্রতীক রচনা পাই। Book of Ecclesiastes এ বেখানে বলা হয়েছে "Cast thy bread upon the waters: in r thou shalt find it after many days" (Chap. VI) কিংবা বেখানে বোবনের গোরবের বর্ণনা দিতে গিরে বলা হয়েছে—While the sun or the light or the moon, or the stars be not darkened, nor the clouds return after the rain" (Chap. XII) সেখানে আমরা প্রতীকের ব্যবহার দেখতে পাই। Book of Isaiahতে বেখানে কলা হয়েছে—Every valley shall be exalted, and every mountain and hill shall be made low" (Chap. XI) কিংবা Instead of the thorn shall come up the fir tree, and nestead of the briar shall come up the myrtle tice" (Chap. LV), সে সব ভারগাতেও প্রতীকের ব্যবহার করা

চয়েছে। খুষ্টানদের ধর্মগ্রন্থ Revelation এ প্রতীকের সেখানে (Chap. IV) অঞ্জল ব্যবহার করা হয়েছে। ভগবানের সিংহাসনের যে রক্ম বর্ণনা আছে-And round about the throne were four and twenty seats: and upon the seats I saw four and twenty elders sitting, clothed in white raiment and they had on their heads crowns of gold. And out of the throne proceeded lightnings and thunderings and voices: and there were seven lamps of fire burning before the throne, which are the seven spirits of God"-sits আমরা প্রচুর প্রতীকের ব্যবহার দেখতে পাই। লক্ষ্য কর্ত্তে হবে seven lampsর সঙ্গে seven spiritsর উপমা দেওয়া হয় নাই, seven lampsকেই seven spirita সঙ্গে একাঙ্গীভূত করা হয়েছে। অর্থাৎ এটা রূপক নয়, প্রতীক। আবার যেখানে (Chap. XXII) A new heaven and a new earth & The holy city, new Jerusalema বিবরণ দেওয়া হ'য়েছে, সেখানে অলোকিক ও অপ্রত্যক্ষের পরিচয় দেওয়া হয়েছে নানা প্রতীকেরই সাহায্যে, উপমা বা রূপকের ম্বারা নয়।

বোধ হয় Bibleএর প্রভাবের জন্মেই মধ্যবুগে ইউরোপে প্রতীক সাহিত্য যথেষ্ট রচিত হয়েছিল। কবিকুল-চূড়ামণি Danteর মহাকাব্য—The Divine Comedy প্রতীক কাব্যের উৎক্রপ্ট উদাহরণ। নানা প্রতীকের ভিতর দিয়েই Danteর লোক-লোকাস্তরব্যাপী দৃষ্টি ও অহত্তি প্রকাশিত হয়েছিল, এবং Danteর পরিকল্পিত দেবর্ধি-সঙ্গীত-মুখর অমৃত-নিজ্ঞলী রিয়াট্রিচি-হাজ্যোদ্যাস্ত Paradiso বা স্বর্গ প্রতীক দিয়েই তৈরি। তারই প্রভাব নানা দেশে নানা ভাবে ছড়িয়ে পড়েছিল, যেমন পড়েছিল D. G. Rossettiর রচনায়।

We two will lie, the shadow of That living mystic Tree Within whose secret growth the Dove Is sometimes felt to be, While every leaf that His plumes touch Saith his name audibly.

মধাব্বের অবসানের পর সমগ্র ইউরোপে ধর্থন Renaissance বা নবজীবন আন্দোলনের বলা ছড়িয়ে পড়্ল, তথন পারত্রিক ছেড়ে উছিকের দিকে, প্রতীক

ছেড়ে প্রত্যক্ষের দিকেই মানবের মন আরুষ্ট হ'ল, সাহিত্য বাস্তব জীবন ও ইন্দ্রিরের জগৎ নিয়ে ব্যাপৃত হ'ল। স্কুতরাং প্রতীক সাহিত্যের রচনা প্রায় উঠেই গেল। তবে মাঝে মাঝে ত্ব'একজন গুঢ়বাদী লেখকের রচনায় প্রতীকের ব্যবহার দেখা বেত। ইংল্যাণ্ডের প্রতীকপদ্বীদের মধ্যে প্রধান হ'ছেন Blake. নানা জটিল প্রতীক তাঁর কাব্যের অকে অকে থচিত, তাদের তাৎপর্যা অন্থাবন কর্ত্তে না পারলে Blakeর কাব্যের মর্ম গ্রহণ করা সম্ভব নয়। ছুটো একটা মাত্র অপেক্ষাকৃত সরল উদাহরণ এখানে দেওরা চলতে পারে।

Does the Eaegle know, what is in the pit;
Or wilt thou go ask the Mole?
Can wisdom be put in a silver rod,
Or Love in a golden bowl?
(Motto to the Book of Thel)
এখানে silver rod ও golden bowl কুপ্ৰ আৰু ব

নয়, প্রতীক।
The eternal gates' terrific porter lifted the

northern bar!

Thel enter'd in and saw the secrets of the land unknown.

She saw the couches of the dead, and where the fibrous roots

Of every heart on earth infixes deep its restless twists:

A land of sorrows and of tears where never smile was seen.

(From the Book of Thel)

এ কোন দেশের কথা ? এথানে রূপকের কোন
আভাস নেই। প্রতাক্ষের উপর অপ্রতাক্ষের আরোপের
কোনই প্রশ্ন উঠে না। "হুর্দর্শং গৃঢ়ং অর্প্রবিষ্টং গুহাহিতং
গহররেঙং" লোকের কথা; প্রতীক দিয়েই তার বর্ণনা করা
হ'য়েছে। (আধুনিক কালেও ইংল্যাণ্ডে Francis
Thompson প্রতীক-কাব্য লিখেছেন; তাঁর The
Hound of Heaven প্রথমটা রূপক বলে মনে হলেও
আসলে যে প্রতীক-কাব্য তা' একটু প্রনিধান ক'রে দেখলেই
বোঝা যায়। যেখানে তিনি তাঁর আধ্যাত্মিক অভিজ্ঞতার
বিবরণ দিয়েছেন, সেখানে দেখা যায় য়ে, জিনিম্টা
রূপক নয়, প্রতীকের সাহায়ে একটা সাক্ষাৎ অভিজ্ঞতার
বর্ণনা দেওরা হয়েছে। (আগামী সংখ্যায় স্মাণ্য)

জাতীয় সঙ্গীত

ঞীদিলীপকুমার রায়

वस्त्रपत्र विकारत्र मञ्जूमहात विकासनागरक বাংলাদেশে **উপেক্ষিত কবি ব'লে আক্ষেপ করেছেন** একাধিক পত্রিকায়। ক্থাটা ভাববার। তর্ক উঠতে পারে—যুগে যুগে রুচি माश्ररवत्र वननाम हेलानि । किन्न औष्यत्रविन बामारक এकि পত্তে লিখেছিলেন: "Lesser reputations fluctuate, but finally whatever has real value in its own kind settles itself and finds its just place in the durable judgment of the world... finally the world returns to its established verdict." একথায় আমিও বিশ্বাস করি। তাই সম-সাময়িক ক্লচিগত মতামতের তাপমান যন্ত্রের ওঠা পড়াতে विठिनिङ रुख्या व्यनक्ष मत्न कति, यिष्ठ मत्न इः थ रुप्रदे त्य সম্প্রতি কাগজপত্তে এ নিতান্ত অবিসংবাদিত সতাটিও খীকৃত হয় নি যে জাতীয় সঙ্গীতের (national song) রচয়িতা হিসেবে ঘিঞ্জেজনালের স্থান বাংলাদেশে কারুর टियारे कम नम्र। एटव এও জानि-পूनक् कि मार्जनीय-বে কালের পরম সভায় তিনি ভারতের ওধু একজন শ্রেষ্ঠ নাট্যকার নন, একজন শ্রেষ্ঠ কবি স্থরকার ও গীতিকার ৰ'লেও অলীকৃত হবেন। আমার স্থরবিহার প্রথম থণ্ডে আমি তাঁর বল আমার জননী আমার ও আমার জন্মভূমি

গান হুইটি সংস্কৃত অহুবাদ ও স্বর্রলিপি প্রকাশ করেছি। দ্বিতীর থণ্ডে প্রকাশিত হবে তাঁর ভারত আমার ও বেদিন স্থনীল জলধি হইতে গান হুইটির সংস্কৃত অমুবাদ ও স্বরলিপি। এখানে এই হুটি গান প্রকাশিত হ'ল ভারতবর্ষে—যার প্রতিষ্ঠা তিনিই করেছিলেন প্রায় চল্লিশ বৎসর আগে। আমার মনে হয় কালের দরবারে এই চুটি গান অতি আদরণীয় হ'য়ে থাকবে। সংস্কৃতে এ গানগুলি তাঁর অপূর্ব ওক্ষরী সুরে যে কী অপরূপ শোনায় তা এ গানগুলি বারাই সংস্থতে শুনেছেন তাঁরাই সানন্দে স্বীকার করবেন:। ইচ্ছা আছে গ্রামোফোন ও রেডিয়োয় এ গান ছটিও গাইব এবং আশা করি রেডিও কর্তুপক্ষ এ-গান হুটির (তথা ধ্যা ধায় ও বন্ধ আমার গান ঘটির) সংস্কৃত অহুবাদ যাতে যথোচিত প্রচারিত হয় সে-ভতরতে ত্রতী হবেন—আরো এই জন্তে যে সংস্কৃতে এ-শ্রেণীর জাতীয় সঙ্গীতে শুধু যে এক নব উদ্দীপনা জাগে তা-ই নয়, সংস্কৃতে গীত হ'লে সব প্রাদেশের অধি-বাদীরাই গাইতে পারবেন—যেজত্যে মনে হয় যে ভারতের জাতীয় সঙ্গীত সংস্কৃতেই গীত হওয়া বাছনীয়, কোনো প্রাদেশিক ভাষায় নয়। যাঁরা সংস্কৃতকে মৃত ভাষা মনে করেন তাঁদের মতামত সহজেই খণ্ডন করা যায়। কিছ সেটা এ-ভূমিকার উদ্দেশ্যের বহির্ভূত।

দিজেফুলালের জাতীয় সঙ্গীত

"ভারত আমার, ভারত আমার" ····এবং ঐ সংস্কৃত অমুবাদ

ভারত আমার, ভারত আমার, যেথানে মানব মেলিল নেত্র;
মহিমার তুমি জন্মভূমি মা, এসিয়ার তুমি তীর্থক্ষেত্র।
দিয়াছ মানবে জগজ্জননী, দর্শন উপনিষদে দীকা;
দিয়াছ মানবে জান ও শিল্প, কর্ম্ম-ভক্তি ধর্ম-শিকা।
ভারত আমার,ভারত আমার,কেবলে মা তুমি রুপার পাত্রী?
কর্ম-জ্ঞানের তুমি মা জননী, ধর্ম-ধ্যানের তুমি মা ধাত্রী।
ভগবদ্দীতা গাহিল স্বয়ং ভগবান যেই জাতির সলে;
ভগবৎপ্রেমে নাচিল গৌর যে দেশের ধূলি মাথিয়া অলে।

ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! যত্রোন্মীলন্ মানবনেত্রম্
উৎসন্থমের মহামহিয়াং বস্থমরায়াং তীর্থক্ষেত্রম্ ॥
অবনীজননি ! ত্বৈর নীতা শিল্প বেদদর্শনেষ্ দীকা ।
তারতভূমে ! ভারতভূমে ! কুপার্থিনী তং নৈব ধরণাম্ ।
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! কুপার্থিনী তং নৈব ধরণাম্ ।
ভানকর্মধীধ্যানধর্মদাং প্রণমেম তাং চিরমবিষ্পাম্ ॥
একদা যত্রাগায়দ্ গীতাং ত্বয়ং হি ভগবান্ ত্রিদিবশরণ্যং ।
বদীয় ধূলিপরিধুসরালো নন্ত প্রেম্ণা শ্রীচৈততাঃ ॥

সন্মাসী সেই রাজার পুত্র প্রচার করিল নীতির মর্ম ; যাদের মধ্যে তরুণ তাপদ প্রচার করিল 'দোহহং' ধর্ম। ভারত আমার, ভারত আমার…ধর্ম-ধ্যানের তুমি মা ধাত্রী॥ আর্য্য ঋষির অনাদি গভীর, উঠিল যেখানে বেদের ন্ডোত্র; নহ কি মা তুমি সে ভারত ভূমি, নহি কি আমরা তাঁদের গোত্র! তাদের গরিমা-স্থৃতির বর্মে, চলে যাব শির করিয়া উচ্চ,— যাদের গরিমাময় এ অতীত, তারা কখনই নহে মা তুচ্ছ। ভারত আমার, ভারত আমার । ধর্ম-ধ্যানের তুমি মা ধাত্রী॥ ভারত আমার, ভারত আমার, সকল মহিমা হৌক থর্ক; ছ: । কি যদি পাই মা তোমার পুত্র বলিয়া করিতে গর্ব। यिन वा विनय भाग अ अन् न् नुष्ठ रय अ मानव वः म। যাদের মহিমাময় এ অতীত, তাদের কথনও হবে না ধ্বংস ! ভারত আমার, ভারত আমার · · ধর্ম-ধ্যানের তুমি মা ধাত্রী॥ চোথের সামনে ধরিয়া রাখিয়া অতীতের সেই মহা আদর্শ, জাগিব নৃতন ভাবের রাজ্যে, রচিব প্রেমের ভারতবর্ষ ! এ দেবভূমির প্রতি তৃণ 'পরে আছে বিধাতার করণাদৃষ্টি, এ মহাজাতির মাথার উপর করে দেবগণ পুষ্পবৃষ্টি! ভারত আমার, ভারত আমার…ধর্ম-ধ্রানের তুমি মা ধাত্রী॥

সর্বত্যাপী রাজস্থতো বিভতান নিরন্তং করণাতন্ত্রন্।
তরুণ যতির্বতি প্রচচার মহান্তং গহনং সোহহং-মন্ত্রন্থ।
ভারতভূমে ! ভারতভূমে আচিরং সামন্তোত্রন্থ।
যত্রাক্রায়ত মুনর্ষিগীতমনাদি গভীরং সামন্তোত্রন্থ।
ন কিং অমসি সা ভূর্ন বয়ং কিং নেহ পুরা জুক্রিম তে হোজন্থ।
তৎস্থতিবর্মাবৃতা চিরং বিচরেমোক্ত্রললাটা ধন্তাঃ।
প্রদীপ্রমিথমতীতং যেবাং ক্রীবা ন তে কদাপি নগণ্যাঃ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনতভূমে ! আনতভূমে বরং রি মারাগ্রানিন্থ।
ভারতভূমে ! যদি মহিমাসৌ সনাতন তাব মান ইদানীন্থ।
ভ্রেম্বিন্তা যদি বস্থাবেং সুল্পেদ্ যজপি মহন্তবংশঃ।
পুরাণ্যেবং চরিতং যেবাং তেষাং নান্তি কদাপি ধ্বংসঃ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনতভ্যে ! আনতভ্যে !
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনতভ্যা নান্তি কদাপি ধ্বংসঃ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনতভ্যা নান্তি কদাপি ধ্বংসঃ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনতভ্যা নান্তি কদাপি ধ্বংসঃ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! আনত্যা নান্তি ক্যান্ত্রায়ায় ॥

ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! ে চিরমবিবর্গাম্ ॥
নয়নানামন্থাকং পুরতোহলক্ষ্যাদর্শো দীব্যভূ নিতাম্ ।
পুন: স্বজামো নবভাবোজ্জলরাজ্যং সাক্রং প্রেমন্নিশ্বম্ ॥
তবেহ দেবভূবো বহতি প্রতিতৃণং বিধাতৃ: করুণাদৃষ্টিম্ ।
তব পুত্রাণাং শির:স্থ দেবগণা: কুর্বস্তি প্রস্থানবৃষ্টিম্ ॥
ভারতভূমে ! ভারতভূমে ! ে চিরমবিবর্গাম্ ॥

বিজেক্সলালের জাতীয় সঙ্গীত

"যেদিন সুনীল জলধি হইতে"এবং ঐ সংস্কৃত অমুবাদ

বে দিন স্থনীল জলধি হইতে উঠিলে জননী, ভারতবর্ষ !
উঠিল বিশ্বে সে কি কলরব, সে কি মা ভক্তি, সে কি মা হর্ষ !
সেদিন তোমার প্রভায় ধরার প্রভাত হইল গভীর রাত্রি;
বন্দিল সবে, "জয় মা জননি ! জগজারিণি ! জগজাত্রি !"
ধত্ত হইল ধরণী তোমার চরণ-কমল করিয়া স্পর্শ ;
গাইল, "জয় মা জগলোহিনি ! জগজ্জননি ! ভারতবর্ষ !"
দতাং সান-সিক্তবসনা চিকুর সিন্ধুলীকরলপ্ত !
ললাটে গরিমা, বিমল হাস্তে অমল কমল-আনন দীও;
উপরে গগন বেরিয়া নৃত্য করিছে তপন তারকা চক্ত্র;
দত্র মৃথ্য, চয়ণে ফেনিল জলধি গরজে জলদমক্ত্র।
ধত্ত হইল ধরণী তোমার……জগজ্জননি ! ভারতবর্ষ !"
শীর্ষে ভত্ত ভ্রার কিরীট, সাগর-উর্মি ঘেরিয়া জভ্যা,
বন্দে ছলিছে মৃক্তার হার—পঞ্চসিদ্ধ যমুনা গলা ।
কথন মা তুমি ভীষণ দীও তপ্ত মক্রর উষর দৃশ্যে;
হাসিয়া কথন ভাবল ভাবল শত্তে ছড়ারে পড়িছ নিখিল বিশ্বে ।

ভারতমাত ত্বনশরণাে ! যদা অমৃদিতা স্থনীলসিকাে ।
কলধবি : কোহশায়ত সাজাে ভজিক স্পিতঃ প্লকােহনিকাঃ ॥
তব কপয়া নবরবিকরনিকরৈঃ রূপান্তরিতা গহনা রাত্রী।
প্রণতাঃ সর্বেহগায়ন্ : "জয়তু জগজ্জননী চিরজীবনধাত্রী॥
ধ্যাভবতদা বস্থা তে চরণসরােজং ব্যহিক্সিটা।
বিশ্বমা জয়তু বিশ্বধাত্রী ভারতভূমিঃ স্বর্গারিষ্ঠা॥
সতঃলানারিষিক্তবসনে ! চিকুরন্তে নিধিশীকর সিশুঃ।
নির্মলহান্তৈঃ কমলাননং প্রানীপ্তং ভালাে গরিমসমূদ্ধঃ॥
পর্যাবর্তন্তে ন্তান্তে ব্যোম তবাক্ষণতারাচক্রাঃ।
মন্ত্রবিমুদ্ধা নিমে কেনিলজ্লাধিং তানতীব মেঘমক্রাঃ॥
ধ্যাভবত্তদা
মেনিলা শুলং ত্রারমুকুটং ভাল্তি জ্বেরাঃ পারাবারাঃ।
গঙ্গাশতক্রমুনা বক্ষসি লস্ক্রীব তে মুক্রাহারাঃ॥
কাসি কুদ্ধা তপ্তসৈকতা ঝঞ্চাবাতিক্রগ্রা লোলা।
স্থিতাধরা বা ক্রণসি প্রক্রং শ্লামল্যবলাে ক্রেক্তিক্রাং আ

ধক্ত হইল ধরণী তোমার ·····জগজ্জননি! ভারতবর্ষ!"
উপরে, প্রন প্রবল অননে শৃক্তে গরজি' অবিপ্রান্ত,
লুটায়ে পড়িছে পিক কলরবে, চুম্বি' তোমার চরণ—প্রান্ত,
উপরে, জলদ হানিয়া বজ্জ, করিয়া প্রলম্ন-সলিল-বৃষ্টি—
চরণে তোমার কুঞ্জ কানন কুস্থমগন্ধ করিছে স্প্টি!
ধক্ত হইল ধরণী তোমার ····· জগজ্জননি! ভারতবর্ষ!
জননি, তোমার বক্ষে শান্তি, কঠে তোমার অভয়-উল্জি,
হত্তে তোমার বিতর অয়, চরণে তোমার বিতর মৃক্তি;
জননি! তোমার সন্তান তরে কত না বেদনা কত না হর্ষ;
জগৎ পালিনি! জগভারিণি! জগজ্জননি! ভারতবর্ষ!
ধক্ত হইল ধরণী তোমার ···· জগজ্জননি! ভারতবর্ষ!

ধকাভবন্তদা স্বর্গারিষ্ঠা ॥

উধেব শ্রে প্বনঃ প্রবলম্বনিতো বিগর্জ্য ভূশমকান্তম্ ।

পিকঝকারৈশ্চুম্বতান্তে পুণাং তে শ্রীচরণপ্রান্তম্ ॥

কৃতান্তকুলিশো জনদঃ প্রবর্গ ঘোরাঃ প্রলয়ভয়করধারাঃ ।

পাদান্তে তব রচয়তি কাননালা গন্ধপ্রস্থনহারাঃ ॥

ধক্যাভবন্তদা স্বর্শান্তী কঠে বহসি বরাভয়তন্তম্ ।

বিতরসি পাণিত্যামন্ত্রং করণাভ্যামিয় মধুম্জের্মন্ত্রম্ ।

আক্রোঃ পুত্রমহানন্দো ব্যথা চ তে ক্ষরতো মহনীয়ে !

ধরণীপালিনি ! ধরণীমোহিনি ! ধরণীজননি ! শুভে ! বরণীয়ে !

ধক্যাভবন্তদা স্বর্গারিষ্ঠা ॥

यून वारना ७ श्रुत... विष्कुट्यनान

সংস্কৃত অনুবাদ · · · দিলীপকুমার

ত্রিতাল -1 I সা -1 41 ধ্ সা সরা গা I গা -1 গা গা -1 রা ভা র ত শে ভূ ভূ মা পো ভা র ত ষ্ তু 3511 -1 রগা শা পা I গন্ধা 24 97 27 4 21 -1 শা য ত্ৰো 7 भी ল মা **ન** নে মৃ ন্ সি ন্ মু . मि नी ধো य P ত্ব তা স্থ I ধা পধা পা -1 ধা ধা -1 না ধা B হি 9 স স্ ত্ব শে ব ম হা ম ম্ না \$ र्जा रिकार्जा र्जा - । र्जा - । र्जा না না না না -1 তী র য়া • ম্ ₹ স্থ 7 রা र्भार्भा - र्भा | र्भा - र्भा স্1 न्। স1 -1] 24 ধা পা नी नि देश Q ব न W र्जा I गर्दा मर्दा जी जी | जी -1 র্ স্থ র1 র্ র1 -1 শি ষু ল 위 ষ W F নে ৰ্মা ৰ্মা র1 -1 I **স**1 স1 স1 -1 -1

	ধা ক্		না প						•			
ৰ্স1 ভা	-1	ৰ্স1 ৱ	ৰ্দা ত								ধা মে	
পা ক	পা পা	ক্ষা স্	পা ৰি		ধা				•			
ৰ্গা জ্ঞা	-1 -		র1 ক						•			
গা প্র	গা	রা মে	-1 -		^প মা ত্বা				-			•

প্ৰতি স্তবক একই স্থৱে গেয়

গ্যেটের জীবনের এক অধ্যায়

আশা দেবী

জোহান উলক্গাং গোটেকে বাদ দিয়ে জার্মাণ জাতির কোন পরিচয় নেই। তিরাশী বছরের দীর্ঘ জীবন-চর্চার মধ্য দিয়ে গোটে অকুগ্রভাবে সাহিত্যের সেবা করে গেছেন। তাঁর পরিচয়ের ক্ষেত্র শুধু জার্মাণ সাহিত্যেই সীমাবদ্ধ নয়। সমন্ত পৃথিবী তাঁকে কবি বলে সম্রদ্ধ প্রণাম জানিয়েছে—তাঁর ফাউস্ট জগতের অক্সতম মহাকাব্য। তাঁর সম্পর্কে বলা হয়েছে "He lived in poems" এবং তাঁর কবিতা হলো a great confession—জীবন সম্বদ্ধে শীকারোজি। গোটের মহাকাব্য তাই মহাজীবনের বাণী। ব্যক্তি মাহ্ময় হিসেবে দীর্ঘকাল ধরে বিশ্বজনের বন্ধ নিন্দাও প্রশংসা গোটেকে কুড়োতে হয়েছে। উন্ধাসিক ও ফাচিবাগীশ সমালোচকেরা তাঁকে তীত্র ভাষায় ধিকার দিয়েছেন, ইতর জনের জিহবা কুৎসায় হয়েছে মুখর। গোটের বন্ধ বিভিত্র প্রেষ্ঠান বন্ধারিত।

পৃথিবীর প্রায় সমস্ত শ্রেষ্ঠ কবিশিলীর সাধনার মূলে

রয়েছে তাঁদের মানসীপ্রিয়ার দান। কখনো এই মানসী একটি মাত্র নারীতে রূপ পেয়েছে—মর্ক্তের মানবীকে রূপায়িত করেছে কল্পনার স্বর্গন্তিকায়—তার প্রমাণ দান্তের চিরঅধরা বিয়াত্রিচে, তার প্রমাণ পেত্রার্কার লরা। এই অনক্যা নারীতেই তাঁরা পেরেছেন—তাঁদের কাব্যলন্ত্রীকে, তাঁদের স্বপ্র সদিনীকে।

কিছ এমন একদল শিল্পী আছেন—যাঁরা চিরঅত্প্ত; কল্পরী মৃগের মতো, তাঁরা নিজের অনস্ত তৃষ্ণা নিয়ে পৃথিবীমর ঘুরে বেড়ান। অধাপাত্র হাতে যে এগিয়ে আসে, ক্ষণিকের জন্ত হয়তো তাকে ভাল লাগতে পারে কিছ পরক্ষণে ক্লান্তিতে ভরে ওঠে মন। বার বার প্রশ্ন করে "এই কি চেয়েছিলাম আমি" ? তার মন বলে "এখানে নয়, এখানে নয়—ভূমি যাকে চাও সে অনেকদ্রে।" রবীক্রনাথের ভাষার তার অন্তর আকুলি-বিকুলি করে জানায়—

"বাহা চাই ভাহা ভূল করে চাই

الماح طراب المرابع طرابه العراب

মহাকবি গ্যেটেও এই এদেরই একজন। সমস্ত জীবন ধরে এই খোঁদার পালাই চলেছে তাঁর। একজনের পর আর একজন এদেছে—অসীম আগ্রহে গ্যেটে হাত বাড়িয়ে দিয়েছেন, ছুটে গেছেন তার দিকে; কিন্তু বে মুহুর্জেই গ্যেটের মনে হয়েছে সে সাধারণ, বড় বেশী সাধারণ। তার সব রহস্ত জানা হয়ে গেছে। যে ছিল কল্পনার বর্ণলেখা, বান্তবে সে সীমায়িত হয়ে গেছে একটি মাত্র নারীর দেহাধারে। সেই মুহুর্জেই আবার তিনি কল্প করেছেন নৃতনের অভিযান—পুরোনো প্রেম পথে অছিরে-ধরা খুলোর মতো আবার সেই পথেই হারিয়ে গেছে।

কৈশোরের প্রথম পর্বের, মাত্র পনেরো বছর বয়সে তাঁর জীখনে সর্বর্থম প্রেমের জাবির্ভাব ঘটেছিল। তথন তিনি তাঁর জন্মভূমি ফ্রাঙ্কফোর্টের নানা হোটেলে এবং দরিদ্র অঞ্চলে ঘুরে বেড়াচ্ছেন মাহ্মবের সম্পর্কে জ্ঞানবার জ্ঞানে। এইথানেই তাঁর সঙ্গে পরিচয় হর গ্রেট্চেনের (Gretchen)—বাঁর নাম তিনি তাঁর ফাউস্ট কাব্যে অমর করে রেখেছেন। সেই প্রথম প্রেমে গ্যেটে গ্রেটচেনের কাছ থেকে প্রেমের পরিবর্গ্তে প্রেছিলেন লেহ—প্রভাব পরিবর্গ্তে অহ্মকম্পা। সে অপমান তিনি ভূগতে পারেন নি। পরবর্ত্তা জীবনে তাঁর বছচারণার পেছনে এর কোনো অদুশ্য প্রভাব লুকিয়ে ছিল কিনা কে জানে।

তারপর লাইপজীগে তাঁর ছাত্র জীবনে এল বিতীয় নারিকা ক্যেট্চেন (Ketchen)। তরুণ প্রাণের সমস্ত মাদকতা সেদিন উন্মন্ত হয়ে উঠেছিল এই মেয়েটকে বিরে। কিন্তু সেও জোয়ারের জল—নাত্র কয়টিদিন তার কালবৃত্ত। যে প্রচণ্ডতা নিয়ে তা এসেছিল, চলে গেলোও তেমনি প্রচণ্ডবেগেই; শুধু যাবার বেলায় কবি শ্বৃতির মণিনমঞ্যায় রেখে গেল তার বিদায়-অর্থ।

এর পরে একে একে এলা অনেকেই। পুসিন্দা, ক্রেডরিকা, লোটি বৃফ, লিলি, শারলোট ফন্স্টাইন। কবির জীবন পাত্র উচ্ছলিত করে মাধুরী দান করলো এরা— স্থায় ভরে দিলে। একটি মালঞ্চ থেকে আর একটি নৃতন মালঞ্চে, একটি প্রেম থেকে আর একটি প্রেমে পরিক্রমা চললো কবির জীবনের শেষ দিনটি পর্যাশ্তর

একের মধ্যে শার্লট বৃষ্বা লোটির স্থান একটু স্বভন্ত ।

গ্যেটের জীবনে তিনি মহিনামরীরূপে প্রতিষ্ঠিতা—তাঁর প্রেমের রাজ্যে তিনি রবীক্রনাথের 'বিজয়িনী'। নানা নারী তাঁকে নানা ভাবে প্রার্থনা জানিয়েছে। কেউ তাঁকে পূজাে করেছে, কেউ জাবার তাঁকে গ্রাস করতে চেয়েছে কামনার ময়িজালায়। মিথাা সন্দেহে জন্ধ হয়ে তাই অক্ততমা প্রণয়িনী লুসিন্দা গ্যেটেকে অভিশাপ দিয়ে বলেছিলেন: 'আমার পরে যে তােমাকে চুম্বন কর্মে চিরকাল তাকে তু:পের দাবানলে পূড়তে হবে' এই অভিশাপই বৃঝি গ্যেটের সমন্ত জীবনকে নিয়্রত্রিত করেছে। কিন্তু এদের সকলের মাঝে লােটি বৃফ্ দাঁড়িয়ে আছেন মহিমান্থিতা হয়ে—একটা উত্তাল সমুদ্রে দীপন্তন্তের মতাে।

পূর্ববর্ত্তিনী নায়িকা ফ্রেডরিকার সম্পর্ক ছিন্ন হওয়ার পরে তথন গ্যেটে গভীর মানসিক বেদনায় জর্জ্জরিত হচ্ছেন—ছর্য্যোগের রাতে ছন্নছাড়ার মত। Wanderer's storm song গাইতে গাইতে পথ চলেছেন। এমন সমন্ন ভাঁর হৃদ্য আকাশে লোটি বুফের আবির্ভাব।

তরুণ কবি তখন ওয়েৎপ্লারে এসেছেন আইন-ব্যবসা সংক্রান্ত কাজ শেখবার জন্তে। Holy Roman Empireএর উচ্চ আদালত তখন এখানেই অবস্থিত ছিল। এখানে প্রায় কিছুদিন নিংসল কাটাবার পরে স্থানীর একটি সাহিত্য-রসিক গোলীর সলে তাঁর পরিচয় ঘটলো। তারও পরে এক গ্রাম্য নাচের মজলিসে তিনি দেখলেন শার্লোট বৃহ্দকে, সংক্রেপে যার নাম লোটি বৃহ্দ। এঁর সম্বন্ধে গ্যেটে বলেছেন "ইনি সেই জাতের নারী—যিনি পুরুষের প্রাণে কামনার শিখা জালান না—তার দৃষ্টিকে তৃথ্যির মাধুর্যা দিয়ে ভরে দেন।"

লোটি ছিলেন গ্যেটের স্থানীর বন্ধু কেস্ত্নারের বাগদত্তা পদ্মী। সাধারণ গৃহস্থ ঘরের শাস্ত দীপশিথার মত মেয়ে তিনি। মাতৃহীন সংসারের দশ বারোটি ভাই বোনের সেবাবদ্বেই তাঁর দিন কাটতো। শিশুপ্রিয় গ্যেটে এই শিশুদের আশ্রয় করেই লোটির মনের দরজায় এসে পৌছুলেন। কিন্তু লোটিকে তিনি চিনতে পারেন নি।

গ্যেটে আর লোটির ঘনিষ্ঠতা বাড়তে লাগলো দিনের পর দিন। ওয়েৎশারের উপকঠে বিস্তৃত প্রান্তরে তাঁরা ঘুরে বেড়াতেন। বিকেলের শাস্ত আলোয়, পরিপূর্ণ জ্যোৎসার উল্লাসে তাঁলের সেই আনন্দ-বিহার মধুমর হরে উঠতো। প্রতিদিন তাঁরা পরস্পরের কাছে এত অহরক হরে উঠছিলেন যে মনে হতো একজনকে ছাড়া বুঝি আর একজনের আর চলবে না।

কেস্ত্নার ছিলেন কাব্দের মাহ্য। চাকরী করতেন।
চরিত্রের দিক থেকে ছিলেন অসামাজিক। তাঁর বাগদত্তা
প্রিয়ার সব্দে গ্যেটের মেলা মেশাতে তিনি কোন দিনও
বিন্দুমাত্র লক্ষ্য দেননি। বরং সময় স্থ্যোগ পেলে এদের
সব্দে যোগও দিতেন কথনও কথনও।

লোটির চরিত্র মাধ্র্য্য, তাঁর দৈনন্দিন সালিখ্য, আর গ্যেটের ভাবপ্রবণ মন—যথা নিয়মে এই ত্রিখারা মিশল এক সঙ্গে। তারপর গ্যেটে একদিন আবিষ্কার করলেন, তাঁর স্থৃতির পাঞ্লিপি থেকে কবে মুছে গেছে ক্রেডারিকার নাম। সেথানে আবার নৃতনের পদ সঞ্চার হয়েছে—সে লোটিবৃষ্

সহরের লোকে কানা-খ্যাহ্ম করলে। আলোচনা আরম্ভ হলো লোকের মুখে মুখে। কিন্তু কেসত্নারের আচারে ব্যবহারে বিন্দু মাত্রও পরিবর্ত্তন দেখা দিল না বা কিছু মাত্র বৈলক্ষণ্য দেখা গেল না কোথাও। খীর প্রশাস্ত মুখে তিনি ভানে বেতে লাগলেন সমস্ত কুৎসাকাহিনী, নানা লোকের মুখৈ কুন্দ্রী অপপ্রচার।

আর একজন তেমনি নীরব হয়ে রইলেন। তিনি লোটিবৃদ্। গ্যেটের সমন্ত প্রাণ তথন উদ্বেল হয়ে উঠেছে। বছ নিঃসঙ্গ নিরালা মৃহুর্ত্তে তিনি আত্মপ্রকাশ করতে চেয়েছেন, লোটিকে জানাতে চেয়েছেন অন্তরের আকুলতা। কিন্তু পারেন নি—কোথায় যেন বেধেছে তার। কোথা থেকে কি এসে যেন কঠবোধ করে দিয়েছে তার।

হয়তো কোনো একদিন যথন দিগন্ত-প্রদারি মাঠের ওপরে স্থ্য তার রক্তিম আতা বিকীর্ণ করে অন্ত যাছে; যথন কমলালেবুর বনে রাঙা কলগুলো আরো রাঙা করে উঠেছে সেই দিনান্তিক আলোর; আর অলিভের ঘনভামল পত্রমর্ম্মরে ধ্বনিত হয়েছে কোনো দীর্ঘ্যাস, সেই সময়ে লোটির পদপ্রান্তে বসে গোটে তাঁর মনের কথা বলতে চেয়েছেন। কিছ কী আশ্র্যা—পৃথিবীর অন্ততম শ্রেট কবির কঠে তথন ভাষা যোগার নি। তাকিয়ে দেখেছেন লোটির ছটি চোধে যেন স্ক্টে উঠেছে সন্ধ্যার নক্ষেত্রের মতো লিখ দীপ্র। ভার প্রভাষ মনের সমন্ত

উদ্দামতা শাস্ত হয়ে আসে—কামনা হঠাৎ নতশির ভুজদের মতো নিবে যায়।

আসলে গোটে লোটিকে যে চোথে দেখেছিলেন, লোটি সে দৃষ্টি দিয়ে তাঁকে দেখেন নি। গোটের আকাজ্ঞার কাছে আত্মসমর্পণ করে তিনি মহাকবিকে ছোট করতে চাননি। তিনি চেয়েছেন তাঁকে উদুছ করতে—তাঁকে প্রেরণা দিতে। তিনি গোটের প্রেম-প্রার্থিনী ছিলেন না—ছিলেন তাঁর "Inspiration of better creation"

তা ছাড়া মনের দিক থেকে লোটি ছিলেন প্রধানত 'মা' জাতের মেরে—প্রিয়া জাতের নয়। নাবালক ভাই-বোনেদের মাথুব করতে গিয়ে একটা মাতৃ স্থলভ বেহ সিগ্ধতা সঞ্চারিত হয়েছিল তাঁর মধ্যে। গ্যেটেকে তিনি সেই উদার কেহের মধ্যেই গ্রহণ করেছিলেন। তাই তাঁদের সামিধ্য যতই ঘনিষ্ঠ হোক—পবিত্রতার এই অদৃশ্য শাসন প্রতি মুহুর্জে অহ্নতব করতেন গ্যেটে; এই অদৃশ্য প্রহরী আছে বলেই হাজার লোকাপবাদ সবেও নিশ্চন্ত নিক্ষিয়াছলেন কেস্ত্নার।

আত্মপ্রকাশের জন্ত গ্যেটের মন যতই আকুলি বিকুলি
কক্ষক—কেস্ত্নারের প্রতি লোটির প্রেম বিন্দু মাত্রপ্ত
কেন্দ্রচ্যত হয়নি। তাঁদের অন্তরের সম্পর্ক রইল অত্যাহত
তাঁদের বিয়ের দিন একটু একটু করে এগিয়ে আসতে
লাগলো।

গ্যেটের ধৈর্য্য যথন চরমনীমায় পৌচেছে, তথন
একদিন তিনি জানলেন এই নির্ভূর সত্যকে। তিনি
জানলেন, শার্লট সাধারণ মেরের মতো ভাবের স্রোতে
ভেনে বেড়ায় না—ক্ষণিকের উন্মাদনার এই হয় না নিজের
কর্ত্তবাবাধ থেকে। তিনি আরো জানলেন: শিল্পী
হিসেবে তার প্রতি লোটির সীমাহীন শ্রদ্ধা থাকলেও
প্রেমের জগতে কেস্ত্নারের পাশে তাঁর বিন্দ্যাত্র
জারগা নেই। প্রেমের অমরাবতীতে কেস্ত্নার বেথানে
সম্রাট—সেথানে নিজের সমন্ত প্রতিভা, সমন্ত লোকরঞ্জনীশক্তি তাঁর ব্যর্থ চেষ্টাতেই পরিণত হবে।

নারী হাদয়কে যিনি এতকাল সহজ্বতা বলে জেনে এসেছেন—সেই প্রয়াটে এবার যেন এক স্বেবতার দেবায়তনে এসে দাছাকেন চাতেক সংক্ষা এমন একটি ক্যোভির্মন্ন বিগ্রহকে—হাকে স্পর্শ করবার কোনো অধিকার নেই তাঁর; সমন্ত পৌরুষের অভিমান তাঁর আর্দ্রনাদ করে উঠলো, অন্তর যেন দীর্ণ বিদীর্ণ হয়ে গেল।

পরান্ধিত গ্যেটের কাছে ওয়েৎপ্লার যেন শ্মশান হয়ে উঠলো। কমলালেব্র রক্তিম সৌন্দর্যোভরা অলিভপত্র-মর্ম্মরিত দিক্-প্রাস্তর মনে হলো যেন মরুভূমি। তিনি অহভব করলেন হতভাগিনী লুসিন্দার সেই মর্ম্মন্শর্শী অভিশাপ যেন তাঁকে তাড়া করে আসছে।

ওয়েৎশ্লারে তিনি আর থাকতে পারলেন না। তারপর একদিন তিনি কেদ্ত্নারকে একটুকরো চিঠি লিখে সকলের অন্তাতে ওয়েৎশ্লার থেকে বিদার নিলেন। জানিয়ে গেলেন: "আর মূহুর্ত্তমাত্র এখানে থাকলে তিনি আর আাত্রগোপন করতে পারতেন না। তাই বিদায়— অনিবার্য্য বিদার—এরই কিছুদিন পরে তাঁর বেরুল অন্ততম বিখ্যাত রচনা "Werthus Leiden"—(Sorrows of weather) এই বইটি আর কিছুই নম্নলোটির প্রতি তাঁর যে মনোভাব ও মর্ম্ম যম্মণা এই গ্রন্থে তাকেই ফুটিয়ে তুলেছেন গ্যেটে। এর নাম্মক "ওয়ারষ্টার", কিন্তু নাম্মকা বিবাহিতা শালোট। ওয়ারষ্টার তাকে ভালবেসেছে—কিন্তু সে ভালবাদা বাসনা কামনা বিজ্ঞিত। যেমন নিজ্লক তেমনি পবিত্র।

লোটির পরেও জীবনে আরো নারী আবিভূতা হরেছে
গ্যেটের! এসেছে লিলি, এসেছে ফনস্টাইন। কিছ
তারা প্রেনই পেয়েছে। পৃথিবীর অক্তম শ্রেষ্ঠ কবির কাছ
থেকে পূজা মাত্র একজনই আদার করতে পেরেছেন—মাত্র
একটি নারীই স্বমহিমার নিজেকে অনুভা করে রেখেছেন।
লোটিবৃক্ তাই পৃথিবীর শিল্পী সাহিত্যিকদের কাছে সশ্রদ্ধ
বিশ্বয়ের বস্ত—নারীত্বের একটা উজ্জ্বল প্রকাশরূপে
আমাদের সমাদরের সামগ্রী।

লোটি গ্যেটের জীবনে যে নৃতন অন্তভূতির ছার মুক্ত করে দিয়েছিলেন মহাকাব্যে, তাঁর সাহিত্যে তা স্থায়ী করে রেখেছেন তিনি। নারী প্রেমের মহত্তমরূপ সম্পর্কে গ্যেটের উক্তি আমরা বাংলা দেশের একজন শ্রেষ্ঠ কাব্য -সমালোচকের অন্তবাদ থেকে উদ্ধৃত করছি;

> "বৃথা গৰ্জন করে প্রবৃত্তির বক্তা কঠিনা অজিত উপকূলের সামনে বেলাভূমে ছড়ায় তা কবিজের মুক্তা লাভ হয় জীবনের কাজ্ফিত ধন"

লোটির "অজিত বেলাভূমিতে গ্যেটের প্রবৃত্তির বস্থা স্তিয় স্তিয়ই কবিষের অমর মুক্তা ছড়িয়ে গেছে।"

শিস্প-প্রদর্শনী

শ্রীসত্যচরণ দাস

শিলীরাই দেশের ও জাতির সংস্কৃতির উত্তরসাধক। এ কথার সত্যতা প্রত্যেক সভ্যদেশের নাগরিকরাই স্বীকার করে আসহেন। স্বতরাং দেশের ভবিষ্ণত গঠনে শিলীর দানও নগণ্য নর। এ বিবরে ক'লকাতার ইতিরান আটি স্কুল যে দায়িত্ব প্রত্য করেছেন তা স্থীসমাজের দৃষ্টি আকর্ষণ করবে।

সম্প্রতি ইঙিয়ান আর্ট কুলে বাণিজ্য বিভাগের ছাত্রদের যে প্রদর্শনীর উলোধন হ'ল ডা লেখে শিল্পাসুরাগী মাত্রেই আশাঘিত হবেন, এতে সন্দেহের অবকাশ নেই। এ বিবরে প্রথমেই বাণিজ্য বিভাগের শিক্ষকের কথাই মনে হান পার। বিভাগীর শিক্ষক শ্রীকাশীনাথ দাসের শিক্ষাধীনে বে কয়জন তরুণ শিল্পীর অভিত চিত্রের প্রদর্শনী দেখলাম তাতে মনে হয়, শিক্ষাগুলুর সাধনা ও প্রচেষ্টা নিফল হয় নি। এলস্ত আমরা শিক্ষক মহাণরকে আমাদের আন্তরিক অভিনশন আনাই। এই প্রদর্শনীয় উলোধন করেন ভারতের অবিতীয় শিল্পী শ্রীকতুল বস্থ। এটা ছাত্রধের মতুন্ত ও সংসাহনের পরিচারক।

প্রদর্শনীতে বলিষ্ঠ অন্ধনের উদাহরণ, বিশেষ করে Nature study আকুষ্ট করে। "Nature is the Master of all Arts" এই বাণা



পদান তীর

যে এখানকার প্রত্যেক শিকার্থীদের অন্তরে দৃচ বিবাদ কাগিরে তুলেছে—
তা প্রতিক্লিত হয় ভাদের ক্ষিত প্রতি চিত্রেই। তৈল চিত্র, কলরং,
কালি কলম, পেলিল প্রভৃতি নানা মাধ্যমে আঁকা প্রায় ৩০০ ছবি
প্রদর্শনীতে ছান পেরেছে।

উন্নত দৃষ্টিভলির কার্য্যের মধ্যে এবনেই উলেপ করতে হর দাশরবি পালের নান। তার আঁকা ছবিতে বে নৃত্যুবাহের ও সংসাহসের ইকিত আমরা পেরেছি, তাতে অদূর ভবিশ্বতে তিনি বে বাংলার শিলীসমালের মুথ উজ্জ্ব করবেন সে বিবরে কোন সন্দেহ নেই। তার বলিঠ তুলি আমাদের মনে দাগ কেটেছে। তার ছবিগুলির মধ্যে "মালাকর রমনী" (২২) "বারান্দার মধ্যে দিয়ে (২) "অধ্যান (৮২)" ও "আমার



वात्रान्तात्र यथा पिरम

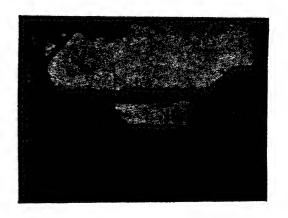
বান" (৭১) উল্লেখবোগা। স্থান বৈত্যর ক্ষেত্রখানি চিত্রও সমধিক
বিশ্বসায়। তার আকা "আবার প্রাম (৫০) চিত্রে শিল্পীর তৈল চিত্র
বিহনের দক্ষতা প্রকাশ পেরেছে। জলরং এ "উ চুলনি" (৯৯) তে শিল্পীর
বিশ্বাতা প্রকাশ পেলেও রসস্টের দিক দিরে ছবিটি অসম্পূর্ণ বলে মনে
বা: সত্য মুখার্লির কাজে বিবর নির্কাচনের বাহল্য আছে। তার
ভিন্ত বিশ্ব কালে বিশ্ব পরিচর আছে। তৈলচিত্রে "প্রানো
ভিন্ত" (০৫) ও "বুক্তভেল" (৫৪) তার স্টের নিপ্রতা প্রশংসনীর।
বিবাড়ী" (১০৮) line and washa ও "প্রাম্য ঘটি" (১) জলরং এ
ভিত্তার পরিচারক। কিন্তু তার নির্কাচনের বাহল্য বিশ্বর "বাশের
ভিন্ত (৫৮) শিল্প স্টের বিশ্ব মুট্টরেছে।

হওরা বার। তার অন্ধন-পদ্ধতিতে বলিঠতার নিদর্শন আছে।
Landscape ও Portrait এ মুরেতেই তার প্রতিভার পরিচর দেখা
বার। এর জাকা ছবিওলির মধ্যে প্রথমেই "পঞ্বটির" (৬১) কথা মনে
হয়। ছবির শান্ত পরিবেশ ভগবান রামকৃষ্ণের কথা মনে করিরে দের,
কিন্তু এত আলো-ছারার ধেলা মনোমুগ্ধকর হোলেও কিঞ্ছিৎ



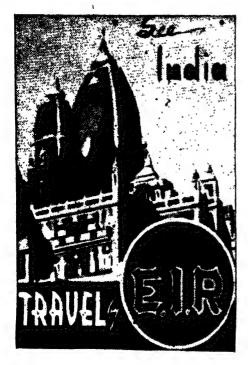
মা ও ছেলে

অভিরিক্ততার আভাব আছে—। তার অক্সাক্ত ছবিগুলির মধ্যে "ইরা" (৬৯), "এদলানেডের মোড়" (১০৬), "এদর্শনীতে" (১০০) ও "ছারাবনতল" (১৪৫) বিশেষভাবে উল্লেখ্য। তার "লাইক ডুইং" গুলি (২৫৮) এদর্শনীর সৌন্দর্যা কুর করেছে।



আলো-ছারা

শিক্ষক ক্ৰীকাশীনাৰ বানের কাজের মধ্যে "আলো ও ছারা" (০১) ও "চিড়িরাধানার বৃক্ত" (৩৬) ছবি ছটি উচ্চাকের অকন প্রতির পূর্ণ একাশ নেই। তার অন্ধন পদ্ধতি অনেক হাত্রই গ্রহণ করেছে বলে মনে হয়। স্থান দাসের কাজগুলিও মনোমুগ্ধকর। তার কাঠগোলা (৭৯) নির্দ্ধাণ (৫) ও অরপূর্ণা বাট (৫২) উৎকৃষ্ট লিল্লের নিদর্শন। তার কমার্সিরাল কাজগুলি অতুলনীর। এছাড়াও পাশ্চাত্যভলিতে অন্ধিত চিত্রগুলির মধ্যে গৌতম মন্ত্রমদারের "তিনটি গাছ" (১৪৮), সরিৎ নন্দীর "বিভালরের একাংশ" (১৫৯), অমরেশ গালুলীর দম্পতি (১২২), তুবার দেনের "মধ্যান্দের নীরবতা" (৭৮), ও দেবদাস ভট্টাচার্ব্যের খোরাঘাট (১১১) বথেষ্ট প্রশংসার দাবী রাখে। গণেশ নারকের "কুলি



আচীরপত্রের নক্সা

ক্যাণ্টিন" (৩৩) শিল্পীর দরদী মনের পরিচায়ক। হুধীর রায়, নির্ম্বল দত্ত, অরণ বোষ ও দীনেশ সাহার উত্তম প্রশংসনীর। তারাপদ বোসের মা ও ছেলে প্রভৃতি কালগুলিতে নতুনভ্বে আভাব আছে। কিন্তু ডুইং ও composition সম্বন্ধে আরও সচেতন হওরা দরকার।

প্রাচা অস্বন পদ্ধতিতে ভারতীয় কলার তেমন আশাধিত উৎকর্বতা প্রদর্শনীতে লাভ করেনি—।এর মধ্যে গৌতমমজুমদারের অলকে চল"(১৬) সতা মুখাজ্ঞির "কালো মেরে" (১৫) সরিৎ নন্দির "স্থানের পর" (১৬) ও

জনবেশ গাঙ্গুলীর "ভারতীয় দৌশর্ব্য" (২৫) ছলের দোলার দৌশর্ব্য-মণ্ডিত।

বেওরালপঞ্জী চিত্রণ একটাও ভাল লাগেনি। "টেন্সটাইল ডিন্সাইনে" দীপ্তিমেধা বিধানের নামই উল্লেখবোগ্য। পরেশ চৌধুরীর ক্লেট খোদাই এক অপরপ শিল্প স্থান্ত করেছে—এর পূর্ব্বে এ ধরণের কাজ কোখাও দেখেছি বলে মনে হর না। প্রাচীর পত্রে মনোহর দে, স্থনীল বৈভ, স্থীর মৈত্র ও স্থাল দাশ কৃতিভের পরিচর দিয়েছেন। ক্মার্দিরাল ডিন্সাইনে—স্থাল দাস, স্থনীল বৈভ, শৈলেন দে, ক্মল সরকার ও গৌতম মন্ত্র্যদার উল্লেখবোগ্য।



जनक हम

এই প্রদর্শনী দেখে জামর। ইতিরান জার্ট ক্ষুলের ছাত্রদের বে উদ্দীপনার পরিচয় পেরেছি তা জামাদের মনে বহু দিন জাগরুক থাক্বে। জাগামীবারে আরও উরত্তর পিল নিদর্শন দেখবার আশা রাখি। ^{এবে} সরকার যদি এই বিভারতনের দিকে কিঞ্ছিৎ মনবাদী হন তবে এই তর্ম^ব উদীয়মান শিলীরা ভবিক্তে ভারতের সংস্কৃতির গৌরব অকুল রাধ্বে।



(পূর্বাছবৃত্তি)

ভাররত্ম কোন কথা বলিলেন না অরুণাকে। নীরবে দেবকী সেনের সচ্চে জয়তারার আপ্রামে চলিয়া গেলেন। অরুণাই কয়েকটি কথা বলিল। বলিল—কানী আমি যেতে পারি নি দাতু। মোগলসরাইরে নেমে আমি—।

অরুণা দেবকী সেন স্বর্ণ ও গৌরের দিকে চাহিয়াই বোধ হয় চূপ করিয়া গেল। নীরবে থানিকটা পথ হাঁটিয়া আবার বলিল—এক বেলা মনের সঙ্গে দ্বন্ধ ক'রে শেষ ফিরে গেলাম কলকাতা।

ক্যায়রত্বের শীর্ণ মুখে ক্ষীণ একটুকরা হাসি ফুটিয়া উঠিল। প্রসম্ভ নয়, বিষধ্বও নয়, সে হাসি বিচিত্র; কিবে সে হাসির অর্থ, সে শুধু তিনিই জানেন।

পোর বলিল—সে কথা আমি লিখেছিলাম দেবুদাকে।
কথাবার্তা হইতেছিল একটি অস্বাভাবিক অবস্থার
মধ্যে। সন্ধ্যার মুখে পথ চলিতে চলিতে টুকরা টুকরা
কথা ঘেন কোন বার্প্রবাহে হিম শীভের রাত্রে শিশির
বিন্দু ঝরিয়া পড়ার মত কমিয়া ক্ষমিয়া শিশির কণা
বিন্দুতে পরিণত হইয়া আপনার ভারে ঘেন আপনি
ঝরিয়া পড়িতেছিল। একটা সংকোচ ঘেন সমস্ত মাহ্যবভালির মন প্রাণকে নিভরক করিয়া ভূলিয়াছে। স্বর্ণ
এফটি কথাও বলে নাই। অন্ধকারে দেখিবার উপায়
হিল না—ভাহার উপর সে মাটির দিকে মুখ নামাইয়া
শ্ব চলিতেছিল, ভাহার ভুক্ক ছটি কুচকাইয়া উঠিয়াছে,
শেবন-মহণ ললাটেও গোটা ছ্রেক রেখা ফ্টিয়া
উলিয়াছে। ভাহারা চলিয়াছিল ময়ুয়াকীর তীরভূমির
উলর দিয়া একটা নির্ক্তন পথ ধরিয়া। বালির উপর
এত গুলি লোকের পা-ফেলার শক্ষ উঠিতেছে শুধু।

আবার অরুণাই বলিল—ভেবেছি আপনাকে চিঠি
শিখি, কিছ—৷

কিন্ত বলিয়াই থামিয়া গেল, বাকী কথাটুকু আপনি বাহির হইরা আসার মত ভাব বেন হারাইরা ফেলিয়াছে। একটি শিশির বিন্দুর থানিকটা থসিয়া পড়িল—বাকীটা বেন পাতার প্রান্তে লাগিয়া রহিয়াছে—ছুলিভেছে।

হঠাৎ স্বৰ্ণ এক কাষ্ণায় দাঁড়াইয়া গেল। ডাকিল— অফুণা দি।

-- a 11 1

—আপনি কি ?—আপনি কি ঠাকুর দশারের সঙ্গে জয়তারা আশ্রমে যাবেন ?

এতকণে অরুণার—শুধু অরুণাই নয় দেবকী সেন ক্সায়রত্ব এমন কি গৌরেরও থেয়াল হইল—তাহারা শিক্ষািঞীদের বাসার কাছে আসিয়া পড়িয়াছে। জয়তারা আশ্রমের পথিক এবং বাসার লোকের পথ এইথান হইতেই ভিন্ন হইয়া গিয়াছে। পথ ভাঙিতে হইবে। অরুণা বলিল—আয়য়য়ৢতকেই বলিল—আমি ঘাই।

এতক্ষণে স্থায়রত্ব বলিলেন—এন। তারপর ডাকিলেন —সেন।

দেবকী আগাইয়া আসিয়া বলিল-চলুন।

সন্ধার প্রারম্ভ, কিন্তু অন্ধকার ঘন গাঢ় হর নাই।
গশ্চিমের আকাশে থানিকটা মেঘ ছিন্ন বিচ্ছিন্ন হইরা
ছোট বড় টুকরা হইরা ছড়াইরাছিল—সেগুলিতে অন্তগত
স্থোর ছটার রেশ তথনও জাগিরা রহিরাছে, ধ্বনির
শেষে প্রতিধ্বনির মত—আলো থানিকটা ধরিরা
রাখিরাছে। ছটি মাহ্য পূর্বমুখে চলিরাছে;—অরুণা
দাড়াইরাই রহিল। অকুনাৎ মেঘের আলো মুছিরা গেল,
অন্ধকারটা সজে সজে গাঢ় হইরা উঠিল;—মাহ্য ছটিকে
আর দেখা পোল না।

গৌর বলিল-চলুন এইবার।
অর্থ থানিকটা আগাইয়া দাঁড়াইয়া আছে, ভাহার দধ্যে

একটা অধীরতা স্পষ্ট হইরা উঠিরাছে। অরণা গৌরের ডাকে সচেতন হইরা বলিল—চল। অর্থ কই ?

- —এই যে।
- -18
- শাপনি ওঁর সলে গেলেই বোধ হর ভাল করতেন।
- —ওঁর সঙ্গে প্রাপ্রামে ?
- --शां। এখানে আপনার অনেক অন্থবিধে হবে।
- অস্কৃণির হবে ? বিশ্বয়ের আর অবধি রহিল না
 অঙ্গণার। এ কি বলিতেছে অর্থ ? দীর্ঘ তিন বংসরের
 উপর সে এখানে চাকরী করিতেছে, এই বাসাই তাহার
 ঘর হইরা উঠিয়াছে—এখানে তাহার হঠাৎ আজ
 অস্ক্রিধা হইবে কেন ? তাই 'অস্ক্রিধে হবে' কথাটা
 স্বিশ্বয়ে সপ্রশ্ন ভবিতে উচ্চারণ করিয়াও তাহার তৃথি
 হইল না। কয়েক মৃত্র্ত্ত পরে আবার প্রশ্ন করিল—
 অস্ক্রিধে হবে কেন ? আমার বাসায় কি কেউ রয়েছে ?

অর্থাৎ দলের কোন কর্মী কি রহিয়াছে দেখানে ?

স্বর্ণ বলিল—না। এখানকার বারা, তারাই রাম-সেবকের ওখানে। ঘর স্বাপনার কেউ নাড়েনি।— ভবে—।

- –তবে কি !–
- —দেখবেন। খরের তালায় হাত দিয়া স্থা বিলিল— হেঁয়ালীর মন্তই বলিল—দেখবেন।

চাপা কথাটা চাপিয়া রাথার কছই বিবাক হইয়া উঠিয়াছিল। সেটা অকলাৎ প্রকাশিত হইয়া পড়িতেই তাহার ঝাঁঝের তীব্রতার অকণা যেন আর্জনাদ করিয়া উঠিল। সেটা ঘটিল এইভাবে। বাড়ীতে আসিয়া সহক ক্ষরেই অকণা বিলিল—দাঁড়াও ভাই, আগে গাহাত মুখ ধুরে কেলি। বাবা—টেণে যা কয়লার গুঁড়ো খেরেছি!

স্কৃতিকস খুলিরা কাপড় গামছা সাবান কইরা কুরা-ভলার পাশে দান ঘরের দিকে বাইতে বাইতেই অরুণা বলিল—টোভটা ধরিরে একটু চা কর ভাই স্বর্ণ।

- -- व्यागनि চा-शायन ? क्षीं श्रवाय ?
- —এলান বলে আনি। দেরী হবে না আনার। তুরি তৈরী কর।

- কিছ এই সৰ বাসনে—খামার হাতে আপনি খাবেন তো ?
- কি বলছ তুমি স্বৰ্ণ ? স্বৰূপা প্ৰচণ্ড বিসায়ে স্বভিত্ত হইয়া উচ্চ কঠেই প্ৰশ্ন কৰিয়া উঠিল।
- —আপনি বে কেঁচে গণ্ড্য করে বসেছেন আফ্লণা দি। ঠাকুর মশারের বিধবা নাত-বউ সেকেছেন নতুন ক'রে। থান কাপড় পরেছেন, হাত থালি করেছেন, একাদনী করেছেন—এর পরও আপনি—

অরুণার কাছে এমনি অকল্পিড, এমনি অপ্রত্যাশিত এই প্রশান্তলি — এবং এই প্রশান্তলির প্রত্যেকটি এমনই তীক্ষ স্বচ্যপ্র ও জালাকর কোন রুসায়ন-মাধান বে অরুণা মুহুর্তে বেন হতচেতন হইয়া গেল। অন্তরে অন্তরে আর্তনাদ করিয়া উঠিল সে, কিছু মুখে একটি শক্ষণ বাহির হইল না।

স্বৰ্ণ বিলল—মাধার চুলগুলি কেটে ফেললেই আর
অন্ধান থাকত না—বোল আনা পুরো হরে বেত। তাহার
মুখে তীত্র হাসি খেলিয়া গেল—সে বিলল—আসলে আপনারা
ত্রাহ্মণ—বৈশ্ব ত্রাহ্মণ এরা হলেন ধর্মজগতের অভিজাত—
মাধার মণি, আপনাদের পক্ষে এগুলো ছাড়া শক্ত। কিন্তু
ছি—ছি—অরুণা দি—আপনি শেবে এমনি উল্টোবাজী
ধাবেন এ কেউ ভাবে নি। আমি তো ভাবতেও পারি নি।

অরুণা নিজেকে সামলাইরা লইরা ব্লিল—আমি আসছি

বর্ণ। সান ক'রে আসছি। গৌর ততক্রে তুই টোভটা
ধরিবে জল চড়িয়ে রাখ না ভাই।

ইহার আগে দরবারী শেখ কথাটা কদর্য্য অস্ত্রীলতার সলে প্রকাশ করিরাছিল। অরুণা দরবারীকে জানে— এবং ইংরাজের পুলিশ বিভাগের এ দিক দিরা শিকার কথাও তাহার কাছে অবিদিত নর—তাই ও কথাটা সে ধরে নাই। ইহার জন্ত মনের সকল কোভটুকু ইংরাজের উপর ও ইংরাজের পুলিশের উপর পড়িরাছে। বাহির হইরা আদিরা সে কাররক্সকে দেখিরা জাঁহার কাহেই আগাইয়া গিরাছিল—ক্ষরপতির মূচকি হাসি, রণদাবার্র মূচকি হাসি; দেবকী সেনের বিশ্বর, অর্ণের বিচিত্র বহি-প্রের্থান্টিভ মুখ ও দৃষ্টি কোন দিকেই কল্য করে নাই। এমন কি আদিবার পথে সকলেই বে নীরব হইয়া পথ

-क्टब्रिहि।

আরণা চায়ের জল নামাইয়া—ভাহাতে চা কেলিয়া দিল।
তারপর বলিল—চায়ের চেয়ে জলই বোধ হয় বেশী ভাল
লাগবে। একয়াস জল ঢালিয়া লইয়া সে জলটুকু নিঃশেষে
পান করিয়া বলিল—আঃ।

খৰ কেন কিপ্ত হইয়া বসিয়া আছে—সে বলিল—এ সব কি আমাকে দেখিয়ে করছেন অঞ্গা-দি ?

— ভূমি এমন রুক্ম— তথ্য আগুন হরে উঠলে কেন বল তো বৰ্ণ? বলিয়াই বলিল—ও। তোমার রাগের কারণ হ'ল আমি থান কাপড় পরেছি, হাতের চুড়ি খুলেছি— একাদলী করেছি—

স্বৰ্ণ মাঝপথেই বাধা দিয়া বলিল—সে আপনি ছনিৱাকে দেখিরে করেছেন। লোকে তার অস্তে মৃচকে মৃচকে হেসেছে। দরবারী শেখের কথাও আমার কানে এসেছে। সে নিয়ে এরই মধ্যে লোকে কথা বলছে। সে নিয়ে জিক্ষাসা তো আপনাকে আগেই করেছি আমি। যা নিয়ে জীবন স্থাক করলেন, 'যার অক্তে শপথ নিলেন, যার অক্তে বিশ্বনাথবাবুর সঙ্গে আপনি বিয়ের প্রয়োজন অক্তেব করলেন, সে সব আপনি হঠাৎ ভাসিরে দিয়ে—এ কি করলেন? ভারপর আবার একাদলী করেও আমাকে দেখিরে জল খেলেন—চা খাবেন; এ কি ?

আনেককণ তত্ত্ব হট্যা বসিরা রহিল অরণা। তারপর ধীর শাভ কঠে বলিল—আমি একটা খুব বড় আঘাত পেরেছি অর্ণ।

- --
- -न-जान ना।
- —জানি না? স্বৰ্ণ হাসিল।—আঘাত বে থেলেন অৰণা দি বিশ্বতদ্ধ লোকের সামনে। স্থাররদ্ধশারকে আঘাত করতে গিয়ে—নিজে আছাড় থেরে পড়লেন তাঁর পারে।
- কা বৰ্ণ। সে নর। সমর বোব আৰু বছরখানেক ধ'রে আফাকে অধির ক'রে ভূবেছে। তার দাবীর কাছে আদি জ্বেশ ছুর্বল হবে পড়াইলার। কিড—

—কিন্ত কি আছে এর মধ্যে অরণা দি ? বক্ত অর্থ বলিল—কিন্ত তো—সেই আপনি বৈভ বাদ্ধধ্যে মেরে—ভাররত্ব মহাশরের মত পুণ্যবান বাদ্ধণের পৌত্তক্ষ্ আপনি, বিধবা হরে আপনি কি ক'রে সমর ঘোরৰে বিয়ে করবেন ?

অরুণা স্থির দৃষ্টিতে স্বর্ণের মুখের দিকে চাহিয়া বলিল — ভূমি আমাকে বারবার আবাত করতে চাচ্ছ স্বর্ণ।

ষ্ণ বিলি—সভ্য কঠোরই হয় অরণা-দি, আর কঠোর বা—ভার সদে সংঘর্ষ হলেই আঘাত পেতে হয় অনিবার্ত্ত। ভাবে। আঘাত তো আমি আপনাকে দিই নি অরুণা-দি, সমর ঘোবের ভালবাসাকে এইভাবে অন্ধ-সংশ্বারের বশে অপমান করছেন—ভাতে আপনি নিজেই নিজেবে আঘাত করছেন—অপমান করছেন। আমি না।

- —সমর আমাকে ভালবাসে, কিন্ত আমি বে ভাবে ভালবাসি না অর্থ। তার দাবী আমি মানব বি ক'রে?
- কি বলছেন আপনি ? অর্থ সোজা হইরা বসিল।

 শেষে আপনি মিধ্যে বলতে আরম্ভ করলেন অরুণা-দি ?
- বর্ণ! অরুণার কণ্ঠব্বরে এবার তিরস্কার বাৰিয় উঠিল।
- ধনক দিয়ে তো আমার মুখ বন্ধ করতে পারবেন ন অরুণা-দি! হাসিয়া বলিল—কারই বা পারবেন! এ কে বিশাস করবে বনুন ?
- —বিশ্বাস আমি কাউকে করতে বলব না খর্প। আমার বিশ্বাস—আমার অন্তরের সত্যকে আমি এতদিনে আবিকার করেছি। আমি তাকে ভালবাসি না।
- নাৰিকারটা অভিনৰ অন্ধা-দি। আজ হু বংকা মাসে চারথানা করে অভত ছিয়ানকা ইথানা পত্ৰ আপতি ভাকে নিখেছেন—সেও আপনাকে নিখেছে; ভার কভৰ আমি দেখেছি—আপনিই দেখিয়েছেন। এরপর—এ আবিকার অভিনৰ।
- —অভিনব কা—আপত্তি করব না, কিছ এ
 নতা। একটু শার হরে যদি আমার কথা শোন ঘণ, আই
 হর তো ব্যতে পারবে। বে থাত থেতে সারা দেহটা পার্ব
 দিরে ওঠে মণ, উপবাসে থেকে মাহব সেই থাতের আ
 সাসারিত হরে ভারই দিবে হাত বাড়ার—জরে সোলা

্ স্থাৰ্ভক্ষপীভিত মান্তবের ক্ষার তাড়নার পরিচয়। সেটা ু ভার ক্ষচির পরিচয় নয়।

—তার মানে ?

—আরও ভেঙে বলতে হবে স্বর্ণ ? আমার বরস তো ভোমার চেয়ে বেশী নয় ভাই। আমার দেহের কুধা আছে, ख कथा बनाए नब्झा ज्यामात्र नारे। त्नरशत कृशांत्र मन আমার মুর্বল হয়ে. পড়ছিল—আমি সমরের চিঠির উত্তরে চিঠি লিখে যাচিলাম। কিন্তু তাঁকেও ভূগতে পারছিলাম না। নইলে অনেক দিন আগেই সমরের হাতে নিজেকে ভূলে দিতাম। ভূমি জান না স্বৰ্ণ—ভূমি জান না, মনের মধ্যে সে কি যুদ্ধ! সমরকে চিঠির উত্তর লিখেছি সম্মতি किरा-िकि निर्थ जिर्फ मत्न हरवरह- नमन्छ व्रक्त **एक के हो — आमात्र हत्रम मर्खनाम इरह्न श्राह्म — अमनि इः एथ** ভবে উঠেছে। অকারণে কেঁদেছি। কেঁদে তথি পাই নি। ি সাত্রে তাকে স্বপ্ন দেখেছি। সকালে উঠে সময়কে চিঠি निर्विष्टि—ना। िहि निर्व डिर्फ मत्न हरवरह ध क्रियांत সব তেতো—সব বিস্থাদ, ইচ্ছে হয়েছে সমস্ত কিছুতে আগুন ধরিয়ে দি। ইস্কুলে মেয়েদের অকারণে বকেছি, মেরেছি। তোমার সঙ্গে—দেবুবাবুর সঙ্গেও কথান্তর হয়ে গেছে। এ সবের ভেতরের কথা জানতে না—কিন্ত আমার এই অবস্থার কথা তো তোমার কানা। কতদিন 🛂 বলেছ—আপনার ঘাড়ে একটা ভূত চাপে অরুণা দি—সেটা ক্থনও কাঁদায়, কখনও রাগায়। স্বর্ণ ভূত ওটা বটে— 'কিব তাকে কি কোনদিন হাসাতে দেখেছ আমাকে ?

বর্ণ হিরদৃষ্টিতে অরুণার মুখের দিকে চাহিরা রহিল।
সে দৃষ্টিতে বিশ্বর কোভ হরতো বা ক্রোধণ্ড ফুটিরা বাহির
ইইতেছিল, কিন্ত অরুণার কথার প্রতিবাদ করিবার কিছু
ই জিরা পাইল না। অরুণা বাহা বলিরাছে—তাহা অরুরে
অরুরে সত্য। আরু ছই বৎসর অরুণা এখানে আসিয়াছে,
ছই বৎসরের মধ্যে অরুণা কোন উল্লাসে হাসিয়া উঠে নাই।
কথনও ছড়াইয়াছে আগুন—বে কোন উপলক্ষ লইয়া হোক
না কেন—সে যখন প্রতিবাদ করিয়াছে তখন তাহার
কঠখরের তাত্রতায় অয়িশিখার প্রাক্তশেশ ফুটিরা উঠিয়াছে,
ভাষার জালা ধরাইয়া দিয়াছে, তাহার মুখের কপালের
রঙে আগুনের আভা ফুটিয়া উঠিয়াছে, খাস-প্রখাসে উদ্ভাগ
হুফাইয়া দিয়াছে। প্রিবীর সম্ব্য কিছুর উপর মুণা ও

विवक्तिए शृथिवीय कार्ट्र म जनहनीय विवध मरनहरेबार । তাহাকে ভয় করিয়াছে। কথনও বা অরুণা এমন উদাসীন হইবা পড়িবাছে যে, অৰুণা না কাঁদিলেও তাহাকে দেখিয়া श्वर्णत कां पिष्ठ देखा श्रेशाह । किंड अपन बरेना अकिंछ স্বৰ্ণ স্বরণ করিতে পারিল না যে ঘটনাটিকে উপলক করিয়া অৰুণা উল্লাসে অধীর হইয়া উঠিয়াছে। এমন কি বে সমরের কথা স্বর্ণ বলিল—সেই সমবের উপস্থিতি উপলক্ষেত্ত नय। সমর এখানে করেকবারই আসিয়াছে। দলের কাজ লইয়া আদিয়াছে বটে, কিছ সেটাই মুখ্য-না-অরণার সঙ্গে দেখা করার উদ্দেশ্যটাই মুখ্য-সেটা কেউই হলপ করিয়া বলিতে পারে না। অরুণা সমরের সকে নদীর ধারে গভীর রাত্রি পর্যান্ত কাটাইরা আসিয়াছে, খরে বসিরা ঘণ্টার পর ঘণ্টা রাজনীতির চর্চ্চা করিতে গিয়া তর্ক করিয়াছে. কতদিন রাত্রে স্বর্ণের পাশের বিছানার শুইয়া জাগিয়া রাত্রি কাটাইয়া দিয়াছে। সমর আসিলে সমর এবং দেবু একটা বাসায় শুইত, খুৰ্ণ ও অৰুণা থাকিত একটা বাদায়। গভীর রাত্রে স্বর্ণের ঘুম ভাঙিয়া কোনদিন पिश्रियाह अञ्चला आत्ना ब्यानिया वह नहेया वित्रा ब्याह অথবা কিছু লিখিতেছে, কোনদিন অন্ধকারে গভীর দীর্ঘ নিখাস শুনিয়াছে, নিদ্রাহীনতার 'অধীরতায় অশারভাবে পাশ ফিরিয়া শুইতে দেখিয়াছে। একদিনের কথা মনে পড়িতেছে। স্থা সেদিন প্রশ্ন করিয়াছিল, খুম আসছে না অৰুণা-দি ?

—না:। পাশ ফিরিয়া শুইয়া হঠাৎ আবার পাশ ফিরিয়া অরুণা বলিয়াছিল—আমি আর পারছি না অর্ণ!

এই কিছুদিন আগেও—মাস চারেক আগে সমরকে বিদায় সন্তাবণ জানাইবার সমর অর্থ অরুণাকে বলিতে ভনিহাছিল—মন আমি হির করেছি:। ভূমি ভগু চাকরী দেখ—তোমার আমার ছলনের চাকরী কলকাভাতে।

তথন গভীর রাত্রি। কর্মীরা সাধারণত বাওরা জাসা করে রাত্রের টেপে। এখান হইতে যে ত্রাঞ্চলাইনটা মাইল পঞ্চাশেক জাপে চলিয়া গিয়া জাবার মেন লাইনের সজে বুক্ত হইরাছে সেই ত্রাঞ্চলাইন হইরা খানিকটা খুরিয়া বাতায়াত করে। ভাহাতে নজর খানিকটা কম পড়ে। সেদিন দেবু ও পৌর ছ্জনে রাত্রার উপর দাভাইয়া সমরের জন্ত প্রতীকা করিতেছিল—সমর ও অরণা—অরণার বাসার দরজার মুখে দাঁড়াইয়া কথা বলিতেছিল। স্বর্ণ এবং অরণার বাসার মাঝখানের পাঁচীলের এপাশে দাঁড়াইয়াছিল স্বর্ণ, কথাগুলা সে স্পষ্ট শুনিয়াছিল। সমর বাড়ী হইতে বাহির হইবার মুখে অরণা তাহাকে আবার ডাকিয়াছিল—শোন।

সমর ফিরিতেই আবার বলিয়াছিল—কিন্ত জাহয়ারীর আবোনা।

- —কেন ? আবার জাহুরারীর থোঁচা উঠল কেন ?
- —কারণ আছে বই কি! ডিসেম্বরে স্থলের পরীকা, জাহরারীতে নতুন সেদন। এ সময়ে চাকরী ছেড়ে যাওয়াটা ঠিক হবে না।
 - —বেশ ড' ছাডবে না। ততদিন থাকবে।
 - —ইন। এখানে থাকতে আমি—
 - 4 ?
 - —ততদিন অপেকা কর সমর। করতেই হবে।

অর্থ এ পালে দাড়াইয়া নিখাস বন্ধ করিয়া শুনিতেছিল;
এই কথার পরই সে দরজা বন্ধ করিবার শব্দ শুনিয়াছিল।
পরদিন সকালে অর্থ হাসিমুথে রসিকতা করিবার ইচ্ছা
লইয়া মনে মনে অনেক কথা তৈয়ারী করিয়া লইয়া অরুণার
বাসার গিয়া অরুণাকে দেখিয়া অবাক হইয়া গিয়াছিল।
ঘরের মেঝের উপর অরুণা শুইয়াছিল, শুইয়াছিল নয়—
পড়িয়াছিল। সবিশ্বয়ে প্রশ্ন করিয়াছিল—কি হল
অরুণাদি?

- —মাথা ধরেছে।
- এ্যাসপ্রো থান নি কেন ? পরও তো ম্মানিরেছেন। ওই তো টেবিলের উপর রয়েছে—
 - -ना।
- —না—নন্ন, উঠে থেলে ফেলুন। মেঝেতে ভরেই বাকেন ?
 - —ঠাওা ভাল লাগতে।
 - -- ব্যব হয় নি তো ?
- —না। আমার একটু খুন্তে দাও খর্ণ, খুম হলেই সব সেরে বাবে। সে পাশ ফিরিয়া ভইরাছিল। বাহার সম্পষ্ট অর্থ—ভূমি বাও খর্থ—ভূমি বাও।

লইয়া অৰ্ণ ই ইকুল চালাইভেছিল, হঠাৎ বেলা **লাড়ে** वाद्वां के वक्तां नम्ब वक्षा शिवा शक्ति हरेबाहिना বাকী দিনটা সামান্ত ছুতায় নাতায় বকিয়া-ঝকিয়া আৰু ছড়াইয়া গোটা ইস্থলটাকে উত্তপ্ত করিয়া তুলিয়াছিল ∄ একটা ছোট মেয়ে বুড়া পশুতের চটের থলি হইতে ওল চুরি করিয়া তাহাতে কামছ মারিয়া এক কাণ্ড বাধাইয়া ভূলিয়াছিল, সে এক কাগু, সকলে হাসিয়া সারা; প্রবালের মত রঙের এমন একটি নরম সরস সামগ্রী যে আখাদনে এমন মারাত্মক হইতে পারে দে কথা বেচারা ভাবিভেও পারে নাই। তাহার ফলে—কিছুক্ষণের মধ্যেই মেম্বেটির ঠোট জিভ ফুলিয়া সকলকে সত্তত করিয়া ভুলিরাছিল ৷ ব্যাপারটা অর্থাৎ ওল চুরির সভ্য ও ভর্টা প্রকাশিত হইতেই পড়িয়াছিল হাসির পালা। মেয়েটাকে ভেঁডুন চুষিতে দিয়া স্বৰ্ণ হাসিতে হাসিতে অপিসে অৰুণাকে भः वाष्ट्री पिटि शिवाहिल। अक्न किंड शास नारे। কঠিন দৃষ্টিতে অঞ্চলিকে চাহিয়া গন্ধীর কঠে বলিয়াছিল— পণ্ডিতমশাইকে মুখে বলে সাবধান করা গেল না। ওঁকে আমি written warning দিতে চাই স্বৰ্। কোনদিৰ প্রলির ভিতর তামাক নিয়ে আসবেন। কোনদিন মেয়েদের वनावन-वाड़ी (शक भाक जानाड-कानमिन किहू; এ আমি সহু করব না।

স্থা বলিয়াছিল—না—না—না। বুড়োর ওপর রার্গ করবেন না। ভারী ভাল লোক।

- —হরতো ভাল লোক। কিন্তু কি ব্যাপারটা হল বলতো?
- কি হল ? হাসির ব্যাপার। 'ওল থেয়ো না ধরতে গলা'—মেয়েরা পড়েছিল—চোধে দেখলে।

অরুণা চুপ করিয়া ভাবিতে স্থক্ন করিয়াছিল।

স্থা বিলিয়াছিল—আপনি একটু হাস্থন অরুণাদি।

অরুণা স্থাপর দুখের দিকে চাহিয়াছিল স্থিয়দৃষ্টিভে।

বিচিত্র স্থির দৃষ্টি, মনে হয় যেন স্থাধীন, অথবা এত গভীবে
সে স্থানিহিত বে—সে স্থাপ্ত অক্সের বোধের অগমা।

কথাওলা আৰু মনে পড়িয়া গেল খর্নের। আরুর্থ মিথাা কথা বলিভেছে না। সে কথনও হাসে নাই গভীর রাত্তে সে দেওয়ালের এ পাশে থাকিয়া কারার শব্দ গুনিয়াছে, সকালে উঠিয়া অরুণার চোথের কোলে কালী দেথিয়াছে—ক্টীতি দেথিয়াছে; মূথ ধুইলেও ও ছুইটা চিহ্ন ধুইয়া যাইত না।

व्यक्तना विमन-विमिन मांछ धालन-विमिन क्रिन আক্রোশে—তার অপমান করতে গেলাম। সংকর ক'রে রেখেছিলাম আগে থেকেই। তোমায় বা দেবুবাবুকেও विनि। यथन जांद्र मर्क अथात अथम अरमहिनाम বক্তাপীড়িতদের সেবা করতে—এখানকার অবস্থা দেখতে— তথন দাত্ব মর্শান্তিক জ্বংখ পেরেছিলেন—ভার নাতির গলায় পৈতে না দেখে, আমার হাত ধরে সঙ্গেহে সপ্রেমে টানতে দেখে—ভারই ফলে তিনি তাঁকে পরিত্যাগ করে नम्भर्क हिँ एक रकरन करना शासन करना । ज्यामात्र मरन হয়েছিল-এত বড় অপমান আমাকে আর কেউ করে নি। उनि७ कम तक्ता कम इः थ शान नि-राष्ठ आमि यान টেৰে নিয়েছিলাম। একবারও বিবেচনা করি নি—ওরাও তুজনে—একজন পিতামহ অম্বজন পৌত্র। থাকগে। মাহুষের অহংকারটা তো আর কিছু नम्-निष्मत चश्राकर मर्कत्र क'रत प्रथा। जारे ्राप्तरंशिक्षाम आत कि।

একটু চুপ করিয়া বলিল—গৌর, ভূই ভাই ছটো মিট্টি কিনে আনবি। আর কিছু ফল। ফল মানে কলা
—আর ঠাণ্ডা বদি কিছু পাস, শাঁথআলু—যাকে তোরা সরবতি বলিস—পাবিনে ?

গৌর চলিয়া গেলে অঞ্চণা আবার বলিল—প্লাটফর্মে
আমার সঙ্গে সম্পর্কের কথা আর কেমন ক'রে সে সম্পর্ক
হয়েছিল—মানে মুসলমান হরে বিরে করেছিলাম আমরা
—কথাটা বখন বনতে গেলাম অর্ণ, তখন হঠাৎ আমার মনে
হ'ল কি জান? মনে হল—তিনি বেন গাঁড়িয়ে রয়েছেন
তাঁর দাছর পাশে, চোখে তাঁর আশুনের মত দৃষ্টি।
আমার ত্রম হয়েছিল ভাই—দাছর পাশে গাঁড়িয়েছিলেন—
তিনি—না, গাঁড়িয়েছিল অজয়! অর্ণ প্রথম বখন ম্যাটি ক
পাশ করে কলকাতায় পড়তে গিয়েছিলেন তিনি, ক্লাসে—
পাশাপাশি বসতেন আমার দাদার সঙ্গে। ছজনের বন্ধুছ
হল—দাদা নিয়ে গিয়েছিলেন তাঁকে আমারের বাড়ী।
ভখন আদি ছোট—খুব ছোট, সাত আট বছর। তবু

তাঁর সে চেহারা আমার মনে আছে। অজরকে দেখলাম
— অবিকল সেই তিনি। আমার সব গোলমাল হরে গেল।
মনের সত্য দেহের কুখাকে উপেক্ষা করে—নিজেকে
কানিয়ে দিলে। বলে দিলে—মা বদি হতে পার—ওই
অজরের, তবে তোমার মনের সত্য সার্থক হবে—ওতেই
মিটে বাবে দেহের কুধা, শোণিত হবে অমৃত—

স্থা বাধা দিল এইবার—থাক অরুণাদি। আদায় এত সব কথা বলে লাভ কি বলুন।

—লাভ আর কি? এতদিন মনের কথা মনে চেপে রেখে তৃপ্তি পাই নি—শান্তি পাই নি, বলবার মন্ত প্রবৃত্তিও ছিল না—হয়তো সাহস্ত ছিল না স্বর্ণ। কিন্তু আক্র—

—আৰু আপনার সাহস হয়েছে, প্রবৃত্তি হয়েছে, বলে আপনি তৃপ্তি পাছেন—শান্তিও পাবেন। আরও অনেক किছু পাবেন অঞ্গা-पि। कि**ड** তবুও—वनव—ছि—ছি —ছি! আপনি হেরে গেছেন। তথু হেরে গেছেনই নয় অৰুণা-দি--আপনি--কি বদছেন তা পৰ্যান্ত আপনি বুঝতে পারছেন না। অরুণা-দি আপনি বললেন—অরুয়ের মা হ'লে আপনার মনের সভ্য সার্থক হবে—ভার সকে সকে আপনার দেহের কুধা মিটবে, শোণিত হবে অমৃত, আরও হয়তো অনেক কিছু হবে--সে বলবার আগেই আমি বাধা मिरबिছि। अक्रगा-मि मञ्जान निर्देश क्षेत्रव ना क्यूल-শোণিত অমৃত হয় না; হলেও কিছুদিন পরেই আবার সে অমৃত – সেই শোণিতেই পরিণত হয়। আবার কুধা জাগে। আপনার মনের সভ্য আপনার মন-গড়া; মন-গড়া সত্যকে সার্থক করতে আপনি জীবন-সত্যকে মিথ্যে करत निरम्बह्म। विमारे त्म आत्र मांजारेन ना, **हिन्या** (शन ।

অরুণা ডাকিগ—স্বর্ণ। স্বর্ণ! তাহার স্বধ্রে ক্লান্ত হাসি ফুটিয়া উঠিল।

বাহির হইতে—বর্ণের কঠবর শোনা গেল—কে? কে এখানে দাড়িয়ে? কে? নেলো?

নেলোর মৃত্তর শোনা গেল—হাা।

—কি ? কি দরকার ?—অ—পুতুল ! পুতুল দিতে এসেছিল ?

--ना। ७ धक्कनात्र वत्राष्ठि किनितं। स्कृतिनि-

মণিকে একটা কথা বলতে এগেছি। স্থান মশাই বলে দিলেন।

一(平?

—জ্ঞান মশাই। দেবকী স্থান! কাল সকালে—
নদীর ঘাটে ঠাকুর মশাই চানে আসবেন—দিদিমণিকে
বলে দিলেন—পারেন যদি তো ঠাকুর মশায়ের সঙ্গে যেন
দেখা করেন।

স্থা হাসিল। হাসির শব্দ অরুণা স্পষ্ট শুনিল। ইহার পর দরজা বন্ধ করার শব্দ হইল। স্থা নিজের বাড়ীতে চুকিয়া দরজা বন্ধ করিল। নেলো ঘরে চুকিয়া দাড়াইল। অরুণা বলিল—সামি সব শুনেছি নলিন।

নলিন—নীরবে পুতুলটি নামাইয়া দিয়া—সর্বাঙ্গে একটা অস্বতিকর ভঙ্গি ফুটাইয়া বাহির হইয়া গেল। যাইতে গাইতেও দাড়াইল। সে বোধহয় আরও কিছু বলিবে।

অরুণা বলিল—আর কিছু বলছ ?

নলিন বলিল-আপনার-

— कि व**ग** ?

— আপনি স্বর্ণদিদির কথা শুনবেন না। ও এত রেগেছে কেন জানেন ? ও নিজে—

বাধা দিয়া অঞ্না বলিগ—নলিন! ছি!

নশিন যাহা বলিতে চায় তাহা সে ব্ৰিয়াছে। স্বৰ্ণ নিজে বিধবা হইয়া বিবাহ করিয়াছে বলিয়া এমন ধারা জুছ হইয়া উঠিয়াছে।

— তুমি যাও নলিন!
নলিন চলিয়া গেল।
অরুণা আকাশের দিকে চাহিয়া বসিয়া রহিল।
হয়তো থানিকটা সভ্য নলিনের কথার মধ্যে আছে।
কিন্তু অরুণা তো জানে—যে সভ্যকে আঁকড়াইয়া ধরিয়া
স্বৰ্ণ এমন জ্বোর করিয়া কথাগুলি বলিয়া গেল—সৈ
সভ্যকে বিশ্বাসের ভিত্তি কত দৃঢ়! দেবু বলিলেও স্বৰ্ণ

(ক্রমশঃ)

শরতের অভিশাপ

छनिरव ना ।

শ্রীস্থরেশ বিশ্বাস এম-এ, ব্যারিস্টার-এট্-ল

এখনও পাষাণ গলে শরতের সোনালী আভায়, পূর্ণতার প্রতিচ্ছবি আনন্দের মাধুর্য্য শোভায় পরম প্রশান্তি আনে প্রাণে। মনে হয় মিথ্যা সব বিধা দ্বন্দ কোলাহল জগতের নিত্য কলরব । এই লঘু মেঘখণ্ড স্বচ্ছ ছটি ক্ষুদ্র ডানা মেলি' चष्ट्रत्म ठिनन উড़ि, रमशा नक्तो পরি' चर्नरहिन বদান্ত প্রসন্ন নিত্য, শাশ্বত সে উদার্য্যের মাঝে — সর্ব প্লানি ভূবে যায়, পরিপূর্ণ মাধুর্য্য বিরাজে। সেই পরিত্যক্ত দেশ, জলভরা স্থপভীর সেহ খেত-রক্ত-শতদলে আমোদিত বিলপ্রান্ত গেহ, শ্বতি পথে ওঠে জাগি। অয়ি মোর মুগ্ধ মাতৃভূমি, অচ্ছেত্য এ যোগস্ত্র সে কথা কি ভুলিয়াছ ভূমি ? ধৰ্মনীতে ধ্যনীতে মোর প্রতি শিরায় শিরায় প্রচন্ত্র প্রগাঢ় উষ্ণ তব রক্তধারা বয়ে যায়। আমি যত দূরে দূরে রহি, অদৃত্য বন্ধনডোর — দুরাস্ত প্রবাদী পান্থে তত কাছে টানিতেছে তোর ! দেই ফল্**ভ আকর্ষণ শরতে**র উদার **আকা**শে, মেষ-শুভ্র লঘু মেধে অনস্তের সীমান্তে আভাসে। মুক্ত করি' সর্বা ভূচ্ছ অব্যক্ত অন্তর ব্যথাথানি অসহ হিরণ্য-গর্ভ-নিহিত দলিত মর্ম্মবাণী-

দাবদাহে সর্বদেহে অন্তরের গুঢ়তম দেশ জালায়ে উন্মন্ত করি দহিতেছে করি জন্মশেষ। জন বিল নদীখাল অক্সাৎ সঘন বৰ্ষণ, ফুল পাখী লতাপাতা নিত্য কেন করে আকর্ষণ ? যুথল্ট আশাহত আছে সেথা কটি নরনারা, তবু তার এত মায়া, তবু তারে ভুলিতে না পারি! বর্ষে শুধু একবার আমি তব লেহাঞ্চলতলে ছ'দণ্ড বিশ্রাম লভি, আমারে কি সেই সেহবলে, না ফুরাতে আবিণের কদম্ব কানন শিহরণ না ভরিতে ফুলে ফুলে খ্রামায়িত শেফালিকামন পাঠাইলে লিপিথানি কাশগুত্র লঘু মেঘভারে, তোমার অবোধ শিশু সে লিপিকা পড়ি' বারে বারে শ্রাবণ-বর্ষণ সাথে মিশাইছে আঁথিবারি তার রাজেন্দ্রাণী ভিথারিণী তবু তুই জননী আমার! ত্বল ত্বল ওঠে বুক, কুলে কুলে কাঁদি অভিমানে; আমারে স্থপনে হেরি দশমী-রজনী অবসানে আবার নৃতন করি আশায় বাঁধিয়া বৃক্থানি হেমস্তে, তুরস্ত শীতে, ফাল্গুনে ও-বক্ষে কর হানি' পাগলিনী যুগে যুগে জাগিও শরৎ পানে চেয়ে তোশার হারানো ছেলে হয়ত' ফিরিবে ভরী বেরে।



বানরের অনিষ্টকর ক্ষমতা অশেব। উহাদের উৎপাতে প্রতি বৎসর প্রভুত পরিমাণ থান্তপত্তি বিনষ্ট হর। হিসাব করিয়া দেখা গিয়াছে যে, উত্তর প্রদেশ ও পাঞ্চাবে বানরের দারা প্রতি বৎসর যথাক্রমে প্রায় ২৫ কোটি টাকা ও ১০ কোটি টাকার থান্তপত্ত বিনষ্ট হইয়াছে।

ভারতে প্রায় ৫ কোটি বানর আছে। অর্থ্রেকসংখ্যক বানর বনে বাস করে ধরিরা লইলেও বাকী আড়াই কোটি বানর প্রতি বংসর সহর ও নগরীর অধিবাসীদের কোটি কোটি টাকার থাত খাইয়। কেলে অধবা বিনষ্ট করে। প্রতিটি বানর দৈনিক গড়ে ২ আউন্স পরিমাণ থাতাণত্ত গ্রহণ করে। এই হিসাবে তাহারা প্রতি বংসর মোট ৪ লক্ষ টন থাতাল্ত অর্থাৎ বর্ত্তমান বরাদ ব্যবহা অসুবারী এলাহাবাদ, কানপুর, ও দিলীর অধিবাসীদের সম্বংসরের থোরাকের সম-পরিমাণ থাতাশত্তের অপচর করে। এদিক হইতে দেখিতে গেলে বানরদের সম্পর্কে প্ররোজনীয় ব্যবহা অবলম্বনলালে কোনও নীতিবোধ, ধর্ম-বিহাস ও জীবে দ্বার প্রশ্ন খাটে না।

গত ২২শে ও ২২শে জুলাই ইতালীর মিলান সহরে ইতালীর থিওসফিক্যাল সোসাইটির বিংশ বার্ষিক অধিবেশনে পঁচিশ বৎসর বরস্ব তরুপ ভারতীর দার্শনিক শ্রীমশোককুমার দত্ত যে অভিভাবণ প্রদান করেন তাহাতে সমস্ত ইউরোপের দার্শনিক মহলে সাড়া পড়িয়া গিরাছে।

ইতালীর দৈনিকপত্রিকাসমূহ শ্রীযুক্ত দত্তকে ভূয়নী প্রশংসা করিয়া লিথিয়াছেন যে, স্বামী বিবেকানন্দের পর আবার এই তরুপ দার্শনিকের নিকট হইতে বিধ্বাসী শাবত ভারতের বাণী শুনিবার সৌভাগ্য লাভ করিয়াছে।

—বিশ্ববার্ত্তা

নদীরাবাসীকে আজ শ্বরণ রাখিতে হইবে যে পশ্চিমবঙ্গ তথা ভারতরাইকে শক্তিমান করিয়া তুলিতে হইলে নদীরা সীমান্তের সর্বপ্রকার
দেশল্রোহিভাম্লক কার্য্যকলাপ পর্যুদন্ত করা চাই। নদীরা সীমান্তের
বিপদ সীমান্তের অপর পার হইতে আসিতে পারে ইহা বাঁহারা মনে
করেন তাঁহারা ভাতঃ। নদীরা সীমান্তের বিপদ নদীয়া জেলার সীমান্তেই
বর্ত্তমান, উহা হইতেছে চোরাকারবার, পরস্বাপহরণ, আইন ও শৃথলা
লক্ষ্যন এবং ভারত রাষ্ট্রের সহিত প্রভারণা। ভারত রাষ্ট্রের বাঁহারা প্রকৃত
হিতাকাক্ষী ও নাগরিক তাঁহাদিগকে আজ অবস্থার প্রতিকারের জম্ম
ত্রতী ইইতে হইবে। আজ নিঃসহারভাবে বসিয়া বসিয়া বটনার তরত্তম
মালা লক্ষ্য করিবার সময় নাই। সীমান্তবাসীর কঠোর চরিত্রকে আয়ত
করিয়া আজ স্থবিধাবাদিদের চক্রান্ত ও সর্বপ্রকার কল্পর হইতে সীমান্তকে
বিমৃক্ত করার সময় আসিয়াছে। আজ শাপম্ক্রির বে আহ্বান আসিয়াহে

তাহা মনুষ্ঠান্থের আবোন, গণতন্ত্রের আবোন, বাধীন রাষ্ট্রের আবোন, ইহা যেন আমরা বিশ্বত না হই। —সীমান্ত

বিশ্ববিশ্বালয় প্রত্যেক বিষয়ের প্রশ্নপত্র কঠিন করিতেছেন। কর্তৃণিক্ষের বক্তব্য, ছেলেরা নাকি বড়ই অমনোযোগী ইইতেছে। অমনোযোগী হওয়া আশ্চর্য্য কিছু নহে, এতো সিনেমা, এতো তারকার উদয় হইলেছেলে কেন, ছেলের বাপ পিতামহ চৌদপুরুষ পর্যন্ত অমনোযোগী ইইয়া পড়িবে। যাই হউক, ছেলেদের নন্তিক কীণ হওয়া আশ্চর্য্য নহে। ছধ বিশ্ব কথা দূরে থাকুক, ছইবেলা পেট ভরিয়া মাছ ভাত যে দেশের ছেলেরা থাইতে পায় না, তাহাদের এখনও যে কিছু বৃদ্ধি-শুদ্ধি আছে ইহাই আশ্চর্যা। ছাত্রদের উপর দোষারোপ না করিয়া তাহাদের পৃষ্টিকর আহার, স্বাস্থ্যপ্রদ পরিবেশ, উন্নত্তর চিন্তার ব্যবস্থা করিলেই আবার আশুতোর হরিনাধের আবির্ভাব হইবে।

সম্প্রতি চলচ্চিত্র-প্রদর্শকদের নিয়ে একটা বৈঠকী-সম্মেলন হ'য়ে গোলো। সেই সম্মেলনের উদ্বোধন করতে গিয়ে পশ্চিম বাংলার মাননীর প্রধানমন্ত্রী ডাঃ বিধানচক্র রায় বলেছেন, চলচ্চিত্র শিক্ষা-বিস্তারের অস্ততম মাধ্যম। আজকের দিনে জনমত-স্রস্তা সংবাদপত্রের চাইতেও চলচ্চিত্রের প্রভাব জনসাধারণের ওপর বেশী। সমাজ-জীবনে চলচ্চিত্রের প্রভাব জনসাধারণের পুনর্গঠনে এর আবশ্রককা রয়েছে। তিনি আরো বলেছেন, ব্যক্তিগতভাবে সেন্সরের পক্ষপাতি আমি নই।

কিন্ত তিনি একটা কথা বলেন নি, কি ক'রে বাংলা-ছবিকে সর্বত্র চালু করা যার। দেশ-বিভাগের ফলে আজ অনেক জারগাতেই বাংলা ছবির প্রদর্শন নিষিদ্ধ হয়েছে। বাংলা ছবি তৈরী করার মূলে যেসং বাধা, সেইসব বাধা অতিক্রম ক'রে ছবির মালিক বাংলা ছবি তুলতে চাইবেন না। ফলে বাংলা ছবির এই ক্রম-বিলুপ্তি অনিবার্ধ।

আমরা আশা করেছিলাম, মাননীর মন্ত্রী মহাশর সেইসব সমগ্রা সমাধানের উপার ব'লে দিয়ে, বাংলা ছবির ভবিত্তৎ সল্লে নির্দেশ দেবেন!

অবস্থার গতিকে আৰু কৃষিশ্রমিক প্রকারাস্তরে অভুক্ত থাকিয়া দিন কাটাইতেছে। শ্রম করিয়া তাহার যে শক্তি কর হর তাহা প্র^{ংগর} যোগ্য পৃষ্টিটুকুও সে পার কি না সন্দেহ। দেশের সর্বত্র স্থানে ভাহাদের বর্তমান অবস্থা দাসন্দের সমান। জমিহীন কৃষিম্পূর তাহার জমিদারের কাছে হয়ত পঞ্চাশ বা একশত টাকা কর্ম লাইরাছে। কলে এ টাকা শোধ না দেওরা পর্বস্ত সে জমিদারের ^{কাছে} বাধা পড়িয়া আছে অর্থাৎ এই ধণের দারে ভাহাকে দাসন্দের শৃষ্ণ চিরজীবন বহিতে হইতে পারে। হরত দিনে একবারমাত্র তাহাকে কেল্লাত দেওরা ইইবে, আর দীপালির (৮পুজার) সমর তাহাকে কিছু দেওরা ইইবে। তাহার স্ত্রী ও ছেলেমেরেদের তাহার মনিব বা অপর মনিবের কাছে অমুরূপ ভাবে থাটিয়া ভাত কাপড় যোগাড় করিতে ইইবে। যে খাজ তাহারা পায় তাহাতে পুষ্টি না থাকারই মত। তাই রোগে যুবিবার ক্ষমতা তাহাদের শরীরে থাকে না, আর তাহাদের ছেলেমেরেরা ক্ষালসার হইয়া বড় হয়। এমন কৃষি মজুরেরা থাটিয়া খুটিয়া সমগ্র জাতির জভু যথেষ্ট থাজ উৎপল্ল করিতে পারিবে কি ? এই সকল মজুরেয় অবছা উল্লেমেরে চেষ্টা কেছ করিতে গেলে গবর্গবেট আত্রপ্রস্ত ইইয়া পড়েন। তাহাদের ভয়, মজুরেয়া তাহাদের মৌলিক প্রেলিক সম্পর্কে গচেতন ইইলে সরকারের থাজ সংগ্রহের প্রান ব্যাহত হইবে। সরকারের খাজসংগ্রহের প্রানটি তবে কি উৎপাদককে বঞ্চিত করিয়া কচ্ছল ব্যক্তিদের খাওয়াইবার ব্যবহা মাত্র ? এইরূপ কর্মক্রম অনুরদ্শিতা-দোবত্নষ্ট । ইহাতে শেষাব্ধি উদ্দেশ্য সিদ্ধ করা যাইবে না।

—হবিজন পত্ৰিকা

গত ১৯৪৭-৪৮, ১৯৪৮-৪৯ ও ১৯৪৯-৫ • সনে ভারতে যথাক্রমে মোট ৪৯ হাজার ৯৭৩ একর, ৬৪ হাজার ৫৪ • একর ও ৫ লক্ষ ৭৪ হাজার ১৯ একর পতিত জমিতে চাবাবাদ করা হইরাছে। উহা ছাড়া ট্রাক্টর প্রসূতি বস্ত্রের সাহায্যে যথাক্রমে জারও ৩৫ হাজার ৩৯৫ একর, ১ লক্ষ ৩২ হাজার ৬৬৫ একর এবং ৩ লক্ষ ৪৪ হাজার ৮৩ • একর পতিত জমি চাব করা হইরাছে। কেন্দ্রীর ট্রাক্টর সংস্থা কর্তৃক যে ৩৪ হাজার একর জমিতে চাবাবাদ করা হইরাছে হাহা উক্ত হিসাবে ধরা হর নাই। এ সকল জমিতে আলোচ্য বৎসরে প্রায় ১২ হাজার টন থাজ্ঞশস্ত উৎপন্ন হইরাছে।

পূর্ববর্ত্তী বৎসরের তুলনার ১৯৪৯-৫ সনে ভারতের সকল রাজ্যেই অধিক পরিমাণ পতিত জমিতে চাবাবাদ হইরাছে। উহাদের মধ্যে আবার উত্তর থাদেশ, বোধাই, বিহার, হারদারাবাদ, ত্রিবাস্কুর ও গোচিনেই সর্ব্বাধিক পরিমাণ পতিত জমিতে চাবাবাদের সংবাদ পাওয়া গিয়াছে। ভাহা ছাড়া, আইনের সাহায্যে আরও ও লক্ষ ৭২ হাজার একর পতিত জমিতে কৃষিকার্য্য স্থক হইরাছে।

—পণাতিক

বোখাই গবর্গমেন্ট মাত্র ৬ মাস পূর্বের উক্ত প্রদেশের রাজপশ্যসমূহে পরিচালিত বাস সাভিসের পরিচালনভার বহুতে গ্রহণ করিয়াছিলেন।
ইতিমধ্যেই এই কাজে উহারা ৪ কোটি টাকা মূলখন বিনিয়োগ করিয়াছেল।
উহার ফলে বর্ত্তমানে গবর্গমেন্টের পরিচালিত বাসের সংখ্যা গাঁড়াইরাছে
১১৯১ এবং বর্ত্তমানে এইসব বাসে প্রত্যেহ ১ লক্ষ ৫৬ হাজার করিয়া
বাত্রী চলাচল করিতেছে। বর্ত্তমানে প্রদেশের মোটমাট ১২৮৪৭ মাইল
রাত্তার সরকারী বাসসমূহ চলাচল করিতেছে। এই কাজে তদারক
করিবার অভ বোখাই গবর্গমেন্ট বোখে টেট রোড ট্রাজ্যপোর্ট কর্পোরেশন
নামক যে প্রতিষ্ঠান পঠন করিয়াছেন ভাহারা শীঘ্রই রাজ্যবাটের সংস্থারের

জক্ত এক কোটি টাকা ব্যর করিতে সিদ্ধান্ত করিয়াছেন। পশ্চিমবজের গবর্ণমেন্টও এই প্রদেশে বাস পরিচালনার কাজে হাত দিয়াছেন এবং উহারা বোদাইরের অনেক পূর্বের এই কাজে অবতীর্ণ হইরাছেন। কিন্তু মাত্র ৬ মাত্রে ঘালাইরে এই কাজ যে ভাবে অপ্রসর হইয়াছে সেই তুলনার পশ্চিমবঙ্গের সাক্ষা নগণ্য।

—আর্থিক জগৎ

আমরা ২৪ পরগণার শিক্ষকগণের একটি প্রধান অহ্বিধার কথা
শিক্ষাবিভাগীর কর্তৃপক্ষকে জানাইরা ইহার প্রতিকারের জন্ত অমুরোধ
জানাইতেছি। ২৪ পরগণার জেলা পরিদর্শক মহাশরের অফিস
জালীপুরে বোর্ডের অফিস হইতে বহুদুরে অবস্থিত—তাঁহাকে অধিকাংশ
সমরে ঐ অফিসেই থাকিতে হয়। ফলে, প্রাথমিক শিক্ষকগণ নানাপ্রকার
অভাব অভিযোগের কথা জানাইতে আসিয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ
করিতে না পারিয়া ফিরিয়া যান। দরিয়্র শিক্ষকগণ বহুদুর হইতে প্রচুর
অর্থ ব্যয় করিয়া এবং অনেক আশা লইয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে
আসিয়া দেখা না পাইলে বড়ই হতাল হন। পরিদর্শক মহাশরের
অফিসটি আলীপুরেই কোন স্থানে অবস্থিত হইলে শিক্ষকসহালয়গণেরও এ
অর্থবিধা হয় না, পরিদর্শক মহাশরও অনর্থক ছই অফিসে চুটাছুটি কয়ার
হাত হইতে অব্যাহতি লাভ করিয়া কাজে অধিকতর মনোনিবেশ করিতে
পারেন। এপ্রারসন হাউসে স্থান সংকুলান না হইলে আলীপুরের অক্স
রাড়ীভাড়া লইয়া অফিসটি অবিলম্বে স্থানান্তরিত কয়া একান্ত প্রয়োজন।
—শিক্ষক

বর্ত্তমান ভারতের রাষ্ট্রকর্তাগণ বৃক্ষরোপণের জন্ত একটা অমুঠান করিলেন। ভারতের সভাতা-তপোবন-নিষ্ঠ। বেদ ও উপনিবদের নাম-আরণাক। এক্ষের কথা বলিতে গিরা প্রাচীন বৈদিক খবিগণ বলিয়াছেন-এব অৰথ সনাতন:। আরও বলিয়াছেন-ইনি বুক্ষের মত ন্তব্ধ হইয়া আকাশে অবস্থান করিতেছেন—বৃক্ষ ইব দিবি ভিষ্ঠত্যেক। পঞ্বটী রচনা করা এই দেশের ধর্ম। অবখ প্রভৃতি বৃক্ষ প্রতিষ্ঠা করা---এদেশের পুণা কর্ম। তুলসী বৃক্ষ যে স্থানে থাকেনা, তাহা শ্বশান তুলা চৈত্য-বৃক্ষ প্রদক্ষিণ করা নিত্য কর্ম্বব্য, অতএব উঠানে আভিনায় বিল, নারিকেল, আম প্রভৃতি বৃক্ষ রোপণ করা প্রতি গৃহছের কর্ত্তব্য ছিল। লল শীতন হইবে বলিয়া পুছরিণীর পাড়ে তালগাছ রোপিত হইত। ইংরেজ আসিল। তাহাদের সভাতাও আসিল। তুলদী উপড়াইরা দিলাম, বিৰ বৃক্ষ কাটিয়া ফেলিলাম, অৰ্থকে পুড়াইয়া, এমন কি মলিকা यूँहे, हेगद लकालि हच्लक निर्म्मुल कदिश श्रूदशाराद लिलि, व्यक्तिंड क्रिएननिषयाय. मिलिनक्रां ७ ब्रांत्र पित्रा छेठीन, व्यालम, वागीन मासाहेनाय। আৰু আবার বনশতির প্রতি আকর্ষণ আসিয়াছে। কিন্তু গাছ হইতে অর্ণা হর। অর্ণো থাকে হিংল খাপদ। বন রচনার সহিত আর্ণাক कीरनरक वजीकांत्र ना कतिरम नमाज नःमात्र व्यत्ना मनुन इहेता

উঠিবে। ভাই বলিভেছি :—বৃক্ষ রোপণের সহিত বেদ মন্ত্র পাঠ কর—যঃ বনস্পতির্ তল্ম দেবার নমো নমঃ। — 'শ্রী'

পূর্ববঙ্গে হিন্দুজাতি আত্মসংস্কৃতি-রক্ষায় অসমর্থ, ইহার কারণ—হিন্দু সংস্কৃতি হিন্দু-জাতির প্রাণের সহিত আর সংযুক্ত নহে। হিন্দু-সংস্কৃতি-রকার প্রাণ অত্বন্তত বলিয়াই আমরা আত্ত্বিত হইয়া পূর্ববের হইতে অপসত হইতেছি। ইহাই আমাদের অবস্থা। যে কারণে জগতের অক্তান্ত ইসলাম রাজ্য হইতে হিন্দুজাতির চিহ্ন বিলুপ্ত হইয়াছে, সেই একই কারণে ভারতের পশ্চিম পাকিস্তান হইতে হিন্দু নিশ্চিহ্ন হইয়াছে। পूर्व পाकिलात्म जाहात क्रमण हहेर ना । कालि-विषय वनलः এहे কথা আমরা বলিতেছি না, কেন না পূর্ব্বপাকিস্তানে প্রবর্ত্তক সজ্বের হুই অধান কেন্দ্ৰ সংস্থাপিত। অবৰ্ত্তক সজ্ব কোৰাও আণভৱে কেন্দ্ৰ ভ্যাগ করে নাই। যথন ভারতের রাষ্ট্রপুরুবেরা ইসলাম সংস্কৃতির স্থান পশ্চিম ও পূর্ববপাকিস্থান নির্ণয় করিয়া দিয়াছেন, তথন ইসলাম ধর্মই এই ছুই ছানে প্রবল মুর্ত্তি পরিপ্রাহ করিবে, ইহা অভিশয় ক্রায়সকত কথা। হিন্দু জাতি আক্সংস্কৃতি লইয়া এই স্থানে থাকিতে চাহিলে, ইদলাম-রাজ্যে অস্তার অধিকারটুকু লইয়াই তাহাকে আত্মনংস্কৃতি রক্ষা করিতে হইবে, ইহাতে অসমর্থ হইলে স্থানত্যাগ অবশুস্থাবী। বর্ত্তমান অবস্থায় তাহাই হইতেছে। নিরাপদ জীবনযাত্রার জন্মই পাকিস্তান হিন্দুশু হইতে বাধ্য। তারপর হিন্দু-সংস্কৃতি-রক্ষার কেত্র এই ভারতবর্ষ। কিন্ত ভারত-রাষ্ট্র ধর্ম-নিরপেক। ওধু হিন্দু-সংস্কৃতি রক্ষার হযোগই যে এখানে পাওয়া যাইবে, তাহাই নহে। পরস্ত ইসলাম-ধর্মীদের শিক্ষা সভাতা ও কুষ্টিরক্ষার হুযোগ ধর্ম-নিরপেক ভারতরাষ্ট্রে থাকিবে। হিন্দু, ভারত ধর্মহীন যদি হয়, ভারত ইসলামের ক্ষেত্র হইবে, ইহা কিছু ৰিচিত্ৰ কথা নহে। পূৰ্ব্ব ও পশ্চিম পাকিন্তান হইতে মুদলমানদের দলে দলে ভারতে প্রত্যাগমন এই সঙ্কেতই প্রদান করে। পাকিস্তান ইসলামের। ভারত সর্বাধর্মীর। অতএব যে ধর্ম প্রবল মুর্ব্তি পরিপ্রাহ করিবে, সেই ধর্ম্বের আধিপত্য এই ক্ষেত্রে অসম্ভব হইবে না।

—নব সংঘ

"বনশ্পতিতে হাজারে একভাগ রেড-অক্সাইত মিশ্রিত করিলে উহা আর ঘৃতে ভেজাল দেওরা চলিবে না। এই বিবরে বিবেচনা করিরা দেথিবেন। বনশ্পতিতে ভেজালের কথা আমিও শুনিয়াছি। সন্তা প্যারাফিন তৈল উহাতে ভেজাল দেওরা সম্ভব। নারিকেল তৈলে এবং অপর তৈলের সহিত ইহা ভেজাল দেওরা হয়। উচ্চ বা নিয়তাপে গলিবে এক্সপ বনশ্পতি ইচ্ছামত তৈরারী করা বার। উচ্চ তাপে গলে এইরূপ বনশ্পতি তৈয়ারী করিরা উহা সলাইরা উহাতে হোয়াইট অয়েল ভেজাল দেওরা বার। ব্যবসারীদের পক্ষে ইহা সহজ্ঞসাধ্য। বনশ্পতিতে রাসারনিক গন্ধ দিরা উহাকে হুগন্ধ করার আপনি আগভি করিরা ঠিক করিরাছেন। উহার কলে খুত উৎপাদন বিনষ্ট হইবে। "বৃত্তের চেরে বনশ্পতি

সন্তা, তাই উহার রদ করা ঠিক নয়'—এইরাপ মন্তব্যলিখিত কাগজে এজেন্টরা লোকের স্বাক্ষর সংগ্রহ করিতেছে। একটি বিজ্ঞপ্তিতে বলা হইয়াছে, বনস্পতি রদ হইলে ঘিরের দাম তিনগুণ হইয়া যাইবে। এইরাপ মিথাা বিজ্ঞাপন প্রচার খাত্য-মন্ত্রীর দপ্তর কেমন করিয়া সহ্ করেন বৃঝি না। —হরিজন প্রিকা

কংগ্রেসের হাতে দেশের শাসন ভার আসিবার পর অনেকেই অভিযোগ করিয়া থাকেন যে প্লিশের কর্ম-ক্ষমতা ও মর্যাল অনেক থারাপ হইয়া গিয়াছে। ইহার কারণ লইয়া অনেকেই অনেক প্রকার গবেষণা করিয়াছেন। কিন্তু সম্প্রতি কলিকাতা পুলিশ জ্পাল এই সমস্তার মীমাংসা করিয়া দিয়াছেন। তাহারা বলিয়াছেন, কম থাইয়া ও খারাপ থাইয়া পুলিশের স্বাস্থ্য ও মর্যাল নই হইয়া গিয়াছে। পুলিশের রেশনের "চাউল ও আটা নিকৃষ্ট শ্রেণীর" না হয় হইতে পারে, কিন্তু শ্রেণীর" বা হয় হইতে পারে, কিন্তু শ্রেণীর তাহা হইলে সাধারণের অদৃষ্টের কথা ভাবিয়া আর কি হইবে দু

জুলাই হইতে ডিসেম্বর পর্যান্ত ভারত সরকার বিদেশে ২০। কোট গজ মোটা ও মাঝারি ধরণের কাপড় রপ্তানী করিতে দিবেন বলিয়া যে সিদ্ধান্ত করিয়াছেন তাহার যুক্তিযুক্ততা বুঝা যাইতেছে না। ভারতের কলসমূহে গত ১৯৪৮ সালে ৪৬২ কোটী গজ কাপড় উৎপন্ন হইয়াছিল ১৯৪৯ সালে উহা হ্রাস পাইয়া ৩৯০ কোটী ৪২ লক্ষ গজে পরিণত হয়। চলতি বংসরের এপ্রিল পর্যান্ত ৪ মাসে কলগুলিতে ১২০ কোটা গঞ্জে কিছু বেশী কাপড় উৎপন্ন হইয়াছে। এই হিসাবে কাপড় উৎপন্ন হইতে চলতি বংসরের শেষ পর্যান্ত দেশে ৩৬০ গজের বেশী কাপড় উৎপন্ন হইটে বলিয়া মনে হয় না। উহার মধ্যে মিহি ও অতি-মিহি ধরণের কাপড়ে? পরিমাণ হ'ইবে ১৬০ কোটী গজ এবং উহা সাধারণতঃ সহরসমূহের চাহিদ মিটাইতেই নিয়োজিত হইবে বলিয়া পল্লী অঞ্চলে এই ধরণের কাপড় হইতে কিছুই সরবরাহ হইবে না। বাকী ২০০ কোটা গজ কাপ্ড মোটা ও মাঝারি ধরণের। উহা হইতে গবর্ণমেন্ট পূর্ব্বেই ১০০ কোট গজের মত কাপড় বিদেশে রপ্তানী হইতে দিবেন বলিয়া যো^{ন্ধ} করিয়াছিলেন। এক্ষণে পুনরায় উহারা আরও ১২॥ কোটা গজ কাপড় রপ্তানীর অনুমতি দিলেন। উহার ফলে ভারতে জনসাধার^{ণের} ব্যবহারোপযোগী কাপড়ের যোগান প্রয়োজনের তুলনায় অনেক কম হইর্গ দাঁড়াইরাছে এবং সঙ্গে সঙ্গে কাপড়ের একটা চোরাবাঞ্জার নৃতন্ভা^{বে} পড়িয়া উঠিয়াছে। প্রবর্ণনেন্ট অবশু মিলস্থিত কাপড় আটক করিয়া এ^{বং} কাপড় বিক্রয়ের বিবিধ বিধিনিষেধবলে এই সমস্তার একটা প্রতি^{কার} করিতে চেষ্টা করিতেছেন। কিন্তু ইতিপূর্বের কাপড় সম্পর্কে গবর্ণমেণ্টের অবল্যতি সম্ভ প্রকার কর্মপন্থা বার্থ বলিয়া প্রতিপন্ন ছই^{রাছে ।} বর্ত্তমানেও যে অধিকতর স্থাকল পাওয়া যাইবে তাহার ভর্সা ক্^{ম।} এরূপ অবস্থার গবর্ণমেণ্টের পক্ষে নৃত্তন করিয়া বিদেশে মোটা ও মার্বারি

ধরণের কাপড় রপ্তানী করিতে দেওয়া সমীচীন হয় নাই বলিয়াই আমর।
মনে করি।
—আর্থিক জগৎ

প্রাকৃতিক ছর্ম্যোগ, দাকাহাকামা, অনাহার, অনশন প্রভৃতি ছাড়াও প্রতি বছর (অব্ধ্ ও) ভারতবর্ধে অব্ধ্রে ভূগিয়া মারা যায় প্রায় ওং লক্ষ লোক। তার মধ্যে অবে ভূগিয়া মরে ৩৬ লক্ষ, যক্ষায় ৫ লক্ষ, পেটের অব্ধ্রে ও লক্ষ, বসস্ত রোগে ৭৫ হাজার, কলেরায় ৫০ হাজার, মেগে ২০ হাজার। এ দেশের সর্ব্বাপেক্ষা মারাক্সক ব্যাধি ম্যালেরিয়ার মৃত্যুর হার প্রায় সাড়ে বারো লক্ষ। ভারতের অধিবাসীর প্রায় শতকরা ১০ জন থাকে গ্রামাঞ্চলে, অব্দ সেইখানেই চিকিৎসার দারণ অব্যবস্থা। শতকরা ১০ জন ডাক্তার মাত্র থাকে গ্রামে। এই ভয়াবহ মৃত্যু-সংখ্যার প্রতি গ্রন্ধিনেটের অব্হিত হওয়া কপ্রবা। —প্রবর্তক

গত ওরা আগষ্ট কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ১৯৫০ খুষ্টান্দের মাটি,কুলেশন পরীক্ষার ফল সাধারণ্যে বাহির হইয়াছে। ৩৮৩৩৫ জন ছাত্র-ছাত্রী এই বৎসর পরীকা দিরাছিল। তাহাদিগের মধ্যে ১২৯৩৮ জন মাত্র পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছে বলিয়া ছোবণা করা হইয়াছে অর্থাৎ পরীক্ষার্থীদিগের মধ্যে শতকরা মাত্র ৩৪ ৩ জন এই পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছে। সার আওতোষের যুগের কথা ছাড়িয়া দিলেও গত বংসরও এই পরীক্ষায় শতকরা ৫০ জন ছাত্র-ছাত্রী উত্তীর্ণ হইয়াছিল। ৫০ জনের স্থানে হঠাৎ একেবারে ৩৪ জন হওয়ায় শুধু ছাত্রদমাজ নহে-শিক্ষক, ছাত্র, অভিভাবক, কুল ও কলেজ কর্তৃপক্ষ—এমন কি বিভোৎসাহী সাধারণ লোকের মধ্যেও একটা বিষম চাঞ্চল্য আল্লপ্রকাশ করিরাছে। সেই চাঞ্লোর পরিণতি দেশের শিক্ষা বিস্তারের পরিপন্থী—কি সহারক হইবে তাহা এখনই বলা ষতই শক্ত হউক না কেন, ইহাতে যে একটা ভীষণ মন-ভাঙ্গা নৈরাশ্যের ভাব এক সম্প্রদার লোকের (এবং তাহাদিপের সংখ্যাই খুব বেশী) আশা, আকাজ্ঞা, উৎসাহ, উত্তম একেবারে পঙ্গু করিয়া দিয়াছে তাহা একেবারে ধ্রুব সত্য এবং ইহার প্রতিক্রিরাও যে অতি অল্পিনের মধ্যেই সমগ্র দেশ ও সমাজের উপরে পরিব্যাপ্ত হইবে সে বিষয়ও কোন সন্দেহ নাই। —বিশ্ববর্জা

মুর্শিদাবাদের খাগ্রপরিস্থিতি

শ্রীশোভেন্দ্রমোহন সেন

গত ৫ই আগপ্ত মুর্নিদাবাদ জেলার প্রধান সহর বহরমপুরে প্রায় পাঁচ হাজার বুভূকু নর-নারীর এক ভূখা মিছিলের সমাবেশ জেলা ম্যাজিপ্টেটের কুটার সন্মুখে সমবেত হয় ও জেলা ম্যাজিপ্টেটের নিকট থাডের দাবী জানাইতে গিলা কাঁলুনে গ্যাস ও লাঠির দ্বারা পুলিশ কর্জ্ক নিগৃহীত হয়। বহরমপুরে বুভূকু নর-নারীর প্রতি পুলিশের এই ছুর্বাবহার সমগ্র পশ্চিমবঙ্গে বিশেষ অসপ্তোষ স্প্তি করিয়াছে এবং কলিকাতার ইহার প্রতিবাদে সভা অফুজিত হইলাছে। ইহার সহিত বেশের লোকে অবগত ইয়াছে যে সমগ্র মুর্লিদাবাদ জেলার ভীষণ খাছসন্থট দেখা দিরাছে।

মূর্নিদাবাদ জেল'য় থাজসন্ধট কেন দেখা দিয়াছে সেই সন্থক্ষ আলোচনা করিতে হইলে সর্বপ্রথম বলিতে হয় যে, জেলায় থাজ্ঞশন্ত বিবয়ে পশ্চিমবক্স সরকার ভূল তথা বা পরিসংখ্যনের উপর নির্ভর করিয়া চলিয়াছেন বলিয়াই এই সন্ধট দেখা দিয়াছে। রাজ্য সরকার প্রথমেই এই ভূল সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন যে, মূর্নিদাবাদ জেলা থাজ্ঞশন্ত বিবয়ে উষ্ত অঞ্চল। পশ্চিম বঙ্গের পরিষদ সদক্ত ও মূর্নিদাবাদ জেলা কংগ্রেস কমিটার সভাপতি প্রীজ্ঞামাপদ ভটাচার্ঘ্য বহরমপুর হইতে প্রকাশিত জেলা কংগ্রেস কমিটার মুখপত্র সাথ্যাহিক 'গণরাজ' পত্রিকার মূর্নিদাবাদের বর্জমান থাজ পরিস্থিতি সন্ধক্ষে বিস্তারিত আলোচনা করিয়া যে বিবৃতি গত ১০ই প্রাবণ ভারিথের পত্রিকার দিয়াছেন তাহা পাঠ করিলে মূর্নিদাবাদ জেলার বর্জমান থাজ-পরিস্থিতি ও থাজ সন্ধটের বিবয়ে সকল ঘটনা আনিতে পারা যাইবে। জিনি বলিতেছেন—"বল্প বিভাগের পর ইইতেই থাজ বিভাগের অধ্বতন কর্মচারীটের রিপোর্ট অভ্যারী উচ্চতর

কর্তৃপক একটি ভ্রমাক্সক ধারণা করিলেন যে মুর্লিলাবাদ জেলা বাড়ভি অঞ্চল এবং সেই সজে সঙ্গে স্থির করিলেন যে হস্ততঃ ৩।৪ লক্ষ মণ ধান ও চাল অনামাদেই মুর্নিদাবাদ হইতে সংগ্রহ করা সহজ্ঞসাধা। তাঁহারা সব সময়েই এই কথাটা প্রচার করিয়া থাকেন। কিন্তু তাঁহারা এই সামান্ত কণাটা ভলাইয়া দেখেন না যে মুর্নিদাবাদ জেলার ৪টি মহকুমার মধ্যে এট মহকুমাই ঘাটতি অঞ্ল। একমাত্র কান্দী মহকুমাতেই ধাঞ্চ চাউল উষ্ত থাকে। মুর্লিদাবাদ জেলার প্রায় অর্ত্তাংশ, যাহা বাড়তি অঞ্ল বলিয়া খ্যাত ভাহাতে যে ফদল উৎপন্ন হয় ভাহার মধ্যে রবিশস্ত. পাট, নানা প্রকার শাক-সজী এবং সামাল্ত পরিমাণ ভাতুই ধাল্ত হয়। যে পরিমাণ ভাতুই বা আউব ধান্ত উৎপন্ন হয় তাহা তাহাদের প্রয়োজনের তুলনায় অকিঞ্চিৎকর, মাত্র তিন মাদের খোরাক জোগার, বাকী নয় মাদ তাহারা রাঢ় অঞ্লের ধান চাউলের উপর নির্ভর করে। ১৯৪১ সালের আদমস্মারীতে মূর্নিদাবাদের লোক সংখ্যা ১৬,৪০,৫৩০ অন, তলাখ্যে ্ভাগীরখীর পশ্চিম কুলের লোক সংখ্যা ৮,২৭,৭৯১ হইবে। ভাগীরখীর পশ্চিম তীরে জঙ্গীপুর মহকুমার সাগরদিখী থানা এবং লালবাগ মহকুমার নবগ্ৰাম থানা ব্যতীত অভান্ত সমস্ত থানাই বাটতি অঞ্চল অৰ্থাৎ আবভাক মত ধান বা চাটল অংম না। সদর মহকুমার প্রায় সমস্ত অংশই ঘাটতি। যদিও এই অঞ্চলে প্রচুর ধাক্ত উৎপন্ন হর না, তথাপি রবিশক্ত পাট ও অক্তান্ত কদলে তাহারা যে আর করে তাহা উপরোক্ত বাড়ডি অঞ্লের তুলনায় অধিক। স্বাভাবিক অবস্থার পূর্ব-অঞ্চল পশ্চিম অংশের উপর তাহার আয়োলসীয় খান্তগতের লক্ত নির্ভরশীল এবং পশ্চিম

অংশ তাহার উৎপন্ন ধাক্ত চাউলের বিনিময়ে পূর্বাংশ হইতে আবশুকীয় ডাল, তরীতরকারী প্রভৃতি পাইয়া থাকে। মুর্শিদাবাদের অর্থনৈতিক কাঠামো এইভাবে বন্ন বিভাগের পূর্ব পর্বাস্ত ছিল, অধিকত্ত কয়েকটি भीशाखवडो थाना, यथा সমদেরগঞ্জ, সূতী, লালগোলা, ভগবানগোলা, জলঙ্গী প্রভৃতি রাজসাহী জেলার বরিন্দা অঞ্ল এবং বীরভূম জেলার কিন্ত বন্ধ ব্যবচ্ছেদের পর এবং বর্ত্তমান কনট্রোলপ্রথা চালু থাকার উক্ত অর্থ নৈতিক অবস্থার বিপর্যার ঘটরাছে এবং সম্বট দেখা দিরাছে। ধাত্যপত্ত অভাবের প্রধান কারণ, এই সমস্ত অঞ্চল হইতে থাতাপত্ত আনরন বন্ধ এবং ঘাটভি অঞ্চলকে বাড়ভি অঞ্চল বলিয়া প্রচার করিয়া তাহা হইতে থান্তপত সংগ্রহ করিয়া জেলার বাহিরে পাঠান। মূর্নিদাবাদ জেলার মোট জমির পরিমাণ ১৩-৭--- একর এবং একণে ১৪৬৮-২ একর আবাদী বা আবাদযোগ্য। ইহার মধ্যে কিঞ্চিদ্ধিক ৩০৯০০০ দোকসলি এবং ১২৬০০০ একর আবাদযোগ্য পতিত বলা যাইতে পারে। আমন ধান্ত মোট ৪১৯৯৪৯ একর জমিতে হয় এবং আউদ ২০৫০০০ একর। Floud Commission এর মতে একর প্রতি গড়পড়তা আমন ১৭ মণ এবং আউন ১৫ মণ হইরা থাকে। এইরূপে ভাগি ধান সমেত মুশিদাবাদ জেলায় ১৮৮৭০০০ মণ ধান্ত উৎপন্ন হয়। ১৯৪১ সালের আদমহুমারীর গণনা ধরিলে লোকসংখ্যা ১৬৪০০০, বর্ত্তমানে **আকৃতিক নিয়মে** বৃদ্ধি হইয়া আরও ১৬০০০ হইবে। বঙ্গ বিভাগের পর পূর্ববঙ্গের উদাস্ত কম বেশী প্রায় ৫০০০০ লোক আসিরাছে এবং পত ফেব্রুয়ারির হাঙ্গামার পর হইতে আরও ৫০০০ লোক আসিরাছে। এই সমস্ত কারণে ১৯ লক্ষ লোকের অরসংস্থান এই জেলা ছইতে করা সম্ভব : কিনা প্রথমতঃ তাহাই বিবেচনা করিতে হইবে, পরে উষ্তের কথা। সরকার তরফ হইতে এমন প্রচার করা হয় যে গড়পড়তা ৭/০ মণ ধান বৎসরে একজন লোকের পক্ষে যথেষ্ট, কিব Floud Commissionএর reportএ অনেক গবেষণার পর স্থির হইয়াছে যে প্রভাক ব্যক্তির রৎসরে ১/• মণ ধানের কম চলে না। একণে ১৯০০০ লক লোকের জন্ম ৯/০ মণ হিসাবে ধরিলে ১৭১০০০০ মণ থাক্তের প্রয়োজন। যদি আমরা ৭/০ মণ হিসাবেও ধরি তাহা হইলেও ১৩৬০০০ মণ ধাঞ্জের প্রয়োজন। উপরোক্ত হিসাব হইতেই **(मथा याहेरद रय जानारमंद्र এथनं ७ ०२००० जबंदा ४१००० मण रान** কমপক্ষে প্রয়োজন এবং উহা বাহিব হইতে আনা প্রয়োজন।" এভাষাপদ ভট্টাচার্ব্য যে বিবৃতি দিয়াছেন তাহা পাঠ করিলেই মূর্ণিদাবাদের থান্তপরিস্থিতির পূর্ণ বিবরণ পাওয়া যাইবে। আমি ইচ্ছা कतिबारे এरे বিবৃতি উদ্বৃত করিলাম এই কারণে—বে সরকার এই বিবৃতিতে উলিখিত বিষয় অস্বীকার করিতে পারিবেন না। ইহা কোনো রাজনৈতিক নেতার প্রোপাগাঙা নহে—ইহা পশ্চিমবঙ্গ সরকারের কংগ্রেসী দলের একজন প্রভাবশালী পরিবদ-সদস্তের স্চিন্তিত অভিমত। ইহা ছাড়াও উভর বঙ্গে যে সাম্প্রদারিক হারামা ঘটরা গেল তাহার জন্ত দেশের সকল সম্প্রদারের মধ্যে বে একটি অমিশ্চিতভার ভাব দেখা

দিরাছিল তাহারই কলে মুর্শিদাবাদের মুসলমান অধ্যুবিত এলাকাসমূহে
চাবের কার্য এবারে আদে হর নাই বলা যায়। তহুপরি ভারত
সরকারের উৎসাহে জেলার এবারে পাটের চাব বেশি হইরাছে। এই
সকল কারণ ছাড়াও জেলার বছস্থানে অভিরিক্ত বর্ধার কলে বছ জমি
কসল সমেত জলমগ্র হইলা গিরাছে। কলে জেলার স্বাভাবিক অবস্থার
যে পরিমাণ ধাক্ত উৎপদ্ধ হয় তাহা হইতে পার নাই।

অবচ জেলার থাত্তদংগ্রহ অভিযান (Procurement drive)
পুরাদমেই চলিয়াছে। থাত্তদংগ্রহ ব্যাপারে জেলার অধিবাসীরা
সরকারের সহিত প্রথম হইতেই একমত নহেন। সরকার হইতে বলা
হর যে থাত্তসংগ্রহ করা হর এই কারণে যে জেলার প্রয়োজনের সমর
সংগৃহীত থাক্ত বা চাউল বাজারে ছাড়া হইবে। কিন্তু এবারে দেখা
গেল যে জেলার যখন থাতাভাব চরমে উঠিয়াছে, চাউলের দর যখন
হানে হানে ৫০,১৬০, পর্যান্ত উঠিয়াছে, তখন সরকারের শুদামে আদৌ
ধাক্ত বা চাউল নাই। ভুল পরিসংখ্যানের উপর নির্ভর করিয়া সরকার
যে থাতানীতি গ্রহণ করিয়াছিলেন বর্তমানের থাত্তশক্ষিত তাহারই
অবগ্রন্তাবী ফল।

বিগত ছই মাসকাল হইতে মূর্নিদাবাদের থাত পরিস্থিতি এক ভয়াবহ আকার ধারণ করিয়াছে। অধিকাংশ লোকেই চাউলের বর্ত্তমান বাজার দরে চাউল ক্রয় করিতে পারিতেছে না। কিছুদিন হইতে রেশনের মাধ্যমে কিছু চাউল লোকে পাইতেছিল, কিন্তু তাহার পরিমাণও প্রয়োজনের তুলনার অল্প। সম্প্রতি রাজ্য-সরকারের থাত্তমন্ত্রী যে বিবৃতি দিয়াছেন তাহাতে জানা যায় যে মূর্নিদাবাদে বর্ত্তমানে ১৮৭০০০ লোক আংশিক রেশনভূক্ত হইরাছে। ১৯ লক্ষ্ণ লোকের মধ্যে মাত্র ১৮৭০০০ লোকের রেশন লাভ পুবই অকিঞ্ছিৎকর। জেলার সর্বত্তই আজ ছভিক্রের করাল ছায়া দেখা যাইতেছে। অনাহারজনিত মৃত্যুর সংবাদও পাওরা যাইতেছে। সরকার অবশু এই সকল মৃত্যু শীকার করিবেন না।

বর্ত্তমানে বহরমপ্রের বাজারে চাউল যাহা বিক্রয় হইতেছে তাহার দর ৪০, টাকার উপরে। সদর মহকুমার অন্তর্গত গ্রামাঞ্চলে চাউলের দর আরও বেলি। অধিকাংশ লোকই চাউল ক্রয় করিতে অসমর্থ হইয়া ছোলা, মটর ইত্যাদি অথবা শাকসব্কী থাইয়া জীবনীশক্তি বজায় রাখিবার চেট্টা করিতেছে। গত ৫ই আগষ্ট বহরমপুর সহরে যে ভূথা মিছিল বাহির হইয়াছিল তাহা স্বতক্ষ্ ভাবেই হইয়াছিল। দীর্থদিন ধরিয়া অর্কাহারে থাকিয়া জনচিত্ত বিক্র্ হইয়া উঠিয়াছিল। সম্প্র জোয় নরনারী থাআভাবের কল্প যে অবর্ণনীয় ছর্মশাভোগ করিতেছে ও তাহার কল্প যে বেদলা তাহাদের হালয়ে প্রীভূত হইয়া উঠিয়াছে—৫ই আগস্থ তারিথের ভূপা মিছিল তাহারই প্রকাশ মার। ইহাকে রাজনৈতিক প্রোপাগ্যাপ্তা বলিয়া ইহার শুরুত্ব হাস করিবার চেট্টা করিলে মূল থাঅসমস্তার সমাধান তাহাতে আদে। ইইবে না।

ইহা স্বীকার না করিয়া উপার নাই যে বর্জমানে মূর্নিদাবাদে ছর্ভিক্ষের অবস্থা বিরাজ করিতেছে। ইহার স্বাপ্ত প্রতিবিধানের ব্যবস্থা প্রয়োজন। রাজ্য সরকার প্রেসনোট বাহির করিয়া বাহা প্রচার করেন তাহাতে জানা যায় যে তাঁহারা মুর্শিদাবাদের থাজাভাব সন্থলে সঞ্জাগ ও সচেতন হইরাছেন। রাজ্যের অপরাপর স্থান হইতে থাল্প, চাউল, গম ও আটা মুর্শিদাবাদে আনরন করিয়া থাজাভাব মিটাইবার চেষ্টা করা হইতেছে। ইহাতে অবশু অভাব কিরৎ পরিমাণে মিটিবে। ইহা ছাড়া সরকার হইতে আরও কয়েকটি ব্যবস্থা গ্রহণ করা প্রয়োজন। জনসাধারণ মনে করে যে মুর্শিদাবাদে হঠাৎ যে চাউলের অভাব দেখা দিল তাহার পশ্চাতে চাউল ব্যবসায়ীদের যথেষ্ট হাত রহিরাছে। সরকার হইতে যদি তাহাদের সম্পন্ধে কঠোর ব্যবস্থা অবলম্বিত হয়, তাহা হইলে আমরা মনে করি এখনও বেশ কিছু পরিমাণ চাউল জেলার বড় বড় চাউল-ব্যবসায়ীর নিকট হইতে পাওয়া যাইতে পারে। ইহা ছাড়া, জেলার অনেক বড় বড় জমিদার বা জোভদার আছেন বাঁহাদের মক্তু ধাল্য ও চাউল যে কোনো কারণেই হউক, সরকারী খাল্প সংগ্রহ বিভাগ গ্রহণ করিতে পারেন

নাই। ইংগাদের নিকট হইতে যে চাউল ও ধাস্ত পাওয়া যাইবে তাহাও পরিমাণে কম হইবে না। ইংগা হইল স্বন্ধ-মেয়াদী ব্যবস্থা। মুর্লিদাবাদের শাভ সমপ্রার সমাধানের দীর্ঘমেয়াদী ব্যবস্থা হইল একমাত্র এই যে, এই জেলাকে ঘাটতি অঞ্চল বলিয়া সরকারকে শীকার করিয়া লইতে হইবে ও ভবিছতে তদসুযায়ী নীতি নির্দ্ধারণ করিতে হইবে। জেলায় যে খাস্ত বা চাউল সংগৃহীত হইবে, তাহা যেন কোনো কারণেই জেলার বাহিরে চালান না যায় তাহার ব্যবস্থা করিতে হইবে। আবাদযোগ্য যে সকল জমি পতিত রহিয়াছে তাহাতে চাবের ব্যবস্থাও অবিলম্বে করিতে হইবে। ইহা যদি কার্যাকরী হয়, তাহা হইলে মুর্লিদাবাদের থাতা পরিছিত স্থায়ী-ভাবে উম্লতির পথে যাইবে নতুবা চিরকাল এই ভাবে ছিক্লের আবহাওয়া বিরাজ করিবে এবং জেলার নর-নারীবৃশ্বকে ভিক্লাভাও হাতে লইয়া অপরের করণার উপর নির্ভর করিতে হইবে।

তীর্থ

শ্রীকুমুদরঞ্জন মল্লিক

ই
তীর্থ জাতির ধর্মকেন্দ্র—
প্রাণকেন্দ্রই বটে,
সেই এনে দেয় স্থার উৎস
অধর সন্নিকটে।
দেহে মনে দেয় শক্তি অলৌকিক,
করে তেক্তোমর নিস্পাপ নির্ভীক,
ধৃলি রক্ত হয়, একই জন্মে
নৃত্র জন্ম ঘটে।

করে সে অসাড় নুপ্ত স্থপ্তে বিদ্যাৎ সঞ্চার, দেয় লাঞ্চিত সর্বহারারে অমৃতের অধিকার। তীর্ধ করায় অর্গের সাথে যোগ, এক পংক্তিতে করুশামৃত ভোগ, জুড়ায় অক আনি তরক

হতে প্রেম পারাবার।

ছাই অরাতি প্রথমেই করে,
তীর্থ কলকিত,
সবল সরল জাতিরে করিতে
ভীত ও জীবদ্যুত।
রোধিতে জীবনী শক্তি প্রপ্রবণ,
হরণ করিতে সর্বপ্রেট ধন,
তীর্থ হারালে জানে জাতি হবে
সত্য সর্বব্যত।

রাষ্ট্রের কাজ সর্বপ্রথমে
তীর্থ রক্ষা করা।
দেশ রক্ষার প্রথম সোপান
নষ্ট-তীর্থ গড়া।
সেনা, রণতরী, বিমান, অস্ত্রাগার,
সব চেয়ে জয়ে বেশী প্রয়োজন তার,
সেই কোষাগার, সর্বশ্রেষ্ঠ—
পরমার্থেতে ভরা।

তীর্থ জাতির পরমাশ্রয়
মহালক্ষীর দান,
সকল প্রেরণা, সকল সাধনা,
সব সিদ্ধির স্থান ।
তেজের খনি, সে স্পর্শমণির ভূমি,
সতী অব্দেতে গঠিত তা জানো ভূমি,
সকল পতন তুর্গতি হতে—
সে করে পরিত্রাণ।

মধন্তরে ছথে বিপ্লবে
জেনো জাতি জীয়ে রবে,
তীর্থ ধ্বংসে শক্তিহারা সে
নিতি অধোগতি লভে।
হারায় মহন্তত্ত ও স্বাধীনতা
ইতিহাস হতে মুছে বায় তার কথা
অপাংক্তেয় সে জীবন এবং
জগতের উৎসবে।

নাই। দুর হইতে দেখিয়াছি, অতি সুন্দর পুরুষ। আর শুনিরাছি, তিনি ভাবুক—অদৃষ্টবাদী—'

রট্রা রমণীস্থলভ প্রশ্ন করিলেন—'তাঁহার ক্যটি মহিনী ?'

চিত্রক বলিগ—'স্কন্দ কুমারত্রতধারী, বিবাহ করেন নাই।'

রট্টা বিক্ষারিত নেত্রে বলিলেন—'আকর্য।'

চিত্ৰক নিজের কথা ভাবিতে ভাবিতে বলিল— 'আশ্চর্য বটে! কিন্তু এরূপ আশ্চর্য ঘটনা পৃথিবীতে অনেক ঘটিয়া থাকে। আমার যোদ্ধনীবনে আমি অনেক দেখিয়াছি।'

'তবে দেই সব কাহিনা বলুন। আমি ভনিব।'

রটার আগ্রহ দেখিয়া চিত্রক একটু হাসিল। অঞ্চানিত ভাবে তাহার মনের তিজ্ঞতা দূর হইতেছিল। মনের মধ্যে অনেক বিরুদ্ধ ভাবনা জমা হইলে মাস্থ্য হৃদয়-ভার লাঘ্য করিছে চাহে, আগ্রকথা বলিবার স্থযোগ পাইলে স্থাই হয়। চিত্রক ধীরে ধীরে নিজ জীবনের অনেক কাহিনী বলিতে লাগিল। কেবল আগ্র-পরিচয়টি গোপন করিয়া আর সব সত্য কথা বলিল। যুদ্ধের বিচিত্র অভিজ্ঞতা, নানা দেশের নানা মাস্থ্যের অভুত আচার ব্যবহার, তাহাদের বেশবাস কথাবার্তা—

এদিকে ঘোড়া ছুইটি চলিয়াছে; পথেরও বিরাম নাই। উপত্যকার ছারাণীতল হুইয়া, অধিত্যকার রবিতপ্ত হুইয়া কদাচিৎ গিরি নির্মারিণীর জলে অঙ্গ ডুবাইয়া পথ চলিয়াছে। কিন্তু পথের দিকে কাহারও লক্ষ্য নাই। রট্টা তদ্মর হুইয়া গল্প ভানিতেছেন।

যে গল্প বলে এবং যে গল্প শোনে তাহাদের মধ্যে ক্রমশ মনোগত ঐক্য স্থাপিত হয়, তুইটি মন এক স্থারে বাঁধা হইয়া যায়। চিত্রক গল্প বলিতে বলিতে কলাচিৎ সচেতন হইয়া ভাবিতেছিল—কী আশ্চর্য, মনে হইতেছে আমি একাস্ত আপনার জনকে আমার জীবন কথা শুনাইতেছি! আর রট্টা—তিনি বোধহয় কিছুই ভাবিতেছিলেন না, শুধু এই জলপকের সন্তার মধ্যে নিমগ্ন হইয়া গিয়াছিলেন।

দীর্থকাল নানা কাহিনী বলিবার পর চিত্রক ধেন চমকিয়া সঞ্জাগ হইয়া উঠিল; অপ্রতিভ ভাবে বলিল— 'আর না, নিজের কথা অনেক বলিয়াছি।'

तहै। वनिरमन-'भात्र वन्न।'

চিত্রক হাসিল; একটু পরিহাস করিয়া বলিল-'রাজকঞাদের কি কুধা তৃফার বালাই নাই? ওদিন্থে
বেলা কত হইয়াছে তাহার সংবাদ রাখেন কি?'

রটা চকিতে উধের্ব চাহিলেন। সূর্য মধ্য গগনে কথন কোন দিক দিয়া সময় কাটিয়া গিয়াছে তিনি জানিত পারেন নাই।

রটা বলিলেন—'ছি ছি, এত গল্প বলিয়া নিশ্চ আপনার কুধার উদ্রেক হইয়াছে।'

চিত্রক বলিল- 'তা হইয়াছে। আপনার ?'

রট্টা সলভেজ হাসিলেন—'আমারও। এতক্ষণ জানিত পারি নাই। কিন্তু উপায় কি ? সঙ্গে তো খাছদ্রতা নাই

'উপায় আছে। ঐ দেখুন—' বলিয়া চিত্রক পার্শ্বে দিকে অঙ্গুলি তুলিয়া দেখাইল।

পাশাপাশি ত্ই শ্রেণী পাহাড়ের মাঝখানে অপরিস উপত্যকা, পথটি তাহার উপর দিয়া গিয়াছে। বাম পার্শে পাহাড়ে কিছু উচ্চে পাষাণগাতে সারি সারি কয়েক চিতুছোণ রক্ষ দেখা যায়; পাথর কাটিয়া মাহুষের বাসস্থা রচিত হইয়াছে। চিত্রকের অঙ্গুলি নির্দেশ অহুসরণ করি: রট্টা দেখিলেন— একটি দেবায়তুন; সম্ভবতঃ বুদ্ধের সংঘ এখানে যে মহুয়্ম বাস করে তাহার প্রমাণ, একটি গবা হইতে পীতবর্ণ বল্প লম্বিত হইয়া অল্স বাতা ত্লিতেছে।

চিত্রক বলিল—'যখন বস্ত্র আছে তখন মাহ্রম অব আছে; মাহ্রম থাকিলেই থাত থাকিবে। স্থতরাং আ বিলয় না করিয়া ঐ দিকে যাওয়াই কর্তব্য।'

রষ্টা হাসিয়া সন্মতি দিলেন। কিন্তু বোড়ার পি ওথানে ওঠা যাইবে না। ঘোড়া ছটিকে একটি শুলাকী স্থানে ছাড়িয়া দিয়া উভয়ে পাহাড়ের চড়াই ধরিলেন।

স্থানটি উচ্চ হইলেও ত্রধিগম্য নয়; উপরস্থ মহয়প চিহ্নিত একটি ক্ষীণ পথরেখা আছে। শিলাবন্ধুর অসমই পর্বতগাত্র বাহিয়া চিত্রক অগ্রে চলিল; রট্টা তাহ পশ্চাতে রহিলেন।

অর্ধদণ্ড পরে উপরে উঠিয়া রট্টা দেখিলেন, সংবই বটে পাবাণে উৎকীর্ণ কয়েকটি কক্ষ, সন্মুখে সমতল চত্ত্র চত্ত্রের মধ্যস্থলে তথাগতের শিলামৃতি। উপত্যকা হইট বে গ্রাক্ষগুলি দেখা গিয়াছিল তাহা সংবের পশ্চাৎভাগ।

রট্টা প্রথমে বৃদ্ধের ধ্যানাসীন মূর্তির সমূথে গিয়া দাঁডাইলেন। চিত্রকও পাশে দাঁডাইল।

রট্টা যোড়গন্তে ভক্তিনম কঠে বলিলেন—'নমো তদ্দ ভগবতো অরহতো সম্মো সম্মাদ্য।' যুক্তকর লগাটে স্পর্শ করিয়া রট্টা চিত্রককে বলিলেন—'আপনিও ভগবানকে প্রণাম করুন। বলুন, নমো তদ্দ ভগবতো অরহতো সম্মো সমুদ্ধস্স—।'

রট্টার অহসরণ করিয়া চিত্রক ভগবান তথাগতকে প্রণতি জানাইল; তারপর ঈষৎ বিশ্বয়ে রট্টার দিকে ফিরিয়া প্রশ্ন করিল—'আপনি এ মন্ত্র কোথায় শিখিলেন ?'

রট্র। বলিলেন—'আমার পিতার কাছে।'

প্রাঙ্গণে এতক্ষণ অন্ত কেই ছিল না; এখন প্রকোষ্ঠের ভিতর হইতে একটি পীতবেশধারী শ্রমণ বাহির হইরা আদিলেন। মুগ্তিত মন্তক, শীর্ণ কলেবর, মুথে প্রদন্ধ বৈরাগ্য। সহাস্তে তুই হন্ত তুলিয়া বলিলেন— 'আরোগ্য।'

রট্টা বজাঞ্জলি হইয়া বলিলেন—'আর্য, আমরা তুইজন কুধার্ড পাস্থ; বুদ্ধের প্রসাদ ভিকা করি।'

ভিক্স বলিলেন—'রট্টা যশোধরা, বৃদ্ধ তোমার প্রতি প্রদন্ধ। এদ, তোমরা ভিতরে এদ।'

ভিক্ষু তাহাকে চিনিয়াছেন দেখিয়া রট্টার মুখ আনন্দে উদ্দীপ্ত হইয়া উঠিল। তিনি বলিলেন—'আর্য আমাকে চিনিলেন কি করিয়া? পূর্বে কি দেখিয়াছেন?'

ভিকু বলিলেন—'দেখি নাই, তোমার বেশভ্যা হইতে অহমান করিয়াছি। মহারাজ ধর্মাদিত্যের কাছে যাইতেছ ?'

'মাজা। ইনি আমার সহচর, মগধের রাজদৃত।' ভিক্ একবার চিত্রকের প্রতি স্মিতদৃষ্টি নিক্ষেপ করিলেন; কিছু বলিলেন না।

অতঃপর সংঘছোয়ার প্রবেশ করিয়া হন্তমুথ প্রক্ষালন পূর্বক পথিক তুইজন একটি প্রকোষ্ঠে বসিলেন। ভিকু তাহাদের জন্ম থাল আনিয়া দিলেন; কিছু দিলে সিদ্ধ, কিছু সিক্ত চিপিটক, ক্ষেকটি শুদ্ধ দাক্ষাফল ও থজুর। কুধার সময়; উভায়ে পরম তৃথির সহিত তাহাই অমৃতজ্ঞানে আহার করিতে লাগিলেন।

আহারের সঙ্গে সঙ্গে কিছু কথোপকথন হইতে লাগিল।

রট্টা জিজ্ঞাদা করিলেন—'দেব, এখানে আপনারা কয়জন আছেন ? আর কাহাকেও দেখিতেছি না।'

ভিক্ষু বলিলেন—'আমরা চারিজন আছি। **তুইজন** রজ্ঞে জল ভরিতে গিয়াছেন। একজন পীড়িত।'

রট্টা মূখ তুলিলেন—'পীড়িত ? কী পীড়া ?

ভিক্ ঈষৎ হাসিলেন—'সংসার—পীড়া। সংখে থাকিলেও মারের হন্ত হইতে নিন্তার নাই।'

চিত্রক প্রশ্ন করিল—'স্থাপনারা এথানে নিঃসক্ষ থাকেন ? দিবারাত্র কি করেন ?'

ভিক্ বলিলেন—'সংসার ভুলিবার চেষ্টা করি।'
আগারান্তে আচমন করিয়া রট্টা আবার আসিয়া
বসিলেন, বলিলেন—'আর্য, কিছু উপদেশ দিন।'

ভিকু হাসিলেন—'ঝামি আর কী উপদেশ দিব।' সহস্র বৎসর পূর্বে শাক্যমূলির শ্রীমুথ হইতে যে বাণী নিঃস্ত হইয়াছিল তাহাই শুন।—'মন হইতে প্রবৃত্তির উৎপত্তি; মন যদি প্রসন্ন নিজসুর থাকে, স্থথ ছায়ার মতো ভোমার পিছনে থাকিবে।' *

রট্টা প্রণাম করিয়া বলিলেন—'আমি ধন্ত।'— ভিকুর পদপ্রান্তে একটি স্বর্ণ দীনার রাধিয়া বলিলেন— 'সংবের অর্থ্য।'

ভিক্ষু বলিলেন—'ম্বর্ণে প্রয়োজন নাই। কল্যাণি,
যদি সংঘকে দান করিতে ইচ্ছা কর, এক আঢ়ক গোধ্ম
দিও। দীর্ঘকাল আমরা গোধ্ম দেখি নাই। যে অমণটি
অমুদ্ধ তিনি গোধ্মের জন্ত কিছু কাতর হইয়াছেন।'
বলিয়া মৃতু হাসিলেন।

'সত্তর পাঠাইব'—বলিয়া রট্টা গাতোথান করিলেন। চিত্রক দণ্ডায়মান ছিল; সে শুঙ্গন্তরে বলিল—'মহাশয় আমাকেও কিছু উপদেশ করুন।'

ভিক্ প্রশান্ত চক্ষ্ তাহার পানে তুলিয়া গন্তীরকণ্ঠে বলিলেন—'শাকাম্ণির উপদেশ প্রবণ কর: "সে আমাকে গালি দিয়াছে, আমাকে প্রহার করিয়াছে, নিঃস্থ করিয়াছে"—এই কথা বে চিস্তা করে তাহার ক্রোধ কথনও শাস্ত হয় না। বৈরভাব কেবল অবৈরভাব দারা শাস্ত হয়, ইহাই চিরস্তন ধর্ম।' *

ধলপদ—যমকৰপ্গ

ছই অখারোহী আবার চলিয়াছেন। সূর্য তাঁহাদের বামে চলিয়া পড়িয়াছে। তীর্যক অংশু তেমন তীক্ষ নয়।

উভয়ে নিজ নিজ অন্তরে নিমগ্প; বাক্যালাপ অধিক হইতেছে না। চিত্রক গল্প বলিবার কালে রট্টার প্রতি যে ঘনিষ্ঠ অন্তরকতা অহভেব করিয়াছিল, তাহা আবার সংশয়ের কুল্পেটিকায় আছেল হইয়া গিয়াছে।

ভিক্ষু যে-কথা বলিলেন তাহার অর্থ কি ? বৈরভাবের পরিবর্তে অবৈরভাব পোষণ করাই স্বাভাবিক, অবৈরভাব কি করিয়া পোষণ করা যায় ? ইহা ভিক্ষুর ধর্ম হইতে পারে, ক্ষত্রিয়ের ধর্ম কদাচ নয়। প্রতিহিংসা ক্ষত্রিয়ের ধর্ম। শুধু তাহাই নয়, ইহা চিত্রকের প্রকৃতিগত স্বধ্ম। ইহা তাহার ধাতু।

অথচ—এত স্থবোগ পাইয়াও সে রট্টার উপর প্রতিহিংসা সাধন করিতে পারিতেছে না কেন ? রট্টা স্থলরী যৌবনবতী নারী—এই জন্ম ? স্থলরী নারীর মোহে সে ক্ষত্রিয়ের ধর্ম বিশ্বত হইবে ? পিতৃহত্যার প্রতিশোধ লইবে না ?

সহসা মেঘাচ্ছর আকাশে বিহ্যাচনকের স্থায় একটি চিস্তা চিত্রকের মনে খেলিয়া গেল। সে উচ্চকিত হইয়া বিক্ষারিত নেত্রে আকাশের চানে চাহিল। কোনু মৃঢ়তার জালে তাহার মন এতক্ষণ জড়াইয়া ছিল? এ কথা তাহার মনে উদয় হয় নাই কেন?

সে মনে মনে বলিল—আমি ক্ষত্রিয়, বৈরতা আমার স্বধর্ম; কিন্তু রট্টার সহিত বৈরতা করিব কেন? সে আমার অনিষ্ট করে নাই। তাহার পিতার অপরাধে তাহাকে দণ্ড দেওয়া ক্ষত্রিয়ধর্ম নয়! ধদি প্রতিশোধ লইতে হয় তাহার পিতার উপর লইব।

দারুণ সমস্থার সমাধান হইলে হৃদয় লঘু হয়। মুহুর্তে চিত্রকের অন্তরের কুজ্ঝটিকা কাটিয়া গিয়া জানন্দের দিব্য জ্যোতি ফুটিয়া উঠিল। সে উৎফুল নেত্রে রটার পানে চাহিয়া উচকতে হাসিয়া উঠিল।

চকিতে স্মিত নেত্র তুলিয়া রট্টা বলিলেন—'কি হইল ?'
চিত্রক বলিল—'ভিকু বলিয়াছিলেন, স্থুখ ছায়ার মতো
আপনার সঙ্গে সঙ্গে থাকিবে। ঐ দেখুন সেই ছায়া!'

রট্টা ঘাড় ফিরাইয়া দেখিলেন, সঞ্চরমান অখারত ছায়া নাচিতে নাচিতে তাঁহার সঙ্গে চলিয়াছে।

উভয়ে একসঙ্গে হাসিয়া উঠিলেন।

চারিদিকে বিস্তীর্ণ তরক্ষায়িত উপত্যকা। পাহাড় দুরে সরিয়া গিয়াছে। দূর হইতে তাঁহাদের হাসির গদ্গদ প্রতিধ্বনি ফিরিয়া আসিল। মেন মিলন মুহুর্তের সলজ্জ চুপিচুপি হাসি। কানে কানে হাসি। (ক্রমশঃ)

বিষ্ণুপুরে শিক্ষক সম্মেলন

শ্রীপরিমল মুখোপাধ্যায়

আরোজন চলতে লাগল—কলকাতা থেকে বিকুপুর, বিকুপুর থেকে কলকাতা। ১৯৪৭ সালে বর্থমান সম্মেলনের পর দেশবিভাগ ও নিথিল বংগ শিক্ষক সমিতিকে বিভক্ত করার আরোজনের জ্ঞপ্তে গত তু'বছর সাধারণ সম্মেলন হতে পারে নি। দীর্ঘ ২।০ বছর পরে বছ-আকাজিক এই সম্মেলনের জ্ঞপ্তে সমগ্র শিক্ষক-সমাজ যে উদ্গ্রীব হয়ে থাকবেন, তাত স্বাভাবিক। সেজস্তেই এবারকার আরোজন অধিকতর উৎসাহ ও উদ্দীপনার সংগে ক্ষক হল। ছানীর আহ্বারকমণ্ডলীর সংগে নিথিল বংগ শিক্ষক সমিতির কতু পক্ষ অভান্ত বারের তুলনার ঘনিষ্ঠতর হলেন।

প্রেপাত হয় ২৩শে এপ্রিল, বেদিন আমরা বাঁকুড়ায় বাই সমিতির ভর্ক থেকে আঞ্চলিক সভা করতে। সভা পেবে জেলা শিক্ষক সমিতির (নি. ব. শিক্ষক সমিতির জেলা শাধা) সভাপতি মহাশয় ও আমরা আগামী সম্মেলনের কথা উপস্থিত সকলকে জানাই। বিশুপ্র উচ্চ বিজ্ঞালর থেকে যে তিলজন শিক্ষক প্রতিনিধি আঞ্চলিক সভায় এসেছিলেন, তাঁদের অসুরোধ করা হয় ফিরে গিরে প্রধান শিক্ষক মণায়কে জানাতে। কিছুদিন পরেই প্রধান শিক্ষক শ্রীগোক্লচন্দ্র ঘোব জানালেন, রাজী। প্রথমে একটু আশ্চর্বই হয়েছিলাম—এত সহজেই এমন একটা বিরাট সম্মেলনের দায়িত্ব গ্রহণ করতে রাজী হলেন কী করে? সংগে অবশু এ কথাও লিখেছেন, আমাদের সক্রিয় সহযোগিতা পেলে তিনি কৃতকার্য হবেন বলে আশা করেন। সহযোগিতার প্রতিশ্রুতি জানালাম। তবু সংশর রইল—মকংখল সহর, প্রতিনিধির সংখ্যা পাঁচ শ'ও হতে পারে, হাজারও ইতে পারে, এতজন লোকের থাকা-খাওয়ার বন্ধাবত, এতজন লোকের

সংকুলান হতে পারে এমন একটি সম্মেলন-মগুপ বা সম্মেলনের স্থান চাই ত ?

সংশয় রইল না, ২রা জুন আমি ও সমিতির ভূতপূর্ব সম্পাদক থীবিনয়ভূষণ দেন গেলাম বিষ্ণুপুর পরিদর্শনে সম্মেলনের প্রাথমিক আয়োজনের জন্তে। সকালে গোকুলবাবু আমাদের নিয়ে ঘুরে ঘুরে দেখালেন সম্মেলনের স্থান। চমৎকার কাব্যিক পরিবেশ-শহরের একান্তে প্রণন্ত সিনেমা হল, বালিকা বিদ্যালয়, মধ্য ইংরেজী বিদ্যালয়, (क. क्रि. ইঞ্জিনিয়ারিং স্কল, তারপর উচ্চ বিভালয়ের বোর্ডিং ও উচ্চ विकालग्र—वार्डिः ও विकालराव मार्वः हेन्युकः हेनाव शास्त्रवव वाशी-বন্ধন; আরও এগিয়ে চলুন-বিশাল কাকচকু লালবাঁধ, তীরে রামানন্দ करनक, এ পাশে करनक स्टार्ट्डन। नानर्वारधत्र छभात्त्र भान-भित्रान-মহয়ার নিবিড় ঘনিষ্ঠতা, লাল কাঁকর আর পাশরের সমতল ও উঁচু-নীচু চিবি। খুশি হলাম, উৎফুল হলাম। ছ' সাত শ' প্রতিনিধির পাকবার মত জায়গা যথেষ্ট হবে। তা ছাড়া উচ্চ বিভালয়ের হল্-ঘরে ক্লাশের পার্টিশানগুলো সরিয়ে ছ' সাত শ লোকের সভাও চলবে। রূপকথা সিনেমায় অস্তত বারো শ' লোকের স্থান হতে পারবে-- স্বতরাং প্রকাশ উদ্বোধন অধিবেশন সেখানেই হবে দ্বির হল. কারণ প্রতিনিধি ছাড়া শহরের অধিবাসীরাও ত এই অধিবেশনে যোগদান করবেন। ফিরবার পথে খাতনামা বাবসায়ী শীরামনলিনী চক্রবর্তী সহাশয়ের বাড়িতে আমরা গেলাম। আলাপ-পরিচয়ে এবং সম্মেলন সম্বন্ধে আলোচনা করে বুঝলাম, গোকুলবাবু একটি চীনের প্রাচীরকেই পাকড়াও করেছেন।...বিকেলে উচ্চ বিভালর গৃহে শহরবাদীদের সভায় স্থানীয় অভার্থনা সমিতি ও বিভিন্ন উপসমিতি গঠিত হল। অভার্থনা সমিতির সভাপতি হলেন রামানন্দ কলেজের थशक श्रीवांशारशाविमा वांश ।

কলকাভার সমিতির কেন্দ্রীয় কার্যালরে সম্মেলন উপসমিতির ঘন ঘন সভা, সমিতির কর্তৃপক্ষের উদ্বেগ ও কর্মতৎপরতা, বিকুপুরের সংগে কলকাভার আন্মিক সংযোগ ও উপযুপরি পত্রাঘাত, গার্ডেনরিচ বি. এন. আর অফিসে বলি রিজার্ড করার জ্বস্তে ছোটাছুটি, ডাঃ ভামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যার ও অধ্যাপক দেবপ্রসাদ ঘোর মহাশয়দের বাড়িতে যাভারাত চলতে লাগল। প্রসাদপ্রাপ্ত (!) ঋতিক হু'জনেরই সম্মতি আমরা পেলাম—সবল দীর্ঘকার সাগ্রিক ভামাপ্রসাদ উ্রোধন করবেন, আর ক্ষুক্রকার কিন্তু রসিকতা ও পাত্তিভারে অর্থব দেবপ্রসাদ করবেন সভাপতিতা।

১৫ই জুলাই শনিবার ও ১৬ই জুলাই রবিবার সম্মেদন। ১৩ই রাত্রে চার মণ পটল নিয়ে রওনা হলাম। ভারটি যথন গোকুলবার্ আমার ওপর চাপান তখন তাঁকে বলেছিলাম, 'পটল না তুলিয়ে আর হাড়বেন না দেখছি!' হেসে জবাব দিয়েছিলেন, 'তুলি ত ই'জনেই এক সংগে এথানে তুলব!' ১৪ই সকালে গিয়েই বিভালর গৃংহর প্রথান্তে পার্টিশান দেওয়া ছটি ঘর দ্ধল করে বসলাম। কার্যত এই ছটি ঘর নিধিল বংগ শিক্ষক সমিতির কার্যালয় হয়ে ইাড়াল।

যার যা কিছু দরকার, এই বরে এলেই পাবেন বা জানতে পারবেন ! সারাদিন ধরে শিক্ষক ও ছাত্র স্বেচ্ছাদেবকদের সংগে ঘূরে ঘূরে প্রত্যেক জেলার প্রতিনিধিদের বাসস্থানের জপ্তে পৃথক পৃথক ঘর ঠিক করা, প্রত্যেকটি প্রতিনিধি শিবিরে সম্মেলন সম্বন্ধে যাবভীর জ্ঞাতব্য বিষয় নির্দেশক প্রাচীরপত্র লাগানো, প্রতিনিধিদের প্রবেশ-পত্র ও ব্যাজ প্রভৃতির বন্দোবন্ত দেখলাম। পরে আর সময় হবে না ভেবে বিকেলে এক ফাঁকে শহরের ত্রপ্টব্য স্থানগুলি দেখে নিলাম। একটি হিন্দু ও একটি মুসলমান কিশোর ছাত্র হ'ল আমাদের গাইড্। দেখলাম দলমাদল, মদনমোহন মদনগোপালের ও ৮মুমুরী দেবীর মন্দির, শনি ঠাকুর প্রভৃতি। এই সতাপীর ও শনি ঠাকুরের कार्ष्ठ व्याञ्च हिन्तू-भूमलभारन भूरका (महा व्याद रायनाम, प्रक्र হিন্দু-মুসলমান কিশোর হাত ধরাধরি করে আমাদের পথ দেখিয়ে নিয়ে চলেছে! প্রাচীন ভারতীয় সভাতা ও শৌর্ধবীর্ধের ঐতিহ্নবাহী विकृश्वतक (मथनाम। ... मकाय किरत (मथनाम, ইভিহাস-মুপর প্রতিনিধিরা আসতে আরম্ভ করেছেন। আমাদের ধারণা ছিল, শনিবারের আগে প্রতিনিধিরা বড একটা আসবেন না। যাই হোক, শনিবারের মধ্যে অধিকাংশ প্রতিনিধিই এসে গেলেন। অবশ্র রবিবারও কয়েকজন এদেছিলেন। শেব পর্যন্ত প্রতিনিধির সংখ্যা দাঁড়িয়েছিল ছয় শতেরও উপর এবং তার মধ্যে ছিলেন পূর্ববংগের প্রতিনিধি পঞ্চার জন ও মহিলা প্রতিনিধি পঁয়ত্রিশ জন।

১৫ই শনিবার সকাল সাড়ে সাতটা পর্যন্ত বিভিন্ন কাউন্টারে প্রতিনিধিদের পরিচরপত্র ও সম্মেলনের চাঁদা গ্রহণ করে প্রবেশপ্ত্র, বাাল, মৃত্তিত ভাষণাবলি, সম্পাদকীর কার্ববিবরণা প্রভৃতি বিতরপ করা হল। জলঘোগের পর সকাল ৮টার কে. জি. ইঞ্জিনিয়ারিং ক্লুলে হল শিল্প-প্রদর্শনীর উঘোধন। প্রশন্ত হল্মরের মধ্যে প্রবেশপথের দিকটা ছাড়া তিন দিকে পঁচিশ-ত্রিশটি ইল বসেছে। কলিকাতা থেকে সরকারি কর্মচারীরাও এসেছেন প্রদর্শনীর ব্যবস্থাপনা করতে। বিকুপ্রের নিজম্ব শিল্প-কুটীরজাত রেশম, তসর, গরদ, শাধারীর শাধ, পিতল-কাঁদার বাসন, মালাকারের শোলার কাল, পট ও প্তৃল, প্রাচীন পৃথি, অম্বরী তামাক, মতিচুর প্রভৃতি সব কিছুরই এমন একটি চমৎকার সমন্বর হরেছে যে, কল্পনা-প্রবণ মন যেন থেকে থেকে 'কালিদাসের কালে' ফিরে বেতে চাইছিল। অধ্যক্ষ দেবপ্রসাদ প্রদর্শনীর উল্লোধন করে প্রাচীন ভারতীয় শিল্পকলা, ভারতের জাতীয় শিল্প তথা কুটীর-শিল্প, ভারতীয় শিল্পকলার সংগে ভারতীয় সভ্যতার সংযোগ প্রভৃতি বিবরে একটি মনোজ্ঞ সংক্ষিপ্ত ভারণ দেন।

পথ লতা-পাতা দিয়ে আচ্ছাদিত করে এক মনোরম পরিবেশের স্থান্ট করা হয়েছে। উপরে প্রকাপ্ত লাল শাল্তে ঝলমল করছে, 'নিধিল বঙ্গ শিক্ষক সম্মেলন।' দক্ষিণায়নেও তাই। উপরস্ক দেখানে বিজয়গর্বে শৃক্তে উড়ছে বিকুপুরী রেশমের জাতীর পতাকা। সভাপতির আসন গ্রহণ করেছেন দেবপ্রসাদ। প্রবন্ধ ও কবিতা পাঠ, আবৃত্তি, বক্তৃতা, হাস্ত-কৌতুক প্রভৃতি চলল। একজন শিক্ষক 'My Familiar' কবিতার অমুবাদ ও আর একজন 'B. Tর মূল্যার' নামে একটি সংস্কৃত-বাংলা থিচুড়ী কবিতা পাঠ করলেন। ছটিই স্বর্হিত, অনাবিল হাস্তর্রসের মধ্যে শিক্ষক-জীবনের ব্যথা লুকায়িত। তব্ তারা পরিচয় দিলেন, এগনো হাসতে জানেন শিক্ষক সমাজ, এগনো সাহিত্য-সংস্কৃতির পালিশ আছে তাঁদের মধ্যে। পরিশেষে সভাপতি তার উদাত্ত কঠে সংস্কৃতির সংকট সম্বন্ধে ভাষণ দিয়ে ভারতের ল্প্র গৌরব ফিরিয়ে আনার জক্তে দেশমাত্ত্কাকে যে ভাব ও ভাবায় আহোন করলেন, তা বহুকাল মনে থাকিবে।

অপরাত্নে জলবোগ সারা হল। 'স্ক্রা সাওটায় সংগীত ও বিচিত্রাস্থটান। বিশূপ্রী সংগীতের ঐতিহ্ন আছে। ধারাট প্রাচীনপত্নী হলেও তার মধ্যে বনেদীয়ানা ও ঘরোয়ানার নিজস্ব বৈশিষ্ট্য আছে। বাতেপংগু সংগীতাচার্য শ্রীগোপেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশ্বকে ট্রেচারে করে নিয়ে আসা হল। মঞ্চের ওপর জলতরক্ষ, তবলা, পাথোয়ার, হারমোনিয়াম, এন্রাজ, সেতার, তানপ্রা প্রভৃতির সমাবেশ। অপত্ত গোপেশ্বরবাব্ চেয়ারে বসেই গ্রুপদ আরম্ভ করলেন, এপনো স্থালতি গুলগারী কঠস্বর, আওয়াজটি উদাত্ত, স্বর চিড়্ ধায় নি, রাগগুদ্ধ সংগীতের মৃক্র্নায় সমস্ত হল্যরটি গম্গম্ করতে লাগল, বিশেষ করে তার হাম্বীর রাগের বন্দেজাট ভালো লাগল। বিভিন্ন শিল্পীর কঠ ও যন্ত্রদংগীতে বেহাগ, ভীমপলশ্রী, আড়ানা, মালকোব, কাফি-সিল্পু প্রভৃতি সময়োপযোগী রাগের পরিবেশন মধুর হয়েছিল শিল্পীদের মধ্যে। শ্রীস্বেক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় ও রমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়ের নাম উল্লেপযোগা।

নেতিই বৰিবার সকাল ৮টার মূল সম্মেলনের উদ্বোধন।
ভাষাপ্রসাদবাব্র আগের দিনের কার্যস্টা ছিল বাঁক্ড়া শহরে।
স্বতরাং আমাদের উদ্বোধন রবিবারেই করতে হয়। রাপক্ষা চিত্রগৃহ
লোকে লোকারণা। সমস্ত প্রতীক্ষা সমস্ত উৎকণ্ঠার নিরসন করে
এলেন ভাষাপ্রসাদ—সংগে সাংবাদিক মাধননাল দেন, মেজর পি,
বর্ধন ও অধ্যাপক রাধাকুম্দ মুখোপাধাায়। সিনেমা-মঞ্চ বিশিপ্ত
অতিবিদের পদার্পনে ধক্ত হল। উদ্বোধন সংগীতের পর দেবপ্রসাদ
সভাপতির আসন গ্রহণ করলেন। তারপর বিপুল জয়ধ্বনির মধ্যে
ভাষাপ্রপাদ উঠলেন উদ্বোধনী বক্তৃতা করতে। উদান্ত কঠে তেজাদৃপ্ত
ভাষাপ্র প্রতারিশ মিনিট বক্তৃতা দিলেন ভাষাপ্রসাদ। বাংলা
ও বাঙালীর প্রনিন, দেশের শিক্ষা-সমস্তা, বাজ্ঞহারা শিক্ষক ও ছাত্রের
সমস্তা তথা অর্থনিকট এবং সব কিছুর সংগেই ওতপ্রোত রাজনীতিক
গলদ সম্বন্ধে তিনি বললেন, শিক্ষা ও শিক্ষকের এই ছুর্ধোণের দিনে
স্বাব্রে প্রব্যেক্সন ঐক্যবন্ধতার। কিন্তু তিনি জানেন, শিক্ষক-সমাজের

অভ্যন্তরীণ ঐক্যের মধ্যেও ফাটল দেখা দিয়েছে। যদি প্ররোজন হর, তাহলে তিনি তার যথাসাধ্য সাহায্য ও মধ্যস্থতা করতে রাজী আছেন। বিপুল উল্লাম্পনি ও করতালি হ'ল। সকলের মন থেকেই যেন একটা বোঝা নেমে গেল। অভ্যর্থনা সমিতির সভাপতি ও মূল সভাপতির সারগর্ভ অভিভাষণ এবং সম্পাদকীর কার্যবিবর্গী পাঠের পর অধিবেশন শেষ হ'ল।

আহারের পর ভিন্নমতবাদী নেতৃবর্গ রামনলিনীবাবুর বাড়িতে সমবেত হলেন। ভাষাপ্রসাদ ও দেবপ্রসাদ আমাদের মনের বভ क्रिम यह शानि मृत करत मिलन। किरत अलाम ऋहे हिरत । हात्रमिरक যেন আনন্দের বান বইতে লাগল। সে এক মহামিলনের পবিত্র ক্ষণ! তিনটের সময় বিষয়-নির্বাচনী সভা আরম্ভ হল। চেৎলার এধান শিক্ষক শৈলেনবাবু প্রস্তাব উত্থাপন করতে লাগলেন, আর হরিদাস গোস্বামী, মনোরঞ্জনবাবু, ধীরেনবাবু প্রভৃতি সমর্থন করতে লাগলেন। সমস্ত প্রস্তাব নির্বিদ্রে পাশ হয়ে গেল। তার মধ্যে সমিতির কার্যক্ষেত্র পশ্চিমবঙ্গে সীমাবদ্ধ করা, বাস্তহারা শিক্ষক-শিক্ষিকাদের নির্বাচন ও कलानी. व्यागामी बाष्ट्रीय निर्वाहत्न निकक-ममार्कत व्यागार्थक উत्तर-যোগা। সন্ধারে পর কার্যনির্বাহক সভাপতি ও তিনজন সহ-সভাপতি নির্বাচনের পর সম্মেলন পর্ব পের হ'ল। নিখিল বংগ শিক্ষক সমিতির ইভিহাসে এমন একটি ফুশুংখল ফুব্যবস্থাপূর্ণ দক্ষেলন স্মর্ণীয় হয়ে রইল। দেখলাম মূল সভাপতির ক্যোগ্য পরিচালনা, দেখলাম স্থানীয় কর্মকর্তা এবং শিক্ষক-ছাত্র খেচছাসেবকদের উক্তম ও স্থানীয় জনসাধারণের সহযোগিতা। কিন্তু মনের কোণে রেদনা রয়ে গেল একটু। এই धंत्रापंत्र विवारे मान्यमान या इम्र, मृत्राक ও পत्राक निकटे वस्तू कात्र নেবার স্থযোগ মিলল না, প্রত্যেকের সংগে ব্যক্তিগত আলাপ-পরিচয়ের मामाजिक पिक्छ। खपूर्वहे हरा राज ।

পরদিন সকালে বিকুপুরের মাটিও মানুষের কাছ থেকে বিদার নিলাম।

ফিরবার পথের একটু বিবরণ না দিলে এ প্রবন্ধ অসম্পূর্ণ থেকে যাবে। প্রত্যেক কামরার শিক্ষক শিক্ষরিত্তীর সমাবেশ, এ যেন শিক্ষের ট্রেণ ৷ পড়াপুরে চা থেতে নেমেছি, এমন সময় একটি কামরায় ধরে নিয়ে গেল। অন্ত কামরা থেকে আরও ছ'চারজনকে সংগ্রহ ^{করে} আনা হ'ল। গিয়ে দেখি, পাঁচজন শিক্ষয়িত্রী ও ৮।১০ জন শিক্ষক আগে থেকেই সেথানে আসর জমিয়েছেন। হেমবাবুও বীরেনবাবুর মত ভারিকি প্রধান শিক্ষকও শিশুর মত সরল ও আনন্দ-চঞ্চল হরে উঠেছেন। কবি-গান হাস্ত-কৌতুক আবৃত্তি, সংগীত চলতে লাগল. কোন কুঠা, কোন জড়তা নেই। উপস্থিত প্ৰত্যেককে কিছু-না-কিছু অংশ গ্রহণ করতে হবেই। মনোরঞ্জনবাবু পরবর্তী ষ্টেশনে নেমে অপ্ত কামরার চলে গেলেন। সবচেরে উল্লেখযোগ্য হ'ল ঢাকার হ'টি অবিবাহিতা তরুণী শিক্ষয়িত্রীর 'কনে দেখা' হাক্তরস পরি^{বেশন।} একজন কনে'র অংশ, আর একজন বরপক্ষের অংশ গ্রহণ কর্লেন। কনে'র অংশটিই প্রধান। বিশেষ অভ্যন্ত না হলে এমন জনা^{বিল} উচ্চাংগের হাস্তরণ বিতরণ করা সম্ভব নর ৷ বছকালের ^{মধ্যে এত} হাসি আর হাসি नि।

বিশ্বের বিখ্যাত পত্রাবলী

অধ্যাপক শ্রীমাখনলাল রায়চৌধুরী শাস্ত্রী

আওরক্তেবের পত্র

পতাহবাদ:--

পত্র পরিচয় :--

১৬৬৪ সাল; আওরক্তেব দিল্লীর সিংহাসনে। দারার ছিল্লমুণ্ড মাতা তাজবিবির সমাধি পার্ছে প্রোথিত করা হয়েছে। মুরাদকে গোয়ালিয়র ছর্গে মিথাা হত্যার অপরাধে হত্যা করা হয়েছে। স্বজা আরাকানের জংগলে নিরুদেশ অথবা মৃত। লাভুষ্পুত্রদের "পপীর" (আফিঙএর) বিষপান করান হয়েছে—কেহ বা মৃত, কেহ বা উন্মাদ— অর্দ্ধপঙ্গু পিতা আগ্রার ছর্গে বন্দী। দিল্লীর সিংহাসন নিক্ষক । পৃথিবীর বিভিন্ন মুসলিম রাজ্য থেকে স্বীকৃতি ও অভিনন্দন জ্ঞাপনের জন্ত রাজদ্ত এসেছেন। দিল্লীর উৎসব শেষ হয়ে গেছে। ইরাণের রাজদ্ত কাব্লের পথে ইস্পাহান প্রত্যাবর্ত্তন করেছেন। সেই সময় আওরক্তেবের শৈশব-শিক্ষক মোলা সালেহ্র সঙ্গে ইরাণ রাজদ্তের সাক্ষাৎ হল।

মোলা সালেহ কে শাহজাহান পুরস্কার শ্বরূপ কাবুলের প্রান্তদেশে কিছু জায়গীর দিয়েছিলেন। বৃদ্ধ মোলা স্কুল্র পথ অভিক্রেম ক'রে দিল্লীতে উপস্থিত; তাঁর ছাত্র রাজ-সিংহাসনে—মোল্লার উদ্দেশ্য রাজদরবারে ওমরাহপদ লাভ। আওরজ্জেব তাঁর পুরাতন ওন্তাদকে জান্তেন। তিনমাস পর্যান্ত সমাট আওরজ্জেব মোলা সালেহ কে সাক্ষাতের অসমতি দেন নি। তিনি দরবারের বহু ওমরাহকে দিয়ে সংবাদ দিলেন—মোলা সালেহ সম্রাটের শৈশবের শিক্ষক, সম্রাটের দর্শনপ্রার্থী। প্রিয় সম্রাট-ভগ্নী রোশন্-আরার নিকট ব্যক্ত করলেন নিজের উদ্দেশ্য। আওরজ্জেব তিবল এই অপরণ পত্র।

এই পত্র ফরাসী পর্যাটক বার্ণিয়ার তাঁর অমণ কাহিনীতে লিপিবদ্ধ করেছেন। মৌলানা সালেহ.

আপনি আমার দরবারে ওমরাহের পদ আকাজ্জা করেছেন; আপনি কি স্থন্থ মনে এই কথা বিশাস কর্তে পারেন যে আপনাকে আমি এই ওমরাহের পদে প্রতিষ্ঠিত ক'রে পুরস্কৃত কর্তে পারি? আপনি আমার জল্যে কি করেছেন? আমাকে কি শিক্ষা দিয়েছেন? আপনি যদি আমাকে রাজপুত্রের উপযোগী শিক্ষা দিতেন, তবে— আপনাকে ওমরাহের পদে বরণ করে আমি কৃতার্থ হতাম। আমি বিশাস করি যে শিশু যদি তার শিক্ষক ছারা শৈশবে স্থাশিকত হয় তবে ভবিশ্বতে তার পিতা আর শিক্ষকের মধ্যে সে কোন পার্থক্য বিচার করে না।

চিন্তা ক'রে দেখুন ত' আপনি আমাকে কি শিক্ষা দিয়েছেন ? আপনি বলেছেন যে ফিরিঙ্গীন্তান (ইউরোপ) অত্যন্ত হীনন্তরের দেশ। সেখানে সর্বশ্রেষ্ঠ পর্ত্রালের সেই কুদ্র দ্বীপাধিপ, তারপর ওলন্দাজরাজ-उंक्तित्र मश्रास व्यापनि कि वरलहिन ? कताभी ७ त्व्यानत्र রাজার সম্বন্ধে বলেছেন—তারা হিন্দুস্তানের এক একটা সামন্ত রাজার মতন। আর বলেছেন যে হিন্দুন্তানের সমাট বিশ্ববিজয়ী, পৃথিবীর সর্বভাষ্ঠ, সর্ব্বোপ্তম নরপতি, সর্বশেষে वालाइन य हिन्दुलात्नत मुखाराहत नारम हेवान, डेक्टरान, कामगत्र, जूत्रांग, পেগু (बन्नारम), हीन, महाहीन त्रासा আতন্ধিত হয়ে উঠে। আপনার ভূগোলের সঙ্গে পরিচয় ছিল কি ? আমাকে এই রাজ্যগুলির সহস্কে নিভূল সংবাদ দেওয়া আপনার কর্ত্তব্য ছিল—তাদের সামরিক শক্তি, যুদ্ধ বিভা, তাদের ধর্ম, নীতি, সংস্কার, রাষ্ট্র-ব্যবস্থা জানলে আপনার ছাত্রের অনেক উপকার হত। এই রাজ্যগুলির নিভূল ইতিহাস, উত্থান-পতনের কাহিনী আপনার রাজকুমার ছাত্রের অবহিত হওয়ার প্রয়োজন ছিল। কোন সামাঞ্চ কেন, কবে, কি ভূল করেছিল, কি বিপর্যারের মধ্য দিরে, কি বিপ্লবের সমূখীন হয়েছিল তা' যে রাজপুত্রের অবশ্য জ্ঞাতব্য।

আমার বিশ্ববিশ্রত পূর্বপুরুষগণ এই বিরাট হিন্দুন্তান জয় করেছিলেন, আপনি কি তাঁদের জীবন কাহিনী, তাঁদের রাজ্যজয়ের নীতি আমাকে শিকা দিয়েছিলেন ? .

আপনার শিক্ষার উদ্দেশ্য ছিল আমাকে আরবী অক্ষর, ভাষা, পঠন, লিখন ব্যাপারে নিপুণ করবেন। বান্তবিক যে ভাষা আয়ন্ত কর্ত্তে প্রায় দশ বৎসর প্রয়োজন হয়, তার জন্ম আমার জীবনের কত মূল্যবান সময় নষ্ট করেছেন। আপনার ধারণা ছিল যে মুসলিম শাহ্ জাদার পক্ষে আরবী ব্যাকরণ শিক্ষা করা বা মুসলিম আইন পাঠ করাই জীবনের চরম চরিতার্থতা; অথচ সেই রাজপুত্রের পক্ষে ভাষা প্রতিবেশীর ভাষা শিক্ষার পরম প্রয়োজন আপনার ধারণার বহিত্ত ছিল, এই স্থাবি দশ বৎসরের মধ্যে আপনার ছাত্র কত মূল্যবান গ্রন্থ অধ্যয়ন কর্ত্তে পারতো—তা জানেন? একটি দানবের প্ররোচনায় এই শুদ্ধ, নীরস, সময়-সাপেক্ষ বিরক্তিকর কাজে আমাকে নিয়োজিত করেছিলেন।

আপনি শিশু মনের সঙ্গে পরিচিত নন। বৌবনে, বার্দ্ধক্যে মাহ্মর শৈশবের হুথ স্থৃতি বহন ক'রে কৃতার্থ হয়। শৈশবে যে উপদেশ ও শিক্ষার বীক্ষ শিশুর মনে বপন করা হয়, তা পরবর্তীকালে তার মনকে বৃহৎ কাজের উপযুক্ত করে দেয়।

আমাদের ধর্মণান্ত্র, সমাজ-বিজ্ঞান কি আমাদের
মাতৃভাষায় শেখা সম্ভব নয় (১)? আরবী ভাষার
মধ্য দিয়েই যে শিখতে হবে তার কি সার্থকিতা আছে?
মৌলানা সালেহ, আপনি আমার পিতা সম্রাট শাহ্লাহানকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন যে আপনি আমাকে
দর্শন শিক্ষা দিবেন । আমার বেশ মনে পড়ে আপনি বহু
বৎসর আমার সঙ্গে অন্তঃসারহীন তথ্য আলোচনা করেছেন
—সে সব তথ্য মানব সমাজের কোন প্রয়োজন সাধন করে
না, মানবচিন্তের তৃপ্তি সাধন করে না; সেগুলি শুধু কর্মনা,
চিস্তার বিলাস। সেই তথ্যগুলির মধ্যে একটা বস্তর
সন্ধান পেয়েছি—দর্শনের শক্ষ্তুলি অতিশয় ক্টবোধ্য
কিল্ক অতি সহজেই বিশ্বরণীয়। আপনার আলোচনার
রেশ এখনো আমার মনে পড়ে এবং আমি মনে মনে

আপনাকে করুণা করি। তবে সেই গুরুগন্তীর আলোচনার মধ্যে আমার মনে আছে কতকগুলি ভীষণশ্রুবণ শব্দ—সেইগুলি মাহ্নয়কে বিভ্রান্ত করে, সন্দিগ্ধ করে,
মাহ্নয়ের চিন্তাকে পরিভ্রান্ত করে; কিন্তু আপনার মত
পাণ্ডিত্যাভিমানীদের অহকারকে প্রসন্ন করে। এই বিকট
ও দ্ব্যর্থবাধক শব্দাভ্রুরের অন্তর্নালে বিশ্বের সমন্ত রহস্ত
আর্ত রয়েছে ভেবে আপনারা আত্ম-প্রসাদ লাভ করেন
এবং আপনারা সেই শব্দগুলির অর্থ-সম্পদের অধিকারী
ব'লে মাহ্নযের নিকট প্রশংসার দাবী করেন।

আলেকজাণ্ডার বেমন তাঁর শিক্ষক এরিষ্টটলের নিকট ক্বতজ্ঞ ছিলেন তেমনি আমি আপনার নিকট ক্বতজ্ঞ থাকতাম যদি আপনি আমাকে যথার্থ দর্শনের শিক্ষার দ্বারা অম্প্রাণিত কর্ত্তেন, যদি আপনার দর্শন আমার মনকে যুক্তিবাদী করে তুলত; যদি সংস্কারবিহীন যুক্তি আমার চিত্তকে বিভান্ত না করত, তবে সে শিক্ষা আমার চিত্তকে বিভান্ত না করত, তবে সে শিক্ষা আমার চিত্তকে ভাগ্য বিপর্যায়ে বিক্ষুক্ত করত না; সর্ব্বকালে সর্ব্ব অবস্থায় আমার মনের সমতা রক্ষা করত, ম্বথে আমাকে বিগতস্পৃহ করত, তুংথে আমাকে অমুদ্বিয়মনা করত। আপনি আমাকে আমার আল্বদর্শনের শিক্ষা দিতে পারতেন; এই বিরাট বিশ্বের অদীমতা এবং তার মধ্যে যে নিয়ম শৃষ্কাণ ও অন্থনিহিত ঐক্য রয়েছে তাও বলেন নি। এই শিক্ষা যদি আমাকে দিতেন তবে আক্র আপনার কোন আকাজ্রাই অপূর্ণ থাকত না।

ত্তব-স্তৃতি ও খোসামোদ না করে যদি আপনার রাজকুমার ছাত্রকে আপনি প্রজার প্রতি রাজার কর্ত্তব্য সহরে উপদেশ দিতেন! আপনি কি কথনো ধারণা করেন নি যে একদিন আমাকে আমার প্রাণ-রক্ষার জন্ত এবং সিংহাসনের জন্ত ভাতার বিরুদ্ধে অস্ত্র চালনা কর্তে হবে? আপনি কি আমাকে কথনো কোন তুর্গ অবরোধ কর্তে, অথবা সৈম্ভব্যুহ রচনা কর্তে শিক্ষা দিয়েছেন? এই সকল শিক্ষার জন্ত আমি অন্তের নিকট কৃতজ্ঞ—আপনার নিকট নয়। আমার বাদশাহী লাভের জন্ত আমি আপনার নিকট ঋণী নই। আপনি বাদ্শাহের নিকট কিছু আকাজ্ঞা করবেন না।

আপনি আপনার দেশে প্রত্যাবর্ত্তন করুন। আপনি

কে এবং আপনার পরিণাম জানবার জন্ত পৃথিবীর কোন মানবের প্রয়োজন নাই।

পত্র পরিণাম:--

এই পত্রথানির মধ্যে অভিরক্ষজেবের মনের একটা ন্তন পরিচয় পাওয়া যায়। আভরক্ষজেবের মনে ত্ই বিপরীত চিন্থাধারা বয়ে বেত — একটি মুদলিম আভরক্ষজেব, অস্টি সমাট আভরক্ষজেব। মুদলমানমাত্রই আরবী ভাষায় নমাজ পড়ে, পৃথিবীতে বছ মুদলমান আছে যাদের ভাষা আরবী নয় এবং যায়া আরবী বৄঝে না। সহজ্বাধা মাতৃভাষায় নমাজ পড়ার বিষয়ে ইমাম আরু হাণিকা ও সুবী ওমর থৈয়াম ইক্ষিত ক্রেছিলেন। আভরক্ষেক্তেও তাই করেছেন। কিন্তু মোলাদের বিরোধিতার ভয়ে দে বিষয়ে হয়জেশ করেন নি।

দর্শন সম্বন্ধে আওরঙ্গজেবের তীব্র কটাক্ষ বেশ

উপভোগ্য। এটা স্বাঞ্চাবিক, কারণ তাঁর রাজ্যে সঙ্গীত নিষিদ্ধ করে দেওয়া হয়েছিলো, স্তরাং দিল্লীর বছ সঙ্গীত-বিলাদী সঙ্গীতের মৃত্যু ঘোষণা করল। সঙ্গীতের কল্পিত মৃতদেহকে বহন করে আওরঙ্গজেবের মস্জিদের পথ অতিক্রম করে চলল, আওরঙ্গজেব জিজ্ঞানা করলেন—"আমার সংখ্রাজ্যে কে এই বিরাট পুরুষ যার শব যাত্রায় অত লোক সমাগম ?" উত্তরপোলন—"জাঁহাপনা—আপনি সামাজ্যে সঙ্গীত নিষিদ্ধ করেছেন, তাই দেশের লোক সঙ্গীতের মৃত্যু ঘোষণা করে সঙ্গীতকে করর দিতে চলেছে"। আওরঙ্গজেব গন্তীরভাবে বললেন—"বলে দেও যে করর যেন খুব গভীর ভাবে খনন করা হয়।"

আওরঙ্গজেব মাহুষের মূল্য বুঝতেন, প্রয়োজন মত সে মূল্য দিতে কার্পণ্য করতেন না। অন্ত দিকে প্রয়োজন হলে নির্মানহন্তে মাহুষের কঠরোধ করতে পারতেন এবং করেছেন। আওরঙ্গজেবের শিক্ষার দোষ সম্বন্ধে তিনি অচেতন ছিলেন না। মোলা সালেহ এর পত্র তার অন্তব্য প্রমাণ।

কলিঙ্গ-কুমারী

শ্রীহেমেন্দ্রপ্রদাদ ঘোষ

আজ হইতে চারিশত বংসর পূর্বের কথা। তথন উড়িয়ার খাধীন নৃপতিরা রাজ্য শাসন করিতেছেন। তাঁহারা শিল্পের পৃষ্ঠপোষক। যে রাজবংশ শৈব তাঁহাদিগের কীর্ত্তি যখন ভ্বনেখরে দ্বিতীয় কাশী রচনার চেপ্তায় আঅ-প্রকাশ করিতেছিল, তথনও উড়িয়ায় বৈষ্ণব ধর্মাত লুপ্ত হয় নাই এবং কণার্ককেক্সে প্র্যান্দিরে তাহার প্রভাব-পরিচয় প্রকাশ পাইয়াছিল। কেশরী রাজবংশকে পরাভ্ত করিয়া গলাবংশ উড়িয়ায় প্রাধান্ত লাভ করিয়াছিলেন। প্রায় শতবর্ষ পরে স্থ্বংশীয় কপিলেক্সদেব গঙ্গাবংশীয়-দিগকে পরাভ্ত করিয়া দিংহাসন অধিকার করিয়াছিলেন। তথন রাজধানী সমৃত্ততীরবর্তী পুরীতে স্থানান্তরিত হইয়াছে এবং স্থান্টি জগন্ধাথের মন্দিরের জন্ত শ্রীক্ষেত্র নামে মড়িছিত হইয়াছে।

ক পিলেক্রদেবের পুত্র পুরুষোত্তমদেব পিতার রাজ্য পাইয়া তাহার বিস্তার-সাধনে মনোযোগী হইয়াছেন। তিনি বীর—যোদ্ধা।

তিনি নিকটবর্তী কয়টি রাজ্য অধিকার করিয়া তথন আর কোন্ রাজ্য অধিকার করিবেন, তাংগই বিবেচনা করিতে-ছিলেন। সেদিন তিনি সেই বিষয়ে পরামর্শের জন্ম বৃদ্ধ মন্ত্রী, ভক্ষণ সেনাপতি প্রভৃতিকে সভায় আহ্বান করিয়াছিলেন।

নির্নিষ্ট সময়ে রাজা মন্দিরে দেব-প্রণাম করিয়া আসিলে
সভারস্ত হইল। সভার প্রথামসারে ঘোষণান্তে রাজা
আসিয়া সিংহাসনে উপন্তিই হইলে বৈতালিক সভি
পাঠ করিল—তাহাতে রাজ্যের বর্ণনা ও রাজ্যের ভিন্ন ভিন্ন
অংশে প্রজাবন্দের অবস্থা কীর্তিত হইল। রাজা মনোযোগ
সহকারে সে বর্ণনা ওনিলেন—কোথায় কি করা প্রয়োজন
বিবেচনা করিবেন।

রাজ্যের কার্য শেষ করিয়া রাজা বলিলেন, এখন স্থাসিত রাজ্যে তিনি প্রজাদিগের অবস্থার উন্নতি-সাধনে মনোযোগী হইবেন।

সেনাপতি বিনীতভাবে নিবেদন করিলেন—রাজা প্রথমে যে সকল রাজ্য জয় করিবেন মনে করিয়াছিলেন, সে সকলের মধ্যে কলিজ বিজয় করা হয় নাই; তিনি কি কলিজ-বিজয়ের বাসনা ত্যাগ করিয়াছেন?

পুরুষাত্তমদেব চিন্তা করিতে লাগিলেন।

পার্ম্বরদিগের মধ্য হইতে নীলকান্ত দণ্ডায়মান হইয়া কলিকের সৌলর্ম ও ঐর্থ্য বর্ণনা করিয়া উপবিষ্ট হইবার পূর্বে বলিলেন, কলিকরান্তের পূত্র নাই, কক্ষা পদ্মাবতীর অসাধারণ দেহ-লাবণ্য-খ্যাভিতে বছ রাজা আকৃষ্ট হইয়াছেন—কিন্তু রাজকক্ষার বিমাতা—নিঃসন্তান বিশাধা দেবীর পরামর্শে রাজা কোন সম্বন্ধই তাঁহার বংশমর্যাদার উপযুক্ত মনে করিতেছেন না।

মন্ত্রী শুনিয়া বলিলেন, ব্রাহ্মণের গৌরব যেমন শাস্ত্রজ্ঞানে রাজার গৌরব তেমনই বীরত্বে—যে বংশে তিনি জন্মগ্রহণ করেন, তাহার জন্ম নহে।

রাজা কি ভাবিতেছিলেন।

সভাস্থ একজন বলিলেন, মহারাজা যদি কলিক বিজয় করেন, তবে কলিকরাজের বংশ-মর্যাদাগর্ব কোথায় থাকিবে?

নীলকান্ত বলিলেন, কলিন্দরাজ যদি মহারাজা পুরুষোত্তম-দেবকৈ কঞ্চাদান করেন, তবে যেমন যোগ্য জামাতা লাভ করেন—তেমনই মহারাজারও বিনারক্তপাতে কলিন্দ বিজয় হয়। সেনাপতি ত এখনই মহারাজাকে কলিন্দ-বিজয়ের কথা বলিতেছিলেন।

তিনি এ বিষয়ে মন্ত্রীর মত জানিতে চাহিলেন। মন্ত্রী বলিলেন, বিষয়টি বিবেচনা করিয়া দেখা প্রয়োজন। করা চাহিলে কলিঙ্গরাজ যদি সে প্রস্তাব প্রত্যাখ্যান করেন, তবে যুদ্ধ অনিবার্য হইবে; কারণ সে প্রস্ত্রাখ্যান অপমানই হইবে। স্ক্তরাং যুদ্ধের আয়োজন সম্পূর্ণ করিয়া তবে সে প্রস্তাব করা সজত।

সেনাপতি নিবেদন করিলেন, প্রভাব করা হউক বা না হউক—উড়িয়ার সেনাবল সর্বদাই কলিদ বিজয় করিতে সমর্থ। সেনাপতি রাজার দিকে চাহিলেন—রাজা তথনও কি ভাবিতেছিলেন।

সভার কার্য শেষ হইলে সভাভলের পূর্বে দশাবতার-বন্দনা গান রীতি। গায়িকারা ও বাদকরা পার্খবর্তী কক্ষে প্রস্তুত ছিল; আহুত হইরা সভাগৃহে নির্দিষ্ট স্থানে আসিয়া স্বয়ুদেবক্তত মধুর গান গাহিল—

> "প্রশয়পয়ধিজনে ধৃতবানসি বেদং বিহিতবহিত্রচরিত্রমথেদম্; কেশব ধৃত মীনশরীর জয় জগদীশ হরে॥"… ইত্যাদি

সনীতাত্তে সভাভন হইল।

ર

কলিব্দের রাজ-সভায় সংবাদবাহী সংবাদ দিল, উৎকল হইতে রাজনৃত আদিয়াছেন। তিনি পূর্বদিন সন্ধ্যায় উপনীত হইলে রাজ্যের প্রথামুসারে তাঁগাকে সসন্মান অতিথিশালায় লইয়া যাওয়া হইয়াছিল; তিনি এখন সাক্ষাৎপ্রার্থী।

কলিকরাজ তাঁগাকে আনিতে বলিলে নালকান্ত সভাগৃহে প্রবেশ করিয়া রাজাকে আজা নিবেদন করিয়া বলিলেন, তিনি যে কার্যের জন্ত প্রেরিত হইয়াছেন, তাথা প্রকাশ রাজসভায় প্রকাশ করা তাঁগার অভিপ্রেত নহে।

রাজা তাঁহাকে উপবিষ্ট হইতে বলিয়া রাজ্যের কার্য শেষ করিয়া সভাভঙ্গ ঘোষণা করিয়া কক্ষাস্তরে গমন করিয়া উৎকল-রাজের দৃতকে তথার আহ্বান করিলেন। মন্ত্রী ও তাঁহার সহকারী পূর্বেই তথার আহুত হইয়াছিলেন।

তথার উপস্থিত ইইরা নীলকাস্ত বলিলেন, অলে, বলে, কলিলে, সৌরাষ্ট্রে, মগধে উৎকল-রাজ পুরুষোন্তমদেবের নাম অবগত নহেন, এমন কেইই নাই। তাঁহার কীর্ত্তিকিরণে উৎকল উদরাস্ত-ভাস্কর-করসমুজ্জল গিরিশৃলের মত আলোকিত। তাঁহার রাজত্ব তালীবনশ্রাম উড়িয়ার সমুক্তক্ল ইতে দিকে দিকে প্রসারিত। তাঁহার বাহুবলে বহু রাজা তাঁহার চক্রবর্তিত্ব স্বীকার করিয়াছেন। তিনিকলিম্বাজ্য আক্রমণ না করিয়া রাজার সহিত সম্প্রীতিকামী—উৎকল রাজ্যের সহিত কলিক রাজ্যের প্রীতিবন্ধন বাহাতে

কথন ছিন্ন না হয়, সেই জন্ত তিনি কলিম্বরাজ-কন্তার পাণি সাদরে গ্রহণের প্রভাব প্রেরণ করিয়াছেন।

কলিকরাজ কোন উত্তর প্রদানের পূর্ব্বেই মন্ত্রী বলিলেন, "সাধু! নীলাচলবাসী মহারাজা পুরুষোজ্ঞমদেব তাঁহার রাজ্যে 'চলজীবিষ্ণু' বলিয়া সম্পূজিত। তিনি তাঁহার পিতার রাজ্য বিজ্ত করিয়াছেন। তাঁহার কীর্ত্তিকথা কলিকে অবিদিত নাই। তাঁহার প্রেরিত প্রতাব যে শুদ্ধাসহকারে বিবেচ্য তাহাতে সন্দেহ নাই। কলিকরাজ যে তাহাই করিবেন, দূতকে তাহা বলা বাছল্য।"

তিনি তাঁহার প্রভুর আদেশের অপেক্ষা না রাখিয়াই যে এইরপ মত প্রকাশ করিয়াছিলেন, তাহা সাধারণ রীতিবিরুদ্ধ। সেই জক্ত তিনি কথা শেষ করিয়া রাজার দিকে চাহিলেন।

রাজা তথন দোলাচলচিত্ত। তিনি মন্ত্রীর উজ্জির যাথার্থ্য বর্ণে অহতের করিতেছিলেন—কিন্তু মন্ত্রীর মতে মত প্রকাশ করিতে পারিতেছিলেন না।

প্রভুকে নির্কাক দেখিয়া মন্ত্রার মন অপ্রদন্ত হইল।

নিন্তর গৃহের শুরুতা যেন পীড়াদায়ক হইয়া উঠিতেছিল।
এই সময় কলিকরাজ বলিলেন, "মন্ত্রী যথার্থ-ই বলিয়াছেন,
এই প্রস্তাব শ্রদাসহস্পারে বিবেচ্য। উৎকল-রাজন্ত
রাজ্যের সন্মানিত অতিথিরূপে আজ আতিথ্য স্বীকার
কর্ষন—কক্সার বিবাহ সম্বন্ধে নানা বিষয় বিচার করিতে
হয়; আগামী কল্য আমি তাঁহার প্রস্তাবের উত্তর দিব।"

কলিদরাজ কক্ষের পশ্চাতের দ্বারের আবরণবস্ত্র সরাইয়া চলিয়া যাইলেন। এদিকে মন্ত্রীর আহ্বানে উপনীত এক জন রাজকর্মচারী আসিয়া উৎকলরাজদূতকে সদম্বানে লইয়া যাইলেন।

মন্ত্রীর অপ্রসন্মভাব লক্ষ্য করিয়া তাঁহার সহকারী তাঁহাকে বলিলেন, তিনি রাজা কিছু বলিবার পূর্বেই যে প্রতাব সম্বন্ধে মত প্রকাশ করিয়াছেন, তাহাতে তিনি বিশ্বিত হইয়াছেন।

মন্ত্রী বলিলেন, "তাহাতেও কোন স্থবিধা হইল না; আমার মত জানিয়াও রাজা সম্মতি দিতে পারিলেন না।"

"**আ**পনি এ কথা কেন বলতেছেন ?"

"বে পট্টমহারাণী রাজ্যের শক্ষা ছিলেন—তিনি ঐ ক্যাকে রাথিয়া প্রজাদিগকেও মাতৃহীন করিয়া গিয়াছেন।

তদবধি আমি কেবল অমকলের আশকাই করিতেছি।
বর্ত্তমান মহারাণী রাজার উপর প্রভাব বিভার করিরা জ্বনে
সব ক্ষমতা হত্তগত করিতেই ব্যন্ত। পাছে রাজকল্যার
বিবাহ স্থপাত্রের সঙ্গে হইলে জামাতা ক্ষমতা লাভ করে,
সেই ভর্মে তিনি সকল বিবাহ-প্রভাব প্রভাহার হত্তে খেলিবার
পুতৃল মাত্র হইয়াছেন।"

"মহারাণীর অভিপ্রায় কি ?"

"তিনি বৃদ্ধিবিবেচনায় থর্ক কাহারও সহিত রাজকন্তার বিবাহ দিয়া আপনি প্রভুত্ব করিতে চাহেন। কিছ মাতৃহীনা পদ্মাবতীকে আমরা কত লেহেই পালন করিয়া আসিয়াছি!"

মন্ত্রী দীর্ঘাদ ত্যাগ করিলেন।

সহকারী বলিলেন, "তবে কি সেই জন্মই মহারাণী তাঁহার অমাহয ভ্রাতৃষ্পুত্রকে—"

"যে কথা মনে আছে, তাহা মুখে প্রকাশ করিও না; জানিও—হন্তের তীর আর মুখের কথা বাহির হইলে আর ফিরান যায় না; মহারাণীর বৃদ্ধি অসাধারণ—তাঁহার চর সর্বত্র আছে—কোন্ কথা কিরুপে কখন হয়ত বা অতিরঞ্জিত হইয়া তাঁহার কর্ণগোচর হয়, তাহা কেহ বলিতে পারে না।"

9

কলিকের মহারাজা অন্তঃপুরে প্রবেশ করিলেন। তিনি বিশ্রাম-কক্ষে উপনীত হইতে না হইতে পট্টমহারাণী আসিরা উপস্থিত হইলেন এবং অত্যস্ত ব্যস্তভাবে তাঁহার কুশল প্রশ্ন করিলেন।

রাজা বলিলেন, "মহারাণী, আজ স্থাংবাদ আনিয়াছি।"
মহারাণী হাস্তপ্রকৃত্ব ভাবে বলিলেন, "আপনি করে
স্থাংবাদ ব্যতীত অন্ত কিছু আনিয়া থাকেন? আপনার
শাসনে রাজ্যের প্রজারা যে কত স্থথে আছে, তাহা আদি
প্রতিদিন লোকমুথে স্থাংবাদ পাইয়া অবগত হই। আজ
কি নৃতন স্থাংবাদ, রাজন্?"

"উৎ কলের রাজা পুরুষোত্তমদেব সংবাদ পাঠাইশ্বাছেন; তিনি পদ্মাৰতীর পাণি প্রার্থনা করেন।"

মহারাণীর মুখ গম্ভীর হইল—যেন অকাল-জলদে মধ্যাহ্ন-রবিকরোজ্জন আকাশ অন্ধকার হইল। তিনি যেন এ সংবাদ পূর্বে ভানেন নাই, এমনই ভাব দেখাইয়া বলিলেন, "এই স্থাংবাদ! পূরীরাজের কুননীল-পরিচয় বিবেচনা করিতে হইবে; কারণ, কঞ্চাকে যেমন অপাত্রে অর্পণ করা যায় না—কুলগৌরব তেমনই কুয় করা যায় না। আমি কলিকের মহারাজার পদ্মী—দেবতা আমাকে সন্তান দেন নাই, কিছ আমি পদ্মাবতীকে অপত্যবোধেই পালন করিতেছি, তাহাকে সংপাত্রে সমর্পণ করিয়া নিকটে রাখিতে আমার বাসনা যেমন স্বাভাবিক, যাহাতে তাহার বিবাহে কলিকরাজ-বংশের কুলগৌরব কোনরূপে ক্ষুয় না হয় সে দিকে দৃষ্টি রাখা আমার তেমনই কর্ত্ব্য।"

"পুরীরাজের বীরত্ব-খ্যাতি অসাধারণ। তিনি বঁহু রাজ্য জন্ম করিয়াছেন, বলিয়া পাঠাইয়াছেন—কলিঙ্গ আক্রমণ না করিয়া কলিকের সহিত সম্প্রীতি রক্ষা করিতে চাহেন— কলিঙ্গ রাজক্সার পাণি প্রার্থন। করেন।"

মহারাণী যেন সহদা—ত্মতাছতিপুঠ অগ্নির মত প্রদীপ্ত হইয়া উঠিলেন; বলিলেন, "তাঁহার প্রস্তাব চতুরের প্রস্তাব —তিনি বলে কলিঙ্গ আক্রমণ না করিয়া—কৌশলে কলিঙ্গ-রাজ্য অধিকার করিতে চাহিতেছেন—বিবাহ-প্রস্তাব ছল ব্যতীত আর কিছুই নহে।"

মহারাজা মৌন বিশ্বয়ে মহারাণীর দিকে চাহিয়া রহিলেন
—তিনি যেন রঙ্গমঞ্চে অভিনয় দেখিতেছিলেন।

মহারাণী বলিলেন, "পুরারাজ কলিলের বল অবগত আছেন; কলিল-বিজয় সাধ্যাতাত ব্ঝিয়া কলিলরাজ্য লাভ করিবার জন্ত এই কৌশল করিতেছেন। তিনি যদি যুদ্দ চাহেন—আমাদিগকে যুদ্ধই দিতে হইবে—তাঁহার প্রভাবের মীমাংসা যুদ্ধক্তেই হইবে।"

বেন অগ্রিশিখা ঘুতাভাবে নত হইয়া কেবল আলোক ও তাপ বিকীর্ণ করিতে লাগিল এমনই ভাবে মহারাণী বলিলেন, "পুরীরাজকে ক্লাদান কুলগোরবসম্মত কি না, সে বিষয়ে সর্বাগ্রে কুলপুরোহিতের মত গ্রহণ প্রয়োজন।"

মহারাজা বলিলেন, "পুরোহিত মহাশয় বৃদ্ধ ও অহস্থ— চলচ্ছক্তিরহিত; তাঁহার নিকট উপযুক্ত লোক পাঠাইবার ব্যবস্থা করিতেছি।"

তিনি গমনের উত্তোগ করিলে মহারাণী বলিলেন, "রালকার্যে আপনি প্রান্ত—বিপ্রাম ও দেবাগ্রহণ করুন; আগামীকলা সে ব্যবস্থা হইবে।" "আগামীকলাই উৎকল দৃতকে উত্তর দিব প্রতিইভি দিয়াছি।"

"তবে আমি পুরোহিত মহাশরের পুত্রকে সংবাদ
দিতেছি। তিনি বিদান, বিচক্ষণ এবং পিতার শাস্ত্রজ্ঞানের
অধিকারী। তিনি বোধ হয় প্রাদাদেই আছেন—
পদ্মাবতীকে প্রফুল্লতাহীন দেখিয়া আপনি সে দিন উৎকণ্ঠা
প্রকাশ করিয়াছিলেন। সেইজক্ত আমি তাহার শুভকামনায় শান্তিস্বস্তায়নের ব্যবস্থা করিয়াছি—সেই
উপদক্ষে পুরোহিত-পুত্র আজ তাহা করিতে আসিয়াছেন।
পদ্মাবতীই আমাদিগের স্নেহের একমাত্র অবলম্বন।"

রাজার মুখ প্রফুলভাব ধারণ করিল।

রাজার মতের অপেকা না রাখিয়াই মহারাণী দাদীকে
পুরোহিত-পুত্রকে মহারাজের নিকট আসিবার জস্তু আহবান
জানাইতে বলিলেন এবং দাদীর হস্ত হইতে ময়ুবপুচ্ছের
ব্যক্তন লইয়া স্বয়ং মহারাজকে ব্যক্তন ক্রিতে লাগিলেন।

কলিদরাজ জিজাসা করিলেন, "পদ্মাবতী কোথায়?"
মহারাণী বলিলেন, "আজ তাহার কল্যাণকামনায়
শাস্তিখন্তায়নের ব্যবস্থা করিয়াছি; সেই জন্ম তাহাকে
দেবতার গৃহে রাথিয়া আসিয়াছি।"

"তাহা হইলে পুরোহিত-পুত্র এখন কিন্নপে আসিবেন ?"
মহারাণী বিব্রত হইলেন, কিন্তু তখনই বলিলেন, "তিনি
শ্বয়ং কার্য করিতেছেন না—পাছে কোন ক্রটি হয়, সেইজ্য তাঁহাকে তথায় থাকিতে বলিয়া আসিয়াছি।"

অল্লকণ পরেই দাসী আদিয়া সংবাদ দিল, পুরোহিতপুত্র আসিতেছেন এবং প্রায় সঙ্গে সঙ্গে স্থদর্শন তরুণ ব্রাহ্মণ ক্ষেপ্রবেশ করিয়া মহারাজার জয়োচ্চারণ করিলেন।

মহারাজা তাঁহাকে প্রণাম জানাইলেন এবং তিনি আশীর্বচন জ্ঞাপন করিলেন।

এদিকে মহারাণী ব্যজন রাখিয়া আগস্তুকের জন্ত আসন
পাতিয়া দিয়া তাঁহাকে প্রণাম করিলেন। তিনি উপ^{হি}ষ্ট
হইয়া মহারাজা কেন তাঁহাকে স্মরণ করিয়াছেন জিজ্ঞাসা
করিলে মহারাজা বলিলেন, "পুরীর রাজা পুরুষোত্তমদেব
পদ্মাবহীর পানি প্রার্থনা করিয়া দ্ত প্রেরণ করিয়াছেন।
সেই বিষয়ে আমরা আপনার মত জানিতে ইচ্ছা করি—
পুরীরাজকে ক্যাদান আমার বংশের কুলপ্রথা-সম্মত
কিনা ?"

মহারাণী মহারাজাকে ব্যজন করিতে ভূলিয়া বাইরা কেবল পুরোহিতের উত্তর প্রতীক্ষা করিতে লাগিলেন। তাঁহার দৃষ্টিতে যেন ২জ্ঞতোতক দাহিকাশজিপূর্ণ বিহাতের দীপ্তি।

পুরোহিত-পুত্র যেন চিন্তামগ্র হইলেন ; তাঁহার জ্র কুঞ্চিত **इरेग।** जिनि विलालन, "त्रांकन, व्यामात छान गीमावक —কিন্তু শিক্ষারফলে ভাগ যতদুর অধিগত করিতে পারিয়াছি তাহাকে বলিতে পারি, এ প্রস্তাব প্রত্যাখ্যানযোগ্য। কবির উক্তি 'স্ত্রীরত্ব ছঙ্কুলাদপি', কিন্তু কলিসরাজবংশ কুলমর্যাদা সম্বন্ধে এতই'সতর্ক যে, একাল পর্যান্ত উড়িয়ারাজ পরিবারের কোন কলা কলিন্ধ রাজ-প্রাসাদে স্থান লাভ করেন নাই। সেই জম্মই লোকপরম্পরায় কথিত আছে, চল্লে কলক আছে, তব্ও কলিকরাজবংশে কোন দোষ নাই। গলাবংশীয়গণ দার্ঘকাল উড়িয়া শাসন করিয়াছেন; তাঁহারা বঙ্গদেশ श्रेट आनियाছिलन--- ताएएनम **डाँ**शिमर्गत निर्जृ में; ठाँशिं पिराजे अर्थ अस्वाज नहीं मांक क प्राचित्र अधिवाजी ছিলেন; তাঁহাদিগের নৌসাধনতংপরতা অসাধারণ ছিল এবং তাঁহারা সাগরপারবর্তী স্থানে যেমন উপনিবেশ স্থাপন করিয়াছিলেন, তেমনই হিমগিরির পরপারেও দিগিজয়ী পণ্ডিত পাঠাইয়াছিলেন ৷ কিন্তু তাঁহারা মৎস্তভোজী हिलान कि ना त्म विषया मत्नारश्त व्यवकाम व्याद्ध। সেই এক গুণরাশিনাশী দোবে **ভাঁ**হাদিগের সহিত ক্লিক্সাজ পরিবাতের কোনত্রপ বৈবাহিক সম্বন্ধ সম্ভব হয় নাই। কিন্তু উডিয়ার স্থাবংশীয়গণের সহিত বঙ্গাগত সেই গলাবংশের রক্তের সম্মিলন হইয়াছে—তথন**ও** স্থ্বংশীয় রাজগণ সিংহাসন অধিকার করেন নাই। এই অবস্থায় কলিকের রাজপরিবারের সঠিত উডিয়ার স্থ্বংশীয় রাজার বৈবাহিক সম্বন্ধ কলিককুলগৌরবহানিকর रहेरव ।"

পুরোহিত উক্তি শেষ করিয়া রাজার দিকে চাহিলেন। রাজার মুখে নৈরাশ্য ব্যাপ্ত হইয়াছে। কিন্তু রাজার পশ্চাতে দণ্ডায়মানা মহারাণীর দৃষ্টিতে আনন্দদীপ্তি—উৎকণ্ঠার পরিচয়ের স্থান অধিকার করিয়াছে। তিনি পুরোহিত-পুত্রের দিকে চাহিয়া প্রসন্ম হাসি হাসিলেন এবং আবার রাজাকে ব্যক্তন করিতে গাগিদেন।

পুরারাজ রাজসভায় আসিলেন। গায়কদল বন্দনা গান করিল—

"রাজন, তব যশ-কৌমুদী ব্যাপ্ত জনসমাজে,
প্রথব-প্রভাকর-কিরণ গৌরব তব লাজে।

সিল্প ভোমার বন্দনা গাহে;
সসাগরাধরা শাসন চাহে;
গগনে গগনে পবনে ভোমার জয়-তৃন্দুভি বাজে।
পতাকা ভোমার উড়ে গিরিশিরে;
জয়ের শুস্ত সাগরের তীরে;
তৃষ্ট দমনে শিষ্ট পালনে অহুরাগ তব রাজে।
প্রণতি ভোমার দেবতা-চরণে
রত তুমি সদা তাঁহার শ্বরণে
লক্ষী ভোমায় আশীয় করেন—চিরস্কের সাজে।"

গান শেষ হইলে প্রতীণ মন্ত্রী দণ্ডায়মান হইয়া নিবেদন করিলেন, কলিক হইতে রাজদূত প্রত্যাবর্ত্তন করিয়াছেন।

রাজা হইতে দৌবারিক পর্যন্ত সকলেই তাঁহার আনীত সংবাদের অক্ত উদ্থীব। কিন্তু মন্ত্রীর মূথ চিন্তায় অন্ধকার।

নীগকান্ত আদিয়া রাজাকে অভিবাদন করিবামাত্র মন্ত্রী বলিলেন তাঁহার নিবেদন—দৌত্যকার্য্যের সংবাদ রাজাজা ব্যতীত প্রচার করা নিষিদ্ধ; সে সংবাদ প্রথমে মহারাজা, মন্ত্রী ও সেনাপতি ভনিয়া পরে সে সম্বন্ধে কর্ত্তব্য স্থির করিবেন।

সেনাপতি বলিলেন, "দাধু।"

মন্ত্রী যে সেনাপতিরও প্রথমে সংবাদ শুনিবার কথা বলিলেন, ভাহাতে এ উহার মুখে চাহিলেন।

মহারাজা পার্যবর্তী মন্ত্রণাককে গমন করিলেন এবং
মন্ত্রী ও সেনাপতি ভাঁহার অন্থসরণ করিলেন। ভাঁহারা
সেই কক্ষে প্রবেশ করিয়া হার ক্ষ্ম করিলেন। রাজসভার
সকলে উদগ্রীব আগ্রহে ভাঁহাদিগের প্রভাবর্ত্তন প্রভীকা
করিতে লাগিলেন—অপেক্ষার সময় যেন অভি দার্য মনে
হইতে লাগিল।

মত্রণাকক্ষের ছার মুক্ত করিয়া পুরুষোভ্যদেব বধন সভাগৃহে প্রবেশ করিবেন, তথন তাঁহার গৌরবর্ণ মুধ ক্রোধে রক্তাভ, তাঁহার অনুসরণকারী মন্ত্রীর মুথ অন্ধকার, সেনাপতির মুথ হর্ষপ্রদীপ্ত। রাজা ধখন সিংহাসনের পীঠে আরোহণ করিলেন, তথন তাঁহাকে অরুণকিরণাজ্জন গিরিশুক্রের মত দেখাইতে লাগিল। তিনি আসনে উপবিষ্ট না হইয়া দণ্ডায়মান অবস্থায় ঘোষণা করিলেন—কলিঙ্গরাজ পুরীরাজকে অপমানিত করিয়াছেন; তাঁহার সেই উদ্ধত অবিমৃত্যকারিতার ফল তাঁহাকে ভোগ করিতে হইবে; উৎকল কলিঙ্গের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করিল—উৎকল বাহিনী কলিঙ্গরাজ্য আক্রমণ করিবে—সমগ্র রাজ্যে ঘোষণা করা হইবে।

তাহার পরে তিনি ক্রোধকম্পিতকণ্ঠে বলিলেন, "আমি জগবন্ধুর রত্মবেদী স্পর্শ করিয়া প্রতিজ্ঞা করিতে যাইতেছি—"

তাঁহার কথা শেষ না হইতেই মন্ত্রী বলিলেন, "মহারাজ,

ক্রোধ চণ্ডাল—তাহার বশবর্তী হইরা দেবতাকে সাক্ষী রাথিয়া কোন প্রতিজ্ঞা করিতে নাই। তাহাতে—"

কিছু রাজা সে কথায় কর্ণপাত না করিয়া তাঁহার উক্তি শেষ করিলেন—"কলিঙ্গরাজ্য জয় করিয়া তাহা উৎকল রাজ্যের অস্তর্ভুক্ত করিব এবং কলিঙ্গ-রাজক্সাকে বন্দী করিতে পারিলে—তাঁহার পিতার কুলমর্য্যাদান্দনিত ওদ্ধত্যের প্রতিশোধে তাঁহাকে চণ্ডালে অর্পণ করিব।"

স্তস্তিত সভার বিশ্বয় অপনীত হইবার পূর্ব্বেই রাজা অভ্যস্ত হৈ্ব্যা ত্যাগ করিয়া সিংহাসনপীঠ হইতে অবতরণ করিয়া মন্দিরের অভিমুধে যাত্রা করিলেন।

মন্ত্রীর মূথে বেদনার চিক্ত স্কুম্পষ্ট হইয়া উঠিল। রাজপ্রাসাদের সমুখস্থিত বাতমঞ্চ হইতে দামামার বাতে যুক্তবোষণার সংবাদ ঘোষিত হইল।

(আগামীবারে সমাপ্য)

কোরিয়া-প্রসঙ্গ

শ্রীপ্রফুল্লরঞ্জন সেনগুপ্ত এম-এ

কোরিয়া আয়তনে প্রায় ব্রিটেনরই মতো। দেখানে ভিরিশ মিলিয়ন লোকের বদবাদ। কোরিয়া উপদ্বীপটি মাকুরিয়া ও জাপানের মধ্যে অবস্থিত এবং সামরিক দিক থেকে বিচার করলে এর গুরুত্বও আছে ৰবেষ্ট। ভারতবধের মতো কোরিয়াও কৃষিপ্রধান দেশ-শতকরা ১০ अन लाकरे कृषक । এদের জীবনধারণের মানদণ্ড ভারতেরই দুর্দ্দশার্যন্ত কুষিজীবীর মতো। শহাও থনিজ সম্পদের জন্ম উত্তর কোরিয়া দক্ষিণ কোরিয়ার কাছে নির্ভরশীল। এদের কতগুলো সামাজিক আচার-ৰাবছারের সঙ্গে ভারতবর্ধের যথেষ্ট ঐক্য আছে। বিয়ের ব্যাপারে ভারতবর্ষের অফুরপই মা বাপের ইচ্ছাতুযায়ী পাত্র-পাত্রীর বিয়ের ব্যবস্থা কর। হয়। বিয়ের পূর্বে স্বামী-দর্শন তাদের সৌভাগ্যে ঘটে না। মেরেদের বিয়ের পর একা একা পথ চলার সাধীনতা প্রারই থাকে না। আশ্বীয়ম্বজন পরিবেষ্টিত হ'য়েই তাদের পথ চলতে হয়। কলম্বাদ যথন আমেরিকা আবিভার করেছিলেন—তারও শতবর্গ পূর্বেক কোরিয়ার ছাপাথানার অচলন ছিল। কোরিয়ার জ্যোতির্কিদ পণ্ডিতগণ আকাশে ভারার গতিবিধি সম্বন্ধে অবিদিত ছিলেন—ভাও যিশুথীষ্টের আবির্ভাবের শতবর্ষ পূর্বে। বৌদ্ধ ও চৈনিক সংস্কৃতি দারা কোরিয়ার সংস্কৃতি ও সভাতা প্রভাবায়িত। বর্ত্তমানে অধিকাংশ কোরিয়াবাসী গুইংর্ম - অবস্থন করেছে।

১৯১ - সালে জাপান কোরিয়া দখল করে। ফলে জাপানের শোষণ নীতির অত্যাচার থেকে কোরিয়াও অব্যাহতি পায় নি। বিগত যুদ্ধের সময় নির্বাসিত কোরিয়ানরা চীনে একটি 'প্রভিসনাল গভর্ণমেণ্ট' স্থাপিত করে। ১৯৪৩ দালে কায়রো কনফারেন্সে—ব্রিটেন, চীন এবং আমেরিকা এই সিদ্ধান্তে উপনীত হয় যে জাপান পরাজিত হ'লে—কোরিয়াকে वाधीनका (मुख्या इ'रव । ১৯৪৫ সালে মধ্যে কন্দারেকে ঠিক कরা स्य যে কোরিয়া চতু শক্তির ভত্মাবধানে থাক্বে। কিন্তু জাপান পরাজিত হ'লে, রাশিয়া উত্তর কোরিয়ার ভার গ্রহণ করে এবং আমেরিকা দক্ষিণ কোরিয়ার ভার-গ্রহণ করে। ৩৮ পারোলালের উত্তরাংশ রাশিয়ার তত্বাবধানে চলে যায়। যদিও এ ব্যবস্থা সাময়িক ভাবেই গ্ৰহণ করা হয়েছিল—কিন্তু রাশিয়া ও আমেরিকার মধ্যে একটু বিষেষের ভাব পরিস্ফুট হওরায়—এ সাময়িক ব্যবস্থা পাকাপাকি ভাবে আরও রুষ্ট্ হ'রে উঠ্লো। ৩৮ প্যারালাল সম্পূর্ণ কোরিয়া উপ**রীপটিকে** বিভর্ক করে-ছ'টি দলে পরিণত করে কোরিয়ানদের মধ্যে একটি বিবেবের ভাব স্ষ্টি করে তুলতেন। কিন্তু আন্তর্জাতিক পরিস্থিতির জক্ত রাশিরার অন্তভুক্ত উত্তর কোরিয়ার সঙ্গে আমেরিকার ক্রতলগত দকি কোরিয়ার সংযোগ ও ঐক্য স্থাপনার বিল্প ঘটে।

ইউ, এনু কমিশনের তত্বাবধানে ১৯৪৭ সালের মে মালে বৰিণ

কোরিয়ার নির্ম্বাচনের কান্ধ- শেব হর। এ নির্ম্বাচনের কিছুদিন পূর্বে Pyongyongএ সোভিরেট রাশিরার প্রচেষ্টার 'অল কোরিয়া জরেট পলিটকাল কন্কারেল' আছুত হর। এখানে সিদ্ধান্ত করা হয় যে কোনো ক্রমেই দক্ষিণ কোরিয়ার এ নির্ম্বাচন সমগ্র কোরিয়ার জনগণ মেনে নিতে রাজী নয়। পৃথক ভাবে দক্ষিণ কোরিয়ার এ নির্ম্বাচনের প্রচেষ্টা বার্থ করতে হ'বে। সোভিরেট রাশিয়া প্রচারিত সংবাদে জানা যায় যে এ কনফারেলে মোট ৫৪৫ জন কোরিয়ান উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়া থেকে উপস্থিত ছিলেন। চীনে প্রভিত্তিত কোরিয়ান প্রভিসনাল গভর্গমেন্টের কর্ণধার ডাঃ কিম কুও এ কনফারেলে উপস্থিত ছিলেন। ১৯৪৯ সালে জুন মাসে ডাঃ কিম কুও এ কনফারেলে কেন্টেনান্ট দ্বারা নিহত হ'ন।

নানা গোলঘোগের মধ্যেও নির্বাচন বন্ধ রইল না। ত্র'জন দক্ষিণপন্থী নায়ক ডা: সীমান রী ও কিম বিপূল ভোটাখিকো জয়লাভ করেন এবং "ডেমোক্রাটিক রিপাবলিক অব কোরিয়া" নামে রাষ্ট্র গঠন করেন। ১০ই আগস্তু কোরিয়া সাধারণতন্ত্র রাজ্য বলে ঘোষিত হয় এবং কোরিয়ায় মার্কিন সামরিক শাসনের অবসান ঘটে।

দক্ষিণ কোরিয়ার নির্মাচনের পূর্বে "কোরিয়ান পিপলস্ কমিট" (the interim Communist-controlled Govt. in the Soviet Zone) ইতিমধ্যে সমগ্র কোরিয়ার জস্ত একটি সাধারণ শাসনতন্ত গ্রহণের দাবী জানায়। ১১ই সেপ্টেম্বর Pyongyongএ "ডেমোক্রাটিক পিপলস্ রিপাবলিক অব কোরিয়া" ঘোষিত হয়। এ নোডুন গতর্গমেন্টও কোরিয়া থেকে আমেরিকান ও সোভিয়েট সৈত্ত-বাহিনীর অপসারণ দাবী করে।

সোভিয়েট রাশিয়া ১৯৪৮ সালের শেষাংশে তাঁদের দৈশু অপসারণ করেন। ১৯৪৯ সালের জুন মাসে কোরিয়া থেকে আমেরিকা তাঁদের নৈশু হঠিয়ে দেন বটে, কিন্তু দক্ষিণ কোরিয়ান সৈশুবাহিনীকে উপদেশ দেবার জশু কেবল মাত্র ৫০০ শত ইউ, এস্ সামরিক অফিসার রেথে যান।

সোভিয়েট রাশিয়া এবং আমেরিকা তাদের সৈশ্য অপসারণের পালা শেষ করে দেওয়া সত্তেও উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার মধ্যে ঐক্যের কোনোই আভাস পাওয়া গেল না। বরং বিভক্ত কোরিয়ার মধ্যে য়বধানই গড়ে উঠতে লাগলো। দিন দিনই গৃহবুদ্দের ইলিত স্প্রেষ্ট ইরে তাগলো। দিন দিনই গৃহবুদ্দের ইলিত স্প্রেষ্ট ইরে তাগলো। ভিত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার মধ্যে। উত্তর কোরিয়া মি: কিম ইর্ সেনএর নেতৃত্বে রাশিয়া আরা পরিপুষ্ট হ'য়ে এবং দক্ষিণ কোরিয়া ডা: সীমান রীর নেতৃত্বে আমেরিকান ঘারা পরিপুষ্ট হয়ে, সংঘর্ষের স্টনার সজীব হয়ে উঠলো। মিং কিম ইর্ মেন ৩৬ বছর বয়সে নেতৃত্ব আমেরিকান ঘারা পরিপুষ্ট হয়ে, সংঘর্ষের স্টনার সজীব হয়ে উঠলো। মিং কিম ইর্ মেন ৩৬ বছর বয়সে নেতৃত্ব প্রেরণায় উৎসাহিত হয়ে উত্তর কোরিয়াকে এগিয়ে নিয়ে চলছেন। মিঃ কিম গরিলা য়ুদ্দে সিদ্দন্ত এবং দেলের জনগণের কাছে যথেষ্ট শ্রদ্ধা অর্জন করেছেন। এমন কি দক্ষিণ কোরিয়ার জনগণও ভার শক্তির ও বীরদ্বের প্রশংসা করে থাকে। সহসা মুথাকৃতি পরিকর্ত্তের কৌশলে তিনি স্থপট্ট। কিম্ব ভার প্রতিম্বন্ধী ডা: সীমান রী

৭৮ বছরের বৃদ্ধ। এ বার্দ্ধকোর মধ্যেও তিনি দক্ষিণ কোরিয়ার জনপ্রিরতা অর্জন করেছেন।

১৯৪৫ সালে জাপানের কবল খেকে মৃক্তি পেরে কোরিয়ার অবস্থা কি গাঁড়িয়েছে সে সথদ্ধে "ডেইলি ওয়ার্কার" কাগজে মিঃ, কিম বরং যা' মস্তবা করেছেন তা নিম্নলিথিত কথাঞ্জাে থেকে সংক্রেপে বাঝা যাবে।

কোরিয়াকে জাপানী কবল থেকে মুক্ত করার পর ৩৮ প্যারালাল বাাপী কোরিয়া হু'ভাগে বিভক্ত হয়। উত্তর কোরিয়ার অধিবাসীরা নিজের দেশকে শক্তিশালী কোরে গড়ে ভোলায় মনোযোগী হ'লেন। অজাতত্র শাসনের ক্বাবস্থায় তারা শিক্ষা, কৃষি ও ভূ-সংস্থারের দিকে দৃষ্টি দিলেন। কারণ জাপানের অধীনে তাঁদের শ্বীয় জাতীয় বৈশিষ্ট্য সবই লোপ পেয়েছিল। তা' ছাড়া দেশ শাসনে? জন্ম উপযুক্ত কোরে তোল-বার অভিপ্রায়ে বড় বড় নেতাদের ভালো কোরে শিকা দিয়ে গড়ে ভোলা र'लां। याट काद्य काद्रियात कन माधात्रापत कृष्मा ना शासक मिरक লক্ষ্য বেপে উত্তর কোরিয়া দেশ গঠনে মনোযোগী হলেন। এমন কি যুদ্ধের পরে শিল অভিষ্ঠানগুলিও যথেষ্ট উন্নত হ'য়ে দাঁড়ালো। থাত-সমস্তা সমাধানের দিক থেকে উত্তর কোরিয়াকে দক্ষিণ কোরিয়ার মুখা-পেক্ষী হ'য়েই থাকতে হ'ভো—দেদিক দিয়েও উত্তর কোরিয়া অনেকটা নিজরশীল হ'য়ে উঠেছে। মি: কিম বলেন "আমরা গভর্ণমেন্ট ও ক্ষকদের সহযোগিতার উত্তর কোরিয়ার থাত্ত-সমস্তা সমাধান করতে পেরেছি।" উত্তর কোরিয়া যে অম শিলে, স্কুল, ক্লাব, রিডিং রুমে-সবদিক দিয়েই পূর্ব্বের চেয়ে অনেক পরিমাণে এগিয়ে গেছে-সে কথা মি: কিম মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করেছেন। দক্ষিণ কোরিয়া সম্বন্ধে বলতে গিয়ে তিনি প্ৰকাশ কয়েছেন: "Of course the artificial division of the country hampers the development of the economy of Korea, South Korea is steadily falling into decay as a result of being enslaved and plundered by American Capital."

যাই হোক উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার মধ্যে একার্ ক্ষ হ'বার পরিক্রনা বার্থ হ'য়ে দাঁড়ালো। গৃহ মুদ্ধের স্চনা হ'লো উত্তর কোরিয়ার মধ্যে। রাই-সক্ষ এ বিবাদ মেটাবার জক্ত তৎপর হ'লেন বটে, কিন্তু সোভিয়েট রাশিয়া ইউ, এন্ কমিশনের সঙ্গে কোনো প্রীতিকর সম্পর্ক রাখতে নারাজ হ'লেন। ৩৮ প্যারালাল ব্যাপী উত্তর ও দক্ষিণ কোরিয়ার সংঘর্থ আরম্ভ হ'লো। ইতিমধ্যে রাশিয়ার সাহায্যে উত্তর কোরিয়া সামরিক শিকায় ফ্রন্ড এগিয়ে গেল। তার ফলে, উত্তর-কোরিয়া দক্ষিণ-কোরিয়াকে আক্রমণ করবার ভয় দেখাতে লাগলো। এদিকে আমেরিকা দক্ষিণ-কোরিয়াকে প্রজাতাত্তিক শাসন, আর্থিক উন্নতি ও স্বাবলখী হ'বার ব্যাপারে শিকা দানে ব্যাপৃত ছিলেন। দক্ষিণ-কোরিয়াকে রাইনীতি ও সামরিক শিকায় স্থান্ট কোরে গড়ে তোলবার দিকে আমেরিকার বিশেষ দৃষ্টি ছিল না। শুধু ১০০,০০০ কোরিয়ানকে সম্মর বিভার পারদর্শী কোরে তোলার ব্যবস্থা করা হ'য়েছিল মাত্র। কিন্তু মুদ্ধ করার মন্ত সম্বল বা সামর্থ্য তাদের ছিল না। আকাশ বাহিনী বা কোনো প্রকার আধুমিক জন্ধশন্ত তাদের আনে) ছিল মা। গৃহ মুদ্ধ বথন প্রকান্ত বৃদ্ধে

পরিণত হ'লো আমেরিকা তথন দক্ষিণ কোরিয়াকে সামরিক আন্তর্গন্ত ও দৈল্প শক্তি দিয়ে সাহাযো করতে তৎপর হ'লেন। ২০-এ-জুন উত্তর কোরিরার দৈক্ষবাহিনী দক্ষিণ কোরিরার প্রবেশ করলো—কোরিরার গৃহবৃদ্ধ সংগ্রামে পরিণতি লাভ করলো।

উত্তর কোরিগার সামরিক শক্তি দক্ষিণ কোরিয়া থেকে অনেক উন্নত। উত্তর কোরিয়ার বস্ত যন্ত্র পারদর্শী সৈক্ষের সমাবেশ হয়েছে। রাশিয়ান है।। इ. त्नेवहत्र, वयात्र ও बाकान वाहिनीत्र माहात्या छेठत कात्रियानता আরও শক্তিশালী হ'রে গড়ে উঠেছে। রাষ্ট্রসঙ্ব উত্তর কোরিয়াকে দক্ষিণ কোরিয়া আক্রমণের অভিযোগে অভিযুক্ত করেছে। রাষ্ট্র সভেবর এ অভিযোগ দত্ত্বেও উত্তর কোরিয়ার মনোবৃত্তির পরিবর্ত্তন হয়নি। উত্তর কোরিয়া তার অভিযান সমানভাবেই অকুগ্ধ রেখেছে। মার্কিণী পদাতিক সৈৱাও আকাশ বাহিনী দক্ষিণ কোরিয়ার সাহায়ে। অগ্রাণী হ'রেছে। ব্রিটেনের নৌবহরও দক্ষিণ কোরিয়ার সাহাযো তৎপর হ'য়েছে। দক্ষিণ কোরিয়ার দৈক্ত এবং মার্কিণী দৈক্ত বাহিনী পালাপালি দাঁডিয়ে উত্তর কোরিয়ার বিরুদ্ধে যুক্তে রত রয়েছে। উত্তর কোরিয়ার দৈক্ত সামরিক क्ष्म्व वावशात अवः त्रगंकि नत्न वित्व भावन्ते । युक्त विकाय छात्र। কি ক'রে এতটা দক্ষতা অর্জন করেছে—তা' একটু বিশ্বায়র কারণ ছ'রেই দাভিয়েছে। মার্কিনা দৈপ্তবাহিনীর মতো সম্বর্ধ সমরে উত্তর কোরিয়ার সাহায্যে রাশিয়াকে এখনো প্যান্ত দেখা যার নি বটে, কিন্ত উত্তর কোরিয়ার পশ্চাতে শক্তি যোগাবার ব্যবস্থায় যে রাশিয়া লিপ্ত ভা' কারো অজ্ঞাত নর।

কোরিরার রাষ্ট্র সজ্বের মর্থাপা হাস্তাম্পদ হ'রে দাঁড়িয়েছে। গত এপ্রিল মাসে রাষ্ট্র সজ্ব স্থির করেছিলেন যে ৮জন বিশেষজ্ঞ দ্বারা গঠিত একটি দলকে কোরিরার বুদ্ধ সম্পর্কে সমস্ত তথ্য সংগ্রহ করতে পাঠানো হ'বে। ভারতবর্ধ, চীন এবং অষ্ট্রেলিয়াকে নিয়ে একটি সাব কমিটিও গঠিত হ'রেছিল—যা'তে ক'রে বিভক্ত কোরিরাকে ঐক্যবদ্ধ করার প্রচেষ্টা করা যেতে পারে। কিন্তু এ দ্বারা কোনো সমস্তাই সমাধান হ'লো না। এ কমিটি উত্তর কোরিরারে সঙ্গেদ পিন্দি কোরিয়াকে একত্রিত করবার প্রস্থাব নিয়ে উত্তর কোরিরাকে ক্ষমুরোধ জানাবে—এ সিদ্ধান্তই করা হ'রেছিল। কিন্তু এ প্রস্তাবে দক্ষিণ কোরিয়া কোনো ক্রমেই রাজী হ'লো না—তারা এর বিপক্ষে দাঁড়ালো। কারণ রাষ্ট্রনজ্ম কোরিয়ার দক্ষিণ কোরিয়াকেই একমাত্র অমুমোদিত গভর্গমেন্ট বলে শ্বীকার করে নিয়েছলেন। এখন উত্তর কোরিয়াকে ঐক্যের বার্গা শোনাতে গেলে—ভাদের মর্য্যাণাই দেওয়া হ'বে।

রাষ্ট্রনজন ও ২৮টি রাষ্ট্র দক্ষিণ কোরিয়ার গছর্ণমেন্টকে স্বীকার করে নিয়েছে। ২১টি রাষ্ট্র দক্ষিণ কোরিয়ারে সাহায্য দানের প্রস্তাব সমর্থন করেছে। ভারতবর্ধ থতিত কোরিয়ার গভর্পমেন্ট বলে স্বীকার করে নিতে পারে নি। অবশু সামরিক পারদানী নিয়েগের পক্ষে ভারতবর্ধ ভোট দিয়েছিল, কিন্তু ভারতবর্ধ তার লোক দেওয়া স্থায়সঙ্গত মনে করেনি। করেণ, এতে রালিয়ার সঙ্গে ভারতবর্ধর সম্পর্ক কটু হ'য়েই উঠ্বে—বিশেষ ক'রে যথন ভারতবর্ধ বর্জমানে কোনো—সংগ্রামে লিপ্ত হ'তে চায় না। অবশু পরে ভারতবর্ধ বর্জমানে কোনো—সংগ্রামে লিপ্ত হ'তে চায় না। অবশু পরে ভারতবর্ধ কোরিয়া সম্বন্ধ রাষ্ট্রশান্তবর দিতীর প্রস্তাব্দি সমর্থন করেছে। কোরিয়ায় বাতে লাভি প্রতিষ্ঠা বয় সে বিবল্পে ভারতবর্ধ বিশেষভাবে তেটা করছে। ভারতবর্ধর এ প্রচেটা কতটা সার্থক হ'বে বলা কঠিন। রাষ্ট্রশন্তব আন্ধান্ধ দক্ষিণ কোরিয়ার সাহায্যে তহণের হ'য়েছেন। রাষ্ট্রশন্তবর অভিমত পাওলার পূর্কেই—আমেরিকা ব্যেছরার দক্ষিণ কোরিয়ায় মার্ভিনী নৈন্তের সমাবেশ ক'রে যুদ্ধ পরিচালনার অগ্রব্ধী হ'য়েছে। আমেরিকার এ সাহায্য ও দক্ষিণ কোরিয়ার সাঞ্জেপ্রত্বী হ'য়েছে। আমেরিকার এ সাহায্য ও দক্ষিণ কোরিয়ার সাঞ্জেপ্রত্বী হ'য়েছে। আমেরিকার এ সাহায্য ও দক্ষিণ কোরিয়ার সাক্ষ

সহবোগিতা করাটা হয়তো রাষ্ট্রনজ্বের কাছে গহিত হওরাই উচিত ছিল। কিন্তু দে সম্বন্ধ রাষ্ট্রনজ্ব নীরব।

সামাবাদী ও ধনতান্ত্রিকত্বের চাপে প'ড়ে কোরিয়ায় যে স্থানা হ'লো-তার পরিসমাপ্তি কোথায় কে জানে। যদি উত্তর কোরিয়া এ বৃদ্ধে করী হ'মে গাড়ার তবে রাষ্ট্রনজ্বের গুরুত্ব কোনো ক্রমেই থাকবে না। রাষ্ট্রদক্তব অসহায় হ'য়ে দাঁড়াবে আর তৃতীয় মহাগুদ্ধের স্থচনা ক'রে দেবে। ত্রিটিশ দার্শনিক Bertrand Russel বলেছেন: রাশিয়া বৃদ্ধে লিপ্ত হ'বে আবার এ তৃতীর মহাযুদ্ধ ১০ বছর ব্যাপী চলবে। কিন্তু ব্রিটিশ সমরমন্ত্রী Ms. S. Trachey প্রকাশ করেছেন, "The knowledge that the western world will not sit by while the Communists attack Korea will greatly help to prevent the outbreak of a third world war." চাৰ্চিল বলেছেন: "If the Communists won in Korea a third world war would be hurled upon the world." কোরিয়ার সংঘর্থের কথা উল্লেখ করে "নিট ইয়র্ক টাইমস্" পত্রিকা বলেছেন—র্যাদ উত্তর কোরিয়া দক্ষিণ কোরিয়ার জয়লাভ করে তবে আমেরিকার ভবিশ্বৎ ও আমেরিকার সম্মান হ'টোই বিপদাপন্ন হ'রে দাঁড়াবে। তৃতীয় মহাযুদ্ধের ছালা বে পুণিবীর বুকে ঘনীভূত হ'য়ে উঠেছে তারও আভাদ যথেষ্ট পরিমাণে प्तिश याष्ट्र । এपिक, त्रानिश ও অशास क्यानिष्टेश--Western imperialistsরাই সংগ্রামের আয়োজনে ব্যস্ত। তীযুক্ত এম, এন, রায় বলেছেন, "Communism has been gaining popularity. It is not an enemy which can be combatted with arms, particularly when it can also be armed. The loss of Korea will threaten Japan and the entire line of U. S. Pacific Defence. Therefore the battle of Korea is pregnant with the most ominous possibilities. It would be a grim tragedy if the dreaded third world war broke out on the issue of what appears to be the popular case."

আজ পৃথিবীর সমস্ত দেশের দৃষ্টি কোরিয়ার সঙ্গে আবদ্ধ। ঐ উপদ্বীপটি ঘিরে যে আগুন কলে উঠেছে—তা পুৰিবীর সাম্যবাদী ও ধনতান্ত্রিক দু'টি দলের মধ্যে ভবিত্রৎ সংঘর্ষের আরও পথ নির্দেশ করে দিল। রাইনজ্ব উত্তর কোরিয়ার আক্রমণ প্রতিরোধ করতে আজ বদ্ধপরিকর। উত্তর কোরিয়ার দৈশ্রবাহিনী দক্ষিণ কোরিয়ার ভেডরে ব্ছদুর প্রবেশ করেছে। প্রেনারেল ডগলাস মাাক আর্থার আমেরিকান ও দক্ষিণ কোরিয়ার দৈশুবাহিনী পরিচালনার ভার গ্রহণ করেই শান্ত রইলেন না। ম্যাক আর্থারকে কোরিয়ার যুদ্ধ পরিচালনা করবার জন্ত হাইদ:ভবর পক্ষ থেকে জয়েন্ট কমাগুরের পদে নিয়োগ করা হংয়ছে। রাষ্ট্রন.জ্বর এ ব্যবস্থায় রাশিয়া বিশেষ করু হয়েছে। তারা এ ব্যবস্থাকৈ বে-আইনি বলে ঘোষণা করেছে। আমেরিকান ও দক্ষিণ কেরিীর रिम्मत्रा जाक भएन भएन भवाक्य ७ शामित छात्र वहन क'रत्र हरसरह। উত্তর কোরিয়া প্রবল প্রতাপে সমস্ত বাধা বিল্ল উত্তীর্ণ হ'য়ে দক্ষিণ কোরিয়া গ্রাদ করতে অগ্রদর হয়েছে। রাষ্ট্রদভের সাহায্য আগ বার্থভায় পর্যাবসি চ হ'তে চলেছে। দক্ষিণ কোরিয়ার প্রনের ইলিও क्रमनरे रान रून्ना इ'रा डिश्ह। श्रीश्रद्धिन वरलाहन: If the Communists succeed in Korea, the whole of the Asian continent will come under the Red grip which will extend by stages all over the world till Russia comes face to face with America. দ ক্ষণ কোরিয়ার পতনের সংব ক্ষানিষ্টদের প্রভাব যে আরও বিস্তৃত হ'লে পড়বে তা' নিঃদলেংহই बना हरन ।



দেশে খান্তাভাব-

वर्खमारन रमरण रव थान्नाजाव रमथा मित्राहक, जाहारक সরকার পক্ষ বাহাই বনুন না কেন, আমরা ছুভিক্ষ ছাড়া আর কিছুই বলিতে পারি না। তাহার কারণ অধিক প্রিমাণেই দৈবত্রবিপাক। ক্র মাস ধরিয়া গত নানাস্থানে অতিরৃষ্টি হইয়াছে। দাজিল লং জেলা বিপন্ন হইয়াতে, ফলে অলপাই এটা অেলাও ভীষণ ক্ষতিগ্ৰস্ত। स्मिनी पूत्र, मूर्निमावाम, वर्षमान, क्शनी, श्रांक्ष व वीत्रकृम स्वतात करन कारन वका कश्चात करन वक थारायण नहे হইবা গিরাছে। মাজাজ প্রদেশে গত কয় মাদ ধরিবা क्षाकि (जनाय मोक्न व्यवाजात तथा नियारः। विश्वा প্রদেশে ও বাংলার সন্নিহিত করেকটি জেলায় গত বংসর ভাল থামশক্ত উৎপন্ন হয় নাই-কলে করে কটি জেলার গত এ৪ মাদ যাবং অৱাভাব চলিতেছে ও দে স্কুল জেলা হইতে বছলোক পশ্চিম বাংলার চলিয়া আসিয়াছে। তাহার পর সম্প্রতি বক্সার ফলে উত্তর বিহারে কয়ট জেলার শস্ত নষ্ট হইয়া গিয়াছে। উত্তর প্রদেশেও ভীষণ বক্তায় ক্ষেক্টি জেলার শশুন্ত হইয়া গিয়াছে। সর্কোপরি অাধামে ভীষণ ভূমিকম্পের ফলে প্রায় সমগ্র আসাম আজ বিপর—১৫ই আগষ্ট ভূমিকম্প আরম্ভ হইলেও ২৮শে আগঠ সংবাদ পাওৱা যায় বে হিমালয় পর্বত ধ্বসিয়া ক্রমে সমগ্র সমন্তল প্রেলেশ গ্রাস করিতেছে। ঐ ১৪ দিন প্রভাহই ক্ষেক্বার করিয়া ভূকম্পন হইয়াছে ও বিভিন্ন দিনে বিভিন্ন সহর, গ্রাম, চা-বাগান, কৃষিক্ষেত্র প্রভৃতি ধ্য স্প্ৰাপ্ত হইবাছে। তথায় দাৰুণ ৰাভাভাব উপস্থিত-नम्य (तन्त्रप्य नहे रुख्यात्र, नदी मतिया याख्यात्र अवः प्रथ ^ভিমা যাওয়ায় এক স্থান হইতে অন্ত স্থানে যাইবার ^{উায়} নাই। কোন কোন স্থানে হরত থাতাশত মজুত ^অেট্য কিছ সেই মন্থুত খাত এক হান হইতে অক হানে ^(श्र-) व्याय व्यवस्थत । विमान वार्राण थास्त्रीन हात्न थांस्र (थेंंच क्त्रा इटेटिट — किड तम वावश आति मरशायबनक ^{ইইতে} পারে না। আমরা পশ্চিম বাংলার সমস্তা লইরা

State Company of the Company of the

এত বিব্ৰত যে সে কথা চিন্তাই করিতে পারি না। পশ্চিমবঙ্গ সরকার রেশন অঞ্চলে চাউলের বরাদ্দের পরিমাণ कमारेशा पिशाहन- रश्क ठाउँन आत्र कमारेशा पिरवन। চাউলের পরিবর্ত্তে গম দেওয়া হইতেছে—অষ্ট্রেলিয়া হইতে দে জন্ত প্রচুর গম আনয়ন করা হইয়াছে। রেশন এলাকার বাহিরে সর্বাত্র ৪০।৫০ টাকা মণ দরে চাউল বিক্রীত হইতেছে—এত অধিক দাম দিয়া চাউল ক্রে করা কাহারও পক্ষে সম্ভব নহে। কাজেই লোক অথাত খাইয়া মরিতে বসিয়াছে। অথাত থাইয়া লোক উদ্রাময়ে প্রাণত্যাগ করিলে সরকারী কর্তুপক্ষ তাহা ছর্ভিক্জনিত মৃত্যু বলিয়া স্বীকার করেন না—অথচ—ধীরভাবে চিস্তা করিলে দেখা যায়, সে মৃত্যুর কারণ অল্লাভাব ছাড়া আর কিছুই নহে। পশ্চিমবাংলা ছাড়াও আৰু ভারতে বন্ধ श्रास्त्र अज्ञाङ्गात, कारकह वाहित इहेर्ड हाउन आमलानी হইলেও পশ্চিমবঙ্গ তাহার মাত্র সামান্ত অংশ পাইতে পারে। এ অবস্থায় সরকারের পক্ষেও চাইল সরবরাহের ব্যবস্থা করা সম্ভঃপর নহে। এই সকল কথা চিন্তা করিয়া আমাদের অনাহারে মৃহ্যুবরণ করা ছাড়া গত্যন্তর নাই। य नकन शारन श्रम भाषद्या यहित, तम मकन शारनद्र লোক ছই বেলা আটা খাইয়া কোন রকমে বাঁচিয়া থাকিবে — किंद्ध रवशास्त्र भमेख मिलिरव ना, त्मशास्त्र लाक शांहित পাতা ছাড়া আর কিছুই পাইবে না। গত বংসর আলুও ভাল হয় নাই-এ বংসর আউদ ধানের ফদলও আশাপ্রদ নহে। চাষীর অভাবে ভরিতরকারীও অধিক পরিমাণে উৎপত্ন হয় না—আধিন, কার্দ্তিক—ছই মাসে খাতের আর তাহাদের বাঁচাইবার কোন উপায় করা সম্ভব নতে। পশ্চিমবাংলার প্রতি জেলাতেই লোকসংখ্যা বাডিয়াছে। বিশেষ করিয়া কলিকাতা, ২ঃ পরগণা, মুর্নিদাবাদের অবস্থা শোচনীয়। কলিকাতা সহরের অবস্থা বর্ণনাতীত হইয়াছে। এখন পর্যন্ত প্রত্যন্ত করেক হাজার कतिया हिन्तु भूकीतक हहेटड किनकालाय आंगमन

করিতেছে। ২৪ পরগণার কারধানা-বহুস অঞ্চলসমূহে অধিবাদীর সংখ্যা সর্বত্র বিশুণ হইন্নাছে। অভান্ত স্থানেও বহু আপ্রেপ্রার্থী শিবির বা নূতন গ্রাম প্রতিষ্ঠার ফলে সর্ব্যত্ত ভীষণ থান্তাভাব। নদীয়ার পাকিন্তানীদের আগমনে তথায় চালের মণ ৫০ টাকা—তাহাও সর্বত পাঁওয়া বায় ना - मूर्निमावारमञ्ज विवत्रण आमत्रा विच्नृष्ठ ভाবে अञ्च व्यकाम कतिशाहि। এ अवशांत आमारमत कि कर्छना, তাহা ভাবিরা পাই না। পশ্চিমবাংলার খালমন্ত্রী মহাশর এ विवास वर्थामांशा हाडी कतियां विद्या कि इहे করিয়া উঠিতে পারেন নাই—তাহা তিনি বহুবার স্বীকার করিয়াছেন। দেশের লোক এত অধিক তুর্নীতি-পরায়ণ য়ে সামাজ মাত্র স্বযোগ লাভ করিলেই তাহারা তুর্নীতির আশ্র গ্রহণ করিয়া দেশবাসীর হু:খ বাড়াইরা দিরা খাকেন। এ বিষয়ে সরকারী চেষ্টা এখনও অধিক ব্যাপক হয় নাই। ছুৰ্নী তি-নিবারণ বিভাগও হয়ত তুৰ্নী তিপরায়ণ — স্থতগাং কে আমাদের এই ত্রবস্থা হইতে রক্ষা করিবে ? আথীনতা দিবস-

১৯৪৭ সালের ১৫ই আগষ্ট ভারত স্বাধীনতা লাভ করিয়াছে। তাগা তিন বংসর পূর্ণ হওয়ায় গত ১০ই আগষ্ট রাষ্ট্র পরিচালকগণ দেশের সর্ব্বত্র স্বাধীনতা দিবস উৎস্ব পালন করিয়াছেন। কিন্তু এই উৎসবের সহিত দেশের জনগণের কোন সম্পর্ক ছিল না। আমরা তিন বৎসর भूटर्स चाधीन इटेटन अ वर्खमान बाह्रे भतिहानकान नाना কারণে আমাদের কোন স্থস্থবিধার ব্যবস্থা করিতে পারেন নাই,বরং আমাদের ছ:थ ছর্দ্দশা জাহাদের অব্যবস্থার करन मिन विन वाष्ट्रिया छनियारह। य महाच्या शाकीरक তাঁহারা জাতির জনক বলিয়া স্বীকার করেন, বাঁহার চিত্র রাষ্ট্রপরিচালকদের প্রতি গৃহে রক্ষিত হইয়াছে, তাঁহার আদর্শ কোথাও রক্ষিত হয়না। তিনি দেশকে যে ত্যাগ, সেবা ও প্রেমের আদর্শশিকা দিয়া গিয়াছেন, সে আদর্শ আজ कि क्टा कि टारिंग कोशं अन्यानिक हा ना। नामन ব্যবস্থার ব্যব্ন দিন বাড়িয়া যাইতেছে ও তাহার পরিবর্ত্তে रम्यांनी अनगरनत कहें अन्मारन वाष्ट्रिया हिन्दारह। জনগণ আজ পেট ভরিবা থাইতে পাব না-পরিবার কাপড পার না। পাত ও বস্ত্রের দাম এত অধিক, বে জনগণের পক্ষে তাহা কয় করা অসম্ভব। গান্ধীকি সে সাম্যবাদের

বাণী প্রচার করিয়াছিলেন, সে সাম্যবাদ প্রতিষ্ঠার চেষ্টা কোণাও নাই। এখনও বুটাণ রাজদের সময়ের মত ধনিক সম্প্রায়কে তৃষ্ট করিবার জন্ত শ্রমিকের উপর नियां उन मम्बारवर हिन्दि । धनिरकत व्यर्थ प्रतिरक्ष कलारिन बन्न वारात वावल कतिल एरवरे (मर्म नामावाम প্রতিষ্ঠা সম্ভব-তাহার কোন চেষ্টা দেখা যাত্র না। এই অবস্থায় দেশের জনগণ স্বাধীনতা দিবস উৎসবে বোগদান करत नारे। किनकां महस्त्रत लोक भर्गा स्ट मिन छे९-मत्व त्यांगमान करत्र नाहे-महत्रक्ती वा श्रास्त्र कथा ज वनारे वाहना भाज। वादाकश्रुद्ध शासी चाटि तम मिन दर উৎসব হইয়াছিল ভাহাতে গভর্বর ডা: কাটকু, প্রধান মন্ত্রী **डाकांत्र विधानहस्र तांत्र, मधी श्रक्तहस्य दमन, मधी निक्**क বিহারী মাইতি ও মন্ত্রী কেমচক্র নম্বর যোগদান করিলেও তথায় অধিক লোক সমাগম হয় নাই। অক্তাক্ত বহু স্থানে সরকারী বাবে থানাপিনা হইয়াছিল-কিছ দ্বিত জনগণের ভাগতে কোন লাভ হয় নাই। যতদিন না দেশের জন-গণের অন্ন বল্লের সংস্থান হয়, যতদিন না ভাহাদের শিক্ষা ও স্বাস্থ্যরক্ষা ব্যবস্থা হয়, যতদিন না লক্ষ লক্ষ্য গুগ্ছীন বেকার লোকের গৃহ ও কর্মসংস্থান হয়, ততদিন দরিজ জনগণ স্বাধানতার মর্ম্ম উপলব্ধি করিতে পারিবে না—কোন উৎসব করা ত তাহাদের নিকট বাতুলতা মাত্র।

শ্রী সরবিক্দ জক্মোংসব—

১০ই আগষ্ট স্বাধীনতা উৎসবের দিনে ভারতের সক্ষর
শ্ববি শ্রীমরবিল ঘোষ মহালরের ১৯তম জন্মদিবস উৎসাও
অহান্তিত হইয়াছে। শ্রীমরবিল গত প্রায় ৪০ বৎসর ধরিয়া
ভাঁহার পণ্ডিচারীন্থ আপ্রমে থাকিয়া যে সাধনা করিতেছেন
তাহা মানবকল্যাণ সাধন করিবেবলিয়া লোক বিশ্বাস করে।
সেজস্ত ঐ দিন লোক শ্রন্ধার সহিত শ্রীমরবিলের জাবাও
কার্যাবলী আলোচনা করিয়া তাঁহার জন্মদিবস লালন
করিয়াছে। কলিকাতা নিথিল ভারত শ্রীমরবিল আবিল
মহোৎসব কমিটার পক্ষ হইতে ঐ দিন ভক্তর শ্রীশ্রামা প্রশাদ
মুখোপাধ্যারের পৌরোহিত্যে এক অহুঠান হইয়ালির ও
সকালে কলিকাতা ১২ ল্যান্ডাউন রোডে শ্রীমরবিল সাক্রিত
ক্রেপ্রতিঠা করাহইয়াছে। বিকালে ২৩৭ লোয়ার সাক্র্রারি
রোডে ব্রঞ্জনী? গৃহে শ্রীমরবিল পাঠ মলিরের উল্যোগেও

সভা হইরাছিল। প্রীজরবিশের সাধনা এই ছুর্গত দেশকে রক্ষা করুক ও দেশবাসীর মনকে কলুব মুক্ত করুক, সেদিন সকলেই এই প্রার্থনা করিয়া উৎসব সম্পন্ন করিয়াছেন। ভাক্তোবা শীলারভান সারকার—

ডাক্টার নীলরতন সরকার কলিকাতার শুধু একজন বিশিষ্ট চিকিৎসক ছিলেন না, তিনি দেশপ্রেমিক নেতা ও থ্যাতনামা ব্যবসায়ী ছিলেন। তিনি তাহার যোগার্জিত বহু অর্থ নানাভাবে দেশের কল্যাণের জক্ত ব্যয় করিয়াছিলেন। সম্প্রতি স্বাধীন বাংলা সরকার কলিকাতা ক্যাম্বেল কলেজের নাম পরিবর্ত্তন করিয়া 'নীসরতন সরকার মেডিকেল কলেজে নাম পরিবর্ত্তন করিয়া 'নীসরতন সরকার মেডিকেল কলেজে নামকরণ করিয়াছেন। নীলরতন ঐ স্থলের ছাত্র ছিলেন ও তাহার উন্নতির জক্ত আজীবন চেষ্টা করিয়া গিয়াছেন। কাজেই তাঁহার নামের সহিত ঐ প্রতিষ্ঠানের নাম বৃক্ত করায় উপযুক্ত কাজই করা হইয়াছে। ঐ ভাবে বাংলার বছ মনীয়ার কথা আমরা স্মরণ করিবার ব্যবস্থা করিতে পারি। নীলরতনের দান দেশবাসীর পক্ষে বিশ্বত হইবার কথা নহে। আমরা সরকারের এই কার্য্যে তাঁহাদিগকে অভিনন্ধিত করিতেছি।

উড়িন্তার ভীষণ বস্তা—

আমরা মান্তাঞ্জ, পশ্চিমবন্ধ, বিহার ও আসামে বৈবছবিপাকের ফলে অন্নাভাবের কথা অন্তত্ত প্রকাশ করিলাম। গভ আগষ্ট মাদের দিতীয় ও তৃতীয় সপ্তাহে উড়িয়ার মহানদী, ব্রাক্ষণী, বৈতরণী, ভাগবী, স্থবর্ণরেখা গুড়ত নদীর বস্তার ফলে বালেখর, কটক ও পুরী জেলার বহু স্থানে ধান একেবারে নষ্ট হইয়া গিয়াছে। বালেখর শেশার যে সকল স্থানে খুব বেশী পরিমাণ ধান হইত, সে কাল স্থান ভাগিয়া গিয়াছে। উড়িয়ার মন্ত্রী প্রীরাজকৃষ্ণ বান ভাগিয়া গিয়াছে। উড়িয়ার মন্ত্রী প্রীরাজকৃষ্ণ বান ভাগিয়া গিয়াছে। আসিয়া যে বিবৃতি প্রকাশ বানিয়াছেন, ভাহা মর্শ্যন্তদ। এ বিবরে কোন মন্তব্য

ক্তিও কারিগরী শিক্ষা—

পশ্চিমবন্ধে টালীগঞ্জ, গড়িরাহাট, বাদবপুর, স্থরেক্স বি লাজী রোড, কুফানপর, হাওড়া হোম ও কার্সিয়াংয়ে বি লিকা কেন্দ্রে মোট ২০২৮ জন শিকার্থীকে কারিগরী পি হৃত্তি শিকা দিবার ব্যবস্থা করা হইরাছে। শিলোময়ন, উৎপাদন বৃদ্ধি ও বেকার সমস্তার সমাধান এই শিক্ষাকেন্দ্র প্রতিষ্ঠার কারণ। মোট ২৫ হাজার প্রার্থীর মধ্যে গটি কেল্রে ২০২৮ জন শিক্ষার্থী গ্রহণ করা হয়। প্রার্থী নির্ব্বাচনের জন্ত একটি বোর্ড গঠিত হইরাছে। ভারত-সরকার ও পশ্চিমবঙ্গ-সরকারের বৃক্ত চেষ্টার এই ব্যবস্থা প্রশংসনীয়—ইহা ছারা প্রার্থীরা মোটর-মেকানিক, ড্রাফট্সম্যান, সার্ভেরার, জেনারেল মেকানিক, কার্পেটারী প্রভৃতি কাল শিক্ষা করিয়া জীবিকার্জন করিতে সমর্থ হইবে।

শিক্ষের উৎপাদন হক্ষি-

১৯৫০ সালের জাম্বারী হইতে জ্ব এই ও মাসে ভারতে ক্য়লা, ইম্পাত, লবণ, সিমেন্ট, কাগজ, ডিজেল এঞ্জিন, বাইসাইকেল, বিত্যুৎচালিত মোটর, ইলেক্টি ক ট্রাক্ষরমার প্রভৃতি অত্যাবশুক ২০টি শিরের উৎপাদন বৃদ্ধির লক্ষণ দেখা গিয়াছে। ঐ সমরে বৈছ্যুতিক পাখা, হারিকেন লঠন, সালফিউরিক এসিড, কষ্টিক সোডা, সোডা এগাস, রিচিং পাউডার, সিগারেট, প্রাইউড, লিকুইড ক্লোরিণ প্রভৃতির উৎপাদনও বৃদ্ধি পাইয়াছে। ইয়া আশার কথা সন্দেহ নাই। হিসাবে লবণ উৎপাদন বৃদ্ধির সংবাদ থাকিলেও দেশে লবণ ছন্ত্রাপা ও ছুর্মুল্য হইয়াছে। বস্ত্র উৎপাদন বৃদ্ধির সংবাদ থাকিলেও দেশে লবণ ছন্ত্রাপা ও ছুর্মুল্য হইয়াছে। বস্ত্র উৎপাদন বৃদ্ধির সংবাদ প্রকাশিত হইলেও, বস্ত্রের মূল্য দিন দিন বাড়িয়াই চলিয়াছে। বোখারে বস্ত্র শিল্প শ্রমিক ধর্মাটে হয়ত বস্ত্র আরও ছন্ত্রাপ্য হইবে। দেশলাই, সাবান, পশমজাত দ্রব্য, এনামেলওয়ার প্রভৃতির উৎপাদন হাস দেশের পক্ষে মললজনক হইবে না।

দামোদর পরিকল্পনা—

দামোদর পরিকল্পনা সমিতির অন্ততম সদস্য প্রীক্লনপ্রদাদ বর্মা সম্প্রতি প্রকাশ করিয়াছেন যে গত মে মাসে
পর্যান্ত ঐ পরিকল্পনার মোট ৯ কোটি টাকা ব্যবিত
হইরাছে। পরিকল্পনার নির্ক্ত কর্মীদের প্রাদেশিকতা
অহ্যায়ী নিয়োগ করা হর বলিয়া বে সংবাদ প্রচারিত
হইয়াছে তাহাও ঠিক নহে। তথার ৮১৭ বালালী, ৩১৭
বিহারী ও ১৯৮ অন্ত দেশের কর্মচারী কাল করিতেছে।
পরিকল্পনার অর্থব্যরের তুলনার দেশবাসী কিরপ উপক্রত
হইতেছে বা হইবে, সলে সলে তাহার বিবরণ প্রকাশিত
হইলে দেশবাসী আখন্ত হইতে পারে।



দুর্শিদাবাদে ছতিক প্রতিরোধ দিবস—
দুর্শিদাবাদ জেলা ম্যাজিট্রেটের বাটার
সম্পুর্বে থাক দাবীর সভার সমবেত
বুভূকু জনতার এক অংশ



মুশিদারাদ ছডিক প্রতিরোধ দিবদের
অপর এক মর্মস্তদ দৃশ্র—
বুভূকু জনতার নেতা দিনীপ
সিংহকে এবং আরো অনেককে
পুলিশ কর্তৃক গ্রেপ্তার

সংস্কৃত সাহিত্য পরিষদ—

কলিকাতাত্ব সংস্কৃত সাহিত্য পরিষদ গত ৩৪ বংসর ধরিয়া সমগ্র ভারতে সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্যের প্রচারের জন্ম আন্দোলন চালাইয়া কার্য্য করিতেছেন। গত মহাযুদ্ধের পূর্ব্বে কলিকাতা কর্পোরেশন পরিষদকে কলিকাতা ভামবাজার ১৬৮।১ রাজা দীনেক্র ফ্রীটে ৫ কাঠা জনী দান করিলে তথার গুহ-নির্মাণের আরোজন হয়। সে সময় শ্রীষ্ঠ স্থভাষচক্র বস্থ গৃহ-নির্মাণের অর্থ সংগ্রান্থের করে আবেদন করিয়াছিলেন। তাহার পর মহাবৃদ্ধের করে সে কাব্দ অগ্রসর হয় নাই। সম্প্রতি আবার সে কাব্দ আরম্ভ হরৈছি—গৃহ সম্পূর্ণ করিতে ৫০ হাজার টাকা প্রয়োজন। আমরা দেশবাসী সকল মহাপ্রাণ ব্যক্তিক এই কার্য্যে সাহাব্য দান করিতে অহ্বোধ করি। ভারতীয় সংস্কৃতি রক্ষার জন্ম সংস্কৃত সাহিত্য পরিষদ্ধকে পুই করা

প্রবোজন। ক্লিকাতা—৭, ১নং বর্ষণ ষ্টাটে আনন্দবালার পত্রিকার সম্পাদক শ্রীচপলাকান্ত ভট্টাচার্য্যের নিকট সাহায্য পাঠাইতে হইবে—তিনি সংস্কৃত সাহিত্য পরিবদের সম্পাদক।

উত্তর প্রদেশে ভীষ্ণ বস্থা-

উত্তর প্রদেশে গলা, সরযু প্রভৃতি ৮টি নদীতে বক্সার ফলে প্রদেশের পূর্বাঞ্চলে ২০ শত গ্রাম জলপ্লাবিত হইরাছে। বক্সায় প্রায় ৫ কোটি টাকা ক্ষতি হইরাছে বলিরা মনে হর। বছ খাত্মশস্ত নষ্ট হইরাছে। বিপদ কথনও একা আনে না—আল ভারতবর্ষের সর্বত্ত তাই একই রক্ষ ভ্রবস্থা দেখা বাইতেছে।

আসাম গভর্গরের আবেদন—

আসামে ভূমিকলা ও তজ্জনিত বস্থা প্রভৃতির ফলে লক লক লোক দারণ তুর্দশাগ্রন্থ হইরাছে। ক্ষতির পরিমাণ এখনও দ্বির করা সম্ভব নহে—১৫ই আগপ্ত হইতে ভূমিকলা আরম্ভ হইরাছে, এখনও বন্ধ হর নাই। বহু উচ্চস্থান নিয় হইরা জলপ্লাবিত হইরাছে। বিমালর পর্বত্তের বহু উচ্চ ভূমিকলা জমীতে পরিণত হইরাছে। বিমালর পর্বত্তের বহু উচ্চ ভূমিরা সমতল ভূমিতে পতিত হওরার সহর ও গ্রাম চাপা পড়িরাছে। ভূমির ইইতে খনিজ ধাতু নির্গত হইরা বহু স্থান ধ্বংস করিরাছে। এ অবস্থার স্মাসাম্যের গভর্ণর প্রায়য় তহবিল খুলিরাছেন এবং সকল সমর্থ ব্যক্তিকে ঐ ক্যাবিলে দান করিরা ত্র্তিদের সাহায্য করিতে অহ্বরোধ জানাইরাছেন। এ আবেদনে সকলেই সাড়া দিবেন বলিরা জামরা বিশ্বাস করি।

্রেসিডে-দী জেলে উৎসব—

শ্রীমরবিন্দ বোষ ১৯০৮-১ সালে এক বৎসরকাল

কলিকাতা প্রেসিডেলি জেলের বে বরে বিচারাধীন আসামী
কলে বাস করিরাছিলেন, গভ ২২শে আগষ্ট সেই বরের

সংখে একটি মার্কেল প্রভরে ঐ ঘটনার কথা লিবিরা রাধা

রোছে। সে দিন উৎসবে গভর্ণর শ্রীকৈলাসনাথ কাটজ্

মন্ত্রী শ্রীনীহারেন্দ্ দন্ত মন্দ্রদার উভোগী ছিলেন এবং

রের শ্রীশ্রামাপ্রসাদ মুখোপাধার প্রভরের আবরণ উন্মোচন

করেন। এইভাবে জেলের ঐ বরটি পবিত্র করা হইয়াছে এবং

উল্লেখনাকে ভারিক্তের পরিণ্ড ইইরাছে। জেলের

করেণীদের কাছেও উহা অ্বকাদারক হইবে বলিরা আশ্র করাবায়।

শ্রীঅরবিদের ভবিশ্বরাণী—

গত ১০ই আগষ্ট পণ্ডিচেরী আশ্রমে শ্রীমরবিন্দ ভাঁচার ।
১৯তম জন্ম দিবসে সংবাদপত্র প্রতিনিধিদের নিকট বোষণা করিয়াছেন যে—বর্ত্তমানে জগতের অবস্থা অত্যন্ত শঙ্কাজনক ।কোরিয়ার বৃদ্ধের ফলে সমগ্র দক্ষিণ-পূর্ব্ব-এশিরা ও পরে ভারতবর্ষ কম্যানিষ্টদের অধীন হইবে। ক্রমে সমগ্র জগৎ কম্যানিষ্টদের হন্তগত হইবে। শ্রীমরবিন্দের এই ভবিশ্বহাণী সকলকে চিন্তাব্যিত করিবে সন্দেহ নাই।

বোষায়ে বিপুল থৰ্মঘট—

বোষারে ৬২টি কাপড়ের কলের মধ্যে প্রায় স্কল
গুলিতেই শ্রমিক ধর্মঘট চলিতেছে। মোট শ্রমিক সংখ্যা
> লক্ষ >৫ হাজার—করেক হাজার ছাড়া সকলেই ধর্মঘটে
যোগদান করিরাছে। ৬২টি কলে প্রত্যাহ ৪২ লক্ষ্য গজ
কাপড় উৎপন্ন হইড—সমাজভন্তী দল এই ধর্মঘট চালাইতেছে। ১৪ই আগষ্ট হইতে উহা চলিতেছে। বোষাই
সন্নকার ঐ ধর্মঘটকে উদ্দেশবিহীন ও অবৈধ বলিয়া ঘোষণা
করিয়াছে। ইহার কল যে কিরুপ সাংঘাতিক, ভাহা
ভাবিন্না পাওরা ধার না। আদালত হইতে ২ মাসের বেতন
বোনাস দিতে বলা হইয়াছিল—শ্রমিকগণ ৩ মাসের বেতন
বোনাস দাবী করার ফলেই এই ধর্মঘট হইয়াছে।

ধুবুলিক্সা বাস্তহারা কেন্দ্র—

কলিকাতা হইতে १০ মাইল দ্বে নদীয়া জেলার
ধ্বুলিয়ার সরকারী চেষ্টার ৫০ হাজার বাস্তারের বাসস্থানের
ব্যবস্থা করা হইয়াছে। তাহারা পূর্ববন্ধের বিভিন্ন জেলার
অধিবাসী ছিল। তথার ৩০০টি কৃষক পরিবার, ১৬৬২টি
ছোট-ব্যবসায়ী পরিবার, ৮৫০টি বাকজীবী পরিবার, ৮২৬টি
মৎস্ত্রীবী পরিবার ও ৫০৬টি চাকরীজীবা পরিবার স্থান
পাইরাছে। ৮৫টি পুরোহিত পরিবার, ১ শত প্রাথমিকস্থান-শিক্ষক পরিবার,১০টি মধ্য ইংরাজি কুল-শিক্ষক পরিবার,
০টি উচ্চ ইংরাজি বিভালর-শিক্ষক পরিবার ও ১৯টি ছলিললেখক পরিবার ও তথার আছেন। ১৫৫ জন ছুতার,
১৬০ জন কুন্তুকার, ২০৫ জন তাতী, ৫০ জন গোয়ালা,
৪৪ জন দ্রজী, ৭ জন স্থুচি, ১১ জন মোটর চালক, ৪ জন

শোপা, ৭৭ জন নাপিত, ২০ জন শোদক, ১৯ জন শাঁধারী, ১০ জন মেকানিক ও ২৫ জন বিড়িওরালাও আছেন। ঐ স্থান হইতে মালদহে ২১০ পরিবার, আন্দামানে ৩৮ পরিবার, মেদিনীপুর পিয়ারাডোবায় ৪০ পরিবার, নদীরা করিমপুরে ৩২৭ পরিবার, নদীরা তেহট্টে ১৪৪ পরিবার, কুচবিহারে ১০, মুর্শিদাবাদ নেহালিপাড়ায় ৬টি পরিবার, প্রেরিত হইরাছে। সেদিন প্রধান মন্ত্রী ডাক্তার বিধানচক্র রায় ও বলিয়াছেন মহীশুর রাজ্যে ৪০ হাজার বাস্তহারা ও হারজাবাদ রাজ্যে ৫০ হাজার বাস্তহারা প্রেরণের ব্যবস্থা করিয়াছেন। বিহার ও উড়িয়ায় ইতিমধ্যে ৩৬ হাজার বাস্তহারা প্রেরণ করা করা হইরাছে। এইভাবে বাস্তহারা সম্প্রা সমাধানের চেপ্তা হইলেও সম্প্রা এত বিরাট যে ইহার সমাধান এখনও পর্যন্ত সম্ভবপর বলিয়া মনে হয় না।

পশ্চিমবন্ধ সরকার কুটীর শিল্প ও ছোটখাট শিল্প সম্পর্কে যে নীতি প্রকাশ করিয়াছেন, তাহা এইরপ—(১) উৎপাদনের উন্নততর পছতি প্রয়োগ ছারা নির্মাণ কৌশলের উন্নতি বিধান (২) বিভিন্ন ছোটখাট শিল্পে উপযুক্ত শিক্ষা প্রদানের জন্ম শিল্প ও বৃত্তিমূলক প্রতিষ্ঠান গঠন (৩) আর্থিক সাহায্যের ব্যবস্থা (৪) কুটির শিল্পভাত ত্রব্য বাজারে আনয়ন ও প্রচার সম্পর্কে স্থবিধার ব্যবস্থা (৫) উৎপাদন কেন্দ্রে স্থলভ মূল্যে কাঁচামাল সরবরাহ (৬) বুহৎ বাজিক শিল্পের তুলনায় প্রতিযোগিতা করিবার জন্ত উৎপাদনের ব্যন্ন প্রানের ব্যবস্থা (৭) ভারত সরকারের নীতি ও কার্য্য স্থচী অমুযায়ী প্রতিযোগিতার ক্ষেত্র সম্কৃতিত क्तियांत्र উत्करण कृतित ७ वृहर भिरत्नत मर्था উर्शामरनत क्लाब निकांत्रां दर्श। ध विषय क्याकि डेशाम्ब কমিটাও গঠিত হইরাছে—বধা—(১) পশ্চিমবন্দ কুটার শিল্প বোর্ড (২) পশ্চিমবন্দ হস্তচালিত তাঁত শিল্প বোর্ড (৩) পশ্চিমবন্ধ খাদি বোর্ড ও (৪) পশ্চিমবন্ধ রেশম শিল্প বোর্ড। শিল্প বিভাগের অধীন ৪৫টি শিক্ষা প্রভিষ্ঠান আছে ও তাঁহারা ৭০টি শিক্ষা প্রতিষ্ঠানকে উপযুক্ত আর্থিক मोहाया श्रामन करवन। मदकादी भिन्न विचारशद श्राह-कार्या छात छारा मन्नामिछ हरेला लाक खे मकन निर्देश া সাহায্য লাভ করিয়া উৎসাহের সহিত কাল আরম্ভ করিতে পারে।

খালাবস্থার উন্নতির পরিকরমা—

क्षांन यही পण्डि त्रहरू विहोट नकन क्षांत्रभव মুখ্যমন্ত্রী ও খাতমন্ত্রীকে এক সন্মিলনে মিলিত করিয়া দেশের থাতাবস্থার উন্নতি সম্বন্ধে পরিকল্পনা স্থির করিরাছেন। গত ২০শে আগষ্ট ঐ বৈঠক শেষ হইরাছে। সর্বতি যাহাতে একইরূপ খালনীতি গুণীত হয়, তল্প रेकेटक প্रखाव गृशैक हहेबाहि। প্রধানত युक्तकानीन খাছোৎপাদন ও খাল সংগ্রহ ব্যবস্থা প্রবর্ত্তন, কেন্দ্রীয় সরকারের নির্দেশে একরপ থাজনীতি অমুসরণ, তৎপরতার সহিত আতানির্ভরশীল হইবার পরিকল্পনা অমুসরণ, ঘাটডি ও উष्ত अक्ष्म निर्दित । विভिन्न श्राप्त । नियञ्चनाधीन मर्व्वविध भक्त वांभक्षाद्व मध्यह, विक्रि রাজ্যে মজুতকারীদের বিরুদ্ধে কঠোর ও অহুরূপ ব্যবস্থা অবলম্বন, খান্ত সম্পর্কিত নীতি যথায়ণভাবে কার্য্যে পরিণত করার ব্যবস্থা গ্রহণ, বিভিন্ন রাজ্যে থাতাশভ্যের মূল্যের সমন্ত্র সাধন ও আঞ্চলিক ভিত্তিতে চিনির কলগুলিতে ইকু সরবরাহের ব্যবস্থা প্রবর্ত্তন সম্পর্কে বৈঠকে সিদ্ধান্ত গুণীত इटेब्राइ। এই বৈঠকের ফলে यमि ভারতবাদী উপবৃক্ত পরিমাণে ভাল খাত পায়, তবেই বৈঠক সার্থক হইয়াছে मत्न कदा वहेत्व ।

পার্লামেণ্টে খান্ত সম্পর্কে বিল-

গত ১৪ই আগষ্ট দিলীতে ভারতীয় পার্লামেন্টের বর্ত্তমান অধিবেশন শেষ হইবার পূর্ব্বে থাজগুচিব শ্রীকানাইয়ালাল মুন্দীর থাত বস্ত্র সম্পর্কিত বিল পাশ হইয়াছে। ঐ বিলে থাতাশতা মন্ত্রকারী ও থাতা বিক্রেরে মুনাফাথোরদের এবং বস্ত্র প্রভৃতি প্রয়োজনীয় জব্যের ব্যবসায়ীদের অপরাধের ভারকারের লাভির বিধান করা হইরাছে। কেহ থাতা ব্যক্তরণ প্রয়োজনীয় জিনিষ অক্তায় ভাবে মন্ত্র কবিশ্য তাহার মন্ত্র মালের মুল্যের ২০ গুণ অর্থদণ্ড করা হইটে। আইন বদি কার্য্যে পরিণত করিয়া দেশের ভূনীভিপর্কেশ ব্যক্তিদের শাভির ব্যবস্থা হর, তবে লোক অনাচার হইটের মুক্তিলাত করিবে।

লেডী ব্রাবোর্ণ কলেজের প্রতিষ্ঠা

উৎস্ক

গত ৮ই ভাজ গুক্রবার ক্লিকাতা লেভী বা^{্রার্} ক্লেকের প্রতিষ্ঠা উৎসব হইছাছিল। গভর্ণর ভাংগার কাটজু সভাপতিত্ব করেন। বর্তমানে ঐ কলেজের ছাত্রী সংখ্যা ৫৪০ জন। ভক্টর শ্রীরমা চৌধুরী কলেজের প্রিজিপাল। কলেজের আই-এস্সি বিভাগ সম্প্রসারণ ও বি-এস্সি বিভাগের উবোধন অবিসম্বে প্রয়োজন। কলেজের ছাত্রাবাসটি বড় করিলে আরও বছ ছাত্রীর স্থান হইতে পারে। গভর্ণর তাঁহার বজ্ঞভায় ছাত্রীদিগকে সীতার আরশ্ব অম্বরণ করিতে উপদেশ দিয়াছেন।

বন্যায় গুগলী জেলার ক্ষতি—

দানোদর, ছারকেশার ও শিলাবতী নদীতে বক্সার ফলে ছগলী ক্লেলার শতাধিক বর্গনাইল পরিমিত স্থানের ধান ও পাট নষ্ট হইয়া গিয়াছে। বছ বাসগৃহ ও গবাদি পণ্ড নষ্ট হইয়াছে। আরামবাগ মহকুমাতেও ০০ হাজার বিঘা ক্লমী গ্লাবিত হওয়ায় আমন ধান ও পাট নষ্ট হইয়াছে। এ বৎসর দেশের সর্বত্ত বৈবত্তবিব্পাক—কে দেশবাসীকে রক্ষা করিবে ?

পশ্চিমবাংলার খালাবস্থা—

পশ্চিমবঙ্গে থাজমন্ত্রী প্রীপ্রফ্লাচন্দ্র সোন গত ৩০শে আগষ্ট বেতারে এক বন্ধৃতার পশ্চিমবঙ্গের থাজাবস্থার আলোচনা করিয়াছেন। তিনি বলেন—এই বৎসরের (১৯৫০) করেক মাস ও আগামী বৎসরের পুরা ১২ মাস পশ্চিমবঙ্গের থাজাবস্থা দারুণ সঙ্কটন্দনক থাকিবে। তবে সে জন্ত কেহ যেন থাজ মন্ধৃত না করে। ব্যবসায়ী ও ক্রুষকদের সাবধানভার সহিত কাজ করিতে হইবে। গত ১লা ভাম্যামী হইতে ৮ মাসে ৩০ লক্ষ বাস্তহারা পূর্ববন্ধ হইতে শ্রুমিবঙ্গে আসিয়াছেন। তাহার উপর বৈবহ্রবিপাকে বাংলার বহু থাজ নই হইরাছে। তৃতীয়তঃ পাটের চাব শাড়াইবার জন্ত বহু জমিতে আউন ধানের চাব হয় নাই। এ অবস্থার দেশবাসীকে বিশেষ দৃঢ়তার সহিত সকল দিক বিবেচনা করিয়া কাল করিতে হইবে। অবথা থাজের জন্ত পান্দোলন করিলে তাহা কুফল ছাড়া স্কুফল উৎপাদন

্লক হাসপাভাল ও কলেজ বন্ধ -

 উহাতে পশ্চিমবন্ধ সরকার বার্ষিক সাড়ে ১২ লক্ষ টাকা আ
করিকেন। বেক হাসপাতালে ৬০৭টি বেড আছে। কলেক
ও হাসপাতাল দক্ষিণ কলিকাতার অধিবাদীদের বহু উপকার
সাধন করিয়া থাকে। বাংলা দেকে চিকিৎসা-ব্যবহা
এখনও প্রয়োজনাত্মন্নপ সম্পূর্ণতা লাভ করে নাই। কাকেই
একটি চলতি হাসপাতাল বন্ধ করার সার্থকতা আমরা
বৃষি না। কলিকাতায় লোকসংখ্যা বৃদ্ধির অন্থপাতে
আরও বহু হাসপাতাল প্রতিষ্ঠার প্রয়োজন আছে। আমরা
আশা করি, কর্ত্পক্ষ এ বিষয়ে পুন্ধিরবৈচনা করিয়া
দেশবাসীর কল্যাণ সাধন করিবেন।

কলিকাভার টেলিফোন ব্যবস্থা-

গত ৩১শে আগষ্ট এক সাংবাদিক সন্মিলনে কলিকাতার
টেলিকোনের অব্যবস্থার কারণের বিষর আলোচিত হইরাছিল।
জানা গিয়াছে—সংরে নৃতন এটি একস্চেঞ্জ শীঘ্রই খোলা
হইবে—তাহাতে নৃতন ৮হাজার লাইনে কাজহইবে—'জোড়াসাঁকো'তে ৩০০ লাইন, 'ব্যাক্ষে' ৪ হাজার লাইন ও রসার
এক হাজার নৃতন লাইন ইইবে। 'পানিহাটী' ও 'চন্দননগরে'
২টি নৃতন একস্চেঞ্জ খোলা হইবে ও 'বক্ষবক' একস্চেঞ্জ
স্থানাস্তরিত করিয়া এখানে অধিক কাজের ব্যবস্থা হইবে।
হাওড়া, বড়বাজার, সাউপ ও পার্ক একস্চেঞ্জর কাজও
যাহাতে ভাল হয়, তাহার ব্যবস্থা করা হইবে। বর্ত্তমানে
টেলিফোনে কথা-বলা এক ঝকমারির কাজ হইমাছে—টাকা
দিয়া ঐরপ ছুর্গতি ভোগ করা সত্যই নক্ষারজনক! সম্বর্ধ
ব্যবস্থার উন্নতি হইলে লোক উপক্রত হইবে।

দুত্ৰ সঙ্গীত শিক্ষালয়-

গত ১৯শে আগষ্ট কাশী হিন্দু বিশ্ববিভালয় ভবৰে
'শ্ৰীকলা সলীত ভারতী' নামে একটি উচ্চ সঙ্গীত শিক্ষালয়
প্রতিষ্ঠা করা হইরাছে। হিন্দু বিশ্ববিভালরের ভাইস্চ্যান্দেলার পণ্ডিত গোবিন্দ মালব্য উহার উলোধন করেন।
কাশীর মহারালা ঐ সলীত বিভালয়ের লক্ত ছই লক্ষ্য টাকা্দান করিয়াছেন। সন্ধাত-মার্তও পণ্ডিত ওলারনাথ ঠাকুর
ন্তন শিক্ষালরের প্রিলিপালের কার্যভার গ্রহণ করিয়াছেন।
পর্বতি পণ্ডিত মদনমোহন মালব্যের এই ইচ্ছা এতদিনে পূর্ব

মথাবিত সমাত্রে বেকার সমস্তা-

क्रमवर्षमान दिकात नम्या मधाविक वाकानीत कीवनदिक किन्छ किन्ना कृति एक । निन्न थ्रधान महत्र क्रक्रम व्यात्र प्रशेष किन्न क्रमण क

শক্ষা রোগ ও ভাহার প্রতিকার-

ভাক্তার কুম্দশহর রাহ বল্পারোগ চিকিৎদার বিশেবজ্ঞ ও যাদবপুরে বল্পা হাদপাতাল প্রতিষ্ঠা, করিয়া যন্ত্রা রোগীর চিকিৎদার ব্যবহা করিয়া থাকেন। তিনি সম্প্রতি এক বিবরণে জানাইয়াছেন—যন্ত্রারোগে প্রতি বৎদর ৫ লক লোক মারা যায়। জনাকীর্ব সহরে জালো-বাতাদহীন ঘরে বদবাদ ঘাহাহানির অন্তর্ভন করেল। ভারতে যন্ত্রারোগীর সংখ্যা ৫০ লক, কিছু মাত্র ৭৮৮ হাজার রোগীকে হাদশাতাদে রাখিয়া চিকিৎদা করার ব্যবহা ইইয়াছে। এই প্রদক্ষে ভাক্তার রায় প্রতাব করিয়াছেন—সহর ও সহরতলীতে স্থাপৃহগুলি রাত্রিতে থালি পড়িয়া থাকে—জনবর্ভণ বাড়া ইইতে লোকজনকে এ দক্তা স্থাপের লাইয়া রাত্রিতে বাদ করিতে দেওয়া উচিত। জামরা এ বিবরে জনসাধারণের ও বিশেষ করিয়া সমাল-দেবী কন্সাদের লাই জাকর্বণ করি। স্প্রতাভনতেক প্রশিক্ষা ত্যাতেশক্র অনুদ্রাপ্রতা

খ্যাতনাম। ইংরাজ দার্শনিক বার্ট্র ব্রাসের অস্ট্রেলিরা ত্রমণ শেব করিরা ২০শে আগন্ত সিন্দাপুর গমন করেন। তথার তিনি বলিরাছেন—র্টেন যেমন ভারত ত্যাগ করিরাছে, তেমনই সমগ্র এদিরা ত্যাগ করিয়া তাহার চলিরা আসা উচিত। বুছ হইলে তাহারা বিতাড়িত হইবে —ততদিন পর্যান্ত তাহাদের অপেকা করা উচিত নহে। বুটেন এদিরা ত্যাগ করিরা আসিলে তাহার ওড়েছা অর্কন করা সম্ভব হইবে ও পণ্ডিত নেহরুর নেতৃত্বে এসিরারাষ্ট্র-গোটা গড়িরা উঠিবে।—রাদেশের এই উজি সকলের
অহধাবন করা প্রয়োজন। এসিরায় যদি নেহরুর নেতৃত্ব
প্রতিষ্ঠিত হয়, তাহা হইলে হয়ত বিশ্বপান্তি প্রতিষ্ঠার সম্ভাবনা
হইবে।

পশ্চিম বাংলার দাবী-

পশ্চিমবঙ্গের থান্তমন্ত্রী প্রাক্তরভক্র সেন গত ২০শে আগষ্ট দিলাতে যাইয়া বলিয়াছেন—আউদ ফদলের জমি शां**छे हारव निर्द्धां श क्यांब श**िक्तवरक्य थांक क्यान्य ख পরিমাণ হাদ পাইরাছে, তা্হা পুরণের বস্ত ক্রেীয় সরকারকে অবিলম্বে ৬১ হালার টন চাউল পশ্চিমবঙ্গের ব্দু বরাদ করিতে হইবে! ঐ দিন পশ্চিমবঙ্গের সেচ সচিব জ্রী চূপতি মজুমদার মহাশয় দিলাতে কেন্দ্রীয় গভর্বেণ্টকে জানাইয়াছেন—১৯৪৭ সালে ভারত বিভাগের करन नीमां हवर्जी स्मना नमूरह स्व नमख द्रांखा वा शब नहे হইরাছে বা ক্ষতিগ্রন্ত হইরাছে, সে সকল স্থাে নৃতন পথ নির্ম্মাণের জন্ত ৫ কোটি টাকা পশ্চিমবঙ্গের প্রহোজন। উহার কতক সাহাব্য হিসাবে ও কতক ঋণ হিসাবে দিতে **ब्हेर्स । नाना कांत्ररण शैमारखत्र अवश्वील अवन्हे निर्मिठ** হওয়া প্রয়োজন। থাত সহদ্ধে আজ কোন কথা না वनाहे छान। পশ্চिमवन উপयुक्त ठाउँन ना भाहेरन व (मर्प वह लाक अज्ञाकारव मात्रा याहेरव।

ভারতের ডেপুটী হাই কমিশনার-

ঢাকাছ ভারতীয় ডেপুটা হাই কমিশনার শ্রীনভোষকুমার বহুর কার্য্যকাল শেষ হওয়ায় আলামের ভ্তপুর্ব অর্থসচিব এবং পরে সরবরাহ ও উন্নয়ন সচিব শ্রীবৈছনাথ মুখোপাখ্যায় সেই ছানে নিবৃক্ত হইয়াছেন। ১৯০০ লালে নদীয়া জেলায় বৈচ্যনাথবাবুর জন্ম হয়। ১৯২৪ লালে আলামের রায়বাহাছর খগেক্সনাথ চৌধুরীর ক্লাকে বিবাহ করিয়া তদবধি তিনি আলামে বাদ করিতেছেন।

কাচ ও সুংশির গবেষণাগার—

গত ২৬শে আগষ্ট কলিকাতা বাদবপুরে কেন্দ্রীয় ক[া]
ও মৃংশিল্প গবেষণাগালের বার উদ্বাটন উৎসব হইরাছে।
গতর্শর ডক্টর কাটজু উৎসবে সভাপতিত্ব করেন ও প্রবাশন
মন্ত্রী ডাক্টার বিধানচক্র রায় উবোধন করেন। বাদবার কাচ ও মৃংশিল্পের প্রধান কেন্দ্র—কালেই কেন্দ্রীয় সর্কার বাংলার এই প্রেব্ণাগার প্রতিষ্ঠা করিরা উপযুক্ত কাজই করিয়াছেন। ভারতে আর কোণাও এই ধরণের গবেবণাগার নাই—কাজেই ইহা দেশের প্রকৃত উপকার সাধনে সমর্থ হইবে বলিরা সকলে মনে করেন।

পশ্চিমবন্দের ভৃতপূর্ব্ব চিফ সেক্রেটারী শ্রীষ্ঠ স্ক্রুমার সেন সর্ব্বভারতীয় নির্বাচন কমিশনার নিযুক্ত হইয়া কাজ করিতেছেন ও সম্বর বাহাতে নির্বাচন হর সে জন্ম ব্যবস্থা করিতেছেন। পশ্চিমবাংলা হইতে প্রাদেশিক ব্যবস্থা

ষাধীৰ ভারতের আসাম রাজ্যের সর্ব
প্রথম অধান মন্ত্রী গোপীনাথ ব্রদ্দলৈ

চির নিজার মন্ত্র—সরকারী ট্রাকে অস্ত্রোষ্ট
পোক্যাতার মৃত্র

কটো—জীকামাক্যাপ্রসাদ ভট্টাচার্য



কাশ্মীর সমস্থা--

কাশীরেভারতরাদ্রেরসহিত পাকিন্তানের বিবাদ নিটাইবার
জন্ত রাষ্ট্রসন্থ হইতে যে প্রতিনিধি আসিয়াছিলেন, তিনি
আপোষের কোন ব্যবস্থা করিতে না পারিয়া শেষ পর্যন্ত
ফিরিয়া গিয়াছেন। এখন যুদ্ধ ব্যতীত অন্ত কোন উপায়ে
যে এই সমস্তার সমাধান হইতে পারে, এ কথা কেই মনে
করেন না। কাজেই ভবিষ্যতের কথা চিন্তা করিয়া ভারত
ও পাকিন্তান উভয় রাষ্ট্রের অধিবাসীয়াই শব্দিত ইইয়াছেন।
এই সম্পর্কে পণ্ডিত জহরলাল নেহক যে বির্তি প্রকাশ
করিয়াছেন, ভাহাতে তিনিও শক্ষা প্রকাশই করিয়াছেন।
দশের বর্জমান অবস্থার কোন রাষ্ট্রের পক্ষেই যুদ্ধ ঘোষণা
করা যুক্তিযুক্ত বলিয়া বিবেচিত হইবে না। অথচ পাকিন্তানী
ও ইপক্ষের জিলের ফলে কাশ্মীর সমস্তার সমাধান হইল না।
হার কুফল ভোগ করা ছাড়া পাকিন্তানের অন্ত পথ নাই।

আপামী সাৰাৱণ নিৰ্বাচন-

Land Bridge of the Control of the

প্রাদেশিক ব্যবহা পরিবদ ও কেন্দ্রীর পার্লামেন্টের সম্প্র নির্বাচন করে হইবে ভাহা এখনও হির হর নাই। পরিষদে ২৩৮ জন ও কেন্দ্রীয় পার্লামেণ্টে ৩৪ জন সদশ্র নির্ব্বাচিত হইবেন। প্রাদেশিক পরিষদের আসন আরও ৫টি রৃদ্ধি করার কথা চলিতেছে। এদিকে ভোটদাতার তালিকা এখনও প্রস্তুত হয় নাই। এখন বে তাবে কাজ চলিতেছে, তাহাতে মনে হয় ১৯৫১ সালের বর্ধার পর অক্টোবর মাসে নির্ব্বাচন হইবে। বে ভাবে কাজ চলিতেছে, তাহাতে মনে হয় বর্ত্তমান শাসকবর্গ তাড়াতাড়ি নির্ব্বাচন করার পক্ষপাতী নহেন। যে কয়দিন নির্ব্বাচন না হয়, সেই কয়দিনই তাঁহারা কাজ করার স্থবিধা পাইবেন। এ বিষয়ে সর্ব্বিত্ত আন্দোলন হওয়া প্রয়োজন।

কলিকাতা কর্পোরেশনের নির্বাচন-

গত কয়েক বংসর কাল কলিকাতা কর্পোরেশনের নির্বাচন বন্ধ আছে এবং সরকারী কর্মচারীদের বারা কর্পোরেশনের কার্য্য পরিচালিত হইয়া আসিতেছে। আগামী ৩১শে ডিসেম্বর পর্যন্ত কর্পোরেশন সরকারের নিয়ন্ত্রণাধীন থাকিবে কথা আছে। কিন্তু বে ভাবে আগামী সমরে কাজ চালাইলেও আগামী ডিসেম্বর মালে নির্বাচন করা সন্তব হুইবে না। কাজেই নির্বাচন মার্চ্চ মাস পর্যন্ত পিছাইয়া যাইবে ও কর্পোরেশন আরও ৩ মাস সরকারী নিয়য়ণে রাথা প্রয়োজন হুইবে। এইজাবে নির্বাচন ক্রমেই পিছাইয়া যাইতেছে। যথন আগামী ৩১সে ডিসেম্বর পর্যান্ত কর্পোরেশন সরকরী নিয়য়ণে রাথা দ্বির হয়, তথনই কর্জ্ব-পক্ষের এরপ ব্যবস্থা করা উচিত ছিল, বেন ডিসেম্বরের মধ্যে নির্বাচন কার্য্য শেষ হয়। বে সকল বড় বড় সরকারী কর্ম্মাচারী বর্ত্তমানে কর্পোরেশনের কার্য্য পরিচালনা করি-তেছেন, ইহাই কি তাঁহাদের কর্ম্মানক্তার পরিচয় ?

যুক্ত এদেশের থ্যাতনামা কংগ্রেস নেতা শ্রীপুকবোত্তমদাস ট্যাওন সম্প্রতি সর্কাপেকা অধিক ভোট পাইয়া নাসিক কংগ্রেসের সভাপতি নির্কাচিত হইয়াছেন। মোট তিনজন প্রার্থী নিম্নলিধিতরপ ভোট পাইয়াছেন—

> শ্রীট্যাণ্ডন—১৩০৬ ভোট আচার্য্য কুপাননী—১০৯২ ভোট শ্রীশঙ্কররাপ্ত দেও—২০২ ভোট

শ্রীযুত ট্যাগুন বাস্তহারাদের দরদী বন্ধ—তাঁহার নির্বাচনে বাস্তহারা সমস্থা সম্পর্কে কংগ্রেসের কার্য্য পদ্ধতি পরিবর্ত্তনের আশা করা যায়। পণ্ডিত নেহরু আচার্য্য কুপালনীকে সমর্থন করিয়াছিলেন—তাঁহার পরাক্তরে পণ্ডিত নেহরুর মন্ত্রিসভার কার্য্যপদ্ধতি পরিবর্ত্তিত হইবে বলিয়া মনে হইতেছে। নাসিক কংগ্রেসের পর শ্রীযুত ট্যাগুন কংগ্রেস তথা দেশ পরিচালনের নৃতন কার্য্যভার গ্রহণ করিবেন। বিদায়ী সভাপতি ডাঃ পট্টতী সীতারামিয়ার কার্য্যকালে দেশবাসী কংগ্রেস সভাপতির কোনরূপ প্রভাবের বিষয় ব্বিতে পারে নাই। শ্রীট্যাগুন শক্তিমান লোক—আমাদের বিশ্বাস তাঁহার কার্য্যকালে কংগ্রেস নৃতন ধারায় কার্য্যারস্ক করিতে সমর্থ হইবে।

ভারতের সুত্র লও বিশ্বণ–

রেভারেণ্ড ক্ষরবিন্দনাথ মুখোপাধ্যায় গত ২রা সেপ্টেম্বর কলিকাভার সেণ্টপল গির্জায় ভারত, পাকিন্তান, সিংহল . ও ব্রহ্মের নৃতন মেট্রপলিটান বা লাট পাদরী নির্বাচিত হইয়াছেন। তাঁহার বয়স বর্ত্তমানে ৫৭ বৎসর, তিনি উক্ত ৪টি দেশবাসী ৪ লক্ষ খুৱানের ধর্মগুক্ত হইলেন। তিনি

কৃষিকাতার চতুর্দ্দশ কর্ড বিশপ—ভাঁহার পুর্বের আর কোন
ভারতীর এই উচ্চপদ লাভ করেন নাই। শনিবার ভাঁহার
কার্যভার গ্রহণের অফুষ্ঠানের পর তিনি বলিয়াছেন—নৃতন
ধর্মপ্রক্র যদি সেবার বারা জনগণের শ্রহা আকর্ষণ করে
ভবেই ভাহার নির্বাচন সার্থক হইবে। তিনি সকল
ধর্মপ্রক্রকে সেই আদর্শে কাজ করিতে উপদেশ দিয়াছেন।
ভানার রেশ ভূর্লিভ্রনা—

জনিদির নিকট ই-আই-রেলে বে ভীষণ ছুর্ঘটনা হুইয়ছিল, সে সহক্ষে পাকিন্তানী গুপ্তচরদের বড়যন্ত্রের সংবাদ আমরা অন্তর প্রদান করিয়াছি। গত ওরা সেপ্টেম্বর পূর্বপাঞ্জাব রেলপথে দীননগর ও গুরুদাসপুর রেল ষ্টেশনের মধ্যে কাশ্মীর মেল লাইনচ্যুত হওয়ায় একটি পুলের উপর হুইতে ভিনখানা কামরা নীচে এক নালায় পভিত হয়—ফলে ২০ জন নিহত ও ৪৫ জন আহত হইয়াছে। ১৯৪৯—৫০ সালে এক বৎসরে ভারতে ১৬টি রেল ছুর্ঘটনা হুইয়াছে। রেলছুর্ঘটনার সংখ্যা দিন দিন বাড়িয়া চলিয়াছে। রেল পরিচালনের বায় বৃদ্ধির সহিত উহার কার্য্যকারিতা বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয় নাই। বয়ং দিন দিন রেলের পরিচালনার কাটই বাড়িয়া যাইতেছে। ইহার প্রতিকারের কোন ব্যবহার কথা গুনা বায় না। দেশ যে ক্রমে ধ্বংসের দিকে আগ্রন্থ হয় হইতেছে, সে বিষয়ে সকল সলেহ দ্র হইতেছে।

পশ্চিম জাপানে ভীষণ টাইফুন অর্থাৎ ঝড় ও বস্থার ফলে ২৫০ জন লোক নিহত এবং আড়াই লক্ষ লোক গৃহহীন হইয়াছে। গত ১৬ বৎসরের মধ্যে জাপানে এরপ প্রভুত ক্ষতি আর হয় নাই। ১ লক্ষ ৭০ হাজার গৃহ জলে ভাসিয়া গিয়াছে— ৭ শত জাহাজ ক্ষতিগ্রন্থ হইয়াছে। ওসাকা কোরে ও কিয়োটোর জনবহল স্থানগুলিই বেশী ক্ষতিগ্রন্থ হইয়াছে। পৃথিবীর সর্বত্ত ধ্বংস্পীলা আরম্ভ হইয়াছে বেশা বাইতেছে।

প্রী আনস্বমোহন সহা**র**—

খ্যাতনামা দেশ সেবক শ্রীমানন্দমোহন সহায় বৃ[া]্র প্রশিক্ষ ভারতীয় দ্বীপপুঞ্জে ভারত গভর্ণমেন্টের কমিশ^{্রের} নিবৃক্ত হইয়াছেন। তিনি ভাগলপুরের অধিবাসী, ১৯০৫ সালের বিপ্লববাদ আন্দোলনে কাল করিয়া পলাভক হিসাবে তিনি ৩০ বংসর জাপানে বাস করিয়াছিলেন। নেভাঞী

স্ভাবচন্দ্রের আজাদ হিন্দ সরকারেরও তিনি অন্ততম মন্ত্রী ছিলেন। তিনি দেশবন্ধ চিন্তরঞ্জন দাশের পরিবারে বিবাহ করিয়াছেন। তাঁহার নিয়োগে সকলেই আনন্দিত হইবেন। কাশ্মীর ও পূর্ববিক্ষ সমস্তা।—

গত ৩রা সেপ্টেম্বর পশ্চিম বাংলায় বাস্তহারা দিবস পালন উপলক্ষে কলিকাতা দেশবন্ধু পার্কে এক বিরাট জনসভায় ডক্টর শ্রীশ্রামাপ্রদাদ মুখোপাধার বক্তৃতা করেন। তিনি বলিয়াছেন--- "কাখ্যীর সম্পর্কে পাকিস্তানের সঙ্গে শত্রুতা ও পূর্ব্ববাংলা সম্পর্কে বন্ধুত্বের নীতি যদি পণ্ডিত নেহম্ব অবলম্বন করেন, ভাষা হইলে তিনি ভারতবর্ষকে ধ্বংদের भिटक व्याशीहेबा महेबा घाहरवन । भूकीवरक हिन्सू विठाएन নীতি গ্রহণ করিয়া পাকিস্তান যুদ্ধ বোষণা না করিয়াই ভারতের বিরুদ্ধে বুদ্ধের পদ্ধা গ্রহণ করিয়াছেন। কাশ্মীরে তালারা আক্রমণাতাক নীতি গ্রহণ করিয়াছে। স্বতরাং পাকিস্তানের বিরুদ্ধে অর্থ নীতিক প্রতিরোধই হউক কিমা সামরিক ব্যবস্থাই হউক, কাশ্মার ও পূর্মবঙ্গ উভয়ক্ষেত্রেই পাকিন্তানের সঙ্গে ব্যবহারে একই কুটনীতি দ্বারা পরি-চালিত হওয়া পণ্ডিত নেহরুর কর্ত্তব্য।" ডক্টরশ্রামাপ্রসাদের এই উব্দির উপর মন্তব্য নিপ্রয়োজন। কাশ্মীর ও পূর্ববঙ্গ সমস্তা আমাদের ক্রমে হতাশ করিতেছে। বাঙ্গালার অবস্তা আলোচনা-

গত ৭ই আগস্ত দিল্লীতে ভারতীয় গবর্ণনেণ্টের সভায় ডক্টর প্রীশ্রামাপ্রসাদ মুখোপ্রাধ্যায় ৭৫ মিনিট কাল বক্তৃতা করিয়া যে ভাবে বাকালার প্রকৃত অবস্থার কথা প্রকাশ করিয়াছেন, তজ্জ্য তিনি বক্ষবাসী মাত্রেরই ধন্তবাদের পাতা। তাঁহার বক্তৃতায় যে ভাবে বাকালীর বর্ত্তমান ত্র-ব্যার কথা ফুটিয়া উঠিয়াছে তাহাতে পা্যাণও গলিয়া যার। কিন্তু প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত অহরলাল নেহরু ডক্টর খ্রামাপ্রদাদের এই বক্ততার পরও মনোভাব পরিবর্ত্তন করা প্রয়োজন মনে করেন নাই। অধিকস্ক এমনভাবে খ্যামা-প্রদাদবাবুর বক্তৃতার সমালোচনা করিয়াছেন যে ভাগতে राज मध्य करा यात्र ना। এकि अपिए पर मगरत वह লক্ষ লোক নানা ছঃধ কষ্টের মধ্যে পড়িয়া ঘুণ্য জীবন যাপন করিতে বাধ্য হইতেছে, সে সময়ে ভারতের প্রধান মন্ত্রীর পক্ষে এইরূপ উক্তি শুধু অশোভন নহে, বালালীজাভির পক্ষে অসমানজনক বলিয়া আমরা মনে করি। পূর্ববক হইতে আৰু পশ্চিম বাংলায় ৫০ লক্ষেরও অধিক অধিবাসী চলিয়া আসিয়াছে, তাহাদের অভিযোগের অন্ত নাই। পণ্ডিত্রু সামান্ত মাত্র সাহায্যের ব্যবস্থা ব্যতীত ভাহাদের কোন ছঃথেরই লাঘ্ব করিতে সমর্থ হন নাই। তথাপি ভিনি এই সমস্তার স্থায়ী প্রতীকার সম্বন্ধে কিছু করিবেন না। অপর পক্ষ যখন তাঁহার সহিত চুক্তি করিয়া সেই চুক্তির সর্ত্ত নানারূপে ভঙ্গ করিতেছে, তখনও পণ্ডিত্রী সেই চুক্তি কার্যাকরী করার কথা চিন্তা করেন। তিনি পার্লামেন্টে যথন বলিয়াছেন—"লোক বিনিময়, সীমান্তের রদবদল বা দেশ বিভাগ রদ করার আলোচনা স্বপ্নবিলাসিতা ও অবান্তর"—তথন তাহা শুনিয়। আমরা শুন্তিত হইয়াছি। ভারত সরকার বর্ত্তমান অবস্থায় কি করিবেন, তাহা পণ্ডিতজী বলেন না, সম্ভবতঃ কোন স্থানিশ্চিত পথও স্থির হয় নাই। পাকিন্তানীদের চুক্তি মাক্ত করিতে তিনি বাধ্য করিবার কোন উপায় চিন্তা করেন না। তাঁহার উক্তরূপ উক্তির পর এবং মনোভাব দেখিয়া বাঙ্গালী নিরাশ হইয়াছে। এই নৈরাশ্র ও মনোবেদনা হইতে কে বাঙ্গাণীকে বকা করিবে জানি না।

দেবী-পূজা

শ্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

জ্যোৎসা-উতল নীলাষরের গুল্র-স্থপ্রময়
আকুল-জাবন-তৃকুল-ভাসানো আলোর প্লাবন নয়।
উদ্মি-নিথর-জিরণ-সাগরে করেছি অতীতে সান
শরৎ-প্রভাতে সোণার আলোর গেয়েছি অনেক গান।
দেবী, ফুটেছে মানস-হূদে
শেত-শতদল, দিয়াছি আনিয়া পুলাঞ্জি পদে।

আজি চারিদিকে কল-করোল, প্রলয়-বক্তা জাগে, কাঁপে ধর ধর ভূমি অরণ্য, ভ্ধরে কাঁপন লাগে। যা-কিছু অচল হ'ল চঞ্চল, আকাশ, জীবন, জড়, শুনি ফারের রথ-চক্রের উদ্দাম ঘর্ষর। দেবী, পৃথিবী উঠিছে ছ্লি, হুদর ছিন্ন করিয়া এনেছি রক্ত-কমল ভূলি।





স্থাংক্তশেশর চটোপাধার

ভেস্ট ত্রিন্দেউ ৪ ওয়েপ্ট ইণ্ডিজ: ৫০০ ইংলপ্ত: ৩৪৪ ও ১০০

'ওভালে অম্ঞিত চতুর্থ টেপ্ত ম্যাচে ওয়েষ্ট ইণ্ডিক ১ हैनिःम এवः ८७ ज्ञात हैःनश्रुटक होतिष अ वहदत्र हैःनश्र मकरत दिहे मितिरकत वनी दिहे गारि संवनारखत पत्रन 'রাবার' লাভ করেছে। ইংলতে অহন্টিত টেষ্ট থেলার अस्त्रेष्ठे देखिक कन धारे क्षेत्रम 'त्राचात्र' भाग । देश्नक वनाम अताहे देखिका अध्य दिहे मांह (थेला आंत्रेख द्य) २२৮ সালে লর্ডসে। এ পর্যান্ত উভয় দেশের মধ্যে মোট १টি एंडे मित्रिक (थला श्राह । हेश्नख अवांत (১৯২৮, ১৯**०**०, ১৯৩৯) 'রাবার' পেরেছে। ওরেষ্ট ইণ্ডিব্দও পেরেছে ৩ वात, ১৯৩৪-৩৫, ১৯৪৮ ও ১৯৫०। माख একবার ১৯২৯-৩ দালের টেষ্ট সিরিজ অমীমাংসিত থেকে যায়। के बहुत १म ७ वर्ष टिहे छ यात्र। २व टिट्हे हेश्नण वरः **अब्र किल्ड किल्ड क्यों इत्र । ज भर्वास्त्र हेश्मध-**अत्येष्ठे देखित्कात्र माधा १ कि किंद्रे मित्रिक तथना स्टाइरह । একমাত্র ১৯৪৮ সালে ওয়েষ্ট ইণ্ডিকে অহন্তিত ৪টি টেষ্ট (थनाव माधा हे:नक ककि हिंदे (थनाएक खरनाक कराक পারে নি। বাকি টেষ্ট সিরিজের কোন না কোন থেলার हेश्लक अधी हरब्राह ।

আলোচ্য বছরের টেই সিরিজে (১৯৫০ সাল) ইংলগু ১ম টেই খেলায় জয়লাভ করে। বাকি ৩টি টেই খেলায় গুরেই ইণ্ডিজ দল পর্যায়ক্রমে জয়লাভ ক'রে 'রাবার' পেরেছে। ইংলগুরে আজ বড় ছুর্দ্দিন! আন্তর্জাতিক রাজনৈতিক ক্ষেত্রে বৃটিশ সিংহের ছুর্দ্দান্ত প্রতাপ লোপ পেরেছে, বিরাট সামাজ্য হাত ছাড়া হরেছে, পৃথিবীর

বিরাট অঞ্চল ভূড়ে বৃটিশ জাতির ব্যবসার-বাণিজ্যের যে স্থান্তর বেড়াজাল বিভারিত ছিল তা আজ সংকীর্ণ হয়ে গেছে। যুদ্ধ এবং অর্থ নৈতিক বিপর্বারের দক্ষণ থেলাধুলাতেও বৃটিশ জাতি তার পূর্বে প্রভূত্ব হারিয়ে ফেলেছে।
ক্রিকেট ইংলণ্ডের জাতীয় থেলা। এই ক্রিকেটের টেপ্ট
থেলায় ওয়েপ্ট ইতিজের কাছে ইংলণ্ডের শোচনীয় পরাজয়
কেবল ইংলণ্ডে নর সমগ্র ক্রিকেট থেলার জগতে একটি
উল্লেখযোগ্য ঘটনা।

১২ই আগষ্ট ওভালে ওয়েষ্ট ইণ্ডিন্স দলের অধিনায়ক গডার্ড টসে দিভে প্রথম ব্যাট করার অ্যাগ নিলেন। প্রথম দিনের থেলার নির্দিষ্ট সময়ে ওয়েষ্ট ইণ্ডিন্স দলের ১ম ইনিংসের ৩ উইকেটে ২৯৫ রাণ উঠে। এরে ১০৯ এবং ওয়েল ১১০ রাণ করে নট আউট থাকেন।

টেষ্ট থেলার বিতীয় দিন ১৪ই আগষ্ট ওয়েষ্ট ইণ্ডিদ্দ দলের ১ম ইনিংস ৫০০ রাণে শেব হয়। উল্লেখবোগ্য রাণ্ ওরেল ১০৮, রে ১০৯, গোমেজ ৭৪ এবং গডার্ড ৫৮ রাণ। ইংলণ্ডের রাইট ১৪১ রাণে ৫টা উইকেট পান। নির্নিষ্ট সময়ে কোন উইকেট না হারিরে ইংলণ্ডের প্রথম ইনিংগে ২৯ রাণ্ উঠে।

১৫ই আগষ্ট, তৃতীর দিনে ইংলণ্ডের ৩ উইকেটে ২০৮ রাণ উঠে। ইংলণ্ডের ওপনিং ব্যাটসম্যান হাটন ১০৭ রাণ ক'রে নট আউট থাকেন। বৃষ্টির জন্তে পেনার বাধা পড়ে।

১৬ই আগষ্ট, চতুর্থ দিনে ইংলণ্ডের ১ম ইনিংস ^{বাব} রাণে শেব হয়। ওপনিং ব্যাটসম্যান এল হাটন ২০২ ^{বাব} ক'রে শেব পর্যান্ত নট আউট থেকে যান। ইংলণ্ডের ম^{াতি}ত ওয়েষ্ট ইণ্ডিজের বিপক্ষে ১৯৩৯ সালে এল হাটন ১৯৬ ^{রাব} ক'রে ইংলণ্ডের পক্ষে ব্যক্তিগত সর্কোচ্চ রাণের রেকর্ড হাপন করেন। ওরেই ইণ্ডিকের বিপক্ষে এস হাটনের ২০২ রাণ আরু ইংলণ্ডের মাটিতে ইংলণ্ডের পক্ষে ব্যক্তিগত সর্কোচ্চ রাণ হিসাবে রেকর্ড হয়েছে। ছর্ভাগ্য-বশতঃ ডেনিস কম্পটন ৪৪ রাণে রাণ আউট হন। গভার্ত এবং ভ্যানেনটাইন বধাক্রমে ৪টে ক'রে উইকেট পান। ইংলণ্ডের শেষ ৬টা উইকেট ৬২ রাণে পড়ে বায়। গভার্ত ২০ রাণে ৪টে উইকেট পান। কলো-অন ক'রে ইংলণ্ড হিতীয় ইনিংসে মাত্র ১০০ রাণ তুলেছিলো। ভ্যানেনটাইন ৬টা উইকেট পান; রামাধীন পান ৩টে। ওরেই ইণ্ডিজ ১ইনিংস এবং ৫৬ রাণে ওরেই ইণ্ডিজকে পরাজিত করে।

ইংলওঃ ওয়েট ইভিজ

	টেষ্ট সিরিব	हेश्मछ बद्री	अत्रष्टे हेः अही	g
रेः ग ७	8	৩	>	•
ওয়েষ্ট ই তি	(4 9	•	ર	>
মোট	_	-	-	_
4110	•	•	-	•

	टिष्टे मार्ग	हेःनश्च अभी	ওরেষ্ট ই: স্বা	9
हे <i>ःन</i> ुख	20	•	•	9
ওয়েষ্ট ইন্ডিনে	क ३२	ર	¢	¢
		_		
শেট	₹ €	ત્ર	, b-	ь

এক ইনিংসে সর্ব্বোচ্চ রাণ: ইংলগু—৮৪৯ (১ম ইনিংস, ৪র্থ টেষ্ট: কিংসটোন, ১৯২৯-৩০)

ওরেষ্ট ইণ্ডি**ল—**ee৮ (.ম ইনিংস, ৩র টেষ্ট ; ট্রেণ্ট রাজ, ১৯৫০)

ইংলণ্ডে ১ ইংনিসে সর্জ্বোচ্চ রাণ (উভর দলের মধ্যে) :
ব্যাদ (ওয়েষ্ট ইণ্ডিক ; তর টেষ্ট, ১৯৫০)

ওরেষ্ট ইভিজে > ইনিংসে সর্কোচ্চ রাণ : ৮৪৯ (ইংলও,

ব্যক্তিগত সর্ব্বোচ্চ রাণ (ইংলও): ৩২৫ (এ ভাও-াম; ৪৭ টেষ্ট, ১৯২৯-৩০)

गि**किशंक गर्द्सांक त्रांग (७: है:): २१० (वर्ष्क** ंक्र्रण ; वर्ष **(ठेंडे ১৯**৩৪-৩৫)

সর্ব নিম রাণ (ইংলও): ১০০ (২য় ইনিংস; ৪র্ব টেট, ১৯৩৪-৩৫)

সর্কনিম রাণ (ও: ইণ্ডিজ): ৯৭ (প্রথম ইনিংস; ১ম টেই ১৯৩০) একশন্ড 'সেঞ্জী':

প্রথম শ্রেণীর ক্রিকেট থেলার এ পর্যন্ত ১২ জন ক্রিকেট থেলোরাড় একশত সংখ্যক 'সেঞ্রী' করার সন্মানলাভ করেছেন। ১৯৪৮ সালে শুর ডন্ র্যাড্ম্যানের একশত সংখ্যক 'সেঞ্রী' করার পর ১৯৫০ সালের ৫ই আগ্রেই ইংলণ্ডের ভূতপূর্ব্ব উইকেট কিপার লেসলী এম্স প্রথম শ্রেণীর ক্রিকেট থেলার একশত 'সেঞ্রী' করেন। বারা এই সন্মান লাভ ক'রেছেন তাঁদের নাম যথাক্রমে: (১) জ্যাক হব্স (২) প্যাট্সী হেণ্ডেন, (০) ওরালী হ্যামণ্ড (৪) ফিলিপ মীড (৫) হার্বাট সাট্রিক (৬) ক্র্যান্ড উলী (৭) ডরু জি রেস (৮) এ্যান্ডি শ্রাভ্রাম (১) টম হেণ্ডরার্ড (১০) আর্থেই টিণ্ডস্লি (১১) শুর ডন ব্যাড্ম্যান (১২) লেসলী এম্স।

রঞ্জি স্টেডিয়াম ১

বিখ্যাত ইডেন উত্থানে 'ক্যাশনাল ক্রিকেট স্লাবে'র উদ্যোগে গত ১০ই আগষ্ট ভারতীয় স্বাধীনতা দিবলৈ 'রঞ্জি ষ্টেডিয়ামে'র ভিত্তি স্থাপন করেছেন মুখ্য মন্ত্রী মাননীয় শ্রীবৃক্ত বিধানচন্দ্র রায়। ক্যালকাটা ক্রিকেট ক্লাবের কর্তৃপক বিগত ১২৫ বছর এই জমিটির মালিকানা অস্ব উপভোগ ক'রে ক্রাশনাল ক্রিকেট ক্লাবের কাছে প্যাভিলন্সহ অমিটি বিক্রী করায় থেলোরাড স্থলভ মনোভাবের পরিচয় দিয়ে-ছেন। কিছ ক্রিকেট ষ্টেডিয়াম নির্ম্বাণের সংবাহে क'नकाजात कृष्य मार्कत मर्भकरमत मत्न तारे कथारे মনে পড়ছে 'ভফার কাতর হয়ে চাহিলাম এনে দিল আধর্ণানা পাকা বেল।' ক'লকাভার ক্রিকেট খেলার খেকে ফুটবল খেলা অনেক বেলী জনপ্রিয় এবং থেলার মাঠে স্থানাভাব সমস্তা আৰু ক'লকাতা সহরের অভতম জাতীয় সমস্তার অন্তর্গত বলা ভূল হবে না। দর্শকেরা एव व्यथितियोग कहे निर्कृष्ठांत्र मर्था कृष्टेनन रथनांत्र मार्कः নিৰ্দোৰ আনন্দ উপভোগ করতে বায় তা ভাতীয় উন্তৰ चन्तरवा नाम जूनना कन्ना हरन। देशर्यात्रश्च अकृता नीमा আছে। সে সীমা অভিক্রম করতে দর্শকদের বাধ্য করলে। খেলার নাঠে আজ বে স্থানাভাব নিরে দালাহালানা চলছে **छा दक्का भूगिम हिरद्र द्वांध क्रा महत्र हरव ना । र्यमान्न**े মাঠের সমান্ত-বিরোধী কাজ অভাবতই সমান্তদেহের অভান্ত
অংশে সংক্রামক ব্যাধির ক্সার বিন্তারগাভ করবে। ষ্টেডিরাম
নির্মাণই হ'ল থেলার মাঠে সমাজ-বিরোধী কাজের অভ্যতম
প্রতিরোধক ব্যবস্থা।

ইণ্ডিয়ান লাইফ সেভিং সোসাইটি ঃ

व्यामारमत्र এই नमीमाञ्क वांश्मा स्मर्म नौकाञ्चि অথবা জলাশয়ে আৰু আৰু হুৰ্ঘটনায় পড়ে বছলোক অসহায় প্রাণত্যাগ করে। অলমগ্র ব্যক্তিকে জল থেকে উদ্ধার क्रवा এक श्रवम श्रा कांक। (म्था श्रिष्ट, क्रवमश्र वास्तिव অসহায় অবস্থা এবং আকুল আবেদন মাহ্বকে উদ্ধার कार्या आंवर्षन ना क'रत्र भारत ना। करल रवनीत आंव लाकरे कोवन উद्घादित প्रात्नात निक कीवरनत विश्वपत यथा जूल शिरा क्षञ्च ना राष्ट्र करन भौशिरा भए। ध धत्रावत छेदात कार्या छेटायत शतक यत्वह विश्रम चाहि। क्लमध वाकित निक कीवन तकात तिही होडा অপর কোন দিকে জ্ঞান থাকে না। ফলে দেখা গেছে অনেককেত্রে অনমগ্র ব্যক্তি উদ্ধার কর্তাকেই হাতের লাগালে পেয়ে জড়িয়ে ধরে এক সঙ্গে জলে ভূবে প্রাণ ত্যাগ করেছে। অপরের প্রাণ রক্ষার জন্ত নিজ প্রাণ উৎসর্গের মধ্যে যথেষ্ট বীরত্ব এবং মহত্ব আছে সত্য। किंद्ध राथारन : कि छूठे। श्रेष्ठ व राज रागल निर्वे की वनरक বিপদ্ম না ক'বে অপরের জাবন রক্ষা সহজ হয় সেথানে অপ্রস্তুত হয়ে জলে ঝাঁপিয়ে পড়াটা নির্ক্তিবারই পরিচয়।

জলময় ব্যক্তিকে জল থেকে সহত্তে উদ্ধারের কতকগুলি কৌশল আছে। এ কৌশল জানা থাকলে কথনও জলাশয়ের পাড়ে দাঁড়িয়ে অসহায় দর্শক হিসাবে জলময় ব্যক্তির অসহার মৃত্যু দেখতে হর না। এই কৌশলগুলি কঠিন নয়, সহজই। কেবল শিকা এবং অভ্যাসের প্রয়োজন। আমাদের সকলেরই বেমন কিছু কিছু সাঁতার জেনে রাথা দরকার তেমনি সেই সঙ্গে জলময় ব্যক্তির উদ্ধারের কৌশলগুলি জানা থাকলে আমরা এই আক্ষিক ছর্ঘটনা থেকে বছ জীবন রক্ষা করতে পারি। সাঁতার শিক্ষার প্রয়োজন কেবল ছ্র্যটনার হাত থেকে রক্ষার জন্তই নয়, সুস্থ এবং স্ক্রাম দেহ গঠনের পক্ষে সাঁতার বিশেষ কার্য্যকরী ব্যায়াম। এইদিক থেকে দক্ষিণ ক'লকাতা অঞ্চলের ঢাকুরিয়া লেকে অবস্থিত 'ইণ্ডিয়ান লাইক সেভিং সোদাইটি' বথেন্ঠ গঠনমূলক কাব্দের পরিচয় দিরেছেন। এইরূপ প্রতিষ্ঠানের সংখ্যা আরও বৃদ্ধি হওয়া উচিত। ক'লকাতার লোক-সংখ্যার এক বিরাট অংশ প্রতিদিন গলায় লান করে। এবং প্রতি বছরই গলায় নৌকাভূবি এবং অলমগ্রের বহু ফুর্ঘটনা সংবাদপত্রে আমরা দেখতে পাই। এ থেকেই 'লাইক সেভিং' শিক্ষার প্রয়োজনীয়তা আমরা উপলন্ধি

সম্প্রতি পশ্চিমবঙ্গের প্রবেশপাল ডাঃ কৈলাসনাথ কাটজুর সভাপতিত্বে 'ইণ্ডিয়ান লাইফ সেভিং সোসাইটির' ২৮তম বাংসরিক প্রতিষ্ঠা-দিবস সাফল্যের সঙ্গে উদ্বাপিত হয়ে গেল। এই জনহিতকর প্রতিষ্ঠানের সঙ্গে ক'লকাভার বহু শিক্ষিত বিশিষ্ট নাগরিকের যোগাযোগ আছে। এই প্রতিষ্ঠানের একটি বৃহৎ গঠনমূলক পরিক্রনার কথা আমরা শুনেছি। এর জন্ত প্রচুর জমির প্রয়োজন।

জনসাধারণ এবং সরকারের সহযোগিতার উপর এই পরিকল্পনার সাফল্য এবং প্রতিষ্ঠানের ভবিষ্যৎ নির্ভর করছে। আমরা আশা করি আমাদের জাতীয় সরকার এই প্রতিষ্ঠানের জমি সংগ্রহ ব্যাপারে সহযোগিতা ক'রে প্রতিষ্ঠানের উদ্দেশ্য সার্থক করবেন।

সম্ভোষ ট্ৰফি ৪

ক'লকাতায় অন্ত্রিত জাতীয় কৃটবল প্রতিযোগিতার এ বছরের ফাইনালে গত বছরের ফাইনাল বিজয়ী বাজলা প্রারার হারিয়ে উপর্যুগরি ছ'বার 'সন্তোষ ট্রন্ধি' বিজ্ঞানী হয়েছে। জাতীয় কৃটবল প্রতিযোগিতায় 'সন্তোষ ট্রন্ধি' বিজ্ঞানী বিজয়ের যথেষ্ট শুরুত্বল প্রতিযোগিতায় 'সন্তোষ ট্রন্ধি' বিজয়ের যথেষ্ট শুরুত্বল প্রতিযোগিতায় 'সন্তোষ ট্রন্ধি' বিজয়ের যথেষ্ট শুরুত্ব পাকা সন্তেও বাজলা দেশের এ জ্ঞান লাভে গৌরববোধ এবং খেলায় আনন্দলাভ করেছেন ক্রেন্ধি কথা বলা অসকত হবে না। খেলাধুলার একমাত্র জয়লাভাই বাদের কাছে বড় কথা অর্থাৎ জয়লাভ যে কোন ভাইই হোক—কাক তালে গোল ক'রে অথবা জাতীয় স্বার্থ প্রিন্ধির বাইরের খেলোয়াড় দিয়ে খেলিয়ে, তাঁরা অবিভিত্ত এ ধরণের জয়লাভে গর্ববোধ এবং আনন্দ উপভোগ ছই করতে পারেন : মনের এ পরিচয় নিতান্তই ব্যক্তিগত এবং স্থার্থের সঙ্গে অড়িত, জাতীয় অভাদয়ের পকে বোর অনিষ্টকর। বাঙ্গলা প্রাদেশের ফুটবল দল গঠন ব্যাপারে খেলোয়াড মনোনম্বন কমিটি বরং জাতীয় স্বার্থ উপেক্ষা করেছেন, তব প্রাদেশিকতার পরিচর দেন নি। জাতীয় স্বার্থ বলি দিয়েও তারা কিছ সমালোচনার হাত থেকে রেহাই পান নি। এই উদার মনোভাবের ফাঁক ভালে বাঙ্গলা প্রদেশের যে ফুটবন খেলায় নিজ নাম স্প্রপ্রতিষ্ঠার উদ্দেশ্য ছিল, বিভিন্ন প্রদেশে এ অভিযোগ উঠা খুব স্বাভাবিক। প্রতিযোগিতার বিভিন্নতরে বাকলা দলে এমন কয়েকজন বহিরাগত বাছাই ফুটবল থেলোয়াড় বোগদান ক'রেছিলেন থারা একমাত্র ফুটবল খেলার উদ্দেশ্যে ফুটবল মরস্থমে ক'লকাতায় বিভিন্ন ক্লাবের পকে যোগদান করেন এবং মরহুম শেষে স্বদেশে ফিরে যান বা বেতেন। অক্তাক্ত প্রদেশের বাছাই করা থেলোয়াড়-দের সহযোগিতা ভিন্ন বাঙ্গলা প্রদেশ জাতীয় ফুটবল প্রতি-যোগিতায় কতথানি সাফল্য লাভ করতে পারতো তার অগ্নি পরীক্ষা হয় নি। 'সম্ভোষ ট্রফি' প্রতিযোগিতার यांशमानकाती कान कान शारमिक मरन घर होत अन বাঙ্গালী ফুটবল খেলোয়াড়কে খেলতে দেখা গেছে কিন্তু এই निया बाजानक ममर्थान बाँमता बनत दकान मनाक करें। क-পাত করতে পারি না। কারণ ঐ সব বান্ধালী থেলোয়াড श्रानीय वांत्रिका वित्रादवे लादिक क्रांत मतानीज व्या-ছিলেন, वांक्ला (मन (बदक कूंदेवल (बलारनांत উদ্দেশ্যে कारनत्र निरम्न शिरम प्रमञ्च कदा इस नि । व्यामारनत्र मरक বড় প্রভেদ এই বানেই। জাতীয় ফুটবল প্রতিযোগিতায় বাগলা দেশ আৰু যে সাকল্যলাভ করেছে তার মূলে বিভিন্ন প্রদেশের বাছাই করা ফুটবল খেলোয়াড়দের সহযোগিতা রিটেছ—যে সহযোগিতা লাভ ক'রে বাঙ্গলা দেশ ঐ সব वर्राह्म (शामाश्राष्ट्रपत्र निक निक शामिक पटन वर्गानान ক । থেকে বঞ্চিত করেছে।

নিজ প্রদেশের ফুটবল দলকে জাতীয় ফুটবল প্রতি-ে তার সহযোগিতা করা খেলোরাড়দের পক্ষে কতথানি গর্ম এবং মহন্দের পরিচয় এ কথা লিখে বলার প্রয়োজন হয় না। কিছ ক'লকাতার বিভিন্ন ক্লাবে যোগদান ক্রার ফলে অণিম্পিক প্রত্যাগতসহ অনেক নামকরা বাইরের থেলোয়াড় নিজ নিজ প্রদেশকে তাঁদের সহযোগিতা থেকে বঞ্চিত করেছেন। ফলে ভারতীয় ফুটবল মহলে বাললা আল তার নাম প্রতিষ্ঠা করতে যে যথেষ্ট স্থাবিধা পেয়েছে একথা ष्ट्रे लारकत नय। वाहरतत (थानायाजाए पत्र माध्य धहे व নৈতিক অবনতি এবং আদর্শ চ্যুতি দেখা দিয়েছে এর জন্ত বাদলা দেশের ফুটবল থেলার নিয়ন্ত্রণ কর্ত্তপক্ষের কাছে প্রশ্ন করা অসমত হবে না; কারণ বামলা দেশ নিজ আছ্ম-মর্য্যাদা অকুগ্র রাখতে এঁদের অনেকের গ্রহণ করেছে এবং বাইরের অনেক নামকরা খেলোয়াডালের निक निक প्राप्तिक पत्नत्र (थनात्र यांगमान (थएक বঞ্চিত করেছে। বাইরের থেলোয়াডরা কিসের আকর্ষণে স্বদেশ, আত্মীয়-স্বজন ত্যাগ ক'রতে এবং নিজ श्रादम्भिक कृष्ठेवन मतन महत्याशिका ना करूटक देशमहत्वाध करतन व প্রশার উত্তর লিখে বলার প্রয়োজন হয় ना, খেলার মাঠে এ বছকাল 'Open Secrete-এ' দাঁড়িয়েছে।

বান্ধালীর বহু অতীত গৌরব-গাথা আছে। বর্ত্তমানের ভ্রাম্ভ নীতির ফলে শীন্তই বাঙ্গালীর জাতীয় যাত্রবের আর একটি গৌরব স্তম্ভের স্থান সন্থ্যানের ব্যবস্থা হতে চলেছে। মহা সমারোহে ভাজের গায়ে গৌরব গাথার ফলকটি উৎকীর্ণ ক'রে কর্ত্তব্য সম্পাদন করা হবে। নিকট ভবিয়তে আমাদের বংশধরেরা তার তলায় অবাক বিশ্বরে দাড়িরে দেখবে—বাঙ্গালী এককালে ফুটবল খেলার পথপ্রদর্শক ছিল। এবং ভারতীয় ফুটবল থেলার ইতিহাসে বাঙ্গালীর শেষ্ঠ प्रकारिन श्रमाणिक श्रमित । किस व नमखरे श्रम তথন তাদের কাছে অতীতের নিদর্শন। বাস্তবদীবনে এর কোন নিদর্শনই খুঁজে পাবে না। ব্যক্তিগত এবং দলগত স্বার্থবৃদ্ধি এবং অবিমৃষ্যকারীতার ফলে বাঙ্গালা দেশের ফুটবল (थमा (र मक्केबनक व्यवसाद मितक उक्तमः अभित्र চলেছে সেই কঠোর বাস্তব ঘটনা ঘটতে বেণী দেরী নেই यमि ७ छत्कि ध्यन् खाश्च ना रहा। देश । सामारमञ् পক্ষে আজ গৌরব এবং আত্মপ্রদাদের কথা নর।



नव-श्रकामिक शृष्टकावली

এখনিক্ষায় বিধান-সম্পাদিত কাব্যগ্রন্থ মহাকবি কালিলাসের

"নলোধর"—-৩া•

ভরণ রার প্রণীত উপভাস "বিজ্ঞানা"—২10
ন্থবোধ বহু প্রণীত উপভাস "ইলিড"—২10
নিশান্তি চৌধুরী প্রণীত লীবনী-প্রস্থ "বীরালনা প্রীভিনতা"—>
নিশান্ত চৌধুরী প্রণীত লীবনী-প্রস্থ "বীরালনা প্রীভিনতা"—>

"মোহনের দীকালাভ"—২১, "মজের বোহন"—২১
নীহীরালাল দাশগুর প্রণীত শিকার-কাহিনী "বাবের জলতে"—৫10

বিষদাপ চটোপাধান এপিত উপস্থাস "শেব কোপা"—২।•, "হোটদের রাজপুত জীবন-সন্থা"—১।•

বীনীলমণি দাশ এণীত "ব্যানাম ও বাছ্য"—২,
বিদেবদাস বোব এণীত উপজাস "পদ্ধন্ন"—১,
ক্ষিতীল নাগ এণীত কাৰ্যএছ "পূজার কুল"—১,
বীন্যনকুমার রার এণীত অবণ-কাছিনী "জাপান"—৪।
রমাপদ চৌধুরী এণীত গল্প-এছ "বর্ণনারীচ"—১।
বীরেধাদেবী বন্দ্যোপাধ্যার এণীত "ব্যব শিল্প"—৩,

বিশেষ দ্রষ্টব্য

পূজার ভারতবর্ষ—শার দীরা পূজা উপলক্ষে আগামী কান্তিক সংখ্যা "ভারতবর্ষ" আশ্বিনের দ্বিভীর সপ্তাহে প্রকাশিত হইবে। বিজ্ঞাপনদাভাগণ অনুপ্রহপূর্বক আশ্বিনের প্রথম সপ্তাহের মধ্যেই কার্তিকের বিজ্ঞাপনের কশি পাটাইবেন। নির্দিষ্ট ভারিখের মধ্যে বিজ্ঞাপনের পাঞ্জিশি না পাইলে বিজ্ঞাপন ছাপা না হইবার সপ্তাবনা।

কার্যাধ্যক—ভারতবর্ষ

পাকিস্তানস্থ গ্রাহকদের জন্য বিজ্ঞপ্তি

আমাদের পাকিস্তানস্থ প্রাহকগণের মধ্যে বাঁহারা আমাদের কার্যালয়ে "ভারতবর্ধ"-এর চাঁদা পাঠাইতে বা ভ্রাদিতে অস্থবিধা ভোগ করিয়া থাকেন, ভাঁহারা অতঃপর ইছা করিলে ঠিকানা ও প্রাহকনস্থ উল্লেখপূর্বক মান্ত Asutosh Library, 78-6, Lyall Street, Dacca, East Pakistan—নিকট চাঁদা পাঠাইতে বা অমা দিটে পারেন। নৃতন প্রাহকগণ টাকা অমা দিবার সময় "নৃতন প্রাহক" কথাটি উল্লেখ করিবেন। ইতি— বিনীত কার্যাগ্রক—ভারতক্রি

मणापक-लीकपीलनाथ मृत्यांनापाग्र वय-व

২০০।১।১, কর্ণওরালিন ইটি, কলিকাতা, ভারতবর্ণ প্রেটিং ওরার্কন্ হটতে প্রাগোবিক্রণদ ভট্টাচার্য্য কর্ত্বক মুক্তিত ও প্রাকৃতি





नहीं क्षिपुक असी समाज वाहासी वृद्धी



কাত্তিক-১৩৫৭

প্রথম খণ্ড

অষ্টত্ৰিংশ বৰ্ষ

পঞ্চম সংখ্যা

যুগান্তর

শ্রীকেশবচন্দ্র গুপ্ত

আৰু ধীরভাবে বাহিরের বা অস্তরের জগতে দৃষ্টিপাত করলে যুগান্তরের অমুভূতি অস্বীকার করবার উপায় নাই। এ নতুন যুগ প্রবর্তনের জন্মতিথি নির্দ্ধারণ অসম্ভব। কারণ মানব-সমাজের বছদিনের পুঞ্জীভূত পাপ বা সাধু প্রবৃত্তির কোনো নির্দিষ্ট অশুভ বা শুভ মুহুর্তে আমূল পরিবর্ত্তন ঘটে না। যা ধীরে ধীরে জ্ঞানতঃ বা অজ্ঞাতসারে গড়ে ওঠে, তার আংশিক ভাঙন মুহুর্তে ঘটতে পারে। সে ভগ্গত্পপের আমূল অপসরণ সময়-সাপেক্ষ। পুরাতন ভিত্তিতে নতুন সৌধ গড়ে উঠতে পারে না—বছদিনের অক্লান্ত পরিশ্রম ব্যতি-রেকে। ভাঙনের কারণ সুকানো থাকে সঞ্চিত ভাবধারায় এবং নৃতন যুগ-সৌধও গঠিত হয় বছদিনের রাশী-কৃত করনা এবং আদুর্শের মাল-মশলায়।

নটরাব্দের বাধন-ছেড়া ও বাধন-পরা নাচের ছল চির-দিন অহুভূত হয় অস্তর ও বহির্জগতে। নৃত্যের তালে তালে পাহাড় থদে, নদী শুকায়, রাজ্যেশ্বর ভিথারী হয়, অপ্তাত-কুল-দীল কোটি কোটি নরনারীর দণ্ড-মুণ্ডের বিধাতা হয়। নর-সমাজে ভাবের অভিব্যক্তি ও বিপ্লব ঐতিহাসিক সত্য, মানবের চির-অশান্ত প্রকৃতির বিকাশ; স্বেচ্ছাচারিতা ও বিচার-শক্তির অনিবার্য্য পরিণাম।

চিত্ত সহজে স্বীকার করতে চায় না যে মনন ও বিচার
অতিমান্রায় অত্যের চিস্তা-ফল ও প্রেরণার পরিণাম পরিগ্রহ
মান্র। আদিম য়ুগ হতে স্বাধীন সিদ্ধান্তের গর্ব-মুখর নবীন
য়ুগ মহা-মানব বা প্রবল অধিনায়কের ভাব-ধারায় শাসিত।
আদিম য়ুগেই কোনো মহাপুরুষ বুঝেছিলেন বস্ত-জীব বা
উন্মাদ প্রকৃতির ধ্বংস-লীলার অভিযান হ'তে আছা-রক্ষার
একমান্র উপায় দল-বাঁধা। সমাজের বাঁধন ও সক্ত্ব-রক্ষার
ন্তন ন্তন পরিস্থিতির সম্মুখীন হয়ে মাছ্ম বিধিনিয়ম
প্রবর্তন করেছে চিরদিন। কিন্তু সে স্ব বিধি স্কতীতকে

একেবারে মুছে কেলতে পারেনি। দেহান্তরিত পথ-প্রদর্শকদের প্রদর্শিত পথ হতে পাথের সংগ্রহ ক'রে তবে অজানা পথে শুভ বাত্রা আরম্ভ করেছে প্রত্যেক নবীন যুগের প্রবর্তক।

তাই निष्कंत्र मरन सोलिकजांत्र शर्व व्यञ्चय कत्रात्राध যুগ-যুগান্তর মাহ্য অধিনায়কের সহযোগী বা আক্তাহ্যবর্তী। রাষ্ট্রে, সমাজে, ধর্ম-সজ্বে, বাণিক্য জগতে, শিল্পে ও সাহিত্যে এই সত্যের ক্রিয়া প্রতীয়মান। পূর্ণব্রন্ধ শ্রীকৃষ্ণ তাঁর ভাগবত-ধর্মের সারাংশ বর্ণনায় শ্রীমন্তাগবদুগীতায় বলেছেন-তাঁর উপদেশ ছলে শত এবং বছ ঋষি গীত। যাকে নায়ক ব'লে মানি, আমরা তার আবিষ্কৃত মার্গে অন্ধ হয়ে ছুট। यात्क लाक-नाष्ठक भक्क व'त्न निर्दान करत्र, जेमान হ'য়ে তার জীবন-পথ কণ্টকাকীর্ণ করি। অথচ নায়কের পরিণত দিদ্ধান্তের হেতু বোঝবার প্রয়াস করি না। মাতুষ मर्भरक करत, अशव नरत्रत्रहे मर्भ-कृष्टिन मः भरन मानव-कांकि জর্জরিত। ধর্ম-বেষীর নিন্দায় ভূ-ভারত মুখরিত। কিন্ত সে নিন্দনীয় আচরণের অল্প-বিস্তর বিকাশ অহত্ত হয় প্রায় প্রত্যেক সামাজিক নরের জীবনে। শান্তির আদর্শ নিয়ে मार्य युक्त रक्त कत्रवात क्षेष्ठ ममत-मञ्जा करत, श्राष्ट्रिक्चीत ভণ্ডামীর মুখোস ছেড়বার জন্ত নিজেই ভূয়ো পবিত্রতার মুখোদ পরে।

প্রকাণ্ড মানব-বিশ্বের প্রচণ্ড-ভাব ও কর্ম-প্রবাহের প্লাবন আদ্ধ সকল জাতি-সভ্যকে বিপ্রত করেছে। রাজ-নীতি ক্ষেত্রে তৃটি ভিন্ন-মুখ স্রোতের সংঘাতের পরিণামে জগত-ব্যাপী অশান্তি। মূল-স্রোতকে আশ্রের ক'রে বহু ছোটো বড় ঘূর্ণীচক্রে সাধারণ মাহুর নিঃসহার ভাবে আহি আহি শব্দ করছে। কিন্তু আশ্রুমের বিষয় এই বে, প্রত্যেক নর-সভ্য সম্বর সম্বর ব'লে আর্ডনাদ করছে, অপ্রচ নিজের ক্ষুদ্র বা প্রবল শক্তি সেই ভাঙন-শক্তির একটি বা অপরটির সাথে মিলিয়ে দিচে। আমাদের দেশে একদল অন্ত-দলকে ইজ-মার্কিনী শক্তির কৃতদাস ব'লে ধিকার দের, অপ্রচ সেদ নিছক অন্ধ উপাসক সোভিয়েট শক্তির। কেন্ট বৃষ্ছে না, এই উন্মাদ তরক্রের মুখে বুক দিয়ে দীড়ালে, ভার নিজেরই উচ্ছেদ অনিবার্ষ।

মাহাষের অন্তর্গতির সীমা বিশাল। কারণ কলনা মানব চিলের বিশেষ সম্পাদঃ কালনা-কাননের কনিবাল অবল অভিজ্ঞতা ও উপলবিম্লক। বাদ-বিস্থাদ ও অপবাদে প্রমের উৎপত্তি। সাধারণ ব্যক্তি-অভিকৃতি ও আশা করনার প্রছেদ পট। স্তরাং করনা-প্রস্ত যে সিদ্ধান্তকে আমরা বৃক্তির ভিত্তিতে প্রতিষ্ঠিত ভাবি, তার মধ্যে থেষ, হিংসা, প্রেম ও আশা বছল পরিমাণে অযুক্তি মিশিয়ে দেয়। আমাদের ভাবের কাননে স্ব্কের বীজের সাথে মিশিয়ে থাকে আগাছা ও বিষ-বৃক্তের বীজ। তার ফল অনিবার্য। আশা-কানন নিরাশার জঙ্গলে পরিণত হয়। কর্মের অবকাশে আশেপাশে তাকিয়ে দেখি অপকর্মের ফসল, ঝোঁপে ঝোঁপে কাল কীট ও অজগর! হতাশ হয়ে বলি—

আমি নিশার অপন করেছি বপন বাতাদে তাই আকাশ কুমুম করেছি চয়ন হতাশে।

ব্যক্তি-জীবনের এই নীতিসক্ষ জীবনে সন্তা। ব্যষ্টি-জীবনের বিফলতা মুখ্যরূপে মাত্র একটি জীবন ব্যর্থ করে।
কিন্তু সক্ষ-জীবনের ব্যর্থতার পরিণাম মাত্র সম-মুগের সমাজ জীবনকে বিষাক্ত করে না। সে বিফলতা ভাবীকালকেও দ্যিত করে। তাই সক্ষপতি, রাষ্ট্র-নিয়ন্তা ও সমাজ-গুরুর নায়িত্ব অসামাক্ত। অথচ নেতৃত্বের লোভ সাধারণ। মিথা ভণ্ডামী ও আপাতঃমধুর বচনের বেড়াজালে জনগণের চিত্ত আহরণ ক'রে বছ লোক সংসারে অহিতের বীজ বপন করেছে, আজিও করছে। প্রাচীন ও আধুনিক ইতিহাস পুনঃ পুনঃ একথা প্রমাণ করেছে।

কিন্ত প্রকৃতপকে মাহ্ব কি এতই ত্র্বল বে আঞ্ জগতের এই বিপ্লবী তৃষ্ট স্রোত এড়িরে সে আত্ম-রক্ষা করতে পারে না ? ধীর, শান্ত অধিনায়ক স্বষ্ঠু ভাবে নিশ্চয়ই সে স্রোতের বাহিরে রাণতে পারে নিজের সমাজকে। দেশের লোকের পরিতৃপ্তি এবং ধ্বংস স্রোতের অপরিহার্য্য পরিণাম হ'তে পরিতাণের উপারের নিশ্চয়ই সন্ধান পাওয় যায় স্থান্ত ধীরতার। সে অহিংসার নীতি হিন্দুর নিজ্য সম্পতি। মাত্র আবশ্রক—কাল-স্রোতের হিংসার থাদের মধ্যে ঝাঁপ না দেওয়া। যুগান্তর খীকার্য, কিন্ত কোন্ যুগকে বরণ করবে, তার নির্বাচন-শক্তিকে শিথিল করা না করার দায়িত্ব প্রত্যক মানব-সভ্তের।

আৰু সারা বিশ্বের অন্তভ তরকের আঘাতে আমাদের জীবন-স্রোভ উন্মার্গগামী, অশোভন বা বিমল, এ আখাস করিকের জাখ্য-প্রবেশ্বনা প্রক্রীক বল কোবে পাকী, স্লভরা আমার পক্ষে নিষ্পাপ থাক। অসম্ভব, এ ধারণা মারাত্মক। হিংলার উন্মাদনায় বিশ্ব আলোড়নের দোহাই দিয়ে হিংল্লক বৃত্তিকে অবলম্বন করা সমাজের পক্ষে তেমনি ছুর্বলতা। মহুস্বজের বিচারের মান আত্ম-বোধের বিশিষ্টতা সংরক্ষণে। স্থারের পথে, জ্ঞানের রাজ্যে বা জনহিতকর শুভ কর্মের ক্ষেত্রে, অহুকরণ শুভ। কিন্তু বিবেক বা অন্তর্মাত্মা যে পথকে কুমার্গ ব'লে নির্দেশ করে, যে কর্মকে আত্মঘাতী কুকর্ম ভাবে, সে পথ ও সে কর্ম পরিবর্জনীয়। যুগ-সন্ধি এই প্রতিরোধ শক্তিকে যে জ্ঞাতির প্রাণে উন্ধুদ্ধ করে, সেই ভাতি বিশ্ব-বিজ্যের অধিকারী।

আজ বিজ্ঞান শ্রম-শিল্পে নতুন প্রাণ সঞ্চার করেছে। পরিশ্রম ও অধ্যবদায় ভূ-খণ্ডকে সঙ্গুচিত করেছে। পৃথিবীর কোনো অংশ অক্স ভূভাগ হ'তে দূর নয়। প্রাচীন জগতে সভা মানবের সজ্যের মধ্যে পণা ও ভাবের কণঞ্চিত আদান প্রদান ছিল। ভারত, মিশর, গ্রীদ, পারস্ত ও চীনের মধ্যে ভাবের বিনিময় হ'য়েছিল। গ্রীক-যবন রোমকে ও যুরোপকে ফুর্গু ভাব বিতরণ করেছিল, ভারতবর্ষ বুচত্তর ভারতে বৌদ্ধ নীতি-স্থা পৌছে দিয়েছিল। কিন্ত দে বিনিময়ের মাতা ছিল স্বল্প। সে কর্ম সম্পাদিত হ'ত দীর্ঘকালে। আজ চকুর পলকে মার্কিণের স্মাচার পৌছয় বাঙ্লার পল্লীগ্রামে। স্বতরাং স্বৃত্তির রাংতার মোড়া कृत्कित कुकन প্রতিরোধ করা শক্ত। আমার নিবেদন এই যে, যদি নিউ-ইয়র্কের বা ক্রেমলীনের বাণী আপনাকে বিশ্ব-বাণীর আসনে উন্নীত করতে সক্ষম হয়, দিল্লী বা কলিকাতার কথা আপনাকে যুগান্তরের উপদেশের পর্যায়ে ভুলতে পারবে না কেন ? আমার দেশের অহিংদার বাণী শাখত সভ্যে প্রতিষ্ঠিত। এদেশ মাত্রকে ঈশর रलहि, खोराक वालहि निव-यिनि नास ७ जन्मत ।

প্রাচীন যুগে শিক্ষা সর্বজনীন ছিল না। আবা সভ্য জগতে সকল শ্রেণীর অধিবাসীর ভ্-মণ্ডলের বিভিন্ন ভ্-থণ্ড সম্বন্ধ জ্ঞানের মাত্রা বৃদ্ধি পেরেছে। পুরাকালে আন্তর্জাতিক সম্বন্ধ ছিল সীমাবদ্ধ। একজন অধিনায়ক বিশ্ব-বিক্তরের উচ্চাশার দলবল নিয়ে অন্ত দেশে অভিযান করত। সে "ভিযানে দহ্যতার বিভীষিকা আত্তন্ধের স্প্টি করত। এ বৃগের আন্তর্জাতিক যুদ্ধের প্রাণালী বিক্তিতের পক্ষে নৃশংস, নিচুর এবং অভি প্রশ্বিক। ত্রদ্ধার চরম যুদ্ধের অবসানে নয়। বৈরিতা ও হিংসা বিজয়ী ও পরাজিতের সর্বাদে হলাহল সঞ্চার করে—রণাবশেষ মাত্র নৃতন সমরের জন্ম নৃতন আয়োজনের অবকাশ। যদি এ পরিণাম ভারত-বাসীকে শান্তিপ্রিয় হ'তে শিক্ষা না দেয়, তাহ'লে বুদ্ধ ভগবান হ'তে মহাত্মা গান্ধী অবধি স্বার শিক্ষা বিষ্ণ্য ও নির্থক প্রতিপন্ন হবে।

রাজনীতি ক্ষেত্রে ভারতবর্ধ শিশুরাষ্ট্র। তাই ভার
অধিবাসী প্রজাতয়ের সকল নীতি হাদরসম করতে
পারেনি। ভারতবাসীর কিন্তু একটা স্থবিধা আছে।
সে স্থোগে আত্মোন্নতি না করলে যুগান্তরের স্রোতে
ধবংসের গহররে তার সমাধি স্থনিশ্চিত। সে বড় বংশের
লোক, পৃথিবীর সর্বপ্রাচীন নীতির উত্তরাধিকারী। গত
করেক শতক সে ঠেকে শিথেছে। স্থতরাং আজ এই
যুগান্তরের দিনে সে অন্ততঃ নিজের দেশে সতার্গের
প্রতিষ্ঠানা করলে, মানব-জাতির ইতিহাস ভীষণ কলজিত
হবে।

প্রথম শিক্ষা একতা। আজ প্রত্যেক ভারতবাদী অক্ত হ'তে পুথক। রাষ্ট্র, সমাজ, সংস্থার ও ব্যক্তি-জীবন পরিচালনায় প্রত্যেকের গর্ব যে তার আদর্শ চরম ও পরম। কিন্তু এ কথা অবহেলা করবার অবকাশ নাই যে, একতা ভিন্ন কোন মানব-সভ্য ক্ষণকাল ডিঠতে পারে না। আজ যাদের হাতে শাসন-শক্তি হয়তো তারা অদক। कर्मठातीरमत्र मरशा व्यत्त्व देश्त्राख त्राख-कर्मठातीत खेक्का. হীন-ম্পদ্ধ। বা অভদ্রভার উত্তরাধিকারী। অথচ তাদের দক্ষতা-বর্জিত। কিন্তু এ কথা ভূনলে চলবে না যে তারা আমাদের স্বদেশবাসী এবং প্রজা-শক্তি প্রবল হ'লে তাদের কৰ্ত্তব্য-বিমুখতা লোপ পাৰে। আজ ছুৰ্ণীতি, উৎকোচ-গ্রহণ, গোপনে সাধারণের ক্ষতি ক'রে উচ্চপদত্ব বহু मक्तिमात्तव व्यर्थ मक्षरवृत कथा छनि धवः श्रमांग शहे। কিছ তাদের উপর অভিমান করে রাষ্ট্রের বিধি নিয়ম উপেকা ও वज्यत खरेनका वाष्ट्र। সমাজ-विद्राधी किय:-কলাপ শত্ৰ-জাতির হিংসানলৈ ইন্ধন আছতি। সকল কেত্রে একতার প্রয়োজন। সাধু-প্রকৃতি উচ্চ আদর্শের লোক একতা হ'লে রাজ্য ভার অতি অল্লদিনে অস্ত হতে সমর্পণ করা বেতে পারে। উৎকোচ গ্রহণ যে করে আর যে **देशकोठ होत बा**द्वा. फेकारडे करा व्यक्तीया

কালোবাজারীর খরিজার তো আমরা। স্কুতরাং সাধু উদ্দেশ্ত নিয়ে যদি স্বাই এক মন হই, সজ্ববদ্ধ হই, দেশের দশা উন্নত হবে। কিন্তু গঠনের মন্ত্র উপ্পেক্ষা করে বিচ্ছিন্নতা, ভাঙ্গন এবং হিংসা মন্ত্রের সাধনায় এ যুগসন্ধিতে আমাদের যাত্রা-পথ কোন দিকে হ'বে, তা কল্পনা করা সহজ। যদি বেঁচেও থাকি—দাসত্ত অনিবার্য্য।

আমরা আজ এ-দেশের মূল-মন্ত্র ভূলেছি, এ-কথা অরীকার করবার উপায় নাই। সর্বভূতে-সমজ্ঞান, সর্বভূতে-নির্বৈর, সবার উপরে মাহ্ম্য সত্য তাহার উপরে নাই, আজ এ-সব সত্য জীবনের কোনো কর্ম নিয়ন্ত্রণ করে, একথা মনে হয় না। যে সব অমূল্য গ্রন্থে জীবনরহক্ষ সমাধানের শাশ্বত নীতি বর্ণিত, আজ তাদের উপর আমরা বিশাস হারিয়েছি। নবীন সভ্যতার ভিত্তি—প্রত্যেকের মান, সম্পত্তি এবং দেহ সংরক্ষণের অধিকার আজ আমরা নাগরিকের দৃষ্টি ভঙ্গিতেও দেখিনা। জগত আমি ভিন্ন দিতীয় ব্যক্তির বাদস্থান এ-কথা আমরা বিশ্বত। তাই নর-হত্যা, নারী-নিগ্রহ, তত্তরতা এবং পরের অপমান সমাজকে কলুবিত করেছে। ১৯৪৬ সালের ১৫ই আগষ্ট হতে পাপ বন্ধ করবার জক্ষ আমরা যে পাপ অহুষ্ঠান করেছি এবং যে কু-কর্মে আজও ব্যাপৃত, ধীর-ভাবে হিসাব করলে প্রাণ শিউরে ওঠে।

সভ্যের দিক্ হ'তে এ-সব কু-কর্ম যেমন ব্যক্তিকে ত্র্বল করে তেমনি সভ্যকে নষ্ট করে। মাহ্যযের প্রতি শ্রদা হাস হ'লে মাহ্যযের সমষ্টি তিষ্ঠতে পারে না। এক মন্ত্রের সাধনা, প্রত্যেকের সাধারণ ইষ্টকে আপনার ইষ্ট ভাবা, দেশ-মাতৃকাকে জননী ভেবে দেশের নর-নারীকে ভাই-বোন ভাবা—সামাজিক প্রতিষ্ঠানের প্রাণ। স্বার্থ-পর নর নিজ্বেও হিত সাধন করতে পারে না—পরের হিত-সাধন না করলে। যাকে জড়-প্রকৃতি বলি তার প্রাণ-শক্তির ঐ নির্ম। বসম্ভের হিলোলে শুক্নো পাতা ঝরে, তবে তরু পল্লবিত হয়।

আমি মনে করি আজ এই কালের বুগসন্ধিতে আমরা যে উচ্ছেদের পথকে গস্তব্য-পথ ভাবছি, এ-ক্ষণিক বিকারের ভ্রম। কেটে যাবে মেঘ, নবীন অরুণ দেখিয়ে দেবে সত্যযুগের পথ। আমাদের জাতীয় যজ্ঞ-শালায় আজ ছ:থের রক্ত-শিখা প্রজ্ঞলিত। প্রাণে আশা রাথতে হবে— র্থা আশা নয়, নিরাশার বিফলতায় বিকল মনের জল্পনা নয়। জাগ্রত ভগবানকে আন্তরিক হঃথ জানিয়ে, পরিত্রাণ যাচিঞা করতে হ'বে।

> আত্ম-অবিশ্বাস তার নাশ কঠিন-ঘাতে, পুঞ্জিত অবসাদ-ভার হান অশনি-পাতে ছায়া-ভয়-চকিত-মৃচ্ করহ পরিত্রাণ হে জাগ্রত ভগবান হে।

একতা নষ্ট হয় এমন কোনো সমাজদ্রোহী আত্মবাতী কু-কর্মে নবীনযুগ আমাদের সত্য-যুগে পৌছে দেবে না। অতি-প্রাচীন বৈদিক মন্ত্রের সাধনায় শক্তি উদ্ধার করতে হবে।

সংগচ্ছধ্বং সৃং বদধ্বং সং বো মনাংসি জানতাম—
তোমরা সন্মিলিত হও; এক কথা বল, একমত হও।
সমানো মন্ত্র: সমিতি: সমানী সমানং মনঃ সহ চিত্তমেধান্।
মন্ত্র সমান, সমিতি সমান, চিত্ত ও মন সমান।
সমানী ব আকুতি: সমানা হৃদয়ানি বং।
সমানমন্ত্র বো মনো ধথা বং স্পহাসতি!

তোমাদের সকল সমান হক, হাদর সমান হক, মন সমান হক, যাতে তোমাদের স্থলর সাহিত্য (মিল) হ'তে পারে।





ञ्चामाभ्रत् यल्हाभाधााः

(পূর্বামুরুন্তি)

মান্নবের জীবনে এক এক সময় অকলাৎ একটা আবেগ আদে—ভূমিকম্পের মত পাহাড়ীয়া নদীতে ধ্বসিয়া-পড়া ভূমার-ন্ত প্-বিগলিত অলোচচ্ছাদের মত; সব ভাঙিয়া চুরিয়া জীবনকে একটা নৃতন রূপ দিয়া যায়। তেমন আবেগ যথন আদে তখন দে যেমন উন্মন্ত অধীর—কোন কিছুর বাধা মানে না—কিছুতে লজা থাকে না, ঘুণা থাকে না, তেমনি আবার বিপরীত শাস্ত স্থির প্রসন্ত মৃর্ভিতে আত্ম-প্রকাশ করে রূপান্তরিত নবজীবনে। সে তাহার জন্ত কাহাকেও দোবী করে না—নিজেকেও দোব দেয় না। অরুণার অবস্থা সেই রূপান্তরিত অবস্থা। জীবনে তাহার প্রচণ্ড কম্পন বহিয়া গেছে। সে কম্পন কেমন করিয়া আসিল সে কথা সে জানে, কিছু কোথায় ছিল এত আবেগ তাহা সে কল্পন ক্রান করিতে পারে না।

স্বৰ্ণ বলিয়াছে, অৰুণাও অস্বীকার করে না-বিশ্বনাথের মুকুর পর তাহার জন্ত বেদনা বহন করিয়াও বাহিরে সে কোন দিন এ বেদনার বৃহিঃপ্রকাশকে বড় হইতে দেয় নাই। বৈধব্যকে জীবনের আচরণে ব্যবহারে ফুটাইয়া তুলিতে চায় नाई—एम्र७ नारे। त्म देवधदात्र প্রচলিত বিধিকে अश्राम ^{অহেতৃ}ক বলিরা মনে করিয়াছে। ভাবিয়াছিল—সে নিজেও ভাবিয়াছিল, তাহার অস্তরত্ব জনেরাও ভাবিয়াছিল— ^{সময়ের} ব্যবধানে মন স্বাভাবিকভাবে বিশ্বনাথকে বিশ্বভির আনরণে আবরিত করিয়া বিলুপ্ত করিয়া দিবে। নিংশেষিত পুষ্পাদল বিক্ত গাছের জীবনে বৎসরাস্তে আবার আসে থেমন নব বসন্ত—ভেমনি ভাগার জীবনেও আসিবে নুতন ^{বস্}্ত। ভাহার জীবনে সেই নিয়মের গতিরও কোন ব্যতিক্রম ছিল না। ধীরে ধীরে আর একজনের সঙ্গে ^{তাহা}র অন্তরন্বতাও গাঢ় হইয়া উঠিতেছিল। করেক মাস ^{আগেও} সে ভাহাকে বলিয়াছিল—"আর না, এর শেষ করে ^{(क्ला}र थहेवाता। जूमि वावद्यां कता" नवहे द्वित हिल।

কল্পনাও সে অনেক করিয়াছিল। এই সামান্ত শহর ছাড়িয়া চলিয়া যাইবে, মহানগরীর প্রাসাদ-শিধরের এক কোণে থানিকটা স্থান অধিকার করিয়া নীড় বাঁধিবে— জীবনত্রতের বিপুল বিস্তৃত কর্মক্ষেত্রে নৃত্ন আবেগে ঝাঁপাইয়া পড়িবে। শুধু সে বৃঝিতে পারে নাই বিশ্বনাথকে সে কতথানি ভালবাসিত, সে তাহার জীবন কতথানি ভুড়িয়া আছে।

সে দিন প্রাটফর্ম্মের উপর প্রচণ্ড একটা আকোশ লইয়া ক্সায়বত্বের প্রতীক্ষা করিতেছিল। তাহার হাত ধরিয়া থাকিতে দেখিয়া যে দৃষ্টিতে তিনি বিশ্বনাথের দিকে তাকাইয়াছিলেন—সে দৃষ্টি তাহার বুকে বিষাক্ত শলাকার মত বিধিয়াছিল। তাহার জালা সে কোন দিন ভূলিতে পারে নাই। মাহুদ ভুলিতে পারে না, সচেতন ভাবে পুষিয়া না রাখিলেও তাহার অজ্ঞাতসারে মূলদ উদ্ভিদের মত অন্তরে অন্তরে বাঁচিয়া থাকে; স্থাগে মিলিলে সে-দিন সে পাথর ফাটাইয়া আত্মপ্রকাশ করে। স্থায়রত্বের সঙ্গে প্রাটফর্মের উপর সাক্ষাতের ক্ষণটি ছিল সেই ক্ষণ। কিন্ত কি করিতে গিয়া কি করিয়া বসিল সে! কথা বলিতে বলিতে তাহার দৃষ্টি পড়িল অঞ্চয়ের মুখের উপর। সে कि হইয়া গেল! যোল সতের বৎসর বয়সের কিশোর অজয়! त्म कि अख्य! वह पिन शृद्ध अक्रनांत्र पांचा त्मवांत्र ম্যাটি ক পাশ করিয়া কলেজে ভর্তি হইয়াছে—অরুণার বয়স তথন দশ কি এগার, একদিন অরুণার দাদা এমনি-অবিকল এমনি এক কিশোরকে তাহাদের বাসার লইরা আসিয়াছিল। সে-দিনটি তাহার জীবনে অক্ষয় হইয়া আছে। তাহার দাদা তাহাকে বলিয়াছিল-বিশুকে ভুই গান গুনিরে দে।

সে বলিয়াছিল—না। দাদার উপর বিরক্ত হইরাছিল
—তাহার বন্ধ হইলেই আর কি তাহাকে গান শুনাইতে
হইবে।

দাদা বলিয়াছিল—বিশুও শোনাবে তা হ'লে।

- —উনি গান গাইতে পারেন ?
- —গান না, সংস্কৃত কাব্য আবৃত্তি করে শোনাবে। সে তোর গানের চেয়ে অনেক ভাল।

সংস্কৃত কাব্য আবৃত্তি করিবে—এইটুকু ছেলে! তাহার দাদা ফার্ন্ত কাব্য আবৃত্তি করিবে—এইটুকু ছেলে! তাহার দাদা ফার্ন্ত কাব্য অবধি সংস্কৃত লইয়া হিমসিম থাইয়াছে, অফুসার বিসর্গর্ক ভাষাটাকে একথানা এবড়ো-থেবড়ো পাথরের মত শক্ত মনে হইত, দাদা ক্রমাগত মুখন্ত করিত—ক্মিশ্চিত ক্মিশ্চিত ক্মিশ্চিত বনোদ্দেশে বনোদ্দেশে এঁয়া—এঁয়া ক্মিশ্চিত ক্মিশ্চিত। সেই ভাষায় কাব্য আবৃত্তি করিবে এবং সেই আবৃত্তি তাহার গানের চেয়েও ভাল লাগিবে। হঠাৎ মনে হইয়াছিল, তাহার দাদা নিশ্চয়ই এই পাড়াগেঁয়ে ছেলেটকে দিয়া হাস্তকর কিছু শুনাইবার জক্ত এমন ভণিতা করিতেছে। দাদার গন্তীরভাবে রসিক্তা করার স্ক্রাব তো তাহার চেয়ে কেহ বেণী জ্বানে না।ছোট্ট পকেট আয়না কিনিয়া আনিয়া দাদা বলে—এই অফুণা—আক্র একটা বঁদের পেয়েছি রে।

- --বাদর! কই? কোথায়?
- —আছে। আছে।
- —মিথ্যে কথা!
- —তোর মাথায় হাত দিয়ে বলতে পারি সভ্যি কথা!
- —কোখেকে কিনলে ? টাকা কোথায় পেলে ?
- কিনতে হয় নি, ভগবান দিয়েছেন।
- —क्हे ? (मथाख।
- —চোথ বোজ। আমি নিয়ে আসি।

অফণা চোথ বন্ধ করিবার পরই দাদা বলিত—দেখ এইবার।

চোধ খুলিয়া অরুণা দেখিত—তাহার মুখের সামনে ছোট আয়নাথানি। দাদা বলিত, বাঁদর নয় বাঁদরী। আয়নার মধ্যে দেখ। দেখ দেখ কেমন দাঁত বের করেছে।

অৰুণার দর্দি হইলে দাদা হঠাৎ বলিত—ছটো নাম বের করেছি অৰুণা। ভোর একটা আমার একটা। বুঝলি। এ নাম পালটে ফেলব ঠিক করেছি।

- -नाम ? कि नाम ?
- —একটা হ'ল 'থাস্ কি ?' আর একটা হ'ল

- -- याः। ७३ नाम कि इरव ?
- —হবে। তোকে যথন—সকলকে না জানিয়ে ডাক— ভূই যথন আমাকে কাউকে না জানিয়ে ডাকবি—তথঃ
 কি মজা হবে বল তো। কেউ ব্যবে না—অথচ আমর
 ব্যব!
 - —সে ভাল হবে।
 - তा इ'ला कान नामहे। जूरे निवि वन ? 'तिकनि'
 - । व्यामात मिं इरस्ट वरन ठीड़ी इरम्ह!
 - —বেশ তো—তা হ'লে—আমার নামই 'সিকনি'।
 - -- इंग। इंग। निक्नि-- निक्-नि जूबि निक-नि।
- —তা হ'লে অভ্যেস করে নে। আগে আমি ডাকি তারপর তুই সাড়া দিবি। আমি তোর নাম ধ'রে ডাকর তুই আমার নাম ধরে সাড়া দিবি। আছো—এ থাস কি ?
 - -- সিকনি! না ব্ঝিয়াই উত্তর দিত অরুণা।
 - थांग कि ?
 - **গিক**নি !
 - —কিবলি ? কি খাদ ?
 - অরুণা এবার বুঝিয়া হাউমার্ড করিয়া উঠিত।

সেই দাদা তো! অফণা উৎসাহিত হইয়া গান গানিঃ ভানাইয়া বলিয়াছিল—কই এইবার ওঁকে বল—সংস্কৃত কবি আবৃত্তি করতে! হাসিবার জন্ত প্রস্তুত হইতেছিল সেমনে মনে পুরোহিত মহাশরের—বিড় বিড় বজবজ্ব মজ্রোচ্চার করার স্থৃতি জাগিয়া উঠিতেছিল। মুখ ভঁজিয়া হাসিবা জন্ত উপুড় হইয়া ভইয়া পড়িয়াছিল। কিছু সে অবাফ হইয়া গেল।

বিশু বলিল -- রঘুবংশ থেকে আর্ত্তি করছি।

রঘুবংশ? মহাকবি কালিদাসের রঘুবংশ। এইটুই ছেলে—। তাহার সবিম্ময় চিন্তা শুস্তিত হইরা গেল পরে মুহুর্জ্তে। এইটুকু ছেলেটি বলিল—রঘুপতি ভগবান রাম্চই জনকতনয়া সীতাকে—লক্ষার যুদ্ধ শেষে উদ্ধার ক'রে নিং পুলাক-রথে আরোহণ করে ফিরছেন। বনবাসের কাল-উত্তীর্ণ হয়েছে। ফিরছেন অবোধ্যাভিমুধে। রথ-পুলাক-রথ আকাশমার্গে উঠেছে সশক্ষে। নীচে বেল মাছে সসাগরা ধরিত্রী। এখন দেখা বাছে শুধু সমূত্র্ বিমুগ্ধ তার উচ্ছু সিত হয়ে তিনি প্রিয়তমা জানকীকে ডেকে বললেন—বৈদেহি! দেখ—

বলিয়া কথার শেষে ছেদ টানিয়া দিল এবং সঙ্গে করেল গানের মত স্থর করিয়া—প্রায় গান গাহিয়া আরম্ভি—

"বৈদেহি! পশ্যামসমাদ বিভক্তং মৎদেতুনা ফেনিলমমুরাশিম। ছায়া পথে নৈব শরৎ প্রসন্ধমাকাশমাবিশ্বত চারুতাম।"

বিশ্বনাথ গান শিখিতে চেষ্টা করে নাই, কিন্তু তার কণ্ঠন্মর ছিল বড় মধুর। যেমন গন্তীর তেমনি মধুর ক্ষারময়। আর এই পিতামহটির শিক্ষায় হয়তো—বংশ-রক্তের স্থভাব গুণেও বটে—সংস্কৃত কবিতা এমন অপরূপ আরুত্তি করিত যে—শ্রোভার মনেই শুধুনয়—তানপুরার গন্তার সন্ধাত ধ্বনির মত সমগ্র স্থানটিতে একটা মোহের সঞ্চার হইত। শ্লোকের পর শ্লোক আরুত্তি করিয়া গেল। একটানা দীর্ঘান্তিত স্থরধ্বনি যেন বাজিয়া বাজিয়া চলিয়াছিল। মধ্যে মধ্যে থামিয়া সহজ স্থারে, কিন্তু ওই সঙ্গীতের সঙ্গে ভাষায় ভঙ্গিতে ভাবে আশ্রুত্তাবে সমতা এবং সঙ্গতি রাখিয়া শ্লোকের ব্যাখ্যা করিতেছিল। অরুণার মুথের দিকে চাহিয়াই সে বলিতেছিল—"ঐ দেখ—সমুদ্রের বালু-বেলাতে বিশালকায় অজগরেরা পড়ে আছে দেখ।"

"বেলা নিলায় প্রস্তা ভূজকা মহোমিবিক্র্র্ নিবিশেষা:। স্গাংভ-সম্পর্ক-সমুদ্ধ রাইগ্রাক্ত এতে মণিভি: ফনস্থৈ:॥

অবাক হইয়া গিয়াছিল অরুণা সেদিন। হয় তো বা
য়য় য়য়য় তাকে সেইদিনই প্রথম ভালবাসিয়াছিল। নহিলে
সেই প্রথম দর্শনের স্বৃতি তাহার মনে এমন—'স্থাাংশুসম্পর্ক-সমূদ্ধ' সাপের মাথার মণির মন্ত এমন উজ্জ্বল ভাষর
হইয়া রহিয়াছে কেন। সে তো আজ বহুদিনের কথা,
দ্বত্ব মাপিতে গেলে পুলাকরথারার রাম সীতা আর অধোলোকের সমুদ্র বালুবেলার দ্বত্বের চেয়েও বেশী। বিশনাথের সলে ভাহার পরিচয়ের স্বৃতি অন্তরকতার স্বৃতি ওই
বিচিত্রবর্গ অজগর দেহের মন্ত বিন্তার্ণ হইয়া পড়িয়া আছে—
দ্ব হইতে ওই মণি-দীপ্তার মন্ত ওই প্রথম পরিচয়টুকু না
শাকিলে—সে পরিচয়ের আদি মন্ত পুঁকিয়াই পাওয়া যাইত
না। সে দিনের স্বৃতির সক্ষে সে দিনের বিলানাবেশন

কিশোর রূপও মণিময় বিগ্রহের মত অন্তরলোকে জ্বকন্ত্র দীপ্তিতে দীপ্তিমান হইয়া রহিয়াছে!

সে দিন প্লাটফর্মের উপর সে শুস্তিত হইয়া গেল। সেই
মণিময় বিগ্রহ যেন তাহার অন্তর হইতে বাহির হইয়া আসিয়া
ছুটিয়া দ্র হইতে দ্রাস্তরে চলিয়া যাইতে চাহিতেছে!
বলিতেছে—না—না—না! ঠাকুর না!

প্লাটফর্মের উপর হইতে লাইনের উপর ঝাপ দিরা পড়িয়া সে ছুটিয়া চলিয়া গেল।

ভূমিকম্প ইইরা গেল। প্রবল—প্রচণ্ড—সর্ব্ধবংশী।
বর্ত্তমানে সকল কিছুকে ভাঙিয়া চুরিয়া ফাটাইয়া—পাহাড়
মিলাইয়া গেল—সেথানে জাগিয়া উঠিল বিশাল সমুজ,
সমুজের জলে আকাশম্পর্নী জলোচছুলে উঠিল—প্লাবিড
করিয়াছিল পৃথিবী, সমুজে জাগিয়া উঠিল মহাদেশ—সমহলে
জাগিয়া উঠিল গিরিশৃল; ধ্বংস করিয়া নৃতন রচনা করিয়া
এক অভিনয়ের আবিভাবের স্প্রনা করিয়া দিল।

তাহার অন্তরাত্মা চীংকার করিয়া উঠিন—সব মিধ্যা— সব ভ্রম। সে জীবনে আর কাহাকেও কথনও চাহে নাই, চায় না, চাহিতে পারে না। তথু এই ইহাকেই চাহিয়াছিল সে। ইহাকেই সে চায়।

তাই সকল ম্থাদা সকল শিক্ষার উদ্ধৃত অংকার, এক
মুহুর্ত্তে প্রবল মাদকের আচ্ছনতার মত মিলাইয়া গিয়া
লাগিয়া উঠিল নিদারুণ তৃষ্ণা। মনে হইল জীবন মিধ্যা—
লক্ষ মিধ্যা—্যদি সে অল্পয়কে না পায়। বিশ্বনাথকে সে
কত ভালবাসিত—সে সেইদিন সেই পরম মুহুর্তুটিতে অন্তর্ভব
করিল। ওই ছেলেটিকে সে চায়—তাহাকে তাহার—
পাইতেই হইবে। অল্পথায় ব্রত মিধ্যা—বৃদ্ধি মিধ্যা—বিল্লা
মিধ্যা—এই পৃথিবীটাই মিধ্যা। সে অন্তল্ভব করিল—
জীবনে এমন ভালবাসা আছে—যে ভালবাসাকে কাল কর
করিতে পারে না, দেহের কুধার তাহাকে বিসর্জ্জন দেওয়া
যায় না, বৃদ্ধি জগতের সকল বিচার, সকল সিদ্ধান্তকে ভূচ্ছ
করিয়া দেয়—সে ভ্রান্তি নয়—সে সভ্যা।

এত কথা সে সেদিন বিচার করে নাই। সেদিন সে-ভগু উন্মন্তের মত-অভরে অভরে ছই হাত বাড়াইয়া জড়াইয়া ধরিয়াছিল অভরের সেই মনিময় বিগ্রহকে; বে পড়িয়াছিল—আজিকার বিপর্যারে-কম্পনে-ঝড়ে—সে যেন সর্ব্বোচ্চ গিরিশৃকে—সর্ব্বমালিক মুক্ত হইয়া—দীপ্তিমান হইয়া হাসিতেছে।

স্থায়রত্মকে সে নিজেই বলিয়াছিল—সে কাশী বাইবে।
অজর কাশীর ট্রেণে উঠিয়া চড়িয়াছে, গৌর সঙ্গে গিয়াছে,
সেও বাইবে। সে তাহাকে ধরিয়া আনিবে—একান্ত
আপনার করিয়া তাহাকে জড়াইয়া ধরিবে।

স্থার ত্ব আপত্তি করেন নাই। তিনি কোন কিছুতেই
আপত্তি করেন না। প্রশ্ন করিলে উত্তর দেন না।
কথনও কথনও বলেন—মৃত যা—অতীত যা—তা শুধু
সাক্ষাই দেয় নীরবে, আপত্তি তো সে করে না। আমি
ভাই।

মোগলগরাইরের কাছাকাছি আসিয়া অরুণা অধীর অন্থির হইয়া উঠিল। তাহার হাত-পা ঘামিতে লাগিল। প্রাণ যেন হাঁপাইয়া উঠিল!

कि विलाद (म ?--

বলিবে—অকপটে বলিবে—সব কথা। বলিবে—অজয় আমি তোমার মা! কোন ধর্মে কোন নীতিতে তুমি 'না' বলতে পার বল ?

হঠাৎ তাহার মনে প্রশ্ন জাগিয়া উঠিল। অজ্যের প্রশ্ন

—সে নিজেই আবিছার করিল।—গর্ভে ধরার অধিকার
ভো তোমার নাই। তবে বল, কোন দাবী ভোমার ?

—তিনি বে আমাকে বিবাহ করেছিলেন। তিনিই বে আমার সব—! তাঁর অভাবে সব বে আমার শৃত্য হছে গেছে। তুমি তাঁর পুত্ত—আমার সকল শৃত্যতাকে পূর্ণ করার দায়িত বে তোমার।

—দে পরিচর তো তুমি বছন করছ না! পৃথিবী তোমার শৃত্য কেমন করে বিশাদ করব আমি? তোমার এই বেশ—ভূষা—তোমার—এই—।

আর সে ভাবিতে পারে নাই, পাগলের মত—চলছ টেপের মধ্যেই উঠিয়া দাঁড়াইয়াছিল। না—সে অজয়ের সামনে গিয়া এই মৃর্ভিতে দাঁড়াইতে পারিবে না! দরজা খুলিবারও চেষ্টা করিয়াছিল, কিন্তু পারে নাই। টেপের দরজার চাবী দেওয়াছিল। সে নিজেই দিয়াছিল। সে মৃহুর্ভে চাবীটার কথা মনে পড়ে নাই। নহিলে হয়তো—সামরিক উন্মন্ততার মধ্যে—সেদিন সে জীবনাস্তই করিয়াবিত।

মোগলসরাইয়ে নামিরা—দে একটাবেলা নিজ্যে সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া—শেষে কলিকাতার টিকিট করিয়া— কলিকাতার বাসায় গিয়া উঠিয়াছিল।

অরুণার দিদিমা তাহার মুখ দেখিয়া শিহরিয়া বলিয়াছিলেন—এ কি ?

অরুণা বলিয়াছিল – আমাকে তোমার একথানা থান কাপড় দাও দেখি আগে। (ক্রমশ:)

ভগবান্ মহাবীরের পারণ

শ্রীপূরণচাঁদ শ্যামন্থথা

সে-কাল ও সে-সময়ের কথা।

সেই অভি পুরাতন কালে—আড়াই হালার বৎসর পূর্বে উত্তর ভারতে কৌশাধী নামী এক মহানগরী ছিল।

মহানগরী কৌশাখীর রাজমার্গ দিরা এক উন্নতবপু, গৌরবর্ণ, বিশালবক্ষ, নগ্ন সর্রাদী ধীর-পদ-বিক্ষেপে আহার্য ভিক্ষার জক্ত পথ-পার্বস্থিত প্রত্যেক গৃহে গমন করিভেছেন এবং ভিক্ষা প্রহণ না করিরা রিক্তহত্তে প্রত্যাবৃত্ত হইভেছেন। তাঁহার বদন মওল হইতে অসীম শান্তি ও অপরিসীম কর্মণার জ্যোতি বিকীর্ণ হইভেছে, তপঃক্রিষ্ট শরীর ইইতে তপত্তেজ উত্তাসিত হইভেছে। ভিক্ষা না পাওরার সামান্ত মাঞ্জ দিনের পর দিন এই মহান্তপনী কৌশানীর পথে পথে ভিকার্থ পরিভ্রমণ করেন ও কোধাও ভিকা গ্রহণ না করিয়া নগরীর বৃহিভাগে স্থিত উপয়নে গমন করিয়া শাস্তচিত্তে ধ্যান করিতে থাকেন।

কে এই মহান্ তপৰী ? কেনই বা তিনি প্রতিদিন ^{তিকার্থ} আগমন করিয়া তিকা গ্রহণ না করিয়াই প্রত্যাবৃত্ত হইতেহেন ?

ইনি শ্রমণ মহাবীর। তথনও মহাবীরের সাধক জীবন অতিবাহিত হর নাই—কেবল জ্ঞানপ্রাপ্ত হইরা ধর্মপ্রচার করিতে আরও করেন নাই। আল্লার পূর্ব বিকাশ করিতে কুতসংকল হইরা ঘোর তপ্রার লারা কর্মকর করিতে তিনি প্রামে প্রামে, নগরে নগরে, দেশে দেশে হইল। নগরীর সমত অধিবাসী আভন্কিত ও চিন্তিত হইয়া উঠিল।
মহারাজ শতানীকের পটমহিবী, অমুপম রূপবতী পদ্মগন্ধা মৃগাবতীও
এই বৃত্তান্ত অবগত হইয়া উপ্ত ও শক্তিত হইয়া উঠিলেন। তিনি
নগরীতে ঘোষণা করাইলেন যে প্রত্যেক গৃহে যেন নানাপ্রকার আহার্য
প্রন্ত করিয়া গৃহকর্ত্তী তপধীকে ভিক্ষা প্রদান করিতে প্রস্তুত থাকে,
এবং তিনি অয়ং রাজোপযোগী বহু প্রকার চর্ব্য, চোল্ল, লেহ্ন, পের
আহার্য প্রস্তুত করাইয়া তপধীকে স্বহস্তে পারণ করাইতে অপেকা
করিতে লাগিলেন। কিন্তু সমস্তই বৃধা হইল। তপধী কোথাও
আহার্য গ্রহণ না করিয়াই দিনের পর দিন প্রতিনির্ত্ত হইতে লাগিলেন।

অঙ্গদেশের রাজধানী চন্দা মহানগরী অতি প্রাচীন ও সমৃদ্ধিশালী।
এই নগরীর স্থপ্রণন্ত রাজপ্রদম্হ নানা প্রকার নরন-লোভন পণ্যসন্তারে পরিপূর্ণ বিপনীশ্রেণীর দারা স্থানাভিত হইরা দ্র-দ্রান্তর হইতে
ক্রেডাগণকে আকর্ষণ করিতেছে। দেশ বিদেশ হইতে আগত
সার্থবাহগণের কলরবে চতুর্দিক মুখরিত হইরা উঠিতেছে। এগানকার
সাম্ম-বণিক্গণ নানা প্রকার পণ্যস্তরাপূর্ণ বৃহৎ বৃহৎ বাণিজ্যতরী লইরা
গঙ্গা মহানদীর মধ্য দিরা সমুদ্রের অপর পারে স্থিত নানা দেশে বাণিজ্য
করিতে যাতারাত করিতেছে। মহারাজ দ্ধিবাহনের স্থাদনে প্রজাগণ
স্থে ও নিরুদ্ধণে স্থ কার্যে রত থাকিয়া জীবন যাত্রা নির্বাহ
করিতেছে।

হঠাৎ চম্পা নগরীতে ,সংবাদ আসিল যে কৌশাথীর অধিপতি মহারাজ শতানীক অগণিত সৈম্প লইয়া চম্পা আক্রমণ করিতে আসিতেছেন। নগরীর প্রবেশ ঘার রুদ্ধ করা হইল। মহারাজ দধিবাহন যত সৈম্প সংগ্রহ করিতে পারিলেন তাহা লইয়া এই অতর্কিত আক্রমণ প্রতিহত করিতে বহির্গত হইলেন। কিন্তু মুদ্ধে পরাজিত ও নিহত হইলেন। শতানীকের আদেশে চম্পার রাজাত্তংপুর পুতিত হইল। মহারাজী ধারিলী ও রাজক্তা বস্মতীকে কৌশাখীর এক সৈনিক ধরিয়া লইয়া যাইতে উন্ধত হইলে ধারিলী আন্তর্হতা করিয়া অপমান হইতে নিক্তি প্রাপ্ত ইইলেন, কিন্তু সৈনিক বস্মতীকে ধরিয়া কৌশাখীতে আনয়ন করিল।

দৈনিক কৌশাধীর চড়পাধে বহুমতীকে বিক্রম করিলে ধনাবহ শ্রেষ্ঠা তাহাকে ক্রম করিয়া দাদীরূপে গৃহে আনরন করিল। কিন্তু বিশ্মতীর বিনয়-নম ব্যবহার ও রূপ মাধুর্যে মুগ্ধ হইয়া শ্রেষ্ঠা তাহাকে কিন্তারপে পালন করিতে লাগিল ও চন্দনা নামে অভিহিত করিল। চন্দনার রূপ লাবণা ও শ্রেষ্ঠার স্নেহ ক্রমে বৃদ্ধি পাইতে থাকিল। শ্রেষ্ঠার বাঁইহাতে স্বিধার দথা হইয়া চন্দনাকে বিনাশ করিবার সংক্রম করিল।

একলা কোন কার্বোপলকে শ্রেণ্ঠী তিন দিনের জন্ত জন্ত ছানে গমন করিলে শ্রেণ্ডীপত্নী এই স্থোগে চন্দনার মন্তক মৃত্ন ও পদম্ব শৃথ্যাবদ্ধ করিয়া পৃষ্টের সর্বনিমন্তলে প্রপার্থস্থিত একটা অঞ্চলার ছোট ইঠিয়াতে আবদ্ধ করিয়া অন্তং পিঞ্গিত গমন করিল: শ্রেণ্ডী চতুর্থ দিবসে গৃহে আব্দান করিয়া খ্রী ও চন্দনা উজ্ঞাকে দেখিতে না পাইয়া দাসীগণকে জিজ্ঞাসা করিলে খ্রীর পিঞালয়ে গমন সংবাদ জানিতে পারিল, কিন্তু চন্দনার সংবাদ দিতে কোন দাসীর সাহস হইল না। বহু অনুসন্ধান করিতে করিতে এক বৃদ্ধা দাসীর নিকট অবগত হইল বে চন্দনা সর্বনিয়তলের অন্ধকার কুঠরীতে আবন্ধ। শ্রেষ্ঠা চন্দনার ত্রবস্থা দেখিরা অত্যন্ত তঃখিত হইল। তিন দিনের অনাহার-ক্রিষ্টা চন্দনাকে আহার্য দিবার ইচ্ছার অনুসন্ধান করিয়া কেবলমাত্র দাসীগণের জল্প প্রন্তুত মাবকলাই সিদ্ধ প্রাপ্ত হইল এবং তাহাই এক স্পে করিয়া চন্দনাকে আহার করিতে প্রদান করিয়া তাহার শৃথল উন্মোচন করাইতে গৌহকারকে আনিতে গমন করিল।

ভগবান মহাবীর আহার্য ভিকা করিবার জক্ত সেই দিন সেই পথ দিয়াই যাইতেছিলেন। প্ৰপাৰ্শন্থ কুঠরী হইতে চন্দনা ভাহা দেখিতে পাইয়া আনন্দে উৎফুল হইলা উঠিল এবং তাঁহাকে পারণ করাইলা স্বয়ং আহার করিবে মনে করিয়া তাঁহাকে মাধকলাই সিদ্ধ গ্রহণ করিতে অমুনর করিল। মহাবীর তাহাকে দেখিয়া আহার্ব গ্রহণ করিতে হত্ত প্রদারিত করিলেন, কিন্তু পরক্ষণেই আবার হস্ত সংকৃতিত করিয়া প্রত্যাগমন করিতে আরম্ভ করিলেন। তপধী আহার্য গ্রহণ করিলেন না দেখিয়া চন্দনা বিচলিত হইয়া উঠিল। এতদিনের নির্যাতন, অপমান, ष्ट्र: थ, कहे आज जाशात क्रमप्त विमी**र्ग** कतिया वहिर्गत हरेट नागिन। সে চিৎকার করিয়া উঠিল—হে প্রভু, তুমিও কি এই অভাগীর প্রতি বিমুখ। দরবিগলিত ধারায় তাহার গঙকুল বহিরা অঞ্ধারা পতিত হইতে লাগিল। তাহার চিৎকারে আকৃষ্ট হইয়া ভগবান মহাবীর তাহার প্রতি আবার দৃষ্টিপাত করিলেন এবং ধীর পদ-বিক্ষেপে তাহার নিকট উপস্থিত হইয়া তাহার হস্ত হইতে মাবকলাই সিদ্ধ গ্রহণ করিয়া দীর্ঘদিনের উপবাদের পার**ণ করিলেন। (>) আকাশে দেবছুকু**ভি নিনাদিত হইল ও দেবগণ কতু কি রত্ন বর্ষিত হইল।

চকিতে এই সংবাদ চতুর্দিকে ব্যাপ্ত হইয়া পড়িল। মহারাণী মৃগাবতী এই ভাগাবতী দাদীকে দর্শন করিবার জক্ত শ্রেন্ডীর গৃহে আগমন করিলেন ও চন্দনার অকৃত পরিচয় জামিয়া তাহাকে খগুহে লইয়া গেলেন।

এই ঘটনার কিছু পরে ভগবান মহাবীর কেবল-জ্ঞান প্রাপ্ত হইলে চন্দনা ঠাহার নিকট দীকা গ্রহণ করেন ও সাধনী সংঘের অধিনায়িকা পদে অধিষ্ঠিত হন। করেক ৰৎসর শুদ্ধ সংঘম পালন করিয়া সাধনী-শ্রেষ্ঠা মৃক্তি প্রাপ্ত হন।

^{)।} মহাবীর প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন বে—কোন রাজপুত্রী তিন দিনের অনাহারে থাকিয়া শৃথ্যনাবদ্ধ ও রোক্তমান অবস্থায় সূর্পের কোণে রক্ষিত মাবকলাই সিদ্ধ যতদিন পর্যস্ত প্রদান- না করিবে ততদিন তিনি পারণ করিবেন না। চন্দনা প্রথমে কাঁদিতেছিল না বলিয়া তিনি আহার্থ প্রহণে উন্তত হইয়াও প্রত্যাখ্যান করেন কিন্তু পরে তাহাকে ক্রন্দন করিতে দেখিয়া ভিক্ষা প্রহণ করেন। এইরূপ প্রতিজ্ঞাকে জৈন পরিজ্ঞান 'ক্রিজ্ঞাক' ক্রমে

কবি ভারতচন্দ্র রায়-গুণাকরের জন্মস্থান

ঞ্জীগোপালচন্দ্র রায়

শাসন কাজের স্থবিধার জন্ত এক একটা প্রদেশকে বেমন আজকাল জেলা, মহকুমা প্রভৃতি ভাগে বিভক্ত দেখা যার, আগে মুস্নমান রাজতের আমলে এক একটা প্রদেশ বা স্থবাও তেমনি সরকার, পরগণা প্রভৃতি ভাগে বিভক্ত ছিল। তথনকার দিনে আমাদের এই বাঙ্গলা দেশে ভূরিশ্রেটী বা ভূরস্থট নামে একটি সমূদ্দিশালী পরপণা ছিল। ভূরি ভূরি শ্রেটী অর্থাৎ বহু ব্যবসায়ীর এই অঞ্চলে বাস ছিল বলেই নাকি আয়গাটার নাম হয়েছিল ভূরিশ্রেটী। এই ভূরিশ্রেটী বা ভূরস্থট পরগণার অধিকাংশটাই এখন হাওড়া জেলার আমতা ধানার উত্তরাংশের অন্তর্ভুক্ত, বাকি অংশটা আমতা ধানার সংলগ্য হগলী জেলার অন্তর্গত।

ভারতে ইংরেজ রাজত্ আরম্ভ হওরার পূর্বে প্রার চার শ বছর ধ'রে এক ব্রাহ্মণ রাজবংশ এই ভুরস্থটে প্রবল প্রতাপের সহিত রাজত্ব করেছিলেন। মোগল সম্রাট আকররের সময় এই বংশের একজন রাণী —রাণী ভবশন্ধরী উড়িকার পাঠানদের সঙ্গে যুদ্ধ করে রাচ দেশ রক্ষা করেন। এইজন্ত সম্রাট আকবর রাণী ভবশহরীকে "রায় বাহিনী" উপাধিতে ভূবিত করেছিলেন। ভূরহুটের এই এক্সিণ রাজবংশের য়িনি প্রতিষ্ঠাতা তার নাম—চতুরানন। চতুর্দশ শতাব্দীর প্রথমদিকে তিনি এই রাজ বংশের প্রতিষ্ঠা করেন। তার রাজধানী ছিল দামোদর নদের ভীরে ভবানীপুর গ্রামে। রাজা চতুরাননের কোন পুত্র-সম্ভান ছিল না। ভারা নামে মাত্র এক কল্পা ছিল। রাজা চতুরানন ফুলিয়া নিবাদী দদানন্দ মুখোপাধ্যায়ের (কবি কুত্তিবাদের বংশের) সঙ্গে কম্পার বিয়ে দিয়েছিলেন। চতুরাননের মৃত্যুর পর তাঁর কামাতা সদানশের ছই পুত্র জন্মায়। তাদের নাম—কুঞ্চন্দ্র ও শীমন্ত। সদানন্দের মৃত্যুর পর তার রাজ্য ছুই পুত্রের মধ্যে ভাগ হরেছিল। তার ফলে জোঠ কৃষ্ণচন্দ্রের রাজধানী ভবানীপুরেই থাকে, আর কনিষ্ঠ শ্রীমন্ত ভবানীপুরের ৩ মাইল দূরে দামোদরের অপর পারে "পার রাধানগর" বা পেঁড়ো আমে এসে রাজধানী স্থাপন করেন।

বাইরের শক্রদের হাত থেকে রাজধানীকে রক্ষা করবার জক্ত ভবানীপুর ও পেঁড়ো উভর রাজধানীর চারিদিকেই গড় বা থাল কাটা হয়েছিল। ভবানীপুর ও পেঁড়ো গ্রামের সেই গড় অনেকটা মলা অবস্থার আলও বর্তমান রয়েছে। এমন কি রাজা কৃক্চল্লের মৃত্যুর পর তার পুত্র দেবনারারণ রাজা হয়ে ভবানীপুরে যে মণিনাথ মন্দির স্থাপন কয়েছিলেন, সেই মন্দির এবং মন্দিরের উপরিভাগে রাজা দেবনারারণের নাম ও মন্দির নির্মাণের তারিথ ১০০৬ শকান্দ (১০৮৪ খু:) ২১শে প্রাবণ এথনও লেখা রয়েছে। পেঁড়ো গ্রামেও এই রাজাদের ছাপিত কীর্তিকলাপ এথনও কিছু কিছু

ররেছে। ভবানীপুরে রাজাদের স্থাপিত একটি বিরাট মন্দিরও ধ্বংসাবস্থায় আজও দাঁড়িরে রয়েছে। এইসব মন্দিরের পক্ত গাঁথুনি ও নিপুঁত কারুকার্য দেখলে শুভিত হতে হয়। এ ছাড়া ভবানীপুরের রাজধানীর সিংহছার, রাজাদের আমোদ উৎসবের জস্তু যে সব নর্তকীছিল তাদের আন্তানা—"নর্তকীথানা", রাজারা নদীতে ঘেখানে স্নান করতেন সেই "রাজার ঘাট", এঁদের প্রতিন্তিত পুক্র "ফুলপুক্র" ও "জলছরি"—এ সবেরও অন্তিত্ব আজও ভবানীপুর গ্রামে কিছু কিছু রয়েছে। ভবানীপুর ও পেঁড়ো ছাড়া এই রাক্ষণ রাজারা রাজ্যের অন্তান্ত স্থানে যে সব নগর, গ্রাম, ছর্গ, দেবমন্দির প্রভৃতি স্থাপন করেছিলেন, সেগুলো প্রায় সমস্তই কালের স্রোভে নিশ্চিক্ না হয়ে, আজও বর্তমান থেকে তাঁদের কীর্তিকাছিনী ঘোষণা করছে।

ভূরস্টের এই ব্রাহ্মণ রাজাদের সম্বন্ধে এসিয়াটিক সোসাইটির সম্পাদক, বিখ্যাত প্রভূতত্বিদ্ মহামহোপাধ্যার হরপ্রসাদ শাল্লী মশার একস্থানে লিখেছেন—"এই রাজবংশ প্রায় চারিশত বংসর অপ্রতিহত প্রভাবে দক্ষিণ-রাঢ়ে রাজত্ব করিয়াছিলেন এবং অনেক কীর্তিকলাপও রাখিয়া গিয়াছেন। অস্টাদশ শতাকীর মধ্যভাগে এই বংশ ধ্বংদ হইরা যার ও এই বংশের এক্জন বাঙ্গালার প্রধান কবি হইয়া উঠেন। ইনিই আমাদের রায়-শুণাকর ভারতচন্দ্র রায়।"

রাজা শ্রীমন্তের বংশে অর্থাৎ পেঁড়োর রাজবংশে কবি ভারতচন্দ্রের জন্ম হয়েছিল। আমুমানিক ১৭১১ খ্রীপ্তাব্দে ভারতচন্দ্র এই পেঁড়ো আমে জন্মগ্রহণ করেছিলেন। ভারতচন্দ্রের জন্মস্থান এই পেঁড়ো আমে জন্মগ্রহণ করেছিলেন। ভারতচন্দ্রের জন্মস্থান এই পেঁড়ো আজও বর্তমান রয়েছে এবং তার জ্ঞাতি বংশধরেরা রাজ্য ও জনিদারী হারালেও তাদের পূর্ব বংশ-মর্থাদা অনেকাংশে রক্ষা ক'রে আজও এই প্রামে বাস করছেন। শ্রীযুক্ত বিধৃত্বণ রায় বর্তমানে এই বংশের একজন থ্যাতনামা ব্যক্তি। ভ্রম্পটের প্রাক্ষণ রাজাদের একটা শাখা পেঁড়ো গ্রামে আজও বাস করলেও, মূল রাজধানী ভবানীপুরে কিও আজ এঁদের কেউই নেই। অস্ট্রাদশ শতাকীতে রাজা লহমী নারারণের আমলে ভবানীপুরের রাজ্য এঁদের হস্তচ্যুত হ'লে, এঁরা ভবানীপুর ত্যাগ ক'রে পেঁড়োর ঠিক পূর্বদিকে অব্নিত্ত বসন্তপুর গ্রামে চলে আদেন। এই বসন্তপুরে এঁদের বংশংক্রির আজও বাস করছেন।

কলকাতা খেকে মাত্র ২০ মাইল দূরে হাওড়া জেলার আমতা খানার মধ্যে কবি ভারতচক্রের জন্মছান পেঁড়ো প্রামটি অবস্থিত। হাওড়া-আমতা লাইট রেলওরের মূলিরহাট দৌলনে নেমে মাত্র চার মাইল পশ্চিমে গেলেই এই প্রাম। বে কোনও সাহিত্যাসুরাগী, বিশেষ ক'রে বারা ভারতচক্র সম্বাদ কিছু লিখতে বান, তারা ঘণ্টাক্রেক

সময় ও যাতায়াতে সামাত মাত ১৮০ জানা রেলভাড়া থরচ করলেই কবির এই জন্মছানটি দেখে আসতে পারেন।

কিন্ত অভ্যন্ত হংখের বিষয় এই যে, আমাদের দেশের সাহিত্যিকরা এমন কি কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয় ও বঙ্গীর সাহিত্য পরিবদও এই পরিশ্রমটুকু করতে নারান্ধ। অপচ তারা ভারতচন্দ্রের জনাহান সম্বন্ধে বলতে গিরে ভুল সংবাদ দিনের পর দিন পরিবেশন করছেন। এমন কি এঁরাও আবার এক এক জনে এক এক রক্ম কথা বলছেন। কেউ বলছেন—হগলী জেলার পেঁড়ো বসস্তপুর গ্রামে ভারতচন্দ্র জন্মেছিলেন। কেউ বলছেন—বর্ধমান জেলার পেঁড়ো গ্রামে। আবার কেউ বলছেন—"দক্ষিণ রাঢ়ে ভুরসিট পরগণার পেঁড়ো বসস্তপুর গ্রামে। ক্ষাবার কেউ বলছেন—"দক্ষিণ রাঢ়ে ভুরসিট পরগণার পেঁড়ো বসস্তপুর গ্রামে।" নিম্নে এ সবের কিছু কিছু উদ্ধৃত করা গেল। প্রথমে কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের কথাই ধরা যাক্। কেননা শিক্ষাক্ষেত্রে এর প্রভাবই সব চেয়ে বেশী।

কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রাকাশিত প্রবেশিকা পরীক্ষার্থীদের জস্তু বাঙ্গলা পাঠ্যপুত্তকে প্রতি বছরই ভারতচন্দ্রের কবিতা সংকলিত হয়। দেই উদ্ধৃত কবিতার মাধার সংক্ষেপে কবির পরিচর আছে। দেখানে লেখা আছে—"রার শুণাকর ভারতচন্দ্র রার হুগলী জেলার পেঁড়ো বসম্ভপুর গ্রামে ১৭১১ খুটাকে জন্মগ্রহণ করেন।"

পেঁড়ো বদন্তপুর নামে কোনও প্রাম যে হণলী জেলার মধ্যে নাই এবং এই পেঁড়ো বদন্তপুর যে হাওছা জেলার মধ্যে অবস্থিত বিশ্ববিজ্ঞালয়ের কর্তৃপক্ষ তা॰জানেন না। ফলে না জেনে একটা তৃল সংবাদ তারা ছাত্রদের শিধিরে যাছেন। এখানে আর একটা কথা এই যে, পেঁড়ো বদন্তপুর একটা প্রাম নর। পেঁড়োর ঠিক পূর্ব দিকে অবস্থিত বদন্তপুর নামক অক্ত একটি প্রাম পেঁড়োর সঙ্গে যুক্ত করা হরেছে। সাধারণত একই জেলার বা কাছা-কাছি এক নামের একাধিক প্রাম থাকলে, যাতে ব্রুতে কন্ত না হর, সেজক্ত বক্তব্য প্রামটাকে বোঝাতে গিয়ে অনেক সমর সেই প্রামের সঙ্গে আশপাশের আর একটা প্রামের নামও যোগ করা হরে থাকে। পেঁড়ো নামে কোথাও যথন আর প্রাম নেই, তথন বদন্তপুরের উল্লেখ নিম্প্রোজন। বরং পেঁড়োর সঙ্গে বদন্তপুর যোগ করার ছাত্ররা ভাবতে পারে যে "পেঁড়ো বদন্তপুর" একটিই প্রাম।

ডা: দীনেশচন্দ্র সেন মশার তাঁর "বন্ধ-ভাবা ও সাহিত্য" প্রস্থে ভারত-চন্দ্র সম্বন্ধে লিখেছেন—"ভারতচন্দ্র রার-গুণাকর অকুমান ১৭১২ খৃঃ অংশ ভ্রক্ট পরগণান্থ হুগলীর অন্তর্গত পেঁড়ো বসন্তপুর প্রামে জন্মগ্রহণ করেন।"

পরগণা হচ্ছে জেলার অংশ। যেমন জেলার অংশ মহকুমা।
অতএব ভুরস্ট পরগণাত্ব হুগলী বা হুগলী জেলা সঙ্গতিহীন।
এখানে দীনেশবাবুর প্রসঙ্গে ১৯২৯ খ্রীষ্টাব্দে হাওড়া জেলার মাজু
আমে অসুন্তিত বলীর সাহিত্য সন্মিগনের ১৮শ অধিবেশনের কথা
বিশেষভাবে উল্লেখবোগ্য। মাজু সন্মিগনের উজ্জোক্তাদের অক্যতম উদ্দেশ্য
হিল, হাওড়ার শ্রেষ্ঠ কবি ভারতচক্র বারশুণাকরের শ্বৃতি জাগরিত

করা। এই সন্মিলনের মূল সভাপতি বিশ্বকবি রবীশ্রনাশ ঠাকুর অনিবার্য কারণবনত শেষ পর্যস্ত সন্মিলনে যোগদিতে না পারার দীনেশবাবু সভাপতিত্ব করেছিলেন।

মাজুর এই সাহিত্যিক সম্মিলনে অভ্যর্থনা সমিতির সভাপতি ছিলেন মাজুর্মাম নিবাদী ডাঃ হুবোধচন্দ্র মুখোপাধ্যায় এম, এ, দক্তের-এদ্-লেতর (প্যারি) বেদাস্ততীর্থ, শাস্ত্রী। তিনি তার লিখিত অভিভাষণের প্রথমেই বলেছিলেন—"সর্ব প্রথমেই হাওড়া জেলার সৌরবরবি রায়গুণাকর ভারতচন্দ্র রায়ের নাম মনে আসে। এই মগুপের পশ্চিমের বিশাল প্রান্তর দূর দিগন্তে যেখানে অস্পাঠ নারিকেল তালীবনের নীল রেখার মিলাইয়া গিয়াছে এখানে পেড়ে। গ্রামে ভারতচন্দ্র রায়ের পাতা নরেন্দ্রনারায়ণ রায়ের প্রাসাদ ও গড় ছিল। কবির শৈশবকাল এখানেই কাটিয়াছিল।" (বঙ্গীয় সাহিত্য সম্মিলন, ১৮শ অধিবেশন, কার্যাবিবরণী: পু:৩)

সেদিন দীনেশবাবৃও সভার বক্তৃতা দিতে উঠে সর্ব প্রথমেই বলেছিলেন—"মাজু হইতে বঙ্গের কবি-সম্রাট ভারতচন্দ্র রার গুণাকরের জন্মভূমি বেশী দ্রবর্তী নহে। এই স্থানে উপস্থিত হইয়া বতঃই তাঁহার উদ্দেশ্যে মন্তক জ্বনত হইতেছে।" (বঃ সাঃ সঃ ১৮শ অধিবেশন, কার্য্যবিবরণী পৃঃ ২৯)। এই কথার পর আ্বারও প্রায় ৫০টি বাক্যে দীনেশবাবু সেদিন সভায় ভারতচন্দ্রের প্রশন্তি করেছিলেন।

মহামহোপাধ্যার হরপ্রদাদ শান্ত্রী মশার অক্স্থতাবশতঃ সন্মিলমে উপস্থিত হতে না পারায় সন্মিলনের সাফল্যকামনা করে বে পত্র পাঠিয়েছিলেন ভাতে তিনি লিপেছিলেন—"বাঙ্গলার একজন লেখকের স্মৃতি জাগরিত করিবার জন্ম বাজলার স্থদ্র পল্লীগ্রামে আপনারা সন্মিলিত হইয়াছেন। বাজালার যত নামী লেখক আছেন, সকলেই এখানে আসিয়াছেন—আপনাদের আগমন সার্থক হউক।" (বঃ সাঃ সঃ ১৮শ অধিবেশন, কার্যাবিবর্গী, পরিশিষ্ট পুঃ ৫)

প্রাচ্যবিদ্যামহার্থব নগেজনাথ বহু মণারও শারীরিক অথছতাবশত সন্মিলনে যোগ দিতে পারেন নি। তাই তিনি এক পত্রে
জানিরেছিলেন—"রারগুণাকর ভারতচল্রের জন্মভূমির নিকট নিভ্ত
পল্লীগ্রামে আপনারা সন্মিলনের যে আরোজন করিয়াছেন, তাহাতে
বঙ্গভাযামুরাগী সাহিত্যিক মাত্রেরই যোগদান বাস্থনীর।আমার
নিতান্ত ইচ্ছা থাকিলেও এই ১৮শ সন্মিলনে যোগদান করিতে না পারিরা
এই পত্র দারা আমার শুভেচ্ছা, সন্মিলনের সাফল্য ও পল্লীবাসী কর্তৃক
এই সদমুষ্ঠানের জন্ম আমার আন্তরিক কৃতক্ষতা জ্ঞাপন করিতেছি।"
(কার্যাবিবরণী, পরিশিষ্ট পৃ: ৭)

এ ছাড়া মাৰু সন্মিলনের প্রথম দিনের অধিবেশনে নাট্যাচার্য রসরাজ্ব অমৃতলাল বহু, কবিশেধর কালিদাস রায়, কবি প্যারিমোহন সেনগুল্ত, নগেন্দ্রনাথ সোম কবিভূষণ প্রভৃতি তাদের ব ঘ রচিত "ভারতচন্দ্র" সৰ্বনীয় কবিতাও পাঠ করেছিলেন।

অধিবেশনের বিতীয় দিনের সকালে ২৪ জন সাহিত্যিক ও সাহিত্যামুরাগী মাজু বেকে ৬ মাইল দুরে অবস্থিত পেঁড়ো প্রাবে কবির জন্মস্থান দেখতে যান। এঁরা গেলে কবির বংশধররা এঁদের যথাযোগ্য সমাদর করে জলযোগে পরিতৃপ্ত করেন।

সন্মিলনের দিতীয় দিনে বিষয়-নির্বাচনী সমিতির অধিবেশনে ভারতচন্দ্র সম্বন্ধে যে প্রস্তাব গৃহীত হয়েছিল, তাতে বলা হয়েছিল—
"যথাসম্ভব ক্ষিপ্রতার সহিত ভারতচন্দ্র রায় গুণাকরের একথানি পূর্ণান্ধ জীবনী এবং ভাহার সম্পূর্ণ গ্রন্থাবলীর একটি উৎকৃত্ত সংস্করণ প্রকাশের ব্যবহা করা হউক।" এজন্ত ঐদিন সঙ্গে সক্ষে একটি সমিতিও গঠিত হয়েছিল এবং তার সম্পাদক-সংঘে ডাঃ দীনেশচন্দ্র সেন, ডাঃ স্থনীতিকুমার চটোপাধ্যার, ডাঃ রমেশচন্দ্র মন্ত্রুমদার প্রভৃতি থাকেন।

বিষয়-নির্বাচন সমিতির অধিবেশনে ভারতচক্র সম্বন্ধীর এই গৃহীত প্রভাব পঠিত হ'লে সঙ্গে সঙ্গেই অনেকে এই কাজের জক্ত অর্থ সাহায্য করতে প্রতিশ্রুতি দেন। ব্বয়ং দীনেশবাবু সেদিন সভার ১০০০ টাকা দেবেন ব'লে বোষণা করেন। এ ছাড়া দীনেশবাবু সেদিন মাজু সন্মিলনের উভোজালের আরও বলেছিলেন—আপনারা ভারতচল্রের জন্মস্থানে একটি স্থৃতি-মন্দির তৈরী করবার চেষ্টা কর্মন, আমি সেজস্ত আরও ৫০০, টাকা দোব।

অবশু দীনেশবাবু সব সময়েই তার এই প্রতিশ্রুত টাকা দিতে প্রস্তুত ছিলেন। কিন্তু প্রকৃত চেষ্টার অভাবে ভারতচন্দ্রের পূর্ণাঙ্গ জীবনী, তার সম্পূর্ণ গ্রন্থাবদীর উৎকৃষ্ট সংশ্বরণ প্রকাশ ও স্মৃতি-মন্দির কোনটাই হয়ে উঠেনি।

এখন আমাদের বস্তব্য এই যে, দীনেশবাবু সমন্ত জেনে এবং দেখেই এমেছিলেন যে, হাওড়া জেলার আমতা ধানার মধ্যে এই "পেঁড়ো" প্রামটি অবস্থিত। অধন তিনি তখন বিশ্ববিভালয়ের বাঙ্গলা বিভাগের সর্বমন কতা হয়েও প্রবেশিকা বাঙ্গলা পুস্তকের উল্লিখিত ভূল সংশোধন করলেন না। তা ছাড়া মাজু সম্মেণনের পর তাঁর জীবিভাবস্থার প্রকাশিত "বঙ্গভাষা ও সাহিত্যের" পরবর্তী সংস্করণশুলিতেও ঐ ভূল সংশোধন করলেন না। যা ছিল তাই রেথে দিলেন।

দীনেশবাব্র পর আর একজন খ্যাতনামা পণ্ডিত ও লেখকের কথা ধরা যাক। তিনি ডাঃ স্কুমার দেন। স্কুমারবাবু "বাঙ্গলা দাহিত্যের ইতিহাস" নামে যে বইখানি লিখেছেন, তাতে ভারতচক্রের জন্মস্থানের কথা লিখিতে গিয়ে তিনি আর কোন জেলারই উল্লেখ করেন নি। তিনি লিখেছেন—"কবির পৈতৃক নিবাস ছিল দক্ষিণরাছে ভুরশিট প্রগণায় প্রেড়া বসন্তপুর গ্রামে।"

আজকের দিনে জেলার কথা না ব'লে শুধুপরগণার উল্লেখ ছুর্বোধা। বর্তমানে পরগণার প্রচলন না থাকার, কেবল পরগণার কথা বললে কেউই বুঝতে পারবে না যে জারগাটি কোথার। অভএব বাজলার একজন শ্রেষ্ঠ কবির কথা লিখতে গিয়ে তাঁর জন্মস্থান সম্বন্ধে এরাণ উল্লেখ সমীচীন হ্রেছে বলে মনে হয় না।

বঙ্গীর সাহিত্য-পরিষদ থেকে একথানি ভারতচন্দ্র-গ্রন্থাবলী প্রকাশিত হরেছে। এই পুস্তকের ভূমিকার ভারতচন্দ্রের জীবনীতে আবার ক্রিকা প্রকাশ ক্রেকা ক্রিকার জ্ঞানিত জ্ঞানিত আবার মধ্যে। অবশ্র এই ভারতচন্দ্র-গ্রন্থাবদীর সম্পাদকগণ তাঁদের ভূমিকার ভারতচন্দ্রের এই জীবনী উদ্ধৃত করেছেন, সংবাদ-প্রভাকর সম্পাদক কবি ঈশ্বরচন্দ্র শুপ্তের লেখা "কবিবর ৮ভারতচন্দ্র রার গুণাকরের জীবন বুত্তাস্ত" নামক গ্রন্থ থেকে।

কবি ঈশর গুপ্তের লেখা এই বইটি প্রথম পুত্তকাকারে বেরিয়েছিল ১২৬২ বঙ্গান্ধের ১লা আবাঢ় (১৮৫৫ খ্রী:) তারিথে। অর্থাৎ ভারতচন্দ্রের মৃত্যুর প্রায় একশ বছর পরে (মৃত্যু ১৭৫৯ খ্রী:)। সেই সময়েই ভারতচন্দ্র সম্বন্ধে তথ্য সংগ্রহ করতে নাকি ঈশর গুপ্তকে দশটি বছর অক্লান্ত পরিশ্রম করতে হরেছিল। ঈশর গুপ্ত তার "কবিবর ৮ভারতচন্দ্র রায় গুণাকরের জীবন-বৃত্তান্ত" গ্রন্থে লিথেছেন—

"৺নরেন্দ্রনারায়ণ রার মহাশয় জিলা বর্ধমানের অন্তঃপাতি "ভুরক্ষট" পরগণার মধ্যস্থিত "পেঁড়ো" নামক স্থানে বাদ করিতেন !…ইহার বাটার চতুর্দ্ধিকে গড়বন্দি ছিল, এ কারণ সেই স্থান "পেঁড়োর গড়" নামে আখ্যাত হইয়াছিল।

নরেন্দ্রনারায়ণ রায়ের চারি পুত্র, জোষ্ঠ চতুভূ জ রায়, মধ্যম অর্জ্জ্ন রায়, তৃতীয় দয়ারাম রায়, সর্ক কনিষ্ঠ ভারতচন্দ্র রায়। · · · · ·

এমত জনরব যে, অধিকারত্ক ভূমি সংক্রাপ্ত সীমা সম্বন্ধীয় কোন এক বিবাদ হত্তে নরেক্রনারায়ণ রায় বর্জমানাধিপতি মহারায় কীর্ষ্তিক্র রায় বাহাছরের জননী শ্রীমতী মহারাণী বিক্কুমারীকে কটুবাক্য প্রয়োগ করেন·····মহারাণী সেই ছুর্বাক্য শ্রবণে অত্যস্ত কোপায়িতা হইয়া "আলমচক্র" ও "ক্ষেমচক্র" নামক আপনার টুইজন রাজপুত সেনাপতিকে কহিলেন—ভূরস্থট অধিকার করিয়া আমার হত্তে প্রদান কর, ইহা না হইলে আমি কোন মতেই জলগ্রহণ করিব না, প্রাণ পরিত্যাগ করিব।' এই আজ্ঞা শিরোধার্ঘ্য করত উক্ত সেনাপতিত্ব দশ সহত্র সৈম্ভ লইয়া সেই রজনীতেই "ভবানীপুরের গড়" এবং "প্রেড়ার গড়" বল বারা অধিকার করিয়া লইল। ভাগা

এতদট্টনার নরেন্দ্রার এককালেই নিংম্ব হইলেন, সর্ববিষ্ট গেল, কোনরপে কারত্বেশে দিনপাত করিতে লাগিলেন। এই সমর ভারতচন্দ্র পলায়ন করত মন্তল্যটি পরগণার অধীন গান্ধীপুরের সায়ি। "নন্তরাপাড়া" গ্রামে আপনার মাতুলালরে বাস করত ভারপুর গ্রামে সংক্ষিপ্তার এবং অভিধান পাঠ করিতে লাগিলেন। চতুর্দ্ধশ বৎসর বরঃক্রম সমরে এই উভর গ্রন্থে বিলক্ষণ নৈপুণ্য লাভ করিয়া নিজালরে প্রত্যাগত হইয়া ঐ মন্তল্যটি পরগণার ভারপুরের সায়িধ্য সায়দা নামক গ্রামের কেশরকুলি আচার্যাদিগের একটি কল্পাকে বিবাহ করিলেন,…"

ঈশর ঋণ্ডের লেখা থেকে এই উদ্ধৃত অংশে যে সকল গ্রামের নাম আছে—পেঁড়ো, ভবানীপুর, গালীপুর, নওরাপাড়া, তালপুর, সারদা— সব কটি গ্রামই আজও বর্তমান এবং এগুলি সবই হাওড়া জেলার অবস্থিত। এমন কি একই ধানা—আমতা ধানার মধ্যে গ্রামগুলি বর্তমান।

এখন প্রশ্ন হচ্ছে—পেঁড়ো গ্রাম হাওড়া কেলার মধ্যে অবস্থিত হওয়া সজেও এট সং সাহিত্যিকথা বর্ণনার খা তথকী জেলার লাম কর্ছেন দন ? এর প্রধান কারণ হচ্ছে এই বে, ভারতচল্রের জ্বরের সময় এই
াড়ো প্রাম বর্ধমানেরই অন্তর্গত ছিল। তথন হাওড়া নামে কোন জেলা
ল না। পরে পেঁড়ো আবার বর্ধমান থেকে পৃথক হরে হগলী জেলার
ন্তর্গত হয়। তারপার শেবে হাওড়া জেলার মধ্যে আসে। এই প্রসঙ্গে
ধম হাওড়া জেলা কিভাবে গঠিত হয় "Bengal District
azatteers, Howrah" নামক গ্রন্থ থেকে নিয়ে সে সম্বন্ধে কিছু উদ্ধৃত
রা গেল।—

"After the decennial Settlement in 1795, Hooghly, ith the greater part of Howrah, was detached from hirdwan, and created a separate Magisterial charge; ut no change was made in the collectorate. At at time thanas Bagnan and Amta were placed in ne Hooghly jurisdiction, but Howrah city formed a art of Calcutta, its criminal cases being tried by ic Magistrate and Judge of the 24 Parganas, who sed to come over once a week. In 1814 thana ajapur (now Domjur), and in 1819 thanas Kotra now Shyampur) and Uluberia were transferred om the 24 Parganas to Hooghly. On the 1st May 322 the Hooghly and Howrah Collectorate was atirely separated from Burdwan. In the meantime we city of Howrah had been growing steadily, nd its increasing importance led to another change, ne Magisterial Jurisdiction of Howrah being parated from that of Hooghly in 1843, when Mr. Villiam Tayler was appointed Magistrate of Howrah 4th Jurisdiction over Howrah, Salkia, Amta, Rajapur, Huberia, Kotra and Bagnan."

উপরের উদ্ধৃত অংশ থেকে বেশ বোঝা গেল যে, আমতা থানার গাছিত গেঁড়ো প্রাম হাওড়া জেলার অন্তর্গত হওয়ার পূর্বে যথাক্রমে মিন ও হগলীর অন্তর্ভুক্ত ছিল। কিন্তু এথন আমানের কথা হড়েছ যে, হাওড়া পৃথক জেলা হওয়ায় এবং গেঁড়ো হাওড়ার মধ্যে সা সংহও কেন্ট যদি এখনও পেঁড়ো প্রাম বর্ধমান বা হগলীর ইগত বলেন তা হ'লে আজকে তা একেবারে অর্থহীন হবে। চমানের উল্লেখ না করে শুধু পুরাতনের উল্লেখ করায় একটা বা ভূলের সৃষ্টি হবে। পেঁড়ো প্রামকে বর্তমানে হাওড়া জেলায় ব'লে যদি শুধু হগলী বা বর্ধমানের মধ্যে বলা হয়, তা হ'লে মানিংখরা কবির জন্মস্থান খুঁলতে গিয়ে প্রাণাম্ভ করণেও উক্ত জেলার কোবাও এই প্রামের সন্ধান পাবেন না।

ভাচাড়। পূর্বে কি ছিল বর্তমানে তার প্রয়োজনই বা কি ? ^{কলার} প্রায় সমন্ত জেলাই ত নানা সীমাপরিবর্তনের মধ্য দিরে ^{দৈর} আজকেকার রূপগুলো লাভ করেছে। আজ যদি ওধু আগের ^{নির} কথাই ধরা বার তাহলে ত বাজলার অনেক ধ্যাতনামা ব্যক্তিরই জন্মহান নিয়ে একটা জটিলতার সৃষ্টি হবে। এখানে একটা উদাহরণ
দিলেই আশা করি ব্যাপারটা বোঝা সহজ হবে। যেমন—ঈশরচক্র
বিজ্ঞাসাগর ম'শারের জন্মের সমর তার জন্মভূমি বীরসিংহ গ্রাম ছিল
হগলী জেলার মধ্যে। তখন ঘাটাল মহকুমাটাই ছিল হগলীর অন্তর্গত।
ভাই বলে কি আমরা আজও লিখব যে, হগলী জেলার ঘাটাল
মহকুমার অন্তর্গত বীরসিংহ গ্রামে বিভাসাগর ম'শার জন্মেছিলেন।
এরপ লেখার অর্থ ত ভূলের সৃষ্টি করা। কেননা হগলী জেলার আজ
আর বীরসিংহ গ্রাম নেই। ভাই বিভাসাগরের সমর আমরা
সকলেই যেমন লিখি মেদিনীপুরের বীরসিংহ গ্রামে বিভাসাগরে ম'শার
জন্মেছিলেন, তেমনি ভারতচক্রের সময়ও কেখা উচিত—হাওড়া জেলার
পেড়া গ্রামে ভারতচক্র জন্মেছিলেন।

ভারতচন্দ্র যে বাঙ্গলার অক্সতম শ্রেষ্ঠ কবি মহাকালের বিচারে তা নির্ধাবিত হয়ে গেছে। ভারতচন্দ্র তার অসাধারণ কাব্য প্রতিভার গুণে বাঙ্গলা সাহিত্য ক্ষেত্রে আজও তার আসন অটুট রাধতে সক্ষম হয়েছেন। বাঙ্গলা কাব্য সাহিত্যের এক চরম হুর্দিনে তিনি আবিস্তৃতি হয়ে বাঙ্গলা কাব্যকে নানা আবিলতার হাত থেকে রক্ষা করেছিলেন। বঙ্গীর সাহিত্য-পরিষদ হতে প্রকাশিত ভারতচন্দ্র-গ্রন্থাবলীর ভূমিকার এই গ্রন্থাবলীর সম্পাদকগণ তাই লিথেছেন—

"১৬৭৪ শকে (খৃষ্টাব্দ ১৭৫২) ভারতচন্দ্র তাঁহার— "অরদা মঙ্গল" কাব্য রচনা করেন। বাংলা কাব্য-সাহিত্যের তথন অতিশম ছুর্দিন চলিতেছে। মহাজন-পদাবলী ও নানাবিধ মঙ্গল-কাব্যের অতিশন ব্যর্থ অনুকৃতিতে এবং অস্তু নানাবিধ বিকৃতিতে বঙ্গ-ভারতীর তলাকার পাঁক ঘূলাইয়া উঠিয়ছিল। ভারতচন্দ্র সরস বুলি এবং নিখুঁত ছন্দের সাহায্যে এই বিকারের প্রতিকার করিতে চাহিয়াছিলেন। তিনিই সর্বপ্রথম প্রামাতা-দোবছাই সাহিত্যের উপর নাগরিক সন্ভাতার প্রবেপ বুলাইয়াছিলেন। এই কারণে অনেকে তাঁহাকে প্রাতন যুগের শেষ কবি এবং আধুনিক যুগের প্রথম কবি বলিয়া থাকেন।" নিখুঁত এবং বিপুল শন্ধজানের সাহায্যে ভারতচন্দ্র বাংলা কাব্যকে অপূর্ব শিল্পস্থমায় মন্তিত করিতে পারিয়াছিলেন; রূপহীন কাদার তাল পাকাইয়া তিনি মনোহর মূর্তি গড়িয়াছিলেন। অন্যান ভারতচন্দ্র শুর্দ্ করিয়াছিলেন। উপযোগী কাব্য হৃষ্টিও করিয়াছিলেন।"

রবীক্রনাথ ভারতচক্রের কাষ্য সম্বন্ধে বলেছেন—"রাজসভাকবি রারগুণাকরের অম্বদামকল গান, রাজকঠে মণিমালার মভ, বেমন তাহার উচ্ছলতা, তেমনি তাহার কামকার্য।"

বাঙ্গলা সাহিত্যের একেন একজন শ্রেষ্ঠ কবির জন্মস্থানের সঠিক পরিচর আজও না জানা জামাদের জাতীয় জীবনে একটা লজ্জার কথা। জানা করি, কলকাতা বিশ্ববিভালর, বঙ্গীর সাহিত্য-পরিবদ, বাঙ্গলা সাহিত্যের ইতিহাস লেথকরা এবং জন্মান্ত বাঁরা ভারতচন্দ্র সম্বন্ধে কিছু লিণতে চান, তারা এখন থেকে বাঁকলার জন্ততম শ্রেষ্ঠ কবি ভারতচন্দ্র রায় গুণাক্ষের জন্মস্থানের বথাবধ বিবরণ দেবেন।

কলিঙ্গ-কুমারী

শ্রীহেমেন্দ্রপ্রসাদ ঘোষ

কলিক রাজ্যের বৃদ্ধ মন্ত্রী তীর্থ-ভ্রমণে যাইবেন। তাঁহার
যাত্রার সকল আরোজন সম্পূর্ণ হইয়াছে। ওকারনাথ
বর্জমান মহারাজার পিতার সময় হইতে মন্ত্রিঅ করিয়া
আসিতেছেন। তিনি বিশেষ সম্মানিত। তিনি বয়োবৃদ্ধির সঙ্গে তাঁহার সহকারীকে স্থানিক্ত করিতে
প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন। তাঁহার তীর্থ-যাত্রার পূর্বাদিন
মহারাজা স্বয়ং তাঁহার গৃহে আসিয়াছিলেন—কতদিনে তিনি
কিরিবেন, জিজ্ঞাসা করিয়া গিয়াছেন। রাজধানীর বহু
সম্রান্ত ব্যক্তি তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ করিতে আসিয়াছিলেন।

মধ্যাকে তাঁহার গৃহিণী তাঁহাকে বলিলেন, তিনি ধে সহকারীকে উৎকল রাজের বৃদ্ধ-যাত্রার বিষয় জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন, তাহার কারণ কি? মন্ত্রী বলিলেন, "আমি সংবাদ পাইয়াছি, পুরীরাজ কলিঙ্গ আক্রমণ করিবেন।"

"রাজকুমারীর পাণি-প্রার্থনার প্রস্তাব প্রত্যাধ্যান কি ভাহার কারণ ?"

"তাহাই।"

"यूष्कत्र कल कि इटेरव ?"

"কলিকরাজের পরাজয়।"

"সে কথা কি মহারাজাকে বলা হইয়াছে ?"

"আমার যাহা কর্ত্তব্য তাহা আমি করিয়াছি। কিছ মোহাবিষ্ট মহারাজার বিপরীত বৃদ্ধি প্রবল হইয়াছে—আর উপায় নাই।"

"কেন ?"

"সে কথার আভাস তোমাকে দিয়াছি। মহারাণী ক্ষমতাপ্রিয়তাহেডু উপযুক্ত পাত্রে রাজকুমারীকে অর্পণ করিতে চাহেন না। আমার বিখাস, যদি তাঁহার সস্তান থাকিত, তবে তিনি রাজকুমারীকে বিষ প্রয়োগ করিলেও আমি বিশ্বিত হইতাম না। রাজা তাঁহার হারা মোহাবিষ্ট।"

"পুথীরাজকে কন্সাদানে কি তবে সত্য সতাই কলিক রাজবংশের মর্য্যাদাহানি হইত না ?" "ব্রাক্ষণের মুর্যাদা ধর্মাচরণে; রাজার বংশ-মর্যাদা বীর্যা-পরিচয়ে। মহারাণীর যুদ্ধের অন্তল—পুরোহিতপুত্র বলিয়াছেন যে, গঙ্গাবংশীয়দিগের সহিত উৎকলের হুর্যাবংশীয়দিগের বৈবাহিক সম্বন্ধ ঘটিয়াছে, তাঁহারা বঙ্গ হইতে আসিয়াছিলেন এবং বঙ্গের অধিবাসীরা মৎস্তভাজী। কিছু আজ কোন্ আর্যা বলিতে পারেন, বছ শতানীর সন্মিলনফলে তাঁহার দেছে অনার্যা রক্ত প্রবেশ করে নাই ?"

"রাজ্যের আসন্ন বিপদের সময় কি এতদিন মন্ত্রিত্ব করিবার পর রাজ্যত্যাগ সঙ্গত হইবে ?"

"যে রাজ্য গঠনে না হইলেও রক্ষায় দীর্ঘকাল আত্ম-নিয়োগ করিয়াছি, সেই রাজ্যের ও যে রাজপরিবারের সেবা এতদিন করিয়াছি সেই রাজপরিবারের পতন যথন নিবারণ করিতে পারিলাম না, তথন তাহা দেখিবার বেদনা ভোগ করিতে চাহি না ।"

"কতদিনে রাজ্য আক্রান্ত হইবার সম্ভাবনা ?"

"উৎকলবাহিনীর যাত্রার আর বিলম্ব নাই।"

"কলিজবাহিনী কি শক্তিশালী নচে ?

"কলিক্বাহিনী যে একদিন রাজ্যজন্ত্র করিয়াছিল, তাহার কারণ, রাজা হইতে দৈনিক সকলের সমবেত ও সন্মিলিত কার্য্য—রাজ্যের গৌরব রক্ষায় ত্যাগের আগ্রহ। সে ভাব আর নাই। আজ মহারাণীর জন্তু পুরো^{তিত}পুত্রও সেনাপতির কার্য্যে ক্রটির উল্লেখ করিতে সাহস্য করে। সেনাপতির কর্ত্তব্যতৎপরতা কি তাহাতে ক্র্র্ম হয় না?"

"এই অবস্থার প্রতীকার করা কি সম্ভব হয় নাই ?"

"সম্ভব হইলে আমি তাহা করিতাম, এ বিশ্বাস কি— এতদিন স্বামীকে জানিয়াও—তোমার নাই ?"

মন্ত্ৰীর পত্নী স্বামীকে জানিতেন। তিনি স্বার ^{কোন} কথা বলিলেন না।

পরিজনগণকে সঙ্গে লইয়া কলিকরাজমন্ত্রী গেই ^{দিন} তীর্থ যাত্রার রাজধানী ভাগে করিরা গমন করিলেন। উৎকলবাহিনী প্রবল ঝটিকার মত কলিজে প্রবেশ করিল। সে বাহিনী কালিদাসের বর্ণিত রঘুর দিথিজয়-কালীন বাহিনীর মতই অগ্রসর হইল—

প্রথমে প্রতাপ তা'র, শব্দ তা'র পরে—
তা'র পরে ধ্লিজাল ছাইল অম্বরে—
তা'র পরে চতুরক সেনাদল চলে
গার্কিত বিজয় গর্কে দীপ্ত নিজ বলে।

কলিঙ্গসেনা রাজ্যসীমায় সমাবিষ্ট হইয়াছিল—উৎকল-বলকে বাধা দিল। সেই সময় সেনাপতি সংবাদ পাইলেন, রাজা ধন-রত্মহ পরিজনগণকেলইয়া রাত্রির অন্ধকারে মীণাক্ষী-মন্দিরে আশ্রর গ্রহণ জক্ত মাত্রার অভিমুখে বাত্রা করিয়াছেন। সংবাদ সেনাদলে ব্যাপ্ত হইল—ভাহাদিগের উৎসাহ-বহ্নিতে যেন জল নিক্ষিপ্ত হইল। কলিজবাহিনী পরাভ্ত হইয়া পশ্চাতে আসিয়া বাধা দিবার আয়োজন করিল। প্রথম জয়েয় আননন্দে উৎফুল্ল উৎকল-সেনার আক্রমণ ভাহারা সহা করিতে পারিল না—ছত্রভঙ্গ ইইয়া পলায়ন করিল। দীর্ঘপন অভিক্রম করিয়া উৎকলবাহিনী কলিকের রাজ-ধানীর উপকঠে আসিয়া দিবির স্থাপন করিল। তথন দিগস্ত-ভগন মেছের উপরে রক্তপ্রলেপ দিয়া অন্ধকার-রাজ্যে প্রবেশেক্ষ্প। রাজধানী স্থরক্ষিত করিবার ব্যবস্থা আছে মনে করিয়া সেনাপতি সে রাত্রিতে আর রাজধানীতে প্রবেশ-চেট্রা করিলেন না।

রাত্রিকালেই তাঁহার চর সংবাদ আনিল, রাজধানী বিনাযুদ্ধে আজ্মসমর্পণ করিয়াছে—রাজা সপরিবারে পণায়িত—প্রাদাদ শৃত্য। তথাপি সেনাপতি রাজপ্রাদাদে গদনকালে আবশুক সতর্কভাবলম্বনে ক্রটি করিলেন না— তিনি সশস্ত্র অম্বারোহীদলের পুরোভাগে—রাজধানীর জন-শৃত্যপ্রায় পথে অগ্রসর হইলেন—যে সকল অধিবাসী নগর ত্যাগ করে নাই তাহারা সেনাদলের আগমন সময় বার ক্র করিতে লাগিল। তাহারা দরিত্র—দরিত্রের ভয় কেথায়? অম্বারোহীদিগের বর্ণার ফলকে ও উন্মুক্ত তর্বারের ফলকে রবিবর জলিতে লাগিল। সেনাদল যথন প্রাদাদের প্রসিংহ্রারে উপনীত হইল, তথন বার মুক্ত—প্রাদ্ধের প্রসিংহ্রারে উপনীত হইল, তথন বার মুক্ত—প্রাদ্ধিন-মধ্যবর্ত্তী পথ অতিক্রম করিয়া এক অনিন্যা স্কন্মরী ভক্তনী—একজনমাত্র বুজা পরিচারিকাসহ অগ্রসর হইয়া

আসিয়া মুক্ত বাবের সন্মূপে দণ্ডারমান হইলেন। প্রভাত-রবির আলোক যেন তাঁহাকে সৌন্দর্যার্গাত করিল—তাঁহার বস্ত্রের ও অলক্ষারের হীরকে আলোক-স্চির উত্তব ক্রিতে লাগিল।

সেনাপতি অম হইতে অবতরণ করিয়া তরুণীর সমুখীন হইয়া বলিলেন, "আপনি কি কলিকরাজ-লক্ষী? আমি বিষম সমরবিজয়ী পুরীরাজের আদেশে কলিল বিজয়ে আসিয়াছি।"

তক্ষণী নতদৃষ্টি। তিনি বলিলেন, "না। আমি কলিজ-রাজের করা।"

"আপনি কি মহারাজার সহিত পুরত্যাগ করেন নাই ?"

"না। পুরীরাজের কলিদ আক্রমণ আমারই জন্ত।
প্রজার ছ:খ—অর্থকুরে ও সেনাপদে শক্তকেত্রনাশে
ছভিক্ষের সন্তাবনা—ধরণীর রক্তে রঞ্জন—এ সকল হইতে
কলিদ্বরাজ্যকে অব্যাহতি দিবার জন্ত আমি পিতার অঞ্চ উপেক্ষা ও পুরবাসীদিগের অন্তরোধ অগ্রান্থ করিয়া— পিতার সহিত পলায়নের অগোরব-প্রতাব প্রত্যাধ্যান করিয়া বিজয়ীর নিকট বন্দী হইবার জন্ত একাকী প্রাসাদে অপেক্ষা করিতেছি। আমাকে বন্দী করুন।"

সেনাপতি প্রশংসমান দৃষ্টিতে তরুণীর দিকে চাহিয়া
রহিলেন—কয় মুহুর্ত তাঁহার বাক্যক্ষ্তি হইল না। তাহার
পরে তিনি সম্প্রমে বলিলেন, "আপনি কলিকরাজ কক্যা।
আমি আমার প্রভূর আদেশে আপনাকে বন্দী করিতেছি—
ভূত্যের অপরাধ কমা করিবেন।"

পদ্মাবতী তাঁহার হুই কর সেনাপতির দিকে প্রসারিত করিয়া দিলেন।

সেনাপতি সমন্ত্রমে নিবেদন করিলেন, "কলিক-কুমারী, আপনার অক স্পর্শ করি এমন গৃষ্টতা আমাদিগের নাই— আপনাকে বন্ধন করা ত পরের কথা। আপনি প্রাসাদেই অবস্থান করুন। আমি যানবাহন সংগ্রহ করিয়া আপনাকে ও আপনার নির্দ্দেশাহুসারে পরিচারিকাদিগকে সমন্ত্রমে নীলাচলে লইয়া যাইবার ব্যবস্থা করিব। আমাকে প্রাসাদ ও পুররক্ষার সকল ব্যবস্থাও করিয়া যাইতে হইবে। কারণ, প্রাসাদ শৃষ্ক—পুর পরিত্যক্ত।"

"পাপনার শিষ্টাচারের জন্ত পামি কৃতক্ত"—বলির। কলিক কুমারী প্রাসালাভিমুখে গমন করিলেন। সেনাদল মুগ্বভাবে তাঁহাকে লক্ষ্য করিতে লাগিল। দেনাপতি সহকারীকে বলিলেন—পুরীর রাজা পুরুষসিংহ; কলিল-কুমারী সেই সিংহের উপযুক্ত সিংহী।

পুরীর প্রাসাদে রাজসভায় পুরুষোত্তমদেব সিংহাসনে উপবিষ্ট। তিনি অন্তমনস্ক—যেন কিছু প্রতীক্ষা করিতেছেন। কলিকজ্বারে সংবাদমাত্র অগ্রদৃত্তমুখে আসিয়াছে—সেনাপতি তথনও প্রত্যাবর্ত্তন করেন নাই। সভার কাষ শেষ-হইল—সন্তাভক্বের পূর্বেন ব্রক্তীরা গান করিতেছিল—

"ললিতলবঙ্গলতাপরিশীলনকোমলমলয়দমীরে মধুকরনিকর করম্বিতকোকিলকৃদ্ধিতকুঞ্জকুটীরে

বিরহতি হরিরিছ সরস বসস্তে॥" সহসাদুরে মহারাজার জয়ধ্বনি ধ্বনিত হইল এবং সেনা-দলের বাতধ্বনি শ্রুত হইল।

গান বন্ধ হইল। সকলেই থারের দিকে দৃষ্টি নিবদ্ধ করিলেন। মন্ত্রী স্থান ত্যাগ করিয়া সভাগৃহ ত্যাগ করিয়া ষে দিক হইতে সেনাদল আসিতেছিল, সেই দিকে অগ্রসর হইলেন।

সেনাপতি সভার আসিয়া রাজার জয়োচ্চারণ করিলেন।
রাজা ব্যস্ত হইয়া সংবাদ জিজ্ঞাসা করিলে, সেনাপতি
বলিলেন, কলিকবিজয় সম্পূর্ণ হইয়াছে—কলিকরাজ রাজ্য
ত্যাগ করিয়া পলায়ন করিয়াছেন; রাজার নির্দ্দেশাহসারে
তিনি পরাভত ও পলায়িত শক্তর অহসরণ করেন নাই।

রাজা জিজ্ঞাসা করিলেন, কলিক-কুমারী?
সেনাপতি নিবেদন করিলেন, "তিনি একাকিনী প্রাসাদে আমাদিগের আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিলেন।"

রাজা সবিশ্বয়ে জিজ্ঞাসা করিলেন, "কেন]"

তিনি বলিলেন, এ বৃদ্ধ তাঁহারই জন্ম—শস্ত-নাশ, রক্ত-পাত, প্রজার ক্রন্সন এ সকল হইতে রাজ্যকে নিষ্কৃতিদান -জন্ম তিনি বন্দী হইতে অপেকা করিতেছিলেন।

সভার প্রশংসাগুঞ্জন শুত হইল। রাজা যেন আত্ম-বিশ্বত হইরা বলিলেন, "আশ্চর্যা নারী।"—তাহার পরেই তিনি জিজ্ঞাদা করিলেন, "কলিজ্-কুমারী কোথায়?"

সেনাপতি বলিলেন, "তাঁহাকে সসন্মানে আনা হইয়াছে। মন্ত্রী মহাশয় তাঁহাকে শিবিকা হইতে নামাইয়া মন্ত্রণাককে অপেকা করিতেছেন।" এই সময় মন্ত্রণাকক্ষের হারাবরণ সরাইয়া মন্ত্রী সভাগৃহে প্রবেশ করিলেন—পশ্চাতে কলিল-কুমারী দৃঢ়পদে আসিলেন — দৃষ্টি নত। তিনি রাজাকে যুক্তকরে প্রণাম করিলেই মন্ত্রী বলিলেন, "রাজন, কলিল-কুমারী মানসিক উদ্বেগে ও দীর্ঘপথাতিবাহনে প্রাস্ত্র, অসুমৃতি হইলে আমি তাঁহাকে আমার গৃহে পাঠাইয়া দিতে চাহি।"

রাজার দৃষ্টি তরুণীর মুখে নিবদ্ধ হইল। তিনি অক্সমনস্থ-ভাবে বলিলেন, "তথাস্ত।"

কলিখ-কুমারী নত দৃষ্টি তুলিয়া রাজার দিকে চাহিলেন
— চারি চকুর দৃষ্টি মিলিত হইল। মন্ত্রী তাহা লক্ষ্য করিলেন,
নীলকাস্তকে নির্দেশ দিলেন, যান প্রস্তুত আছে, কলিখকুমারীকে তাঁহার গৃহে লইয়া যাওয়া হউক; তিনি সভাভঙ্গ
হইলে যাইবেন। মহারাজা পরে যেরূপ নির্দেশ দিবেন,
তদম্পারে কায় হইবে। পদ্মাবতী সভাগৃহ ত্যাগ করিলেন।

রাজা বলিলেন, "মন্ত্রী, কলিঙ্গ-কুমারীর সম্বন্ধে নির্দেশ ত আমি যুদ্ধ-বোষণার সঙ্গে সঙ্গেই দিয়াছি; তদমুসারেই কায় হইবে—চণ্ডালে অর্পণ—"

রাজার উক্তি শেষ না হইতেই মন্ত্রী বলিলেন, "মহারাজ, যে শতদল দেবচরণে বা রাজকরে শোভা পায়, তাহাকে চণ্ডালের করে অর্পণ করা কি অভিপ্রেত? রাজ্যের— উৎকল ও কলিঙ্গ ছই রাজ্যের প্রজারা কি এই ব্যবহারে ব্যথিত হইবে না?"

"কিন্তু জ্বগবন্ধুর রত্মবেদী স্পর্শ করিয়া যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছি, তাহা ভঙ্গ করা যে মহাপাপ।"

রাজা দীর্ঘাস ত্যাগ করিলেন।
মন্ত্রী আর কিছু বলিলেন না।
সভা ভঙ্গ হইল।

পুরীর রাজ-মন্ত্রীর গৃহে একটি ককে মন্ত্রীর কলা বিমলা ও কলিক-কুমারী পদ্মাবতী উপবিষ্টা ছিলেন। উভয়ে প্রার্থ সমবয়নী—উভয়ে কয় মাসে সধীর ভাব ঘনিষ্ঠ হইয়াছিল। বিশেষ মন্ত্রী কলিক-কুমারীকে কলার মতই স্নেংলানে পালন করিতেছিলেন এবং সে পরিবারে—কেবল সে পরিবারে কেন, সকলেই —তাঁহার জন্ত তুঃখিত ছিলেন।

বিমলা সেতার লইয়া গান করিতেছিলেন—

"প্রিতক্ষলাকুচমগুল গুতুকুগুল क्रिक्निकित्रमान। अय अय (प्रव हत्य। দিনমণিমগুমগুল ভবখগুন मूर्विकनमानम्बरम । क्य क्य (एव ब्रुव) কালীয়বিষধরগঞ্জন জনরঞ্জন यक्कननिन-मिरन्य। अञ्च अञ्च (मर इर्ज ॥ মধুমুরনরকবিনাশন গরুড়াসন ञ्च तकून तक निमान। अध अध प्रत श्रत ॥ অমলক মলদললোচন ভবমোচন ত্রিভুবনভবননিধান। ব্রুয় জয় দেব হরে॥ জনকস্থতাকতভূষণ জিতহ্যণ ममत्रमिक म्यक्षे। अत्र अत्र (प्र श्रत्। অভিনবজলধরস্থলর ধৃতমন্দর প্রীমুখচন্দ্রচকোর। জয় জয় দেব হরে॥ তব চরণে প্রণতা বয়মিতি ভাবয় क्वक्नाः श्रेन (७४। अप्र अप्र (५व श्र ॥

কুৰকুশলং প্রণতেষ্। জয় জয় দেব হরে॥
সেতার রাখিয়া বিমলা উদ্দেশে হরিকে প্রণাম করিলেন।
পদাবতীও দেবতার উদ্দেশে প্রণাম করিলেন।

বিমলা পদ্মাবতীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "ভগিনী, একটি কথা জানিবার জন্ম আমার কৌত্হলের অন্ত নাই, কিন্তু পাছে তাহা জানাইতে তোমার কোন আপত্তি থাকে বা প্রকাশ করিতে তুমি ব্যথা পাও, সেই জন্ম জিজ্ঞাসা করিতে সাহস করি না। জিজ্ঞাসা করিব কি?"

পদাবতী বলিলেন, "ভগিনী, তুমি জানিতে পার না, এমন কোন গোপন কথা এই অভাগিনার কি থাকিতে পারে? তোমাদিগের লেহের কথা কি আমি কথন ভ্লিতে পারি? যে দিন আমি বন্দিনী অবস্থায় এই নগরে নীত হই, সেই দিন হইতে তোমার পিতা আমাকে কন্তার মত বেহেই রক্ষা করিয়া আসিতেছেন। তোমার মাতা—আমি যে মাত্রেহে বাল্যকালাবধি বঞ্চিত আমাকে তাহাই দিয়া ধক্ত করিয়াছেন। আর তুমি—আমি কি জানি না, ত্মি কেবল আমারই জক্ত এই কয়মান কাল পতিগৃহ হইতে আসিয়া পিতৃ-গৃহেই রহিয়াছ ? তুমি কি জিজ্ঞাদা করিবে?"

"আমার কেবলই জানিতে কৌত্হল হয়, কেন তুমি গিতার সহিত কলিজ হইতে প্লায়ন কর নাই ?"

"बामात बीवरनत कथा वांश कान, छाशएकरे वृश्वित्रोह,

বিমাতার শাসিত সংসারে আমার স্থুপ ছিল না—মনের শান্তি-নাশেরও সন্তাবনা ঘটিয়াছিল; কারণ, তিনি কর্তৃত্ব রক্ষার জন্ম আমার ক্ষতি করিতে কেবল প্রস্তুত্তই ছিলেন না
—উন্তত্তও হইয়াছিলেন। আর"—একটু ইতন্তত: করিয়া
তিনি বলিলেন, "আর আমি পুরীরাজের প্রতিজ্ঞার বিবন্ধ অবগত ছিলাম না।"

পদ্মাবতীর চক্ষু হইতে অশ্রু— কমলদলের উপরস্থিত জলবিন্দু যেমন বাতাদে কমল আন্দোলিত হইলে পতিত হয়—
তেমনই পতিত হইল।

বিমলা সমেহে নিজ অঞ্চলে পদাবতীর অশু মুছাইয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, "ভূমি কি পুরীরাজকে পুর্বে দেখিয়াছিলে?"

পদ্মাৰতা নতদৃষ্টি ইইয়া বলিলেন, "ই।।" "কোথায় ?"

"গত বংসর আমি বিমাতার সহিত গোপনে রথবাতার সময় পুরীতে আদিয়াছিলাম—তখন।"

"তবে কি তুমি তাঁহাকে—"

তাঁহার কথা শেষ হইতে না দিয়া পদ্মাবতী তাঁহার হত্ত ধারণ করিয়া কাতরভাবে বলিলেন, "বসস্তের বাতাদে ষেমন লতার ফুল আত্মপ্রকাশ করে—তোমার সেহসিক্ত জিজ্ঞাসায় তেমনই যে গোপনভাব প্রকাশ পাইয়াছে—তাহার বিষয় জার জিজ্ঞাসা করিও না—হায় নারী জন্ম!"

विमना विनातन, "वावा हेश कानितन निक्षहें-"

বাধা দিরা পদাবতী বলিলেন, "একান্ত অন্থরোধ, কাহাকেও ইহা জানাইও না। অপমানের উপর লক্ষা— কতে কারক্ষেপ। আমরা হিন্দু নারী, বাহারা মৃত্যুকে বরণ করিতে ভয় করে না—শেচ্ছায় অনলে আআহতি দেয়।"

7

রথধাঝা। মন্দির হইতে আসিয়া জগরাধ, বলরাম ও স্ভুদা রথে আরোহণ করিয়া সর্বসাধারণকে দর্শন দিবেন; সকলে জগরাথের রথের রজ্জু আকর্ষণ করিবার সৌজাগ্যলাভ করিবে। রবে জগরাথকে দর্শন করিলে আর জন্ম-গ্রহণ করিতে হয় না—এই বিখাসে সমগ্র হিন্দুহানের সকল দেশ হইতে নর-নারী এই সময় শ্রীক্ষেত্রে সমবেভ হইরা থাকেন। সমগ্র নগর জনপূর্ব।

बर्थगांकांत्र मिन প্রভাতে বিমলা পদ্মাবতীকে বলিলেন-

তাঁহার পিতা-মাতার সহিত তিনিও রথে জগন্নাথকে দর্শন করিতে যাইবেন—পদ্মাবতীকেও যাইতে হইবে। প্রস্থাব তানিয়া পদ্মাবতী বিশ্বিত হইলেন; বলিলেন, তিনি রণজিতা —বন্দী; তাঁহার মুখ দেবতাকে বা মানবকে দেখাইতেও লজ্জা। কিন্তু বিমলা যখন বলিলেন, তাঁহার পিতার বিশেষ অহুরোধ—পদ্মাবতী তাঁহার সহিত গমন করেন, তথন পদ্মাবতী বলিলেন—মন্ত্রীর অহুরোধ তাঁহার পক্ষে ক্রার নিকট পিতার আদেশ—তাঁহার যত কট্টই কেন হউক না, তিনি দে আদেশ পালন করিবেন।

ষ্পা সময়ে মন্দির হইতে ছড়িদার আসিয়া সংবাদ দিলে মন্ত্রীর পত্নী বিমলাকে, পদাবতীকে ও আত্মীয়া প্রভৃতিকে লইয়া রথযাত্রার পথিপার্মস্থ নিন্দিষ্ট স্থানে গমন করিলেন। মন্ত্রী প্রথামুসারে পূর্কেই রথযাত্রার ব্যবস্থার জন্ম নিন্দরে গমন করিয়াছিলেন।

দেববিগ্রহগুলি তথন রথব্বয়ে স্থাপিত হইয়াছে—রথ যাত্রার জন্ত প্রস্ত । রথের রজ্জুতে ছুইটি স্থদজ্জিত হন্তী বন্ধ হইয়াছে—ভক্তদল রজ্জু আকর্ষণ করিবার জন্ত আগ্রহ প্রকাশ করিতেছেন। তুর্যাধ্বনি, হইলে হন্তা অশ্ব পদাতিকসহ শোভাষাত্রা করিয়া পুরীর রাজা আসিবেন —দেবতার নিকট মানব, দেববলের নিকট বাহুবল তুচ্ছ ইহাই দেখাইবার জন্ত প্রথা—পুরীর রাজা ম্ল্যবান সম্মার্জনী লইয়া রথের মার্জন করিবেন। তাহার পরে রথ্যাত্রা আরম্ভ হইবে।

তিনবার তুর্যাধ্বনি হইল। শোভাষাত্রা আদিল। রাজা স্থদজ্জিত হন্তী হইতে অনায়াদে অবতরণ করিলেন। ভূত্য সম্মার্জ্জনী আনিয়া দিল। রাজা তাহা গ্রহণ করিয়া রথের গমন-পথ মার্জ্জন করিতে প্রবৃত্ত হইলেন।

মন্ত্রী অস্ত গতিতে তাঁহার পরিজনগণের জন্ত নির্দিষ্ট স্থানে আসিয়া কলিজ-কুমারীর দক্ষিণ হস্ত ধারণ করিয়া— তাঁহাকে লইয়া পথের উপর উপস্থিত হইয়া রাজাকে বলিলেন, "রাজনির্দ্দেশে আমি আপনাকে এই কক্সা প্রদান করিতেছি।" জনতা হইতে উখিত হর্ষ-কোলাহল গগন প্রন পূর্ণ করিল।

রাজা বলিলেন, "মন্ত্রি, কাহাকে কি বলিতেছেন ?"

মন্ত্রী কন্থকণ্ঠ বলিলেন, "আমার প্রভূ বিষমসমরবিজয়ী পুরীরাজ—স্থ্যবংশদীপ পুরুষোজ্মদেব জগবন্ধুর
রম্প্রবেদী স্পর্শ করিয়া প্রতিজ্ঞাবদ্ধ ইইয়াছিলেন—কলিজরাজের অসঙ্গত ও উদ্ধৃত ব্যবহারের প্রতিশোধে তিনি
কলিঙ্গ বিজয় ও কলিঙ্গ-রাজকন্তাকে চণ্ডালে অর্পন
করিবেন। সেই প্রতিজ্ঞার একার্দ্ধ পূর্ণ ইইয়াছে—
কলিঙ্গ-বিজয় ইইয়াছে; দিতীয়ার্দ্ধ পূর্ণ করিবার ভার
প্রভূ আমাকে দিয়াছিলেন—আজ আমি ভাগা পূর্ণ করিয়া
রাজাদেশ পালন করিতেছি। আমার প্রভূর আদেশ ছিল
—কলিঙ্গ-কুমারীকে চণ্ডালে অর্পন করিত্তে ইইবে। আজ
আপনি চণ্ডাল—বাহার রম্পবেদা স্পর্শ করিয়া রাজা প্রতিজ্ঞা
করিয়াছিলেন, তাঁগারই সন্মুথে আমি আপনাকে এই কলা
সমর্পন করিতেছি—রাজাদেশ আপনাকে পালন করিতেই
ইইবে।"

রাজাকে নির্কাক দেখিয়া মন্ত্রী বলিলেন, "রাজন, আমি এই রাজবংশে মন্ত্রিত্ব করিয়া মানব-চরিত্র-জ্ঞান অর্জন করিয়াছি। আমি আপনার যেমন কলিঙ্গ-কুমারীরও তেমনই মনোভাব নথদর্পণে দেখিতেছি। যে প্রতিজ্ঞা আপনাদিগের মিলনে বাধা ছিল, তাহা আজ দ্র হইয়াছে। কলিঙ্গ-কুমারী আপনার উপযুক্ত পত্নী—আপনি ইংগর উপযুক্ত পতি।"

মন্ত্রী রাঙ্গার হস্ত লইয়া তাহার উপর পদ্মাবতীর হস্ত অর্পণ করিলেন। জ্বনতা ১র্ধধননি করিয়া উঠিল।

মন্ত্রী বলিলেন, "রাজন্ ও রাজ্ঞী, জনতার—প্রজার এই হর্ষধ্বনি আজ শুভদিনে আপনাদিগের মিলনের মঙ্গলশন্ধ-নিনাদ—আপনাদিগের সৌভাগ্য ঘোষণা করিতেছে।"

তিনি যুক্তকরে রথারাড় জগন্নাথকে প্রণাম করিলেন। সহস্র সংস্র কঠে উচ্চারিত হইল—"জয় জগন্নাথ! জয় জগন্নাথ! জয় জগন্নাথ!"



সাহিত্যে রূপক ও প্রতীক

অধ্যাপক শ্রীঅমূল্যধন মুখোপাধ্যায় এম-এ, পি-আর-এদ

(পূর্বপ্রকাশিতের পর)

Blakeর কাব্যের আলোচনা প্রসঙ্গে প্রতীকের প্রকার-ভেদ সম্বন্ধে কিছ বলা দরকার। প্রতীকের সংজ্ঞা আগেই দেওয়া হয়েছে: যে প্রত্যক্ষ বস্তু অপ্রত্যক্ষের সঙ্গে বিজ্ঞিত, ভারই সঙ্গে ঘনিষ্ঠ সংস্পর্ণের জন্ম ভারই অংশ কিংবা মুর্ব প্রকাশ বা প্রতিনিধি বলে উপলব্ধ হয়, তাকেই বলা যায় প্রতীক। প্রতীক নির্দেশ্য পদার্থের একটা সাক্ষাৎ প্রতীতি এনে দেয়, দেই পদার্থের স্থানে প্রতীককে বদালেই কাজ চলে যায়। প্রতীক, রবীন্দ্রনাপের ভাষায় বলতে গেলে, "এক দিকে ঘরের, আর একদিকে অন্তরের: তাহাকে একদিকে স্পর্শ করিতেছি, দে আর একদিকে সমস্ত আয়তের অতীত।" প্রতীকের এই সাধারণ লক্ষণ হ'লেও প্রতীক নানা প্রকারের হ'তে পারে। কতকগুলো দাধারণ বস্তুকে, গেমন ধূপ, দীপ, माना, नान, मनुक প্রভৃতি রঙকে অনেক সময় প্রতীক হিসেবে ব্যবহার করা হয়। এই সব বস্তুর সঙ্গে যে ভাবধারা জড়িত আছে, তা সর্বলোক-বিদিত। কিন্তু অনেক সময় এই সব প্রতীকে কুলিয়ে ওঠেনা। ইচ্ছামত বিশেষ বিশেষ বস্তুকে বিশেষ বিশেষ ভাবের প্রতীক ভাবে ধরে নেওয়া হয়। প্রত্যেক ধর্মে তাই করা হয়েছে। খুটান ধর্মে কতক-ন্তলি এতীক গ্রহণ করা হয়েছে। সেই ধর্মের অন্তর্ভুক্ত বিশেষ বিশেষ সম্প্রদায়ের বিভিন্ন লেগক-গোম্ঠীর আবার বিশিষ্ট প্রতীক আছে। এই জপ্তে প্রতীক রচনার মর্ম্ম উপযুক্ত টীকা টিগ্রনীর সাহাযা ছাড়া অনেক সময় বোঝা যায় না। Blake এর কাব্য এ জন্মে অনেক সময়েই হত্মবেশ্য। এ ছাড়া আবার লেখক কখনও কখনও নিজের রুচিমত প্রতীকের শৃষ্টি করেন। তথন পাঠকের পক্ষে রচনা একেবারেই হর্কোধা হয়ে উঠতে পারে, যদি না দেই প্রতীক রচনার পরিভাষা তাঁর जाना बादक।

উনবিংশ শতাকার শেষের দিকে করাসী দেশে একদল লেখক (symbolists) এই রকম ভাবে নব-কল্লিত প্রতীকের সাহায্যে কাষ্য-লেগার চেষ্টা করেন। প্রাচীন প্রতীক তাঁরা গ্রহণ কর্প্তে পায়েন নি, কারণ তাঁলের মনে প্রাচীনদের বিষাস, সংস্কার বা অনুভূতি কিছুই ছিল না। অখচ প্রতীকের আবস্থাকতা তাঁরা বোধ করেছিলেন। শিল্পে শুভাববাদের বাস্তবতা ও ফুল্পস্টতার বিপক্ষে এঁরা বিদ্যোহ করেন। বাস্তবের ছবি আঁকা, ভাবের উচ্ছাস, কল্পনার বিলাস তাঁদের লক্ষ্য ছিলনা। এঁরা চেলেছিলেন মনের ফুল্ম গৃঢ় অনুভূতি ও প্রেরণাকে প্রকাশ করে। পার্থিব ব্যবহারের ভাষা দিয়ে এই ফুল্ম উপলব্ধির প্রকাশ করা বায় না। তাঁরা অলকারের ক্রেমিতার জ্ঞে তাও বর্জন করেছিলেন। স্থতরাং ইলিতই তাঁদের ভাষ প্রকাশের একমাত্র উপার দেখে মুক্তর প্রতীকের স্থিট করেন; বিশিষ্ট অর্থে বিশেষ বিশেষ বস্তু,

শব্দ ও ধানি প্রয়োগ কর্তে আরম্ভ করেন। কিন্তু তার ফলে তাঁদের রচনা দব সময়ে সকল-সহাদর-হানরসংবাদী হয়েছিল কিনা, অর্থাৎ কাব্যের মৃথ্য উদ্দেশ্য পূর্ণ কর্তে পেরেছিল কিনা, দেটা সন্দেহের বিষর। তবে অবশ্য গুলী লেখক তার নিজম্ব প্রতীকের তাৎপথ্য সহাদর পাঠকের কাছে ফুটিয়ে তুল্তে পারেন। তাঁদের প্রভাব অক্য দেশেও ছড়িয়ে পড়েছে। Yeatsর কাব্যে প্রতীকের একটা বিশিষ্ট স্থান আছে। সে দব প্রতীক প্রাচীন Irelandর কাহিনী ও সংস্কারের সহিত জড়িত। সাম্প্রতিক উংরেজি কাব্যের অক্যতম নায়ক T. S. Eliotর The Hollow Men, The Waste Land প্রভৃতি কবিতাতে নিজম্ব, অভিনব প্রতীকের প্রচূর প্রয়োগ দেখা যায়। তাঁর প্রতীক আধুনিক স্থিশিক্ষত্ত মনের সংখ্যারের সহিত বিজড়িত এবং আমাদের সাহিত্যিক প্রতিহ্যের উপর প্রতিশ্রিত।

প্রাচ্য সাহিত্যে প্রতীকের ব্যবহার বছল প্রচলিত। পারস্তদেশে রুমী, হাফির, ওমর থৈয়াম প্রস্তৃতির কাব্যে প্রতীকের প্রচূর প্রয়োগ দেখা যায়। স্তাক্ষা, স্থরা, বাগিচা, গোলাপ, সাকী, বুলবুল, সরাই, পেরালা, অবস্তৃতির প্রভূতি প্রতীক বিশিষ্ট গৃচ্ অর্থে তাঁদের কাব্যে ব্যবহৃত হ'য়েছে। ওম্য গৈয়ামের আধুনিকাকৃত অমুবাদেও এই প্রতীক পদ্ধার কিছ কিছ পরিচয় পাওয়া যায়।

I tell Thee this—when starting from the Goal, Over the shoulders of the flaming Foal Of Heaven Parwin and Mushtore they flung, In my predestin'd plot of Dust and Soul.

এ কথা স্বীকার কর্ত্তেই হ'বে যে সংস্কৃত সাহিত্যে উপমা, রূপক ইত্যাদির ছড়াছড়ি থাক্লেও তাতে প্রতীকের ব্যবহার খুব কম। স্পষ্টবাদী রাসিক্যাল মন কোন দেশেই প্রতীকের প্রতি অনুকূল নয়। কিন্তু মধাগুগে ভারতবর্ধে যে সমস্ত গুহু অধ্যাত্মজ্ঞানের চর্চা চলেছিল, তারই আমুম্বিক রূপে, ধর্মে, কর্ম্মে ও জীবনের নানা ক্ষেত্রে প্রতীকের ব্যবহার খুবই চলেছিল এবং সঙ্গে প্রকটা প্রতীক সাহিত্যও গড়ে উঠেছিল। বাঙ্লা সাহিত্যের প্রাচীনতম প্রস্থ চর্য্যাপদের অনেকগুলি পদ যে প্রতীক কাব্য দে বিষয়ে সম্প্রহ নাই।

ছলি ছহি পিটা ধরণ ন জাই। রূপের তেন্তলি কুন্তীরে থাই। আঙ্গন ঘরপণ স্থন ভো বিমাতী, কানেট চোরে নিল অধরাতী। স্থ্যা নিদ গেল বহুড়ী জাগৰ। কানেট চোৱে নিল কা গই মাগৰ।

এই জাতীর পদকে রূপক বলা চলে না, এ সব প্রতীক কাব্য।

চর্বাপদের পরে বাঙ্লায় সহজিয়া প্রভৃতি নানা গুফ ধর্মাচারের (cult) **আম্বঙ্গিক ভাবে অনেক প্রতীক** কবিতা রচিত হ'য়েছিল। বাউল, ভাটিয়ালী গান, কর্ত্তাভজা-সম্প্রদায়ের গান ও এবংবিধ অস্থাস্থ কাৰ্যে প্ৰতীকের ব্যবহার ছিল। কিন্তু বৈক্ষবকাৰ্যে প্ৰতীকের ব্যবহার কম। বৈষ্ণবকাব্যে ভাবসম্পদ্ প্রচুর, অমুভূতি প্রগাঢ়। কিন্তু সে কাব্য "দেবতারে থির করি, থিয়েরে দেবতা" করে, আমাদের কূটীর আঙ্গাকেই বৈকুণ্ঠ করে ভোলে। বৈষ্ণব কবিভা মানবিকভায় পরিপূর্ণ, স্তরাং ভা'তে যে প্রতীকের আবশ্রকতা কম শুধু তাই নয়, প্রতীক অনেক পরিমাণে বৈষ্ণব কাব্যের উদ্দিষ্ট রনের বিরোধী। বিস্থাপতি, চণ্ডীদাস, জ্ঞানদাস, গোবিন্দদাস প্রভৃতি শ্রেষ্ঠ বৈষ্ণব কবিদের বিখ্যাত পদগুলিতে—মানবিক উপাদান ও স্বাভাবিক পদ্ধতি-ই আমরা দেখতে পাই। বোধ করি এই জন্মই ঐ পদগুলি এত মনোহর ও তার व्यादिष्म এত উषात्र। তবে এমন স্ব বৈষ্ণবপদ-ও আছে, যা'তে প্রতীকের ব্যবহার আছে, যেখানে এক একটি কথা স্থুদুরপ্রসারী চিস্তা ও ভাবের অতিভূ এবং দেই সৰ কথা দিয়েই একটা লোকত্র্লভ রসলোকের ষ্টে করা হ'রেছে। রাধাকুফের মিলন, ঝুলন ইত্যাদি এই সব পদের বিষয় এবং মানবহুর্লভ উপলব্ধি ভাহার প্রতিপান্ত।

এই প্রদক্ষে কাব্যে প্রতীকের ব্যবহার সম্বন্ধে তু'একটি কথা বলা দরকার। কাব্য সকল-সহাদয়-হাদয়-সংবাদী না হ'লে কাব্য-রচনাই ব্যর্থ হ'রে যায়। স্বত্তরাং সহাদয়কে যে মাধ্যমে আবেদন করা যায়, সেই রকম মাধ্যমই কাব্যের পক্ষে প্রশন্ত। স্বত্তরাং প্রতীক যদি একেবারে সাদ্যাভাষার অর্থাৎ সাম্প্রদায়িক বা ব্যক্তিগত পরিভাষার বিষয় হ'য়ে দাঁড়ায়, তবে কাব্যরস স্পষ্টির পক্ষে তা' বিশ্ব-ম্বন্ধপ হ'তে পারে। Poetry should be simple, sensuous and passionate' (Milton) এ কর্থার সত্যতা সম্বন্ধে সন্দেহ নেই।

ভন্ন কৰিত্য়া কিং বা
ভন্না বনিত্য়া বা কিং।
পদ-বিষ্ণাস-মাত্রেণ
যয়া নাপজ্ডং মনঃ।

এ কথাও সত্য। তবে এ কথাও বল্তে হবে যে সক্ষদয়ের কাগুজান, তার রচনার বিক্ষিপ্ত ভাবেই বেশীর ভা ভাবাজ্ঞান, রসবোধের ক্ষমতা ইত্যাদি গুণ আছে, তা বেমন কবি ধরে প্রতীক রচনা কম ই দেখা যায়। তা নিজে পারেন, তেম্নি তার পক্ষে কতকগুলি প্রতীকের ইলিত বোঝা প্রতীকগুলি দিরে কোন পরিভাষা তিনি প্রতাভি কবি আশা কর্ত্তে পারেন। সমস্তাটা হচ্ছে প্রতীকের কোন বাঁধা আচার, অনুষ্ঠান, পদ্ধতি প্রচালিতি নিয়ে। Danteর পক্ষে প্রতীকের ব্যবহারে তার কাব্যের তার মানসিক ও আধ্যাদ্মিক বোধের ক্ষতি হয় নি, Blakeর হয়ত হয়েছে, কারণ Blakeএর ব্যবহৃত কাড়িত নর। একস্থ নিত্য নৃতন সা প্রতীকগুলি অপেকাকৃত অপ্রচলিত। স্বকপোলক্ষিত প্রতীক চালাতে গেছেন। তা ছাড়া প্রেমের স্তার কারে গেলে স্থিক আর্থিও বেশী হয়। তবে গ্রণী লেখক কি ভাবে আঞ্চিকিক তারই কথা একট্ট স্থারের নিলে দাঁড়ার—

· কালেও পাঠকসাধারণের জ্ঞান, অভিজ্ঞতা, সংস্থার, ঐতিহ্য, অবচেতনার স্থযোগ নিম্নে প্রতীক সাহিত্য রচনার সিদ্ধকাম হতে পারেন, তার প্রমাণ হচ্ছে Eliot ও রবীক্রনাথের রচনা।

(0)

রবীশ্র-সাহিত্যে প্রতীকের ব্যবহার বেশী নয়। ধর্মেও ব্যবহারে ভিনি সহজ হবার চেষ্টাই কর্ত্তেন—"রুদ্ধদার দেবালয়ের কোণে" বসে গুফু পদ্ধতির "শুজন পূজন সাধন আরাধনার" যেমন কোন মূল্য তার কাছে নেই, তেমনি কৃত্রিম পারিভাষিক তাৎপর্ষ্যে পরিপূর্ণ প্রতীক ব্যবহারও তাঁর কাছে অসাহিত্যিক রীতি বলে পরিগণিত হত। সাহিত্যকে তিনি সকলের সহিত মনে প্রাণে মিলনের উপায় বলেই জান্তেন, সকলের কাচে শব্দের যে অর্থ অজ্ঞাত ও অপরিকটুট সে অর্থ তিনি গ্রহণ কর্তেন না। কাজেই কোন রকমের সাধ্যভাষা তিনি ব্যবহার করেন নি। তিনি কাব্যরীতিতেও পৌত্রলিকতা বা প্রতীক-পূজার विद्राधी हिल्लन। ठाँत कार्या मानविक दम ও क्रजारवांक्रियां हे बाधां छ পেয়েছে। তাঁর কাব্যের প্রধান উপকরণ হচ্ছে মানবফুলভ অমুভূতি ও তীক্ষ মনন্দীলতা। স্বতরাং প্রতীকপন্থী রচনা তাঁর কাছ থেকে আশা করা যায় না। কিন্তু মননশীলতার আতিশয্যের জন্ত, বিলেধণা বুদ্ধির প্রাবল্যের জন্ম তাঁর রচনায় রূপকের প্রাচ্গ্য স্বভাবতঃই ষ্টেছিল। তাঁর গচ্চে পচ্ছে উপমা ও রূপক অলম্বারের ছড়াছড়ি ত আছেই; তা' ছাড়া যুগনই তিনি অনিক্রিনীয়ের ক্যা প্রকাশ কর্ত্তে গেছেন, তথনই তার রচনা রূপক হয়ে দাঁড়িয়েছে। তবে স্থপরিকল্পিত সালরূপক তিনি রচনার প্রয়াস করেন নাই, বোধ হয় যে কারণে তিনি মহাকাব্য রচনারও প্রয়াদ করেন নাই। 'ক্ষণিকের অভিথি'দের নিয়েই তিনি ব্যস্ত।

তবে কিছু কিছু প্ৰতীক যে তাঁর রচনায় স্থান পায় নাই এমন নয়। তার প্রতীক অবশ্র মধ্যযুগের হিন্দুধর্মের অস্তর্ভু জ নানা ধর্মসম্প্রদারের আমুঠানিক পরিভাষা থেকে গৃহীত হয় নাই। তবে হিন্দুধর্মের করেকটা মুল দার্শনিক তত্ত্বের সঙ্গে সম্পুক্ত শুটিকতক প্রতীক তিনি গ্রহণ করেছেন এবং কালিদাসাদি কবির কাব্য বেকে ব্যঞ্জনাসম্পন্ন কয়েকটি বস্তু প্রতীক হিসাবে তাঁর কাব্যে ব্যবহার করেছেন। বৈষ্ণব কাব্য ও বাউল কাব্য থেকেও কিছু কিছু প্রতীক তিনি নিয়েছেন। এই সব প্রতীকের মধ্যে বীণা, বাঁশী, শহা, দীপ, মালা, বঁধু, তরী, ক্লে, নটরাজ, ছন্দ, ৰূত্য প্রভৃতি প্রতীক প্রতায় উল্লেখযোগ্য। তবে এ সমস্ত প্রতীকের ব্যবহার তার রচনার বিক্ষিপ্ত ভাবেই বেশীর ভাগ করা হয়েছে, সামগ্রিক ভাবে প্রতীক রচনা কম ই দেখা যায়। তার কারণ তার এই স্ক^{ল্লিড} প্রতীকশুলি দিয়ে কোন পরিভাষা তিনি রচনা কর্ম্ভে পারেন নি, ^{যেহেতু} কোন বাধা আচার, অনুষ্ঠান, পদ্ধতির সঙ্গে তাদের সম্পর্ক নেই এ^{বং} তাঁর মানসিক ও আধ্যাত্মিক বোধের সক্ষে এ সব প্রতীক অঙ্গান্তিভাবে জড়িত নর। এজক নিত্য নৃতন সামরিক রূপক-সৃষ্টি-ই তিনি ^{করে} গেছেন। তা ছাড়া প্রেমের স্থার কাব্যেও তিনি সহস্ক পথের প^{রিক ।}

শুনেছিম্থ কাব্যকুঞ্জে অনেক বাঁকা গলিবুঁজি।
আমার কিন্ত কাব্য লেথা নিতান্তই এ সোজাহজি।
পাঠক-ও রবীক্রকাব্য পড়ে বল্তে পারেন—
ওদের কথায় ধাঁদা লাগে
তোমার কথা আমি বুঝি।

রবীক্রনাথের 'সোনার তরী' পর্ব্বে প্রতীক কাব্য রচনার প্রপাত। 'সোনার তরী' ও 'নিরুদ্দেশ যাত্রা'র তিনি নিজস্ব প্রতীক দিরে কবিতালেখার চেষ্টা করেছিলেন। কিন্তু এ পথে তিনি তথন আর অগ্রসর চন নি। অনেক পরে গীতাঞ্জলি-বলাকার যুগে আবার তার রচনার মধ্যে প্রতীক কবিতা কিছু কিছু পাই। 'গীতাঞ্জলি'র 'তোরা শুনিস্ নি তার পারের ধ্বনি,' 'সীমার মাঝে অসীম তুমি বাজাও আপন হর', 'গীতিমাল্যে'র 'দাঁড়িয়ে আছ তুমি আমার গানের ওপারে', 'গীতালি'র 'এক হাতে ওর কুপাণ আছে আর এক হাতে হার', 'বলাকা'র 'তোমার শহ্য ধূলার পড়ে, কেমন করে সইব', 'জানি আমার পায়ের শব্দ রাজিনিন শুন্তে তুমি পাও' প্রভৃতি শুনেকগুলি রচনাকে প্রতীক কবিতা বলা যার। তার গীতিকাব্য 'নটরাজ' সার্থক প্রতীক রচনা। রবীক্রনাথের কোন কোন গানও প্রতীক সাহিত্যের অন্তর্গত বলা যার, যেমন 'প্রলয় নাচন নাচলে যথন আপন ভূলে' 'আমি কান পেতে রই আমার আপন হাল্য-গহন-ছারে' ইত্যাদি।

তবৃত্ত মোটাম্টি ভাবে বল্তে গেলে খীকার কর্তেই হবে যে রবীক্রকাব্য প্রতীক সাহিত্যের অন্তর্ভুক্ত নর। এই সিদ্ধান্তে হয়ত কেহ কেহ
হঙাল হবেন। তবু কথাটা সত্য। রবীক্রনাথের কাব্যে অলোকিক
রহস্তের অনুভূতি যথেষ্টই আছে, কিন্তু সে অনুভূতি প্রকাল পেয়েছে
বেলিটা রূপকের মধ্যে, প্রতীকের মধ্যে নর। তা' ছাড়া তার প্রিয়
কতকগুলি প্রতীকের বহুল ব্যবহার তিনি করেছেন, সে সব ব্যপ্তনাসম্পদে গরীয়ান; কিন্তু সে সমন্ত প্রতীক তার রূপক কবিতা ও অস্থান্ত
কাব্যের মধ্যে ইতন্ততঃ বিক্তিপ্ত ভাবেই আছে, বিষয়ীভূত হয় নাই। এ
কথা মারণ রাখতে হবে যে অধ্যোকিক সমন্দে রহুস্তবন অনুভূতি নানা
প্রকারেই প্রকাল করা সন্তব, তার জন্ত প্রতীকের ব্যবহার অপরিহার্য্য
নয়। তা' ছাড়া সমাসোজি (Personification) বা ভাবিকের
(Vision) প্রয়োগ, কিংবা অভিনবপুরাণ-রচনা (mythmaking)
প্রতীক-স্তৃষ্টি নয়। যে কাব্যে লাগে লা । যদি প্রতীক-ই মৃখ্য উপকরণ
না হয়, তবে কোন রচনাকে প্রতীক রচনা বলা সন্তত নয়।

এই প্রসঙ্গে রবীশ্রসাথের তথ্যুলক নাটকগুলি সম্পর্কে আলোচনা করা যেতে পারে। সেগুলি প্রতীক-নাট্য কিনা সে বিষয়ে তর্ক উঠ্তে পারে। আলোচনার পূর্বে একবার রূপক নাট্য ও প্রতীক নাট্যের সংজ্ঞা তাল করে ব্বে নেওরা উচিত। রূপক নাট্যে থাকবে অপ্রত্যক্ষ তথ্ব-রূপতের উপরে প্রত্যক্ষ একটা বস্তু-জগতের আরোপ; হু'টো বিভিন্ন রূপ, ডা'দের মধ্যে একটা সমাস্তরালতা রূপক নাট্যে ধরে নিতে হ'বে। সর্ব প্রত্যক্ষ ক্ষর্পটো রক্ষকে দুল্ল, অপ্রভাক ক্ষর্পটো নালা ইলিত দিরে অসুমেয়। এই অপ্রত্যকের দীপ্তি রঙ্গমঞ্চের উর্দ্ধন্থ লুকায়িত দীপমালার আলোকের স্থার বিচ্ছুরিত হয় ও পাত্র পাত্রীর দেহ, মন ও দৃশুপট উদ্ভাসিত ও অলৌকিক তাৎপর্য্যে পূর্ণ ক'রে তোলে। ফলে প্রত্যক চরিত্র, দৃশ্র ও ঘটনা অপ্রভাক তত্ত্বের প্রতিভাস বলে' সহক্রেই প্রভীত হয় এবং এই প্রতীতি ব্যতিরেকে রূপক-নাট্য আমাদের কাছে সার্থক হয় না। প্রতীক নাট্যে কিন্তু হ'টো জগতের পাশাপাশি অন্তিত্ব কল্পনা করা হয় না। জগৎ একটাই; কিন্তু সে জগতের অন্তর্ভুক্ত প্রায় সব কিছুই প্রতীক, অর্থাৎ কোন একটা ভাবের সঙ্গে বিজড়িত সঙ্কেত। এই সব প্রতীক দিয়ে একটা নৃতন জগৎ আমাদের সাম্নে দেখানো হয়, সে জগৎ আমাদের চেনা সংসার বা বস্তু জগৎ নয়, সেটা একটা তত্বাগ্লুত অভিনৰ স্ষ্টি। এখানে কোন সাদৃশ্যের পরিকল্পনা নেই, জানা অজানা হু'টো জগতের মধ্যে কোন সমান্তরালতা আরোপ করা হয় নি। প্রতাক নাটোর যথার্থ উদাহরণ হিসেবে দক্ষিণ ভারতের কথাকলি নাটক, যবধীপের ৰুত্য-নাটক ইত্যাদির নাম করা যেতে পারে। অবশ্য এ সব নাটকে কথার চেয়ে মুদ্রা, ভঙ্গী, গতি ইত্যাদি প্রধান। সাহিত্যিক প্রতীক নাট্যে তার উপাদানগুলি নুভোর মুদ্রার স্থায় হওয়া উচিত ; অর্থাৎ সেগুলি হ'বে সক্ষেত, উপমা নয়। গানের উপকরণ হার, হারের সঙ্গতি হাষ্টি করে অলৌকিক ভাব প্রকাশ করা যায়, কিন্তু প্রত্যেকটি স্থরকে যেমন কোন ভাবের রূপক বা স্থরসঙ্গতিকে যেমন জাগতিক ব্যাপারের রূপক বলা যায় না. প্ৰতীক নাটোও তেম্বি অলৌকিক ভাব ওতপ্ৰোত হলেও তাকে রূপকের প্রায়ে ফেলা যার না।

এইভাবে নিকষণ কর্লে দেখা যাবে যে রবীক্রনাথের কোন নাটকই
ঠিক প্রতীক নাটক নয়। ঠার তাত্ত্বিক নাটকগুলি মোটাম্টি ছ'রকমের।
কতকগুলো হ'ছের রপক, আর কতকগুলো হ'ছের ব্যঞ্জনা-সম্পন্ন মানবিক
নাটক। অবশু এই ছয়ের মিশ্রণ-ও অনেক জায়গায় হয়েছে। তা'
চাড়া রূপক নাটাকে দর্শক সাধারণের পক্ষে ক্রিকর ও প্রত্পাক কর্বার
জক্তে অনেক সময় বাড়তি লবুরসের মিশাল দেওরা হ'য়েছে। এই খাদটুকু না দিলে তথু বাঁটি রূপক দিয়ে হয়ত মনোগ্রাহী ও অভিনয়েপযোগী
মঞ্চ-সকল নাটক লেখা মৃদ্ধিল। তবে রূপক নাট্যের তক্ষ রীতি যে তিনি
কথনও অনুসরণ করেন নি, এমন নয়।

দৃষ্টান্ত স্বন্ধপ রবীক্রনাথের অবিসংবাদিতভাবে শ্রেষ্ঠ তাত্ত্বিক নাটক 'ডাক্বরে'র কথা বলা যেতে পারে। এর প্রত্যেক চরিত্র, প্রত্যেকটি ঘটনা, এমন কি অনেক কথাবার্ত্তা পরিক্ষারভাবেই একটা তত্ত্বজগতের সমান্তরাল প্রতিচ্ছারা। অমল, মাধ্বদত্ত, বৈভ্য, ডাক-হরকরা, মগুল, ঠাকুরদাদা, রাজবৈভ্য, রাজা, স্থা প্রভৃতি চরিত্র; অমলের ব্যাধি, তার উদাদ ভাব, দ্রের ঘণ্টাধ্বনি, ডাক্যর, স্থার উপত্তত পূপপ্তচ্ছ, সব কিছুই স্পষ্টভাবে তত্ত্ব-জগতের রূপক। তবে এই নাটকের প্রধান মাধ্র্য্য হ'চেছ, তথ্ তত্ত্বকথার জভ্যে নয়, যে সব চরিত্র ও যে স্বল্গ-পরিদর জগতের এথানে হুটি হয়েছে তারই নিজস্ব দৌল্বর্য্যের জভ্য। চরিত্র-ভল মানবিক রসে পরিপূর্ণ ও জীবন্ত, সংলাপ ও ঘটনা-বিভাদে বাভাবিক এবং ভাব-সমাবেশ সন্থাবন-সংল্যর

জ্বজ্ঞেই এই নাটকের মনোহারিত। একেই শ্রেষ্ঠ শ্রেণীর রূপক বলা যেতে পারে, সমান্তরাল তত্ত্বের কথা একেবারে তেড়ে দিলেও এরকম রচনায় রসনিষ্পত্তির অফ্রবিধা হয় না।

অপরপক্ষে 'অরপরতন' বা 'রাজা' নাটককে নীরস রূপক নাটক বলা বেতে পারে। এটা যে তত্ত্বপার প্রতিচ্ছারা সে বিষয়ে সন্দেহ নেই। রবীক্রনাথ নিজে এই নাটকের যে ভূমিকা লিখেছেন, তা' থেকেই এর রাণকত বেশ স্পষ্ট হ'য়ে ওঠে। এই নাটকের রাজা, স্থর্ণ, স্থদর্শনা, স্বরশ্বমা এবং রবীক্রনাথের তাত্তিক নাটকে অপরিহায্য সর্ব্ব-यह-विशंदी मर्लक ठीक्द्रमाना, मकलाई এक এकहि তাত্ত্বিক প্রভায়ের মূর্ব্তি: নামকরণ থেকেই চরিত্রগুলির তাত্ত্বিক স্বরূপ বেশ স্পষ্টই নুঝাডে পারা যায়। নাটকের ঘটনা পারম্পর্যা—হুদর্শনার আগ্রহ ও মোহ, অগ্নিদাহ, স্থদর্শনার আভিনাশ ও দয়িতের সহিত মিলন-মানবাস্থার আধাত্মিক অভিজ্ঞতার অতি স্পাই প্রতিচ্ছায়া। এর তর্ত্তর ধা জ্যামিতির **প্রতিপাত্মের মৃত্ই বৃদ্ধি-আগ এবং ক-খ-খ ত্রিভূজের** উপর যেভাবে আরোপ করা হ'য়েছে তা'তে রস-নিপ্পত্তি কিছুই নেই। ক্লপক বাদ দিলে ইহার চরিত্রগুলির মধ্যে প্রাণবতা বা ঘটনা-পারস্পর্যোর মধ্যে কোন জীবন-সত্য পাওয়া যায় না। অবশ্য রবী-শ্রনাথ অনেক হুলে চমৎকার গান ও রসাল সংলাপ দিয়ে তত্ত্বের বটিকায় শর্করার প্রলেপ দেবার চেষ্টা করেছেন, কিন্তু তৎসত্ত্বেও এই নাটকটি জ্যামিতিক প্রতিজ্ঞা ছাড়া আর কিছু হয় नि।

'অচলায়তন'ও রাপক। তবে এপানে নাটকের পাত্রদের চরিত্র অপেক্ষাকৃত প্রাণবস্ত। 'মহাপঞ্কে'র চরিত্রের মধ্যে বেশ সত্য আছে বলা যায়। তবে 'পঞ্চক' কবিহমর একটা ছায়া-মূর্ত্তি হ'য়ে দাঁড়িয়েছে। ঘটনা-পারম্পর্যোর মধ্যে নাটকীয় গুণ কিছু কিছু আছে, কিন্তু তার মধ্যে যে সত্য আছে তা' নানবজীবনের নয়, ধর্মতিত্বের। এর অস্তর্নিহিত রাপককে ভারতের সামাজিক ইতিহাদের দিক থেকে কিংবা শুদ্ধ আধান্তিক দিক থেকে ব্যাগ্যা করা যেতে পারে।

'রক্ত-করবী' নাটকটি রূপক নাটক নয়, একথা রবীক্রনাথ বলেছেন।
কিন্ত বে ভাবে তিনি নিজেই এর তাৎপর্য্য নানা সময়ে বিবৃত করেছেন,
ভাতে এর রূপকত্ব তিনি নিজেই সপ্রমাণ করেছেন। তবে 'ভাকবরে'র
পর্য্যায়ে উঠ্তে না পারলেও এখানে চরিত্রগুলির মধ্যে ব্যক্তিত্ব আছে,
এবং ঘটনা-পারম্পর্য্যের মধ্যে অনেকটা সন্তাব্যতা আছে। অনেকটা
বল্ছি এই জক্তে বে, পাত্র-পাত্রীদের কথাবার্ত্তা বেশ জীবস্ত ও চারিত্রিক
বৈশিষ্ট্যময় হ'লেও মানব-চরিত্রের মানদত্তে যেন কতকটা অপ্রাকৃতিক
বলে মনে হয়, ঘটনাচক্রেও বছল পরিমাণে মানব জীবনের সত্য ও
আধুনিক লগতের তথাের অনুসরণ করা হ'য়ে থাক্লেও তাকে কতকটা
ছনিয়া-ছাড়া বা অসম্ভাব্য বল্তে হয়। অবশ্র তাতে পুব আদে যায়
মা, কারণ 'রক্তকরবী' বস্তুতঃ রূপক, একটা তত্ত্বের প্রতিছায়া হিসেবে
এই নাটক রচিত হয়েছে, মানবজীবনের প্রতিছলন হিসেবে নয়। এই
য়াটকে রক্তকরবী, লালের জানালা প্রভৃতি প্রতীকের ব্যবহার থাক্লেও
একে প্রতীক নাট্য বলা চলে না। এখানে ম্থ্য চরিত্রগুলি প্রতীক কর.

ঘটনাধারাতেও অলৌকিক সত্য কিছু প্রতিপন্ন হর নাই, বরং নীতি-কখাই ফুটিয়ে তোলা হ'য়েছে। 'মুক্তধারাও এই রক্ষের নাটক।

'শারদোৎসব' নাটককে রূপক বলে ধরার কোন আবশুকতা নেই। উপানন্দ, লক্ষেশ্বর, সন্ত্যাসী, ঠাকুরদাদা, বিজয়াদিত্য প্রভৃতি চরিত্রকে আমরা নানা প্রকৃতির মানুষ বলেই ধর্দ্তে পারি। এর আথ্যায়িকাকে একটা সরল কাহিনী বলে গ্রহণ করা যেতে পারে। চরিত্র বা ঘটনা কোনটাকেই একটা তত্ত্বের প্রতিবিশ্ব বলে নেওয়ার দরকার নেই। সমপ্র নাটকের ভেডর দিয়ে একটা আধ্যান্ত্রিক আদর্শের প্রচার করা হ'য়েছে এই মাত্র। এ রকম নাটক রূপক নয়, কথামৃত।

'ফান্তুনী'-ও তাজিক নাটক। প্রস্তাবনায় এই তল্প এক রক্ষম স্পষ্ট ক'রেই ব্যাণ্যা করা হ'য়েছে; নাটকের করেকটি অক্ষের প্রথমে স্ত্রপাত, সন্ধান, সন্দেহ, প্রকাশ এই চারিটি পরিচায়ক দিয়ে—এর তপ্রটার বিভিন্ন আংশের ইন্সিত করা হয়েছে। কিন্তু একে পুরোপুরি রাপক বা সাঙ্গরাপক বলা কঠিন। আগ্যায়িকা বল্তে তেমন কিছু এগানে নেই, কবি-মনের আবেগই যেন একটা গীতমুগর কাকলীর নানা পর্দায় ও মুচ্ছনায় বেজে উঠেছে। চরিত্র অক্ষনের কোন চেন্টা। করা হয়ন। কেন্দ্রায় অমুভৃতির আঙ্গিক এক একটা ভাব যেন এক একটা নামকে অবলম্বন করে সংলাপের ভেতর দিয়ে প্রকাশ পেয়েছে। এ সংলাপে মানবজীবনের দ্বন্থ বা মানবচরিত্রের সংঘাত দেখান হয় নি, উপলব্ধির বিভিন্ন দিক্ আবেগোচছাম দিয়ে প্রকট করা হয়েছে। 'ফাল্কনী' সক্রথাই গীতিনাটা। ঠিক রাপক না হ'সেও রচনা হিসেবে এটা যে শিল্পনিদ্ধ হয়েছে তার কারণ এই যে, এখানে রবীন্দ্রনাপ ভল্পের প্রতিরাপ হিসেবে গীত ও গীতধন্মী উচ্ছাম দেওচার ফলে কবির উচ্ছাম্ময় অমুভৃতি ও তার প্রকাশ বেশ চমৎকার ভাবে পাপ থেয়ে গেছে।

স্তরাং বলা যেতে পারে রবীক্রনাথের তাত্ত্বিক নাটকগুলির মধ্যে কতকগুলির পরিছার ক্রপক, কতকগুলি রূপক লক্ষণাক্রান্ত হ'লেও প্রোপুরি রূপক নয়। এই শেষোক্ত ধরণের রচনাকে কেউ কেউ প্রতীক নাটক বল্তে চান। কিন্তু সে অভিধা সঙ্গত হ'বে না। অসম্পূর্ণ রূপক কে প্রতীক বলা চলে না। তবে এ সব নাটককে কি বলা হবে? রূপক হিসেবে অসম্পূর্ণ হ'লেও রচনা হিসেবে এ-সব নাটককে ত অক্ষম বা অচল বলা চলে না। তবে কি বলা হবে?

এই সমন্ত নাটক ব্রচনায় ব্রবীন্দ্রনাথ যে Materlinck প্রভৃতির রচনার বারা প্রভাবিত হ'রেছিলেন, সে বিষরে সন্দেহ নেই। Materlinckর The sightless অবশ্য রূপক, চমৎকার রসময় রূপক। কিন্তু Materlinckর The blue bird কি রক্ষ নাটক ? রূপকের অনেক লক্ষণ থাক্লেও একে রূপক-নাট্য বলা চলে না, কারণ এখানে কোন ভল্কে ঘটনার রূপ দেওয়া হয় নি। ক্রিচিত্তের একটা আলৌকিক অভিজ্ঞতার কাহিনী কতকটা রূপক, কতকটা প্রতীক, কতকটা শুভাবোন্তি, কতকটা উৎকল্পনার সহযোগে প্রকাশ করা হয়েছে। এ ধরণের নাটককে সমালোচনার আল্গা ভাষার symbolic বলা হয়ে

স্তরাং এই সমন্ত তাত্মিক নাটককে যদি আমরা সাঙ্কেতিক বলি তা হ'লেই বোধ হয় ভাল হয়। সাঙ্কেতিক শন্ধটা রূপক বা প্রতীকের চেয়ে আরও ব্যাপক-পরিসর। যে রচনার সঙ্কেত আছে, যা' আমাদের মনকে প্রত্যক্ষ থেকে অপ্রত্যক্ষের দিকে নিয়ে বার, তাকেই বলা যাবে সাঙ্কেতিক। রূপক ও প্রতীক—ছ'টোই বিশিপ্ত সঙ্কেত। কিন্তু তা' ছাড়া আরও কত রকমের সঙ্কেত ত হ'তে পারে। স্কতরাং Materlinek ও রবীক্রনাথের এই সব নাটক—যা'দের রূপক-নাট্য বা প্রতীক-নাট্য কোনটাই বলা যায় না—তা'দের মোটাম্টি সাঙ্কেতিক বলেই ছেড়ে দেওয়া যায়। তা' হ'লে সাঙ্কেতিক নাট্যের মধ্যে Eugene O' Neill, Hauptmann ইত্যাদির কিছু কিছু রচনাও পড়ে যাবে। Yeats, Syngeর কোন কোন কোবাও পড়বে।

কিন্তু সাঙ্কেতিক বলে এ সব নাটকের পরিচয় দিলেও বাশ্ববিক ইতিহাসই পাওয়া যাচ্ছে।

আমাদের কাজ শেষ হ'ল না। নানা রকমের ন্তন ন্তন রীতির নাটকের যথার্থ পরিচয় দেবার জল্ঞে আরও স্থানির্দিষ্ট অভিধা খুঁজে বের কর্ত্তে হ'বে। মাকুবের মন প্রগতিশীল; তার ধর্ম, সমাজবিধান ইত্যাদির ভার তার সাহিত্য-রীতিও প্রগতিশীল। পুরাণো কয়েকটা বাধা গাতেই সাহিত্য রসের আেত যে চিরকাল চল্বে সে কথা বলা যার না। ক্ষিচিত্রের ভার সাহিত্যও—

"যুগে যুগে এসেছে চলিয়া স্থ'লয়। শ্বনিয়া চুপে চুপে রূপ হ'তে রূপে"।

বর্ত্তমান যুগে রূপক-নাট্যের মান থেকে খলনের মধ্যে সেই রূপা**ন্তরের** তিহাসই পাওয়া যাচেছ।

সমাধান

শ্রীসমরেশচন্দ্র রুদ্র এম-এ

(নাটকা)

ডাজারথানা। রাত্রি প্রায় প্রগারটা। শুধু কম্পাটপ্তার বদে কি লিখছে; এমন সময় উদকোপুসকো চুল, এলোমেলো পোষাক, ৩৫।৩৬ বছরের এক ভন্তলোক প্রবেশ করল।

ভদ্রলোক। হাঁ দেখুন, আপনি কি ডাক্তার ? কম্পাউগুরে। না আমি কম্পাউগুরে, আপনার কি চাই ?

ভদ্রলোক। হাঁ চাই একটা জিনিস, ব্যাপারটা কিন্তু অত্যন্ত গোপনীয়। আপনার এখানে এখন কেউ এসে গড়বে না তো ?

কম্পা। না, অনেক রাভ হয়ে গেছে, এখন আর কেউ আসবে না।

ভদ্রশাক। কিন্তু দেখুন, ব্যাপারটা অত্যন্ত গোপনীয় এবং একটু ভয়েরও। এই দরজাটা কি বন্ধ করলে হয় না। কম্পা। দরজাটা ?

ज्यालाक। हैं।, मत्रकांगि वसरे करत्र मिरे, कि वलन ?

এগিরে গিরে দরজা বন্ধ করে দিলে

দেখুন, মনের অবস্থা আমার অত্যস্ত ধারাপ; সময় সময় মনে

• ইয়, আমার বৃঝি মাথা ধারাপ হয়ে বাবে।

কম্পা। আপনি বস্তুন।

ভদ্রলোক। বদছি। (বদল না) হাঁ দেখুন, আমার ব্যাপারটা শুনতে আপনার একট্ সময় লাগবে। অবশ্র তার কোন চিকিৎসা নেই, দেইজন্তেই আমি এমন একটা জিনিস চাইছি যাতে সমস্ত জালা জুড়িয়ে যায়, এ জালা আমি আর সহ্য করতে পারি না। সময় সময় মনে হয়, একটা ভূপিন্ত কাণ্ড করি। কিন্ত কি জানেন, সামাজিক লজ্জা—অবশ্র বলতে পারেন, সেটা মনের নিছক ত্বলতা—কিন্তু আপনি কি বলতে পারেন, সামাজিক লজ্জাকে গ্রাহ্য করে না, এমন লোক খুব বেনী আছে? বলুন?

কম্পা। কিন্তু ব্যাপারটা কি না জানলে-

ভদ্রলোক। ইা সেই কথাতেই তো আমি আসছি। কি জানেন, আর চিন্তা করতে পারি না আমি, ক্লান্ত হয়ে পড়েছি চিন্তা করতে করতে, সে চিন্তা সর্বনা এড়াতে চাইছি।

নিজের মাধার চুলের ভিতর আঙ্গুল চালাতে চালাতে সামান্ত পায়চারি করতে লাগল।

कल्ला। अकट्टे क्ल शायन १

ভদ্ৰশোক। জন? (যেন সামাক্ত চিস্তা করে) দেন একটু।

কম্পাউগুার জল এনে দিলে

(এক চুমুক জল থেয়ে) বুকে কিন্তু আমার আগুন জলছে।

আমার চুলগুলো সাদা হয়ে আসছে দেখেছেন এত অল্ল

বয়েদে ? কতই আর আমার বয়েস হবে—প্রত্রিশ কি

ছিত্রিশ। কিন্তু আমাকে কি বুড়োটে দেখাছে না?
অবিশ্রাম যুদ্ধ করতে করতে এই অবস্থা হয়েছে আমার।

কম্পা। (ইতগুত করে) আপনার কি আয়াবরদনের কেস?

ভদ্রনোক। কি বললেন ? আবরসন ? গর্ভপাত ? ভ্যানকভাবে আবরসন হলে অবশ্য মৃত্যু সহজেই আসে, না ? (যেন নিজের সঙ্গে আলোচনা করতে করতে) ভীষণ রক্তস্রাব! হেমারেজেই শেষ হয়ে বাবে সব। কিন্তু প্লিশ ? তাছাড়া আরও কত হাঙ্গাম। (হঠাৎ যেন প্রকৃতিস্থ হয়ে আভাবিকভাবে) কিন্তু আমি এ কি বলছি আপনাকে! না না, ও কেস আমার নয়। মনে কিছু করবেন না, আমি আজ সত্যিই অত্যন্ত বিচলিত, আমার মাধার ঠিক নেই, কি বলতে গিয়ে কি বলে ফেলছি।

কম্পা। তাহলে আপনার কি—

ভদ্রলোক। হাঁ সেই কথাই তো আপনাকে বলতে বাছি আমি। এমন একটা ভয়ানক অবস্থায় পড়েছি আমি, যে কিছুতেই আর নিজেকে সামলে চলতে পারছি না। কঠিন মানসিক আঘাতে নিয়ত ক্ষতবিক্ষত হতে হতে প্রায় শেষ হয়ে এসেছি আমি।

কম্পা। আপনার নিজের কি কোন ছ্রারোগ্য অহুধ।
ভদ্রলোক। ছ্রারোগ্য অহুধ? (যেন চিন্তা করতে
করতে) ছ্রারোগ্য অহুধ? না ঠিক তা নয়, আমি বদি
নিজে শক্ত হতুম, যদি মনের জোর নিয়ে দাঁড়াতুম, তাহলে
হয়তো এই য়য়ণাদায়ক অবহায় এসে হাজির হতুম না।
কিন্তু বরাবয়ই মনের দিক থেকে আমি একাস্ত হুর্বল, বাকে
বলে মানসিক পক্তু, তাই—

কম্পা। তাহলে কি আপনি আত্মহত্যা করতে চান ? ভদ্র। আত্মহত্যা ? স্থইসাইড ?

দিজের মাধার চুল টানতে টানতে আবার পারচারি করতে লাগন (বেন নিজের সঙ্গে আলোচনা করতে করতে) তাহলে সমস্ত জালা জুড়িয়ে যায়। কিন্তু তার কি কারণ থাকতে পারে? তাছাড়া আত্মহত্যা মহাপাপ। ওদের সকলকে টেনে নিয়ে যাবে। কোর্ট আর পুলিশ। হয়তো সব হাসবে; বলবে, মাহ্যটা মানসিক তুর্বলতার একটা চরম দৃষ্টাস্ত। কিন্তু সত্যি, একটু ওষ্ধে সমস্ত জালা জুড়িয়ে যায়। (আবার জোর গলায়) হাঁ দেখুন, দেবেন আমাকে —হাঁ ওই যে কি বলে—?

কম্পা। আগ্রহত্যার ওষ্ধ?

ভদলোক। (যেন আবার নিজেকে সামলে নিয়ে)
কি বললেন, আত্মহত্যার ওষ্ধ? না না, আত্মহত্যার ওষ্ধ
আমি নেব কৈন! আমি তো এমন কিছু করিনি, তাছাড়া
ভয়ানক কিছু রোগও আমার নেই। আত্মহত্যার ওষ্ধ
আমার চাই না। তবে কি জানেন, আমি আর সহু করতে
পারছি না। গেল এক বছর ধরে এই ব্যাপারটা নিয়ে
দিনের পর দিন, রাত্রির পর রাত্রি চিস্তা করতে করতে
প্রায় পাগল হয়ে যাবার জোগাড় হয়েছি। মাম্য এ
ব্যাপার সহু করতে পারে না। কি জানেন, হয়তো আমি
মাহুষের দল ছাড়া, না হলে মুখ বুজে আমি এ অসহনীয়
ষত্রপা সহু করি কেন! জানেন, মনের দিক থেকে আমি
অত্যস্ত ভগ্ন।

কম্পা। তাহলে কি আপনি কাউকে হত্যা করতে চান বিষ দিয়ে ?

ভদ্রগোক। (অত্যস্ত ব্যগ্র হয়ে) কি বললেন ? আমি কি ঠিক শুনলুম ? আর একবার বলুন।

কম্পা। **স্মাপনি কি কাউকে বিষ থাইয়ে মা**রতে চান ?

ভদ্রলোক। (যেন নিজের সঙ্গে) কি সহজ ব্যাপার!
স্বাভাবিক মৃত্যু। থাবার জলের গেলাসে একটু ঢেলে
দেওয়া—সকালবেলা আর বিছানা ত্যাগ করতে হল না।
অত্যন্ত স্বাভাবিক মৃত্যু। গুরুতর পরিশ্রমের ফলে শরীর
ও হার্ট অত্যন্ত তুর্বল ছিল, কাল একটু বেনী রান্তিরে
ফিরেছিল—মনে হয়, কিছু পরিমাণ মাদক দ্রবাও
থেয়েছিল। মেয়েমাম্বের শরীরে কি আর এভটা সহ
হয়! হার্ট অত্যন্ত তুর্বল, হঠাৎ হার্ট ফেল করেছে।
পাড়ার ছেলেরা অত্যন্ত ভাল—

কম্পা। আপনি কি আপনার জীকে--?

ভদ্রগোক। (সহজভাবে) কি বললেন? আমার ন্ত্রী? হাঁ জানেন, আমার ন্ত্রী অভ্যস্ত গুণী এবং একজন শিল্পী। সকলেই তাঁকে চেনে, এক বছরের ভেতর ফিল্মে অভ্যস্ত নাম করেছেন।

কম্পা। এমন স্ত্রীকে আপনি--

ভদ্রলোক। (যেন প্রশ্নের মানে ব্ঝতে না পেরে) আমি—কি?

কম্পা। আপনি—(ইতন্তত করে) বিষ খাওয়াতে—
ভদ্রলোক। (অত্যন্ত প্রকৃতিস্থভাবে) আমি তাঁকে
বিষ খাওয়াব! ক্ষেপেছেন আপনি? সেটা কি সম্ভব?
নাত্র আমাদের বছর পাঁচ হল বিয়ে হয়েছে, একটি মেয়েও
আছে আমাদের—আমি আমার স্ত্রীকে কথনও বিষ
খাওয়াতে পারি! তবে কি জানেন, ব্যাপারটা এমন
দাঁড়ায় যে বড় কট্ট হয় আমার। আমরা অর্থাৎ আমি ও
আমার মেয়ে যথন ওঁর জন্তে অপেক্ষা করে করে রোজ
ঘূমিয়ে পড়ি, তখন গভীর রাত্রিতে, প্রায় দেড়টা ছটোয়,
কোন কোনদিন ভিনটে চারটেয়, তিনি বাড়া কেরেন—
(কথাটা যেন না বললেই হত এই ভাবে) একলা নয়—

আবার নিজের চুল টানতে টানতে ছ তিনবার পায়চারি করল হাঁ দেখুন, এই ভাবে রোজ বেশী রান্তিরে দরজা খুলে দিতে হবে বলে উৎকণ্ঠায়—দেখতে পাচ্ছেন, মনের দিক থেকে আমি অত্যন্ত তুর্বল, অত্যন্ত নার্ভাস—রোজই আমার ভাল

ঘুম হত না, গত পাঁচ মাদ যাবত আমি আর এক পলকের

জন্তেও ঘুমোতে পারছি না। আমার শরীর কি হয়েছে

দেখেছেন? চুলে পাক ধরে গেছে, চোথ মুথ বদে গেছে,

যেন বুড়ো হয়ে গেছি, না? হাঁ দেখুন, আমার আসল

দরকার কি জানেন, একটু ঘুমের ওষ্ধ, এমন একটা ওষ্ধ,

যা রাত্রে থাবার পর থেয়ে ভলে অনেক গোলমাল হলেও

ঘুম না ভালে, একেবারে ভোরবেলা নিশ্চিন্তে উঠতে পারি।

ঘুমের একটা ভাল ওধ্ধ দরকার আমার, কম্পাউভারবার।

कण्ला। (वन।

ভদ্রলোক। বে দাম আপনি চাইবেন তাই আমি দেব। টাট্কা এবং ভাল ওষ্ধ। উ:, কত দিন আমি ঘুমোতে পারিনি। ঘুমটা আমার বিশেষ দরকার।—একটু বসব ?

কম্পা। বস্থন।

ভদ্রলোক। (চেয়ারে বসে) জানেন, অন্ত কিছু নয়, আপনার কাছে আমি ঘুমের ওধ্ধের জন্তেই এসেছিলুম, ঘুমটা আমার বিশেষ দরকার।

টেবিলের ওপর হুহাত আড়াঝাড়ি ভাবে রেখে তার উপর মাথা রাখল যবনিকা

কুমড়া ফুল

बीरिनरवंशव्स नांश

পূজার প্রাঙ্গণে মোর নাহি স্থান, শ্বরিবে না কেহ ববে এই ক্ষীণ বৃত্ত শ্বৰ্ণস্থি দেহ উত্তপ্ত কটাহে তৈলে ভারতের রসনা পূজার বার্ত্তাকু আলুর সাথে ভোজ্যপাত্রে এক হ'ষে যায়। আমি কুমড়ার ফুল, পুস্পাত্রে চন্দনশোভায় দিতে যদি মোরে ঠাই জবা কিঘা গাঁদার সভার হ'তাম কি হতমান ? শেফালীকমলে যে লাবণ্য যে বর্ণালী সাহিত্যের আভিজাত্য বলে দিয়েছ, তাহার চেয়ে মোর স্থান স্থবর্ণ সজ্জায় কম কিলে? কমনীয় কামিনার উন্মেব-লজ্জায়? আমি মধ্যবিত্ত ফুল, মোর দেহে জাগে নম্ম আভা, রক্তে শোভে সিক্ত অহ্বরাগে শ্বরের সোনার সম্পাদ; উদ্ধানর উত্তত গৌরবে। তোরণ পার্শ্বেত কভু হন্ধারি না সংঘবদ্ধ রবে,
ছাই না প্রান্তর ভূমি তৃণান্ধুর সাথে
সীমাহীন বনকুলে শরতে বর্ধাতে;
তাই তোমাদের কবি গোলাপে ও রক্তনী-গন্ধারে
প্রশন্তি করিয়া গেছে, নিত্য শ্বের কাশ গুচ্ছ হারে।
ছাপোযা বাঙ্গালী ফুল; এ বিখের পূজার প্রান্থণে
নাহি আজ স্থান মান, রক্তধ্বজ কিংগুকে রঙ্গণে
হায় তোমাদের নভ, স্থরভিত পশ্চিম বাতাদ
স্থী কমলের গদ্ধে; তার পার্শ্বে ফেলি' দীর্ঘ্যাদ
বিষাব না শরতের পূজারতিকালে,

বিষাৰ না শরতের পূজারাতকালে,
আঙিনায় মৌন রবো নম নত ভালে;
জাগিবে না শুঙা রবে উল্লাসে বিপূল
ভব্দ কুঞ্চ কুমড়ার ফুল।

(সাপেনহর

শ্রীতারকচন্দ্র রায়

উনবিংশ শতাকীর প্রথমার্দ্ধে ইয়োরোপে বহুসংখ্যক নিরাশাবাদীর আবির্ভাব হইরাছিল। কবিদিপের মধ্যে ইংলণ্ডে বাররণ, ফ্রান্সে দে মুসে, জার্মানীতে হে-ইন, ইতালীতে লিওপার্দি, রুসিরায় পুসকিন্ এবং লারমন্টক্; সঙ্গীত রচরিতাদিগের মধ্যে স্বাট, স্ম্যার, চোপিন্ এবং বিটোভেন এবং সর্কোপরি ছঃখবাদের মহাগ্রন্থ 'The World as will and Ideaর রচয়িতা দার্শনিক সোপেনহর এই যুগেই প্রাত্ত্তি হইয়াছিলেন। ঠিক এই সময়ে এতগুলি নিরাশাবাদীর আবির্ভাবের কারণ কি ?

.. সোপেনহরের জন্ম হয় ১৭৮৮ সালে। ইহার পরবৎসরই ফরাসী বিপ্লব আরম্ভ হয়। এই বিপ্লবকে ইয়োরোপের বহু মনীধী সাদরে অভার্থনা করিয়াছিলেন। স্বাধীনতা, সামা ও মৈত্রীর বাণী ইয়োরোপের দলিত জনগণের মনে নৃতন আশার সঞ্চার করিয়াছিল। এই বিপ্লবের সংবাদ যখন প্রথম ইংলঙে উপনীত হয়, তথন ফল্ আনন্দে আক্সারা হইয়া ইহাকে জগতের সর্বশ্রেষ্ঠ এবং সর্বোত্ম ঘটনা বলিয়া বর্ণনা করিয়াছিলেন। বৃদ্ধ দার্শনিক ক্যাণ্ট অঞ্জলকণ্ঠে বলিয়াছিলেন "প্রভু, ভোমার ভূত্যকে এখন জীবলোক হইতে প্রস্থানের অনুমতি দেও। আমার চকু তোমার পরিতাশ-কার্য্য প্রত্যক্ষ করিয়াছে।" মানবের ভবিশ্বৎ সম্বন্ধে ইয়োরোপের সর্ব্বত্র বিশ্বাস ও আশা জাগরিত হইরাছিল। কিন্তু সে আশা সফল ২য় নাই, সে বিখাস মিথ্যা প্রতিপন্ন হইয়াছিল। ফ্রান্সের বিরুদ্ধে ইয়োরোপীয় রাজস্তবর্গ Holy Alliance গঠন করিয়াছিলেন। সোপেনহরের যথন ২৭ বৎসর বয়স তথন ওয়াটালুর যুদ্ধক্ষেত্রে নেপোলিয়ান পরাজিত হইয়া দেউহেলেনার নির্জ্জনস্থানে বন্দীরাপে প্রেরিভ হইয়াছিলেন। যে বিরাট ইচ্ছা এই কুজ-বপু কর্মিকানের অন্তরে রক্তরঞ্জিতরূপ পরিগ্রহ করিয়াছিল, ভাহাই দোপেনহরের **গ্রন্থে** আংশিকভাবে প্রতিফলিত হইয়া দেবত্বে উশ্লীত ছইয়াছে। কিছ সে ইচ্ছা পর্যুদন্ত ছইয়াছিল। রাজাচ্যুত বুর্বন বংশধর ফ্রান্সের সিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। নির্বাসিত অভিজাত-পণ দেশে ফিরিরা আসিতেছিল। রুস সম্রাট শান্তিকামী আদর্শ-वांगी ज्यात्मककान्माद्वत हिष्ठोत्र त्राक्रश्चवर्शत नुखन मः एवत्र व्यक्तिश्चा ষারা সর্বতে প্রগতির পথ ক্লম হইয়াছিল। স্থদুর সেন্ট হেলেনা হইতে নেপোলিয়নের ছঃখ ও লাঞ্নার করণ কাহিনী ভাসিয়া আসিয়া ইয়োরোপের জনগণের কর্ণে প্রবেশ করিতেছিল। দীর্ঘকালবাাপী যুদ্ধে লক লক লোক মৃত্যুমুখে পতিত হইয়াছিল। বহু জমি অকর্ষিত ব্দবস্থায় পড়িয়াছিল। চাব করিবার যথেষ্ট লোক ছিল না। প্রত্যেক দেশের উষ্ত অর্থ যুদ্ধে ক্ষয়প্রাপ্ত হইরাছিল। দারিজ্যের নগুমুর্ত্তি দৰ্মত প্ৰত্যক্ষ হইভেছিল। ১৮০৪ সালে ফ্ৰান্স ও অষ্ট্ৰিয়া স্বামণকালে দোপেনহর পলীপ্রামের বিশৃষ্টল ও অস্বাস্থ্যকর অবস্থা, কুবকদিগের দারিদ্রাকন্ত এবং নগরের মধ্যে হুংব ও অশান্তির প্রাবল্য দেখিরা মর্মাহত হইয়াছিলেন। ইংলণ্ডে কুবক ও শ্রমিক সকলেই হুগতির শেবসীমার উপনীত হইয়াছিল। রুদিয়ায় মন্ধো ভুশ্মে পরিণত হইয়াছিল। প্রত্যেক দেশেই গৃহপ্রত্যাগত সৈম্ভগণ কর্মাভাবে অর্থকন্ত ভোগ করিতেছিল।

যে বিপ্লবের সহিত ইয়োরোপের জনগণের আশা ও আকাজ্জা অভিত ছিল, যাহা হইতে পৃথিবীতে স্বর্গের আবির্ভাব হইবে আশা করিয়া সকলে আনন্দে উৎফুল্ল হইয়াছিলেন, তাহার মৃত্যু সংঘটিত হইয়াছিল। অদূরবর্তী ভবিষ্যতে আশা করিবারও কিছু ছিল না। বিধ্বস্ত ফ্রান্দের সিংহাসনে বুর্বনবংশীয় যাহাকে স্থাপিত করা হইয়াছিল, সে বেমন বিপ্লব হইতে কিছুই শিক্ষালাভ করে নাই, তেমনি কিছুই ভূলিয়াও যায় নাই। হঙাশ হইয়া গোটে বলিয়াছিলেন—"লগতের এই শেষ অবস্থায় আমি যে যুবক নহি, তজ্জপ্ত ঈশ্বরকে ধ্যুবাদ।"

এই অবস্থায় অনেকেই ধর্মে বিশ্বাস হারাইয়া ফেলিয়াছিলেন। ১৮১৮ সালে ইয়োরোপের যে অবস্থা হইয়াছিল, ভাহা দেখিয়া পৃথিবীর যে একজন জ্ঞানবান মঙ্গলচিকী শু বিধাতা আছেন, তাহা বিবাদ করা কঠিন হইয়াছিল। ইহার পূর্বে অমঙ্গলের সমস্তা এমনভাবে কথনও দর্শন ও ধর্মের সম্মুধে উপস্থিত হয় নাই। সকলের মনেই জাত অধবা অজ্ঞাতসারে এই প্রশ্ন উথিত হইতেছিল—কেন এত ছু:থক্ট এ পাপের শান্তি? এই দ্রঃথকষ্ট কি মানুষের ধর্মে অবিশ্বাসের শান্তি! এই শান্তি দারা ঈশ্বর কি মামুষকে আবার প্রাচীন বিশাস, আশা ও সহাদয়ভায় ফিরিয়া যাইতে আদেশ করিতেছেন ? স্লেগেল, নোভালিশ, मেটোব্রিয়া, দে মুদে, সাদি ও ওয়ার্ডদ ওয়ার্থ ইহাই মনে করিয়াছিলে^র। তাহারা আগ্রহে প্রাচীন ধর্ম্মে ফিরিয়া আসিয়াছিলেন। কিন্ত ইহার বিপরীত প্রতিক্রিয়ারও অভাব ছিল না। অনেকের মনে হই^{য়াছিল} ইয়োরোপের তৎকালিক বিশৃথালায় বিশের অন্তর্বতী বিশৃথা^{নাই} প্রতিফলিত। প্রকৃতপক্ষে ঐবরিক ব্যবস্থা বলিয়া কিছু নাই, ^{ঈশ্র} নামে যদি কেহ থাকেন, তাহা হইলে তিনি অন্ধ: পৃথিবীতে অসঙ্গ^{লেরই} बाक्य। वाद्यवन, रहरेन्. निख्नार्षि এवः मार्टिनस्य এই मठावन्यी।

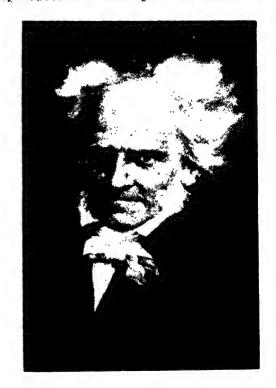
সোপেনহর লিখিয়াছেন—"চরিত্র অথবা ইচ্ছা লোকে প্রাপ্ত হর পিতার নিকট।" আর্থার পোকেনহরের পিতা ড্যানজিগ নগরের একজন সম্রাপ্ত বণিক ছিলেন। ভাহার খীয় ব্যবদারে বিশেষ দক্ষতা এবং চরিত্রের দৃঢ়তা ছিল। ^{সেজার} ছিল কক্ষা। আর্থারের পঞ্চন বর্ধ বর্মনে তিনি ড্যানজিগ ড্যাগ করি^{র।}

আমবার্গে বসতি স্থাপন করেন। পিতার ইচ্ছা ছিল পুত্র বাণিজ্য বাবসায় অবলম্বন করেন। আর্থার কিছুদিন এই বাবসায়ে নিযুক্ত ছিলেন, কিন্তু অবশেষে তাহা ত্যাগ করেন। ১৮০৫ সালে পিতা আন্মহত্যা করেন। ইহার পূর্বে পিতামহী উন্মাদ অবস্থায় প্রাণত্যাগ করিয়াছিলেন। সোপেনহরের মাতা বৃদ্ধিমতী ছিলেন, ওাঁহার রচিত ক্ষেকথানা উপভাস বিশেষ জনপ্রিয়তা লাভ ক্রিয়াছিল। কিন্তু তাঁহার মেজাজও রুক্ম ছিল। দাম্পতা জীবন তাঁহার হুখময় ছিল না। সামীর মৃতার পরে তিনি বন্ধনহীন প্রেমলীলায় প্রবৃত্ত হইলেন এবং ফামবার্গ ত্যাগ করিয়া উইমারে গিয়া বাস করিতে লাগিলেন। সোপেনহর বিষম রুষ্ট হইলেন। তাঁহার প্রন্তে স্ত্রীলোক সম্বন্ধে তিনি যে মত ব্যক্ত করিয়াছেন বছ পরিমাণে তাহা তাহার মাতার সহিত কলহের ফল। সোপেনহরের নিকট এক পত্তে মাতা লিখিয়াছিলেন—"ভোমার স**ক্ষ** আমার অস্মত, তোমার সহিত একত বাস করা খুব কঠিন। তোমার সমস্ত সদগুণ তোমার আত্মাভিমান হারা অভিভূত। অক্টের ক্রটিদর্শনের যে সাধারণ প্রবণতা ভোমার আছে, তাহা দমন করিবার অক্ষমতার জন্ত ভোমার সদ্গুণ পুৰিবীর কোনও কাজে লাগিল না।" মাতাপত্রে **१५क वाम क**त्रिवात वावच। **१२ल ।** चित्र २१ल माठ। यथन वक्त्रिकारक নিমন্ত্রণ করিবেন, তথন নিমন্ত্রিত অতিধির মত পুত্রও উপস্থিত হইবেন। অক্ত সময়ে তাঁহার মাতার নিকট যাওয়া নিষিদ্ধ হইল। গেটের সহিত মাতার বন্ধুত ছিল। একদিন তিনি মাতাকে বলিয়াছিলেন "ভোমার পুত্রের খ্যাতি একদিন চারিদিকে বিস্তীর্ণ হইবে।" ইহাতে বিপরীত ফল উৎপন্ন হইয়াছিল। মাতা নিজের খাতিতে সম্ভষ্ট ছিলেন। পুত্র ডাহার যশের প্রতিদ্বন্ধী হইবে, ইহা তিনি সহ্য করিতে পারেন নাই। একদিন কলহের সময়ে মাতা ঠেলা দিয়া পুত্রকে সিঁড়ির নিম্নে ফেলিয়া দেন। ক্লষ্ট হইয়া পুত্র তথন বলিয়াছিলেন যে, ভবিশ্বতে কেবল-মাত্র ভাছার মাতা বলিয়াই তিনি পরিচিত হইবেন। ইহার পরে মাতা আরও ২৪ বংসর জীবিত ছিলেন। কিন্তু সোপেনহর আর তাহার সহিত দেখা করেন নাই। মাতার সহিত সোপেনহরের যে দ্বন্দ ছিল তাহাও তাঁহার দুঃখবাদের একটা কারণ বলিয়া পরিগণিত ইইতে পারে। মাতৃক্ষেহের আফাদ যে কথনও পায় নাই, পরস্ক মাতার গুণার পরিচর পাইয়াছে, সংসারে ভালোবাসা আছে, তাহা মনে ক্রিবার ভারার কোনও কারণ নাই। বাররণের সহিত তাঁহার মাভার সম্বন্ধও এইরূপই ছিল।

মাতার সহিত কলহের ফলে সোপেনহরের চরিত্রে শুক্তর পরিবর্তন সংঘটিত হইরাছিল। তিনি গভীর ও সন্দিন্ধ-চিত্ত হইরা পড়িয়ছিলেন। কালকেও বিধাস করিতেন না। সকলকেই শক্র বলিয়া গণা করিতেন। নাপিত ছারা ক্রোর কার্য্য করাইতেন না, পাছে সে তাহার গলা কাটিয়া কেলে, এই ভরে। ধ্মপানের পাইপ তালাবছ করিয়া য়াখিতেন। পিতলে শুলি ভরিয়া শ্যার পাশে রাথিয়া নিলা ঘাইতেন। গোলাবাল করিয়া লালাবাল সহু করিতে পারিতেন না। তিনি লিখিয়াছেন, "বাহার গানসিক শক্তি বত বেকী, সে ভত কম পোলমাল সহু করিতে পারে।

হুতরাং কে কত গোলমাল সহু করিতে পারে, তাহা হারা তাহার মানসিক শক্তির পরিমাপ করিতে পারা হায়।" নিজের মূল্য সম্বন্ধে সোপেনহরের এত অত্যুক্ত ধারণা ছিল, যে তাহাকে একরকম মানসিক ব্যাধি (paranoia) বলিলে অত্যক্তি হয় না।

১৮০২ সালে সোপেনহর গটিনজেন বিধবিত্যালয়ে প্রবিষ্ট হন, সেথান হইতে বার্লিনে গমন করেন। বিশ্ববিত্যালয়ে তিনি ফিক্টে, শেলিং এবং স্লাগার ম্যাকারের বস্তৃতা শুনিতে যাইতেন। নিজের নির্বান্ধর অবস্থায় তাঁহার তীত্র অবস্তৃতি ছিল। পিতা, মাতা, স্ত্রী, সন্তান—
তাঁহার কেহই ছিল না। তিনি নিতান্তই একাকী ছিলেন, একজন বন্ধ থাকা আর একজনও না থাকা,



সোপেনহর

ইহার মধ্যে ব্যবধান অনন্ত।" ওাঁহার সময়ে যে জাতীয়তা-বোধ প্রবল হইর। উঠিয়ছিল, তিনি তাহার পান্দন অনুভব করেন নাই। ১৮১৩ সালে ফিক্টে কর্তৃক প্রভাবিত হইরা নেপোলিয়নের বিরুদ্ধে সংগঠিত সৈম্পদলে যোগ দিবার কর্মনা তিনি করিয়ছিলেন এবং তজ্জ্জ্ঞ অন্তাদিও ক্রম্ম করিয়ছিলেন। কিন্তু পেবে সে ইচ্ছা ত্যাগ করিয়ছিলেন। তাহার মনে হইয়াছিল নেপোলিয়ন অপেক্ষা তুর্বলতর চরিত্রের লোকেও যে আত্ম-প্রতিষ্ঠা এবং বৃহত্তর জীবনের জল্জ প্রেরণা অনুভব করে, কিন্তু প্রকাশ করে না, নেপোলিয়নে তাহাই ঘনীভূত এবং বন্ধনহীন আকারে প্রকাশিত হইরাছে মাত্র।" যুদ্ধবাত্রার কর্মনা বর্জন করিয়া তিনি দার্শনিক প্রবন্ধ রচনার মনোনিবেশ করিলেন এবং তাহার প্রথম প্রম্

Four fold Root of the Principle of Sufficient Reason গ্রন্থ লিখিয়া ১৮১০ সালে তিনি জ্বেনা বিশ্ববিভালয় হইতে ডিগ্রী প্রাপ্ত হইলেন। এই গ্রন্থে তিনি প্রাকৃতিক বিজ্ঞান, তর্ক বিজ্ঞান, তত্ত্ব বিজ্ঞান এবং চরিত্র বিজ্ঞানের মৌলিক তত্ত্বাবলীর ব্যাখ্যা করিয়াছিলেন।

সোপেনহরের প্রধান গ্রন্থ The World as Will and Idea ১৮১৯ সালে প্রকাশিত হয়। গ্রন্থের পাঙুলিপি প্রকাশকের নিকট পাঠাইরা সোপেনহর লিখিয়াছিলেন—এই গ্রন্থে প্রাতন কথার প্নক্ষজিনাই। ইহাতে আছে মৌলিক চিন্তার শৃদ্ধালাবদ্ধ সমাবেশ, সহজবোধা ওক্ষমী ও স্বমামত্তিত চিন্তা। ইহার পরে ইহা হইতে একশত অক্স প্রকের উদ্ভব হইবে। দান্তিক হইলেও এই উক্তি সতা। এই গ্রন্থে দর্শনের প্রধান সমস্তাসমূহের সম্পূর্ণ সমাধান করিয়াছেন বলিয়া সোপেনহরের এমন দৃঢ় বিশাদ ছিল যে, গ্রন্থ প্রকাশের বহু বৎসর পরে তিমি স্বকীয়শীল অক্সরীর (Signet ring) উপর গংবরে লক্ষ্পানোজত কিন্ক্সের (Sphinx) মূর্ত্তি অক্ষিত করিবার কল্পনার করিয়াছিলেন। *

স্বীয় গ্রন্থ সম্বন্ধে সোপেনহরের এত উচ্চ ধারণা থাকিলেও, ভাগার আবাদর হয় নাই। ১৬ বংসর অবিক্রীত থাকিবার পর অধিকাংশ প্রস্থ প্রকাশক কর্ত্তক অব্যবহার্য্য কাগজের মূল্যে বিক্রীত হইয়াছিল। কিন্তু প্রস্থের মূল্য সম্বন্ধে সোপেনহরের ধারণার পরিবর্ত্তন হয় নাই। যশঃ লাভে হতাৰ হইয়া তিনি যণঃ-শীৰ্ষক প্ৰবন্ধে লিকটেন বৰ্গের তুইটি উক্তি উদ্ধত করিয়া আম্মপ্রসাদলাভ করিয়াছিলেন। উক্তি ছুইটি এই—"এই প্রকার রচনা দর্পণ সদৃশ। গর্ণভে ইহার দিকে চাহিলে, ভাহার মধ্যে দেবদতের প্রতিরূপ আশা করিতে পারে না।" বিতীয়টি--"কোনও প্রস্তের সহিত কোনও মস্তকের সংঘর্গ হইতে যদি শুলুগর্ভ শব্দ নিৰ্গত হয়, তাহা হইলে তাহা যে গ্ৰন্থ হইতেই নিৰ্গত, তাহা কেহ বলিতে পারে না।" ভিনি আরও লিথিয়াছেন "যতই কেহ ভবিয়াৎ-বংশীয় দিগের সমানধর্মা হয়, তভই সে সমসাময়িকদিগের বৃদ্ধির বাহিরে গিরা পড়ে। যদি কোনও গায়ক জানিতে পারে যে তাহার ল্রোতাদিগের অধিকাংশ বধির এবং ধে সামান্ত করেক জনের শ্রুতিশক্তি আছে, তাহারা উৎকোচের বশাভূত, তাহা হইলে উচ্চকরতালি-ধ্বনিতে তাহার তষ্ট হইবার কারণ কোথায় ?"

কোনও বিশ্ববিষ্ঠালয়ে সোপেনহর তাঁহার দর্শনের ব্যাখ্যা করিবার

* এীক পুরাণে খ্রীলোকের মন্তক এবং সিংহের দেহ বিশিষ্ট Sphinx নামক এক দৈত্যের বর্ণনা আছে। এই দৈত্য Thebes নগরের অধিবাসীদিগের নিকট এক হেঁয়ালী বলিয়া সর্জ করিয়াছিল যাহারা হেঁয়ালীর সমাধান করিতে আক্ষম হইবে তাহাদিগকে সে হত্যা করিবে। যদি কেই ইহার প্রকৃত উত্তর দিতে সমর্থ হর তাহা হইলে যে পর্ববিভাগি সে উপবিষ্ট ছিল তাহা হইতে লক্ষ প্রদান করিয়া নিমে পতিত হইবে।

CEdipus হেঁয়ালীর প্রকৃত উত্তর দিয়াছিল এবং sphinx লক্ষ প্রদান

Carl manusch attender ertrenferen 1

ম্যোগ সন্ধান করিতেছিলেন। ১৮২২ সালে তিনি বার্ণিন বিশ্ববিদ্যালয়ে Private docent নিযুক্ত হইলে এই ম্যোগ উপস্থিত হইল। হেগেল তথন বার্ণিনে মধ্যাপনা করিতেছিলেন। তিনি যে সময়ে বিশ্ববিদ্যালয়ে বফুকা করিতেন, সোপেনহর ইচ্ছা পূর্বক আপনার বফুকার জন্ম সেই সময়ই নির্দিষ্ট করিলেন, আশা করিয়াছিলেন হেগেলের বফুকা না শুনিরা চাত্রগণ দলে দলে তাহার অধ্যাপনা কক্ষে উপস্থিত হইবে। আশা ফলবতী হইল না। কেহই তাহার বক্তৃতা শুনিতে আসিল না। মনঃক্র হইয়া তিনি পদত্যাগ করিলেন এবং প্রতিশোধ লইবার জন্ম হেগেলকে ভীবণ ভাবে আক্রমণ করিয়া কয়েকটি প্রবন্ধ নিগিলেন।

১৮৩৬ সালে সোপেনছরের "On the Will in Nature" নামক প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়। ১৮৪১ সালে The two Ground Problems এবং ১৮৫২ সালে Parerga et Parlia-pomena ছুই থণ্ডে প্রকাশিত হয়। শেষাক্ত নামের অর্থ "উপজাত ও উচ্ছিন্ত"।

বিশ্বিভালয় হইতে ডিগ্রী প্রাপ্ত হইবার পরে বেদান্ত-দর্শনের প্রতি সোপেনহরের মনোযোগ আকৃষ্ট হইয়াছিল। তিনি গভীর আগহের সহিত পারদীক ভাষায় অনুদিত উপনিবৎ পাঠ করিয়াছিলেন। উপনিবৎ সম্বন্ধ তিনি লিখিয়াছেন "সমগ্র পৃথিবীতে সংস্কৃত মূল উপনিবৎ ভিন্ন উপনেখতের (উপনিবদের পারত্য ভাষায় অকুবাদ) মত হিতকর ও আন্ধোন্নতিকর অত্য কিছুই নাই। জীবনে আমি ইহা হইতে সান্ধনা প্রাপ্ত হইয়াছি, মৃত্যুতেও ইহাই আমার সান্ধনা হইবে।" তিনি তাঁহার একমাত্র সঙ্গী প্রিয় কুকুরের নাম রাপিয়াছিলেন "আত্মা"। এই কুকুরকে সাধারণে গ্রাহার পুত্র (Young Schopenhauer) বলিত।

১৮৩১ সালে বার্লিনে কলেরার ভীষণ প্রকোপ হয়। হেগেল ৪ সোপেনহর উভয়েই বার্লিন হইতে পলায়ন করেন। কলেরার প্রকোপ অশমিত হইবার পুর্বেই ফিরিয়া আসিয়া হেগেল কলেরায় আক্রান্ত হইয়া প্রাণত্যাগ করেন। কিন্ত সোপেনহর আর বার্লিনে ফিরিয়া আদেন নাই। জীবনের অবশিষ্ট কাল তিনি ফ্রাল্কফোর্টে অতিবাহিত করিয়া-ছিলেন। তথায় হুইটি যুৱ ভাড়া লইয়া তিনি ত্রিশ বৎসর বাস করিয়া ছিলেন। এক ইংরেজি হোটেলে তিনি আহার করিতেন। নৈশভোগ আরম্ভ করিবার সময় প্রতিদিন তিনি পকেট হইতে একটি মুদ্রা বাহির করিয়া টেবিলের উপর রাখিতেন; খাগ্য-পরিবেশক ভুতা আশা করিউ, সে মুদ্রা তাহারই জ্ঞা, কিন্তু ভোজন-শেষে প্রত্যুহই সোপেনহর সেই মুদ্রা তুলিয়া লইয়া পকেটে রাখিয়া দিতেন। মনঃকুর ভূতা একদিন এই অত্ত আচরণের কারণ জিজ্ঞাদা করিলে দোপনহর বলিয়াছি^{লেন} "ওটা বাজির মুদ্রা। যেদিন অদুরে ভোজনরত ইংরাজ অফিসারদি^{গ্রে} যোড়দৌড়, যোড়া, কুকুর ও ল্লীলোক ভিন্ন অস্ত কোনও বিষয়ের আলোচনা করিতে শুনিব, সেদিন ঐ মূলা Poor Box এর ম^{রো} क्षित्रा निव।"

সোপনহর আশা করিয়াছিলেন একদিন তাঁহার প্রতিভা ^{থীকুত} ভালের বিজ্ঞানে কিল্লাক্রিয়াই উল্লেখ্য জ্ঞান জ্ঞান বাঁটো আদর হইল না। জার্মান অধ্যাপকগণ শিক্ষাব্যবদারের বহিঃত্ব কোনও ব্যক্তির তাহাদের রাজ্যে প্রবেশ অনধিকার-প্রবেশ বলিয়া গণ্য করিতেন। অধ্যয়ন-প্রিয় সাধারণ লোকে যাহাতে সোপেনহর অথবা তাঁহার প্রস্তের নাম শুনিতে না পায়, তাহার জন্ম তাহার চেষ্টার ক্রটী করেন নাই। সোপেনহর দীর্ঘকাল কালের প্রাহীক্ষা করিয়াছিলেন। অবশেষে তাহার আশা ফলবহী হইল। ১৮৫৩ সালে ইংলত্তের West Minister Gazette-এ এক প্রবেশ্ধ সোপেনহরের গ্রন্থের স্থপ্যতি বাহির হইল। জার্মানগণ জানিতে পারিল তাহাদের মধ্যে এমন একজন দার্শনিক আছেন, যাহাকে সাধারণ লোকেও বৃঝিতে পারে। সমগ্য ইয়োরোপে

তাঁহার নাম বিখ্যাত হইছা পড়িল। দর্শনশান্তের সহিত যাহাদের পরিচর
ছিল না, তাহার হুর্বোধা ভাষা যাহারা বৃঝিতে পারিত না, তাহারা
দেখিল দোপেনহরের দর্শন বৃঝিতে কট্ট হর না। তাঁহার যশং চারিদিকে
বিস্তার্ণ হইরা পড়িল। সাময়িক পত্রে তাঁহার সম্বন্ধে প্রকাশিত প্রবন্ধ
দোপেনহর আগ্রহের সহিত পাঠ করিতেন। ১৮৫৮ সালে তাঁহার
সপ্রতিত্ম জন্মদিবদে চতুর্দিক হইতে সকলে তাঁহাকে অভিনন্ধন
করিয়াছিল। ছুই বংসর পরে ১৮৬৬ সালের ২১শে সেপ্টেম্বর তারিধে
হঠাং টাহার প্রাণবিয়োগ হয়। মৃত্যুর প্রের তিনি ইচ্ছা প্রকাশ
করিয়াছিলেন যেন মৃত্যুতেই টাহার অন্তিম্বের সম্পূর্ণ বিনাশ হয়।

রজনী সেনের গান

শ্রীজয়দেব রায় এম-এ, বি-কম্

কবি রজনীকান্ত দেনের গান আজে আর কেহ গাহেনা! রজনী দেন নামে একজন কবি ছিলেন দে কথাও দেশবাদী বোধহয় ভূলিয়া গিয়াছেন, পাঠাপুস্তকে স্থানপ্রাপ্ত ছুই একটি গান বাঙীত তাঁহার কোন দানই কেছ মনে রাথে নাই!

বাংলা গানের যে ধারা • আধুনিক যুগ ় পর্যান্ত প্রবাহিত হইয়া আদিতেছে, ভাহাতে স্থমার্লিড (Refined) সুর বাধিয়াছেন পাঁচজন गैिकदि-- व्रवीसमाध. विद्यानानान. অত্ৰপ্ৰসাদ, বজনীকান্ত **এ**वः नङक्षण। त्रवी<u>न्त्र</u>नार्थित স্থ্যমোহে মৃগ্ধ বস্বাদী গান অবহেলা করিতেছে। রজনী সেনের গান र्मिंछ वानी, मधूत श्रवस्ति, উচ্চাঙ্গের রাগ-রাগিণী, অন্তর্নিহিত গভার ভাব সত্ত্বেও আজ বিস্মৃতপার! ইহার জন্ম একমাত্রদায়ী, মনে হয়, ভাঁহার শেষ জীবনের দারিস্তা। রজনী দেন ধনীর পুত্র ছিলেন না, ব্যারিষ্টারও ছিলেন না, বিলাত শাইবার সৌভাগাও তাহার হয় নাই; স্বতরাং গায়কেরা তাহার গানকে বুকা কবিবার দায়িত গ্রহণ করেন নাই, তাঁহার গানেরও শীযুক্ত দিলীপকুমার রায় অবসান হইয়াছে তাহার সঙ্গে! ক্বির বংশধর, তিনি স্বয়ং প্রসিদ্ধ গায়ক হইয়াও কেন যে রজনী সেনের ^{গানের} প্রচারে বিরত, তাহা জানি না! আমরা এতই অলম যে, শামাদের জোর করিয়া কিছ না দিলে, আমরা গ্রহণ করিতে লজ্জা विश् कित्र ! ब्रक्कनी मानव शान यहि दिकार्छ, मजलिएन, विश्ववतः রেডিওতে মধ্যে মধ্যে প্রচার করিবার ব্যবস্থা হর, বাসালী তাহা হইলে নি^{শচরই} এই ছুর্ভাগা কবির প্রতি সম্মান প্রদর্শন করিবে !

রজনীকান্ত অতুলপ্রসাদের মতই গান ছাড়া আর কিছুই লেখেন নাই! কাশিমবাজারের মহারাজা মণী<u>ক্রচন্দ্র নন্দী</u> মহাশর রজনীকান্তের ^{শেষ} জীবনে প্রত্থাবক ছিলেন। কবি তাহার কাব্যগ্রন্থে পঞ্সুশে এই বদাস্য শুদ্রলোকের প্রশংসা করিয়াছেন। শেষ জীবন তিনি দারিস্তা এবং অব্যাস্থ্যের সঙ্গে সংগ্রাম করিয়াছেন।

'অভয়া' কাব্যগ্রন্থের ভূমিকায় বলিতেছেন—"আমি সঙ্কটাপন্ন পীড়িত, রোগশ্য্যাতে প্রফ দেখিয়া দিবার সামর্থ্য আমার নাই, স্বতরাং এই গ্রন্থে-----"

"আনলময়ী" কাব্যগ্রন্থের ভূমিকায় তাঁহার প্রগাঢ় ভগব**ং ভক্তি** পরিকাট হইতেছে—"জগজননীর পিতৃগৃহে আবিভাব 'আগমনী' এবং কৈলাদাভিমুখে তিরোধান, 'বিজয়া' নামে অভিহিত। এই কুল্ল স্কীত-পুত্তকর আন্তংশ 'আগমনী' ও শেষাংশ 'বিজয়া'। পাঠকগণ পুদঃ পুন: শুনিয়াছেন—যে যথা মাং প্রপদ্যন্তে ভাংভবৈব ভজামাহং— যাঁহারা যে ভাবে আমার শরণাপল হল, আমি সেই ভাবেই তাঁহালিগকে অনুগ্ৰহ করি। সূত্রাং সম্যুক ও যথাবিধ একাগ্ৰ সাধনার বে ভগবানকে সন্তানরূপে পাওয়া যায় না, তাই বা কেমন করিয়া বলি ? তিনি তো ভক্তের ঠাকুর, যে তাঁহাকে যে ভাবে পাইয়া তুই হয়, তিনি দেই ভাবেই তাহাকে দর্শন দেন: এ কথা সতা না হইলে যে তাঁহার করণাময়তে, তাহার ভক্তবৎসলভার কলত হয়। ধর্মজীবন ভারতবর্ষ চিরদিন এই ধারণার কর্মকেত্রে অমুপ্রাণিত ও অকুভোভর। উৎকট-রোগ-শ্যার, তুর্বল হল্তে এই দলীতগুলি লিখিরাছি। আর কোনও আকর্ষণ না ধাকিলেও ইহাতে জগদভার মাম আছে মনে করিয়া পাঠক অনাদর করিবেন না, এই বিনীত প্রার্থনা।"

রন্ধনীকান্ত দেন কেবল 'সাধনসঙ্গাত'ই রচনা করেন নাই, কৌতুক সঙ্গীত বা হাসির গানেও তাঁহার বিশেব নাম ছিল। রবীন্দ্রনাথের কৌতুক সঙ্গীতে বিন্দুমাত্রও হাসি নাই, সেইগুলি Light songs হাত্র ! হাসির গানে বিজেন্দ্রনালই সর্বন্দের হাসির কালিব কালিব কালিব ভদী বা (Dramatic Style) ফুল্বর ! রজনী দেনের হাসির গান ছিজেন্দ্রলালের সমঞ্জেণীর।

ষে লোকটি চিরজীবন ছঃখভোগ করিয়া গেলেন, তিনি যে কেমন করিয়া এমন কৌতুক বিতরণ করিলেন তাহা ভাবিলে আশ্রুষ্ঠ্য হইতে হয়। রঞ্জনী সেন লাঞ্ছিত কবি, তাহাই উাহার হাদির গানে Pony বা লেবের ভাগই বেশি! ছিজেন্দ্রলালের বিশুদ্ধ Fun তাহার গানে অল্প!

স্বর্গীয় অক্ষয়কুমার মৈত্রেয় রজনী দেনের বিশেষ বন্ধু ছিলেন। রজনী দেনের গানের পরিচয়ে তিনি বলিয়াছেন—

"কাহারও বাণী গা**ভে**, কাহারও পা**ভে**, কাহারও বা সংগীতে আভব্যক্ত! রজনীকান্তের কান্তপদাবলী কেবল সংগীত। এই কৰা ৰলিবার ক্ষন্তই এই সংক্ষিপ্ত নীরস গভের অবতারণা।"

অপর একজন সমালোচক (সারদাচরণ মিত্র) হন্দর ভাষার কবির গানের পরিচর দিয়াছেন—"আশ্চয়ের বিষয় এই যে রজনীকান্ত মৃত্যাশ্যার শরন করিরাও হৃদয়াকাশে অনস্ত বিখের প্রতিমা গড়িয়া কবিতালিখিতে সমর্থ ইইয়াছেন! রোগের যাতনা, অর্থাভাবের ক্লেশ, পুত্রকলত্র নিরাশ্রয়ে ফেলিয়া ইহসংসার ত্যাগের চিন্তা কিছুতেই তাহার কোমল হৃদয়কে ক্লিপ্ত করিতে পারে নাই। তাহার হৃদয় পায়াণের মত নহে, কিন্ত কায়রসে এরাপ নিমজ্জিত যে চতুর্দিকে সেই রস ভিন্ন আর কিছুই নাই। রামশ্রসাদ ভাব্ক ছিলেন, বভাব কবি ছিলেন! মহাশক্তি তাহাকে শক্তিমান করিয়াছিলেন, বাল্দেবীও সঙ্গে সঙ্গে মহাশক্তির পার্থে ছিলেন। কবির 'আনক্ষমমী' কায়া পাঠ করিতে করিতে রামশ্রসাদকে মনে পড়ে। তবে সেকালের ভাষার ও একালের ভাষার পার্থক্য আছে; কিন্তু দার্শনিক ভাবের পার্থক্য নাই, করণ রসের পার্থক্য আছে; কিন্তু দার্শনিক ভাবের পার্থক্য নাই, করণ রসের পার্থক্য নাই।"

রবীন্দ্রনাথ ও কান্তকবির ভগবৎ-অনুভূতির আন্তরিকতার প্রশংসা করিতেন—"সিদ্ধিদাতা ত আপনার কিছুই অবশিষ্ট রাথেন নাই, সমস্তই তিনি নিজের হাতে লইয়াছেন—আপনার প্রাণ, আপনার গান, আপনার আনন্দ সমস্ত ত তাঁহাকেই অবলখন করিয়া রহিয়াছে—অক্স সমস্ত উপকরণ ত একেবারে তুচ্ছ হইয়া গিয়াছে। ঈশ্বর, বাঁহাকে রিজ্ করেন, তাঁহাকে তেখন গভীরভাবে পূর্ণ করিয়া থাকেন, আজ আপনার জীবন-সজীতে তাঁহাই ধ্বনিত হইতেছে।"

১৮৬৫ খুঠান্দে পাবনা জেলার 'ভাঙ্গাৰাড়ী' গ্রামে কবির জন্ম হর। রাজশাহী জেলা কোর্টে আইন ব্যবসা তাহার জীবনের উপজীবিকা ছিল। ১৯১০ খুঠান্দে মেডিকেল কলেজ হাসপাতালের ১২নং কটেন্দে ক্যান্সার রোগে কবির মৃত্যু হয়।

বাংলার অধিকাংশ কবির জীবনের স্থার রজনী সেনের জীবন ও বৈচিত্র্যাহীন ! রবীশ্রনাথ তাঁহার বিশ্বস্ত্রমণ এবং বিশ্বভারতী প্রতিষ্ঠার জন্ত জীবনধারাকে নানা বিচিত্র অংশের মধ্যে প্রবাহিত করিয়াছিলেন, সুধের ললিত ক্রোড়ে সারাদিন বাঁশী বাজাইয়া তিনি ভুবনকে উপভোগ

রজনীকান্ত হৃকঠের অধিকারী এবং হৃগায়ক ছিলেন; কিন্তু তাঁহার সকল গানের হৃত তাঁহারই দেওরা কিনা সন্দেহের বিষয়! "কল্যাণী" গীতিসংগ্রহে তাঁহার নিজস্ব ভূমিকাই এই সন্দেহের মুল।

"বাণী'তে রাণিণী ও তাল সন্নিবিষ্ট ছিল না, এজস্থ কোনও কোনও সমালোচকের তীত্র লেখনী অনেক শ্লেষ উদ্দীরণ করিয়াছে। এবার সঙ্গীতপ্রিয় জনসমাজের সে অনুযোগের ছল রাখি নাই। সঙ্গীতে আমার অধিকার নাই। স্থতরাং সঙ্গীতজ্ঞ ব্যক্তিগণের উপদেশে ও সাহায্যে তাল ও রাণিণী প্রদন্ত হইল। তথাপি তরিষয়ে সঙ্গীত-বিশারদদিণের সম্পূর্ণ স্বাধীনতা আছে; তাহারা নিজ নিজ কচি অনুসারে স্থর-সংযোগ করিতে পারেন।"

রবীন্দ্রনাথের যুগের অঞ্চান্ত কবি-স্থরকারের রচনার স্থায় রজনী সেনের কাব্য এবং স্থরে রবীন্দ্রনাথের প্রচুর প্রভাব রহিয়াছে। এমন কি ভাহার বহু গান রবীন্দ্রনাথের রচনা বলিয়া চলিয়া আসিতেছে। এই-প্রকার একটি গানের উল্লেখ করিভেছি—

মিশ্ৰ কানেড়া—একভালা

আমি তো তোমারে চাহিনি জীবনে, তুমি অভাগারে চেরেছ।
আমি না ডাকিতে, হৃদয়-মাঝারে নিজে এনে দেখা দিয়েছ।
চির-আদরের বিনিময়ে সথা, চির অবহেলা পেয়েছ।
(আমি) দ্রে ছু'টে ষেতে, ছু'হাত পদারি, ধরে টেনে কোলে নিয়েছ।
'ওপথে যে'ওনা ফিরে এদ', বলে কানে কানে কত ক'য়েছ।
(আমি) তবু চলে গেছি, ফিরায়ে আনিতে পাছে পাছে ছুটে গিয়েছ।
(এই) চির অপরাধী পাতকীর বোঝা হাসি-মূথে তুমি ব'য়েছ।
(আমার) নিজ হাতে গড়া বিপদের মাঝে, বুকে ক'রে নিয়ে রয়েছ!

উপরের গানটি রবীশ্রনাথ রচিত একটি 'প্রক্ষসঙ্গীত' নামে খ্যাতি অর্জন করিরাছে! তাঁহার গান এইভাবেই আমাদের হুদর হরণ করিরাছে। রজনীকান্তের গানের সহজ স্থরটি আন্তরিকতার পূর্ণতা কাভ করিরাছে, তাহাই তাহার প্রকাশ ভঙ্গীট স্থর কৌশল বর্জিত, যেমন ভৈরবীতে—

> তব চরণ নিমে, উৎসবময়ী ভাষ-ধরণী সরসা; উর্দ্ধে চাহ, অগণিত মণি-রঞ্জিত নভো নীলাঞ্চলা, সৌম্য-মধুর দিব্যাক্ষনা, শাস্ত-কুশল দরশা!

প্রায় আবৃত্তিরই রূপভেদ।

রজনীকান্তের অতি প্রসিদ্ধ 'জাতীয় সংকল্প সঙ্গীত'—

"মারের দেওরা মোটা কাপড় মাধার তুলে নেরে ভাই;
দীন-ছখিনী মা যে ভোদের তার বেশি আর সাধ্য নাই।"

(মূলতান, গড়থেষ্টা)

এক সমরে পথে পথে গাওয়া হইত ! কবির ভগবং-শীভিগুলির মধ্যে 'কেন বঞ্চিত হব চরণে ?' তাহার

न-कविता की निवासकी के उन्होंने का ताजा ज---

মিত্র খামাজ ; জলদ একতালা

কেন বাঞ্চত হব চয়ণে ?

আমি কত আশা ক'রে বসে আছি, পাব জীবনে, না হয় মরণে !

আহা, তাই যদি নাহি হবে পো,—

পাতকি-তারণ তরীতে, তাপিত আতুরে তু'লে না লবে গো ;—
হ'রে, পথের ধূলার অন্ধ, এনে, দেখিব কি খেরা বন্ধ ?
তবে, পারে ব'মে, "পার কর" ব'লে, পাপী কেন ডাকে দীন-শরণে ?

আমি শুনেছি, হে তৃধা-হারি!

তুমি, এনে দাও তারে প্রেম-অমৃত তৃষিত যে চাহে বারি ;

তুমি, আপনা হইতে হও আপনার যার কেহ নাই, তুমি আছ তার;

এ কি, সব মিছে কথা ? ভাবিতে যে বাখা

वড़ वांद्भ, व्यंड्र, मद्राम !

রজনীকান্তের এই গান্টির একদা প্রসিদ্ধি ইহার প্যার্গতি রচনার প্রমান হইতেই জানা যার! 'প্যার্গতি' কবিতার ব্যঙ্গ নয়, তাহার একপ্রকারের appreciation!

কেন বঞ্চিত হ'ব ভোজনে ?

মোরা কত আশা করে' নিজবাসা ছেড়ে

খেতে এসেছি এখানে ক'জনে।

ওগো তাই যদি নাহি হবে গো,

এত কি গরজ তোমার বাড়ীতে ছুটিয়া এসেছি কবে গো 📍

र'रा भूभात कालात अक,

এসে, দেখিব কি থাওয়া বন্ধ ?

তবে, ডাড়াভাড়ি 'পাত কর' বলে' ডাক তব আস্মীয় বজনে।

মোরা শুনেছি তোমার বাড়ী,

চাহে বদি কেউ একহাতা কিছু এনে দের হাঁড়ী হাঁড়ী।

তুমি, পাবনা হইতে দধি ভারে ভার

মালদহ হতে এনেছ আচার,

একি, সবি মিছে কথা ? দিওনাক ব্যথা

মোরা, থাবনাত বেশী ওজনে।

(द्रमकपय পृष्ठी ৮)

কবি সমদামরিক সঙ্গীতের একজন অমুরাগী ভক্ত এবং রসিক শোডা ছিলেন; রবীজ্ঞনাথ, ঘিজেল্রলাল এবং অতুলপ্রসাদের গানের স্বরের আমুরূপ্যে ভিনি অনেক গান রচনা করেন! 'কেন বঞ্চিত হব চরণে!' গানটির হার অবলখনে ভিনি পরে নিজেই অপর একটি গান রচনা করেন—এইটি কোন শিক্ষকের বিদায় উপলক্ষে গাওয়া হয়—

তুমি সভা কি যাবে চলিয়া?

পুত্ৰকণ্ঠা প্ৰিয় শিশুদলে চেতেছ আজি কি বলিয়া ?

মোরা-ভাসি বে অঞ নীরে

ভোমার গুল্প স্থতিটুকু লয়ে যাব কি হে গৃহে কিরে।

রবীন্দ্রনাপের বিখ্যাত ত্রহ্মদঙ্গীত---

"তোমার কথা হেখা কেহ তো বলে না,

করে শুধু মিছে কোলাহল।

স্থাসাপরের ভীরেতে বসিয়া

পান করে শুধু হলাহল।"

ইমন ভূপালী, একতালার রচিত স্থরে রজনী দেনের গান—

-- "আমি, সকল কাজের পাই হে সময়,

ভোমারে ডাকিতে পাইনে;

আমি, চাহি দারা-হত-হুখ-সন্মিলন,

তব সঙ্গস্থ চাইনে।"

"ভোমারি রাগিণী জীবন কুঞ্জে"র হুরে রচিত রজনী সেনের পান—

(इंमन का ७ ग्रानी)

"ভীতি-সঙ্কুল এ ভবে, সদা তব

সাৰে থাকি যেন, সাথে গো"

রবীক্রনাপের--

"দাঁড়াও আমার আঁপির আগে।

যেন তোমার দৃষ্টি হৃদয়ে লাগে ■"

বেহাগ ; তেওরায় রচিত হুরে রজনীকান্তের গান—

—"ত্ৰাও তোমার অমূত্বাণী,

অধ্যে ডাকি' চরণে আনি'।"

অতুদপ্রসাদ সেনের জাতীয় সঙ্গীত —

"ওঠ গো ভারত লক্ষ্মী, উঠ আদি জগত জন প্রাা"র

'মিশ্র' হুরে রচিত রজনী দেনের গান—

— আকুল কাতর কঠে, প্রভু, বিশ্ব, চরণ অভিবন্দে।

পাপ-ভাপ সব নাশি, কর প্লাবিত চির-মকরকে 🛊

বাঞ্চিত সাধন মুক্তি, দেহ ভক্তি, ওছে অচল শরণ, স্থসিল্পু !

দেবতা গো, হের ওভ চকে, শান্তি নিবাদ লহ তুলি বক্ষে,

মাগিছে কোটি তপন শশী, মজ্জন চির-স্থ-নীরে গো।

বন্ধন মোচন কর হে, প্রভু, বার' এ চির পথ শ্রান্তি ;

কাভরে কহে এহভারা "প্রভু, দেহ চরণ তলে শান্তি ;

শক্ষিত শত্তিত শৃষ্মে, হতপুণ্যে, প্রভূ, দিবে না কি যাচিত মোক 📍

দেবতা গো-----

সম্ম ছঃসহ শক্তি, প্ৰভূ, রোধ এ ঘূর্ণিত চক্র ;

কর হে নির্দেশ শৃষ্ঠা, যতা, সম্কট পৰ ঋষ্ণু বক্র ;

শুম্বিত কর হে মুহুর্ম্বে, তলে, উদ্বে,

(যত) অগণিত শশী, রবি, রুজে ; দেবতা গো************

বিজেল্ডলাল রায়ের "আমরা বিলাত কের্তা ক'ভাই" গানটির স্থর বোধ হয় কবিয় অতি প্রিয় ছিল, তাঁহার ঐ ক্রে অনেকগুলি হাসির গান পাইতেছি— (১) আমরা, মোক্তারি করি ক'জন, (২) আমাদের ব্যব্দা পৌরোহিত্য, (৩) দেখ, আমরা দেওয়ানী হুজুর, (৪) আমরা Dey কি Ray কি Sanyal, (৫) দেখ আমরা জজের Pleader, মিশ্র ইমন কল্যাণে "দেখ আমরা হুছিছ পাশ করা ডাক্তার মন্ত"

কীর্ত্তনের নানাপ্রকার চন্তে রজনীকান্ত গান গাঁবিয়াছিলেন। আঁথর বাছল্যে তাঁহার কীর্ত্তন মহাজন পদাবলীর কথা প্ররণ করাইরা দের—(১) এই মোহের পিঞ্চর তেকে দিয়ে হে (গড় থেম্টা) (২) বয়ে যাক্ হরি, প্রেমেরি বস্থা (এই) শুক স্থানর মাঝে (জলদ একতালা) (০) আর ধরিদ নে, মানা করিদ নে (৪) আজি জীবন-মরণ সন্ধিরে।

'মনোহর সাঁই' কীর্ত্তনের গীতিরীতিতে রচিত—(১) ঘেমনটি তুমি দিরেছিলে মোরে, (২) আ্মামি পাপনদীকুলে পাপতরুম্লে বাধিয়াছি পাপবাসা (জলদ একতালা), (৩) আহা কত অপরাধ ক'রেছি। আমি তোমারি চরণে (৬) তুমি স্থন্দর, তাই তোমারি বিধ স্থন্দর শোভাময় প্রভৃতি—

আঁথর বর্জিত কীর্ত্তনের মধ্যে ভাঙা হংরে উল্লেখযোগ্য ঝাঁপতালে (১) "নাথ, ধর হাত, চল সাথ, (২) আয় শুহ, গণপতি কোলে আয়, (৩) যামিনী হইল ডোর (কাওয়ালি) প্রভৃতি

বাউলের স্থরে রজনী সেনের গানগুলির মধ্যে কতকগুলিতে দেহতত্ব এবং বৈরাগ্যের ভাবটি এবং কয়েকটিতে দেশপ্রেম এবং কয়েকটিতে Mystic ভাব প্রকাশ পাইয়াছে। যেমন—

(১) আমার ডেকে ডেকে, ফিরে গেছে মা (গড় পেমটা), (২) তুমি আমার অন্তন্তনের থবর জান (৩) চাঁদে চাঁদে বদ্লে যাবে, দে রাজার এমন আইন নয় (আড় পেমটা), (৪) আজ বদি দে, নারাজ হ'রে রয়, (৫) ভাসা রে জীবন-তর্ত্তা ভবের সাগরে (কাহার্বা), (৬) আঁকড়ে ধরিস্ যা কিছু, তাই ফক্ষে যায়, (৭) আছ ত' বেশ মনের হবে, (৮) যমের বাড়ী নাই কোনও পাঁজি, (৯) তুই লোকটা ভো ভারি মন্ত, (১০) তারে ধর্বি কেমন করে ?, (১১) এই দেহটার ভিতর বাহির ছাই।

রামপ্রদাদী ভাব কেবল স্থেই নম্ন কাস্তকবির বহু গানের বস্তুতেও প্রকাশিত। যেমন (২) ঝি'ঝিট রাগিগাতে—

পার হলি পঞ্চালের কোটা। আরে ছদিন বাদে মম রে আমার. ফুল ঝ'রে যাবে, খাক্বে বোঁটা।

* * তোর খাওয়া পরা চের হয়েছে, এখন পারের কড়ি জোটা.
 কান্ত বলে সব ছেলে দিয়ে, তুলে নে' কয়ল আয় লোটা ।

(২) বাউলের হুরে কবি সাধকজন-হুলভ বৈরাগ্যের ভাবটি ফুটাইয়াছেন—

আর কি ভাবিস্মাঝি বসে ?

এই বাভাদে পাল তুলে দিয়ে হাল ধরে থাক ক**লে**।

* * * মরণ সিল্পুমাঝে গিয়ে পড়্বি রে নিজ কর্মলোবে।
 রাম্প্রসাল দেনের সাধক জীবন এবং তাঁহার ভজনের সং

রামপ্রদাদ দেনের সাধক জীবন এবং তাহার ভজনের সকে কবি রলনী সেনের জীবনের এবং সাধনার বেশ মিল আছে! রামপ্রদাদী ক্ষে তাহার গানের মধ্যে উল্লেখযোগ্য— (১) মা, আমি যেমন ভোর মন্দ ছেলে, (২) আমায় পাগল করবি কবে p

যশোহরের 'মধুকাইন' বা মধুস্দন কিল্লরের কীর্ত্তনের মুদ্র লয় এবং ধীরগতি একটি বিচিত্র স্থরভঙ্গী। ইহার নাম চপকীর্ত্তন। রজনী দেনের এই চত্তে রচিত গান—

(১) ধক্ত মানি মেনকাকে (ঠেস্কাওলালি) (২) গা ভোল গা ভোল গিরিরাণি। সংস্কৃত ছলের উচ্চারণ ভঙ্গীর হ্রম্ব এবং দীর্ঘ স্বর ভেদে গাহিবার নির্দ্ধেশ দেওয়া আছে উাহার করেকটি কীর্ত্তনে—(১) কনকোজ্বল-জলদ-চুম্মি মণি-মন্দির মাঝে রে এবং (২) প্লাবিভ গিরি-রাজ-নগর কি পুলক-মকরন্দে! জয়দেবের গীতগোবিন্দের 'শারগরলথগুনং' স্থারে রচিত একটি গান আছে—

> "আজি, শিধিল সব ইন্দ্রিয়, চরণ-কর নিজ্ঞিয়, তিমিরময় আণ্ডিয়ে গেহ; কে, শাস্তি-হুপ দূর করি', বজ্ঞ করে কেশ ধ্রি',

> > বেগভরে শুম্মে ভোলে দেহ !"

রজনী সেনের দেশ-শ্রেম উদ্দীপনার গানও আছে, কিন্তু কবির এমন ছুর্ভাগ্য যে, সেই গানগুলিও আজ আর কেহ গাহিতে জানেন না! ভাহার স্বদেশী গানের মধ্যে—

- (১) ভারতকাবানিকুঞ্জে,—জাগ স্থমকলময়ি মা! (ভৈরবী, কাওয়ালি)
 - (২) দেশা আমি কি গাহিব গান (গৌরী; একতালা)
 - (৩) জয় জয় জনমভূমি, জননি ! (মিশ্র পরজ, কাওয়ালি)
 - (৪) ভামল-শক্ত-ভরা (ভৈরবী; কাওয়ালি)
 - (৫) নমোনমোনমোজননি-বঙ্গ (ফুরটমলার)

সংকীর্ত্তনের স্থরে ছলে 'হিল্পু-মুসলমান-'মিলন-গীতিটি আঞ্জ এই সাম্প্রদায়িক বিরোধের দিনে শ্বরণীয়।

আয় ছুটে ভাই, হিন্দু মুসলমান!
এ দেখ ঝ'ব্ছে মায়ের ছ'নয়ান।
আঞ্জ, এক ক'রে দে স্বায়া নামাঞ্জ

মিশিয়ে দে আজ, বেদ কোরাণ।

(জাতি ধর্ম ভূলে গিয়ে রে, হিংসা বিষেষ ভূলে গিয়ে রে)।

১০১২ সালে রজনী সেন ভাঁছার জন্মভূমি 'ভাঙ্গাবাড়ী'র (পাবনা)
নিকট এক গ্রামে শাক্ত এবং বৈষ্ণব সম্প্রদারের মধ্যে ভীত্র রেষারেবি
এবং মনোমালিস্ত লক্ষ্য করেন; কবি একটি কীর্ত্তন গান রচনা করিয়া
সেইখানে গাহিয়াছিলেন—

ভেদ বুদ্ধি ছাড় 'হুৰ্গা', হরি, দুই তো নর, এ কি রে হুই পরিচয়। শাক্ত, দে ভাই 'হরিধ্বনি',

বৈক্ষণ, বল, কালীর' জয়। থেমন, জলকে বলে কেউ বা 'পানি',

(क्छ वा 'वाति', (क्छ वा 'शम' i

ভারতীয় উচ্চাঙ্গ রাগরাগিণী অবলঘনে রচিত রজনী সেনের গানগুলি হইতে তাঁহার স্বরদক্ষতার যথেষ্ট পরিচয় পাওয়া যায়! তাঁহার বিশুদ্ধ রাগপ্রধান গানগুলির মধ্যে কয়েকটির উল্লেখ করিতেছি—

- (১) বেহাগ; কাওয়ালি—কবে ত্ৰিত এ মরু ছাড়িয়া যাইব তোমারি রসাল নক্লে। (২) পুরবী; একতালা—তোমার, নরনের আড়াল হতে চাই আমি, তোমারি ভবনে করি' বাস। (৩) বারোয়াঁ।একতালা—তব, শাস্তি-অরুণ শাস্ত করুণ কনক কিবণ পরশো। (৪) ঘট; একতালা—নিরুপায়, সব যে যায়, আর কে ফিরার তোমা ভিন্ন। (৫) হার্মার; কাওয়ালি—(আমি) দেখেছি জীবন ভ'রে চাহিয়া কত (৬) রাজবিজ্য়, তেওরা—জয় বিশ্বধারিকে! তাপবারিকে!
- (৭) কেদারা-মধ্যমান—জাগাও পথিকে, ও সে ঘূমে অচেতৰ। বেলা যায়, বছ দূরে পাছ-নিক্তেন। (৮) গৌরী-চৌতাল—আমার হ'ল না রে সাধন এত আলো বিশ্ব-মাঝে, মুক্ত করে দিলে ঢালি।

রজনী সেনের অপেকাকৃত উচ্চাঙ্গের হ্বরের গানের মধ্যে হ্রপ্রসিছ

(১) পরম প্রেম হ্রন্সর জ্ঞান নয়ন নন্দন—হ্বর্ট্মজার, হ্বর্ফান্তা (সম্পূর্ণ
প্রেণীর গান, বাদী রে, সম্বাদী গা)। (২) কার কোলে ধরা লভে
পরিণতি (গৌরী, একতালা)—বাদী পা, সম্বাদী গা, সম্পূর্ণ শ্রেণী,
ব্যবহার—ম্বা মা ক্রা দা। (৩) আমি দেখেছি জীবন ভরে চাহিরা কত

(হাখীর কাওয়ালী) সম্পূর্ণ জাতি, বিকৃত ঠাট, ধা বাদী; ব্যবহার মা,
ক্রা। নীলকান্ত রাম মহাশ্রের স্বর্লিপি অনুসারে এই গান্টির হ্বররূপ—

রজনী সেনের সাধন-সঙ্গীতের প্রধান বৈশিষ্ট্য তাহার স্বাকাবিকতা!
গুলীর চার্চের আদর্শে গঠিত ব্রাহ্মসনাজের প্রানাদে স্বষ্ট ব্রহ্ম সঙ্গীতের
ধারার কুত্রিম গাস্তীধ্যপূর্ণ পরিবেশ হইতে তাহার সাধন সঙ্গীত মুক্ত;
ভাহার ভক্ষনগান ক্ষারামূভূতির স্বতক্ষুর্গ্ড প্রকাশ, ব্রহ্ম সঞ্গীতের স্থার
ফরমাইশি প্রার্থনা-সঙ্গীত নর! রামপ্রসাদের পর বহদিন পরে রজনী
সেনের গানে বঙ্গবাদীর ক্ষরাকৃতি সহজভাবে প্রকাশ করিয়াছে!

এইবার রজনী দেনের হাসির গান সম্বন্ধে ছই একটি আলোচনা করিব! রজনী দেন এই ধারার বিজেঞ্জলালের অনুসামী! তাঁহার কোতুকগীতিতে কোঝাও সীলভার মাত্রা ছাড়ার নাই! এইগুলি বিশুদ্ধ কৌতুকের নিদর্শন, তবে উচ্ছান বিশেষ প্রকাশ পার মাই! ভাঁহার কৌতুক গীভির মধ্যে এইগুলি রবোগ্রীর্ণ—

- (১) যদি, কুমড়োর মত চালে ধরে রত পান্তোরা শত শত
 আর, স'রবের মত হত মিহিদানা, বুঁদিয়া বুটের মত !
 (মনোহর সাঁই কীর্ত্তন)
- (২) রাজা অংশাকের ক'টা ছিল হাতী (পুরাতম্ববিৎ)

- (°) তিনকড়ি শর্মা—আমি যাহা কিছু বলি—সবি ব**জু**তা।
- (8) इम्र नि कि धात्रणा, त्थिए भात्र ना (यमस वाहात्र)
- (१) ब्या:, या कत्र, वावा, ब्याख शीरत (कीर्डन)
- (৫) আমি পার হতে চাই, ওরা আমায় দেয় না পারের কড়ি (মিশ্র বিভাস)
- () ভারি স্থনাম করেছে নিধিরাম (থাখাজ)
- (৮) হরি বল রে মন আমার (মিল্ল থাঘাজ) তবে তাঁহার বহু হাসির গানেই গ্রাম্যতা দোষ আছে।

রজনী সেন, গীতাঞ্চলির পরবর্তী বুগের কবি, রবীক্রনাপের mystic সাধনার ধারা সঙ্গীতে তিনিও গ্রহণ করিয়াছিলেন! অনেকের ধারণা তাঁহার এই শ্রেণীর গানে রবীক্রনাথের অপেক্ষা অধিকতর আন্তরিকতা পরিক্ষুট! তাঁহার শ্রেষ্ঠ গান ছইটির মধ্যে গীতাঞ্চলির গানের স্থর পাওয়া যায়।

তোমারি দেওরা প্রাণে, তোমারি দেওরা তুখ (আনেরা মিশ্র, তেওরা) তুরি নির্মণ কর,মলন করে মলিন মর্ম মুছা'য়ে (ভৈরবী, জলন—একডালা) রজনীকান্তের গান কালের প্রবাহে স্থায়ী হইতে পারে নাই, তাহার কারণ বরীক্রনাথের গানের সর্ব্বগ্রাসী প্রতিষ্ঠা। দেশের লোক রবীক্রনাথের গানের মধ্যেই রজনীকান্তের সমস্তটুকুকেই পাইয়াছে।

প্রায় এই বিশ্বত কবির কবিপ্রতিভার শ্বতিরক্ষার জক্ম তিনটি উপায় অবলম্বন করা হইলে ভালো হয়—

- (১) **ভাঁহার সমগ্র গানের শ্বরলিপি করি**য়া তাহার সংরক্ষণ।
- (২) তাহার অমুরাগী গায়কগণের দারা তাহার গানের প্রচার।
- (৩) তাঁহার নামে একটি সমিতি স্থাপন করিয়া তাহার হত্তে তাঁহার গানের স্থরভার এবং দায়িত্ব মর্পণ।

তাহার প্রিয় গানের দারাই তাহাকে প্রণাম জানাই!

স্থের হাট কি ভেঙ্গে নিলে!
মোদের মর্মে মর্মে রইল গাঁখা, (এই) ভাঙ্গা বীণায় কি স্থর মিলে।

ত্ব:খ দৈস্ত ভূলে ছিলাম ভূবে আনন্দ-সলিলে;

(ওগো) হুদিন এদে দীনের বাসে, আধার করে আজ চলিলে ৷

কাস্তক্বির একটি গানের স্বর্রলিপি দিয়া নিবন্ধের উপসংহার ক্রি— ভাঁহার সকল গানের রূপটিই এই শ্রেণীর।

(দিলীপকুমার রায়কুত স্বরলিপি)

8 সা ভূ	ঋ 1	1	+ II সঋ নি	। জ্ঞম য়	। ম			পমা র	• জুরা মং	জা -	ও রা জ্ঞা গ ল
8 মা ক	ভ্ররজ্ঞা রে	1	+ সা ম	ঝা লি	• সা ন	স্থা ম	২ জ্ঞমা র্	মা ম	• ঋজ্ঞা মূ		^{৩॥} সা -1 য়ে -
8 সঋা তু	•		II সা ত	ঋ সা	+ পা পু			২ পদা র		• পদণা দি	পণদা য়ে
	মা ক			+ পা ণা মো -				মা ^প মা		 1 রুড য়ে	
৪ মজ্ঞা			+ 71 4	ঝা : লি		স ঝা ম	জ্ঞম া ৰূ	⁸⁶ त्र†	^{ब्र} ब्बा मू	ঝা ছা	मा -1 ख -

আবিৰ্ভাব

শ্রীমতী রঞ্জিতা কুণ্ডু এম-এ

মধ্র আবেশ দোনার দেশের স্বপ্নে ভরা, রঙীণ হ'ল আজ যে আমার বহন্ধরা। প্রাণের মাঝে উঠলো জেগে কোন্দে কবি রূপে, রুসে, রুঙে আঁকে কতই ছবি। যা ছিল সব এতকালের চেনা জানা,
তাদের মাঝে দেখা দিল কোন অজানা।
গোপন আমার হুদয়পুরে স্থর জেগেছে,
মনের পাতে অহুরাগের রঙ্ লেগেছে।

পথ হারিয়ে এলাম এ কোন অচিন দেশে, নিথিল জগৎ দেখা যে দেয় নৃতন বেশে।

কীর্ত্তনপ্রেমী রসময় মিত্র

অধ্যাপক শ্রীখগেন্দ্রনাথ মিত্র এমৃ এ

हिन्नुक्रान র হেডমান্টার রূপে রসময় মিত্র বে রকম নাম করেছিলেন, সে রকম নাম অল্লনির মধ্যে আর কেউ করতে পারেন নি। হেয়ার ক্লেছিলেন ঈশানচন্দ্র ঘোষ, হিন্দুক্লে রসময় মিত্র। শিক্ষাক্রগতে তুই দিকপাল।

রদময় নাকি বাল্যকালে গান গেয়ে তাঁর রুষ্ট শিক্ষককে
শিক্ষা দিয়েছিলেন। নিজে শিক্ষক হয়েও তিনি কীর্ত্তন
গানের ভক্ত হয়েছিলেন। তাঁর কতকগুলি সঙ্গী ছিলেন,
তাঁলের নিয়ে সাধারণতঃ তিনি বন্ধুনান্ধবের বাড়াতে কীর্ত্তন
করতেন—সাধারণ কীর্ত্তনীয়ারই মতো। আফুভিতে তিনি
ছিলেন বেশ দীর্ঘাকার, পাতলা গঠন, দাড়ি গোঁফ কেশ ছিল
অযত্ত-বর্দ্ধিত। বেশবিক্সানে তিনি ছিলেন অতান্ত সরল।

তিনি যখন দাঁড়িয়ে কীর্ত্তন গাহিতেন এবং শ্রোতাদের মুখের কাছে গিয়ে পদাবলীর মধুর ব্যাখ্যা দিতেন, তখন সকলেই মুগ্ধ হতো। এই ছিল তাঁর চরম পুরস্কার। কীর্ত্তন-গানের ভক্ত হওয়ার অপরাধে এই অসাধারণ যোগ্য লোক কখনও বিশ্ববিভালয়ের পরীক্ষক নিযুক্ত হতে পারেন নি। তিনি সরকারী চাকরী করতেন; ছাই লোকে কর্তৃপক্ষের নিক্ট কীর্ত্তনগানের জন্ম অভিযোগ করতেও ক্রটি করেনি।

আমি যখন প্রেনিডেন্সী কলেজে বদলী হয়ে এলাম, (১৯০৬দালে) তথন রসময়বাবু হিন্দু স্ক্লের হেড মাষ্টার। তাঁর কীর্ত্তনের খ্যাতি আমি পুর্বেই শুনেছিলাম। গেলাম তাঁর সঙ্গে একদিন দেখা করতে হিন্দু স্ক্লে –তার আগে তাঁকে কখনও দেখি নি। জলখাবার ঘরে তিনি উবু হয়ে বদে তামাক খাচ্চিলেন। আমি অহমানে তাঁকেই নমস্বার করলাম এবং আমার পরিচর দিলাম। তিনি বলবেন

'কি চান ?'

'আপনি খুব ভাল কীর্ত্তন করেন, শুনে আমি এসেছি। যথন আপনার কোথাও গান হবে, তথন যদি আমায় একটু ধ্বর দেন দ্যা করে'—'

'ও, আপেনি আমার পাগলামির কথা তনেছেন।
আছা; আছো—' বলেই নমস্বার করলেন। কাজেই
আমার পকে বিদায় নেওয়া ছাড়া উপায় রইল না।

থবর মিশ্ল না। আবার গেলাম তাঁর কাছে।
এবারও সংক্রেপে 'আচ্ছা, আমার মনে আছে'—বলে
আমাকে বিদায় দিলেন।

এরও সাত আট মাস পরে আমি আবার গেলাম ভিনুস্লে। সেদিনও তিনি জলথাবার ঘরে বসে তামাক থাছিলেন। সেদিনও তিনি আমায় সংক্রেপে বিদায় করবার চেষ্টায় ছিলেন। কিন্তু তিনি নমস্কার করবার পূর্বেই আমি সাহস সঞ্চয় করে বলে ফেল্লাম—

'আমায় থবর দিলেন না; কিন্তু আমি আপনার সঙ্গে থাকলে আপনার গানের কোনও ক্ষতি হতো না—'

'কেন ? আপনি কি গান জানেন ?' আমি জোরের সঙ্গে বললাম, 'আজে হাঁয়া।'

তথন আমার ব্যেস অল্প। গলা আছে। কিন্তু সেজকে 'হাা' ব'লিনি। একটা অধিকার আমাকে আদার করতে হবে; কাজেই সেখানে লজ্জা করলে চলে না। ভা নইলে ও রকম বাচালতা করা যে অশোভন, সে কথা আমার যে জানা ছিল না তা নয়।

রসময়বাবু তখনই বল্লেন-

'বেশ, আগামী রবিবার দীনবন্ধ মিত্রের বাড়ীতে 'কুঞ্জ ভঙ্গ' গান হবে—খুব ভোরে আসতে পারবেন? আপনি ভোরে ওঠেন ত?'

আমি বললাম 'খুব ভোরে উঠিনে। তবে চেষ্টা করলে উঠতে পারবো নিশ্চয়।'

খুব ভোরেই মদন মিত্র (এখন দীনবদ্ধু) লেনে গেলাম, কিন্তু তার পূর্বেই গান আরম্ভ হয়ে গেছে। আমাকে ডেকে নিয়ে রদময় তাঁর পাশেই বদালেন। কিন্তু আমি আমার কথা রাখতে পারলাম না—তাঁর গানে হয়ে দিতে অপারগ হলাম। তার কারণ, মনোহরসাহী কীর্ত্তনের টেক্নিক্ তখন আমার কিছুই জানা ছিল না। তারপর অভ্যাস না থাকলে একজনের সঙ্গে আর একজন কীর্ত্তন গানে দোয়ারকি দিতে পারে না। গান ধরতে না-ই পারি, আনন্দ পেলাম প্রচুর। রদময়বাবুর কঠ বে খুব মধুর

ছিল, তা বলা যায় না। অন্ততঃ আমি বে সময়ে তাঁর গান শুনেছি, তথন তাঁর স্বাভাবিক কণ্ঠস্বর বিশেষ মিষ্ট ছিল না। বাল্যকালে তাঁর কণ্ঠ সম্ভবতঃ মধুর ছিল।

এই প্রদক্ষে মনে পড়ছে, তাঁর রোগ-ভোগের কথা।
সেবার কলকাতার ব্যাপক ভাবে ইনফুরেঞ্জা হয়—বোধ
হয় ১৯১৯ সালে—রসময়বাব্ ভবল নিউমোনিয়ার
আক্রান্ত হন। জীবনের আশা ছিল না। শুনেছি আসম
মৃত্যুর সঙ্গে দিনের পর দিন সংগ্রাম করতে দেখে ডাঃ
বাউন আশ্চর্যান্থিত হয়ে গিয়েছিলেন। চিকিৎসা
করছিলেন বোধহয় ডাঃ নলিনীরঞ্জন সেনগুপ্তা। ব্রাউন
সাহেব বিশ্বিত হয়ে তাঁকে বললেন—

'এই ডবল নিউমোনিয়া রোগীর ফুদফুদ এতদিন কি করে' টিকে আছে, তাই ভাবছি'—

ডা: সেনগুপ্ত বলেছিলেন, 'বোধ হয় কীর্ন্তন করেন বলে' ওঁর ফুসফুস এই চাপ সহা করতে পারছে…'

তারপর তিনি ব্রাউন সাহেবকে বুঝিয়ে দিলেন যে, কীর্ত্তন করতে হলে তুতিন ঘণ্টা ধরে উচ্চকণ্ঠে চেঁচাতে হয়। ব্রাউন সাহেব সব শুনে' বললেন—'That has saved him' এতেই উনি বেঁচে গেলেন।'

ষা হোক্, রসময়ের শক্তি ছিল অসাধারণ। ঘণ্টার পর ঘণ্টা তিনি গান করে' যেতেন, সময় কোন দিক্ দিয়ে চলে যেতো কেউ তার খোঁজ রাথতো না।

রসময়বাব্ মহাজন-পদাবলী গান করতেন। এই
সকল পদ অনেক সময়ে ব্রজবৃলি ভাষায় রচিত। গায়ক
যদি সেগুলি গানের মুখে ব্যাখ্যা করে? না দেন, তা হলে
অনেকের পক্ষেই অর্থ গ্রহণ করা কঠিন হয়। রসময়
আখরের সাহায্যে পদের ব্যাখ্যা করতেন। এরপ কবিত্বপূর্ণ
ভাষায়গত ব্যাখ্যা আমি আর কারও কাছে শুনিনি। এর
কারণ, তাঁর বৈষ্ণব-শাল্পে প্রচুর অভিজ্ঞতা ও অসাধারণ
রসজ্ঞতা। তাঁর গান শুনে আমার মনে হয়েছিল যে
শুর্ গান শিক্ষা করলেই কীর্ত্তন-গায়ক হওয়া বায় না।
বিভা থাকলেও হয় না। প্রের্ম বায়া কীর্ত্তন গান করতেন,
ভারের মধ্যে এই ঘটি শুণের বায়া অধিকারী ছিলেন,
ভারাই বথার্থ অধিকারী বলেণ গণ্য হতেন। পণ্ডিভ

শবিতীয় কীর্ত্তন-গায়ক বলে পরিগণিত হয়েছিলেন, অপরদিকে তিনি টোলে অধ্যাপকতা করতেন। ৺অবধৃত বন্দ্যোপাধ্যায়েরও পাণ্ডিত্য ছিল অদাধারণ। বঙ্গদেশের কীর্ত্তন-গায়কদের মধ্যে একদিন ভিনি শীর্ষস্থান অধিকার করেছিলেন।

রসময় বছবার আমার বাড়ীতে কীর্ত্তন করেছেন।
কক্ষটি প্রশস্ত ছিল—এত ভীড় হতো যে ভিলধারণের
জায়গা থাকতো না। যোড়াস নৈকার বিজয় সিংহ, সার
দেবপ্রসাদ সর্বাধিকারী, নাটোরের মহারাজ জগদিজ্বনাথ
প্রভৃতি গান শুন্তে আসতেন। গানের মাঝে যথন
রসময় আথরের পর আথর যোজনা করে' রসস্ষ্টি
করতেন, তথন এই সকল থাতিনামা ব্যক্তি ভাবে গদগদ
হয়ে তাঁর পায়ের ধূলা নিতেন।

একবার এই রক্ষ গান হচ্চে আমার বাড়ীতে। ববে লোক ধরে না, সি ড়ির উপরে নিজ নিজ উড়ানী বিছিয়ে বহু ভদ্রলোক বসে' গান শুনছেন—সেথান থেকে রসময়বাব্কেও দেখা ষায় না, গানের আসরও দৃষ্টিগোচর হয় না। ভক্তেরা নিবিষ্ট মনে, গান শুনছেন। এমন সময় আমার বন্ধু যামিনী কবিরাজ সি ড়ি দিয়ে কোনও মতে উঠে' এসে আমাকে ডাকলেন। তথন আমি রসময়বাব্র পাশে বসে' দোয়ার্কি করছি। বন্ধুর ডাকে আমাকে উঠে' বেতে হলো। যামিনী এত ভীড়ে 'হলে' প্রবেশ করতে রাজি হলেন না; আমি ফিরে এসে আবার গানে যোগদান করছি, এমন সময় রসময় হহাতে আমার মাথা নিয়ে সজোরে মর্দ্দন করণেন। দর্শকেরা আমার প্রতি এরপ দণ্ডদান দেখে চমকিত হলেন। আমি ব্রুলাম রসভঙ্গ করা আমার উচিত হয় নি—আমার না-উঠাই উচিত ছিল।

রসময়বাবুর সরলতা ও অমায়িক ব্যবহার আমাকে
মুগ্ধ করেছিল। আমি তাঁর কাছ থেকে অনেক কিছুই
শিথেছিলাম। প্রধানতঃ তাঁরই গানে আকৃষ্ট হয়ে' আমি
কীর্ত্তন শিথতে প্রবৃত্ত হই। রসময় গান করতেন মনোহরসাহী কীর্ত্তন—আমি শিথতে চেষ্টা করলাম গরাণহাটী।
শেষে যখন শরীরের গতিকে রসময়বাবু গান করতে বিরত
হলেন, তখন ভিনি প্রায়ই আমার গানে আসতেন এবং
আগাগোড়া বসে' শুনতেন।

আমি আজ্বংগীরব বোধ করি। আমি যে তাঁর আমির্রাদ লাভ করতে পেরেছিলাম, এ আমার জীবনের এক মূল্যবান সম্বল। একটি ঘটনা থেকে তাঁর প্রীতির প্রকৃষ্ট পরিচয় পেয়েছিলাম। রাণী ভবানী স্কুলের পারি-তোষিক-সভা—ইউনিভার্মিটি ইনষ্টিটিউটে। আমি ঐ বিভালয়ের সঙ্গে ঘনিষ্ঠ ভাবে সংশ্লিষ্ট। আমি সভায় যেতেই দেখি, রসমন্থবাব্ বারান্দায় একটি চেয়ারে-বসে' আছেন, আমি তথন দর্জিপাড়া থেকে উঠে এসে বালিগজে বাস করছি। দেখা সাক্ষাৎ পুর ক্মই হয়।

আমাকে দেখে রসময় বললেন, 'আপনি আজ এথানে আসবেন, এ আমি নিশ্চর জানি। তাই আমি এসেছি।' আমি তাঁর পায়ের ধূলা নিলাম। জিজ্ঞাদা করলাম, 'শ্রীর কেমন আছে ''

তিনি বললেন 'ভালই আছি।'

"তা হলে একদিন আমার বাড়ীতে গান করন। কি বলেন ?"

রসময়বাব্ সম্বত হলেন। বললেন, একটু জল পড়ুক, একটু ঠাণ্ডা হোক্—' মে মাদ, দেবার খুব গরম পড়েছিল।

আমরা উভয়ে হলে প্রবেশ করলাম। তারপর তিনি যে কথন চলে গেছেন, আমি তা লক্ষ্য করি নি। বোধ হয় বেনীক্ষণ ছিলেন না। বিকাল পাঁচটায় তাঁর সঙ্গে আমার দেখা—কিছু ভোর পাঁচটা না বাজতেই ভিনি আর ইংলোকে নেই। রোগ নেই, যয়ণা নেই, পরম শাস্তিতে তিনি কাউকে কিছু না বলে' চলে গেছেন অমরলোকে। মনে হলো, দার্থক তাঁর ভঙ্গন দাধন, দার্থ ক তাঁর হরিনাম কীর্ত্তন। পাশের ঘরে তাঁর পুত্র মহীমোহন ছিলেন, তিনি পর্যন্ত জানতে পারেন নি কথন রদময় তাঁর প্রিয়তমের জন্তে অভিদারে গমন করেছেন। সেদিন বার বার আমার এই কথাই মনে হয়েছে যে আমাকে শেষ দেখা দিবার জন্ত তিনি প্রাদিন সভায় এদেছিলেন।

রসময় তাঁর একথানি আত্মজীবনী লিথেছিলেন, নাম দিয়েছিলেন 'কুপাবৃষ্টি'। ভগবানের কুপাই তাঁর জীবনের অবলম্বন ছিল, সেই কথাই তিনি বর্ণনা করেছেন। কিছ বিনয়বশতঃ গ্রন্থথানি প্রচার করেন নি। কেবল বন্ধুবাদ্ধবের হাতে দিয়েই তিনি তৃপ্তিলাভ করেছিলেন।

ত্রীত্রীরমণ মহর্ষি

শ্রীনীলিমা মজুমদার

বিগত ১৪ই এতিলে বেদান্ত ধর্মের মূর্ত প্রতীক ব্রহ্মক্ত শ্রীশ্রীরমণ মহর্ষি মহাপ্রমাণ করিয়াছেন। তাঁহার তিরোধানে আমরা একজন জীবমূক্ত ঈশ্বরজ্ঞতা মহাপুরুষকে হারাইলাম।

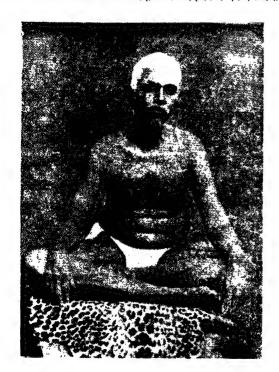
বলদেশে জনসাধারণের নিকট তিনি বিশেষভাবে পরিচিত না ইইলেও সমগ্র দাক্ষিণাত্যে এবং ভারতবর্ধের অভ্যান্ত প্রদেশে এমন কি ফুদুর ইংলও. আমেরিকা, ফ্রান্ড. হলাওে শ্রীপ্রীরমণ মহর্ধি সুপরিচিত। গত ১৩০৪ সনের পৌব সংখ্যায় ভারতবর্ধ পত্রিকায় লেখিকা কর্তৃক লিখিত তাহার সম্বন্ধে একটা প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়। একাধিকবার এই ভূপোজ্জল কৌপীনধারী অরুণাচলের ঝবির শাস্ত সমাহিত মূর্ব্ভি দর্শন করিবার সৌভাগ্য হইয়াছিল,—তাহার সাল্লিধ্য লাভ করিয়া নিজের জীবন-মন ধন্ত ও কৃতার্থ করিয়াছি। আজ তাহার নম্বর দেহের অবসানে, ভারাকান্ত স্থানে শ্রেজান্ত উচ্চার স্বন্ধে কিছু বলিতে ইচ্ছা করি।

थरे वामुखानी महाशूक्य ১৮१» धुः ७० त्म फिरमंचत माहतात निक्षे

এক ব্রহ্মণ পরিবারে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতা আইনজীবী ছিলেন। পূর্বাশ্রমে তিনি বেছটরমণ নামে পরিচিত ছিলেন। শৈশবে তিনি পিতৃহীন হন। গোঁরবর্ণ, সদাহাস্তময় স্থঠাম মুখনী এবং উদারতাও নিতাঁকতার জক্ত তিনি সকলেরই প্রিয় ছিলেন। অতি শৈশবকাল হইতেই তাঁহার মধ্যে ধর্মপ্রবণতা দেখা যার। গৃহত্যাগ করার পূর্বে একদিন তিনি অলোকিক ভাবে নিজন্ম সন্থা উপলব্ধি করেন। সপ্তদশ্ বংসর ব্য়সে স্কুলে প্রথম শ্রেণীতে পাঠ্যাবস্থায় আধাান্মিক প্রেরণার তিনি গৃহত্যাগ করেন। প্রশিক্ষ তীর্থস্থান তিক্ষবন্ধমালাই সহরের অবস্থিত জ্যোতির্দিক অকণাচলেশ্বর মূর্ত্তির সক্ষ্পে প্রথমে ধ্যানম্ম হন। লোকালমে ধ্যান ধারণার বিশ্ব ঘটে বলিয়া পরে অকণাচল পর্বাতে চলিয়া যান। তথার পর্বাত্ত গুহার আত্মগোপন করিয়া হুল্ডর তপল্যবা্ত্রার ব্রতী হন। মহর্ণির আন্ম্যাকাংকারের সন্ধান প্রথমে ধাহারা প্রাপ্ত ইন্থাছিলেন, শীনিবপ্রকাশম পিল্লে মহালয় তাহাদের অক্ততম। পর্বন্তী জীক্ষরে ডিক্সি তাহার অক্ত ভক্ষণে কর্ম্বন্ত অক্লণাচল

আশ্রমে বাদ করিতেন। একদিনের সক্ষও এই আশ্রম পরিত্যাগ করির। অভ কোথাও গমন করেন নাই। এই আশ্রমটী "শ্রীরমণাশ্রম" বলিরা পরিচিত।

আছৈতবাদী বৈদান্তিক হইলেও মহর্বির মধ্যে জ্ঞান ও ভক্তিমার্গের কোম পার্থক্য ছিল না। তাঁহার ধর্ম্মত সহল ও সরল। "আমি কে" এই আল্লাসুসন্ধান হইতেই আল্লাপলব্ধি হয়—ইহাই এক কথার মহর্বির তেলোপদেশ। বাঁহার যে ধর্ম্ম যে মত তাহাতেই দৃঢ় বিখাদ রাখিরা আল্লাসুসন্ধান করিতে তিনি বলিতেন। কোন শুরু তাঁহার জীবসুজি লাভে আবশ্যক হর নাই। যত:ই তাঁহার মন তরঙ্গশূর হইরা স্টিচদানন্দ পরব্রে পর্যাবদিত হইরাছিল। দীকা বা মৌবিক কোন উপদেশ তিনি কাহাকেও দেন নাই, তবে কাহারও কোন জিজ্ঞানা



श्री श्रीत्रथ महर्षि

শাকিলে যথাযথ উত্তর প্রদান করিতেন। তাঁহার কেছ মন্ত্রনিক্ত নাই—
সকলেই তাঁহার ভক্ত মাত্র। দেশদেশান্তর হইতে আগত হিল্পু মৃসলমান,
পাশাঁ, কৈন, বৌদ্ধ, পুটান-ইংরেজ, আমেরিকান, বাঙ্গালী, মাজাজী,
শুজরাটী, মারাঠী জাতিধর্ম নির্বিশেবে, ধনী দরিজ নির্বিবাদে ধাাননিবিষ্ট চিত্তে প্রত্যাহ তাঁহার সক্ষর্থ লাভ করিতেন। চহুর্দিকে
বিরাজমান গভীর নিস্তরুভার মাঝে কথনও কথনও আগ্রসমাহিত অবস্থা
ইইতে জাগরিত হইয়া সকলের প্রতি কর্মণ দৃষ্টিপাত করিতেন।
দেবহুর্গত মধ্র হাসি হাসিয়া মাঝে মাঝে হুএকটী কথাবার্জাও বলিতেন।
তাঁহার সক্ষণ দৃষ্টিপাতে মধ্র হাসিতে প্রাণে অনির্বিচনীর শান্তি
আসিত। তাঁহার কুপাপ্রাপ্ত ভক্তরণ তাঁহাকে "ভগবান" বলিয়া
সন্মোধন ক্রিটেটন।

মহর্বি সকল সংখ্যারের অভীত ছিলেন। তিনি জাতি বিচার করেন

নাই, অস্পূ্ভাতাও খীকার করেন নাই। জাতিধর্ম নির্দ্ধিবাদে, ধনী দরিক্স নির্দ্ধিবাদে সকলের সহিত তিনি একত্রে প্রত্যাহ আহারে বসিতেন। সকলের আহার শেব হইলে, সবাই উঠিয়া গেলে আসন পরিতাগ করিতেন। নিজস্ব কোন সময় তাহার ছিল না। সকল সময়ই ভক্তদের সহিত অতিবাহিত করিতেন। প্রত্যাহ পবরের কাগজ পড়িতেন, চিঠিপত্র সম্বন্ধে নির্দ্ধেশ দিতেন। এই বৃদ্ধ বয়সে দৈনন্দিন নির্মের কোনও ব্যতিক্রম ছিল না। অহিংসা তাহার জীবনের ত্রত ছিল। জীবজন্তর প্রতি তাহার এত মমতা ছিল যে ময়ুর কাঠবেড়ালি পরগোস প্রভৃতিকে নিজের হক্তে থাবার দিতেন। জীবজন্তরাও মহর্ধির হাত হইতে থাবার গ্রহণ করিতে ছিধাবোধ করিত না। কথনও কথনও দেখিয়াছি, হাহারা নির্ভাকচিত্তে মহর্ধির গাত্রে বিচরণ করিত।

গীতার ভগবান শীকুষ্ণের বর্ণিত জীবমুক্ত মহাপুরুষের—"জিতান্তান: প্রশান্ত্র পরমান্ত্র সমাহিত:। শীতোঞ্জুপ তু:পেসু তথা মানাপ্মানার:॥ জ্ঞানবিজ্ঞানতৃপ্তাত্মা কৃটকো বিজিঙেন্দ্রিয়ঃ। যুক্ত ইতাচাতে যোগী नमत्लाष्ट्र-क काकान: " अवस्रा त्य वर्ण वर्ण महा. महर्शिक (प्रश्चितात ফ্যোগ যাহাদের হইন্নাছে তাহার। তাহা শীকার করিবেন। রাজা-মহারাজা ধনী দরিক মেধর মৃতি চঙাল আক্ষণ স্কলকেই মহর্ষি সম্ভাবে গ্রহণ করিতেন। ভাষার আচা ও পাশ্চাতা ভক্তগণ—গাঁহারা সর্বায় ত্যাগ করিয়া বছবববাাপী আত্রমে বাস করিয়া তাঁহার প্রদলিত পরে সাধন করিতেন.—আর আমরা যাহারা মাঝে মাঝে ভাছাকে দর্শন করিতে গিয়াছি, তাঁহার নিকট আমরা সক্ট সমতুল্য ব্যবহার পাইতাম। তাঁহার আশ্রমের দার সর্কসাধারণের জন্ম দিবারাতা উন্মুক্ত। যে কেহ যে কোন সময়ে উপস্থিত হইলে সাদরে গুগীত হন। ইংলণ্ডের বিখ্যাত সাংবাদিক ও সাহিত্যিক পল ব্রাটন, বিখ্যাত জান্মাণ মন:-সমীক্ষক ডা: জীমাৰ মি: গ্রাণ্টড়াক, মি: ফ্রেডারিক ক্রেচার, মেজুর চ্যাড্টইক, মিদ মারদটন, মিদ ম্যালেট তাঁহার বছ পাশ্চাত্য ভক্তগণের মধ্যে অক্সতম। তাঁহারা সকলেই মংর্থির বিষয় অবগত হট্যা তাঁহাকে দর্শন করিতে আদিয়াছিলেন, ইংগাদের মধ্যে অনেকেই আর আশ্রম ত্যাগ করেন নাই। স্থার সর্বাপলী রাধাকৃষ্ণণ মহর্ণির জীবিত অবস্থার সত্যই লিথিয়াছিলেন—"ঈশরময় জীবনের এক জীবস্ত বিগ্রহ মমুদ্বসন্থার মুকুরে দিব্যজীবনের একটা পরিপূর্ণ মূর্ত্তি বে আরু আমাদের মধ্যে বিরাজ করিতেছেন ইহা আমাদের পরম দৌভাগ্য।"

এই সর্বত্যাগী মহাপুরুষ কিছুকাল যাবত রোগে ভূগিতেছিলেন।
কিন্তু তাঁহার প্রশান্ত সদাহাক্তময় মুপ দেখিয়া বোঝা যাইত না বে তিনি
লানীরিক কট্ট পাইতেছেন। পূর্বের স্থায় এখনও তিনি ভক্তদের সহিত্
অতিবাছিত করিতেন। সর্বাপরীর হইতে যেন করুণাও জ্যোতি
বিচ্ছুরিত হইত। প্রেমের ঠাকুর ব্রিয়াছিলেন যে আর ধরাগামে
থাকিবেন না। বিগত ২৩শে কেক্রয়ারী তাঁহার সলে এই মরফ্রগতে
আমার শেব দেগা। পূর্বিদিন আমি ও আমার ঘামী তাঁহাকে দর্শন
করিতে গিয়াছিলাম। হাসিম্বে "ভগবান" আমাদের বিদার দিলেন।
যদিও ব্রিয়াছিলাম যে বেশী দিন তিনি আর আমাদের মধ্যে থাকিবেন
না, তবে এত শীক্ষ যে তাঁহাকে হারাইব ইহা করনাও করি নাই।

রাষ্ট্রগঠনে শ্রীকৃষ্ণের জীবনাদর্শ ও ভারতীয় সংস্কৃতি

শ্রীযতীক্রবিমল চৌধুরী

শ্রীকৃষ্ণসন্মান্তমী আমাদের জাতীয় ইতিহাসে পুণাতম দিবদ, কারণ—
"অথ ভাত্তপদে মাদি কৃষ্ণাইম্যাং কলে। যুগে।
অন্তাবিংশতিমে জাতঃ কুষ্ণোইস্টো দেবকীস্থতঃ।"

মুপ্য শ্রাবণ ও গৌণ ভাক্রপদে কৃষ্ণাষ্টমী তিথিতে অষ্টাবিংশতিত্রম কলিবুগে জননা দেবকীর কোল উল্ছেপ করে শ্রীকৃষ্ণ ধরাধামে অবতীর্ণ হয়েছিলেন।

শীকৃষ্ণ কুকাইনীতে জননীর অইম গর্ভে জয়ন্তী যোগে জন্মগ্রহণ করেছিলেন। এই শক্তি সহ, মানবের অইপাশ ছেদন যিনি করবেন, তার অইনী তিথিই অভিপ্রেত হওয়া খাভাবিক। কুফাইমী—বেহেতু কুক বর্ণের সহায়তায় তমোঞ্চাবিশিষ্ট দৈত্যদলের পরাভব সম্ভব। পক্ষের মধ্যমতাগ অইমী তিথিতে তার জন্ম— এতে তার সমগ্র জীবনের মধ্যমতা ভোতিত হয়। যিনি জরাসক, শিশুপাল প্রভৃতির নিহন্তা, তার জয়ন্তীযোগে জন্ম কার্যত: সার্থক। শীমন্তাগবত যাঁর মুগামৃত, তিনি মুখ্য শ্রাবণে জন্ম কার্যতংগ করে জগতের অশেষ কল্যাণ বা ভদ্র সাধন করবেন, সম্পেহ কি প

শীমন্তস্বদ্ণীতায় শীকৃষ্ণ কর্ম, জ্ঞান ও ভক্তির সম্বর্ষাদ প্রচার করেছেন। তার জীবনাদর্শেও এই সভাই প্রতিবিদ্মিত হরেছে চূড়ান্ত-ভাবে। জ্ঞগতের ইতিহাসে স্কুল চরিত্র কুত্রাপি দৃষ্ট হয় না।

শীকুঞ্বের জীবনের মূল লক্ষ্য ছিল আহরিক শক্তির পরাত্তব সাধন করে ধর্মরাজ্যের প্রতিষ্ঠা। এই কঠোর উদ্দেশ্যসাধন অশেব শ্রমসাপেক। ভক্ষগুই তিনি যেন বাল্যকাল খেকে শারীরিক শক্তির চূড়ান্ত নিদর্শন প্রদর্শন করেছিলেন। অধাহর, কংসাহ্রর প্রভৃতির বধই তার প্রমাণ। গোপবালকদের মধ্যে কৈছ শারীরিক শক্তিতে তার সমকক ছিল না।

ষকীয় কর্মশক্তি অর্জন ভিন্ন ব্যাপার। এই উভয়বিধ শক্তিতেই শীকৃষ্ণ অতুলনীয় ছিলেন।

নিশ্বাস কর্মের উপদেশ তিনি প্রীমন্তগ্রন্দীতায় দিয়ে গেছেন—তার দীবনাদর্শেও ভাই প্রতিফলিত হয়েছে। সম্প্রশাণ সহাভারতের কোণাও এমন ইঙ্গিত নাই যেথানে তিনি কোনও কর্মফল কামনা করেছেন। সম্পূর্ণ নিশ্বাস, নির্নিপ্ত ভাবেই স্থাননিক্রধারী ভারতের ভাগ্যক্ত পরিচালনা করে গেছেন।

মহাভারতের সর্বত্র প্রীকৃষ্ণের অপূর্ব কর্মসাধনোচিত স্ক্রাভিস্ক্র বৃদ্ধি স্থাকট। জরাসন্ধের অগণিত সৈক্তসামস্তের কাছে তার ক্রজ-সংগ্যক যোধবৃন্দের পরাজর অবশুস্তাবী; তাই তিনি মধুবা থেকে ব্যারকার চলে যান এবং সেখানে রাজধানী স্থাপন করেন। রাজনীতির দিক থেকে ব্যারকার রাজধানী স্থাপন তার অলেব বৃদ্ধিবৃত্তির প্রকৃষ্টতম উদাহরণ। বৈবতক প্রতম্যালা তার রাজ্যের মুক্তিয় দ্রগৃহিল এবং

শ্বকীয় রাজ্য তিনি এত স্থার্কিত করেছিলেন যে এমন কি, কোনও নারীও যদি এ রাজা রক্ষণে তৎপর হতেন, তিনিও অক্লেশে এ রাজ্য রক্ষণে সমর্থা হতেন। জরাদক্ষ বধ ও তার জীবনের উদ্দেশ্যসাধনের পক্ষে অক্সতর শ্রেষ্ঠ ঘটনা। কারণ রাজনৈতিক দিক থেকে শ্রীকুঞ্চের কাছে এটা সম্পষ্ট ছিল যে যদি জ্বাসন্ধের কবল পেকে নিখিল ভারতের ৬৮ সংখ্যক রাজপুত্রকে তিনি মুক্ত করতে পারেন, তা' হ'লে প্রায় সমগ্র ভারতবর্গ তার মিত্রদল ভুক্ত হবেন এবং ভারতে ধর্মরাজ্য প্রতিষ্ঠা महत्रमाधा राज **ए**ठेटव । তাই তিনি क्यामक निधान वह्नपत्रिकत হয়েছিলেন। মহাযুদ্ধের অবসানে ভীম মুপে রাজাশাসন পদ্ধতির প্রণায়নোভোগ শীকুফের অক্ততম নির্লিপ্ততার ভোতক এবং চরম বৃদ্ধিবৃত্তির পরিচায়ক। দেশের শাসনভার প্রদান করলেন তিনি বুধিষ্ঠিরের হাতে: ধর্মরাক্ষাের আইনপ্রথারনের ভার দিলেন তিনি কুরুবৃদ্ধ পিতামহ সর্বজনবন্দ্য ভীমের হাতে। ভীমদেব বার বার বলেছেন যে স্বয়ং প্রীকৃষ্ণ বিভাষান পাক্তে মুষ্যু অবস্থায় তিনি এ গুরু কার্যভার গ্রহণ করতে স্বীকৃত নন। কিন্তু স্বীয় যোগিক শক্তিবলৈ মুমুর্য শরশ্যাশাগ্নী পিতামহকে সঞ্জীবিত করে, অকীর বুদ্ধিবৃত্তি অন্তর্নিহিত করে—তিনি এমন দেশশাসন পদ্ধতি প্রণয়ন করিয়াছিলেন. যার তলনা ইহজগতে নাই, কোনও দিন হবেও না। এর বিস্তৃততর আলোচনা আমরা শীকুফের জানবৈভবপ্রসঙ্গে একটু পরেই করছি।

কর্ণের হত্তে বাদবদন্ত অন্ত ছিল বলে প্রীকৃষ্ণ কিছুতেই অন্ত্র্নকে তার সঙ্গে সমরে অবতীর্ণ হতে দেননি; তিনি ঘটোৎকচকেই সাক্ষাৎ সমরে অবতীর্ণ হতে দেননি; তিনি ঘটোৎকচকেই সাক্ষাৎ সমরে কর্ণের সন্মুগীন করিয়েছিলেন। ঘটোৎকচবধ প্রীকৃষ্ণের সন্মুগ স্বানিনিন্ত হুপরিজ্ঞাত ব্যাপারমাত্র ছিল, সন্দেহ নাই। অগুলিকে ভগিনী স্বভন্তার একমাত্র পুত্র অভিমন্থা নিধন, অন্ত্র্ন ভ্রার পক্ষে যতই শোকাবহ হোক্—ধর্মরাজ্ঞা স্থাপনের পক্ষে এটা অত্যাবশুক বোধে তিনি অক্র্নের নিরস্তর অন্ত্রোধ সন্ত্রেও অক্র্নকে যুদ্ধের সময় অভিমন্থার সহায়তার অগ্রসর হতে দেননি। অক্রনিকে উত্তরাতনর বিনন্ত হলে পাশুব বংশ লোপ পেরে যাবে বলে এক্রানিরা অল্রের প্রবল প্রকোপ নিরস্ত করেও ভিনি ভূমিন্ত পরীক্ষিতের মৃত শরীকে প্রাণ্যকার করেছিলেম। মহাভারত পাঠ করলে এটাই নিরস্তর স্থাপার হর বে অর্জুন, ভীম, বিশেষতঃ বুধিন্তির বার বার বছবার বিপথে চল্ছিলেন; প্রীকৃষ্ণের উপদেশায়ত নিঃশেবে পান করে তারা ধ্রা হরেছেন, বিভান্ত হন নি।

দরাপ্রদর্শন শীকুকের কর্মজীবনের মৌলিক নীতি ছিল সন্দেহ নাই, কিন্ত তিনি প্রায়েলবোধে বক্সবৎ কঠোর হতেন। খীয় সাভূল কংসকে তিনিই নিধন করেছিলেন; খীয় পিতৃবক্ত্ত বিশ্বস্থাক্ত

.....

তিনি বধ করেছিলেন। অভিম জীবনে—বতই কঠোর হোকৃ খীর বহুবংশ রকা করার চেষ্টা মাত্র তিনি করেন নি. শুখু তাই নর—তিনি বহুন্তেই व्यत्नकरक निथन करब्रहिरलन। धर्मज्ञहे श्वाभागी छ्वाठाव वास्तरक রক্ষা করে ধর্মরাজ্য নষ্ট করার অভিপ্রায় ধর্মরাজ্যসংস্থাপক একুঞ কিছুতেই পোষণ করতে পারেন নি। ফলতঃ, তার নিজ বংশই তার আশেষ ছুঃখের কারণ ছিল ; তাই তিনি এক জায়গায় বলেছেন—

> "षाक्ररेमधर्वारान क्षत्रजीनाक करवामारम्। গোহহং কিতবমাতের মন্নোরপি মহামতে। একত জরমাশংসেহততাপ্যপরাজয়ম্ ॥"

প্রীকৃষ্ণ বল্লছেন যে ষত্রবংশ সম্পর্কে তার অবস্থা অনেকক্ষেত্রে জুয়াথেলোরাড় পুত্রছয়ের মাতার মত। ছুই পুত্রই মাতাকে খেলার পূর্বে প্রণাম করে যথন আশীৰ্বাদ প্ৰাৰ্থনা কয়ে—মা একজনকে বলেন ভোমার বিজয় হোক, অন্তকেও বল্তে বাধ্য হন-তোমার পরালয় না হোক্-তার ব্দবস্থাও দেই বৃক্ষ। তাই যিনি বাল্যবয়দে দল্লাপরবশ হলে ননী মাধন চ্রি করে' বানরদের খাওয়াতেন, গোবৎদের আনন্দবর্ধনের জক্ত इक्षारक वांधा धारान करबिहरणन-- छिनिरे योष्ठवः नंद छ छहर अभाव কোনও প্রকার কারণা প্রকাশ করেননি—এই ছিল তার অমুপম कीवत्मत्र धर्म ।

ধর্ম ও কর্মবীর যাঁরা, তাদের জীবনে অহিংসা ও সভ্যের সংঘর্ষ সময়ে नमाम विश्व वात्र । श्रीकृष ठांत्र अपूर्व ममाधान करताहन अर्क्न्नाक উপদেশ দেওয়ার প্রদক্ষে এবং এই প্রসঙ্গে তিনি কৌশিক ক্ষির উপাধ্যানের অবভারণা করেছেন। অর্জুনকে সংখাধন করে তিনি বলেছেন—

> "প্রাণিনামবধ্যাত স্বজ্যায়ানু মতো মম। অনুতাং বা বদেখাচং ন তু হিংস্তাৎ কপঞ্ন॥

এমন কি, সভ্যের বিনিময়েও যিনি "অহিংসা পরমো ধর্ম:" প্রচার ৰূরেন, তিনিই অষ্টাদশ অকৌহিণী সৈক্তসামস্ত এবং ভীগ্ম, জ্বোণ প্রভৃতি মরশাদুলি দেবোপম চিরপ্জা বীরশ্রেষ্টদের জীবনপাতের কারণ হয়ে-हिल्मन প্রয়োজনবোধে-ইহাই তার জীবনে আমাদের দিক থেকে मर्वारभका व्यविधानरयां भा विषय मत्नर नारे।

শীকুষ্ণের বৃদ্ধিও শক্তি বলে বয়ং অনুনিও কতদূর পরিচালিত হতেন, ভা' একটা ঘটনা থেকেই সহজে বোধগম্য হবে। যত্নংশ ধ্বংস হওরার পরে বলরাম ও শীকৃষ্ণ উভয়েই যথন মরধাম পরিত্যাগ করলেন, অন্তর্ন ক্ষমছিষীদের এবং অক্যান্ত সম্রান্ত যত্ত্বমণাবুলকে সঙ্গে নিয়ে হন্তিনাপুরে প্রভ্যাবর্তন করেছিলেন। পথে দফাগণ লাঠি নিরে তাঁদের আক্রমণ করলে। একুফবিহীন অফুনি গাঙীব উত্তোলন করতে পর্যন্ত সমর্থ হলেন না। দহারা ত্রীকৃষ্ণের মহিবী রোহিণী, সভাভামা, হৈমবভী, লাব্যতী ব্যতীত অস্তাম্ভ যতুকশীর রমণীদের হরণ করে নিয়ে গেল আছু নকে পরাভূত করে। অজু ন জার এর পরে ধরাধানে অবহান করাই বুলিপুর্ক মনে করলেন না। 🖣 কুঞ্চের ভিরোধানের পর সহা- হরে নির্ভরে বিচরণ করে বেড়াবেন—তবে তো ধর্মরাল্য—

প্রস্থানই শেষ্ঠ কর মনে করে বুধিন্তিরও ভারতভূপরিক্রমার প্ৰবৃত্ত হলেন।

ষিনি বয়ং শীমন্তগবদ্গীতারাপ অমৃতরাশির মূলপ্রস্তব্য-যা' যুগ-বুগান্তর ধরে কোটা কোটা অক্ষোহিণা নরনারী সমগ্র বিখে অকাতরে পান করে ধর্ম হচ্ছে—তার জ্ঞান বৈভবের সম্বন্ধে আলোচনা সম্ভবপর নয়। শুধু শ্রীমদভাগবদগীতা নয়, মহাভারতের অন্তর্গত যে কামগীতা, অমুগীতা প্রভৃতি আছে, দেগুলিও অসীম অতল জ্ঞানামুধি; যিনি জ্ঞানধর্মপ, তার জ্ঞানের পরিচয় দেওয়ার প্রচেষ্টামাত্রও বাতুলতা।

তাই এক্ষেত্ৰে শ্ৰীমণ্ডগবদুদ্ধিপ্ৰচোদিত জ্ঞানবৈত্তৰ সম্বন্ধে কিঞ্চিৎ আলোচনাই প্রাদঙ্গিক বলে মনে করি। শীকৃঞ্ সমং বলেছেন—ভীত্ম-দেব প্রোক্ত রাজধর্মাদি তাঁরি ধর্মরাজ্য পরিচালনার নিমিত্ত তার পূর্ণ অভিপ্রেত এবং তাঁর প্রদত্ত শক্তিতে প্রোক্ত। অভ্যন্ত আশ্চর্যের বিষয় এই যে অতুলনীয় জ্ঞানবৈভব এই রাজধর্ম ও আপদ্ধর্ম পর্বে বা অনুশাসন পর্বে প্রদশিত হয়েছে, পরবর্তী যুগে অধম ভারতবাসী, ভাড়াটয়া ভারতবাসী তার পর্যালোচনা ও শ্রেয়:কল্প মনে করলো মা। চাণকোর পরে ভারতবর্ধ থেকে দগুনীতি, রাজনীতি বহিষ্ণুত হয়ে গেল। কর্তৃক রাজ্যপরিচালনার্থ ভীম্মদেব শীকুক্তের নির্দেশামুসারে যে বিধান দিয়ে গেছেন, তাতে বৰ্তমান Red Crosss কাৰ্যাবলী, Scorched Earth Policy (ब्रांक्रध्भंशार्वत ७२ व्यशांत ७१-८३ (लाक), Dunkirka safe retreat policy (উৎপাতাক নিপাতাক ক্যুদ্ধং কুপলায়িতম। শান্তাণাং পালনং জ্ঞানং তবৈব ভরতর্ষভা) প্রভৃতিও বাদ যায় নি। ধৰ্মবাজ্য কীদৃশ হবে, তৎপ্ৰসঙ্গে শ্ৰীকৃষ্ণ জগৰাসীকে জানিয়েছেন---

রাজা-প্রজার সম্পর্ক পিভাপুত্রের সম্পর্ক। পুত্র যেমন পিতৃগৃহে খচছন্দে বিচরণ করে, ধর্মরাজ্যেও তেমনি প্রজাপুঞ্জ মনের ফুথে বিচরণ कत्रत्व। धनामिक मुक्तित त्रांशात व्यक्तिशे कारता चाकरव ना ; व्यक्ता-মাত্রেই স্থায়-অস্থায় বিচারে সমর্থ হবে এবং তদারা রাষ্ট্রের প্রভূত উপকার সাধন করবে-

> "পুত্রা ইব পিতুর্গেহে বিষয়ে যক্ত মানবা:। নির্ভয়া বিচরিয়ন্তি স রাজা রাজস্তুম । অগৃঢ়বিভবা যক্ত পৌরা রাষ্ট্রনিবাসিনঃ। ন্যাপন্যবেতার: স রাজা রাজসভ্ম ।"

> > वास्त्रभं, १५ अधात्र, ७७-७८

बाह्रेवानी मकलाई चरबब पबना कानाना मव शूल पिरम्र अपक् थाक्रवन ; কোনও দিক থেকে কিছুই ভয়ের কারণ থাক্বে না---

> "বিবৃত্য হি ষ্থাকামং গৃহন্বারাণি শেরতে। মমুস্তা রক্ষিতা রাজ্ঞা সমস্তাদকুতোভরা: ॥"

> > वे, ७४ ख्रांत्र, ७० क्षिक

अन्न कथा कि-मात्रीतां अपूक्षविशीन अवशात मर्वविश अनदात विकृषि

"বিষশ্চাপুরুষা মার্গং স্বীলন্ধারভূষিতা:। নির্ভরা: প্রতিপদ্ধন্তে যদি রক্ষন্তি ভূমিপা: ॥"

ब्रे. ब्रे. ७२

ধর্মরাজ্যে চোর বলে কোনও পদার্থ পাক্ষে না; চুরি হলে রাজাকে বে কোনও রক্ষে চুরির ধন মালিকের কাছে ফিরিয়ে দেওয়ার বন্দোবস্ত করতে হবে; যদি রাজপুরুষেরা পুঁজে ক্বের করতে অসমর্থ হন—তা' হ'লে রাজাকে রাজকোষ পেকে তা' দিতে হ'বে—

> প্রত্যাহতুর্মশক্তাং স্থান্ধনং চোবৈর্ক্তং যদি। তৎ স্বকোশাৎ প্রদেশ্যং স্থাদশক্তেনোপজীবতঃ ॥

> > রাজধর্ম, ৭৫ অধ্যার, ১০ প্লোক

Orphanage, Old Age Pension, Widow Pension ব্যুতীতও ছু:ধীর ছু:ধানার ক্রাধানার্থ সর্ববিধ উপায় ধর্মরাজ্যে উদ্ভাবনীয়—

্কুপণানাধবৃদ্ধানাং বিধ্বানাঞ্চ যোগিতাম্। যোগক্ষেমং বৃত্তিঞ্চ নিত্যমেব প্রকল্পয়েৎ॥"

শান্তিপর্ব, ৮৬ অধায়, লোক ২৪

রাক্ষ্যে কৃষক মণ্ডপীর শশুবীজ যাতে নষ্ট না হয়, ওজ্ঞা কড়া নজর দেয়ার দরকার এবং প্রত্যেক কৃষককে শতকরা এক টাকা হার স্থাদ ঋণ করতে হবে—

"ক্চিন্ন ভক্তং বীজ্ঞ ক্ষকভাবসীদতি।
প্রভাৱকণ শতং বৃদ্ধান দদাস্যুগমন্থ গ্রহন্॥
এই ধণের নামই অনুগ্রহ-ধণ—বর্তমান জগতের কোনও Co-operative credit system এর সক্রে তুলনীয় নয়। রাউ ক্ষির জভা দেবভার প্রদানের উপরে নির্ভর ক্রবে না—জল জমিরে রাধ্তে হ'বে বড় বড় দীবিতে—

ক্চিক্রাষ্ট্রে তড়াগানি পুর্ণাণি চ বৃহস্তি চ। ভাগশো বিনিবিষ্টানি ন কুষিদেবমাত্কা॥

ধর্বাজ্যে প্রজ্ঞাপুঞ্জ রাজবৈ প্রপীড়িত হবে না; অমরেরা যে ভাবে গাছ থেকে মধু দোহন করে, তেমনি আদরে মধ্দোহনের মতই রাট্ট থেকে কর উভোলিত হবে—(মধ্দোহং ছুহেন্ডাট্রং অমরা ইব পাদপম্— —বালধ্ম, ৮৮, ৪ বোক)।

ধর্মাজ্যে শুক্তাশুক্তনিবিচারে থেই জনসাধারণের উপকার সাধ্য ক্রতে পারবে, অকুলে কুল দিতে পারবে সেই বর্গায়, মহনীয় হবে---

"অপারে যো ভবেৎ পারমগ্রবে যঃ প্রবো ভবেৎ।

শ্দোহণি বা যদি বাজ: স সম্মানমাইতি ॥"
বর্ণরাজ্যের ছাপরিতার লক্ষীভূত মূলনীতি থেকে রাষ্ট্র যথন দ্রে সরে
গেল. তথন থেকে ধীরে ধীরে দেশ অধংপাতের শেষ সীমার উপনীত
হলো; তাই আজ প্রায় দেড় হাজার বৎসর ধরে অথও ধনরাজ্য চরম
ছংবভোগ করতে বাধ্য হল। অপরমের ভাগবত কুপার আবার ধর্মরাজ্য
সংস্থাপিত হরেছে; তার আশীর্বাদে ধর্মরাজ্য পরিচালনাও অতি
ব্টুভাবে নির্বাহিত হউক; ভাগবত করুণা বারাসারে জগবাদীর
শিরোদেশে ব্রতি হোক; ভারতজননীর বিভহাতে সমগ্র জগৎ প্রোক্ষল

হয়ে উঠুক। 🍓 কৃষ্ণ তার জন্মতিখিতে উপাসকমগুলীকে এই আশীর্বাদ প্রদান করন।

শীক্ষকের ভক্তিবৈভব

শীকুকের জীবনাদর্শে গীতাপ্রোক্ত ভক্তিবৈভব সম্পূর্ণ প্রতিবিশ্বিত। বল্লাবদরে তার পর্যালোচনা সম্ভবপর নয়। বেদ-বেদাক্তে পরিদৃষ্ট আস্থারাম, আস্থারতি, আস্থানীড়, আশ্বমিধ্ন, আস্থানন্দ ভগবান্ বরাট। তিনিই সমগ্র ভক্তের অধীখর; তিনি কাকেই বা ভক্তি প্রত্যর্পণ করবেন ?

উপসংহার

আঙ্গকের এই প্রিত্রতম শ্রীকৃষ্ণ জনাইনী তি**থিতে মহাভারতে**র পরিপ্রেক্ষিতে শ্রীকৃষ্ণোর্দিষ্ট আর একটী বিষয়ের পর্যালোচনা **অবস্থা কওঁ** ব্যায় একটী বিষয়ের পর্যালোচনা **অবস্থা কওঁ** ব্যায় একটা বাবিল ভারতের **একটা হত্ত একটা হত্ত একটা কর্মা,** সন্দেহ নাই। দেড় সহজ্র বংসর পরে পরিলক্ষ নিবিল ভারতের একটুত্রে অচিরে ধ্বংস হয়ে বেতে বাধ্য— যদি ভাষার একটা এবং তার মাধ্যমিকভার ভাব ও সাধনার একটা সংখ্টিত না হয়। ধর্মরাজ্য সংস্থাপক ও পরিচালক শ্রীকৃষ্ণ আমাদের এ বিষয়ে কি ইক্সিত দেন, কি উপদেশ দেন ?

এ বিংয়ে একটা প্রশ্নের সমাধান সর্বাত্তো কর্তব্য। মন্তদেশের মাডী, শীকৃষ্ণের পিতৃস্বদা কুতী, বর্তমান কান্দাহারের গান্ধারী-এইরূপে ভারতের বিভিন্ন অঞ্লের রাজকস্থারা হস্তিনাপুরের রাজপরিবারে কোন্ ভাষায় নিজেদের দৈনন্দিন ভাবধারা প্রভ্যেকে প্রভ্যেকের কাছে প্রকাশ করতেন ? দৈনন্দিন জীবনযাপনাবদরে কৃত্রিমতা তো সম্ভবপর নয়। তারা কি উপারে মনের আনন্দ, মনের ছঃথ একে অক্টের কাছে প্রকাশ করতেন ? কোন্ ভাষার সাধ্যমিকতায় ? মহম্মদের জন্মের সহস্র সহস্র বৎসর পূর্বে যখন ফারসী প্রভৃতি ভাষার প্রবর্তন আমাদের দেশে হয়নি, যখন চীন-হ্লুণ-পারদীকেরা, যখন খ্যান, স্থাতা ধ্বদ্বীপ অভৃতির দ্র-দ্রান্তর স্থিত অঞ্লনিবাদীরা রাজস্য, অশ্বমেধাদি যজ্ঞোপলক্ষে হস্তিনাপুরে সমবেত হয়েছিলেন তথন তারা কোন ভাষায় নিজেদের ভাবধারা প্রকাশ করেছিলেন ? জৌপদী ছিলেন রশ্বনও পরিবেশন বিভার Head of the Department-তিনিই বা কোন ভাষার নিখিল ভারতের সকলের মনোরঞ্জন করতেন ? একুফের ভাষা, দৈবী ভাষাই যে এ ভাষা, সে বিষয়ে কোনও সন্দেহ নাই। পরবর্তী যুগে নারীদের এমুথে প্রাকৃত ভাষণ ওনে যাঁরা দিগ্রাম্ভ হন, তাদের বেদাদি এবং পরবর্তী যুগে ভবভূতির উত্তর রামচরিতের দিকে তাকাতে বলি---যিনি—যে ভবভৃতি অকাটা সতাপ্ৰিয় ছিলেন এবং সমগ্ৰ লগতে বেদবাদের একমাত্র সমকক যিনি, এই স্থকঠোর প্রক্ষের উত্তর প্রদান विश्वाद मिर्ड महर्षि वानीकित्र माका ७ जामत्रानिकत्र जाहन कत्रत्। मर्व-দন্ততিক্রমে বেমব্যাদ ও বালীকি প্রায় সমসাময়িক: তাই বালীকির সাক্ষ্যও এই প্রশ্ন সমাধানে অত্যাবশুক। দেপুন, হতুমান ধ্রণ আশোক-কানৰে রাষ্চজ্রের কাছ থেকে সংবাদ নিয়ে সীতার নিকটে উপস্থিত হন, তথন তিনি (হসুমান) কি ভাষার সীতার সঙ্গে কথা বল্বেন, এই কথা ভাবছেন। তিনি গভীর চিন্তাবিপ্ত হয়ে পড়লেন এই জঞ্চ, যদি তিনি সংস্কৃতে কথা বলেন, তা' হলে সীতা হঠাৎ সংস্কৃত ভাষার উক্তি শুনে তাঁকে রাবণ বলে ভূল করে ভয়প্রাপ্তা হবেন—

"যদি বাচং প্রদান্তামি দিলাতিরিব সংস্কৃতাম্। রাবণং মক্তমানা সা সীতা ভীতা ভবিছতি।"
তা' হলে এটা নিশ্চিত হলো যে রাবণ, ভারতবর্ধের অক্ততম প্রাস্তে অবস্থিত বীপের অধীশর রাবণ যে সংস্কৃতে সীতার সঙ্গে কথা বল্তেন, সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। হনুমান যে অনর্গল সংস্কৃতে কথা বলতেন বহুকালব্যাপী এবং কোনও অপভাষণ করতেন না, মন্ত্রং রামচন্দ্র তার সাক্ষ্য দিচ্ছেন ("ন কিঞ্চিদপশন্তিতম্")। তা হলে উত্তর ভারতের রাজপুত্র রামচন্দ্র—লক্ষ্মণ যথন কিছিল্লার গেলেন, সেধানেও সংস্কৃতে কথাবাত। ইচ্ছে; যথন রাজপুত্রী সীতা অশোককাননে লক্ষাধীপে গেলেন, সেধানেও কথা হচ্ছে সংস্কৃতে। সেই হিসাবে সেই একই বুণে যথন নিখিল ভারতের রাজপুত্রিরা, রাজকভারা একত্রে হন্তিনাপুরে একত্র হন্দ্রেছিলেন, বা হন্তিনাপুরে নিখিল ভারতের রাজপুত্রীরা একত্রে ইন্দ্রেশন ক্ষীবন্যাপন করছিলেন, তারা যে সংস্কৃতেই কথনোপ্রথন করতেন, সে বিষয়ে সন্দেহ কি ?

কেও কেও বলবেন—সহত্র সংত্র বৎসর পূর্বে যা' সপ্তবপর ছিল, আজ তা' কি করে সম্ভবপর ? ধর্মরাজ্য ধর্মরাজ্য ; "লগদীদৃক্ ন তু অনীদৃক্"—স্বরং কুমারিল ভট্ট বলেছেন। ভাষার ঐক্য ভারতবর্ধে একমাত্র সংস্কৃতের মাধ্যমিকভাতেই সম্ভবপর। এখনও পর্যন্ত লিপি-কাঠিক্ত বিবর্জিত হলে নিধিল ভারতের সব ভাষা আমরা যে বুঝতে

পারি, তা' কেবল সংস্কৃতের দৌলতে। এ দিবালোকের মত স্বপ্রকট সত্য যারা ব্যুতে চার না, তারা নিভান্ত স্বার্থপর, হীন ও নীচ। সংস্কৃত-বাংলা, সংস্কৃত-হিন্দী, সংস্কৃত-মারাটা, সংস্কৃত-শুজরাতী, সংস্কৃত-তেলেগু, সংস্কৃত-কন্নড়ী, সংস্কৃত-আসামী, সংস্কৃত-উড়িরা, সংস্কৃত-নেপালী প্রভৃতির বস্তুগত্যা পরিণতি যে একমাত্র সংস্কৃত-সাগরে সম্মেলন—এই প্রকৃত্তির বস্তুগত্যা পরিণতি যে একমাত্র সংস্কৃত না, তার একমাত্র কারণ—প্রীকৃষ্ণের ধর্মরাজ্য এখনও দেশে স্প্র্প্রতিতিত হয়নি; দীর্ঘকালের জড়তা এখনও দেশকে আচ্ছের করে আছে।

আমাদের বর্তমান ইংরাজী শিক্ষিত সমাজে একটা ধারণা আছে লোকায়ন্ত শাসন এবং তৎসংক্রান্ত আইনকামুন ভারতবর্ধে পাশ্চাত্যের দানমাত্র। যে দেশের আদর্শ হচ্ছে—প্রত্যেক বাড়ীতে রান্নার ধোঁয়া না উঠলে শাসনকর্তা নিজে অন্ধর্গ্রহণ করবেন না; যে রাজ্যের আদর্শ হচ্ছে মধ্যরাত্রেও সর্বালকারভূবিতা ফুলরী নারী বিনা পুরুষে নগরপথে নির্ভয়ে বিচরণ করে বেড়াতে পারবেন—ফলতঃ, দে রাজ্যের শাসক সর্বতোভাবে প্রজ্ঞাপুঞ্জের দাস ও সেবক—দে দেশেই যে Kingdom of Heaven on Earth চিরবিরাজমান, বর্তমান ভারতবাসী দে সহজ্ঞ সত্য ভূলে গেলে চল্বে কেন ? মহাভারতের শান্তিপর্ব, অমুশাসনপর্ব প্রভৃতির ২।১ পৃষ্ঠাও যারা পড়ে দেশ্বেন, তারাই দেশ্তে পাবেন—মহাভারত-অমুশাসিত রাজ্যপালনই প্রকৃত ধর্মমোদিত শাসন—যার ভূলনা জগতে নাই, কোনও দিন হয় নি, বর্তমান হিংসায় উন্মন্ত পৃথ্বী কল্পনাও যেন ঠিকমত করতে পারে না,। পরের কাছে প্রার্থী হওগার পূর্বে আমরা যেন আমাদের প্রাচীন অনুল্য নিধিগুলির প্রতি দৃক্পাত করি, স্বাধীন ভারতে ইহাই আমাদের অবশ্র কাম্য।

স্থন্দরের ধ্যান নেত্র

শ্রীদেবপ্রদন্ন মুখোপাধ্যায়

অন্ধকারে বন্দী প্রাণ রুদ্ধ কারাগারে প্রভাত কর্য্যের আলো এল বহিছারে,—
মৃত্তিকার স্থাস্পর্শে প্রথম ক্রন্দন,
ত্যার্ত আবেগ বেগে ক্ষুরিল জীবন।
চত্তুদিক হ'তে আদে প্রাণবায় ল'য়ে
ধ্যানময় ধৃত্তুটির তপোশক্তি ব'য়ে।
মহাশৃত্তে অসীমের পথ চিনে চিনে
নক্তের জ্যোতির্লোকে দারুল ত্র্দিনে,

মাটীর তিমির গর্ভে অন্ধকার গিরির গুহায়,
চলেছে মানব আত্মা মুক্তির স্পৃহায় ।
বুগ হতে বুগান্তরে প্রক্ষার আলোক,
ফেলেছে সন্ধানী দৃষ্টি বেথা অন্তর্লোক ।
বুগে বুগে দেবলোকে অন্তর্লোকে মিলে
তুলেছে তুমুল দক্ত এ মহা নিধিলে।
দেবতা গড়েছে মাহুষ, মাহুষ দেবতা—
স্কল্বের চক্ষে নামে ধ্যান-বিহুবলতা।

অসীমের পথে চলে সীমার সন্ধানে কোথায় সে ক্যোভির্মন্ন দেবতা না কানে।



ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ পান্থশালা

চিত্রক ও রাজকুমারী রট্টা যথন পাছশালায় উপনীত হইলেন তথন সুর্যান্ত হইতে আর দণ্ড ছুই বাকি আছে।

তুইটি পথের সন্ধিন্তলে পান্থশালাটি অবস্থিত। বে পথ চণ্টন হর্ণের সহিত কপোতকুটের সংযোগ স্থাপন করিয়াছে, এই স্থানে সেই পথ হুইতে একটি শাখা বাহির হুইয়া অগ্নি-কোণে আর্থাবর্তের দিকে চলিয়া গিয়াছে, দ্বিধা-ভিন্ন পথের মধ্যস্থলে প্রস্তার প্রাকারবেষ্টিত এই পান্থশালা।

স্থানটি মনোরম। উত্তর ও পূর্বদিকে ঘন পর্বতের শ্রেণী; পশ্চিমদিকে বহুদ্র পর্যস্ত উন্মৃত্ত উপত্যকা। এই উপত্যকার মধ্য দিয়া একটি উপল-কুটিলা কুদ্র নদী বহিয়া গিয়াছে; মনে হয় পূর্বদিকৈর পর্বতকল্পর হইতে নির্গত এক রক্ষতবর্ণ নাগ শ্রথগতিতে অন্তাচলের পানে কোন নৃতন বিবরের সন্ধানে চলিয়াছে।

পান্থশালটি আয়তনে অপেকাকৃত কুদ্র হইলেও ছর্ণের আকারে নির্মিত, উচ্চ পাষাণ-প্রাচীর বারা পরিবেটিত। জনালয় হইতে দ্রে অরক্ষিত পথপার্থে পান্থশালা নির্মাণ করিতে হয়। একে তা এ অঞ্চলে থণ্ড মুদ্ধাদি লাগিয়াই আছে, ততুপরি উত্তর-পশ্চিমের গিরিসকট মধ্যে যে সকল বক্ত জাতি বাস করে তাহারা বড়েই হর্দম প্রকৃতি। তাহারা মেষ পালনের অবকাশ-কালে দল বাধিয়া দম্যতা করে। পথে অরক্ষিত যাত্রিদল পাইলে দ্রুটপাট করে; মুযোগ পাইলে পান্থশালাকেও অন্যাহতি দেয় না। তাই দিবাভাগে পান্থশালার লোহক্টক মুক্ত বার খোলা থাকিলেও ম্বান্তের সক্ষে উহা বন্ধ হইয়া যায়। তথ্য আর কাহারও প্রবেশাধিকার থাকে না; চিরাগত যাত্রীয়া ভারের বাহিরে রাত্রি যাপন করে।

চিত্রক ও রট্টা পাছশালার তোরণমূথে উপস্থিত হইলে

छो नद्गित्यु वक्ताभाधाः

পাছপাল ছুটিয়া আসিয়া যোড়হন্তে অভ্যর্থনা করিল— 'আহ্ন, কুমার ভট্টারিকা, আপনার পদার্পণে আমার স্থান পবিত্র হইল। — দৃত মহাশয়, আপনিও স্থাপত। আমি ভাগ্যবান, তাই আজ—' বলা বাছল্য, পাস্থপাল পূর্বেই নকুল প্রমুখাৎ সংবাদ পাইয়াছিল যে ইহারা আসিতেছেন।

চিত্রক ও রট্টা অশ্ব হইতে অবরোহণ করিলেন। পাছ-পাল ব্যস্ত হইয়া ডাকিল—'ওরে কে আছিস—কঙ্ক, ভুঙ্ভ —শীদ্র কামোজ কটিকে মন্দ্রায় লইয়া যা, যব—শব্জু শালি-প্রিয়ঙ্গু দিয়া সেবা কর।'—

ছুইজন কিন্ধর আসিয়া অশ্ব ছুটির বল্গা ধরিয়া ভিতরে লইয়া গেল। রট্টা জিজ্ঞাসা করিলেন—'আমার রক্ষীরা কি চলিয়া গিয়াছে ?'

পাছপাল বলিল—'আজা হাঁ। নকুল মহাশয়ের ইচ্ছা ছিল না; কিন্তু কুমার ভট্টারিকার আদেশ অলজ্যনীয়। জাঁহারা দ্বিপ্রহরেই চলিয়া গিয়াছেন।

পাছপাল মধ্যবয়স্ক ব্যক্তি; সুলকায় কিন্তু নিরেট। বচনবিস্থানে বেশ পটু। চিত্রক তাহাকে উত্তমরূপে নিরীকণ করিয়া বলিল—'এখানে দেবছহিতা রাত্রিযাপন করিলে ভরের কোনও কারণ নাই ?'

'ভয়! আমার পাছশালার দার বন্ধ হইলে মৃষিকেরও সাধা নাই ভিতরে প্রবেশ করে।' পাছপাল কণ্ঠন্বর হ্রন্থ করিয়া বলিল -তবে ভিতরে ক্য়েকটি পাছ আছে। তাহারা বিদেশী বণিক, পারশুদেশ হইতে আসিতেছে; মগধে যাইবে—'

'তাহারা কি বিশ্বাসযোগ্য নয় ?'

'বিশ্বাসের অবোগ্য বলিতে পারি না। ইহারা বছ বৎসর ধরিয়া এই পথে গভায়াত করিতেছে। মেষরোমের আত্তরণ গাত্রাবরণ প্রভৃতি লইয়া আর্যাবর্তের বিভিন্ন প্রাক্তে

कारवाकीत जब, ट्यांक जब

বাণিজ্য করিয়া বেড়ায়। তবে উহারা অগ্নি-উপাসক, মেছে। সাবধানের নাশ নাই।

'কিরূপ সাবধানতা অবলম্বন কর্তব্য ?'

পাছপাল বলিল—ইনি দেবছুহিতা একথা প্রকাশ না করিলেই চলিবে। ইনি আসিতেছেন তাহা আমি ভিন্ন আর কেহ জানেনা।

চিত্রক দেখিল পাস্থপাল লোকটি চতুর ও প্রত্যুৎপর্মতি; সে বলিল—'ভাল।—পাস্থপাল, তোমার নাম কি ?'

পাছণাল সবিনয়ে বলিল—'দেবছিজের কুপায় এ দাসের নাম জয়কছু। কিছ আর্যভাষা সকলের মুখে উচ্চারণ হয় না, কেছ কেছ জমুক বলিয়া ডাকে।'

চিত্রক হাসিয়া বলিল—'ভাল। জনুক, আমাদের ভিতরে দইয়া চল.। আমরা প্রাস্ত হইরাছি।'

জমুক বলিল—'আফুন মহাভাগ, আফুন দেবি—। আপনাদের জন্ত শ্রেষ্ঠ হৃটি কক্ষ সজ্জিত করিয়া রাখিয়াছি। এদিকে স্নিশ্ব অমুগীধু প্রস্তুত আছে, অহুসতি হইলেই—'

চিত্রক ও রট্টা প্রাকারের অভ্যস্তরে প্রবেশ করিলেন।

স্থা তথনও অন্তাচল স্পর্ল করে নাই, কিন্তু জন্মুকের আদেশে

ছইজন ঘারী ঘার বন্ধ করিয়া ইন্দ্রকীলক আঁটিয়া দিল।
কাল স্থােদয় পর্যন্ত আর কেহ প্রবেশ করিতে পারিবে না।

রট্টা পূর্বে কখনও পাছশালা দেখেন নাই, তিনি পরম কৌতৃহলের সহিত চারিদিকে দৃষ্টি কিরাইয়া দেখিতে দেখিতে চলিলেন। প্রাচীর ধারা পরিবৃত স্থানটি চতুষোণ; তিনটি প্রাচীরের গাত্রে সারি সারি প্রকোষ্ঠ; প্রকোষ্ঠ-শুলির সমুখে একটানা অপ্রশস্ত অলিন। মধ্যস্থলে শিলা-পট্টাবৃত স্থপরিসর উন্মুক্ত অকন। অক্ষনের কেন্দ্রন্থলে চক্রাকৃতি বৃহৎ জলকুণ্ড।

অঙ্গনের এক কোণে করেকটি উট্ট ও গর্দভ রহিয়াছে; তাহারা পারসিক বণিকদের পণ্যবাহক। পারসিকেরা বর্ণকটেই আন্তরণ বিছাইয়া বসিয়া আছে এবং নিজেদের মধ্যে রহস্থালাপ করিতেছে। তাহাদের ম্থমণ্ডল শাশ্রু-মণ্ডিত; বর্ণ পক-দাড়িখের স্থায়; চকু ও কেশ ঘনকৃষ্ণ।

রট্টা যথন চিত্রক ও জন্মকের সহিত তাহাদের নিকট দিয়া চলিয়া গেলেন তথন তাহারা একবার চক্ষু তুলিয়া দেখিল, তারপর আবার পরস্পর বাক্যালাপ করিতে লাগিল। ইহারা নিতান্তই নিরীহ বলিক, ছন্মবেশী দহা ভন্তর নর; কিছ চিত্রকের মন সলিশ্ব হইরা উঠিল। নারী লইয়া পথ চলা যে কিরূপ উদ্বেশস্থানক কাজ এ অভিজ্ঞতা পূর্বে তাহার ছিল না।

চিত্রক নিম্পরে জন্ককে প্রশ্ন করিল—'ইছারা কয়জন ?'

खबुक विनन,--'भीठखन।'

'সঙ্গে অন্ত্ৰণন্ত্ৰ আছে ?'

'আছে। অস্ত্ৰনালইয়া এদেশে কেই পথ চলে না।'

'তোমার ভূত্য অমুচর কয়জন ?'

'আমরা পুরুষ আট জন আছি।'

'স্ত্ৰীলোকও আছে নাকি ?'

জন্ম প্রাঙ্গণের বিপরীত প্রাস্তে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া বলিল—'আমাদের চারিজন অন্তঃপুরিকা আছে।'

চিত্ৰক অনেকটা আশ্বন্ত হইল।

অঙ্গনের অন্ত প্রান্তে চারিজন নারী বসিয়া গৃহকর্ম করিতেছিল। রট্টা সেধানে গিয়া শ্বিতমুথে দাঁড়াইয়া দেখিতে লাগিলেন। চত্তরের কিয়দংশ পরিষ্কৃত করিয়া নারীগণ নৈশ ভোজনের আয়োজন করিতেছে। একজন বর্তরা ঘুরাইয়া গোধুম চূর্ব করিতেছে; নবচূর্ণিত গোধুম হইতে রোটিকা প্রস্কৃত হইবে। বিভীয়া শাক বাছিতেছে; তৃতীয়া প্রত্তর উদ্থলে স্থগন্ধি বেশার * কুট্টন করিতেছে; চতুর্বী মেষমাংস ছুরিকা দিয়া কাটিয়া কাটিয়া পৃথক করিয়া রাখিতেছে। তাহারা মাঝে মাঝে সম্ভ্রম কোতৃহল-পূর্ণ চক্ষু তুলিয়া এই পুক্ষবেশিনী স্থলারীকে দেখিল, কিছু তাহাদের ক্ষিপ্র নিপুণ হত্তের কার্য শিথিল হইল না।

রটা কিছুক্ষণ ইহাদের মহণ কর্মদক্ষতা নিরীকণ করিলেন। তারপর একটি কুদ্র নিশ্বাস ফেলিয়া জন্তুকের দিকে ফিরিলেন—'জন্তুক, তোমাকে একটি কাজ করিতে হইবে।'

অস্ক তৎক্ষণাৎ যুক্তপাণি হইল—'আজ্ঞা করুন।' 'কপোতকুটের পথে পর্বতের উপর একটি বৌদ্ধবিহার আছে জ্ঞান কি ?'

'আজা জানি। চিল্লকুট বিহার।'

'সেখানে ভিক্লের জন্ম তুই আঢ়ক উত্তম গোগুম পাঠাইতে হইবে।'

^{* 11471}

'আজা পাঠাইব। কল্য প্রাতেই গর্দভপৃঠে গোধ্ম পাঠাইয়া দিব। ভিক্ষরা স্থান্তের পূর্বেই পাইবেন।' 'ভাল। আমি মূল্য দিব।'

চিত্রক ও রট্টার জক্ত যে ছুইটি কক্ষ নির্দিষ্ট হইয়াছিল তাহা আকার ও আয়তনে অক্সান্ত কক্ষের মতই, কিন্তু কক্ষের কুট্টিমে উষ্ট্ররোমের আন্তরণ বিস্তৃত হইয়াছিল, তত্পরি কোমল শ্যা। কোণে পিন্তলের দীপদণ্ডে বর্তি জ্লিতেছে। রাজকুমারীর পক্ষে ইহা তৃচ্ছ আয়োজন; কিন্তু দেখিয়া রট্টা প্রীত হইলেন।

অনুসীধু সহযোগে কিছু কীরের মণ্ড ভক্ষণ করিরা উভয়ে আপাতত কুৎপিপাদার নিবৃত্তি করিলেন। রাত্রির আহার বাকি রহিল।

আহারাস্তে চিত্রক গাত্রোখান করিয়া রট্টাকে বলিল,
— 'আপনি এখন কিয়ৎকাল বিশ্রাম করুন।' বলিয়া
রট্টার কক্ষের দার ভেজাইয়া দিয়া বাহিরে আদিল।

আকাশে তথন নক্ষত্র ফুটিয়াছে; রাত্রি অন্ধকার, এখনও চন্দ্রোদয় হয় নাই। পাছশালার প্রাক্তের স্থানে স্থানে অগ্রিজ্বলিতেছে। ওদিকে পারসিকেরা অকার কুণ্ড প্রস্তুত করিয়া শ্ল্য মাংস করিতেছে; দগ্ধ মাংদের বেশার-মিশ্র স্থান্ধ দ্রাণেক্রিয়কে লুক্ক করিয়া ভূলিতেছে।

চিত্রক বলিল—'হিঙ্গু-পলাণ্ডু-ভোজী স্লেচ্ছগুলা রাঁধে ভাল। জমুক, রাত্রে আমাদের ভোজনের কি ব্যবস্থা?'

सन्द ভোজা বস্তর দীর্ঘ তালিকা দিল। প্রথমেই
মিষ্টান্ন: মধু পিষ্টক লড্ড কুক ও কীর; তারপর শাক ঘততণ্ডুল মুদ্গ-স্প, ময়ুর-ডিছ; সর্বশেষে রোটিকা পুরোডাশ
ও তিন প্রকার অবদংশ সহ উথা মাংস শ্লা মাংস ও
দধি।

চিত্রক সন্তুষ্ট হইয়া বলিল—'উত্তম। দেবছহিতার কষ্টনাহয়।—আবার শুন, শূল্যমাংস আমি রন্ধন করিব।'

ব্দুক চকু বিক্তারিত করিল, কিন্তু তৎক্ষণাৎ সায় দিয়া বিলন—'বেরূপ আপনার অভিকৃতি।'

চিত্রক কক্ষের সমূথে অঙ্গনের উপর একটা স্থান নির্দেশ করিয়া বলিল—'এইথানে অঙ্গার চুলী রচনা কর।'

অন্তর আদেশে ভূত্য আসিয়া অসারচুলী রচনায় প্রস্ত হ**ইল। এই অবকাশে ইতন্তত** পাদচারণ করিতে করিতে চিত্রক শক্ষ্য করিল, কক্ষশ্রেণী বেখানে শেষ হইয়াছে সেথানে একটি বংশনির্মিত নিঃশ্রেণি বক্রন্তাবে ছাদসংলগ্ন হইয়া রহিয়াছে। তাহার মন আবার সন্দিগ্ধ হইয়া উঠিল। ছাদে উঠিবার সিঁড়ি কেন? উপরে যদি কেহ লুকাইয়া থাকে? চিত্রক জমুককে সিঁড়ি দেখাইয়া বলিল—'ছাদে কী আছে?'

জন্ম বলিল—'শুক জালানি কাঠ আছে। আর কিছুনাই।'

চিত্রকের সন্দেহ ঘুচিল না; সে স্বচক্ষে দেখিবার জস্ত নিংশ্রেণি বাভিয়া ছাদে উঠিয়া গেল। জসুককে বলিল— 'তুমিও এস।'

ছাদের উপর সতাই জালানি কাঠ ভিন্ন আর কিছু
নাই। চিত্রক নক্ষত্রালোকে ত্রিভুজা ছাদের সর্বত্র পরিভ্রমণ
করিয়া নিশ্চিন্ত হইল। ছাদের উপর মন্দ মন্দ শীতল বারু
বহিতে আরম্ভ করিয়াছিল; চারিদিক শব্দনীন, অন্ধকার;
কেবল গিরিনদীর বুকে নক্ষত্র খচিত আকাশের প্রতিবিদ্ধ
পড়িয়াছে।

চিত্রক নামিবার উপক্রম করিতেছে এমন সময় বাহিরের অন্ধকার হইতে এক উৎকট অট্ট-কোলাহল উবিত হইয়া চিত্রককে চমকিত করিয়া দিল; একদল শৃগাল নিকটেই কোথাও বসিয়া যাম বোষণা করিতেছে।

তাহাদের সম্মিলিত ক্রোশন ক্রমে শাস্ত ছইলে চিত্রক হাসিয়া উঠিল, বলিল—'এখানে জম্বুকের অভাব নাই দেখিতেছি।

জমুক হাসিল, বলিল—পৃথিবীতে অম্ব্রের আভাব কোণায় ? তবে জয়কমু বড় অধিক নাই মহাশয়।

চিত্রক বলিল—'সেকথা সত্য। তুমি উত্তম পাছপাল।'
এই সময় পশ্চিম দিগস্তের পানে দৃষ্টি পড়িতে চিত্রক
দেখিল, বহুদ্রে চক্রবাল রেখার নিকট যেন পাছাড়ে
আগুন লাগিয়াছে; আগুন দেখা যাইতেছে না, কেবল
ভাহার উৎসারিত প্রভা দিগস্তকে রঞ্জিত করিয়াছে।

অঙ্গুলি নির্দেশ করিয়া চিত্রক জিজ্ঞানা করিল—'উহা কি? পাহাড়ের জঙ্গলে কি আগুন লাগিয়াছে ?'

জমুক বলিগ—'বোধহয় না। কয়েকদিন ধরিয়া দেখিতেছি, একই স্থানে আছে। পাহাড়ের আগুন হইলে দক্ষিণে বামে ব্যাপ্ত হইত।' 'তবে কী? ওদিকে কি কোনও নগর আছে? কিন্ত নগর থাকিলেও রাত্রে এত আলো অলিবে কেন? ইহা তো দীপোৎসবের সময় নয়।'

'छिपिक नगत नाहे। छरत--'

'তবে ?'

জমুক বলিল—'পাছশালায় অনেক লোক আসে যায়, আনেক কথা শুনিতে পাই। শুনিয়াছি, হুণ আবার আসিতেছে। যদি কথা সত্য হয়, আবার দেশ লণ্ডভণ্ড হইবে।' বলিয়া জমুক নিশাস ফেলিল।

চিত্রক বলিল—'তোমার কি মনে হয় ছুণেরা ঐথানে ছত্রাবাস ফেলিয়াছে ?'

'ৰুমুক বলিল—'না, তাহা মনে হয় না। হুণেরা এত কাছে আসিলে লুটপাট করিত, অত্যাচার করিত। কিন্ত এদিকে হুণ দেখি নাই।'

'তবে কী হইতে পারে ?'

'জনশ্রতি শুনিয়াছি, সম্রাট ক্ষমগুপ্ত সংগ্রহে ছুণের গতিরোধ করিতে আসিয়াছেন।'

চিত্রক বিশ্মিত হইয়া বলিল—'স্কল্পগুপ্ত স্বয়ং।'

জমুক বলিল—'এইরূপ শুনিয়াছি। সত্য মিথ্যা বলিতে পারি না। কেন, আপনি কিছু জানেন না?'

চিত্রক চকিতে আত্মসংবরণ করিয়া বলিল — 'না, আমি কিছু জানি না। বৃদ্ধ সম্ভাবনার পূর্বেই আমি পাটলিপুত্র ছাড়িয়াছি।'

চিত্ৰক ও জন্মক নীতে নামিয়া আসিল।

ভূত্য ইতিমধ্যে অকার প্রস্তুত করিয়া শূল্য মাংসের উপকরণাদি আনিয়া রাখিয়াছে। চিত্রক তাহা দেখিয়া প্রথমে গিয়া রটার রুদ্ধ ছারের সম্মুথে দাঁড়াইল। কাণ পাতিয়া শুনিল কিছু কিন্তু শুনিতে পাইল না। তথন সে ছার ঈষৎ ঠেলিয়া ভিতরে দৃষ্টিপাত করিল। দীপের মিয় আলোকে রটা শ্যায় শুইয়া আছেন, একটি বাছ চক্রুর উপর গুন্ত। বোধহয় নিজাবেশ হইয়াছে। এই নিভ্ত দৃশ্য দেখিয়া চিত্রকের মন এক অপূর্ব সম্মোহে পূর্ব হইয়া উঠিল; মৃগমদ-সৌরভের স্তায় মাদক-মধ্র রসোচছ্যাসে হাদকুন্ত কঠ পর্যন্ত ভরিয়া উঠিল। সে ধীরে ধীরে ছার বন্ধ করিয়া দিল। মনে মনে বলিল—মুমাও, রাজকুমারী, মুমাও।

চাঁদ উঠিয়াছে। কৃষণা চতুর্থীর চক্ত পূর্বাচলের মাথায় উঠিয়া ক্লান্ত হাসি হাসিতেছে। পাছশালার অঙ্গন শৃষ্ক, পারসিকেরা নিজ প্রকোঠে ছার বন্ধ করিয়াছে। অঙ্গন ন্তিমিত জ্যোৎসায় পাণ্ডুর।

চিত্রক হট্টার খারে করাঘাত করিয়া ডাকিল—দেবি উঠুন উঠুন, আহার প্রস্তুত।'

দার খুলিয়া ওটা হাসিমুখে সম্মুখে দাঁড়াইলেন, ঈষৎ জড়িত কঠে বলিলেন—'ঘুমাইয়া পড়িয়াছিলাম।'—

সম্মুখেই অলিলে আহারের আসন হইরাছিল, তুইটি আসন মুখোমুখি; মধ্যে বহু কটোর এবং স্থালীতে খাত সম্ভার। পাশে তুইটি দীপ জ্বলিতেছে। উভয়ে আহারে বসিলেন; জমুক দাড়াইয়া তত্ত্বাবধান করিতে লাগিল।

আহারের সঙ্গে সঙ্গে ছই চারিটি কথা হইতেছে।
জন্ম মাঝে মাঝে চিন্তবিনাদনের জন্ম কৌতুকজনক
উপাধ্যান বলিতেছে। রাজকল্যা হাসিতেছেন; তাঁহার
মুখে তৃপ্তি, চোধে নিক্ছেগ প্রশাস্থি। চিত্রক নিজ হাদয়
মধ্যে একটি আন্দোলন অন্থতব করিতেছে, যেন সাগরতরজে তাহার হাদয় তুলিতেছে ফুলিতেছে, উঠিতেছে
নামিতেছে—

রট্টা বলিলেন—'কাল পিতার দর্শন পাইব ভাবিয়া বড় আনন্দ হইতেছে।'

চিত্রকের মনের উপর ছায়া পড়িল। রট্টার পিতা···
তাহার সহিত চিত্রকের একটা বোঝাপড়া আছে···কিন্ত দে চিস্তা এখন নয়···

চিত্রক বলিল—'একটা জনরব শুনিলাম।—পর্ম-ভট্টারক স্বলগুপু নাকি চভুরজ সেনা লইয়া এদেশে আসিয়াছেন।'

রটা চকিত চকু তুলিলেন—'স্বন্দগুপ্ত!'

চিত্রক নির্ণিপ্তস্থরে বলিল—'হাঁ। হুণ আবার আসিতেছে, তাই মহারাজ তাহাদের গতিরোধ করিবার ভক্ত স্বরং আসিয়াছেন।'

রট্টা কিয়ৎকাল নতম্থে রহিলেন, তারপর মুখ তুলিয় বলিলেন—'আপনি সম্ভবত প্রভুর সহিত মিলিত হইতে চাহেন ?'

চিত্ৰক বলিল—'সে পরের কথা। আগে আপনাকে চণ্টনছর্গে পৌছাইয়া দিয়া তবে অন্ত কাল।' রষ্ট্রা তাহার মূখের উপর ছারা নিবিড় চক্ষুক্টি স্থাপন করিয়া বিশ্ব হাসিলেন।

আহার সমাপ্ত হইলে রট্টা জম্বুককে বলিলেন—'ভোমার সেবায় আমরা তৃপ্ত হইয়াছি। অন্ন ব্যঞ্জন অতি মুখরোচক হইয়াছে। দেখ, আর্থ চিত্রক কিছুই ফেলিয়া রাথেন নাই।'

জন্ত করতল যুক্ত করিয়া সবিনয়ে হাস্ত করিল।
চিত্রক মৃহ হাসিয়া রটাকে জিজ্ঞাসা করিল—'কোন্ ব্যঞ্জন
স্বাপেকা মুখরোচক লাগিল?'

রট্টা বলিলেন—'শূল্য মাংস। এরপ স্থস্থাত রন্ধন রাজ-পাচকও পারে না।'

চিত্রক মিটিমিটি হাসিতে লাগিল; রট্ট। তাহা দেখিয়া সন্দিথ হইলেন, বলিলেন—'শ্লা মাংস কে রাঁধিয়াছে?'

अयुक छर्जनौ प्रथारेशा विनन-'रेनि!'

অবাক হইয়া কিছুক্ষণ চাহিয়া থাকিয়া রট্টা হাসিয়া উঠিলেন—'আপনার তো অনেক বিভা! এ বিভা কোথায় শিথিলেন ?'

চিত্রক বলিল—'ঝামার সকল বিভা বেখানে শিথিয়াছি সেইখানে।'

'সে কোথায় ?' •

'যুদ্ধক্ষেত্ৰে।'

চিত্রকের মন কল্পনায় কলগুপ্তের কল্পবারের দিকে উড়িয়া গেল। ঐ যেখানে দিগস্কের কাছে আলোর আভা দেখা গিয়াছিল দেখানে ক্রোশের পর ক্রোশ বস্ত্র শিবির তালপত্রের ছাউনি পড়িয়াছে; শিবিরের ফাঁকে ফাঁকে সৈনিকেরা আগুন আলিয়াছে; কেহ যবচূর্ণ মাথিয়া হই হস্তে পুল রোটিকা গড়িতেছে; কেহ ভল্লাগ্রে মাংস গ্রথিত করিয়া আগুনে শুন্য পক করিতেছে—চীৎকার গান

বাগ্যুক ··· নির্ভন্ন নিরুদেগ জীবনধাতা ··· জতীত নাই, ভবিশ্বৎ নাই ··· আছে কেবল নিরঙ্গ বর্তমান।

রটা চিত্রকের মুখের উপর চিস্তার ক্রীড়া লক্ষ্য করিতেছিলেন, মৃত্ হাসিয়া বলিলেন—'যুদ্ধক্ষেত্রের স্থপ্র দেখিতেছেন ?'

চিত্ৰক ঈৰৎ চমকিয়া বলিল—'হাঁ। আপনি কি অন্তৰ্গামিনী?'

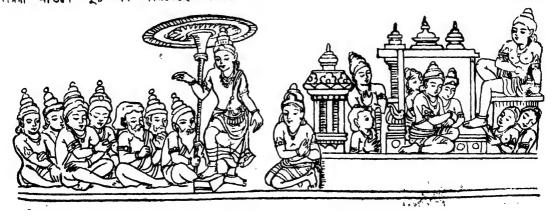
রটা রহস্তময় হাদিলেন। * * *
রাত্তি গভীর হইয়াছে। চক্র প্রায় মধ্যাকাশে।

কুমারী রট্টা আপন কক্ষে শ্যাপ্রাপ্ত ঘুমাইয়া ছিলেন, একটি নিখাদ ফেলিয়া জাগিয়া উঠিলেন। বরের কোণে দীপ জ্বলিতেছে; জ্বলিয়া জ্বলিয়া শিখাটি ক্রমে ক্ষুত্র বর্তু পবৎ আকার ধারণ করিয়াছে। তাহার বিন্দুপ্রমাণ আলোকে ঘরের বিশেষ কিছু দেখা যাইতেছে না। শ্যাম উঠিয়া বিদিয়া রটা কিয়ৎকাল ঐ আলোকবিন্দুর পানে চাহিয়া রহিলেন; তারপর উঠিয়া নিঃশব্দে হারের জ্বর্গল মোচন করিলেন।

দার ঈষং বিভক্ত করিয়া দেখিলেন, তাঁহার কক্ষের সন্মুখে দারের দিকে পিছন করিয়া অলিন্দের একটি ওত্তে পৃষ্ঠ রাখিয়া চিত্রক বসিয়া আছে। পদ্ভয় প্রসারিত, জামুর উপর মুক্ত তরবারি। তাহার উধ্বেণিভিত মুখের উপর চাঁদের আলো পড়িয়াছে—চক্ষু স্বপ্রাত্র—

দীর্ঘকাল এক দৃষ্টিতে দেখিয়া রট্টা আবার খীরে ধীরে দার বন্ধ করিয়া দিলেন; ফিরিয়া আসিয়া আখোমুখে শ্যাম বক্ষ চাপিয়া শয়ন করিলেন। তাঁহার চকু হইতে বিন্দ্ বিন্দু অশু ঝরিয়া উপাধান সিক্ত করিয়া দিতে লাগিল।

(ক্ৰমশঃ)



আন্দামান-নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

অধ্যাপক শ্রীমণীব্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

(পূর্বব্যকাশিতের পর)

আন্দামানে জাপানী-রাজ

গুপ্তচর সম্পেহে জুলফিকার আলির উপর অমাতুষিক পীড়ন করিয়া তাহাকে হত্যা করার প্রায় একমাস পরে ইংরাজ আমলের চিফ্ ক্ষিশনারের সেক্রেটারী মি: বার্ডের উপর জাপানীদের সন্দেহ হয়। শীপুৰুৱ বাগচি নামে আন্দামান Public Works Department-এর ইংরাজ আমোলের একজন কেরাণী জাপানীদের নিচট নিজেকে স্থভাষ বোদের আন্ত্রীয় এইরূপ মিখা পরিচয় দিয়া জাপানীদের সহিত ঘনিষ্ঠতা করিয়া Chief Naval Intelligence Officer-এর পদে উন্নীত হন এবং তিনিই জাপানীদের মনে এইরূপ বিখাস করাইয়া দেন যে. বার্ড সাহেব ঋথ বেতার যন্ত্রের সাহায্যে আন্দামানের সংবাদ ইংরাজদের নিকট পৌছাইয়া দিতেছেন। এই মিখ্যা সংবাদে জাপানীরা বার্ডকে একদিন সকালে সেলুলার জেলের পার্বে সমুদ্রের ভীরে বিচার করিতে আরম্ভ করে। বার্ড সাহেব জানিতেন যে. জাপানীদের ঘাহার উপর সন্দেহ হয় ভাহার নিকট হইতে অপরাধের শীকারোক্তি পাইবার জন্ম অমামুবিক অভ্যাচার করে এবং শেষ পর্যান্ত হত্যা করে, অতএব তিনি প্রথম হইতেই প্রাণের আশা ছাডিয়া দিয়া জাপানীদের দেওয়া সমস্ত অভিযোগ স্বীকার করিয়া লন, এবং প্রার্থনা করেন যে, তাঁহাকে একেবারেই বন্দুকের গুলিতে বধ করা হউক। জাপানীয়া কিন্তু তাহা করে নাই, শীকারোক্তি পাইয়া তাহার সহিত পূর্বের মতই ব্যবহার করিতে হুরু করে। সেলুলার ক্লেলের পার্বে সমুস্তীরে ক্রেক্জন জাপানী দৈনিক কেবলমাত্র আন্তারওয়ার পরিহিত বার্ডের পলার টুটি চাপিয়া কিছুকণের জল্প তাহার খাসকৃত্ব করে, ভারপর পেটে ও পাঁজয়ার ঘুসি এবং লাখি দিয়া তাহাকে জ্বম করিয়া দুরে সরিয়া দাঁড়ায়। বার্ড সাহেব আন্দামানের একজন বিশেষ জনপ্রিয় অফিদার ছিলেন। এখানেও পূর্বের মতই আন্দামানের বহ নারী ও পুরুষ অধিবাসীকে জাের করিয়া ধরিয়া আনিয়া এই বিচার দেখানো হইভেছিল। বার্ড সাহেব .প্রথম আঘাত সহু করিয়া মুমুর্ অবস্থায় কাঁপিতে কাঁপিতে একটু জল চাহিয়াছিলেন, ইহাতে একজন স্ত্রীলোক ভিড়ের মধ্য ছইতে কিরূপে যেন এক গ্লাস জল সংগ্রহ করিয়া বার্ডকে দিবার জন্ম অগ্রসর হয়। তথন একজন জাপানী দৈনিক সেই জলের গ্লাসটি জ্লীলোকের হাত হইতে লইরা নিজে বার্ডের নিকট গিরা গ্লাসটি দেখাইয়া হাতে দিতে ঘাইবার অভিনয় করিয়া গ্লাসসমেত कन पृत्त हूँ जित्रा किनिन्ना क्षित्र। वार्छत मूथ इट्रेंट अकृष्टि माज कथा বাহির হইয়াছিল "Oh Jesus" । এই ঘটনার প্রভাকর্ণনীদের

মধ্যে একাধিক ব্যক্তি আমাকে বলিরাছেন যে, ইহার পর তাঁগার
মূপ দিয়া আর কোন শব্দ বাহির হয় নাই। গায়ে আলপিন ফুটান এবং
বেয়নেটের ছারা বার্ডের ছইটি চক্ষু উপড়াইয়া দেওয়া হইয়াছিল, কিন্তু
তাহাতেও তিনি কোন শব্দ করেন নাই। শেষে তরবারির ছারা তাঁহার
মাধা কাটিয়া ফেলিয়া সেইখানে সেই সমুজ্ঞতীরেই তাঁহাকে পুতিয়া ফেলা
হয়। ইংরাজের ছারা আন্দামান পুনর্দথনের পরে সেধানে একটি কবর
নির্দ্দাণ করিয়া কুশচিহ্ন দেওয়া হইয়াছে এবং তাহার শুভিরক্ষার জন্ম
নিক্টবর্তী একটি স্থানের নামকরণ করা হইয়াছে "বার্ডস লাইন"।

ইহার পরেই জাপানীরা এক্জিকিউটিভ ইঞ্জিনীয়ার মিঃ লিওসে ও তাহার পাঠান বাবুর্চির উপর সন্দেহ করে। থোলা মাঠে ইহাদের উপর প্রচণ্ডবেগে আঘাত করা হইতে থাকে, কিন্তু ইহারা বার্ডের ব্যাপার জানিতেন বলিয়া কিছুতেই কোন অপরাধ শীকার করেন নাই। শেবে অর্জমুত অবস্থাতেও কোনরূপ শীকারোক্তি না পাইয়া জাপানীরা ইহাদের ছাড়িয়া দের। জাপানীদের জঙ্গী বিভাগের বিচার বোধ হয় এইরপেই হইয়া থাকে। সন্দেহ হইলেই সর্ব্বসমক্ষে প্রহার হরত হর্তবে, শীকার করিলেই মৃত্যু, না করিলে প্রহারে অর্জমুত করিয়া ছাড়িয়া দিবে। এই লিওসে সাহেব আন্দামান পুনর্দপলের পর ইংরাজের চাকুরীতে পুনরায় বহাল হইয়া পরে মাজাজে বদলী হন, এবং এখনও পর্যান্ত সেইখানেই আছেন। তাহার পাঠান বাব্জিটি কিছুদিন পূর্ব্ব পর্যান্ত গুৱার নিকটেই ছিল, পরে দেশে চলিয়া গিয়াছে।

আন্দামানের অধিবাসীদের পক্ষে দারুণ ভয়ে ভয়ে এইরপে ১৯৪২ সাল কাটিয়া যায়। ইতাবসরে জাপানীয়া আন্দামানের সর্ব্বত্র রাঙা আলু জাতীয় ফসলের চাষ হরু করে. সম্পূর্ণ অজমা পাহাড়েও সার দিয়া ক্ষেত্র বানাইয়া কেলে। তাহাদের নিয়মামুবর্জিতা, কর্মাণজ্ঞিও উদ্ভাবনী বৃদ্ধিতে এক বছরেই পোর্টরেয়ারের বেশ কিছু উন্নতি হয়। এ বিবয়ে এখানকার লোকেরা সকলেই উহাদের হ্ণথ্যাতি করে। তবে এক বিবয়ে উহায়া নাকি ভয়ানক ছোটলোক। শুনিলাম. উহাদের উচত সম্প্রিমার অব্যবহিত নিয়ের পদস্থ অফিসারকেও সর্ব্বসমক্ষে চড়, কিল, লাবি মারিতে বিধা করে না, এবং এইরপ মার ধাইয়া সেই পন্তর অফিসারও বিস্তোহ করে না, নীরবেই সহ্থ করে। ইহাই নাকি উহাদের প্রচলত রীতি।

১৯৪২-এর শেষভাগ হইতে কে বা কাহারা আন্দামানের সংবাদ বেতারবোগে ইংরাজদের নিকট পাঠাইতে ফ্রন্থ করে। জাপানীরা ইহা অবগত হয়, কিন্তু কিছুতেই অপরাধীকে ধরিতে পারে না। ১৯৪৬ সালের ২১-এ জামুরারী হইতে ৩-এ মার্চের মধ্যে অনেক অমুস্কান করিয়া উহারা একদল লোককে বন্দী করে ও ইহাদের মধ্যে সাতজনকে পূর্ববর্ণিত অ্রন্থ কাণালীতে বধ। এই সাতজনের মধ্যে পাঁচজন ছিলেন পূলিদের কর্মচারী এবং ছইজন সাধারণ লোক। আবহুল থালেক নামক একজনকে এই ব্যাপারে বধ করা হর। থালেকের পিতা মি: রেফ্ এই বিষয়টি আমাদের নিকট বলিয়াছিলেন। যুদ্ধান্তে জাপানীরা পরাজিত হওয়ার পর ১৯৪৬ সালে সিক্সাপুরে যুদ্ধাপরাধীদের যে বিচার হয়, সেই বিচারে মি: রেফ্ একজন সাক্ষী ছিলেন। রেফের নিকট হইতে আমি এই প্রবন্ধের কিছু তথ্য সংগ্রহ করিয়াছি। এই রেফের ক্ত্মী অর্থাৎ থালেকের মাতা এবং থালেকের দশ বৎসরবয়্মা কন্যা তাহার পিতার জ্মুৎস্থতে মৃত্যু স্বচক্ষে দেখিয়াছে এবং মনে রাখিয়াছে। আমার নিকট বিবরণ দিতে লিয়া ছোট মেয়েট পূর্বকথা মূরণ করিয়া কাদিয়া কেলিল। ১৯৪৩ মার্চ্চ মানের এই ব্যাপারটিকে প্রথম গুপ্তর মৃত্যন্ত্র (First

১৯৪০ মার্চ মাদের এই ব্যাপারটিকে প্রথম গুপ্তরের বড়মন্ত্র (First spy. case) নামে অভিহিত করা হইয়াছিল। দ্বিতীয় গুপ্তচর বড়মন্ত্রের জন্ম ধরপাকড় ফ্রন্স হয় ঐ বৎসরের ২৯ এ জুলাই হইতে। এই Second spy. case-এর ধরপাকড় ১৯৪৮-এর জানুষারীর শেষ পর্যায় চলিতে শাকে। এই প্রসন্তে প্রায় পাঁচণত লোক বন্দী হয় এবং পাঁচণত লোককেই অমামুধিকভাবে প্রহার করা হয়। স্বীকারোক্তি আদার করিবার জন্ম মারপিঠ করিতে করিতে বারোজন হতভাগা মৃত্যুম্বে পতিত হয়; স্বীকারোক্তি দেওয়ার ফলে ৪৫ জন লোককেই ত্যাকাও ১৯৪৪-এর জানুরারী মাদের শেষ সপ্তাহে অমুষ্ঠিত হইয়াছিল।

১৯৪০ সালের নভেম্বর মাসে নেতাজী স্বভাষ্টন্স এই দ্বীপে পদার্পণ করেন। আন্দামানের অধিবাসীদের উপর অনুসন্ধান ও বিচারের নামে নাপানীরা যে ভয়াবহ অত্যাচার চালাইভেছিল, সে দখনে জাপানীরা নেতাজীকে বিশেষ কিছই জানতে দেয় নাই। একজনের নিকট গুনিলাম যে, নেতাজী যথন এপানে আদিয়াছিলেন তথন দেই ভদ্ৰলোক ছিতীয় খণ্ডার বড়বজ্রের আসামী হইয়া সেলুলার জেলে বন্দী ছিলেন। তিনি ৰলিলেন "জেলে আমাদের কোন বিছানা বা কখল কিছুই দেওয়া ইইড না, একথানি হাফপাণ্ট পরিয়া থালি গায়ে থাকিতাম, একবারমাত্র ক্দ্যা আহার দিত এবং ২৪ ঘণ্টার মধ্যে একমিনিটের জন্মও ছোট cellbর বাহিরে ঘাইবার উপায় ছিল না। সেই ছোট cellbর এককোণে ^{মূল} নূত্ৰ পড়িয়া থাকিত, জল ছিল না এবং থালি মেঝেয় থালি মাথায় উইয়া পাকিতাম। এই অবস্থায় হঠাৎ একদিন দেখি যে দেল্গুলি শাপর দিয়া পরিকৃত হইল, বাল্তি করিয়া জল আসিল, দেই সঙ্গে ^{ভালো} কমল, বিহানার চাদর, জামা ইত্যাদি আসিয়া গেল, ট্রের উপর শাগানো কলাই করা বাটীতে করিয়া ভালো ভালো খাত ইত্যাদি দেওয়া ^{ইইল} ; কারণ না বুঝিয়া আমেরা ভীষণ ভীত হইয়াপড়িলাম। পরে শামানের নিকট জেলরকী বলিয়া গেল যে, যে-কেইই তোমানের নিকট আদিয়া যাহা কিছুই কিফাদা কক্ক না কেন তোমরা কোন মতেই ^{কর্পকের} কোনরপ নিন্দ। করিবে না, করিবে মৃত্যুদণ্ড, আমরা ভরে बदः अनाशात अफ़दर इहेग्राहिनाम, उरक्रनार डाहाई श्रीकात कतिया ^{ণইণাম।} অভঃপর নেতাঙী স্থভাব জেল পরিদর্শন করিতে আসির। শামাদের আহার্যা, পরিধের এবং শ্যা দেখিয়া বিশেষ প্রীত হইরা চলিরা

গেলেন।" এই সময় নেতাজী জীম্থানা গ্রাউণ্ডে বক্তু তা দেন। অহ্যান্ত লোকের নিকট শুনিলাম যে, জাপানীরা নেতাজীকে এরপে আগলাইরা লইয়া বেড়াইয়াছিল যে, দেশবাদী কেইই তাহার দহিত প্রাণের কশা বিলাগ কোন অবকাশমাত্র পায় নাই। বক্তায় তিনি বলিয়াছিলেন যে ইংরাজের পক্ষে ইইয়া কোন যড়য়য় বা শুপুচর বৃত্তিতে যোগ দেওরা শুমিণ অপরাধ বলিয়া গণ্য হইবে; উপরস্ত শুরুতবাদীই শুরুত জয় করিবে, অতএব কোন ভারতবাদী যেন বিশ্বাস্থাতকতার কাজ না করে, অর্থাৎ মনে হয় জাপানীরা তাহাকে বৃষাইয়া দিয়াছিল যে আন্দামানের লোকেরা অধিকাংশই ইংরাজের পক্ষে এবং শুরুতের স্বাধীনতা মুদ্ধে আন্দামনের গুরুতীরগণ বিশ্বাস্থাতকতা করিতেছে। নেতাজী তিন দিনমাত্র এই শ্বীপে অবস্থান করিয়া এই শ্বীপকে শহীদ শ্বীপ নাম দিয়া চলিয়া গিয়াছিলেন। নেতাজী চলিয়া ঘাইবার পর জেলখানা হইতে দেই সমস্ত বিছানাপত্র এবং কয়েগাদের জামা ইত্যাদি পুনরায় কাড়িয়া লওয়া হইয়াছিল।

নেতাজী চলিয়া যাইবার মাস ভিনেক পরে ১৯৪৪ এর কেব্রুয়ারী মাদে কর্ণেল লোকনাখন তিনজন সহকারী লইয়া এই দ্বীপে আসেন এবং এখানকার বেদামবিক শাসনভার গ্রহণ করেন। অতঃপর এখানকার লোকের উপর অমামুধিক অভ্যাচার কিছুটা কমে, কিন্তু কিছুদিন পরেই তিনি আবার চলিয়া যান। লোকনাথনের এইখানে অবস্থিতিকালেই একদিন একথানি রুসদ্বাহী জাপানী জাহাজ 'রুস' ছীপের নিকট জলম্ম হয়। কিরাপে কে ইহার সংবাদ পাঠাইয়া ইংরাজের টর্পেডোর ছারা জাহাত্রখানিকে জলমগ্র করায় ভাহার কোন সঠিক প্রমাণ পাওরা যার নাই, কিন্তু এই ব্যাপারে তিনজন ভারতীয় জড়াইয়া পড়েন। ইহাদের নাম মি: ব্যানাজ্জী, মি: বুরহাফুদ্দিন ও মি: আলি। এই তিনজনেই সমুক্তের তীরে রক্ষার কাজ করিতেন। লোকনাথনের উপস্থিতির জন্মই ইহাদের একটা ভদ্র রকমের বিচার অভিনয় হইয়াছিল এবং জুজুৎম প্রধায় ইহাদের বধ না করিয়া ইহাদের তিনজনকে এক দকে দেলুলার জেলের ফাঁদীকাঠে ফাঁদী দেওয়া হয়। ইহারাই আঞ্জ পर्याख मिनूलात खालात कांगीकारकंत्र त्या विन এवः ইहारमत कथाई ইতঃপূর্বে দেপুলার ফার্দীমঞ্চের জেলের বর্ণনা প্রসঙ্গে উল্লেখ করিয়াছি। এই তিনজনের বিগার ব্যাপারটি Third spy case বা তৃতীয় শুপ্তচর ষড়যন্ত্ৰ নামে অভিহিত।

ইহার পর চতুর্থ গুপ্তচর বড়যন্ত। ১৯৪৪ সালের ২৯-এ আগপ্ত হইতে ১৯৪৫-এর মাঝামাঝি পর্যান্ত প্রায় পাঁচ ছয় শত ব্যক্তিকে এই ব্যাপারে আসামী শ্রেণীভূক্ত করা হয়। এই সমন্ত লোকদের উপর প্রের গ্রায় অত্যাচার চলিয়াছিল, কিন্তু শেব পর্যান্ত জাপানীদের পতন হওয়ার জক্ত এই বিচারের শেব নিম্পত্তি আর হয় নাই। সরকারীতাবে শক্র সম্পেহে জাপানীদের অমাকৃষিক অত্যাচারপর্বের এইখানেই শেব ; কিন্তু অক্ত ব্যাপারে তাহারা যে ভীষণভাবে নির্যান্তন ও নরহত্যা করিয়াছিল তাহার বিবরণ এখনও দেওয়া হয় নাই। আগামী সংখ্যায় সে সম্বন্ধে বাহা তানিয়াছি তাহা প্রকাশ করিবার ইচ্ছা রহিল।

(ক্রমশঃ)



বিপর্যায়ের মুখে পশ্চিমবঙ্গ

পশ্চিমবঙ্গের থাঞ্চপরিস্থিতি সম্প্রতি ভয়াবহ হইরা উঠিয়াছে। প্রতিবেশী অদেশ বিহারের সহিত পশ্চিমবঙ্গকে এখন এমন শোচনীয় খাত্মকটের সন্মুখীন হইতে হইয়াছে যে, অবিলয়ে উপযুক্ত ব্যবস্থা অবলম্বিত না **ছইলে** ১৯৪০ গ্রীষ্টাব্দের মহামযন্তরের পুনরাবৃত্তি হওরাও বিচিত্র । নয়। মুৰিদাবাদ জেলায় ইতিমধ্যেই অনাহারে মৃত্যুর সংবাদ পাওয়া বাইতেছে এবং কোথাও কোথাও চাউলের মূল্য উঠিয়াছে মণপ্রতি ৫٠ টাকা। ন্দীয়ার অবস্থাও প্রায় অনুরূপ। পশ্চিম বাংলার সব জেলাভেই অন্নাভাবে হাহাকার পডিয়া গিয়াছে। কলিকাভার আশপাণে काथां वंधन ः होकात्र करम वक मन हाउन मिनिएक ना। ভবু রেশন এলাকার অবস্থা মন্দের ভাল, কিন্তু রেশন এলাকাই আদেশের সব নয়। বিশেষ করিয়া রেশন অঞ্লে অপেকাকুঙ অবস্থাপন্ন ব্যক্তির৷ বাদ করেন, ক্রমবর্দ্ধমান চাটলের মূল্য রেশনবিহীন আমাঞ্চলের অসংখ্য অধিবাসীকে গভীর হতাশাচ্ছন্ন করিয়া তুলিতেছে। বেশন এলাকার দায়িত অবশ্য সরকার লইয়াছেন, কিন্তু এপথান্ত সরকারী এজেউদের শশু সংগ্রহের পরিমাণ প্রয়োজনের তলনায় নোটেই সভোষজনক নয়। স্বাভাবিক ভাবে এই বৎসর যেথানে ৮ লক্ষ টনের কিছু বেশা থান্তণভোৱ দরকার, সেধানে জুলাই মানের প্রথম দিক পর্যান্ত এজেটরা ৪ লক্ষ টনও সংগ্রহ করিয়া উঠিতে পারেন নাই। বাড়তি **পাত্যপত্ত সংগ্রহের কেন্দ্র পশ্চিম বাংলার অবস্থা সতাই** পোচনায়। বস্তায় এ বংসর প্রায় ২ লক একর জ্বির ক্ষতিহইয়াছে এবং সরকারী হিসাবেই মুসলমান চাষী চলিয়া যাওয়ায় মোটামুটিভাবে তিন লক ৫০ হাজার একর জমিতে চাবের অসুবিধা হইয়াছে। পাটচাব বৃদ্ধির জক্তও পশ্চিমবঙ্গের খাত্মণক্ত উৎপাদন কিছটা ক্ষতিগ্ৰস্ত হইয়াছে। কাজেই কেন্দ্ৰীয় সম্বকারের সাহায্যের উপরই এখন স্ব কিছ নির্ভর করিতেছে। এই ছলে উল্লেখযোগ্য যে, কেন্দ্রীয় সরকারও এবার থাভণস্তের ব্যাপারে একটু বিপন্ন হইয়া পড়িয়াছেন, কারণ ১৯৫১ সালে ভারতকে থাজের হিনাবে স্বয়ংসম্পূর্ণ করিয়া তুলিবার যে পরিকল্পনা তাঁহারা গ্রহণ ক্রিয়াছিলেন, তদমুষামী তাঁহারা এবার বাহির হইতে থাক্তণতা আমদানীর পরিমাণ গত বংসরের ৩৯ লক্ষ টনের স্থলে ১০ লক্ষ টনে নামাইয়া আনিবার সংকল করেন। অবস্থা গতিকে তাঁহাদের আণা এখন গভার নৈরাভে পরিণত হইতে চলিয়াছে।

থাভণত্যের হিসাবে পশ্চিম বাংলার নিজেরই মারাক্সক অভাব, ইহার উপর প্রচড় আগ্রয়প্রার্থী সমস্ত। অবস্থাকে ক্রমেই আয়ত্তের বাহিরে টানিয়া লইয়া ঘাইকেছে। সরকারী ছিসাবেই প্রকাশ, ১৯৫০ গ্রীষ্টাব্দের পূর্বে পূর্বেবল হইতে ১২ লক্ষ ৮৯ হাজার আত্মপ্রার্থী পশ্চিমবলে আদিয়াছিলেন, এ বৎসর মর্থাৎ ১৯৫٠ গ্রীষ্টান্দে আগ্রয়প্রার্থীর সংখ্যা ২৫ লক ২২ হাজার বাড়িয়া এখন মোট ৩৮ লক্ষের উপরে উঠিগছে। আমাদের মনে হয় আভায়প্রার্থীর প্রকৃত সংখ্যা এই সরকারী হিসাব অপেকাও বেশ্ব এবং মোটামুট ইহা ৬ লক হইবে। এই বিপুলসংপাক জনতার পোষণভার সরকার গ্রহণ করুন বা নাই করুন, থাত্তের জক্ত পশ্চিমবঙ্গের উপর ইহারা চাপ দিভেছে পুরুই বেণা। গত ১৪ই আগষ্ট উপরোক্ত ৬০ লক আত্রয়প্রার্থীর মধ্যে মাত্র ২ লক্ষ ৩৪ হাজার অন সরকারী আশ্রম-শিবিরে ছিল, ইহার ভিতর ১,৫৪,৫৭৬ জন স্থান পাইয়াচে পশ্চিম বাঙ্গলার বিভিন্ন আত্র্য-শিবিরে এবং বাকী ৮০ হাজারের মধ্যে বিহারে ২২ হাজার, উডিয়ায় ১৬ হাজার, আসামে ৫ হাজার, কাছাড়ে ৭ হাজার ও ত্রিপুরায় ৩০ হাজার জন স্থান লাভ করিয়াছে। যাহারা এই আত্রা-শিবিরে স্থান লাভ করিয়াছে ভাহাদের অল্ল বোগাইবার তবু একটা ব্যবস্থা হইয়াছে, কিন্তু যে অসংখ্য হতভাগ্য নিজেদের ভাগ্যের উপর নির্ভর করিয়া এখানে দেখানে বা পরে পড়িয়া আছে, তাহাদের খাত্ত আসিবে কোণা হইতে ? ১৯৪৯-৫০ খ্রীষ্টাম্পে ভারত সরকার আশ্রয়প্রার্থীদের নাহায়োর জন্ম নানাভাবে মোট ৩১ কোট ৬৪ লক্ষ টাকা ব্যয় করিয়াছেন, কিন্তু এই পর্বত প্রমাণ অর্থব্যয় ভো সমস্তার গুরুত্ব এটটুকু কমাইতে পারে নাই। সরকারী টাকায় এপর্যান্ত অন্তামীভাবে প্রাণরক্ষার মত ব্যবস্থা ছাড়া বিশেষ হঃ পূর্ববিদের আত্রয়প্রার্গীদের ক্ষত্রে স্থায়ীভাবে পুনর্বাদন করা মন্তব হইয়াছে অল ক্ষেত্রেই। পশ্চিমবঙ্গের অধান মন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র রায়ের এক বিবৃতিতে প্রকাশ, এপর্যান্ত (২২শে আগন্ত) মোট ১০ লক্ষ শর্ণার্থীর পুনর্বাসন সম্ভব হইয়াছে। এই দশ লক্ষ লোক নৃতন পরিবেশে কওটা মানাইয়া লইতে পারিবে অথবা স্থামীভাবে স্বাস্থারকাও জীবিকার্জনের কভটা সুযোগ পাইবে তাহাও এখনও নিশ্চিত করিয়া বলা যায় না। কাড়েই এ সময় দেশ যথন যুদ্ধোত্তর অর্থনৈতিক মন্দার সমূখীন হইয়াছে, লক্ষ লক্ষ শরণার্থীকে মামুধের মত বাঁচিবার স্থযোগদান কি ভাবে সম্ভব হইবে বিধাতাই জানেন। আশ্রয়প্রার্থী সমস্তাকে আর বাহিরের ঝঞ্চা^{ট মনে} করিবার উপায় নাই, সব ছাডিয়া যে ভাইবোনেরা আজ আমাদের ^{মধ্যে} আসিয়াছে, আমাদের সুপতঃপের অংশীদার রূপে তাহাদিগকে য্বাস্ত্র বাঁচাইবার দায়িত আমাদেরই। ইহারা পশ্চিম্বঙ্গের বা ভারতের নাগ্রিক এবং রাষ্ট্রের সম্পদ এই বিপুলসংখ্যক মাসুষকে বাঁচাইয়া রাধার দায়িছ রাষ্ট্র ছাড়া আর কে গ্রহণ করিবে ! স্বতরাং অন্ত আর্থিক অবস্থার উ^{ন্নতি} যে ছাবেই হোক, এখন পশ্চিম বাংলার থান্তসম্ভটের সমাধান অবিলংই

করিতে হইবে, অক্তথার অনাহারে মৃত্যুর সংখ্যা দেখিতে দেখিতে ভয়ানক ভাবে বাড়িয়া ঘাইবে বলিয়াই আশহা হয়। ইতিমধ্যেই পশ্চিম বাংলার পল্লী অঞ্চলে এবং সহরাঞ্জে শরণার্থী এলাকায় অনাহারে বিশার্থ কলালের ভিড় জমিতেছে। এই স্ত্রে একথাও শ্বরণীয় যে, এবার হৃতিক দেখা দিলে এবং ভজ্জম্ব পাইকারী ভাবে মামুধ মরিতে আরম্ভ করিলে দেশের শান্তি শৃহ্বলা নিরাপদ রাখাও হয় তো শেষ পর্যায় করিন হইবে।

क्लोर महकात भूर्वत्यत्र बाजरशीयी मम्ला मन्नदर्क विलय হইলেও বর্ত্তমানে অবহিত হইয়াছেন এবং পশ্চিমবঙ্গের পাতানঙ্কটের অবনতি ঘটতে না দিবার জন্ম যথাসাধ্য চেপ্তা করিবার সদিচ্ছা দেধাইতেছেন। বর্ত্তমান গুরুতর পরিস্থিতিতে কেন্দ্রীয় সরকারের এই অবহিতি মুল্যবান সন্দেহ নাই। পশ্চিমবাংলার সব সমস্তার মূল বা কেন্দ্র এখন শরণাগী সমস্তা। কাজেই এই সমস্তার সমাধানে যত **স্বৃতাবে অগ্রদর হওয়া যাইবে,** ৩৩ই পশ্চিমবাল্লার অবস্থা উন্নতি হইবে। সরকার নিজেদের পরিকল্পনা অনুসারে যতটা পারেন ভালই, ভাছাতা এই সময় ভাঁহাদিগের বেসরকারী পরিকল্পনা বা প্রাম্শ্র কার্যাক্রী ক্রণের মনোভাব লইয়া সূত্র্কভার সহিত বিবেচনা করা উচিত। সম্প্রতি ডাঃ শ্রামাঞ্চাদ নুগোপাধ্যায়ের মভাপতিত্বে গঠিত বসীয় পুনর্বদতি শুতিষ্ঠান ও ডা: রাধাকমল মুখো-পাধ্যায়ের অধিনায়কতে যে পুনর্বদতি বোর্ড গঠন করেন, তাঁহারা মেট ১৩ দফা প্রস্তাব সম্বিত একটি পরিকল্পনা রচনা করিয়াছেন। পরিক্রনাটি দায়িত্নীল বাজিদের দারা রচিত বলিয়া তোইহার উপর শুরুত্ব আবোপ করা সরকারের কর্ত্তবা: তাছাড়া আমাদের ধারণা পরিকল্পনাটর মধ্যে শরণার্থী সমস্তা সমাধানের অনুকৃত্র অনেক ৰ্জি আছে। সৰচেয়ে বড় কথা, পরিকল্পনাটতে অর্থনৈতিক ক্ষমতার **ষ্ঠিত মানবভার আদর্শের যভটা সম্ভব সমধ্য সাধনের যে চে**ই! হইয়াছে, বর্ত্তমান পরিস্থিতিতে সেই প্রয়াগটকুর মুলাও যথেষ্ট। এই প্রনঙ্গে প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত নেহেরুর আমন্ত্রণে প্রাক্তন পুনর্বাদন সচিব খ্রীমোহনলাল শাকসেনা ৫০ লক্ষ পূর্ক্বিস্থীয় শরণাখ্যীর পুনর্বসতির ষে পরিকল্পনা রচনা করিয়াছেন, ভাহাও বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

ভারতের বহিবাণিজ্ঞা

১৯৪৭-৪৮ খ্রীষ্টাব্দ পর্যান্ত বহির্বাণিজ্য অবিরাম অমুক্লে থাকিবার পর গত করেক বৎসর ইহা ভারতের প্রতিক্লে যাইতেছে। অবশু এই প্রতিক্ল গতি ১৯৪৭-৪৮ খ্রীষ্টাব্দেই অমুমিত হয় এবং এই বৎসর ভারত হইতে রপ্তানী ও ভারতে আমদানী পণ্যের মৃল্য ঘর্বাক্রমে ৪০৩ কোটি ও ০৯৮ কোটি ধরিয়া ভারতের উষ্ত্ত হয় মাত্র ৫ কোটি টাকা। ইগার পর বৎসর, অর্থাৎ ১৯৪৮-৪১ খ্রীষ্টাব্দে ভারতের বহির্বাণিজ্যিক ঘটিতির পরিমাণ ২১৭ কোটি ৬৬ লক টাকা দাঁড়ায়। ১৯৪৯ ৫০ খ্রীষ্টাব্দের অবস্থাও শোচনীর, এই বৎসর ভারতের ঘাটিতির পরিমাণ দিড়াইয়াছে ৯৩ কোটি টাকা। ১৯৫০-৫১ খ্রীষ্টাব্দের এপ্রিল ইইতে অনুন

বা প্রথম তিন মানের যে হিনাব পাওরা গিয়াছে, তাহাতে এই মাত্র তিন মানেই ৩৪ কোটি টাকা ঘাটতি ছইয়াছে।

এইভাবে অবিরাম বহিবাণিজ্যে ঘাটতি যে দেশের অর্থনৈতিক ভিত্তির হিদাবে মারাক্তক তাহা লইয়া আলোচনা নিশুয়োজন। সাধারণভাবে এই বহিবাণিজ্যের উন্নতিসাধন ভারত**কে অবিলখে** করিতেই হইবে। এজক্ত আমদানী নিয়ন্ত্রণ, ওক সংস্কার প্রভৃতি যে কোন ব্যবহার কথাই স্থিরভাবে চিন্তা করা দরকার। মুজামূল্য-হ্রাদের প্রথম দিকে ভারতীয় পণোর বিদেশের বাজারে যে কাটতি বাডিয়াছিল, তাহা ব্যবসাচক্রের সাময়িক আওর্ত্তন বলিয়া প্রমাণিত হইয়াছে। এখন স্থায়ীভাবে অমুকৃল বাণিজ্যিক গতি সং**রক্ষণের** বাবস্থা দরকার। বিশেষ করিয়া থাতাশভোর ব্যাপারে ভারতের বে দৈক্ত তাহার পুরণের উপরই বহির্বাণিজ্যের গতি অনেকটা নির্ভর করিভেছে। ভোগাপণা আমদানীর তুলনার যন্ত্রপাতি আমদানীর উ**পর** এখন জোর না দিয়া উপায় নাই, শিল্পোন্নয়ন ভারতীয় অর্থনীতির পুনর্গঠনের হিসাবে অভ্যন্ত গুরুতর ব্যাপার। এই প্রসঙ্গে উল্লেখ-যোগ্য যে, গত ২৷০ বৎসর যাবৎ ভারত সরকারের শিল্পনীতির আড্ট্রভার জন্ম শিল্পভিগণ নিরুৎসাহ হওয়ায় ভারতে শিল্পতিষ্ঠার ব্যাপারে ধুবই মন্দাভাব দেখা যাইভেছে। এজন্ত পণ্যাভাবগ্রন্থ আমাদের দেশে পণ্য উৎপাদন না হওয়ায় ঘৰেষ্ট ক্ষতিগ্রস্ত হইতেছে (পার্লামেন্টের সদস্য শীযুক্ত মাডগেল সম্প্রতি ইউ পির প্রতিনিধির নিকট প্রদত্ত এক বিবৃতিতে বলিয়াছেন যে. এইরূপ ক্ষতির পরিমাণ ক্ষপক্ষে ১০ হাজার কোটি টাকা ।। সরকারী শি**রনী**ভিও **অবিলত্তে** ফুল্পর হওয়া চাই। বলা বাছলা, আর্থজাতিকতার নামে প্রণাবন্টনের যেদৰ ব্যবস্থা হয় বা হইবে. ভাহাতে ভারতের ভায় শিল্পে অকুল্লভ দেশের লাভবান হইবার সম্বাবনা পুরই কম। দৃষ্টাপ্তথকাপ ১৯৪৭ খ্রীষ্টান্দের এপ্রিল-অক্টোবর মাসে জেনেভায় পৃথিবীর বিভিন্ন ২০ জাতির মধ্যে অনুষ্ঠিত প্ৰাচক্তির কৰা উল্লেখ করা যায়। এই চ্ছিতে ভারত বিদেশ হইতে মোটরগাড়ী, রাসায়নিক পণ্যাদি, টাইপরাইটার, রেক্রিজেটার, বেতারয়য়, টিনজাত খাল ইত্যাদিতে বংসরে আতুমানিক ৩১ কোট মুল্যের পণ্য জানাইয়া যে স্থবিধা পাইবার অধিকারী হয়, তাহার বিনিময়ে তাহাকে পাটজাত জবা, চা, নানাপ্রকার মশলা, কাৰ্পাসজাত দ্ৰবা ইত্যাদিতে ৪৮ কোট টাকা মূলোর প্ৰা বিদেশে সমান হুবিধায় রপ্তানী করিবার প্রতিশ্রুতি হইয়াছে।

সাধারণতঃ বহিবাণিজ্য বেসরকারী ব্যবস্থায় নিয়ন্ত্রিত হয়।
ব্যবসায়ীদের ব্যক্তিগত প্রবৃত্তি ও বৃদ্ধি এই বাণিজ্যের প্রকৃতি নিরূপণে
যথেষ্ট দারী, কিন্তু শেষপর্যান্ত এই বহিবাণিজ্য ঘাটতি হইলে
সরকারকেই মৃদ্ধিলে পড়িতে হয়। বহিবাণিজ্য রাষ্ট্রায়ন্ত হইলে
সরকার দেশের অর্থনীতি অমুসারে বহিবাণিজ্য নির্মাণের স্থবিধা
পান। সরকারী ঝার্থের বা সমগ্রভাবে বৃহৎ জাতীর স্বার্থের হিসাবে
সনেকে এই ব্যবস্থাই ভাল বলিয়া মনে করেন। অবশ্র যে দেশেই

এ-শ্রেণীর পরিকল্পনা হর বাবদাদার বা শিল্পপতিশ্রেণীর লোক তাহার বিরোধিতা করিরা থাকেন। ভারতের বহির্বাণিজ্যের ক্রমাবনতিতে উদ্বিগ্ন হইরা যথন ভারতসরকার এই ধরণের রাষ্ট্রীয় ও বহির্বাণিজ্য নিয়্রপ্রণ প্রতিষ্ঠান গঠনের কথা চিন্তা করিতে হুরু করেন, তথন এদেশেও সেই পরিকল্পনা শিল্পতিদের সমর্থন পায় নাই। যাহা হউক, বাণিজ্য সচিব শ্রীযুত ক্রিতীশচন্তা নিয়োগী মহাশয়ের আমলে শ্রীচন্তামণি দেশমুথের নেতৃত্বে এসম্পর্কে পরামর্শানের জন্ম একটি কমিটি নিযুক্ত হয়। সম্প্রতি দেশমুথ কমিটির রিপোর্ট প্রকাশিত হইয়াছে। রিপোর্টে সরকারের বহির্বাণিজ্যের নীতি সমর্থন করিয়া কমিটি উপস্থিত ২ কোটি (শেবপর্যান্ত ২০ কোটি) টাকা মুলধন সমন্বিত একটি সরকার নিয়্রিত বহির্বাণিজ্য পরিচালন বার্ড গঠনের স্থপারিশ করিয়াছেন। এই রাষ্ট্রীয় বাণিজ্য কর্পোরেশনের ক্ষমতা

এখন অবশ্য কতকণ্ডলি পণ্যের ক্ষেত্রে সীমাবদ্ধ রাধা হইরাছে, তবে ইহার কাজ সাফল্য অনুসারেই বাড়ান চলিবে। এই প্রতিষ্ঠান ভারতসরকারের পক্ষে বিদেশের সরকার বা প্রতিষ্ঠানের সহিত পণ্য আমদানীর অথবা ভারতীয় পণ্য রপ্তানীর চুক্তি করিতে পারিবে। বিশেবভাবে ভারতীয় কুটিরলিল্লছাত পণ্যের (এই পণ্যের বিদেশে চাহিদা উল্লেখযোগ্য এবং এই চাহিদা সম্প্রসারণ যোগ্য) বিদেশের বাজার স্প্রতির ও প্রমারণের দায়িত্ব ইহারা প্রহণ করিয়াছেন। ভারতীয় বহির্বাণিজ্যের অত্যন্ত হুর্গতির দিনে এই ধরণের প্রতিষ্ঠানগঠনের নীতিগত গুরুত্ব সত্যই প্রচুর। ইহাতে অন্ততঃ ব্যবসায়ীদের অসাধুতা বা বোকামীর জন্ম ভারতীয় বহির্বাণিজ্যের ঘাটতির হাত হইতে কতকটা রক্ষা পাইবার আশা আছে বলিয়া অনেকেই এই প্রতিষ্ঠান গঠিত হইবার সম্ভাবনায় আনলিত হইয়াছেন।

কুমিলা নগরী

ডক্টর শ্রীদীনেশচন্দ্র সরকার

গুপ্তবংশীয় সমাট সমুদ্রগুপ্ত গ্রীষ্টীয় চতুর্থ শতাব্দীর মধ্যভাগে রাজত্ব করিতেন। কিছুকাল পূর্বের দক্ষিণ বিহারের অন্তর্গত স্থাসিদ্ধ বৌদ্ধতীর্থ নালন্দাতে তাঁহার একথানি তামশাসন আবিষ্ণত হইয়াছিল। এই শাসন অমুসারে গুপ্তসমাট্ অয়ভটি স্বামী নামক জনৈক ব্ৰাহ্মণকে চুইটি গ্ৰাম দান করিয়াছিলেন। গ্রামন্বয়ের মধ্যে একটির নাম ছিল পূর্ণনাগ গ্রাম : উহা কুমিলা বা ক্রিমিলা নামক বিষয় অর্থাৎ ফেলার অন্তর্গত ছিল। সমূদ্রগুপ্তের নালন্দাশাসন হইতে মনে হয় যে, গুপ্তপামাজ্যের অন্তর্ভুক্ত একটি জেলার নাম ছিল ক্বমিলা বা ক্রিমিলা। কিন্তু উহা ঠিক কোথায় অবস্থিত ছিল, পণ্ডিতেরা তাহা নির্ণয় করিতে পারেন নাই। এই প্রসঙ্গে ইহা উল্লেখ করা প্রয়োজন যে, অনেকে নালনা শাসন থানিকে জাল বলিয়া মনে করেন। সম্ভবতঃ উহা সম্রাট সমুদ্রগুপ্তের সময়ের ছুই তিন শত বৎসর পরে জাল করা হইয়াছিল। স্থতরাং উহা হইতে এীষ্টার চতুর্থ শতাব্দীতে ক্ষমিলা নামক জেলার অভিত্ত প্রমাণিত হয় কিনা, তাহা নিশ্চিত বলা কঠিন। তবে উহার সম্ভাবনা অস্বীকার করা যায় না। বিশেষতঃ, নালনাতে প্রাপ্ত কতিপয় প্রাচীনশীল-মোহরে ক্রমিলা বা ক্রিমিলা বিষয়ের উল্লেখ পাওয়া গিয়াছে। हेश इट्रेंट अञ्चर्मान कता यांट्रेट भारत (य, डेंश प्रकिन

বিহারেরই অন্তর্গত কোন অঞ্চল-বিশেষের নাম ছিল এবং সম্ভবতঃ পাল আমলের পূর্ব্বেই উহা একটি বিষয় বা জেলা বলিয়া গণ্য হইত।

পালবংশীয় সম্রাটু দেবপাল গ্রীষ্টীয় নবম শতাব্দীতে প্রথম ভাগে রাজন্ব করিতেন। তাঁহার একথানি ভামশাসন মুঙ্গেরে আবিষ্ণত হইয়াছিল। উহাতে দেখা যায়, সমাট দেবপাল ক্রমিলা বা ক্রিমিলা বিষয়ের অন্তর্গত মেষিকা নামক একটি গ্রাম জনৈক ব্রাহ্মণকে দান করিয়াছিলেন। এই শাসনে উক্ত বিষয়টিকে শ্রীনগর নামক ভুক্তি বা প্রদেশের অন্তর্ভুক্ত বলা হইয়াছে। যেমন নগরার্থক 'পদ্ভন' শব্দ হইতে আধুনিক পাটনা নগরীর নাম হইয়াছে, তেমনই পাটনা যাহার বর্ত্তমান প্রতিনিধি সেই প্রাচীন পাটলিপুর নগরকে লোকে সাধারণতঃ নগর বা এনগর বলিত। বাৎসায়নকৃত কামস্ত্রের জয়মললা টাকায় দেখা যায়, 'নাগরকা:' এবং 'নাগরিক্য:' যথাক্রমে 'পাটলিপুত্রিকা:' ও 'পাটলিপুত্রিক্য:' রূপে ব্যাখাত হইয়াছে। সুভারাং পালসামাজ্যের অন্তর্গত শ্রীনগর ভুক্তি যে পাটলিপুত্র নগ^{রকে} क्टिस कतिया मिकन विशासित कियमः एम विज्ञ हि^{ती} তাহাতে কোন সন্দেহ নাই। পাল সমাট্গণের শাসনাদি হইতে বর্ত্তমান বিহার প্রদেশে অবস্থিত হুইটি ভূক্তির অভিত

অবগত হওয়া গিয়াছে। উহাদের মধ্যে নগরভূক্তি বা শ্রীনগরভূ জি দক্ষিণ বিহারে এবং তীরভূক্তি (আধুনিক 'ভীরহত') উত্তর বিহারে অবস্থিত ছিল। কিন্তু এই ভূক্তি-ছয়ের কোনটিরই প্রকৃত সীমা নির্দ্ধারণ করা সম্ভব হয় নাই। গয়া বিষয়, রাজগৃহ (বর্ত্তমান 'রাজগির') বিষয় এবং নালনা বিষয় শ্রীনগরভূক্তির অন্তর্গত ছিল, তাহাতে সন্দেহ নাই। সম্ভবতঃ পাটলিপুত্র বা শ্রীনগর এবং মুদ্যাগিরি (মুক্ষের) ঐ ভুক্তির অন্তর্ভুক্ত অপর ছুইটি বিষয়ের কেন্দ্র ছিল। কুমিলাবা ক্রিমিলা বিষয় উল্লিখিত বিষয়গুলির বাহিরে অবস্থিত ছিল বলিয়ামনে হয়। কিছু এতদিন এই বিষয়টির প্রকৃত অবস্থান নির্ণয়ের সহায়ক কোন প্রমাণই আবিষ্কৃত হয় নাই। বিষয়টির নাম কুমিলা বা ক্রিমিলা নামের কোন নগরী হইতে উদ্ভূত কিনা, তাহাও কেহ বলিতে পারেন নাই; কারণ ঐ নামের কোন নগরীর অন্তিত্ব এতদিন অজ্ঞাত ছিল। স্থাপের বিষয়, সম্প্রতি আমি প্রাচীন কুমিলা নগরীর অবস্থান নি:সংশয়ে নির্ণয় করিতে সমর্থ হইয়াছি। আমার আবিজ্ঞাবের ফলে কুমিলা বিষয়ের অবস্থানও সহজেই নির্ণীত হইয়াছে।

বিগত জাহুৱারা মধ্দের প্রথম ভাগে আমি দক্ষিণ বিগারের অন্তর্গত মুঙ্গের, পাটনা ও গয়া জিলার কতকগুলি গ্রামে শিলালিপি প্রভৃতির সন্ধান করিতে গিয়াছিলাম। প্রায় পঁচাত্তর বৎসর পূর্বের স্বর্গীয় আলেগ্জাণ্ডার কানিংহাম সাহেব দক্ষিণ বিহারের গ্রামসমূহে প্রাচীন লিপির সন্ধানে ভ্রমণ করিয়াছিলেন। তাঁহার অফুসন্ধানের ফল তাঁহার স্থপ্রসিদ্ধ রিপোর্টসমূহে বর্ণিত আছে। তিনি যে সকল লিপিযুক্ত শিলামূর্ত্তি পরীক্ষা করিয়াছিলেন, তাহার অনেক-গুলি এখন আরু পাওয়া যায় না। কারণ উহার অনেক-মূর্ত্তি পরবর্ত্তী কালে স্থানাস্তরিত হইয়াছে। কিন্তু দক্ষিণ বিহারের অগণিত প্রাচীন গ্রামে এখনও প্রতি বৎসর ভূমি কৰ্ষণ বা ধননকালে প্ৰাচীন মূৰ্ত্তি আবিষ্কৃত হইয়া থাকে; উহার অনেক অভগ্ন হৃদৃত্য মূর্ত্তি বাহিরেও চলিয়া যায়। তব্ थे अक्षा मात्य मात्य अञ्चलकान कार्या हानाहेल श्राहीन ইতিহাদের কিছু কিছু নবীন উপাদান আবিষ্কৃত হইবার সম্ভাবনা দেখা যায়। দক্ষিণ বিহারে সাধারণতঃ যে সকল निनामूर्खि व्याविष्कु इत्र, डिश शान व्यामरनत धवर উহার অধিকাংশই ভগ্ন। বেশীর ভাগ মূর্ডিতে কোন লিপি

দেখা যায় না ; কিন্তু কতকগুলি মূর্ত্তির পাদপীঠে কুদ্র কুন্ত লেখ উৎকীর্ণ দেখা যায়। এই শিপিগুলির মধ্যেও আবার অনেকগুলির ঐতিহাসিকমূল্য সামান্ত। বৌদ্ধ মূর্ত্তিতে সাধারণতঃ এই স্থবিখ্যাত বৌদ্ধ মন্ত্রটি উৎকীর্ণ দেখা যায়-"যে ধর্মা প্রভবান্তেষাং চেতৃং তথাগতোহবদ্ধ। তেষাং চ যো নিরোধ এবংবাদী মহাশ্রমণ:"। কতকগুলি মূর্ব্তিডে কেবল মূর্ত্তি প্রতিষ্ঠাতার নাম উৎকীর্ণ থাকে। অতি অল্প-সংখ্যক মূর্ত্তিতে মূর্ত্তির প্রতিষ্ঠাস্থান এবং প্রতিষ্ঠাকালের উল্লেখ পাওয়া যায়। কালের উল্লেখে কথনও বা কেবলমাত্র কোনও রাজার রাজত্বকাল, কখনও নির্দিষ্ট কোনও রাজার রাজ্য সংবৎসর এবং কদাচিৎ কোনও স্থপরিচিত সালের বাবহার দেখা যায়। স্থানকালের উল্লেখ সংবলিত লিপি-গুলিই ঐতিহাদিকগণের নিকট অধিক মূল্যবান। গভ জামুয়ারী মাসে আমি মুঙ্গের জেলার পশ্চিম প্রান্তে অবস্থিত কাজরা, কিউল ও লক্ষ্মীদরাই রেলওয়ে ষ্টেশনের নিকটবর্ত্তী কতকগুলি গ্রামে এই প্রকারের কতকগুলি মূল্যবান্ লিপি আবিফার করিতে সমর্থ হইয়াছিলাম। কাজরা রেলওয়ে ষ্টেশনের নিকটবর্ত্তী উরেন নামক গ্রামে আমি কভিপর ভৈকুকী অক্ষরে উৎকীর্ণ লিপি আবিষ্কার করি। এই লিপি পূর্বভারতের মগধ অঞ্চলের বৌদ্ধ ভিকুগণের মধ্যে প্রচলিত ছিল। কিছু কাল হইল, মালদহ জেলাতেও এক-থানি ভৈকুকী লিপি পাওয়া গিয়াছে। সম্প্রতি আমি একটি প্রবন্ধে এই ভৈকুকী লিপিগুলির পাঠ আলোচনা করিয়াছি। উহা সরকারী 'এপিগ্রাফিয়া ইণ্ডিকা' পত্তে প্রকাশিত হইতেছে।

জাহয়ারী মাসের ৯ তারিখ অপরাক্তে আমি ইছ ইণ্ডিয়া
রেলপথের লক্ষীসরাই ও মনকথা ষ্টেশনের মধ্যবর্তী বল্গুলর
গ্রামে উপস্থিত হই। বল্গুলর গ্রামটি ক্ষুদ্র; কিন্তু এখানে
তিনটি মূল্যবান্ লিপি পাওয়া গেল। গ্রামের সক্তং নামক
অঞ্চলে একটি কৃপের নিকট একটি শিলা মূর্ত্তির পাদপীঠ
মাত্র পড়িয়া আছে দেখিলাম। উহাতে যে লিপি উৎকীর্ণ
আছে তাহার তারিখ পালবংশীয় মদন-পালের রাজত্বের
অস্টাদশবর্ষের ১১ই জাৈষ্ঠ এবং ১০৮০ শকাস্ক। এই
লিপিথানির ঐতিহাসিক মূল্য ইতিপ্রের্মে 'ভারতবর্ষে' 'পালবংশীয় মদন পাল ও গোবিন্দ পাল' শীর্ষক প্রবদ্ধে আলোচনা
করিয়াছি। কিন্তু লিপিটির সম্পর্কে আর একটি নুল্যবান

তথ্য এই যে, উহাতে মূর্তিটির কুমিলা বা ক্রিমিলা নগরীতে প্রতিষ্ঠিত হইবার বিষয় উল্লেখ আছে। বলগুদর গ্রামে আমার দিতীয় আবিষ্কার ভাগলপুরবাসী জমিদার প্রীযুক্ত দিনীপ-নারায়ণ সিংহ মহাশয়ের কাছারীতে অষ্ত্র-রক্ষিত একটি ভগ্ন দেবীমূর্ত্তি। ইহার অঙ্গে যে লিপিটি কোদিত মাছে, তাহাতেও বলা হইয়াছে যে, উক্ত দেবীমূর্ত্তি ক্লমিলা বা ক্রিমিলা নগরীতে প্রতিষ্ঠিত হইয়াভিল। ঐ গ্রামে আমার তৃতীয় আবিষ্কার বাবু কেশব সিংহের গুগ্পাঙ্গণে পতিত একখানি পাদপীঠ। মূর্জিটির কোন সন্ধান পাই নাই; किइ शामशीर्फ डेल्कीर्न निशि इटें काना (गन त्य, खे মর্ত্তি পালবংশীয় সম্রাট স্থবিখ্যাত ধর্ম পালের রাজতকালে ক্লমিলা বা ক্রিমিলা নামক অধিষ্ঠান অর্থাৎ নগরে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। কুদ্র-পরিসর বলগদর গ্রামে এই তিনটি লিপি পরীকা করিয়া আমার সন্দেহ রহিলনা যে, এতদিনে ক্রমিলা বিষয়ের কেন্দ্রীয় নগরীর অবস্থান জানা গেল। এই আঁম এবং ইহার চতুম্পার্যবর্তী অঞ্চল লইয়া যে প্রাচীন ক্ষমিলা নগরী অবস্থিত ছিল, তাহাতে কোনই সন্দেহ নাই।
বল্গুদরের পার্ষেই রজোনা নামক অপর একটি গ্রাম
আছে। দেখানে সংগৃহীত কতকগুলি মূর্ত্তির মধ্যে একটিতে
পালবংশীর প্রথম শূর পালের পঞ্চম রাজ্যবর্ধের একখানি
লিপি আছে। ঐ লিপি হইতেজানা বায় যে,উল্লিখিত মূর্ত্তিটিও
ক্ষমিলাতে প্রতিষ্ঠিত হইশ্বাছিল। বর্ত্তমান রজোনা গ্রামটিও
প্রাচীন ক্ষমিলা নগরীর অন্তর্ভুক্ত ছিল কিনা, তাহা নিশ্চিত
বলা বায় না। আমার মনে হয়, ঐ মূর্ত্তিটি বল্গুদর গ্রামে
পাওয়াগিরাছিল; পরে উহা রজোনাতে স্থানান্তরিতহইয়াছে।

বলগৃদর গ্রামে আবিষ্কৃত লিপিগুলি হইতে নি:সংশরে জানা গেল যে, বর্ত্তমান মুন্দের জেলার পশ্চিমাংশে আধুনিক পাটনা ও মুন্দেরের মধ্যবর্তী অঞ্চলে প্রাচীন কুমিলা বিষয় অবস্থিত ছিল। সম্ভবতঃ পূর্ব্বদিকে মুলাগিরি বিষয়, পশ্চিমে শ্রীনগর বিষয়, উত্তরে গঙ্গা নদী এবং দক্ষিণে রাজগৃহ ও নালন্দা বিষয় এই চতুঃসীমার মধ্যে প্রাচীন কুমিলা বিষয়ের অবস্থান অনুমান করা যাইতে পারে।

সমাজ-সচেতন সাহিত্য

শ্রীসাবিত্রীপ্রসন্ন চট্টোপাধ্যায়

আমাদের জীবনে আজ যে সকল সমস্তার উদ্ভব ইইয়াছে সমাজ-সচেতন মামুব হিসাবে সাহিত্যিকদের মনের উপর তাহার প্রভাব বিস্তৃত হওয়াই খাভাবিক। সাধারণ মন হইতে সাহিত্যিক মনের পার্থক্য এই বে, সে মনটি অধিকতর সংবেদনশীল। এই কারণেই জাতির সাহিত্যে কালের ছাপ পড়ে— শুগকে অতিক্রম করিয়া সাহিত্যিকের অকুত্বশীলতা ও ভবিশ্বং দৃষ্টির পটভূমিতে একালীন ক্রথ দুঃথ, আশা ও আকাজ্কা আমাদের সাহিত্যে রূপারিত চইয়া উঠে। অকুক্রমিক ঘটনা পরশ্পরার সংকলনে ইতিহাস লিখিত হইয়া থাকে কিন্তু সাহিত্যে ঘটনা উপলক্ষ্যাত্র। সাহিত্যিক দেখেন মামুখকে— যে মামুব ঘটনার তৃষ্টি করে— আর সাহিত্যিকর সৃষ্টি দেই মামুব নিজে।

অতএব যে সমস্তা আজ মামুধকে বিচলিত ও বিধবত করিতেছে—
ভাষার সমাধান করে সে নির্বিচারে যে কোনও উপার অবলয়ন
করিতেছে, মুমুম্মোচিত কর্মের প্রধানতম আশ্রয়ভূমি নৈতিক উদ্দেশ্য
ও আদর্শ হইতে সেইজন্তই আজ মামুষ বার বার বিচ্যুত হইতেছে,
এ শোচনীর ঘটনা সাহিত্যিক মনকে অবশ্রই প্রভাবিত করিবে।

সম্প্ৰতি এগাল্ডুল হালুলি "Ape and Essence" নামৰ বে

গলের বই লিখিয়াছেন ভাষা নিছক গলেরই বই হইয়া উঠে নাই, কারণ আখ্যান বস্তু অপেকা নৈতিক উদ্দেশ্যের দিকেই ভিনি দৃষ্টি দিয়াছেন বেশা। ইহাকে সাময়িক পাণাচার বা গহিত কাজের ভীত্র প্রতিবাদ ও স্লেখাক্সক রচনা বলা ঘাইতে পারে। Point Counter Point —লেখার পর হাক্স্লি বছদিন কোনও বই লিখেন নাই। ভাষার পর তিনি লিখিলেন—Brave New World, After Many a Summer, Time must Have a Stop ইত্যাদি। এই সবস্তুলি বইতেই আময়া গল্প ভাগ অপেকা নৈতিক উদ্দেশ্যের আলোচনাই দেখতে পাই বেশী।

Ape and Essence এর গল্পটি নিম্নবর্ণিত ছারাছবির সংক্ষিপ্ত পাপুলিপির (Film Script) আকারে লেখা। সেটা যেন ঘটনাক্রমে Dustbin বা ময়লার টিনের মধ্যে পাওয়া গেল। প্রস্থকারবর্ণিত এই পাপুলিপির লেখক ট্যালিস্ ইচ্ছা করিয়াছিলেন এখানির বিক্রমলন্ধ অর্থ দিয়া তিনি ভাহার পৌত্রীকে বুংছাভর আর্থানির হাত হইতে বাঁচাইবেন—বে আর্থানিতে তথন কয়েকটুকরা চকোনেটের বদলে গ্রতী মেরেরা আত্মবিক্রম করিতে স্থান করিরাছে। ছলিউডে সেই ছারাচিত্রের

পাঙ্লিপিথানি বিক্রের জম্ভ চেষ্টা করিবার আগেই ট্যালিসের মৃত্যু হইল। পল্লটির আখ্যান ভাগটি সংক্ষেপে এই ভাবে চলিয়াছে। লেখক ক্ষিত তৃতীয় মহাযুদ্ধের পর বর্ত্তমান সভাতার অন্তিত্ব রহিল ওপু निউक्षिणाख रहेट अपनक मात्र এकि द्वारन। এটমবোম ও জীবাণ সংশিষ্ট যুদ্ধের ফলে আমেরিকায় এক নৃতন মানুষের জাতি জন্মাইতে লাগিল, রক্তে তাহাদের মানসিক পঞ্চার বিষ সংক্রামিত। তাহারা "বেলিয়াল" অর্থাৎ অস্থায় ও অগুভের দেবতা শয়তানকে পূজা করে। हेशात शत प्रथा यात्र वाहरवल ও नृष्य शहरू छेशामान मः अह कतिया হাকসলি আর এক নুতন পরা।ধর্মের রূপক থাড়া করিলেন, তাহা এই :- বিউজিলাাও হইতে একদল বৈজ্ঞানিক কালিফণিয়ার উপকৃলে উপস্থিত হইলেন প্রাচীন সভাতার ভগাংশ অফুসন্ধান করিতে। এই বৈজ্ঞানিক দলের একজন উদ্ভিদ তত্ত্বিদ ছিলেন, তাঁহার নাম ডাঃ পুল-আজীবন নিজ্লম্ব চরিত্র ডাঃ পুলকে কে বা কাহারা যেন হরণ করিয়া লইয়া গেল। এই গল্পে বর্ণিত প্রাক-এটম যুগের প্রাচীন রীতি অনুসারে—নরনারী বৎসরে পাঁচ সপ্তাহ ছাড়া ইক্রিয় ভোগ হইতে সম্পূর্ণভাবে বিরত থাকিবার কথা। এই পাঁচ সপ্তাংকর মধ্যে তাহারা ছই সপ্তাহ অবাধ ও অসংঘত ঘৌন-সম্ভোগে রত পাকিবে এমন বীভিত্তও প্ৰথৰ্জন ভাচাতে দেখা যায়। ভাচাৱা সকলে একটি উন্মুক্ত প্রান্তরে উপস্থিত হইবে। পুরুষ—"না" এই ক্রাট লিখিত নারীর গাত্রবাস ছি ডিয়া ফেলিবে এবং অকথা ও অদম্য থৌন-সম্ভোগে সকলে উন্মত্ত হইয়া পড়িবে। এই নির্দিষ্ট সময় ছাড়া শতকরা ১০ হইতে ১৫ জন যাহারা যৌন লালদা চবিতার্থ কবিতে যাইয়া ধরা পড়িয়া यारेरन, এই গলে ভাষাদের নাম দেওয়া হইয়াছে "Hots" अर्थाৎ যৌন-শালদা-দুপ্ত। তাহাদের মৃত্যুদণ্ডে দণ্ডিত করা হইবে অথবা ইচ্ছা ক্রিলে তাহারা পোলা পুরোহিতদের দলেও ভিডিতে পারে। ক্থনও ক্থনও ভাষারা এই বিধিনিষেধ্বর্জিত স্কুত্র উত্তরে অবস্থিত একটি ছোট উপনিবেশে পলাইয়া যাইতে পারে। গলে বর্নিত ক্যালিফর্নিয়ায় ধ্বংস শাপ্ত স্থানের পাত্ত উৎপাদন বৃদ্ধি করিবার ভার থাকে ডাঃ পুলের উপর। তিনি একদিন জনৈক যৌন লালসা-দুপ্তের সহিত নংশ্লিষ্ট হইয়া—উত্তরে भविष्ठ छेनित्वरन नालाहेबा यहिवाद एहे। करत्न।

ছায়াচিত্রের এই পাঞ্লিপিথানির হাক্তকর গল্পভাগের জক্ম হলিউডের পক্ষে মনোনীত হওরা সম্ভবই হউক আর নাই হউক এবং ইহা যে এটন্-উত্তর যুগের প্রতিক্রিয়ায় বিকলাঙ্গ শিশুদের জন্ম ও নিপুরভাবে প্রাণ হননের একথানি সম্ভাব্য চিত্র এবং সে যুগে সকল মানুযেই যে বর্বর ইইয়া তথু শল্পভানের পূজা করিবে—ইহা তাহারই কল্পনামাত্র—এ তক এগানে অবাস্তর। কিন্তু প্রকৃতির অক্ষুরত্ত দানের অপব্যবহার করিয়া মাত্র্য যে বর্ত্তমান্ত্র হে বর্ত্তমান্ত্র যে বর্ত্তমান্তর স্থাক্র প্রকৃতির অক্ষুরত্ত দানের অপব্যবহার করিয়া মাত্র্য যে বর্ত্তমান সভ্যতার ধ্বংসসাধ্যে সচেই হইয়াত্তে—ইহার ঘারা এলড্র্ন্স হাক্স্বলি সে সম্বন্ধে ক্রেকটি বিশেষ প্রণিধানযোগ্য ইঙ্গিত দিয়াছেন।

পাধ্নিক বৃগের মাত্র মনে করে প্রকৃতিকে দে জয় করিয়াছে কিন্ত প্রকৃতপক্ষে দে ভাহা পারে নাই—"He has merely upset the equilibrium of nature by fouling the rivers, killing off the wild animals, destroying the forests, washing the top soil into the sea, burning up an ocean of petroleum, squandering the minerals it has taken the whole of geographical tone to deposit."

অর্থং নদ নদী কলুষিত করিয়া, বস্তু পণ্ডদিগকে হত্যা করিয়া, অরণ্যের ধ্বংস সাধন করিয়া, বিধোত মৃত্তিকার অন্তর্ভাগ সমূদ্রে নিক্ষেপ করিয়া, সাগর প্রমাণ থনিজ তৈল দগ্ধ করিয়া, বহু যুগব্যাপী বে সকল খনিজ সম্পদ পুঞ্জীভূত হইয়াছে তুই হাতে তাহার অপব্যন্ত করিয়া, মাশুব কেবল প্রকৃতির ভারসামাকে বিপর্যন্ত করিয়াছে।

ইহারই নাম সভ্যতা ? ইহারই নাম অগ্রগতি ? পৃথিবীর জন-সংখ্যা ক্রমশঃ বৃদ্ধি পাইতেছে অথচ—নিকৃষ্ট কৃষিকাধ্যের জঞ্চ, মুভিকার অবিরাম ক্রমলের জঞ্চ ভূমির উর্বরতা হ্রাস পাইতেছে। এক্লিকে শিল্পোনতির অবিরাম উর্নগতি, অপর দিকে ভূমির উৎপাদন শিক্তির শোচনীয় অধােগতি।

ইহাই ত আমানিগকে নরাধ্যের প্তরে নামাইয়া লইয়া যাইতেছে এবং পাপাসক জড়বৃদ্ধির ভৈরবীচক্রে আমাদের আগ্রসমর্থনের হেতুও ত ইহাই। এ যুগের নাসুবের অধঃপতনের মূল কারণ হইল এই ক্লেডিয়ার ক্ষদ্ধে—অগ্রগতি ও জাতীয়তা নামক ভাবের ভূত চাপিয়া আছে—ইহাই লেথকের অভিমত এবং এ অভিমত তিনি ব্যক্ত করিয়াছেল তাহার গল্পে বৃণিত পলী-যাজকের মূপ দিয়া।

যাহারা ফাকসলির বই পডিয়াছেন তাহারাই তাহার বছ বিবন্ধ সম্পর্কিত, উদ্দেশুপূর্ণ ইঙ্গিতের সহিত পরিচিত আছেন-এখানেছ তিনি প্রভাক বিষয়েই তাহার দার্শনিক মত ব্যক্ত করিয়াছেন এখং এক একটি অপরিচিত ব্যাখ্যা দারা নিজের বক্তব্যকে পাঠকের কাছে ম্পষ্ট করির। তুলিবার চেষ্টা করিয়াছেন। আমরা এই গল্পের মধ্যে मर्का अवन शका थारे-अवन शृष्टांशानि ऐत्याहन कविया। अवत्यहे जिनि লিখিতেকে "It was the day of Gandhi's assassination" অর্থাৎ দেদিনটি ছিল গানীহত্যার দিন। কিন্তু দেখা যায় বিশ্ববিখ্যাত এই ঘটনাটির উপর কোনও ছায়াপাত না করিয়া গল্পে-বর্ণিত হলিউছের মাতৃষ্টি শুধু নিজের কথাই বলিরা যাইতেছে। হাকসলি কোনও কাজের কলাফল অপেকা তাহার পদ্ধা সম্বন্ধেই অধিকত্র সচেত্র স্বতরাং তাঁহার শান্তিবাদী মন যে মহাত্মাজীর প্রতি অধিকতর আকুই হইবে ইহাই স্বাভাবিক। প্রদেশান্তরে গান্ধীজীর পঞ্চায়েৎ শাসন পরিকল্পনাকে তিনি একমাত্র কার্যাকরী পত্না বলিয়া শীকার করিয়াছেন। कि अभिका भवाक छारात वााथा। अ मानत भार्रक मनामाक. নাডা দিবে। তিনি বলিতেছেন---

Against the evil doctrine of progress Gandhi was re-actionary who believed only in people. Squalid little individuals governing themselves, village by village and worshipping the Brahman who is also Atman. But the whole story of Gandhi included an inconsistency.

most a betrayal, for he got himself involved in the bhuman mass-madness of nationalism. He imagited that he could mitigate the madness and convert hat was saturic in the state to something like amanity. But the saint can cure our regimented thizo-phrenia, not at the centre but at the periphery."

অর্থাৎ অগ্রগতি সহক্ষে এই যে মতবাদ তৎসম্পর্কে গান্ধীর মন ছিল ফিল্লালীল। তাঁর বিখাস ছিল একমাত্র জনগণের উপর। সেই সকল মর্বা ক্ষুত্রকায় লোকগুলি পল্লীতে পল্লীতে নিজের নিজের গোটাকে রিচালনা করে—পূজা করে ব্রেক্ষের এবং এই ক্রন্ধ হইতেছে "আস্থা"। ক্রু গান্ধীর কার্যাকলাপের ইতিহাসে যে অসামঞ্জক্ত আছে তাহ। প্রায় নাসবাতকার সামিল। কারণ তিনি নিজে নিমন্তরের জনসাধারণের আতিমতার উন্মন্তরা তাহারই মধ্যে নিমন্তিক হইয়া গিয়াছিলেন—। দিনি ভাবিয়াছিলেন সে উন্মন্তরা প্রশমিত করিবার এবং শয়তানকে স্থবের পর্যায়ে-উন্মীত করিবার শক্তি তাহার আছে। কিন্তু যিনি শেলা, তাহার পক্ষে কেন্দ্রপ্রদাস করা সন্তর নহে, কেন্দ্রে নহে পরিধিতে অর্থাৎ ভিতরে নহে বাহিরে। উন্মন্তরা প্রশমিত করা গল্পর হুইতে পারিত।

কাজেই হাকসলির মতে যাহারা বৃদ্ধিমান, ভবিশ্বংগলাঁ, গাঁহারা ধুশা ও পূর্ণতার প্রতি আহাবান,তাহাদের কাছে প্রতিক্রিরাশীল গান্ধীর রাজর ঘটরাছে। কিন্তু ঠিক তাহা নহে। বস্তুতঃ যাহারা অসম্ভব দুমের প্রতিক্রিরাশীল, যাহাদের কার্য্,কলাপ দুর্কোধ্য ও প্রচ্ছর, এবং বাহারা কোনও একটি বিশেষ ধর্মের নবজাগরণের জক্ত সচেষ্ট, তাহাদের হাতে গান্ধীজীর এই আপাতঃ পরাজয় ঘটিয়াতে।

তথাকথিত অর্থগতি ও জাতীয়তার উপর ফাকসলি যে দোষারোপ করিয়াছেন তাহা কিছুটা মানিয়। লইলেও আমাদের জিজ্ঞান্ত এই যে. সজ্ঞানে পরতানের পূজা করিয়া আরু মামুবের যে অধাগতি হইরছে ইহাই কি তাহার একমাত্র কারণ ? আমরা কর্মনার বারা এমন একটি অবস্থাকে আমাদের বাক্ত-বিক্রপের বিবয়বস্ত বলিয়া ধরিয়া লইতে পারি; কিন্ত আরু আমাদের সঙ্গুপে মানব-ইতিহাদের যে অধাায়টি রটিত হইতেছে—তাহার গুকুত্ব অমুদারে এই প্রকার কল্পনাক কথনই আমরা বিশ্বরের বা প্রশংসার চক্ষে দেখিতে পারি না। আমাদের বিশ্বাস মামুবের এই নিদারণ তুর্গতি ও তজ্জনিত অধঃপতনের মধ্যেও মামুব 'জ্ঞানই ধর্ম' মহামতি সক্রেটিসের এই উক্তির প্রতি শ্রাম ও বিশ্বাস রাথিয়া চলিবে এবং ভবিক্তং জীবনের হিসাব নিকাশে বর্ত্তমান মামুবের ক্ষতি অপেক্ষা লাভের অকই আমাদের আগামীকালের মামুবদের দৃষ্টি আকর্ষণ করিবে।

কীবনের সমস্তাকে যদি আমরা অর্থাৎ লেখকের। আরও কাটল করির।
পাঠকের চোথের সন্মুখে উপস্থিত করি তাহা হইলে আমাদের অক্ষমতাই
প্রকাশ পাইবে। বাস্তবের সন্মুখান হইয়া তাহার মন্ষটাই শুধুদেখিব,
ভালটা বিবেচনা বৃদ্ধির অতীত হইয়া থাকিবে এমন ছর্ভাগ্য যেন কোনও
লেখকেরই না হয়। অক্ষকার পথে আলোর শিখাটুকু যদি ধরিতে
না পারি তাহা হইলে ভীষণ অক্ষকার বলিয়া ভয় দেখাইবার কাজ
আর যাহাদেরই হউক না কেন, সাহিত্যিকদের কথনই নহে।

ইতিহাস পাঠে

ঐকালিদাস রায়

কি পেলাম ভারতের ইতিহাস পাঠ করি সারা,
তথু রাজা বাদশার শোচনীর পরিণতি ছাড়া।
রাজার মুকুটতলে ভীতি-চিস্তা উদ্বেশের ভার
কুণ্ডলিত সরীস্প-সম করে অম্বন্ডি সঞ্চার।
চারিদিকে হিংসা-দ্বের অসন্তোষ বিপ্লব বিগ্রহ,
কোধাও জলম্ভ কোথা ধ্যায়িত বিবাক্ত বিজোহ
সহস্র ভোগ্যের মাথে উপবাসী, ভোগে নাই ক্ষৃতি,
আজস্র স্বাছল্য মাথে নয়নের নিজা বাই ঘুটি।
নিজ শব-ছ্যায়া হেরে নূপ পানপাত্র হাতে ধরি!
প্রতি গ্রাসে মৃত্যু ত্রাসে উঠে তার সর্বাক্ষ শিহরি।
কেহবা শানায় ছুরি কেহ রচে মারণ তোরণ।
সিংহাসন হিংসাসন কিংবা হয় সিংহনধাসন।
তবু এ রাজত্ব লাগি মৃত্দের অসাধ্য সাধন।
মহায়ত্ব বিস্ক্রিয়া হিংস্ল বন্ধ পশুত্ব বরণ।

কেহ করে ত্রাত্বধ কেহ করে প্রভূরে সংহার।
কেহ পুত্র কল্পনের ক্ষীণ কঠে হেনেছে কুঠার।
আপন পুত্রের নেত্র করিয়াছে কেহ উৎপাটন,
পিতা পিতৃকল্পনের আলিকনে হয়েছে জীবন।
সপ্ত-তীর্থ জলে নয় সপ্তজ্ঞাতিজনের ক্ষধিরে,
অভিষেক লভিয়াছে মুগুলনে বৈতরণী তীরে।
ভারতের ইতিহাস শেষ করি হই অক্তমনা,
প্রজার বেদনা নয় মর্ম্মে বাজে রাজার বেদনা।
কর্ণে বাজে—'আমার এ স্থবিস্তৃত জনম ভূমিতে
দানতম কুটারের এক কোণে দিবে না বাঁচিতে
ইহারা কি ছই মুঠা—'অসমাপ্ত এই বাক্যথানি
ভারতের ইতিহাসে সর্ব্ধ শেষ রাজকীয় বাণী—
জাফরাগঞ্জের এক কারাকক্ষে। বাকিটুকু ভার
ভ্বায়েছে হতভাগ্য নবাবের ক্ষধির পাথার।

আর সবি ভবে যাই ভারতের ইতিহাস পড়ি

ফুলমণির গাঁয়ে

শ্ৰীবীণা দেবী

। ছরখানেক আগে, কাঞ্চনের প্রথম—শীতের হাওর। পুরোপুরি যারনি। গাল করে' কোর না হ'তেই ফুলমণির ভাই বাদল গোলর গাড়ী নিরে ংাজির।—"চল্ থেতে হবে আয়াদের গাঁরে"—

ক'দিন থেকেই ফুলমনি আমাদের ব'ল্ছিল—"তোরা আমাদের গারে চল্ কেনে—আমাদের কালীপুলো হবে দেখ্বি—নেন্তো দিছি"— তা'র আগ্রাতিশয়ে আমাদেরও আগ্রহ হ'ল বাবার। আগের দিন গাড়ী করে' ত্রিপল, লোহার চেরার ইত্যাদি নিরে গেছে। পুলোর দিন মললবার—কল্পার স্কুল খোলা। সে যেতে রাজী হ'ল না। কাজেই আদি আর উনি যাত্রা ক'র্লাম।



কুলমণি

শান্তিনিকেতনকে পিছলে রেখে—আমানের গোয়ান উত্তর-পূর্ববিকে

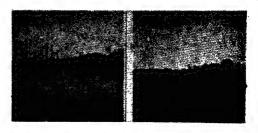
া চ'লল। রেল লাইন পার হ'রে স'তিতালপলী 'বনভাতা'কে

ান কেলে, আমিতাপুর কম্বালীতলার রাল্য ডাইনে রেখে, বামে

া লাইন ধরে' নোলা উত্তর্বিকে এগিরে চ'ল্ল গাড়ী। 'কোপাই'

নই: যথন পার হ'লুম, ভোর হ'রে গেছে—স'তিতালপলী 'মহিবাডাল'
া নেরো জোগাটনলীতে জল নিতে এনেছে। বী কুলর মনোরম

প্রকাত। দেহ-মন বেন জুড়িয়ে গেল! শক্ষকে পরিভার বালির।
উপর দিরে বলতোয়া কোপাই ব'রে চ'লোছে—মদমান গতিতে বির্বির করে',—মাকা-বাঁকা বন্ধুর তার পথ, উঁচু নীচু অসমান তার তীর।
তীরে কয়েকটা সোলা তালগাছ বাঁড়িয়ে—যেন তীররকী সেপাই শামী।



মহিৰাডালের মেরেরা—কোপাই নদীতে জল নিচ্ছে, আর এবিকে
ফুলমণির গাঁ—দূর থেকে দেখা যাচেছ

নদীর বৃক্তের মধ্যে দিরে রাস্তাটা চলে' গেছে সোজা গাঁরের মধ্যে।
নদীতীরের ঐ গাঁটীই 'মহিবাডাল'। ক'াকা মাঠের মধ্যে, খন-সবৃক্ত্ গাছের ঝোপই জানিয়ে দেয়—এটা আম, মাসুবের বসতি আছে এখালে। সবৃক্ত গাছের ঝোপের মাঝখান থেকে একটামাত্র তালগাছ সোজা মাঝা



গাঁ চুকতেই ছুটি অলখ গাছ

উঁচু করে' বাঁড়িরে, বেন সারা প্রারটীকে পাহারা বিভেছ দুর্কে নিশানা বিভেছ।

নবীর তর্তরে জল বেখে, নদীর বুকে নেনে পড়ার লোভ সাললালে। নার—সাড়ী খেকে নেনে পড়ে' নবীর বুকে চলে' কিলে সারা দের-এল বিরে বেন প্রভাতের পরন ক্ষণটা অস্তব করলাম। উনি কোটো ভূস্তেন। নদী পার হ'রে, পা ধুরে, আবার গাড়ীতে চড়ে' বস্লাম। বাড়ী চ'ল্ল 'মহিবাডাল' আমের মধ্যে দিয়ে।

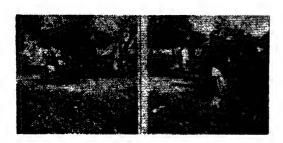
গ্রামে প্রভাতের লাগরণের সাড়া প'ড়েছে—কেউ ব'াট বিচ্ছে, কেউ বরের ব'াপ পুল্ছে, কেউ থাটিরা তুলে কাৎ করে রাধছে। বোরপরা বরের চালে—উ'চু গাছের ভালে চড়ে' কোঁকোরো—কোঁ—ওঁ



কুলমণির মা, বাবা পাঁড়ুমাঝি, আর ছোট ভাই বাদল

ক্ষরে ভোরের জানান্ বিচ্ছে—ছানাপোনা নিয়ে মুর্গী শুওর সব বেরিরে প'ড়ব। মেয়েরা কলসী মাধার করে' কেউ জল নিয়ে ফির্ছে—কেউ জল আন্তে চ'ল্ল।

যারা কেগেছে বা যরের বা'র হ'রেছে, তারা অধিকাংশই নারী।
পূক্ষরা সকলেই প্রার তথন বরের মধ্যে। ছ'একজন পূক্ষ আমানের
গাড়ীর শব্দ পেরে কৌতুহলী হ'রে—মুড়িস্ডি দিরে বেরিরে একট দেখে



এদিকে সামিলালা থাটিরে আমাদের বসবার স্থান হ'লেছে, ওদিকে বাদল দলবল জুটিয়ে আমাদের থাবার আরোজন করছে

নিল। ছোট ছেলেখেরেরা হু'একজন গাড়ীর পিছু পিছু কিছুদূর এল। ক্রমে গাড়ী গাঁছেড়ে এগিরে চ'ল্ল।

ধানকটো হরে গেছে—সেই ফাঁকা ধু ধু অমীর মধ্যে দিরে রাভা— রেললাইদকে বরাবর বামে রেখে। দিগন্ত-অনাত্তিত মাঠের মধ্যে দিরে ক্তে বেতে বারে, রেললাইদের ওপারে ভালভোড়ের 'কুরীপাড়া' প্রাচীনব্দের সাকী দিচ্ছে—সেই সঙ্গে পরিছার লেপানোছা বরগুলি, ক্ষম্পর ছাওয়ানো থড়ের চালগুলি, আলেপালের সন্ধী বাগারের সঙ্গে কুলগাছগুলি প্রান্মের অধিবাসীদের সাংসারিক ক্ষম্পতা, পরিচ্ছর কৃচি ও সৌক্ষর্যবোধেরও পরিচর দিচ্ছে। সহক্ষেই মন আকৃষ্ট হয়। বাদলকে জিজ্ঞানা ক'র্লাম—"হারে এথানে কি কোনও সাহেব কিংবা প্রীষ্টান সাঁওতাল থাকে?"—কুঠীপাড়া নাম এবং প্রামটীর পঠন পারিপাঠ্য দেখে, আমার কেমন মনে হ'ল—হরতো কোনকালে কোন মিশনারী ব্যাহেব এথানে ছিলেন কুঠী বানিরে, কোন প্রীষ্টান মিশনারী



কুলমণি রালা করছে

আছেন। যার ফলে প্রামটার সংস্থান এত উরত ধরণের। সাঁওতালর। সাধারণতঃই পুর পরিভার পরিচ্ছর এবং ভালের প্রামন্তনি ভারী ক্ষর হয়—কিন্ত এটা যেন একটু বিশেষ ধ্রণের। যাদলা বলে—"না মা একণ তো কেউ সারেব নাইকো—দে ভটও দিন আগে—ফল এট লাইন তোমের হছিল, ভক্ষণ এথেনে একজনা লালমুখো গোরাসারে কুঠী বানিরে থাকতো; সেই ভো পেখনে ছদ্কো খেকে সাঁওতালমের এনে বসালেক—নাইনে কাজ করবার লেগে, না, কিনের লেগে।—ভা



প্রাম পরিজমণের সমর আমানের পথ পরিদর্শক পাঁড়ুমাঝি ও আরে অনেকে এবং এদিকে থাটিয়ার বসে হড়ি পাকাচ্ছে পাঁড়ুম ঞা^{তিবেকী}

পর সে সামের মরো গেল, না চল্যে গেল—কী হ'ল কে রালে—গাঁওী 'ভালভোড়' বাবুদের ইরো গেল—এক্শ বাবুরো খালনা ল্যার।"…

এবিকে একটু এবিরে ভাষবিকে এক গাঁ—বেষম নোংরা—ভেগ্নি হভনী—টক কুমীপাড়ার বিপরীতঃ বাধসকে বিজ্ঞানা ক'র্নাং— নোংরা দেখিনি।" বাদল বলে' উঠ্ল—"উই, উটো তো 'মলীপাড়া' বটে—সাঁওতালপাড়া হবে কেনে ?—উ গাঁরে সব মুসহররা থাকে"— আমি ব'ল্লাম—"ও তাই বল।" উনি বল্লেন—"মুসোহর সে আবার কী"—

ষাদল ছেনে ৰললে—"বাবু তু বুসহর জেনিস্ না ?" বলেই,বিজের মত মুধ করে' ব'ল্লে—"মুনহর বলে তাদের, বাদের জমী-জীরেৎ গাই বলদ নাই, বর ছরোর কপাট চৌকাট নাই, কালা কাপড় থাকে না, দিনে ভিষ্ বেঙে বেড়ার, রেতে চুরি করে।" উনি বল্লেন—"তা' তোরা ডেকে ডুকে কাজে লাগালু না কেন ? থেটে থেকে পারে না ?"

বাদল ব'ল্লে—"উই, উ মুসহর বটে, উরা কাক কথা গুন্ধার লোক লর—ভা' ছাড়া উরাদের নিভিচ রোগ, অর, গারে খুঁচ্লি বা, কে কাল লেবে ? মলীপাড়ার ভো ছটো কুটে মুসহর আছে, একলম হান্তের পারের আঙুল্পসা ই'রো,—ইবে একণ বাবুরো বলা ক' করাতে কেউ কেউ বালের ঝুঁড় কুলো বুন্তে লেগেছে।"—ব'ল্তে ব'ল্তে মলীপাড়া আমণ্ড পেছিয়ে প'ড়ল। ব্যস্থো পক বেশ জোরে চ'লেছে।……



আৰে বেরেরা বাড়ির উঠোনে খান বেলছে ওদিকে এক মা ও ছেলে বলে ভাত খাছে

শক্তির উন্ত প্রালণ সম্পূর্ণ জনহীন। শুধু আমাদের গোযানধানি চলেছে এপিরে—তিনটী মাত্র আরোহী নিরে—আমরা ছ'জন, আর নামাদের বানবাহনচালক প্রকৃতির শিশু বাদল। শিশুর মতই সরল হাসিভরা মুখ উৎসাহগীপ্ত জরুষ্ঠ চক্চকে কালো চোখ—কালো কোক্ডা চুল—নিটোল বাহা পরিপুট দেহ, কুচ্কুচে কালো বরণ এই কর সাধ্যাল বাদলের মন্টা আনক্ষের আলোর পূর্ণ।

কিছুদুর এগিরে গিরে বাসদিকে গুব অনেকবানি দূরে বেশ বড় থকট থাবের চিন্দ দৃষ্টিগোচর হ'ল। বাদল অন্নি নেইবিকে অলুলী নর্পে করে' চেঁচিয়ে উঠল—"হাই, দমনীলে"—

'দর্শনীলা' থ্রাবের কথা অনেকদিন থেকেই গল গুনেছি। বোধ হর
পশীলো' নামটির জন্তই স্থতিতে ররে গেছে, কিছু কৌতুহলও আছে।

দল ভখন মনের আনন্দে শুনিরে চ'ল্ল—দর্শনীলার বাবুদের কথা—

কাঠালালানের কথা—বাধানোধাট—ভাঙা মন্দির—গোলক ভাজার—

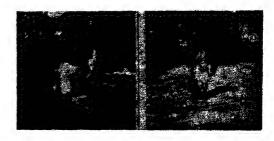
ষামৰিকে বেললাইনের পারে একটা হোট প্রাম, দূরে সামূনে কোপাই ষ্টেশন বেখা গেল। প্রামটী দেখিরে বাদল ব'ল্লে—"হাই, শেওলপুত্ব গাঁ"—আমি ব'ল্লাম—"তাঁ হ'লে তো এসে গেছি, ভোষের গাঁ কো শীতলপুত্র—আমরা তো ওখানেই বাব"—বাদল ঘাড়নেড়ে—"না ফুট



একটি বাড়ির বাইরের দৃশ্য-কতকগুলো পুণ্ডর গৃহবাবীর ভাকে উচ্ছিট্ট থেতে এসেছে

কেলে বাৰ—আমরা বাব শেওলপুর মাঝিপাড়া"—ব'লেই গরুর মুক্ কিরিয়ে পুরদিকে গাড়ী চালিরে দিরে ব'ল্লে—"হাই দেধ্ আমাদের শী শেওলপুর বটে"—

দূর থেকে উন্মূল আন্তরের মাথে ঘন সব্দ পাছ-ভব্তি হোট প্রামণী বেন ছবি। উনি পাড়ীতে বসেই কুলমণির গাঁ'র ছবি তুল্লেন। আমাদের গাড়ী দেখেই ছ' একজন এগিরে আাস্তে লাগ্ল। বেশ্ন, সকাল হ'রেছে। বিকমিকে রোদ। বেরেরা আালের উপর দিল্লে



প্রামের কুরো বেরের। তাল নিচ্ছে—কুরোট কংগ্রেস কমিট থেকে করিরে
দিরেছে। একটি স্ত্রীলোক লল নিতে বাচ্ছে ঐ কুরো থেকে

লাইন করে' থাটুডে চ'লেছে—পরিফার করে' চুল অ'চড়ানো, কোনরে লাল গামছা বাঁবা—কেউ প'রেছে শালা বাংলা শাড়ী—কা'রও পরবে রঞ্জীব সাঁওভালী কাপড়। কুলমণিও রোজ এই হয় মাইল রাজা হেঁটে আহে। গাঁরের সাশ্ল চুক্বার বৃথে ফুলমণিদের বাড়ী। অপথ গাঁহের তলা দিয়ে, বাঁলগাঁহের পাল দিয়ে চুকেই আমড়া গাহ। আমড়া গাছটী ফুলে ভরে' গেছে—পালে ফুল-পাভাহীন রিক্ত লাঠচাপার গাছটা আসর কুলের আশার আঁকা-বাঁলা ডালপালার হাত মেলে দিয়ে গাঁড়িয়ে আহে। তার পালে আভাতলায় ঠাকুরতলা—পুলার বেনী। লখা চৌকো বেণী—সাম্নে অর্কচন্দ্রাকারে সিঁড়ির থাপের মত করা—ছানটা



গা বুরে এসে গাছের ছারার বসলাম—সামনে ছেলেরা থেলতে লাগলো

চমংকার কমে' নিকানো গোবর দিরে গোল করে'। তারই সামনে

সমান চৌকো চাছাছোলা পরিছার পরিচ্ছর গোবর দিয়ে নিকানো

জারগার সামিয়ানা খাটিরে আমাদের জল্ঞ জারগা হ'লেছে। খাটারা

গোত—তার উপর বাড়ীর বেএর নিজ হাতে বোনা থেলুর পাতার

চাটাই বিছিরে, আমাদের বস্বার আসন করে' রেণেছে। নতুন উমুন

পেতেছে—আমাদের জল্ঞ সেইথানেই। বাতাস উঠ্ল—খাটিয়া কাৎ



ছোট ছোট ছেলে-মেয়েরা এক মারগার বদে মাটলা করতে লাগলো

ক্রে' তার উপর চাটাই আড়াল করে' বাতাস ঠেকিরে কুলমণি আমাদের বস্তু রালা চড়িরে দিল। বাদল মহা উৎসাহে মুগী ছাড়াতে লেপে গেল—আমাদের থাওগাবে। কুলমণির মা বাবার আমাদের পেরে আনন্দ আর ধরে না—কী কর্বে—কী না কর্বে ভেবে পাছেছ না।

প্রথমেই কুলমণি চা করে' দিল। চা পাদ করে' আমরা গাঁ বুরুতে বেলোলাম। ফুলমণির যাবা পাঁড়্যায়ি আমাদের আগে আগে পথ বেশ হৃদ্ধর ছারা-শীতল প্রাম এই শীতলপুর। প্রথমেই কুলমণি বাড়ী। পরিকার পরিজ্ঞার চারিদিক—আশে পাশে কুলতলার ছাগা আর পুওর চ'রছে। বাড়ী চুকতে সাম্নেই বেশ ছাইপুই সডেজ বলি তিনটা তালগাছ—একজারগা থেকে উঠে—রসগ্রহণের শিকড়টা এক ছানে রেখে, বা'র পাতা বেল্তে বতটুকু জারগার দরকার ঠিক ততটু ব্যবধান রেখে—তিনটাতে একই আলোর উদ্দেশে আকাশের দিয়ে নাথা তুলে দিয়েছে। একটা বেশ বুড়ো, একটা মেল, একটা ওর মে বেশ ছোট—বেন বাবা মা ও মেরে।

তালতলার বাড়ীর উঠোনে ধানের 'পালুই' বাধা আছে, এথন মাড়ানো হরনি। ঘরে চুকতে আগে ঢাকা বারালা, একপালে উন্তু একপালে মুনীর সংসার, তারপর ঘরে ঢোকবার দরজা। মাটীর ঘ পরিগাটী করে' নিকানো, স্থলর করে' ছাওরা। কোন জানালা নো একটী মাত্র পোর—ঘরের ভিতর ঘুটুবুটে অক্কার—ফুলমণি ঘরে চুট



গাঁরের সর্পার কাঁথে ক'রে কালী ঠাকুর বরে নিরে আসছে, ভারপর পুলো জারগার বসানো হ'রেছে মা কালীকে। ছ'পাশে সর্পার আর সর্পারণী

দেওয়ালের কুপুনীতে রাধা কেরোসিনের ভিপে ছেলে দিল। ছরে ভিতর আধধানা নেজে জুড়ে ধান বাঁধা আছে—ধড়ের দড়ী পাকিং ঘুরিরে ঘুরিরে—তাকে ওরা 'বাধার' বলে।

ক্লমণি নিজেদের যর দেখিরে রায়া কর্তে চলে' পোল—আমা
গাশের বাড়ী গেলুম। পাঁড়ুর এতিবেশী নিজের উঠোনে খাটিয়ার বচে
ঘড়ী পাকাছে—তাদের চালে প্রকাণ্ড লাউ। আভিনার বসে মা হেত
ভাত খাছে। বেয়েরা পারে করে' উঠোনে ধান মেলুছে। প্রার স
বাড়ীর উঠোনেই ধান মেলা। প্রত্যেক বাড়ীর উঠোন কর্বরে, পরিছা
করে' নিকানো—আভিনাতেই সব কাকবর্ত্ত। যা'র বাড়ীর উঠোনে
মাছি—সকলেই হাসিমুখে আদর আপায়ন করছে—বস্তে বল্জে
হেলেমেরেরা ঘলবেঁথে আমাদের যিরে গাঁড়িরেছে, লড়াই করছে, থেল্জ
ক্লোমাদের সঙ্গে স্বর্ছ—প্রতিবাড়ী থেকে ছই একটা ছেলেমে
বৃদ্ধুই আমাদের সঙ্গে বোগ দিরে ঘলবুছি করছে। প্রতি বাড়ীজি
বুর্মী, পুওর, গল আছে। পুক্ররা বাড়ীর পিছনে থাকে, চরে' বেং
ক্রিকা নোকোর মত পুক্রদের থাবার পাত্র—গ্রু-সংকার ছেটি এফটা

প্রাবের একটু বাইরে ক'কা বারণার একটা পাঠশালা—'ক্রীনিকেতন' পরীউন্নয়ন কাজের কলে এর পষ্টে, হোট ছেলেনেরেরা তাতে পড়ে। প্রামের মধ্যে একজন লেখাপড়া জানা লোক আছে—দেই পড়ার। প্রামের সকলে তাকে পণ্ডিত বলে' ডাকে। পণ্ডিতের নাম 'ভড়ু' মাবি। এই ভড়মাঝিই বোলপুর... ব্রীনিকেতন বাওরা আসা করে, যোগাবোগ ধবরাধবর রাখে। পণ্ডিতের নলে আমাদের দেখা হ'ল না—দে তথন বোলপুর গেছে।

পণ্ডিতের বাড়ীর সাম্বে পাকা ইণারা—জিজ্ঞাসা করাতে ব'ল্লে—কংগ্রেপের লোক করে' দিরেছে। ঐ কুরোর ফলই সারা প্রামের লোকের পানীর। পণ্ডিতের সজী বাগান বেশ বড়—ভাল কলার গাছও আছে। পণ্ডিতের বাড়ীর পিছনেই বড় গাছটার গারে কর্নানষ্ট পার্টি খেকে বিজ্ঞাপন লটকে দিরে গেছে—ধর্মঘটের বাণী—"সাত ঘণ্টার বেশী কাফ ক'র না—ধর্মঘট কর, ধান তোমাদের" ইত্যাদি। জিজ্ঞাসা করল্ম—"এটা কে টাঙাল !" বল্লে—"ক্রেনিনে কে কথন মূলিরে দ্বেস—বোধহর রেতে করে"—



মধ্যাক্ত ভোজনের পর কেরার চিন্তা

গণেশমাঝি গাঁরের কবিরাজ। তার বাড়ী অর্থাৎ কবরেজ বাড়ীর উঠোনে নিবতলা—ত্রিশূলপোতা বেদী—সামনে বলি দেবার হাড়িকাঠ শোতা। প্রতি বাড়ীতেই পুলোর বেদী—ঠাকুরতলা আছে—বলি নেবার জাল্পা শুধু কবরেজবাড়ীতেই দেখলান। গ্রামবাদীর অক্ষ্প শিক্ষে সেই জড়ী বড়ী শিক্ষ পাতা দেয়—চিকিৎসা করে—বাড়, কুঁক, মুগ, তেলপড়া, ধুলোপড়াও দেয়।

থাষের সর্বারের নাম 'ভাত্ম' মাঝি। সর্বারএর অবস্থা বেশ ভাল।

সদার বেশ লখা জোরাম। সর্বারণীরও বেশ জাঁদ্রেল চেহারা।
ত গা লোকজন নিরে কালীপ্রতিমা আন্তে গেল—রেললাইনের ওপারে

শী লপুর গাঁরে। প্রতিমা এনে বদাবে বলে' উঠোনে ঠাকুরভলার একটী
চেটা কুঁড়ে তৈরী ক'লেকে—কাঁচাবাদ, ডালপাতা দিরে।

থানে চুকেই কুলনপির বাড়ী—প্রামের শেবপ্রান্তে কুসুমের বাড়ী। ই মন বাড়ীর পরে একেবারে প্রান্তগীনার একটা বটগাছ—এইটাই

তির শেব। কুসুমের বা দেবলান বরের যাওরার কোপটালো কাসার

বাঁধা একটু লোহার তার এবং বড়ী বিরে—লোল্প যুষ্টতে ভাজের দিকে তাকিরে কুঁকুঁ করছে। চালে বেল বড় বড় লাউ। বাঁচীর পিছনে গাঁরের লেবে উত্তর দিকে—বোপ ঝোপ কুলগাছ—কুলার কর্ম গাঁরবিলিষ্ট শাদা কুল থোকা থোকা কুটেছে। দেখতে ক্তকটা 'ভাঙীরা' কুলের মত। কভার মভ কুল তুলে নিপ্ম—ওঁর ক্বামত হু'টো ভাল কেটে নিশুম বাড়ীতে গাছ ক'রব বলে'।

ফির্বার পথে রাসমণিদের বাড়ী পেলুর। রাসমণির বাড়ী ঠাকুরতলার ছটী পাণর বসানো। পাগলমাঝির বাড়ীটা বেশ বড়—বেবেং
মনে হয় অবস্থা ভাল। দাসীদের বাড়ীর উঠোনে বেশ পুরবোং
কাঁঠালগাছ ও অনবগাছ। গাঁ ঘুরে ক্লান্ত হ'য়ে গাছের ছারার বস্লাম।
ছেলেরা সামনে খেলুতে লাগল। উলি সামনে ফোটো ভুলে চ'লেছেন।
আমার ঘিরে ব'স্ল শিশুরা—সকলেই পুর পুনী।

প্রাম বুরে, ফিরে এসে দেখি—তভন্ধে কুলমণির আল্চচ্চি, বাধাকপির তরকারী রালা হ'লে গেছে, বুগাঁ ছাড়িলে, কুটে রালার ক্র



কুলমণির আর এক ভাই মদন এই সমর বোঁএর মাধার বোঝা চাপিরে হাট ক'রে ফিরলো। ভামিনী ছোট ভাইকে কোলে ক'রে দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে দেখতে লাগলো আমাদের

বাটাতে চেলে ঢাকা দিছে। কালার বাসনভাল বকু বকু ক'র্ছে। চারিদিক পরিকার পরিভার ।

থামে ছ'টা কালীপুলা হয়। একটা সধার ভাতম মাবির বাড়ী—
আর একটা কুলমণির বাবা পাঁড়, মাথির বাড়ী। সধারের কালী
আগে এল। বাড়ীর লোকেরা মাখার কোমরে লাল গামছা বেঁথে,
মাকে কাঁথে করে' নিরে এল। সধার গৃহিণী হাতে চালচিত্র বহুষ
করে' আন্ল। উলি সধার সধারণীর ছবি তুল্লেন মা কালীকে
নিরে।...

কুলমণির দাদা মদন এল হাট করে'—বৌ এর মাধার বোঝা— বুড়িতে হাটের জিনিব, তেলের বোতল ইত্যাদি—মদন মাঝি এছ থালিমাধার থালি হাত পা বেড়ে। আমাদের দেখে পুব খুগী—মিজেবের কুলমণির ঐকান্তিক নির্চা আন্তরিক বছে রাজা হ'ল বেন অর্ড। বাটিরার উঠে ব'ল্লায়—সংগাহ-ভোজনের পর। । । এইবার বেতে হবে— একথাটা বঙৰারই মনে হ'চ্ছে—এদের অন্তরভরা সরল-স্ট্রেতি ততই নিবিড় করে' টেনে রাখ্ছে। • • •

বেলা আড়াইটার পর গাঁ থেকে রওনা হ'লুব—আর বেরী
ক'র্নে আবাদের পৌছে দিরে—বাদনের কিরতে অনেক রাভ হ'রে
বাবে। সকলেই সনির্বন্ধ অন্থরোধ ক'র্নে—"আলকের রাভটো থেকে বা,—প্রো দেখে ঘর বাবি"—কিন্তু বাড়ীতে নেরে একা
আছে। বাধন হিঁড়ে বেরোডেই হ'ল—গাঁরের অর্থকের উপর লোক 'এনে গাড়ীর' কাছে অড় হ'ল। সকলেরই মূবে এক কথা—"আবার আসিস্, আবার আসিস্"—ভারা বেনী কথা বলে না—একাশের ভাবা আনে না।···

শেষ পাৰ্যান্ত গীড়িরে রইল ফুলমণির খোনখি ভাষিণী ছোটভাইটাকে কোলে নিরে—বতক্ষণ দেখা যার ।-----

আমাদের বাড়ীর উঠোনে ক্লমণির গাঁরের ক্ল ক্টেছে—বধ্র দ্বতির হয়তি নিরে।—দেখি, ভাবি,—আলও পরণ পাই সেই আভরিক প্রতির—ওক্তে পাই সেই ভঞ্জব "আবার আসিস্—আবার আসিস"—

শরৎ-জ্রী

শ্রীগোবিন্দপদ মুখোপাধ্যায়

শারদ রাতি আবি আলোতে ঝলমল

টাদের হাসিখানি রূপালী ছল হল,

শেকালী স্থাসেতে

বনানী পথে যেতে,

কাহারি রেহানীবে হুদর ভরে বল
সোনালী ব্রোতে ভাসে ভটনী চল চল।

সাহানা-গীভিন্তর আকাশে ভেসে চলে

দবিন হাওরা কানে কত কি কথা বলে

শ্রামণ অঞ্চ বাতাসে চঞ্চল কাহারি দোলে বল ধানের শ্রাম ক্ষেতে শারদ-শ্রী সে বে কবির মানসেতে বনানী মুখরিত দোয়েলা-গীতি-তানে, শ্রামারি মধুশীবে ছলো জাগো প্রাণে;

জোনাকি ঝাঁকে ঝাঁকে
জানি না কি বে আঁকে
বেধানে আলো-ছারা অথবা বারু পথে,
শারদ-রাণী আসে আলোক জররথে।
আজি এ মধুরাতে শারদ কোছনাতে
কানিয়া যত আছে মনের আভিনাতে,

সকলি সুছে বাক কেবলি ভারে বাক্,

শারদ ইঙ্গিত

শ্রীনীহাররঞ্জন সিংহ
হেথার হোথার নীল আকাশ
ধূপর মেবের দল ?
আজ শরতের তুপুর বেলা
মন করে চঞ্চল।
গুমট ভরা বরের কোনে
রইব না সংগোপনে
বাহির হলে পল্লী পথে
নামতে গারে জল!

ভিজার ভিজাক আকাশ ভরা
ঝর্ণা ঝরা জল।
ধূসর মেবের দল।
মেবের ফাঁকে প্রথর তর
রবির কিরণ শর!
হানছে দেহে তপন তাপে—
প্রাণ আজি জর্জর!

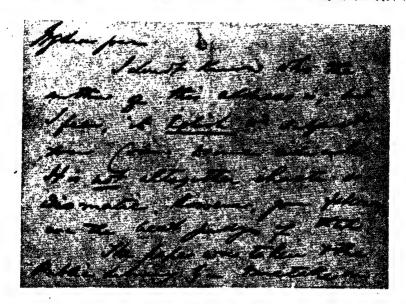
পৰের পাশে গাছের ছারা,
বাতাস বুকে বিলার মারা,—
সূটবে কি আৰু শারন শোতার
শিউলী শতনল !
ঝরণ নামার খণন আমার

সাহিত্যিকগণের হস্তলিপি

আমরা এই সঙ্গে করেকজন স্বৰ্গত প্রখ্যাতনামা সাহিত্য-রবীর হত্তদিশি প্রকাশ করিলাম।

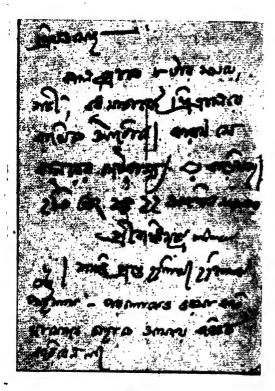
মাইকেল মধুস্থন দত্তের একথানি ইংরাজি পত্ত (১নং ও ২নং) সহজেই পাঠ করা বার। বিষ্কানন্ত চটোপাখ্যার নহাশরের পত্ত ছথানি (৩নং ও ৪নং) ব্যক্তিগত হইলেও একথানির শেবে তাঁহার অভাবস্থলভ রসিকতা আছে। নাটাচার্য্য গিরিশচন্ত ঘোবের (১নং) পত্তথানিও ব্যক্তিগত —প্রির ভক্ত ও শিশ্ব অবিনাশবাব্কে লিখিত। বিজেশ্রন্থান রার মহাশরের পত্তথানি (৬নং ও ৭নং) উল্লেখযোগ্য

তাঁহার জীবনের শেষভাগে লিখিত। শেষ পঞ্চধানি (৮জং ও ১নং) কবীক্র রবীক্রনাথ ঠাকুর কর্ত্ব গুরুলাস চটোপাথার নহাশরকে লিখিত। পুত্তক বিক্রের সম্বন্ধে নির্দেশ আছে। আমরা ক্রথানি পত্রই প্রীয়ৃত সরোজকুমার চটোপাথারের সৌজতে পাইরাছি—মূল পত্রগুলির ফটো লইরা ভারা হইতে রক করা হইল। প্রেষ্ঠ ব্যক্তিদিপের হন্তলিশি সংগ্রহ করার আগ্রহ জনেকের মধ্যেই দেখা যায়। এই সক্ষ্পাত্র-লেখকের লিশি সংগ্রহ আর সন্তব নহে—সেক্সেই এগুলি সাধারণের ক্লাছে মনোক্ত হুইবে বলিয়া বিশাস।



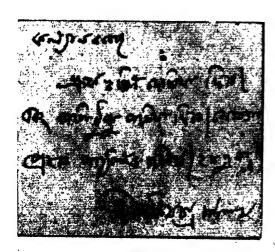
करीं नः अ



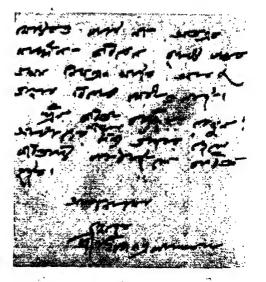


क्रिंग नः ७

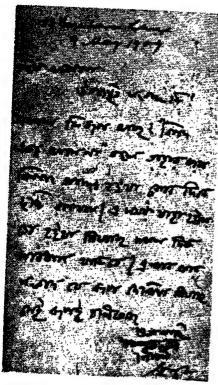




क्टी मर व



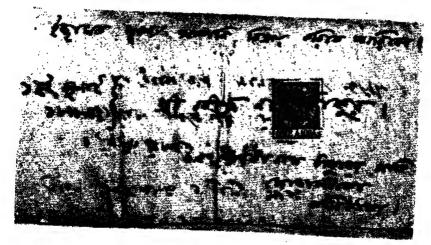
क्टो मर १



143		K	1
Sen of	1 11/4/16	Su.Z.	* *
-			
44	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR	
died in	e i a lang	- 477 M	7.77
	the old	77-	

क्टी नः ।





स्टिंग मर अ



যুলতান—তেতালা

(বাকলা খ্যাল)

তোমার চরণ সবে নিত্য করিছে খ্যান হে মক্লময় তুপ হ'তে কর ত্রাণ। তব রূপের জ্যোতি দশদিশি আ্বালো করে মধুর মুরলী করে উঠিছে লহরী তান॥

কথা, স্থর ও স্বরলিপি—সঙ্গীতনায়ক শ্রীগোপেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যায়

```
১। তান--
  मना - । मक्ता छवा । भा भा मना भा । - । क्ता भभा - । । क्ता छवा - । - ।
  ছো•
   সকলাতল পা -া | ভলক পনা -া দপা | পা ভলা -া -া | ক্লা দা
                                                                        -1
   জ্জনাপনাস্নাদপা | ক্ষ্ডাঋসান্সা - I
২। পক্ষাজ্ঞকাপনা -। | স্তুর্গুর্মাস্থা -। | স্থার্মাস্থা স্থা -। | না দা পপা
                - ভা - <sup>-- ;</sup> - - ক রি
   জ্জনা পনা -া -া দিপা ক্ষজ্ঞাঝসা -া II
   ধ্যা - - -
                                                              P. S.
ে। অন্তরার ভান-'ভব রূপের জ্যোভি' গাহিয়া-
                       পানা সিজ্ঞা খা সা ন
       21
                                  তি -
                                                                >:
           ৰ্যো-
       ২। নর্সা জ্ঞাঝার্সানদা | পক্ষা জ্ঞা সনা -া
           ব্যো -
                  – তি –
```

গান

বিশ্বনাথ চট্টোপাধ্যায়

আজি বিদায় দিনে ভীক্স মিনতি থানি বেন তোমারি বাবে কহে ব্যথার বাণী; তব নিবিড় স্থথে বদি গোপন বুকে বাজে আমারি গীতি গেরো অরণ মানি। বদি চলিতে পথে কড়ু মাধবি বনে
ভূলে চমকি চাই মোর সমাধি কণে
তবে দাঁড়ারে বারে
দিও পর্মণ তারে
নিও প্রেমের পূজা মোরে বগণে আনি।

বাঁধন

শ্রীশক্তিপদ রাজগুরু

নতুন করে সংসার সাজাতে চার অমিরা! দেবকণ্ঠ
শিল্পী-গুণী বাইরের জীবনেই তার আকর্ষণ বেনী, বরে যেটুক্
সমর থাকে নিজের সাধনা নিরে মন্ত থাকে! আগন করে
তাকে কাছে পাবার মন্ত একটুও সমর অমিরা পার না! না
পাক্ তের্ তার গৌরব দেশজোড়া খ্যাতিসম্পন্ন ব্যক্তি
ভার আমী! নারীর সমন্ত কামনা বাসনাকে চেপে
রেখেও সে আগ্রহারা শিল্পীকে সুধা করতে চার—সেবা
দিয়ে—যদ্দ দিয়ে। বান্ধবীরা বলে—ভূই ভিলে ভিলে
নিজেকে নিঃশেষ করে দিচ্ছিস অমিরা! •••

হাসে অমিয়া !

নীড় সে বেঁথেছে···নীড়কে সে স্বপ্ন দিয়ে বিরে রাখতে চার!

অনেক সন্তার পেরেছে সমস্ত আসবাব !···আজ দেবক\$কে চমকে দেবে সে ! এক রাত্রের মধ্যে সারা বাড়ীটার রূপ যেন বদলে গেছে !···

নেবর্ধার রাত্রি! দেবকণ্ঠ বাইরে থেকে ফিরে বাড়ীতে
পা দিয়েই একটু বিশ্বিত হয়ে যায়!
 আকাশে আকাশে আকাশে
ভাবিণ রাত্রির বজ্বনাদ
 বিজ্ঞলীর চকিত আলোয় সারা
আকাশের কালো বুকে যেন কোন অপরীরীর আনাগোনা!

 নেঅমিরা এগিয়ে আসে
 ভাবেশের আলো!

আনন্দের আলো!

সমন্ত বরগুলো দেখিরে নিরে বেড়ার ক্ষমিরা দেব-কঠকে! বহুকালের স্থাতি-ভারাক্রান্ত ক্ষাসবাবগুলো... ক্ষতীতকালের কোন সামস্তভাত্তিক বুগের এক হুদ্ধ স্থপমর পরিবেশ স্থাই করে ভূলেছে! দেখকঠের ক্ষতীব্রির মনে বেন পরশ বুলার!

রাত্রি নেমে এসেছে ! খন খোর রাত্রির তমসা গ্রাস করেছে সারা ধরিত্রীকে। আকাশে বর্ষণধারার কুদ্ধ গর্জন ! ... বিজলীর তীব্র ঝসক ... দিক হতে দিগন্ত জুড়ে কোন স্বৃতির দশন হেনে দিয়ে যায় অতীতের খনতমিপ্রার বুকে ! ...

দেবকঠ জেগে ওঠে ! · · · বিছানার উপর উঠে বলে ! · · · অন্ধকারে অন্ধন্তব করে ঝাড় লঠনটা হুলছে · · · কাঁচের বলা দিতে আওরাজ হচ্ছে ঠুং ঠাং ! · · · বাইরে বর্ষণ ধ্বনির মুখ্য স্থারেলা ! · · · ধীরে ধীরে অস্পাই একটু স্থার বেন কুটে উঠছে ! · · · বিশ্বিত হয়ে ওঠে দেবকঠ ! · · · বেহাগের করুণ স্থার বে আলাপ করে তার বাড়ীর আলো পালো ! · · · চারিছিকে বর্ষাই বরিষণ · · · প্রকাণ বাগানবোরা বাড়ীর মধ্যে কার এ স্থার ! · · · ধীরে ধীরে বেরিবে আলে নে ! · · ·

হল বারান্দা দিরে এগিরে চলে সামনে-পানের হংটা তথনও শোনা বার•••! এ মিটি কঠে কার আলাগ!… কেমন বেন সারা মনে একটা শিহরণ জাগার ! · · · এ স্থর যেন ভার চেনা · · · চেনা এ কঠবর ! · ·

নীচের সিঁড়িতে কাকে দেখে বেন চমকে ওঠে দেবকঠ! বিহাতের এক ঝনক আলোর দেখে এক-জন নারী···এগিরে চলেছে··গানটা সেই গাইছে!··· এি:াবার সে সেইদিকে!···

িকছ ধরতে পার্লেনা, তাকে ! নারীমূর্জি সামনের হলবরটার চুকে গেল ! পিছু সিছু সেও গেল ! পানান আশর রী আআার আকর্ষণ যেন তাকে ছ্বার গভিতে টেনে নিরে চলেছে হলের মধ্যে ! পান্ধকার বর্থানার মধ্যে চুকেই কেমন বেন গুপ্তিত হয়ে যার দেবকণ্ঠ! কার শাড়ীর বদ বদ শব্দ তথনও যেন শুনতে পার সে! অক্কারে দেশলাই আলতেই পান পানান মধ্যে পার দুরে দাঁড়িয়ে রয়েছে একটি নারী। অস্পন্ত আলোকে তার মুখের হাসিটুকু দেখতে পার, আর দেখতে পার তার চোখের কোণে সেই হাসিরই রেশ

এগিয়ে বায় দেবকণ্ঠ···ডাকে কিন্তু কোন সাড়ানেই !···
দেশলাই নিজে এসেছে।

আবার আলে একটা অবেটি তথনও সেইপানে! দেবকণ্ঠর সারা শরীরে একটা শিহরণ জাগে। আকাশে বিহাতের ঝলক! অতিটি ভরীতে যেন উষ্ণ রক্তপ্রবাহ! এগিরে যার আরো সে! ···

শচমকে ওঠে শেবকঠ ! শবুৰতে পাবে না কোৰার
 বে এসেছে ! শবেন কোন এক জন্ধান কগতের পথে

চলেছে সে ! শহাত বাড়ার শকিস্ক একি ! শকোৰার গেল
 শই নারী ! শ

···মস্প শীতন স্পর্ণ [···জক্কারে অন্তব করে দেবকণ্ঠ, ···একটা ছবি [···

ললাটে ফুটে উঠেছে তার খেদবিন্দু ! · · স্থরটা মিলিরে বিছে ! · · আকাশে বন্ধ নির্বোষ ! · · · কুটিল কণিনীর মত একে বেঁকে দেখা দেৱ কালো দিগন্ত চিরে বিজ্ঞাীর আভা !

শা ছটো ধর ধর করে কাঁপছে দেবকঠের ! চোধের শাননে কেমন বেন জাঁধারের ববনিকা ! তহাত বিরে একটা কিছু অবলখন ধরে নিজেকে দাড় করিরে রাখতে চার ! ••• ফুটে উঠেছে দিনের আলো! দেবকঠ বিছানার ওবে তথে ভাবে কালকের রাত্তির ঘটনাটা!…ঠিক ব্যুতে পারে না সে স্বপ্ন দেখছিল কিনা!…তব্ মনে বেন কেমন একটা অড়ভার ছারা!…

চা নিরে আদে অমিয়া! এই সমষ্টুকু তালের জীবনের একটা মধুর ক্ষণ অমিয়াকে আজ আজর করে না দেবকঠ! তিবিশ্বিত হয়ে যায় অমিয়াও! হয়ত বা শরীর খারাপ! ত

এক কালি চাঁদের আলো ন্তিমিত পাপুর হরে সামনের গাছটার কাঁকে চেরে থাকে বাড়ীটার দিকে ! · · · দেবকঠর মনে হয় কার যেন করুণ কাতর চাহনি। ক্রেপে বলে থাকে গে! · · এক প্রহর · · বিপ্রহর অতীত হরে বার—কোনো সাড়া নাই! আফ কি আসবে না সেই নারী · · ! অমিরা বন্দুমে আছের ? খীরে খীরে বার হরে আসে দেবকঠ ! · · ·

··· আবার শিহর জাগে আকাশের বৃক্তে। গাছের
নাথায় রাতের দিকহারা বাতাস আনাগোনা করে
বার···নিতার রাত্রির মধ্যে আজ দেবকঠ আলাপ করে
বেহাগ! স্থেরের রেশটা সারা খরের অভ প্রান্তে ছড়িছে
গেছে··হঠাৎ চোথ তুলতে সামনে দেখে সেই নারীমৃষ্টি!
মুখে তার মৃহ হাসি-·-ধেমে যার দেবকঠ!

—"কে তুমি <u>?</u>"

কোন কথা নেই, নীরবে চেরে থাকে নেরেটি ব্যাকুল ব্যথা ভরা চাহনি নিরে !···চোথে তার ব্যাকুল আ্লার আলো !···

··· ७८क कात मा स्वयं के एक ७-- त्वनरे वा

অবচ মনের মধ্যে প্রবল আলোড়ন জাগে, মনে হয় কোন অতীত এক রাত্রে ওকে অপ্ন দেখত—ওর ম্থের ওই হানি, চোথের ওই ব্যাকুল চাহনি যেন চেনা!…ও যেন আত্মার আত্মীর !…সারা মনের অতল প্রদেশে ব্যাকুলভাবে হাতড়াতে বাকে দেবকঠ! …এগিরে বার তার দিকে !… মেরেটি ব্যাকুলভাবে বলে ওঠে … "ম্পর্ল করোনা আমার! গুরু হতে কথা বল…!"

সারা মনের চিস্তায় ব্যাকুল কামনা ভালোবাসার সঞ্চর দিরে এক ভাষর এঁকেছিল তার ছবি তথাণ প্রতিষ্ঠা হরে গিরেছিল ওই মৃর্তির সেই শিল্পার অন্তরের সাধনায় আজ তাই ব্যাকুল অন্তরের কামনা নিয়ে খুরে বেড়ায় ওর আজ্মা ও বন্ধন হতে ওর মৃক্তি হয় নাই, বংসর গেছে—বুগ গেছে—এসেছে জন্মান্তর, তব্ও বিদেহী আজ্মা ওই কারাগারে বন্দী হয়ে ব্যাকুলভাবে কার পথ চেয়ে রয়েছে!

…বলে ওঠে দেবকণ্ঠ ... আমি মুক্তি দেব তোমায় !…

উত্তর দের আশা ··· এত বৎসর—জন্ম জনান্তর ধরে তোমাকে খুঁজেছি !··· সেদিনের না-বলা কথা বলবার সময় পেরেছি—আজ ভূমি আমার ভাগ করে যাবে ?···

···ব্যাকুলভাবে বলে ওঠে দেৱকঠ···না না, তা হতে পারে না! অশরীরী···এজগতের মাহুষের সঙ্গে ভোমার কোন যোগাযোগ থাকতে পারে না! ভূমি···ভূমি··· আমার কেউ নও! ভোমায় আমি চিনিনা!···

•••চলে বেতে চার দেবকঠ !
 •• এ কি সে বকে

চলেছে !
 •• কই তার আশেপাশে কেউ ত নাই !
 •• সারা

শরীরে জাগে একটা চাঞ্চল্য !
 • শিরার শিরার চঞ্চল রক্ত
শোত জ্রুতবেগে বরে যার
 •• সামনে কার যেন ব্যাকুল

কাতর চাহনি মাথা ত্চোখ
 •• সিঁড়ি দিয়ে উঠে চলে সে !
 ••

···হঠাৎ কি হল্পে বাদ্য টের পাদ্য না ৷···পাটা সিঁড়ির ুঞ্জন্টা বাপ উপরে কেমন বেন ফসকুক বাদ্ধ শক্তি হতে গড়িরে পড়ে বার তার অচেতন দেহটা !···চীৎকার শুনে ছুটে আলে অমিয়া—চাকরটা বার হয়ে আলে! কোনরকমে দেবকঠের অচেতন দেহটা তুলে নিয়ে বার!

আগ্রায় আশাবাই এর নাম জানেনা এমন লোক কেউ নাই !…সারা সহরে তার নাম, দেশবিদেশ হতে আসে ধনা সম্রান্তশালী জনতা তার মুজরো ভনতে !… রূপ এবং স্থ্র তুটোরই সমান আকর্ষণ !

---ভাস্করের সঙ্গে সম্বন্ধ তার বছদিনের, অসামান্তা
রূপ-বৌবনা ওই নারী সামান্তভ্য একজন শিল্পাকে যে
কোন আকর্ষণে ভালোবাসতে পারে, সারা সহরে এও
একটা আলোচনার বিষয়।

যমুনার ধারে তাজগঞ্জের পিছনে ছোট একটা বাংলা, চাঁদের আলো পুটিরে পড়েছে ক্যাকুটানের অষদ্ধ বর্দ্ধিত বনে: ছোট্ট ছোট্ট বাঁশ বনের ঝোপ…মৃত কঠিন রাজার ধারে মাথা ভূলেছে! টালাটা এগিয়ে আলে! দুরে লৈখা দিয়ে তাজের মিনার-মধ্যকার বিশাল খেত গন্ধুজ…চাঁদের আলোয় স্বপ্রপুরীর পরিবেশ রচনা করেছে।

···ভাঙ্করকে পৌছে দিতে অধসছে আশাবাঈ!

মনে পড়ে আজ প্রথম যেদিন পরিচর হয় ভাস্করের সঙ্গে। আশা সেদিন জন্মপুরের মহারাজার ওখানে মুজরো করতে গেছে দরবারে। রাত্তি তখন প্রার দ্বিপ্রহর, বেহাগ আলাপ করছে আশাবাঈ তেন্ধ দরবার ত্রাজা নিজের হাতে ভূলে দেন আশাবাঈকে মুক্তোর একছড়া মালা। এক কোণে উপবিষ্ট মুগ্ধ ভাস্করের সারা মনে কোন এক স্থরের মারাজাল বিভার করে!

সে রাত্রে খুমুতে পারে না ভাত্রর, ···বা সে পেরেছে কণিকের পরশনে, তাকে বার্থ হতে দিতে চার না···তুলি আঁচড়ে ·· অমর করে তুলবে!

পাহাড়ে বেরা জয়পুর…দিগন্ত জোড়া পর্বতের মারের রাজকভার মত একটুকরো হুন্দর এক নগরী, প্রাসাদের বুলবারান্দা দিরে চেয়ে থাকে উদাস দৃষ্টিতে আশাবাঈ আকার ডাকে ফিরে চাইল, কে একজন দেখা করতে চার তার সকে!

···চেরে থাকে তার নিকে আশাবাঈ···স্থার স্থা^{কুর} চেহারা, চোথের তারার কোন অনাগত লোকের জ্যো^{তি} ছবিধানা এগিরে দেয় ভাত্তর, ···বেহাগের বিশুদ্ধ শাস্ত্রীয় রপ ···বর্ণ এবং ভাবের অবমিশ্রণে কোন এক মায়া-লোকের স্পষ্টি করেছে, যা আশাবাঈ এর আলাপেও স্পষ্টি হয় না সবসময়! বিমুগ্ধ দৃষ্টিতে চেয়ে থাকে আশা তার দিকে!

সেই তাদের প্রথম পরিচয়ের ইতিহাস···ভাস্কর এসেছে আগ্রায়, তাজগঞ্জের নির্জ্জন পরিবেশে··শতীত বুগের শ্বতিভারাক্রাস্ত প্রেমরাজ্য তাজমহলের সীমানার বাইরে গড়ে তুলেছে তার শ্বপ্রময় পরিবেশ··শিলীর মনোরাজ্য!··

•••আশাবাঈএর সারা মনে জাগে কোন অমরাকুত্বম সৌরভ, যম্নার জল-কলোল তার বেহাগের ত্বরে

ক্র মিলার, ত্বর মিলার বৃদ্ধ বনঝাউএর বৃদ্ধে রাতের

দিকহারা বাতাস, যম্নার নীলধারার ওপারে হরিণ যুথের
কালো চোধে জাগে অথের নেশা।

তেরি হয়ে আসে
 ভালর ফিরে বার তার

শিল্পরাজ্যে
 ভালাবাদি এর টালা
 তেরা বেশীর প্রহরা

বেরা মহল রাভা দিয়ে রাতের ভুবন্ত চাঁদের সলে কে

বাতচানি দিয়ে নিরে বার কেরলবাবের পানে !

বাকীরাতটুকু কাটে ভাস্করের আকাশের পানে চেরে…
ওদনি কোন চাঁদের মায়ায় সে বন্ধ হরে গেছে যেন।
নারা মনে একটা আলোড়ন, শিলকে সে ত্যাগই করেছে
নিজের মনের এবং দেহের আকর্ষণে। মনে পড়ে আগেকার
দিনগুলোর কথা, জয়পুরের দরবারের শিলী…ভাস্কর…
নিরে আদিসন্ধিতে জগতের বুকে একটা স্থায়ী ছাপ
বিধে যাবার কত না দৃঢ় কল্পনা। তার মৃত্যুর পর সে
িশেষ হরে যাবে না—পিছনে থাকবে তার শিল,
ভাকে অমর করে তুলবে! কিছ কি থাকবে তার

আলেয়ার মত রোজই রাজে আলে এই আকর্ষণ, সেপথ হারিয়ে ফেলে।

আশাবাজ এর উছল বৌবন, অপরূপ কণ্ঠমাধ্র্য সারা আগ্রার একটা আকর্বণের বস্তু! দেশ বিদেশ হতে আগে কত অতিথি ক্ষত সামস্ত রাজের রাজকুমার ক্ত বড় ধনী ব্যবসায়ী আগে আর চলে বায় সমুদ্র বেলার সংখ্যাহীন চেউএর মত। কেউ কোন দাগই রেখে বার না! ভাল্পরকে দেখেছিল আশা কোন এক ছল্লছাজীবনের হুরে বেন স্থরময় একটি মাহ্য স্থেরের মারাজাল নিরে যার বেলাতি সে মহান্থরের এই সাধককে ভূলতে পারে নি।

এমনি এক দিনে এল আশাবাঈএর জীবনে বরোদার
গায়ক পণ্ডিত মণিশঙ্কর, স্থার্থ সৌম্য চেহারা, ঋছু
বলিষ্ঠ দেহ, তেজদৃপ্ত চাহনি, সারা স্থরলোকের সন্ধানে
বার হয়েছে মহাধাত্রাপথে! আগ্রায় এসেছেন তিনি
আশাবাঈ এর গান ভনতে।

যথারীতি গান শ্রক্ষ হল বসন্তবাহার ! আশাবাই ভানে তার বসন্তরাগে আসে বসন্তের পরিবেশ, প্রলোকের মায়াজালে সে স্টি করতে পারে সহস্র পারিজাতের সৌরভ···যারা সন্ধীত এবং দেহ-প্রসারিণী বলে দূর হতে সরে যার—ভারা দেখে যাক ভার প্রভিভার সভিত্রার কোনো স্থায়িত্ব আছে কিনা ?

বৈশাধের তপ্ত বাতাদের আনাগোনা তখনও থামেনি,
কল্ম গাছের বুকে শীর্ণতার রং অআকাশের বুকে
তখনও ধূলি ঝড়ের আভাস মিলিয়ে যায়নি ! অগান স্থক
করেছে আশাবাঈ বেলা বসন্তের ঠাট ! অমীড, গমক, মূর্জ্বা
দিয়ে প্রাণবন্ত করে তুলেছে তার স্থরকে, সারেজীওলা,
তবলচী আজ আশ্বর্য হরে যায় ! অবিতার চলেছে অ

শেষরা গাছের বুক হতে সাড়া দের কোকিল । শে সেও ভূলেছে বসস্ত চলে গেছে অনেক দূরে, দূরের পরিবেশে বনের পাণী আৰু অন্তব্য করে শেঞা বস্তু যুক্ত গর্বিত জরের জালোয় রঙ্গীণ হবে গান থানালো জাশা !···চেয়ে থাকে পণ্ডিত মণিশন্তরের পানে !···কিন্ত.·· কই ওর মূখে কোন পরিবর্ত্তনের চিহ্নও নাই !···মৃত্ব হাসিতে ভবে ওঠে পণ্ডিতের মুখ···বলেন···

···আশাবাঈ এর মনে আঘাতই বাজে, তার গানের এমন কড়া সমালোচনা কেউ করতে সাহস করে না !··· তবু অতিথি···কোন রকমে সহু করেই গেল। এর পর পণ্ডিভন্নী আলাপ স্থান্ধ করলেন! ··

ন্তক হলে যার বসম্ভের কোকিল কাকলি—মুখর পরিবেশ कामनात्र कारवरनमत्र উচ্ছल পরিবেশ ... मुह्ह श्रिल छारिशत ••• নহা মঞ্চানার খন তমসাজ্য অতলে। গেয়ে চলেছেন প্রভিত্তী, আশার মনের দর্প · · অহকারের যবনিকা · · পড়তে পড়তে দূর হয়ে বার! সভ্য আবিষ্কার করে সে—দর্প নিম্নে অহকার নিয়ে গাইতে বসেছিল সে, ছিল কামনার শালসামর দুলী রিপুর প্রভাব সারা মনে! জগৎকে সে নতাৎ করে ফেলেছিল · · কিন্ত এ সুর ব্রহ্মের শেষ নাই--শীমা নাই ! অতল অন্ধকারের মতই জগতের সমস্ত হিংসা ক্ষোডকে নিংশেষ করে আপনার নিংশতাকে মনের বেদীমূলে সকীতি সার্থকতার দেবতারূপে প্রতিষ্ঠিত ক্রেছে। বিশ্বিত দৃষ্টিতে চেয়ে থাকে আশা···হারিয়ে क्ला निक्र क !… नाता प्रथमस्य हो प रू हो जोन यो ए লঠনগুলোর আলো ... একে একে নিভে আসে! তমিপ্রার শাভ পরিবেশে আর্ভ হয়ে বার সারা হলটা ⋯ স্থর তথনও খুরে বেড়ায় · · · পথহারা পাথীর মত ! · · ·

চনক ভাকে আশাবাঈর, অন্ধকারে হুরটা তথনও পুরে বেড়াচ্ছে পথহারার মন্ত, তানপুরাহাতে ধ্যানময় পশুতলা ভখনও হির হরে বদে রয়েছেন।

···এতদিনের শিকা-সাধনা আজ সবই ভূচ্ছ বোধ হয়
আশাবাঈর !···কি সে জানে ! কি তার সম্পর্ !···পশু চলীর
পারের কাছে সূটিয়ে পড়ে !

···দ্ধ তুলে চান পণ্ডিভনী···দুধে ভার হাসির দধুর আভা। বিভেল্লিয় বন্ধচারী সাধু আভা রেন ওর সনের সমত না বলা কথাই ব্ৰতে পাৰেন! আখাস দেন—
"নিৰেকে ভূলে বেতে হবে তবেই আসবে সাধনায় সিছি!
এ বড় কঠোর পথ!···ভোগের লালসা এখানে মহাপাপ—!"

পর পর করেক রাত্রি কেটে গেল, নীরব নির্জন তাজের লাত দরওলা পার হয়ে আলে রোজকার মতই ভারর <u>!</u>⋯ খেত পাধরের জাকরির ফাঁক দিয়ে চত্তরের বুকে আলো ছারার মারাজাল রচনা করে আকাশের বিদায়ী চাঁদ, अभारतत वनतवननीयांत्र कांकन-नद्यना मृती श्रीवांकछृत्रन স্থগিত রেখে কান পেতে শোনে কি বেন আকাশে বাতাসে -किस ना-कोन ऋतरवर्ग ७ नव ! कोत वृक मो र करत বার হরে আদে দীর্ঘাদ। যম্নার কালো অলে । পাণুর টাদের ছায়া দোল খায়, তাজের উচু চম্বর হতে চেরে থাকে দিগস্তের পানে—ভাস্কর! সে আব্দ একা!…এ বনঝাউ এর বুকে বাতাদের হাহাকার ভার বুকে মাতন ভোলে! চাঁদের হাসি আজ তার চোথে যেন সর্বহারা কল্লণ কালামাধান…! তাজের বুকে আজ দেখে না দে কোন প্রণয়ীর কালো চোৰে অভিগারের ইসারা ! তত্তক জমাট পাবাণের বুক **टिम करत कारन चारम कांत्र कांत्रांत्र ऋत्र !···** ि त्रवित्रशे অঞ জল খেতণ্ডল পাবাণ ভারে জমটে বেঁধে রয়েছে কত यूग यूगांख थरत ।

শ্বাক্—দূরে স্বাই শ্বেষ্টির নেশার স্বহারাবার ছঃখ সে ভূলে যাবে ! শক্তির আসে শিল্পী নিজের ছোট বাংলোর দিকে ! আকাশের চাঁদ ঢলে পড়ে ! ভাজগঞ্জের স্থাপ্রীর হয় নবজাগরণ যেন কোন লপোর কাঠির পরশে ! বুমভালা ভোর আসে আগ্রার আকাশে !

শেশ শিক্ত আটেকে কেলেছে আশাবাল । চোথে সকল আর মনের অসহার কেলন আত্মহারা শিল্পাকে বন্দী করে কেলেছে কোন অলানা বাধনে । আশাবাল সাধনা ক্ষক করেছে আবার । মনের লালনা কামনার সমত দাবীই আল নিঃশেব করে দিয়ে নতুন জীবনের সন্ধানে বার হরেছে লে ! শেওও বেন একটা নেশা !

जीवरन कारभव चरकरे चरवरह चरनक कानित वीहण

—ত্যাবৈর অক্ষের শৃত্তবর আজ সে দেখতে চায় কতথানি পূর্ণ করতে পারে! বিলাসিনীর কাছে এও বোধহর একটা ভৃ:খ-বিলাসই। তার আছে রূপ—আছে সম্পন আছে— ভাবকের দল—ছঃখ তার বুকে বাজে না বড় কঠিন ভাবে!

দরিত্র ভাস্কর প্রায়ান্ধকার একটা পাথরের বন্দীশালার মধ্যে অস্পষ্ট আলোয় ভূলির আঁচড় মেরে সৃষ্টি করে কোন মহাজীবনের ইন্দিত! এ জীবন-ভার দারিত্রা, রোগ, নি:ম্বতায় ভরপুর! ভরতা অন্ধকারের মধ্যে তার জ্যোতির্ময় হুটো চোথ—ধেন দে কোন পিঞ্জরাবদ্ধ ঈগল পাথী, স্থোর দিকে কপিশ আঁথিতারা মেলে চেয়ে রয়েছে, আজানা এবং ঠোঁট পিঞ্জরের গায়ে বারবার আধাত করে ক্ত-বিক্ষত রক্তাক্ত হয়ে উঠেছে। আ

আন্ধ ভান্ধর অফুভব করে সারা শরারে তার ব্যাধির করাল গ্রাস—যার অফুমান সে অনেক আগে হতেই করে এসেছিল! এতদিন মনের প্রোর ছিল—মনের জগতে ছিল সৌলর্ঘ্যের অফুভৃতি! সারা পৃথিবীকে সে ভালোবেসেছিল, ভালোবেসেছিল তার আলোবাতাসমাধা নদী তীর, শ্রামল বনসীমা নিল অঞ্জনবন চাহনি পরিণত হয়েছে আজ্ব বাস্তবের ক্লচ্ আঘাতে ... কোন ক্লেরে ভৃতীয় নয়নের বহুজালাময় সর্বধ্বংসী দৃষ্টিপাতে!

রাজি নামে নীরব যম্নার কুলে, ভরা প্রাবণের যম্না
কলকল ধারার বাঁধনহারা জলরাশি ছুটে চলেছে কোন
মন্বের সন্ধানে —তাজের মর্মর স্বপ্ন ধ্রে মুছে যার সংখ্যাহীন তরক্তের ঘাত-প্রতিঘাতে, বৃষ্টি-ধৌত বন ঝাউ গাছের
বৃক্তে এক কালি চাঁদের আলোর পরশ বৃলিরে যায় তভান্তর
দ্র হতে দেখে! ওখানে যাবারও সামর্থা সে হারিয়ে
কেলেছে। দ্র হতে স্পরাজার দিকে দ্র-প্রদারি দৃষ্টি
মেলে চেয়ে থাকে!
।

শারা শরীরে একটা অবহু যত্ত্রণা বুকের ভিতর হতে

ফুলে ওঠে! কি যেন একটা নোনতা আখাদ, হাত দিয়ে অহনত করে · · · অম্পষ্ট চাঁদের আলোয় দেখতে পায় · · · ভ্রমাট রক্ত ! · · ·

এ বেন কোন এক নতুন স্বপ্নবেরা দেশ! বদস্কের আমছারা—বন তরুবীথি…, দে জগতের বাতা একা আশা- বাঈ! ভূলে যেতে চায় দে বাইরের পরিবেশ!…

পণ্ডিতজীর দিব্য দৃষ্টি শক্তি সন্ধান পায় ওর মনের অভলের। নতুনকে উপভোগ করবার প্রকৃতি আশাবাদএর আছে, কিন্তু চঞ্চলানারীর উদ্দাম উচ্ছলতাকে সে
ভার সাধনা দিয়ে জয় করতে পারে নি, সেদিন আবার
বান্তব জগতে ফিরে আসবে ওই নারীই ভার দৈহিক কামনা
—লালসার উন্মাদনায় উন্মাদ হয়ে উঠবেই, শ্লাশাবাদিশ্রর
ভবে সেইটাই চরম পরাজয়, তবু ভাই হবে সত্য ! শ

আলাপ করে চলেছে আশাবাঈ, রাগিনীর সার্ধকরূপ হবে বিরহিনী বেদনাবোধেই ! েপ্রতিটি মনের অন্ত্পরমাণু হয়ে ওঠে ! নিজেকে হারিয়ে ফেনে আশা ! েএ
কি অহুভূতি শারা মনের স্থা কামনা লাল্যা আজ
পরিবাধি হয়ে পড়ে ! জীবনের চাওয়া পাওয়ার হিসাব
ভিড় করে দাঁড়ায় মনের পৃঠায় ! …

তানপুরাটা হাত হতে নামিয়ে দেয়! স্থরের রেশ ন্তিমিত হয়ে গেছে,অস্পষ্ট অন্ধকারে দেখতে পায় পণ্ডিভঞ্জী ওর চোধের কামনা মদিরমন্ন চাহনি!

উপবাসী মনের সামনে আজ বারা ভিড় করে দাঁড়ায় তাদের অনেককে চেনে—অনেককে চেনে না আশাবাঈ !

• মণিশঙ্করের প্রতিভাকে হিংসা করে আশাবাঈ, গুরা আবাত হেনেই বাবে পৃথিবীর সমন্ত কামনাকে শুরা ভিরিখে উঠে বাবে সব কিছু হতে সন্তর্পণে নিজেকে দুরে রেখে! কিছু কেন—?

রাত্রির অন্ধকার নিবিড় হয়ে আদে! সারা বাড়ীটা মগ্ন

আড়ালে বুকোচুরি থেলে রাতের শিশু চাঁদ ! · · আশাবাঈএর সারা মনে আজ বিজােহের ছন্নছাড়া স্থর ! · · সারা
জীবনকে অঙ্গুলি হেলনে বন্দী করে রাথতে সে চায়
না ! · · · তন্ত্রীতে তার উছল রক্তন্সোত · · মনের উদ্দাম
ক্রিমনার গতিবেগে জীবনতরী ভাসাতে চায়— যেথানে
ক্রিপায় !

রাত্রি কত জানে না ... মণিশঙ্বজীর হঠাৎ ঘুম ভেঙ্গে
যায় ... কপোলের কাছে কার উষ্ণ নিঃখান ... কার নিবিড়
লপার্শে চমকিত হয়ে ওঠেন পণ্ডিতজা ! ... সরে দাঁড়াল
ক্ষরকারের মধ্যে ছায়াময় একটা মূর্তি। মূর্তিটার ত্টো
আঁথিতারায় কাল-নাগিনীর মত লালদা-নাথা কুটিল চাহনি !
ঘণায় —লজ্জায় সরে দাঁড়াল আশাবাঈ !

বিস্মিত হয়ে যান পণ্ডিতজী! কল্পনা করেননি তাঁর সত্যদর্শন এত কঠোর…এত বাস্তব হবে! স্থণায় শিউরে ওঠেন তিনি!…

ছিঃ ছিঃ ··· তোমাকে আমি আমার পুণা সাধনার যাত্রাপথ দেখাতে এগেছিলাম! আমার গুরুদেবের অপমান করেছো তুমি! ··· নরকের কীট! সঙ্গীত জগতে ··· সাধনার পথে থাকবার কোন দানী তোমার নাই!

রাত্রি ভোর হয়ে আদে! পাবাণ মূর্ত্তির মত স্থির হয়ে দাঁড়িয়ে থাকে আশাবাঈ। সপণ্ডিতন্ত্রী চলে গেলেন শেষ রাত্রেই, এক মূহুর্ভ ও তিনি থাকবেন না এ পাপপুরীতে!

আজ আশাবাঈএর জাবনে এনেছে স্ব-হারানর
পালা! পণ্ডিতজীকে ভালবেদেছিল কিন্তু সাধন মার্গের
জিতেন্ত্রিয় ব্রন্ধচারীকে সে বাঁধতে চেয়েছিল কামনার স্থ্র
দিয়ে, তাই তিনি চলে গেলেন! অগজ আশাবাঈ আবার
আগেকার জীবনকে মেনে নিতে চায়, সে বাঁচবে কি
নিয়ে! বার হয়ে পড়ে!

্বছদিন পর আবার সেই অতিপরিচিত পথে চলে ক্ষাশাবাঈ মনে তার আশার আলো! ভাসবের অন্তরের প্রেমকে সার্থক করতে চায় সে!…

শলালমাটির বুকে মুইয়ে পড়া বাংলোটার সামনের
গাছগুলো শুক্নো হয়ে গেছে, রাত্রি শেষপ্রহর !

 ছিটে
গিয়ে ঢোকে আশাবাঈ ! কেউ কোথাও নাই !

 ঘেরের
মধ্যে চুকেই খমকে দাড়ায় আশা ! এ কোথায় সে এসেছে !

 শারা শরীরে একটা শিহরণ

 ভমিনামাধা অভল

অরণ্যানীর মাঝে দেখতে পায় কোন এক নারীম্র্ডি !··· খুব চেনা !

এগিয়ে বার !

শেখারে বীরে আবিষ্ণার করে সারা পাষাণ প্রাচীরের উপর ভাস্করের নিপুণ তুলি রচনা করেছে কোন গহন অরণ্যের মায়াজাল, দিনের আলো সেথানে যুগ যুগান্তরেও প্রবেশ করেনি প্রতানীকে চেনে সে! প্রতান্তরেও প্রবেশ করেনি প্রতান্তরেও আবেশ করেনি প্রতান্তরেও আবেশ করেনি প্রতান্তর বিশ্বিত হয়ে যায়—আজকের আশাবাঈ সে নয়! শিল্পীর সত্য দৃষ্টি আজকে তাকে দেখলে অমূত্র করত নারী কত নীচে নামতে পারে ও ছবি কোন পুণ্য প্রেমের জ্যোতিময়ী নারী মূর্ত্তি! শিল্পীর কামনার বহু উর্দ্ধে! প্রতাত্ত জীবনের মহাসত্যকে রূপায়িত করেছে তারই ছবির মধ্যে ভাস্কর।

ত্রন্ত ব্যাধির কবলে আত্মদান করেছে ভান্ধর! পড়ে আছে তার চিহ্ন! অসা ব্নে এ জগতে নাই! চলে গেছে কোন অজানা জগতে ভান্ধরের সন্ধানে!

···"কিন্তু তারপর আশাবাঈএর কি হল ?" মধ্র হাসিতে ভরিয়ে দেয় অশরীরী অন্ধবার কক্ষতল !···

আশাবালর জীবনের আলো দব নিভে গেল দেই দিন, বেদিন অন্থত করল দে—গান গাইবার ক্ষমন্তাও তার একেবারে নিঃশেষ হয়ে গেছে! বোধ হয় ব্রহ্মচারী পণ্ডিতজ্ঞীর অভিশাপ তার জীবনে সত্য হয়ে ফুটেই উঠেছিল! চারিদিকে ঘনিয়ে আদে অন্ধকার আশার জীবনে, শিল্পী আশা দে জীবনের বোঝা টানবার ক্ষমতা হারিয়ে ফেলল!

···বর্ষার শেষ···যমুনার ওপারের কাশবনে লেগেছে ভন্তার স্পর্শ !··· ···ভাজের খেতমর্মর বেদীম্ল কার ব্কের রক্তে রালা হয়ে উঠল !···

আশাবাঈ এর প্রাণহীন দেহটা তাজমহলের চন্ত্রে আবিন্ধার করে কৌভূহলী জনতা লাল রক্তের ছাপ পড়েছে জ্বমাট পাষাণ বেদীতে, স্আশাবাঈ তার জীবনের শেব অধ্যায় রক্তের আথরে লিখে রেখে গেছে তাজের মর্মর প্রাঙ্গণে! স

অশরীরীর হুচোণ অশ্রুসন্তল হয়ে ওঠে, বলে চলেছে—

কিন্তু মুক্তি আমার গ্রনি, তোমার প্রেমের অপমান করেছি দিলের জীবনের সমস্ত কামনা তোমার স্ষ্টিকে বিরে মূর্ত্ত হয়ে রয়েছে শূক্ত লোকে দ্কি আমার হয় নি! জ্ঞান্তর হতে তোমার গোঁজ করে এদেছি! ...

অবিধাওয়াটা অমিয়ার কেমন থেন ভালো লাগে না, দেবকণ্ঠর শরীরও ভাল নয়, সে রাত্রে অচেতন হয়ে থাবার পর হতে কি থেন সর্বনাই চিস্তা করে সে! শুক্ত দৃষ্টিতে চেয়ে থাকে তার দিকে! ডাক্তারও পরামর্শ দেন কিছু দিন চেজে যাবার জক্তে!

স্বিষ্ণ কর্ম বাবধানে হারিয়ে ফেলে ছন্তনে ছন্তনক !

স্বিষ্ণা চলে গেছে চেন্তে দেবক ঠকে নিয়ে! শৃষ্ঠা
বাড়ীটাতে প্রাণহীন স্বাস্বাবপত্রের মধ্যে রয়ে গেছে
একটি বছ যুগের প্রতীক্ষামানা প্রাণ! তিছেদের
বাধায় প্রতিটি রাত্রের নিশীথ প্রহর কার বেহাগের স্থারে
কক্ষণতর হয়ে ওঠে! কার স্বাগমনের পথ চেয়ে
খাকে সে!

···সারা মনে কি অস্বন্তি অমুন্তব করে দেবকণ্ঠ জানে
না
আশাবাঈ—আগ্রার তাজমহল— কলোলমুথরা যমুনার
বারিধারা এসবের সঙ্গে কি তার কোনদিন কোন জন্ম
সম্পর্ক ছিল! তবে কেন এই অশান্তি!

···আকাশের উৰ্দ্ধন্তরের অশরীরী কোন আত্মা আ**ত্ম**

তৃপ্তি লাভ করে ! ... জীবিত তার প্রিশ্বতম তাকে স্বর্থ করে—তার জন্মে উদ্বেগবাক্ল হয়ে ওঠে ... এই সামাস্থ্যতম প্রতিদানই তৃপ্ত করে বিদেগী আত্মাকে। তার বন্ধন-মুক্তির বারতা আদে আকাশের বহু উর্দ্ধে তার আত্মার বাদন্তরে। আশাবাঈ ... অতীতের জ্বালা ভূলতে পেরেছে ! মর্ত্তালোকের মানবের সারা মন তার জ্বন্ধ্য ব্যথিত হয়— এই ত তার পরম পাওয়া! এদের আকর্ষণই তাকে আবার ফিরিয়ে আনবে মান্ন্রের জগতে প্রেম-প্রীতির জন্মভূমিতে ... তার আত্মার মুক্তি-সাধনতীর্থে।

শেলছে আশাবাঈএর অশরীরী মুক্ত আত্মানন
নীলাভ জ্যোতির্ময়ন্দ্রছে আলোক স্তরন্দ্রারিদিকে
ভামন হ্রাম ! ক্ষেষ্টির ঘুর্ণিবের সহসা তার পথক্র করে
তোলে! ত্র্ণিবার গতিবের নামিয়ে আনে নীচের দিকে
আত্মার প্রজ্জানের বিবর্ত্তন পথে। প্রথীর বকে কার
একটি অন্তরের ভালোবাসা চায় সার্থকতান্দ্রস্থীর
আনন্দে আজ্ আত্মার জোতির্মন্ত রাপন্দনবজন্মের দিকে
এগিয়ে আসে মহামুক্তির সাধন পথে!

শ্কিরে এনেছে দেবকণ্ঠ, সারা মনের বাাকুলতা
নিয়ে। ফিরে এসেছে অমিগা—মনে তার আনন্দের আতা!
নারীত্বের পূর্ণ বিকাশ মতিমায় সে মহিমাগিতা!
চলেছে সে!
তাদের নীত কোন অজানা দেবশিশুর
কলহাত্যে মুথর হয়ে উঠবে! তাকে নিয়ে জীবনের সব
কিছু পূর্ণ হবে অমিয়ার।

রাত্রি আদে, দেবকণ্ঠ ব্যাকুলভাবে চেযে থাকে কার
আশাপণ! কিন্তু সব নারব। রাত্রির নীরবতা কোনও
স্থরের রেশে ছিন্ন হয় না···নিজেই বদে আজ আলাপ
করতে থাকে···বেহাগ রাগিণী!···তানপুরাটা সাড়া দেয়
দীর্ঘ দিন পর!

শক্তি কই, কেউ আদে না! শগভীর রাত্রি, নীচে বিন্ধে বিবে আদে দেবকঠ —ছবিখানা তেমনিই ররেছে। বিশ্ব শক্তি আদেবনা আগেকার সে জ্যোতি বিল্পু হয়ে গৈছে! শভ্রের রক্তিমাভা হয়ে এদেছে পাভ্রে, আঁথিতারার আভা বিল্পু হয়ে গেছে! শ

···সে নাই! বিদেহী আব্রা আজ মুক্তির সন্ধান পেয়েছে!··· দিন বায়, ··· অমিরার সাংসারে এসেছে পূর্ণতার ছায়া! কোন অজ্ঞানা দেবশক্তির কলহাস্থে মুথর হয়ে ওঠে তাদের শৃক্ত গৃহাকন !···

 দীপশিথার ভীরু আলো হাতে করে? অতীতের হারাণ পথের সন্ধানে।

··· আশা হারিয়ে গেছে অদীম শূক্ত লোকের স্ষ্টি-রহস্তের অন্তরালে—এসেছে আলো!

নাত্র তার অতি আপনজনকে ভালবাসে— কেহ করে
—বিরে রাথে প্রেম প্রীতির বন্ধনে—কিন্ত কেন? এর
রহস্ত চির তমসাবৃত্ত রয়ে গেছে!

রাশি ফল

জ্যোতি বাচস্পতি

ক্সারাশি

কল্পা যদি আপনার জন্মরাশি হয়, অর্থাৎ যে সময়ে চক্র আকাশে কল্পা নক্ষরপুঞ্জে ছিলেন সেই সময়ে যদি আপনার জন্ম হ'য়ে থাকে. তাহ'লে এই রকম কল হবে—

প্রকৃতি

কর্মশীলতা এবং সব ব্যাপারের ব্যবহারিক উপধােগিভার দিকে
লক্ষ্য—এই হচ্ছে আপনার প্রকৃতির মূল মন্ত্র। আপনার জীবনের কথা
ক্রিছু আশা আকাজ্জা সব জড়িত থাকবে আপনার কর্মের সঙ্গে।
কর্মের ছারা শ্রেষ্ঠত অর্জন করার ইচ্ছা আপনার মধ্যে পুব বেশী
প্রকাশ পাবে।

আপনার মধ্যে ব্যক্তিত্ব প্রবল এবং ইচ্ছাশক্তি বেশ দৃঢ়। বাইরে থেকে আপনার ব্যবহার ও আচরণে সামাজিকতা ও বিনম্ম ভাব প্রকাশ পেলে, আপনি একটা দূরত্ব রক্ষা করে চলবেন, যাতে ক'রে আনেক সময় আপনাকে বুবে ওঠা শক্ত হবে।

সৰ বিষয়ে সাধুতা ও সোঞ্জাহ্মজি ব্যবহার আপনি পছক করেন বটে, কিন্তু যেথানে কূটনীতি না হ'লে কাৰ্যসিদ্ধি অসম্ভব হ'লে ওঠে, কোথানে কৌশল প্ৰয়োগ করতেও মোটেই দিধা করেন না।

নিজের সম্বন্ধে আপনার ধারণা বেশ স্পষ্ট এবং অধিকাংশ ক্ষেত্রে আপনার সক্ষরের মধ্যে কোন অস্পষ্টতা বা দোমনা ভাব নেই। ঠিক বার্মপর না হ'লেও আপনি কম-বেশী আত্ম-কেন্দ্রিক হবেন এবং অপরের সহযোগে কাজ করলেও নিজের বৈশিষ্ট্য বা মতবাদ ছাড়তে চাইবেন না।

আপনি বুদ্ধিমান এবং আপনার মধ্যে মানসিকতা প্রথম হওরাই সম্ভব। অধ্যয়নের ব্যাপারে লঘু সাহিত্যের চেরে বিজ্ঞান দর্শনের গভীর শুরু আপেনাকে আকর্ষণ করে বেশী। কিন্তু শিক্ষই হোক, বিজ্ঞানই হোক

জার ধনতবাই হোক্, যার কোন ব্যবহারিক উপযোগিত। নাই তার মূল্য জাপনার কাছে নিতান্ত কম।

আপনার কমধারা অধিকাংশ ক্ষেত্রেই আপনি গভীর চিন্তা ও বিশেষ বিবেচনা ক'রে গ্রহণ করবেন। কাজেই তার উপর আপনার একটা একান্তিক নিষ্ঠা থাকবে যা সহস্র প্রতিকূল অবস্থাতেও বিচলিত হবে না।

আপনি সহজে কুদ্ধ হবেন না, কিন্ত কারো উপর একবার বিরাগ ল্লালে, তাও আপনার মন থেকে সহজে দূর হ'তে চাইবে না। তবে যে মুহুতে আপনি ব্ঝতে পারবেন যে বিরাগের কোন যুক্তিসলত কারণ নেই, সেই মুহুতেই সরলভাবে নিজের ক্রাট শীকার করতে পরায়ুধ হবেন না। কারো উপর কুদ্ধ হ'লেও হীনভাবে প্রতিশোধ নেওয়ার ইচ্ছা বা শক্রকে অস্তারভাবে ক্ষতিগ্রন্ত করার চেষ্টা আপনি কথনই করবেন না। আপনার বিরোধিতা স্তারপথকে আশ্রম ক'রেই অভিবাক্ত হবে।

আপেনি সাধারণতঃ সংযম ও শুচিভার পক্ষপাতী হবেন। আমোদ-প্রমোদ ও ক্রীড়া-কোতুকে শক্তি অপচর না ক'রে তাকে দরকারী কাজের জন্ত সঞ্চিত ক'রে রাধতে চাইবেন।

আপনার মধ্যে সংসার-বিরাগী, উদাসীন সন্থাসীর যত মনো^{ভাব} কম-বেশী প্রকাশ পেডে পারে, কিন্তু সেক্ষেত্রেও জ্ঞান বা ভক্তির চেরে কর্মবোগই আপনার আদর্শ হবে।

বাক্যের ছারা অপরকে বমতে নিয়ে আদার বোগান্তা আপনার বংশেষ্ট পরিমাণে আছে, কিন্ত এর অপব্যবহার সম্বন্ধে স্তর্ক না থাকলে আপনার বাগ্যিতা নেহাৎ বাক্চাতুর্ব বা বাচালভার পরিণত হ'তে পারে 1

নিজের জন্তই হোক্ পরের জন্তই হোক্, কোন না কোন ^{কারে} মনকে ব্যাপুত রাখা জাগনার পকে একান্ত জাবভাক। কর্মহীন ^{অল্স} জীবন আপনার পক্ষে একটা অভিশাপ। কর্মহীনতা আপনার মানসিক ও নৈতিক উন্নতির অন্তরায় তো বটেই, তা আপনার দৈহিক বাছ্যের পক্ষেও হানিকর।

অর্থন্ডাগ্য

আধিক ব্যাপারে সাধারণতঃ আপনি হিসাবী ও সাবধানী হ'লেও প্রথম জীবনে অর্থ উপার্জনের ব্যাপারে কম-বেশী ঝঞ্চাট উপস্থিত হবে। উপার্জনের জক্ত আপনাকে যথেষ্ট পরিশ্রম করতে হবে। নিজের বৃদ্ধি কৌশলেই হোক্, সরকারী কোন বিভাগে উচ্চপদ লাভ ক'রেই হোক্, অথবা দালালী ঠিকাদারী ইত্যাদি কিখা জনসাধারণের সঙ্গে সংশ্লিষ্ট কোন কাজের ঘারাই হোক্, জীবনের শেবার্ধে আপনার আর্ধিক অবহা সচ্ছল হ'য়ে উঠতে পারে, কিন্তু তবু এ আশহা আছে যে, আপনি দীর্ঘকাল কঠোর পরিশ্রমে যা অর্জন করবেন, নিজের বিবেচনার দোবে তা নষ্ট করে ফেলতে পারেন। উপার্জনের জক্ত আপনাকে মধ্যে মধ্যে ভ্রমণ করতে হবে, কিথা ভ্রমণের সময় উপার্জন বা প্রাপ্তি হ'তে পারে।

উত্তরাধিকার স্ত্রে আপনার কিছু প্রাপ্তি সন্তব হ'তে পারে কিছ তা পেতে বাধাবিত্র বা বিলম্ব হওয়া সন্তব। তা নিয়ে কোন রকম নামলা মোকর্ণমা হওয়াও অসম্ভব নয়।

কৰ্মজীবন

কর্মজীবনে আপনাকে নিজের গুণপনা ও কর্মশক্তির উপরই নির্ভর করতে হবে বেলী। কদাচিৎ কথনও কোন বিদেশী বা ভিন্নধনী মুক্সলির সাহায্য পেতে পারেন কিন্তু সে সাহায্য অধিকাংশ ক্ষেত্রে হবে বার্থ-প্রশোদিত ও অস্থারী। কাজেই তার উপর নির্ভর করলে হতাশ হ'তে হবে।

যাকে বলে অতিছের জন্ত যুদ্ধ, তা আপনার প্রথম জীবনে প্রকট হবে। কিন্তু অনেক আশাভঙ্গ ওঠাপড়া বা কট্টকর পরিপ্রমের পর শেব পর্যন্ত আপনি জন্মী হবার আশা করতে পারেন। ধৈর্বের সঙ্গে অপেকা করতে লেখা আপনার উচিত। এ কথা মনে রাখবেন যে, সফলতার জন্ত আপনাকে একমাত্র নিজের উপরই নির্ভর করতে হবে। কার্থ-সিদ্ধির জন্ত অনেক সমর হয়তো খাস্থা ও জীবনের পক্ষে বিপজ্জনক এবছার মধ্য দিয়েও অগ্রসর হ'তে হবে। কিন্তু যদি বিপদকে ভর না করেন এবং কঠোর পরিশ্রম করতে কাতর না হন, তাহ'লে কর্মজীবনে যথেষ্ট প্রতিষ্ঠা অর্জন করতে পারবেন, সে বিবরে সন্দেহ নেই।

আপনার সেই সব কাজ ভাল লাগবে, যাতে সাধারণকে শিক্ষা অথবা আনন্দ দেওরা যার। স্থতরাং সাছিত্য শিল্প বিজ্ঞান ইত্যাদির সঙ্গে সংসিষ্ট কর্মের দিকে আপনার আভাবিক আক্ষণ দেখা যেতে পারে। সাংবাদিক সাহিত্যিক আইনজ্ঞ চিকিৎসক প্রভৃতি কাল্পের যোগ্যতা শেনন আপনার আছে, তেমনি অভিনেতা সঙ্গীতজ্ঞ নাট্য-পরিচালক প্রভৃতি কাল্পের যোগ্যতাও আপনার মধ্যে আছে। যেথানে বছজনের সংস্থব আছে এবং বছ ব্যক্তিকে পরিচালনা করা প্রয়োজন হয় সেই সব

কাজে আপনার যোগ্যতা প্রকাশ পাবে কিন্তু বছরনের সংশ্রবে কর্ম করলেও, আপনি সেইখানেই বেগা যোগ্যতার পরিচর দিতে পারবেন, যেখানে সকলে আপনার প্রেচছ বীকার করবে। চাকরী প্রোক্ষোন এবং ব্যবসা যাই আপনি করুন, আপনার লক্ষ্য থাকবে প্রাথাক্তর দিকে; কিন্তু প্রাথাক্ত পেতে হ'লে আপনাকে অক্লান্ত পরিশ্রম করতে হবে।

মনে রাথবেন ৰস্থারাশি কর্মবোগের রাশি। যদি **যার্থের দিক্ষে** লক্ষ্য না করে শুধু কাল্লের জন্মেই কাল্ল করে যেতে পারেন তা**হ'লেই** আপনি আনন্দ পাবেন বেশী।

পারিবারিক

আন্মীয় খজনের দারা উপকারের চেয়ে ক্ষতির আশকাই আশনার বেশী, তা সে আন্মীয় দ্রেই হোক, আর নিকটই হোক। প্রাতা ভগ্নী বছ হ'তে পারে কিন্তু প্রাতা ভগ্নীর জক্ত অর্থবার বা পারিবারিক ঝঞাটের আশকা আছে। প্রাতা ভগ্নীর কোন গুপু ব্যাপার নিয়ে বিশ্বেবতঃ তাদের মধ্যে কারো দাম্পতা জীবনের ব্যাপারে কোনরকম কেলেমারী বা লোকসমাজে অপবাদ হওয়াও বিচিত্র নয়। মোটকখা প্রাতা ভগ্নী বা আন্মীয় খজনের দারা আপনার পারিবারিক খাছেন্দ্যের কম-বেশী বিশ্ব ঘটবে।

গৃহ ভূমি বা বাদস্থানের ব্যাপার নিরে কম-বেশী ঝঞ্চাট **অ'পনাকে**পোহাতে হবে এবং মধ্যে সংখ্য গৃহ-স্থাপর অভাব বিশেষভাবে **অকুভয়**করবেন। পারিবারিক স্থাপর সমস্ত উপকরণ বর্তমান **থাকলেও অনেক্**সময় আপনার পারিবারিক কাছেন্দ্যের অভাব ঘটবে।

আপনার বহু সন্তান হওরাই সম্ভব। সন্তানের ব্যাপারে ব্যরবাহন্য ঘটবে এবং সন্তানের কর্ম-জীবন বা সাফল্য সম্বন্ধে কম-বেশী চিন্তা উপস্থিত হ'তে পারে। কোন জামাতা বা পুত্রবধুর উচ্চস্থান থেকে পত্তর, রস্তপাত, জলভর প্রভৃতি তুর্ঘটনা ঘটার আশকা আছে। তা ছাড়া ভাদের জন্ম কোন রক্ম আশাভঙ্গ বা মনোক্ট হওরাও সম্ভব।

বিবাহ

বিবাহের ব্যাপারে আপনার কোনরকম আশাভঙ্গ বা অপবাদ হওরার আশকা আছে। আপনি দ্রীর (বা বামীর) সঘকে সম্পূর্ণ উদাসীন হ'রে উঠতে পারেন এবং মধ্যে মধ্যে তার সঙ্গে বিচ্ছিল হ'রে থাকাও অসম্ভব নর। আপনার দাম্পত্য-ব্যাপার সাধারণের সমালোচনার বিবর হ'তে পারে এবং পারিবারিক কারণে অথবা কর্মানুরক্তির ক্ষম্ভ আপনার দাম্পত্য হথের বিদ্র ঘটা সভব। যদি এমন কারো সক্ষে আপনার বিবাহ হয় যাঁর ক্ষমমাস ক্যৈতি, আখিন, অগ্রহারণ আবর্মা মাব, ক্ষমতিথি শুক্লপক্ষের প্রতিপদে অথবা কৃষ্ণপক্ষের আইনী, তাহ'লে থার সক্ষে আপনার সঙ্গে মনের মিল হবে বটে কিন্তু তৎসক্ষেত্র আবেষ্টনের চাপে অবেক সময় দাম্পত্য হথে বিদ্র ঘটবে।

বন্ধত্ব

বন্ধুছের ব্যাপারে আপনাকে ভাগ্যশালী বলা চলে না। আনেক লোকের সকে পরিচয় হবে, কিন্তু প্রকৃত বন্ধু পাবেন গুরু ক্ষাই। যদিই ভাগ্যক্রমে কোন বন্ধুলাভ হয়, অবস্থাগতিকে অল্পনির মধ্যেই তার কাছ খেকে বিচ্ছিন্ন হ'তে হবে। মোট কথা বন্ধুছের ব্যাপারে কম-বেশী আশাভক্ষের হুঃপ হচ্ছে আপনার অদুষ্টুলিপি। গাঁদের জন্মনাস জৈগ্র আধিন বা মাব কিথা যাঁদের জন্মতিথি শুক্রাগুতিপদ কি কৃষ্ণা অষ্ট্রমী তাঁদের সক্ষে আপনার ঘনিষ্ঠ বন্ধুছ হ'তে পারে—

আপনার অমুচর পরিচরের সংখ্যা অনেক হবে। তারা আপনার অমুগতও হবে এবং আপনার উপর তাদের একটা গ্রীতির আকর্ষণও শাকবে। কিন্তু তৎসত্বেও তাদের জন্ম আপনাকে কম-বেশী ঝঞ্লাট অশান্তি ও মনোকষ্ঠ ভোগ করতে হবে।

্ আপনার গুপ্ত শক্ত অনেক থাকবে। বিশেষতঃ ধণিক ও বণিক সম্প্রদায়ের মধ্যে এমন অনেক ব্যক্তি থাকবে যারা মূথে সৌজস্ত দেখালেও ভিতরে ভিতরে আপনার ক্ষতির চেষ্টা করবে। সে রকম লোকের ক্ষথার উপর নির্ভির করে কাজ করতে গেলে অনেক সময় আপনাকে বিপন্ন হ'তে হবে।

<u>সাস্থ্য</u>

বাব্যের দিকে আপনার বিশেষ লক্ষ্য রাথা উচিত। নৈশবে ও বাল্যে আপনাকে অনেকবার দেহকট ভোগ করতে হবে। আপনার দেহের মধ্যে পাকস্থলী, যকৃৎ, অন্ত এবং পায়ের নিয়াংশ এই সকল ব্যান্তলি দুর্বল, হতরাং কয় অলীর্ণ, আনাশয় অন্তক্ষত, অন্তবৃদ্ধি, পায়ের ধমনী ফীতি প্রভৃতি রোগ সম্বন্ধে সতর্কতা আবশুক। পথ্যের দিকে আপনার বিশেষ লক্ষ্য রাথা উচিত। আপনার দেহ চায় পৃষ্টিকর অর্থাচ লঘুপাক গাল্য। বেশী তাঁরু মশলাযুক্ত থাল্য আপনার বর্জন করাই ভাল। আপনার দেহে ভিটামিনের অভাবজনিত পীড়া এবং দ্বিত পরার্থ নিঃসরণ না হওয়ার জন্ম ব্যাধির আশকা আছে—হতরাং কক্ষ্য রাথবেন যে থাল্যে যেন যথেষ্ট ভিটামিন থাকে এবং জল মেম কম খাওয়া না হয়। কোন রক্ষম মাদকন্তব্য এবং তীক্ষ বিষ উষ্পাদি ব্যবহার না করাই ভাল। মুক্ত হাওয়ায় পনচারণা আপনার থাস্থ্যের পক্ষেক্রল। কিছু না কিছু শারীরিক পরিশ্রম এবং আহার বিহারে নিরমান্থ্বতিতা আপনার হথাস্থ্যের পক্ষে একান্ত প্রয়োজন।

অনুগুল ব্যাপার

আপনাকে মধ্যে মধ্যে ভ্ৰমণ করতে ধবে। কোন কোন সময় নিজের অনিচ্ছা সপ্তেও বাধ্য হ'য়ে দূর দেশে থেতে হবে, হয়ত নিজের ভাগা পরীক্ষার জস্ত, হয়তো বা কারো কোনও দায়িতপূর্ণ বা গোপনীয় কর্মের ভার নিয়ে। সে যাই হোক্ ভ্রমণ আপনাকে করতে হবেই। বিদেশে বা কোন্দূর দেশে কোন বিপজ্জনক কাজে আস্কনিয়োগ করার জস্ত আপনি খ্যাতি বা প্রতিষ্ঠা অর্জন করতে প্রেরন।

স্মরণীয় ঘটনা

আপানার ১২, ২৪, ৩৬, ৪৮ প্রভৃতি বর্ষপ্রলিতে নিজের বা কোন আত্মীয়ের সংশ্রবে কষ্টকর অভিজ্ঞতা হ'তে পারে। ৩, ৬, ১৫, ১৮, ২৭, ৩০, ৩৯, ৪১, ৫১, ৫৪ প্রভৃতি বর্গপ্রলিতে কোন উল্লেখযোগ্য শুভ ঘটনা ঘটা সম্ভব।

বৰ্ণ

আপনার প্রীতিপদ ও দৌভাগ্যবর্ধক বর্ণ হচ্ছে ধুসর, কমলা রঙ, মধুপিঙ্গল (Brown) প্রভৃতি। তা ছাড়া পালিশ করা ধাতুর চক্চকে রঙের মত সব রকম রঙ বিশেগ করে নিকেল, Platinum রূপা প্রভৃতির রঙ আপনার উপযোগী। দেহমনের অহস্থ অবস্থায় কিন্তু বেশুনে রঙ ব্যবহারে উপকার পাবেন।

ইত

আপনার ধারণের উপযোগী রত্ব গোমেদ, গোল্ড ষ্টোন (Gold stone) আসার (amber) প্রভৃতি।

যে সকল খ্যাতনামা ব্যক্তি এ রাশিতে জন্মেছেন ভাঁদের জনকরেকের নাম—থামী বিবেকানন্দ, নেতাজী স্থভাবচন্দ্র, আলেকজাণ্ডার দি এটে, সম্রাট দপ্তম এডোয়ার্ড, সম্রাট পঞ্চম জর্জ, ম্যানাম ব্রন্তিপি, হরনাথ ঠাকুর, প্রদিদ্ধ সিনেমা আভনেত্রী গ্রেটাগার্বো, প্রসিদ্ধ দিনেমা পরিচালক ভি ভবলিও গ্রিফিট, প্রসিদ্ধ লেথক ও সিনেমা পরিচালক শ্রীপ্রেমেন মিত্র, রাসবিহারী যোব, প্রসিদ্ধ ভাষাতথ্যিদ হরনাথ দে, প্রসিদ্ধ লেথক অক্যকুমার দত্ত।

আজি এই মায়ারাতি

শ্ৰীআশুতোৰ সান্যাল

আজি এই মায়ারাতি সকল হৃদয়
তীব্র মাদকের মত উতল উন্মাদ
করিছে আমার! তথু যেন মনে হয়
রূপের পশরা নিয়ে ধরিয়াছে ফাঁদ
অনন্ত লাবণ্যময়ী এ বিশ্ব প্রকৃতি
তিদিব অলিত পরি' জোছনা-মম্মর
নিভ্তে আমারে পেয়ে! কত মধুস্মতি,

কত গীতি, কত প্রীতি আজি এ অন্তর
করি' তোলে উখলিত বিধুর ব্যাকুল !
হে প্রকৃতি, হে স্থলরা, হে প্রেয়সী মোর,
চাঁদিনীর টিপ পরি, এলাইয়া চুল —
আমারে ভুলাতে কেন এ প্রয়াদ তোর ?
নিশি শেষে যাবে টুটে এ প্রেম-বন্ধন—
তাই ভেবে প্রাণ মোর করিছে কেন্দন!



প্ৰেরো

সভাটা বদল কিষাণ সমিতির অফিদের সামনে।

এত লোক হবে আশা করা যায়নি—নগেন ডাক্তারের যোগ্যতা আছে দেখা যাছে। কখনো সাইকেলে চড়ে আবার কখনো বা সাইকেলটাকে কাঁধে চাপিয়ে চষে বেড়িয়েছে গ্রামের পর গ্রাম। পালগ্রামের সাঁওতালেরা এসেছে, এসেছে কালা-পুখরীর ওঁরাওঁয়ের দল, আর এসেছে সাধারণ ক্ষক। তাদের ভেতরে বড় ক্ষাণ আছে, বর্গাদার। জোভদারেরা আসেনি—খবর দিলেও তারা আসত না।

নগেনই প্রস্তাব করল।

— আজকের এই সভায় সভাপতি হবেন কালা পু্থ্বীর স্বাতন মণ্ডল।

সনাতন হকচকিয়ে গেল। ছু হাত জোড় করে বললে, ডাক্তার ভাই, আহামি— ,

রঞ্জন বললে—আমি এই প্রস্তাব সমর্থন করি।

আপ্রয়ের আশায় হু চারবার এদিক ওদিক তাকালো স্নাতন: কিন্তু আমি—

আর কিছু তাকে বলতে দেওয়া হল না। তাকে হাত ধরে বেঞ্চিতে বসিয়ে দিলে নগেন। আনন্দিত করতালির ধানি উঠল চারদিকে।

- -কিবাণ সমিতি কি জয়-
- —हेन् किलाव किलावान—

এক হাজার মাহ্নের গলা থেকে প্রতিশৃতি ছড়ালো আকাশে। এক হাজার মাহ্ন্য। এক হাজার চওড়া বুক —হ হাজার লোহায় গড়া কঠিন পেনী। হ হাজার চোথে উজ্জ্বন্ধ প্রাণের অধি।

নগেন বললে, ভাই সব, অনেক দূর দূর থেকে আপনার।

শবাই এদেছেন। তাই আপনাদের সকলকে একটু তাড়া
তাড়িই ছেড়ে দিতে হবে—নইলে ফিরতে রাত হয়ে যাবে।

দিন কাল থারাপ, মাঠে আজকাল খুব সাপের উৎপাত

হচ্ছে। সেই জন্মে আমরা এথনি সভার কাজ আরম্ভ করব। আর আজকের সভার উদ্দেশ্য আপনাদের ভালো করে বুঝিয়ে বলবেন আমাদের রঞ্জনদা!

রঞ্জন উঠে দাঁড়াল। নিজেকে কেমন বিত্রত, কেমন অপরাধী বলে মনে হচ্ছে। বক্তৃতা দেবার অভ্যাস ভারা আছে, জেল থেকে বেরুবার পর কিছুদিন তাকে এখানে ওপানে বক্তৃতা দিয়ে বেড়াতেও হয়েছে। কিন্তু সে বক্তৃতা, পোবাকী, ভার রূপ সাজানো-গোছানো, আলংকারিক। পোবাকী, ভার রূপ সাজানো-গোছানো, আলংকারিক। পোবাকী, ভার রূপ হালার মান্ত্রের সঙ্গে তির্বক ব্যঙ্গের বিক্তাস, ভাষার অলহ্বরণে ধ্বনির কুহক-বিভার। কিন্তু এতো ভা নয়। হাজার মান্ত্রের চোথ তীক্ষ উজ্জ্বল প্রা নিয়ে তার দিকে তাকিয়ে আছে। স্পষ্ট উত্তর চায় ভারা—চায় জীবন-মরণ সমস্থার অকুণ্ঠ সমালোচনা। এখানে রাজনীতির বাসন নয়, কথার কারু-শিল্প নয়- যুগরুত্রের ছিন্ন জ্বটা থেকে ক্রোধ্রন্দী পুরুষের আথায়ে আবির্ভাব ঘটেছে তাদের মধ্যে: হয় পথ দেখাও, নইলে পথ থেকে সরে যাও। জন-জগন্নাথের রথযাতা শুকু হয়ে গেছে— দড়ি যদি টানতে না পারো, গুঁড়িয়ে যেতে হবে রথের ভলায়।

অন্ধিকারী। অন্ধিকারী বই কি। এদের মন তার
নয় —দে মন আয়ত্ত করে নিতে হচ্ছে। কিছু দে কি
সহজ কাজ ? কত সংশয়—কত সংস্কার। মানসিক আভিজাত্য—ব্যক্তিস্বাতন্ত্রের অহমিকা পথ জুড়ে দাঁড়িয়ে আছে
পর্বত প্রাকারের মতো। শ্রেণীচ্যুতি! এক নিঃশ্বাদে বলবার
মতো সহজ কথা, কিছু প্রয়োগ ক্ষেত্রে ? বংশক্রমের অলক্ষ্য
শৃদ্ধল চিন্তাকে সরীক্ষপ গ্রন্থিলতার জড়িয়ে রাথে, শৃন্তানির্ভর
সংস্কৃতির অহন্ধার দিধার পরে দিধা আনে। তব্—

তব্ চেষ্টা করতেই হবে। যতটা পারি — যতথানি-সম্ভব। চেষ্টায় ফাঁক না থাকে, ফাঁকি না থাকে আন্তঃ-রিকতায়। আগামী দিনের ইতিহাসের কাছে আমাদের অপক্ষে এই তো দলিল।

दक्षन वनरन जाननात्रा भवारे कारनन, नहीत वक्रांब

কালা পূথ্রি অঞ্লের হাজার হাজার বিঘে ধানী জমি
প্রতি বছর কী ভাবে বরবাদ হয়ে যায়। আর জমিদারের
কিছু জলকর বাঁচাবার জন্তে নষ্ট হয় হাজার লোকের মুখের
গ্রাস। তাই এবার বর্ধা নামবার আগেই বাঁধ দেওয়া হবে
কালা পূথরির দাঁড়ায়। কিন্তু তাতে জমিদারের বাধা।
এই বাধা সয়ে এমন করে কিছুতেই আপনারা ময়তে
পারেন না। এবার ক্রথে দাঁড়াতে হবে আপনাদের—
সকলে হাতে হাত মিলিয়ে বাঁধ বাঁধতে হবে। হয়তো
কমিদারের লাঠিয়াল আসবে—পুলিসও আসতে পারে।
কিছু সেই জন্তে আপনারা পিছিয়ে য়াবেন কিনা সে
বিচারের ভার আপনাদেরই ওপর।

- ে '—জান কবুল—উগ্র চীৎকার উঠল একটা।
- —হামার অ্যাক্টা কথা বলিবার আছে—একজন দাঁডিয়ে উঠল।
- —বিদ বাও হে বিদ বাও। তুমি আবার খামাথা ঝামেলা লাগাইলেন ক্যানে হে?—

কয়েকজন তাড়া দিলে।

সভাটার ওপরে একখানা হাত বাড়িয়ে দিলে রঞ্জন।

—না, না, চুপ করুন আপনারা। সকলের কথাই ভনতে হবে আপনাদের। বলুন, কী বলবেন আপনি ?

যে দাঁড়িয়েছিল, সে একজন মাঝ বয়সী কৃষাণ। এক সমরে অতিকায় একটা কাঠামো ছিল, হয় তো অমাছযিক শক্তিও ছিল গায়ে। কিছু অর্ধাহারে আর ঋণের বোঝায় পিঠ কুঁজো হয়ে গেছে, চাপা চওড়া কপালের তলায় চোথ ছটো গভীর গর্ভের আড়ালে গিয়ে লুকিয়েছে। একটা শক্তি অনিশ্চয় দৃষ্টি চারদিকে বুলিরে নিয়ে বললে, হামি কহিতেছিছ, কালা-পুখ্রিতে ঝামেলা হছে তো হছে। সেইটা লিয়া ওইখানকার মানসিলাই (মাহ্যব-গুলোই) লড়িবে। হামরা ক্যানে ঝুটমুট ওইঠে যাই ক্যাচাঙ্ডে পড়িমু।

- —ইটা একদম বাজে কথা হছে—একজন প্রতিবাদ করণ তীত্র গলার।
- —না, বাব্দে কথা নয় রঞ্জন আবার হাত বাড়িয়ে
 দিলে সভার দিকে: এরকম কথা আপনাদের সকলেরই
 মনে উঠতে পারে, আর তা ওঠাও উচিত। সত্যিই ভো,
 ক্ষাক্ষের ক্ষান্তে কেন আপনারা লড়তে যাবেন? কেন

আপনারা পড়তে যাবেন অমিদারের কোপে ? বিশেষ করে य काला-भूथ तिएक जाननारमत काराना जार्थ है तहे? ঠিক কথা। সোজাস্থলি ভাবতে গেলে এমনিই মনে হওয়া উচিত। কিন্তু ভাই সব, আজ দিন বদলে গেছে। আজ ছনিয়ার সব ছ: খী মাহুষকে পাশাপাশি দাঁড়াতে হবে নিজেদের পাওনা-গণ্ডা বুঝে নেবার জন্মে। যতদিন আপনারা ফারাক হয়ে ছিলেন, ততদিন আপনাদের কেতের कप्रल लुटि निरम्बाह स्मिमात, यत वाड़ि शांक-शन नीनारम जुलाइ महाकत। आंक य यथारन चाहिन यहि এक काही राय माजान छ। राम प्रथातन कृषितनहे मत कृत्रवाकी वक হয়ে গেছে। রামের স্বার্থ রাথবার জক্তে যদি রহিম দাঁড়ায়, व्यानित्क वैक्तिवात अध्य यनि वह क्रूटि यात्र-का रूल नवारे বুঝতে পারবে তামাম পৃথিবীর ভূথা মাহুষেরা আজ এক-দলে। কেউ আর তাদের ঘাঁটাতে সাহস করবে না। আজ আপনারা যদি কালা-পুথরিতে বাঁধ দেবার জন্মে এগিয়ে যান, তা হলে কাল জয়গড়ে আপনাদের ফদল বাঁচাবার জন্তে যে কালা পুথরির মাত্রগুলোই ছুটে আসবে এ কথা কেন আপনারা বুঝতে পারছেন না?

- -- व्यानवर ! वृश्वि हामता। .
- কালা পুথ্রির মান্সিলার সাথ্ হামরা একদল।
- এक काहा इहे शमात्मत्र वैध शक्षिता दृदत !
- —কিষাণ সমিতি জিলাবাদ !

রঞ্জন সভার দিকে তাকালো। হাজার মাহ্য নয়—
ক্রোধ-সমূদ্র। তরঙ্গের পর তরজ তুলে আসছে। ভেঙে
দেবে—গুড় ড়িয়ে দেবে, ধ্বসিয়ে দেবে বালির বনিয়াদে গড়া
শিষ্-মহলের স্থাকে। সেই তরজের মুখে সে নিজেও
টিকে থাকতে পারবে তো? দাঁড়িয়ে থাকতে পারবে তো
তার মানসিক আভিজাত্যের খুটিতে? এই তরজের মুখে
সেও কি এগিয়ে ষেতে পারবে না, নিশ্চিক হয়ে নাবে
ক্রোধ-বল্যার এই বিপুল উৎক্ষেপে?

সংশর-শব্ধিত মন যেন শুক হরে দাঁড়ালো আচমকা থমকে দাঁড়ালো হুৎস্পানন। রক্ত নাড়ীতে গুর, গুর, করে ঝোড়ো মেঘের ডাক। ভারপর—তারপর ?

নগেন বললে, এতেই হবে রঞ্জনদা। এবার ভূ^{নি} বোদো, বাকাটা আমি শেষ করে দিই। ব্যব্যাড়ে নবেন ডাক্তারের খরে বসৈছিল তিন্তন।

বাইরে জ্যোৎশা উঠেছে—ওরা রাত। মহুরা বনের পাতার পাতার রগণি জরির মতো ঝকমক করছে জ্যোৎশা—দোলা থেরে বাচ্ছে হাওরার হাওরার। টাকন নদীর জ্লাটা যেন শাদা হরে আছে একরাশ হথের মতো। একটা দোড়ার ওপর বসে সেদিকে তাকিরে অক্তমনত্ব হরেছিল উত্তমা। রঞ্জনের বেশ লাগছিল ভামালী স্বাস্থ্যবতী মেরেটির এই তন্মরতাটুকু। মাটি কোপার, পোষ্টার লেখে, মেরেদের জড়ো করে আনে, পুরুবের মতো উঁচু গলার টেচিরে হেসে ওঠে। মন্দাকোন্তা ছন্দ নর, ভুরুত্ব-প্রয়াতের ললিভবিন্তার নর—অহুন্থ,পের মতো কঠিন ঋছুতা। তবুছন্দ ছন্দই। তারও রেশ আছে, তারও ব্যঞ্জনা আছে, তারও কথার কথার হরিণীপুতার ঝলার বেক্তে ওঠে। এই মৃহুর্তে জাত্মময় উত্তমাকে দেখে এই কথাই রঞ্জনের মনে দোলা দিয়ে বাচ্ছিল, ঝল্কে উঠছিল বাইরের ঝলক-লাগা মহুরা পাতার মতো।

কিছ গভমর নগেন এক টিপ নস্ত টানল।

- -- मिणिः है। किन श्रेव जाता रुखि बक्षन मा।
- —চমৎকার। এত ভালো হবে আশা করিনি।
- —ভোষার কী মনে হয় ? ওই বাঁধটাকে নিয়েই একটা কোরদার লড়াই আমরা গড়ে তুলতে পারব ?— উৎস্থক বিজ্ঞাস্থভাবে নগেন রঞ্জনের দিকে তাকালো, চোথ তুটো চক্চক করে উঠল তার।

- छारे छा मत्न राष्ट् ।

আবার এক টিপ নক্ত নিরে বেশ শব্দ করে টানল নগেন।

— জানো রঞ্জনদা, এই জামাদের প্রথম শক্তিপরীকা।

গ্রহদিন ধরে বে সব কথা আমরা ওদের ব্কিরেছি, বে

গাবে ওদের চালাতে চেরেছি, তা কভটা সকল হবে,

গরই ওপরে তার বাচাই। বদি লড়াই জিততে পারি

— জেনে রেখা এ তলাটে কাউকে আর দাঁত কোটাতে

হবে না। আর বদি হারি, তাতেও দমবার কিছু নেই।

এক পা পিছু হটে গেলে পালটা দশ পা এগিরে বাবার
থোর আমরা পাব। কী বলিস উক্তমা ?

বোর বাল চোপ নেলে উত্তমা একবার কিরে ভাকালো। কথা বললে না, ভগু মাধা নেভে নিজের সমর্থনটা জানিরে দিলে। তার মন এথানে নয়—আরো কিছু সে তাবছে, আবিষ্ট হয়ে গেছে মহরা বন আর টাকন নদীর দিকে তাকিরে। অহুষ্টুপের ক্রন্ত-দীপ্তির ওপর মন্দাক্রাস্তার মেব নেমেছে কোথাও।

রঞ্জন বললে, কিন্ত একটা খবর শুনেছ তো ? পালনগরের শান্ত কিন্ত মুস্লিম-লীগ গড়বার অন্তে উঠে
পড়ে লেগেছেন। মুসলমানদের সরিয়ে নেবেন ভোষাদের
আন্দোলন থেকে।

— মুসলিম-সীগ গড়তে চান গছুন। বুসলমানের বার্থের কথাও তিনি ভাবুন। কিন্তু সকলের ভার্থ নিয়েই বেখানে লড়াই, সেখানে কতদিন তিনি মুসলমানকে আলাদা করে সরিয়ে রাখতে পারবেন? সাচচা ইমান বার আছে, আল হোক কাল হোক ছুটে সে আসবেই। তার প্রমাণ আলিম্দিন মাস্টার। সেদিন সভার কী কাও হরে গেছে শোনোনি বুঝি?

— শুনেছি। আলিমুদ্দিন খাঁটি লোক—সভ্যিকারের আজাদ পাকিন্তানের কথাই ভিনি ভেবেছেন। তাই সেদিনের সভার ভিনি শাহর মুখোস খুলে কেলেছেন। তা নিরে খুব গগুগোলও চলছে। কিন্তু সেইজন্তে ভূমি একথা মনে কোরোনা যে ভিনি ভোমারই দলে এগিরে আসবেন। ভিনি সোন্তালিজনে বিশ্বাস করেন—এ আমার কখনো মনে হয় না।

— কী করে জানলে । — তর্ক করার উৎসাহে নগেন উদীপ্ত হরে উঠন: দেশের দাছ্যকে যিনি ভালোবাসেন; তাদের মকন যিনি করতে চান, তিনি একদিন না একদিন আমাদের সবল এক লক্ষ্যে এসে মিলবেনই। হয়তো সেদিন আমাদের সকলের আগেই তাঁকে আমরা দেখতে পাবো।

—বেশ তো, আশা করতে থাকো—রঞ্জন টিগ্গনি কটিল।

নগেন উত্তেজনার সঙ্গে কী বলতে যাছিল, এমন সমন্ন বাইরে থেকে ভারী গলার ডাক এল: উত্তমা!—উত্তমা ভার নগেন একই সঙ্গে চমকে উঠল। মোড়া ছেড়ে দীড়িরে উঠল উত্তমা।

—নগেন নেই বাঞ্চিতে ?—আবার ভাক শোনা গেল।
—আবার সেই আভিদার।—বিজ

কিন্ করে বলেই নগেন সাড়া দিলে: আছি জ্যাঠামশাই, আহ্নন এ বরে।

একটা চটির শব্দ উঠে আদতে লাগল বরের দিকে। নগেন আবার চাপা গলায় বললে, সাংঘাতিক লোক। বুঝে-সুঝে কথা কোরো রঞ্জনদা।

রঞ্জন হাসল—কবাব দিলে না। বুঝে-ছুঝে কথা!
আর বাই হোক, ও জিনিসটার জন্তে তার ভাবনা নেই।
দিনের পর দিন কুমার ভৈরবনারায়ণকে তার সঙ্গ দান
করতে হয়। পড়ে শোনাতে হয় গীতার নিকাম কর্মবোগ
—বিশ্বরূপকে এনে প্রতিষ্ঠা করতে হয় কুমার বাহাত্রের
নেশার রং-লাগা চোথের সামনে; মৃঢ় রিদকতায় হাসবার
চেষ্টা করতে হয়—হাসতেও হয় কথনো কথনো। আর
কিছু না হোক, কথা বলবার আটটাকে অন্তত তার জানতে
হরেছে।

চটির শব্দ চৌকাঠের গোড়ায় এসে পৌছুল।
ক্যোৎনার পরিভার দেখা গেল মান্ত্রটিকে। মাথায় চক
চকে টাক, গায়ে বেনিয়ান। হাতে একথানা মোটা
ছড়ি। মুখে কাঁচাপাকা দাড়ি—আচমকা দেখলে শ্রদ্ধা
উত্তেক করবার মতো প্রোচ্ছ।

—আহ্বন জাঠা, আহ্বন—নগেন ডাকন।

ভত্তলোক ঘরে পা দিলেন। লঠনের আলোর অভ্ত দৃষ্টিতে তাকালেন রঞ্জনের দিকে।

নগেন একলে, ইনি আমাদের রঞ্জনদা—রঞ্জন চট্টোপাধাায়। আর ইনি আমাদের জাঠামশাই মৃত্যুঞ্জর সরকার। এঁর কথা তো তোমায় আগেই বলেছি।

নমস্বার বিনিমরের ভক্ততাটা শেষ হল। উদ্ভয়া শাঁজিরে উঠেছিল, তার পরিত্যক্ত মোড়াটার এদে স্থাসন নিলেন মৃত্যঞ্জর। বেশ জাঁকিয়েই বসলেন।

কৈন্দিয়ৎ দেবার ভবিতে একবার মৃত্যুঞ্জর নগেনের দিকে তাকালেন: এই পথ দিরেই যাচ্ছিলাম, ভালমন্দ ভোদের একবার থবর করে যাই। তোর মা কোথার ?

জবাব দিলে উত্তমা: হরিসভার গেছেন—কীর্তন শুনতে।

—আৰু হরিসভার কীর্তন আছে বৃঝি ? ওহাে, মনেই তাে ছিল না।—মৃত্যুঞ্জয় বেন অহতেও হরে উঠলেন : বা দিনকাল পড়েছে—কিছু কি আর মনে থাকে। সংস্কারের চিস্তাতেই অন্থ্য — ধর্ম কর্ম মাধার উঠে গেছে। কী বলেন ? — শেষ কথাটা ভিনি রঞ্জনের দিকে নিকেপ করলেন।

—তা বটে—রঞ্জন মাথা নেড়ে সার দিলে।

আপনাকে আমি চিনি। হিজনবনের রাজবাড়িতে আপনি থাকেন—তাই না ?—মৃত্যুঞ্জর একটা কুর দৃষ্টি কেললেন।

মূহুর্তের অস্তে রঞ্জনের মূথে একটা অস্বতির ছায়া ত্লে গেল: আজে ইয়া।

- —ও। মৃত্যুঞ্জর কিছুক্ষণ চুপ করে রইলেন, মনে মনে যেন মিলিয়ে নিতে চাইলেন কিছু একটার যোগফল: ভালো কথা নগেন, আৰু বুঝি ভোদের কিষাণ সমিভির একটা সভা ছিল, না ?
- —ছিল যে সে তো আপনি ভালোই জানেন জাঠা-মশাই—নগেন একটা ধারালো মস্তব্য ছুঁড়ল।
- —ওহো, তাও তোবটে। বুড়ো বয়েসে আজকান সব কিছু ভূন হতে স্থক করেছে। তা কী হন সেই মিটিঙে ?
- —দেশের লোকের দাবী-দাওয়া নিয়ে আলোচনা— নগেন অবাব দিলে।
- —সেই কালা-পূখ্রির ব্যাপারটা বৃঝি ?—মৃত্যুঞ্জ আড়চোধে রঞ্জনকে লক্ষ্য করতে লাগলেন।

হঠাৎ উদ্ভমা হেদে উঠন। এতক্ষণ ধরে বেন বাঁধা পড়ে ছিল একটা ঝর্ণার জল—মুক্তির উচ্ছল আনন্দে ছুটে বেরিরে এল হঠাৎ।

— কিছু ভেবোনা দাল। সৰ ধ্বরই রাধ্বেন জাঠা-মশাই—তোমার চাইতে ভালোই রাধ্বেন।

চাপ দাড়ির ভেতরে মৃত্যুঞ্জরের মুধ দেখা গেল না, চোধের দৃষ্টিতে কুটলনা বিন্দুমাত্র বৈলক্ষণা। থোঁচাটা ভাঁকে যেন স্পর্লপ্ত করেনি—এ সবের অনেক উধের্ব তাঁত আসন।

—খবর ঠিক রাখা নয়—এগুলো হাওয়াতেই তেনে আনে কিনা।—দাড়ির নেপথ্যে মৃত্যুঞ্জের মুখ একট্র প্রদারিত হল, খুব সম্ভব হাদলেন: তা ভালোই। ওলের ত্বংখ অনেক দিনকার—মেটাতে পারো তো একটা শুর বড় কাজই হবে। কিছু নগেন, কিছু মনে না করে। তা একটা কথা বলি।

-- वन्न मा।

—বা করছ ভালোই করছ। কিন্তু দেখো, হিংসার পথ কথনো নিয়োনা। ওতে কথনো কল্যাণ নেই। মহাত্মার পথ নাও, অহিংসা দিয়ে সংখ্যাম করে।

নগেন একটু হাসল: আপনি কোনো চিস্তা করবেন না জ্যাঠামশাই। 'অহিংসা পরমো ধর্ম' তা আমরা জানি। আমাদের ব্যাপারটা নিছক নিরামিয—ওতে কোনো রক্তারক্তির গন্ধ নেই।

উদ্ভমা আবার থিল খিল করে হেসে উঠন। খন্তের শাস্ত আবহাওয়ার মধ্যে তার আক্ষিক হাসিটা লিক গিক করে গেল এক গোছা চাবুকের মতো।

—জানেন রশ্বনদা, জ্যাঠামশাই ভারী অহিংস। উনি ভবু মাছ মাংস খাননা তাই নর, ভূলেও কোনোদিন একটা ছারপোকা পর্যন্ত মারেন না।

আশ্চর্ব সংবম মৃত্যঞ্জারের। এ আবাতও তাঁকে স্পর্শ করল না।

ধীর শাস্ত গলায় বললেন, হাঁ, অহিংসার সেবক।
আগনারা ইরংম্যান রঞ্জনবাব্, এখনো রক্তের জোর
আছে। কিন্তু জানবেন, আছার শক্তিতে বা হয়, হাজার
বাহুবলেও তা হয় না। আর তার সবচেয়ে বড় নজীর
গান্ধীনী। সারা ছনিয়া সে কথা খীকার করে।

হাতের লাঠিটা কুড়িরে নিরে মৃত্যুপ্তর উঠে পড়লেন।

- —চললেন ? নগেন জানতে চাইল।
- —হাঁ, উঠি। একবার হরিসভার দিকেই বাই।
 সারাদিন তো বিষয়ের চিস্তাতেই মন বিক্লিপ্ত পাকে,
 ওপানে গিরে তব্ একটু শাস্তি পাব। চলি তা হলে
 রঞ্জনবাব্, নমস্কার। আপনার সঙ্গে আলাপ হয়ে ভারী
 খুসি হলাম—আবার দেখা হবে।

মৃত্যুক্তম বিদায় নিলেন। কিছুক্তণ ধরে তিনকনেই কান পেতে শুনতে লাগল তাঁর বিলীয়মান চটির শব্দ।

- थ्र जमात्रिक लाक !- तक्षनहे खब्छा छाडन।
- —হাঁ, অত্যস্ত।—নিচের ঠোটটা একবার **কামড়াল** নগেন।
- ওঁর ওপর তোমাদের মিথ্যে সন্দেহ। অত্যন্ত নিবীহ মাছয়—বিনয়ে একেবারে পুটরে আছেন—রঞ্জন আবার বললে।
- —সাপও মাটিতে বৃটিয়েই থাকে রঞ্জন-দা, ক্ষেক ছোবল দেবার স্থবিধের জক্তে।—উভযা আবার হাসল। কিন্তু উদ্দল তীক্ষ কঠে নব। ছোরার থারের মতো। একটা প্রথর হাসির রেখা বরে গেল ভার ঠোঁটের কোণার কোণার।

(ক্রমণঃ)

রায়-গুণাকর

শ্রীঅপূর্ববকৃষ্ণ ভট্টাচার্য্য

নত শিরে চিন্ত অর্থা বুগ হতে বুগান্তর দের তব জন্মণীঠ স্থানে. এ বলের ইভিহাসে রেখে পেছ বর্ণ লেখা, অনস্তের পারে পেছ তুমি ; ভারতীর বরপুত্র ! ভোষারে প্রণাম করি হে ভারত ! শ্বৃতি অমুঠানে, সাতির জীবনতীর্থ তোমার জনমক্ষেত্র সার্বত সাধনার ভূমি। अन्दान कारन कारन बारमा जना स्मरन बारक अन्नमानकन स्नर्भ नदन দাওন দিনের স্মৃতি পুশিমার অভিসার প্রশরের প্রাথমিক ছবি ; वालाक वर्दत्र शर्ब व बारमाक व बामम कूटि अर्ठ निजावस रहत, Fত দিন কত বৰ্ষ চলে গেছে; এনেছিলে সেই আলো সে আনন্দ কৰি! াণীর বন্দিরে তব শাবত প্রতিষ্ঠা দেবী তীর্থবাত্রী-চিত্ত কোকনদে 'নতানৰ দিবসের পলে পলে ক্সর্ভিত ত্তৰ গানে পরম হব্দর। গলছারে উপমার অভুপ্রানে ব্যঞ্জনার রসোত্তীর্ণ ভাবের সম্পদে নখিল জনের মৌন মহাকাব্য রচিরাছ রাজকবি রার-গুণাকর। ুমি ছিলে রসার্থৰ, ছম্মের ভরজতৰ বহারেছ মর্ম উপকূলে, শংসারের সাহারায় ভোষারি বে রসধারা নবপ্রাণ দিল পাছলনে। 'বচিত্ৰ আনক বন্ত সালায়েছ হিংসা ভীত্ৰ সভাতার পাৰপল বুলে দেশের মাটরে সোধা করে পেছ মার্শমণি, সেই কথা পড়ে যোর দলে। শঠতার রাজপর্যে বিজ্ঞপের রদালাপ করে গেছ—নছে নিশ্বনীয়, व वीज कतिया छेख हत्त त्यह खगाकद महीक्टर वार्च छावीकाता। अमिहिल गाए करत गातवड कनवना , कीर्डि उव हिन्न कीर्डनीय, ৰবৰুণ সাহিত্যের পৰিত্র প্রভাঙী আলো দিয়ে গেলে দিকচক্রবালে। ভারতীর একতারা করে গেছ কাবাবীণা, ফরে ফরে ফুটারেছ বাণী, মুগক মন্দিরা ধানি বীণার কছারে মিশি সম্মোহিত করেছে বদেশ। व रिल्लाल महाक्रण काला कल्लाल काला छात्र छत लोग हिन्सारि मिथातक विश्वमात्व, रहित्र योश कुरम यात्र बुगवाजी हुःथ रेमछ क्रिन। একদা দিপন্তভলে ভোষারে পালন করে হর্মভরে রচিরা সংসার বর্ণ সুপররাত্তি শরতের বসন্তের সন্ধা উবা মুহর্ত মন্থর। জীবন প্ৰভাতে ভৰ ৰূপে বনে সামারেছে বপ্নালোকে কুব্যা সন্তার ব্দরণ্যের ধূলি পথ, বটবিব আত্রবীথি, ভূণাতীর্ণ বিজন প্রান্তর। তোমার বারতা ভারা আঞ্জিও বহুন করে, কথা গাঁথে মনোনীলিয়ার, কাঁটার বাবার বারা রঙীন গোলাপ হরে জেগে ওঠে, তাহাদের কানে. ত্তনার নিভূতে কৰি তোষার অমুভকাবা চল্রালোকে মুনুমন বায়, বেধার অতীত ভূমি ; সরণ-দীপালী ভব অলে প্রদা-ছমি-বঙ্গঞাবে :



বিভেক্ত সাহিত্য সক্ষেপন-

খাধীন দেশে ন্তন করিয়া খার্গত বিজেজনাল রায় মহাশরের সাহিত্যের আলোচনা আরম্ভ হইয়াছে দেখিরা আমরা আনন্দিত হইলাম। সম্প্রতি তাঁহার জন্মভূমি কৃষ্ণ-নগরে স্থানীয় ক্লেজের অধ্যক্ষের স্থাপতিকে এক বিজেজ-

· - 45. 34 mg The time of the top the time

বিজেপ্রকাশ বার

নাহিত্য সংক্রণন অহাটিত হইরাছিল। তথার কবির কলা শ্রীমতী মায়া দেবী ও প্রাতৃশূত্র শ্রীমের্যমলাল সায় মহালয় উপ্লব্ধিত ছিলেন। গত ২>শে ভাত্ত কবিকাতা কানীবাটে কেশবন্ধ বালিকা কলেজ ভবসেও এক বিজেজ-নাহিত্য সংখ্যান হইরাছিল। ডক্টর প্রশ্নাধানাদ মুখোপাখার সভার উবোধন করেন ও প্রিকেন্দ্রেপ্রসাদ বোষ সংখ্যানে সভাপতিত্ব করেন। সিঁথি বিশিন-বনমালী সাধারণ পাঠাগারের উভোগেও নিথিল ভারত দিতেক্র সাহিত্য সংখ্যান অফ্টিত হয়। এই সংখ্যানের উরোধন করেন সাংবাদিক প্রতিষ্ঠান

প্রসাদ ঘোষ। ভারতের বছ বিশিষ্ট ব্যক্তি
এই সম্মেলনের সামল্য কামনা করিরা বানী
পাঠাইরাছেন। বিভেন্ত্রলালমাম্বর ভৈরারীর
জন্ম সাহিত্য স্পষ্ট করিরাছিলেন—আজ্
বাংলার প্রকৃত মাম্বরের অভাবই সর্বাপেকা
অন্তির। এ সমরে লোক বিজেন্ত্র-সাহিত্য
পাঠ ও আলোচনা করিলে সভাই উপকৃত
হবৈ। সে দিক দিয়া এই সকল
সম্মিলনের প্ররোজনীরতা অত্যক্ত অধিক।
আমরা এই সকল অফ্টানের উল্যোজাদিগকে অভিনন্ধন জ্ঞাপন করি।

নিখিল ভারত কংপ্রেস কমিটী—

পশ্চিম বন্ধ প্রান্থেশিক কংগ্রেস কমিটা হইতে গত ১১ই সেপ্টেম্বর ২৭ এন সদত্ত নির্থিল ভারত কংগ্রেস কমিটার সদত্ত নির্থাচিত হইয়াছেন—মোট ২১২ জন নির্থাচিত সদত্তের মধ্যে ২০৩ জন ভোট দিয়াছিলেন। ৪৮ জন প্রার্থী ছিলেন—

হইরাছেন—জীত্ত্ন্য বোব, জীবিজর ি ব নাহার, ভাক্তার প্রস্কৃতক্র বো

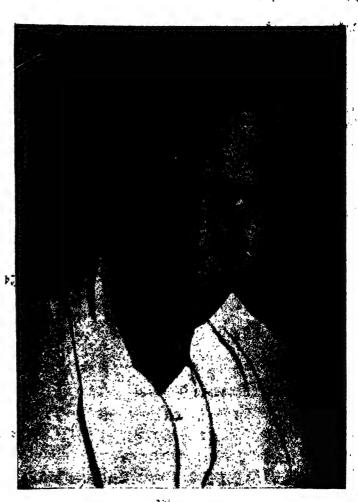
শ্রীপ্রক্রেমোহন ু বোষ, শ্রীপ্রক্রচক্র সেন, শ্রাবছন সভার, শ্রীনরেজ্রনাথ সেন, শ্রীকালীপর মুখোপাধ্যা ন শ্রীনিক্রাবিহারী মাইডি, শ্রীক্রীনক্রার বন্দ্যোপাধ্যা ন শ্রীকর্মার মুখোপাধ্যার, শ্রীচারক্রম ভাঙারী, শ্রীগোণিক সিংহ, শ্রী ছারক্ষ দাস বন্দোপাধ্যার, শ্রীছ্র্গাপদ সিংহ, শ্রীরেজ্ঞনাথ চট্টোপাধ্যার, শ্রীপ্রক্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যার, শ্রীবিপিনবিহারী পালুলী, শ্রীশশধর কর, শ্রীগ্রদয়ভূষণ চক্রবর্ত্তী শ্রীচারুচক্র মহান্তি, শ্রীবসভাগাল মুর্বীরকা, শ্রীলালবিহারি সিং, শ্রীভক্তচক্র রায়, শ্রীক্ষকিরচক্র রায়, ডাক্তার স্থ্রেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যার ও শ্রীক্ষবোধ মিশ্র। ইহাদের মধ্যে ওজন—

কালাপদবাব, প্রস্থান সেন ও নিক্রবাব্
বর্তমানে পশ্চিম বজের মন্ত্রী। প্রস্থার
বোর মহাশর কংগ্রেস ওরাকিং কমিটার
সমস্ত এবং ডাক্তার স্থারেশচক্র ও স্থারেলমোহন বোর পূর্বে বলীর প্রাদেশিক
কংগ্রেস কমিটার সভাপতি ছিলেন।
এখনও বলীয় প্রাদেশিক কংগ্রেস
কমিটার ১০ জন সমস্ত নির্বাচিত ইন
নাই—ভাহাদের নির্বাচনের পর নিথিল
ভারত কংগ্রেস কমিটার আর একজন
সমস্ত নির্বাচিত ক্টাকেন।

শরংচল্লের জন্মবার্ষিকী-

গত ৩০শে ও ০০শৈ ভাক্ত বাংলার
নানাহানে অপরাজের কথাশিরী শরৎচক্র
চটোপাথারের ৭০তম জন্মতিথি উপলক্ষে
তাঁহার সাহিত্যের আলোচনা-সভা
হইরাছিল। ০০শে এক সভার ভক্তর
শীভাষাপ্রসাদ মুখোপাথার সভাপতিছ
করেন ও রাষ্ট্রপাল ভক্তর কাটছ্ তাঁহার
উরোধন করেন। ভক্তর, কাটছ্ তাঁহার
ভাগণে বলেন—"শরৎচক্রের লেখা গুলির
নথ্য দিরা ভিনি বাংলার প্রাম ও ভাহার—
সর্প-প্রাণ অধিবাসীদের অরপ প্রত্যক্ষ
করেন। তিনি শরৎচক্রের সমস্ত রচনা
শীভিরাছেন—ভিনি বে সকল চরিত্র অহন

করিয়াছেন, সেওলি ভাঁহাকে মুগ্ধ-করিয়াছে, কেননা চরিত্র ওলি কাল্পনিক নহে, সেওলি প্রাণবন্ধ। : ক্রিনি নারার গিলাও বৃদ্ধি করিয়া পিরাছেন।" শ্বং সাহিত্যের বালোচনার ক্লে বেশের লোকের বাহুবের প্রতি করদ বৃদ্ধি পাইবে বলিয়া আদরা মনে করি। শরৎচক্রের বর্গী ক্রের মাহ্য মাত্রেরই ছু:খ, অমর্থাছা ও নির্থাতনে গলিয়া বাইজ, তাই তিনি লেখনী ছারা সেই সকল ছু:খ ও নির্থাতনের কাহিনী প্রকাশ করিয়াছিলেন। প্রকাশ করিয়াছিলেন, বিশেষ করিয়া বালালার নারী হল্মের জ্যোপন কাহিনী, বা বলা ব্যথারইভিহাস। উাহার চিত্রিত চরিত্রগুলি পাঠক সাধা-



नवर्डें इस्डाशाशाव

রণের সকলের নিকট স্থারিচিত—সেই জন্তই শরৎ বাহিছ্য এ দেশে এত অধিক জনপ্রির বইরাছে। শরৎসাহিছ্য আলো-চনা করিরা দেশের মাহ্য বর্তমান তুর্গতি বইতে মুক্তির ক্রান্ রাভ ক্রক-ক্রেই এই সকল সভাহতান করা সাধিব প্রচিত্তি

বহুণীয় প্রাচেদশিক কাল্পেন কমিটী—

গত ১২ই সেপ্টেম্ম কলিকাতার বকীর প্রাদেশিক কংগ্রেস ক্ষিটার নবনির্বাচিত সন্ত্রগণের প্রথম সভা হইরা গিরাছে। এ পর্যান্ত ২১২ জন সদস্ত নির্বাচিত হইরা-ছেন—ভন্নধ্যে ১৯২ জন সভার উপস্থিত ছিলেন। ক্ষিটার পূর্ব সভাপতি শ্রীস্থরেজ্রমোহন ঘোষ জন্মপন্থিত থাকার সহ-সভাপতি শ্রীবিপিনবিহারী গাঙ্গুলা সভার সভাপতিছ করেন। সর্বন্দ্রভিক্রমে শ্রীজতুল্য ঘোষ ক্ষিটার নৃতন সভাপতি ও শ্রীবিজ্বর সিং নাহার সম্পাদক নির্বাচিত হইরাছেন। শ্রীপ্রজ্বনাথ বন্দ্যোপাধ্যার, শ্রীশশধর কর ও



পশ্চিমবঙ্গের কংগ্রেস-সভাপতি শ্রীঅতুক্য ঘোষ

শ্রীনরেক্তনাথ সেন ওজন সহ-সভাপতি এবং জনাব আবহুল সভার, শ্রীবিখনাথ মুখোপাধ্যায় ও শ্রীপ্রবীর জানা—ওজন সহ-সম্পাদক নির্বাচিত হইয়াছেন। শ্রীমজয়কুমার মুখো-পাধ্যায় কোষাধ্যক এবং নিম্নলিখিত ২১ জন কার্য্যকরী কমিটীর সদত্ত হইয়াছেন—শ্রীবিপিনবিহারী গাঙ্গুলী, শ্রীকালীপদ মুখোপাধ্যায়, শ্রীপ্রস্কৃতক্র সেন, শ্রীভারকদাস বন্দ্যোপাধ্যায়, শ্রীক্র্মার বন্দ্যোপাধ্যায়, শ্রীকামদা-কিছর মুখোপাধ্যায়, শ্রীনকুম্ববিহারী নাইতি, শ্রীভামা প্রসাদ বর্দ্মন, শ্রীহদয়ভূবণ চক্রবর্ত্তী, শ্রীইমেণচন্দ্র মঞ্চল, শ্রীমেনারাজনাথ মিশ্র, শ্রীহর্গাপদ সিং,শ্রীস্থনীল ঘোষ মৌলিফ, বিশাস সেন, শ্রীসত্য নারারণ নিশ্র, শ্রীবসন্তলাল মুরারকা, ডাঃ স্থরেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যার, শ্রীহরেক্তনাথ মন্ত্র্মদার ও শ্রীসাক্ষচক্র মহান্তি। এবার নির্বাচনে কোন দলাদলি দেখা বার নাই—ইহা আননন্দের কথা সন্তেহ নাই। নৃতন কর্ম্মীরা কংগ্রেদ প্রতিষ্ঠানকে নৃতন মর্য্যাদা দান করুন, ইহাই আমাদের কামনা।

সফঃঅলে উচ্চ শিক্ষার প্রভার-

কলিকাতার কলেকসমূহে ছাত্রাধিক্যের প্রতীকারকল্লে গভর্নেণ্ট মক: খলে কলেজ প্রতিষ্ঠার যে পরিকরনা করিয়া-ছিলেন, তদম্পারে এবার নৃতন গটি কলেজ স্থাপিত হইয়াছে -(>) বোলপুর কলেজ, বারভূম (২) রামপুর হাট কলেজ, वीबज्ञ (७) वित्रमा करलक, २८ भवनेना (४) कान्ति वाक-कलक, मूर्मिनावान (८) कत्रीभूत कलक, (७) मनिमाना মহিলা কলেজ, আসানসোল ও (৭) দমদম মতিঝিল কলেজ, ২৪ পরগণা। বড়গপুর ও শান্তিপুরে পূর্বেই কলেজ হইরাছিল, সেগুলিতে নৃতন আই-এনসি ক্লাস খোলার অনুমতি দেওয়া হইরাছে। গত কর বৎসরে মফ:খলে জিল্লাগঞ্জ, কাঁখি, তমলুক, মহিষাদল, কালনা, ডায়মগুহারবার, কাটোয়া, বসিরহাট, নব্দীপ, আমতা, গোবরভাঙ্গা, নৈহাটী, আহার-বেলমা, উলুবেড়িয়া, আসানসোল, বিষ্ণুপুর, গড়বেতা প্রভৃতি বছ স্থানে কলেজ স্থাপিত হইয়াছে। সে গুলিতে যাহাতে বেশী ছাত্র বায়, কর্ডুপক্ষের সে অন্ত ব্যবস্থা করা উচিত। সহরের আবহাওরা ভাল নহে—তাহার উপর ব্যয়ও অত্যন্ত অধিক। সে অভ মক:খলে অৱসংখ্যক ছাত্র লইয়া অধ্যাপনার নানা স্কুল ফলিবে। বেমন নৃতন গটি কলেজকে গভর্ণমেন্ট অর্থ সাহায্য দিবেন, তেমনই মফ:খলস্থ অক্তান্ত कालक श्री अधिक विश्व विष्य विश्व विष নৃতন আবহাওয়ার ছাত্ররা যেন নৃতন যুগের উপযোগী প্রর উ মাহব তৈরারা হয়, অধ্যাপকগণকেও আমরা সে বি^{দ্রে} মনোবোগী হইতে অমুরোধ করি।

সমবায় নীতি প্রসার ব্যবস্থা-

পূর্বে বাংলা দেশে সমবার নীতি প্রসারের জন্ত সমবার সংগঠন সমিতি ছিল এবং বেসরকারী ত্যাগী কর্মীরিন্সে বিবরে কাল করিতেন। স্বর্গত স্থারকুমার লাহিড়ীব নাম এ বিবরে সমবীর। সম্প্রতি প্রক্রিষ বজের নুদ্ধন, সমবায় দ্বী ডা: আর-আহমদের চেষ্টার ঐ কার্য্যের কম্ম 'সমবায় ইউনিয়ন লিমিটেড' নামে এক প্রতিষ্ঠান গঠিত হইরাছে। গত ৩০শে ভাজে শনিবার ২২নং চিত্তরঞ্জন এভিনিউর বাড়ীতে ভাহার উবোধন উৎসব হইয়াছিল। নৃতন সমিভির সভাপতি গ্রীরণীন্ত্রনাথ ঠাকুর সভার উপস্থিত হইতে না পারিয়া এক বাণী প্রেরণ করিয়াছিলেন। সমিতির সহ-সভাপতি শ্রীসরল কুমার ঘোষ সভায় সভাপতিত্ব করেন এবং শ্রীকালীপদ ভট্টাচার্ব্য ও খ্রীভারাপদ চৌধুরী নৃতন সমিতির যুগা সম্পাদক নির্বাচিত হন। সমবায়-মন্ত্রী মহাশন্ত্র সমিতির উলোধন করিয়া সমিতি গঠনের প্রয়োজনায়তার কথা সকলকে বুঝাইরা দেন। দেশকে সমৃদ্ধি-সম্পন্ন করিয়া গঠন করিতে হইলে সমবায়ের প্রয়োজন কত অধিক তাহা বলার প্রয়োজন নাই। যে সকল কারণে এদেশে এতদিন সমবায় আন্দোলন উপযুক্ত সাফল্য লাভ করে নাই, সমিতি সে সকল কারণ সম্বন্ধে অহুসন্ধান করিয়া তাহা দূর করিবার চেষ্টা করিলে দেশ উপক্লত হইবে এবং সমিতি গঠনও সার্থক হইবে।

উন্নাম্ভ আগমনের হিসাব-

নয়া দিল্লীর সরকারী হিসাব হইতে জানা গিয়াছে যে ১৯৫০ সালের জুলাই মাস পর্যান্ত মোট ৮২ লক ২৭ হাজার লোক পাকিন্তান হইতে ভারতবর্ষে চলিয়া আসিয়াছে। তথ্য পশ্চিম পাৰিস্তান হইতে ৫০ লক্ষ ও পূৰ্ব পাৰিস্তান হইতে ৩২ লক ২৭ হাজার লোক আসিয়াছে। পূর্ব পাৰিতান হইতে, গত জাহয়ারী হইতে জুলাই পর্যান্ত গ শাসে মোট ২৬ লক ৪১ হাজার হিন্দু ভারতে আসিরাছিল, তথ্যধ্য ৬ লক ৭২ হাজার হিন্দু ফিরিয়া গিয়াছে—এখন ১৯ শৃক্ষ ৬৯ হাজার हिन्दू আছে। এ ৭ মাদে ১২ লক ৪৪ হাজার মুসলমান ভারত হইতে পাকিন্তানে চলিয়া গিয়াছিল, ভাগে ৩ লক ২১ হাজার মুদলমান ভারতে ফিরিরা कामिबाह्य। ১৯৪৯ ডিনেম্বর পর্যান্ত ১২ লক ৫৮ হাজার ित् पूर्व पाकिछान इहेटड छात्रटड चार्गमन कतियाहिन। ে সকল উৰাস্তানৰ লইবা ভাৰত গভৰ্নেণ্টকে কত বিব্ৰত हैं । उ हरेबार ए जाहा ना बनारे छात । शन्तिम शांकिखारन अप हिन्दू बात नाहे विनातहे हान। करम भूर्व भाविचानक िर्न्छ रहेरव। किंद्र छात्रराउ वधनक ह कांग्रि मूनन-मान वान क्रिक्टिइन। कान्न शुक्र (मण्डे डांश्टिन नक्षीत

যথাযথ ব্যবস্থা করিয়াছেন। পূর্ব পাকিতানে যদি নিশ্লের রক্ষার কোন ব্যবস্থা না হয়, ভবে দিল্লী চুক্তি কি ভাবে পালিত হইবে—ভাহা জন সাধারণ বুঝিতে পারে না।



জাসাবের ভূ-কম্পন-বিধ্বত পার্বত্য অঞ্জে বিমান হইতে থাক নিক্ষেপ—

এ-স্থানে গমনাগমনের সমত স্থলপথ ও অলপথ নিক্ষিত্য—থাকান্তাবে

এ অঞ্চের পার্বত্য অধিবাদীদের চরম জবস্থা

কোনারক সৃষ্যমন্দির-

উড়িয়ার সমুদ্রতীরে কোনারকৈ যে স্থামন্দির আছে তাহা ভারতের স্থাপতা শিলের প্রধানতম নিদর্শন বলিয়া থাত। প্রায় ৫০ বংগর পূর্বে ঐ মন্দির রক্ষার ব্যবস্থা হইরাছিল। সম্প্রতি ঐ মন্দির ক্ষত ধ্বংস প্রাপ্ত হইতেছে বলিয়া জানা গিরাছে। সে জক্ত প্রধান মন্ত্রী পশুভ জহরলাল নেহরুর চেইয়ে উহা রক্ষা-ব্যবস্থার কক্ত একটি কমিটি গঠিত হইয়াছে। কমিটাতে অক্তান্ত সমস্প্রের মধ্যে উড়িয়ার মেতা শ্রীবিশ্বনাথ দাস, থ্যাতসামা বৈজ্ঞানিক ভাক্তার জ্ঞানতক্র খোব, ভারতের খ্যাতসামা শিরী শ্রীবেশীপ্রসাদ রাহ চৌধুনীকে শুভরা হইয়াছে। ক্যোবারক স্থাতসামা

निर्मिठ, किंक नमन अथनल किंत हुत नाहे। निर्मारण कर वर्ष वाबिक रहेबारह, लाहा এখন चात्र हिमाव कता वाब ना। ভারত গভর্ণদেন্ট উহার রক্ষার ব্যবস্থার মনোযোগী হওয়ার **দে**শবাদীর ধক্রবাদভাজন হইরাছেন। পশ্চিম ভারতে यमन त्यामनाथ मिना पूननिर्मित स्टेल्ट्स, পূর্ব ভারতে কোনারকের মন্দির রক্ষারও বিশেষ वारायन चार्ड हेश चनचीकार्य।

শান্তির জন্ম নোবেল পুরক্ষার-

রাষ্ট্রসংখ্রে সেবক ডাক্তার রালফ বাঞ্চে এবার শান্তির অন্ত নোবেল পুরস্কার লাভ করিয়াছেন। তিনি একজন আমেরিকান নিগ্রো ক্রীভদাদের পৌত্র। প্যালেস্টাইনে ইছদী ও আরবদের মধ্যে তিনটি বৃদ্ধ বিরতির ব্যবস্থা করার ভিনি বিশ্বাসীর প্রশংসা অর্জন করেন। নিগ্রোদের মধ্যে हैनिहे श्रथम नार्यम भूतकात शहरान। वारक हार्डार्ड विश्वविश्वानात्वत्र ब्राजनी कित्र व्यक्षां नक । এ वरमत्र नार्वन পুরস্কারের দাম > লক্ষ ৬৪ হাজার ৩০০ সুইডিস ক্রোনার-তাহার নোবেল পুরস্কার লাভ বোগ্যের সমাদর বলিয়া বিৰেচিত হইবে।

ৱাষ্ট্ৰপুত কন্ত ক ব্যবসা—

ভারতের জনৈক রাষ্ট্রনুত গুলুরিলে (ক্রান্স) অবস্থান কালে বহু মূল্যবান কহরতাদি ক্রন্ত করে। পরে কোনরূপ ভব না দিয়া দে ঐ সকল জহরত ভারতবর্বে আনিয়া এখানে বিক্রম্ব করিয়াছে। রাষ্ট্রপৃতগণেরও বিনা গুকে কোন বিদেশী জিনিষ ভারতে আনমুনের অধিকার নাই। ভারত গভৰ্মেণ্টের পুলেশ এ সংবাদ পাইরা এ বিবয়ে নাকি ভদত্ত क्तिबारक ७ विवयि नाकि मछा विवय त्रिशोर्ड विवारक। এখন তাহা ধামা-চাপা দিবার চেষ্টা চলিতেছে। করেক-জন থাতিনামা বাজি ছাড়া অধিকাংশ কোত্ৰে মন্ত্ৰীৰের आधीव चक्रनाक बाह्रेम्ड शाम निवृक्त कवा बरेबाह्य। छाहारमत खन नवस्क त्कर किंद्र कानिज नां। कारकरे এইরূপ সুরাচুরির ঘটনা ঘটা অবাভাবিক নতে। রাষ্ট্রপুত-रहत धमन चानक कांक कतिए हत, गांशांक तारहेत कांछि কোটি টাকা লাভ বা ক্ষতি হইতে পারে। সে কাভে বহি अक्रम माश्रिकानरीन क्यांकांत्र नियुक्त क्या रह, छत ूत निर्देश क्षनरे नमर्थन करा गांव ना । जामारमय विचानक विकादक किरवृक्ति निर्देश हरेशांद्रन । किनि किंकिका

পতান্তরে প্রকাশিত সংবাদটির সভ্যাসভ্য সহস্কে সরকার্ বিব্ৰতি প্ৰচাৱ করিয়া কেন্দ্ৰীয় গভূপিনত অনগণকে সভ্ত क्तिर्वन ।

সুভাষ্টক্র সম্বন্ধে অন্তত সংবাদ—

लाबांहे वहेरछ . 'के खिता' नामक धक्यानि है श्ताक সাপ্তাহিক পত্র প্রকাশিত হয়। স্বত্ত সংবাদ প্রকাশই ভাহার বিশেষর। সম্প্রতি ভাহাতে প্রকাশিত হইরাছে— "নেতানী স্থভাষচন্দ্ৰ বস্থু ১৯৩০ সালে এক অষ্ট্ৰিয়াবাসী महिलाटक विवाह कतिशाहित्वन ७ छै।शास्त्र धकि कम्रा হয়। মাতা ও কলা এখন ভিয়েনা সহত্রে বাস করেন। পণ্ডিত নেহেরু তাঁহার দুত শ্রীরাধ্বম পিলাইকে তাহাদের কাছে পাঠাইয়াছিলেন এবং তাহাদের অর্থকট উপস্থিত इ श्रांत्र छोशांत्र वर्ष माश्या कत्रिशांकन ।" मश्यांत्रि **এक ध्येगीत लाट्यत प्रश्राहक इट्टा क्या वाहाता** স্থভাষচন্ত্রকে জানেন ভাঁহারা এ সংবাদ বিশাস একরিবেন না। তাহা হইলেও পণ্ডিত নেহক গভৰ্মেণ্টের পক্ষ হইতে এ সংবাদের প্রতিবাদ হওয়া প্রয়োজন।

নিখিল বহু সাময়িক পত্ৰ সংঘ-

বাংলাদেশের সাপ্তাহিক, পাক্ষিক ও মাসিকপত্র সমূহের चार्थ मःत्रकालत अन्न कामक वरमत शूर्व्य निश्रिम वन्न সাময়িক পত্র সংঘ গঠিত হইরাছে। সম্প্রতি ঐ সংঘের সদক্তগণ একটি ক্লাব গঠন করিছাছেন এবং ক্লাবের পাকিক व्यक्षित्नात कक कक कन विभिन्ने वक्ता विकिन्न विवास वक्ता করেন। গত কর দিনে প্রবাসীর প্রীশৈক্তেক্ত লাহা, वक्ष नि-मण्डाहरू श्रीहरमञ्जार मान्यस्य, ममवात्र मही छा चात्र चाहमम्, अवीव माःवामिक औद्दरमस अमाम व्यायः थाकिनामा देवकानिक एक्टेन कानहस्र त्वांव ७ जानस्यांकां পত্রিকা সম্পাদক এচপদাকান্ত ভট্টাচার্য্য বক্ততা করিয়া ছেন। কলিকাভা হাতিবাগান বাজারের বিভলে (b) कर्णश्वानिम होते) ज्ञानिक कार्यानात कार्यक व्यथितान হইরা থাকে। ভক্রণ সাংবাদিকগণ স্লাবের সভার যোগ^{ানি} ক্রিয়া ও জানগর্ড বক্ততা ওনিয়া লাভবান হইয়া থাকে:

खी होटबट्ट कुमाब नक्ही-

শ্রীংরেজকুমার নদী সম্রতি পশ্চিম বদের ভূ^{বি}

বিশ্ববিভাগর হইতে উদ্ভিদ্ধ বিশ্বায় এম্-এস্ সি পাশ করিয়া কিছুদিন বিজ্ঞান কলেজে গবেষণার পর বিলাভ যাত্রা করেন ও লগুন হইতে পি-এচ্-ডি উপাধি লইয়া আসেন। কলিকাভার বস্থ বিজ্ঞান মন্দিরেও ভিনি গবেষক ছিলেন। ১৯৩৮ সালে ভিনি আসামে কৃষি বিভাগে কাজে নিযুক্ত হন ১৯৪৫ সালে উড়িয়া গভর্ণমেন্টের কৃষি বিভাগের সহকারী ডিরেক্টর হন। সম্প্রতি ভিনি বালালা দেশে আসিয়াছেন। ভিনি স্থপণ্ডিত ও স্থলেথক—তাঁহার ছারা পশ্চিম বাংলার কৃষি বিভাগের কার্য্যের উন্নতি হইবে বিশ্বা সকলে ; বিশ্বাস করেন।

কবি-দম্পতির বিলাভ-ভ্রমণ-

ভারতবর্ষের পাঠকগণ অবগত আছেন যে কবি-দম্পতি শ্রীযুত নরেন্দ্র দেব ও শ্রীমতী রাধারাণী দেবী তাঁহাদের কলা কুমারী নবনীতাকে সঙ্গে লইয়া ইউরোপ ভ্রমণ করিতে বাহির হইয়াছেন। শ্রীযুত নরেন্দ্র বাবু >লা আগষ্ঠ তারিখে অসলো সহর হইতে এক পত্রে জানাইয়াছেন—"আমরা লণ্ডন থেকে বেরিয়ে ডোভার থেকে সমুদ্র পার হ'য়ে বেলজিয়ামে আসি। বেলজিয়ামের অষ্টেও, খেণ্ট, ক্রজেস, বাশেলস্, ওয়াটারলু (যেখানে ঐতিহাসিক যুদ্ধে মহাবীর নেপোলিয়নের পরাজয় হয়েছিল) ও এন্টোয়ার্প হয়ে আমরা र्गाए७ श्राटम कति। त्मथात क्राव्यनमान, त्रोतिष्ठाम, (६१) ७ चामहोडाम पुरत्र झामला छेत्र तम्म एकनमार्क गाँहे। ए अनमार्क दिष्ठा द्वारभनरहर्शन यातात्र भर्व व्यामारमञ् প্রায় অর্থেক জার্মানী মাডিয়ে থেতে হরেছে—বেছায়েম, **অসনাক্রণ, ডদেলড্রফ, ত্রেমেন, হামুর্গ প্রভৃতি গত বু**দ্ধে र्थिभिक ञ्रानश्चित्र छेभन्न मिर्य त्यर् श्रद्ध। यूरक्त কতিক আৰুও মেলায় নি। কোথাও না। লওনে, বেল জন্মন, হল্যাতে অসংখ্য ভাঙা পোড়ো বিধ্বন্ত বাড়ী জন-প্র হয়ে রয়েছে। এখনও মেরামত হয়ে ওঠে নি। ডে:ার্কে কিন্তু জার্মানীর কোন আবাত চিহ্ন দেখতে 🥍 না। ভেনমার্ক থেকে স্মইডেনে যাই। হল্যাও ^{প্র}ে ডেন্**মার্কে আ**সবার সময় ট্রেণ থেকে নামতে হয় নি। ^{ট্রণ} সমস্ত যাত্রীকে জাহাজে ভূলে সমুদ্র পার করে ^{দি}েল,। ভেবেছিলুম, ডেন্মার্ক থেকে ষ্টক্**ল্**ম যাবার ^{বলা} ও বুঝি ভাই হবে, কিন্তু হতাশ হতে হল। আমাদের বাং ক টেণ থেকে নেমে বোচকা ঘুঁচকি ঘাড়ে করে লাহাকে গিয়ে উঠতে হল। লাহাল থেকে নেমে সাবার নাটর বাসে উঠে ষ্টেশনে এলুম এবং সেখান থেকে টেশে চড়ে তবে এসে ইকহলমে পৌছই। স্থইডেন শেষ করে নরওয়ে এসেছি। গত সপ্তাহে উত্তর মেরু প্রাদেশের নিকটস্থ নার্ভিকে গিয়ে 'ছপুর রাতের স্থ ওঠা' দেখে কাল অসলোয় এসেছি। পরত বার্গেন বেড়িয়ে আবার লাহালে উঠে নিউক্যাসেল হয়ে গণ্ডনে ফিরবো, গই আগষ্ট নাগাত। এডিনবরায় এ বছর ওয়ার্গতেস্ পি-ই-এন কংগ্রেস হবে ১৮ই



कवि नरत्रक्त एव

থেকে ২২শে আগষ্ট। ভারতীর পি-ই-এনের প্রভিনিধিরত আমরা এই কংগ্রেসে উপস্থিত থাকবো। পি-ই-এন কংগ্রে শেব করে স্কটল্যাও ও আরালাও ঘুরে আমরা রুরোত ভ্রমণের দিতীয় পর্ব স্থক্ষ করবো—অর্থাৎ ফ্রান্স, ভার্মানী অন্তিয়া, স্ইজারল্যাও, স্পেন, পোর্ডুগাল, ইতালী এব ক্রমানিয়া, যুগোল্গোভিরা ও চেকোল্লোভিয়া হয়ে ৺প্রাসময় দেশে ফিরবো।

লণ্ডন থেকে ২৮শে আগষ্ট নরেক্রবাব্ আর এক প্র জানাইরাছেন— "আপনি ভনে হুখী হবেন যে এডিনবরার অহান্তিত World's International P. E. N. Congress এ আমরা তৃজনেই ভারতের official delegate নিবৃক্ত হয়ে ছাই এবং সেখানে আমরা বিশেবভাবে সমাদৃত হয়েছি। সার সি, পি, রামখামী আরার ভারতবর্ষ থেকে বিশেষ অতিথি হিসেবে এসেছিলেন। পাকিন্তান থেকে সার সোয়ার্দির মেয়ে ডাঃ বেগম শায়েভা ইক্রামউলাও পাকিন্তান সরকারের রাষ্ট্রনৈতিক বিভাগের সেক্রেটারী শেখ মহম্মদ ইক্রাম official delegate হিসাবে এসেছিলেন এবং আমাদের কবি জসিমুন্দীন সাহেব P. E. N. এর সাধারণ সদ্বস্ত হিসাবে উপন্থিত ছিলেন। বেগমইক্রামউলা মেয়েট



ইণ্টারক্তাশানাল পি-ই-এন কংগ্রেসে (এডেনবরা) কবি নরেক্স দেব ও ভদীর পদ্ধী শীরাধারাণী দেবী

পুৰ ভাল। সে লণ্ডনের এম-এ, পিএচ্-ডি। চমৎকার বক্তৃতা দিলে। সাম্প্রদায়িকতার ধার দিয়েও যায় নি। মহম্মদ ইক্রাম সাহেব মুথ খোলেন নি। জসিম্দীন সাহেবও বক্তৃতা দিলেন, কিন্তু সাম্প্রদায়িকতা দোবহুই, অত্যন্ত খেলো বক্তৃতা। ভাতে ভিনি নিজেকেও সেই সঙ্গে পৃং পাকিভানকেও ছোট করে ফেলেছেন।"

"এডিনবরা থেকে আমরা Lake Districtএ বেড়াতে চলে যাই। অবশ্য তার আগে সারা ফটল্যাও চবে বেড়িয়েছি। লেক প্রদেশে windermere থেকে Keswic পর্যান্ত ঘুরেছি মোটরেও মোটর বোটে। কবি wordsworth এর Dove cottage সমাধি দেখবার জন্ত Grasmere বাই, সেধান থেকে লগুনে কিরি।" २०८५ क्वारे हेकश्वास स्थानकात मर्वाराका किथक कर्नाक्षत मर्थापणक 'छाइन्म त्नरात्र' वत श्रीकिषि किनिष्णित मर्थि एवं कित्रता छाँशत कांगरक स्य विवद्ध श्रीका करिन स्थानित मर्थि कित्रता छाँशत कांगरक स्य विवद्ध श्रीका करिन स्थान कित्रता छाँशत कर्मा करिन मा विवद्ध स्थान कित्रता स्थान कित्रता मर्थि कित्रता स्थान कित्रता स्थान कित्रता स्थान कित्रता स्थान हित्र श्रीका हित्र श्रीका हित्र श्रीका हित्र स्थान स्थ

'ষ্টকংলম'এর পত্তে প্রকাশিত বিবরণ

এডিনবরার শি-ই-এন কংগ্রেসে যাবার পথে এক ভারতীয় লেখক-দম্পতি সুইডেনে এসেছেন। শ্রীমতী আকারে ছোট কিছ তাঁর আকৃতি কবিত্বাঞ্জক । শ্রীমৃত বেশ ভারিকি ওজনের এবং নিবিছ গুলু সমালভূত। শ্রীমতী কবিতা লেখেন। তিনি পৃথিবীর পুরুষদের নারীর বাহিরের রূপ ও কুত্রিম সৌন্দর্য্যের চেয়ে তাদের প্রতিভ্র পানসিক সৌন্দর্য্যের প্রতিই আকৃত্ত হতে বলেন। শ্রীসৃত দেব বাংলা ভাষায় নানা বিভাগেই লেখেন। তিনি বেয়র্শসন, ইবসেন প্রভৃতির রচনার অহুবাদও করেছেন।

আবৃক্তা দেব 'গভীর রাতে স্বর্যাদর' দেখবার ভার আগ্রহাঘিত। আমরা আশা করি, তিনি ছুগুর রাজে স্বর্যের উপর বাংগা ভাষায় একটি কবিতা লিংগানা আয়ুত দেব যুরোপের এই প্রসিদ্ধ প্রদেশটিকে পর্যাক্ত কণ করছেন। শ্রীমন্তী কথা বলেন একটু ফ্রুত এবং দেব মহাপ্রের আগেই বলেন। শ্রীযুত অত্যন্ত সম্মদের সঙ্গে জিটা কথাগুলি শোনেন। যেন তিনি চিরদিনই এমনি বিশ্বে আভাত। এই দেখক-দম্পতি বিবাহিত আবনের সীত মাধুর্যের ও পরস্পার সহযোগিতার অতি স্থানা স্থান অর্কাণ। এঁরা যেন ইংরাজ কবি দম্পতি শ্রীমতী এনি রাবেণ ও শ্রীযুত রবার্ট ব্রাউনিংরের ভারতীয় সংস্করণ।

শ্ৰীবৃত দেব এ পৰ্যান্ত প্ৰায় ১৫ থানি

করেছেন—কবিতা, উপস্থাস, ছোট গল, প্রবন্ধ ইত্যাদি এবং শ্রীমতীর ৮ থানি কাব্যগ্রন্থ প্রকাশিত হরেছে। সমস্তই বাংলা ভাষার লেখা। এঁরা তৃজনেই রবীস্ত্র যুগের সাহিত্যিক।

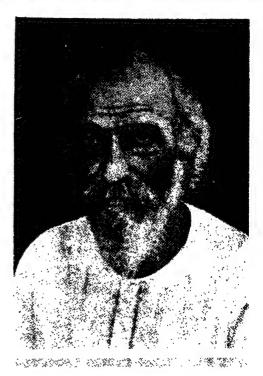
ভারতবর্ষে নানা ভাষা প্রচলিত থাকার দরণ লেথকদের ণকে অগ্রসর হওয়া মুস্কিল। এ ছাড়া সামাজিক, রাষ্ট্রক ও অর্থনীতিক সমস্তা ও তাঁদের অগ্রগমনের পথে বাধা-স্বরূপ হয়ে দাড়ায়। প্রীমতা দেব বলেন পুরুষরা যেন নারীদের প্রতি তাঁদের দৃষ্টিভদীর পরিবর্ত্তন করেন। তিনি চান, নারীর বাহিরের সৌন্দর্য্যের চেয়ে অন্তরের সাংস্কৃতিক সৌন্দর্য্যের প্রতি তাদের মনোযোগ আরুষ্ট করতে। তিনি বলেন—মেরেদেরও বদলাতে হবে। 'তারা লঘু ব্যাপারে মেতে ना थिएक श्वक्रप्रभून विषया मरनानिरवण कक्रन। পৃথিবী থেকে যুদ্ধ বন্ধ করতে ও মানব সভ্যতার উন্নতি কল্লে তাঁরা কাজ করন। মেরেদের মধ্যে যে মাতৃত্বরূপিনী নারী আছেন তাকে উধুদ্ধ করে তুলতে হবে। এই ভাবে পুরুষের মানসিক পরিবর্ত্তনের অন্ত ও নারীর বাণীর প্রতি শ্রদাসম্পর হওয়ার ফলে পৃথিবীর উন্নতি হবে, কারণ মানসিক সৌন্দর্য্য এমন এক বস্তু, যা বয়স বাড়ার সঙ্গে मत्त्र भान रुख यात्र ना. वतः चात्र छेच्चन रुख ।

তিন্তা নদীর জলপ্লাবন—

কালিম্পাং হইতে থবর আসিরাছে, তিন্তার শাখা
লাচনে নদীর গতিপথে ধবস নামায় তিন মাস ধরিরা
নদীর জল অবক্লছ ছিল। কলে গাংটকের ৪০ মাইল
উত্তরে ৮ মাইল ব্যাপী হলে জল জমিরা হদের আকার
বার- করিয়াছিল। গত ১৪ই সেপ্টেম্বর প্রবল বৃষ্টির
নলেন্ট্র ধবস নামিরা বার ও তিন্তার জল অভূতপূর্বকাবে
নাছিল বার। বছ বুক্ল উৎপাটিত হইরা নদীর প্রোতে
নাছিল বাইতে দেখা বার! নদীর ধারে ধারে তৈল
বাইতেছে—ঐ তৈল কোথা হইতে আসিতেছে
কিলাতে পারে না। এই সংবাদ অতীব শকাজনক—
তা জল বৃদ্ধির কলে সেতু নই হইবে ও জলপাইগুড়ীতে
বিলি নাবন হটবে। এ বৎসর দৈবত্রিব্বাক আমাদের
তাত করিবে কে জানে? পৃথিবী বে ধবংসের পথে
কিলাতেছে সে বিবরে সন্দেহের অবকাশ কোথার?

এ পুরুষোত্তম দাস ভ্যাওম-

কংগ্রেসের বর্ত্তমান সভাপতি শ্রীপুরুবোত্তম দাস ট্যাওব ১৮৮২ সালে এলাহাবাদে জন্মগ্রহণ করেন ও আইন পরীকা পাশ করিরা এলাহাবাদ হাইকোর্টে আইন ব্যবসা আরম্ভ করেন। ১৮৯৯ সালে তিনি কংগ্রেসে স্বেচ্ছাসেবকরূপে ও ১৯০৬ সালে প্রতিনিধিরূপে বোগদান করেন। ১৯১০ সাল হইতে তিনি হিন্দা সাহিত্য প্রচার আন্দোলনের সহিত্ত সংশ্লিষ্ট হন। ১৯২১ সালে তিনি অসহযোগ করিয়া আইন ব্যবসা ত্যাগ করেন ও তদবধি কংগ্রেস ও দেশসেবার কাজ



ন্তন কংগ্রেস সভাপতি বীপুরবোভনদাস ট্যাওন

করিতেছেন। ১৯২৯ সালে তিনি লালা লাজপৎ রায়
প্রতিষ্ঠিত লোক সেবক সমিতির সভাপতি হন। ১৯২৯
সালে তিনি যুক্ত প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটীর সভাপতি
হইয়াছিলেন ও ভাহার পর কিছুকাল লাহোরে পাঞ্জাব
ভাশানাল ব্যাক্তর সেক্রেটারী ও ম্যানেজারের কাজ
করিয়াছিলেন। বছবার তিনি কারাদও ভোগ করিয়াছেন
ও ১৯৩৭ সালে যুক্ত প্রবেশ ব্যবস্থা পরিবদের স্পীকারের
কাজ করিয়াছেন। ১৯৪৮ সালে তিনি কংগ্রেস সভাপতি

নির্মাচনে প্রার্থী হইরা পরাজিত হইয়াছিলেন। তিনি ছুতা সূক্র প্রান্তাব— ব্যবহার করেন না, চিনি, লবণ, ঘৃত, হুগ্ধ, মসলা প্রভৃতি



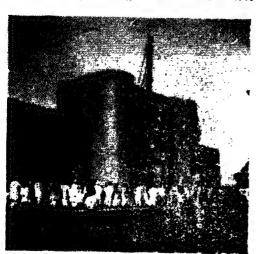
নাসিক কংগ্রেসে যে সকল প্রস্তাব গৃহীত হইয়াছে, তন্মধ্যে নিম্নলিখিত প্রভাবটিকেই মূল প্রভাব বলা হইয়াছে।



দূর হইতে গোদাবরী তীরে নাসিক

क्टी-पिनीन पख

ব্যবহার করেন না। তিনি কখনও সরু চাল খান না-অত্যন্ত সাধারণ পোষাক ব্যবহার করেন। উত্তর প্রামেশে



নাসিকে গান্ধী নগরের প্রধান ভারণ

क्टो--पिनीश प्रज

সকলে ভাঁহাকে রাজর্ষি বলে। ভাঁহার নেতৃত্বে কংগ্রেস ও मिट्न मन्न रहेलहे लाक छारात निर्वाहन नार्थक मल स्वित्र ।



নাসিক কংগ্ৰেস অভিমূপে স্বেচ্ছাসেবকৰাহিনী ফটো—দিলীপ দত্ত প্রস্তাবটি এইরপ—"কাতীয়তা-বিরোধা ও প্রতিক্রিয়া-পছীরা ভারতের উন্নতির পরিপন্থী বলিয়া কংগ্রেস দেশে



নাসিক কংগ্রেসে কুটার শিল্প-প্রদর্শনীতে দর্শকের ভিড় क्टो-मिर्व । पर

সাম্মদায়িক পার্থকাবৃদ্ধির অবসান ঘটাইতে চার। ভারত পাকিতানের মধ্যে যে উত্তেজনা ও ওক্তর সমস্রার উত্তর হইয়াছে, ভারতের মর্যাদা ও স্বার্থের দিকে লক্ষ্য রাথিয়া থৈয়্য, সহিষ্ণৃতা, সম্প্রান্ত ও দৃঢ়তার সহিত সেগুলির সমাধান প্রয়োজন এবং চেষ্টা করিলেই উহার সম্ভোষজনক সমাধান সম্ভব। যুদ্ধের পথ অবলম্বন না করিয়া শান্তিপূর্ণ উপায়ে তই দেশের মধ্যে বর্ত্তমান সম্ভ বিরোধের মীমাংসা করার অন্ত চুক্তিবদ্ধ হইতে ভারত সরকার পাক সরকারের নিকট যে প্রভাব করিয়াছিলেন, কংগ্রেস তাহা সমর্থন করে। কংগ্রেস দিল্লী চুক্তিও অমুমোদন করিতেছে। ভারত গণতান্ত্রিক রাষ্ট্র বলিয়া সকল সম্প্রদায় ও ব্যক্তিকে সমান অধিকার ও স্বাধীনতা দিয়াছে এবং ধর্ম্মের ব্যাপারে কোন বৈষমামূলক ব্যবহার করে না। অভএব প্রত্যেক



নাসিক কংগ্রেসের ভারেণ সমীপে নৃতন সভাপতির আগমন-প্রতীকার দর্শকগণ কটো—দিলীপ দ্বত

ত গ্রেস কর্মীকে সকল রকম সাম্প্রদায়িকতার বিরুদ্ধাচরণ করিতে কংগ্রেস আহ্বান করিতেছে।" এই সমস্তা আদ্ধ ভারতকে সর্বপ্রকারে বিব্রভ ও বিপন্ন করিয়াছে। এই প্রাব কি সে সমস্তা সমাধানে সাহায্য করিবে? যদি ে, তবেই দেশের পক্ষে মঙ্গলের কথা। নচেৎ দেশ শিল্পপ্রাপ্ত হইবে।

ব েপ্রেস সভাপতি ও গোরক্ষা—

কংগ্রেস সভাপতি শ্রীযুত পুরুষোত্তম দাস ট্যাওন গত ১৮ সেপ্টেম্বর নাসিকে নিধিল ভারত গোরকা ও বনস্পতি বর্জন সন্মিলনে এক বক্তৃতা প্রসঙ্গে বলিয়াছেন—"কেবল মাত্র গোরকার ইচ্ছা প্রকাশ করিয়া এবং প্রস্তাব গ্রহণ



গান্ধীনগর অভিমূপে প্রধান:মন্ত্রী পণ্ডিত জহরলাল নেহর—পাধের দ্বই পার্ধে দর্শমেছু জনতা। সারিবন্ধ মোটরগুলির প্রথম নোটরে পণ্ডিতজীকে দণ্ডারমান অবস্থায় দেখা বাইতেছে ফটো—পালা সেন



কংগ্রেস সভাগতি শ্রীপুরুষোত্তম্পাস ট্যাওন সন্ত্রীক কটো—পালা সেন করিয়া সন্তই থাকিলেই হইবে না, দৈনন্দিন জাবনে জন-সাধারণকে তাহা গ্রহণ করিতে হইবে। চামড়ার ব্যবসার কন্ত গুদেশে লোক গো-হত্যা করে। চামড়া রগ্ধানী বন্ধ

হইলে যদি বছমূল্য ডলার হারাইতে হয়, আমরা তাহাতে প্রস্তুত আছি। জনসাধারণের পকে চামড়ার জ্তা বর্জন ও তৎপরিবর্ত্তে রবারের বা কাপড়ের জ্তা ব্যবহার করা কর্ত্তব্য।" এই প্রসঙ্গে শ্রীষ্ত ট্যাওন জনসাধারণকে বনস্পতি ব্যবহার না করার জন্ত অহরোধ করেন। যদি ভাল ঘৃত বা তৈল না পাওয়া যায় তাহা হইলে



পশ্চিমবঙ্কের কংগ্রেস সভাপতি শীঝতুল্য যোব এবং ছুইজন নত্রী শীঝালীপদ মুখোপাধ্যার ও শীঞ্জুরচন্দ্র সেন কটো—পারা সেন

কিছুই ব্যবহার না করা ভাল। শ্রীষ্ত ট্যাণ্ডন নিকে
গত ১৯০৮ সাল হইতে চামড়ার জ্তা ব্যবহার করেন না।
ভারতে গোধন প্রায় লুগ্ধ হইতে চলিয়াছে—এ অবস্থার
কংগ্রেস-সভাপতির মত ব্যক্তি ধদি এ বিষয়ে প্রচার কার্য্য
আরম্ভ করেন, তবে দেশের লোক পুনরার গো-ধন রক্ষার
অহরাগী হইতে পারে। মৃতপ্রার জাতির নিকট বে কোন
আবেদনই উপস্থিত করা ইউক না কেন, তাহা তাহার কর্পে
প্রবেশ করে না।

শ্রীল রামদাস বাবাজী জয়ন্তী-

शांछनामा देवक्य छक्त ६ कीर्छनशांत्रक जीन त्रांमनाम रावांकी महासद्यत्र नाम ७४ वांकनात्र देवक्य मनात्क नरह, ভারতের সর্ব্বে স্থারিচিত। তিনি শুধু নাম প্রচার করেন না; স্বর্গত রাধারমণ চরণদাস বাবাজী মহাশরের ক্লপাপ্রাপ্ত হইয়া সকল বৈষ্ণব তীর্থ উদ্ধার ও রক্ষার ব্রতী হইয়াছেন। তাঁহার চেষ্টায় বছ তীর্থস্থান সংস্কার করা হইয়াছে ও সংস্কৃতক্ষেত্রে বিগ্রহসেবাদির উপযুক্ত ব্যবস্থা হইয়াছে। সম্প্রতি সিঁথি বৈষ্ণব সম্মিলনীর উল্যোগে প্রায় এক মাস ধরিয়া কলিকাতা ও সহরতলীর নানাস্থানে রামদাস বাবাজী জয়ন্তী জমুষ্ঠান পালিত হইরাছে। সর্ব্বে বাবাজী মহাশরের জীবন ও কার্যাবলার কথা আলোচিত হইয়াছে ও বাদালা জনগণকে তাঁহার আদর্শ রক্ষার সহবোগিতা করিতে জমু-রোধ করা হইয়াছে। বাবাজী মহাশরের বয়স ৭৪ বৎসর—তিনি স্কনীর্থ কর্ম্মমন্থ জীবন লাভ করিয়া বাদালার বৈষ্ণব-ধর্মকে নৃত্ন জীবন দান কর্মন ও ভদ্ধারা বাদালী জনগণ উপকৃত হউক, আমরা সর্ব্বাস্তঃকরণে তাহাই প্রার্থনা করি।

রাজগীর শ্রীরামক্ষ সেবাশ্রম-

স্বামী রূপানল মহারাজ বিহারে পাটনা জেলার মধ্যে প্রাসিক জৈন তীর্থক্ষেত্র রাজগীর নামক স্থানে শ্রীরামকৃষ্ণ দেবাশ্রম প্রতিষ্ঠা করিয়া গত কর বৎসর ধরিয়া বালালী তীর্থাত্রী ও স্বাস্থাক্ষেনিকের নানাজ্যবে সেবা করিতেছেন। সম্প্রতি তথার তিনি একটি মন্দির ও তৎসংলগ্ন একটি ধর্মালা স্থাপন করিতেছেন। সে জন্ত একথণ্ড জমী সংগৃহীত হইয়াছে ও করেক লক ইট প্রস্তুত হইরাছে। কলিকাতার করেকটি সিনেমারও করেক সহস্র টাকা সংগৃহীত হইয়াছে। আশ্রম পরিচালনের জন্ত কলিকাতার একটি কমিটা গঠন করিয়া রেজেন্ত্রী করা হইয়াছে। বাংলার বাহিরে বালালী পর্যাটকদের নানাপ্রকার অস্ক্রবিধা ভোগ করিতে হয়। স্বামীজি তালা দূর করার ব্যবস্থায় মনোনোলি হইয়া বালালী জনসাধারণের ধন্তবাদের পাত্র হইয়াছেন আমাদের বিশ্বাস, ধনী ও সন্থার বালালীরা স্বামীজি

ৰাষ্ট্ৰপুঞ্জ ও কম্যুনিষ্ট চীন—

গত ১৯শে সেপ্টেম্বর ভারতের প্রতিনিধি শ্রীনরণি রাও রাষ্ট্রপুঞ্জের সাধারণ পরিষদে ক্যানিষ্ট চীন সরকাণি প্রতিনিধিকে রাষ্ট্রপুঞ্জে গ্রহণের দাবীর প্রভাব ক^{া প্র}ভাতি উহা অগ্রাহ্ন হইরা বার। শ্রীরাও বলেন—ক্ষিতি সরকার এ বিষয়ে স্থানিন্ডত যে, পিপিং সরকার স্থান্ত ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত। কিন্তু তাহা সন্থেও প্রতাবের পক্ষে ১৬জন ও বিপক্ষে ১০জন সদস্য ভোট দেন। মার্কিণ পক্ষ এথনও চীনের কুও—মিংটাং পক্ষকে সমর্থন করিতেছেন। তাহাদের দলের এথন চীনে কোন প্রভাব নাই। সে দলের করেক জন সদস্যও কম্যুনিষ্ট দলে যোগদান করিয়া দেশ শাসনের ভার গ্রহণ করিয়াছেন। রাষ্ট্রপ্রক্ষ করে ধনিক্তক্ষের প্রভাব মুক্ত হইবে কে জানে?

সেশাবাহিনী ও বাহ্বালী-

গত ১৮ই সেপ্টেম্বর কলিকাতা বিশ্ববিত্যালয়ের আততোষ হলে ভারতের প্রধান সেনাপতি কে-এম-করিয়াপ্লা ছাত্রছাত্রীদের এক সভায় বক্ততা করেন। তিনি বলেন— ভারতীয় সেনাবাহিনীতে ভারতের সকল রাজ্যের অধি-বাসীরই যোগদান করিবার সমান স্থাোগ আছে-তৎসত্তেও ভারতীয় সেনাবাহিনীতে বাদালার অধিবাদীদের সংখ্যা দামান্ত, ইহা হতাশার কথা। তিনি আখাদ দিয়াছেন-যদি উপযুক্ত ৰোগ্যতাসহ যথাযোগ্য ৰাঙ্গালী তৰুণ পাওয়া ায়, তবে তিনি অধিকসংখ্যক বাঙ্গালী তঙ্গুণকে ভারতীয় সেনাবাহিনীতে গ্রহণ কবিবেন। ভারতীয় সেনাবাহিনীতে वाकामी अहन कविवाब नीजि जिनि हानारेबा बारेदवन। जिनि जामा करतन, बाजानी यूवकर्गन छांशांत्र जास्तातन শাড়া দিয়া অধিক সংখ্যায় সেনাবাহিনীতে যোগদানার্থ জাগাইরা আসিবেন। আমাদের বিশ্বাস, ইহার পর সৈত্ত-বহিনীতে যোগদানের জন্ম বাদালী তরুণদের অভাব দেখা ্ইবে না।

িহার চুভিক্ষ ও গ্রীক্তরপ্রকাশ-

সমাজভন্নী নেতা শ্রীজন্মপ্রকাশ নারায়ণ ১৪ দিন ধরিয়া বিরের মুক্তের, শারসা, পূর্ণিরা, ভাগলপুর ও বারভালা বোর ঘুরিয়া ছুর্ভিক্ষ ও বক্সা-বিধ্বস্ত স্থানসমূহ দর্শন করিয়া- । তাহার পর ১৫ই সেপ্টেম্বর পাটনায় এক বিবৃতি কাল ভিনি জালাইয়াছেন—"রাজ্য ও কেন্দ্রীয় সরকার গত বিহারের ছুর্ভিক্ষের কথা অত্যীকার করিয়া বিয়াছেন। আমি এ বিষয়ে নিশ্চিত বে, বুটীশ রাজ্য আজ কারেম থাকিত ও কংগ্রেস যদি বিরোধী দলের ভ্রাকায় থাকিত এবং প্রভৃত অবস্থা যদি ইহার অর্থেক

শোচনীয় হইত, তাহা হইলে তুর্ভিক্ষ ঘোষণার জন্ম কংগ্রেসেই
চাৎকার করিত। আজ অবস্থা অন্তর্মণ বলিয়া কংগ্রেসে
তুর্ভিক্ষ ঘোষণার বিরোধী। আমি দেখিয়াছি, পূর্ণিরা
জেলার রূপালি থানার তেলদিহা গ্রামে ৩২ জন অনশনে
মারা গিয়াছে। লোক গাছের পাতা, মৃল, কাকড়া,
শাম্ক প্রভৃতি থাইয়া জীবন ধারণ করিতেছে।" প্রজন্মপ্রকাশের এই বির্তির পরও কি বিহার-সরকার আর্ত্তআগের কোন ব্যবস্থা করিবেন না। বিহারের বহু জেলা
হইতে থাজাভাবপীড়িত দরিজ জনগণ দলে দলে পশ্চিম
বাকলায় চলিয়া আসিতেছে—সে জন্ম আজ বাংলার অবস্থাও
আশকাজনক হইয়াছে।

কাশ্মীর ও পাকিস্তান-

কাশ্মীর বিরোধ লইয়া হিন্দুছান ও পাকিন্তানের मधा नित्रां शक्ता शतियम य आंशास्त्र तहे। कतिरा हिन, তাহা বার্থ হট্যাছে। নিরাপতা পরিষদ প্রেরিত প্রতিনিধি বিফল মনোর্থ হট্য়া ফিরিয়া গিয়াছে ও আপোষ মীমাংসার ভার উভয় রাষ্ট্রের উপর ছাড়িয়া দিবার নির্দেশ দান করিয়াছে। কিন্তু তাহার পরও কাশ্মীর সম্বন্ধে পাকিন্তানের মনোভাব লক্ষ্য করিলে বিন্মিত হইতে হয়। ১৭ই সেপ্টেম্বর গিলগিটে পাকিন্তান রাষ্ট্রপাল নাঞ্জিমুদ্দীন এক সম্বৰ্জনা সভায় বলিয়াছেন—"কাশ্মীরকে মুক্ত করা প্রত্যেক পাকিন্তানী ধর্মবিশাদের অঙ্গ বলিয়া মনে করে এবং পাকিন্তান প্রভাবের ইহা অবিচ্ছেন্ত অংশ। কাশারকে মুক্ত করিয়া পাকিন্তানের অন্তর্ভুক্ত क्रिक्त ना भावित्न भाकिन्छान व्यमण्यूर्भ थाकिया याहेरव।" পাকিন্তান রাষ্ট্রপালের নির্দ্ধেশ স্বস্পষ্ট—কিন্ত ভারতের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত নেহক এখনও আপোষের স্বপ্ন দেখিতেছেন। ভারত রাষ্ট্রকে কঠোরতার সভিত কাশ্মারে কর্ত্তব্য পালন করিতে 'হইবে—নচেৎ ভারত রাষ্ট্রের সমূহ বিপদের সম্ভাবনা। সেনাপতি কারিয়াপ্লা দৈক্ত সংগ্রহের ममद अकूर्धकारव यमि कांत्ररकत विशासत कथा मकनारक বুঝাইয়া দেন-ভাহা হইলে ভারতের পক্ষে কাশীরকে विशयुक्त कता चारती अमुख्य इंटेरव ना ।

নারী সমাজ ও পণ্ডিভঙ্গী-

গত ১৯শে সেপ্টেম্বর নাসিক গান্ধীনগর হইতে ৬ মাইল দুরে এক বিরাট নারী সন্মিলনে পণ্ডিত ভ্রুবলাল

নেহক নারী-সমাজের কর্ত্তব্য নির্দেশ করিয়া করেন। তিনি বলেন—"ভারতীয় নারীসমান্ধ থাত ও অক্তান্ত প্রয়োজনীয় দ্রব্যের অভাবের জন্ত যেন বিরক্তি প্রকাশ বা অভিযোগ না করেন এবং যাহা পাইবেন, ভাহার ছারাই সংসার নির্বাহ করেন। স্বাধীন দেশের व्यनमाधात्रात्व मकन इः थ इक्ति । ও व्यन्तिधा मञ् कतिवा স্বাধীনতার পরবর্তীকালীন সৃষ্ট অতিক্রমে সরকারের সহিত সহযোগিতা করা কর্ত্তব্য। অধিক পণ্য ও খাছ উৎপাদনের জন্য নারীসমাজকেও কঠোর পরিশ্রম করিতে হইবে।" নারী সমাজ চেষ্টা করিলে দেশের থাতাভাব দুর করিতে পারেন। মাহুষের অভ্যাস ত্যাগ করা चारि किंत नरह। यांश महस्य পांख्या यांग, छांश ৰারাই জীবনধারণের চেষ্টা না করিয়া আমরা তুপ্রাপ্য জিনিষ সংগ্রহে প্রবৃত্ত হইয়া আমাদের অভাব বৃদ্ধি করিয়া থাকি। চিনি না হইলেও চলে। কিন্তু চিনির অত্যধিক वावशादात करण मत्रकात्ररक विरम्भ इटेर्ड विभी मारम हिनि आममानी कत्रिए इत्र। ध नकल विवदत्र आमारमत्र নারী সমাজ অবহিত হইবেন কি ?

সুন্দর্বন অঞ্চলে বস্থার ক্ষতি-

২৪ পরগণা জেলার বসিরহাট ও ডায়মণ্ড হারবার
মহকুমার স্থলবন অঞ্চলে ভীষণবন্তার ফলে বসিরহাটের তিন
লক্ষ বিখা জমী ও ডায়মণ্ড হারবারের দেড় লক্ষ বিখা জমীর
চাষ নষ্ট হইয়া গিয়াছে। বহু ঘরবাড়ী ও গৃহপালিত পশুও
ধ্বংসপ্রাপ্ত হইয়াছে। এখনই জত বাঁধ রক্ষার ব্যবস্থা না
করিলে ক্ষতির পরিমাণ বহু পরিমাণে বাড়িয়া যাইবে।
হাসনাবাদ ও নামধানাতে কেন্দ্র করিয়া সাহায়্য কায়্য
আরম্ভ করা যাইতে পারে। স্থলরবন অঞ্চলে যে চাউল
উৎপন্ন হর, তাহাছে কলিকাতাবাসীকে কয়েক মাস
ধাওয়ানো হয়। স্থলববনের চাষ নষ্ট হইলে কলিকাতা বিপন্ন
হইবে। এ বিষয়ে কর্ত্পক্ষের অবিলম্বে উপযুক্ত ব্যবস্থা
অবলম্বন করা উচিত।

অর্থ নীতিক কর্মসূচী–

নাসিক কংগ্ৰেসে অৰ্থনীতিক কৰ্মস্চী বিষয়ক একটি প্ৰভাব গৃহীত হইয়াছে। তাহাতে বলা হইয়াছে—"জন-কল্যাণপ্ৰতী রাষ্ট্ৰ প্ৰতিষ্ঠাই কংগ্ৰেসের লক্ষ্য। বৰ্তমানে কি ভাবে পণ্যোৎপাদন বৃদ্ধি পাইতে পারে তাহার উপায়
নির্ধারণ করিতে হইবে, উৎপাদন বৃদ্ধির পথে বে সকল
অস্তরার আছে, তাহা দূর করিতে হইবে। জনসাধারণের
জীবনযাত্রার মান উন্নত করিতে হইবে। দেশের প্রত্যেকটি
নাগরিকের কর্ম্ম সংস্থান করিয়া দিতে হইবে। রাষ্ট্রে
অপরকে পোষণের কোন স্থযোগ থাকিবে না। অর্থ ও
সম্পদের বৈষদ্য এমনভাবে হ্রাস করিয়া আনিতে হইবে,
যাহাতে প্রত্যেকটি মাহ্য আত্যোমমনের ও ব্যক্তিত্ব বিকাশের
সমান স্থযোগ লাভ করিতে পারে। নিত্যপ্রয়োজনীয
জিনিবগুলির উপর নিয়ন্ত্রণ ব্যবস্থা বজায় রাথিতে হইবে।
সমাজ স্বার্থ বিরোধী যে সকল লোক নিয়ন্ত্রণ ব্যবস্থার
স্থযোগ গ্রহণ করিয়া নিজেদের স্বার্থসিদ্ধির চেষ্টা করিতেছে,
তাহাদিগকে কঠোর শান্তি দিতে হইবে। কয়েমী স্বার্থ
বাহাতে বৃহত্তর কল্যাণের পথ হইতে জনগণকে বিচ্যুত না
করিতে পারে তৎপ্রতি লক্ষ্য রাথিতে হইবে।
"

কবি করুণানিধান সম্বর্জনা-

কবি প্রকরণানিধান বন্দ্যোপাধ্যার মহাশয়ের বরস ৭৪
বৎসর আরম্ভ হওয়ার গত ২০শে সেপ্টেম্বর সন্ধ্যায় হাওড়া
মহিলা কলেজে স্থানীয় দীনবন্ধু কলেজের ছাত্র ও মহিলাকলেজের ছাত্র বন্দের উত্তোগে তাঁহাকে সম্বর্জনা করা
হইয়াছে। প্রিজ্ঞিপাল প্রীবিজয়রুয়্ফভট্টাচার্য্য সভায় সভাপতিই
করেন এবং প্রীদেবেশচক্র দাস, প্রীফণীক্রনাথ মুখোপাধ্যায়,
শ্রীবিনায়ক সাক্রাল প্রভৃতি সাহিত্যিকগণ কবির কার্ধ্য
সম্বন্ধে বভ্তা করেন। প্রবীণ কবির এই সম্বর্জনাকারীয়া
দেশবাসীর ধক্রবাদের পাত্র। ছাত্রছাত্রীদের মধ্যে এই
মনোভাব বৃদ্ধির ফলেই দেশ উন্নতির পথে অগ্রসর লইলে।
সভায় কবি তাঁহার কাব্যের প্রেরণা সম্বন্ধে বড়ু তা
করিয়াছিলেন।

লোকগণনায় কর্তব্য-

গত ২০শে সেপ্টেম্বর আগামী আদমস্থারী ব লোকগণনা সম্বন্ধে এক সরকারী বিবৃতি এন বি হইয়াছে। ১৯৫১ সালের ফেব্রুয়ারী মাসে লোক বান করা হইবে। ঐ সম্পর্কে পশ্চিমবক্ষের প্রধান মন্ত্রী ভূরির শ্রীবিধানচন্দ্র রায় জানাইয়াছেন—"জনগণনা জাতির ভ্রিব সম্পাদের হিসাব নিকাশ। দেশের জন সংখ্যা, স্ত্রী প্রাধ্বের সংখ্যা, দেশবাসীর ধর্ম, বৃদ্ধি, সাহিত্য ও শিক্ষার মান প্রভৃতির হিসাব জনগণনার মাধ্যমেই সংগৃহীত হয়। ইহা হইতেই আমরা পাই—দেশের শিল্প, ব্যবসা বাণিজ্ঞা, বাস ব্যবস্থা এবং সামাজিক ও অর্থনীতিক অবস্থার পূর্ণ ও যথাসন্তব সঠিক বিবরণ।" তিনি জনগণকে এই কার্য্যে সরকারী কর্মীদিগকে সাহায্য করিতে অন্তরোধ জানাইরাছেন। গণনা সম্পর্কে গৃহীত সকল তথ্যই গোপনে রাধা হইবে—কাজেই সকলে যেন সকল তথ্য নিভূলভাবে প্রদান করিয়া সরকারের এই কার্য্যে সাহায্য করেন। হইতে দেখিয়া সকলেই সম্ভষ্ট হইয়াছেন। এদেশে সংবাদ-পত্ৰের সংখ্যা বৃদ্ধির সঙ্গে শিক্ষিত সাংবাদিক ভৈয়ায় করারও প্রয়োজন হইয়াছে।

পার্লামেণ্টের সদস্য নির্বাচন-

পশ্চিমবন্ধ ইইতে নির্ব্বাচিত ভারতীয় পার্লামেন্টের সদস্য শ্রী দিয়তসিংকা মহেশ্বরী, জনাব রাগীব আসান ও জনাব আবহুল হামিদ পদত্যাগ করায় যে এটি স্থান শৃষ্ঠ ইইয়াছিল গত ২৬শে সেপ্টেম্বর তথায় নৃত্তন সদস্য নির্ব্বাচন ইইয়াছে—শ্রীচারচন্দ্র বিশাস, জনাব আজিকুল হক ও

বেশ্রীর সাহাব্য ও পুনর্বসতি
মন্ত্রী শীক্ষজিতপ্রসাদ জৈন ভাহার
সাম্প্রতিক কলিকাতা সকরকালে
কতকগুলি উদ্বাস্ত্র শিবির,
মহিলাবাস ও শিশুপালন কেন্দ্র পরিদর্শন করেন। দে থা
বাইতেছে একটি মহিলাবাসে
তিনি কয়েকটির মহিলার সহিত
কর্ষোপকথনে রত



বিশ্ববিত্যালয়ে সাংবাদিকভা শিক্ষা-

বর্ত্তমান বংসর হইতে কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ে সাংবাদিকতা শিক্ষার ব্যবস্থা হইয়াছে এবং ঐ বিভাগের ব্যববাগনার অন্ত আনন্দবাজার-পত্রিকা-সম্পাদক শ্রীচপলাকাস্ত
ভীচার্যাকে সম্পাদক করিয়া একটি কমিটী গঠিত হইয়াছে।
কিনার জন্ত মাসিক বেতন ১৫ টাকা, ভর্ত্তি ফি ১৫ টাকা
পরীক্ষার কি ৬০ টাকা স্থির হইয়াছে।
শ্রীকোর কি ৬০ টাকা স্থির হইয়াছে।
শ্রীকোর কি ৬০ টাকা স্থির হইয়াছে।
শ্রীবেন বেন, শ্রীমাধনলাল সেন, শ্রীবিধৃভ্রণ সেনগুপ্ত,
ভাই ধীরেন সেন, শ্রীমাধনলাল সেন, শ্রীবিধৃভ্রণ সেনগুপ্ত,
ভাই ধীরেন সেন, শ্রীম্বালকান্তি বস্থ প্রভৃতি অধ্যাপনা
কিলিবে। গত কয়েক বংসর ধরিয়া কলিকাতা বিশ্ববিভালয়
বিবেরে চেষ্টা ক্রিভেছিলেন—এবার সে চেষ্টা ফলবতী

জনাব আবহুল সভার সদস্য। চারুবাবু ভারতের সংখ্যালঘু মন্ত্রী, হক সাহেব প্রাক্তন করোনার ও সাভার সাহেব বকীয় প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিচীর অন্তত্তম সহসম্পাদক।

শরংচক্রের 'রামের স্কর্ম'ভ'

অপরাজেয় কাহিনীকার শরৎচক্ত চটোপাধায়ের 'রামের স্থমতি' নামক কহিনীটি সর্বজনপরিচিত এবং ইহার সার্থক চিত্ররূপ সম্বন্ধেও কিছু নৃতন কথা বলিবার নাই। হিন্দী স্বাকচিত্রেও 'ছোটা ভাই' নামে এই কাহিনী যে অসামাল সাফল্য অর্জন করিয়াছে তাহাও সর্বজনবিদিত। কিছু সম্প্রতি একটি সংবাদে জানা গিয়াছে বে, পাকিস্তান কর্তৃপক্ষ পাকিস্তানে এই অপূর্ব্ব ছবিধানির

धानमीन नामि यस कतिया विद्यादकत । अवश्र मध्याविष्ठ देशांक केत्रव चाष्ट्र त. यकि इविधित लायत चःम-चर्थार वामरक भूनवाम चरत्र किवारेम व्यानात व्यामहरू वान रमध्या यात्र छात्। इटेल थे इति श्रानीत कान निर्वशका पांक्रिय ना। সংवाष्टि पूर्वे अदुष्ठ। क्रांत्रण 'त्रारमद স্থমতি' রাজনীতিক কাহিনীও নয়, সাম্প্রদায়িকভার সংস্পৰ্বও ইহাতে নাই। ইহা কোনরূপ সামাজিক চিত্র। স্থতরাং ইহার উপর আরোপের এমন কি হেতু থাকিতে পারে ? ভবে কি रेशबाता व्यामता देशहे वृश्वित य প্রত্যাবর্তন ব্যাপারটি কোনও ক্ষেত্রেই পাকিন্তান কর্ত্বপক্ষ বরদান্ত করিতে চান ना ? धवः धरे देशिडहे कि देशात यूम्लाहे नय ख. পাকিন্তান-পরিত্যাগী কোন হিন্দুর পুনরার পাকিন্তানে প্রভ্যাবর্ত্তন পাকিস্তান কর্তাদের অভিপ্রেত নয় ? ইহাই কি ছাহার রূপক অভিব্যক্তি? দিলী চুক্তির মাধাযোয় বাঁগারা व्याचाराजा এই সংবাদটির দিকে তাহাদের দৃষ্টি আকর্ষণ ক্রিডেচি।

শালালী ছাত্রের ক্রভিত্র-

আমরা গুনিরা স্থা ইইলাম যে অবসরপ্রাপ্ত জেলা জজ শীষ্ক কণীশ্রনাথ মিত্রের পুত্র শ্রীনান কল্যাণকুমার মিত্র মাত্র ২৫ বৎসর বর্ষে বোধাই ইউনিভারসিটি হইতে BioChemistry শাস্ত্রে পি-এইচ-ডি উপাবি লাভ করিয়া-ছেন। তাঁহার গবেষণার বিষয়বস্ত ছিল Fermentation Technology. ইভিপূর্ব্বে তিনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে কেমিষ্ট্রিতে কাই ক্লান ডিগ্রি এবং ইউনিভারনাল



একল্যাণকুমার মিত্র

ইন্দটিটিউট অব সায়ান্স হইতে Chemical Engineering ের Associateship ডিগ্রি প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। বর্তমানে তিনি Fermentation সম্বন্ধ গভীরতর গবেষণায় নিয়ক্ত আছেন।

তোমারে প্রণাম

विषयनान हर्द्वाभाधाय

ভূমি আছো, ভূমি ছাড়া কিছু নাই আর।
অনস্ত চৈতক্ত, নথদর্পণে তোমার
র'রেছে অগণ্য বিশ্ব। নিঃসাম শৃক্তের
সংখ্যাগীন গ্রহডারা হ'তে অরণ্যের
ভূজতম পূশশিশু—সবার পিছনে
আছে তব পরিচর্য্যা নিঃশশ্বে গোপনে

ভোমার কল্যাণ হস্ত করিছে সিঞ্চন
সকলের মূলে প্রাণরস। চিরস্তন
হে দেবতা, বে ভোমারে দেখেছে অস্তরে পেয়েছে সে চিরশান্তি। কোন ছঃখশরে
টলাতে পারে না ভারে। কোন প্রলোভনে
লুক্ক নহে চিন্ত ভার। নিখিল ভূবনে

ভূমি তার প্রিরতম, প্রাণের জারাম ; সচ্চিৎ জানন্দ ভূমি—ভোমারে প্রণাম।



কুধাংগুলেখর চটোপাখার

আই এফ এ শীল্ড ঃ

১৯৫০ সালের আই এফ এ শীল্ডের ফাইনালে ইঠ-বেলল ক্লাব ৩-০ গোলে সাভিসেদ একাদশদলকে শোচনীয়ভাবে হারিয়ে উপর্যুগরি ছ'বছর এবং মোট তিনবার একই বছরে লীগ-শীল্ড বিজ্ঞবের গৌরব লাভ করেছে। ১৯৪৫ সালে ইটবেলল ক্লাব লীগ চ্যাম্পিয়ান এবং আই এফ এ শীল্ড একত্রে প্রথম বিজ্ঞয়ী হয়।

ইপ্তবেশ্ব ক্লাব ভিন্ন স্থানীয় দলের মধ্যে অপর কোন দলই এ পর্যান্ত ভিন্নার একই বছরে দীগ-দীল্ড বিজয়ের গৌরব অর্জন করতে সক্ষম হয়নি। ১৯৩৬ শালে ভারতীয়দলের মধ্যে ल्यथम नी ग-नीन्छ विस्त्री हन মহমেডান স্পোর্টিং ক্লাব। তারা দিতীয়বার লীগ-শীল্ড भिरबट्ड ১৯৪১ मारन। লীগ-শীল্ড থেলার ইতিহাসে धकरे वहरत श्रवम नौत-শীল্ড পার মুদেষ্টাদ ১৮৯৮ শালে। গর্ডনস এইচ এল

আই ১৯০৮-৯ সালে উপর্যুপরি ছু'বছর লীগ-শীল্ড পাওয়ায় প্রথম রেকর্ড করে। এ রেকর্ডের সমান করেছে একমাত্র ক্যালকাটা (১৯২২-২৩) এবং ইষ্ট-বিশ্বল লাব (১৯৪৯-৫০)। এই রেক্ড সম্পর্কে একটা কথা উঠা স্বাভাবিক বে, আই এক এ শীল্ড বিজয়ী হয়েছে এমন অনেক বহিরাগত মিলিটারী দলের লীপের থেলার যোগদানের কোন সন্তাবনা ছিল না বলে তাদের পক্ষে এই রেকর্ড করা বা ভক্ত করা সন্তব হয়নি। একই বছরে লীগ-শীল্ড পাওয়ার রেকর্ড স্থাপন করা হানীর দলের পক্ষে সন্তব, বহিরাগত দলের পক্ষে নয়। স্তরাং বে স্ব দল এই রেকর্ড করেছে তাদের নাম উল্লেখ প্রসঙ্গে বলা



नीग-नीक विकारी देहेरवनन जाव

ফটো—জে-কে-সাস্থান

উচিত, লীগ-শীল্ড থেলার ইতিহাসে এই দলগুলি স্থানীর দলগুলির মধ্যে একই বছরে লীগ-শীল্ড পাওরার গৌরব লাভ করেছে। স্থানীয় কথাটির স্পষ্ট উল্লেখ না থাকলে বহিরগৈত শীল্ড বিজয়ী দলগুলির প্রতি অবিচার করা হয়। ইউবেলল ক্লাবের পর্যায়ক্রমে ছ'বছর লীগ-শীল্ড জয়লাজ্যে ফলে ক'লকাতায় বহিরাগত ফুটবল থেলোয়াড়দের
নৈপুণা স্বীকৃত হয়েছে। একথা স্বীকার না করলে
তাঁদের প্রতি আমাদের অসৌজন্ত এবং অক্তক্ততা প্রকাশ
করা হবে। ইইবেলল ক্লাবের থেলায় জয়লাভের প্রধান
মেক্লণ্ড হ'ল আক্রমণ ভাগের পাঁচজন বাইরের
থেলোয়াড়দের স্থান্থ অক্রমণ পদ্ধাত, ক্লিপ্রতা, পরস্পারের
মধ্যে বুঝাপড়া, স্থোগ সদ্ব্যবহারে দক্ষতা এবং সর্ব্বোপরি
দলের জয়লাভের জন্ত অদ্যা আকাজ্যা। গোল করার
উপরই যেখানে থেলার ফলাফল নিম্পত্তি হয় সেথানে
আক্রমণভাগকে শক্তিশালী করাই হ'ল বিচক্ষণতার

কমিরে দেওরা। এই নীতিই হ'ল কুটবল খেলার সাফল্য লাভের মূলনীতি।

কিছ কার্যক্ষেত্রে অনেক দলই এই নীতির কথা ভূলে বায়। খেলায় প্রাধান্ত লাভের প্রাথমিক নীতির দিক থেকে ইষ্টবেলল ক্লাবের কোন ভূল হয়নি। দলের আক্রমণ ভাগ সত্য অলিম্পিক প্রত্যাগত তিনজন এবং অপর হু'জন মোট পাঁচজনই বাইরের নাম করা খেলোরাড় দিয়ে খ্বই শক্তিশালী করা হয়েছে। গত বছরের ব্যাক তাজমহম্মদকে এ বছরের ফুটবল মরস্থমের মধ্যে অনেক চেষ্টা সংস্বেও পাকিন্তান থেকে আনা সম্ভব না হওয়ায় রক্ষণভাগ ক'লকাতার কোন কোন বিশিষ্ট ফুটবল দলের থেকে হুর্বল

হয়ে পড়ে। ফাইনা**লে দ**লের রকণভাগ আগের তুলনায় তুৰ্বল হ'ল—বাকে ব্যোদকেশ বহু, হাফ ব্যাকে এবং কাইজার অহুস্থতার জন্তে খেলতে না নামায়। ফাইনাল থেলার সমন্ত ক্ষণের মধ্যে কয়েকবার এ ত্বলভা চোৰে পড়লেও বেশী সময়ই দলের আক্রমণ দলের থেলোয়াড়রা বিপক্ষের গোলে छौद बाक्य हा निय निक मलात त्रक्रनङाशाक विभएत **ठांभ (थरक तका करत्रहरू।** দলের আধিপত্য রক্ষার জন্যে व्यवज्ञानित मलात मछ इंडेरवन्त



সভোষ ট্রফি বিজয়ী বাসলা প্রদেশ

ফটো—প্ৰভাত বহু (ভেপো)

পরিচয়। রক্ষণভাগ যত শক্তিশালীই হউক না কেন,
ফুর্বল আক্রমণভাগ নিয়ে হয়ত তু' একটা থেলায় দলের
প্রাধান্ত বজায় রাখা বায় কিন্ত লীগের গড়পড়তার থেলায়
এবং টুর্ণামেন্টে দলের শেষ মুখরক্ষা করা যায় না।
আক্রমণভাগের শক্তিশালী থেলোয়াড়রা বরং বিপক্ষদলের
গোল সীমানায় আক্রমণ চালিয়ে দলের তুর্বল রক্ষণ
ভাগকে যথেষ্ঠ সহযোগিতা করতে পারে। বিপক্ষের
গোল সীমানায় বেশী সময় বল রাখার অর্থই হ'ল নিজ
ধলের রক্ষণভাগের উপর বিপক্ষ দলের আক্রমণের চাপ

ক্লাবও অনেক বছর ধরে বাইরের থেলোয়াড় আনিয়ে দল গঠন করছে। বেলীর ভাগই দলে খেলেছেন মাজাজের নাম কর থেলোয়াড়রা। ১৯২৫ সালে ইষ্টবেজল ক্লাব প্রথম বিভাগের লীগে প্রথম থেলতে আসে। ১৯২৫-২৮ পর্যান্ত এই চার বছর প্রথম বিভাগে থেলে ১৯২৯ সালে ছিজীর বিভাগে নেমে যায়। এই চার বছরের লীগ তালিকায় দলের ছান এই ছিল —৪র্থ (১৯২৫), ৬৯ (১৯২৬-২৭) এবং সর্ব্ব নিম্পান (১৯২৮)। ১৯৯১ সালে ছিডীর বিভাগের লীগ চ্যাম্পিয়ান হয়ে পুনরাম ইউবেজল ক্লাবকে ১৯৩২ সালে প্রথম বিভাগের

থেলায় খেলতে দেখা ধার। সেই সময় অর্থাৎ ১৯০২ থেকে ১৯৪১ সাল এই দশ বছরের মধ্যে বাইরের থেলােয়াড় দলে নিয়েও ইউবেকল ক্লাব পাঁচ বার লাঁগের রাণার্স আপ ছাড়া অপর কিছু হ'তে পারে নি। শীল্ডের খেলােয় ১৯০৭-৬৮ সালে ৩য় রাউণ্ড পর্যন্ত উঠেছিল। ১৯৪২-১৯৫০ সাল পর্যন্ত এই ৮ বছরের লীগ-শীল্ডের খেলায় ইউবেকল ক্লাবে আগের থেকে যেমন বেশী বাইরের থেলােয়াড় যোগদান করেছে তেমনি দলকে বিরাট সাফল্য লাভে সহযোগিতা ক'রেছে। এই আট বছরে লীগ পেয়েছে হবার, অপরাক্ষেয় অবস্থায় ১ বার। লীগে রাণার্স আপ

হয়েছে > বার। শীল্ড পেয়েছে ৪ বার, ৩ বার শীল্ডের রাণাস व्यात इरवहा ३৯४२-३৯४१ **শাল পর্যান্ত পর্যান্নক্রমে ৫ বার** আই এফ এ শীক্তের ফাইনালে থেলে ক্যালকাটা ফুটবল ক্লাবের ১৯•৩-১৯৽৭ সালে প্রতিষ্ঠিত রেকর্ডের সমান করে। তবে এই সময়ের মধ্যে ক্যালকাটা শীল্ড পেয়েছে ৩ বার, ইষ্টবেস্কল ২ বার। দলের সাফল্যের দিক (थरक ১৯৪৯ जानरे देहेरवजन সাবের কাছে শ্বরণীয় বছর-**अक्ट्रे वहत्व काानका** है। कृष्टेवन ণীগ, আই এফ এ শীল্ড এবং রোভাস কাপ পায়।

আলোচ্য বছরের শীক্তের থেলায় অনেক শক্তিশালী দিলের যোগদান করার কথা ছিল, তারা কেউ যোগদান করেনি। প্রতিবছরই এ ব্যাপার ঘটছে। ঢাক পিটিয়ে বল হয় ভারতবর্ষের বিভিন্ন অঞ্চলের শক্তিশালী দল আই এল এ শীক্তে যোগদান করেবে। কিন্তু শেষে দেখা যায় এল সব দল আই এক এ-র ধরচায় থেলতে এসেছে যাদের ফুটবল খেলার ষ্ট্যাণ্ডার্ড এখানকার চতুর্থ বিভাগের নিমন্থান অংকারী দলেরও স্থান নর। তারা অবিশ্রি ক'লকাতার স্থাবিভারি কাছে অধিক সংখ্যক গোল খেয়ে স্থানীয় দলের

রেকর্ড স্থাপন করার স্থবোগ দিয়ে ভারতীয় ফুটবল বেলায়।
রাজধানী ক'লকাভার বেরা মাঠে ফুটবল বেলার সোভাগ্য
লাভ করে। ভাদের বিপক্ষে থেলে অধিক গোলের রেকর্জ
করার স্থবাগ ছাড়া ক'লকাভার ক্লাবগুলি আরপ্ত একটা
স্থবর্ণ স্থবাগ পায়, থেলোয়াড় সংগ্রহ করার। দলগত
থেলার ষ্ট্রাণগুর্ভ যতই থারাপ হউক, প্রতিবছরই কোন না
কোন দলের তু'একজন থেলোয়াড় ব্যক্তিগত ক্রীড়া নৈপ্তা
দেখিয়ে ক'লকাভার দর্শকের মুগ্র ক'রে বান আর অমনি
ক'লকাভার কাবগুলির শুন দৃষ্টি পড়ে তাঁদের উপর।
ক্লাবের নামের ঐতিহ্য, নানাপ্রকার স্থ্যোগ স্থবিধার টোপ
দিয়ে তাঁদের বিভিন্ন দলে টেনে আনা হয়। এই টোপের



সন্তোষ ট্রফির ফাইনালে বিজেতা হায়জাবাদ দল ফটো—ভি-রতন-এয়াও কোং

চার বাঞ্চলা দেশেই নয়, সারা ভারতবর্ষ, বর্দ্ধা **ভূড়ে** ফেলা আছে।

ক'লকাতার বৃষ্টির মধ্যে থেলা, নাম করা দলের সমর্থকদের উচ্ছুন্থালতা, দলের থেলার ফলাফল দলের সমর্থকদের মনোমত না হ'লে রেফারীকে আক্রমণ এবং বভাবতই রেফারীর পক্ষপাতিত বাদলার বাইরের নামকরা ফুটবল দলকে ক'লকাতার মাঠে থেলতে আসতে ক্ষই উৎসাহিত করে। এ নিয়ে বাদলার বাইরের কাগজ পত্তে অভিযোগ উঠেছে। অভিযোগ অধীকার করা বাহ না। বাদলার বিহৃত্তে আরও অভিযোগ, (১) একাধিক ক্লাই

विधिन्न श्राप्तान नाम कन्ना (श्रानानाष्ट्रापत जामलानी क'रत रमधानकात (थमात है।। ७ एउँ व वनिष्ठ कात्र व विष्कृ, (২) শাতীয় ফুটবল প্রতিবোগিতায় সেই সব খেলোয়াড় क'नकां जां कृष्टेवन (धनांत्र शांशनात्त्र मझन निक निक व्यादात्मत्र शक्त (थगरक शारतन ना (०) धहे ऋरवारंग वाक्ना প্রদেশ নিজেও জাতীয় ফুটবল প্রতিযোগিতায় ঐসব বহিরা-শৃত থেলোয়াড়দের মধ্যে একাধিক বাছাই থেলোয়াড় निया मनरक मकिमाना क'रत वहवात कारेनाल क्यी रदाह (४) छोत्रज्यर्थत कृष्टेवन (थमात्र (भगामात्री अथा व्य-আইনী কিন্তু অবাধে ক'লকাতাম্ব বাইরের খেলোয়াড় আম-मानीत करन विভिন্न श्राप्ताम माध्यत (थनात मर्गामा तका অসম্ভব হয়ে পড়েছে—ক'লকাতাম আধাপেশাদারী থেলার প্রবর্ত্তনে। এ সমন্ত নির্জ্জনা মিথ্যা প্রতিপন্ন করতে কেউ পারেন কি? বর্ত্তমান অর্থ নৈতিক সম্বটকালে ্ৰেলোয়াড়দের মধ্যে কেবল নাম এবং দর্শকদের আনন্দ বিতরণের প্রেরণায় করজন বিভ্রশালা থেলোয়াড় সময় দিয়ে শারীরিক পরিশ্রম ক'রে উন্নত খেলার অফ্লীলন করতে शादिन ? क्रांट्व (थमात्र मक्रण विहेटत्रत्र (थटमायाफ्टमत्र मठ एव श्विधा थूव कम वानानी (थलावाएज़ ভाগाई कूछ शारक। वाक्नारमाला कृष्ठिक त्थलात्र मान मधान, খেলার আত্মজাগ প্রভৃতি আমর্শমূলক কথা বলে বাঙ্গালী থেলোরাড়দের তথ অহবিধার দাবীকে ঠাণ্ডা রাখা হয়। ফলে ভিতরে ভিতরে অসন্তোষের আগুন থেকে যার বার হলে আৰু বালালী খেলোয়াড়য়া আন্তরিকভাবে খেলা গ্রহণ করতে পারছেন না। এই আধাপেশাদার ফুটবল খেলার পরিবর্ত্তে আমরা একাধিকবার ফুটবল খেলায় পেশাদারী খেলা প্রবর্ত্তনের পক্ষে স্পষ্ট অভিমত এবং বুক্তি দেখিয়েছি। এ-আই-এফ-এফ-র ব্যাপারে গৌড়ামির কোন অর্থ বুঝা যায় না।

আই এফ এ শীক্তের ৪র্থ রাউত্তে ৮টি দলের মধ্যে বার্ণাপুর দলই ছিল বাইরের। একদিকের সেমি-ফাইনালে সার্ভিদেস একাদশ দল মোহনবাগানকে ২-১ পোলে হারিরে ফাইনালে বার। মোহনবাগানের সেণ্টার ফরওরার্ড আহত বাবলু কুমারের স্থানে পুরোনো খেলোরাড় অমল মন্ত্রমারেক একেবারে কাইনালে খেলতে দেখা বার। করওরার্ডের এ পরিবর্ত্তনে অবিশ্বি কোন স্ক্ল

হয়নি একমাত্র অনল মন্ত্যুলারের একটি গোল শোধ দেওয়া ছাড়া। অনভান্ত ছানে তিনি থেলতে পারেন নি এবং থেলার মধ্যে ত্'বার ফরওরার্ড থোলোরাড়দের মধ্যে পরস্পর স্থান পরিবর্ত্তনে স্থফল হয়নি, বরং আরও থেলায় অবনতি দেখা যায়। লেফট আউটে একমাত্র দাশগুপ্তই সামরিক দলের বৃট উপেক্ষা করে থেলেছিলেন; বাকি সকলেই বৃটের ভয়ে এভবেশী সম্রন্ত ছিলেন যে, সাভিসেস দলের রক্ষণভাগ বিপক্ষের এই ভ্রমেলতার স্থযোগে চূড়াক্তভাবে থেলায় আধিপত্ব বিভার করতে পেরেছিলো। সন্তার, গুহু ঠাকুরতা এবং অমল মন্ত্রুলার থেলার পরিচন্ন পাওয়া যায়। এঁদের মধ্যে কেউই dashing থেলোয়াড় নন্, ফলে তাদের থেলায় ভীক্তার ছাপ যথেই আছে। বিশেষ ক'রে সামরিক দলের বিপক্ষে গোলে স্বেগে ধাবমানে সক্ষম এমন একজন সেটোর করওয়ার্ড দরকার।

মোহনবাগানের সে দিনের খেলায় পরাজয়ের কারণই হ'ল খেলায় ভূলপদ্ধতি, অনভ্যন্ত স্থানে খেলা এবং ফরওয়ার্ড (थानावाज्याक मार्थित व्यक्तात । (थानाव ममन्द्र ममरावरे একমাত্র দেণ্টার হাফ টি আও এবং দিতীয়ার্দ্ধে যা কিছু রতন त्मन विभरक्तत्र वृष्ठे **এवः वन व्याद्यां १ উ**लिका क'रत (थरनहिन। मरनत रथनात मर्था अवनारखत व्यवमा छेरमांह वा स्वव हिन না। সামরিক দল যে জয়স্চক গোলটি করে তা বেশই অভাবনীয় এই কারণে যে, মোহনবাগানের গোলরক্ষকের পক্ষে ঐ ধরণের গোল রক্ষা করা বিশেষ দক্ষতার পরিচয় হ'ত না। বলটি অনেক দূর থেকে গোলের মধ্যে যায়: গোলরক্ষক অহেতু এপিয়ে যাওয়ার ফলে বলটি কেলি বাধা না পেরেই গোলে ঢুকে। ঠিক এমনি ধরণের গোল উ अक्टे शोनद्रक्करक (थए एका शाह नीश देहेरवकतार সঙ্গে বিভীয় থেলায়। সার্ভিদেস দল থেলার **অ**বস্থ বুঝে কথনও লখা বল পাঠিয়ে এবং কথনও সটি পাশ ক'রে দলের থেলোয়াড়দের বিপক্ষের বাধা অথবা লগ बांशांत्र शृद्धिरे वन निरव्ह । जमरत्र जमरत्र वनि गांगि পড়বার আগেই অযথা সময় নষ্ট মা ক'রে বলটিকে উপ্রে উপরে দলের থেলোয়াড়দের নিখুতভাবে পাশ দিটে ८मथा योव।

মোহনবাগানের বিপক্ষে লাভিসেন দলের উন্নত শ্রে^{নীর}

থেলা দেখে সকলেরই ধারণা হছেছিলো সার্ভিসেস দল ফাইনালে তার প্রতিঘন্দী দলকে খুবই বেগ দেবে, থেলার ফলাফল যাই হ'ক না কেন।

ইউবেক্স ২-১ গোলে অপর দিকের সেনি-ফাইনালে স্পোর্টিং ইউনিয়নকৈ হারিয়ে ফাইনালে উঠে। স্পোর্টিং ইউনিয়ন মাত্র একজন ছাড়া বাকি দশজন খাঁটি বাকালী খেলোয়াড় নিয়ে চারজন অলিস্পিক প্রত্যাগত এবং বাকি নাম করা খেলোয়াড় ছারা গঠিত রাজস্থানকে হারিয়ে দেয় লীগের এবং শীল্ডের খেলায়।

ফাইনালে সার্ভিদেদ দল তার স্বাভাবিক থেলা থেলতে পারে নি, বলতে কি মাঠে দাঁড়াতে পারে নি এমনই থেলায় বিবৃত হয়ে পড়েছিলো।

একদিকে সাভিদেদ দলের সেমি-ফাইনালে উল্লভ ধরণের থেলা এবং অপর দিকে ইষ্টবেক্স ক্লাবের নিয়মিত নাম করা থেলোয়াড় ব্যাক বি বহু, হাফ ব্যাক এদ রায় এবং কাইজার আহত এবং অমুদ্ধ হয়ে পড়ার ইষ্ট্রবেলন দল ষে একটা জ্বোর প্রতিশ্বন্দিতা করার স্থযোগ থেকে বঞ্চিত হ'ল এই ছ:খ ফাইনাল খেলা স্থক হওয়ার আগে পর্যান্ত সমর্থকদের মনকে বিশেষ ক'রে পীতা দিতে থাকে। সভািই একটি দলের পক্ষে নিয়মিত তিনজন শক্তিশালী খেলোয়াড **এই त्रकम এकটा खक्रज्ञ्र्न (थलाव्र ना (थलान, विरम्य क'रत्र** यांत्मत्र व्यक्ताव मत्नत्र भरकं व्यभूवनीव त्रथात्व ममर्थक व्यवः সমন্ত দলটির নৈতিক দুঢ়তা থাকা অসম্ভব ব্যাপার। খেলায় বেমন অপ্রত্যাশিত ঘটনা ঘটে এ ক্ষেত্রেও তাই হ'ল যথন ইষ্টবেঙ্গল দল বি বস্তুর স্থানে সাত বছর আগের অবদারপ্রাপ্ত থেলোয়াড় বেবীগুচকে নিয়ে নামলো। তথন দেখলাম সমর্থকরা আরও বেশী মুস্ডে পড়েছেন। প্রথম শ্রেণীর থেলায় অনেক দিনের অনভ্যন্ত এবং তার উপর শারীরিক বিপুলভায় সদব্যস্ত বেবী গুহকে আৰু আই এফ এ শীল্ডের ফাইনালে থেলতে নামলে কি ক'রে নৈতিক দৃঢ়তা এবং উচ্চ আশা পোষণ করা যার वन् । किन (धना क्रूक़त्र महन राम राम राम राम राम (धरक देहरवजनमात्त्र (धरनाग्राष्ट्रापत्र मरनावन महस्र ७१ देशेरकनम्हात् आक्रमन्डारगत নমর্থকদের ভরদা দিলেন। তাদের তীত্র গতির সঙ্গে গরস্পরের ব্যাপাড়া, নিখুঁত পাশ, এবং থেলায় গোল দ্রার জিদের মুখে সার্ভিদেস দলের সেমি-ফাইনালের থেলা विक्रमा अन (थरक छनिएय (शन।

থেলার বেণীরভাগ সময়ই ইষ্টবেঙ্গল দলের করোয়ার্ডের থেলোয়াড্রা বিপক্ষের গোল সীমানায় বল টেনে রাধার ফলে দলের রক্ষণভাগের উপর চাপ খুবই কম পড়ে। যাঝে মাঝে ইষ্টবেঙ্গল দলের গোলের দিকে বল গেছে किंद्र शंक्यांक, यांक ध्वर शानतकक जारनत्र निक নিব্দ দায়িত্ব ক্রভিত্তের সঙ্গে পালন করেছেন। বেবী শুহ একবার গোলের মুখে সবেগে ধাৰমান একটা প্রচার गाउँ त मूर्य माथा (भार दिख वनि टिकिरतां क्रिय কিছুক্ষণের জন্ত সংজ্ঞা হারিয়ে ফেলেন কিছু কয়েকমিনিট পর এমন সহজভাবে মাঠে নেমে থেলতে থাকেন বে তার খেলার, উপর সমস্ত দর্শকদের আকর্ষণ পড়ে। গোলে ঘটক একবার মাধার উপরের বলে সময়মত ঘুবি মেরে এবং একবার শুয়ে পড়ে বলটি আঁকড়ে ধরে ত্'টি অবধারিত গোল বাঁচান। ইষ্টবেশলের ভিনটির বেশী গোল হ'ত; একবার আমেদ খাঁ ফাঁকা গোলে সুট না ক'রে দলের খেলোরাড়কে বলটি পাদ করার একটা অবধারিত গোলের স্থােগ নষ্ট হয়; আর একবার গোল-রক্ষককে অসহায় অবস্থায় দূরে ফেলে রেখে যথন কাটি গোলের মধ্যে বিনা বাধায় চুকছে সেই সময় অপ্রত্যাশিত ভাবে সার্ভিদেস দলের একজন খেলোয়াড় প্রায় গোল नाहरानत छेभत (थरकहे वनिष्ठ (वत क'र्द्रत (मग्र) (मिन ইষ্টবেঙ্গল দলের সাফল্যের মূলে ছিল দলের প্রভ্যেকটি (थालाशार्इत मरनांवन, (थलाय अयुनार्छ किन, मर्द्वानित আক্রনণভাবের থেলোরাড়দের ক্রীড়াচাতুর্য। গত ৮ বছরে मनिएक नीग-भीत्छव (थनाव मनगंड माकना প্রতিষ্ঠা করতে বাইরের থেলোম্বাড়রা প্রভূত সহযোগিতা করেছেন। বিশেষ ক'রে গত ছ'বছর আক্রমণভাগের পাঁচজন বাইরের খেলোয়াড এবং রক্ষণভাগের ৩া৪ জন বাইরের থেলোয়াড়দের সহযোগিতা ভিন্ন এতথানি দলগভ সাক্ষ্য व्यक्त नगरत मुख्य ह'ल ना ; तम कथा हेहरवलन क्रार्ट्य कर्जुभक्रमश्म वृक्षाण भारतिहासम वरनहे जाता वाधिक সংখ্যক বাইরের নামকরা বাছাই ফুটবল খেলোরাভ সংগ্রহে উৎসাহিত হয়েছিলেন। তাঁদের সফল প্রচেষ্টার আৰু দলের সমর্থকেরা আনন্দিত হয়েছেন। যারা দলের সভা অথবা সমর্থক নন, তাঁরাও দলের খেলোয়াড়দের ক্রীড়াচাত্র্য্য স্বীকার করতে দ্বিধা বোধ করেন না। ইষ্টবেষণ ক্লাবের এই দুৰ্গত জন্মাভের মধ্যে বাইরের নাম করা খেলোয়াড-গণ ফুটবদ খেলায় তাঁদের কৃতিত্ব এবং প্রাধান্ত ক'লকাতার মাঠে স্থপ্রতিষ্ঠিত ক'রে স্বদেশে ফিরে যাবেন, স্বনেকে এখানেই কিছুকাল থেকে যাবেন। ক'লকাভায় বাইরের খেলোয়াড়দের আগমনের পথ সংজ ক'রে তাঁরা সভ্যই ভবিশ্বৎ বংশধরদের ভাগ্য উচ্ছণ রেখে গেলেন। অক্সান্ত ক্লাবের বাইরের থেগোমাড়রা দলগত সাফল্য অর্জন করতে नक्म इ'निन वटि किंड अब क्या थूर दिनी इ किंडांब कांत्र তাদের নেই; অত সহজে বালাণী লাতির চৈতক্ত উদর हर्द ना ।

নব-প্রকাশিত পুস্তকাবলী

আমরেক্র বোব প্রণীত উপস্থান "দক্ষিণের বিদ"— ६ পরিমল মুখোপাধার প্রণীত উপস্থান "পটভূমি"— ২ মধুসন চটোপাধার প্রণীত উপস্থান "ভোমারই হউক জয়"— ২৮ মরকুক ভটাচার্য প্রণীত প্রথম ভাগ "ছবি ও ছড়।"—॥ ৮ কাশিক বন্দ্যোপাধার প্রণীত গর-শ্রন্থ "আজ-কাল-পরগুর গর"— ২ বর্ষণান চটোপাধার প্রণীত উপস্থান "ছন্দ পত্তন"— ২ বিজ্ঞাতিরিক্রনার বন্দ্যোপাধার প্রণীত প্রথম ভাগ "মজার বই"—॥ ৮ চিত্রভামু প্রণীত কাব্য-গ্রন্থ "করেকটি কবিতা"— ৮০ বিজ্ঞান শ্রার প্রণীত সম্পর্ভ "প্রশীমের অবেন্দ্র"— ১০ বিরেন দাশ প্রণীত উপস্থান "আরো দূর প্রশ্ — ২ ৮ ভটাচার্য প্রণীত উপস্থান "সভ্যতার রাজপ্রে"— ২

থীপঞ্চানন ঘোষাল প্রণীত উপজাস "ছই পক্ষ"—২।• খীকালীকিঙ্কর সেনগুপ্ত প্রণীত কাব্যগ্রন্থ "দিশারী কপোত"—২১ স্থাজিতকুষার নাগ প্রকাশিত "নবজাতক"—১/• খীপারিমল গোষামী প্রণীত গল-গ্রন্থ "মারতে লেকে"—৪১ খীপিবরাম চক্রবর্তী প্রণীত "মামার লেগা"—৪৪•,

"ভূত ও অভূত"—সা•

শ্রীন চৌধুরী অনূদিত উপস্থাস "ক্রডিন"—৩ শ্রীজগদিন্দু বাগচী সম্পাদিত "ক্রিউনিস্মৃ"—২4• পরেশকান্ত সকোপাধাার অনুদিত উপস্থাস

"কাডিনালের প্রণন্ধিনী"—থা•

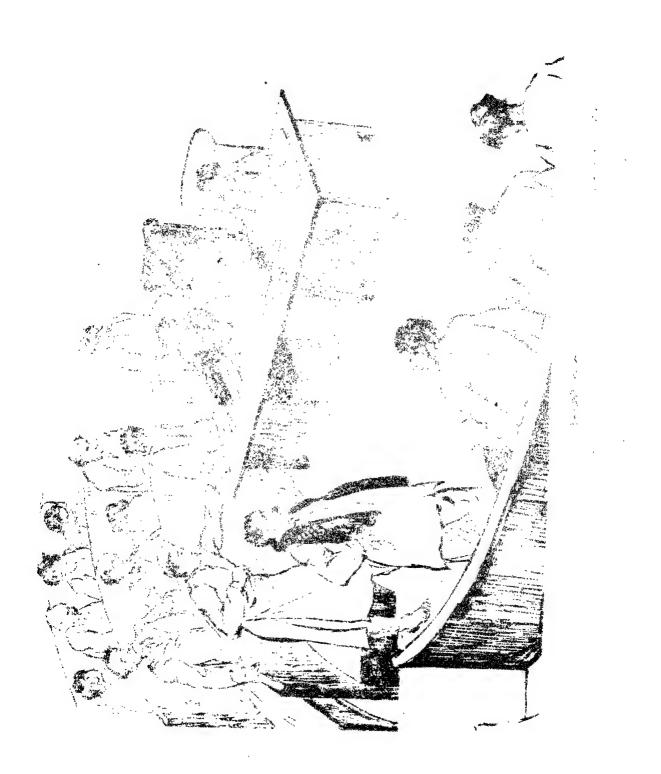
শ্ৰীকুমারেশ যোষ প্রণীত উপস্তাদ "ভাঙাগড়া"—-২॥•

এইচ-এম-ভির শারদ-অর্ঘ্য

এ মাসের উল্লেখৰোগ্য অবদান বাংলার ছর জন বিশিষ্ট শিল্পীর কণ্ঠে বিহুক্বির শরৎ বন্দনার তিনখানি রেকর্ড। প্রন্ত্যেকখানি গান রবীশ্রশীতি-খ্যাত শিলীর কঠে মুর্ব্ত হয়ে উঠেছে। N 31267 রেকর্ডে পক্ষজ মলিকের কঠে "আমার রাত পোহাল শারদ আনতেব সলে" শীমতী হুধা মুখোপাধ্যায়ের কঠে "ওগো শেফালী," N 31265 রেকডে হেমস্ত মুখোপাধ্যায়ের কঠে "আজি শরত-তপনে," প্রভাত স্বপনের সঙ্গে শীমতী ফু**ঞ্জী ভ বোবের কঠে "মে**বের কোণে রোদ হেসেছে," N 31266 রেকর্ডে সন্তোব সেনগুপ্তোর কঠে "কার বাঁণী নিশি ভোরে"র সঙ্গে শ্রীমতী ইলা মিত্রের কণ্ঠে "ভোমার মোহন রূপের" যে অনব্য 'প্রকাশ ভংগিমার স্পষ্ট করেছে তা সকলেরই ভাল লাগবে। কুমার লচীন দেববর্মনের ছু'ৰানি আবাধুনিক গান "ৰুলিয়া কুকুম দাজ" ও "আজো আকাশের পৰ বাহি" (Priono) শিল্পীর মমতা ভরা কঠের পূর্ণ অভিব্যক্তি। বাণী চিত্রের প্লে-ব্যাক শিক্ষী কুমারী গীতা রায় (বন্ধে) ভূ'ধানি পল্লীগীতি N 31257 রেকর্ডে পরিবেশন করেছেন। শীমতী শুশ্রীতে ঘোষের প্রীতি উচ্ছন কঠের "চন্দ্রাবলী সাথে যাপি" ও "গুনি তিরন্ধার কামু" (N 31250) কীর্ত্তন গীতি হু'বানি ভাবামুভূতিমর অক্সন্তম শ্রেট অবলান। "আমি ডেলি প্যাদেঞ্জার"ও "বৌ একটা চাই" N 31262 রেকর্ডে পরিবেশিত কৌতুক গীতি তু'খানি রচনা ও পরিবেশনা N 31261 রেকর্ডের চু'থানি রবীন্দ্রণীতি "কোন খেপা শ্রাবণ" ও "আজ ধানের থেতে" শিল্পীর গৌরবময় পরিচয়ের নিলপন। তরণ বন্দোপাধ্যায়ের "পুজোর ছুটি" N 31258, জগন্ম মিতের "তুমি তো জান না" ও "আমার দেশের" N 31265 এবং কুমারী বাগা বোবালের N 31264 রেকর্ডে আখুনিক গানগুলিও ভাল হরেছে। 'মহল' বাণী চিত্রের ঘু'থানি গানের স্থর N 31263 রেকর্ডে বেহালা চিশ্রে পরিবেশন করেছেন পরিতোধ শীল, ক্লারিওনেটের মাধ্যমে "বর্গাত" বাণাচিত্রের ত্ব'থানি জনপ্রিয় গানের মন্ত্রগীতি N 31260 রেকর্ডে অপ্রচার করেছেন শিল্পী রাজেন সরকার। শিল্পী সভা চৌধুরী N 31283 রেকর্ডে যে আধুনিক গান ছু'টি পরিবেশন ক'রেছেন, ভাব বাঞ্চনার দিক থেকে, রচনায় ও হুরে তা নুতনত্বের দাবী ক'রতে পারে। আঞ্চকের বাংলার আর্তনাদ মুর্ত হরে উঠেছে শিল্পীর কঠে। শিলী প্তক্ত মল্লিক ও উৎপলা দেনের P 11911 রেকর্ডে ছু'থানি গান—ক্ষণকালের গান দিয়ে চিরকালকে বাঁধবার সার্থক প্রকাশ। শিলী কুঞ্চল দে (অন্ধ্যার) N 31267 রেকর্ডে মধুর উদান্ত কঠে বিশ্বজননীকে জাগাবার আহবান জানিরেছেন। শিল্পী কুমারী যুখিকা রায় .N 31281 রেকর্ডে যে আব্দুনিক গান ছু'থানি উপহার দিয়েছেন—কণ্ঠমাণুরীমার তা অনবস্তু। শিল্পী শীষতী কমলা (ঝরিয়া) N 31270 বেকটে বৈক্ষৰ সাহিত্যের ছু'টি অনুস্যা রত্ম—বিভাগতি রচিত "কি কহবরে সথি" ও জানদাস রচিত "কন কানছে পরাণ পিরা" ভীতন ছু'থানি স্থমিষ্ট কঠের দরদভর। অবভিব্যক্তি দিরে থেকাশ করেছেন। শিলী স্থরদাগর জগন্ময় মিত্র N 31280,"বাসর"ও "সমাধি"—মিলন ও বিরুষ্ জীবন ও মৃত্যু—দিয়ে রচা চু'থানি আধুনিক গানকে মধুরতম ক'রে পরিবেশন করেছেন। শিল্পী বেচ় দত্ত N 31282 রেকর্ডে ^{তার} উলাভ কঠের ঝংকারে ছ'থানি আধুনিক গানকে রূপ দিয়েছেন। শিল্পী সন্তোব সেনগুপ্ত N 31278 তার মধুর কঠে "এই ^{পার} ভাঙা" ও "জীবনে যে দীপ" গান ডু'থানি দিয়ে এবারের শারদ-অর্থা সাজিয়েছেন। শিল্পী মীনা কাপুর N 31234 "ডোমার চরণ পরশ ছর্গে" আবুর "তুমি চলে যাবে জানি" মধুক্র। কঠের দরদী পরিবেশনে মধুরতম হয়ে উঠেছে এই আধুনিক ছু'থানি গান। *আ*াষোকোন ^{দ্রাব} N 31285-92 আটখানি রেকর্ডে ধবি ব্যিন্সচন্দ্রের 'চল্রশেখর' উপস্থাদের রেকর্ড-নাটক রূপ প্রকাশ করেছেন। প্রেষ্ঠ শিল্পী সমন্বরে নাটকটি <equation-block> छेপভোগ্য হয়েছে।

मन्नापक—श्रीकनीसनाथ यूट्थानाचाय **व**य-व







অগ্রহার প্রবিশ্বর

প্রথম খণ্ড

অষ্টত্রিংশ বর্ষ

ষষ্ঠ সংখ্যা

यरानी गारन त्रवीत्मनाथ

অধ্যাপক শ্রীকালিদাস নাগ

১৯ • ৫ সালের বঙ্গ-ভঙ্গ ও তৎপ্রস্ত 'বদেশী আন্দোলন' তথু বাঙালীদের কাছে নয়, সারা ভারতের মাসুদদের কাছে এক চিরন্তন প্রেরণার উৎস হয়ে আছে। এ যুগে রবীন্ত্রনাথ শুধু কবি-সাহিত্যিক ন'ন তিনি একাধারে রাষ্ট্রনৈতিক নেতা, অর্থনৈতিক ও সমাজনৈতিক মন্ত্রগুরু ; তার "বদেশী-সমাজ" অপূর্বে মণীবা ও মৌলিক্তায় ভরা ও বঙ্গ-ভঙ্গের আগেই ১৯০৪ সালে প্রকাশিত। সে প্রবন্ধটি আজও তর তর করে আমাদের পড়া উচিৎ, কারণ মহাস্থা গান্ধীর শেষ পঞ্চায়েৎ-তন্ত্রের পূর্বহাভাষ তার মধ্যে পাই : যেমন, অহিংস প্রতিরোধ বা Passive Resistance দক্ষিণ আফ্রিকার জরবুক্ত হবার আগেই ১৯০৮ সালে রবীন্দ্রনাথ লিখেছেন তার "প্রার্শ্চির" নাটক (বৈশাধ ১৩১৬)—মত্যাচারী রাজা অতাপাদিতোর বিরুদ্ধে ধনপ্রর বৈরাগীর দলের সভাগ্রন ! গণদেবভার मत्त्र माकार পরিচর হর রবীক্রনাথের এই गুগেই। অগণ্য জনপ্রবাহ डांदि माथात्र करत्र शर्ट्क डिटिंट्स, अभिद्र हरनह्स - अपि डांत्र मूर्थ लाना গল নয়, আমাদের চোখে-দেখা ঘটনা। জনসাধারণের কঠে কঠে তথন তর্মিত হরে উঠেছিল রবীন্দ্র-সঙ্গীত। তারও বিশ বছর আপে "রবিচ্ছায়া"র জাপা অল্প কয়েকটি স্বদেশী গান ১৯০৫-৬ সালে যেন জাতীয়

সঙ্গীতে বক্সা ডাকিলেছিল। রবীন্দ্রনাথের প্রায় সমবয়সী দ্বিজেন্দ্রগাল রায় থেকে অতুলপ্রদাদ, রজনীকান্ত প্রভৃতি ভক্তণ স্থর-লিল্লীদের অথ্যেও ডালি ভরে উঠেছিল সে যুগে, যথন শ্রীক্ষরবিন্দ ও তাঁর দলের বিচারের মধ্যে বন্দীরা গোয়ে উঠ্ত দেশমাত্কার বন্দনা গান; উলাসকর দণ্ডিত হয়েই আদালভের মধ্যে গেয়ে উঠেছিল—

> "দার্থক জনম আনার জন্মছি এই দেশে দার্থক জনম মাগো তোমায় ভালবেদে।"

রবীশ্রনাথের জাতীয় সঙ্গীত কত ফ'াসীর আসামীদের প্রাণেও প্রেরণা জুগিরেছিল সেকথা গবেবণা করে আমাদের জানতে হয়নি। বাংলার বুকে যেন হোমের আগুন জ্বলে উঠেছিল পঞ্চাশ বছর আগে (যেমন আজও অসছে, অর্দ্ধ শতাকী পরে আর এক অসচেছদের ফলে)।

১৯০০ সালে দেখি রবীল্রনাথ 'কলনা' ও 'ক্ষণিকা' শেষ করে নৃতন ছলে আত্মশ্রকাশ করছেন 'কথা ও কাহিনী'তে, 'নৈবেন্ডে'র আত্মোৎসর্গে (১৯০১) ও নবপর্যায় বঙ্গদর্শনে ও প্রবাসীতে তার অতুলনীর গভ রচনায় : 'আত্মশক্তি', 'ভারতবর্ষ' চরিত্রপূজা, লোকসাহিত্য, কণ্ঠরোধ, রাজা- প্রজা, সমূহ বংদশ, শিকা (জাতীর শিকা পরিবদ), তপোবন, ভারতবর্ষের ইতিহাদের ধারা—প্রভৃতি কত অমূল্য রচনা, সর্বোপরি বদেশী যুগের গভা মহাকাব্য গোরা (১০১৪-১৬)—যেটি মাদের পর মাস প্রবাদী থেকে কাড়াকাড়ি করে আমরা পড়েছি।

বিংশশতকের প্রথম দশকে যেন এক নৃতন রবীক্রনার্থ নৃতন বাণী
নিরেই আবিস্থৃতি হলেন। অথচ "এনাদি অতীতের" সঙ্গেও তার
গভীর ঘোগ আছে সেটি এবার বোঝাতে চেষ্টা করব, করেক দশক
পিছু হেঁটে গিয়ে। সেখানে কোথাও দেখা পাব তার অনেক ভূগেযাওয়া সহক্ষীদের, তার মন্থী দাদাদের, এমন কি তার পিতৃদেব
দেবেক্রনাথ ও তার অন্তরক্ষদের। অনেক রক্ষ আলোড়ন ও পরিবর্ত্তন
যীকার করেও দেখব এক বিরাট অপরিবর্ত্তনীর অবদান বাংলার ও
বাঙালী জাতির—যার ফল ভোগ করছে আজ সারা ভারত—হয়ত
সারা এসিয়া।

'ভাই রবীক্রনাথের কাব্য নাটকাদির ধারা ছেড়ে খনেশী ভাবধারাটিকে অনুদরণ করে থাবো 'জাতীয় সঙ্গীত' প্যায়ের গানগুলিকেই প্রধান অবলম্বন করে। রবি-বাউলের আবিজ্ঞাব আমাদের খনেশী গানের তথা রবীক্র সঙ্গীতের বিবর্তনে কম রহস্ত ভরা ইতিহাদ নয়।

রবীক্রনাথের জন্ম বিচিত্রকীর্ত্তি "ঠাকুর পরিবারে"; রবীক্রপ্রতিন্তার ফ্রেণে ও গঠনে দেই পরিবারটির অবদান নিয়ে অনেক
দিন ধরে অনেক কিছু লেগা হয়েছে; হয়ত একটু বেনী করেই লেগা
হয়েছে বলে শিল্পী রবীক্রনাথ নাকি তার জীবনী-লেথককে অফুযোগ
করেছিলেন যে দেটা শেন তার জীবনীর চেয়ে 'প্রীন্স্ ছারকানাথ
ঠাকুরের পৌত্রের জীবনী'ই বেলী মনে হয় (অন্ততঃ প্রথমদিকে!);
হয়ত কবি রবীক্রনাথ সাবধান করাতে চেয়েছিলেন শুধু ক্লপঞ্জী
আলোড়নের বিপকে! তার অরচিত 'ছেলেবেলা' ও 'জীবনখুতি'
আমাদের কাছে অম্লা উপাদান; অথচ অক্ত মালমণলা সংগ্রহের
কাজেও নাম্তে হবে—কারণ অনেক তার নষ্ট হয়ে গেছেও দাঁল যাবে;
ন্তন চোথ নিয়ে কাঙ্গে নাম্তে না পারলে ন্তন উপাদান মেলাও
কঠিন ব্যাপার।

তার জন্ম, শৈশব ও কৈশোর কাল কেটেছে দেশের এক বিষম যুগ-সহটে (১৮৫৮-১৮৭৮); প্রথম জাতীয় যুদ্ধ (mutiny) শেষ হরেছে রক্ত-বস্থায়; ইই ইতিয়া কোম্পানীকে উঠিয়ে বৃটিশ জাতি তার পার্লামেন্ট ও সাম্রাজ্ঞী শোষণা মারকতে (Queen's Proclammation) শাসন ক্ষম করেছে। এত বড় বিপ্লব কেন ও কি ভাবে হয়ে পড়ল তা বুমতে হলে রবীক্রনাথের পিতা ও পিতামহের যুগ পর্যন্ত দৃষ্টিপাত করতে হয়; কারণ নৃতন বাংলায় বাধীনতার আক্রোলান মানব-বাধীনতার শ্রেষ্ঠ গুল্ক রামমোহন রায়ের চিন্তা ও কর্ম্মধারার সকেও মুক্ত। প্রথম সিপাহী বিজ্ঞাহ উত্তর পশ্চিমে নয়, ব্যারাকপুরে (১৮২৪)—সেটা ভোলা চলে না। যাহোক ১৮৫০ থেকেই তুমুল তর্ক চলছিল বে ভারত থেকে কোম্পানীর রাজ্য ওঠা উচিৎ। সেই সময়েই আবার দেখি অনেকের সঙ্গে Karl Marx ব্রিটাশ শোবণ-নীতির কঠোর সমালোচনা

হুকু করে দিয়েছেন। এদিকে ১৮৫১ (সেপ্টেম্বর) দেশহিতারী সভা (The National Association) ছাপিত হল; মহৰি দেবেল্ডনাপ ঠাকুর ভার প্রথম সম্পাদক ও তাঁকে সাহায্য করতে এলেন প্রদন্তমার ঠাকুর প্রভৃতি এবং Kirkpatric নামে ফ্লচ সাহেব। এখানেও রবীজ্র-পিতামহ দারকানাবের নীতির অনুদরণ; অর্থাৎ ইংরাজকে হটাতে হলে ইংরেজ-সহকন্দ্রী নিতে হবে, যেমন George Thompsonকে এনে রামগোপাল খোষ প্রভৃতি কন্মীদের বিলাভ থেকে দারকানাথ গড়ে তুলেছিলেন। ১৮৫৪ জামুয়ারী পর্যান্ত অর্থাৎ ছু'বছরের উপর সম্পাদকের কাজ করে দেবেন্দ্রনাথ পদত্যাগ করেন ও রাকা প্রতাপ সিংহের আতা ঈশব্রচন্দ্র সিংহ দেশহিতার্থী সভার সম্পাদক হন। তার আগেই দেবেন্দ্রনাপের অচেষ্টায় মাজাজে (এবং হয়ত অক্সত্র) National Associationএর শাধা অভিটিত হয়েছিল এবং রাধাকান্ত দেব, প্রসন্নকুমার ঠাকুর প্রভৃতি এই সভার সঙ্গে British Indian Associationএর কাজের সংযোগ রেখে চলেছিলেন। এই সভা থেকে পার্লামেণ্টে ভারত-শাসন সম্পর্কে এক স্বারকলিপি (memorial) পাঠান হয়, যার লিপিকার ছিলেন হয়ত হরিশচন্দ্র মুখোপাধ্যায় (পরে Hindoo Patriotএর স্থনামধ্য সম্পাদক)। হরিশচন্দ্র ও স্থাদ প্রভাকর প্রতিষ্ঠাত। ঈশরচন্দ্র গুণ্ড ভত্বোধিনী সভার সদস্য ও দেবেন্দ্রনাবের অন্তরঙ্গ সহক্ষী ছিলেন। ১৮৫৯খঃ দেখি দেবেল্রনাথ কেশবচলু সেনকে নিরে ব্রাদ্ধ সমাজের কাজে আন্থনিয়োগ করেছেন। রামমোহন ও দারকানাথের মত দেবেল্রনাথও বিশ্বাস করতেন যে সর্ববিদ্যান ধর্মের ভিত্তিতে মিলিত হলে ভারত-বাসীদের পক্ষে স্বাধীনতা অৰ্জ্জন করা স্থাম হবে এবং এক্য-মঞ্জেই স্বাধীনতার সাধনা ভারতে কয়যুক্ত হবে। তাই দেবেক্রনা**ব** সে যুগে শাষ্ট লিখেছিলেন:—"যদি বেদান্ত প্রতিপান্ত ত্রাহ্মধর্ম প্রচার করিতে পারি, তবে সমুদায় ভারতবর্ণের ধর্ম এক হইবে, পরম্পার বিচ্ছিন্ন ভাব চলিয়া ঘাইবে, সকলে ভ্রাতৃভাবে মিলিত হইবে। তার পুর্বেকার বিক্রম ও শক্তি জাগ্রত হইবে এবং অবশেবে সে স্বাধীনতা লাভ করিবে .." ("দেবেক্রনাথের আল্পজীবনী") ; এই মহান উদ্দেশ্য সাধন-করে তিনি Indian Mirror (আগন্ত ১৮৬১) ও পরে National Paper অভিনিত্ত করেন।

তরা অক্টোবর ২৮৫৬—১৫ নতেম্বর ১৮৫৮ অর্থাৎ ছু'বছর মহর্ষি দেবেক্সনাথ হিমালয়ের নানা স্থানে ধ্যানধারণার কাটিয়েছিলেন। সেন্গে তাঁর এক্ষনাধনার সঙ্গে স্থানীনতার সাধনাও মিলেছিল বলেই তার পরিবারে —বিশেষ তাঁর গুণী পুত্র ছিজেক্সনাথ (১৮৪৯-১৯২৬), সত্যেক্তানাথ (১৮৪২-১৯২৬), জ্যোতিরিক্সনাথ (১৮৪৯-১৯২৬) ও ক্ষা স্থাক্সনারী (১৮৫৭-১৯৩২), প্রভৃতির প্রাণে ও রচনার সেই উদার আদেসিকতার গভীর পরিচর পাই। এঁদের রচিত বহু গানে দেখি অধ্যাত্ম অমুভূতির সক্ষে মিশে আছে স্থাধীনতার প্রবল আবেগ এবং ছুইএর চরম সমন্বর ও পরাকাটা মিল্বে রবীক্সনাথের এক্ষ সঙ্গীত ও স্বদেশী গানে।

মিউটিনির বছরেই দেখি "বাধীনতা হীনতার কে বাচিতে

চার রে" গালের রচরিতা রঙ্গলাল কক্ষোপাখ্যারের (১২০৪-৯৪) "পৃষ্মিনী" প্রকাশিত হ'ল। Col. Todd-এর রাজপুত কাছিনী থেকে এক নূতন ভাবস্থোত বাংলা সাহিত্যে প্রবেশ করতে ফ্রু হ'ল। রঙ্গ-লালের 'কর্মদেবী' ও মধুসুদনের 'কুফকুমারী' নাটক থেকে জ্যোতিরিল্রের 'সরোজিনী' ও তাতে রবীক্রনাথের 'অসজল চিতা' গানটি সেকালের লোকেদের মনে কী উদ্দীপনা এনেছিল আমরা হয়ত খাল বুঝতে পারব না। সংগ্রাম করে রক্তদানে স্বাধীনতা অর্জ্জন করতে হবে — এ শিক্ষা যেন শিশু রবীশ্রনাধ সহত্র আবহাওয়া থেকেই পেয়েছিলেন। তত্ত্বোধিনী পত্রিকার যুগ ও তার প্রবন্ধগুলি নিয়ে আরো মৌলিক আলোচনা দরকার; রায়ৎ প্রজাদের শুধু স্বাধীনতা কাড়া নয়—তাদের চাদের জমি ও পেটের ভাত পর্যান্ত লুট করার ফলে দেশের অবস্থা কী শোচনীয় হয়েছিল তার বর্ণনা তত্মবোধিনীর লেখাতে প্রথম পাই-ও পরে मक्षीवहन्त्र ७ विद्याहन्त्र डाएम् वन्ननर्गत बारला प्राप्त कृतक अवस्त्र ছাপেন। ইতিমধ্যে দীনবন্ধুর নীলদর্পণ ও মধ্যদনকুত তার ইংরেজী अञ्चल अवः भाक भाक Rev Long-माहित्वत क्षित- এই भव বৈথবিক বটনা বালালীর জীবন ও সাহিত্যকে সৌথানতার অভিশাপে মুক্ত করে বিখের দরবারে পাকা আনন দিতে চলেচে রবীক্রনাথের শৈশবে। ১৮৭০।৭৭ সালের তার প্রথম স্বাক্ষরিত ছটি কবিতাই-'হিন্দুমেলার উপহার' ও Lytton দরবার-কান্য হেমচন্দ্রের ভারত স্পীত (১৮৭০) প্রভারাবিত। হেমেল্লাথ, রাজনারায়ণ বস্থ ও নবগোপাল মিত্রের উৎসাহে এই হিন্দুমেলা (১৮৬৭) সে যুগের বেঠ জাতীয় প্রতিষ্ঠান হয়ে উঠেছিল: দেকালের দীপ্ত বর্ণনা নৌভাগাক্রমে লিপিবছ করেছেন রবীন্সনাথ ও জ্যোতিরিন্সের সহপাসী কবিবর নবীনচন্দ্র দেন (১৮৪৭-১৯ - ৯); ইনি এড়কেশন গেছেটে (১৮৬৬-৬৮) বদেশী কবিভালিখতে হুকু করেন: হেমবাবুর ভারত্যক্ষীত অবার (নবীন সেন) যদেশ প্রেমবাঞ্জক বৃত্ত কবিতা প্রকাশের পর প্রকাশিত হয়।" তাঁর পলাশির যুদ্ধ (১৮৭৭) তরণাদর মনে খুব নাড়া দিয়েছিল। নবীনচন্দ্র 'আমার জীবনে' গ্রুতকটী নিপুৎ ছবি এ'কে গেছেন রবীন্দ্রনাপের— ১৫ বছরের বালক কিন্তু দেখতে যেন ১৮।১৯—"বৃক্ষতলায় যেন একটি বৰ্ণ-মুৰ্ব্তি স্থাপিত হইরাছে তেতিনি পকেট হইতে একটি নোটবুক বাহির করিয়া করেকটি গীত পাহিলেন ও কয়েকটি কবিতা গীত-কঠে পাঠ করিলেন। মধুর কামিনী-লাঞ্ন কঠে এবং কবিতার মাধুর্ঘো ও ক্টোৰুপ প্রতিভায় আমি মুগ্ধ হইলাম ... অক্ষচল্র সরকার মহাশয়কে বলিলাম যে আমি নেসানাল মেলায় গিয়া একটি অপূর্বে নব্যুবকের গীত ও কবিতা শুনিয়াছি এবং আমার বিখাস হইরাছে যে তিনি একদিন একজন প্রতিভাসম্পন্ন কবি ও পান্নক হইবেন।" আবার ১৮৯০ সালে বাণাঘাটে দেখা: 'কুষ্টিরা ঘাইবার পথে একদিন আতে নিমন্ত্রিত হইরা ১০টার টেপে দয়া করিয়া রাণাঘাটে আমার সঙ্গে সাকাত করিতে ক শান্ত, কি হুন্দর, কি প্রতিভাষিত দীর্ঘবয়ব! উচ্ছল গৌরবর্ণ; কুটোলুধ পদ্ম-কোরকের মত দীর্ঘ মুধ। মন্তকে মধাভাগ-বিভক্ত

কৃষিত ও সজ্জিত অধরকৃষ্ণ কেশশোভা, অলকা শ্রেণিতে সজ্জিত হবৰ্ণদর্শণাজ্জন ললাট। অমরকৃষ্ণ গুক্ষ ও থকা খালা শোভায়িত মুগমগুল।
কৃষ্ণ পক্ষমুক্ত দীর্থ ও সন্জ্জন চক্ষ্, কুলর নাসিকার মাজিত হ্ববর্ণের
চণমা—মুধারবর বেখিলে চিত্রিত খুঠের মুধ মনে পড়ে। পরিধানে
সাদা ধূতি, সাদা রেশনী পিরাণ ও রেশনী চাদর, চরণে কোমল
পার্কা—আমি তাহাকে অভ্যর্থনা করিয়া গৃহে আনিলাম। আমার
তথন বিভাপতি ও চঞাবাদের মিলনের কবিতাট মনে পড়িল, "ক্রহ্ট্
উৎক্তিত ভেল"।

দেশপ্রতির উন্নাদনা তথন দেশে কোখাও নেই। রঙ্গলালের 'খাধীনতা-হীনতার কে বাঁচিতে চায়রে' আর তারপরে হেমচন্দ্রের "বিংশতি কোটি মানবের বাদ" কবিতার দেশমুক্তি-কামনার স্থর ভারের পাথির কাকলির মত শোনা যায়। হিন্দুমেলার পরামর্শ ও আয়োজনে আমাদের বাড়ির দদলে তথন উৎসাহিত, তার প্রধান কর্মকর্তা ছিলেন নবগোপাল মিত্র। এই মেলার গান ছিল মেজদীনার লেখা "জয় ভারতের জয়", গণদাদার লেখা "লয়্রায় ভারত যণ গাইব কি করে", বড়দানার "মলিন মুখচন্দ্রমা ভারত তোমারি।" জ্যোতিদাদা এক গুপ্ত সভা স্থাপন করেছেন একটি পোড়ো বাড়িতে— তার অধিবেশন, ঝগ্রেদের পুঁশি, মড়ার মাথার পুলি আর পোলা তলোয়ার নিরে তার অমুঠান, রাজনারায়ণ বহু তার প্রোহিত; সেথানে আমরা ভারত উদ্ধারের দীকা পেলেম।

এই সকল আকাজ্জা উৎসাহ উচ্ছোগএর কিছুই ঠেলাঠেলি ভিড়ের মধ্যে নয়। শান্ত অবকাশের ভিতর দিয়ে ধীরে ধীরে এর প্রতাব আমাদের অন্তরে প্রবেশ করেছিল। রাজসরকারের কোভোগাল, হয় তথ্ন সুহুর্ক ছিল না, নয় উদাসীন ছিল, তারা সভার সভ্যদের মাধার ধুলি ভঙ্গ বা রসভঙ্গ করতে আসেনি।

"আমরা তথন ভাষাকে একটি গান গাইতে অনুরোধ করিয়া হারমনিকুট্ ভাষার সামনে দিলাম—তিনি একটি পদা কিছুক্ব টিপিয়া স্বটি
মাত্র স্থির করিয়া যন্ত্র ভাড়িলেন; ভাষার পর একটি নৃতন কীর্ত্তন গান
গাহিতে লাগিলেন:—

"এস এস ফিরে এস !
বঁধুহে ফিরে এস
আমার কুধিত ভূষিত ভাপিত চিত
নাথ হে! ফিরে এস"

"আমার মনে হইতে লাগিল…বংশীবিনিশিত মধ্র কণ্ঠ এইবার গৃহ
পূর্ব করিরা ভাদ ভিন্ন করিরা আকাশ ম্থরিত করিতেছে। আবার বেন
শিশুর কোমল অক্ট কণ্ঠের মত করে কোমল মধ্র শার্শের মত অমুভূত
হইতেছে। কি মধ্র ম্থভঙ্গী। গানের ভাবের সঙ্গে সঙ্গে যেন ম্থ ও চছু
অভিনয় করিতেছে। গানের করণ ভজিরস যেন তাহার অধ্য হইতে
গোম্থী-নিঃস্ত জাহুবীর পবিত্র ধারার মত প্রবাহিত হইতেছে। আমি
তথন রৈবত্তক ও কুরক্ষেত্রের কুক্পেশ্রমে বিভার। গীত শুনিতে শুনিতে

মামি আত্মহারা হইলাম। আমার কঠোর হৃদরও গলিল। গানের পর গাহার করেকটি কবিভার আাহৃতি করিলেন। রবিবাবু একাধারে কবি ও অভিনেতা; তাহার আবৃত্তির তুলনা নাই·····।"

১৮৭২ সালে যে রবীক্রনাথ দীনবন্ধুর' জামাই বারিক' লুকিরে পড়ছেন এবং বহিমের বঙ্গদর্শন ও অক্ষয় সরকারের 'প্রাচীন কাব্য-সংগ্রহ' নিয়ে মেতে আছেন তিনি ১৮৭৬ ও ১৮৯৩ সালে কবিবর নবীন সেনের চোথে কেমন প্রতিভাত হয়েছিলেন তার আভাব পাওয়া গেল। 'সোনার তরী'র কবি তার কারেমি আসন পেয়েছেন দেটি দেখে গেছেন ঋবি বঙ্কিমচন্দ্র (মৃত্যু ১৮৯৪)—যিনি ১৮৮০-৮১ সালেই ভবিক্তবাণী করেছিলেন রবীক্রনাথের অমরত্বের। রবীক্রমাথের গান অনেকেই শুনেছেন সেকালে; কিন্তু নবীন সেনের মতন দরদী ভাষায় প্রকাশ করে যেতে পারেননি তাদের অমুভূতি।

•রবীক্রনাথের জাতীয় সঙ্গীতের বিকাশধারা এবার অন্সরণ করা যাক্। তাঁর সব চেরে কাঁচা কাব্য রচনা ১৩-১৮ বছর বয়সের—কবিতা— যাকে তিনি নিজে নাম দিয়েছেন "লৈশব সঙ্গীত"। সে সময়ে থাটি জাতীয় গান হয়ত কিছু লিখেছিলেন—রক্ষা পেয়েছে মাত্র ছট; (১) জ্যোতিরিক্রনাথের পুরু বিক্রম নাটকের মধ্যে—খাখাজ— একতালা—(বিতীয় সংস্করণে মুক্তিত ১৮৭৪-৭৯)

'একপুত্ৰে বাঁধিয়াছি সহস্ৰট মন এক কাৰ্ব্যে সঁপিয়াছি সহস্ৰ জীবন"

(২) বিলাত্যানার ঠিক পূর্বের (মাইকেলী রীভিতে ?) জয় জয়ৠী রাগিনীতে:

> "তোমারি তরে সঁপিসু দেহ তোমারি তরে মা সঁপিসু প্রাণ তোমারি তরে এ আঁখি বরবিবে এ বীণা তোমারি গাছিবে গান ॥"

এই গান গেরে কিশোর-কবি রবীক্রনাথ বিলাত যাত্রা করেন। এ গানের ভাবে ও হ্বরে আমরা তার দাদাদের খদেদী গানের অমুকরণ যেন লাই তান। মধুস্দন, ব্যারিষ্টার মনোমোহন ঘোষ ও সত্যেক্রনাথ ঠাকুর অস্তরঙ্গ বন্ধু ছিলেন ও সাইকেল জোড়াসাঁকোর দেবেক্র-ভবনে সমাদৃত অতিথি হয়ে বছদিন দেখা দিয়োছলেন তার কথা জ্যোতিরিক্র-দাধের জীবনস্থতিতে আমরা পাই।

১৮৬৭ সালে হিন্দু মেলা প্রতিষ্ঠার সঙ্গে সঙ্গে দেখি কবি বিজেঞানাথ ঠাকুর তার প্রসিদ্ধ খদেশী গান রচনা করেছেন:

> "মলিন মৃথ-চক্রমা ভারত ভোমারি দিবা রাত্রি ঝরিছে-লোচন বারি"

এ গান হিন্দু মেলার যেমন গাওয়া হত তেমনি মাইকেলের মেখনাদ— যথন নাট্যক্লপ পেল—তার অভিনরের আগে 'মলিন মুধ্চন্দ্রমা' কথনও সট কেশাল কথকক তিজক-কামেক করে গাওয়া হয়েছে। ১৮৬৮ হিন্দু মেলার দিতীয় অধিবেশনে দেখি মেজদাদা সভ্যেক্সনাথ ঠাকুর উপহার দিলেন দে যুগের শ্রেষ্ঠ খদেশী গান—খামাজ-মাডাঠেকার:

> 'মিলে সবে ভারত সন্তান এক তান মন প্রাণ, গাও ভারতের যশোগান,

—এ গান হাজার হাজার মাসুদের প্রাণে কী উদ্দীপনা জাগিয়েছিল তার পরিচর পাই আমর বিদ্মচন্দ্রের মস্তব্য: "এই মহানীত ভারতের সর্বত্র গীত হউক। হিমালয়-কন্দরে প্রতিধ্বনিত হউক। গঙ্গা যমুনা সিয়ু নর্ম্মণা গোদাবরী তটে বৃক্ষে বৃক্ষে মর্ম্মরিত হউক! পূর্ব-পশ্চিম সাগরের গঙীর গর্জনে মন্দ্রীভূত হউক! এই বিংশতি কোটি ভারতবাসীর হৃদয় যন্ত্র ইহার সঙ্গে বাজিতে পাকুক"। (বঙ্গদর্শন—চৈত্র, ১২৭৯)।

সেই বিছিমচন্দ্রই ক্রমণ বঙ্গদর্শনে কমলাকান্তের মাতৃবন্ধনা রচনা করে শেবে 'বল্দেমাতরম' ও 'আনন্দমঠের' ঋষি বছিমরাপে সারা জাতিকে এক নৃতন দীক্ষা দিয়েছিলেন; তার আগেকবি নবীনচন্দ্র ও হেমচন্দ্র এডুকেশন গেজেটে অদেশী গান ছাপতেন, যার মধ্যে ১৮৭০ সালের সর্বজন-বিদিত "ভারত সঙ্গীত" (আবণ ১২৭৭)—গানে না হোক আবৃত্তিতে—শীর্ষ স্থান অধিকার করেছিল। রবীন্দ্রনাথ তথন ১।১০ বছরের বালক মাত্র, তবু তার কাব্য-গীতির আদি পর্বের এই ভারত-সঙ্গীতের প্রভাব স্থান্তি—বিশেষ তার হিন্দু মেলার কবিতার। আরো কত ভুলে যাওয়া অদেশী গান যে রবীন্দ্রনাথকৈ অফুপ্রাণিত করেছিল তা'র নিদর্শন পাই হিন্দু মেলা সম্পাদক গণেক্দ্রনাথ ঠাকুর (১৮৪১-৬৯) রচিত গানের মধ্যে (বাহার—যৎ)

"লজ্জায় ভারত যশ গাইব কি করে পুটিতেছে পরে এই রছের আকরে আমরা সকলে হেখা হেলা করি নিজ মাতা মারের কোলের ধন নিয়ে যায় পরে ।

১৮৭৫-৭৬ সালের রাজনৈতিক ইতিহাস; জাতীয়-মহাসন্তার জন্মের ঠিক দশ বছর আগেকার কথা। বঙ্গদর্শনের প্রথম পর্ব্ব শেষ হয়েছে ও ভারতীর আবির্ভাবের প্রস্তুতি-পর্বব। ঠিক এই সময়ে অতি কুদ্র আকারে এক-থানি বই ছাপা হয়েছিল ঘেটি অনেকের কাছে অজানা—অথচ সেটি যেন সে বুগের জাতীয় ভাবের প্রতীকঃ (ছবছ নকল করে দিলাম)—

"জাতীয় সঙ্গীত"—(প্রথম ভাগ) খনেশামুরাগোদীপক সঞ্গীত-মালা। মূল্য ১০ আনা (উপ্টো পাতায়) National Song Book Part I Printed by G. P. Roy & Co. 21 Bowbazar Street (1876). etc; লেথক বা সম্পাদকের নাম না-ছাপা যে ইচ্ছাকৃত ভা'ম্প্র বোবা যায়; "বিজ্ঞাপন"টি উদ্ধৃত করি :—

এই "জাতীয়-সঙ্গীত" প্রচারের উদ্দেশ্য সহজেই বুঝা বাইবে । জনেকে এই সংগ্রহে সাহাব্য করিয়াছেন তজ্ঞ তাহারা সংগ্রাহকের (?)

কৃতজ্ঞতার পাতা। বদি এই প্রস্থারা অস্তত এক ব্যক্তিরও বদেশাসুরাগ উদ্দীপ্ত হর সংগ্রাহক কৃতার্থ হইবেন এবং সামাজিক ও বিশুদ্ধ প্রণায়-ঘটিত সঙ্গীত সকল সংগ্রহ করিয়া "জাতীর-সঙ্গীতের" অপর ভাগ প্রকাশ করিবেন। এই গ্রন্থ বিক্রয় ছারা কিছু লাভ হইলে তাহা কোন প্রকার জাতীয় উন্নতির নিমিত্ত বায় হইবে। কলিকাতা ৬ই ফাল্কন ১২৮২"।

"জাতীয় সঙ্গীত" বইণানিতে ১৮৭৬ সালে দেপছি অনেক প্রাতন সমস্তা ও ভাবের সমাবেশ, নীলকরদের অত্যাচার: "নীল বানরে সোনার বাংলা" ও 'হে নিরদর নীলকর, গান ছটি নীলদর্পণ নাটক থেকে স্থান পেরছে। তার সঙ্গে 'মলিন মুখ চলুমা,। 'মিলে সবে ভারত সন্তান', লজ্জায় ভারত যশ ইত্যাদি রবীল্রনাথের দাদাদের গান; হেমচন্দ্রের 'বাজরে শিক্ষা' (হয়ত শুধু আবৃত্তি নয় গাওয়া হত) 'প্রাণ কাঁদে বলিতে ভারতের বিবরণ' প্রভৃতি হিন্দু মেলায় গীত 'ট গান, (স্বর তাল নির্দেশ সমেত); গোবিন্দচল্ল রায়ের 'কতকাল পরে'ও 'নির্মান সলিলে বহিছ সদা' গান ছটি। তাছাড়া দেখি ছারিকানাথ গাঙ্গুগীর 'না জাগিলে সব ভারত ললনা' ও অপ্রকাশিত পর্যায়ে চারটি গান:

আছ দপ্ত শত বৰ্ণ নিজাগত এখনও জাগো জাগো মা ভারত' ইত্যাদি।

'নীলদর্পণ' নাটক ছাড়া আরো কিছু নাটকের ভিতর দিরে স্বদেশীভাব প্রচারিত হয়, ভা'র ৪ প্রমাণ পেশম 'ভারত মাতা, 'ভারতে যবন' 'বীর-নারী' 'প্রেক্স বিনোদিনী' ইঙাাদি নাটকের ভিতরকার গানগুলির উদ্ধৃতি থেকে। সব চেয়ে বিল্লয় লাগল আমার—যথন দেখলাম জ্যোতিরিক্স-রচিত 'সরোজনী' নাটকায় বালক রবীক্সনাথের সংযোজিত গানের করেকটা কলি এই 'জাতীয় সঙ্গীত' পুত্তিকায় (রাগিনী অহং একডালা) ভার উপর টীশ্লনী যথা 'ইংরাজী স্বরে গান করিতে হয়:—

ভাগরে জগৎ মেলিয়ে নমন
ভাগরে চল্রমা ভাগরে গগন
বর্গ হতে সব ভাগ দেবগণ
জলদ অক্ষরে রাথ গো লিখে।
শর্জিত যবন তোরাও দেপ্রে
সতীত্ব রঙন করিতে রক্ষণ
রাজপুত সতী আজিকে কেমন
সঁপিছে পরাণ অনল লিখে।

এই অংশটি দিয়ে গান ফুরু করে সম্পাদক অন্বায়াতে ফিরেছেন :--

'অল অল চিতা বিগুণ বিগুণ পরাণ সঁপিৰে বিধ্বা বালা' ইত্যাদি

৩-শে নভেম্বর ১৮৭৫ তারিখে 'সরোজিনী' প্রকাশিত হয় এবং ভার মধ্যে ১৪ বছর বরসের রবীক্স-রচনা এই গানটি ১৮৭৬ সালের 'জাতীর সঙ্গীতে' সগৌরবে স্থান পেরেছিল—এটি স্মরণীয় ঘটনা সন্দেহ নেই। তারও প্রায় ছবছর আগে পুরু বিক্রম (১৮৭৪) নাটকে জ্যোতিরিক্রনার্থ ১৩ বছরের বালক কবি রবীক্রনাথের গান 'এক স্ত্রে বাধিয়াছি' গানটি কুড়ে দিয়েছিলেন।

১৮৮৫ সালে রবীন্দ্রনাথ তার বন্ধু যোগেলনারায়ণ মিত্রের*
সাহচর্যে রবিচছায়া নামক প্রথম গীত-সক্ষিতা প্রকাশ করেন; তথন
দেখি ৭৮টি মাত্র গান জাতীয় সঙ্গীত বলে ছাপা হয়েছিল; ডা'র
মধ্যে একটি গান আজও শোনা যায়—(রাগিনী প্রভাতী একতালা)

"একি অক্ষকার এ ভারত ভূমি বৃঝি পিতা তারে ছেড়ে গেছ তুমি প্রতি পলে পলে ড়বে রসাতলে কে তারে উকার করিবে।"

কংগ্রেসের জন্ম-বৎসরে এগানের সার্থকতা আছে। এবপর রবীন্দ্রনাধ কতকগুলি ঘদেশী গান লেপেন, তার বেশীর ভাগই আমরা ভুলেছি বলে অপরাধ মনে হয়। তার মধ্যে তাল ও রাগের নির্দ্ধেণ দিয়ে বেরিয়েছিল;

- (১) দেশে দেশে অমি তব ছথ গান গাহিয়ে (বাহার কাওয়ালি)
- (২) কেন চেয়ে আছে গোমা (কাফি) (৩) আমার বোলোনা গাছিতে বোলোনা (সিফু) (৪) আনন্দধনি জাগাও (হাছির ফেরতা)।

১২৯১ (১৮৮৪) সালে ব্রহ্মোপাসনার জন্ম কবি (তথন তিনি আদি ব্রাহ্ম সমাজের সম্পাদক) লেখেন শোন শোন আমাদের ব্যথা" (মিশ্র দেশ-খাম্বাজ ঝাপতাল) এবং 'একবার তোরা মা বলিয়া ডাক' (ঝিঝিট) দ্বিতীয় গান্টি ১২৯২ (১৮৮৫) সালে রচনা করেন, জাতীয় সঙ্গীত বলেও গাওয়া হত : যেমন 'জন-গণ-মন'জাতীয় সঞ্চীতও ব্ৰহ্ম-সঞ্চীত বলে ১৯১১ মাঘোৎসবে গাইতে শুনেছি। ১২৯০ (১৮৮৬) সালে দাদাভাই নৌরজীর নেতৃত্বে কংগ্রেসের দ্বিতীয় অধিবেশন কলকাতার; তার প্রথম সাড়া পাই মহটি দেবেল্রনাথের সহস্রাধিক টাকা কংগ্রেস ফণ্ডে দেন—তা'ছাড়া রবীক্রনাথ রচনা করেন অধুনা স্থপরিজ্ঞাত কয়েকটি জাতীয় সঙ্গীতে (১) আমরা মিলেছি আজ মায়ের ডাকে (২) আগে চল আগে চল ভাই (বেহাগ); (৩) তবু পারিনে সঁপিতে প্রাণ (সিন্ধু ছাত্র সম্মেলনে কবি গেয়েছিলেন) ১২৯৫ (১৮৮৭)। 'আমরা মিলেছি আজ মায়ের ডাকে' কবি নিজে (রামপ্রসাদী হুরে) গেয়ে কংগ্রেদ মহাদভাকে ও সাধারণ শ্রোভাদের মাভিয়ে তুলেছিলেন; এ গান আবার ১৯০০ সালে আমাদের প্রাণে কত বড় প্রেরণা জাগিয়েছিল তা বদেশী যুগের লোকেরা সবাই জানেন! ১২৯২-৯০ সালেই (১৮৮৪-৮৬) आवात्र (पश्चित्रवीन्त्रनाच मन पिरत्र इन विक्रमहरन्त्रत 'वरम्प-মাতরম্' গানে ; সেটি নিয়ে আমি "পূর্ণিমা" পত্রিকার আলোচনা করেছি। বহিমচল্র প্রথমে মলার কাওয়ালীতে গানটি নাকি গাইভেম বা

গাওরাতেন; রবীজ্রনাথ হুর বদলে দেশ রাগে বন্দেমাতরম (প্রথমার্থক * ইনি সঞ্জীবনী পত্রিকার (২৭শে বৈশাথ—১২৯২) 'আমরা

হান সঞ্জাবনা পাত্রকার (২৭শে বৈশাধ—১২৯২) 'আমর।
 কেন জার পাইবনা' নীর্ধক প্রবন্ধ লিথিরাছিলেন।

যেটুকু এখনও কংগ্রেসে গাওয়া হয়) গেয়ে বিশ্বমচন্দ্রকে শুনিয়েছিলেন (১৮৯৪ সালে তার মৃত্যুর পুর্বের অবভা); তার নিজের দেওয়া স্থরেই রবীক্রনাথ 'বন্দেমাতরম' শোনান কবি নবীন দেনকে ১৮৯৩ দালে, তিনি "আমার জীবনে" নিজেই দাক্ষ্য দিয়ে গেছেন। ১৮৯১ দেখা দিল রবীন্দ্রনাবের পত্রিকা "দাধনা"; (১৮৯০) সালে রবীন্দ্রনাথ 'ইংরেজ ও ভারতবাদী' প্রবন্ধ পড়েন বক্ষিমচন্দ্রের সভাপতিত্বে। রবীজ্রনাবের দেওয়া দেশ রাগেই বলেমাতরমের প্রচার সারা দেশে হয়েছিল এবং ১৩-৩ (১৮৯৬) সালে রবীন্দ্রনাথ কলিকাতা কংগ্রেসে একক কঠে মুদলমান দভাপতি রংমতুলার দামনে "বলেমাতরম" 🤏নিয়ে দেই বিপুল জনভাকে মাতিয়েছিলেন। সেই দিনেই তাঁর গন্ধর্ব-লাঞ্চিত কণ্ঠসরের উপর অতাধিক চাপে খুব ক্ষতি হয়েছিল সে কথা কবির মুখে শুনেছি। সেই ১০-০ (১৮৯৬) সালেই কবি **চিতা ও** চৈতালী পৰ্যান্ত সৰু রচনা দিয়ে 'গ্ৰন্থাৰলী' প্ৰথম প্ৰকাশ করে। ১৮৭৪ দালে প্রকাশিত দানা জ্যোতিরিন্দ্রনাথের পুরুবিক্রমে অংশম বদেশীগান "এক স্তে বাধিয়াছি সহস্টি মন" চাপা হয় এবং ২২ বছর পরে ১৮৯৬ (১০-৩) সালে তাঁর নিজের অদেশী গানের সঙ্গে বৃদ্ধিমর বন্দেমাত্রম কংগ্রেসে গাইছেন-এ রবীল্রনাথকে নতুন করে আজ বুঝতে ভেষা করা উচিৎ। ১৮৯৮ কবি লিপেছেন "কণ্ঠ রোধ" ও সঙ্গে সঙ্গে ভর্জন।

১৯০০ - ১ সালে দেখি পূর্ববঙ্গে ভাদের জমিদারী পরিদর্শনের কাজ থেকে সরে কার্জনী রবীন্দ্রনাথ শান্তিনিকেতনে এক্সচ্গ্যাশ্রম গড়ে তুলতে লেগেছেন। 'কল্পনা ও ক্ষণিকা' শেষ করে নামছেন 'কথা ও কাহিনী' এবং 'নৈবেল্ড' রচনায়; ও সেই সঙ্গে নব পর্যায় বঙ্গদর্শনের সম্পাদনা। ১৯০১ নৈবেতা প্রকাশ ও কলকাতা কংগ্রেসে গান্ধিজীর প্রথম আবিভাব। ১৯০২ (অগ্রহায়ণ) পত্নী বিয়োগের পর রবাক্রনাণ ঘেন ত্যাগ ও আত্মোৎসর্গের জ্বলম্ব মূর্ত্তি। তার সঙ্গে এসে মিলেছিলেন ব্ৰহ্মবান্ধৰ উপাধ্যায়—যিনি তাঁর "Sophia" পত্ৰিকায় সেকালের রবীন্দ্র-নাথকে "বিশ্বকবি" বলে অভিনন্দিত করেছিলেন ও পরে "অগ্নিযুগে"র সন্ধ্যা পত্রিকা সম্পাদন করে অমরত্ব লাভ করে গেছেন। কার্জনের "বঙ্গ-ভঙ্গ" চক্রান্ত (১৩১২) ও রবীক্রনাথের অপূর্ব্য নেতৃত্ব সব আজ স্বন্দান্ত ইতিহাস। তার মধ্যে দেখি ১৯০৩।৪ সালে কবিবন্ধ মোহিতচ<u>ল</u> সেন নয় ভাগে তার "কাব্যগ্রস্থ" ছাপালেন এবং দেই সময়কার বহু গভা রচনা हिञ्तामीत উপहात्रताल ध्वकानिङ इल (১৯ - ৪)। 'मदझ' 'बरमन' ও 'গান' দে যুগে হাতে হাতে ঘরে মরে মাদেশিকতা প্রচার করেছে। দেপ্টেশ্বর ১৯০৫ দেখি রবীক্রনাথ 'স্বদেশ' কবিতা ও বাউল (গান) প্রকাশ করে সারাদেশকে এমন মাতিয়েছেন বে প্রবীণ অধ্যাপক রামেশ্রস্কর ত্রিবেদী বলেছিলেন: 'এবার মরা গাঙে বান এদেছে' গানটি শুনিয়া তরী ভাগাইব কি, গঙ্গাগর্ভে বাঁপাইয়া পড়িতে অনেকের প্রবৃত্তি হইয়াছে'। ১৯০৪ সালে রমেশচন্দ্র দত্তের সভাপতিত্বে কবি তাঁর "বদেশী সমারু" প্রবন্ধ পাঠ করেন—সে যেন बरमिगुर्भव "(वाधन"। ১৯٠৫ (১७১२) मारलंब मर्धा वह कामुना জাতীয় সন্ধীত রবীন্দ্রনাথ দেশবাসীকে উপহার দিয়েছেন, যা সমগ্রন্ধাতি চিরদিন সকুতজ্ঞ হাদয়ে স্মরণ করবে। ১৯০৫ মহর্বি দেবেন্দ্রনাথ ৮৮ বৎসর বয়সে অর্গারোহণ করেন এবং ঐক্য মন্ত্রের সেই একনিষ্ঠ সাধক পিতাকে অরণ করে রবীজনাথ"কোন আলোতে প্রাণের প্রদীপ জালিয়ে" গানটি যে রচনা করেন সে গান মৃত্যুবরণকারী অনেক দেশ-দেবকদের প্রাণে প্রেরণা জ্গিয়েছিল। দেবেন্দ্রনাথের (৬ মাঘ ১৯১৫) বার্নিক স্তি-সভায় ঐ গান দীনেজনাথ ঠাকুরের মুখে শুনেছি ও বিজেজনাথ সভ্যেন্ত্রনাথের দক্ষে রবীন্ত্রনাথ উপাস্নার পর ব্রহ্ম সঙ্গীত গাইছেন ও জ্যোতিরিন্দ্রনাথ জোড়াসাঁকোর বাড়ীতে অর্গান ৰাজাচ্ছেন, প্ৰথম দেখে মনে হয়েছিল কোন যুগের মা**নু**ষ এঁরা, কত বড় জাতীয় ইতিহাদের শুন্ত রূপে আমাদের সামনে দাঁড়িয়েছেন। ১৯০৬ সালের কলিকাতা কংগ্রেদে দাদাভাই নৌরজীর সভাপতিতে বাংলার বুক থেকে উঠল এখম জীবন্ত বাণী "স্বরাজ"— আমাদের জন্মগত অধিকার। শিবালী উৎসবের কবির পাশে তপন দাঁড়িয়েছেন স্থয়েন্দ্রনাথ, আনন্দমোহন, বালগঙ্গাধর ডিলক, লালা লাজপৎ রায়, বিপিনচন্দ্র পাল ও খী মরবিন্দ ।* সম্বট থেকে সফটে নিয়ে যাওয়ার নেতৃত্ব সে∙ালে রবী-লুনাথ নিয়েছিলেন — হা'বেকেই সমগ্র জাতি পেয়েছে অফুরন্ত প্রেরণা। 'প্রায়ল্ডিও' নাটকে (১৯০৮) ধনপ্রয় বৈরাগীর ভিতরে তথনো অজানা গান্ধিজীর 'অহিংস প্রতিরোধের পূর্ব্বাভাষ। ১৯০৯-১০ প্রবাসী পত্রিকার কবি ছেপেছেন "গীতাঞ্জলী" ও রাজা এবং লিখে গেছেন খদেশীযুগের গভ-মহাকারা গোরা। ১৯১১ (ডিসেম্বর) কংগ্রেসে তার "জন গণ মন" প্রথম গাওয়া হয়। ১৯১১-১২ তার রূপকনটো ডাক বর ও অচলায়তনের সঙ্গে ৫০ বর্গ পূর্ত্তির চরম নিদর্শন "জীবন স্মৃতি !"

১৩০ তথকে ১৩১২-১৩ (অর্থাৎ ১৮৯৬-১৯০৬) সালের মধ্যে স্বদেশী গান রচনার রবীক্রনাথ যেন যুগান্তর এনে দিয়েছিলেন; এই তথাটি একটু স্পাষ্ট করে নাব, ছ'চারটি গানের দিকে দৃষ্টি আকর্ষণ করে। কাফি গাগে তিনি গোরেছেন; 'কেন চেয়ে আছে গো মা মুখপানে'; এ গানের অন্তরায় দেখি:

"তুমি দিতেছ মা যা আছে তোমারি বর্ণ শস্ত তব, আহ্বীর বারি জ্ঞান ধর্ম কত পুণ্য কাহিনী—"

১০১০ সালের মধ্যে—ক্ষর্থাৎ বঙ্গভঙ্গের আগেই—দেখি উক্ত পদের অপূর্ব ক্লপাস্তর ভৈরবীতেঃ "ওই ভূবন মনমোহিনী" ও তার সঙ্গে 'জননীর

কাতীয় শিক্ষা পরিবদের উদোধন উপলক্ষে "ঝাতীয় বিভালয়" ভাবণটি কবি পাঠ করেন এবং সাহিত্য সবকে চারটি বস্তুতা দেন।
 ১৯০৬ জাতীয় মহাসভার প্রবন্ধ গুলি ঠার 'সাহিত্য সম্মেলন'মগুণে পাঠ করেন ও সমগ্র জাতিকে মনে করিয়ে দেন: "এই মিলনোৎস্বের বন্দোতরম্মহামন্ত্রট বাংলা সাহিত্যেরই দান।"

দারে আজি ঐ' 'নববৎসরে করিলাম পণ', হে ভারত আজি নবীনবর্বে প্রস্তৃতি ২০০০টি জাতীয় সঙ্গীত।

কলাবিৎ রবীক্রনাথ জন্মভূষির 'ভূষন মোহিনী' রূপ গেষন দেপেছেন, তেম্নি ক্রেরর ঐথব্যিও সেকালে দেপিরেছেন। হঠাৎ ১০১২-১০, (১৯০৫-৬) দেশ মাতৃকার অঙ্গচ্ছেদের বেদনার "রবি-বাউল" যেন এক আভনব ক্রে আকাশ বাতাসকে ভরিয়ে দিলেন: বাউলদের ভাটিয়ালিও সারি পানের ক্র—যেগুলি রবীক্রনাথ তার প্রবিক্ষও উত্তর বক্ষের আমে আমে বামে ব্রে সংগ্রহ করেছিলেন। তার ফলে এমন কতকগুলি গানও ক্র আমরা পেরেছি—যা খাটি বাংলার আপের ক্র—যেমন "আদ্ব বাংলাদেশের ক্রদর হ'তে" প্রভূতি সতিট্র অভুলনীয়, শ্রীশান্তিদেব ঘোষ তার মধ্যে করেকটি মাত্র উল্লেখ করেছেন। ১০১২-১০ রচিত কয়েকটি গান এখানে মনে করাতে চাই:

- ১। আপনি অবশ তবে বল দিবি তুই কারে ?
- ২। নিশিদিন ভরদা রাখিদ' (৩) আমার প্রাণের মানুষ (৪) আমি ভয় করব না (৫) ছি ছি চোথের জলে ভেজাদ নে আর মাটি: (৬) তোর আপন জনে ছাড়বে ভোরে ভাবলে ভাবনা করা চল্বে না। (৭) যদি তোর ভাবনা থাকে ফিরে চানা (৮) আমার দোণার বাঙলা আমি ভোমায় ভালবাদি (৯) মা কি তুই পরের ছারে পাঠাবি ভোর ঘরের ছেলে (১০) যে ভোমায় ছাড়ে ছাড়ুক আমি ভোমায় ছাড়ব না মা: (১১) যে ভোরে পাগল বলে (১২) বুক বেঁধে তুই দাড়া দেখি (১৩) বিধির বাঁধন কাটবে তুমি এমনি শক্তিমান (১৪ বাংলার মাটি বাংলার জল।

সর্বশেষে মনে পড়ে: •

যদি ভোর ডাক শুনে কেউ না আগে ভবে একলা চলো রে—

যে গান মহান্ধা গান্ধিকেও মাতিয়ে ছিল তাই বাংলা শিপে তিনি ঐ গানে যোগ দিতেন তার উপাদনা সভার। ২১ বছর দক্ষিণ আফ্রিকার সংগ্রাম করে গান্ধিন্সী যথন ১৯১৫ সালে ভারতে স্থানীভাবে নামলেন তথন সপরিবারে তিনি শান্তিনিকেতনে রবীক্রনাথের আতিখ্য প্রহণ করেন এবং তাঁকে "अक्रापव" माखाधन काजन। वयाम कवि-श्रुक्त हाहा माज आहे বছরের ছোট ছলেও গান্ধিলী তাঁকে সর্ব্বাস্থ:করণে ভক্তি করিতেন এবং রাজনৈতিক তথঃ অক্ত অনেকক্ষেত্রে তাঁদের মত-ভেদ থাক্লেও পরম্পরের প্রতি কী গভীর শ্রদ্ধা পোষণ করতেন তা দেখবার শৌভাগ্য হয়েছে। পান্ধিজীর নেতৃত্বে আমাদের স্বাধীনতার ইভিহাসধারা এক সম্পূর্ণ নুতন থাতে বইতে হৃত্ত করেছিল ; কিন্ত মহাম্মাজী জানতেন দেই জাতীয় খাধীনতার ইতিহাদে রবীক্রনাপের नान की अनामाछ। आज त्रहे घुटे महाशूक्रव करे बामना हानिताह — উবু আজ এই কৰা ভেবে সাম্বা মেলে যে রবীক্রনাথের দেওয়া হরে "বলেমাভরং" গান ও তার "জনগণমন" (১৯১১) ও "দেশ দেশ নন্দিত করি" (১৯১৫) প্রভৃতি জাতীয় সঙ্গীত সহাস্থাজী ওনে গেছেন ও লাতীর নবজাগরণে তালের প্রভাব পূর্ব মাত্রার অসুভব করে গেছেন।

১৮৭৪ সালে রচিত "এক পুত্রে বাবিরাছি সহস্রট মন" থেকে श्रुक करत त्मेर भर्ताष्ठ रा मर चर्मनी भान जरी सनाय जरना करत शिष्टन দেওলি বরলিপি নমেত প্রকাশিত করা আমাদের জাতীর দায়ীত বলে মনে করি; তাই এদিকে দেশবাদীর দৃষ্ট আকর্ষণ করতে এই প্রবন্ধে চেষ্টা করলাম। রাজকোপে অনেক খদেনী গানের চয়নিকা লুপ্ত হয়ে গেছে; তবু সাময়িক পত্রিকা ভাল করে ঘাঁটলে অনেক অপ্রত্যাশিত নুতন উপাদান ও তথা প্রকাশ হবে এই আশা করে এই বিধয়ে আলোচন। তুল্নাম। আধুনিক বরলিপির এবর্ত্তক জ্যোতিরিজ্ঞনাথকে অবমে সকুতক্ত এণতি জানাই কারণ তিনিই বরলিপি ছাপা প্রসঙ্গে 'এकपूर्व वैधिश्राष्ट्रि' जानहि, वालक त्रवीलनारवत्र तहना वरल ध्यकान করে গেছেন: দুই ভাই স্থরকার ও স্থরশিল্পী, তাদের তর্মণ জীবনের প্রেরণা চেলে দিয়েছেন কত গানে—বিশেষ 'খদেশা' সঙ্গীতে তাও ভাল আমাদের বুঝতে আমাদের চেষ্টা করা উচিৎ। তাঁদের প্রেরণায় ভাগিনেরী ও ফুর্শিকা জীমতী সরলা দেবী তার "শত গান" ফরলিপি প্রকাশ करतन ১०-१ माल अर्थाए आह ०- वहत्र आत्र । इंडिमर्सा द्वीनानात्वत्र বিচিত্র সঙ্গীতসভার কঠে কঠেই প্রাধানত চলে এসেছে: অল্লদংখ্যক গানই স্বর্লিপিতে উঠেছে ; তাও প্রধানত প্রতিভা দেবী,ইন্সিরা দেবী ও দীনেশ্রনাথ ঠাকুরের একান্ত চেষ্টায়। কিন্তু কবি গুরুর খদেশী গান শতাধিক হলেও "গীত-বিতানে" মাত্র ৪৬টি স্থান পেরেছে, তার মধ্যে আবার আচীন গানগুলি বেশীর ভাগই বাদ দেওয়া হয়েছে। 'কাব্যে উপেকিতা'র মত রবীল গীওলোকে দেই উপেকিতাদের জ**ন্ত আমার** मनों। काँदिन, कांत्रन कवि ध्रुकत मूर्थ मर्द्या मर्द्या खालित पू. वक किन গাইতে শুনে মুগ্ধ হয়ে ভেবেহি,—কী অপদার্থ ও অকৃতজ্ঞ আমরা যে দেই দৰ অমূল্য দম্পৰ রক্ষা করবার উপযুক্ত ব্যবস্থা করতে **আমরা** পারিনি। ফদেশীযুগে "মোমের" রেকর্ডে রবীক্রনাথের নিজের হর যা আমরা শুনেছি তাও লুপ্ত হয়েছে; আধুনিক রেকর্ডে কিছু পুরাতন গান উঠছে দেটা আশার কথা (স্বরের ব্যতিক্রম অবশ্য এখানেও আছে!) কিন্তু দর্মদেশে যে স্বর্গলিপির ভিতর দিয়ে দঙ্গীতের সংরক্ষণ-প্রণালী গড়ে উঠেছে—ভাকে অনাদর করলে আমাদেরই ক্ষতি; এবং বছ ক্ষতি যে আজ প্রায় অপুরণীয় হয়ে দাঁড়িয়েছে তাই পেষে মনে করাতে চাই ৮দিনেন্দ্রনাথ ঠাকুরকে আরণ করে। তাঁর শান্তিনিকেতনের বাড়ীতে দেকালে আমাদের পুরাণ গানের চর্চো চল্ড ; হঠাৎ পরীক্ষকের মত ভঙ্গীতে তিনি একদিন আমাদের প্রশ্ন করলেন 'রবীক্রযুগের স্বদেশী গানের মধ্যে কুত্র 'জোনাকি'ও মৰ্ব্যাদা পেয়েছিল তা ভোমরা জান কি ?" অৰ্ব্বাচীন আমরা বে ব্যসকুটের কি জবাব দেবো ? তথুনি দিখুলা কোলে এআছটা টেনে निष्य ठांत महे जिस हमान कर्छ गान ध्वरलन-सामद्रा मूस हस শুনলাম:--

"লোনাকি! কী হথে এ ডানা ছটি মেলেছ।

এই আধার মাঝে বনের মাঝে উলাদে প্রাণ চেলেছ।
ভূমি নও ত স্থা নও ত চল্ল, তাই বলেই কি কম আনন্দ
ভূমি আপন জীবন পূর্ণ করে আপন আলো জেলেছ।

ভোমার যা আছে তা তোমার আছে, তুমি নও গো ধণ কারো কাছে ভোমার অন্তরে বে-শক্তি আছে তারি আদেশ থেলেছ। তুমি আধার-বাধন ছাড়িয়ে ওঠো, তুমি ছোট হয়ে নও গো ছোটো,

জগতে বেধায় যত আলো, স্বায় আপন করে ফেলেছ।
এই অপূর্ব্ব বাউল ফ্রের গানটি গীত-বিভানের অদেশ-বিভাগ চাত হয়ে
'বিচিত্র' বর্গের একটি কোণে স্থান পেয়েছে! (গীত-বিভান ২ খণ্ড
৬-৬-৭ পৃ:) এমনি কত ফদেশী গান রবীক্র-সঙ্গীতের বিভিন্ন বিভাগে
হয়ত পুকিয়ে রয়েছে; স্কানী চোখ দিয়ে ভাদের খুঁজে বার করতে
হবে এবং যথাসভাব খাঁটি ফ্রের ভাদের অরলিপি—বাংলা ও হিন্দী
(নাগরী) হরকে ছাপার আয়োজন করতে হবে। কারণ শুধু বাঙালী
নয়, ভারতবাসী মাত্রই হয়ত একদিন দাবী জানাবে এই সব গান

শেষবার। পণ্ডিত ভীমরাও শাল্পী নাগরী অক্সরে 'সঙ্গীত গীতাপ্রকী' প্রকাশ করেছিলেন বলে সেই অপূর্ব্ব গানগুলি আমি ভারতের বিভিন্ন অঞ্চলে কড অবাসলী নর-নারীর মুথে শুনে মুগ্ধ হয়েছি। তেমনি রবীক্রনাথের স্বদেশী গান সমগ্র জাতির সম্পদ মনে করে তার বৈজ্ঞানিক প্রচারের দারিড আমাদের নিতেই হবে। এদিকে বিশ্ব-ভারতীর সমীত নারক্রেও দৃষ্টি আমর্থন করি। এই গানগুলির ভিতর দিয়ে শুধু বাঙালী তার বাঙলা মায়ের অপূর্ব্ব মুর্ব্তিই দেখেনি, সেই রূপ ও হ্বর অবনীক্রনাথের ভারতমাতা চিত্রে, অগণ্য অনবন্ধ রচনার ভিতর দিয়ে মানব-সাধীনতারই যেন প্রতীক হয়ে ফুটে উঠেছে। রবীক্রনাথের নবতীতম জ্বোৎসবের আগেই তার স্বদেশী গানের পূর্ব সঙ্কলন ও স্বরলিপি ছাপা হবে এই আশায় প্রবন্ধ লিখলাম।

সৰ্বহারা

এনীহাররঞ্জন সিংহ

হথের দিনে অশ্রু বরে

অদীম হথে শুকিয়ে যায়!
শিয়র দেশে মৃত্যু থাদের
তাদের আবার কিসের ভয়?
যাযাবরের পথের নেশা,
মাধুকরী যাদের পেশা,
গহন বনে তারাই পারে
ঘরের অভাব করতে জয়!
শক্তি তাদের হংখ দলন,
বুক কুলিয়ে তাদের চলন,
এগিয়ে চলার উন্মাদনায়
অবহেলায় হুংখ সয়!
নৃতন করে গড়বে তারা

ध मःमाद्रत्र कीवन धात्रा,

ভুচ্ছ ভারা নয় কো নয়!

যারা আজি সর্ব্ব হারা

আমার কবিতা

শ্রীক্ষেত্রমোহন বন্দ্যোপাধ্যায়

আমার কবিতা আজি লিখে যাই আকাশের গায় গৃহ-উপগ্রহ আর চক্স-স্থ্য তারার অকরে; চিরস্তন হোরে থাক অন্তহীন মহাশৃষ্ঠ পরে আন্তর আকৃতি মোর জ্যোতিক্ষের জ্যোতির্ময়তায়।

অতৃপ্ত আত্মার ক্ষোভ এ-দিনের মর্মান্ত-হেলায় আলোর স্পান্দনে যেন রাত্র-দিন কাঁদে আর্ত্ত-স্বরে; নিক্ষরণ বঞ্চনার সত্য যেন সবার উপরে উদয়ান্ত জাগে বসি' নিস্পালক পুত্রশোক-প্রায়।

আনন্দের অবদরে কোনোদিন মুহুর্ত্তের ভূলে
বারেকের তরে যদি যুক্তকরে উর্দ্ধ মুখে চেয়ে
শুক্তার তলাতলে হারাইয়া ফেলো আপনারে,—
শ্বরণের সরোক্ত্ব নম্বনের স্থনীল অকুলে
বিক্রিবে বন্ধ টুটি': কবিতার ভীক্ষ আলো পেয়ে
ভূগাকুর-শিহরণ গুঞ্জরিবে সন্ধানি' আমারে ॥





চতুর্দশ পরিচ্ছেদ জৈন পরিব্রাক্তক

श्रर्याषरत्रत्र मरक भाष्ट्रभागात वात ध्राम ।

পারসিক সার্থবাহ ইতিপ্রেই উট্ট গর্দভের পৃঠে পণ্য-ভার চাপাইয়া প্রস্তুত ছিল, তাহারা পাছশালার শুক চুকাইরা দিয়া বাহির হইয়া পড়িল। তাহারা সারা আর্থাবর্ত পরি-ভ্রমণ করিবে, পথপার্শে আল্ফাবশে বিলম্ব করিলে চলিবে না।

চিত্রক রাত্রে ঘুমায় নাই, কিন্তু গেজন্ত তাহার শরীরে তিলমাত্র ক্লান্তিবোধ ছিল না। সে দেখিল, পাছশালা শৃত্ত হইয়া গিরাছে; কিন্তু রটার কক্ষবার এখনও রুদ্ধ। রাজকুমারীর এখনও ঘুম ভাকে নাই। চিত্রক মনে মনে গত রাত্রির অলাক ভয় ভাবনার কথা চিন্তা করিতে করিতে প্রাচীর বেষ্টনের বাহিরে গিয়া দাভাইল।

নবীন রবিকরে উপত্যকা ঝলমল করিতেছে, তৃণ প্রাপ্তে তথনও শিশিরবিন্দু শুকার নাই। হিমার্দ্র বার্দ্রীর পুলকিত করিতেছে। চিত্রক উৎফুল নেত্রে চারিদিকে তাকাইরা দেখিতে লাগিল। আজ তাহার চোখে প্রকৃতির রঙ্বদলাইরা গিয়াছে।

চারিদিক দেখিতে দেখিতে তাহার চোথে পড়িল, কাল রাত্রে বেখানে সে আগুনের প্রভা দেখিয়াছিল সেইখানে আকাশ ও দিগন্তের সলমন্থলে অনেক পক্ষী উড়িতেছে; আর কোনও দিকে অমন ঝাঁক বাধিয়া পক্ষী উড়িতেছে না। পক্ষীগুলিকে আকাশের পটে সঞ্চরমান ক্লুফবিন্দুর ভার দেখাইতেছে।

চিত্রক অনেকক্ষণ স্থিরনেত্রে সেই দিকে চাহিরা বহিল।
এই সময় রটা বাহিরে আসিয়া তাহার পাশে দাঁড়াইলেন।
চিত্রক সহাক্ত ক্যতার সহিত তাঁহাকে সম্ভাষণ করিল—

'রাত্রে স্থনিতা হইরাছিল ?'

রটা তাহার মুথ হইতে দৃষ্টি সরাইয়া নিমে নদীর পানে চাহিলেন, বলিলেন—'হা। আপনার ?'

চিত্রক অমানবদনে বলিল—'আমারও। ধ্ব ঘুমাইয়াছি।'

রট্টা নদার পানে চাহিয়া রহিলেন। আরু তাঁহার মনের ভাব অন্ত প্রকার; একটু চাপা, একটু অন্তর্মুবী। চিত্রকের মনোভাব কিন্তু সম্পূর্ণ বিপরীত। সে অন্তরে এক অপূর্ব প্রীতি-প্রগল্ভ উদ্দীপনা অহতেব করিতেতে; কোনও অক্তাত উপায়ে এই রাজকুমারীর উপর তাহার বেন অন্তপূর্ণ অধিকার জন্মিয়াছে। যাহার জন্ত জাগিয়া রাত কাটাইতে হয় তাহার প্রতি সম্ভবত এইরূপ অধিকার-বোধ জন্মে।

সে জিজ্ঞাসা করিল—'আপনি কি **যাত্রার জুল্ল** প্রস্তুত ?'

রটা বলিলেন—'আমি প্রস্তত। কিন্ত ছ'দণ্ড পরে বাজা করিলেও ক্ষতি নাই' বলিয়া গিরিক্রোড়ন্থ নির্জন পান্থ-শালাটির প্রতি সমেহ দৃষ্টিপাত করিলেন।

চিত্রক হাসিয়া উঠিল, বলিল—'সত্য বলুন, এই পাছ-শালার প্রতি আপনার মমতা জন্মিয়াছে ?'

রট্টা স্মিতমুথে বলিলেন—'তা জন্মিয়াছে।—ফিরিবার পথে আবার এথানে রাত্তিবাপন করিব।' মনে মনে ভাবিলেন, ফিরিবার সময় সঙ্গে অনেক লোক থাকিবে… এমন রাত্তি আর হইবে কি ?

হই একটি অন্ত কথার পর চিত্রক পশ্চিম দিকে হত্ত প্রসারিত করিয়া বলিল—'দেখুন তো, কিছু দেখিতে পাইতেছেন ?'

রটা চক্ষের উপর করতলের অন্তরাল রাধিয়া কিছুক্ষণ দেখিলেন—'অনেক পাখী উড়িতেছে। কী পাখী?'

চিত্ৰক বলিল—'চিল্ল শকুন—'

রটা চকিতে চিত্রকের পানে চাহিলেন। কিন্তু এই ক্ষয় তাঁহাদের মনোযোগ অন্ত দিকে আক্লই হইল।

পাছশালার সন্মুখে ও ছই পাশে পথের তিনটি শাখা এতকণ শৃক্ত পড়িয়া ছিল; পারসিক সার্থবাহ অনেক পূর্বেই গিরিসকটের মধ্যে অদৃশু হইয়া গিরাছিল; এখন উত্তর দিক হইতে কয়েকটি মাহুষ আসিতেছে দেখা গেল। তাহাদের সহিত উদ্ভী, গর্দত নাই, কেবল কয়েকটি মাহুষ অন্তুত বেশভ্যা পরিয়া পূঠে ঝোলা বহিয়া পদত্রজে আসিতেছে।

চিত্রক বিশ্বিত হইল। প্রাতঃকালে পাছশালায় যাত্রী আদেনা; কোথা হইতে আসিবে? নিকটে কোথাও ব্রুনালয় নাই। তবে ইহারা কে?

যাত্রিগণ আরও কাছে আসিলে চিত্রক দেখিল, ইহাদের বেশভ্যাই শুধু অন্তুত নয়, আক্ততিও অন্তুত। কুলাকৃতি মাহ্যগুলি; মুখ বর্তুলাকার, হয়ু উচ্ছ, চকু তির্বক। চিত্রক আনেক দেশ ভ্রমণ করিয়াছে, কিন্তু এরূপ আকৃতির মাহ্য কথনও দেখে নাই।

পাহশালার সন্মুখে আসিয়া পথিকদল দাঁড়াইল। চারিক্ষন পথিক, তমধ্যে একজন বৃদ্ধ। মুখে অতি সামান্ত শুক্ল
শুক্ত আছে, দেহ কুল ও শ্রমসহিষ্ণু; মুখের ভাব দৃঢ়তাব্যঞ্জক। ইনিই এই দলের নেতা সন্দেহ নাই। চিত্রক ও
রট্টা পরম কোতৃহলের সহিত ইহাদের দর্শন করিতেছিলেন,
বৃদ্ধু কিছুক্ষণ তাহাদের নিরীক্ষণ করিয়া সাগ্রহে অগ্রসর
হুইয়া আসিলেন এবং ভাঁহাদের সম্ভাষণ করিলেন।

চিত্রক ও রট্টা অবাক হইরা চাহিরা রহিলেন। বৃদ্ধের কণ্ঠস্বর মধুর ও মন্দ্র, কিন্তু তাঁহার ভাষা চিত্রক বৃদ্ধি-বৃদ্ধি করিয়াও বৃদ্ধিতে পারিল না। যেন পরিচিত ভাষা, অথচ উচ্চারণের বিক্কৃতির জন্ম ধরা ষাইতেছে না।

চিত্ৰক রষ্ট্রাকে হুম্বকণ্ঠে জিজ্ঞানা করিলেন—'কিছু বুঝিতে পারিলেন ?'

রটা বলিলেন—'না। ইহারা বোধ হয় চীনদেশীয়া।' চিত্রক তথন বৃদ্ধকে প্রশ্ন করিল—'আপনারা কে? কি চান?'

বৃদ্ধ উত্তর দিলেন, কিন্তু এবারও চিত্রক কিছু বৃথিল না। সে মাথা চুল্কাইয়া শেষে জ্পুক্কে ডাকিল, বিলল— 'তোমার নৃতন অভিনি আদিয়াছে। ইহারা কে?' জন্দ নবাগতদের দেখিয়াই বলিল—'ইঁহারা চৈনিক পরিব্রাজক। এইরূপ পথিক মাঝে মাঝে এই পথে আসেন।'

'ইহাদের ভাষা তুমি বুঝিতে পার ?'

'পারি। ইহারা পালি ভাষায় কথা বলেন।'

'ভাল। জিজাসা কর আমাদের নিকট কী চান ?'

জন্ম বৃদ্ধকে প্রশ্ন করিল এবং তাঁহার উত্তর গুনিয়া বলিল—'ভিক্ জানিতে চান ইনি রাজক্তা রট্টা যশোধরা কিনা।'

চিত্রক সন্দেহপূর্ণ নেত্রে ভিক্সুকে নিরীকণ করিয়া বলিল—'এ প্রশ্নের উত্তর পরে দিব, অগ্রে আমার প্রশ্নের উত্তর দিতে বল।'

অতঃপর জন্মুকের মধ্যস্থতায় ভিক্ষুর সহিত চিত্রকের নিমন্ত্রপ প্রশোত্তর হইল।

চিত্রক: আপনি কে? কোণা হইতে আসিতেছেন? ভিক্ষ: আমার নাম টো-ইঙ্। আমরা চীনদেশ হইতে আসিতেছি। ইহারা আমার শিস্তা।

চিত্রক: চীনদেশ বত দূর ?

िक् : इरे त< मरतः १ १ ।

ठिबकः काथाय बाहरतन? '

ভিক্: কুশানগর যাইব। লোকজ্যে**ট বৃদ্ধ যেখানে** দেহ রক্ষা করিয়াছিলেন সেই পবিত্র স্থানে দেহরকা করিব এই আশা লইয়া চলিয়াছি। এখন বৃদ্ধের ইচ্ছা।

চিত্রক: এই জক্ত এতদ্র পথ আসিয়াছেন? অক্ত কোনও উদ্দেশ্য নাই ?

ভিকু: অন্ত কোনও উদ্দেশ্য নাই।

চিত্রক: ক্ষমা করুন। আপনারা প্রাতঃকালে এখানে আসিলেন কি করিয়া?

ভিক্ : আমরা অহিংসাধর্মী বৌদ্ধ, অন্ত্রধারণ করা আমাদের নিষেধ। কিন্তু এ পথে দহা তন্ত্র আছে; ভাই আমরা রাত্রিকালে পথ চলি, দিবাভাগে বিশ্রাম করি। কাল রাত্রে চক্রোদ্য হইলে যাত্রা করিয়াছিলাম।

চিত্রক: কোথা হইতে বাজা করিরাছিলেন ?

ভিকু: চণ্টন হুৰ্গ হইছে।

রটা এতকণ নীর্বে তনিতেছিলেন; এখন চন্টনত্র্গের নাম তনিয়া সাজতে অগ্রসর হইয়া আসিলেন—'চন্টন ছুর্গ! ভবে আমার পিতার স্থিত আপনার সাক্ষাৎ হইয়াছিল।

ভিকু হাসিলেন; বলিলেন—'আমি অথুমান করিয়াছিলাম তুমিই রাজকন্তা রট্টা বশোধরা। অথানি তোমার
পিতার নিকট হইতে কিছু বার্তা বহন করিয়া আনিয়াছি।
ভাবিয়াছিলাম কপোতকূট যাইতে হইবে; ভালই হইল,
পথেই তোমার দেখা পাইলাম। এখানে আমার কর্তব্য
শেষ করিয়া নিজ কর্মে যাইব।'

রট্রা: পিতা কী বার্তা পাঠাইয়াছেন ?

ভিক্ষ: ধর্মাদিত্যের বার্তা সকলের নিকট প্রকাশ্য নর। কিন্তু যথন দ্বিভাষীর প্রম্থাৎ কথা বলিতে হইতেছে তথন গোপন রাখা অসম্ভব। ভরসা করি ইহাতে ক্ষতি হইবে না।

রট্রার মুখে শকার ছায়া পড়িয়াছিল, তিনি ক্ষীণ-কঠে বলিলেন—'না, ক্ষতি হইবে না, আপনি বলুন।'

ভিক্ষ: ধর্মাদিত্য তোমাকে এই বার্তা পাঠাইয়াছেন

— তুমি কদাপি চণ্টন হুর্গে আসিও না, আসিলে ঘোর
বিপদ ঘটিবে।

রট্টা স্থির বিক্ষারিত নেত্রে জিকুর পানে চাহিয়া রহিলেন, তারপর খলিত ক্ষরে বলিলেন—'বিপদ ঘটিবে! ক্ষিরূপ বিপদ?'

ভিক্ষ: যাত্রার পূর্বে কণেকের জন্ম ধর্মাদিত্যের সহিত বিরলে সাক্ষাৎ হইয়াছিল। ছুর্গাধিপতি কিরাত অতিশর ছুষ্ট। সে ছলনা ঘারা তোমাকে চণ্টন ছুর্গে লইয়া গিয়া বলপূর্বক বিবাহ করিতে চায়। ধর্মাদিতাকে সে বন্দী করিয়া রাখিয়াছে।

রট্রা: পিতাকে বন্দী করিয়া রাখিয়াছে!

ভিক্ : কারাগারে বন্দী করে নাই। কিছ তাঁহার ছর্গ ত্যাগ করিবার অধিকার নাই, পত্র লিখিবারও অধিকার নাই। কপোতকুটে বে পত্র গিয়াছিল তাহা ধর্মাদিত্য বেছার লেখেন নাই।

দীর্ঘ নীরবভার পর রটা চিত্রকের দিকে ফিরিলেন। তাঁহার মুখ রক্তহীন, কিন্ত চক্ষে চাপা আগুন। ক্ষ বরে বলিলেন—'কিরাতের যে এতদ্র সাধ্য হইবে তাহা বল্লেও ভাবি নাই। এখন কর্তব্য কি?' চিত্ৰক কিছুকাল নীরব থাকিয়া ভিকুককে **বিজ্ঞা**রা করিল, 'মহারাজ কি কোনও অহুজ্ঞা দিয়াছেন ?'

ভিক্ : না। তিনি কেবল রট্টা যশোধরাকে চণ্টন ছর্নে বাইতে নিষেধ করিয়াছেন। কিছু তোমাদের কর্তব্য এই ছুর্জনের হস্ত হইতে ধর্মাদিত্যকে উদ্ধার করা। কিরাত মিষ্ট কথায় ধর্মাদিত্যকে মুক্তি দিবে না। তাহার ক্ট অভিপ্রায় ব্যর্থ হইরাছে জানিলে সে আরও কুদ্ধ হইবে; হয় তো ধর্মাদিত্যের অনিষ্ট করিতে পারে—

রট্টা ব্যাকুল নেতে চিত্রকের পানে চাহিলেন। চিত্রক শাস্তম্বরে বলিল—'আপনি অধীর হইবেন না, বিশদের সময় বৃদ্ধি স্থির রাখিতে হর।—মহাশর, আপনারা পথশ্রমে পীড়িত, এখন বিশ্রাম করুন। জমুক, তৃমি ইহাদের পরিচর্যা কর।'

বে ব্যাপারে যুদ্ধ বিগ্রহের গন্ধ আছে তাহাতে চিঞ্জক কথনও বৃদ্ধি অষ্ট হয় না; যুদ্ধের প্রাকালে প্রবীশ সেনাপতির ক্যায় সে সমত্ত দায়িত তার নিজ হত্তে তুলিয়া লইল।

রট্টার হাত ধরিয়া সে তাঁহাকে ককে আনিয়া বসাইল। রট্টার করতল তুষারের মত শীতল, অধর ঈষৎ কশিত হইতেছে। নারী বাহিরে যতই পৌরুষের অভিনয় কর্মন, অস্তরে তিনি অবলা।

চিত্রক তাঁহার সন্মুখে বসিল এবং ধীরভাবে তাঁহাকে ত্ই চারিটি প্রশ্ন করিয়া কিরাত ও চন্টনত্বর্গ সমক্ষে জ্ঞাতব্য বিষয় জানিয়া লইল। রট্টাও চিত্রকের সহিত কথা কহিতে কহিতে অনেকটা আত্মন্থ হইলেন।

এখন কর্তব্য কি এই প্রশ্নের উত্তরে চিত্রক বিশিল—
'তুইটি পথ আছে। কিছ আপনি যদি কির্মিউক্
বিবাহ করিতে সন্মত থাকেন তাহা হইলে কোনও পথেরই
প্রয়েজন নাই।'

রট্টা বলিলেন—'কিরাতকে বিবাহ করার পূর্বে আমি আত্মঘাতিনী হইব।'

চিত্রক বলিল—'তবে ছই পথ। এক কপোতকুটে ফিরিয়া বাওয়া, গৈজনল লইয়া চণ্টনতুর্গ অবরোধ করা। বতদুর কানি গৈজ সংগ্রহ করিতে সময় লাগিত্রে। ুচ্টমা স্থারে জার ক্র হর্গও অন্তত পাঁচশত গৈল্পের কমে অবরোধ করা অসম্ভব।

तहो श्रेष्ठ कतिलन—'विजीय शर्व की ?'

চিত্রক বিশিল—'বিতীয় পথ, স্কল্প গ্রের নিকট় সাহায্য ভিক্রা করা।'

রট্টা উচ্চ**কিত হই**য়া চা**হিলেন—'স্কলগুপ্ত সাহা**য্য দিবেন ?'

চিত্রক বলিল—'ভিনি ক্ষত্রিয়-চূড়ামণি। তাঁহার শরণ লইলে তিনি অবখ্য সাহায্য করিবেন।'

'তবে স্বন্দ গুপ্তেরই শরণ লইব। তাঁহার নাম গুনিলে কিরাত ভর পাইবে, বিরুদ্ধতা করিতে সাহস পাইবে না।'

গতাহা সম্ভব। কিন্তু স্কলগুপ্তের কাছে কে যাইবে ?' 'আমি যাইব। আপনি সঙ্গে থাকিবেন।'

চিত্রক ক্ষণেক মৌন রহিল, তারপর বলিল—'আপনি নারা, লক্ষ লক্ষ সৈন্তপূর্ব স্থনাবার নারীর উপযুক্ত স্থান নয়। অবশ্য আমি সঙ্গে থাকিলে বিশেষ ভয় নাই, অভিজ্ঞান অসুরীর দেখাইয়া স্করের সমীপে পৌছিতে পারিব। কিন্তু একটি কথা আছে—'

'कि कथा ?'

'সকল কথা বলার সময় নাই। কিছ আমি যে রুলগুপ্তার দৃত একথা তাঁহাকে বলা চলিবে না। আমি বিটম্ব রাজ্যেরই একজন সেনানী, এই পরিচয় দিলেই হইবে। হৃদ্ধ আমাকে চেনেন না, স্থতরাং কোনও গোলবোগের সম্ভাবনা নাই।'

'किड—किन ?'

'ওকথা এখন জিল্ঞাসা করিবেন না। আমাকে বিখাস করুন, আমি বিখাসবাতকতা করিব না।'

রষ্টা বলিলেন—'আর্ব চিত্রক, আমি সম্পূর্ণ আপনার অধীন। আপনি ধাহা বলিবেন তাহাই করিব।'

চিত্রক বলিল—'আমি আপনার দাস। আপনার মললের জন্ত বাহা করিব। স্বন্ধগুরে শরণ লওরাই ছির?'

·對 1

চিত্ৰক উঠিয়া গাড়াইল, বলিল—'তবে উঠুন। অবিলখে বাত্ৰা ক্ত্ৰিছে হইবে।' খার পর্যন্ত গিয়া সে ফিরিয়া বাড়াইল—'একটা কথা। আপনি এমনভাবে বন্ধা পরিধান করন বাহাতে আপনাকে কিশোর বয়ত্ব পুরুষ বলিয়া মনে হয়। ইহা প্রয়োজন' বলিয়া তাড়াতাড়ি কক হইতে বাহির হইয়া গেল।

রটার মুখে ধীরে ধীরে অঙ্গণাভা ফুটিরা উঠিল। তিনি কক্ষের ছার বন্ধ করিয়া দিয়া নৃতনভাবে বেশ-প্রসাধনে প্রায়ত হইলেন।

চিত্রক বাহিরে আসিয়া দেখিল, পাশেই একটি ককে কৈন ভিকুগণ আশ্রয় লইয়াছেন; জবুক তাঁহাদের পরি-চর্যায় নিযুক্ত আছে। চিত্রক তাঁহাদের নিকটে গিয়া বলিল—'জবুক, ভিকু মহাশয়কে আমি একটি প্রশ্ন করিতে ইচ্ছা করি—মহারাজ কলপত্ত সম্বন্ধে তিনি কিছু জানেন কি ?'

প্রশ্ন শুনিরা ভিক্ বলিলেন—'ন্সানি। ক্ষনগুপ্ত হুণ দলনের জন্ম আসিয়াছেন। নিকটেই আছেন।'

চিত্ৰক: কোপায় আছেন ?

ভিক্: এই উপত্যকার পশ্চিমে যে পর্বতশ্রেণী আছে তাহা পার হইলে আর একটি বৃহত্তর উপত্যকা আছে; ফলগুপ্ত তথার সৈম্ভ স্থাপন করিয়াছেন।

চিত্ৰক: একথা আপনি কিরূপে জানিলেন ?

ভিক্: চণ্টনছর্গে শুনিরাছি। জনৈক সৈনিক মৃগরার গিরাছিল সে দেখিয়া আসিয়াছে।

চিত্রক তথন তিকুকে সাধুবাদ করিরা জন্তকক আড়ালে ডাকিরা আনিল, বলিল—'জনুক, আমরা স্থির করিয়াছি সন্দণ্ডপ্রের শিবিরে যাইব।'

জমুক বলিল—'সে ভাল কথা।'

চিত্রক বলিল—'ডোমাকে কপোতকুটে বাইতে হইবে।
মন্ত্রী চতুর ভট্টের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া সকল কথা ভাঁহাকে
বলিবে। ভারপর তিনি যাহা ভাল হয় করিবেন।'

'বথা আজা।'

'এখন আমাদের অখ আনিতে বল। এই বেলা যাত্রা করিলে স্থাত্তের পূর্বে স্কলগুণ্ডের শিবিরে পৌছিতে গারিব।'

জন্ক অধ আনিতে গেল। চিত্রক ফিরিরা গিরা রটার বাবে করাবাত করিল। রটা বার ধূলিরা নত চক্ষে সমূর্থে দাঁড়াইলেন।

िखक (म्बिन, दिन शतिवर्छन कवित्रा ब्रह्मोहक जानक

দেখাইতেছে; প্রথম ষেদিন সে রট্টাকে দেখিরাছিল সে
দিনের মতই উাহাকে সহসা নারী বলিরা চেনা যায় না,
ভক্তের তলে রূপের আঞ্চন চাপা পাড়িয়াছে? কিন্তু মন্তকে
শিরস্তাণ নাই, বেণী শোভা পাইতেছে। তাহার কী
হইবে?

চিত্রক নিজ কটিবন্ধ খুলিয়া রট্টার মাথায় উফীয বাঁধিয়া দিল; উফীষের অন্তরালে বেণীবন্ধ ঢাকা পড়িল। চিত্রক বিচারকের দৃষ্টিতে রট্টার আপাদ-মন্তক নিরীক্ষণ করিয়া গন্তীরমূখে বলিল—'এতকণে ছন্মবেশ সন্তোবজনক হইরাছে। স্বন্ধের সন্মুখে না পৌছানো পর্যন্ত ছন্মবেশ আবিশ্রক। যুদ্ধকেত্র কিরূপ স্থান তাহা আপনি জানেন না, কিন্তু আমি জানি। তাই এই সাবধানতা।'

বটার চোথে জল আসিল; তিনি অবরুদ্ধ **স্বরে** বলিলেন—'ক্সীজাতি বড় জঞ্জাল।'

চিত্ৰক মাথা নাড়িয়া বলিল —'না, পুৰুষ বড় জ্ঞাল (ক্ৰমশঃ)

ভারতীয় সংস্কৃতিতে দর্শনের স্থান

শ্রীদতীশচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় এম-এ, পি-আর-এদ, পিএচ-ডি

মাত্র্য ও ইতর প্রাণীর মধ্যে পার্থক্য কোথায় ? অকাক জীবজন্তর মত মাত্রুবকে কুধার অন্ন, পিপাসার জল ও রৌদ্র বৃষ্টিতে আগ্রহণ খুঁ লিতে হয়। জন্তরা এসব পাইলেই সভট হইতে পারে, কিছু মাতুষ ভাহা পারে না। মাতুষের মধ্যে জ্ঞান-তৃষ্ণা বলিয়া একটা পিপাসা আছে। এ পিপাসা ভৌতিক জলে মিটে না। মাহুষের পেটের কুধা অলে মিটিভে পারে, কিছ তাহার মানসিক কুধা পকালেও তৃপ্ত হয় না। এ কুৎপিপাসা মিটাইবার অক্ত মাত্র্য সব বিষয়েই জানলাভ করিতে চায়। সে নিজে কি ? তাহার স্বরূপ ও পরমার্থ कि ? स्नीतस्तर सड़ প্রকৃতি হইতে উদ্ভূত, ना नेपत বা পরমাত্মার ইচ্ছা ও জ্ঞান প্রস্ত । জন্ম ও মৃত্যু কি ? লন্মের পূর্ব্বে ও মৃত্যুর পরপারে মানবাত্মার কোন অন্তিত্ব থাকে কিনা ? এ সব প্রশ্ন মাহুষের মনে স্বতঃই উঠে এবং শেগুলির **সন্তোবজনক** মীমাংসা করিবার চেষ্টা **মাছ**বের শক্ষে অপরিহার্যা। ইহা হইতেই দর্শন শাস্ত্রের উৎপত্তি ইয়াছে। বে শাল্লে এসব প্রশ্নের বিচারসক্ত মীমাংসা ক্রা হয় তাহাকেই দর্শন বলে। অতএব বলিতে হয় দর্শন येषि मान्नरवित्रहे धक्टा चिष्ठ প্রয়োজনায় বস্তু, উহা গ্রনবিশ্বক করনাবিলাস মাত্র নহে। আল্ডুদ হাক্স্লে Aldous Huxley) নামে এক স্থাসিক ইংরেজ লেখক াহার এক প্রন্তে (Ends and Means) এরপ মন্তব্য विशाहिन त्व 'मास्य जाहात जीवरन अक्टा मार्निक मज-

বাদ অমুদরণ করিয়া চলে, জীবজগৎ সম্বন্ধে একটা ধারণা লইয়া জীবনপথে অগ্রদর হয়। একথা শুধু চিন্তাশীল ব্যক্তির পক্ষেই সভ্য নহে। ইহা একান্ত চিন্তাবিমুখ লোকের পক্ষেও প্রেষ্টিয়া। ভাল হোক, মন্দ হোক,—কোন একটা দার্শনিক মত অবলম্বন করিয়া মানুষের জীবনে চলিতে হয়। কোনও দার্শনিক মত না মানিয়া জীবনে চলা বায় না।

প্রত্যেক মামুষের পক্ষে যে কথা বলা যায়, যে কোন মহম্ব সমাজ বা মহম্বজাতির পক্ষেও সে কথা সমভাবে প্রধোজ্য। বিভিন্নকালে ও বিভিন্ন দেশে অনেক মুমুন্ত-জাতি ও লোকসমাজের উত্থান পতন ঘটিয়াছে ও ঘটিবে। এ সব কাতি ও সমাকের মধ্যে এক একটা সভ্যতা ও সংস্কৃতি গড়িয়া উঠিয়াছে এবং উহাদের পতনের সঙ্গে পৃথাও হইয়াছে। একটি সভ্যতা ও সংস্কৃতির উৎপদ্ধিত্বৰ অমু-मकान कतिला दिल्छ भाष्या वारेद य छेरात मूल धक्ता দর্শন-মত নিহিত আছে। কোন জাতির সভ্যতা ও সংস্কৃতির মূলে আছে তাহার দার্শনিক দৃষ্টিভনী। বে জাতি জীব-ৰগৎ সহত্তে যেরপ দার্শনিক মতবাদ পোবণ করেন ভাতার সভ্যতা ও সংস্কৃতিও সেইভাবে গড়িয়া উঠে। এক্স কোন कां छित्र पर्मनटक छेरात मः इछित्र मात्र वस्त्र वना यात्र। ट्यान লাভি সভ্যতা ও সংস্কৃতির কোন তারে আছে ভালা উলার मर्नन श्रेटिंग्से निर्वत्र कता यात्र। भाग्ने जा तात्वत्र मानिक অভবাদ হইতেই তাহার বাজিক সভাতার বিক্র আক্রোস

পাওয়া যায়। আবার আর্য্য জাতির আধ্যাত্মিক দর্শনের
মধ্যেই উহার মানবিক সভ্যতার কিছু পরিচয় পাওয়া যায়।
অত এব আমরা বলিতে পারি যে দর্শন কোন জাতির
সংস্কৃতিতে ওতপ্রোতভাবে জড়িত আছে এবং উহাকে
সঞ্জীবিত করিয়া রাখিয়াছে।

দর্শন ভারতীয় সংস্কৃতির মূল উৎস ও সঞ্জীবনী শক্তি। এই সংস্কৃতির অপর নাম আর্য্য সভ্যতা ও সংস্কৃতি। যে আর্য্য সংস্কৃতি ভারতবর্ষে প্রবেশ ও প্রদার লাভ করিয়াছিল তাহার মূল আধার হইল বেদ ও উপনিষদ্। বেদ ও উহার অন্তস্থ উপনিষদ্দমূহে আধুনিক অর্থে পূর্ণাক্স দর্শনশাস্ত্র না থাকিলেও উহাদের মধ্যে যে একপ্রকার দার্শনিক দৃষ্টিভঙ্গী ও দার্শনিক মতবাদের বীজ নিহিত ছিল তাহা অস্বীকার করা যার না। এই বীজ কালে উপ্ত হইয়া ভারতীয় সংস্কৃতি-রূপ মহীরুহে পরিণত হইয়াছে। উহাই আবার বেদান্ত-দর্শনরূপে চরমোৎকর্ষ লাভ করিয়াছে এবং ভারতীয় সংস্কৃতির বিভিন্ন শাখার মধ্যে অল্প বিশুরভাবে প্রকাশ-মান আছে। ভারতের বেদ ও উপনিষদ তদন্সারী দর্শন-মতগুলি জীবদেহে রক্তকণার লায় ভারতীয় সংস্কৃতির সর্বাঙ্গে ও সর্বাধমনিতে প্রবাহিত হইতেছে। একথার সত্যতা উপলব্ধি করিতে হইলে আমাদের ভারতীয় সংস্কৃতির প্রধান অকগুলি সম্বন্ধে আলোচনা করিতে হইবে।

কোন সংস্কৃতির কথা বলিলে আমরা প্রধানতঃ পাঁচটি বিষয় বৃঝিয়া থাকি, যথা সাহিত্য ও ভাষা, বিজ্ঞান, চাগ্ধ-কলা, ধর্ম ও দর্শন। সংস্কৃতির অন্যান্ত অক্ষের কথা কেহ কেহ বলিতে পারেন। কিছু সেগুলিকে এই পঞ্চাকেরই অন্তর্ভুক্ত করা যাইতে পারে মনে হয়। কোন সভ্যজাতির কোন কৃষ্টি বা সংস্কৃতি আছে কিনা—তাহা বলিতে গেলে উহার কোন ভাষা বা সাহিত্য আছে কিনা, কোন বিজ্ঞান সম্পদ আছে কিনা, উহা চাক্ষকলার স্বষ্টি ও সমাদর করে কিনা এবং উহার মধ্যে কোন ধর্ম ও দর্শন মত বিজ্ঞান কিনা তাহাই দেখিতে হইবে। এগুলিকে বাদ দিলে সংস্কৃতি বলিয়া কিছু থাকে না। যে জাতির কোন পরিক্ষৃত্ট ও পূর্ণাক্ষ ভাষা নাই, কোন বিজ্ঞান ও চাক্ষকলা নাই, কোন ধর্ম ও দর্শন নাই তাহার কোন সংস্কৃতিও নাই বলিতে হইবে। আবার যে জাতির নিক্ষ সভ্যতা ও সংস্কৃতিতে আহা লাই সে ক্লান্টি যে প্রাতর নিক্ষ সভ্যতা ও সংস্কৃতিতে আহা

হইতে ভারতবাসী হিন্দু তাহার নিজ ধর্ম ও দর্শন অর্থাৎ সংস্কৃতির মূল বিষয়ে সন্দিহান হইয়াছে এবং তাহার প্রতি অনাস্থা ও অনাদরের ভাব দেখাইয়াছে সেইদিন হইতে তাহার পতন আরম্ভ হইয়াছে। সে দিন গুণিতে হয় ভারতে ইংরেজ শাসন প্রবর্তনের দিন হইতে, ভারতবাসীর রাজ্ঞানতিক ও সাংস্কৃতিক দাসত্বের আরম্ভ দিবস হইতে। আরু সে দিন চলিয়া গিয়াছে। ভারতবাসীরা অনেক কিছু ত্যাগ ও ক্ষতি স্বীকার করিয়া স্থাধীনতা অর্জ্জন করিয়াছে। এখন তাহাদের নিজ ধর্মা, দর্শন ও সংস্কৃতিতে আস্থা ফিরিয়া আসিবে এবং আবার ভারতীয় সংস্কৃতির মূল প্রবাহ ভারতবৃত্তিত বিহু তার্বাই হইয়া উহাকে শ্রীমণ্ডিত ও শক্তিশালী করিয়া তুলিবে এবং পৃথিবীর সর্ব্বত্ত ভারত-মাতাকে গৌরবের আসনে প্রতিষ্ঠিত করিবে এরূপ আশা করা যায়।

এখন ভারতীয় সংস্কৃতিতে দর্শনের স্থান কিরপ তাহারই আলোচনা করিব। আমরা পূর্বের পঞ্চাঙ্গ সংস্কৃতির কথা বিলিয়াছি। ভারতীয় সংস্কৃতিতে এই পঞ্চাঙ্গ বিভ্যমান আছে। ভারতের একটা ভাষা ও সাহিত্য আছে, অস্ততঃ পূর্বের সংস্কৃত ভাষাই ভারতীয় ভাষা বিলিয়া বিবেচিত হইত। প্রাচীন ভারতে বহু বিজ্ঞানেরও অভ্যুদ্ধ হইয়াছিল। উহার একটা নিজস্ব চারুকলাও ছিল, যদিও কালে ইসলামী ও অক্স বিদেশীয় কলার সহিত তাহার সংমিশ্রণ ঘটিয়াছে। তাহার পর ভারতীয় আর্য্যদের যে একটা ধর্ম্ম ও দর্শন ছিল এবং এখনও আছে তাহা স্থামাত্রেই স্থাকার করিবেন। ইহাদের মধ্যে দর্শন ভারতীয় সংস্কৃতির প্রধান অস্করণে বিবেচিত হইবার যোগ্য। কারণ ভারতীয় দর্শনের দৃষ্টিভঙ্গী ও মূল তথাগুলি উহার অন্তান্ত অঙ্গপ্রতাত্তে অমৃ-প্রবিষ্ট ও অম্বরণিত হইয়াছে।

আধ্যাত্মিকতা ভারতীয় দর্শনের চিরস্তনী দৃষ্টিভঙ্গী। বৈদিক যুগ হইতে আরম্ভ করিয়া আধুনিক কাল পর্যন্ত ভারতীয় দার্শনিকদের স্থির বিশ্বাস এই যে জীবজগৎ, এই-নক্ষত্র এবং দেবতারাও এক অলম্খনীয় ধর্ম্মায়শাসনের বশবর্তী। ঋথেদে ইহাকেই ঋত বলা হইয়াছে। মীমাংসা দর্শনে যে অপূর্ব্ব অর্থাৎ কর্ম্মকল শক্তির উল্লেখ দেখিতে পাওয়া বায় এবং স্থায়-বৈশেষিক প্রভৃতি দর্শন শাখায় যে অদৃষ্টের কথা ভনিতে পাওয়া বায় তাহা ঋতেরই ভাবাত্তর। বোধ হল ইহা হইতেই বিজ্ঞানসক্ষত্র কার্য্যকারণ নিয়দের

ন্তায় কর্ম ও কর্মফল নিয়মের অলত্যনীয়তা সহকে বিখাস ভারতীয় ধর্ম ও দর্শনে দৃদ্দ্দ হইয়াছে। ভারতীয় দর্শন শাথাগুলির আর করেকটি সমান তক্স হইতেছে—জন্মান্তর-বাদ, সংসারের নর্মারতা, জীবাত্মার অমরত্ব, বন্ধর ও মুক্তির প্রমোজন। এ ছাড়া অনেক দর্শনে ঈর্মর, ব্রন্ধ, প্রকৃতি, প্রকৃষ, মায়া, অবিভা, নামরূপ প্রভৃতি তত্ত্বের কথা আছে। আবার কোন কোন দর্শনে স্বর্গ, অপবর্গ, প্রকৃষার্থ, যাগযজ্ঞ প্রভৃতির আলোচনা করা হইয়াছে। মুক্তির উপায়রূপে জীবজ্বগত্তের যাবতীয় পদার্থের তত্ত্বিচার, মনন্তব্যের আলোচনা এবং যোগসাধন, কর্ম্ম, ভক্তি ও জ্ঞানমার্গের বিশ্বদ বিবরণ একাধিক দর্শনে পাওয়া যায়।

ভারতীয় দর্শনের প্রতায়রান্তি, ভাবধারা ও সার্বভৌম তরগুলি প্রাচীন ভারতের সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্যকে কি ভাবে প্রভাবিত ও পরিপুষ্ট করিয়াছে তাহা সংস্কৃতজ্ঞ পণ্ডিত মাত্রেই জানেন। প্রাচীন ভারতের কাব্যে, नांद्रेटक. डेजिशास, बारिकद्रांग, अनुकाद्र अर्थाए जाया ख সাহিত্যের সর্বাঙ্গে ভারতীয় দার্শনিক অল্লবিশ্বর পরিচয় পাওয়া যায়। কালিদাস, ভবভৃতি প্রভৃতি মহাকবিদের রচনাবলী পাঠ করিলে একথার সত্যতা বুঝা যাইবে। এমন कि পাণিনির ব্যাকরণে, পতঞ্জলির মহাভাষেত্ৰ দাৰ্শনিক তথা সম্বলিত একাধিক সূত্ৰ পাওয়া বাইবে। পক্ষান্তরে ব্যাকরণের দার্শনিক আলোচনা হইতে পাণিনি দর্শনের সৃষ্টি হইয়াছে। আধুনিক কালে ভারতীয় ন্থায় ও দর্শন শাল্প সাহিত্যসম্রাট বঙ্গিমচন্দ্রের অনেক রচনায় ভাব ও ভাষায় লালিতা সম্পাদন করিয়াছে। কবিশুরু রবীক্সনাথের অনেক গছ, কবিতা ও গীতিরচনার মধ্যে উপনিষদ ও বেদাস্থের ভাবধারা এমন স্থন্দর ও মধুরভাবে বিকশিত হইয়াছে যে ভারতীয় দর্শনের সঙ্গে কিছু পরিচয় না থাকিলে সেগুলি মনোজ্ঞ না হইয়া ছর্কোধ্য বা অবোধ্য বলিয়া মনে হইবে। অফুরপভাবে দেখা যায় एव देवकवार्मात्मद्र तकान कान ना शांकित्न देवकव नाहिका বুঝা স্থকঠিন হইয়া পড়ে। দর্শন যে মাহবের ভাষা ও শাহিত্যকে প্ৰভাৰান্বিত করিবে তাহা অতি স্বাভাবিক क्था। छात्रात्र উৎপত্তি यে ভাবেই इंडेक ना क्न, শাহবের মনের ভাব ও প্রত্যের তাহার পরিবর্তন ও निविद्य नाविष्ठ करता मानव छाव क्षेत्रान कविवांत्र

জন্তই ভাষার স্পষ্টি! অভ এব দার্শনিক চিস্তা যদি নাহ্যবের অপরিহার্য্য হয়, ভবে ভাহা প্রকাশ করিবার জন্ত ভাষা ও সাহিত্যেরও বিকাশ ঘটিবে।

मकल (मरभव मर्भात्व हेिछ्हारम (मर्था यांव्र स्व क्षे**श्रह** বিজ্ঞানগুলির প্রথক সন্তা ছিল না, উহারা দর্শনেরই অঞ্জ্রপে বিজ্ঞমান ছিল। পাশ্চাত্যদেশের জড়বিজ্ঞানগুলি প্রথমে প্রাকৃতিক দর্শন (Natural Philosophy) নামে অভিহিত হইত। এতদিন মনোবিজ্ঞান দর্শনের অন্তর্ভুক্ত हिल। हेमानीः हेशंत्र शुथक् मखा त्कर त्कर श्रीकांत्र করেন। ভারতীয় বিজ্ঞানগুলি প্রথমে দর্শনশাল্পের মধোই সন্নিবিষ্ট ছিল। জীববিতা, রসায়ন, জ্যোতিষ প্রভৃতি विकारन रय नव विषय आलोहिज इस जोशास्त्र अरनकाः म ভারতীয় দর্শনের বিভিন্ন শাখাতে বিশেষভাবে প্রতিপাদিত হইরাছে। স্থার প্রফল্লচন্দ্র রায়ের Hindu Chemistry (হিন্দু রসায়ন), আচার্য্য ত্রজেন্দ্রনাথ শীলের The Positive Sciences of the Ancient Hindus (প্রাচীন হিন্দুদের প্রাকৃতিক বিজ্ঞান) প্রভৃতি গ্রন্থ পাঠ করিলে দেখা যাইবে যে ভারতীয় বিজ্ঞান ৩ দর্শন অধাদীভাবে সহরযুক্ত। জীববিলা, প্রাণীবিলা, আয়ুর্বেদ প্রভৃতি বিজ্ঞানেও দার্শনিক তত্ত্বের আলোক প্রতিফলিত হইয়াছে। এমন কি আয়র্ব্বেদে একটা ম্বতম্ব দর্শন মতের আলোচনা ও প্রতিষ্ঠা দেখিতে পাওয়া যায়। অভএব বলিতে হয়, ভারতীয় সংস্কৃতির বিজ্ঞানরূপ অঙ্গে দর্শনের যথেষ্ঠ প্রভাব আছে এবং তাহার সমাগ্ঞান অজ্ন করিতে হইলে আমাদের দর্শনশাল্পে কিছু বাৎপত্তি লাভ করা আবশ্যক।

চারুক্লা (Fine Arts) বলিতে আমরা প্রধানতঃ
নৃত্যা, গীত, বাত্যা, নাটক, আলেখ্য ও ভার্ম্বর্য এই ছয়টি
বিষয় ব্রিয়া থাকি। কামস্ত্রকার বাৎস্থায়ন চৌষ্টে
কলার কথা বলিয়াছেন। ইহার মধ্যে চারুক্লার সজে
শ্রমশিল্প (Industries) ও যন্ত্রশিল্পের (mechanics)
উল্লেখ দেখিতে পাওয়া বায়। শেষে উল্লিখিত ছুইটি
বিষয়কে সংস্কৃতির অঙ্গ হিসাবে না ধরিয়া আমরা
চারুক্লাকেই সংস্কৃতির অপরিহার্য্য অঙ্গরূপে গণনা
করিয়াছি। ভারতীয় চারুক্লার ষড়বিধ অংকই মুর্মিন্তু
ন্নাধিক প্রভাব পরিলক্ষিত হয়। বিশেষ করিয়া

দার্শনিক ভাবের আভরণ ভারতায় সলীতের অকের শোভা বর্ছন করিরাছে। স্থপ্রাচীন বৌদ্ধ গান ও দোহার মধ্যে व्यत्नक मार्गनिक छत्र निश्चि चाह्य। व्यवस्थित, ह्छीमान, जुनमीमांम श्राप्त कित्रयात्रीय कवितमत नमावनी छ স্পীতাবলীতে অনেক তত্তকথা ও শান্তকথার সন্ধান পাওয়া যায়। জন্মদেবের গীতগোবিন, চঙীদাসের গীত-िष्ठामि ଓ बिङ्ग्क्षेची वन वनः जुननीमारमत माहाननी তৰ্জান দারা অনেকেরই জানচকুর উন্মেষ করিয়াছে। হরিদ্বীর্ত্তন ও বাউল প্রভৃতি বৈষ্ণব দলীতে বৈষ্ণব বেদান্ত-पर्नतित्र व्यत्न उद क्रममिठ हत्म क्षकां मिठ इरेशाहि। স্থামা সঙ্গীতে তন্ত্রের দার্শনিক মতবাদের আভাস পাওয়া যায়। আধুনিককালে রচিত শীশীকালীকীর্তনের মধ্যে व्यदेष छ- त्वलार खन्न छन्न कथा य जारन भनिकृते इरेग्राह्य তাহা তনিলে বিশ্বয় হয়। সাধক রামপ্রসাদের সঙ্গাতে দার্শনিক শক্তিবাদের অপর্ব্ব পরিচয় পাওয়া যায়। ভারতীয় ব্রাহ্মসমাজের সন্ধীতাবলী যে উপনিষদ ও বেদাক্তের ভাবধারার গান্তীর্য্যে ও মাধুর্য্যে মহিমাঘিত তাহা वना निष्यदाबन। कविश्वक त्रवीक्तनात्वत्र मधीरा বিশেষভাবে তাঁহার গীতাঞ্জনীতে শহরের মায়াবাদমুক্ত অবৈত-বেদান্তের তব্ এমনভাবে ঝক্কত হইয়াছে যে তাহা বিশ্বমানবের শ্রদ্ধা অর্জন করিয়াছে। অতএব ভারতীয় সন্ধাতের সারমর্ম উপলব্ধি করিতে হইলে এবং উহার ब्रमाचामन कविरठ शिल मार्निक उच्चविरद बर्धारमाग्र জ্ঞান থাকা আবশ্রক।

ভারতীয় সংস্কৃতির ইতিহাসে ধর্ম ও দর্শন চিরকালই এক অবিছেন্ত সধদ্ধে আবদ্ধ। পাশ্চাত্য সংস্কৃতির ইতিহাসে কিন্তু ধর্ম ও দর্শনের এরপ ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক দেখা যায় না। সেধানে কখন উহারা পৃথক্ ও অভন্তভাবে নিজ নিজ সন্তা রক্ষা করিয়া চলিয়াছে, আবার কখন দর্শনবিক্ষক সমালোচনা ঘারা ধর্মমন্তকে ক্ষুপ্ত করিয়াছে। অথবা উহার ধ্বংস সাধন করিয়াছে। ভারতীয় দর্শন শাথাগুলি ধর্ম ও অধ্যাত্মবিতার সহার ও পরিপোষকরপেই বিস্তার লাভ করিয়াছে। ভারতীয় ধর্ম বলিতে মুখ্যতঃ আমরা বৈদিক বা হিন্দু ধর্মই বুঝিতে পারি। অবশ্র ভারতভূমিতে বৌদ্ধ, জৈন প্রভৃতি অবৈদিক ধর্মেরও অভ্যুথান হইয়াছে। কিছ ভারতীয় সকল ধর্মই এক বা ততোধিক দর্শন মতের উপর প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে ও তাহাদের আমুকুল্য লাভ कत्रियां हि । भौभारता ७ विलाख पर्ननश्चित्क विषक पर्मन বলা যার, কারণ উহারা বেদ বা শ্রুতির স্বত: প্রামাণ্য মানিয়া লইয়াই যুক্তিতৰ্ক ছারা শ্রুতিবাকোর ব্যাখ্যা ও সামঞ্জ বিধান করিবার চেষ্টা করিয়াছে। স্থায়-বৈশেষিক ও সাংখাযোগ দর্শন এভাবে বৈদিক না হইলেও উহারা স্বাধীন বিচারপদ্ধতি অবলম্বন করিয়া বৈদিক ধর্মোর প্রতিষ্ঠা ও নান্তিক মতের খণ্ডন করিয়াছে। বৌদ্ধ ও জৈন ধর্মও নিজ নিজ দর্শনমতের উপর প্রতিষ্ঠিত ও প্রসারিত হইয়াছে। ইহার ফল হইয়াছে এই যে ভারতীয় ধর্ম ও দর্শন পরস্পরের মধ্যে এমন নিবিডভাবে অহপ্রবিষ্ট যে ধর্মতত্ত বুঝিতে হইলে দার্শনিক তত্ত্তান অপরিহার্য্য ও অভ্যাবশ্যক। এমন কি কোন কোন হ'লে দর্শন ও ধর্ম প্রায় একই বস্ত হইয়া গিয়াছে। একক সাংখ্য, যোগ, मीमारमा এवर विषाख्यक धर्माखं वना इव व्यावात प्रभाव বলা হয়। অতএব ভারতের বিভিন্ন ধর্মা সম্বন্ধে জ্ঞানলাভ করিতে হইলে অথবা জীবনে কোন ধর্ম পালন করিতে গেলে দার্শনিক জান-বিচার অবশ্য কর্তব্য ও হিডকর।

এখন আমর। বেশ ব্ঝিতে পারি যে ভারতীয় সংশ্বতিকে বদি রক্ষা করিতে হয় এবং উহার সর্বাদীন উয়তি সাধন করিতে হয়, তবে ভারতীয় দর্শনের পৃষ্টি ও প্রীর্দ্ধি করিতে হইবে। এই কর্তব্যপালনের দায়িত্ব কেবল ব্যক্তিবিশেবের নয়, উহা সমগ্র জাতির ও রাষ্ট্রের দায়িত। ভারতীয় দর্শনের পুনরভূযখানে স্থীমাত্রেই সচেট্ট হউন ইহাই কামনা করি।



তুৰ্ঘটনা

শ্রীরবীন্দ্রনাথ রায়

মৃত্যক মলয়ানিল দোলনটাপার বুকে শিহরণ জাগায়, দিগত পূর্ব হয় দৌরতে।

কিন্ত ঝড়বাগলের থিনে কোথায় যায় সেই সৌরস্ত, বরং ঝড়লান্ত ছিল্লম্ব উভান পাপড়ীচুর্ণের করুণ সমারোহে হৃদয় আকুল করিয়া তোলে।

মাক্ষের জীবন ও অকুরাপ, অনত ক্ষমার উচ্ছল। পাছাড়ী নদীর বক্ষার স্থার সহসা বিপর্যায় নামিলে সেই ছুকুল-ছাপান প্লাবনে আশ্রহারা তৃণগুচ্ছের মত এখানেও নীরবে ভাসিয়া যাইতে হয় কিবা ভাসাক্রমে প্রাণে বাচিয়া থাকিলে নিত্তরশ্ব ভটিনীর বুকে নড়্বড়ে পাথরের ক্রিকুচির স্থায় অসহায় ও কদ্যা জীবন টানিয়া চলিতে হয়। উভয়েই কিকুঞ্জি ও বীভংস!

চক্র প্রের উদয় অতে ব্যতিক্রম হয় না, অপ্রান্ত গ্রহনক্ত্রের বেলার ঠিক একই নিয়ম। কংশে কংশে সেপানে ছ্বটনা ঘটে না, কিন্তু মানুবের বেলার ঠিক উপেটা, কেহই বেচছার আইন ও শাসন মানিরা চলিতে চাহে না বলিয়া পদে পদে হাঙ্গামার স্থাই হইয়া থাকে। মানুবের এই প্রবৃত্তিকে শাসনে রাখিবার জক্ত প্রত্যেক সংস্থার কত আইনকাস্থন, কিন্তু তুর্বচনার অন্ত নাই।

প্রথম উঠে; বিভিন্ন লোকে রকমারী সমাধান দেন। কিন্তু
সকলেই হটকারিতা, দায়িত্বজ্ঞানহীনতা কিন্তা নিয়ম শৃথ্যনায় অবহেলা
অস্ততম কারণ বলিয়া বিশ্বাস করেন। মনোবিদরা আরও কিছু বলেন,
তাঁহারা মানসিক স্কন্ততার উপরে বেশ জোর দেন। তাঁহারা বলেন
মানুবের চেতন-মন কাজের সক্রির নিয়ামক হইলেও অবচেতন মনের
দায়িত্ব কম নহে। একমাত্র শিক্ষা, শাসন ও অসুশীলন অবচেতন
মনের গোপন কাহিনী সংঘমের কঠিন নিগড়ে আবদ্ধ রাগে বলিয়া
সমাজ ও সংসার বাঁচিয়া পাকে। সর্বত্র স্বব্রায় সত্য কথা, মনের
কথা বলিতে পেলে সংসারে বাস করা সম্ভব হয় না, এমন কি
লোকিক ভন্ততাও রক্ষা করা ভ্রাহ হইয়া পড়ে। গীতায় আছে.

কর্মেক্রিয় ক্ষান্ত রাখে, কিন্তু মনে মনে পাকে

थान यात्र हेल्पित्र विश्वत्र ।

সমাজের ভয়ে সংযত থাকিতে হয় বলিয়া মনের অনেক গোপন বাসনা মনেই নিলয় পাইয়া থাকে। কিন্তু বাভিচারী মনের চিত্ত-নিরোধের চোরাবালিতে তুর্গটনা বন্ধ করা সকল সময়ে সম্ভব হয় না।

ক্ত ধন সামগ্রী, জীবন—এমন কি দেশ ও জাতি যে এই ছুর্ঘটনায় উৎসন্ধ হইরা বার কে সেই থোঁজ রাথে গু ম্যালেরিয়া, মহামারী, সাত্মদারিক দারা মুক্ষবিভাট লাগিরাই মাছে, ছুর্ঘটনাও ইহাদের চেয়ে কম যার না। সাম্প্রতিক ঝঞ্চাবাত্যায় বিধবন্ত দার্জিলিক এর থব সকলেই শুনিয়াছেন। এই সেদিন পাঞ্জাব মেলের ব্যাপারে প্রাণ একশত যাত্রীর জীবনহানি হইল, জীবরুত হইরাও রহিল অব্দুর্রপ স্থানীসূজ বিমান অবতরণ ভূমিতে যাত্রীসমেত ওলন্দাজ বিমানে কথা নিশ্চরই স্থৃতির ভারে নিশ্চিত হইয়া যার নাই। ২৪ জ্বল্ আমেরিকান রাজনীতিক, ১০ জন সাংবাদিক এবং অস্তান্ত যাত্রীসং ৪০ জন যাত্রীর জীবন নাশ বিশেষ উল্লেখযোগ্য তুর্কির।

সম্প্রতি রেলওয়ে-সচিব আয়েঙ্গার সাহেব জানাইয়াছেন যে জসিছি ছর্ঘটনা অন্তর্যাতীদের কাজ। আনসারী সাহেব ঐ ট্রেপেই ছিলেন, ভাঙ্গাগাড়ী হইতে নিজ্ঞান্ত হইয়া ফিসমেট খোলা দেখিয়াই বলিয়া উঠিলেন যে উহা নিছক 'প্রাবেটাস'। ভাবিলেন না—ফিসমেট আলগা হওয়াটা ছর্ঘটনার কারণ—না ছর্ঘটনার ফল। ইঞ্জিন ধ্বংস হওয়ায় লাইনকে লাইন যেখানে ভাঙ্গিয়৷ চুর্গ হইয়া সায় সেখানে কিসমেট আতা ও অক্ষত থাকিবে কে একথা বলিবে ? তথা উদ্ঘাটনের চেয়ে অপরের ঘাড়ে দোষ চাপাইয়া দেওয়ায় আয়তৃথ্যি আছে, রেলওয়ে-সচিব কি এই সহজ পথ ধরিয়াছেন ? পুরাতন লাইনের ভারবেজ নরম মাটীর উপরে অর্জগতাকী পূর্বে বসান লাইনের উপরে নুজন ডিয়াইনের অতিকায় ইঞ্জিন নিরাপদ কি ? পুরাতন লাইনের ভারবহন ক্ষমতা সর্বত্ত সমান আছে কি ? বাড়তি গাড়ীর ওজনের সহিত ভারীইঞ্জিনের বর্দ্ধিত গতি-বেগ কি বিহিটা ছর্ঘটনার কারণ ছিল ? কুঞ্জুক্ষ কমিটার রিপোর্টে প্যাসিফিক ইঞ্জিনের গতিবেগ সম্বন্ধে কোনও মন্তব্য ছিল কি ?

পাইনটের দিওনির্গয়ে ভুল কিস্বা অন্তথাতীদের কারসাঝী, কারণ যাহাই ইউক, হুণটনার শেষ নাই। যানবাহন, রাস্তায় ঘাটে, কলকারপানার সর্বত্র, সামাশু ক্রেটা, ব্যক্তিবিশেষের সামাশু লোভ জনসাধারণের বিপদের কারণ হইয়া দাঁড়াইয়াছে। কলিকাতা নগরীর জনবহল রাস্তার ছবি একবার শারণ করণ । হুইদিক হইতে ট্রামগাড়ী যাওয়া আসা করিতেছে; হঠাৎ একথানা বাস্ ক্রুত্বেগে চলজ্ব ট্রামকে পশ্চাতে ফেলিয়া অগ্রগামী সামনের ট্রামের পালে আরিক্রাণ্টাইলা। ট্রামের 'কণ্ডান্তার' দেখিল ভাহার প্রাণ্য বাত্রী বাস্ত্রাণ করিছে কাটাইয়া গাওয়ার প্রত্তিহে কাজেই ভাহার গতিবেগ বাড়াইয়া "বাস্"কে কাটাইয়া যাওয়ার প্রত্তিহে ব মংলব অস্বাভাবিক নহে, কলে হয়ভো বাসের পাদানীর উপরে দণ্ডায়মান যাত্রী ছিটকাইয়া পড়িয়া এক বীভংদ দৃশ্য স্টে করিলেন, ভীড় জমিল, এ ম্ছর্ভেই পালের রিক্সা-ওয়ালা কিস্বা ঠেলাগাড়ী সবেগে ফুটপাথ চাপিয়া উঠিল। ছুই

কজন নাগরিক কিখা বাণমারের তুলালের বেখারে প্রাণ হারান হানগরী রাডার তুর্বটনা কটুকজনা নহে।

কলকারখানা অঞ্চলে বড় রাস্তার বুকের উপর দিরা মালগাড়ী নিবার রেললাইন (সাইডিং) সর্বত্র ছড়ান আছে। পাহারার যথেষ্ট বস্থা সম্বেও লারী, গাড়ী ও ইঞ্জিনের ছুর্বটনা প্রায়ই লাগিরা আছি।

বড় বড় কলকারখানার তুর্ঘটনা প্রতিরোধ করিবার জন্ম কত বিশ্বা। চোথে চণমা, পারে 'গামবুট', পরিধানে 'আ্যাপ্রোণ', বিবাজ্ঞান প্রতিহত করিবার জন্ম নাসিকার প্যাত এবং আরও কত কি ! গাচীর পত্রে, পোষ্টারে ও বিজ্ঞাপনীর সাহায্যে তুর্ঘটনার ফলাফল ত সাজ্বাতিক হইতে পারে তাহার সচিত্র বর্ণনা যত্রত্র বিজ্ঞাপিত গছে, তত্রাচ লোকে বিপদপ্রস্ত হয়। বহু তুর্ঘটনা বিশ্লেষণ করিরা দাচিৎ আক্রিকতাই বিপদের মূল বলিরা প্রমাণিত ইইয়াছে। ধিকাংশ ক্ষেত্রেই অমনোযোগিতা, হটকারিতা কিম্বা স্বার্থপরতারপদের কারণ বলিরা দেখা গিরাছে।

চঞ্চল নাগরিক-সভাতার অভাধিক থানবাহন সমস্তা অনেকাংশে র্ঘটনার কারণ। ধেরালী ডাইভার কিমা মাতোয়াল গাডোয়ান নিবাহন সংক্রান্ত নিয়ম শুখালায় যথেষ্ট অবহিত না থাকায় নিরীহ । পঢ়ারীর বিপদের কারণ হইরা পাকে। ঠিক একই কারণে ভাহাদের राज्यपद करका अवर कीवननात्नेत्र मःथा कम इत्र ना। ানেক সময় দেখা যায় অনাভজ কিলা অসমসাহসিক প্ৰচারীও াজেদের ক্রটীতে বিপদ ডাকিরা আনে। নির্দিষ্ট ফুটপাৰত না টিয়া যানবাহন চলিবার রাস্তায় চলিতে গিয়া উভয়েরই ক্ষতির কারণ য়। প্রচারীর সহিত কেরীওয়ালার ভাড সম্মিলিত হওয়ায় যান-াহনের সহিত ঠোকাঠুকি আর আক্ষিক ঘটনা নহে, কিন্তু এইরূপ ्विष्टेनात्र मात्रिक भवनात्रीत इहेलाख यानवाहरनत अ्किहे (वनी इया ক্তিমূল জনতার ডাইভার নির্গাতন কিলা গাড়ী-পোড়ান যুক্ষাত্র াহরের এক নুতন সম্ভা হইরা দাড়াইয়াছে। মানব কলাণের র**ক্ত** রচিত আইন মামুবেই লঙ্গন করে, আর মামুবের এই কুড়তা প্রতিরোধ করিবার জন্ত মামুষ্ট লড়াই করিয়া মরে। কিমান্চর্যান শতঃপর্ম।

প্রতিদিনের ঘটনা হইতে করেকটী উদাহরণ উদ্ধৃত করির।
সমস্তাঘন চিত্রটী পরিক্ষৃট করিবার প্রয়াদ প্রাসন্তিক মনে হর। বাছ
ও সমষ্টির ইতিহাসে দুর্ঘটনার বিস্মৃত ইতিহাস কেবল কি অবিমিশ্রিত
বুঃবের আকর ? না, জাতীর জীবনের আনন্দপূর্ণ শুভ মুহুর্তের স্থান্ত
বিপদের অতুত করম্পর্শে সংসাধিত হইরা উঠিয়াছে।

. পুণ্যানন্দ মহারাজ সংসার-বিমৃক্ত সন্থাসী হইয়াও সংসারাসক্ত নরনারীর নিরাল্যর শিশুনারায়ণকে 'মাসুব' বানাইবার বতে বুতী। শিশুপালদের রুশদ সংগ্রহ ব্যাপারে স্থানীর 'পালক্ষের' দরবারের জক্ত "বাসে"
বাইতেছিলেন। গেরুরা পোষাক 'একদম থালি' বাসে একটু স্থান সংগ্রহে
সাহাব্য ক্রিয়াছিল। ডাইভারের নই সময় উদ্ধারের চেটার বেশ কিছ

অর্থসর ইইতেছিল। হঠাৎ ব্রেক চাপিয়া ধরার ক্যাচ ক্যাচ শব্দ করিরা সামনে গোত্তা মারিয়াগাড়ী থামিরা গেল। যাত্রীরা হুমড়ী থাইরা একে অপরের গারে ঠোকাঠুকি লাগিল। পুণ্যানন্দজী হুড়মুড় করিরা ড্রাইভার সাহেবের থাঁচার দিকে ছিটকাইয়া হাতের বুড়ো আঙ্গুলটী ভালিয়া বিদিলেন। এদিকে দেখি, আর একজন পরিচিত ভজ্তলোক দাঁতের ব্যথার বিদিয়া পড়িয়াছেন পাশের ভজ্তলোকের মাথা তাহার গাল ঠুকিয়া দিয়াছে। এই সকল ঘটনার যাত্রীদের একদল মারমুখো হইয়া কণ্ডাইবার তাড়া করিল, কেহ কেহ হাতল না ধরিয়া 'বাব্র' মতন দাঁড়াইবার অবিমৃষ্ক কারিতার বিদ্রুপ করিয়া উঠিল।

রসিক নৈগায়িক হয়তো বলিবেন—ঠিকই হইয়াছে। স্বামিন্সী মহারাজ সংসারশ্রমকে বৃদ্ধাসূত দেপাইরা বৃহত্তর সংসারধর্ম পালন করিতেছিলেন, তাই সংসার ঐ বৃড়োআসুলের নিকটে কিছু আগায় করিয়া ছাড়িল—আর ঐ ভন্তলোক বিনি সারাজীবন দেশী বিলাতী সভদাগরী অফিসে হিসাবের পাতার লাল নীল পেন্সিলের খোঁচা মারিয়া এবং দাঁত বাজাইয়া জীবন অভিবাহিত করিয়াছেন এইবার কয়েকটী দাঁতের থেসারত দিয়া পুণ্যসঞ্যুকরিলেন।

কিন্তু সত্যিই কি তাই ! অহরহ প্রতিদিন রাস্তার ঘাটে চলাকেরা করিতে ঠোকাঠুকি লাগিয়াই আছে। নষ্টামীর গুরুঠাকুর হরতো ঈবং হাসিয়া "বড়ই ছু:খিত" বলিয়া সরিয়া পড়েন, কিম্বা গোবেচারা হইলে গদগদ হইয়া "আহা" "বড় লক্ষিত" বলিয়া কিঞিৎ মুপব্যাদান করেন, যেন কাটাঘায়ে সুনের ছিটা !

বিভূতিবাবু বীমার দালাল। কথার তুবড়ী, বেশ ছপরসা ইইতেছে, বাড়ী গাড়ী সবই ইইয়ছে। ছোটবড় সকল জারগায় উঠাবনা করিতে হয়। লোকে বলে আহা কি অমায়িক ভস্তলোক। বাবনার ফিকিরে চলাফেরা করিবার মাঝে পীওটালা বর্তুরান্তায় চলার বেগ মনের গতিকে উদ্দাম করিয়া দেয়। পিছে থাকা মিছে, পড়ে থাকা মিছে। বড়ের বেগে ধূলা উড়াইয়া গাড়ী ছুটয়া চলে। বড় সাথে গড়া মনের সোলালী ছবি গাড়ীয় কলরবকে পিছনে কেলিয়া আগাইয়া চলে। সাচচা ও মেকীয় থোয়াব দেখিতে দেখিতে দিনের কাজ তিনি শেষ করেন। হঠাৎ একদিন রাতায় লাইট পোটেয়র সহিত ধাকা লাগিয়া সোলালী ম্মে টুটয়া বায়। লোকে বলিয়া উঠে কাঁচা পরসা, সোলালী মেণায় কয়দিন মেজাল ঠিক থাকে?

জনৈক বৈজ্ঞানিক কার্থানার দিনরাত কাজ করিতেন, প্রতি
দিন কতণত বিলেধণ, রকমফের কাজেই তাঁহার চিত্তবিনোদন।
সংলেবণ কাজে নিযুক্ত থাকাকালীন হঠাৎ একদিন পিপাসার্থ হইরা
ভৃত্যকে জল আনিতে বলিলেন। ছুই এক পশুহ জল মূবে দেওয়ার
পরেই তিনি চলিয়া পড়িলেন। পরে জানা গেল, সেই য়াসে
কিছুক্ষণ আগে তিনিই সায়নাইড জ্বীভূত ক্রিলাছিলেন। এই
বেদনাদায়ক দুশ্ম বাঁহারা দেখিলেন—কিছা বাঁহারা শুনিলেন, সকলের

নিজের ভূলে জীবন দিরা যে অক্সারের প্রায়শ্চিত্ত করিলেন তাহাও কি কাহার অজানা ছিল ?

আর একজন রাসায়নিকের খবর জানি। তিনি এই সহরের এক রসারানাগারে কাজ করিতেন। মাবে মাবে হঠাৎ তিনি অস্বাভাবিক আনন্দম্পর হইরা উঠিতেন, আবার কয়েকদিন পরে দেখা যাইত তাঁহার বিমর্ব বদন, বাক্যালাপেও অনিচ্চুক। একদিন দেখা পেল এসিডে সমত হাতটা পুড়াইরা বসিরাছেন, জামার সেই ধার গলিরা গিরাছে। ডাক্তার আসিলেন, ঔবধ ও ব্যাত্তেজ বাঁধিয়া দেওয়া হইলে রাসায়নিককে জিজাসা করিলাম, ব্যাপার কি ? এসিড চেখারে হাত ড্বাইয়াছিলেন কেন ? বেশ লজামিত্রিত বহিষ হাসির সহিত বলিলেন, "দেখছিলাম দাগ্ৰু শক্তি তলায় বেশী না উপরে। সন্দেহ হইল-সন্তিকে কিছু একটা গোলমাল ঘটিয়াছে। নিমল ডাক্তারকে জিজাসা করায় তিনি বলিলেন, প্রত্যেক ঘটনার পিছনেই একটা কারণ থাকে। কারণ কথনও বেশ প্রতাক কথনও বা গৌণ মনের অবচেতন দেশে স্থায়োগর অপেকার অদুভা থাকে। ঠিক অনেকটা বোরকা-পরা নারীর মতন, দুভামান অংগত অদুভা। ঠেঁগালীটা স্পষ্ট করিতে বলিলে তিনি জানাইলেন যে ঐ ভন্তলোকটী সম্ভ-বিবাহিত। কম্পানীর মেসে থাকিয়া দিন গুজরাণ করেন। প্রতিভাটজনিত বিরহও তাপে তিনি উত্তেজিত। তাই সামনে যা দেখেন তাই প্রতিরোধ ৰুবিভে চাহেন। এসিডের উত্তাপ পরীক্ষা অবচেতন মনের বিজ্ঞোচের বাহ্যিক প্রকাশ। মনোবিজ্ঞানের এই তত্ত্ব পরিধার করিবার জ্ঞ সাম্প্রতিক করেকটী ছুর্ঘটনীয় সংশ্লিষ্ট ক্রিদের বীকৃতি তিনি উদাহরণ-রূপে উদ্ধৃত করিলেন।

ব্যষ্টির ক্ষেত্রে ছুর্যটনা যেরূপ বিপদ ডাকিয়া আনে, জাতির বেলায় অফুরূপ ঘটনা ইতিহাদে বিরল নহে।

পঞ্চনদের অধীবর আনক্ষণাল ম্দলমান আক্রমণ পর্বাদন্ত করিবার জক্ত উত্তরাপথের রাজপুত্রদের মিলিত সাহায়ে ক্রমবর্জমান আক্রমান শক্তিকে শিক্ষা দেওয়ার জক্ত সীমান্তে দৈন্ত সমাবেশ করিলেন; রাজ-জ্যোতিবী গণনা করিয়া আক্রমণের সময় পিছাইয়া দিলেন। উপবৃক্ত সময়ে আক্রমণ হইল, কিন্ত শিলাবৃষ্টিতে হিন্দু সৈক্তের অধিকাংশ হতাহত হওয়ায় ভারতে মুদলমান অফুপ্রবেশ সহজ্যাধ্য করিয়া তুলিল।

ভোগলকবংশীর মহম্মদ-বিন-ভোগলক পাঠান-সম্ভাটদের মধ্যে সর্ববাপেকা শিক্ষিত ছিলেন। তাঁহার করনা ছিল, পারস্ত ও চীন বিজয় করিয়া এসিরার সর্বজনমান্ত সম্ভাট হইবেন। নেপালের পথে দৈবহুর্ঘোগে তাঁহার স্থাশিক্ষিত সৈম্ভ ধ্বংসপ্রাপ্ত হইরা কেবলমাত্র ভোগলকবংশএর নহে, ভারতে পাঠান রাজত্বের ইতিহাস সংক্ষিপ্ত করিয়া তুলিল।

বেপোলিয়ন বোনাপার্ট দিখীলয়ী সমাট। রাশিয়ার জারের দর্পচূর্ণ করিয়া সমগ্র ইউরোপের জ্ববীশ্বর হইবেন, ইহাই ছিল ওঁহোর কামনা। বংশার পথে ওয়ার্শা জ্বতিক্রম করিবার পরে জনশৃশ্ব দক্ষ প্রান্তরের নিরস জ্বতিনক্ষন বিলয়ী সমাটের চিত্তে রেখীপাত করিতে পারে নাই। উদ্ধা কামনা ও জ্বসংখত লোভ ওাহাকে এমনই হটকারী করিবা তুলিরাছিল যে ক্ল'জাতির সজিম্ম নীরব প্রতিরোধ তিনি অকুধাক্র করিতে পারেন নাই। এই কারণে মন্মের রাজা হইতে তাহাছে প্রত্যাবর্ত্তন করিতে হইরাছিল। সেই প্রত্যাবর্ত্তনের পথে কল ভল্লের আক্রমণ করাসী রক্তের শীলান্তুপ রচনা করিরাছিল, পরাক্রম, হতমাল ও হতাশা সম্ভাটের সেন্ট-হেলেনা কারাগারের স্চনা এখানেই রচিত হইরাছিল।

বৈচিত্র্যার প্রকৃতির চিত্র কথনও একরঙ্গা হয় না, ব্যক্তিও জাতির জীবনে ছুর্ঘটনা বেমন একদিকে ছুঃপের পদারা টানিয়া আনিয়াছে, ক্ষেত্রাস্তরে ঠিক ভেমনই সৌভাগ্যের বরমাল্যও তাহাকেই রচনা ক্রিতে হইয়াছে।

ইংলণ্ডে সবে জন্নথাতার পত্তন, ম্পানিশ আর্মাডার আঘাতে ইংরাজের স্থেপন্থ চিরকালের মতন ইংলিশ চ্যানেলে সলিল সমাধি পাইত, কিন্তু প্রইনার কুলিশ কঠোর হস্তে তাহা না হইনা "রুল ব্রিটানিয়া" •'Rule Britania' সপ্তসমূদ্রের তরঙ্গে তরঙ্গে ব্রিটানের জন্নগান ভাসিন্ন। উঠিল। বিরাট ম্পানিশ আর্মাডা তছনছ ইইনা কোশার ধড়ের মতন ভাসিন্না গেল।

ভারত আবিষ্কারের নেশার মশগুল কলম্বাদ ও আমেরিগো পথ ভূলিরা উট্টোদিকে জাহাজ চালাইরা আমেরিকার মতন বিরাট দেশ আবিহ্নত না হইলে বিংশ শতান্দীর সভ্যতার নবতম অবদান 'এটম' বোমার ঘাটতি আজ কে পরিপ্রণ করিত ? পৃথিবীর ইতিহাসে কুঞ নাগাসিকী বন্দার কি অক্ষয় মৃত্যুর কীর্শ্তি অর্জন করিতে সমর্থ হইত ?

উড়োজাহাজের বিক্ষোরণে তাইহোকুর নগণ্য হাসপাতালে নেতাজী শুভাগের অকাল জীবনাবসান না হইলে কি আজান হিন্দ কোঁজের অক্ষয় বাসনা, দিল্লীর লালকেলার চক্রশোভিত ত্রিবর্ণ পতাকা উড্ডীন হইত ?

আরব, তাতার ও পাঠানের ভারত আক্রমণ, সংস্কৃতির বিরাট ধ্বংস, শ্রমণ ও ব্রাহ্মণদের পাইকারী হত্যা না হইলে ভারতের প্রজ্ঞা ও জ্ঞান ছায়া-নিবিড়, ধীর-শাস্ত সমতল ভূমি পরিত্যাগ করিরা তিব্বত, নেপাল, ব্রহ্ম ও ভ্যানের গহন প্রদেশে শ্রীবৃদ্ধের অমর বাণী প্রচারিত হইত! তাই বলিতেছিলাম সভ্যতার ক্রমবিকাশে হুর্ঘটনা এক বিরাট জারগা অধিকার করিরা রহিয়াছে। হাঁ, হুংখ শোক আনিয়াছে প্রচুর, সমর সমর হতাশার বৃক্ ভাবিরা গিয়াছে, আবার হুর্ঘটনার কড়ি কোমল মধ্র আলাপে সঙ্গীতও জমিরা উঠিয়াছে।

আধুনিক সভ্যতার অস্ততম ভিত্তি, বিজ্ঞান। এথানকার কাছিনী ও তজ্ঞপ। কাহারও সারাজীবনের সাধনা তুর্ঘটনার রক্ত বিকাশে বিনষ্ট হইরাছে। সভ্যত্তী সাধক মিখ্যাকে বীকার না করিয়া শক্তপ্রদত্ত বিষ্ সহাত্তে তুলিয়া লইরাছেন, তপ্ত লোহকীলকে দণ্ডায়মান হইরাও অসভ্যকে বীকার করেন নাই। সক্তেটাশ, রজার বেকন, গ্যালেলিও কভ্জনের কথা বলিব। সমাজ সংসার আন্ধ ইংগাদের আত্মাহতিতে সমৃদ্ধ হইরাছে। আপেল স্পক হইলেই ঝরিয়া পড়ে। সক্তা বুগে সকলেই ইহা সক্ষ্য করিয়াছেন, কিন্ত মানিতে আগ্যেক্ত প্রতিষ্যা

গল, মাধ্যাকর্ষণতত্ত্ব তিনি আবিদ্ধার করিলেন। সংলেশণে ব্যস্ত আপন-ভালা বৈজ্ঞানিক থার্মোমিটার ভাঙ্গিরা বসিলেন: গবেবণা পণ্ড হওরায় কত না তাঁহার তুংখ, কি**ন্ত ভালা খা**র্মোমিটারের পারদম্পর্ণে পাধাণী মহল্যার মৃক্তির স্থার রাসায়নিক রং, নীলএর জন্ম হইল। পরিভাত বৈজ্ঞানিক দিনান্তে আহারে বসিয়া যাহাতেই হাত দেন তাহারই তীব মিষ্টতে বিরক্ত হইয়া পত্নীকে অভিবিক্ত শর্করা ব্যবহারের জন্ম ভর্ৎ সনা করিতে গিয়া স্তাকারিন আবিষ্ণার করিলেন। কাঞ্পাগল আর একজন বৈজ্ঞানিক ভৈরারী 'ব্রথ' ডুয়ারে রাখিরা কাজের নেশায় সকল किहुरे विश्व रहेशाहित्सन। मत्न পড़ित्स छुशात श्रुमिश प्रिथितन 'ব্ৰেখ' চাতা পড়িয়াছে। হাতে কাত্ৰ থাকায় ডিস ঐ ভাবেই ডুয়ারে পড়িরা রহিল। করেকদিন পরে পুনরায় ঐ ত্রথের থেয়াল হইলে ডিদ বাহির করিয়া দেখিলেন ছত্রাকের পচন হঠাৎ এককোণে বন্ধ হইয়া সিরাছে এবং রঙ্এরও পরিবর্ত্তন ঘটরাছে, তাহার পেয়াল হইল ছত্রাকের পচন বন্ধ হইতেছে কেন ? অসুসন্ধান করিতে গিয়া ডাঃ ক্রেমিং জগদ্বিখ্যাত পেনিসিলিন আবিষ্কার করিলেন, দার্শনিকেরা এই জন্তই দুৰ্ঘটনাকে অবিমিশ্ৰিত দুংখের আকর বলিতে চাহেন না। কাজের পরিচর তাহার ফলে। আমাদের দেশেই কত উদাহরণ আছে, 'বেলা যে পড়ে এল, (স্থি) জলকে চল', ভাবুকের কানে এই কথা মরমে পশিল, সভাই ত বেলা চলে গেল! এখনই বেরিয়ে পড়ো। লাখো লাখো লোক গ্রায় বিষ্ণুপাদপন্ম * দেপিয়া ফিরিতেছে, কিন্ত অসহিষ্ নৈয়ায়িক নিমাইএর কি হইল ? সহিষ্ণুভার ঠাকুর গৌরাক প্রেমিক মহাপ্রভু মানবের কল্যাণে হরিনাম সন্ধীর্তনে রাস্তায় নামিয়া আসিলেন। জরামৃত্যু, কেইবা না দেখিতেছে, অমর কে কোখা ভবে ? প্রিয়া পত্নীর কোলে সম্ভোজাতপুত্র দেপিয়া রাজার তুলালের এত ভাবান্তর কেন ? কি তিনি দেখিলেন ? জগতের তু:খের বোঝা কি ঠাহাকেই পাইয়া বিদিল ? প্রেম, ঝন্ধি ও মৈত্রীর সন্ধান আর কেইবা দিতে পারিত! এইরূপ কত পরিবার হঠাৎ আলোর বলকানীতে অঞ্লোরে ভাগিয়া নিয়াছে কিন্তু ত্যানের এই পশরাম্পর্শে জাতি ধন্ত হইয়াছে, পথ ফিরিয়া পাইরাছে, সমৃদ্ধ হইরাছে।

দীর্ঘ জীবনে বারংবার "দ্রংপের অাধার রাত্রি" কবির জীবনে আসিরাছিল, মৃত্যুর এই মুখোসকে যতদিন বিখাস করিয়াছিলেন ততদিন বিভীবিকার ছলনায় কট পাইরাছেন, কিন্তু যেদিন হইতে স্পষ্টপথের সত্য দৃষ্টি ভাঁহার নিকটে সহজ ও বচছ হইরা আসিল মৃত্যুভর চিরদিনের মৃত ভাঁহার চিন্তা হইতে অপাহত হইল, তিনি লিখিলেন—

ন্তন হতে তুলে নিলে কাঁদে শিশু ভরে মুহুর্ভে আখাস পার গিয়ে গুনান্তরে।

বছবার মৃত্যুর মুখোমুখি হওরার রবীক্রনাখএর নিকটে মৃত্যু সহজ এবং এত মনোজ্ঞ হইরা উঠিয়াছিল।

এ সকলই হইল অসাধারণ ও অবিশ্বরণীর ঘটনা, সাধারণ

লোকের জীবনে হুৰ্ঘটনা আপাতত: নির্দ্ধ ও করণ, এই কারণে প্রত্যেক দেশে হুর্ঘটনা যাহাতে আংশিক নিবারিত হর ভজ্জ রাষ্ট্রের বহু আইন ও নিরম চালু আছে। সমাজও বহু সামাজিক আইন-কামুন থাড়া করিতে বাধ্য হইরাছে। প্রত্যেক সংখ্যার উদ্দেশ্য মানুষ যদি আংশিকভাবেও মানিয়া চলে, তবে অনেক ছুৰ্ঘটনা আন্ত না ঘটিতেও পারে। সহরে সাধারণতঃ লোকজন ও গাড়ী ঘোড়ার ভীড়। এই জক্তই এখানে রান্তার আইন কামুন এত বেশী। পথচারীর স্থবিধার জন্ম যানবাহনের রাস্তা আলাদা করা হইরাছে। গাড়ী চালাইবার নিয়মাবলী থাড়া করা হইরাছে। যেখানে ভীড হইবার সম্ভাবনা সেখানে জনতা নিয়ন্ত্রণ করিবার জন্ম রাষ্ট্রের ব্যবস্থা আছে। বড় বড় সহরের চৌমাণায় যেখানে গাড়ী ঘোড়া. প্রকারী, ট্রাম ও বাসের ভীড়, দেখানে একজন সাধারণ পুলিসের সাক্ষেতিক নির্দেশ ইতর ভদ্র সকলেই নির্বিচারে অমুসরণ করিতে বাধ্য হয়। কিন্তু এই সহজ শাসনপ্রীতি মানব চরিত্রের সামাজিক সামা-প্রিয়তার এক অপূর্ব্ব খণ্ডচিত্র মাত্র। সাধারণ মানুষ আত্মকেন্দ্রিক এবং আত্মশ্রপায়ণ। এই ব্যক্তিগত স্বার্থশ্রিয়তা তাহার নিজম সহজাত স্বভাব। সমাজে বাদ কবিতে হইলে সমাজের শাসন ও রাষ্ট্রে আদর্শ তাহাকে জন্মগত দৃষ্টিভঙ্গি হইতে উদ্ধে উঠিতে সাহায্য করে। তাই দেখিতে পাওয়া যায় যে মামুষ সাধারণ ট্রাফিক পুলিশের অঙ্গুলী সঙ্কেতে ব্যক্তিগত এখৰ্ঘ্য, ধন ও মান ভুলিয়া নীরবে আইনামুগ হইয়া চলে দেই মাসুষ্ট যখন অনুভব করে যে তাহাকে কেহ দেখিতেছে না এবং বেই বুঝিবে যে তাহার কুতকর্মের কৈফিয়ৎ দিঠে হইবে না তথন প্রচারীকে 'পয়াযাত্রা' করাইয়া নিশ্চিন্তে চলিয়া যায় ; তবু তাহার গাড়ীর পতি লগ করিয়া হতভাগ্যের অবস্থা বুঝিবার জক্ত পিছনে ফিরিয়া চাহে না। এইজন্ম বহু আইন সংস্থেও চুৰ্যটনা একেবারে নিবারিত হওয়া সম্ভব নহে। আধুনিক সমাজের দায়িত এই কারণেই বেশী হইরা পড়িরাছে। অমুপায় দেখিয়া সমাজ-হিতৈষীরা আইনভঙ্গকারীদের ঠেঙ্গাইবার দায়িত্ব রাষ্ট্রের হাতে তুলিরা দিয়াছেন। রাষ্ট্র বহু অনুশাসন, ধর্মাধিকরণ এবং শান্তিরক্ষক প্রতিষ্ঠিত করিয়াছে। কিন্তু কেবলমাত্র আইনই মামুবকে আত্মিক পরাজয় ২ইতে রক্ষা করিতে পারে না। ব্যক্তিগত স্বাৰ্থকে 'বছজন হিতার' বলিদান ততক্ষণই সম্ভব, যতক্ষণ জাতির মণিকোঠার আদর্শ থাকে জন্নান, জনির্বাণ। শিক্ষার প্রদার, পারম্পরিক দায়িত্বোধ, স্পষ্ট দৃষ্টিভঙ্গি, প্রতিবাদীর প্রতি ভালবাদা ও आश्रुक कर्खरा (वाथ अपनक द्वर्यहेना निवादन कदिएक ममर्थ हत्र।

কিন্ত নাম্বের অসহায়ত। স্পষ্ট উপলব্ধ হয় প্রাকৃতিক বিপর্বরের সময়। তুমিকস্পে, ঝঞাবাত্যায় জলোচ্ছাদে কিলা অতিবৃষ্টিতে পাহাড় ধ্বসিয়া কণিকের মধ্যে মকুছকুত সভ্যতার যে ধ্বংস হয় তাহার তুলনা নাই। এই সকল ছুর্বটনায় হতবাক্ মাকুষের বিলাপ "হা হতোত্মি" ও দৈজতা ভাষায় প্রকাশে অসমর্থ।

বিগত বিহার ভূমিকশে পান্ধিলী পাকৃতিক বিপর্যয়কে লোভা

সাধারণ মামূব পান্ধিনীর দৃষ্টিভঙ্গি অমুসরণে অক্ষম বলিয়া তাঁহার এই মন্তব্যে সংবাদপত্তে তুমূল আলোড়ন উঠিরাছিল। কিন্ত আধুনিক বিজ্ঞান ও দর্শন নৈস্পিক হুর্ঘটনার আংশিক কারণ দিতে অনেকটা সক্ষম হইয়াছে। মামূবের অসংযত লোভ নৈস্পিক বিপ্র্যুত্তর অভ্যতম কারণ।

প্রকৃতি ও মাপুষের আজন যোগাথোগ। প্রকৃতির অফুরস্থ এখর্য মাপুষকে দের ভাহার আহান্য ও শক্তি। শাস্ত বনানী, নদী-নালা, দিগস্তবিস্থত আকাশ, অনস্ত নক্ষত্রাজি, চল্রপ্র্যের অসীমতা এবং সমুদ্রের বিশালতা মাপুষের মনে এনে দের স্থৈন্য, প্রশাস্তি এবং অনির্বচনীয় উদারতা।

কিন্ত বৈবের বিপাকে এই সহজ-পাঠ যদি মাফুদের মনকে চিরকাল আকুষ্ট রাখিতে না পারে (অলবপ্রের সমস্তায় বাস্ত মাফুদ প্রকৃতির সহিত যোগরকা রাখিতে পারে নাই) তবে সেলোভী ও অমিতব্যন্নী হইনা উঠে। দহা ও তক্ষরের স্থান্ন লুঠনে মত হওয়ার তাহার মানসিক হৈব্য ও উদারতা নাই হর। শস্তক্ষেত্রের বিকৃতির সহিত বনানীর ধ্বংস, মণিমুক্তা ও মূল্যবান প্রস্তরের লোভে পাহাড়-পর্কাতের বুকে খাদ হাছি হর। অরণ্যানী সন্ধৃতিত হওয়ার নৈস্থিকি আবহাওয়া পরিবর্ধিত হয়, নদনদী ওচ্চ হইতে খাকে। মরুত্মির বিজয় কেতন সবেগে অপ্রসর হয়। জলধর অসময়ে বারিবর্ধণ করে; ওচ্চ নদনদীতে বস্তা নামে, ভূমিক্সে চাবের জমি অমুর্বর হয়, সর্বংসহা ধরিতী সর্বনাশী মতি ধারণ করে।

অনন্তের যাত্রাপথে মামুদের স্থান নগণ্য, ভাহার দৃষ্টিকোণ কও ক্ষু এবং সামরিক। কাজেই প্রকৃতির সংহার মূর্ত্তি মামুদের লোভের পরিণতি কিনা কে বলিবে ?

কবি ও কবিতা

শ্রীগোপেন্দ্রকৃষ্ণ দত্ত

আধুনিক সমাজে "কৰি ও কবি হা"র নামে বহু নিন্দার কথা শুনিতে পাওরা যায়। কেহ কেহ বলেন 'কৰি' অর্থে 'পাগল' এবং 'কবিডা' অর্থে 'পাগলামো'। আবার কেহ কেহ বলিয়া থাকেন, কৰি শুধু কল্পনা লইয়াই বাল্ত, বাল্তবের সংঘাতে কল্পনা যে চুরমার হইয়া যায় তাহা ভাহার জানা নাই। আবার এমন লোক ও আছেন, যিনি কবির চরিত্রে দোবারোপ করিয়া অপুর্ব্ব আনক্ষলাভ করেন।

বাঁহারা বাপ্তথকে জীবনের সাঁর করিরাছেন তাঁহারা সকলেই জড়বাণী ও অর্থনীতিজ্ঞানসম্পন্ন। জন্মলাভের পর তাঁহারা বর্দ্ধিত হইতে থাকেন, আর সেই সঙ্গে হিসাব করিয়া আহার করেন— হিসাব করিয়া লেথাপড়া শেখেন—হিসাব করিয়া বিবাহ করেন—হিসাব করিয়া ভালবাদেন, আর শেষে হিসাব করিয়া গোলাম সাজেন। স্বতরাং 'কবি ও কবিতা' সম্বন্ধে মতবাদ আমিও তাঁহাদের অর্থনীতি ও জড়বাদিতার গণ্ডীর মধ্যে ফেলিয়াই যাতাই করিতে চাহি।

জড়বাদিভার বা অর্থনীভিতে প্রভাক বস্তুর গুণাগুণ বিচার হয় উপকারিভা (utility) সইয়া। যে জিনিব যত উপকারী—যত কল্যাণপ্রদ সে জিনিব ততই আবশুকীয়—ততই মূল্যবান। আইন, চিকিৎসা, রাজনীতি প্রভৃতি বহু বিভাগ আছে বাহাদের প্রত্যেকটী সমাজদেহের কল্যাণসাধন করিয়া থাকে। যিনি আইনক্ত তিনি আইন বিভাগের যাবতীর কার্য্য স্থচাক্তরূপে সম্পন্ন করিবার চেষ্টা করেন। কিন্তু আইন বহিন্তু ভ বিবরে তাহার কিছুমাত্র দক্ষতা থাকে না, যেমন রোগ নির্ণরের প্রয়োজন হইলে চিকিৎসক্ষকে আহ্বান করা হয়। সর্বব্যেক্তেই

এই নিয়ম ; ইহার ব্যতিক্রম ঘটে না। কিন্তু এই বিশ্বসংসারে 'মন' বলিয়া একটা বিভাগ আছে যাহার একমাত্র সম্রাট কবি। আইন, রাজনীতি, সমাজতত্ব, বৈজ্ঞানিক সভ্য প্রভৃতি আলোচিত হর মনের সাহাবো। এই মন যদি না থাকে তাহা হইলে আমিত বিলুপ্ত হয় এবং এই আমিত বিলুপ্ত হইলে আইনজ, বাজনীতিজ, চিৰিৎসক প্ৰভৃতি কাহারও ব্যক্তিত্ব থাকে না। ফুতরাং মামুষ লইয়া সমাজ এবং প্রত্যেক মামুষ্ট মনের দারা জীবনের যাবতীয় বিষয় ধারণা করিয়া থাকে-চিন্তা করিয়া থাকে. —এই মনরপ রাজ্যের একমাত্র রাজা কবি: কারণ কবি প্রেরণার বা ভাব প্রবণতায় যে কবিতা লিখিয়া খাকে তাহা এক মন হইতে আর এक मन्न-এकरमण श्रेष्ठ कात्र এक म्मा- এक वृश श्रेष्ठ कात्र এक বুগে মনের সাহায্যে পরিচালিত হইরা থাকে। শেক্ষপীরর কবে তাঁহার পুত্তকাবলী লিখিয়া রাখিরা গিয়াছেন, কিন্তু তাঁহার লেখা এক দেখ হইতে আর এক দেশে-এক যুগ হইতে আর এক যুগে চালিত হইরা কত মনের উপর যে আধিপত্য বিস্তার করিয়াছে, করিতেছে ও করিবে তাহার ইয়ত্বা ন।ই। ওধু শেক্ষপীয়র কেন ? একতা যে কোন কবির लिया मचरकरे वना यात्र। हामात्र, हमात्र, शास्त्रे. छात्के, नीलाब, लिनी, কীট্ৰ, প্ৰাউনিং, ওয়াৰ্ডস্ওয়াৰ্থ, বাল্মিকী, কালিদাস, বিভাপতি,চঙ্গীদাস, প্রভৃতি ইহ সংসার হইতে চলিয়া গিয়াছেন, 'কিন্তু তাঁছাদের মনের কে চিন্তাধারা লিপিবদ্ধ হইয়া পুত্তকাকারে প্রকাশিত হইয়া আছে, ভাছা অমস্তকাল ধরিরা দেশ হইতে দেশান্তরে—যুগ হইতে বুগান্তরে চালিত হইরা সানৰ মনের উপর করিরাছে রাজত্, দিরাছে প্রেরণা, জানিরাছে

শাস্তি এবং যাহা করিয়াছে তাহা এথনও করিতেছে এবং চিরকাল ধরিয়া করিতে থাকিবে। তাই কবি জ্ঞানদাতা, শাস্তিদাতা, লোক-শিক্ষক, ভাব-প্রকাশক, ধর্মপ্রচারক ও সমাজ সংস্থারক; তাই কবি দেশের গৌরব, সমাজের শ্রেষ্ঠাংশ, মমুশ্বত্বে জাধার, সত্যের পুজারী, জগতের মর্যাদা।

ওমার বলিরাছেন---

"The world is Thine, from Thee it rose, By Thee it ebls, by Thee it flows."

সতাই এ বিষদংসার ভগবানের ; ভগবানের ঘারাই ইহার স্প্টিছিতি-প্রকার প্রবাহ চলিয়া আসিতেছে। কবির সম্বন্ধেও এই কথা খাটে; কারণ কবি মন এই পৃথিবীর মধ্যে যে পৃথিবী রচনা করে তাহা এই সাধারণ মাসুধের পৃথিবী হইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন এবং সেই পৃথিবীর মধ্যে যে ভাঙাগড়া চলিয়া থাকে তাহাও একেবারে নুভন ধরণের। এথানে শেরপীয়রের A Mid Summer Night's Dreamaর কথাওলি মনে পড়িতেছে। তিনি বলিয়াছেন—

"The Poet's eye in a fine frenzy rolling

Doth glance from heaven to earth, from earth to heaven,

And as imagination bodies forth

The forms of things unknown, the Poet's pen

Turns then to shapes, and gives to airy nothing

A local habitation and a name."

কৰি ও দার্শনিকের মধ্যে এক ঘনিষ্ঠ সৰ্বন্ধ আছে এবং তাহারই রঞ্জ প্রমাণীকৃত হয় উভরেই সত্যের পূজারী বা সত্যের রঞ্জা। তবে প্রত্যেক কৰিই দার্শনিক, কিন্তু প্রত্যেক দার্শনিক কবি নন। বাহা সাধারণ চক্ষেণা যার না, সাধারণ কানে শোনা যার না, সাধারণ জ্ঞানে জানা যার না তাহাই প্রকাশিত হয় কাব্যে ও দর্শনে। উচ্চভাবপূর্ণ প্রত্যেক গান বা কবিতা দার্শনিক সত্য প্রকাশ করিয়া থাকে, আর এই দর্শনজ্ঞানলাভ হইলে মনে হয় বিশ্ব প্রকৃতিমধান্থিত মানবজীবন যেন এক মহাকাব্য বা অনির্ব্বচনীর সন্ধীত; ইহার রূপ-রম-গন্ধ-ম্পর্ণ-শন্ধ এক প্রকার মাদকতার স্পষ্ট করিয়া চতুর্দ্দিক আনন্ধমন্ত্র করিয়া তুলে, আর হাহার ফলে চকু-কর্ণ নাসিকা জিহ্না-ত্বক এক অপূর্ব্ব প্রেমপ্রবাহে আগ্রুত হইয়া পরমান্ধার স্পর্ণাকৃত্তি লাভ করে।

কেছ কেছ বলেন, কবির কবিছ ভাবের নেশা, কর্মনার কুছক বা অবান্তবের ইন্দ্রজাল। এই "কেছ কেছ"র মতে বৈজ্ঞানিক সত্যই একমাত্র সত্য, ইহা ছাড়া আর সব মিথ্যা। এই "কেহ কেছ" ঘোষণা করেন, ইন্দ্রিয় সাহাব্যে যাহা অসুভূত হয় তাহাই সত্য বা বাত্তব; এতছাতীত সবই কর্মনা বা অসত্য। কিন্তু আমরা ইন্দ্রিয় সাহাব্যে কত্টুকুই বা দেখিতে পাই! আমাদের জ্ঞানের অধিকাংশই পুত্তক বা লোকের কথা বা জনশ্রুতির উপর নিহিত।

আশ্রের বিষয় এই বে, বৈজ্ঞানিক যে সত্য আবিকার করিয়া আহস্কার করেন তাহা করনা বলেই সম্ভব হর; করনাই সত্যের বাহক। বৈজ্ঞানিক কি অনুমান বা উপপত্তির সাহাব্যে প্রাকৃতিক বিবরাবলী ব্যাখ্যা করেন না ? সভ্য কথা বলিতে কি, এই কল্পনা (imagination) বা উপপত্তির (hypothesis) সাহাব্যেই বৈজ্ঞানিক সভ্যের আবিষ্ণার করিতে সমর্থ হন। অধিকত্ত মানবজীবনই তো কল্পনামর ! এই কল্পনা যদি না থাকিত ভাহা হইলে বাত্তবের ঘাতপ্রতিঘাতে মান্তবের প্রেম, শ্রদ্ধা, ভত্তি, ধর্মপ্রভান, স্থ, শান্তি প্রভৃতি বিধনত হইরা যাইত।

প্রাগৈতিহাদিক যুগে মানব ছিল অসভা; ক্তরাং মানব মনে কলনার নামগন্ধ ছিল না। এই কল্পনার অভাববশতঃ মানুব কথার কথার আমানুবের কাল করিয়া কেলিত। বে কোন উপারে আজাদ্বের পূর্ণ করাই ছিল তথন তাহাদের একমাত্র কর্তব্যকর্ম। তারপর মানুব সভ্যতার আলোকে উভাদিত হইয়া কল্পনামুরাগী হইল এবং এই কল্পনামুরাগ হইতে উভুত হইল প্রেম, প্রীতি, ভক্তি, শ্রদ্ধা ও ভালবাদা। আমার মনে হয় বর্ত্তমান বুগে প্রাগৈতিহাদিক বুগের বর্ষরতা বিক্লিত হইয়াছে। ইং ১৯৪৬ সালের ১৬ই আগন্ত হইডে বেন দেই বর্ষর যুগের পুনরারম্ভ হইয়াছে। এখন মানুব আমুবের তক্ষেপের প্রারম্ব মানুবের মধ্যে ইইয়াছে কল্পনার অভাব। স্বতরাং কল্পনালাত প্রীতি বা ভক্তি না পাকার মানুব দৈহিক ত্তির জন্ত মানুবের রক্তপাত করিতেছে।

করনা চিন্তানীলতার জননী। এই চিন্তানীলতা না থাকার মামুন আরু গভীরতম পাপপকে নিমজ্জিত হইরাছে ও হইতেছে। Bertrand Russell বলেন, "A contemplative habit of mind has advantages ranging from the most trivial to the most profound......

But while the trivial pleasures of culture have their place as a relief from the trivial worries of practical life, the more important merits of contemplation are in relation to the greatest evils of life, death and pain and cruelty and the blind march of nations into unnecessary disaster.

কবি ঈশরের সৃষ্টি, কারণ যিনি কবি তিনি জন্ম হইতেই কবি। স্থতরাং কবি জন্মার এবং কবিতৃশক্তি ঐশরিক দান। আমি একভানে লিখিয়াছি—

"Poets are born, not made,—a fact,
As poetry shows a divine tact."

সতাই কবিতা কবির মনে জন্মার; চেষ্টা করিলা কবিতা লেখা যার লা। একটা বীজ ঘেমন ভূমিতে অঙ্কুরিত হইলা ধীরে ধীরে পালপে পরিণত হয় দেইরাপ কোন ভাব কবির মনে উলিত হইলা ভাষার পরিচছদে কবিতার পরিণত হয়। কবিতা ভাবের উচ্ছাুস; ইচ্ছা করিলেই কবিতা রচনা কয়া বায় না। ইচ্ছার লোক (verse) রচনা কয়া বাইতে পারে কিন্তু কবিতা রচনা কয়া বায় না। এই জন্ত Dr. Henry Stephen বলিরাছেন, "Poetry cannot be made.

Poetry grows in the mind just as a tree grows in the soil."

এইখানে রাজা বিক্রমাদিত্যের সভার একটা গর মনে পড়িল: हेश कवि कामिनारमञ्ज कविद्माख्यित श्रीतिहातक। कामिनाम हिरमन বাজা বিক্রমাদিতোর সভার সর্বভ্রেষ্ঠ রত বা কবি। রাজা কালিদাসকে অতিশর ভালবাসিতেন, কারণ তিনি গুণামুরাগী ছিলেন। ইহাতে সভার একজন (বরক্রির) ঈর্যাপরায়ণ হইয়া উঠিলেন। বিক্রমাদিত্য এই ঈর্ব্যাপরায়ণতা লক্ষ্য করিলেন। রাজা বরুক্তির কবিছুলজ্জির প্রীকা করিবার জন্ত সন্থ্য একটা ওছ বৃক্ষাওকে দেখাইরা वितालन, "बालनि ये दुक्का ७ वित्र छावात्र वर्गना कक्रन"। वदक्रि তথনই ঐ কাণ্ডটীকে কবিতায় এইভাবে বর্ণনা করিলেন, "গুদ্ধ কাঠং তিষ্ঠতাগ্রে"। রচনাটী শুনিয়াই রাজা কালিদাসকে ডাকিয়া আনিয়া কাগুটীকে কবিভার ভারাকে বর্ণনা করিতে বলিলেন। কালিদাস কণকালের জন্ত চিন্তা করিয়া বলিলেন, "নীরস: তরুবর: পুরত: ভাতি"। রাঞা তথন বরক্রিকে আনন্দোৎফুল স্বরে কহিলেন, "এখন বুর্বলেন তো, কেন আমি কালিদাসকে ভালবাসি—কেন তাঁকে শ্ৰেষ্ঠ রত্ন ব'লে श्रेश कब्रि ।" वत्रक्रि य झाक त्रह्मिका धदः कालिमान य कवि. একথা উক্ত রচনাছর পাঠ করিলেই বুঝিতে পারা যায়। এই জক্তই বোধ হর বিখ্যাত লেখক কারলাইল । Carlyle) বলিয়াছেন, "যিনি কবিতা রচনা করেন কেবল তিনিই কবি নহেন, যিনি কবিতা পাঠ করেন তিনিও কবি।" সত্যই কবিমন না থাকিলে কবিত্বশক্তি বা ক্বিতার সার উপল্কি করা অসম্ভব হয়।

গীতার আছে---

"নহি জ্ঞানেন সদৃশং পৰিত্ৰমিহ বিভঙে"—অৰ্থাৎ জ্ঞানের তুলা পৰিত্ৰ এ জগতে আর কিছুই নাই; আর কবিতা সর্ব্ব জ্ঞানের সার। হাই ইংরাজ কৰি ওয়ার্ডস্ওয়ার্থ (Wordsworth) বলেন, "Poetry is he breath and finer spirit of all knowledge. গল্পেবক, এবন্ধনেথক ও উপজ্ঞানিক যে বিষর বহু বাক্যপ্রয়োগ বারা প্রকাশ সরিয়া পাকেন, কৰি তাহা অল কথার লিখিয়া পাঠকমনে চিরাকিত ইরিয়া দেন। মিলটন বলেন, "More is meant than meets he ear" অর্থাৎ কৰি তাহার মনের ভাব কথার গাঁবিয়া এমনভাবে বন্দশ করেন বাহা গভীরতের অর্থবাঞ্চক; তিনি যে শব্দ ব্যবহার করেন শব্দ বন্ধক তাহার অর্থনিহিত গিব বা গুছ অর্থ অন্তর্ব্ব অনুভূত হয়: অর্থাৎ জ্ঞাতা কবিতা পাঠ বা বিশ করিয়া আত্মহারা হইয়া শতংই বলিবেন, "কাণের ভিতর বিয়া য়মে পাশল গো, আকুল করিল মোর প্রাণ!" এ ছলে "জনম বিধি হাম ক্লপ নেহারত্ব নয়ন না তিরপিতভেল, লাথ লাথ বৃগ হিয়ে র রাথত্ব তবু হিয়ে জুড্ন লা গেল!" (বিভাপতি).

"স্বায় উপরে মাসুব সভ্য ভাহার উপরে নাই"

(ठ%ीमांग)

"ষা' কিছু আমার সকলি কবে নিজ হাতে তুমি তুলিয়া লবে, সব ছেড়ে সব পাবো তোমায়, মনে মনে মন তোমারে চার"

(द्रवीक्षनाष).

"Beauty provoketh thieves sooner than gold"

(Shakspeare),

"Our sweetest songs are those that tell of saddest thought" (Shelley),

"True love is the secret sympathy, the silver link, the silken tie which heart to heart and mind to mind in body and in soul can bind" (Scott),

"যাহা চাই তাহা পাই না তো, প্রিয়, পাই শুধু হুঃখ স্থালা, আপন মনের ছায়া'তলে ব'দে গাঁৰি তাইগীতিমালা", ইত্যাদি

উল্লেখযোগ্য উদ্তাংশগুলির প্রত্যেকটা কবির কথায় প্রকাশিত হইয়াছে এবং প্রত্যেকটাতেই উচ্চারিত শব্দাপেকা অধিকতর ভাব বা আর্থ প্রকটিত হইয়াছে। কিন্তু কোন লেখক বা সমালোচক উহার গৃঢ় অর্থ প্রকাশ করিতে বহু বাক্য প্রয়োগ করিতে বাধ্য হইবেন। "Brevity is the soul of wit"; কবির কবিত্ব এই brevity বা সংক্ষিপ্রতার উপর নির্ভর করে।

বিশ্ববিজ্ঞালয়ের উপাধিধারী কোন অধ্যাপক একদিন আমাকে বলিয়াছিলেন, "I don't like Shelleys" (আমি শেলীর মত্ত কবিদের পছন্দ করি না)। তাঁহার মুখে এই কথা শুনিয়া আমি হাসিয়া ফেলিলাম; বলিলাম, "সেইজগুই আজ বাংলার এই ছুর্জশা! মধুস্থনকেও আপনারা পছন্দ করেন নি। রবীক্রনাথকেও পছন্দ করেন নি। রবীক্রনাথকেও পছন্দ করেন নি। এখন তাঁদের পছন্দ করছেন।" শেলীর কবিতা হারজ্ঞম করিবার শক্তি থাকা চাই। বিভাব্দ্ধি না থাকিলে সাধারণতঃ কবিতা বোঝাই যায় না; বিশেষতঃ শেলীর কবিতা ব্রিতে জাগাধ পাণ্ডিতা চাই। ইয়ং (Young) সাছেব শেলীর Adonaisএর বে অংশ ব্রিতে পারেন নাই সেই অংশে থীয় অক্ততা থীকার করিয়াছেন। আমার মনে হয় কোন ভারতীর নিজের নির্ভুছিতা এক্সপভাবে লিখিয়া সাধারণ পাঠককে জানাইতে পারেন না। আমার অকুমান ইউরোপীয় সমালোচকগণ হিন্দুর দর্শনশাল্প ভালভাবে পড়েন নাই; সেইজগুই তাঁহারা শেলীর Adonaisএর কোন কোন অংশ স্থচাক্রমণে ব্যাখ্যা করিতে পারেন নাই।

কবির কবিতা সতাই অনেকেই (এই অনেকের মধ্যে তথাক্ষিত বিহানও আছেন) বুলিতে পারেন না এবং এই কারণেই কবিতা ভাঁহাদের কাছে ছর্মোধ হইরা পড়ে। বিশ্বকবি রবীক্রনাথ ভাই নিজের কবিতার অর্থ সম্বাদ্ধে বলিয়াছেন—

> "নানাজনে নের তাহা নানা অর্থে টানি, তোষা পানে বার তা'র ঝেব অর্থথানি।"

আমাদের রবীক্রনাথকে প্রথমে বাংলার কেছই বুঝিরা উঠিতে পারেন নাই। ইং ১৯১৩ সালের পূর্বে আমাদের দেশে অনেক লেখক, সাহিত্যিক, সমালোচক প্রভৃতি জীবিত ছিলেন, কিন্তু তাঁহাদের কাহারও রবীন্দ্রনাথের প্রতিভাবুঝিবার ক্ষমতা ছিল না বলিলে অত্যক্তি হইবে না। কেবলমাত্র করেকজন রবীক্রনাবের লেখা ভালবাসিতেন বা পছন্দ করিতেন। আশ্চর্যা এই যে, এত বড় ৰাংলা দেশে—তথু বাংলা দেশ কেন ?—সমগ্ৰ ভারতবর্ষে এমন কাহারও বিভাবুদ্ধি গলাইন না যে রবীন্দ্রনাথের প্রতিভা অমুধাবন ক্রিতে পারে। উপরম্ভ তথাক্ষিত সমালোচকগণ বা শিক্ষিত সম্প্রদার রবী-স্রনাথের কবিত্ শক্তির উল্লেখ করিয়া কত যে ব্যঙ্গ, বিদ্রুপ, টিটকারী ও নাদিকাকুঞ্ন করিয়াছেন তাহার হিদাব দিতে গেলে লোকের গালাগালি কুড়াইতে হয়। যাহা হউক, বাংলা দেশ বা ভারতবর্ধের কেছ বাঁহাকে চিনিতে পারে নাই তাঁহার বিশ্বজয়ী প্রতিভা চিনাইয়া দিল পাশ্চাত্য দেশ ১৯১০ সালে; যেদিন তিনি নোবেল পুরস্কার (Nobel Prize) लाভ করিলেন সেইদিন ওপু বাঙালী নয়—সমস্ত ভারতবাসী হক্চকিয়ে গেল! তথন কলিকাতা বিশ্ববিভালয় তাঁহাকে "ডি-লিট" উপাধি দান করিলেন—তথন সব ম্বদেশবাসী ভাষাকে অভিনন্দন জানাইতে গিয়া বাপায় লক্ষায় গ্রিয়নাপ

হইয়া ফিরিয়া আসিলেন। কথার আছে "গেঁরো ঘোগী ভিক্ পার না।" রবীক্রনাথের ভাগ্যে একথার সত্যতা পূর্ণনাতার প্রমাণীকৃত হইরাছিল। তবে ছ:খ এই বে, রবীক্রনাথ বে কি—কত বড় কবি তাহা জানাইয়া দিল—বুঝাইয়া দিল—শিখাইয়া দিল ইউরোপবাসী! এ বড় লক্ষার কথা!

শোষ্ট্যের রাধাকৃষণ বলিয়াছেন, "To be great is not merely to be talked about, it is also to be misunderstood and Rabindranath has not escaped this fate. The many attempts made to explain him contradict each other; for, from the words of the poet men take what meanings please them." রবীক্রনাশকে লইয়া বাংলার সংবাদপত্রে যে সমস্ত বাঙ্গা, কটুজি ও নিস্কাবাদ প্রকাশিত হইয়াছিল সে সমস্ত নীরব ও নিস্তর্ক হইল সেইদিন, যেদিন তিনি নোবেল প্রকার পাইয়া বাংলা সাহিত্যকে সগৌরবে বিশ্বসাহিত্যের সভাষত্তপে উচ্চাসনে বসাইয়া বিলেন।

আসল কথা, "হজনে হুঘৰ গায় কুমণ ঢাকিয়া, কুজনে কুরৰ করে হুৱৰ নাশিয়া।"

স্বপ্ন

শ্রীহরিরঞ্জন দাশগুপ্ত এম-এ

গরীব মধ্যবিভের ঘরে জন্মছিল শিবনাথ।

কৃতিত্বের সঙ্গে এণ্ট্রান্স পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হয়ে সে স্বপ্র দেখেছিল—ডেপুটি হবার। তার বেশি অগ্রসর হয়নি তার কল্পনা। মকঃস্বলের ছোট্ট মহকুমায় বসে ডেপুটির চেয়ে বড় কোন সরকারী কর্মচারীর অভিত্র অফুমানই কর্তে পারেনি সে। একটি মহকুমার সর্বময় কুর্তা! তার চেয়ে বেশি আশা করে কে?

শিবনাথের বাবা পক্ষাঘাত রোগে আক্রান্ত হয়ে "আমিনী" চাকরী ছেড়ে দিয়ে বাড়ি ফিরে আসতে বাধ্য হলেন। ছোট ভাইদের পড়াবার আর বোনদের পোষণ করবার দায়িত্ব তাকে নিতে হলো ঘাড় পেতে।

তথন তাদের শহরে রেল-কোম্পানীর নতুন আপিস বুলেছে—সবেমাত্র, লোক ভর্তি হচ্ছে দলে দলে। দরখাত্ত করার সভ্যে সংক্ষে শিবনাথের চাকরী হোল। তথনকার দিনে পঞ্চাশটাকা মাইনে। একেবারে সাব্-ডেপ্টির মাইনের সমান। স্বচ্ছলভাবে দিন চল্তে লাগলো শিবনাথের।

তার আপত্তি সংৰপ্ত শিবনাথের বাবা তার
বিবাহ দিলেন। শিবনাথ যথারীতি পালন করে যেতে
লাগলো তার কর্তব্য। তার আশা—তার ভাইরা মানুষ
হবে, তার স্থপ্প তারা কর্বে সফল, স্বাই তাদের চিন্বে,
সম্মান ক রবে, ভালবাস্বে—পৃথিবীর কাছে না হলেও
ভারতবর্ষের কাছে অন্তত তার পরিবারটি হবে স্প্রিচিত।
অমর হবে দে এই তুনিয়ায়, বেঁচে থাক্বে তার স্থৃতি।…

তার ভাইরা লেখাপড়া শিখলো, চাকরী পেলো, টাকা রোজগার করতে লাগলো। প্রতিষ্ঠার সংক্^{সক্ষে} তারা সরে গেল দ্রে—তাদের স্বীপুত্র নিয়ে। ধীরে ধীরে ভার সক্ষে সকল সম্পর্ক ছিল্ল করলো ভারা। শিবনাথের মনখানি কিন্তু হতাশার ভেঙে গেল না তবু।
সে ভাবলো—ভার ভাইদের সে মান্থ্য করেছে—সকলের
কাছে বৃক ফুলিয়ে দাঁড়াবার মতো শিক্ষা সে তাদের দিয়েছে,
মান বেড়েছে ভার পরিবারের। এই ভো তার সন্মান।
স্থাধে থাক ভারা—এই আশীর্বাদই সে তাদের করলো।

তারা গেছে চলে। যাক্। তার ছেলেরা বড়ো হছে। ছেলেদের সে গড়ে তুলবে মনের মতো করে। মাহ্র হবে তারা, তাদের মধ্যে সে হবে অমর। কিন্তু পর্যাপ্ত অর্থ নেই তার, ছেলেদের ভালো থাবার দেবার সামর্থ্য কোথার? তবু, তার ছেলেরা পরীক্ষা পাশ করে যাছে একটার পর একটা। পরীক্ষা যথন শেষ হবে, তথনই তারা হবে প্রতিষ্ঠিত—তার ছঃখ যাবে ঘুচে।

উচ্চশিক্ষিত হয়েও শিবনাথের ছেলেরা মনোমত চাকরী পেলোনা। কেরাণীর ছেলে কি হাকিমী পেতে পারে? সে ছেলেদের কেরাণীগিরি করতে দেবেনা— এই তার দৃঢ় পণ। কিন্তু এ'বাজারে চাকরী কোথার পাবে তার ছেলেরা?

वृक्ष श्राह्म निवनाय, तृत (भरक्राह, तिरथत पृष्टि হয়েছে ঝাপা, শক্তিংীন হয়ে পড়েছে তার হ'থানি বাহু। অবসর গ্রহণ করেছে সে। যে কটি টাকা পেছেছিল স্বই হয়েছে निः भित्र। किन চলেনা আর, উপবাস, অর্ধাহারে কাটে দিনগুলো। তবুসে লক্ষাত্রই হবেনা। অনেক হাটাহাঁটি, অনেক চেষ্টার পরও তার ছেলেদের চাকরী হলোনা কিছুতেই। প্রতিষোগিতার নামে সর্বস্থলে চলেছে আত্মীয়-পোষণ, ছুর্নীতি। দেশের लाटकत क्त्रवश्चात श्राह्मारंग नित्त्रांशक जाता करत यातक নির্লজ্জ প্রহুসন। শিবনাথের ইচ্ছা হয়—এর বিরুদ্ধে সে আন্দোলন করে। কিন্তু কেমন করে? কে শুনবে তার ক্থা ? স্বাধীনতা সভাই কি তার আছে ? উপায় নেই গমালোচনা করবার, উপায় নেই বাঁচবার, তবু—। মাহুষের চিরস্তন অধিকার থেকে বঞ্চিত এ ধুগের মাহব। তবু— গারা বাঁচে, তবু চায় বাঁচতে। কেউ বাঁচে সম্পদে, কেউ-বা দৈন্তে-মভাবে, কেউ-বা পরাঞ্চিত হয়—জীবন সংগ্রামে; রথে যায় --- দীর্ঘাদ --- বাভাদের ভানায়। -----

वियान नगरी।

रक (भारत कांत्र कथा, रक त्रार्थ कांत्र थरत ? नेरनार्थत क्षञ्च । हिकिस्मा हर्लना, धुर्ध रनहे, नथा वेहे, ठीहेंहुकूत ककांव माथा धुक्यात । मन्त्रियात कांव्यत নিয়েছে একটি ভাড়াটে বাড়িতে। গৃহহীন—আত্মীয়-স্বৰূদ থেকে বিচ্ছিন্ন—যেন পাণ্ডবের অক্সাতবাস।

শিবনাথের ছেলে নিশিনাথ তার বাবাকে বললে, এবার সে যেমন করে হোক একটা চাকরী নেবে যোগাড় করে—সামান্ত হোক, তবু—।

শিবনাথ বললে, না-না-না—তা'হলে আমি বে শান্তিতে
মরতে পারবোনা। কি আমি চেয়েছিলাম জানিস্?
আমি চেয়েছিলাম তুর্ বাঁচবার মতো বাঁচতে। বেশি
চাইনি। সে অধিকার কি আমার নেই? কেন থাকবোনা? পৃথিবীতে এসেছি—এখানে বেঁচে থাকবো।
ভাবতে পারিনা, আমার সে আশা পূর্ণ হলোনা; তার
আগেই আমি বিদার নেবো পৃথিবী থেকে। আমি বাঁচবো
—তোদের মধ্যে আমি থাকবো মরণহীন। তোরা হতাশ
করিসনি আমায়।……

অহথ সারবার নম্ন তার। শিবনাথ তবু নির্বিকার। রোগে যন্ত্রণা নেই, মনে হুধু একটিমাত্র চিন্তা—একা—
নিশ্চল। তার ছেলেরা বড় হবে, তার জীবনের একমাত্র কামনা হবে সিদ্ধ।…

ডাক্তার আশা ছেড়ে দিয়েছে। ছেলেরা বসে আছে শিয়রের কাছে।

সকালের বাতাস ছুটেছে হছ করে।

টেলিগ্রাম পিয়ন এলো নিশিনাথের নামে টেলিগ্রাম।
নিশিনাথ টেলিগ্রামের খামটি খুললো তাড়াতাড়ি।
দেখলো—তার নিয়োগপত্র। দিলীতে তার চাকরী হয়েছে
—কাই, এ, এস, চাকরী।

শিবনাথ তথন মৃত্যুর সঙ্গে ফ্রুডে করতে করতে অবসর হয়ে এদেছিল।

নিশিনাথ দৌড়ে গেল তার বাবার কাছে। তার কানের উপর পড়ে বললে, বাবা, আমার চাকরী হয়েছে— আই, এ, এদ। এবার আপনি সেরে উঠুন—এখন আপনার বাঁচা প্রয়োজন—আপনি বাঁচুন বাবা—।

শিবনাথ অতি কঠে তার চোথ ছটো খুলে একবার তাকালো নিশিনাথের মুথের দিকে। হাতথানি একবার তুলে তাকে যেন চাইলে আশীর্বাদ করতে। যেন উচ্চারণ করতে চাইলো—শেষ আশীর্বানী।

তারপর তার নিখাসটুকু গেল বাতাসের সঙ্গে মিশে। শিবনাথের চোধে-মুখে ফুটে উঠেছে একটা গভীর ভৃত্তির ছাপ, তার বাঁচবার সাধ সবই বেন আৰু হয়েছে সার্থক।

রাশি ফল

জ্যোতি বাচস্পতি

ভুষ্ণা রাম্থি

তুলা যদি আপনার জন্মরাশি হয়, অর্থাৎ যে সময় চক্র আকাশে তুলা নক্ষপুঞ্জ হিলেন সেই সময় যদি আপনার জন্ম হ'য়ে থাকে, তাহ'লে এই রকম কল হবে—

প্রকৃতি

তুলা শব্দটি তুলাদণ্ডের সংক্ষেপ; তার মানে হ'ছে দাঁড়িপালা বা নিজি। কাজেই আপনার মনের মুখ্য গতি হ'ছে বিচার ও বিরেষণের দিকে। আপনি নিজির ওজনে সব জিনিব অমুভব করতে চান, কুজ খুঁটিনাটিকেও আপনার নজর এড়াতে দিতে চান না।

খুঁটিনটি লক্ষ্য করার এই ধ্বের্ডির জক্ত সব জিনিবের ভিতরের চেরে বাইরের দিকে আপনার কক্ষ্য থাকে বেলী এবং ভূটো জিনিবের মধ্যে ঐক্যের চেয়ে ভেদটাই আগে নজরে ঠেকে। আপনার মনোভাবে সংশ্লেষণের চেয়ে বিলেবণের প্রভাব বেলী।

এই মনোভাবের জল্প অনেক সময় আপনার মধ্যে সকলের দৃঢ়ত।
বা মতির স্থিরতা পাওরা কঠিন হ'রে ওঠে। যে কোন বিষয়ে হোক্
চট্ করে মত পরিবর্তন করা আপনার পক্ষে মোটেই আশ্চর্য নর।
কিন্ত তা সত্ত্বেও, যে মত বা ধারণা আপনি সামরিকভাবে পোষণ
করেন, তার উপর সেই সমরের জল্প প্রায়ই একটা দৃঢ় অনুরাগ বা নিঠা
আপনার মধ্যে দেখতে পাওরা যার।

আপনার মধ্যে উদ্ভাবনী শক্তি আছে এবং হাতের কান্ধ, শিল্পকলা প্রস্তৃতির দিকে একটা আকর্ষণ এবং তাতে থানিকটা পটুত্বও থাকা সন্তব। কিন্তু ঐকান্তিক নিষ্ঠার সঙ্গে লেগে থাকা আপনার প্রকৃতি-বিক্লছ্ক ব'লে আপনার পটুত্ব বা প্রতিভা অনেক সমন্ধ কোন কান্ধে আসে না। তবে ভাগ্যক্রমে যদি কোন উপবৃক্ত সহযোগী বা অংশী পান তাহ'লে আপনার শুশপনা সার্থক হ'লে উঠতে পারে।

আপনার মধ্যে উচ্চাঙাব্দা যথেষ্ট আছে। কিন্তু কোন্ প্রে
কী ভাবে অগ্রসর হ'লে তা সফল হ'তে পারে—তা অনেক সময় ঠিক করতে পারেন না। অগ্রসর হওয়ার প্রে নানা বিধা ও সংশ্র মনে উ'কি সারে। অপ্রের সাহায্য, সহবোগিতা বা উপ্রেশ আপনার অগ্রগতির পক্ষে একান্ত আবিশ্রক।

আপনার সামাজিক ব্যবহার সাধারণত: শিষ্ট ও মধুর এবং সামাজিক আচরণের পুঁটনাটির দিকে লক্ষ্য ধুব বেশী। এমন কি পোবাক পরিচহনেও প্রচলিত রীতিনীতির ব্যত্যর দেখলে আপনি কুন্দ হ'রে ওঠেন। কথাবার্তার অশনে-বসনে সর্বত্র আপনি চান শালীনতা ও শোভনীরতা। আপনি সাধারণত: আনক্ষপ্রির হ'লেও, আপনার মধ্যে একটা অধীরতা আছে, যার জন্ত সামাত ক্রটি-বিচ্যুতিতেই অনেক সময় আপনি চট্ ক'রে রেগে ওঠেন। কিন্ত আপনার সে রাগ কথনই স্থায়ী হয় না, থড়ের আগুনের মত তা বেমন দপ্ ক'রে অলে ওঠে, তেমনি থপ্করে নিভেও যায়।

আপনার মধ্যে সমালোচনার সহজ্ব শক্তি আছে, কিন্ত খুঁটিনাটির দিকে বড় বেশী লক্ষ্য বলে অনেক সময় তুচ্ছ বিষয় নিয়ে তর্ক বিতর্কে সে শক্তি অপব্যয়িত হ'তে পারে।

সামাজিক প্রবৃত্তি আপনার মধ্যে পুব প্রবল। কাজেই নিঃসঙ্গ জীবন আপনার পছন্দ নর এবং একই ভাবে একই আবেষ্টনের মধ্যে বেশীক্ষণ থাকতে হ'লে আপনি দারুণ অম্বন্তি অনুভব করেন। অপরের সাহচর্য আপনার চাইই।

সহযোগিতা এবং প্রতিদ্বন্ধিতা এ দুয়ের কোন একটা নাহ'লে আপনার প্রতিভার পূর্ণ বিকাশ হ'তে পারে না। সেইজক্ত যদি সহযোগী না পান, তাহ'লে আনেক সময় ইচছা ক'রে প্রতিদ্বনী স্টিকরতে পারেন।

অর্থভাগ্য

আর্থিক ব্যাপারে আপনার কোনরকম ছল্ডিডা উপস্থিত হ'তে পারে এবং ইতন্তত: করার জন্ত অনেক সমর আর্থিক উন্নতির বিঘ ঘটতে পারে। উপার্জনের জন্ত অনেক সমর অপরের সাহায্য প্রয়োজন হবে এবং উপার্জনের ব্লাস বৃদ্ধিও প্রায় ঘটবে। কিন্তু বাধা-বিদ্ন বা বিলম্ব ঘটলেও শেষ পর্যন্ত আর্থিক ব্যাপারে নিজেকে মুগ্রভিতি করতে পারবেন। তা সত্ত্বেও কিন্তু আর্থিক ব্যাপার নিয়ে কম-বেশী চিন্তা বরাবরই বাকবে।

উত্তরাধিকারসূত্রে আপনার যদিই কিছু প্রাপ্তি হর, তা রক্ষা করা কঠিন হবে। প্রাপ্য সম্পত্তি পেতে নানারকম বাধা বিশ্ব ঘটবে এবং তা নিমে বিবাদ বিসম্বাদ বা মামলা মোকর্দমা হওয়াও অসম্ভব নর। এই বিবাদ বিসম্বাদে লাভ হওয়া দূরে খাক, কালকর্মের ক্ষতি, অনুর্থক বায়, মিখ্যা অপবাদ প্রভৃতির আশকাই হবে বেশী।

कर्मकीवन

জীবনের কোন না কোন সমরে আপনার খ্যাতি ও প্রতিষ্ঠালাভের যথেষ্ট ক্ষোপ উপস্থিত হবে। কর্মজীবনে আনেক পদস্থ ও প্রতিষ্ঠাশালী বজু ও মুক্তবিব পেতে পারেন, যাঁরা আপনার উন্নতিতে সাহায্য কর্বেন। দূর সম্পর্কীয়ের কোন কোন আস্ত্রীয়ের স্বারাও কর্মজেক্তে উপকার পেতে পারেন। কর্মের যাাপারে আনেক বাধা বিশ্ব ও প্রতিশ্বিতা আপনি

বন্ধু ও মুক্তবির সাহাব্যে অভিক্রম করতে সক্ষম হবেন। কিন্তু নিজের চাঞ্লা, অদুরদর্শিতা, সন্দেহ ও সংশরের জন্ত আপনার উন্নতি ও প্রতিষ্ঠার বিমু ঘটতে পারে। কোন কোন ক্ষেত্রে পারিবারিক অবস্থা আপনার উন্নতির পথ রোধ করতে পারে এবং সহসা কর্ম-বিপর্যর নিয়ে আসতে পারে। শেষ বয়সে বিশেষ ক'রে এ সম্বন্ধে সভর্ক থাকা উচিত। কর্মজীবনে বন্ধু ও মুরুবিবর সাহাব্য ও সহযোগিতার উপর নির্ভর করতে পারলে আপনি বেশী উন্নতি করতে পারবেন। আপনার সেই সৰ কাজ ভাল লাগৰে, যাতে অপরের সহযোগিতা পাওয়া যায় এবং বাতে অল পরিশ্রমে সাফল্য হ'তে পারে। সাধারণত: জন-সাধারণের সন্থ্রে আসবার অথবা জনপ্রিয়তা অর্জন করবার স্থবিধা যে সকল কাজে আছে সেই সকল কাজের দিকে আপনার ঝোঁক থাকতে পারে। যে সকল কালে ফুকুমার শিল্পের সংশ্রব আছে এবং যাতে প্রভাৎপরমতিভের পরিচর দিতে হয় দে সব কাজও আপনার প্রিয় হওরা সম্ভব। আইনজের কাজ, শিক্ষকতা প্রভৃতিরও যোগ্যতা আপনার मार्था च्यां हि । होक् द्रीत तहरत व्यक्तिन এवः व्यक्तिनत हित्त वाका-বাণিজ্যে আপনি বেশী কৃতিছের পরিচয় দিতে পারবেন। সাধারণতঃ ছোট খাট কোন জারগায় কাজ করার চেরে যেগানে বছ জনের সংশ্রব আছে, এমন কোন বড় জারগায় কাজ করতে আপনার ভাল লাগবে। কাজেই ব্যবসা করলে আপনার উচিত বাজারে, গঞ্চে অথবা শহরে দোকান বা আড়ত করা। চাক্রী করলে সেই সকল স্থানে চাক্রী করা উচিত যেগানে বছ কর্মচারী এক সঙ্গে কাজ করে। প্রফেশান করলে তা করা উচিত কোন বড় শহরে। মোট কথা বছজনের সহবোগে কর্ম আপনার সাক্ষ্যা নিয়ে আসবে।

পারিবারিক

ভাগ ভগ্নীর সংখ্যা আপনার বেদী হওরাই সম্ভব। আপন ত্রাতা ভগ্নী ছাড়াও অনেক আস্ত্রীয়ের সাহচর্য আপনাকে করতে হবে। অনেক সমর সহোদর সহোদরার চেরে দূর সম্প্রকীর আস্ত্রীয় বা আস্ত্রীয়ার সঙ্গে বেদী সন্ভাব ও ঘনিষ্ঠতা হ'তে পারে। মধ্যে মধ্যে আস্ত্রীয়-সম্মেলনে আপনি ববেষ্ট আনন্দ পারেন এবং কোন কোন আস্ত্রীরের হারা আর্থিক হিসাবে বা কাল কর্মের দিক দিরে উপকৃতও হ'তে পারেন। কুট্ছিতার হারা আপনার খ্যাতি ও প্রতিষ্ঠা বৃদ্ধি হওরাও অসন্ভব নর।

আগনার পারিবারিক অবস্থা ঠিক এক ভাবে কথনই চলবে না।
পারিবারিক আবেষ্ট্রের কম-বেশী পরিবর্তন প্রায়ই ঘটবে। কোন
কোন সময় নিজ পরিবারের চেরে অপর পরিবারের সকে বেশী ঘনিষ্ট
সংশ্রবণ্ড হ'তে পারে। আগনার কর্মের সঙ্গে আপনার পারিবারিক
নীবনের কম-বেশী সক্ষ থাকবে। হয়ত কর্মের প্রকৃতি এমন হবে
বাতে আপনার পারিবারিক আবেষ্টনে বা গৃহছানীর ব্যাপারে ওলটপালট এনে বেবে; কিবা এও হ'তে পারে বে আপনার পারিবারিক
ন্ববা আপনার উন্নতির অস্তরার বা অবনতি ও কর্মহানির কারণ হ'রে
দীড়াবে। শেব বন্ধনে পারিবারিক আবেষ্টনে একটা বড় রক্ম
পরিবর্তন হবে, তা সে ভালর কর্ম্যই হোক্, আর মন্দের কর্মই হোক্।

সন্তান আপনার বেশী না হওয়াই সম্বব। সন্তানদের মধ্যে কেউ কোপনার বিশেষ উবেপ ও ছল্চিস্তার কারণ হ'রে দাঁড়াতে পারে।

লেহ প্রীতির ব্যাপারে আপনার আশাশুল বা মনোকট হ'তে পারে এবং দেই সংশ্রবে সত্যই হোক্ মিখ্যাই হোক্, কোন রক্ষ অপবাদ হওরাও বিচিত্র নর।

নিকট কোন আন্ত্ৰীয় বা মাতৃত্বানীয়া কোন আন্ত্ৰীয়ার **ওপ্ত বা** প্ৰকাশ শক্তবায় আপনার পারিবারিক শান্তি ব্যাহত না হয় সে সম্বন্ধে সত্রক বাকা উচিত।

বিব†5

দাম্পত্য ব্যাপারে আপনার আন্তরিকতা লক্ষিত হবে বটে, কিন্তু স্ত্রীর (বা স্বামীর) আচরণের খুঁটনাটির দিকে বড় বেশী লক্ষ্য থাকার দক্ষণ, দাম্পত্য জীবনে আপনি খুব স্থবী হ'তে পারবেন না। বিবাহের সংশ্রবে আপনার অর্থপ্রান্থি বা উন্নতির সাহায্য হ'তে পারে কিন্তু স্ত্রীর (বা স্বামীর) সঙ্গে পুব ভালরকম বনিবনাও হওয়া কঠিন। এমন কি আপনাদের অবনিবনাও সমাজে প্রকাশ্য সমালোচনার বিবর হ'তে পারে। অনেক সময় কর্মজীবন অথবা বন্ধ্বান্ধবের সংশ্রব আপনার দাম্পত্য-জীবনে বিল্ন স্থৃষ্টি করবে। তা সংস্বেও আপনার বদি এমন কারো সঙ্গে বিবাহ হর যাঁর জন্ম মাদ বৈশাথ আবাঢ় কার্তিক অথবা ফান্ডন, কিন্তা যাঁর জন্মতিধি শুকুপক্ষের দিন্তীয়া বা কৃষ্ণপক্ষের নবমী, তাহ'লে কতকটা মানিরে চলতে পারবেন।

বন্ধুত্ব

আপনার বন্ধুভাগ্য মোটের উপর ভাল। অনেক হিতকামী বন্ধু আপনি পাবেন বাঁরা নানা থিক দিরে আপনার শ্রীবৃদ্ধিতে সাহায্য করবেন। আপনি নিজে কিন্তু বন্ধুছের ব্যাপারে ঠিক একনিষ্ঠ হ'তে পারবেন না। অনেক সমর চাঞ্চল্য, অবিধাস বা ইর্ণ্যার বশবর্তী হ'রে এমন কিছু করে বসবেন বা বন্ধুর বিশেব অনিষ্টের হেতু হ'রে গাঁড়াতে পারে। আপনি নিজে অনেক সমর বন্ধু পরিবর্তন করবেন এবং এক ক্রু ছেড়ে অপর বন্ধুর সঙ্গে বনিষ্ট সংশ্রব করতে চাইবেন, কিন্তু তৎসন্ত্রেও বন্ধুবে সন্তাব অনেক ক্রেত্রেই আপনার উপর অটুট থাকবে। বাঁদের জন্ম মাস আবাদ, কার্তিক অথবা কান্তুন, কিন্তু বিশ্বের জান-তিথি শুক্লা বিতীর। কি কুঞা নবমী, তাঁদের সঙ্গের বন্ধুত্ব আপনার বিশেব আনক্রের কারণ হবে।

সম্পত্তির ব্যাপার বা উত্তরাধিকারের সংশ্রবে কিম্বা দেনা-পাওনা নিরে আপনার ছু' চার জন শক্রব স্থান্ট হ'তে পারে, বারা আপনার প্রতিষ্ঠাহানি অথবা আর্থিক হিসাবে ক্ষতি করার চেষ্টা করবে, কিছু অধিকাংশ ক্ষেত্রে প্রতিষ্ঠাশালী ব্যক্তির সাহাব্যে আপনি শক্র জর করছে সক্ষর হবেন।

খাহ্য

· দৈহিক গঠনে আপনি একটু স্পর্কাতর হবেন। আহার বিহারের ব্যাপারে সামান্ত একটু ব্যতিক্রমণ্ড আপনি সহু করতে পারেন না। ধাছই হোক্, বাসকট্ট হোক্-সবই আপনার পরিভার পরিচছর ও युगुश्च ना र'ल व्यापनात एपर युक्तम श्राकुछ ठात्र ना। रकान विश्वत বাড়াবাড়ি আপনার সহু হর না। অতিরিক্ত গরম, অতিরিক্ত ঠাণ্ডা, একটানা দীর্ঘ পরিশ্রম সবই আপনার যথাসাধ্য বর্জন করা উচিত। বিশেব করে কষ্ট্রদাধ্য দৈহিক পরিশ্রম বা ব্যায়াম আপনার স্বাস্থ্যের পক্ষে বিশেষ হানিকর। আপনার দেহের চুর্বল অংশ হ'চেছ গলা, হাঁটু, মৃত্রন্থলী ও জননেশ্রির। তা ছাড়া চর্মরোগ বা রক্তবৃষ্টির প্রবর্ণতাও আপনার মধ্যে আছে। আপনার দেহ ভাল রাখতে হ'লে, একদিকে যেমন যি, মাধন প্রভৃতি চর্বিজ্ঞাতীয় খান্ত এবং ছানা, ডাল, মাছ মাংস এভৃতি প্রোটন্ জাতীয় খান্তের দরকার, তেমনি আপনার থান্ত স্বাছ ও পরিষার পরিচ্ছন্ত হওরা চাই। . একেবারে সাদাসিধা বা মদলা-বাজত খাভ আপনার বাছ্যের অমুকুল নর। মধ্যে মধ্যে বলকারক (টনিক জাতীয়) ঔষধ ব্যবহার আপনার নষ্ট স্বাস্থ্য ফিরিয়ে আনতে সাহায্য করবে। কিন্তু ঔবধ বাবহারের ব্যাপারেও বাডাবাডি **च**त्रा উচিত হবে ना। আপনার দেহের গঠনই এমনি যে পীড়া হ'লেই দেহে সারাংশের অভাব ঘটতে পারে, স্বতরাং বৌন ব্যাপারে আপনার बिट्निय সংযত হওরা উচিত। এ বিষয়ে অনিয়ম বা বাড়াবাড়ি হ'লে দেহ অপটু হ'রে উঠতে পারে।

অক্তান্ত ব্যাপার

আপনার কুত্র কুত্র ভ্রমণ অনেক হ'তে পারে এবং তাতে আনন্দও পেতে পারেন—কিন্তু একটানা দীর্ঘ ভ্রমণ বা দূরদেশ যাত্রা আপনার পক্ষে কষ্টকর হওরাই সম্বব। তীর্থপ্রমণ বা সমূত্র প্রমণে বিপদআপদের আশলা আছে এবং অনেক ক্ষেত্রেই বে আশা নিরে বিদেশে
যাবেন তা পূর্ব হবে না। বিদেশে প্রতিষ্ঠাশালী বন্ধুলাভ হ'তে পারে
বটে এবং তাদের সাহাব্যে কিছু আনন্দও পেতে পারেন, কিন্তু তারা
আপনার অভীই সিদ্ধিতে বিশেষ সাহাব্য করতে পারবেন না।

স্মরণীয় ঘটনা

আপনার ৬, ১৮, ৩০, ৪২ প্রভৃতি বর্ষস্থলি নিজের অথবা পরিবারত্ব কারো সংশ্রবে কোন দুঃগঞ্জনক অভিজ্ঞতা হ'তে পারে। ৭, ১২, ১৯, ২৪, ৩১, ৩৬, ৪৩, ৪৮ প্রভৃতি বর্ষস্তলিতে কোন উল্লেখযোগ্য আনন্দলান্ত সম্ভব।

বৰ্ণ

আপনার প্রীতিপ্রদ ও সোভাগ্যবর্ধক বর্ণ হচ্ছে নীল। নীল রঙের সব রকম প্রকার-ভেদই আপনি ব্যবহার করতে পারেন। কিন্তু গাঢ় নীল রঙ্ব্যবহার করা আপনার পক্ষে ভাল। দেহ মনের অস্ত্র অবস্থার কিন্তু হাল্কা ও চক্চকে রঙ্জাপনার ভাল লাগবে।

ব্ৰত

আপনার ধারণের উপযোগী রত্ন হ'চেছ ইন্দ্রনীল (Blue diamond), নীলা, ফিরোজা (Turquoise) প্রভৃতি। অহন্ত অবহার ওপ্যাল (Opal) ধারণ করতে পারেন।

যে সকল খ্যাতনামা ব্যক্তি এই রাশিতে জ্বন্নেছেন তাঁদের জনকয়েকের নাম—মাইকেল মধুপুদন দত্ত, কাইজার দিতীর উইল হেল্ম, রাজা স্তার রাধাকাস্ত দেব, প্রাসিদ্ধ ধাত্রীবিভাবিদ্ ডাজার কেদারনাধ দাস, প্রসিদ্ধ দার্শনিক হীরেক্রনাধ দত্ত প্রস্তৃতি।—

আন্দামান-নিকোবর দ্বীপপুঞ্জ

অধ্যাপক শ্রীমণীন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় এম-এ,বি-এল

(পূর্বপ্রকাশিতের পর)

আন্দামানে জাপানী-রাজ

শুভার বা অপরাধী সন্দেহে ব্যক্তি বা সমষ্টির উপর কাপানীরা বে অত্যাচার করিলাছে তাহা ছাড়াও সাধারণভাবে নিরীহ নিরন্ধ অধিবাসীদের উপর বে ব্যাপক অত্যাচার হইরাছে তাহা করনাতীত। বর্জমানে সরকারী বোটর বিভাগের ভারপ্রাপ্ত অফিসার মিঃ রাহা বলিলেন "আমরা আপানী রাজত্বে এমন কি বন্ধুর সহিতও কথা বলিতে সাহস পাইতাম না, পাছে অভ কাহারও কোনরূপ সন্দেহ হর। আপানী অফিসারের হকুনে নির্মিত চাকুরী করিলা চুপ করিলা বরে বসিরা থাকিতাম। আমা কাপড় কিছুই আমাদের হিন্দু না, ভালো

পোবাক অধিকাংশই জাপানীর। তাহাদের রাজত্বের প্রথম দিকে কাড়িরা লইরা ছিল, বাকী যাহা ছিল তাহা তিনবংসরে সম্পূর্ণরূপে ছি'ড়িরা গিরাছিল। পুরাতন চটের খলে কাটিরা তাহারই প্যাণ্ট এবং জারা প্রস্তুত করিরা উহাই পরিতাম, এ-ছাড়া রেশবের মিদারুণ অতাব। এক একটি পরিবারকে সন্তাহে এক সিগারেট টিন-পরিমিত চাউল দেওরা হইত।" এই সমত্ত কথোপকখনের মধ্যে পকেট হইতে একটি সিগারেট টিন বাহির করিয়া আমাদের দলের ভিতর হইতে একজন ভত্তলোক মি: রাহাকে একটি সিগারেট দিতে যাইলে তিনি বলিলেন "আমি সিগারেট খাওরা ছাড়িরা দিরাছি। জাপানী অধিকারে একটি সিগারেটের দাম হইরাছিল দশ টাকা। টাদা করিরা দশ টাকার একটি সিগারেট কিনিরা আমিও আমার হই বন্ধু এই তিনজনে শেব

ধ্নপান করিষাছি, উহার পর প্রতিজ্ঞা করিয়া আর সিগারেট স্পর্ক করি নাই।" তিনি বলিলেন যে থাতের অভাবে সকলেই ভগ্নবাস্থ্য হইরা পড়িলাছিল; বেরিবেরি, রক্ত আমালর এবং নানারপ চর্মরোগ্ধ দেখা দিয়াছিল, ইহার উপর নিরমিত্ত ভাবে কাজ করিতেই হইত, নচেৎ জাপানীবের হাতে বেত থাইতে হইবে। পোর্টরেরারে এমন লোক নাই যে জাপানী রাজত্বে বাস করিয়া কথনও জাপানীর হাতে প্রহার লাভ করে নাই। বলিলেন, "আমরা জীবত্তে মরিয়া ছিলাম—তবে যে কোন মতে বাঁচিয়া ছিলাম সে কেবল রাঙা আলু আর নারিকেল থাইয়া, নচেৎ পোর্টরেরারে একজনও বাঁচিত না।" জাপানী রাজত্বের শেষভাগে ১৯৪০-এর মাঝামাঝি জাপানীরা যপন থাভাভাবে মরিয়া হইয়া উঠিয়াছিল, তথন লোকসংখ্যা কমাইবার জল্গ উহারা যে ব্যবস্থা করিয়াছিল, তাহাও উহাদের নিকট শুনিলাম। উহা এতই অমামুযিক যে শুনিলে বিবাস হয় না, কিন্তু চালুস দেখিয়াছে এবং নিজের দেহের উপর দিয়া নির্যাতন ভোগ করিয়াছে এইরপ লোকের নিকট পোনা বিলিয়াই সে কাহিনী নিয়ে দিলাম।

লাপানী রালভের একেবারে শেষভাগে থান্ধাভাব যথন তীত্র হইয়া দেখা দিল, তখন জাপানী অফিসারগণ পোর্টরেয়ারের সে সমন্ত লোক প্রত্যক্ষতাবে সরকারী প্রয়োজনে লাগিত না, তাহাদের একদিন বাডী হইতে জোর করিয়া লইরা গিয়া দেলুলার জেলে আটক করিয়া বলিতে লাগিল যে এথানে নিদারণ খাভাষ, চল তোমাদের অক্সত্র রাখিয়া আসিব সেখানে তোমরা প্রচর খান্ত পাইবে। লোকে কেহ তাহাদের क्या विदान कतिल, (कह वा अतिल ना, किन्न छेलाव नाहे, खालानीएन চকুম মত কাজ করিতেই হইবে। এ হতভাগাদের একদিন দেলুলার खिल **कांठेक दार्थिया श**द्धानिन मक्तादि शद वनश्राद्यारंग काहारक उठाउँ उ বাধ্য করা হইল। প্রান্ন পাঁচ ছর শত বুদ্ধ, প্রীলোক এবং শিশুভে নাহাক ভবি করিরা ১৯৪৫-এর আগন্ত মাসের প্রথম সপ্তাহে এই জাহাক পোর্টরেরার বন্দর ছাডিরা রওনা দিয়াছিল। দেশের লোক তথন কেহই জানিতে পারে নাই. কিন্তু এই সমন্ত লোককে হাতলক খীপের নিকট লইয়া যাইয়া সমুদ্রবক্ষে শেব রাত্রে জ্বোর করিয়া ফেলিয়া দেওরা ररेशाहिल। इहात भारतहे साभानीता धारात कतिल एए, एए बीट्स अहे লোকশ্রনিকে পাঠানো হইয়াছে, সেধানে ইহারা সুথে আছে অতএব আরও অনেক লোক দেখানে পাঠানো বায়। অতঃপর জাপানীর। তাহাদের অফিস, কারখানা ও ক্ষেতের শ্রমিক এবং কর্মচারীদের টিকিট দিতে মুক্ত করিল কিন্ত কর্মচারীদের স্ত্রী বা সন্তানবর্গকে টিকিট দিল না : विलल माज हिकिछेबादी लाक्ड (शार्टद्रशाद्र थाकित्व. वाकी मकलाक्ड দেই দুর দ্বীপে পিরা বাস করিতে হইবে। ১০ই আগষ্ট ১৯৪৫ সালে এইরপে টিকিটহীনপাঁচ ছয় শত প্রীলোকও শিশু একত্র করিয়া জাপানীরা প্ৰয়ার সেলুলার জেলে:একত্তিত করিল এবং সন্ধ্যার সময় আর এক দাহাজ ভর্ত্তি করিয়া শেব রাত্রে রাজাকান নামক অন্ত একটি ছীপের নিকট লইয়া গিয়া জলে ফেলিয়া দেয়। পুনরায় ১৪ই আগষ্ট ভারিখে এইরপে আরও পাঁচ হয় শত টিকিটহীন গ্রীলোক ও শিশু একতা

করিয়া দেল্লার জেলে আটক করা হয়, কিন্তু দেদিন আর আহাজ হাড়া হয় নাই, পরদিন বিকালে সহসা তাহাদের জেল হইতে হাড়িয়া দেওয়া হয়। তথু বে তাহাদের জেল হইতে হাড়িয়া দেওয়া হয়ল তাহাই নহে, উপরস্ক পোর্টয়েয়য়য়য়য়য়ী প্রত্যেককেই আধসের পরিমাণ চাউল এবং চিনি জাপানী মিলিটারী গুলাম হইতে বিনামূল্যে সরবয়াহ করা হইতে লাগিল। সকলেই অবাক্ হইয়া পেল। শেবে শোনা গেল যে, ১৫ই আগষ্ট ১৯৪৫ তারিখে জাপান মিত্রশক্তির নিকট আর্মমর্মপণ করিয়াছে। খবয়টা লোকমুখে শোনা গেল এবং প্রত্যক্ষতাবে দেখা গেল যে জাপানীয়া সহসা নিয়ভিশর ভজ ও সহালয় হইয়া উটিয়াছে।

২৩শে মার্চ ১৯৪২ ছইতে ১৫ই আগষ্ট ১৯৪৫ পর্যন্ত আন্দামানে জাপানীদের অধিকার এবং অত্যাচার অব্যাহতভাবেই চলিরাছিল। কোনরাপ সংবাদপত্র ছিল না, কাহারও সহিত কোনরাপ বাক্যালাপ করিবার সাহস পর্যন্ত লোকের ছিল না, বন্দুক ও তরোয়াল দিয়া নিরন্ত দেশের মধ্যে বর্করতার অবাধ গতি। বিংশ শতান্দীর মধ্যভাগে যে এরাপ বর্করতা প্রচেওভাবে চলিয়াছিল, সভ্য পৃথিবীর সংবাদপত্র পাঠকগণ তাহার কোন আভাবমাত্রও পান নাই।

এই সাড়ে তিন বৎসরকাল সময়ের মধ্যে পোর্টরেরারের নাগরিক कीवन একেবারে বিপর্যান্ত হটয়া পডিয়াছিল। বাজারে কাপড চাউল বা ঔবধ किছুই পাওয়া যাইত না, কোনদিন কাহাকে দিনে বা মধারাত্রে গ্রেফ্ তার করিয়া লইয়া গিয়া সর্বাসমক্ষে মারধোর করিবে, গায়ে আলপিন ফুটাইয়া হত্যা করিবে তাহার কোন দ্বিরভা নাই, চোখের সামনে আন্দ্রীয়থজনের লাঞ্ছনা যে কি ভয়াবহ আকার ধারণ করিবে, তাহার কোন ইয়তা নাই। অবচ আত্মগোপন করিয়া পলায়নের কোন উপায়ও নাই, সমুদ্রের মধ্যবর্তী দীপ হইতে কোশায় পলাইবে ? এই ছুর্বিসহ জীবন্যাপন করিরা লোকে একরূপ মরিরা হইয়া উঠিয়াছিল। এই কয় বৎসরের মধ্যে অনেকণ্ডলি আস্মহত্যাও ক্ট্যাছিল, কিন্তু কতঞ্চলি, তাহার কোন সংখ্যাও কেহ রাখে নাই। দুইবারে কভগুলি লোককে যে সমূলে ফেলা হইয়াছিল, ভাহার কোন হিসাবও সঠিক পাওয়া যার না, তবে জেলের কর্মচারীরা আন্দান্ত করে প্রতিবারে পাঁচ ছর শত হইবে বলিয়া। ইহাদের যে জলে ফেলা হইরাছিল, তাহার প্রমাণ এই বে ঐ সমন্ত লোকের মধ্যে করেকজন নিভান্ত ভাগোর জোরে জীবিত অবস্থার নিকটবর্তী বীণে আসিরা পৌছিয়াছিল এবং ইংরাজদের দারা আন্দামান পুনরার অধিকৃত হওয়ার পর ইহাদের জীবিত অবস্থার উদ্ধার করাও হইরাছিল। ইহাদের মধ্যে ছুইজন পুরুষ এখনও প্রাপ্ত পোর্টব্রেরারে চাকুরী করিভেছে। একজনের नाम मलनागत, म अथानकात कृली मफीतताल अथमल कांक करत, অন্তর্ভন দেবীপ্রসাদ. সে Conservator of Forests-এর অফিসে এখনও দপ্তথীর কাল করে। এইরূপ জীবিত আরও করেকটি ব্যক্তিকে লাপানী রাজ্যের অবসানের পর তীরমুধ্নীন, এ্যালেকজান্রা, ছাডলক ইত্যাদি কুত্ৰ কুত্ৰ ৰীপ হইতে মৃতপ্ৰায় অবলায় উদ্ধান কৰা দলকালিকা

ইহাদের মুধ হইতেই এই সমস্ত কাহিনী প্রকাশ পাইরাছে। এই প্রসঙ্গে জাপানীরা যে কিন্তুপ হৃদরহীন, তাহার অক্ত উদাহরণও শুনিয়াছি। একটি ঘোড়ার তুইথানি পা কাটিয়া কইয়া উহাকে ব্যাপ্তেজ করিয়া দিয়া পরদিন বাকী তুইটি পা কাটিয়া কইয়া তৃহীয় দিনে ঘোড়াটিকে প্রাপ্রী কাটিয়া রালা করিবার কাহিনীও শুনিয়াছি। প্রথম দিনেই ঘোড়াটিকে বধ করিলে তিন চারদিন ধরিয়া পাছে পচা মাংস থাইতে হয়, সেই আশকায় অল্পে অল্পে কাটিয়া তিনদিন ধরিয়া চাট্কা মাংস থাওয়ার ব্যবস্থা নাকি এইয়পেই করা হইত। কোন জাপানী সৈনিক সাংঘাতিকভাবে আহত হইলে তাহাকে শুলি করিয়া হত্যা করিবার জক্ত জাপানী ডাজারয়াই আদেশ দিতেন, এবং অক্ত সহক্রমী জাপানী সৈনিক জলাদের ভূমিকায় নির্বিচারে সেই আদেশ পালন করিত। যন্ত্রণা দেওয়া বা হত্যা করা যেন জাপানীদের নিকটি নির্তান্ত তুচ্ছ একটা ছেলেখেলার ব্যাপার ছিল।

১৫ই আগত্তির পর পোর্টরেয়ার সম্পূর্ণ অরাজক অবস্থায় রহিল। জাপানীয়া কোন কাজই করিত না, ভালো সন্দ কোন বিবয়েই মাধা দিত না, লোকে যে যাহা পারিত ৰবিত। এইরপে প্রায় পাঁচ ছব সন্তাহ অভিবাহিত হওয়ার পর ২৬-এ সেপ্টেম্বর প্রথম রেডক্রশের Mercy Ship পোটরেয়ারে আসিয়াছিল। এই জাহাজে গাহারা গিয়াছিলেন, তাঁহারা বলেন যে চট-পরিহিত,রোগগ্রস্ত,মৃতপ্রার লোক দেখিয়া তাহাদের সভা মাতুৰ বলিয়া বিখাস করাই দ্রন্ত হইয়া উঠিয়াছিল। যাহা হউক. এই Mercy Ship এই দ্বীপে কিছু কাপড়, খাল, ভাঁড়া ভ্ৰম, 'अवध देशानि व्यानिशहिल। देशात श्रत देश्तारकत शूर्गनथल कोछ_। हे আক্টোবর তারিণে এই দীপে প্রথম পদার্পণ করে। ৪০ মাদ জাপানী রাজতে লোকের দু:ব হইয়াছিল অপরিদীম—তবে তৎসকে জাপানীদের দারা পোর্টব্রেয়ারের ৩০ মাইল পাকা রাস্তা, একটি এরোডোম, ডক্ইরার্ডের কিছু উন্নতি এবং অসংখ্য শস্তক্ষেত্র গড়িয়া উঠিয়াছিল। জাপানীদের রাজদের নিদর্শনমূরণ এখনও তাহাদের পরিত্যক্ত কামান, **পिन्दस, भाराएव नीत्रव आन्यस्थान এदः भ्रमाय एव रेलामि এथन**७ অবশিষ্ট আছে। দেগুলির কথা ইতিপুর্কেই গত সংখ্যার উল্লিখিত श्रेत्राष्ट् ।

লাগানী অভ্যাচারের শেব পরিণামটুকুও বলা উচিত। যুদ্ধান্তে আন্দানানের অভ্যাচারী লাগানীগণ মিত্রশক্তির বারা ধৃত হইরাছিল। সিঙ্গাপুরে ইহাদের যুদ্ধাপরাধী হিসাবে বিচার হর। এই বিচার আরম্ভ হইরাছিল ১৯৪৬ সালের ক্ষেত্ররারী মাসে এবং ঐ বংসর স্কুলাই মাসে এই বিচার

(नव रहा। विहाद कांत्र २०१० सत्तव कांत अव का सामानीव मुज़ामक बरेबाहिन। এই विहादित सम्भ चान्नामान इरेक चान्तरकर সাক্ষীরূপে সিঙ্গাপুরে গিয়াছিলেন। এ ছাড়া শীমান পুষর বাগচী মহাশরও অপরাধী সাব্যস্ত হইরা সভ্রম কারাদতে দণ্ডিত হন এবং এখনও তিনি ভারতের জেলে অবরুদ্ধ আছেন। প্রসঙ্গরেন এই পুরে ১৯।১-।৪৯ তারিপের পি-টি-আই-এর সংবাদটুকুও দেওরা বায়। এ সংবাদে বলা হইয়াছে যে, জাপানীদের মধ্যে বুদ্ধাপরাধের জন্ত মোটের উপর পাঁচ ছয় হাজার অপরাধীকে লইয়া তিন হাজারেরও অধিক মামলা চালানো হইয়াছিল, তল্মধ্যে ৭০০ মৃত্যুদণ্ড এবং ২,৫০০ কারাদণ্ড হইয়াছে এবং কতকশুলিকে ছাডিয়া দেওরা হইয়াছে। যুদ্ধাপরাধী বন্দী সহল্পে আমাদের ধারণা ছিল যে, পরাঞ্জিত শক্তকে বিজয়ীগণ অষ্থা লাঞ্চিত করে, কিন্তু আন্দামানে লোকমূপে উপরোক্ত অত্যাচার কাহিনী শুনিয়া মনে হইল যে. এঞ্জি যদি সব সভা হয়, ভাছা ছইলে মানবতার দিক দিয়া এই বিচার এবং শান্তি হওরা সতাই আরোজন। অবশ্য একথা ঠিক যে, জয়ীরাও হয়ত এরাপ বা উহাপেকাও অধিক অত্যাচার করে, কিন্তু একজন অপরাধীর শান্তি দিবার উপবৃক্ত কোন শক্তি নাই বলিয়া অপর অপরাধীর বিচার না হওয়ার মধ্যে কোন যুক্তি নাই। উপরন্ধ এইক্লপ বিচার এবং শান্তির বাবস্থা থাকিলে পরবর্ত্তী যুদ্ধে অভ্যাচারীগণ সাবধান হইবেন, কারণ যুদ্ধ চলিবার সময় কে জয়ী হটবে ভাহার কোন নিশ্চয়তা ও থাকে না।

উপরোক্ত কাহিনীর সত্যতা সহকে আমার ব্যক্তিগতভাবে কোন অভিজ্ঞতা নাই। বিভিন্ন লোকের নিকট হইতে শুনিরা যাহা পাইয়াহি, তাহাই একত্রিতভাবে লিপিবন্ধ করিলাম। কেবল এইটুকুই আমার সন্দেহ রহিরা গেল যে, যে-জাপানীদের ভক্তা ও আমারিকজার ফ্রাাতিতে পূর্বভারতের মণিপুরীরা ও নাগারা পঞ্চম্ব, সেই জাপানীরাই আন্দামানে এত বর্বর হইরা উঠিল কি করিরা । হয়ত এরূপ হইতে পারে যে, আসাম অভিযাত্রীদের উপর নেতালীর প্রত্যক্ষ প্রভাব ছিল, কিয়া আন্দামানকে সম্পূর্ণরূপে লোকজনশৃশু করিরা ও লাগানী উপনিবেশ ছাপন করিবার ক্রশু লাগানী কর্ত্বপক্ষ মনছ করিরাছিলেন, কিয়া অন্ত কোন কারণে উভর ছানের ব্যহারে এই বিপরীত পার্থকা ঘটিরাছিল। যাহা হউক, রাজকুলকে বিশ্বাস না করিবার ক্রশু ভারতীর পত্তিতপণ যে উপদেশ দিয়া গিরাছেন, সেই উপদেশ বাণী স্করণ করিয়া মণিপুর ও আন্দামানের ছই বিপরীত ঘটনার কারণ বিলেবণ করিবার ঘণ্ডেইা হইতে কান্ত থাকাই বুদ্ধিমানের কান্ত। (ক্রমণ:)

লামার অভিশাপ

জ্রীজনরঞ্জন রায়

একটা বেরাড়া জারগার একটা ভূতুড়ে লোকের অভিশাপ। গল্লটা কুচবিহারের···লোকে বলে চুখো বছর থেকে সেথানে চলিত আছে।

ভূটিয়ারা থাকে যেন সে রাজ্যের উপর তলায়। মাঝের তলায় থাকে একটা পাহাড়ী জাতির লোক। নিচেরতলা খাস কুচবিহার অধাকে কোচ বা রাজবংশীয়া। তাদের মধ্যে মাঝের-তলার পাহাড়ী জাতের মেয়েরা খ্ব স্কলরী। কে জানে এদেরই আগে কিয়রী বলা হইত কি-না ? তারা সাজগোজও করে খ্ব অপুরুষরাও কম বিলাসী নয়।

প্রবাদ আছে এই কুচনীপাড়াতেই শিবঠাকুরের বিলাস-রাজ্য ছিল··ভা ভিনি যে শিবই হোন।

त्रत्म थादक थे ভिन काजित लाके ः ভारतत्र मरधा महान नाहे भारिहें।

আবার এই তিন জাতই বাঙালীদের ভারি হিংদা করে···বাঙালীদের নাম দিয়াছে 'ভাটীয়া' বা দখিনের লোক।

ব্যম্ভী পাহাড় হিমালয়েরই একটা ধারা।

বর্ষার অরম্ভী পাহাড়ের জলপ্রপাত ··· দেখিলে মনে হয়

অর্গ থেকে দেবতারা বুঝি সমুদ্রের মুখ থূলিয়া দিয়াছেন।

কুচবিহারের ধলনা নদীতে এই জলের চাপে এখন যেন চলু নামিয়াছে।

নদী বাহিরা জয়প্তী পাহাড়ে উঠিতেছে তিন বন্ধ • ঐ তিন জাতের তিনটি লোক। টাসী ভূটিরা, রামিরা পাহাড়ী, জার শঙ্কর কোচ। তিন জনেরই লক্ষ্য ব্যবসা। ভোটদের দেশে তারা উঠিতেছে চাল-বোঝাই ডিঙি নিরা। ফিরিবার সমন্ব চালের বদলে সেখান থেকে আনিবে কস্তরী, মঞ্জিষ্ঠা, মিঠা বিষ, মোম জার মধু।

তারা যতোই উন্ধান উঠিতেছে ততোই শীত বাড়িতেছে দারুণ ততার সঙ্গে পেট জ্বলিতেছে হুত্ করিয়া। তাদের ধারণা ছিল মহাকাশীর মন্দিরে যাইতে ছ'দিনের বেশি লাগিতেই পারে না আরুর সেখানে গেলেই পেটভরা

প্রসাদ মিলিবে। এখন বৃঝিল নৌকায় গোলে ঘুরিয়াঘুরিয়া মন্দিরে উঠিতে আরো ছই দিনের কমে হইবে না,
ভাই ভাহারা নৌকা বাঁধিল একটা শক্ত বেঁটে পাহাদী
গাছের সন্দে। ভারপর পিঠে চালের বন্তা নিয়া উপরে
উঠিতে লাগিল। দেবীর পূজারী মন্দিরে চুকিতে দেয়
না…মালগুলো পাহাড়ের নিচে রাখিয়া ঘাইতে হইবে—
টাসী ভূটিয়া এ কথাটা বারবার শোনাইতেছে সঙ্গীদের।
সে আরও বলিল—এই ভাটীয়া লামা হেমস্কর ভারি পাজি
লোক…এ উপরে মহাকালের মন্দিরের ভিববতী লামাবাবার শিশ্ব বলিয়া হেমছরের এতো সাহস। ভিববতী
লামা যেমন ভূতুড়ে ভেমনি গুণী। স্বাই তাকে ভয় করে
এই ভলাটে। লম্বা-বুড়ো ঝোপ ঝোপ গোঁফ-দাড়ি…ভেলচিঠে চামড়ার আলখালা গায়ে…গলায় খট্ খট্ করিভেছে
কত জানোয়ারের, কত মান্ধবের হাড়ের মালা।

মহাকালীর মন্দিরের নিচের পাহাড়ের আড়ালে ভারা তুই তিন খেপে আনিয়া বস্তাগুলি নামাইল। আরও থাকিয়া গেল কিছুটা, কিন্তু ধৈর্যাহারা তাহারা কুধায়… চুকিয়া পড়িল মহাকালীর মন্দিরে।

গুহার মধ্যে দেবীর মাথায় পাহাড় হইতে টপ্টপ্
করিয়া কল পড়িতেছে নিট্মিট্ করিয়া প্রদীপ জলিতেছে
সেই অন্ধকারের মধ্যে ধুপের ধোঁয়া মৃত্ব মৃত্ব উঠিতেছে বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিভাগ বিলালীর মতো ত্বের সঙ্গে যবের ছাতু ঠাগুর জমিয়া গিয়াছে। কোনোটায় গাছের বীজ ভুর্রাতে মধ্র-চিনি মাথানো নাড়। ক্ষেকটা আন্ত-আন্ত পাহাড়ে ফল। কুখার তাড়নায় তাহারা লাফাইয়া পড়িল নৈবেলগুলির উপর। প্লারী ভোগ দিয়া বাহিরে অপেক্ষা করিতেছিলেন। প্লারী বিলাগ বিসাছিল একটি ভূটানী কুকুর। লোকগুলোকে দেখিয়া কুকুরটা চীৎকার করিয়া উঠিক, ওদিকে প্লারীও ছবার দিয়া উঠিকেন। যাহা পারিলাভাহা নিয়া একটু সরিয়া গেল তিন জনে। প্লারী কোষে

শ্বীর হইয়া বলিতেছেন—কে ধর্মহীন অনাচারী দেবীর জোগে বাধা দিলি? তিন বন্ধু চোপে-চোথে কি ইসারা করিল। ক্রুরটা টাসীর উপর ঝাঁপাইরা পড়িতে চায় করিল। ক্রুরটা টাসীর উপর ঝাঁপাইরা পড়িতে চায় করিল। ক্রুরটা দিবে। রামিয়া আর শঙ্কর ছুইটা পাধরের ডেলা নিয়া কুকুরটার মাধায় এত জোরে ছুড়িয়া মারিল যে, তার মাধা ফাটিয়া ঘিলু বাহির হইয়া গেল। তারপর বাঘের মতো হেমছরের উপর লাফাইয়া পড়িল সবাই এক সঙ্গে। তাঁহাকে ধাকা দিয়া ফেলিয়া দিল পাহাড় থেকে। তিনি জয়স্তীর ঘূর্ণাবর্ত্তে পড়িয়া গেলেন। কুকুরটা মৃত্যু-যজ্ঞায় চীৎকার করিতে করিতে উপরের পাহাড়ে উঠিতেছিল। সে মহাকালের মন্দিরে বাইতেছিল তার প্রভু হত্যার কথা জানাইতে ঐ তিব্বতী লামাবাবার কাছে। কিছু অতো দ্র বাইতে পারিল না। কিছু দ্র গিয়া একটা মরণ-ডাক ডাকিল। তারপর ঘূরিয়া পড়িয়া গেল।

ভিবৰতী লামা মহাকালের পূজা শেষে তথন ঘটের মধ্যে আকাশ-গন্ধার জলধারা ভরিয়া নিতেছিলেন। তাহা দিয়া দেবতার মাথায় শেষ অর্ঘ্য ঢালিয়া দিয়া যাইবেন विश्वा। महाकाली मिलारबङ रायन, महाकाल मिलारबङ সেইরূপ পাহাড় পথে বিন্দু কিন্দু জল ঝরিয়া পড়ে বিগ্রহের মাথার উপর সদা সর্বদা ঐ আকাশ গলা হইতে। লামার হম্ভস্থিত পাত্রটি কাঁপিয়া উঠিল নিচে মহাকালী মন্দিরের কুকুরটির মরণ চিৎকারে। বিপদের সঙ্গেত পাইয়া তিনি নিচে চাহিয়া দেখিলেন হেমস্বরের দেহ নদীর আবর্ত্তে গিয়া পডিয়াছে। সেখান হইতে দেখিতে চেষ্টা করিলেন, কিন্ত দেখিতে পাইলেন না কোনো আতভায়ীকে। বিচিত্র ভাষায় তিনি কি সব মন্ত্র আবুত্তি করিতে করিতে ক্রোধে লাফাইতে লাগিলেন। তাঁর কেশপাশ, হাড়ের মালা, আর চামড়ার আলথালা, বেন ঝড়ের বেগে উঠিতে-পড়িতে লাগিল। তিনি অভিশাপ দিতে লাগিলেন—হেমস্বরের रुजाकाती भानिए रान वर्षे यामात्र कवन त्थरक, किन আমার অভিশাপ তাদের পাছু-পাছু ছুটবে···বেমন কোরে হেমস্বরকে ভারা মারলে, ভেমনি কোরেই ভারা মরবে ঠিক শিয়াল-কুকুরের মতো···করনা কোরতে পারেনি এমনি অস্বাভাবিকভাবে! চোধ ছুইটা তার জবাসুলের ৰতো লাল হইয়া উঠিয়াছে। সন্মুখে পাইলে ঐ আততায়ী-

গুলোকে ছিঁ ড়িয়া ফেলিতেন এমনভাবে দাঁত কড়নড়
করিয়া বিকট ভঙ্গী করিতেছেন। তিনি মন্দির মধ্যে
গিয়া তুমুল রবে দামামা বাজাইতে লাগিলেন। পাহাড়ীরা
একটা দারুণ বিপদের আশকায় সাজ-সাজ রব তুলিল।
ওদিকে পলাতক সেই লোক তিনটার অন্তরাত্মা শুকাইয়া
উঠিল। দিক-বিদিক জ্ঞানশ্সু হইয়া তাহারা নৌকায়
আগিয়া বসিল। কোথায় পড়িয়া রহিল সেই সব চালের
বোঝা, তাহা দেখিবার অবসর মিলিল না। তথন প্রাণ
বাঁচানো স্বার আগেলে।

তারা পলাইতেছে ··· কানে বাজিতেছে লামার অভিশাপ

—মরবে তারা কুকুর-শিয়ালের মতো ··· কল্পনা করতে
পারেনি এমনি অপমৃত্যু হবে।

তারা নৌকা ফেলিয়া দৌড়িতে লাগিল যে যাহার দেশের দিকে। সকণেই পাছু ফিরিয়া চাহিতেছে—বুঝিবা লামা আদিতেছে তাড়া করিয়া!

ক্ষেক মাস কাটিল, ব্যবসাদাররা আবার আপন আপন ব্যবসায় লাগিয়া গেল। টাসী ভূটিয়া আবার চাল নিয়া জয়ন্তী পাহাড়ে ব্যবসা শুরু করিল। চাল দিয়া সেখান হইতে কল্পনী প্ৰভৃতি আনিয়া বেশ ছুই পয়সা লাভ করিভেছে। কিছুদিন পরে সে চাল কেনার কাজে রামিয়া পাহাড়ীর গ্রামে আসিয়া পড়িল। পাতলাখাওয়া গ্রামে রামিয়ার বাস ছিল। ভাষণ জনল নহাতী, গণ্ডার, বাঘেতরা গ্রামধানা। রামিয়া এই সব হুদ্ধর চাম্ডার ব্যবসা করিত। চামড়া বিক্রী করিয়া সে হলদিবাড়ি, মাথাভাঙা প্রভৃতি স্থান হইতে চাল, পাট, তামাক নিয়া আসিত। টাসী তার নৌকাথানি তোড্যা নদীর ধারে বাঁধিয়া পাতলাখাওয়ায় নামিল। গ্রামের লোকরা নদী থেকে থেপ্লা জাল দিয়া ছোট ছোট মাছধরিতেছে। একটা জেলে প্রায় একমণ ওজনের একটা পুঁঠিতোড় মাছ তুলিয়াছে। টাদী খুঁজিতে খুঁজিতে রামিয়া পাহাড়ীর বাড়িতে চলিগছে। তার চোথে পড়িল অকল থেকে বনফুলের ন্তবক হাতে বাহির হইতেছে ভন্মাচ্ছাদিত গোলাপের মতো একটি তরুণী। চোখের জলে ভার বুক ভাসিয়া যাইভেছে। টাদীর कि ইচ্ছা হইল ইহাকেই खिळाना कविरव—वर्ष রামিয়ার কথাটা। টাসীর প্রশ্ন **গু**নিয়া শোকে ভাঙি^{য়া} পড़िन एक गोषि। होती व वृश्विष्ठ विनय रहेन ना रम, धरे

জ্ঞীলোকটিই রামিরার জ্ঞী কুম্দি। রামিরা তার জ্ঞীর নাম धवः क्रात्पत्र कथा वक्रापत्र कार्ष श्रीग्रहे विनिछ। কুমদি রান্তার উপরেই বসিয়া পড়িল। সে বলিতে শাগিল—সে তার স্বামীর ক্ষম ভিটার রোক সকালে বনফুলের অবক দিতে যায়, আজও সেথানে যাইতেছিল। কি স্থানর বর-দোর করিরাছিল তার বামী। তার মনটি ছিল যেমন স্থন্দর, তার ক্ষচিও ছিল তেমনি স্থন্দর। কুমদি বলিল-আমরা তু'জনকে তু'জনে কতো যে ভালোবাদিতাম, किंद कान रहेन अकन वाडानी छाछिया वावू। तम अहे বকলের ইন্ধারা নিয়াছিল। সে আমাকে কত যে কুৎসিৎ ইন্সিত করিত। একদিন সে আমার স্বামীকে বলিল— তোকে এই জন্মল ছেডে চলে যেতে হবে ভোর স্ত্রীকে আমার দেবার জন্ম রেখে, নইলে জালিয়ে দেবো ভোর ঘরবাড়ী। আমরা ভয় খাইয়া গেলাম। গ্রামের লোকদের সব কথা বলিলাম। গ্রামের লোকরাও খুব ভয় করিত এই ভাটিয়াকে। তার বাঘ-মারা বন্দুক, আর কোমরে ঝোলানো जुनानी- त्य त्मिक त्मरे खर्म जातक शब हाजिया मिछ। এই ভাটিয়া ছোকরা-বাবুর প্রাণের ভয় ছিল না। সে বুনো হাণীর দলের ভিতর দিয়াও তার কাঠের কুলীদের নিয়া আসিত বন্দুকের আওয়ার করিতে করিতে। একবার त्म चन क्रमत्न शियाद्ध. क्यमिन निक्तय कितिरव ना खाविश আমার স্বামী গন্ত করিতে বাহির হইল। বাইবার সময় বলিয়া গেল খুব শীঘ্রই ফিরিব···ভোমার জম্ম বলিয়া গেলাম গ্রামের মোডলকৈ ... সে ভোমার উপর নম্বর রাখিবে। আমি তাকে বেশি বাধা দিতেও পারিলাম না ... অনেকদিন বসিরা আছে। ভোড্সা নদীতে ডিঙি ভাসাইয়া সে বলিল—অন্ত কোন গ্রামে পালানো যায় তারও খোঁক নিয়া আসিব, আর এ গ্রামে থাকা নর। চার-পাঁচ দিন না যাইতেই দেখিলাম সেই ভাটিয়া বাবু আমার ঘরের চারিদিকে वस्क चाड़ে निशा चुतिएछछ। आমের মোড়লকেও খবর দিলাম। তারপর আর তার থোঁক शाहेनाम ना जाल-चांछे बिन। त्म त्य नदीत चार्छेत सकता ওৎ পাতিয়া বদিরা আছে আমার স্বামীর প্রাণ নিতে তথন তাহা কে জানিত ? আবার শোকে ভাতিয়া পড়িল কুমদি। তারপর किছু সামলাইয়া নিরা বলিতে লাগিল-একদিন मसात्र किছ बार्श बागात्र बागी तोका छिड़ाहेरछह

নদীর খাটে, গ্রামের স্ত্রীলোকদের স্বাক্ত আমিও তথন নদীতে জল আনিতে গিয়াছি···দড়াম্ দড়াম্ করিয়া তুইটা গুলির আওয়াক হইল···আমার স্থামীর বুকে পিঠে গুলি বিধিয়াছে। চিৎকার করিয়া উঠিলাম আমরা। দেখা গেল বাবের মতো ছুটিয়া আসিতেছে ভাটিয়া বাব্। সে ভুজালী দিয়া আমার স্থামীর গলায় চোট বসাইয়া দিল। গ্রামের লোক আসিয়া জাপটাইয়া ধরিল ভাটীয়াকে। ভাকে মারিতে মারিতে দেশ ছাড়া করিল··আমি অনাথ হইলাম।

কুম্দি কাঁদিয়া গড়াগড়ি দিতে লাগিল।

বন্ধু রামিয়ার পরিণাম গুনিয়া টাদী ভূটিয়া পুর দুমিয়া গেল। তাহার কৌতৃহল হইল শব্ধর কোচ কোথায় ও কেমন আছে তার থোঁক নিতে হইবে। সে কুচবিহারের চলिन। नकरत्रत्र शास्य व्यत्वक प्रकिनः **मकरतत ভारधत मरक रम्या इहेल। रम विलन माम** তুই আগে শকর তুলার ব্যবসা করিতে সঙ্কোশ নদীতে আসামের দিকে ডিভি ভাসায়। সেধানে তার এককন আহোম বনু ভুটে। আহোম তাকে কামরূপ বা প্রাগজ্যোতিষপুরে ভূলাইয়া नहेबा यात्र। রাজার রাজ্য বলিয়া ভূটিয়ারা যেমন ভয় করে, কোচরাও তেমনি ভব্ব করে এই কামরূপকে। আংগমটা বে প্রতিবার কামরূপে আদে, আর হিরণা কামরূপিনীর কাছে इ'जिन माम कालाहेबा यात्र, जाहा मक्क कानिज ना। व्यादाम महत्रक हित्रवात कार्ड व्यानिन, हित्रवा एक्-मन-व्यान पित्रा इरे पित्नरे मक्दरक (छड़ा वानारेया किन्न। আহোম একদিন হিরণাকে বলিল-এইবার ভূমি আমার मल आमात्र (मत्म हिल्डा याहेर्द विल्डा किन দেখিতেছি ভারি কমিয়া গেলে এই শকর কোচটাকে निया! श्विमा विमन-काठिएक मात्रिया क्ल का... त्रहे **ट्या**मांत्र मान स्थामात्र वाहेवात्र वांधा इहेबाट्छ। हित्रगांत मरक आरहारमत भन्नामर्न हहेवा श्रम-तमहे त्रारकहे শঙ্রকে কামাথ্যার গুহার ফেলিরা পাথর চাপা দিরা मातिरव ... खश (थरक जारक बन्न भूरत रक्तिश दिवांत जाता হিরণার...তারপর ছ'চারদিন আহোম কোথাও গা ঢাকা विद्या थाकिरव ... त्यार क्र करन जागारम भगावेरव। जारहा म

টিক কথামত কাজ করিল…সেই রাত্রেই শহরকে গুহার ं दंगनिया प्रमुक्त कतिया माजिन। छात्रश्रद हित्रना कि करत ্ভাই দেখিতে সে হিরণার বাড়ির আশে-পাশে রাত্রে অনেক যোরাখুরি করিতেছিল। হিরণার বাড়িতে বাহিরের মোর বন্ধ· বাড়ির মধ্যে হাসির হররা উঠিয়াছে। তার ভারি সন্দেহ হইল। কান পাতিয়া ভনিতে লাগিল ভিতরে কাহারা কি বলিতেছে। দরকার ফাঁক দিয়া দেখিল ছুইজন কামরূপীকে হিরণা খাওয়াইভেছে -- কি চটুল তার চাহনি! কামরূপীদের সে বলিতেছে—আহোমটা তার প্রাণের বন্ধুটাকে কিন্তাবে খুন করিয়া গা ঢাকা দিয়াছে... ভোমরা না থাকিলে লাসটাকে নদীর জলে ফেলাই হইত ना :: आत लां क त्यार आमारक र भूत्नत मारा किला :-আহোমটাকে এইবার তোমরা ধরিয়া ফেল, নইলে শেষে कांबारकरे त्र थून कतिया ना रकता! अवुक्तन कांमक्री ৰলিল—কেন তোমার তো খুব ভালবাসার লোক ঐ আহোমটা, এবার আবার কোচটাকেও কুটিয়ে এনেছিল... इ'बान्तबहे नव किছू তো नूपेल---व्यावात प्रति।कहे খত্তম কোরতে চাও কেন? হিরণা বলিল-বাড়াবাড়ি **क्रतर** रय···कांमक्रिनीरिक राज्य ना···विर्वा रिक्ती रिक्ती আমরা ভেড়া বানিয়ে নিই!

রাদিরার ভায়ে তারণর বলিল—সেই আহোমটা আমাদের কাছে আসিরা এই সব কথাই জানাইয়া গেল।

হিরণার ঐ রকম কথা শুনিরা আর সে একদণ্ডও সেধানে দাড়ার নাই। বনের পথে ছুটিতে ছুটিতে সে পলাইয়া আসে। সে বলিল—তোমার মামার মতো আমি কতো কাছা-আলগা ছিলাম না…বেশির ভাগ টাকা-কড়িই একটা গাছের কোটরে লুকাইয়া রাধিতাম…ভাই নিয়া পলাইয়া এলাম—আসবার সময় মনে বড় ছঃথ হইল—ভাবিলাম তোমার মামার প্রাণটা নিলাম মিছামিছি একটা কুইকিনীর কথার—কুর্রে-শিয়ালে থাইবে তার দেইটা, কোনো সদগতি ভো হইবে না তার—ভাই তার মাথাটা কাটিয়া আনিরাছি এই বলিয়া ঐ আহোমটা মামার মাথাতার থলেটা আমাদের দিয়া গেল। ঐ দেখুন আমরা মামার মাথাটা ঐথানে পুঁভিয়া সমাক্ত দিয়াছি।

-টাদী ভূটিয়া দমিয়া গেল তার ছুইজন বন্ধুর এইজাবে অপমুক্তার থবর শুনিয়া। সে বুঝিল এইবার তার পালা… লামার অভিশাপ কলিবেই কলিবে। রামিয়ার ভারে ভথক বলিতেছিল—নামা এবার জরতী পাহাড় থেকে আসিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিল—আর পরত্রীর পাছু পাছু বুরিবে না
এ দোব তার চিরদিন ছিল। কিছু টাসীর কানে সে সব কথা বড় একটা বাইতেছিল না। টাসী ভাবিতেছিল কোবার সে বাইবে, কোথার গেলে প্রাণে বাঁচিবে। সে বাইবার ক্ষা উঠিল, কিছু রামিয়ার ভায়ে ভায়ে ভায়াকে বলিল—বখন এদেশে এখন আসিয়া পড়িয়াছেন, ভখন এখানকার শিবরাত্রির উৎসব পর্যান্ত থাকিয়া বান, এখানকার এইতো আমাদের প্রধান উৎসব। টাসী শিবরাত্রি পর্যান্ত কুচরিহারে থাকিয়া যাইতে রাজী হইল। সে কুচবিহারের শিব বানেখরের উদ্দেশে মানত করিল—থাসী দিয়া ভায়ার ভাগের আগ্রহে সে তার কাছেই থাকিয়া গোলার বাঁচাইও। রামিয়ার ভাগের আগ্রহে সে তার কাছেই থাকিয়া গেল।

কুচবিহার বসভোৎসবে মাতোরারা। প্রথমেই মদনমোহনের বসভোৎসব — দোলবাতা। তারপর হইবে শৈব
বসভোৎসব শিবরাতি। রাজবাড়ির মদনমোহন, দোলের
সময় বানেশরকে নিময়ণ করিতে নিজে চলিরাছেন
চতুর্দ্দোলে চড়িয়া। শিবের প্রতিভূ রাজবাড়িতে না
আসিলে মদনমোহনের দোল বসে না। বেন শিবই
এথানকার আদি দেবতা, কৃষ্ণঠাকুর আগভক। কোচদের
শিবগোত্ত। দোলের উৎসব চাপা পড়িয়া বার শিবের
উৎসবে। শিবকে নিরা হিন্দুস্থানময় অন্তাজদের মাতামাতি
হয় এই সময়। কিন্তু কোচদের বীভৎসতা সব দেশকে
হার মানাইয়াছে। শিবের কাছে জীবহত্যা করে ইহারা
কোন ভরের দোহাই দিয়া—তাহা ইহারাই বলিতে পারে:
হত্যা করাও হয় না, মাধা ছেচিয়া মারা হয়।—সেই
শিবরাত্তি আসিল।

হাজার-হাজার লোক শিবের মানসিক-করা থাসীর
মাথা ঠুকিয়া আধমরা করিছাছে তপ্তগুলি মরণ বল্লগায়
ছট্টট্ করিতেছে তেনেই রক্ত শিবের নাথার দিতে হইবে।
পাতালের গহবের শিব থাকেন। লোকে হজাছড়ি
করিতেছে আগে বাইতে। পশুর পা চারিটা হাতে
স্থলানো স্বারই। কাকে স্বাই বেহাত হইরা আছে।
স্থবোগ ব্ঝিয়া একমণ লোক থাসীগুলো কাজিয়া নিয়া

পলাইতেছে। টাসীর খাসীটাও কে কাড়িয়া লইল।
ছোট মন্দির ছার দিয়া ভিতরে ঢোকে কার সাঁখা।
ওিদিকে মন্দির হইতে প্রবল শব্দে ঘণ্টাধ্বনি উঠিয়াছে।
টাসী রাগে পাগল হইয়া গিয়াছে। সে যাহাকে
পাইতেছে কিল-চড় মারিতেছে। তারপর সে চিৎকার
করিতে লাগিল—কে কোথায় আছ ভূটিয়া বদ্ধসব, এসো
আমার সাহায়্য করো…শিকা দিতে হবে এই সব
কোচদের। সতাই একদল ভোট কুর্থি ছুড়িতে লাগিল।
ওিদিকে কোচদের লাঠি চলিতেছে। রক্তগলা বহিল।
হঠাৎ রামিয়া কোচের ভায়ের হাতের লাঠি তক হইল।
ভার হাতের লাঠি খাইয়া একটা লোক ভার পায়ের তলায়
ধুঁকিতেছে। রামিয়ার ভায়ে চিৎকার করিয়া বলিল—
থামো…থামো সবাই একটু…শেষে আমার লাঠিতেই
টাসীভূটে মরিল না'কি? টাসী একবার চোথ মেলিয়া
চাহিল—ভারপর সেই যে চোথ বুঁজিল, সেই শেষ।

আমরা অর্থাৎ শ্রোভার দল একবাক্যে বলিলাম—

ভারপর···ভারপর ?···লামার শাপ বেখছি হাড়ে হাড়ে লেগে গেল সব ক'জনার !

পশ্চিম বাঙলার সঙ্গে সেদিন কুচবিহার রাজ্য মিলিরা গেল। আমরা করজন বাঙালী বন্ধু ক্লাবে বসিরা খুর্ আনন্দ করিতেছিলাম। আমাদের মধ্যেই একজন তথন এই গল্পটি বলিভেছিলেন।

আমরা বলিনাম—ভূটিয়ারা নিশ্চর টাসীর দেইটা নিরা ধুমধাম সহকারে সংকার করিল।

বক্তা বলিলেন—গুলব শোনা যায় ভূটিয়ারা মহাকাল মন্দিরে লামার কাছে টাসীর শবটা নিয়া হাজির করে। লামার রাগ পড়িয়া গেল ভিন-তিনটে লোক অপমৃত্যুক্তে মরিল তাঁর শাপে।

লামা সেই সময়েই বলিয়াছিলেন তেশো বছর পারে বাঙালীরই হইবে কুচবিহার তেবত সব বড় বড় লামা-দীপক্ষর হেমকর সবাই বাঙালী তেবার কুচবিহার দিয়াই তিববতে চীনে গিরাছিলেন—তালের পারের ধ্লো মাধানো কুচবিহার তাঁহাদেরই হইবে।

কেন্দ্রীয় ব্যাঙ্কের প্রতিষ্ঠা ও জাতীয়করণ

অধ্যাপক শ্রীঅনাথবন্ধু দত্ত এম-এ, এফ-আর-ই-এদ্, এ-আই-বি

ফি*লিপিন*

১৯৪৮ জুন বাসে গ্রথনেট প্রতিষ্ঠানরপে এক কোটা পিলো বুলধন
লইরা কিনিপিন কেন্দ্রীর ব্যান্থ প্রতিষ্ঠিত হইরাছে। এই ব্যান্থ স্থাপনের
উদ্দেশ্ত ইইন্ডেছে (ক) কিনিপিন রাষ্ট্রের অভ্যন্তরে ব্রা ব্লোর সমতা
রক্ষা, (খ) পিলোর আন্তর্গাতিক মুদ্রাব্লোর সমতা রক্ষা এবং বাহাতে
পিলো অভাভ বেশের বুলার সহজে পরিবর্তিত হর তাহার ব্যবহা এবং
পি) বেশের উৎপাদন, প্রমিক নিরোগ ও প্রকৃত আর বাহাতে বাড়ে
সেই সকল বিবরে সহায়তা করা। সাত জন সদস্তকে লইরা একটি
বুলা সংসদ (Monetary Board) এই ব্যান্থ পরিচালন করিবেন।
ইহাদের মধ্যে রাষ্ট্রের অর্থনিচিব (সতাপতি রূপে), ফিনিপিন জাতীর
ব্যান্থের সভাপতি, আর্থিক উল্লেল সংসদের সভাপতি ও রাষ্ট্রের সভাপতি
কর্ত্ত্ব বনোনীত চারি জন সভ্য থাকিবেন। বর্তমান শতান্ধীর আরভ
হইতেই শভকরা ১০০ ভাগ বিভাগ্ত রাধিরা কাগনী বুলার সন্ত্রানারণের
বে কল্পা ব্যবহা ছিল ভাহাও শিধিল করিরা বাহাতে অংশকাকৃত কর
রিলার্ভে ভ্রমা সংযোগ্যন হল ভাহা করা হইরাছে। কাগনী মুলা

পরিচালন ও বাবের বিজার্ভ ও অভান্ত ব্যবহার সাহাব্যে ব্যাক্ত ক্রেডিট্ নিমন্ত্রণের পূর্ব ক্ষমতা এই কেন্দ্রীর ব্যাক্তক দেওলা হইরাছে। এরপ ভাবে এই ব্যাক্তী গঠিত হইরাছে বে সরকারী আর্থিক নীতি ও কেন্দ্রীর ব্যাক্তের পরিচালন পদ্ধতির মধ্যে পূর্ব সহবোগ ও সমস্কর সক্ষর হয়।

পাকিস্থান

আনেকটা ভারতীয় রিফার্ড ব্যান্থের অসুকরণে, করাটাতে ক্রেলাপিন করিয়া, ১৯৪৮, ১লা ফুলাই হইতে টেট্ ব্যার অব্ পাকিছার কার্যা আরম্ভ করিয়াছে। ব্যান্থের মূলধন তিন কোটা টাকা, ইহার মধ্যে শতকরা ৫১ ভাগ গ্রন্থনৈট ও ৪৯ ভাগ নাধারণ অংশীলারপর্ক বিয়াছেন। গ্রন্থনিট, সিভিউরিটা বারা ভিল কোটা টাকার রিফার্যা বোগাইরাছে। এই ব্যাহ্ম পাকিছানের মূলাস্লা রক্ষা করিবে এবা দেশের জনগণের অন্ত মূলা ও ক্রেভিট্ সম্পর্কিত সকল কার্যাই করিবে প্রাবেশিক ও কেন্দ্রীয় সরকারের এবং অন্তান্ত ব্যান্থের ব্যান্থার হার্যার ইইটা ব্যাহ্ম। একটা কেন্দ্রীয় বের্যা এই ব্যাহ্ম পরিচালের করিবের

—ইহাতে গ্ৰণ্র ও ডেপ্টা প্রণ্রকে সইরা আট জন সভ্য থাকিবে— সরকার মনোনীত করিবেন পাঁচ জন এবং অংশীদারগণ নির্কাচন করিবেন তিন জন। ইহা ব্যতীত আঞ্চিক প্রামর্শ সভার ব্যবহাও আছে।

ৰাৰ্মানী (সোভিয়েট অংশ)

১৯৪৬ সৰে জাৰ্ম্মাণীর সোভিয়েট এলাকার পাঁচ বিভাগে পাঁচটী কাগলী মুলা পরিচালন ও ক্লিয়ারিং ব্যাক্ষ স্থাপিত হয়। ১৯৪৮ মে মাসে সমগ্র রুশ অধিকৃত এলাকার জন্ত কেন্দ্রীয় बार्टिय कार्या চালাইবার बस्त आर्थान हेन्द्र এবং ক্লিয়ারিং ৰ্যাত (Dentsche Emission and Girobank) ছাপিত হয়। ঐ বৎসরই জুলাই মাসে এই ব্যান্তকে জার্মাণ ব্যান্ধ অব ইম্বতে (Dentsche Notenbank) পরিবর্তিত করা হয়। ব্যাকের মূলখন করা হর দশ কোটা ভট্নে মার্ক (DM)—ইহার সাড়ে পাঁচ কোটা মার্ক গোভিয়েট সামরিক সরকার নিয়ন্ত্রিত কতগুলি সরকারী ডিপার্টমেন্ট সরবরাহ করিয়াছে এবং বাকি অংশ পুর্বোক্ত পাঁচটা বিভাগীর ব্যাছ বোগাইরাছে। বলা হটয়াছে বে এই কেল্রীর ব্যাহ সর্বপ্রকারে দেশের আবিক উন্নয়নে সাহাধ্য করিবে এবং অক্তান্ত লেভার ব্যাক ও কার্ম্মাণীর श्व विद्यालक अञ्चाल अञ्चालकात आर्थिक विद्याल छत्वावशांन श्व निवासन করিবে। এই কেন্দ্রীর বাাঙ্কের সাধারণ পরিচালন এবং নীতি নির্দ্ধারণ করে বোর্ড অব ডাইরেক্টরস ও নীতি কার্ব্যে পরিণত করে বোর্ড অব মানেজাররা। ভাইরেক্টর বোর্ডের মোট সভাসংখ্যা সতের জন-আট জন প্রণ্যেণ্টের বিভাগীয় কর্ম্মকর্মা-সভাপতি আর বার বিভাগের हिन्नात्रमान चत्रः। मात्मिकात-वार्षित महामःशा मिट लीह सन-সভাপতি ও সহ-সভাপতি নিবুক্ত হর আর্দ্রাণ আর্থিক কমিশন কর্ম্বক ও অপর তিন জন সভা ডাইরেউর বোর্ড মনোনীত করেন।

কিউবা

১৯৪৮, ৩০মে কিউবার গ্রথনিট একটা আইন পাশ করির।
একটা কেন্দ্রীর ব্যাক্তর (Banco Nacional de Cuba) প্রতিষ্ঠা
করিরাছে। এই ব্যাক্ত পরকারের নিকট হইতে কাগলী মূলা
পরিচালনের ভার গ্রহণ করিরাছে এবং মূলা ও ক্রেডিট্ বিবরে যাহাতে
সামঞ্জপূর্ণ নীতি মানা হর তৎপ্রতি দৃষ্টি রাখিবে। এ আইনেই
কিউবার পিলো মূলাকে দেশে একমাত্র আইনসন্মত টাকা বলিরা পণ্য
করা হইবে এইরূপ ব্যবহা আছে, যদিও বুক্তরাষ্ট্রের ওলার এক বংসর
পর্যন্ত আইনত: দেশের মূলা বলিরা গ্রহণীর হইবে। কিউবার
পিলোর বিনিমর মূল্য যুক্তরাষ্ট্রের ডলারের সমান করা হইরাছে।
এই কেন্দ্রীর ব্যাক্তর মূল্যন পঞ্চাশ লক্ষ পিলো—গ্রথনিট এই মূলধনের বেশী অংশ সরবরাহ করিরাছে, বাকী অংশ দেশের বাণিক্যিক
ব্যাক্তর পরিচালন ভার পাঁচ অন ভাইরেইরের

উপর করে। ইহাবের তিম কন (সভাপতি সহ) গবর্ণনেউ বুনোনীড কবিবের।

রুমানীয়া

১৯৪৮ সনের শেবের দিকে কমানিয়ার জাতীর ব্যাছের (Rumanian National Bank) পুনর্গঠন হয়। ইহার নুতন নাম দেওরা হয় "The Bank of the Bumanian People's Republic, State Bank"। এই নুতন ব্যাছে মুলধন ছুই শত কোটা লি (Lei) এবং ইহার সভাপতি সরকারী অর্থপ্রেরের মন্ত্রী। বে স্কল প্রতিষ্ঠানে এই ব্যাছ অর্থ নিয়োগ করিবে ভাগ ইহার পরিচালনাধীন হইবে।

বেলজিয়ম (জাতীয়করণ)

১৯৪৮ জুলাই মাসে বেলজিরম জাতীর ব্যাক্তর মূলধন আইন ছারা ছিণ্ডণ করা হর এবং এই নূতন অংশ (সেরার) গুলি গ্রণমেন্ট হস্তাস্তরের অযোগা করিরা নিজেই গ্রহণ করে। আইনের সাহায্যে গ্রণমেন্ট ব্যাক্তর কর্ভ্ড গ্রহণ করিরাছে। কিন্তু যোবণা ছারা জানাইরা দেওরা ইইরাছে যে, বেলজিরম জাতীর ব্যাক্তর স্বাধীনতা ও স্কুভাবে পরিচালন বাহাতে ব্যাহত না হর ত্তিবরে সরকার যহবান ইইবেন।

লেদারল্যাওস (জাতীয়করণ)

১৯৪৮ সনের ১লা আগষ্ট হইতে লেদার ল্যাপ্তসের কেন্দ্রীর ব্যাহ
কাতীর সম্পত্তিতে পরিপত হইরাছে। সাধারণ অংশীদার যে এক
কোটা ক্লোরিণ বুলোর অংশের মালিক ছিলেন গবর্ণনেন্ট তাহা নিজে
গ্রহণ করিরা তৎপরিবর্ত্তে বার্ষিক ২১ টাকা ফ্লের গবর্ণনেন্ট
সিকিউরিটি প্রদান করিরাছেন। প্রতি ১০০ ক্লোরিণ দেয়ারের জন্ম
আংশীদার ২০০ ক্লোরিণ বুলোর গবর্ণতেন্ট সিকিউরিটি পাইরাছেন।

ভারতবর্ষ (জাতীয়করণ)

১৯৪৮, তরা সেপ্টেম্বর রিজার্ড ব্যাহ্ম অব্ ইডিরা (ট্রাল্কার টু পাব্লিক্ ওনারসিপ্) আইন পাল হয়। এই আইনের বলে তারতীর রিজার্ড ব্যাহ্ম ১৯৪৯, ১লা জামুলারী হইতে সরকারী ব্যাহ্ম পরিণত হয়। প্রত্যেক ১০০১ টাকার অংশের জন্ম পরপ্রেক অংশীদারকে ১১৮৪৯ হিলাবে কতিপুরণ করেন। তবে এই টাকার বললে অংশীদারগণকে প্রত্যেক ১০০১ টাকার পরিবর্তে বার্থিক তিন টাকা হাদের একখানি করিরা পরপ্রেক সিকিউরিট লেওরা হয় এবং এক লত টাকার ভ্যাংশ নগদে দেওরা হয়। জাতীর করণের পর ব্যাহ্মের কার্থাবলীর বিশেব কোন পরিবর্তন হয় নাই। ভবে নৃতন ব্যাহ্ম আইন অমুবারী (ব্যাহ্মিং কোন্দানী আইন, ১৭ই ক্রেরারী ১৯৪৯) ভারতীর রিজার্ড ব্যাহ্মের, ক্রমতা ও ছারেছ খুবই বাড়িরাছে। পরিচালন ব্যাপারে এখন ক্রেনীর বোর্ডের প্রপ্র, ছই জন ডিপুট গ্রপ্রি, দশ্লন ভাইরেক্টর এবং একজন সরকারী কর্ম্মিচারী সকলেই পরপ্রেক মনোনীত। ছানীর বোর্ডগুলিতেও সকল সভাই গ্রপ্রেকট মনোনীত

যুযুৎসু কৌশল

বীরেন্দ্রনাথ বস্থ

(পূৰ্বাসূত্ত্ত্তি) (১৩২নং প্যাচ)

অপরের পারতারা দেখিরা যদি তাহার বাঁ পারতারা থাকে তবে বাঁ হাত দিয়া তাহার জামার ডামদিকের "কলার" ও ডান হাত দিয়া



১ ७२ वर भी। दिव अम हिन्द

াহার বাঁ হাতের জামাটি জোরে ধরিবার সজে সজে নিজে ডানবিংক ,রিয়া মানিরা কোমরের পিছনটি তাহার কোমরে লাবাইরা (১০২নং



३७२ वर शीटित २३ टिज

প চর ১ৰ চিত্র) জোরে সাব্বে কোক দিলা, কোমরট নিচু করিল। ড'াকে চিৎ করিলা বাটিডে কেলিলা বা পাট ডাহার বুকে চাপাইলা ও বাঁ হাতটি তাহার চিব্দে রাখিরা ও তাহার বাঁ ক্সুইট নিজের তান উকর উপর চিৎ করিরা রাখিরা জোরে চাপ দিলে তাহাকে সহকেই মাটিতে আটকাইরা রাখিতে পারা বাইবে। (১৬২বং প্যাচের ২র চিত্র)

(১৩০নং প্যাচ)

অপারের পীয়তারা দেখিয়া যদি তাহার বাঁ পাঁয়তারা খাকে তবে বাঁ হাত দিরা তাহার জামার ডানদিকের "কলার' ও ডান হাত দিরা



১৩৩ নং প্যাচের-চিত্র

ভাহার বাঁ হাতের জাষাটি জোরে ধরিবার সঙ্গে সঙ্গে নিজে ডানদিকে বুরিলা আদিলা কোমরের পিছনটি তাহার কোমরে লাগাইন। (১৩২নং পাাচের ১ম²ুচিত্র) জোরে সাম্নে খোক 'দিলা কোমরটি নিচু করিলা ভাহাকে চিৎ করিলা মাটিতে ফেলিলা ভাহার বাঁ কনুইটি চিৎ করিলা



১৪২ নং প্যাচের হর্ষ চিত্র (শেখা ৪৯৬ পৃঠার)

নিজের ডান পারের মধ্যে চালাইরা দিয়া জোরে আটকাইরা রাখিরা চাড় দিলে ও নজে নকে বাঁ বাঙটি ভাষার চিবুকে জোরে চালির ৰাশিরা ভাষাকে সহকেই বাটিতে আট্কাইরা রাখিতে পারা বার । (১৯৬নং পাঁচের চিত্র)

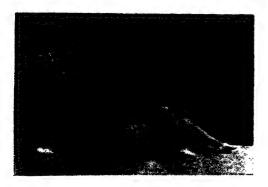
(১৩৪नः नाह)

অপন্তের পাঁরতারা বেধিরা বদি তাহার বা পাঁরতারা থাকে ভবে বা হাত দিরা তাহার গলাট জড়াইরা ধরিবার সকে সকে ভার হাত



) अ बर श्रीराहत हिन्द

বিরা তাহার বাঁ হাতের জাষাট জোরে ধরিরা সকে সকে নিজে ভারবিকে বুরিরা আসিরা কোমরের পিছনটি তাহার কোমরে লাগাইরা (১৩৪নং পাঁাচের চিত্র) জোরে সাম্বে ঝোক্ দিরা কোমরটি নিচু ভরিরা তাহাকে চিৎ করিয়া মাটিতে কেলিরা বাঁ পাটি তাহার বুকে



১০২ নং প্যাচের আর চিত্র (লেখা ৪৯৬ পুঠার)

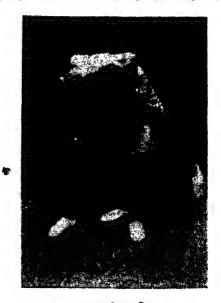
চাপাইরা ও বাঁ হাডটি তাহার চিবুকে রাধিরা ও তাহার বাঁ কলুইটি কিলে তাব উক্তর উপর চিৎ করিবা রাধিরা লোবে চাপ দিলে ভাহাকে সহজেই নাটডে আট্কাইরা রাধিতে পারা বাইবে। (১৩২বং শীয়ুকের ২র চিত্র)

(३०६नः नाह)

অপরের পাঁরভারা বেধিরা,বিদি ভাষার বাঁ পাঁরভারা থাকে তবে বাঁ হাত বিরা তাহার পলাট অভাইরা ধরিবার সলে সলে তান হাত বিরা তাহার বাঁ হাতের আনাট লোরে ধরিরা সলে সলে নিজে তানবিকে ঘ্রিরা আসিরা কোররের পিছনটি ভাষার কোনবে লাসাইরা (১০৪মং পাঁরচের চিত্র) জোরে সাম্বে বোক্ বিরা কোনবাট নিচু করিরা ভাষাকে চিৎ করিরা নাটিতে কেলিরা ভাষার বাঁ কলুইটি চিৎ করিরা নিজের ভান পারের মধ্যে চালাইরা বিরা লোরে আট,কাইরা রাধিরা চাড় বিলে ও সলে সলে বাঁ হাতটি ভাষার চিবুকে লোরে চাপিরা রাধিরা ভাষাকে সহজেই নাটিতে আট,কাইরা রাধিতে পারা বার। (১০০নং পাঁরচের চিত্র)

(३०७२१ नी ह)

অপরের পাঁরতারা দেখিরা বদি তাহার বাঁ পাঁরতারা থাকে তবে বাঁ হাতটি তাহার ভাল বগলের নিচু দিলা সইরা বিলা তাহার অপর কাধটি জোরে ধরিবার সলে সজে ভাল হাত দিলা তাহার বাঁ হাতের



১৯৬ বং প্যাচের চিত্র

লামাট লোবে ধরির। সংক সংক বিজে ভাষ্টিকে গুরির। আসিরা কোমবের শিছনট ভাষার কোমবে লাগাইর। (১৬০নং পাঁচের চিত্র) লোবে সাম্নে কোক্ বিলা কোমবাট নিচু করিরা ভাষাকে চিং করির। মাটিভে কেলিয়া বা পাটি ভাষার বৃক্তে চাপাইরা ও বা হাতটি ভাষার চিতৃকে রাধিরা ও ভাষার বা কলুইট বিজের ভাল উলর উপর চিং করিবা রাধিরা লোবে চাপ বিলে ভাষাকে সহজেই মাটিভে আটবাইরা বাবিতে পারা বাইবে। (১৬২বং পাঁচাকের ২র চিজা)

(>७१वः गाँठ)

অপরের পাঁরতারা দেখিরা বলি তাহার বাঁ পাঁরতারা থাকে তবে বা হান্তটি তাহার ভান বগলের নিচু নিরা লইরা নিরা তাহার অপর বাখাট লোরে ধরিবার সলে সলে ভান হাত নিরা তাহার বাঁ হাতের লামাট লোরে ধরিবার সলে সলে নিলে ভাননিকে বুরিরা আসির। কোমরের শিহনট তাহার কোমরে লালাইরা (১৩৬নং প্যাচের চিত্র) লোরে সান্দে বোক্ নিরা কোমরটা নিচু করিয়া তাহাকে চিৎ করিয়া নাটিতে কেলিয়া তাহার বাঁ কলুইটি চিৎ করিয়া নিলের ভান পারের মধ্যে চালাইরা দিয়া লোবে আট্কাইরা রাথিয়া চাড় দিলেও সলে সলে বাঁ হাতটি চিবুকে লোবে চাপিয়া রাথিয়া তাহাকে সহজেই মাটিতে আটকাইরা রাথিতে পারা বার । (১৩৩নং প্যাচের চিত্র)

(১৩৮নং পাঁচ)

অপায়ের পাঁরতারা বেথিয়া বৃদি তাহার বা পাঁরতারা থাকে তবে বা হাত বিরা তাহার জারার ডানবিকের 'কলার'ও ডান হাত বিরা•



Job मः शीराहत्र हिन्द

ভাষার বাঁ হাতের আবাট জোরে ধরিবার সঙ্গে সজে নিজে ডানবিকে

ুরিরা আসিরা কোবরের পিছনটি তাহার কোবরে লাগাইরা লোরে

শান্ন বোক্ বিরা কোবরের পিছনটি তাহার কাবরে লগেইরা লোরে

শান্ন বোক্ বিরা কোবরের নিচ্ করিবার সজে সজে বাঁ পাটি ইট্র

কাচ হইতে মুড়িরা, জুলিরা ভাষার ছাই আজুর উপর রাখিরা (এইরপ

নারবার সমর সমত শরীরের টাল, বিশেষ করিরা রাখিতে হইবে)

(১০৮নং পাঁচের চিত্র) বাঁ পারের জোর বিবার সমরে ডান হাত

ভাষার বা কছারের কাহে টানিরা ভাষাকে চিৎ করিরা মাটিতে

কোলিরা বা পাটি ভাষার বুকে চাপাইরা ও বাঁ হাতটি ভাষার চিব্কে

রাখিরা ও ভাষার বা করাইটি কিজের ভাষ উল্লেব উপর চিৎ করিরা

রাখির। জোরে চাপ দিলে ভাহাকে সহজেই বাটজে আট্কাইর রাখিতে পারা বাইবে। (১৩২নং পাঁচের ২র চিত্র)

(১৩৯নং প্যাচ)

অপরের পাঁরতারা দেখিয়া বদি তাহার বাঁ পাঁরতারা থাকে অবে
বাঁ হাত দিয়া তাহার জামার তানদিকের "কলার" ও তাল হাত বিরা
তাহার বাঁ হাতের জামাটি জোরে দরিবার সজে সজে বিজে তানবিকে

ব্রিরা আসিয়া কোমরের পিছলটি তাহার কোমরে লাগাইয়া আেছে
সাম্বে বোক্ দিয়া কোমরটি নিচু করিবার সজে সজে বাঁ পাঁটি হাঁটুয়
কাছ হইতে মুড়িয়া, তুলিয়া তাহার ছই জামুর উপর রাখিয়া (১০০-বর
পাঁচের চিত্র) বাঁ পারে জোর দিবার সমরে তান হাত দিয়া তাহার
বা কমুইয়ের কাছে টার্নিয়া তাহাকে চিৎ করিয়া মাটতে কেলিয়া
তাহার বা কমুইটি চিৎ করিয়া নিজের তান পারের বথা চালাইয়া
দিয়া জোরে আট,কাইয়া রাখিয়া চাড় দিলে ও সজে সজে বাঁ হাতয়া
তাহার চিবুকে জোরে চাপিয়া রাখিয়া তাহাকে সহজেই মাটজে
আট,কাইয়া রাখিতে পারা বাইবে। (১০০নং পাঁচের চিত্র)

(১৪•नः श्रीाठ)

বদি কেহ বা হাত দিয়া ঘূৰি মারিতে আসে তৎক্ষণাৎ ভাষার বা

কক্ষীর বা ধারে নিজের বা বাহ দিয়া আটকাইয়া সঙ্গে সঙ্গে বাঁ হাত

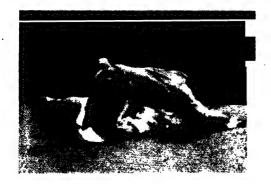


३८० वर शीराहत्र हिज

দিলা তাহার বাঁ বৃটটি ধরিলা লইলা বা দিকে নোচড় দিলা নানাইতে নানাইতে বাঁ দিকে বুলিলা তান হাতটি তাহার বা নোড়ার কাছে ও ভান হাটুটি তুলিলা তাহার কলুইলের পিছন দিকে রাখিলা তাহার নোড়াতে কলুইলের ও কজীতে চাড় দিতে দিতে (১৪০ বং প্যানের চিত্র) বেঁাকু দিলা বাটিতে কেলিলা দিলা ভাষাকে আইকাইকা লাখিতে পালা মান।

(১৪) नः नीति)

অপরের পাঁরতারা দেখিরা যদি তাহার বাঁ পাঁরতারা থাকে তবে বাঁ হাতটি তাহার ভান বগলের নিচু দিরা লইয়া গিয়া ভাহার কাঁধটি



282 वर शांरहत्र हिं<u>ज</u>

লোরে ধরিবার সঙ্গে সাক ভান হাত দিয়া তাহার বাঁ হাতের জামা। জোরে ধরিয়া নিজেভান দিকে ঘুরিয়া আসিয়া কোমরের পিছনটি তাহার



38२ नः शांदिक अम हिता

কামরে লাগাইরা (১৩৬নং প্যাচের চিত্র) জোরে সাব্দে বোক্ দিরা কামরটি পিচু করিবার সময় ভান হাত দিরা তাহার বাঁ কমুইটি টানিয়া ভাষাকে চিৎ করিরা কেলিয়া দিবার সজে সজে নিজের বা ক্ষুই দি ভাষার বাঁ হাভট কড়াইরা ধরিরা (এই অবস্থাতে সমস্ত শরীরটি ভাষা ব্কের উপর চাপিয়া থাকিবে) ভাষার বাঁ হাতে নোচড় লাগাই ভাষাকে নাটিতে আট্কাইরা রাখিতে পারা বার (১৪১ বিগাচের চিত্র)।

(১৪२ नः नां के)

অপরের পাঁরতারা দেখিরা যদি তাহার বাঁ পাঁরতারা খাকে ত ডান হাত দিরা তাহার ডান কবাঁ ও বাঁ হাত দিরা তাহার ডান হাতে



১८२ नः शांहित २व हिन्

দিয়া নিজে বাঁ দিকে খুরিয়া আসিয়া নিচু হইয়া ভাল কাঁথটি তাগার ডান বগলের নিচে ও কোষরটি তাহার কোমরে লাগাইবার সাসে সক্ষে (১৪২ নং প্যাচের ১ম চিত্র) জোরে সামনে ঝোক দিয়া নিচু হইয়া পিঠের উপর দিয়া উল্টাইয়া (১৪২ নং প্যাচের ২র চিত্র) উাহাকে কেলিয়া দিয়া (১৪২ নং প্যাচের এম চিত্র) ভাড়াতাট্র বাঁ হাত দিয়া তাহার গলাটি জোরে চাপিয়া থরিয়া ও তাহার ভান কমুইটি নিজের ডান উল্লয় উপর চিৎ করিয়া রাখিয়া ভাহার ক্রুইরে চাড় দিয়া তাহাকে মাটিতে আট্কাইয়া রাখা যার। (১৪২ নং প্রাচের ৪ব চিত্র)।



সোপেনহরের দর্শন

ঐতারকচন্দ্র রায়

(১) জগৎ-প্রত্যায়-মূল

সোপেনহরের "The world as will and idea" নামক বৃহৎ এছে ব্যাখ্যাত দর্শনের মর্ম সংক্ষেপে নিম্নলিখিত করেকটি বাক্যে প্রকাশ করা বার:

"ফাগৎ ইচ্ছা-শক্তির ব্যক্ত রূপ। ইচ্ছাশক্তি অব্ধ, চৈত্স্তহীন, কিন্তু মানুষরপে অভিব্যক্ত হইবার সময়ে ইহার সহিত চৈত্স্ত যুক্ত হইয়াছে। ইচ্ছা জগতের মূল বলিয়া জগতের সর্বত্র ছন্তু ও সংঘর্ষ। সেটজন্ত জগৎ ছঃখমন। এই ছঃখ হইতে অব্যাহতি লাভের উপায় জ্ঞানলাভ করিয়া ইচ্ছার দাসত্ব হইতে মুক্তিলাভ করা।"

সার্দ্ধ দি-সহত্র বৎসর পূর্বের গৌতন বৃদ্ধ তুঃপের কারণ-অনুসদ্ধানে বহির্গত হইরা এই সভাই প্রাপ্ত হইরাছিলেন। তাঁহার "তৃন্ধ।" অথবা কামনা এবং সোপেনহরের ইচ্ছার মধ্যে বিশেষ প্রভেদ নাই। কিন্ত ইরোরোপীর দর্শনে ইহা অজ্ঞাত ছিল। হরতো ফিক্টের ক্রিয়ারাণী নির্কিশের আহমের (absolute will) মধ্যে এই তম্ব পুরুরিত ছিল। তাহা হইকেও ফিক্টের দর্শনে ইহা বিশাদীকৃত হর নাই। সোপেনহরই ইহার বিশাদ ব্যাপ্যা করিয়াছিলেন। তথাপি বহদিন এই দর্শনের সমাদর হর নাই। দীর্ঘকাল ইহা আনাদৃত ও অবজ্ঞাত ছিল। ইহার কারণ কি গ

Will Durant ইহার কারণ নির্দেশ করিয়াছেন। বিশ্ববিজ্ঞালয়ের অধ্যাপকগণই এই দর্শনের আলোচনা করিতে পারিতেন। ১৮১৮ সালে জার্মান দর্শনের অপ্রতিদ্বাধী সমাট ছিলেন হেগেল। কিন্তু সোপেনহর ভাহাকে আক্রমণ করিয়া গ্রন্থের শ্বিতীয় সংস্করণের ভূমিকার লিখিয়াছিলেন:

"দর্শন যথন রাজনৈতিক উদ্দেশ্যসিদ্ধির স্তম্ভ এবং জীবিকাউপার্চ্চনের ক্রম্ভ ব্যবস্থাত হর, তথন তাহার বিবন হর্দিন। প্রবাদ
আছে—"প্রথমে বাঁচ, তারপরে দর্শনচর্চা করো।" ইহার প্রতিবাদে
কিছুই কি বলিবার নাই? যে সকল ভন্তলোকের বাঁচিবার ইচ্ছা
আছে, দর্শনের দ্বারাই তাহারা জীবিকা উপার্চ্ছন করিতে ইচ্ছুক।
বী ও সম্ভানসহ তাহাদিগকে প্রতিপালনের ভার দর্শনের উপর। "যার
নুন খাই, তার ৩৭ গাই"—একথা সর্বভালেই প্রচলিত আছে। দর্শনশার দ্বারা অর্থোপার্ক্তন প্রাচীন কালে সোফিষ্টাদগেরই বিশেবত বলিরা
বিবেচিত ছইত। কিন্তু অর্থের বিনিমরে অত্যুত্তম কিছু পাইবার
সম্ভাবনা নাই। জ্ঞান-জগতের ক্যালিবান (Caliban) হেগেলকে
কুড়ি বংসর বাবত স্ক্রিশ্রেট দার্শনিক বলিরা অভিনন্দিত হইতে বিনি
দেখিরাছেন, ভিনি সেই বুগের অভিনন্দ্রের কল্প উৎপুক্ত ইইতে

পারেন না। সর্ববৃগের অল্পংখ্যক লোকই সত্যকে সত্য বলিরা চিনিতে পারে। স্কুতরাং তাহাদের জন্তই সত্যকে অবিচলিতভাবে বিনয়ের সহিত অপেকা করিতে হইবে। জীবন কণ্ডারী; কিন্তু সত্য স্থাবিশারী। আমরা সতাই বলিব।"

সোপেনহরের এই উক্তি সম্বন্ধে Will Durant বলিয়াছেন-"শেবের কথাগুলি মহৎ সন্দেহ নাই। কিন্তু ভাছাতে (ইসফ্এর গরের শৃগালের) ফ্রাক্ষাফলের অমু আস্বাদ আছে। প্রশংসার রাজ সোপেন**ংর অপেশা অধিকতর লালারিত আর কে**ছ **ছিল না** I··· সোপেনহর বিনয়ের সহিত অপেকা করার কথা বলিয়াছেন। কিন্ত তি'ন বলিয়াছেন—"দর্শনশাস্ত্রে ক্যাণ্টের পরে আমার পূর্ব্বে অস্ত কেই কিছু করিয়াছেন বলিয়া আমি দেখিতে পাই না। "জগৎ "ইচ্ছা"র অকাল" বছদিন যাবত দৰ্শনে এই সত্যেরই অনুসন্ধান চলিয়াছে, কিন্তু ইতিহাসের সহিত বাঁহাদের পরিচয় আছে, তাহারা পরশ পাশরের আবিষ্যরের মত এই সত্যের আবিষ্যারও অসম্ভব বলিরা পণ্য করিয়াছেন। একটি মাত্র কথাই আমি বুঝাইতে চাহিয়াছি-কিন্ত তাহার জন্ম এই সমগ্র গ্রেষ্ট্র প্রোজন হইরাছে।...গ্রন্থলা ছুইবার भार्ठ कक्रन ; व्यथमवात भार्ट्ठ वित्नव देश्दर्शत व्यक्तालन स्ट्रेट्व।" हेरा হইতেই সোপেনহত্তের বিনয়ের পরিচয় আরু হওয়া যায়! এই বিনয় मध्यक्षरं जिनि लिथियाह्म-"विनव काशांक वरन ? इंश क्ये देख প্রকাশ ভিন্ন আর কিছুই নহে। ঈর্ধাপুরিত জগতে ইয়া ছারাই লোকে ভাহীনদিপের নিকট আপনার তা ও কুতিত্বে অভ ক্ষা প্রার্থনা करत । विनत्र ७१ विनत्र। भगा रुखतात्र मूर्वपत्र स्विश रहेतारह । কেননা এই ওণের অধিকারী বলিরা গণ্য হইবার অস্ত প্রত্যেক লোককেই আপনাকে মূর্থ বলিতে হয়।"

সোপেনহর অক্সত্র লিখিরাছিলেন—"মামাদের লার্মান দর্শনে "বৃদ্ধির অব্যবহিত জ্ঞান" (Intellectual intuition) এবং নিবিশেব চিন্তা (absolute thinking) স্থাপত্ত প্রত্যন্ত এবং অকপট গবেষণার স্থান্ অধিকার করিয়া বসিয়াছে। পাঠককে ফাঁকি দেওরা, তাহাকে দিশাহারা এবং হতবৃদ্ধি করা এবং নানাবিধ কৌশলে তাহার চোধে খ্লি দেওরা—ইহাই এখন আমাদের অবলন্তিত প্রণালী। সভ্যের স্থান ভাষাই আমাদের দার্শনিকদিপের সুখ্য উদ্দেশ্য। ইহার ফলে দর্শন (যদি ইহার পরেও ভাষাকে দর্শন বলা চলে) ক্রমাগত নিম্নে মামিরা গিয়াছে; অবশেবে ছেগেল হীনতার নিরহনত্তরে গিয়া উপনীত হইয়াছেন। ক্যাণ্ট চিন্তার বে বাধীনতার উদ্ধার ক্রিরাছিলেন, ভাহার বাসরোধের লক্ষ্প প্রজার ছিতা এবং সভ্যের ভাবী বাতা স্থান্ত্রে

হেশেল আলোক ও উন্নতির শক্ত এবং প্রোটেট্টাট লেকুইটনিগের হাতের অন্তে পরিণত করিয়াছেন। কিন্ত এই হীন কার্যু গোপন রাধিবার জক্ত এবং মাকুবের বৃদ্ধি বিকল করিবার জক্ত, দর্শনের উপর শুভগর্ভ বাগাড়ম্বর এবং অর্থহীন থিঁচুড়ীর ব্যনিকা টানিরা দিয়াছেন। বেড্লামের বাহিরে এরপ বাগাড়ম্বর ও বিভূটীর ক্যা শোনা বার নাই।"

"লগৎ আমার প্রত্যর"—এই বাক্য ছারা গোপেনহরের প্রন্থের আরম্ভ হইরাছে। কিন্ত ইহার মধ্যে নৃতন্দ্ধ ছিল না। ক্যাণ্ট এই ক্যা বলিয়া গিয়াছিলেন। বাহাকে বাহ্য লগৎ বলি, ইল্রিয়ামূভূতি ও প্রত্যরেব মাধ্যমে আমাদের মনে তাহার জ্ঞান হর। বিস্তারিতভাবে সোপেনহর এই মতের ব্যাখ্যা করিয়াছেন। কিন্তু এখানে তাহার মৌলিক চিন্তার কোনও পরিচয় ছিল না। তাহার মৌলিক চিন্তাছিল প্রক্রের দিকে। সোপেনহরের সত্য পরিচয় পাইতে বে এতদিন লাগিয়াছিল, ইহাও তাহার অঞ্ভন কারণ।

विद्यातिक कार्य मार्गिनस्त्र कडवार थर्डन कत्रिवाह्न । य कड षात्रा অভ্ৰাদিগণ অগতের ব্যাখ্যা করিতে উৎস্ক, সেই অভ কি ? মৰ যদি না পাকিত, কড় পাকিত কোপার ? মন: বারাই আমরা লড়ের জ্ঞান লাভ করি এবং হাড় বলিরা যাহার জ্ঞান লাভ করি. তাহা আমাদের ইন্দ্রিয়ামুভূতি ও প্রভার বাতীত আর কিছু নহে। জড়বাদ প্রাণশক্তির অভিত অধীকার করে, ভৌতিক এবং রাসারনিক শক্তির দারা প্রাণের কার্য্যের এবং কড়ের বান্ত্রিক ক্রিয়া দারা ভৌতিক এবং রাসায়নিক শক্তির ব্যাখ্যা করে। কিছু কোনও রাসায়নিক ক্রিয়াই বাজিক নিয়ম দারা ব্যাখ্যা করা বার না। আলোক, তাপ এবং তাড়িতের ধর্মের ব্যাখ্যাও যাত্রিক নিরম দারা অনভব। ইহাদের वाशात कथ "नकि" ब व्यक्तायन । मठा कि, मर भगार्थत यज्ञभ कि, ভাহা জানিতে হইলে, বাহা আমরা অব্যবহিত ভাবে জানি, তাহা **१३८०३ जनूनकान आवश्च कतिए १३८व। अवावश्चिमात मानि** লামরা আমাদের "বরং" কে; "বস্তর বাহির হইতে তাহার অন্তঃত্ব বল্পের সাকাৎ পাওরা যার না। যতই অসুস্থান করা হটক না কেন, নাম ও লগ (names & images) ভিন্ন অত্যে কিছুই পাওরা যার না। ছুর্গ বেশকামী কোনও লোক ছুর্গ ভোরণের অবুসন্ধানে বধন ভূর্গ অদক্ষিণ করিয়াও ভোরণের সন্ধান পার না, তখন তাহার বে অবস্থা হর, আমাদের অবস্থাও তদ্রপ। অভান্তরে প্রবেশে অক্স হইয়া তাহারই মতো আমরা বাহিরের নক্ষা অক্স कति। आमता यनि आमारनत मरनत चत्ररभद्र मकान भारे, छाहा हहेरन সম্ভৰত: বাহ্য জগতের চাবিকাটিও প্রাপ্ত হইব।"

যে প্রবন্ধ রচনা করিয়া সোণেনহর "ডাকার" উপাধি পাইয়ছিলেন (Four-fold Root of the sufficient Reason) ভারতে ভারার জ্ঞান-সম্বাধীর বত ব্যাখ্যাত হইচাছে। সোণেনহরের মতে অবভান (appearance) এবং সংপদার্থের (noumenon) মধ্যে পার্থক্য নির্থেশই দর্শনে ক্যান্টের সর্থানেট দান। জগৎ বে অবভান মাত্র ভারা মোটো বেকার্ক্ত লক্ এবং বার্কলে জ্বলাই চাবে বুঝিতে পারিরাছিলেন।
ক্যান্ট তাহা প্রধাণিত করিয়াছেন। সমন্ত ক্ষণং জ্ঞাতার মধ্যে জ্ববিত্ত,
জ্ঞাতাই সমন্ত ক্ষণং ধারণ করিয়া জাছে। কিন্তু ক্যান্টের মতে ছুইটি ক্রটী
ছিল। সোপেনহর সেই ক্রটীর সংশোধনের চেটা করিয়াছেন।

প্রথমতঃ—ক্যান্ট্ ২২টি Categoryর উল্লেখ করিরাছেন। কিন্ত প্রকৃত পক্ষে একমাত্র কারণ Category ছইতেই জ্ঞানের উৎপত্তি ছয়। এই "কারণের" (Principlle of ground) চারিটি রূপ:— (২) ভবনের কারণ (ground of becoming, Ratio Fiendi), (২) জ্ঞানের কারণ (Ratio cogno Sciendi), (২) সভার কারণ (Ratio Essendi, ground of being), (৪) কর্মের কারণ (Ratio agendi). ভিতীয়তঃ—"ইচ্ছাই" ক্লাং-সং-বস্ত ; অন্ত কোনও ক্লাং-সং-বস্ত নাই।

ভানের বিষয়সমূহ বিভিন্ন অবস্থার বৃদ্ধির নিকট উপস্থিত হয় না—
একাধিক বিষয় এক সঙ্গে উপস্থিত হয় এবং একটি অক্ত একটির কারণ
রূপে গৃহীত হয়। যথনই কোনও পদার্থের জান হয়, তথনই কোনও
কারণের ফলরূপে তাহার জান হয়। ইহাই কারণ তত্তের প্রথমরূপ
(Ratio Fiendi)। আবার কোনও বিষয়, যথন মনের সমূর্থে
উপস্থিত হয়, তথন তাহা শ্রেণাভুক্ত হয়। অর্থাৎ তাহা পুর্বামুভূত যাহার
বাহার সদৃণ, তাহার সহিত এক-শ্রেণাভুক্ত বলিয়। গৃহীত হয়।
ইহাই কারণ-তত্তের বিতীয় রূপ (Ratfo cogno sciendi)।
ইহা হইতেই চিয়া করিবার সামর্থায় উদ্ভব হয়। (৩) তৃতীয়ত:—
সন্তার কারণ (ground of being Ratio Essendi)
জানের বিষয় সকল দেশ ও কালে অবস্থিত রূপে প্রতীত হয়।
(৪) চতুর্থত:—কর্মের কারণ (ground of action agendi
Ratio)। আমান্তের কর্ম চালিত হয় প্রবর্জনা (motive) বায়া।
প্রবর্জনা হইতেই তাহার উদ্ভব হয়।

সোপেনহর বলিয়াছেন—"এই **ল**গৎ আমার প্রতায়", ইহা অপেকা নিশ্চিত সত্য আৰু—কিছুই নাই। যাহা কিছুৰ অন্তিত্ব আছে, জ্ঞাতার জ্ঞানের বিষয়ন্ত্রপেই ভাছার অভিত্ত : জ্ঞানের সহিত সম্পর্ক-বিহীন कान व रखन है व्यक्ति नाहे। अगर व अजा माज, अहे मजा नुबन আবিদার নহে। ভারতের পণ্ডিভগণ অতি প্রাচীনকালে এই সভা উপলব্ধি করিরাছিলেন। সার উইলিরাম জোন্স্ "On the Philosophy of the Asiatics" श्रवास (पथा हेबा हिन, त्य बारन स त्या छ पणीन ব্দুডের মন্তিত্ব—ব্যুডের কাঠিত, অভেছতা এবং স্থানব্যাপী রূপের অভিত — মৰীকৃত হয় নাই (কেননা ইহা অধীকার করা বাতুলভাষাত্র), কিন্তু জড সম্পর্কে সাধারণ ধারণার তান্তি প্রদর্শিত হইয়াছে এবং ভানের বাহিরে লড়ের যে বতর লভিছ নাই, সভা এবং ভাহার কানগন্তা ^{বে} व्यक्ति, जाहारे व्यमानिङ स्रेबाह्म।"..... श्राह्म त्यमन এरे संगटित अक्तर, उपनि देशव अञ्चल "हेक्हा"। এक पिक स्हेटड पि^{विश्व} প্রতীত হর। বাহা প্রত্যরও নর, ইছোও নর, তাহা ব্রগুট ভারা মাত্র, वारनत्रामाञ ।

বাহা সকল বস্ত জানে কিন্তু বাহাকে কেইই জানেনা—তাহা বিবন্ধী (subject)। বিবন্ধীই জগতের ধারক; তাহাতেই সকল অবভাসের আবির্ভাব হয়। বিবন্ধীর সহিত সম্পর্ক-হীন কোনও বস্তুর অতিত্ব নাই, মাসুবের দেহ এই বিবন্ধীর বিবন্ধ। জ্ঞানের যাবতীর বিবন্ধের মত দেহও জ্ঞানের সার্বিকরণ দেশ ও কালের অন্তর্গত; দেশ ও কাল হইতেই বহুত্বের উল্ভব হয়। কিন্তু বিবন্ধী নিজে কখনও বিবন্ধে পরিশত হর না; কখনও বিবন্ধীর জ্ঞান কেই লাভ করিতে পারে না। দেশ ও কালের রূপ তাহাকে স্পর্শ করিতে পারে না। বিবন্ধীর মধ্যে বহুত্ব নাই। বহুর প্রতিযোগী একত্ব নাই। স্কেত্বরাং প্রত্যায়রূপী জগতের ছুই জংশ; প্রথমার্ক বিবন্ধী; দিতীয়ার্ক বিবন্ধ। দেশ ও কাল এই দ্বিতীয়ার্কের ক্লপ। এই জক্তে বহুত্বও তাহার রূপ। বিবন্ধী দেশ, কাল ও বহুত্বের অতীত। স্কেত্বভাব চিন্তার এই ছুই অর্ক্ক অবিচেছন্ত। এক অর্ক্ক দারা সক্ত অর্ক্ক ব্যবচ্চিত্র।

विवद ও विवदीद मस्या व मचक छाहा कार्या-कादण मचक नहर। वखनान निवधक विवशीत कांत्रन विलश गना करत । फिक्टित कांत्रावाल विषय विषयी कार्या (effect) পরিণত হইয়াছে। কিজ विषय ও विषयी व মধ্য Principle of sufficient Reason-এর (পর্যাপ্ত করেব) কোনও সম্বন্ধই নাই এবং বস্তবাদ ও প্রভায়বাদের কোনওটিকেই সত্য বলিয়া প্রমাণ করা যায় না। বিষয় ও বিষয়ীয় মধ্যে বে সম্পর্ক ভাহা অবিনাভাব সম্বন্ধ (correlation)। প্র্যাপ্ত কারণ তত্ত্ব বিষয়ের মংধাই অবস্থিত—ভাহাই বিবয়ের রূপ। বিবরী ইহার বাহিরে অবস্থিত। विवयोटि এই তলের প্রয়োগ হুইতে পারে না। স্থতরাং বিষয়াকে বিষয়ের কারণ বলা যায় না এবং বিষয়কেও বিষয়ার কারণ বলা योष्ट ना । मत्मश्वाम (Scepticism) विवरत्रत्र कांत्रण ऋणि—त्य व्यक्त পদার্থের কল্পনা করে, জ্ঞানের মধ্যে ভাহার অন্তির নাই-জানের বিষয় যে রূপে আবিভূতি হয়, তাহাই তাহার প্রকৃত রূপ। দেশ ও কালে প্রকাশিত জগৎ মিখ্যা নর, তাহা সম্পূর্ণ সতা। কিন্ত াহা "প্রভার"—প্রভাররান্তির সমাবেশ—তদতিরিক্ত কোনও সত্তা তাহার নাই। "পর্যাপ্ত কারণ তব্ব" এই স্কল প্রত্যায়ের সংযোগসূত্র।

বংগর অলীকতা হইতে জগতের বাস্তবতা সহকে সন্দেহের উদ্ভব হইতে পারে। আমাদের সমগ্র জীবন বে বল্প নহে, তাহার প্রমাণ কি ? বেদেও প্রাণে বংগর সঙ্গে জগতের জ্ঞানের উপমাদেওরা হইরাছে। এবং জগৎ মারাজাল রূপে বর্ণিত হইরাছে। মেটোও অনেক হলে বলিয়াছেন—মালুব বংগর মধ্যে জীবন ধারণ করে, দার্শনিক এই বর্গ হইতে জাগরিত হইবার চেটা করেন। পিওার, সংকারুস, ও পেক্স্পিরার জীবনকে বংগর সহিত উপমিত করিরাছেন। ক্যাণ্ট, বলিরাছেন, বাত্তব জীবনে প্রতার সকল পরম্পর কার্যকারণ সম্বক্ষে আবছ, বংগ সে সম্বক্ষের অভাব; ইহাই উভরের মধ্যে পার্থক্য। কিড জাগত অবস্থার সহিত ব্যাণ্ট উটনার সম্বক্ষ না বাতিলেও, ব্যাণ্ট ঘটনাবলির মধ্যে সম্বক্ষ বর্জনান থাকে; মৃত্রাং ব্যাপ্ত জাগত অবস্থার মধ্যে পার্থক্য এই যে আগ্রহ জীবনের মধ্যে পর্যাণ্ড জারণ তাব্যের সম্বক্ষ এই যে আগ্রহ জীবনের মধ্যে পর্যাণ্ড জারণ তাব্যের সম্বক্ষ

সর্ব্বত্র বর্ত্তমান, কোথায়ও ভাহার বিচ্ছেদ নাই, কিন্তু বপ্লের ঘটনাবলীর মধ্যে এই সম্বন্ধ বাকিলেও, বিভিন্ন ব্যায়ের পরস্পারের মধ্যে এই সম্বন্ধ नारे बदः बाधार व्यवहा बदः ब्राधात प्रश्न वार्वे अर्थे नारे । किन्न बर् নিরমাকুদারে কোনও ঘটনা ব্রাদৃষ্ট অথবা জাগ্রৎ কালে দৃষ্ট, তাহা নির্ণয় করা অনেক সময় অসম্ভব হুইয়া পড়ে: কেনমা, অতীতের কোমো ঘটনার সহিত বর্ত্তমান মৃহুর্ত্তের কার্য্যকারণ সম্বন্ধ অনুসরণ করা অসম্ভব इटेलिंड, ये घटेनांटक आमता श्रमुहे विलया भंगा कवि मा, अवर বাস্তব জীবনে ঐ নিয়মানুসারে আমরা মধ্যে পার্থক্য নির্দেশ করি না। কোনও বিবর প্রত্যক্ষ করিবার সময় আমরা জাপরিত ছিলাম কিনা, ড'হার ছারাই তাহার সভা-মিখ্যা নির্দারিত হয়। হব্স তাহার Leviathan প্রায়ে বলিয়াছেন— আমরা যখন বল্ল পরিবর্ত্তন না করিরাই অকল্মাৎ নিজিত হইরা পতি. তথন ৰপুকে সত্য ৰলিৱা ভুল হয়। বিশেষত: ভাগ্ৰত অবস্থায় বে विरुद्धित क्रिस मनक आध्यत क्रिताक्रित, यथन मार्ड विरुद्धित वर्ध प्रिस. তথন সে স্বপ্ন সতা বলিয়া প্রতীত হয়। তথন বেমন নিজার আগমনও জানিতে পারি না, তেমনি কথন জাগরিত হইলাম, ভাহাও বুবিতে পারি না। কিন্তু জাগরিত হইরা যদি বপ্লবৃষ্ট বিষয়ের সহিত বর্জমান অবস্থার কার্য্যকারণ সম্বন্ধ, অথবা উক্ত সম্বন্ধের অভাব কিছুই বোধপম্য না হয়, তাহা হইলে তাহা বপ্ন অথবা সত্য সে সম্বন্ধে সন্দেহ থাকিয়া বার। ইহা হইতে জীবন ও বংগর মধ্যে যে যনিষ্ট সম্বন্ধ আছে, তাহা শ্বীকৃত হয়। স্বতরাং যদিও আমাদের সমগ্র জীবনের ঘটনাবলী যে কাৰ্য্যকারণ পত্তে প্রথিত, তাহাতে বিভিন্ন বপ্লের স্থান নাই, এবং বল্ন হইতে জাগরিত হইয়াই এই স্থক্ষের অভাব আসরা ব্রিডে পারি, তথাপি প্রত্যেক স্বপ্নের মধ্যে সংঘটিত ঘটনাবলীও বধন পারুল্বিক সম্বন্ধ সংযুক্ত, তখন ষপ্প ও জাপ্তৎ জীবনের রূপ একই বলিয়া প্রতীত হয়-এবং তাহাদের স্বন্ধণের মধ্যে বিশেব কোনও পার্থকা আছে বলিয়া মনে হয় না। জীবনের সঙ্গে অপের সম্বন্ধ খনিষ্ট। উভরই একই গ্রন্থের বিভিন্ন পূঠা। হয়তো জীবন এক দীর্ঘ মধ্য মাত্র।

বে লগৎ আমাদের জ্ঞানে প্রতিভাত হর, তাহার উপাদাস
"অবভাস"—পরশার সহকে আবদ্ধ অবভাস। এই সক্ষ দেশ ও কালের
সক্ষ, কার্য্যকারণ সহক, সামাক্ত-বিশেবের সম্বন্ধ এবং প্রবর্ত্তন ও তদ্দৃত্ত
কর্মের সহক। আমাদের জ্ঞানের মধ্যে লগতের এব্ধিধ রূপের
অতিরিক্ত কিছুই নাই। বে কারণ-সম্বন্ধ অক্তাক্ত সক্ষেত্র মূল,
তাহা প্রেরুপে অবভাসিত লগৎকে ধারণ করিয়া আছে। আমাদের
অহংও দেশ ও কালে অবস্থিত ক্লপেই জ্ঞানের বিবর হয় এবং ইহাও
সংসার অথবা অবভাসিক লগতের অন্তর্গত। কিন্তু অব্যবহিত জ্ঞান
(intuitive Knowlede) এই অবভাসিক লগৎ—প্রত্যার লগৎ
তেল করিয়া প্রকৃত সভার (Ready) গৌহিতে সমর্য হয়। এই
অব্যবহিত জ্ঞানে জাতা (Subject) অব্যবহিত ভাবে (দেশ ফাল
ও কারণম্ব ব্যক্তিত ভাবে) আপনাক্ষে ইছ্যা—ক্ষমণ ব্যক্তির। লামিকে
গারি।

কলিকাতা ও সহরতলীতে বৈদ্যুতিক ট্রেণ

শ্রীনীলিমা মজুমদার বি-এস্সি

ক্রিকাতা ও সহরতনীতে বে বৈছাতিক ট্রেণ চলাচলের প্রস্তাবনা হইরাছিল তাহা সকলেই অবগত আছেন। এই বিবরে স্থির সিদ্ধান্তে উপনীত হইবার স্কস্ত রেলওরে বার্ড কর্জ্ক "Calcutta Terminal Facilities Committee" নামে ১৯৪৭ সালে একটি কমিটি গঠিত হয়। কমিটি তাঁহাদের সিদ্ধান্ত বোর্ডকে যখাসমরে জানাইরাছিলেন, ক্রিক্ত ছঃখের বিবর আঙ্গ পর্যান্ত কমিটীর সিদ্ধান্ত কার্য্যে পরিণত হয় নাই। এ সম্বন্ধে কোন সাড়াশম্বন্ত শোনা যাইতেছে না। মনে হর সরকারের চিরন্তন প্রথাস্থ্যায়ী ইহাকেও "কোল্ড ষ্টোরেজে" রাখা হইয়াছে।

শিক্ষা, সংস্কৃতি, ব্যবসাবাণিক্সা, লোকসংখ্যা ও আরতন হিসাবে কলিকাতা ভারতবর্ধের বৃহত্তম ও শ্রেষ্ঠতম নগরী। অত্যন্ত পরিতাপের বিষয় আরু পর্যান্ত এই মহানগরীতে যানবাহনাদির ব্যবস্থা লোকসংখ্যাত্মপাতে বড়ই শোচনীয়। যে কোন সমরে কলিকাতার ট্রাম ও বাসের দিকে দৃষ্টিপাত করিলে লোকের অবর্ণনীয় হুংখ হুর্জণা চক্ষেপড়ে। ভারতবর্ধের বন্ধরসমূহের মধ্যে কলিকাতা বন্ধর সর্ব্বাপক্ষা বৃহৎ। বৃদ্ধের পূর্ব্বে এই বন্ধরে প্রায় এক কোটা টন মাল আমদানীরভানী হইত। কলিকাতার আরতন প্রায় ২৮ বর্গমাইল। ১৯২১ সনের সেন্সাসে লোকসংখ্যা কিঞ্চিদ্ধিক এগার লক্ষ ছিল। ১৯৪১ সালের সেন্সাসে ইহা বিশ লক্ষের উপর হয়। বর্ত্তমানে হাওড়া ও কলিকাতার লোকসংখ্যা প্রায় বাট কক্ষ। উদাস্তর আগমনে উত্তরোত্তর ইহা বৃদ্ধির দিকেই চলিয়াছে। যখাশীত্র যদি কলিকাতা ও সহরতলীর মধ্যে যাতারাতএর ক্ষর্যবন্ধা না হয়, তবে অচিরেই কলিকাতা বাসের অন্ধুপর্ক হইরা উঠিবে।

১৯২৫ সাল হটতে বোখাই নহরে এবং ১৯২৮ হইতে নাজান্ধ সহরে বৈছাতিক ট্রেণ চলিতেছে। কলিকাভাতেও বৈছাতিক ট্রেণ চলাচলের ব্যবস্থা সম্বন্ধে অন্মন্ধানের জক্ষ ১৯১৪ সন হইতে ক্রামায়রে একাধিক কমিটী গঠিত হইরাছিল.—সর্বলেবের কমিটী গঠিত হর ১৯৪৭ সালে। কিন্তু বড়ই পরিভাপের বিষয় ফ্রনীর্থ ছত্তিশ বৎসরকাল জ্বলা ক্রনা করিরাও আন্ধ্র পর্যান্ত ভারভবর্ষের এই বৃহত্তম নগরীতে বৈছাতিক ট্রেণ চলাচলের ব্যবস্থা হইরা উঠে নাই।

ভার পদমজী পিনওরালা চেরারব্যান এবং অভান্ত চারজন সদস্তসহ ১৯৪৭ সনের কমিটী গঠিত হয়। সদস্তদের মধ্যে মি: জে, ডি, মাইকেল ও মি: এন, এন, মকুমদার রেলওরে বোর্ডের এবং মি: বি সরকার পশ্চিম্বল সরকারের ভরক ইইভে মনোনীত হইরাছিলেন। অপর সদস্ত মি: এক, এইচ সার্প ছিলেন বৈদ্যুভিক-বিশেষজ্ঞ। কমিটীর সেজেটারী ছিলেন মি: এস, ভি, বামজী। ভারতবর্ধে প্রায় একশত বৎসর পূর্ব্বে প্রথম রেলগাড়ীর প্রচলন হয়।
১৮৫০ খুঠান্দে ইট ইভিয়ান রেলভারের নির্দ্মণ কার্ব্য আরম্ভ হইরা ১৮৫৫
খুঠান্দে রাণীগঞ্জ পর্যান্ত বিস্তৃত হয় এবং দিলীর সহিত ১৮৬৩ খুঠান্দে
সংযোগ ছাপিত হয়। ১৮৬২ খুঠান্দে কলিকাতা হইতে রাণাঘাট পর্যান্ত
ইট্ট বেকল রেলভারে লাইন নির্দ্মিত হইয়াছিল। বেকল নাগপুর রেলভারে ১৯০০ সালে হাভড়ার আসিয়া পৌছায়।

কলিকাতা নগরী হুগলী নদীর পূর্ব্ব তীরে এবং হাওড়া ষ্টেশনটী পশ্চিম তীরে অবস্থিত। কলিকাতা সহর ও হাওড়া ষ্টেশনের মধ্যে পণ্যদ্রবা চলাচলের স্থবিধার জল্ঞ ১৮৭০ খুষ্টাব্দে হাওড়া পুলের (পুরাতন পনটুন ব্রীজ) নির্মাণ কার্য্য সমাপ্ত হয়। নৈহাটীর নিকট হুগলী নদীর উপর জুবিলী ব্রীজ ১৮৮৭ খুষ্টাব্দে নির্মিত হর। কিন্তু ১৮৯২ খুষ্টাব্দে থিদিরপুর ডকের নির্মাণ কার্য্য সম্পন্ন না হওরা পর্যান্ত ভূবিলী ব্রীজের উপর দিয়া মাল চলাচল রীতিমত ভাবে আরক্ত হইতে পারে নাই।ইহার পর স্থদীর্ঘকাল পর্যান্ত কলিকাতার যাত্রী ও মাল চলাচলের উন্নতিক্রে কোন উল্লেখবোগ্য ব্যবস্থা হর নাই। হুগলী নদীর উপর বালী ব্রীজ মাত্র ১৯০২ সনে নির্মিত হয়। বর্ত্তমান হাওড়া ব্রীজের (উইলিংডন ব্রীজ) নির্মাণ কার্য্য ১৯৪২ সালে সমাপ্ত হয়।

১৯৪৭এর কমিটার প্রধান বিবেচ্য বিক্স ছিল—বর্ত্তমানে কলিকান্তায় বাত্রী এবং মাল চলাচলের যে ব্যবস্থা আছে তাহা প্রয়োজনের পক্ষে ববেষ্ট কিলা, তাহা না হইলে কি উপায়ে ইহার উন্নতিসাধন করা সম্ভবপর। সরকার এই কমিটাকে ইহাও নির্দ্ধেশ দিয়াছিলেন যে তাহারা ধরিয়া নিতে পারেন কলিকাতা ও সহয়তলীতে বৈহ্যতিক ট্রেণ চালু হইবে।

কলিকাতা রেলওয়ে ট্রেশনের বিশেষ অক্স্বিধা এই যে, শিরালদহ এবং হাওড়া এই ছুইটা প্রধান ট্রেশনই সহরের ব্যবসা বাণিজ্যের কেন্দ্র ডালহৌনী ক্ষােরার ও বড়বাজার হইতে দূরে অবস্থিত। কার্বোপলকে বাঁহারা সহরতলী হইতে কলিকাতার আসেন, তাঁহাদের গস্তব্যহুল যেথানেই থাকুক না কেন, তাঁহাদিগকে হর শিরালদহ, নর হাওড়া ষ্টেশনে নামিতে হর, পরে ট্রামে কিংবা বাসে গস্তবাহ্বলে পৌহিতে হয়। ইহাতে অবধা রাস্তার, ট্রামে ও বাসে ভীড় বৃদ্ধি পার। এইখানে উল্লেখযোগ্য, বােধাই সহরের ভিক্তৌরিয়া টার্মিনাস ও চার্চেগেট ট্রেশন ব্যবসা কেন্দ্রের অতি সন্ধিকটে অবস্থিত। ক্ষবারবান ট্রেণের সকলতা তথনই লাভ হর, বখন অক্স কোন বানবাহনাদির সাহাব্য ব্যতিরেকে যাত্রীগণ ট্রেশই তাহাদের স্ব ম্ব গস্তবাহ্বলে পৌহিতে পারেন। এই উদ্দেশ্য বাহাতে সাধিত হর, তদক্ষারী ক্ষিটা ভাহাদের সিদ্ধান্ত রেলওয়ে বার্ডকে আনাইলাছিলেন।

কমিটার সর্ব্বাপেকা উল্লেখবোগ্য সিদ্ধান্ত কলিকাতার মিউনিসিপাল সীমানার চতুর্দ্দিকে একটা সাকুলার বৈদ্ধাতিক রেলওরে লাইন নির্মাণ। এই সাকুলার রেলওয়ে দমদম জংসন হইতে আরম্ভ হইয়া বর্ত্তমান ই, আই. রেলওরের চিৎপুর ইরার্ডের ভিতর দিয়া বাইবে। চিৎপুর ঘাট হইতে ইহা "ওভার-হেড" বেল লাইন হইয়া চলিবে। বর্ত্তমান পোর্ট-কমিশনার-এর বেল লাইনের উপর এই "ওভার-হেড" রেল লাইনটা নির্মিত হইবে এবং থিদিরপুর ডকের ভিতরেও ওভার হেড চলিয়া মাঝেরহাট স্টেশনে গ্রাউও লেভেলে বর্ত্তমান ই, আই, রেলওরের সাউদান সেকশনের সহিত বৃক্ত হইবে। তথা হইতে
শিল্পালদহ হইয়া পুনবার দমদমে মিলিত হইবে।

বর্ত্তমানে ভায়মত্বলারর, বনগাঁও, নৈহাটী, বাাঙেল ও বছবজ হইতে যে সকল রেলওয়ে লাইন কলিকাতার আসিয়াছে, সেগুলিকে সাকুলার রেলওয়ের সহিত সংযুক্ত করার জক্ত কমিটী ছোট ছোট লিক লাইন নির্দ্ধাণের প্রস্তাব দিয়াছেন। এই প্রস্তাব কার্যো পরিণত হইলে যাত্রীগণ বৃহত্তর কলিকাতার পূর্ব্ব, পশ্চিম, উত্তর, দক্ষিণ সকল দিক হইতেই আসিয়া যানবাহনাদির পরিবর্ত্তন ব্যতিরেকে সরাসরি স্থ স্থ কর্ম্মলের অতি সম্লিকটে পৌছিতে পারিবেন। এই উদ্দেশ্যে কমিটী সাকুলার ট্রেণের উপর আরোও কুড়িট নতুন রেলওয়ে স্টেশন নির্দ্ধাণয় প্রস্তাব দিয়াছেন। পরিকল্পনাট কায়ে পরিণত হইলে কলিকাতার বিভিন্ন অংশে মাল চলাচলেরও স্থবিধা হইবে। প্রাথমিক ব্যবস্থা হিসাবে কলিকাতা হইতে ত্রিণ মাইলের মধ্যে রেলওয়ে লাইনগুলিতে বৈত্রাতিক ট্রেণ চলাচলের জন্ম কমিটা সুপারিশ করিয়াছেন। বৈত্রাতিক শক্তিতে ট্রেণ চলাচলের জন্ম কমিটা সুপারিশ করিয়াছেন। বৈত্রাতিক শক্তিতে ট্রেণ চলাচলের জন্ম কমিটা সুপারিশ করিয়াছেন। বৈত্রাতিক শক্তিতে ট্রেণ চলিলে প্রতি ঘন্টায় ২০টী ট্রেণ চলাচল করিতে পারিবে। এইয়পে প্রয়োজন মত যান বাহনাদির বাবস্থা থাকিলে অতি অলকালের মধ্যে বৃহত্তর কলিকাতা গড়িয়া উঠিবে। বর্ত্তমানে সহর্তলীতে যান-

বাহনাদির উপযুক্ত ব্যবস্থা না থাকার জনসাধারণ অবর্ণনীর ছ:থকট বরণ করিরাও কলিকাতার বাস করিতে বাধ্য হইতেছেন। ইহাতে ক্রমে ক্রমে কলিকাতার আবহাওরা দ্বিত হইরা উঠিতেছে। প্রোজ্ঞন মত পরিশ্রুত জলের অভাবে বারমাস সংক্রামক ব্যাধি লাগিরাই আছে। অথচ বৃহত্তর কলিকাতা গড়িরা উঠিলে অধিকাংশ লোক স্বাস্থ্যকর পরিবেশে কলিকাতার চতুপার্শ্বে বসবাস করিতে পারিবেন এবং কর্ম্বোপলকে তাঁহাদের কলিকাতার আসার কোন অস্থ্বিধা হইবে না। বর্মুল্যে বৈহ্যুতিক শক্তি মিলিলে সহরতলীতে নানাপ্রকার প্রয়োজনীয় শিল্প প্রতিষ্ঠানও স্থাপিত হইতে পারিবে।

কিছুদিন পূর্বে সংবাদপত্তে প্রকাশিত হটয়াছিল যে পশ্চিমবঙ্গ সরকার কলিকাতার ভূগর্ভন্থ রেলওয়ে (আপ্তার-প্রাউপ্ত অথবা টাউৰ) লাইন নির্মাণ করার প্রস্তাব করিরাছেন এবং এজন্ত বিশেষজ্ঞ ফরাসী ইন্জিনিয়ারের মত গ্রহণ করা হইতেছে। এদিকে ১৯৪৭এর ,কমিটা তাঁহাদের রিপোর্টে ভৃগর্ভত্ব রেলওয়ে এবং ওভার-হেড রেলওয়ে সম্বন্ধে বিস্তারিত আলোচনা করিয়া সিদ্ধান্ত করিয়াছেন যে সকল দিক দিয়া বিবেচনা করিলে কলিকাভায় ওভার-হেড বৈলাভিক রেলওরে স্থাপন করাই বাঞ্চনীর। আমরা এই তর্ক বিতর্কে যোগদান করিতে ইচ্ছক নহি। যাহাতে অচিরে কলিকাতা নগরীতে যাত্রী এবং মাল চলাচলের অফুবিধা দর হয়, ইহাই আমাদের কাষা। যাহা হোক, আশা করি পশ্চিমবন্ধ সরকার তাঁহাদের পরিকল্পনাটী কার্য্যে পরিণত করার পূর্বে ইহার বিস্তৃত বিবরণ জনসাধারণকে জানাইবেন এবং তাঁহাদের মতামত গ্রহণ করিবেন। কারণ কমিটীর রিপোর্টে দেখা যার বে ভুগর্ভস্থ ট্রেণ নির্মাণে প্রতি মাইলে প্রার ৪ কোটী টাকা বার হইবার সম্ভাবনা-অপর পক্ষে ২৪ কোটী টাকা ব্যয়ে প্রার ৪০০ ক্লট মাইল লাইনে বৈভাতিক ট্রেণের চলাচলের বাবস্থা হইতে পারে।

মহাকবি গ্যেটের ফাউষ্ট কাব্যে সংশ্লেষণ-প্রণালীর ঔষধ

ডক্টর শ্রীহরগোপাল বিশ্বাস

কাউট্ট কাব্যের নারক ডক্টর কাউট্ট ছিলেন সর্ববিজ্ঞার পারদর্শী। কাব্যের আরম্ভে তার স্বগভোজিতেই তা জানতে পারা যার। কাউট্ট বলছেন :---

Habe nun, ach! Philosophie.

Juristerei und Medizin

Und leider! auch Theologie

Durchaus studiert, mit heissem Bemuehn.

—হার, আমি প্রকাঢ় অভিনিবেশ ও কঠোর প্রমসহকারে দর্শন, ব্যবহারশাস্ত্র, ভেষজবিভা এবং ধর্মশাস্ত্র অধ্যরন করেছি!

फरेत कांडेड खेरथ क्ष**स्त्र** ७ छात्र नावश्व-कण मदस्य व्य मार्थक

বজোন্তি করেছেন এবং মানুবের অর্জিত জ্ঞানের সংকীর্ণ পরিধি সম্পর্কে বে হতাশার ভাব প্রকাশ করেছেন তার আলোচনা করাই এই প্রবন্ধের উদ্দেশ্য। গোটের অনিকাস্থক্ষর কবিতার হবহু বলানুবাদের ক্ষডার অভাবে তার ভাবার্থমান্ত এখনে উল্লেখ করা হচ্ছে।

মহাকৰি গোটে ছিলেন একাধারে জ্ঞান ও বিজ্ঞানের একনিট প্রারী। অনেকেই জানেন ১৭৪৯ গৃটাকে জার্মানির ফ্রাছকুট শহরের এক ধনাঢ্য পরিবারে তিনি জন্মগ্রহণ করেন। তৎকালে প্রচলিত ফুকুমার কলার উচ্চ শিকালাভের সঙ্গে রসারনশাল্প এবং প্রাথবিভার চর্চা করতেও তিনি হাছেন নি।

বৰ্ণ সৰকে একটি বিভরিও থাড়া করেছিলেন। বিজ্ঞানের ক্রমোরতি সবকে আলোচ্য প্রদক্ষে কবি বে গভীর অন্তর্গৃতির পরিচর দিয়েছেন—তা সবিশেব প্রবিধানবোগ্য। ফলতঃ গোটের বাণীতে জার্মান কাতি বে অমুপ্রেরণা লাভ করেছিল ভার তুলনা মেলে না। হুর্গমনীর অমুস্কিৎসা ও ভৃতিহীন জ্ঞানপিপাসা ভিনি জাগিরে তুলেছিলেন এই জাভির মজ্জাতে ক্জাতে। এই উভির বাধার্থ্য উপলব্ধির জন্ম ফাউট্ট কাব্যের নিম্নলিধিত হুটি বাণীই যথেষ্ট্র মনে করি।—

Wo fass ich dich unendliche Natur?
— অনন্ত প্ৰকৃতি তোমা বৃধিৰ কেমনে?
Ich wuenschte recht gelehrt zu werden
Uud moechte gern, was auf der Erden
Und in dem Himmel ist, erfassen,
Die Wissenschaft und die Natur.

্ সত্যিকারের জ্ঞানী হতে আদ্নি চাই— এ ধরার আর দূর মহাকাশ মাঝে বত রহস্ত চির-অগোচরে রাজে— সব না জানলে আমার শান্তি নাই।

এখন বেডিসিন বা ভেবজবিজা উপলক্ষে কাউট্ট কাব্যে যে প্রসঙ্গ আছে তার মোটাষ্ট আতান দেবার প্রয়াস পাছিছ। কবিগুরু কিরূপ পরিবেশের অবতারণা করে কত কৌশলে তার মনোতাব ব্যক্ত করেছেন— তা শীল্লই আমরা দেখতে পাব।

…रमञ्जान। धार्क नैाञानशस्य दुक्ताञा भवनुष्म नेषाद्य नर-জীবনের জয়যাত্রা হার করেছে। প্রকৃতি বর্ণগন্ধে অগাঁর হুষমায় ভরপুর। নির্মেষ নীল আকাশ থেকে সূর্যের সোনালি কিরণ অক্ত शांत्रात्र अरत পড़ছে। भहरत्रत्र कर्मरकानाहन (परक धनी निर्धन, कूनि-মজুর, আবালবৃদ্ধবনিতা বদ্ধ খরের ছু:সহ ক্লেণাক্ত পরিবেশ ছেডে ৰেরিরেছে ইষ্টারের উৎসব করতে—গ্রামের পবে, মাঠে পর্বতে। গাঁরের চাৰীবাও আজ ঘরচাডা-খাত্ম পানীর, বাত্তযন্ত্র নিরে খোলা জারগার মাচপানে মন্ত। উৎসবমুগর, আনন্দবিভোর স্থাবর জলম। ডক্টর কাউষ্টও বছদিন পরে তার জ্ঞানদাধনা ও গবেষণার কুত্র কক্ষ থেকে ৰেরিরে পড়েছেন গাঁরের পথে—জনগণের আনন্দের এই বরণাধারার অৰগাহনাৰ্থে--তার প্রিয় শিষ্ত ভাগনারকে সঙ্গে ক'রে। কিঞিৎ অবান্তর হ'লেও বলে রাখি বে, কবি বণিত এই মাঠঘাট আমি যেন মনশ্চকে শাষ্ট্র দেখতে পাচিছ; কারণ আমার সাম্প্রতিক জার্মানি প্রবাসে चानि चानकिन कवित्र समाचान साक्क्र नश्त्रत উপकर्छ वाउरशामवर्श ছিলাম, কিন্ত প্ৰত্যন্ত ট্ৰাম বা ট্যান্সিবোগে ছোট ছোট পাহাড ডিভিরে মাঠের ভেতর দিলে চাবীদের আম পেরিয়ে মহাকবির পদরজপুত শহরে আসতাব।

এখন আমাদের আলোচ্য বিবরে আবার আদা বাক।
আচার্য কাউট্ট ভাগনারকে নিরে উৎসবরত একদল কৃষকদের পাশ
দিলে বেডেই ভারা তাঁকে চিনজে পেরে সম্বর্জনা নানালে এবং

সকলে তাঁকে বিরে দাঁডিয়ে উৎকুকভাবে প্রভানত্রনেত্রে তার দিকে চেয়ে রইল। এই সমর তাদের মুগপাত্রবন্ধপ একজন বর্গীরান কুবক ডাটার ফাউষ্টকে বলতে লাগল—"হে মহাপ্রাণ, এই আনব্দের দিনে তুরি আমাদের কাছে আদার আমরা যে কতদূর ধুদী হয়েছি তা প্রকাশের ভাবা খুঁজে পালিছ না। আজ আমরা যে এখানে মিলিত হরেছি এ কেবল তোমার স্বর্গত পিতা এবং তোমার দয়াতেই সম্ভবপর হরেছে। कांत्र व्यापात्मत गीरत यथन कीवन क्षेत्र मिथा प्रत्र अवः अठाह बहुत्वाक মারা যেতে থাকে ভখন করুণার অবতার ভোমার পিতা আহার নিয়া ভুলে ঘরে ঘরে ঘুরে আমাদের ঔষধ দিয়ে যেতেন। তুমি তথন ছিলে বয়দে নবীন, কিন্তু তুমিও নিজের জীবনের মালা না ক'রে স্থদ্ঢ় নিষ্ঠার সক্ষে প্রত্যেক রোগীকে ঔষধ থাওয়াতে, শুশ্রুষা করতে এবং সাহস দিতে। ভগবানের অশেষ দয়া যে যিনি এবং যাঁর পুত্র দেবদুতের মত উপস্থিত হয়ে সেই চরম ব্রঃসময়ে করালবাাধির কবল থেকে আমাদের বাঁচাবার চেষ্টার আজনিয়োগ করেছিলেন, ঐ বাাধি তাঁদের কেলাপ্রত ম্পূৰ্ণ করতে পারে নি।" গ্রামবন্ধের কথা শেব হলে স**কলে সমবে**ড ভাবে ডক্টর ফাউট্টের দীর্ঘজীবন কামনা ক'রে জগদীখরের কাছে প্রার্থনা कंत्रल । टार्गुद्धात काइँहे वन्नालन-"साई मव, मानूरवत এकमाज वस् পরমপিতা পরমেশ্বরই সকল কল্যাপের মূলাধার। আমরা তাঁর দীন ভূত্য হিসাবে তারই অপার করণার কণামাত্র তোমাদের কাছে পৌছিরে দিতে পেরেছি; স্বতরাং এজন্ত ধন্তবাদ আমাদের প্রাণ্য নর—ভোমরা ভগবানকেই এর জক্ত কৃতজ্ঞতা জানাও।"

এই কথা বলে প্রতিনমন্তারপূর্বক বিদায় নিয়ে সশিষ্ঠ ভক্তর কাউট লুরে একটু নিরালায় সরে গেলেন। তথন শিষ্ঠ ভাগনার বলতে লাগলেন—"গুরুদেব, না জানি কি অনাবিল আনন্দই না আজি আপনি পেলেন—গাঁয়ের লোকদের প্রাণবোলা অভিনন্দন ও সকৃত্তর প্রভাগনি লাভ করে! আপনার মত সেই ব্যক্তিই যথার্থ স্থনী ও ভাগাবান্ বিনি ভগবানের দেওয়া প্রতিভা ভগবানে ঈস্পিত মঙ্গলার্থ নিয়োজিত করে ধন্ত হন।"

ভক্তর ফাউই অন্বে একটি বিলাখণ্ড লক্ষ্য করে বললেন—"অনেকটা ইটো হরেছে—চল ঐ পাশ্বরটার উপর বদে কিছুক্রণ বিশ্রাম কর। যাক।" দেখানে কিছু সময় নীরবে কাটালার পর ভক্তর ফাউই বলে চললেন—"দেই ভীবণ প্লেগ যথন এ অঞ্চলের প্রামকে প্রাম উলাড় করছিল, সেই সময় আমি প্রায়ই এসে নির্জনে একাকী এই পাশ্বরটার উপর বসভাম—বদে আমাদের অসহার অবস্থার কথা কত না তিটা করভাম। কথনো বা উপবাসী থেকে মর্মান্তিক যাত্রনা নিরে প্রার্থনা করভাম। তথন বয়দে ছিলাম ভক্তণ—সেই বয়দের সহজাত সীমাহীন আলাও অটল সরল বিশ্বাস নিরে, সজল চক্ষে কত না নীর্থবাদ ফেলে ভগবানকে ভাকভাম—বদি তিনি আমার কাতর ফ্রন্সনে সাড়া দিরে ঐ প্রের আক্রমণ থেকে প্রাম্বাদীদের রক্ষা করেন। ক্রেরেই আলি এরা আমার বে প্রশংসা করল, এ বে আমার কাছে বিক্রপের মত্তরিকাৰে ভাতত আর আলতর্ধ কিছু আমার অভর্মেরভাই আন্নেন

এবের সরল আপের উচ্চল প্রশংসার কট্টকু আমার পিতার বা আমার সত্যিকারের প্রাণ্য !--আমার পিতা ছিলেন নিতান্ত বরভাবী. আপনভোলা লোক। নিরলস ভাবে সমস্ত মন প্রাণ ঢেলে দিয়ে তিনি नर्दनारे 'अकुछित भूगावृड' (Nature's holy circle) ज्यापन **অভিনিবেশ সহকারে পাঠ করতেন এবং একজন বা ছুল্লন দক্ষ** সহকারীর সঙ্গে ভার গুণুককে অভুত ফরমুলা অনুসারে আগুন এবং মুবার (crucible) সাহায্যে নানা বিরুদ্ধধর্মী পদার্থের সংযোগ সাধনে —বেন সিংহের সঙ্গে লিলির মিলন ঘটানোর জক্ত—ব্যাপুত থাকতেন। এইরপে জন্ম নিত কত নব নব ঔষধ; কিছু রোগীদের বাঁচাতে পারতাম কই দে সব ঔষধ দিয়ে ? হাজার হাজার লোককে আমি বহতে দিয়েছি এই ঔষধ—তারা গেছে মরে। এই অঞ্চলে আমাদের উবধই প্লেপের চেয়েও ছিল বেণী ভায়ংকর। কিন্তু কেউ গুধার নি কথনো 'কে কে এই ঔষধ খেল ? আর তার মধ্যে ক'জনই বা সেরে উঠল ?'—আর আজ আমি বেঁচে রয়েছি দেই লোকাম্বরিত হত-ভাগাদের প্রিরজনের কাছ থেকে উচ্ছ্সিড প্রশংসা ও ধ্রুবাদ পাৰার জক্ত !"

শুক্রর এই মর্মবেদনা করুণ, হতাশাব্যক্তক কথা শুনে ভাগনার বলে উঠলেন—"এতে এত তুঃখ করবার কি আছে? মানুষ তার সমসামরিক বিজ্ঞানের নির্দেশ অকুণ্ঠভাবে গ্রহণ করে সততার সঙ্গে তা প্রতিপালন করা ভিন্ন আর কি করতে পারে বলুন? আপনি আপনার পিতার নিকট যা শিথেছিলেন, তা সম্পূর্ণ সরল অন্তঃকরণে প্রণাঢ় বিখাসের সঙ্গেই শৈথেছেন। আপনার জীবনে বিজ্ঞানের সীমারেখা আপনি যাবেন বাড়িয়ে এবং সেই বিবৃদ্ধ জ্ঞানরাজ্যের উত্তরাধিকারী আপনার পুত্র হয়ত আরো রোমাঞ্চকর আবিভারের খ্যাতিলান্তে ধন্ত হবেন। কিন্তু একথা ভুললে চলবে না যে—মাগামী-কালের সমূহত বৈজ্ঞানিক আবিভারের স্থ্রমা সৌধের ভিত্তিপ্রস্তর আমরাই ত গেঁখে চলেছি। ভুলচুক হয় ত আমানের হচ্ছে, কিন্তু ভাই বলে হাত পা শুটিয়ে বলে থাকলে ত চলবে না। এ কথা যদি মেনে নেন, তবে এর জন্ত তুঃখ বা অমুশোচনা করবার কোনও কারণ আছে বলে আমি মনে করি না।"

আমরা দেখলাম, মহাকবি গ্যেটে ডক্টর ফাউটের মুখ দিরে বে কটিল সমস্তার অবতারণা করলেম পরক্ষণেই তিনি ভাগনারের উজির মাধ্যমে অতি সরল ফুল্লর ভাবে দেই সমস্তার সমাধান করে দিলেন। মহাসমূদ্রের কোট কোট প্রবালকীটের - দেহাবলেবে গড়ে ওঠে ফুলকল-শোভিত নয়নমনোহর দীপমালা—দেইরূপ পুরুষ পরস্পরার এইরূপ কত ফাউটের আজীবন একনিষ্ঠ সাধনার কলে বে আমরা বিজ্ঞানের বর্তমান অভাবনীয় উন্নতি প্রত্যক্ষ করছি—কে তার ধবর রাবে? আর্মানজাতি গ্যেটের এই মর্মবাণী মর্মে মর্মে অকুত্র করার কলে বর পরিসর এক শতাকী সমরের মধ্যেই তারা জ্ঞানরাজ্যের বিভিন্ন দেশ আবিদার ও অধিকার করে পৃথিবীর মধ্যে সর্বত্রের আনন্দের কর্বা এই যে, সংগ্রেবণ সঞ্জাত ঔবধের আবিদার ও প্রস্তুতি যিনি ফুড়ুট বৈজ্ঞানিক ভিত্তির উপর স্থাপন করেন, নোবেল পুরস্কার বিজয়ী দেই অনামধন্ত পর এরলিধের সাধনার ক্ষেত্র ছিল মহাকবির জন্মনপত্রী, ফ্রাক্টেটে।

পরিশেবে আমাদের দেশের রসায়নের তরুণ ছাত্রছাত্রী ও প্রবীণ রসায়ন-বিজ্ঞানীদের—বিশেব করে বাঁরা উষধ শিল্পে আম্বনিয়াপ করেছেন, জনগণের ব্যাধিক্রেণ ও অপসূত্য নিবারণে ফাউটের বে মর্মবেদনাপীড়িত ছবি কবি এঁকেছেন—তৎপ্রতি তাঁদের সসত্রম দৃষ্টি আকর্বণ করতে চাই। এই শান্তচরির আমরা বে ক্যোগ ক্ষেণা পেরেছি এবং ভগবদ্দত্ত ক্ষমতার বত্তুকু অফুলীলন ও সদ্ব্যবহার আমাদের ক্ষুদ্ধ শক্তিতে সম্ভবপর হরেছে তার সায়াব্যেই সনিষ্ঠ প্রমানাদের ক্ষুদ্ধ দেশবাসিগণকে বাাধি ও অপমৃত্যুর হাত থেকে রক্ষা করবার পবিত্র ব্রত ও গুরুদায়িত্ব আমাদের উপর সতত ক্ষন্ত, একথা বেল কথনো আমরা ভূলে না যাই। 'ক্যান্ধিতার কৃষ্ণার গোবিন্দার নম: নম:' বলে যে দেশের লোক শ্যাত্যাগ করেন, বর্তনান প্রবন্ধে আলোচিত গোটের এই ভাবধারার অন্তনিহিত আন্দর্শ তাদের আন্তর্ম শর্পিক করে জীবন মহিমমর করে তুলবে বলেই আমার আন্তরিক বিবাস।



গীতগোবিন্দ

রাজশেথর বস্থ

রবীন্দ্রনাথের কবিখ্যাতি অসীম, কিন্তু তাঁর কাব্যের সংক সাক্ষাৎ পরিচয় প্রধানত বাঙালীরই আছে। বাংলা ভাষান্ত ব্যুৎপন্ন অবাঙালী বেণী নেই, বাঁরা মূল রচনা পড়ে রবীন্দ্রকাব্য পূর্ণভাবে উপভোগ করতে পারেন। বিশ্ব-সাহিত্য রূপে গণ্য হলেও রবীন্দ্রসাহিত্য সর্বভারতে ব্যাপ্ত হয় নি।

আর এক বাঙালী কবি জয়দেব প্রায় আট শ বংসর পূর্বে আবিভূতি হয়েছিলেন। তখন মুদ্রাযন্ত্র না থাকায় গ্রন্থের বছপ্রচার অসম্ভব ছিল, শিক্ষিত পাঠকের সংখ্যাও আর ছিল, এক প্রদেশ থেকে অন্ত প্রদেশে যাতায়াতও कहेमाश किन। उथानि खन्नात्वत गीटागाविक कावा मर्व ভারতে প্রচারিত হয়েছে, কাশ্মার থেকে পাণ্ডাদেশ, দারকা থেকে মণিপুর-সর্বত্র তার পদাবলী বছকাল থেকে পণ্ডিত সমাজে পঠिত এবং বৈষ্ণব मन्मित्र गीछ राघ्र আসছে। এই প্রসিদ্ধির কারণ, জয়দেব তৎকালীন সর্বভারতীয় সাহিত্যিক ভাষা সংস্থতে তার কাব্য রচনা করেছিলেন। ববীক্রনাথ যদি সেকালে জন্মাতেন এবং সংস্কৃতে লিখতেন তবে তিনি সমগ্র ভারতের অপ্রতিহন্দী সার্বভৌম কবি রূপে গণ্য হতেন তাতে সন্দেহ নেই। কিন্তু তিনি যদি এই যুগে সংস্কৃতে লিখতেন তবে বিশেষ খ্যাতি পেতেন না, কারণ অন্তান্ত ভারতীয় ভাষার অভ্যুদয়ে সংস্কৃতের চর্চা এবং প্রতিপত্তি অথন কমে গেছে।

শীষ্ক হরেকৃষ্ণ মুগোপাধ্যার সাহিত্যরত্ন মহাশয়ের 'কবি জয়দেব ও শ্রীণীতগোবিন্দ' গ্রন্থের বর্ধিত দ্বিতীয় সংস্করণ* সম্প্রতি প্রকাশিত হয়েছে। আমি এই গ্রন্থ সম্বন্ধে কিছু শিখতে আহুত হয়েছি। গীতগোবিন্দের আলোচনা ছই দিক থেকে হতে পারে, কাব্য রূপে এবং ভক্তিগ্রছ রূপে। ছুর্ভাগ্যক্রমে এই ছই দৃষ্টির কোনওটির

অধিকারী আমি নই। অগত্যা অদ্ধ বেমন হাত ব্লিয়ে হন্তীদর্শন করে, আমিও তেমনি অমর্মগ্রাহী সামায় পাঠকের স্থল দৃষ্টিতে গীতগোবিলের আলোচনা করছি।

বছ বৎসর পূর্বে একটি প্রাচীন-কাব্য-সংগ্রহ গ্রন্থের সমালোচনা প্রসঙ্গে বঙ্কিমচন্দ্র লিথেছিলেন—'এই সকল কবিতা অনেক আধুনিক বাঙ্গালীর অঞ্চিকর ।···সামাষ্ট্রনায়কের সঙ্গে কুলটার প্রণয় গ্রহলে যেমন অপবিত্র অক্ষচিকর এবং পাপে পঙ্কিল হয়, কৃষ্ণলীগাও তাঁহাদের বিবেচনায় তদ্ধেপ।···এ সকল কবিতা অনেক সময় অল্পীল এবং ইন্দ্রিয়ের পৃষ্টিকর—অতএব ইহা সর্বথা পরিহার্য। যাঁহারা এইরূপ বিবেচনা করেন তাঁহারা নিতান্ত আগারগ্রাহী। যদি কৃষ্ণগীলার এই ব্যাখ্যা হইত তবে ভারতবর্ধে কৃষ্ণভক্তি এবং কৃষ্ণগীত কথনও এত কাল স্থায়ী হইত না।··াযিনি কবিতা লিখেন তিনি জাতীয় চরিত্রের, সামাজিক বলের এবং আত্মন্থভাবের অধীন।··গ্রাচীন কবি মাত্রেরই কতকগুলি দোষ গুণ আছে যাহা আধুনিক কবিতে অপ্রাণ্য। সেইগুলি তাঁহাদের সাময়িক লক্ষণ।'

ব্যাহ্ব সিত্রাবিন্দকে জন্ত্রীল বলেন নি, কিছ জানিয়েছেন যে তাঁর সমকালীন অনেকের দৃষ্টিতে এই প্রকার রচনা আপত্তিকর ছিল। প্রাচীন কবিদের যে সাময়িক লক্ষণের কথা তিনি বলেছেন, তাঁর সময়ের শিক্ষিত পাঠকসমাজের বিচারপদ্ধতিতেও সেই সাময়িক লক্ষণ দেখা যায়। ক্ষৃতি কালে কালে বদলায়। যা স্বাভাবিক মহয়ধর্ম তার সময়ে কোনও দেশের প্রাচীন কবিদের সংকোচ ছিল না। তাঁরা কাম ও প্রেমের বড় একটা পার্থক্য করতেন না। আদিরস পরিবেশনে তাঁদের অনেকে মৃক্তঃত ছিলেন, পাঠকবর্গও তাতে দোষ ধরতেন না। কিন্তু ইংরেজী শিক্ষা এবং ভিক্টোরীয় সাহিত্যের প্রভাবে বন্ধিমচন্দ্রের সময়ে শিক্ষিত জনের ক্ষৃতি বদলে গিয়েছিল। তাঁরা ভাবতে পারতেন না যে পঞ্চাশ বাট বৎসর পরে পাশ্চাত্য ক্ষৃতি এদেশের প্রাচীন ক্ষাচিকে হার মানাবে। বর্তমান কালের অনেক স্ববিধ্যাত লেধক

কৰি জয়দেব ও বী বীগীতগোবিশ।—বীহরেকুক মুখোপাধার।
 অকাশক—গুরুলাস চটোপাধার আভি সন্স। ২২৩+১৩০ পূঠা।
 মৃল্য চার টাকা।

লালদার বর্ণনায় কার্পণ্য করেন না। আদিরস ভক্তির বাহন হতে পারে কিনা সে বিষয়ে মতভেদ থাকতে পারে, কিন্তু আধুনিক সমালোচকের দৃষ্টিতে গীতগোবিন্দে এমন কিছুই নেই বা কাব্যে বর্জনীয়।

বৈষ্ণবদতে শাস্ত দাত্ত স্থ্য বাৎস্কা ও মধ্র রসের বে-কোনওটির অবশ্বনে কৃষ্ণভক্তি চরিতার্থ হতে পারে, কিন্তু মধ্র বা শৃকার রসই শ্রেষ্ঠ, যাতে উপাত্ত-উপাসকের মধ্যে কামগন্ধগীন প্রণয়িসম্পর্ক হয়। চৈতক্তদেবের প্রশ্নের উত্তরে রায় রামানন্দ কৃষ্ণসাধনার নানা ভেদ উল্লেখ করে পরিশেষে বলেছেন, 'কাস্তা ভাব সর্ব সাধ্য সার।' চৈতক্ত-দেবও বলেছেন, 'কাস্তা ভাব সর্ব সাধ্য সার।' চৈতক্ত-দেবও বলেছেন, 'বর: কৈশোরকং ধ্যেয়মাত্ত এব পরো রস:'—অর্থাৎ সাধকের পক্ষে কিশোর রূপই ধ্যানযোগ্য এবং আদিরসই পরম রস। মর্মী বা মিষ্টিক সাধকগণের সম্বরোপলন্ধি কি প্রকার, তা অক্ত লোকের ধারণার অতীত। কিন্তু এ বিষয়ে সন্দেহ নেই যে ত্রু ভারতীয় ভক্ত নয়, বহু গ্রীষ্টীয় সন্ন্যাসী এবং স্থুকী সাধকও প্রেমাত্ররা বিরহিণী নায়িকার দৃষ্টিতে ঈশ্বরের অধ্যেবণ করেছেন এবং ঈশ্রোপলন্ধির ফলে প্রিয়সমাসমত্ঞা নায়িকার তুলাই নিজেকে কৃতার্থ জ্ঞান করেছেন।

তথাপি প্রশ্ন ওঠে, সুল আদিরস কি ভক্তির বাহন হতে পারে ? পূর্বোক্ত প্রবন্ধে বঙ্কিমচন্দ্র লিখেছেন—'প্রকৃতি ও পুরুষ সাংখ্যমতামুসারে পরস্পরে আসক্ত। । এীমদভাগবত-কার এই তুরুহ তত্ত্ব জনসাধারণের বোধগম্য করিয়া মৃত ধর্মে জীবনের সঞ্চারের অভিপ্রায় করিলেন। মহাভারতে যে বীর ঈশ্বরাবভার বলিয়া লোকমণ্ডলে গৃগীত হইমাছিল, তিনি তাঁহাকেই পুরুষ স্বরূপে স্বীয় কাব্যমধ্যে অবতীর্ণ করিলেন এবং স্বকপোল হইতে গোপক্সা রাধিকাকে স্থ্র করিয়া প্রকৃতিস্থানীয় করিলেন।…সাংখ্যের মতে हेशामत्र भिननहे कौरतत्र इः त्थत्र भून – जारे कवि এरे मिननरक चार्छाविक এবং অপবিত্র করিয়া সাজাইলেন। শ্রীমদ্ভাগবতকারের গূঢ় ভাৎপর্য, আত্মার ইতিহাস-প্রথমে প্রকৃতির সহিত সংযোগ, পরে বিয়োগ, পরে মৃতি। জন্মদেব প্রণীত ক্রফ্চরিত্রে এই রূপক একেবারে অদৃশ্য।… আর্যজাতির জাতীয় জীবন তুর্বল হইয়া আসিয়াছে। ... অন্তের अक्षनात श्वात्न त्रां अभूती जकता नृभूत-निक् ग विक्रिक्ट ।… গীতগোবিন্দ এই সমাঞ্চের উল্ফি। •• শব্দভাগুরে যত সুকুমার কুসুম আছে, সকলগুলি বাছিয়া বাছিয়া চতুর গোস্বামী কিশোর-কিশোরী রচিয়াছেন। । । । য মহাগৌরবের জ্যোতি মহাভারত ও ভাগবতে কুফ্চরিত্রের উপর নিঃস্থত হইরাছিল, এখানে তাহা অন্তর্হিত চইরাছে। ইন্দ্রিরপরতার অন্ধকার ছারা আসিরা প্রথরস্থত্যাতপ্ত আর্থ পাঠককে শীতল করিয়াছে।

বফিমচন্দ্র ক্রম্মভক্ত এবং বৈষ্ণৰ কাব্যের **অনু**রাগী ছিলেন। তিনি গীতগোবিন্দের লালিত্য এবং রচনাচা**ভূর্ব** স্বীকার করেছেন। তাঁর একাধিক উপস্থানে এই কাব্য থেকে উদ্ধৃতিও দিয়েছেন। কিন্তু জয়দেবের রচনায় ভিনি পারমাথিক তত্ত্ব কিছুই পান নি। তাঁর আরাধ্য শ্রভার্চ দার্শনিক রাজনীতিজ্ঞ ক্রম্ম গীতগোবিন্দে নেই।

শ্রীযুক্ত হরেকৃষ্ণ মুশোপাধ্যায় মহাশয় স্থপণ্ডিত, ভক্ত এবং বৈষ্ণব শাস্ত্রে অশেষবিৎ। তাঁর গ্রন্থের মোট পৃষ্ঠাসংখ্যা ৩৮৪, তার মধ্যে ১৬০ পৃষ্ঠা সটীক সাম্থবাদ 'গীতগোবিন্দ কাব্য এবং অবশিষ্ট ২২৪ পৃষ্ঠা ভূমিকা। এই
বৃহৎ ভূমিকায় গ্রন্থকার জয়দেবের দেশ, কাল ও চরিত
বিবৃত করেছেন এবং বৈষ্ণব ধর্ম ও সাধনার পদ্ধতি সম্বন্ধে
স্বিস্তারে আলোচনা করেছেন। তিনি বছ যুক্তি এবং
নানা শাস্ত্রীয় প্রমাণ দিয়ে বছিমচন্দ্রের প্রতিকৃল মত খণ্ডন
করে দেখিয়েছেন যে জয়দেবের কাব্য ভাগবতেরই অন্থবর্তী,
কামগ্রন্থ নয়, ভক্তিগ্রন্থ।

আধুনিক শিক্ষিত বাঙালীর সংস্কৃতে অমুরাগ নেই, কিন্তু প্রাচীন বাঙালা কবি জয়দেবের ভারতবিখ্যাত কাব্য সম্বন্ধে অনেকের কোতৃগল আছে। মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের এই বছতথ্যসংবলিত গ্রন্থ পড়লে তাঁরা উপকৃত হবেন এবং গীতগোবিন্দ কাব্যের উদ্দেশ্য সম্বন্ধে চিস্তা করবার অনেক উপাদান পাবেন। কাব্যের প্রথম মুগের ভূতীয় প্লোক্ষে জয়দেব তাঁর উদ্দেশ্যের ইন্ধিত করেছেন—যদি হরিম্মরক্ষেনন সরস করতে চাও, যদি বিলাসকলায় কোতৃগল থাকে, তবে জয়দেবক্ষিত এই মধুর কোমল কান্ত পদাবলী শোন। বোধ হয় এর তাৎপর্য—শুদ্ধিত ধার্মিক বৈষ্ণব পদাবলী-বর্ণিত বিলাসকলাকে উপাশ্য-উপাসক-মিলনের রূপক ভাবেই নেবেন এবং ভক্তিভরে হরিম্মরণ করে রুগাবিষ্ট হবেন। আর, কৌতৃগলী সাধারণ পাঠক এতে পাবেন রাধাকৃষ্ণলীলাছেলে ব্গিত মাহুষী প্রেমলীলারই মোহন চিত্র।

বারা সংস্কৃত জানেন না তাঁরাও গ্রন্থকারের প্রাঞ্জল বাংলা অহবাদের সাহায্যে অল্লায়াসে মূল খ্লোকগুলিও ব্যতে পারবেন। আশা করি, বছ যত্নে সম্পাদিত এই গ্রন্থের প্রচুর ক্রেতা ও পাঠক হবে। পশ্চিমবন্ধ সরকারের শিক্ষাধিকার এই গ্রন্থ প্রকাশের জন্ম অর্থ সাহায্য করে প্রশংসাভাজন হয়েছেন।

(দেশ বিদেশ

শ্রীহেমেন্দ্রপ্রসাদ ঘোষ

বাস্তহারা-সমস্তা-

পঞ্জাবে ও বান্ধালায়-দেশবিভাগের ফলে পাকিস্থানভুক্ত অংশে মুসলমানাতিরিক্ত অধিবাসীদিগের ধন, প্রাণ ও মান বিপন্ন হইয়াছে। দেশবিভাগের সর্ত্ত হিসাবে মুসলমান নেতা মিষ্টার জিলা অধিবাসি-বিনিময়ের বে প্রস্তাব করিয়াছিলেন, তাহা গান্ধাজীপ্রমূথ ব্যক্তিদিগের ছারা গৃহীত হয় নাই। তাঁহারা আশা করিয়াছিলেন, ভারতে যেমন মুসলমানগণ, পাকিস্তানে তেমনই হিন্দুরা यथाकारम हिन्दू - ७ मूननमान अधिवानी निरंगत जूना धिकांत्र সম্ভোগ করিয়া নিরাপদে বদবাদ করিতে পারিবে। কিন্ত তাঁহাদিগের সে বিশ্বাস নষ্ট হইয়া গিয়াছে। তাহার প্রধান কারণ, তাঁহারা অতীতের অভিজ্ঞতা অবজ্ঞা করিয়া-ছিলেন। দূর অতীত—খদেশী আন্দোলনকালে প্রচারিত "লাল ইন্তাহার" প্রভৃতি ; অদূর অতীত—কলিকাতায় সাম্প্রদায়িক হত্যাব্যাপারের পরে নোয়াথালী ও ত্রিপুরার ঘটনাসমূহ। কার্য্যকালে দেখা গেল, ভারত ধর্মনিরপেক রাষ্ট্র হইলেও, পাকিন্তান আপনাকে ইসলাম রাষ্ট্র ঘোষণা ক্রিল—স্থতরাং তথায় মুসলমান ও অমুসলমান উভয়ে প্রভেদ থাকিল ও থাকিবে। পঞ্জাবে অধিবাসি-বিনিময় "করাল কুপাণ মুখে"—রক্তপাতে ও হত্যায় একরূপ সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। বাঙ্গালায় তাহা হয় নাই এবং ভারত সরকার ও পশ্চিমবন্ধ সরকার উভয়েই পূর্ববন্ধের হিন্দু-দিগকে পশ্চিমবঙ্গে ভার—তুর্বহ ভার, স্থতরাং অবাঞ্ছিত বলিয়া মনে করিয়াছেন। সেইজক্ত পশ্চিমবঙ্গ সরকার প্রথমাবধি পূর্ববঙ্গের বাস্তত্যাগী হিন্দু নর-নারীর পুনর্বাসতির আবশ্রক ব্যবস্থা করেন নাই এবং শেষে তাহাদিগকে আন্দামান হইতে হায়দ্রাবাদ পর্যান্ত নানা স্থানে পাঠাইয়া কোনরূপে অব্যাহতি লাভের চেষ্টা করিয়াছেন করিতেছেন। ফলে বাঙ্গালী জাতির একর নষ্ট হইতেছে এবং বহু বাঙ্গালী বাঙ্গালার সংস্কৃতিভ্রষ্ট ও মাতৃভাষাত্যাগী হইবার সম্ভাবনা প্রবল হইতেছে। ভারত সরকার বিহারকে

বেমন উড়িয়াকেও তেমনই বাস্তংগরা বাঙ্গালার পুনর্বসন্তির ব্যবস্থা করিতে নির্দেশ দিয়াছেন। অথচ দেখা গিয়াছে, বিহার, উড়িয়া ও আদাম কেংই পূর্ববাধি বাঙ্গালীর প্রতি সহামভূতিসম্পন্ন নহে। কাজেই তাহারা সে নির্দেশ সাগ্রহে পালন করিতে পারে নাই এবং সময় সময় প্রথম প্রদেশব্বে প্রেরিত বাঙ্গালীরা ফিরিয়া আদিয়াছে।

পূর্ব্ববঙ্গে হিন্দু নরনারীর উপর যে অনাচার ও অত্যাচার অমুষ্ঠিত হইয়াছে, তাহার প্রতিক্রিয়া যে পশ্চিমবঙ্গে হয় নাই. বলা যায় না—তবে তাহা যৎসামান্ত। विशादत यथन भूमलमानता উৎপी फ़िल इहे या हिल, जथन পণ্ডিত জ্বভ্রলাল নেহরু তাহা কলিকাতায় নোয়াখালীতে ও ত্রিপুরায় হিন্দুলাঞ্চনার প্রতিক্রিয়া विवा भार्नारमण्डे चौकांत्र कतिशार्ष्टन । तम यात्राहे रुष्डेक. "যেন তেন প্রকারে" অবস্থার উন্নতি সাধনের উদ্দেশ্যে তিনি ভারতেরও দোষ স্বাকার করিয়া লইয়া, পাকিস্তানের সহিত সংখ্যালবিষ্ঠদিগের সম্বন্ধে চুক্তিবদ্ধ হইয়াছেন। তিনি মনে করিয়াছেন, চুক্তির সর্ত্ত পাকিস্তানে পালিত হইবে। কিন্তু ইতিমধ্যেই চুক্তির সর্ত্ত পরিবর্দ্ধন করিতে হইয়াছে। চুব্জির সর্ত্ত পালন জন্ম তিনি যে মন্ত্রীকে ছয় মাদের জন্ম নিযুক্ত করিয়াছিলেন, তাঁহার কার্য্যকাল বৰ্দ্ধিত করিতে হইয়াছে। সেই মন্ত্রী বান্ধালী-পশ্চিম-বলের প্রধান-সচিব হইয়া ডক্টর বিধানচক্র রায় যাঁহাকে সচিবসত্তে গ্রহণ জন্ম আহ্বান করিয়াও গ্রহণ করিতে পারেন নাই-চাক্চক্র বিশ্বাস। তিনি পাকিন্তানের সংখ্যালবিষ্ঠ সম্প্রদায়ের স্বার্থ রক্ষার্থ নিযুক্ত মন্ত্রী ডক্টর মালেকের দহিত পূর্ববঙ্গের ও পশ্চিমবঙ্গের নানাস্থান পরিদর্শন করিয়াছেন—দিল্লীচুক্তি অহুদারে কাজ করিবার क्छ हिन्दू मिश्र क প্রারে করিতে চেষ্টার ক্রটি করেন নাই। কিছ দীর্ঘ ছয় মাসের অভিজ্ঞতাফলে তিনি বলিয়াছেন, পূর্ববঙ্গে অবস্থা এখনও "স্বাভাবিক" হয় নাই —হিন্দুদিগের পক্ষে অহাষ্ঠিত অত্যাচার সহজে বিশ্বত হওয়া সম্ভব নহে-হিন্দুর মনে এখনও আন্থা প্রতিষ্ঠিত হয়

নাই। পণ্ডিত অওহরলাল যেন "হতাশের আক্রেণ" করিয়াছেন—এখনও পূর্ববৃদ্ধ হইতে প্রতিদিন সহস্র সহস্র হিন্দু নরনারী পশ্চিমবৃদ্ধ আসিতেছে—আত্বা এখনও "স্বাভাবিক" হয় নাই। বিশেষ যে সকল হিন্দু পূর্ববৃদ্ধ ত্যাগ করিয়া আসিয়াছে, তাহারা আর ফিরিয়া যাইতে চাহে না। গত সেপ্টেম্বর মাসে পশ্চিমবৃদ্ধ ব্যবস্থাপরিষদে প্রদেশপাল ডক্টর কাটজুও তাহাই বলিয়াছেন। তিনি বলিয়াছেন:—

- (১) গত ১৫ই আগষ্ট (১৯৪৭ খৃ:) হইতে এ প্র্যান্ত পূর্ববঙ্গ হইতে অহান ৪০ লক হিন্দু চলিয়া আসিয়াছেন।
- (২) যাঁহারা আসিয়াছেন, তাঁহারা পূর্ববঙ্গে ফিরিয়া যাইবেন না।
- (৩) চুক্তির ফলে হিন্দুদিগের সহক্ষে পূর্ববঙ্গে উৎপীড়নের তীব্রতা হ্রাস হইয়াছে, উৎপীড়নের অবসান হয় নাই। যে অবস্থায় হিন্দুদিগের মনে আস্থা ফিরিতে পারে, সে অবস্থা হইয়াছে কি না, বলা ছঃসাধ্য।

পশ্চিমবন্ধ ব্যবস্থাপরিষদে পশ্চিমবন্ধের প্রধান মন্ত্রী বলিয়াছেন, (সরকারী হিসাবে) যে সকল হিন্দু পূর্ববন্ধ ত্যাগ করিয়া আসিয়াছেন, তাঁহাদিগের তথায় ত্যক্ত সম্পত্তির মূল্য ৮৭ কোটি ৮১ লক্ষ ১৫ হাজার টাকা।

আগস্থক দিগের সংখ্যা, তাহাদিগের ফিরিয়া যাইতে
আসম্বতি ও তাহাদিগের ত্যক্ত সম্পত্তির মূল্য বিবেচনা
করিলেই বাস্তহারা সমস্রার গুরুত্ব ব্ঝিতে আর বিসম্ব
হয় না। প্রথমাবধি সমস্রা শীকারে সরকারের অসম্বতি
ও তাহার পরে কার্য্য প্রবৃত্ত হইতে বিলম্ব যে বছ
লোকের অনিবাধ্য ক্ষ্টভোগের কারণ হইয়াছে, তাহাতে
সন্দেহ নাই। কিন্ত সে জক্ত আক্ষেপে কালক্ষেপের সময়
আর নাই। এই সমস্রার সমাধান যথন করিতেই
হইবে, তথন ভারত সরকারকে, পশ্চিমবক্ব সরকারকে
ও ভারত রাষ্ট্রের অধিবাসীদিগকে সমবেত ও সাক্রহ
চেষ্টায়সে কার্য্য সম্পন্ন করিতে হইবে।

পদভ্যাগকারী মন্ত্রীর কথা—

অন্থারী ও পরীক্ষামূলকভাবে ভারত সরকার কর্তৃক চাক্ষচন্দ্র বিশাসকে মন্ত্রী নিযুক্ত করিবার পূর্বে ভারত সরকারে তুইজন বাজালী মন্ত্রী ছিলেন (অবশ্য আমরা মিষ্টার আবুল কালাম আঞাদকে বাকালী বলিতে পারি না) — ভক্তর ভাষাপ্রদাদ মুখোপাধায় ও কিতীশচক্র নিয়োগী। প্রধান মন্ত্রী পার্লামেণ্টের মত না লইরা পাকিন্তানের সহিত যে চুক্তি করিয়াছেন, তাহাতে ঈপ্সিত ফললাভ হইবে না-মর্থাৎ পূর্ব্ববঙ্গে হিন্দুর বাস সম্ভব হইবে না-প্রত্যাবর্ত্তন ত পরের কথা—এই বিশ্বাসহেত তাঁহারা উভরে পদত্যাগ করিয়া আসিয়াছেন। পদত্যাগের কারণ ব্যক্ত করিবার স্থাবেগ লইয়া খ্যামাপ্রদাদ তাঁহার বক্তব্য পার্লামেন্টে বলিয়াছিলেন এবং তাহার পরে পশ্চিমবক্তে নানা স্থানে তাহা বলিয়াছেন। ক্ষিতীশচক্র পার্লামেন্টে বা অন্তত্র বক্তভায় বক্তব্য ব্যক্ত করেন নাই বটে, কিছ একাধিক বিবৃতিতে চুক্তির ব্যর্থতা বিবৃত করিয়াচ্ছন। তাঁহাদিগের উক্তির প্রতিবাদ ভারত সরকার করেন নাই বা করিতে পারেন নাই। তাঁহাদিগের যুক্তিও খণ্ডন করা হয় নাই। ভামাপ্রদাদ এমন কথাও বলিয়াছেন যে, চুক্তি যদি সফল হয়, তবে তিনি তাহাতে আনন্দিতই इटेर्टिन ; किन्न ठौंशांत्र विश्वाम, छोड़ा मकल इटेर्टिना।

পাকিন্তানের কেন্দ্রীয় সরকারে একজন মাত্র হিন্দু
মন্ত্রী ছিলেন। তিনি বাঙ্গালা—বোগেন্দ্র মণ্ডল। তিনি—
ইংরেজ যাহাকে "তপশিলী সম্প্রদায়" নাম দিয়াছে, সেই
সম্প্রদায়ভুক্ত। তিনি দীর্ঘ ০ বৎসর কাল নিষ্ঠা সহকারে
পাকিন্তান সরকারের মন্ত্রিত করিয়াছেন। যথন বরিশালে
মুসলমানদিগের ছারা হিন্দু নরনারীর উপর অকথ্য
অত্যাচার অহন্তিত হইয়াছিল, তথন বরিশালের অধিবাসী
যোগেন্দ্রবাব বরিশালে উপস্থিত ছিলেন, কিন্তু সমধর্মীদিগকে
রক্ষা করিতে পারেন নাই। এতদিনে তিনি পদত্যাগ
করিয়াছেন। পদত্যাগপত্রে তিনি পূর্ব্বক্তে হিন্দুর প্রতি
অত্যাচারের দৃষ্টান্ত—এমন কি হত্যার হিসাব পর্যান্ত
দিয়া সিদ্ধান্ত জ্ঞাপন করিয়াছেন—হিন্দু মাহুষের অধিকার
লইয়া পূর্ববঙ্গে বাস করিতে পারিবে না।

চ্কি নিষ্পন্ন হইবার পূর্ব্বে পশ্চিমবন্ধের প্রধান-সচিব ডক্টর বিধানচন্দ্র রায়ও এই কথাই—প্রকারাস্তরে— বলিয়াছিলেন। ৮ই এপ্রিল চ্কি সম্পাদিত হয়। এরা এপ্রিল তিনি মিষ্টার মুক্তল আমীনের বিবৃতি উপলক্ষ করিয়া বলিয়াছিলেন—

সত্য কথা এই যে, পূর্ব্ব পাকিন্ডানে মুসলমানরা

সংখ্যালখিঠ সম্প্রদায়কে তথা হইতে বিতাত্ন কল্প সর্বাদাই
চেষ্টা করিয়া আসিতেছে। তাহারা সেই নীতি অম্পরণ
করিবার কল্প সর্ববিধ উপায়ই অবলম্বন করিয়াছে:
ফিদ্দিগের গৃহ অধিকার করিয়া হিন্দ্দিগকে ভাহাদিগের
গৃহ ভাগে বাধ্য করা হইয়াছে, হিন্দ্দিগকে ভাহাদিগের
মুখ্যবহার করা হইয়াছে, যাহারা মুসলমান নহে তাহাদিগের
সম্বন্ধে মুসলমানদিগের ধারণাম্যায়ী কাজ করা হইয়াছে.
হিন্দ্দিগকে হত্যা করা ও তাহাদিগের গৃহাদি দগ্ধ করা
হইয়াছে, হিন্দ্দিগের গৃহ লুটিত ও সম্পত্তি নষ্ট করা
হইয়াছে, হিন্দ্দিগকে বলপ্র্বক ধর্মান্তরিত করা ও হিন্দ্নারী অপহরণ করা হইয়াছে।

অবশ্য চুক্তি সম্পাদিত হওয়ায় পশ্চিমবন্ধের প্রধানসচিবের পদতাগি না করিলে বিধানচক্র চুক্তির বার্থতা
প্রত্যক্ষভাবে বলিতে পারেন না। কিন্তু পূর্ববন্ধের সরকারের
একাধিক বির্তির প্রতিবাদে তাঁহার সরকার যে
সকল বির্তি প্রচার করিয়াছেন, সে সকলে পরোক্ষভাবে
তাহাই বলা হইয়াছে এবং পাকিস্তান সরকার যে
অন্তবাদের আশ্রয় গ্রহণ করিতে ইতন্ততঃ করেন নাই,
তাহাও বলা হইয়াছে। পশ্চিমবন্ধ সরকারের বির্তিগুলি
অবশ্য পূর্ব্ব পাকিস্তান সরকার ভিত্তিহীন বলিয়াছেন; কিন্তু
তাঁহারা পশ্চিমবন্ধ সরকারের উক্তি যে সত্যের উপর
প্রতিষ্ঠিত নহে—এমন প্রমাণ করিতে না পারায় কোন্
পক্ষের কথা সত্য তাহা ব্রিতে কাহারও বিলম্ব
হইবার কথা নহে।

যোগেন্দ্রবাব্ তাঁহার পদত্যাগ পত্রে যাহা বলিয়াছেন, সেল্লন্ত তিনি পাকিন্তানের প্রধান মন্ত্রা—চুক্তির এক পক্ষ—
মিষ্টার লিয়াকৎ আলী থাঁন হইতে আরম্ভ করিয়া বহু পাকিন্তানীর বিরাগভাজন ও আক্রমণের লক্ষ্য হইয়াছেন। আবার তাঁহার পূর্বে ব্যবহার আরণ করিয়া বহু হিন্দু তাহার আন্তরিকতার আন্তা স্থাপনে ছিধাবিচলিত হইতেছেন। ইহা অবশ্য অবশ্যস্তাবী। কিন্তু লক্ষ্য করিবার বিষয়, মুগলমান দলের যাঁহারা তাঁহার জন্ত বিলাপ করিতেছেন তাঁহারাও শিষ্ট ও আশিষ্টভাবে তাঁহাকে গালি দিলেও তাঁহার বিবৃতিতে প্রদন্ত সংখ্যার বা ঘটনার অম প্রদর্শন করিতে পারিতেছেন না। সে অবস্থায়—বিশেষ তিনি মন্ত্রী থাকায় তাঁহার প্রকৃত সংবাদ সংগ্রহের স্থবিধা ছিল মনে করিলে—সহজ্যেই

বিশাস করিতে হয়, তাঁহার পদত্যাগের কারণ বাহাই
কেন হউক না, তাঁহার বর্ণিত ঘটনা যেমন সত্য, তাঁহার
প্রদন্ত হিসাব তেমনই নির্ভরযোগ্য। যদি তাহাই হয়,
তবে তিনি যে সিন্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন, তাহা অসমত
বা অস্থায় বলা যায় না। তিনি এতদিন পাকিস্তান
সরকারের মন্ত্রিত্ব করিয়াছেন বলিয়া তাঁহার সিদ্ধান্ত ছাই
হয় না—সেজ্যু তিনি, ব্যক্তিগতভাবে, ক্রাটর অপরাধে
অপরাধী হইতে পারেন—এই পর্যান্ত। স্থতরাং তাঁহার
সিদ্ধান্ত পরীক্ষা করিয়া পাকিস্তান সম্বন্ধে আপনাদিগের
অবলম্বিত ও অমুস্ত নীতির পরিবর্ত্তন বা পরিবর্ত্তন
প্রয়োজন ও কর্ত্তব্য কি না, তাহা ভারত সরকারকে
বিশেষভাবেই বিবেচনা করিতে হইবে। কারণ, নীতি
যে অভ্রান্ত হইবেই এমনও নহে এবং যাহারা ঘটনার
পরিবর্ত্তনে নীতির পরিবর্ত্তন করিতে অস্থীকার করে,
তাহারা স্থব্দির পরিচয়ও দেয় না।

উচ্চ শিক্ষার সমস্থা-

এদেশে উচ্চ শিক্ষার সংশ্বারের কথা বছদিন হইতে আলোচিত হইরা আসিতেছে। কিন্তু যে শিক্ষা-পদ্ধতির নানা ক্রটি পরিলক্ষিত হইরাছে, তাহার কোন উল্লেখযোগ্য পরিবর্ত্তন করা হয় নাই। এমন কি ভারতে আয়ন্ত-শাসন প্রবর্ত্তিত হইবার পরে—অভাবধি—ভারতের প্রকৃত ইতিহাস রচনার জক্ত সরকার কোন সমিতি গঠিত করিয়া আবশ্রক চেষ্টাও করেন নাই। শিক্ষাদান-পদ্ধতি গভাযুগতিক ভাবেই চলিয়া আসিতেছে। এমন কি চিকিৎসা-বিভার বাহনও দেশীয় ভাষা হয় নাই; পরস্ক যে সকল বিভালয়ে মাত্ভাষায় শিক্ষাদান-ব্যবস্থা প্রচলিত ছিল, সরকার সে সকলের বিলোপ সাধন করিয়াছেন। তাঁহারা কলিকাভায় কলেনের সংখ্যা বর্দ্ধিত করায় কলিকাভা ব্যতীত চিকিৎসা-বিভা শিক্ষার অন্ত কেন্দ্র বালালায় নাই।

অথচ বাঙ্গালা বিভাগের পরে কলিকাতার উচ্চশিক্ষার্থীর সংখ্যা-বৃদ্ধি নিবারণ জন্ম তাঁহারা ছাত্রদিগের
কতকাংশকে মফঃখলে রাধিবার উদ্দেশ্যে মফঃখলে কলেজ
প্রতিষ্ঠার জন্ম কেন্দ্রী সরকারের নিকট আবেদন করার
তাঁহারা ৭০ লক্ষ টাকা ঐ কার্য্যের জন্ম দিয়াছেন। সে
দিন পশ্চিমবঙ্গের প্রদেশপাল বলিয়াছেন, জিলার বোগ্য

উচ্চ ইংরে**জী** বিভাগরগুলিকে মাধ্যমিক কলেজে এবং মাধ্যমিক কলেজগুলিকে অর্থ ও বন্ধাদি দিয়া উন্ধত করিবার ব্যবস্থা করা হইতেছে—ফলে কলিকাতায় উচ্চ শিক্ষালাভের জন্ম ছাত্রদিগের আধিক্য নিবারিত হইবে।

তৃ:থের বিষয়, এই ব্যবস্থা কতকটা "গোড়ায় কাটিয়া আগায় জন" হইরাছে। প্রথমতঃ কলিকাভার কলেকে ছাত্রসংখ্যা নির্দিষ্ট করা হয় নাই। দ্বিতীয়তঃ দেখা গিয়াছে, ক্লিকাতার ২টি নারী শিক্ষালয়ে—গোথলে মেমোরিয়াল ইনষ্টিটিউশনে ও ভিক্টোরিয়া উল্লেখযোগ্য অর্থ প্রদান করা হইয়াছে। তৃতীয়ত: कित्राजात উপকর্পে—यथा प्रमूम "মোভিঝিলে" বরিসায়—কলেজ প্রতিষ্ঠা করিয়া দেজক টাকা দেওয়া হইয়াছে। অপচ মফ:স্বলে প্রায় প্রত্যেক জিলার সদরে সরকারী বা বেসরকারী কলেজ আছে। রুফনগরের ও ছগলীর সরকারী কলেজ বহুদিনের এবং বর্ষমানে রাজ-কলেজও তাহাই। তত্তির মূর্শিদাবাদে কৃষ্ণনাথ কলেজও নুতন নহে এবং তাহাও সমৃদ্ধ। মেদিনীপুর, বাঁকুড়া, বীরভূম (হেতমপুর)—এই সকল স্থানে কলেজ পূর্ব হইতেই ছিল। আবার বাকালা বিভাগের ফলে বনগ্রামে, গোবরভাঙ্গায়, বসিরহাটে ও অন্ত কয়টি স্থানে কলেজ প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এ সকলই সরকারের নৃতন নীতি গ্রহণের পূর্বের। যদি পশ্চিমবন্ধ সরকার এইগুলিকে व्यावश्रक व्यर्थ-माहाया श्रामान कविया-वित्यय हाजावारमव স্থব্যবস্থা করিয়া এইগুলির উন্নতিসাধনে সচেষ্ট হইতেন, তবে একদিকে যেমন অনেক অল্প অর্থের প্রয়োজন হইত, অক্সদিকে তেমনই এইগুলি অধিক সংখ্যক ছাত্ৰ আৰুষ্ঠ क्तिए भातिए। पृष्ठीख्यक्रभ वना यात्र, मत्रकात यनि বসিরহাটে প্রতিষ্ঠিত কলেকের উন্নতিবিধান করিতেন, ভবে আবার কয় মাইল মাত্র দূরবন্তী টাকী নগরে কলেজ প্রতিষ্ঠার সার্থকতা থাকিত না। একটু অমুদন্ধান করিলেই (एथा याहेरव—সরকারের নৃতন নাতিতে যে সকল নৃতন কণেক প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে, সে সকলে আশাহরণ ছাত্র পাওয়া যায় নাই। ইহা অবশ্রস্তাবী। জলপাইগুড়ীতে ষে কলেৰ আছে, তাহাতে ছাত্ৰ ও ছাত্ৰী অধ্যয়ন করে। किइ मिन शूटर्स छथांत्र निम्हिम्बटकत्र अथान-महिरवत अमरन

একটি অপ্রীতিকর ঘটনা ঘটিয়াছিল—সেইজন্ত কলেজ এখনও উপযুক্ত পরিমাণ সাহায্য লাভে বঞ্চিত আছে, অথচ ঐ সহরেই একটি স্বতন্ত কলেজ নারীদিগের জন্ত প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং তাহাতে ছাত্রীর সংখ্যা উল্লেখের অযোগ্য হইলেও তাহাতে সরকারী সাহায্য অকুণ্ঠভাবে প্রদত্ত হইতেছে।

বিভাবিন্তারে সভ্য সরকারের আগ্রহ স্বাভাবিক।
কিন্তু সেই আগ্রহ যদি বিচার-বিবেচনা উপেক্ষা করে,
তবে তাহাতে অভিপ্রেত ফললাভ হয় না। বিশেষ
পশ্চিমবঙ্গে—কারীগরী শিক্ষার, চিকিৎসা শিক্ষার ও
এঞ্জিনিয়ারিং শিক্ষার প্রয়োজন আজ যে কত অধিক
তাহা আর কাহাকেও বলিয়া দিতে হইবে না। যখন
কেন্দ্রী সরকার পূর্ববিঙ্গ হইতে আগত হিন্দুদিগের বিষয়
বিবেচনা করিয়া কলিকাতার বাহিরে কলেজ প্রতিষ্ঠার জস্ত
৭০ লক্ষ টাকা দিয়াছেন, তখন সে অর্থে বাহাতে
বাকালীরা সর্ব্বাপেক্ষা অধিক উপকার লাভ করিতে পারে,
সে বিষয়ে অবহিত হওয়া প্রয়োজন।

কি কারণে মফ:স্বলে কলেজ থাকিলেও কলিকাতার ছাত্রসমাবেশ এত অধিক হয়, কেন মফ:স্বল কলেজের অধ্যাপকগণ কলিকাতার কলেজে কাজ করিবার জ্ঞান্ত্রতা প্রকাশ করেন—দে সকল বিশেষভাবে বিবেচনা করিয়া দেখিলে হয়ত অনেক কলেজ প্রতিষ্ঠিত হইত না—
ন্তন কলেজগুলির স্থায়িত্ব সম্বন্ধে যদি সন্দেহ অনিবার্য্য হয়, তবে সেগুলিতে যে অর্থ প্রাদত্ত হইবে তাহা অপব্যব্রিত না হইলেও মিত্রায়িতার বিরোধী হইত না

আমরা আশা করি, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সহিত পরামর্শ করিয়া—রাজনীতিক কারণ-নিরপেক্ষ হইয়াই পশ্চিমবঙ্গ সরকার কেন্দ্রী সরকারের নিকট হইতে প্রাপ্ত গ• লক্ষ টাকা বায় করিতেছেন ও করিবেন এবং স্থানীয় অবস্থা বিবেচনা করিয়া ও কলেজের স্থায়িত-সম্ভাবনা বিচার করিয়া সাহায়্যালানে অগ্রসর হইবেন। এই প্রসঙ্গে আমরা পুনর্ব্বস্তি-কেন্দ্র ও নিকটবর্ত্তী কলেজের বিষয় বিবেচনা করার প্রয়োজন সরকারকে স্মরণ করাইয়া দিতে ইচ্ছা করি। বাহাতে পুরাতন প্রতিষ্ঠিত কলেজগুলির উন্নতি না হইয়া ক্ষতি হইতে পারে এমন ব্যবস্থা অবলম্বন করা কথনই শিক্ষাবিতারের সহায় হইতে পারে না।

সাংবাদিকভা শিক্ষা—

সাংবাদিকতা শিক্ষার জন্ম বিশ্ববিভালেরে ব্যবস্থা থাকা সক্ষত কি না, এই প্রশ্ন বহুদিন হইতে জিজ্ঞাসিত হইয়া আসিয়াছে। ১৮৯০ খৃষ্টাকে আমেরিকার কোন কলেজের অধ্যক্ষ খৃইং—কয়জন সম্পাদকের মত লইয়া বলেন, তাঁহারা কেহই সাংবাদিকতা শিক্ষার জন্ম অতন্ত্র ব্যবস্থা সমর্থন করেন না; কারণ, তাঁহাদিগের মত এই যে, সাংবাদিকের কার্য অনুশীলনের ঘারা শিক্ষনীয়।

কয় বৎসর হইতে কতিপয় সাংবাদিক কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ে সাংবাদিকভার পঠন-পাঠনের ব্যবস্থা করিবার জ্বন্ত আন্দোলন করিতেছিলেন। গত ৩রা অক্টোবর হইতে বিশ্ববিভালয়ে সে. ব্যবস্থার আরম্ভ হইয়াছে।

যে দিন কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ে সাংবাদিকতা-শিক্ষাদান আরম্ভ হয়, তাহার পর্দিন পশ্চিমবঙ্গের ব্যবস্থা পরিষদে প্রধান সচিব একটি প্রশ্নের উত্তরে বলেন-পশ্চিমবঙ্গ সরকার কোন (প্রত্যক্ষভাবে) অর্থসাহায্য প্রদান করেন না; কেবল যে সকল সংবাদপত্তে সরকারী বিজ্ঞাপন প্রকাশ সরকারের পক্ষে সাহায্যকর মনে করেন, সেই সকল পত্তে (মৃল্য দিয়া) विख्वांशन क्षकांत्मत वावष्टा करतन। हेरति एक मामन-কালে সরকার একদিকে সংবাদপত্র সম্বন্ধীয় আইনের ভয় ও অপরদিকে বিজ্ঞাপনের জন্ত মূল্যদানের প্রলোভন দেখাইয়া সংবাদপত্ৰকে প্ৰভাবিত করিবার CES1 করিয়াছিলেন।

কলিকাতা বিশ্ববিতালয়ে সাংবাদিকতা শিক্ষার আরম্ভ হইবার কয়দিন পরে— १ই অক্টোবর প্রধান-সচিব ঐ ব্যবস্থার "উদ্বোধন" করেন! রাজনীতিক ব্যাপারে পদস্থ ব্যক্তিদিগকে মত প্রকাশের স্থযোগ দানের জ্বন্ত এরপ ব্যবস্থার স্থবিধা দেওয়া হয়। এক্ষেত্রে তাহাই করা হইয়াছিল কি না, বলা বায় না।

সে বাহাই হউক তাঁহার বক্তৃতায় পশ্চিমবঙ্গের প্রধান সচিব বলেন—

সংবাদপত্রের স্বাধীনতা সম্বন্ধে অনেক কথাই বলা
ক্ইয়াছে। তিনি কিন্তু লক্ষ্য করিয়াছেন, কিনে সংবাদ-

পত্রের প্রচার-বৃদ্ধি হয়, সেই দিকে লক্ষ্য রাখিরা সময়
সময় সংবাদপত্র লিখিত হয়। তাহা ভয়াবহ। সেইজয়
রাষ্ট্রের স্বার্থ বিবেচনা করিয়া তিনি মনে করিতেছেন—
যে সকল সংবাদপত্র কোন বিশেষ সংবাদের সভ্যাসভ্য
নির্দ্ধারণে অধিক সময় বায় করিবেন এবং প্রবন্ধ রচনায়
সঠিক উত্তম প্রযুক্ত করিবেন, সরকার তাঁহাদিগকে অর্থসাহায্য দিবেন।

আজ পশ্চিমবঞ্চের প্রধান-সচিব প্রকাশভাবে যে ব্যবস্থা করিবার কথা বলিতেছেন, গোপনে সেই ব্যবস্থার কোন কোন সংবাদপত্র প্রভাবিত হইয়াছেন সন্দেহ করিয়া একদিন শরংচন্দ্র বস্থ এক বক্তৃতা করিয়াছিলেন এবং তথনও সেরূপ কার্য্য সংবাদপত্রের পক্ষে নিন্দনীয় বলিয়া বিবেচিত হইত।

আজ কি সে অবস্থার পরিবর্ত্তন হইয়াছে যে, সংবাদ-পত্রের পক্ষ হইতে এই উক্তির কোন প্রতিবাদ ধ্বনিত হইল না ?

কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের ভাইস-চান্সেলার রূপে
আগুতোষ মুখোপাধ্যায় বলিয়াছিলেন—স্বাধীনতা চাহি,
স্বাধীনতা ব্যতীত আমি সম্ভট হইতে পারি না। সংবাদপত্র ব্যক্তিস্বাধীনতার—বিশেষ আঁমেরিকার রাষ্ট্রপতি
ক্ষকভেন্ট আটলান্টিক চার্টারে যে চতুর্বিধ স্বাধীনতা কাম্য বলিয়াছিলেন সে সকলের মধ্যে মত-প্রকাশ স্বাধীনতার
জন্মই এত দিন সংগ্রাম করিয়া আসিয়াছেন। আজ কি ভারতের জাতীয় সরকার সংবাদপত্রের সেই মনোভাবের পরিবর্ত্তন সাধনে প্রচেষ্ট হইবেন—সংবাদপত্রের
কর্ত্তবার পৃত আদর্শ নষ্ট করিয়া রাষ্ট্রের স্বার্থের আদর্শই
প্রবল করিতে চাহিবেন ? কিছু রাষ্ট্রের স্বার্থ ও সচিবসভ্যের স্বার্থ অভিন্ন না-ও হইতে পারে; কারণ,
রাষ্ট্র স্থায়ী, সচিবসজ্য অস্থায়ী এবং সাংবাদিকরা রাষ্ট্রের
স্বার্থ সম্বন্ধ সচিবদিগের অপেক্ষাও অবহিত হইতে
পারেন।

খালাভাব–

সন্মিলিত জাতিসভেব ভারত সরকারের হায়ী প্রতিনিধি
মিষ্টার বি, এন, রাও গত ২২শে অক্টোবর আমেরিকার
নিউ ইয়র্ক নগরে বক্তৃতা-প্রসঙ্গে বলিয়াছেন—

ভারতের লোকের বিশাস, পৃথিবীর জনগণের অন্নাভাব ও মাহ্মবের অযোগ্য জীবনধারণের মানই আজ শান্তির সর্ববিপ্রধান শক্ত।

বোধ হয়, তাঁহার স্বদেশের অবস্থা বিবেচনা করিয়াই তিনি এই উক্তি করিয়াছিলেন। কারণ গত ৩ বৎসরেও ভারতের সরকার—জাতীয় সরকার—ভারতের অন্নাভাব দূর করিতে পারেন নাই—ভারতবাদীকে থাত বিষয়ে স্বাবলম্বী করিবার উপায় করিতে পারেন নাই। প্রতি বৎসর বিদেশ হইতে থাজোপকরণ ক্রয়ে ভারতের বহু অর্থ ব্যয়িত হইতেছে—যে অর্থ দেশবাদীর মধ্যে থাকিবার কথা, তাহা বিদেশে বাইতেছে—দেশের রক্ত শোষিত হইতেছে। অর্থাৎ ভারত সরকারের ^eথাতোপকরণ বন্ধিত করার" নীতি ব্যর্থ হইয়াছে। व्यथान मन्त्री পণ্ডिত জও इत्रलांल निरुक् व्यथाम मनार्भ বলিয়াছিলেন, যাহাই কেন হউক না ১৯৫১ খুষ্টাব্দের পরে ভারত সরকার আর বিদেশ হইতে থাতোপকরণ व्यामनानी कतिर्वन ना। किन्छ कृत्र मान शहरू ना ষাইতেই ভারত সরকারের খাত্ত-মন্ত্রীর মারফতে সে কথা প্রত্যাহার করিয়া বলিতে হইয়াছে ১৯৫১ খৃষ্টাব্দ নহে-১৯৫২ খুষ্টাব্দের পরে ভারত সরকার আর বিদেশ হইতে খাতোপকরণ আমদানী করিবেন না।

ঠিক সেই ভাবেই পশ্চিমবঙ্গের থাত-সচিব—"আমরা বিপদ অভিক্রম করিয়াছি, আর থাতের অভাব হইবে না" বলিবার কয় মাস পরেই—গত ২০শে অক্টোবর বলিরাছেন—পশ্চিমবঙ্গের থাত-সঙ্কট এখনও পূর্ণমাত্রায় রহিরাছে—পশ্চিমবঙ্গের অধিবাসীরা বেন প্রয়োজন হইলে চাউল বর্জ্জন করিয়া গম ব্যবহার করিতে প্রস্তুত থাকেন। আমেরিকা হইতে চিনা বা কাওন জাতীয় থাসের বীজ কিনিয়া আনিবার পরেও এই কথা।

আর বিহারে অনাহারে মৃত্যুর সংবাদ ভারত সরকারের থাত-মন্ত্রী অধীকার করিয়াও এমন মৃত্যিনা করিতে পারেন নাই যে, মৃত্যু-সংবাদ মিথ্যা বলিয়া প্রতিপন্ন হইতে পারে। এখন বিহারে ক্রত থাতোপকরণ প্রেরণ করা হইতেছে। যথাকালে তাহা করিলে লোক মৃত্যুমুথে পতিত হইত না।

আসামে প্রাকৃতিক হুর্যোগে অরাভাব।

রাজাগোপালাচারী সরস ও মৌলিক উজির জন্ত বিখ্যাত। তিনি বলিয়াছেন, যদি গক্ষ ও ছাগল খাস ও পাতা খাইয়া দেহ গঠিত করিতে ও উৎকৃষ্ট হুধ দিতে পারে, তবে বিজ্ঞানের স্থবিধা পাইয়াও আমরা কেন খাস ও পাতা আহার্য্যে পরিণত করিতে পারিব না? একবার বাঙ্গালায় অয়কষ্টের সময় ছোট লাট সার চার্ল্স ইলিয়ট বলিয়াছিলেন, দেশে খাসের মূল থাকিতে লোক অয়কষ্ট পায় কেন? রাজাগোপালাচার মূল হইতে খাস ঘাসে উঠিয়াছেন।

কিন্তু কেইই অভাবের মূল কারণ দূর করিবার উপায় করেন নাই। রুসিয়া যে উপায়ে থালুশস্তের ফলন বর্দ্ধিত করিয়াছে, তাহা লক্ষ্য করিলে একথা কিছুতেই অস্বীকার করা যার না যে, এদেশে থাল শস্তের ফলন বৃদ্ধি করিতে অক্ষমতা অযোগ্যভার পরিচয় ব্যতীত আর কিছুই নহে।

অল্পদিন পূর্বে বিখ্যাত বৈজ্ঞানিক ডক্টর জ্ঞানচন্দ্র ঘোষ পরোক্ষভাবে এই কথাই বলিয়াছিলেন। তিনি বলিয়াছিলেন, পশ্চিমবঙ্গের কৃষি বিভাগের বার্ষিক ব্যয় ২ কোটি ৫ • লক্ষ টাকা—এই টাকার বিনিময়ে দেশবাসী কি পাইতেছেন? তিনি আরও বলেন, কোন কোন প্রদেশ ভারত সরকারের নিক্ট হইতে অর্থ লইয়া সেচের জন্ম নলকৃপ করিয়াছেন—প্রত্যেক নলকৃপের জলে জ্মীতে একের স্থানে তুই ফশল ফলিতেছে; পশ্চিমবঙ্গ সরকার তাহাও করেন নাই।

এখনও অনেক আবাদযোগ্য জমী "পতিত" রহিয়াছে এবং সেচের অভাব দূর করা হয় নাই।

গত ২ওশে অক্টোবর দিলীতে সেচ-বোর্ডের পরিচালকমণ্ডলীর বার্যিক অধিবেশনে সর্দার বলভভাই পেটেল
নদীর জল নিয়ন্ত্রিত করিয়া ক্রুষির উন্নতিসাধন ও শিল্প
প্রতিষ্ঠার কথা বলিয়াছেন। তিনি তাঁহার বক্তৃতার
বিশেষজ্ঞদিগকে ভগীরথের দৃষ্টান্ত অনুসরণ করিতে বলিয়াছেন। কিন্তু সে কথায়ও নৃতনন্ত নাই। কারণ ২০
বংসরেরও অধিক কাল পূর্বে বিখ্যাত সেচ-বিশেষজ্ঞ
সার উইলিয়ম উইলকক্স কলিকাভায় আসিরা যে বক্তৃতা
করেন, তাহাতে তিনি ভগীরথের গঙ্গা আনয়ন খাত
কাটিয়া জল প্রবাহ প্রবাহিত করার রূপক বলিয়া মত
প্রকাশ করিয়াছিলেন।

কিছ ভারত সরকার কত দিনে ভগীরথের মত কাজ করিতে পারিবেন? সার উইলিয়ম বলিয়াছিলেন— দৃচতাপূর্ব হৃদরমাত্র ভগীরথের সম্বল ছিল। ভারত সরকারের সেই অমূল্য সম্পদ আছে কি ?

পূর্ব্বোক্ত অধিবেশনে কেন্দ্রীয় সেচ-বোর্ডের সভাপতি
মিষ্টার মাথরাণী বলিয়াছেন—

কাগকে প্রায় ১শত ৬০টি সেচ পরিকল্পনা রহিয়াছে।
সেগুলি কার্য্যে পরিণত করিতে আফুমানিক ব্যয়—এক
হাজার ২শত ৭৯ কোটি টাকা—হইবে। আর ঐগুলি
কার্য্যে পরিণত হইলে প্রায় ৯ কোটি ৩৬ লক্ষ বিঘা
জমীতে সেচ করা যাইবে—ফলে ১ কোটি ৩ লক্ষ টন
অধিক ফশন উৎপন্ন হইবে। আর পশ্চিম বন্দ, বিহার,
উত্তর প্রদেশ, উড়িয়া, মালাজ ও বোদ্মাই যেমন বলার
উপদ্রব হইতে অব্যাহতি পাইবে তেমনই বিহাৎ ব্যবহারের
স্কর্যোগ পাইবে।

ইহা যে শুনিতে ভাল, তাহা বলা বাহলা। কিন্তু কত দিনে ও কি উপায়ে ঐ অর্থ সংগৃহীত হইবে? যেমন থাজোপকরণে আমাদিগের পরমুখাপেক্ষিতা যুদ্ধ আরম্ভ হইলে বিষম বিপদে পরিণত হইতে বিলম্ব ঘটিবে না, তেমনই দেশের লোকের দারিদ্রা প্রশমিত না হইলে তাহাদিগের অধিক করপ্রদানের ক্ষমতা হইবে না। কেবল তাহাই নহে, লোক যত দিন পূর্ণাহার না পার, ততদিন তাহার দৌর্বলা বর্দ্ধিত হয় এবং আমক্ষমতা হ্রাস পায়। সে অবস্থায় তাহার দারা উৎপাদন বৃদ্ধির আশা ভ্রাশা ব্যতীত আমার কিছুই নহে।

পশ্চিমবঙ্গের প্রধান-সচিব বিধানচক্র রায় অভিজ্ঞ চিকিৎসক। তিনি প্রধান-সচিব হইবার অব্যবহিত পরেই বিদ্যাছিলেন, তাঁহার মত এই যে, স্কন্থ মান্তবের পক্ষে দৈনিক (অন্তঃ) ১৬ আউন্ধ থাত প্রয়োজন। প্রায় ও বৎসরে কিন্তু তাঁহার সরকার সে প্রয়োজন মিটাইতে পারেন নাই! পশ্চিমবন্ধ সরকার কলিকাতায় ভূগর্ভে রেল পথ প্রতিষ্ঠা সম্ভব কি না সেই পরীক্ষায় অনেক টাকা ব্যায় বা অপব্যয় করিয়াছেন, কিন্তু ভূমি হইতে অধিক শক্তোৎপাদনের উপায় করিতে পারেন নাই। সেদিনও পশ্চিমবঙ্গের প্রদেশপাল আক্ষেপ করিয়াছেন, পশ্চিম বঙ্গের আর্থিক অবস্থা শোচনীয়। সেই অবস্থায় সরকারের

প্রথম ও প্রধান কর্ত্তব্য —লোকের অরাভাব দ্রীকরণের উপায় অবলমন; না রাজধানীতে বিলাদের ব্যবস্থা করা? বিদেশী বিশেষজ্ঞদিগের পরীক্ষাফল—পশ্চিমবঙ্গে ছাত্র-দিগের মধ্যে শতকরা প্রায় ৬১ জনের দেহে যক্ষার বীজ রহিয়াছে। যক্ষা কি অপূর্ণাহারজাত হইতে পারে না?

আমরা পশ্চিমবকে যে অয়াভাব লক্ষ্য করিতেছি, ভারত রাষ্ট্রের প্রান্ন সর্বাত্র তাগা বিজ্ঞমান। নিয়য়ণ ব্যবস্থা — যদি ত্নীতিহৃষ্ট না হয় তাগা হইলেও—এই সমস্থার সীমারেথাও স্পর্শ করিতে পারে না। অথচ অয়'ভাবজ্ঞনিত সমস্থার সমাধানই সর্বাত্রে ও সর্বপ্রথম প্রয়োজন। সেকার্যা পরিকল্পনার ঘারা হইতে পারে না—পরিকল্পনা কার্য্যে পরিণত করা বাতীত উপায় নাই। সেজস্থ লোকের যে সহবোগ প্রযোজন, তাগা লাভ করি বার উপায়ও সরকারকে চিন্তা ও অবলম্বন করিতে হইবে।

পশ্চিমবন্ধ পরিদর্শন—

কংগ্রেসের সভাপতি পুরুষোত্তমদাস ট্যাণ্ডন ও ভারত রাষ্ট্রের রাষ্ট্রপতি ডক্টর রাজেন্দ্রপ্রসাদ পশ্চিমবঙ্গ পরিদর্শনে আসিয়াছিলেন। কেহই সমস্ভাবছল পশ্চিমবলের কোন সমস্তার সমাধানে সাহায্য করেন নাই। কেহই পশ্চিম বঙ্গের আর্থিক অবস্থা বিবেচনা করিয়া অস্তার্থনার আড়ম্বরে অর্থব্যয়ে আপত্তি করেন নাই। ধর্মনিরপেক্ষ রাষ্ট্রে তুর্গোৎদবে রাজ্পথে তোরণ নির্মাণে আপতি হইলেও ইহাদিগের আগমনে তাহা নির্মাণে আপত্তি হয় নাই। সাজসজ্জায় যে অর্থ ব্যয়িত হুইয়াছে, তাহা যে বাস্তহারা-দিগের জন্ত শীতবল্পের জন্ত ব্যয়িত হয় নাই, সে কথা বলা বাহলা। ভক্তর রাজেন্দ্রপ্রসাদের পরিদর্শন নিয়মাহুগ-ইংরেজ গভর্ণর-জেনারলরা এই নিয়মের প্রবর্ত্তন করিয়া गिशोरहन—जाहा পরিবর্ত্তিত হয় নাই। পুরুষোত্তমদাদ ট্যাগুনকে নির্বাচনে যে দল সমর্থন করিয়াছিলেন, পশ্চিম বক্ষে কংগ্রেদের দেই দলই প্রাধান্ত লাভ করিয়াছেন— স্তরাং তাঁহারাই তাঁহার জয়ধাতার আয়োজন করিয়া-ছিলেন এবং তাঁহাদিগেরই ব্যবস্থায় তিনি নিমন্ত্রণ গ্রহণ করিলেও জাতীয়তার জনক হরেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের স্থৃতিপূত ভারত সভার সম্বর্জনায় ৮ মিনিটের অধিক সময় ব্যয় করিতে পারেন নাই—অক্সান্ত সম্প্রনায় অনেক সময়

দেওয়া সম্ভব হইয়াছিল। সেই সকল অফুষ্ঠানের একটি— हिन्ती সাংবাদিক ও কবি বালমুকুন্দ গুপ্তের স্মরণোৎসব। সেই সভায় পুরুষোত্তমদাস তুলনায় স্মালোচনা করিয়া মত প্রকাশ করিয়াছিলেন-ছিন্দী সাহিত্যই রত্ন, ভারতের অক্সান্ত ভাষার সাহিত্য কাচ মাত্র এবং রবীক্রনাথের কবিতা কবিরের ভাবের প্রতিধ্বনি ব্যতীত আর কিছুই নহে। কিছ ডক্টর রাজেলপ্রসাদ যেমন বাকালায় শিক্ষালাভ করিতে আসিয়াছিলেন—কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের ছাত্র, বালমুকুন্দ গুপ্ত তেমনই হিন্দী সংবাদপত্তের কাজ শিথিবার জম্ম বাদালায় আসিয়া বাদালী গুরুর কাছে শিক্ষালাভ করিয়া গিয়াছিলেন। তথন 'হিন্দী বন্ধবাসী' সমগ্র ভারতে সর্ব্বপ্রধান হিন্দী সংবাদপত্র; আর অমৃতলাল চক্রবর্ত্তী তাহার সম্পাদকরণে সর্বত সমাদৃত। বালমুকুন্দ গুপ্ত যে তাঁহারই সহকারী হইয়া কলিকাতায় আসিয়া সংবাদপত্তের পরিচালন শিক্ষা করিয়া গিয়াছিলেন—সে কথা স্মরণ করিতে পারেন, এমন বাঙ্গালী এখনও জীবিত আছেন। রবীন্দ্রনাথের সম্বন্ধে পুরুষোত্তমদাস ট্যাণ্ডনের মতের মূল্য যে व्यक्षिक नरह छोहा मन्न क्रिल "व्यन्तांध" हहेर्त ना । कांत्रन একণা অস্বীকার করিবার উপায় নাই যে, এপর্যাস্ত যে ৩ জন ভারতীয় বিশাল বিখের সভ্যদেশে ভারতীয় সংস্কৃতির শ্রেষ্ঠত্ত প্রতিপন্ন ও প্রচার করিয়া গিয়াছেন, তাঁহারা-ভারতের রাষ্ট্রদৃত নহেন—সংস্কৃতি দৃতরা—৩ জনই বাঙ্গালী। त्म अस्त-ताका त्रामरमाहन त्रात्र, श्वामी विरवकानन्त्र, রবীক্রনাথ ঠাকুর। পুরুষোত্তমদাস ট্যাণ্ডন কংগ্রেসের দলাদলির আবর্ত্তে পড়িয়া ভারতে যে নৃতন প্রাদেশিক দলাদলির প্রভাব প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন, তাহা তঃথের বিষয় সন্দেহ নাই। ভারতে স্বায়ত্ত-শাসন প্রতিষ্ঠার পরে কংগ্রেসের সহিত সরকারের সম্বন্ধ কি, তাহাও কেহ কেহ ভিজ্ঞাসা করিতেছেন। অথচ আমরা দেখিতে পাইতেছি, প্রধান মন্ত্রী পঞ্চিত জওহরলাল নেহকর সমর্থিত প্রার্থীকে পরাভূত করিরা অন্ত দলের সমর্থিত পুরুষোত্তমদাস এবার কংগ্রেদে রাষ্ট্রপতি নির্বাচিত হইয়াছেন—অথচ তিনি পণ্ডিত জ্বওহরলালের কংগ্রেসের পরিচালন সমিতিতে যোগদানে অস্বীকৃতি অতিক্রম না করা পর্যান্ত অর্থাৎ জাঁহাকে বাদ দিয়া সমিতি গঠিত করিতে সাহস করেন নাই। সে বিবরে মিটার আবুল কালাম আলাদ এখান মন্ত্রীর

পদাকাত্মসরণ করিয়াছেন। পশ্চিমবঙ্গ কংগ্রেস কমিটী রাষ্ট্রপতি রাজেন্দ্রপ্রসাদের সম্বর্জনারও ত্রুটি করেন নাই।

ভিকাতে চীনের অভিযান—

আসামে যাইয়া ডক্টর রাজেন্দ্রপ্রসাদ রাজনীতিক হিসাবে আসামের গুরুত্ব সম্বন্ধে আসামবাসীদিগকে সচেতন করিবার উদ্দেশ্যে বলিয়াছেন, তাহার দীমান্তে পররাষ্ট্র-ভিব্বত ও পাকিন্তান। তিব্বতের শান্তিত্যোতক নহে। ইংরেজ কথন তিব্বতে চীনের অধিকার অম্বীকার করেন নাই-বর্ত্তমান ভারত সরকারও সেই মত অকুগ্ল রাখিয়াছেন। লর্ড কার্জন যখন ভারতের বড়লাট, তথন তিনি তিবেতে সেনাদল প্রেরণ করিয়াছিলেন। তিনি ক্লশিয়াকে তিব্বতে প্রভাব বিস্তার করিতে দিবেন না এবং তিব্বতের সহিত ভারতের বাণিজ্ঞা-বিস্থারের ব্যবস্থা করিবেন বলিয়া ভিব্বত আক্রমণ করিয়াছিলেন। ফলে ভারতের উত্তর-পূর্ব সীমান্তে অশান্তির উত্তব হইয়াছিল। সঙ্গে সঙ্গে ভিকাতে চীনের প্রাধান্ত স্বীকৃত ও দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। এখন চীনে ক্মানিষ্ট প্রাধান্য প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং চীন ক্লিয়ার সহিত "এক নায়েতে" আরোহী। চীন এখন ডিক্সতের জনগণকে সামাজ্যবাদীর প্রভাবমুক্ত করিতে ক্রতসঙ্কর হইয়াছে। ইহার অর্থ কি, তাহা লইয়া মতভেদ থাকিতে পারে। কারণ, যদিও অক্টোবর মাদের প্রথম ভাগে চীনের প্রধান মন্ত্রী চৌ-এন-লাই বলিয়াছিলেন শান্তিপূর্ণ ভাবেই—অর্থাৎ বিনা অস্ত্রাঘাতে তিব্বতের সমস্তার সমাধান হইবে—ইহাই চীন সরকারের আশা এবং যদিও পিকিংযাত্রী তিব্বতীয় দূতগণ দিল্লীতে ভারত সরকারের সহিত আলোচনারত ছিলেন এবং সেই জন্ম ভারত সরকার চীনের তিব্বতে সেনাবল প্রেরণের সংবাদে আন্তান্তাপন করেন নাই—তথাপি চীনা সংবাদে প্রকাশ-চীনের ক্য়ানিষ্ট সরকারের সেনাদলকে তিব্বতে প্রবেশ করিতে আদেশ দান করা হইয়াছে। চীনের সহিত তিবতের সম্বন্ধ তাহাদিগের "পারিবারিক ব্যাপার" একথা চীন সরকার বলিয়াছেন, তথাপি ভারত সরকার এই ব্যাপারে—নিরপেক্ষতা প্রদর্শন করিতে পারিতেছেন না।

পিকিংএ ও গাসায় কেবল ভারত সরকারেরই প্রতি-

নিধি আছেন। তথাপি ভারত সরকার যখন বেতারে সংবাদ জানিবার চেষ্টা করেন, তখন ভারত সরকার কোন উত্তর পাইবার পূর্বেই রুশিয়ার সংবাদপত্রে প্রকাশিত হয়, চানের ক্য়ানিষ্ট বাহিনী তিব্বতে প্রবেশ করিতে আদিষ্ট হইয়াছে। শেযে পিকিংএ ভারতের রাষ্ট্র-দৃত সন্দার পানিকার ঐ সংবাদ সমর্থন করেন। কোন রাষ্ট্র যদি তিব্বতকে চীন-বিরোগী কার্য্যের ঘাটিরূপে ব্যবহার করে, তবে চান ভাহাতে আপত্তি করিলে—ভাহা তাহার পক্ষে অন্যায় হয় না; কারণ তিব্বত চীনের প্রভাবাধীন।

এ দিকে তিকতে এক দল যেমন দালাই লামার, আর

এক দল তেমনই পঞ্চম লামাদিগের পক্ষাবল্ধী; স্তরাং

অযোগ্য মেনাবল লইয়া তিকতের পক্ষে চানা বাহিনীর
গতিরোধ করা সন্তব ইইবে না। সেই জন্ম চীনা
বাহিনী তিকতে প্রবেশ করিবে, এই সংবাদে তিকতের
রাজধানীতে বিশেষ চাঞ্চল্যের ও ভীতির সঞ্চার
ইইয়াছে। পঞ্চম লামার বয়স এয়োদশ বর্ষ মাত্র—ভিনি
এখন ভিবেত-চীন সীনান্তের নিকটে ক্য়ানিষ্টাদগের

ক্ষণাধীন। যদি ক্য়ানিষ্ট বাহিনী প্রবেল হয়, সেই ভয়ে

দালাই লামা প্রধান ক্র্যাচারীদিগকে লইয়া রাজধানী
ত্যাগ ক্রিয়াছেন। তাঁহারা বৃটিশ সরকারের আ্র্যাভাভ
ক্রিবেন কি না, তাহা বলা ধায় না।

হয় ত তিবেতই বিশ্বযুদ্ধে ইন্ধন যোগাইয়া যুদ্ধ বিস্তারের কারণ হইবে। কারণ, বর্ত্তমানে সামাজ্যবাদ ও ক্যুনিজ্ম পরস্পরের সহিত শক্তি-পরীক্ষার আয়োজনে ব্যস্ত।

তিবত সম্পর্কে "মধোগ্য" দলের উপর আস্থা স্থাপন করায় কোন কোন আমেরিকান পত্র ভারতের প্রধান মন্ত্রী পণ্ডিত জ্বওহরলাল নেহরুর নিন্দা করিতেছেন। অবচ আমেরিকাই তাঁহার প্রশংসাবাদ করিয়া আসিয়াছেন। ভবে—

> "বড়র পীরিতি বালির বাঁধ ক্ষণে হাতে দড়ী ক্ষণেকে চাঁদ।"

সম্মিলিভ জাভিসঞ্ছ–

সন্মিলিত জাতিসভ্য গত বিশ্বস্কোর পরে "লিগ অব নেসন্সের" চিতাভ্যের উপর প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল। উভয়েরই উদেশ্র— "সহস্র বৎসর উৎকট বিগ্রহ-উত্তাপে ধরণী জ্বরা, সহস্র বৎসর শান্তির সলিলে শান্তল হউক ধরা।"

"লিগের" উদ্দেশ্য সফল হয় নাই। তাহার প্রতিষ্ঠা-কালেই ঐতিহাসিক ওয়েল্স বলিয়াছিলেন— যুক্তরাষ্ট্রের রাষ্ট্রপতি যুদ্ধান্তে পৃথিবী গণতদ্বের জন্ত নিরাপদ করিতে আসিয়া তাহা ভণ্ডামীর জন্ত নিরাপদ করিয়া যে প্রতিষ্ঠান প্রতিষ্ঠিত করিলেন, তাহা বাঁচিবে কি না, সন্দেহ। নৃত্ন প্রতিষ্ঠান সন্মিলিত জাতিসত্য সম্বন্ধেও তাহাই বলিতে পারা যার।

"লিগ" রুরোপের কয়টি প্রধান দেশের প্রভাবে প্রভাবিত ছইয়াছিল, সন্মিলিত জাতিসজ্যে আমেরিকার প্রভাব স্থাপ্ট। সম্প্রতি ইয়ার জন্মোৎসবে পৃথিবীর নানা দেশে উৎসবাস্টান হইয়াছে। সেই উপলক্ষে আমেরিকার রাষ্ট্রপতি টুম্যান বলিয়াছেন:—

"আজ যথন যুদ্ধের ভয় পৃথিনীতে ব্যাপ্ত, তথন আনেরিকার যুক্তরাষ্ট্রে আমারা যুদ্ধ অনিবার্থ্য মনে করি না—মনে করি, যুদ্ধ নিবারিত হইতে পারে। যুদ্ধ নিবারণে সম্মিলিত জাতিসভ্য বিবিধ কাজ করিতে পারেন:—

- (১) শান্তিপূর্ণ উপায়ে আলোচনার **ছা**রা বিভিন্ন জাতির মধ্যে বিবাদ-নীমাংসা।
- (২) বে সকল জাতি সজ্মের সমস্য তাহাদিগের সমবেত শক্তি প্রযুক্ত করিয়া আক্রমণ নিবারণ।
- ভ্রাক্রমণের ভয় দ্র হইলে জাভিসম্হের রশসজ্জার বায়সকোচ।"

তিনি বলিয়াছেন—সন্মিলিত জাতিদত্মকে আন্তর্জাতিক বৃদ্ধ নিবারণ করিবার জন্ত মীমাংসার মত বলপ্রয়োগের জন্ত প্রস্তুত থাকিতে হইবে।

এই উক্তি জাতিসমূহকে—জাপাততঃ—সমরায়োজনে ব্যাপৃত করিবে! সে অবস্থায়—যথন কোথাও বারুদের তুপ থাকে তথন—তাহাতে অগ্লিফুলিঙ্গপাতে কি ঘটিতে পারে, তাহা বলা যায় না। স্থতরাং শান্তি যে স্থায়ী হইবেই এমন বলা সম্ভব নহে।

কোরিয়ায় ভাহাই প্রতিপন্ন হইয়াছে এবং কোরিয়ার

তৃই অংশে বুদ্ধে সে ভাবে—নির্বিদ্ধতা পরিষদের অন্তমাদনের অপেক্ষানা রাখিয়াই—আমেরিকা এক পক্ষ অবলম্বন করিয়াছে এবং পরিষদ, পরে তাহার নীতির সমর্থন করিয়াছে, তাহাতে জাতিসভেবর গঠন যে গণভাস্তিক নীতির অন্তমোদিত তাহাও বলা বায় না।

ভারতবর্ধে সরকার ইংলগু ও আমেরিকার—আংলোআমেরিকান ব্লকের সমর্থক এবং সেই জ্বন্ত ঐ দেশবয়ে
আদর লাভ করিয়াছেন—ঠাঁহারা ভারতের প্রধান মন্ত্রীর
রাজনীতিক বৃদ্ধির প্রশংসাই করিয়া আসিয়াছেন।
কিন্তু যে মূহুর্ত্তে ভারত সরকার সজেব ক্য়ানিষ্ট চীনের
প্রতিনিধি গ্রহণের প্রতাব সমর্থন করিয়াছেন, সেই মূহুর্তে
সে প্রশংসা নিন্দায় পরিণত ইইয়াছে!

প্রশাস পরিকৃতি ইইয়া ভারত সরকার যথন কাশীর সমপ্রার সমাধান জলু জাতিসভ্যের মধ্যস্থতা বাচ্ঞা করিয়াছিলেন, তথ্য সার সপ্তাহকাল মধ্যে ভারত সরকারের সেনাবল অন্যোসে কাশীর অধিকার করিতে পারিত। কিন্তু মধ্যস্তা প্রার্থনা করায় কাশারের সম্পার সমাধান হওয়া ত পরের কথা, জটিলতা-বৃদ্ধিই ইইতেছে। স্তরাং জাতিসভ্যের দারা ভারত রাষ্ট্র উপত্বত ইইয়াছে কিনা, সন্দেহ।

আবার কোরিয়ায় আমেরিকান সেনাদলের পূর্ব্ধনিদিষ্ঠ
সীমা লজ্মনে বিশ্বয় প্রকাশ করায় পণ্ডিত জওহরলালের
রাজনীতিক বৃদ্ধির নিন্দা করা হইয়াছে। অর্থাৎ যতক্ষণ
আগংলো-আমেরিকান দলের কার্য্য অবিচারিতভাবে
সমর্থন করা হয়, ততক্ষণই উলিদিধ্যের প্রশংসা লাভ
করা যায়।

মিষ্টার লাই মতপ্রকাশ করিয়াছেন—"যদি সমিলিত জাতিসজ্মের পতন হয়, তবে আমাদিগের ভবিয়তে আর কোন আশাই থাকিবে না।" তিনি আমরা বলিতে কাহাদিগকে ব্যেন, তাহা ব্যক্ত করা হয় নাই। কিছু আমরা পৃথিবীর ইতিচাসে উত্থান-পতনের বহু দৃষ্টাস্তে অভ্যন্ত, স্কুতরাং এই চেষ্টা বার্থ হইলেই যে সর্ক্রনাশ হইবে, এমন মনে করিতে পারি না।

ডক্টর রাজেক্সপ্রদাদ পৃথিনীর স্থায় ও শান্তির অহরাগী চেষ্টা করিতেছে। কৌরব-সভায় দৃত্কীড়াকালে পাওবগণ মাত্রকেই সন্মিলিত জাতিসভেবর পতাকাতলে সমবেত এইরূপ কাজই করিয়াছিলেন এবং আপনারা প্রস্তুত হইয়া ইইতে আহ্বান করিয়াছেন; কারণ, তাঁহার মতে, যথন যুদ্ধক্ষেত্র অবতীর্ণ ইইয়াছিলেন, তথনই কৃত্তক্ষেত্র

সন্মিলিত জাতিদজ্বই জাতিসমূহের মধ্যে ক্যায় ও পৃথিবীতে শাস্তি প্রতিষ্ঠিত করিতে পারে।

কিন্তু যতদিন তুর্বল জাতিসমূহের আত্ম-নিয়ন্ত্রণের অধিকার স্থীকৃত ও সম্মানিত না হইবে, যতদিন সামাজ্যবাদ ও ধনিকবাদ অন্তহিত হইয়া সাম্যবাদের ভিন্তি দৃঢ় না হইবে, যতদিন আধ্যাত্মিকতা পশুবলের স্থান গ্রহণ না করিবে—ততদিন স্থার্থের সভ্যাতে যুদ্ধ অনিবার্য্য থাকিবে। আমেরিকার বহু-বিঘোষিত "মনরো নীতি"ও যে তাহাকে বিশ্বসুদ্দম্বন্ধে নির্লিপ্ত রাখিতে পারে নাই এবং এবার যে আমেরিকা কোরিয়ার গৃহযুদ্দ জ্ডাইয়া পড়িয়াছে, তাহাতেই আমাদিগের এই বিশ্বাদ দৃঢ় ইইতেছে। জড়বাদ-জর্জারিত ইহকাল-সর্বন্ধ সভ্যতা স্থার্থের স্থানে পরার্থের প্রপ্তিষ্ঠা করিয়া বিশ্বে শান্তির রাজ্য প্রতিষ্ঠা করিতে পারে না।

কেরিয়া ও ইন্দো-চীন-

অগ্নি যথন ভস্মাচ্ছাদিত থাকে, তখন বাতাসের ফুৎকারে তাহার আত্মপ্রকাশে বিলম্ব হয় না। জগতের দেশসমূহ মূথে শান্তির জন্য আগ্রহ প্রকাশ করিলেও প্রকৃত স্বার্থে সামাক্ত আঘাতে বা কল্লিত স্বার্থ কুল্ল হইবার আশকায় সহজেই পরস্পারের সহিত যুদ্ধে প্রবৃত্ত হইতেছে। কোরিয়ায় ও ইন্দো-চীনে যুদ্ধের গতি সমুদ্রের তরকের মত অগ্রসর ইইতেছে ও ফিরিয়া বাইতেছে। কোরিয়ার গুল্বদ্ধে যোগ দিয়া আমেরিকা যে আঘাত করিয়াছে. তাহা প্রবল। কিন্তু সেই আঘাত করিয়াই আমেরিকা নিরস্ত হয় নাই। তাহাতেই তাহার অভিপ্রায় সম্বন্ধে সন্দেহের অবকাশ ঘটিতেছে। কাঞ্চেই যুদ্ধের ফলে কোরিয়ার কোন্ পক্ষ প্রকৃত উপকার লাভ করিবে, তাহা বুঝা যাইতেছে না। তবে ক্য়ানিজনের শক্তিনাশই যে আাংলো-আমেরিকান দলের উদ্দেশ্য তাগা সহজেই বুঝিতে পারা ষাইতেছে। হয়ত যুদ্ধের তরঙ্গ ফরগোশায়ও আপতিত হইবে। কিন্তু কমুনিষ্ঠ চীন ও কমুনিষ্ঠ কুলিয়া যে ভাবে युष्क त्यांशनात्न वित्रज त्रियात्व, जांशात्र मत्न इयु, তাহারা অপের পক্ষের বল লক্ষ্য করিয়া প্রস্তুত হইবার চেষ্টা করিতেছে। কৌরব-সভায় দাতক্রীড়াকালে পাগুবগণ এইরূপ কাজই করিয়াছিলেন এবং আপনারা প্রস্তুত হইয়া

ফলাফল নির্দ্ধারণ হইরাছিল। এদিকে দক্ষিণ কোরিয়ার রাষ্ট্রপতি উত্তর কোরিয়ায় "কোরিয়ার সরকার" স্থাপনের প্রস্তাব গত ২৩শে অক্টোবর করিয়াছেন; আর ক্য়ানিষ্টরা বলিতেছেন, কোরিয়ার গণতজ্ঞের কথা কেবল পুত্তলিকা-প্রতিষ্ঠার চেষ্টা।

ইন্দো-চীনে ভিয়েৎমীনের সেনাবল চীনের সীমান্তে ক্রান্সের অধিকৃত পথের শেষ ৭৫ মাইল স্থান আক্রমণ করিয়াছে বলিয়া সংবাদ পাওয়া গিয়াছে। ফরাসী সামরিক কর্ত্তারা ইহা স্বীকার করিয়াছেন।

ভিয়েৎমীনে যদি ফরাসীদিগের পরাভব ঘটে, তবে এশিয়ায় কম্যনিষ্টরা প্রবল হইয়া উঠিবে। ইহা যেমন ফ্রান্সের, তেননই সাম্রাজ্ঞ্যবাদী ধনিক-তন্ত্রী দেশ মাত্রেরই অভিপ্রেত নহে। সেই জক্সই ইন্দো-চীনে জাতীর দলের সহিত যুদ্ধ দার্যকালস্থায়ী হইভেছে। ফ্রান্স যে ভারতেও তাহার অধিকার ত্যাগে অনিচ্ছুক, তাহা আমরা দেখিতে পাইতেছি। এমন কি ফ্রান্স বহুমতে চন্দননগর ত্যাগ করিতে সম্মত হইলেও চন্দননগর সম্বন্ধে এখনও পরিবর্ত্তিত ব্যবস্থা সম্পূর্ণ হয় নাই। গত ২৯শে অক্টোবরের সংবাদ—ভিয়েৎমীনের সেনাদল পায়োকের উপকর্ষ্ঠে উপনীত

হইরাছে। ইন্দো-চীনের যে অংশে থাক্সের চাব হয়—
অর্থাৎ বে অংশ অর্থপ্র বলা বায়—তাহা ভিয়েৎমীন দলের
হস্তগত। যদি উত্তর ইন্দো-চীনে ফরাসী সীমান্তহ
লায়োকে ছুর্গ তাহারা অধিকার করিতে পারে, তাহা
হইলে সমগ্র ইন্দো-চীনে ফরাসীদিগের অবস্থা সঙ্কটজনক
হুইয়া উঠিতে বিশ্ব হুইবে না।

এদিকে কাশ্মীরের ব্যাপারের ক্ষোগ যে পৃথিবীর অক্সান্ত দেশ লইবার চেষ্টা করিতেছে, তাহা—তাহাদিগের সম্বন্ধে আহাবান পণ্ডিত জ্ওহরলাল নেহক্ষও শ্রীনগরে বলিয়াছেন। সেই সকল দেশ পাকিস্তানের পক্ষ সমর্থন করিতেছেন। তিনি বলিয়াছেন, দেশরক্ষার জক্ত উৎকৃষ্ট ও উপযুক্ত সেনাবলের প্রয়োজন।

স্তরাং বাঁহারা বিশ্বে শাস্তি প্রতিষ্ঠার জন্ত এতদিন আাংলো-আমেরিকান "রকের" মুখাপেক্ষী হইয়াছিলেন, বর্ত্তমানে তাঁহারাও মতের পরিবর্ত্তন করিতে বাধ্য হইতেছেন। বে দেশ আপনাকে রক্ষা করিতে পারে না— সে দেশ শোষণে সর্বব্যান্ত হয়। উপনিবেশ গঠনের উদ্দেশ্য তাহাই।

১৫ই কার্ডিক, ১৩৫৭

এতি বামকৃষ্ণায় নমঃ

বিজয়লাল চট্টোপাধ্যায়

হে সর্বনিয়ন্তা দেব—এক, অন্বিতীয়,
সর্বভৃত-অন্তরাত্মা হে অচিন্ত্যনীয়,
সমস্ত করিয়া পূর্ণ আছো বিভ্যমান
অনিত্যের মাঝে নিত্য সর্বজ্ঞ মহান।
তোমারে যে নেহারিল হৃদয়-মন্দিরে
পেলো সে শাখত শান্তি; সন্দেহ-তিমিরে

হেরিয়া সভ্যের জ্যোতি হোলো নিঃসংশয়।
আর বারা শিরোধার্য করিয়া বিষয়
মৃগত্ফিকার পিছে ছুটিল উন্মনা—
অঞ্জব বা তারই মাঝে গুবেরে কামনা
করিল মোহের বশে—সেই মৃত্মতি
বালকেরা অন্তহীন লভিল তুর্গতি;

জড়ালো মৃত্যুরজালে; অন্ধকার হোতে অন্ধকারে ভেসে গেল প্রাবৃত্তির স্রোতে।





(পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

নিঃশেষিত পুষ্পফল-রিক্তপত্র পল্লব-উদ্ভিদ জগতে বংসরে বৎসরে আসে নববদন্ত। জীবজগতে বৎসরে বৎসরে— অথবা, একটি নির্দিষ্ট সময় অস্তরে আসে জীবন বসস্ত-বসন্তের স্পর্শে নারী-পশু উতলা হইয়া তাহার বাদা ছাডিয়া বাহির হয়, জ্যোৎসালোকিত রাত্রে অকস্মাৎ উন্মনা চইয়া আকাশের দিকে মুখ তুলিয়া ডাক দেয়। বিচিত্র ডাক। সে ডাকের উত্তর একদিন আসে। পুরুষ-পশু সাড়া দিয়া আসিরা সামনে দাঁডায়। মাত্রবের জীবনেও হয় তো এমনিই হয়, নব নব বসন্তের সাড়া হয় তো দেহকে নাড়া দিয়া বলে-পুরাতনকে পিছনে ফেলিয়া নৃতনের সন্ধানে চল, কিন্তু মাহুষের মন তা' চায় না। বহু সহত্র বৎসরের তপ্রসায় যে মন অহরহ জীবন চাঞ্চল্যের মধ্যে স্থির হইয়া অতীত বর্ত্তমান মিলাইয়া ভবিশ্বত রচনা করে-যে মন মরজগতের মধ্যে অমৃতকে আবিষ্ণার করিয়া আস্থাদন कित्रशाह-- तम का हां मा। माश्रवत तमहे मन মহাকালের সঙ্গে যুদ্ধ করিয়া চলিয়াছে; তাহার যে ভালোবাসার ধনকে মৃত্যু হরণ করে, তাহার সকল অভিত বিশুপ্ত করিয়া ভাহাকে লয় করিতে চায়—মাহুষের মন তাহার অন্তরের অমৃতে সঞ্জীবিত করিয়া নিজের আমরণ बीবনে মৃত্যুঞ্জয় করিয়া রাখে। সে অমৃত ভালোবাসা। মামুষের মন যাহাকে ভালোবাসিল-তাহাকে তাহার ভলিবার উপায় নাই। দেহ তার যত জোরালো দাবী লইয়াই আম্বক-এ ভালোবাদার কাছে তাহাকে মাথা **(इंटे क** तिथा होत मानिया मांटिए मिनाहेया याहेए हहेरव। সেই কারণেই তো যে জন মরিয়া গেলে তাহার জন্ম একজনও কের কাঁদিবার থাকে না—এ সংসারে সব চেয়ে বড় তুর্ভাগা সেই জন! মাহুষের এই মনই ভো—তপস্বিনী সাবিত্রী, সে শত ছর্যোগেও সদাজাগ্রত, যমের সঙ্গে যুদ্ क्रिया ভালোবাসার ধনকে—সে আপন মনের মধ্যে নৃতন

জীবনে বাঁচাইয়া তোলে। ভালোবাসা যেখানে নাই—
সেধানকার কথা স্বতম্ভ ; কিন্তু যেখানে আছে—সেধানে
—এই কথাই মহাসত্য।

— স্বর্গকে কথাটা বলতে পারি নি, রুঢ় হবে ব'লে।

আপনাকে বলছি। বলুন তো— স্বর্গ কি আপনাকে হারিয়ে

— নৃতন জনকে নিয়ে আবার জীবন স্কুক্ত করতে পারবে?

সে যথন বাল্যকালে বিধবা হয়ে— আপনাকে বিবাহ করেছে

— তথন অন্ততঃ তার কাছে সমাজপ্রভাব— মনের বিক্লভ ধর্মজন্ত, এ সবগুলো তো একেবারেই নাই!

কথা হইতেছিল দেবুর সঙ্গে। অঞ্লার এই পরিবর্ত্তন যেন গোটা পৃথিবী সহু করিতে পারিতেছে না! অকশা যেদিন আসিয়া পৌছিয়াছিল—দেদিন দেবু আত্মগোপন করিয়া রেল কলোনীর মধ্যে লুকাইয়া ছিল: সেধানে বসিয়াই কথাটা সে শুনিয়াছিল। শুনিয়া অবধি তাহার অস্বন্ডির সীমা ছিল না। দিন হয়েক পরেই সে একদিন রাত্রে জংসন হইতে হাঁটিয়া—পরবর্ত্তী ডাউন ষ্টেশনে গিয়া আপু ট্রেণে জংসন ষ্টেশনে প্রকাশ্যভাবে নামিয়া বাড়ী ফিরিয়াছে। ইতিমধ্যে কয়েক জায়গায় থানাতলাসী হইয়া গিয়াছে, কয়েক জনকে ডাকিয়া পুলিশ অনেক জিজ্ঞাসাবাদও করিয়াছে। দেবু ষ্টেশনে নামিতেই তাহাকেও পুলিশ ডাকিয়া লইয়া গিয়াছিল। জিজ্ঞাসাবাদ করিয়াই ছাড়িয়া দিয়াছে, এদ-পি দামস্থাদন তাহাকে বেশ শাসাইয়াও দিয়াছে-বলিয়াছে-তোমাকে সাবধান ক'রে দিচ্ছি। তোমার চেয়ে অনেক চতুর আমরা। খবর আমরা দ্বই রাখি। হঠাৎ চীৎকার করিয়া বলিয়া উঠিয়াছিল-পিঠের চামড়া আমি তুলে নেব তোমার and then...; and then I shall send you to Port Blair—you understand? 對!

দেবু স্থির হইয়া বসিয়াছিল—এতটুকু চঞ্চল হয় নাই। সামস্থাদিন বলিয়াছিল ঃ—হাঁ। আর একটা কথা। Tell that—bitch—that—woman—তোমানের মিসেশ্ ভটচায্যি গো, তাকে বলো—কাদা মাথলে যমে ছাড়ে না, থান কাপড় পরলে—একাদনী করলে—আমি ছাড়ব না। দরবারী ঘাবড়েছে—আই-বি ইনস্পেক্টর ঘাবড়েছে—they were fools.—আমি ঘাবড়াতাম না। এর পর আমিই তাকে ডাকব। যত— সব!

দাতে-দাতে টিপে বলেছিল—কোন ধর্ম মানে না, স্থবিধের জন্ম হিন্দু থেকে মুসলমান হয়, আবার শুদ্ধি ক'রে হিন্দু হয়—সেই মেয়ে আজ থান প'রে বিধবা সেজে একাদনী করেছে! well—tell her—রও তার জন্মে আসবে—Prison van.—স্থার্গ তাকে আমি পাঠাব!

शंक (म मव कथा !

দেবু পুলিশ আপিদ হইতে বাড়ী ফিরিয়া সর্বাত্তে দেখা করিল অরুণার সঙ্গে। দেখা করিয়া বিশ্বরে যেন অভিভূত হইয়া গেল; কুত্রিম বিশ্বরে অভিভূত হওয়ার ভাগ করিল। অন্তথায় সকল জিজ্ঞাদাই রুঢ় হইয়া উঠিবার সম্ভাবনা ছিল। যথাসাধ্য মুক্ত মন লইয়া অরুণাকে বিচার করিয়া বুঝিবার ভাগর অভিপ্রায় ছিল। একেবারে অরুণার বাড়ীতে প্রবেশ করিয়া ডাকিল—অরুণা দি! মধ্যে মধ্যে দে অরুণাকে দিদি বলিয়া ভাকিয়া থাকে।

অরুণা তথন ঘরের মধ্যে বসিয়া নিজের জীবনের কথাই ভাবিতেছিল। সেই অবধি অর্থাৎ যেদিন হইতে সেথান কাপড় পরিয়াছে সেইদিন হইতে তাহাকে কমজনের শ্লেষপূর্ণ বিন্মিত দৃষ্টির সম্মুখীন হইতে হইল না। তাহার পরিচিত যে তাহাকে দেখিল সেই বিন্মন্ন প্রকাশ করিল— তারপর বিন্ময়ের সঙ্গে শ্লেষ মিশাইয়া প্রশ্ন করিল— এ কি ?

তারপর কেচ হাত দিয়া মাথা হইতে পা পর্যান্ত দেখাইয়া দিয়া প্রশ্নটা করিল ইন্ধিতে, কেহ বা দৃষ্টিতেই প্রশ্নটা ফুটাইয়া তুলিল, ত্-চারজন মূথ ফুটিয়াই প্রশ্নটা করিল—হঠাৎ এ রকম বেশবাদের পরিবর্ত্তন ? একজন প্রোঢ় সন্ধীভক্ত বলিয়াছেন—"একি রূপ হেরি হরি— ধরেছ যোগীর বেশ ?"

অরুণা তাহাদের সংক্ষেপে উত্তর দিয়াছে—এই ভাল লাগ্ল!

-- रुठी९ :

—ইণা—হঠাৎ। হঠাৎ এই ইচেছ হ'ল, এই ভাল লাগল গ

এই উত্তর দিয়াও কিন্তু সে বারবার নিজেকে যাচাই করিয়া দেখিয়াছে, নিজেই নিজেকে ক্ষেরা করিয়া আপনাকে বুঝিয়াছে: —বুঝিয়াছে —তাহার ভালবাসা সত্য। এ ভালবাদার নির্দেশ—দাবী শুজ্বন করিলে— জীবনে তাহার তৃ:থ-অশান্তির আর অন্ত থাকিবে না; জ्विया शृष्टिया कौरनिंग थाक बहुया याहेरत। रवशान ভালবাদা নাই - সেথানে ভালবাদার ভাণ করিয়া অথবা व्यमहाश ভাবে সমাজের নির্দেশে—দেহের দাবীকে উপেক্ষা করিলে যে অশান্তিতে মন পুড়িয়া যায়, এথানে মনের দাবী উপেক্ষা করিয়া নৃতন জীবন দর্শনের পুঁথির নির্দ্ধেশ দেহের দাবীকে বড় করিতে গেলে-অশান্তি ছইবে লক্ষ লক গুণ বেশী। আজও যতবার সে শ্লেষপূর্ণ প্রশ্নের সম্মুখীন হয়—ততবার সে এই উপলব্ধিকে যাচাই ক্তিয়া দেখে। যাচাই ক্রিয়া দেখিতে গিয়াই— বিশ্বনাথের জন্য সে কাঁদে, এই কালার চোণের জনই তাহার উপলব্ধিকে দুঢ় হইতে দুঢ়তর করিয়া তোলে। ममख मः दक्षां, लाष्ट्रां, त्रामना भूरेशां मूहिशा यांश, व्यनादिन প্রসন্নতায় অরুণার অন্তর বাহির অপরপ মাধুর্য্যে ভরিয়া উঠে। হয়ত তুইদিন স্বর্ণের শ্লেষ-তীক্ষ বাক্যবাণের সমুখীন হইয়া আবার নিজেকে যাচাই করিয়া দেখিল, একটা গোটা রাত্রি সে বিশ্বনাথের জন্ম কাঁদিল। কামার মধ্যেও সে নিজেকে প্রশ্ন করিল: অতি রুচ প্রশ্ন,—বোধ করি তাহার জীবনের রুত্তম প্রশ্ন; নিগুর উত্তেজনায় মায়া মমতাহীন হইয়া সকল চক্ষু লজ্জা বিসৰ্জ্জন দিয়া चर्न हे जाशांदक श्रेश कतियाहिल। वित्राहिल-चाक त्य বিশ্বনাথবাবুর কিশোর রূপ মনে প'ড়ে আপনি আকুল हरा উঠেছেন-অরুণাদি দে আকুলতার মূলেও কি দেছ নেই আপনার ? ওই যে অজয়কে আপনার করে পেতে চাচ্ছেন-স্বামীর বদলে ছেলের রূপে পেতে চাচ্ছেন-সেও কি আপনার ওই চাওয়ারই রকম-ফের নম্ব? আপনি তো আমার চেয়ে অনেক পড়েছেন—অনেক জানেন-বলুন না-সেটার সত্য অর্থ তো আপনি না-জানা নন-

স্বৰ্ণ যেন অৰুণার কণ্ঠনালীটা চাপিয়া ধরিয়া খাস-ক্ষ

ক'রয়া দিয়াছিল, শুধু বাতাদই নয়—প্রসন্ন প্রভাতালোক মুছিয়া দিয়া নিশ্ছিদ্র কালো অন্ধকার লেপিয়া দিয়াছিল— বিশ্বদংদারের দর্দ্ধান্ধে। সে হাত নাড়িয়া ইদারা করিয়া অর্ণকে বারণ করিয়াছিল—থাম অর্ণ, থাম।

স্বৰ্থিমে নাই। কথা শেষ ক্রিতে বাকীও বড় কিছু ছিল না, শুধু আরও একবার উত্তরের সদর্প দাবী জানাইয়া সে থামিল—বলুন—বুকে হাত দিয়ে সভা কথাটা বলুন শুনি! কথা শেষ ক্রিয়া সে স্থির দৃষ্টিতে চাহিয়া দাঁড়াইয়া ছিল, উত্তেজনায় জল্প জল্প হাঁপাইতেছিল।

অরুণা চোথ বৃজিয়া কিছুক্ষণ বসিয়া থাকিয়া একটা দীর্ঘনিখাস ফেলিয়া বলিয়াছিল, দৃঢ় অথচ শান্ত কঠখরে ধীরে ধীরে বলিয়াছিল—ভোমার কথা এতটুকু মিথ্যে নয় খর্ম, বর্ণে বর্ণে সত্য, তাকে আমি সীকার করছি; আমার এ চাওয়ার মধ্যেও দেহ আহে। কিন্তু—

মধ্য পথে বাধা দিয়া অস্থিত স্বর্ণ বলিয়া উঠিয়াছিল—
এর পর আর কিন্তু কিন্দের অরুণাদি ?

আছে। আলো আর অন্ধকার প্রথরতম আর গাঢ়তম অবস্থায় এক হয়ে যায় এবং অভিন্নও বটে, কিন্তু তা বলে আলো আর অন্তর্গর স্তর হয়ে যখন প্রকাশ পায় তখন সে ভিন্ন বস্তু। তার রূপই ভিন্ন নয়—তার স্পর্শ, তার প্রভাব, তার ক্রিয়া সব ভিন্ন। স্বর্ণ—বে কোন নারীর বে कान भूक्य श्लाहे जीवरनत्र मावी स्मर्टे ना। व्यामात्र श्रामात श्रात जात काउँ क विशय जामात मावी मिछेरव ना, मिठा हरव मन (थरब निमा करत जानन मन्नान कन्नात भठ, তার ফলে দেহ-মন ছুইকেই আরোগ্যের বদলে বিষাক্ত রুগ্ন করে ভূলবে। অজয়কে আমি আমার সস্তানরূপে পেলে তবেই মিটবে আমার জীবনের দাবী। ভার মাথা বুকে জড়িয়ে ধরে—ভার কণালে চুম্বন দিয়ে मर्काटक हो उ वृतिष्म पिरम (पर-मन प्रम कथा-चर् আমার প্রাণ জুড়িয়ে যাবে—ভরে উঠবে। এর কদর্থ করতে रिष्ठो करता ना अर्थ—भूता धत वर्ष गाँहे शांक —भूक বেণীর মত ছুই ধারায় পৃথক হওয়ার পর অর্থও পৃথক হয়ে গেছে। ও তুইয়ে মেশাতে চেষ্টা করো না-এক নদী ছই শাখায় ভাগ হয়ে গেলে তখন আর এক থাকে ना—इंहे श्रातात करण এक हे खन श्रारक ना। माणित खरन धात्रात्र ब्रष्ड भान्तेश्य- ७ १७ भान्तेश्य। य दौतिय क्न

কোটে সেই বোঁটাতেই ওই ফুল থেকে যে ফল ধরে সে ছটোর বোঁটা এক বলে—এক জিনিষ নয় অর্ণ।

একটু চুপ ক'রে একটা নিষাস নিয়ে তারপর বলেছিল—এর বেনী আর আমাকে কিজ্ঞাসা করো না স্বর্ণ, উত্তর আমি স্থার দেব না।

স্থা তবু আবার কথা বলিতে চেষ্টা করিয়াছিল।
বাধা দিয়া অরুণা বলিয়াছিল—বিচারকের স্থাসনে বসবার
চেষ্টা করো না স্থা। নিজের অধিকারের কণাটা স্মরণ
রেখা। যদি কেউ তোমাকে বিচারকের পদ দেয়—
বা—গায়ের জোরেই নাও—তবে একতর্মণা বিচার
করে যা খুসী রায় দিয়ো—আমি কথা বলতে
নারাজ।

খর্শ আর কথা বলে নাই, নীরবেই চলিয়া গিয়াছিল;
সমস্ত দিন রাত্রির মধ্যে আর অরুণার কাছে আসে
নাই। অরুণা বিশ্বনাথের জন্ম কাঁদিয়াছে—আর ওই
প্রশ্নই বারবার নিজেকে করিয়াছে। দে-প্রশ্নে সে
অপ্রতিভ হয় নাই, লজ্জিত হয় নাই, যেমন ধীরতা ও
শান্ত সংঘদের সঙ্গে খর্গকে উত্তর দিয়াছে তেমনি ভাবেই—
ওই একই উত্তর বারবার দিয়াছে। বরং ধীরতা ও
শান্ত সংঘদের সঙ্গে একটি অনাবিল প্রসন্নতা তাহার মুখে
একটি হাসির রেখা আঁকিয়া দিল।

দেব্ আদিয়া তাহাকে ডাকিতেই সে ওই হাসিমূথেই বাহির হইয়া আদিল। প্রদন্ন সন্তামণে তাহাকে
আহবান জানাইয়া বলিল—আফুন দাদা।

দেবু তাহাকে অরুণাদি বলিয়া ডাকিলে…সে দাদা বলিয়াই সাড়াদেয়।

দেব্যথাসাধ্য ক্তিম বিশায় প্রকাশ করিয়া ক**হিল—** একি ? কি ব্যাপার ?

অরুণা আরও একটু বেণী হাসিল। বলিল—সামার বেশভ্যা দেখে তো?

—शां। **এ कि क**रत्रह्न ? श्री९—?

তাহার বিশ্বয়ের প্রকাশ ভঙ্গিকে সে বথাসাধ্য প্রসন্ন করিয়া ভূলিতে চেষ্টা করিল—ব্ঝাইবার চেষ্টা করিল—যে —এ পরিবর্ত্তনের ফলে তাহার বিশ্বরের অস্তরালে নিছক বিশ্বর ছাড়া আর কিছু নাই। ভাল বা মন্দ কোন ধারণাই এ বিশ্বয়ের পিছনে নাই।

অরুণা তাহার মুখের দিকে স্থির দৃষ্টিতে চাহিয়া বলিল—
হঠাৎ নয় দেব্বাব্, অনেক ভেবেছি, অনেক ভাঙাগ্ডা হয়ে
গেছে আমার।

— নানে? মৃহুর্ত্তে জ ছটির উপরে কুঞ্চন রেথায় বিরূপ মনের রুঢ়তা আত্মপ্রকাশ করিল। এটুকুকে স্বত্নে গোপন করিবার চেষ্টা ভাষার বার্থ হইয়া গেল।

অরুণা হাসিল। বলিল—একটা জীবনের ভাঙাগড়ার কাহিনীর এক কথায় তো মানে বলা যার না ভাই। সমর লাগবে। বহুন। যদি সময় এখন না থাকে তবে অবসর করে আসবেন—আমিও বলতে চাই; ছংথের কথাই হোক আর হথের কথাই হোক—কাউকে না বলতে পেলে মন হালা হয় না।

দেবু বিসিয়া বলিল—অবসর করতে হবে মিসেস ভটচাজ,
একটু চুপ করিয়া বসিয়া সে বলিল—আপনার বাইরের
ক্লিচি বা আচারের পরিবর্ত্তনের সঙ্গে মনের কডটা সম্পর্ক
বুঝতে হবে আমাকে।

অরণা বলিল—তার মানে আমার বিচার করবেন?
সে হ'লে আমি আসামীর মত চুপ করেই থাকব।
আপনি সাকী সাবৃদ নিয়ে যা রায় দেবার দেবেন।
রাজনীতিক দলে কর্মী হয়ে চুকেছিলাম যখন, তখন দেশের
জক্ত মুথ বুজে মৃত্যুবরণ করতেও প্রস্তুত হয়েছিলাম, আর
আজ আমার নিজের জীবনের পরম বস্তুর জক্ত
আপনার দেওয়া সাজা নেবার সময় হাজার কথা কইতে
যাব কেন?

দেবু চকিত হইয়া অরুণার দিকে চাহিল।

অরুণা বলিল—বিচারের প্রহসনই হয়ে থাকে—রাষ্ট্র-নৈতিক অপরাধে—রাষ্ট্রনিয়ন্তিত বিচারালরে। রাষ্ট্রনীতি নিম্নে যে সব দল কাজ করে—তারাও বিচারের সময় ওই একই ধারায় বিচার করে। তেমনি বিচার করেন তো আমার কথা আপনার গুনেই বা কাজ কি— আমার বলেই বা লাভ কি ? যা খুদী করুন গিয়ে। তব্ও আপনি আমার স্বামীর আকর্ষণে—তাঁরই দীক্ষায় এ দলে এসেছিলেন—একসময় আমিও আপনাকে হয় তো কিছু কিছু শিথিয়েছি, নৃতন দৃষ্টিতে দেখতে সাহায়্য করেছি। তাই কটা কথা বলছি, আমার ভাঙাগড়ার মধ্যে আমি
আমার ব্যক্তিগত জীবনের অরপকে আবিজার করেছি—
নিজেকে চিনেছি, তাই ব্রুতে পেরেছি বাকে একদিন
আমীতে বরণ করেছিলাম তার অন্তিত্ব তার দেহের সক্ষেই
আমার জীবনে শেষ হয় নাই, তাকে ভোলা আমার পক্ষে
অসম্ভব। 'নয়ন সম্মুখে তুমি নাই—নয়নের মাঝখানে
নিয়েছ যে ঠাই'—। দেবুবাবু হঠাৎ ব্রুলাম কথাটা।
আজয়কে দেখে সেই সত্য হঠাৎ অল্পষ্ট হয়ে উঠল।
আজ আমি কোন পুরুষকে আমী হিসেবে গ্রহণ ক'রে
বর বেঁধে তুথ পেতে পারি না—শান্তি পেতে পারি না;
তাই আমার স্থামীর সন্তান—আমার সন্তান অজয়কে
নিয়ে বর বাঁধবার কামনায় আকুল হয়ে উঠেছি;
তাকে আমাকে জয় করতে হবে—তার মা হতে
হবে। এ সজ্জা আমার বিধবা মায়ের সজ্জা। এর
জক্তে—

দেবু মাটির দিকে চোধ রাথিয়া অরুণার কথাগুলি ভনিতেছিল—হঠাৎ মুখ ভূলিয়া বলিল—এরজক্তে—?

- এর জন্তে যে কোন মূল্য আংমি দিতে প্রস্তত দেবুবাবু।
 - —অর্থাৎ এতকালের বিশ্বাস আদর্শ দল—সব ?
 - —शां। भव, भव, भव। कि**ड**—
 - —আবার কিন্তু কি ?
- আছে কিন্ত দেবুবাবু। বিশাস আদর্শ আমাকে ছাড়তে হবে না। ছাড়তে বেটা হবে— সেটা দল। দেবুবাবু নারীর হাতে ভিক্লা নেওয়ার জন্ত চৈতন্ত তাঁর ভক্তকে বর্জন করেছিলেন কিন্ত ভক্তের বৈষ্ণব ধর্ম্মে বিশাস— সেধর্ম মতে সাধনার অধিকার কেড়ে নিতে পারেন নি। আমার জীবনের বিশাস—আদর্শবাদ আপনারা কেড়ে নেবেন বা আপনাদের সজে না বনলে ছাড়তে হবে— এমন ধারণা করবার ভর্মি আপনার বা আপনাদের হ'ল কি ক'বে?

त्म व्यक्तिया विश्व — किंक एक्टल अरक यक्ति विरयोध स्य व्यक्ति निरय ?

— আমি এমন মা হতে চাই দেব্ডাই, যে আমার রক্ত স্থা হয়ে তার দেহের রক্ত হয়ে প্রবাহিত হবে, আমার ভাবনা আমার ভাষাই হবে তার ভাবনা-ভাষা। বিরোধ আমার হবে না দেব্বাব্। অরুণার চোধের দৃষ্টিতে তথ্য কুটিরা উঠিল।

দেব্বাব্ একটা গভীর দীর্ঘনিখাস কেলিয়া বলিল— আপনার কামনা সফল হোক অরুণা-দি। সর্বান্তঃকরণে আমি প্রার্থনা করছি।

আকৃণা বলিগ—বহুন—বহুন। আপনার মাহুবের
মন আজও বেঁচে আছে। নইলে দীর্ঘনিখাস ফেলতেন
না। স্থাকে করেকটা কথা বলবেন। সে মারাআক
উত্তেজিত হয়ে উঠেছে। তাঁকে জিজ্ঞাসা করবার ইচ্ছে
আমার হয়েছিল—কিছ জিজ্ঞাসা করতে পারি নি সে
আখাত পাবে ব'লে। বাল্যকালে যার সঙ্গে বিয়ে হয়েছিল—
যার সজে ভালবাসা জন্মাবার—বাকে ভালবাসবার
সমর পার নি বলে—সকল বিয়েতেই তাই হবে ? সে বে
ধোয়ামোছা মন নিয়ে আপনাকে গ্রহণ করেছে, আপনার
সঙ্গে বর বেঁধেছে—এ সবকেও কি ধ্রে মুছে যাবে—
আপনার দৈহিক অভিত্রের অভাবে ? স্বর্ণ কি আপনাকে
হারিয়ে নৃত্রন জনকে নিয়ে আবার জীবন স্কর্ক করতে
পারবে ? সে যথন বাল্যকালে বিধবা হয়ে আপনাকে
ভালবেসে বিবাহ করেছে, তথন অন্ততঃ তার কাছে সমাজ-

প্রভাব—মনের বিক্বত ধর্মজন এ সবগুলো তো একেবারেই নাই !

— व्यक्षां पि ! वर्ष नित्करे व्यानिशा पत्रकात्र पाँग्णिरेन । प्रत् मेकिङ रहेन्ना विनि—हन—वर्ष—वांकी हन । वर्ष विनि—ना ! व्यक्षां विनिन—वन, वर्ष कि वन्न वन ?

—বলছি না কিছু, বাহবা দিছে। বে সব তত্ত্বকথা চমৎকার বজ্জতা করে ব্ঝালেন এতকণ তার জন্ত বাহবা দিছিছে।

- हल चर् !

- —যাচ্ছ। ঝগড়া আমি করব না। শুধু একটা কথা ওঁকে জানিয়ে যাই। গোটা শহন্বটা ওঁর এই নতুন চং নিবে হেসে গড়িবে পড়ছে। পার্টির প্রত্যেক মেমার এর জক্তে শপথ করে বলেছে—পার্টি থেকে ওঁকে বের করে দিতেই হবে।
- —পার্টি আমি ছেড়ে দিলাম দেব্বার্। আপনি ওপরে জানাবেন।

(ক্রমশঃ)

পূজার চিঠি

কুমারী নবনীতা দেব

কবি-দশ্পতি শ্রীনরেন্দ্র দেব ও শ্রীমতী রাধারাণী দেবী তাঁহাদের ১২ বৎসরের কলা কুমারী নবনাতাকে সঙ্গে লইরা ইউরোপ ল্রমণে গিয়াছেন—এ সংবাদ ভারতবর্বের পাঠকগণ অবগত আছেন। পূজার সময় কুমারী নবনীতা শগুনে বসিয়া তাঁহার মাতৃলানী শ্রীমতী প্রতিমা ঘোবকে একথানি এবং মাতৃল-পূত্র শ্রীমতীক ঘোষ (১০ বৎসরের) ও মাতৃল-কলা কুমারা প্রমীতা ঘোষ (৭ বৎসর বয়সের)কে একথানি পত্র লিথিয়াছেন—উভর পত্রই কবিভার লেখা। আমরা নিম্নে পত্র ২ থানি প্রকাশ করিলাম—ইহা পাঠকরিলে কবিদ্শান্তির কলা নবনীতারও অসাধারণ কবিছ প্রতিভার সন্তাবনার পরিচর পাওৱা বার। (ভা: সঃ)

(7)

শারদ প্জায় পত্র পপুয়া
পাঠাই রচিয়া গীতি;
শুক্লনে দিও প্রণাম আমার
ছোটদের দিও প্রীতি।
এইতো প্রথম দেশ ছেড়ে দ্রে
রহিন্ন পূজার কালে;
পরিনি ন্তন পূজার পোষাক
কুদুন ফোটা ভালে।
ন্তন জুতা তো নেই পায়ে আজ
পূজার হর্ষ কই গো;

हेश्त्राणी नवहे, भारेनि धवात्र भूका वार्षिकी वहे ला। प्रत्य किरत (यरा मन य वार्क्न कितिव अ गांग (भरव : ভাবি মনে ৰাজ থাকিতাম বদি (छामारमञ कारक (मरम। মহা উৎসব---কোলাহলে বেথা পুকার বান্ত বাজে, यन त्य आयात हु हो हल आब (महे वांश्वात मास्य। · পাড়ার পাড়ার পূজা মণ্ডপে (काष्टे कित्न त्यरत्र नारह. বিজয়ার সাঁঝে মিষ্টি থাবার श्वक्रमनामत्र कारक। বন্ধুকা মোর নৃতন বসনে সজ্জিত হয়ে আৰু, পূৰা মণ্ডপে হাসি-কলরবে করিছে কত না কাজ। স্থূদুর সাগর পারে বসে আমি ভাবি স্বদেশের কথা. বহু স্থাপ আছি, তবু মনে হয় कि-कानि-वि-ति (श्था। দেশের প্রতিটি পথ-ঘাট বাড়া আতা বন্ধ যত, অভূ, খুকু আর হষ্টুর কথা मत्न कार्ण व्यवित्रछ। হিন্দুস্থান-পার্কের মত এত হুনার স্থান এই পৃথিবীতে আর তো কোথাও গড়েননি ভগবান। क्रहें बातना थि, भातिन, हें होंनी, चडिया, कार्यानी-বালিগঞ্জের কাছে, মোর কাছে

नव कांत्र कांत्र मानि।

এবারে প্লোভে কিন্ত পপুরা প্রকাও চিঠি দিছ, আবার লিখিব, এইবারে আসি,

ইতি-তোমাদের মিহা।

(智)

অভু সোনা! শন্মী আমার, সোনার পুকুন ভাই मिमिटें। क जूलरे शिह्म, अकट्टे मत्न नारे ? माखना अछीक अकता हिंति, नाखना थवत निस्क তাইতো মনে তুঃথ আমার, জানাই তোদের কী যে। প্রত্যেক দিন সবার কাছেই, গল তোদের করি খুকুরাণীর কথা এবং অভূর কথা স্মরি। ছাটু বাবুর ছাটুপনার, খবর কিছু পাই, কিছ তোদের হাতের লেথায়, তাহার খবর চাই। এবার পুর্কোর ভীষণ আমার, মন কেমন যা কর্ছে, বারে বারেই চোখের পাতা; কেবল জলে ভর্ছে। তোমরা कि ভাই দিদির কথা, একটা বারও ভাবছ, मांदेव थिएक नर्ककरीन, प्रभए वसन नाव एका ? প্ৰোয় এবার জামা জুতো, সঁব পুরানো পরছি, मारात को एक वनरा कार्लर, धमक् इक्स् कन्हि। এবার পূজোয় ধমক ছাড়া, আর তো কিছুই পাইনি, मारात रमकाक शतम (मर्प, वायुत कार्ड् वार्नि। মা বলেছেন তিন্টী বছর, পূজোর নাম না কর্বে, এই পুরাণ ক্রক ও জুতা, তিনটি বছর পদ্বে ৷ তাই তো আমি চালাক হ'য়ে, লখা এমন হচ্ছি, তিনটি মাসও আর না বাতে, এ সব আমা পর্ছি। व्यत्नक कथारे वनत्वा शित्र, रुष्ट् ल्यां, পতা লিখছি, এ জন্তে ভাই, করিস্ কিছ কমা। লগুন-পুলিশের ফাট, কিনেছি ভোর জন্তে, मा किरनहिन वहे, (थनना, प्राथननि छ। व्यात । বার্ষিক পরীক্ষার ফল, শুভ খবর দিও, দিদি-ভাইএর বিজয়ারই, আশীষ, প্রীতি নিও।

- ইভি-ভোষের দিমিভাই

জৰ্জ বাৰ্ণাৰ্ড শ

শ্রীস্থবোধচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যায়

(7464-7960)

পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ মনীবী জর্জ বার্ণার্ড শ গত ২রা নবেশ্বর দেহত্যাগ করেছেন।
গত ২৬শে জুলাই তাঁর তিরালবেইতম জন্ম দিবস উপলক্ষে সারা জগত
তাকে অভিনন্দন জানিয়েছিল। গত ১১ই সেপ্টেশ্বর শ বাগানে পড়ে
গিরে আহত হন এবং হাসপাতালে ভর্ত্তি হন। সেথান থেকে ২৫ দিন
গরে গত ৪ঠা অক্টোবর তিনি গৃহে কিরে আসেন। হাসপাতালে ভর্ত্তি
হবার সমন্ন তিনি বলেছিলেন, "এবার যদি বাঁচি তাহলে জনর হরে উঠব।"
কিন্তু হার! তাঁর মত মনীবীকেও আজ পৃথিবী হ'তে বিদার নিতে হ'ল।
মহাকালের ফুৎকারে সেই অসাধারণ প্রতিভার অন্নান শিখার ছাতি আজ
দৃষ্টি পথ হতে অন্তর্হিত হল বটে . কিন্তু যে আলোকের দীপশিথা তিনি
ব্যেলেছিলেন তা চিরকাল অন্নান ও উত্তল থাকবে। তাঁর বৈশিষ্ট্য তাঁর
চিরিত্রে ছিল না, ছিল গাঁর হাসিতে, তাঁর বাঙ্কে, তাঁর বিজ্ঞাল। তাঁর
শ্রেষ্ঠ তাঁর শিক্ষার ছিল না, ছিল বনম্পতির মত তাঁর বিশ্বল ব্যক্তিছে।

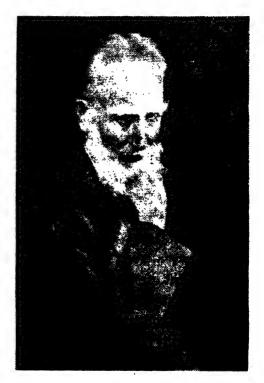
সতাই বিচিত্র ছিল তার জীবন, বিরাট ছিল তার বাজিও। অঙ্কৃত ছিল তার জাচার ব্যবহাব, চালচলন, অঙুত ছিল তার চরিত্র। পৃথিবীতে এমন অঙুত মামুব আর ছিতীর জন্মান নাই। তার লেখনী ছিল বেমন তীক্ষ, তেমনি রসাল তার কথাবার্ত্তা, কলম ত নর বেন শাণিত তরবারী। ভঠোর চাবুক হাতে দিরে ভগবান এই লোকটিকে পৃথিবীতে পাঠিয়ে ছিলেন। সেই চাবুকের কঠোর আঘাতে অমামুবের দল মামুব হরেছে, অভত্রের দল ভক্র হরেছে। পৃথিবীর লোক তাঁকে ভর করেছে, শুদ্ধা করেছে, ভালবেসেছে। তার নানা অভিক্রতা হতে তিনি উপলন্ধি করেছিলেন বে বেদনার চেয়ে বিক্রপ বড়, ক্ষুত্রতার চেয়ে মহন্থ বড়।

যে ক্লেদ ও গ্লানি, ভিক্তভা ও অবসাদ আজ সমাজ-জীবনে প্রবেশ করেছে, সভ্যভাকে অপমৃত্যু হতে রক্ষা করবার জক্ত তিনি তা আকঠ পান করেছিলেন। তার চিস্তাধারার অজগ্র দানে, তার প্রতিভার অজগ্র আলোকে আজ সমগ্র পৃথিধী সমুদ্ধ ও সমুদ্ধল হরে উঠেছে।

তার পঞ্চাশ থানি নাটক আন্ধ ইউরোপের বিভিন্ন ভাষার অসুদিত এবং ইউরোপ ও আমেরিকার বিভিন্ন রকালরে অভিনীত হরেছে। সেই সমত অভিনয় হতে তিনি দশ লক্ষ পাউতের অধিক অর্থ লাভ করেছিলেন। তার 'পিগ ম্যালিয়ান' নামক নাটকের চিত্ররূপের থক বিক্রী করে তিনি পঞ্চাশ হালার পাউও লাভ করেছিলেন।

পৃথিবীর সব চেরে বড় বিশ্বর যে তিনি তিরানকাই বৎসর বরসে তার শেব নাটক "কার কেচেড কেব্লস্" রচনা করেন। এত অধিক বরসে আর কেউ কিছু রচনা করতে পেরেছেন তার পরিচর আমাদের জানা নেই। তার বয়স বথন ১৫ বৎসর তথন তার পিতার সংসার অচল হরে

তেঠে। ঝি-চাকরদের বিদার দিতে হ'ল—তার মা লুসিন্দা এলিকাবেশ রব
কাজই নিজে হাতে করেন। শ স্থির করলেন—সংসারের সাহাব্যের রক্ত
কিছু করা প্রয়োজন। তিনি বিভালরে বেশী দিন যান নি, তবে বাড়ীতে
অসাধারণ পড়েছেন। শ চাকরি করবার জন্ত ভাবলিনে এক কাপড়ের
দোকানে সকাল দশটার এসে হাজির হলেন। সোজা সাহেবের কামরার
চুকে একবানা পরিচর পত্র দিলেন। তাঁকে এক ঘরে নিয়ে কেল—
সাহেব জিক্তাসা করলেন—কি পাশ করেছ ?



জৰ্জ বাৰ্ণাৰ্ড শ

পাশ ত কিছু করিনি।
পাশ করনি, চাকরি করতে এসেছ ?
চাকরীর সঙ্গে পাশের সম্বন্ধ কি ?
দরধান্ত এনেছ ?
নিরে আসিনি। কাগজ দিন এখনি লিখে দিচিত।

কাগজ নিরে শ খস্ খস্ করে এক দরখাত কিখে দিলেন। তার চাকরি হ'ল—বেতন মাসে ১৮ শিলিং অর্থাৎ সাড়ে বারো টাকা। কিন্ত ভু:খের বিষয় তার পর্যান চাকরীতে গিরে শুনলেন—তার ব্য়স ক্ম— চাকরি হবে বা। ভাগ্যের এই পরিহাস শুরু হ'ল তার জীবনে।

১৮৫৬ খৃষ্টান্দের ২৬শে জুলাই আর্গ্রান্ডের ডাবলিন শহরের উপকঠে তিনি জন্মগ্রহণ করেন। তার পিতার নাম ছিল জর্জ কার শ, আর মাতার নাম ছিল সুসিন্ধা এলিকাবেণ।

তার তথন পাঁচ বৎসর বরস। চাকরের সঙ্গে সন্ধ্যাকালে বেড়াতে বেরিয়েছেন। সে দিন রবিবার। সির্জ্ঞার ঘন্টা বালছে। দলে দলে লোক সির্জ্ঞার দিকে চলেছে। তিনি চাকরকে জিজ্ঞাসা করেন—এত লোক সব কোথার বাচেচ ?

চাকর বলে-- গির্কার।

সেধানে কি হয় ?—সেধানে ধৃষ্টের আরাধনা হয়, ভগবানের আর্থনা হয়।

তিনি বাড়ী গিরে মাকে জিজ্ঞানা করলেন—মা, আমরা গির্জার যাই না কেন ?

মা বর্মেন—'বাইবেল কিনে দেব—গড়ে দেখো'। এই বলে ছেলেকে নিরে মা মধুর কঠে ও মধুমর ভাষার একথানি গান করলেন—ছেলে অন্ত এক জগতে চলে গেল। মা তথন বরেন—এই আমার গির্জা—এই আমার ভগবান।

বখন তাঁর ২০ বংসর বরস, তিনি ইংলওে এলেন। ছ বছর তিনি বেকার জীবন অতিবাহিত করেন। অনবরত লেখেন, আর সেই লেখা কাগজে গাঠান। সবই কিরে আসে। একদিন "ওরান এও অল" নামক একটি মাসিক পত্রিকার "গুষ্টান নাম" নামে তাঁর একটা লেখা প্রকাশিত হ'ল। তিনি পারিশ্রমিক পেলেন পনের শিলিং। এই ভার প্রথম প্রবন্ধ প্রকাশিত হ'ল।

তিনি পেশা হিসেবে সাহিত্য কেন নির্মাচন করেন তার কারণ তিনি বলেছেন—"ডাঙ্কার বা উকিলের মত সাহিত্যিকের কারও কাছে যেতে হর না। দামী কোট প্যান্ট, হাট, টাই দরকার হর না। তাই আমি সাহিত্যের পেশা বেছে নিলাম।"

ভিনি নাম করবার জন্ত বস্তৃতা করতে আরম্ভ করেন—বৎসরের পর বৎসর বস্তৃতার প্রোভ চর। তিনি জমিদারী প্রধার উচ্ছেদ সম্বদ্ধে এক সভার বস্তৃতা করবার অসুমতি চেরে এক পত্র দিলেন। উত্তর এক—বারা কার্ল মার্কস পড়ে নি—তাদের বস্তৃতা করবার বোগাতা নেই।

তৎক্ষণাৎ বৃটিশ মিউজিয়ামে গিয়ে কার্ল মার্কসের করাসী ভাষার লেখা সব বই পড়লেন।

১৮৯২ খুষ্টাব্দে ইংলওে নাট্য জগতে একটা সংস্থানের আরোজন চলছে। জ্যাক প্রেণ ইন্ডিপেন্ডেন্ট বিরেটার নামে এক নাট্যালর প্রতিষ্ঠা করলেন। ইনসেনের বিখ্যাত নাটক 'ঘোষ্ট' প্রথম অভিনীত হ'ল। কিন্তু তিনি চাইলেন একখানি নৃতন ধরণের ইংরাজী বই অভিনর করতে। শ এই সংবাদ পেরে "উইডোরাস' হাউসেস" নামক খরচিত প্রথম নাটক প্রোণকে পড়ে শোনালেন। নাটক মনোনীত

হ'ল। ল'এর জীবনে লে এক অরণীর দিন। বার্ণার্ড শরের নাম চারিদিকে এচারিত হ'ল। কিন্তু মাত্র ছু রাত্রি অভিনরের পর এই মাটকের অভিনয় বন্ধ হয়ে গেল।

১৮৯৩ খুষ্টাম্পে তিনি বিতীয় নাটক লিখলেন—"দি কিলাপ্তারার"।
কিন্ত এটি অভিনীত হল না। তারপর তথনকার দিনের বিখ্যাত
অভিনেত্রী জেনেট এচার্চএর অফুরোধে তিনি তৃতীয় নাটক লিখলেন—
"মিসেস ও অরেনস প্রফেসন"। কিন্ত ছুনীতিমূলক মনে করে গবর্ণনেন্ট
এই নাটকের অভিনর বন্ধ করে দিলেন।

তার পর তিনি অনবরত একের পর এক নাটক রচনা করতে লাগলেন—"আর্মস এও দি ম্যান", "কাণ্ডিডা", "ইউ নেভার ক্যান টেল", "সিঙ্গার এও ক্লিওপেট্রা" এবং "ক্যাপ্টেন বাস বাউওস কনভাস্ন"। বিশ্ববী নাট্যকার হিসাবে তার নাম তথন ইংলও অতিক্রম করে আমেরিকার পৌচেছে। সেধানে ১৯০০ পৃষ্টাব্দে তার প্রথম নাটক অভিনীত হল গ্রহশিক্ট কর্তৃক নিবিদ্ধ নাটক "মিসেস ও অরেনস প্রক্ষেন"।

১৮৯৯ খুষ্টাব্দে ২৬শে সেপ্টেম্বর, প্রিক অব ওরেলস বিরেটারে শ'র নাটক "দি ডেভিলস ডিসাইপ্ল" ইংলপ্তে প্রথম অভিনীত হ'ল। আমেরিকারও এই নাটক অভিনীত হর। সেখান হতে শ পান গাঁচ হালার পাউও, আর লগুনের অভিনর হতে পেলেন দশ হালার পাউও।

শরের বরস তথন ৪০ বংসর। অবিশ্রান্ত জীবন সংগ্রামে এইবার তিনি জরী হলেন। ১৮৯৮ খুটাকে ঠলা জুলাই চার্লোট নারী এক মহিলাকে শ বিবাহ করেন। প্রতালিশ বংসর চার্লোট শর জীবন সজিনী বন্ধপ জীবিত ছিলেন। ১৯৪৩ সালে তাঁর লীব মৃত্যু হর।

১৯০৩ সালে শর শ্রেষ্ঠ নাটক "ম্যান এও হুপারম্যান" প্রকাশিত হ'ল। ছু বৎসর পরে এই নাটকথানি লওনের কোর্ট থিরেটারে অভিনীত হল। তখন শ এই নাট্যালরে নাট্যকার, নাট্যাচার্য্য ও প্রযোজকরণে বোগ দেন। শ'র ঐক্রজালিক স্পর্শে নাট্যালরের পরিবর্তন হ'ল। তখন হ'তে নাট্যালর হরে উঠল শিক্ষকলার বিভালর—প্রযোজনিক্তন নর—শিক্ষের পীঠয়ান।

নিউ ইয়র্কেও এই নাটক অভিনীত হয়—নেই অভিনয় হতে শ'র আয় হয় চলিশ হাজার পাউও।

তার পর **অভিনীত হ'ল "নেজর বারবারা'' এবং "দি** ডট্টরু^স ভিলেমা"।

তার লেখনী ছিল তীক্ষ এবং রসনা ছিল ক্ষুরধার। তিনি ছিলেন অত্যক্ষ ক্ষাইবাদী।

১৯১৩ সালে ৮০ বংসর বরসে তার জননী পৃথিবী হতে চিরবিদার গ্রহণ করেন।

আৰু পৃথিবী হতে এই শ্ৰেষ্ঠ প্ৰতিভাৱ ভিরোধানে—পৃথিবীর সাহিত্য-অগতের বে কতি হল তা সহজে পূর্ব হবার নয়।



— যোলো—

কোথার শিকার, কোথার কী! অ্যালবার্টের হালচাল ক্রমেই কেমন সলোহজনক মনে হচ্ছিল ক্যাকর।

একদিক থেকে ভালোই যে হয়েছে—সন্দেহ নেই সে ব্যাপারে। গেম্প্রান্তির সন্ধানে বেরিরে জমিদারের জলার ছটো চারটে ফারার করলে প্রাক্ত কতদ্রে যে গড়াত বলা শক্ত। পেণ্টুল্নপরা চেহারা আর শাদা বাপের ছেলে— এর অতিরিক্ত কতট্ছু মর্যাদা তার আছে কুমার ভৈরবনারায়ণের কাছে! নিতান্তই সাম্না-সাম্নি গেলে একথানা চেরার বদবার জন্তে এগিরে দের—এই যা। কিছু ইাড়িতে যে তার কতথানি চাল এ আর ভালো করে কে জানে কুমার বাহাছ্রের চাইতে?

আলেবার্টের বন্দুক তুটো বেমন তেমনি ঝুলোনোই আছে। না আছে তার হিমালয়ান রেঞ্জ সম্বন্ধে কোনো কৌতৃহল, না আছে শিকার সম্বন্ধে বিন্দুমাত্র উৎসাহ। ক্যাক্ষ সাহেবের সন্দেহ হয় তার চাইতে বড় কিছু শিকারের সন্ধানে আছে অ্যালবার্ট।

का ति निकात ? माथी इयटा ?

একটা প্রচণ্ড উদ্ভাপে ক্যাক্রর সমন্ত মগজটা বেন টগবগ করে কুটে উঠতে চায়। দেশের ব্কের ওপর চাবুক চালিরে একদিন রেশমের ব্যবসা করেছে পার্সিভ্যাল। সাহেবের সমন্ত প্রলোভনকে উপেক্ষা করে যারা তাঁতে রেশম বুনে প্রভিবোগিতা করতে চেরেছে, রাত্রে মশাল্টী পাঠিয়ে আগুন লাগিয়েছে ভাদের বরে। খুন-খারাপীও বে ছটো চারটে করতে হয়নি—নিঃসন্দেহে একথা বলবার মতো জোর নেই স্মাইদ ক্যাক্ষর।

সে:রক্ত তার মধ্যেও আছে। সেই অত্যাচারী, সেই যাতক। দারিত্র্য আর বংশ-পরিচয়ের কজার আহত সাপের মতো সে ফণা স্টিরে আছে; কিন্তু দরকার মতো প্রাণঘাতী ছোবল দেবার শক্তিও যে রাখে, তার পরিচর অস্কৃত একবার সে দিয়েছেই। সেই চামড়ার মতো নীরেট্
অন্ধকারের কালো রাত্তে—

শ্বভির গলাটা জোর করে চেপে ধরণ শাইদ্।
কিছুদিন থেকে এই এক ব্যাধি দেখা দিয়েছে তার। বা
প্রায় ভূলতে বদেছিল—থেকে থেকে হঠাৎ আলোড়ন লাগা
জলের তলা থেকে একরাশ ঘোলা কাদার মতো তা ওপরে
উঠে আসতে চায়। বলা বায় না, এর শেষ কোথায়।
শেষ পর্যন্ত একদিন হয়তো সোজা আদালতে গিয়ে দাড়াবে
—বোবা ধরা গলায় চীৎকার করে বলতে চাইবে, ক্ফুর,
বারো বছর আগেকার এক মেঘে ঢাকা সন্ধ্যায়—

ক্যারু অস্থির ভাবে উঠে বারন্দার পারচারী করতে লাগল।

আকর্ষ! সে কেট নয়—সে কোথাও নেই। এই পড়স্ত বেলার বিষয় আলোয় বাইরে সে অন্ধিকারীর মতো ঘূরে বেড়াচছে। আর ঘরের ভেতর আলো-না-জালা খন ছায়ার স্থযোগে অ্যালবার্ট অত্যস্ত কাছে ঘেঁষে বসেছে মার্থার—গান শোনাচছে তাকে। তবু পিয়ানো-টিয়ানো কিছুই নেই— এই যা রক্ষা।

জল্পন, বীং, ক্রস্বি—অভ্ত সব নাম। যেন মারা-লোকের কতগুলো স্বপ্ত কথা। তানতে তানতে সে বিরক্ত হয়ে উঠে এসেছে। গান তার খুব ভালো লাগে না, ভালোমন্দ বোঝবার ক্ষমভাও নেই। সাঁওভালী নাচ দেখেছে, তানছে ঝুমুরের সঙ্গে-সঙ্গে মাদলের বাজনা, খুশি হয়েছে আতের গন্তীরা দেখে, 'এন্কোর এন্কোর' বলে উৎসাহ দিরেছে ধামালী গানের নগ্ন আদিরসে।

কিছ এ এক বিচিত্র জগতের খবর।

"Do you know the man, who came from the moo—oon—"

আবেগভরা গন্তীর গলায় গান ধরেছে আলবার্ট!
মার্থাও স্থর মিলিরেছে ভার সঙ্গে। গাঁড়িরে পড়ল স্থাইছ,
মনে হল, মার্থার গলা আশ্চর্বভাবে মিশ খেরেছে ক্যাকুর

সঙ্গে, নিখুঁত তান বাঁধা হয়ে গেছে সক্ষ মোটা তারে। এ ছইবের মাঝ্থানে সে বিক্ষিপ্ত। এদের মাঝ্থানে তার গলা কোথাও মিলবে না, সব কিছুকে বেহুরো করে দেবে।

"The man from the moon-"

আদেবাট ? হরতো তাই। মার্থার এই মাটির পৃথিবীতে যেন কোন্ চক্রলোকের সংবাদ। সেধানে অন্ধকারের ছায়ার মতো ক্যাক আতে আতে সরে যাচেছ না তো ?

একটা অনিশ্বর আশকার নিজের হাত কামড়ে ধরতে ইচ্ছে করছে। কিছুই বলা যার না, বলবার মতো যুক্তিসকত কারণ্ড নেই কিছু। অতিথি—বন্ধু! কিছু এ কেমন অভিথি যে এসে এই সাতদিনের মধ্যেও নড়তে চাইছে না! দিন রাত অভের জীর সঙ্গে বকর বকর করে কথা কইছে? এই বা কোন্দেশী বন্ধুত্বের নমুনা।

নাঃ, এবার অ্যালবার্টের যাওয়া উচিত। কাল একবার আভাসও দিয়েছিল।

—তোমার তো ছুটি ফ্রিয়ে এলো বার্টি ?

মার্থা শিউরে উঠেছিল শুনে: তাই নাঞ্চি? কী সর্বনাশ?

কিন্ত বার্টি অভয় দিয়েছিল, না—না, আবো দিন সাতেক হাতে আছে। তা ছাড়া, রিয়ালি এ জায়গাটা আমার খুব ভালো লাগছে। দরকার হলে আরো এক হথানা হয় বাড়িয়ে নেওয়া যাবে।

আনন্দে মার্থা হাততালি দিয়ে উঠেছিল; বা:, কী চমৎকার হবে তাহলে!

চমৎকার! ক্যাক্সর ইচ্ছে হরেছিল একসকে তু হাতে ছটো ঘূবি ছুঁড়ে দেক আল্বার্ট আর মার্থার মুখের ওপর। কিছ তবু সে প্রাণপণে আনন্দের একটা করণ হাসি ফুটিরে তুলেছিল ঠোটের আগার: হাঁ, খুব চমৎকার হবে।

— আরো এক সপ্তাহ! ভাবতেও আমার আনন্দ হচ্ছে।

শানক হছে ! তাই বটে । খানক হওরার কথাই । অ-দেখা গোল্ডার্স গ্রীণের বাতার নিজের চারদিকে বরে এনেছে খ্যালবার্ট, খপ্রের দেশ ইংলপ্তের স্পর্ণ ঝরে পড়ছে তার নিখারে নিখারে । কিছ—কিছ ! খারো এক সপ্তাহ! আবার একটা খুন করতে হবে নাকি সাইদ্ ক্যাক্ষকে ?

তবু শেষ চেষ্টা।

- আর ছ তিন দিনের মধ্যেই পুব বর্বা নামবে এদিকে।
 আ্যাল্বার্ট কৌতূগলী হয়ে উঠেছিল: রিয়্যালি?
- —হাঁ, চারদিকে সমুদ্রের মতো অব দাঁড়াবে। এদিক ওদিক দেখতে পাওয়া যাবে না।
 - —বা:—এক্সেলেন্ট ! সে তো দেখবার মতো ব্দিনিস ।
 ক্যাক নিজের ঠোঁট কামডে ধরেছিল।
- —তথন নৌকোয় করে পাড়ি দিতে হবে। ভাতে প্রায়ই আকৃসিভেন্ট্ হয়—দানে নৌকো ভূবে বায়।
- —ফাইন!—আনলে আগেল্বাটের চোথ চক চক করে উঠেছিল: আমার সাঁতরাতে খুব ভালো লাগে। একবার আমি আধা-আধি চ্যানেল সাঁতরে গিয়েছিলাম।
- চ্যানেল ? ইংলিশ চ্যানেল ? তার আর্থক সাঁওরে গিয়েছিলে ?— শ্রকায় বিশ্বয়ে মার্থা চোথ বিক্ষারিত করেছিল।

অসহায় ক্রোধে পকেটে হাত দিয়েছিল ক্রু সাহেব।
তার পরেই আালবার্টের সামনে বিজি বার করলে পদমর্যাদা থাকবেনা মনে করে, আঙুলের ডগায় গুঁড়ো গুঁড়ো
করে ভেঙেছিল সেটাকে। মনে হয়েছিল ওটা বিজি না
হয়ে মাথার মাথাটা হলেই সে খুশি হত।

শেষ চেষ্টায় স্মাইদ বলেছিল, তথন কিন্তু খুব সাপের উপদ্রব হয়।

—সাপ ? রিয়ালি ?—আাল্বার্টের কৌত্হল ক্ষে অনস্ত: I am very much interested in Bengal snakes—

এর পরে বলা বেত মাত্র একটি কথা। বেরোও—
বেরোও আমার বাড়ি থেকে। কিছু বলা কি অতই
সহজ এখন ? নিজেই নিজের পর্ত খুঁড়েছে। লর্ড বংশের
ছেলে। ব্রেটন ক্রুকশায়ার। নর্থ এক্সিটার অক্সফোর্জ।
ক্যাকর কালো হাতের পাশে একথানা তুষার শুক্র হাত—
সে হাতে হীরের আংটি। ক্যাক উঠে দাড়িয়েছিল।
অন্তত আর একটা চেষ্টা করা বাক। কিছুক্সপের ক্রেজে
অন্তত দুরে সরিয়ে নেওয়া বাক মার্থার কাছ থেকে।

—চলো বার্টি, একটু বেড়িয়ে আসা যাক।

— e:, গ্লাড্লি—জ্যাল্বার্ট উঠে দীড়াতে বাচ্ছিল, কিন্তু মার্থাই বাধা দিয়ে বসল।

—না, বার্টি, তুমি জার একটু বোসো। যাওনা স্মাইদ, তুমিই একটু খুরে এসো বরং। দিনরাত ঘরে বসে থেকে তোমাকেই কেমন স্লাস্ত লাগছে। তোমার একটু বেড়ানো দরকার !

বেড়ানো দরকার ! দরদ কত ! এতকণ পরে আর সন্থ হয়নি কু সাহেবের । বারুদ-ঠাসা হাউইয়ে যেন শেষ আগুনের ছোয়া লেগেছে—ছ্বিসহ ক্রোধে ছিট্কে বেরিয়ে চলে গেছে স্মাইন ।

বারান্দায় পায়চারী করতে করতে ক্যারু নিজের ভান হাতটা মুঠো করে ধরণ।

দোষ তার নিজেরও আছে বই কি। তুলনা করে দেখলে মার্থার পাশে তাকে বিউটি এগাণ্ড দি বিস্ট ছাড়া কী বলা যার আর? মিশনারী বাপের মেয়ে মার্থা, উচ্চ-শিক্ষিত রেভারেণ্ড বিশ্বাস মেয়েকে পাশ করিয়েছিলেন স্থানিরার কেশ্বিজ পর্যন্ত। আর সে?

সে তব্ও তো স্থামী। তব্ও তো স্ত্রীর ওপর তার আইনগত অধিকার। এতদিন সেই অধিকারের দাবীতে নিশ্চিত্ত হয়েছিল বলেই, মার্থার কোনো কটু মন্তব্য, তার দারিস্ত্রোর ওপর কটাক্ষ—কোনোটাই তার ছংসহ বলে মনে হয়নি। অ্যাল্বার্ট আসবার পরেও মার্থা যদি তার সক্ষে ঝগড়া করত, স্বভাবসিদ্ধ প্রথর ভাষায় গালিগালাক্ষ করত, ভা হলে মনে হত সব ঠিক আছে। চলছে নিয়ম মতোই—কোপাও ব্যতিক্রম হয়নি, ছন্দোপতন ঘটেনিকোনোধানে। কিছ আজ—

মার্থা আর ঝগড়া করেনা। অভিযোগ করতে ভূলে গেছে।

মনে হর: এর চাইতে মার্থা বদি মুধর হয়ে উঠত,
ঢের বাছনীর হত সেটা। অন্তত ক্রু সাহেব বুঝতে পারত,
তার সম্পর্কে একটা সন্ধান চেতনা আছে মার্থার মনে।
আর এই অভ্যন্ত নিরমের ব্যতিক্রম ঘটছে। ভল্ত হয়ে
গেছে মার্থা—সংবত হয়ে উঠছে—মার্থার রসনা যেন
সদর হয়ে উঠছে তার ওপর। মন থেকে সরে যাছে
বলেই কি ভূমিকা তৈরী করছে সৌক্রের ?

"On the silvery green—the man came down from the moon—"

সন্ধ্যা নামল। রাত্রির ছারা পড়ল। আচক্রবাল মাঠের ওপর—শুধু রক্তের একটুখানি ফিকে রঙ লেগে রইল তিন-শাহাড়ের কৃষ্ণ শুদ্ধতার। একদল বকের পাথার । কীণ ধ্বনি মিলিয়ে এল ভাল-দিগন্তের ওপারে!

ঘরে আলো জলেছে। গানটা **ধামল এভক্ষণে**।
হাসির কলধ্বনি উঠল একটা। **স্থাতার শব্দ পাওয়া গেল**—হয়তো ওরা বাইরে বেরিয়ে আসছে।

এই মৃহুর্তে ওদের সঙ্গে মুখেমুখি হয়ে গোলে নিজেকে সংযত রাখা যাবে কিনা সন্দেহ। কী বলতে কী যে বলে বসবে নিজেই জানেনা। তাম চাইতে নিজের কালো মনটা নিয়ে একটু সরে দাঁড়ানোই ভালো।

সামনের খোলা দরজা দিয়ে এদিকের অন্ধকার ঘর্টার এসে চুকল ক্যাক ।

কতগুলো ভাঙা জিনিসপত্র, একটা ছেঁড়া ক্যাম্প খাট। অন্ধকারের মধ্যে দেই ক্যাম্প খাটটাতেই ঝুপ করে বনে পড়ল স্মাইদ।

वाहेरत त्थरक ब्यान्वाट हेंत्र शनात व्याख्याक धन।

—স্মাইদ্ তো এতক্ষণ এইখানেই ছিল।

मार्था अवाव बिला, जारे का मत्न रुष्टिल।

—গেল কোথায় তা হলে ?

— তाই তো! — मार्था **फाकन**ः चाहेम् — चाहेम्!

কু সাহেব সাড়া দিলনা। ঠিক ইচ্ছে করেও নর—
সাড়া দেবার কোনো প্রয়োজন আছে বলেই যেন মনে
হলনা তার। এত সৌজন্ত, আাল্বাটের সামনে স্বামীর
সম্পর্কে একটুখানি ভত্ততা বাঁচিয়ে রাখা মাত্র। কিছ
সাড়া দিয়ে সে যদি সামনে গিয়েই দাড়াত, তা হলেই কি
সাত্য সত্যি খুলি হতো ওরা গুনা—হতনা। আইদ্
ক্যাক স্পষ্ট ব্যেছে— the man from the moon আজ
যুম ভাঙিয়েছে রাজকভার; কোনো দ্বীপ-ত্রের টাওয়ারে
বন্দিনীর জানালা দিয়ে এনেছে মুক্তির সংবাদ। সেখানে
একটা দৈত্যের মতোই সে অনভিত্তেত অন্ধিকারী।

মনে হল, মার্থা যেন এদিক ওদিক তাক্ষিয়ে তাকে খুঁজে নিলে থানিকটা। তারপরে মন্তব্য করলে, কোবাও বেরিয়ে গেছে হয়তো। ও ওই রক্ষ। च्यान्वार्वे वनतन, भूरवात्र ह्यान्।

- —পুরোর নর, ইভিরট।—মার্থার মন্তব্য শোনা গেল আবার।
- —ইডিরট? তা সত্যি।—বোঝা গেল, মার্থার

 স্বিভাত্তের সলে তার সম্মতি আছে। তবু বন্ধুছের ঋণটা
 একেবারে অধীকার করতে পারলনা অ্যাল্বার্ট: হি
 ইকু এ শুড্ সোল।

আন্ধারের মধ্যে ত্হাতে নিজের হাঁটু ত্টো চেপে ধরল কু সাহেব। কোথা থেকে তু তিনটে আরশোলা পড়ল গারের ওপর, পারের গোড়ায় স্থড়স্ড দিয়ে গেল খুব সম্ভব একটা নেংটি ইঁহুর। কিন্তু স্থির হয়ে বসে রইল সে। নিজেকে সম্পূর্ণ সম্ভাগ করে—পরিপূর্ণভাবে উৎকর্ণ হয়ে প্রতিটি কথা সে শুনে যেতে লাগল।

मार्था वनात, अमा, वना याकू।

চেয়ার সরাবার শব্দ এল। ওরা বসেছে তা হলে।

- कृषि करव रहारम साक् ?- मार्थात्र श्रन ।
- —খুব সম্ভব আসছে মাসেই। ক্রকশায়ার হল থেকে কাকার চিঠি পেথেছি। কী দর কারী কাজে ডেকে গাঠিয়েছেন।
 - —কাকা বৃঝি তোমাকে খুব ভালোবাসেন **?**
- ওঃ, হি ইক এ গ্রাও ওল্ড চ্যাপ। ভেরি ক্লী ম্যান। একবার চলোইনা ক্লামাদের ওথানে।
 - —আমি ?—মার্থার দীর্ঘধাস শুনতে পাওয়া গেল।
 - —কেন, **আণত্তি** কী ?
- —মিথ্যে ওসব বলে কেন কষ্ট দিচ্ছ বাৰ্টি ? জানোই ভো আমার অবস্থা।
- —এ ভারী অন্তায় !—আালবার্টের গলার অহুযোগের স্থর: এথানে ভোমার এভাবে নিজেকে নষ্ট করার কোনো মানে হয় না।
 - --কী করব তবে ?
- —You should see the other side of life also!
 ——জ্যালবার্টের গলার শন্নতানের প্রপুর্নিমন্ত্র বেকে
 উঠল। নির্জন বারান্দার নিভ্তিতে মার্থার সান্নিধ্য তাকে
 চঞ্চল করে ভুলছে।

পারের কাছে একটা নয়—গোটা ভিনেক নেংটি ইত্র যুর যুর করছে। স্থোগ পেরে একদল মশা চক্রাকারে ফিরে ধরেছে তাকে। পাধর হয়ে, রসে রইল কু সাহেব।

- —ইম্পসিবল! কিছুতেই তা হতে পারে না।— জ্যালবার্টের কঠে পুরুষের প্রতিশ্রুতি।
- की করে আমি বাব ? কী আমার যোগ্যতা ? মার্থা কি কাঁদছে ? স্মাইদ ক্যাক ভাবতে চেটা করল। মার্থা কথনো কি কাঁদতে পারে ? কেঁদেছে কি কোনো দিন ? ক্যাক মনে করতে পারল না।
- —আমার দিকে তাকাও দার্থা!—নিশ্ব বিষণ্ণ শর আাল্বার্টের: চোথ তোলো।

 - —তাকাও, ভালো করে তাকাও। তোমাকে দেখি।
 - —কী দেখবার আছে **আ**মার ?
- —ভোমার চোখ। ব্লাক আইজ। কালো চোখ দেখলে I feel so dreamy! মনে হয় ওই চোধের মধ্যে আমি ডুবে যাচ্ছি।
- —বার্টি, প্রীজ—বোলোনা অমন, করে। আমি সইতে পারছি না।
- —ভূমি নিজেকে জানোনা মার্থা। নিজের দিকে
 কথনো তাকিয়ে দেখোনি। জানোনা, ভূমি কভ ফুলর!
 - —মিথো। আমি কালো—আমি আগ্লি।
- —কালো হলেই কি আগ্লি হয় ? ভূমি বাংলা দেশের সবৃজ মাটির সৌন্দর্ধ। জাই লাভ বেলল। বাংলা দেশের মেয়েদের আমার ভালো লাগে। একটা আশ্চর্য ছন্দ আছে ভাদের। মনে হয়, লিরিক্ কবিতা। সেই কবিতা আমি তোমার মধ্যেও দেখেছি।
- বার্টি, তুমি গর্ড বংশের ছেলে। কত ভোষার সন্মান, কত ভোষার মর্যাদা। সেথানে কে আমি? বার্টি, ভগবানের দোহাই—তুমি আমায় ওসব বোলোনা।
 - —মার্থা !
 - --ना।
 - —মার্থা, শোনো।

—না—না—মার্থা এবার সভ্যিই কাঁদছে।

সিমেন্টে জমানো কংক্রীটের মতো জমে গেছে ক্যাঞ্চর সমত পেলীওলো। তক হরে গেছে বোধেন্দ্রির। এও ছিল মার্থার মধ্যে। ছিল চোধের জল—ছিল অপ্প—ছিল এমন ত্র্বলতা। কোনোদিন সে-জগতের সদ্ধান পারনি ক্রু সাছেব, কোনোদিন পা বাড়াবার স্থ্যোগ পারনি মার্থার অস্তর-রাজ্যের এই বিচিত্রলোকে। যদি বিশ বছর আগেকার গোল্ডার্গ গ্রীপের অপ্র-মরীচিকা এমন করে তার ভেঙে না বেত, তা হলে—তা হলে কীবে ঘটতে পারত, কে বলতে পারে সে কথা!

- —गार्वा, गारे नाष-
- —ও বার্টি—
- -मारे डार्निः-

প্রেতের মতো বেন কবর ফুঁড়ে অভিশপ্ত ক্যারু ওদের সন্মুখে এসে দীড়ালো। অ্যালবার্টের বাহবন্ধনে চখনো মার্থা নিবিড্ভাবে বাধা, তখনো ওদের ওঠাধর এক সকে মিলিত।

নিঃশব্দে ভিনন্ধন দীড়িরে রইল কিছুক্ষণ—কিছ নী করতে পারত, কী করতে পারত কু সাহেব ? আক্রমণ ার, গালাগালি নয়, বিশাস্থাতক বন্ধু আর অবিশাসিনী নীর প্রতি একটা কটু মন্তব্যও নয়। এ হবেই—এ ধ্বধারিত—একথা তার চেয়ে কে আর বেশি ভালো হবে আনে!

The man from the moon! ছারার লজ্জার
থাপনিই ছিটকে পড়ল-আইদ্ ক্যায়--বেমন করে একবার
ডে গিয়েছিল একটা অবাধ্য ঘোড়ার পিঠ থেকে।

কিছুই বন্ধ না, একটা অব্যক্ত ধ্বনি পর্বস্ত উচ্চারণ করিশ না। ভারপর বেন কী একটা অভ্যস্ত দরকারী কাজের কথা মনে পড়েছে, এমনি ভাবে অভিশন্ত কিপ্রগতিতে নেমে গেল বাইরের অক্ষকারে।

বাড়ি ফিব্ল প্রদিন বেলা নটায়।

উদ্দান রাভ কাটিয়ে কিরেছে নীচ-জাতের একটা নই
মেরের বরে। তাড়ি গিলেছে করেক ভাড়। তারপর
নেশার জড়ানো চোপে টলতে টলতে বরে এসেছে।
পাঁচ সাতবছর আগে মার্থার শাসনে এই অমুগৃহীতা
মেরেটার সংস্রব সে কাটিয়ে ছিল, আজ আবার নতুন
করে ঝালিয়ে নিতে হল।

জানত—এ হবেই সে জানত। বিশ্বিত হল না— ব্যথাও পেল না। কালো মায়ের কালো ছেলে। পার্সিজ্ঞাল তাকে সব কিছু থেকে বঞ্চিত করেছে— সন্মান থেকে, মর্যালা থেকে; তারই সগোত্র আর একজন শালা মাহায় মার্থাকেও নিরে গেল।

অভিবোগ কাউকে করতে হলে—নিজেকেই; কারো গলা যদি টিপে ধরতেই হয়, তবে তা নিজেরই মারের।

বেতের চেয়ারটার ওপর ঝুণ করে শুয়ে পড়ল ক্যারু। টেবিলের ওপর নীল কাগজে লেখা একটা চিঠি চাপা দেওরা—মার্থা তাকেই লিখে রেখে গেছে। অভ্যাস বসে তুলে নিলে ক্যারু, তারপরেই মনে হল—কী হবে পড়ে ? টুকরো টুকরো করে কাগজটাকে ছিঁড়ে জানলা গলিরে ছঁড়ে দিলে বাইরে।

(ক্রমশঃ)

বার্ণার্ড শ'

শ্রীবেণু গঙ্গোপাধ্যায়

স্বিগণ অগ্রগণ্য, বয়োবৃদ্ধ থবি নাট্যকার লীবন-নাট্যের তব আৰু কি গো হল অবসান ? এনেছ মানব হরে, গেলে অভি-মানবের বেশে চির সভ্যে প্রভিত্তিরা আপনার মৃত্যুহীন প্রাণ। ক্রধার লেখনীতে মধু হল ছিল মেশাবেশি। রাজকর, লোকনিকা, ভুচ্ছ করি ভোষার এবণা

অবধানী দৃষ্টি দিবে গৃঢ় তক্তে করেছে প্রকাশ।
অকাতরে বিলারেছে মৃষ্টি মৃষ্টি ভাব অর্থ-কণা।
বিলাস করেনি স্পর্ল, সম্পদ দিল না মলিনতা।
প্রতিষ্ঠা স্বাক্ষর রাথে শাখতের পটভূমিকার।
মনের ব্যাতি তব জরাগ্রন্ত হর নাই কভু।
বর্ণাঢ়া ভূলিকা দিরে সনাতন ছবি এঁকে বায়।

ভোমার বিচিত্র হুষ্টি, ওগো সভা-পথ-সারণিক। ভোমার জীবন ধারা বহে নাই গভা হুগভিক।

কুমুদশঙ্কর রায়

শ্রীবিজয়রত্ন মজুমদার

হৃদরোগ বিশেষক হৃদয়বান মাহ্য বলিতে যে ছই দশ জন মাত্র লোকের পরিচর পাওয়া যায়, সন্থঃ পরলোক-প্রাপ্ত কুমুদশঙ্কর ছিলেন ভাগদেরই একজন। যাদবপুর বলা আরোগ্য নিক্তেন যশনী বিধানচক্র রাম মহাশয়ের সৃষ্টি এবং তাঁহার অবিনশ্বর কার্ত্তি বটে, কিছ কুমুদশঙ্কর রামই মৃত্যুক্ষণ পর্যান্ত প্রতিষ্ঠানটিকে বক্ষে ধারণ করিয়া অপরিসীম যতে, মাত্সম স্লেহে লালন পালন করিয়াছেন।



কুমুদশহর রার

যাদবপুরের হাসপাতালটির উপর ডাক্তার কুমুদশন্ধরের মমতা এতই নিবিড় ও ঘনীভূত ছিল যে, তিনি তাঁহার একমাত্র পুত্র করণশন্ধরকে বিলাতে রাখিয়া ফ্লারোগ চিকিৎসায় পারদর্শী করিয়া যাদবপুরেই সংষ্ক্ত করিয়া দিয়াছিলেন। একমাত্র পুত্র কাল ব্যাধি যক্ষায় ভূবিয়া থাকে সে ইচ্ছা জননীর অদৌ ছিল না এবং বিধিমত বিরুদ্ধতা ও প্রাণ প্রতিবন্ধ হতা কবিয়াও স্থামীকে নিরন্ত করিতে তিনি পারেন নাই। হতভাগ্য প্রভাস ঘোষের

শেষ নি:খাদের উপর বিধানচন্ত্র বেদিন এই আরোগ্য নিকেতনের ভিত্তি প্রতিষ্ঠিত করিয়াছিলেন, सरी हिमम প্রভাদের ক্ষীণ দেহান্তির উপর একধানির পর একধানি করিয়া ইষ্টক গ্রন্থিত করিয়াছিলেন—শিষ্য, সুহৃৎ, মেগাম্পদ প্রভাগের অন্তিম বাসনাকে রূপান্তরিত করিতে ভিক্ষাপাত্র হত্তে অহর্নিশি বার চইতে দ্বারাস্তরে পরিভ্রমণ করিয়া-ছিলেন-একার ও অক্লান্ত শ্রম যতে বেসরকারী আবোগ্যশালার আদর্শ প্রতিষ্ঠানের রূপ দানে তমু-মন-ধন উৎসর্গ করিয়াছিলেন, সেই দিন, দেই কণ হইতে ডাকোর কুমুদশল্পর কায়ার সহিত ছায়ার মত বিরাটবটবুক্সসূদশ বিধান হায়ের পার্শ্বে সন্নিবিষ্ট ছিলেন। কলিকাতা সহরের সাধারণ মধাবিত ঘরের ছেলে প্রভাগ বিলাতে ডাব্রারী পড়িতে গিয়া যক্ষাক্রান্ত হইয়া দেশে ফিরিয়া আসে। বাঁচিবে না, জীবনের আশা নাই তথাপি স্থাচিকিৎসার ব্যবস্থা থাকা সংঘণ্ড প্রভাস ভর্মা পার নাই : কিন্তু যদি মরিতে হয়, দেশের বায়তে শেব নিঃখাস फिलिवाর অদম **আগ্র**েট খদেশে প্রভাবর্ত্তন করে! মৃত্যুকালে সামান্ত কয়েক শত টাকা গুরু হন্তে দান করিয় প্রভাস একটিমাত্র অন্তরোধ করিয়াছিল; বলিয়াছিল, "আমার এই অর্থে যদি একটি যক্ষারোগীর যত্রণার লাখ করিতে পারেন, তাহা হইলে পরলোকে গিয়াও আহি भाष्ठि भारेव।" अकारमञ अक्रटमव -- विधानवावू छाहाः শেষ কামনা পূর্ণ করিয়াছেন। আয়ু কেহই দিতে পা না; যম যাহাকে আহ্বান দিয়াছে, তাহাকে ধরিঃ वाशिवात माधा काहात७ नाहे; वाषवभूत यकारवाशील कीवन मिर्छ शांतियाह किना कानि ना, छटव हिकिৎमा যাহা সম্ভব-যন্ত্রণার লাঘব এবং বোগ উপশম করিঃ নিরাশার খনামকারে আলোকরশ্মি বিকীরণ করিয়াছে হয়ত প্রভাসের অশাম আত্মা কথঞিৎ শামিও পাইয়াছে প্রভাসের কালে যক্ষাচিকিৎসা-বিজ্ঞান আজিকার ম खेरकर्स लांक करत नाहे, तक कहे, तक यहना टर्ना করিয়াই প্রভাগ চির বিদার লচয়াছিল। আৰু বহু 🧐 রোগীকে আরোগ্য লভিতে দেখিয়াও ভাহার আত্মা পর সম্ভোষ লাভ করিতেছে ইহা অনুদ্রব করিতে পারি। কুর্ শক্তরও চিরদিন যক্ষারোগীর সেবী করিয়া মৃত্যুকালে পুত্র সেই যুক্তাক্ত অভাগাদিগের সেবাতেই নিয়েকিত করি গোলেন। কুৰ্মুদের আত্মাও কি পরলোকে শান্তি লভিবে না



কলিকাভায় ট্যাক্স ব্যক্ষির প্রতিবাদ-

সম্প্রতি বালীগঞ্জে শ্রীযুক্ত বিজ্ঞযরত্ন মজুমদার মহাশয়ের সভাপতিতে এক জনসভায় কলিকাতা কর্পোরেশন কর্ত্তক অত্যধিক ট্যাক্স বৃদ্ধির প্রতিবাদ করা হটরাছে। গত কয বৎসর ধরিয়া কলিকাতা কর্পোরেশন আর জন-প্রতিনিধি षाता পরিচালিত নাই--উহা সরকারী কর্তৃপক্ষ কর্তৃক চালিত হইতেছে। এ অবস্থায় ট্যাক্স বুদ্ধির ব্যবস্থা যাগতে আপাততঃ স্থগিত রাধিয়া নৃতন নির্বাচিত কমিশনার দ্বারা গঠিত কর্পোরেশন কর্ত্তক বহাল হয়, সে জন্ম সভায় প্রস্তাব গুণীত হয়। কলিকাতা বাংলার কেন্দ্র-পশ্চিম বাংলার व्यधिकाः म छा। क्रा किवाजा इहे एउटे मः गृशी छ इयु-- शिका বাংলায় যে ৬৪ কোটি টাকা আত্মকর পাওয়া যায়, তাহার ৬০ কোটি টাকা শুধু কলিকাতা সংরের অধিবাসীরাই প্রদান করে। বিক্রের করের সাড়ে ৪ কোটি টাকার মধ্যে দাতে ভিন কোটি কলিকাতা সহরেই পাওয়া যায়। পশ্চিম वाःनात्र विक्रनी-कत श्रांत्र ३ क्लांकि हो का, जास्मान कत्र ১ (काणि होका, खुवारथलात कत > (काणि होका-मवहे कनिकां । महत्वत्र अधिवामीता निया थाटक । এই मकन কথা বলিয়া সজাপতি মহাশয় পশ্চিমবঙ্গ ব্যবস্থা পরিষদে কলিকাতা হইতে অধিকসংখ্যক প্রতিনিধি গ্রহণের দাবী গত মহাযুদ্ধের সময় সামরিক গাড়ী জানাইয়াছেন। চলাচলের অক্ত কলিকাতার রান্তাদমূহের যে ক্ষতি হইয়াছিল, मिहे कि जिल्ला वावप १० नक छोका कर्लारतमन अथनक क्टीय गर्डिय निक्रे आमाय क्रिए भारतन नारे। যে ভাবে ক্ললিকাতা কর্পোরেশন ট্যাক্স বৃদ্ধি করিয়াছেন, जाराब देनान युक्ति नारे। युद्धत शत (र जाकाणांविक াৰস্থা চলিভেছে, ভাহাতে কর বৃদ্ধি ব্যবস্থা বলবৎ হইলে নহরবাসী নানা ভাবে বিপন্ন হইবে—এই কথাগুলি সভায় বিভিন্ন বক্তা বিবৃত করিয়াছিলেন। বর্ত্তমান ট্যাক্স বৃদ্ধি वावष्टा तम कविवात सम्म श्रीकमवन नतकारतत श्रीरामनीय ্যবস্থা করা যে প্রয়োজন সে কথা প্রত্যেক সহরবাসীই আজ थकाम कविरक्रकत ।

দক্ষিণেখ্যে রামকৃষ্ণ যাত্রী নিবাস-

দক্ষিণেশ্বরে রামকৃষ্ণ মহামণ্ডল গত ক্ষেক বৎসর
ধরিয়া শ্রীঞ্রীকামকৃষ্ণ পরমহংসদেবের শিক্ষাপ্রচারের ক্ষন্ত
নানা ভাবে চেষ্টা করিতেছেন। সম্প্রতি তাঁহারা কালীবাড়ীর দক্ষিণ পাশে ও বালী পুলের উদ্ভরে গঙ্গাভারে একটি
স্বর্হৎ বাড়ী ও পুকুরসহ তিন বিঘা জনী রেল-কর্তৃপক্ষের
নিকট ৫২ হাজার টাকায় ক্রয় করিয়াছেন। তথার অস্তান্ত
কার্য্যের সহিত আন্তর্জ্জাতিক বাত্রী-নিবাস প্রতিষ্ঠা করা
হইবে। বাড়ীটি পূর্বের স্বর্গত বহুনাথ মল্লিকের ছিল—বালা-



पिक्तिपदात त्रामकुक वाजीनिवान

পুল নির্মাণের সময় উহা রেল কর্তৃপক্ষ ক্রয় করিয়াছিলেন।
ভারতের ভৃতপূর্ব গভর্ণর জেনারেল শ্রীচক্রবর্তী রাজাপোপালাচারী মহাশরের চেষ্টায় উহা একণে রামকৃষ্ণ
মহামগুলের হস্তগত হইয়াছে। এই কার্য্যে মহামগুলের
পক্ষ হইতে পশ্চিমবঙ্গের রাজস্ব বিভাগের শ্রীসভোজ্রমোহন
বন্দ্যোপাধায় আই-সি-এস, কলিকাতা পুলিশের
শ্রীসভ্তোজ্রনাথ মুখোপাধ্যায়, হাওড়া মোটর কোম্পানীর
শ্রীস্থালকুমার দেও দক্ষিণেশরের শ্রীস্থালকুমার মুখোপাধ্যায়

বে অক্লান্ত পরিশ্রম করিয়াছেন, ভজ্জভ জাঁহারা দেশবাসী সকলের প্রশংসার পাত্র।

কৰি কুমুদরঞ্জন সম্বর্জনা-

বর্জনানের সাহিত্যিক সংস্থা রবিবাসরের উত্যোগে
গত ৮ই অক্টোবর সকালে বর্জনান টাউন হলে বর্জনান
কোর কোগ্রামনিবাসী প্রবীণ কবি শুকুমূদরঞ্জন
নরিক মহালয়ের অল্মোৎসব সমারোহের সহিত সম্পাদিত
ইইয়াছে। ঐ উৎসবে শুকুক তারালম্বর বন্দ্যোপাধ্যার
সভাপতিত করেন ও শুকুত হেমেক্সপ্রসাদ বোব প্রধান
মতিধির আসন গ্রহণ করেন। শুমনোক্ব বস্তু ও

মাজেরই ক্তভ্তার পাত্র। আমরা এই উপলক্ষে কবির শান্তিমর স্থার্থ জীবন কামনা করি। জ্যাসাত্রেম নির্ম্বাচন করে।

আসাম প্রদেশ হইতে প্রাদেশিক ব্যবস্থা পরিবদের ১০৮ জন সদক্ত ও কেন্দ্রীর পরিবদের ১২ জন সদক্ত নির্বাচিত হইবে। আগামী ৪ঠা এপ্রিল আসামের সর্ব্বত্ত ঐ নির্বাচনের ভোট গ্রহণ করা হইবে বলিয়া ছির হইয়াছে। মোট ৪১ লক্ষ ভোটদাতা ছির হইয়াছেন, তয়ধ্যে ১৯ লক্ষ মহিলা। প্রাদেশিক ব্যবস্থা পরিষদের ১০৮ জন সদক্ষের মধ্যে ১২ জন পার্বত্য জেলার ও অভ্নয়ত সম্প্রদায়ের লোক



বর্জমানে কবি কুমুদরঞ্জন মলিকের সবর্জনা—কবির ছুই পার্বে ইছেমেল্রগুলাদ ঘোন, ফণীক্রনাথ মুখোপাধ্যায়, তারাশহর বস্বোপাধ্যায়, মনোজ বস্থ প্রমুধ বিশিষ্ট সাহিত্যিকগণকে দেখা বাইতেছে

শ্রীকণীক্রনাথ মুখোপাধ্যার উৎসবে বোগদান করিয়াছিলেন। উৎসব উপলক্ষে কবিকে মান-পত্র এবং রোপ্য
দিন্দিত লেখনী ও মস্যাধার উপহার দেওয়া হয়। কবি
সারাজীবন গ্রামে বাস করিলেও তাঁহার কাব্যপ্রভিতা
সমগ্র দেশকে সমৃদ্ধ করিয়াছে। পরিণত বয়সে কবির
এই সম্বর্ধনা দেশবাসীর কাব্য-প্রীতির পরিচারক সন্দেহ
নাই। বর্ধমানের বে সকল অধিবাসীর চেষ্টায় এই উৎসব
সাক্ষয়মণ্ডিত হইয়াছে, তাহারা বালালার সাহিত্যিক

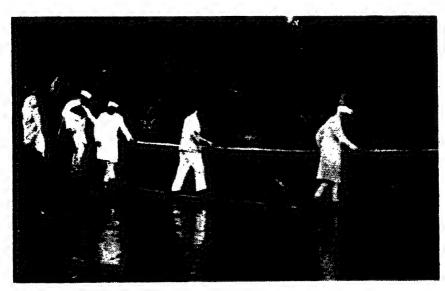
থাকিবেন। ভারত রাষ্ট্রে আসামই সর্বপ্রথম নির্বাচনে দিন স্থির করিরাছেন—এখন জ্ঞান্ত সকল প্রচেশে পালা আসিবে।

এবিশিনবিহারী গালুকী—

গত এই নভেম্বর রবিবার খ্যাতনামা দেশনারক ব্যবস্থা পরিবদের সদক্ত শ্রীবৃক্ত বিশিনবিহারী গালুনী দহাশহে বরস ৩৪ বংসর হওয়ার উাহার স্বস্থানিকাং ভারত-সভা হলে এবর্তক সংবের স্ভাশতি শ্রীরভিদাল রা শহাশরের সভাপতিত্বে এক সভার দেশবাসীর পক হইতে তীহাকে মানপত্র প্রদান করা হইরাছে। ৪০ বংসরেরও অধিক কাল ধরিয়া বিপিনবাবু যে ভাবে দেশসেবা করিতেহেন, তাহা দেশবাসী সকলের অহুকরণযোগ্য। তিনি আজীবন দারিদ্রা, নির্যাতন ও ছং থকটের মধ্য দিয়া কাটাইরাছেন। আজও তাঁহার অসামান্ত কর্মনিষ্ঠা ও শক্তি বে কোন যুবককে বিশ্বিত করিয়া থাকে। আমরা তাঁহার স্থলীর্ঘ, কর্মমন্ত্র জীবন কামনা করি। ঐ দিন তাঁহার প্রকটি ৫ হাজার টাকার তোড়া উপহার দেওয়া হইরাছে।

ব্বকগণের উভাষের প্রশংসা করি ও আশা করি এই চেষ্টা দেশবাসীর প্রকৃত উপকার করিতে সমর্থ হইটে পাল্লভেশাভেশাভাষে

থ্যাতনাম কথা-সাহিত্যিক বিভূতভূবণ গত সলা নতেখ্য ব্ধবাধ রাজি ৮টার সময় ৫৪ বংসর । তাঁহার থানে বিজ্ঞান করিবাছেন। ৪ দিন পূর্বেধ সভা হইতে ফিরিবার পথে তিনি অক্স্ত হইয়া তাহার স্ত্রী, একটি ৩ বংসরের পুত্র ও কনিষ্ঠ প্রাভা বর্ত্তম ১৩০৩ সালের ৩০শে ভাল্ল ২৪পরগণার স্থ্যতিপুরে



আসামের ভূকন্স-বিধান্ত অঞ্চল পরিদর্শনে গিরা সদলবলে পণ্ডিত জহরলালকে একটি অহারী বাঁলের সাঁকো অভিক্রম করিতে দেখা বাইজেং পূর্বে একটি সমস্ত লোহার পূলই এখানে ছিল। পণ্ডিভজীর সেক্রেটারী এই অহারী সাঁকো অভিক্রম কালে জলে পড়িরা বাম। কটো—ভারৰ

াম ও ভেক্নলজ্বি-

আমেরিকা ২০১ ওয়েই ৯৯ ব্রীট, নিউইয়র্ক-২৫ হইডে
একলল বালালী 'বিজ্ঞান ও টেক্নলজি' নাম দিয়া একথানি
বাংলা ভাষার মাসিক পত্র প্রকাশ করিতেছেন। উহা
বছ জাতব্য তবে পূর্ব থাকে। গত জাঠ সংখ্যা সম্প্রতি
আমাদের হাতে আসিয়াছে—ভাহাতে 'সিটিবিউল রহস্ত'
'আধুনিক পাওয়ার হাউসের গঠন প্রতি' প্রভৃতি
ক্রেকাট চমৎকার প্রবদ্ধ প্রকাশিত হইয়াছে। শক্তি
নিরোকী, পরেশ জ্ঞাচার্য প্রভৃতি ১০জনের নাম উহাতে
ক্রেকা ক্রিয়াছে। আনরা আমেরিকা-প্রবাসী এই

জন্ম হর—তাঁহার পৈতৃক বাস বনগাঁর নিকটস্থ বারাকপুর গ্রামে—বনগাঁ হাই কুল হইতে মাটি কি করিয়া ১৯১৮ সালে রিপণ কলেজ হইতে তিনি বি-এ করেন। ২৪পরগণা হরিনাভি কুলে কিছুকাল শিষ্করার পর তিনি ভাগলপুরের ডেরা ইসমাইলপুরেক্সমিন ন্যানেজারের কার্য্য করেন। বেমন বাল্যকালে বাড়ী। ৪ মাইল দুরে কুলে বাতায়াতের সমর, তেমনই জনিয় মধ্যে ভ্রমণের সময় তাঁহাকে বনে কললের মধ্য দিয় চলিতে হইত। জনিয়ারীর কাল ছাড়িরা আসিয়া করেক বংসর কলিকাতার শিক্ষকতা করেন ও পরে

বিরা বাইয়া স্থানীর হাই সুলে শিক্ষকতা করিতেন।
হার 'পণের পাঁচানী' প্রকাশিত হুইবার সজে সঙ্গে
। এক হিসাবে তাঁহার থাতি ছড়াইয়া পডে। তাহার পর
রিণাক, অপরাজিতা, স্প্রিপ্রদীপ, মেল্মল্লার, যাত্রাবদ্দন,
নাগত, ত্ণাস্থ্ব, উমিপ্থর, দেববান, মৌ নীফুল প্রভৃতি
থানিরও অধিক গ্রন্থ লিখিয়া গিয়াছেন। দেশবাসী
হিন্তি প্রাপ্তা সন্মান প্রদান করিয়া ছিল — প্রবাদী বক্ষ
ক্রিলা সন্মিনর বোদাই অধিবেশনে ও মারাট অধিবেশনে

বিভূতিভূবণ বস্থোপাধ্যায় শিলী—স্নীসমাধ্ব সেনগুপ্ত

নি সাহিত্য শাথার সভাপতি হইয়াছিলেন। তিনি

গ্রন্থ অমায়িক-প্রকৃতির আড়খরহীন মাহ্য ছিলেন।

হার সহনর ব্যবহার সকলকে মুগ্ধ করিত। তাঁহার

গতে বর্জমান বাখালা সাহিত্যের যে ক্ষতি হইল, তাহা

গে হইবার নহে। তিনি যাহা দিয়া গিয়াছেন, বাখালী

ঠক তাহা পাঠ করিয়া ওগু আনন্দ লাভ করিবে না, নৃতন
ব-প্রেরণা লাভ করিয়া কুডার্থ হইবে।

দ্ৰলোকে পূৰ্ণচক্ৰ সিংহ—

কলিকাতা কোড়াগ নিংক পরিবারের পূর্বচন্দ্র ংক্ত ২৭শে সেপ্টেম্বর পরলোকগত হইরাছেন। ডিনি সারা শীবন সংস্কৃত ভাষা ও সাহিত্যের জন্ম আপ্রাণ চেষ্টা করিয়া গিবাছেন। সংস্কৃত সাহিত্যের প্রসার ও প্রচারের জন্ম তাঁহার গৃহে বহু সভা সমিতি অমুটিত হইবাছে ও সে



পূर्वहन्त्र मिःह

জন্য তিনি প্রচ্র অর্থ দান করিয়াছেন। এ সময়ে তাঁহার মৃত্যুতে সংস্কৃতি ভাষা ও সাহিত্য এবং তাহার রক্ষকগণের অপুরণীয় ক্ষতি হইয়াছে।

সমাজ-সচেত্র-

'নয়া সমান্ধ' নামক একথানি সাপ্তাহিক পত্রের শারদীয়া সংখ্যায় কবিশেখর শ্রীকালিদাস রার মহাশবের একটি কবিতা প্রকাশিত হইয়াছে। আমরা কবিতাটি নিমে উদ্ভ করিলাম। বাদালার সকল কবির দৃষ্টি এই কবিতার প্রতি আক্লষ্ট করি:—

মাছ বিকাছে তিন টাকা সের পটোল বার আনা

এ সব কিছুই দেখতে পায় না কাব্য ভোমার কানা।
আটার ভেলাল, চালে কাঁকর, পাই না কেরোসিন,
কাব্য ভোমার এ সমস্রায় ক্যালাস উদাসীন।
ইামে বাসে ভিড়ের ঠেলার ছুবটনা হয়,
ভোমার কাব্যে ভার ত কোন নেইক পরিচয়।

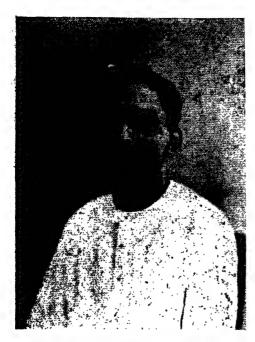


মেলর জেনারেল আসত্যত্তত সিংহ রায়ের র'াচিতে বাংলা বিহার এবং উড়িয়ার সামরিক শিকাকেক্র পরিদর্শন



গাঁচির সামরিক শিকাকেলের একটি মুখ

সব অকিসে যুসের দাবী, নেইক কেহ সং,
কাব্য তোমার দেখাছে কি প্রতিকারের পথ ?
ঠাকুর চাকর চার না থাকতে তিরিশ টাকার কমে
চাবের অভাব ঘুচার রেশন, ববে এবং গমে।
ধুভি শাড়ী কিনতে গেলে যা খুগী দাম চার,
ভোমার কাব্যে পাই না খুঁজে এ সবের উপার।
কাজেই দেখছি নও কো তুমি সমাজ-সচেতন,
এ বুগে ও কাব্য তোমার অচল আর্তন।



বঙ্গীর প্রাবেশিক কংগ্রেস কমিটার নবনির্ব্বাচিত সম্পাদক

শীবিদ্ধর সিং নাহার

ভাভার কুমুক্শকর রায়—

কলিকাতার খ্যাতনামা যন্ত্রা-চিকিৎসক, পরহিত ব্রতী, কংগ্রেস-সেবক ডাকার কুমুদশকর রারের অকাল মৃত্যুতে বাংলার বে কতি হইরাছে তাহা পূর্ব হইবার নহে। গত ১০ বংসর কাল ডিনি নিঃ যার্বভাবে বে সেবাকার্য্য করিরা পিরাছেন, তাহা অনজসাধারণ। তাঁহার প্রতিতিত বাক্বপুর যন্ত্রা হাসপাতালটির নাম 'কুমুদশকর যন্ত্রারাসপাতাল' রাধার বে প্রভাব হইরাছে, আমরা স্ক্রাভংকরণে ভাহা সমর্থন করি। তিনি ঐ হাসপাতালের করি ও প্রসারের অক্ত জীবনের অধিকাংশ সমর ব্যর

করিরা গিরাছেন। তাঁহার পুত্র করণাশহর ও করা বাণী সেনগুপ্তা পিতার কীবনী রচনার ব্রতী হইরাছেন। বাঁহারা কুমুদশহরের জীবনের ঘটনা জানেন, তাঁহারা দরা করিরা তাহার বিবরণ কলিকাতা ১০০ ল্যাল্ডাউন রোডে করণাশহরের নিকট প্রেরণ করিলে তাহারা কৃতক্ত হইবেন।

রথীক্র সংস্কৃতি পরিষদ—

গভ ১৫ই অক্টোবর কলিকাতা ঢাকুরিয়া ৯নং মহারাজা ঠাকুর রোডে এীধীরেজ্রচক্র মন্ত্রদারের গৃহে রথীক্র भःकृष्ठि शतियामत **উ**रवांथन উৎসব हहेवा शिवारक। সভায় স্বামী পুরুষোত্তমানন্দ অবধৃত সভাপতির আসন গ্রহণ করেন ও প্রীকণীক্রনাথ মুখোপাধ্যার সভার উছোধন करतन। खे अकल जीशीरबस्तनाथ वत्नामाशात्र পति-চালিত 'ৰখীল গীতা প্ৰচাৰ প্ৰতিষ্ঠান' গীতা-ধৰ্ম প্রচারের যে চেষ্টা আরম্ভ করিয়াছেন, ভাষা অন-সাধারণের উপকার সাধনে সমর্থ হইরাছে। আমাদের বিশ্বাস--গীতার শিকা অবলম্বন করিয়া আবার ভারতবর্ব সর্ববেদত্তে নবজন্ম, নৃতন শক্তি লাভ করিবে এবং সমগ্র ব্দগতকে উচ্চতর ও সমূত্বতর মানব-জীবনের আদর্শ प्रथाहेरव। **क विवास वैशिक्षा ए**ड्डी क्रियन, डीहाब्रोहे আমাদের প্রকৃত উপকার করিবেন। রথীক্র সংস্কৃতি পরিষদের এই বিষয়ে চেষ্টা সাফলামণ্ডিত হউক. সর্বাস্তঃ-করণে ইহাই কামনা করি।

জ্রীযোগেশর

গত ৪ঠা কার্ত্তিক বজীয় সাহিত্য পরিবদের সভাপতি, বাংলার প্রবীণতম সাহিত্যিক বিজ্ঞানাচার্য্য প্রীবোগেশচন্দ্র রায় মহাশয়ের ছি-নবভিতম জন্মতিবি বাকুড়া এডোয়ার্ড মেমোরিয়াল হলে সাড়ছরে অহাইত হইয়াছে। ২০টি প্রতিষ্ঠানের পক্ষ হইতে ঐ দিন তাঁহাকে মাল্য দান করা হয় এবং বহু কবি ও সাহিত্যিক নিবিদ্ধ অভিনক্ষন প্রদান করেন। সকলের উত্তরে বোগেশবারু তাঁহার বাল্য-জীবনের কথা সভায় বিষ্তুত্ত করিয়াছিলেন। আমনা বিজ্ঞানাচার্য্য সহাশয়ের হুলীর্ব করেবর জীবন ভাবনা



वाताकभूत शासीचाटि-गासीकीव ভৈলচিত্রে পশ্চিম বঙের প্রদেশপাল ভক্তর কাট্ছু ও কংগ্রেস গ্রেসিভেন্ট



আসামে ডাঃ রাজেল্রপ্রসাদ-আসাম প্রাদেশিক কংগ্রেস ক্মিটির একটি, বস্থা। ডা: প্রসাদের আসামের প্রদেশপাল শীকররায়লান দৌলতরাম

ক্রেক্সরার্ভার্ড শ'-

গত ২রা নভেষর ৯৪ বৎসর বয়সে বর্তমান বিষের শ্রেষ্ঠ চিন্তানায়ক ও অবিখ্যাত নাট্যকার জর্জ বার্গার্ড শ' পরলোক গমন করিয়াছেন। কিছুদিন পূর্বে বাগানে অমণকালে তিনি হঠাৎ পড়িয়া যান এবং ভাঁচার পারে প্রচণ্ড আঘাত লাগে। ফলে ভাঁহাকে হাসপাতালে পাঠানো হয় এবং অস্ত্রোপচারের পরে কয়েক দিন একটু স্থন্তও ছিলেন। আশা হইয়াছিল তিনি শীঘ্রই নিরামর হইবেন। কিছ ২রা নভেষর রাত্রে তিনি হঠাৎ মারা যান। শ্লেম, বিজ্ঞাপ এবং বাক্যের ক্যাণতের মধ্য দিয়া স্থরসিক শ' বিশ্ব-সমাজের উপর যে নৃত্রন আলোকপাত করিয়াছেন ভাঁহার স্থনীর্ঘ জীবনকাল ধরিয়া—তাহার কিছ মৃত্যু নাই। পৃথিবীর লাহিত্য বতদিন থাকিবে ততদিন বার্গার্ড শ' মাহুষের মনে অমর হইয়া থাকিবেন।



সামরিক পত্রিকা সংবে নৃত্য মন্ত্রী ডাঃ আর আমেদ— ছই পার্যে সংবের সভাপতি ও সম্পাদক

ব্রেশ্যের পরিসাপ স্থাস—

গত ৬ই নভেষর হইতে ছই সপ্তাহের জন্ত রেশন এলাকার প্রতি স্থাহে ২১ ছটাকের ছানে ১৪ ছটাক লেওয়ার ব্যবহা হইলাছে—গমের পরিমাণ হ্রাস বা বৃদ্ধি করা হয় নাই। কোন মাছবের পক্ষেই প্রতি সপ্তাহে চাউল ও গমে নোট ৩৫ ছটাক থাইয়া জীবনথারণ করা সপ্তব নহে। চাউল কম দেওয়ার কারণ হিসাবে খাত মন্ত্রী প্রাক্রচক্র সেন জানাইয়াছেন বে সকল রেশনহীন এলাকার চাউলের দাম মণ প্রতি ৩০ টাকার ক্ষে দিয়া যে চাউল বাঁচিরে তাহা কলপাই গুড়ী, নদীয়া, মুর্নিদাবাদ, মালদহ, কোচবিহার, পশ্চিম দিনাকপুর, দার্জিলিং ও ২৪পরগণার প্রদান করা হইবে। অবশ্র রেশন প্রলাকার ১৭ টাকা ও রেশন-হীন এলাকার ৩০ টাকা মণ চাউল বিক্রের কেহ সমর্থন করিবে না। সর্ব্জ যাহাতে এক দরে চাউল বিক্রের হয়, সেজস্ত সন্থর ব্যবস্থা সম্পূর্ণ করা প্রয়োজন। কিন্তু সেজস্ত পূর্ব হইতে ব্যবস্থা করা কেন যে গভর্গমেন্টের পক্ষে সম্ভব হয় নাই, তাহা জনসাধারণ ব্রিতে পারে না। কম চাউল পাইলে ধনী লোকেরা অন্ত খাত অধিক মূল্যে কিনিয়া থাইতে পারে, কিন্তু দরিজগণের পক্ষে অথাত অর্থাৎ শাক পাতা খাওয়া ছাডা বা অর্থাহারে থাকা ছাডা গতান্তর থাকে না।

আসাম ও পাকিন্তান—

সম্প্রতি আসাম, পূর্ববন্ধ ও পশ্চিমবন্ধের চিক্ষ সেক্ষেটারীগণের সন্মিলিত বৈঠকে প্রকাশ পাইরাছে বে পূর্ব পাকিস্তান হইতে মাসামে দল দল মুসলমান পাঠাইরা আসামকে পাকিস্তানের সহিত যুক্ত করার গোপন বড়যন্ত্র চলিরাছে। গত কর মাস ধরিরা দলে দলে মুসলমানগণ পাকিস্তান হইতে আসামে বাইলেও আসাম গত্তর্গমেন্ট সেবিরে কিছুই করেন নাই—অত্য দিকে আসাম হইতে হিন্দু বালালী তাড়াইবার জন্ত ভাহাদের ব্যবস্থার অন্ত নাই। হিন্দু-বালালার পক্ষে—এমন কি উচ্চপদন্থ রাজকর্ম্মলারীদের পক্ষেও আর আসামে বাস করা সন্তব নহে। আসামের বর্তমান মন্ত্রিসভার এই কার্য্যের ফলে যদি আসাম একদিন পাকিস্তানের কুক্ষীগত হইরা যায়, তবে তাহাতে বিশ্ববের ক্রিনা কারণ:থাকিবে না। এ বিবরে কি কেন্দ্রীয় সরকারের কিছুই করিবার নাই?

মুশিদাবাদে চাউলের দর-

মূর্শিদাবাদ জেলার চাউলের দর গত আগষ্ট মাসে প্র
বাড়িরা যাওরার লোকের ধারণা হইরাছে বে ঐ জেলা
হইতে গতর্গমেন্ট থাক্ত সংগ্রহ করার ঐ অক্ষা হাইরাছে।
সে সম্পর্কে গত ৩০শে আগষ্ট এক বেতার বৃদ্ধতার পশ্চিম
বজের থাত মন্ত্রী প্রীপ্রক্রচক্ত সেন বলিরাছেন—"বদি এ
বংসর মূর্শিদাবাদ জেলার গতর্গমেন্ট হইতে থাক্ত ক্রেরের
ব্যবহা ও সালে সালে প্রয়োজনীয় হানে চাউল প্রেরণের

ব্যবস্থা না করা হইছে তাল্কিবলৈ মুর্শিনাবাদ হইতে সকল ধান বা চাউপ পাশে নকীরা জেগার বা বিহারে চলিরা যাইত—কারণ ঐ সকল স্থানে লাউদের দাম খুব বেলী ছিল। নদীরা ও মুর্শিনাবাদে ৭ মাস চাউলের দামের কিরূপ পার্থক্য ছিল, তাহা নিমের হিসাব হইতে বুঝা বাইবে।

মাস	ननीया	मूर्निवावाव	
>>6.	(চাউনের মণ)		
লাহ হারী	٠ ١٥٥	3900	
কেব্ৰুগারী	20	3618	
मार्ठ	>> •	3610	
এপ্রিল	₹•॥•	39	
শে	રર ઇ•) शहर •	
क् न	201/-	221•	
জুলাই	०) ५०/०	240/0	
-			

মুশিদাবাদ জেগার থান্তাবস্থার থবর গন্তপ্রেণ্ট রাথেন ।
ক্রেক্স গত সা জাহরারী হইতে ২৯শে আগছি
৮ মানে গন্ত-বিশ্বট মুশিনাবাদ জেলার ১৭৮৭৩৭ মণ
চাউল কিনিয়া ঐ সময়ের মধ্যে ১৫২২৪৯ মণ চাউল ও
০৪২৭০ মণ আটা জেলাকে প্রদান করিয়াছেন। বে পরিমাণ
ক্রের করা হইয়াছে, প্রদান করা হইয়াছে তাহা অপেকা
বেনী।" ঐ সময়ে থান্ত-মন্ত্রী আখাস দেন যে, পরবর্তী
৪ মানে উপযুক্ত পরিমাণ চাউল ও গম দিয়া গভণ্মেন্ট
মুশিদাবাদকে রক্ষা করিবেন। আমরা আশা করি সে
প্রতিশ্রতি রক্ষিত হইরাছে। মুশিদাবাদের থান্তাবস্থা
সম্বন্ধে আলোচনা করার ফলে আমরা উপরের
হিস্বাব প্রদান করিলাম। সরকার পক্ষ যে এ বিষয়ে
একেবারে অনবহিত নহেন, তাহা হিসাব দেখিলেই
বুঝা যায়।

দোলা

শ্রীদেবপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায় এম-এ, বি-এল

এ ভ্ৰনে শুধু কণতরে আসা,
ক্ষণিকের ভালবাসা,
প্রিয়া মুখ লাগি' জাগে বুকে বটে,
অতি তুরস্ত আশা,
মনে হয় বুঝি, চিরদিন তারে,
বক্ষে রাখিব ধরি'
ক্ষেহেরি পরশ্লে, তুবারু জড়ায়ে,
বন্দী তাহারে করি ;—
সহসা ঝঞা ঈশানের কোণে,
দেখা দেয় কালোখেছে,
স্থের সে নীড় ভেঙে চ্রে বায়,
বছে ঝড় খং থেগে,
বুক্তে আড়াল করি'
উভারাল বায়ু কোখা লয়ে যায়,

भामि ७४, (केंद्र मति ;

অশ্বনারার বিধাতা চরণে,

কন্ত রণে দিই পুঞা,

তবু এ ভূবনে আরবার তারে,

র্থা হর মোর থোঁজা;

বার ধন তার কোলে ফিরে বায়,

মারা ছাদে রাথে বেঁধে,

কন্ত মধুমাস আসে আর বার,

দিন বার মোর কেঁদে,—

এই ত জীবন, এই ত মরণ,

হাসি কারার ধন,

আগে আর বার, ক্লিকে মিলার,

তবু বুঝেনাত মন!

তবু আলবাসি, বুকেতে জড়াই,

আদর তাহারে করি,

আঁথি জলে ভাহা সারি!

त्थम निनीएन, गरिए जनम,



ভারভীয় ক্রিকেট খেলোয়াড়দের রুতিছ \$

ইংলণ্ডের বিধ্যাত সেণ্ট্রাল ল্যাকাশায়ার ক্রিকেট লীগের প্রতিযোগিতার খেলার খবর ভারতীয় সংবাদপত্র-শুলিতে বিশেষ আকর্ষণের বিষয় হয়ে দাঁড়ায়। পৃথিবীর किरके की ज़ामश्रम (मन्द्रीन नाका नावा किरके जीरनेव **খেলা** নানা দিক থেকেই গুরু**ছপূর্ণ।** গত কয়েকবছর ভারতীয় ক্রিকেট খেলোয়াড় এবং ক্রিকেট খেলার অহুরাগিগণ সেন্ট্রাল ল্যাকাশায়ার ক্রিকেট লীগের থেলার ফলাফলের উপর খুব বেশী আগ্রহ প্রকাশ করছেম কারণ লীগের খেলার বিভিন্ন দলের পক্ষ নিয়ে একাধিক নামকরা ভারতীয় ক্রিকেট থেলোয়াড় পেশাদার থেলোয়াড় হিসাবে থেলছেন। গতবছর বিজয় হাজারে এবং ভিন্নু মানকড় লীগের খেলায় প্রভূত খ্যাতি প্রতিষ্ঠা ক'রে এসেছিলেন। গত বছর মানকড় লীগে সম্প্রাধিক রাণ এবং শতাধিক উইকেট নিয়ে লীগে নতুন রেকর্ড স্থাপন ক্রীড়াচাতুর্য্যে ভারতীয় ক্রিকেট ব্যক্তিগত विकासिक किया विकास अभाग क'रत बारमन। এবার তাই আরও বেশী সংখ্যক ভারতীয় খেলোয়াড়দের मिक्त नाकानायात नीता (थनवात निमञ्जन प्यारम, মোটা টাকার পারিশ্রমিকের বিনিময়ে। এ বছরে থেলতে যান বিজয় হাজারে, লালা অমর নাথ, ভিনু মানকড় এবং পলি উমরি গড়। এ রা বিভিন্ন দলের হয়ে খেলেন। लोरात ममन्य (थनात स्थर वाणिः 'ववः वाणिःसत्र বে গড়পড়ভার হিসাব ভালিকা বের হয়েছিল ভার বিশিষ্ট স্থানগুলির স্থাধিকাংশ ভারতীয় পেলোয়াড়রা অধিকার

স্থাংশুশেখর চটোপাধ্যার

क'रत्रह्म। आमारमन शक्क এथवत थुवहे आनित्मन বিষয়। ব্যাটিংয়ে যাঁরা মোট ৩৩০ রাণ করতে পারেন একমাত্র তাঁদের নামই তালিকাভুক্ত করা হয়। পলি উমরিগড় ব্যাটিংয়ে প্রথম স্থান অধিকার করেছেন। তাঁর মোট রাণ সংখ্যা ৫৯৯। বিজয় হাজারে আছেন চতুর্থ স্থানে। লালা অমরনাথ অমুস্থতার অস্ত্র বেশী খেলায় যোগদান করতে পারেন নি স্থতরাং এই প্রয়েজনীয় রাণ করা সম্ভব হয়নি বলে তালিকায় তাঁর নাম নেই। বাকি তিনজন ভারতীয় খেলোয়াছের নাম আছে। বোলিংয়ে ভারতীয় থেলোয়াড়রা বেশী কুতিভের পরিচয় मिरब्रह्म। यांत्रा ०२ि छेटेरकि भान जारमत्र नामहे তালিকায় স্থান দেওয়া হয়। সেই হিসাব মত প্রথম স্থানে व्याद्या जिल्ला मानक्ष, विजीय शासन विकय शासादा চতুর্থ স্থানে লালা অমর নাথ এবং নবম স্থানে পলি উমরি গড়। কোন এক দলের বিপক্ষে ভিন্নু মানকড়ের বোলিং এভারেজ বিশেষ উল্লেখযোগ্য হয়েছিল। মানকড় ৮ ওভার বলে মাত্র ৬ রাণ দিয়ে ৭টা উইকেট পান। শেষ व वर्त मानक्छ दर्शन त्रांग ना मिर्य 8 सन्तक विमान করেন।

কমনওয়েলথ ক্রিকেট দল ৪

ভারতীয় ক্রিকেট মরস্থমে বিশেত থেকে ইংলগু,
আষ্ট্রেলিয়া এবং ওয়েষ্ট ইণ্ডিক দেশের বৌলক্ষন থ্যাতনামা
থেলোয়াড় বারা গঠিত ক্ষনওয়েলথ ক্রিকেট দল থেলতে
এসেছে। দলের পেলোয়াড়দের নামের দিক থেকে গভ^ক
বছরের ক্মনওয়েলথ দলের থেকে এই দলটি বেশী শক্তিশালী
বলেই ক্রীড়া মহলের অভিমন্ত। আমাদের ভারতবর্থে

কৰ্মণাণ জনগাৰারণের মধ্যে রামনামের মাহাত্যা আৰু শ্বলাতীভ কাল থেকেই বিশ্ববদীয় হয়ে মাহাত্ম আৰু সারা প্রবিবীর সম্প্রতি রামনামের ক্রিকেট মহলে এবং সংবাদপত্র জগতে যে কীৰ্ত্তিত হচ্ছে তার নিমিত্ত হ'লেন ওয়েষ্ঠ ইতিজ্ঞের প্রবাদী ভারতীয় ক্রিকেট त्थाताम् त्रामाधीत्नत्र त्वानिः नाकना । त्रामाधीत्नत्र त्वानिः नियु किएको कोजाबनारक देह के शए शिर्म । 'ब्रामाधीनरक আমরা দেখতে চাই'—ভারতীয় জনসাধারণের দিক (थरक धरे नारी मःवानभाव श्रवन सनमञ स्रष्टि करता। मिहे त्रामाधीन वहकाल शत्र शृक्षश्रुक्रस्यत एक छात्रजवर्र्य পদার্পণ করেছেন কমনওয়েলথ ক্রিকেট দলের সঙ্গে থেগতে আসায়। এই দলে ইংল্ডের ১১ জন, আছেলিয়ার ০ জন এবং ওয়েষ্ঠ ইন্ডিকের ২ জন খেলোয়াড় আছেন। দলের অধিনায়ক হ'লেন ইংলপ্তের টেষ্ট খেলার ভূতপূর্ব উইকেট तकक लगनी अभन । मलात मारिनकांत हरत अरमहिन कर्क -ভাক ওয়ার্থ, তিনিও ইংলত্তের ভূতপূর্ব্ব উইকেট রক্ষক।

নিম্মলিখিত খেলোয়াড় নিয়ে দিতীয় কমনওয়েলথ দলটি গঠিত হয়েছে।

লেগলী এমদ (কেণ্ট ও ইংলণ্ড) ক্যাপটেন, ক্র্যান্ধ
ওরেল (বার্বাদোদ ও ওরেষ্ট ইণ্ডিক)—ভাইস ক্যাপটেন,
এ বার্লো ল্যাক্ষ্যায়ার), ক্রন্য ড্লাণ্ড (দ: অট্টেলিয়া
এবং অট্টেলিয়া), অর্জ্জ এমেট (মুন্সেষ্টার্সামার ও ইংলণ্ড)
লরি ফিনলক (সারে ও ইংলণ্ড), হোরণ্ড গিছলেট
(সোমেরসেট ও ইংলণ্ড), কেন গ্রিভ্রুস (নিউ সাউথ
ওয়েলস ও ল্যাক্ষ্যায়ার), জ্যাক আইকিন (ল্যাক্ষ্যায়ার
ও ইংলণ্ড), লেসলী ক্র্যাক্ষ্যন (ডার্বিসায়ার ও ইংলণ্ড),
ক্রিম ল্যাক্ষার (সারে ও ইংলণ্ড), সনি রামাধীন (ত্রিনিদাদ
ও ওয়েষ্ট ইণ্ডিক), ডিরিক স্থাকলটন (হাম্পামার ও
ইংলণ্ড), আর ম্পুনার (ওয়ার উইক্সায়ার), ক্রর্জ্জ ট্রাইব
(ভিক্টোরিয়া ও অট্টেলিয়া) এবং ক্রেড রিক্রওয়ে (কেণ্ট)।
এই বোলজনের মধ্যে টেষ্ট থেলোরাড় আছেন ইংলণ্ডের
৮ক্ষন, অট্টেলিয়ার ২ক্ষন এবং ওয়েষ্ট ইণ্ডিক্রের হক্ষন।

ক্ষনওয়েলথ দলের অধিনারক ইংলণ্ডের ভূতপূর্ব টেষ্ট ধাঁধার মধ্যে রাখে, কোন দিকে বল গিয়ে প্রতি ক্যাপটেন পি-টি-আই-রের সংবাদদাভার নিকট তাঁর দল পরিবর্ত্তন ক্রবে ভা বুবতে না দিয়ে। 'অমৃতবাজার' এবং সম্পর্কে বলেছেন—'best players in the British 'বুগান্তর পত্রিকার' নিজয় সংবাদদাভার সংবাদ অহসারে Commonwealth' তাঁর মতে স্বদিক বেকেই এই দলটি শুক্তাল, রাকাধীনের এতথানি বোলিং সাফল্যের আক্রমে

'well balanced' এবং বত্তুর বছর শক্তিশালী বোরারছের।
নিরে দলটি গঠন করা হরেছে। রোছাইরে 'প্রোক্তেশিক গ্রুক-এর উন্থোগে অফ্টিত এক ভোজ দভার লেদনী প্রশ্নীর বলেন, জাঁর দলে কেবল পৃথিবীর করেকজন 'fineat batsmen'ই আদেন নি, এদেছেন পৃথিবীর নাম্কর্মা করেকজন 'fastest-scorers'। ভারতীর ক্রিকেট কণ্ট্রোল বোর্ডের সভাপতি মি: এ, এদ ডি মেলোর মতে, লেদলী এম্দ, ওরেল, ট্রাইব, রামাধীন, ফিদলক এবং গিছলেট হ'লেন 'Greatest cricketers ever'। দলের অধিনায়ক লেদলী এম্দ এই ভোজসভার মন্তব্য করেছেন, 'his cricket career would be ircomplete without the visit to India, the birth place of the great Rajitsinghji'।

এম সি সি দলের সলে লেসলী এব্স প্রত্যেক কমর-ওয়েলথ দেশে গিরে ক্রিকেট থেলেছেন। ভারতবর্ষ এইবার তাঁর প্রথম পদার্পণ। কমনওয়েলথ দলের সব থেকে বেশী আকর্ষণের পাত্র হয়ে দাঁড়িয়েছেন, ওয়েই ইণ্ডিক প্রবাদী ভারতীর খেলোয়াড় রামাধীন। এঁর বোলিং নিয়ে क्रिकिं कोषा-क्रशंक बीकिंगक हांक्ना क्या षिरग्रह। **च्लिन तोनात्रश्य किरक्**छे थ्यनात्र श्रहिनेड পদ্ধতি অহুদারে যে ভাবে আকুল দিয়ে বলটি ধরে বল করেন, রামাধীন হলেন তাঁর ব্যতিক্রম। এক বছর আপেও সনি রামাধীন ছিলেন ওয়েই ইণ্ডিম্বের দক্ষিণাঞ্লের সাব ক্রিকেট মহলের নিক্ট পরিচিত। সেখান থেকে চার মাদের মধ্যে ওয়েষ্ট ইণ্ডিজ দলের সলে ইংলুতে খেলতে এসে পৃথিবীর ক্রিকেট ক্রীড়ামহলে আহর্জাতিক পদমর্যাদায় অধিষ্ঠিত হয়ে সকলের, কাছে এক বিশ্বর এবং কিঞাসার कान विकात कत्रानन, कांत्र क्रमामान वानिः माकर्ती। 'লেগ-ব্ৰেক এবং অফ্-ব্ৰেক' এই হুইয়েতেই তিনি সমান পারদর্শী এবং তাঁর বদ সাধারণত: 'good length' वकांत्र (त्राप हान । वार्षिममारित्र केल्प्स वन कांक्रवांत्र সময় তাঁর 'unorthodox fingerwork' ব্যাটসম্যানকে ধাঁধার মধ্যে রাখে, কোন দিকে বল গিয়ে গুভি পরিবর্ত্তন করবে ভা বুঝতে না দিয়ে। 'অমৃতবালার' এবং 'বুগান্তর পত্রিকার' নিজয় সংবাদদাতার সংবাদ অভুসারে

নহারক হ'ল নাকি তাঁর টুপি। তিনি টুপি মাধার বল করেন এবং টুপিতে হাত দিয়ে উইকেট-কিপারকে তাঁর সক্তে পাঠান। জানি না এর মধ্যে কতথানি কৌশল আছে। তবে কৌশল যথন থলির মধ্যে থেকে বেরিয়েই পড়লো তথন দেখা বাক্ ব্যাটসমাানরা তাঁর বল কতথানি উপেকা করতে পারেন। ইংলগু সফরে রামাধীন মোট ১২৯টা উইকেট পান। প্রতি উইকেট পান গড়ে ১৫ রানের কিছু বেলী রান দিয়ে। টেই ম্যাচের বোলিং এতারেক হ'ল—০৭৭ ওতার, ১৭০ মেডেন, ৬০৪ রানে এবং ২৬টা উইকেট পান, বোখাইয়ে অহুঠিত ক্রিকেট ক্রেট্রাল একাদশের বিপক্ষে এবং মাত্র প্রথম ইনিংসে ২০ রানে ভটা উইকেট পান। এ পর্যন্তে ভারতবর্ষে তিনি ২৭টা উইকেট পেয়েছেন ১০৪ ওভার বল দিয়ে, ৪৯টা মেডেন নিয়ে এবং ২১৫ রান দিয়ে।

কমন ওয়েলথ দলের ভারতবর্ষে পাঁচ মাসের ক্রিকেট সক্ষর শেষ হবে ১৯৫১ সালের কেব্রুয়ারীর ১১ তারিখে।(?) পাঁচটি টেষ্ট ম্যাচ হবে, (১) দিল্লী (নভেম্বর ৪-৮), (২) বোষাই (ভিসেম্বর ১-৫), (৩) কলিকাতা (ভিসেম্বর ৩০—৩ জামুরারী ১৯৫০) (৪) মাল্রাক্স (জামুরারী ১৯-২০) এবং (৫) কানপুর (কেব্রুয়ারী ৮-১২)। ক'লকাতায় ওট থেলা হবে। ভারতার বিশ্ববিদ্যালয়ের বিপক্ষে (ডিসেম্বর ২০-২১) এবং রাজ্যপাল একাদশের বিপক্ষে (ডিসেম্বর ২৪-২৬)।

রোভাস কাপ ফাইনাল গ

১৯৫ - সালের প্রতিবোগিতার ফাইনালে হায়জাবাদ পুলিস দল ১-০ গোলে ক'লকাতার এরিয়াল দলকে হারিরে রোভাস কাপ বিশ্বরী হয়েছে।

এরিয়ান্স দল একাধিক দলের একাধিক খেলোয়াড়
নিয়ে রোভারে যোগদান করে। বাইরে এরপ ভাবে দল
গঠন আইন সকত। ক'লকাতার একমাত্র মোহনবাগান
দলই (১৯২৩) ১১ জন নিজ দলের বালালী খেলোয়াড় নিয়ে
কাইনালে খেলেছে।

দিলী রূথ মিলস ফুটবল %

দিলীর ক্লথ মিলস ফুটবল প্রতিযোগিতার ছিতীয় দিনের ফাইনালে ইস্টবেদল ক্লাব ২-০ গোলে ৮ম গুর্থ। রাইফেলস দলকে পরাঞ্চিত করেছে। প্রথম দিনের ফাইনালে উভয় পক্ষে ত্'টি গোল হওয়ায় থেলাটি ছ্ল যার। ইস্টবেদল দল দলের নিয়মিত থেলায়াড় ছাড়া অপর দল থেকে ছু' জন খেলোয়াড় নিয়ে দলকে শক্তিশালী করে। অপর দিকে গুর্থা। দলে ক্যালকাটা গ্যারিসনের এবং শীল্ডের সাভিসেস একাদশের একাধিক থেলোয়াড় যোগদান করে।

নব-প্রকাশিত পুস্তকাবলী

বীবাসতী দেবী প্রণীত ভ্রমণ-কাহিনী "শুশুক্রলাভ ও দান্দিপাত্যের তীর্থদর্শন"—৪
বিকালীপদ ঘটক প্রণীত উপজাস "রহিতে নারিমু ঘরে"—২০
বিপ্রভাত বহু প্রণীত সন্ধা "একদম বীধকে জানানা"—২০
বীহরিদাস নামানন্দ সম্পাদিত "হুদেশ-প্রেমিক রমাকান্ত রায়"—২০
ভামল সেনভুগু প্রণীত "কিশোর বৈজ্ঞানিক"—৮৮/
বীশ্রনিকুমার পাল প্রণীত "ছুর্গম বিরি-লিরে"—৩
বেশ-সাহিত্য-কুটার প্রকাশিত শিশুদের পূজা-বার্ষিকী "উদরন"—৩
বীশ্রটানকুমার প্রণীত শ্রী-ভূমিকা-ব্যক্তিত শিশু-বার্টিকা
"গ্রাম্য-কিশোর"—১০

্যাব)-। কণোর প্রাব্তাবাধ অভিধান"—-২১
ক্রীপৈতেন্দ্রবাধ ভট্টাচার্য প্রণীত নাটকাগুচ্ছ—"রবি-ঠাকুর"—>।•
ক্রীবোগেণচন্দ্র বন্দ্যোগাধ্যার প্রণীত ক্রীবনী-প্রস্থ

"মহাপুরুৰ তাৰ আওতোব"—১১ বিহেমেপ্রকুমার রাম-সম্পাদিত শিশু-বার্ধিকী "নারধি"—২।∙

শ্রীবিষনাথ মন্ত্র্মণার প্রণীত গল্প গ্রন্থ "পান্তির বিরে"—১)৽
ব্যক্তেম্বর রার প্রণীত রহন্তোপজাস "ক'াসীর ক'াড়া"—৮০
শ্রীকৃপেল্রকুক চটোপাধ্যার প্রণীত জীবনী-গ্রন্থ "জননী জন্মতৃমি"—২
শ্রীকৃষণাথ রাহা প্রণীত উপজাস "ট্যালিস্ম্যান"—১
শ্রীক্ষণাথ বাব প্রণীত কিন্ত-উপজাস "মঙ্গলগ্রহের বৈজ্ঞানিক"—১
শ্রীক্ষণান্ত চৌধুরী প্রণীত কাব্য-গ্রন্থ "অধিবাস"—১
শ্রীমহান্ত মহারাল পণপতি দাস গোষামী প্রণীত "আন্তর্মণ"—২
শ্রীক্ষান্তরণ দাস প্রণীত কাব্য-গ্রন্থ "তিমির-ত্বা"—1০, "মধু-মিতা"—১০
শ্রীরাশ্যর চটোপাধ্যার প্রণীত "কবির ব্য"—১০
শ্রীক্ষর চটোপাধ্যার প্রণীত "আবাহ্নী"—১
ভক্ত চক্রবর্ডী প্রণীত গর্জাধান ও সর্ভনিরন্ত্রণ"—২
শ্রীসভোলচন্ত্র ভটাচার্য্য প্রণীত কাব্য-গ্রন্থ "আহ্বান"—৮০
শ্রীনভ্রেলন্ত্র মন্ত্র্মণার প্রণীত শাহিক
শপ্রেন্য-মাগ্রন্থ"—২
শিব্রেন্য-মাগর্ভী"—২
শিব্রেন্য-মাগর্ভী"—২

जन्मापक—शैक्षीसनाच मूद्यांशाचारा अय-अ